

# आसान हिन्दी तर्जुमा

हाफिज़ नज़र अहमद



Hindi transliteration is done by  
a team of  
[www.understandquran.com](http://www.understandquran.com)

UNDERSTAND QUR'AN ACADEMY

Tel: 0091-6456-4829 / 0091-9908787858

Hyderabad, India

# आसान तर्जुमा कुरआने मजीद

तस्वीद व तरतीब : हाफिज़ नज़र अहमद  
प्रिन्सिपल तालीमुल कुरआन ख़त व किताबत स्कूल, लाहौर-5

- नज़र सानी
- ★ मौलाना अज़ीज़ जुबैदी  
मुदीर मुजल्ला “अहले हदीस”, लाहौर
  - ★ मौलाना प्रोफेसर मुज़म्मिल अहसन शेख, एम॰ ए॰  
(अरबी - इसलामियात - तारीख़)
  - ★ मौलाना मुफ़ती मुहम्मद हुसैन नईमी  
मुहतमिम जामिआ नईमिया, लाहौर
  - ★ मौलाना मुहम्मद सरफ़राज़ नईमी अल-अज़हरी, एम॰ ए॰  
फ़ाज़िल दरस-ए-निज़ामी, (अरबी - इसलामियात)
  - ★ मौलाना अब्दुरऊफ़ मलिक  
ख़तीब जामअ आस्ट्रेलिया, लाहौर
  - ★ मौलाना सईदुरहमान अलवी  
ख़तीब जामअ मस्जिदुश शिफ़ा, शाह जमाल, लाहौर

## अल्हम्दुलिल्लाह

“आसान तर्जुमा कुरआन मजीद” कई एतिवार से मुन्फ़रिद है:

- हर लफ़्ज़ का जुदा जुदा तर्जुमा और पूरी आयत का आसान तर्जुमा एक्साँ है।
- यह तर्जुमा तीनों मसलक के उलमा-ए-किराम (अहले सुन्नत व अल जमाअत, देव बन्दी, बरेलवी और अहले हदीस) का नज़र सानी शुदा और उन का मुत्ताफ़िकुन अलैह है।

## इंशा अल्लाह

अरबी से ना वाकिफ़ भी चन्द पारे पढ़ कर इस की मदद से पूरे कलामुल्लाह का तर्जुमा बखूबी समझ सकेंगे।

ऐ अललाह करीम! इस ख़िदमत को वा बरकत और वाइस-ए-ख़ैर बनादे। खुसुसन तलबह के लिए कुरआन फ़हमी और अमल विल कुरआन का ज़रिया और बन्दा के लिए फ़लाह-ए-दारैन का वसीला बनादे (आमीन).

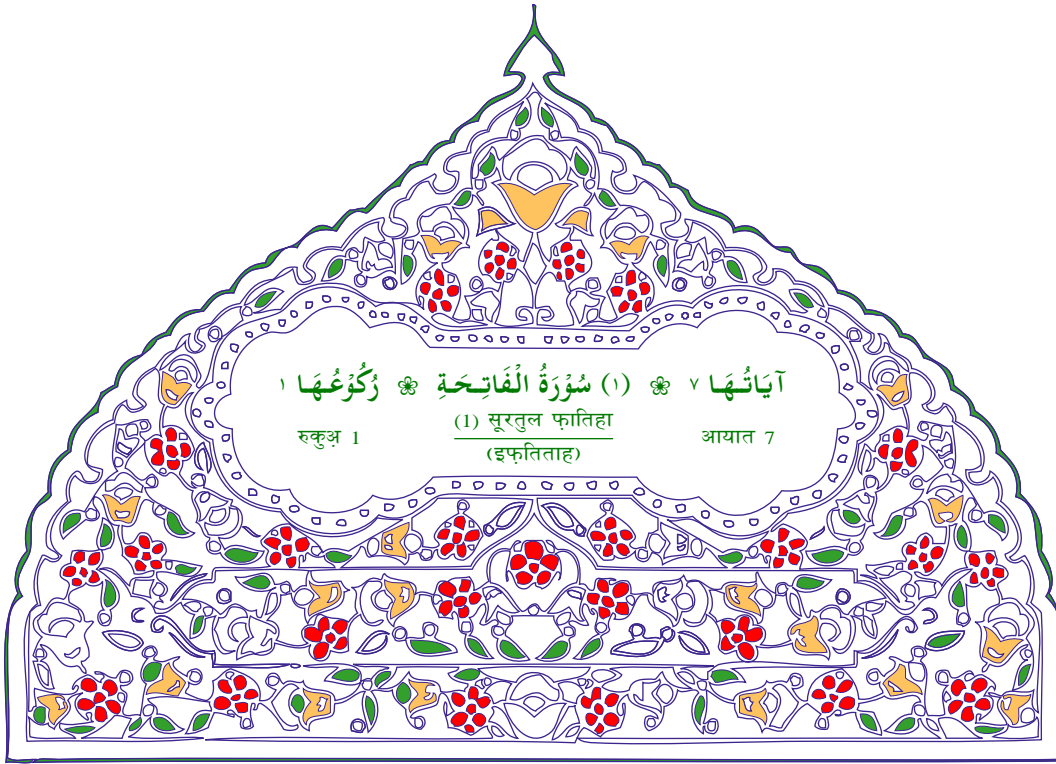
हाफिज़ नज़र अहमद

10 रबी उस्सानी 1408 हिज़्री

3 दिसमबर 1987

बैतुल्लाह अलहराम, मक्का मुकर्रमह





अल्लाह के नाम से  
जो बहुत मेहरबान,  
रहम करने वाला है। (1)

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए  
हैं जो तमाम जहानों का रब  
है, (2)

बहुत मेहरबान, रहम करने  
वाला। (3)

बदले के दिन का  
मालिक। (4)

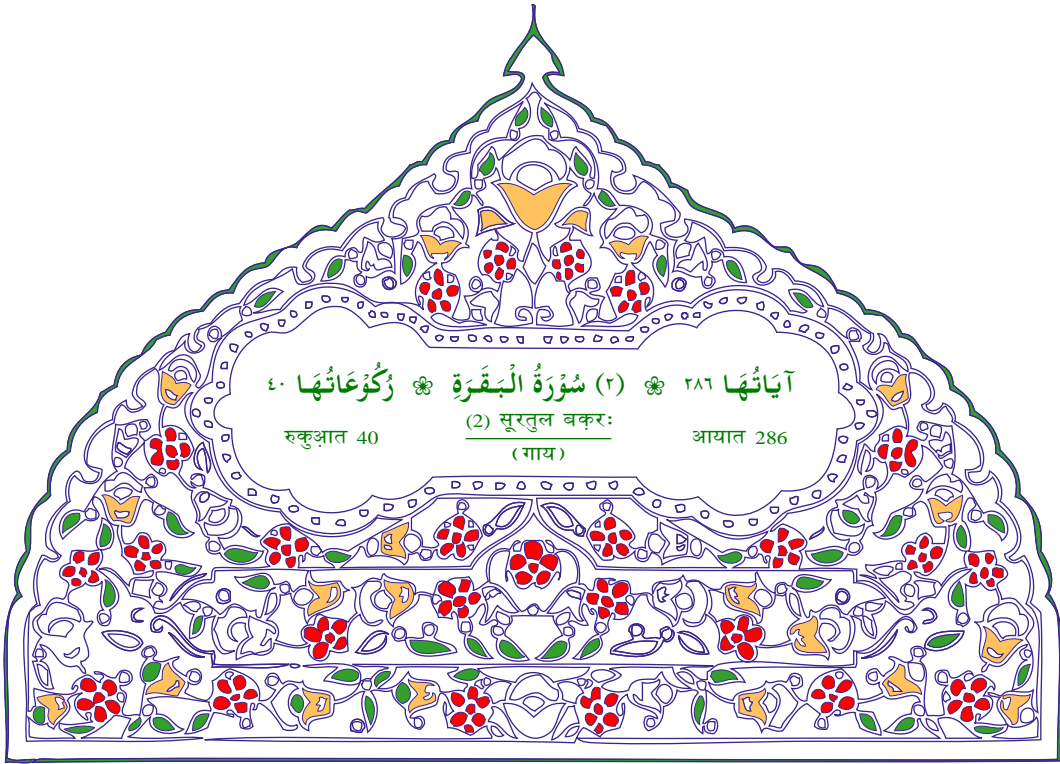
हम सिर्फ़ तेरी ही इबादत  
करते हैं और सिर्फ़ तुझ ही से  
मदद चाहते हैं। (5)

हमें सीधे रास्ते की हिदायत  
दे, (6)

उन लोगों का रास्ता जिन पर  
तू ने इन्ज़ाम किया न उन का  
जिन पर ग़ज़ब किया गया,  
और न उन का जो गुमराह  
हुए। (7)

## بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ١

1	रहम करने वाला	बहुत मेहरबान	अल्लाह	नाम से				
2	बहुत मेहरबान	तमाम जहान	रब	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफ़ें			
3	रहम करने वाला	बदला	दिन	मालिक	3			
4	इबादत करते हैं हम	सिर्फ़ तेरी ही	4	बदला	दिन	मालिक	3	रहम करने वाला
5	रास्ता	हमें हिदायत दे	5	हम मदद चाहते हैं	और सिर्फ़ तुझ ही से			
6	उन पर	तू ने इन्ज़ाम किया	उन लोगों का	रास्ता	6	सीधा		
7	जो गुमराह हुए	और न	उन पर	ग़ज़ब किया गया	न			



## بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

रहम करने वाला बहुत मेहरबान अल्लाह नाम से

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है।

الْم ﴿١﴾ ذَلِكَ الْكِتَابُ لَا رَيْبَ فِيهِ هُدًى

हिदायत इस में नहीं शक किताब यह 1 अलिफ-लाम-मीम

अलिफ-लाम-मीम। (1)

यह किताब है इस में कोई शक नहीं, परहेज़गारों के लिए हिदायत, (2)

لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٢﴾ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ

ग़ैब पर ईमान लाते हैं जो लोग 2 परहेज़गारों के लिए

जो ग़ैब पर ईमान लाते हैं, और काइम करते हैं नमाज़, और जो कुछ हम ने उन्हें दिया उस में से खर्च करते हैं, (3)

وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ﴿٣﴾

3 वह खर्च करते हैं हम ने उन्हें दिया और उस से जो नमाज़ और काइम करते हैं

وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا

और जो आप की तरफ़ नाज़िल किया गया उस पर जो ईमान रखते हैं और जो लोग

أَنْزَلَ مِنْ قَبْلِكَ ۗ وَبِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ﴿٤﴾

4 यकीन रखते हैं वह और आखिरत पर आप से पहले से नाज़िल किया गया

और जो लोग उस पर ईमान रखते हैं जो आप (स) पर नाज़िल किया गया और जो आप (स) से पहले नाज़िल किया गया और वह आखिरत पर यकीन रखते हैं। (4)

वही लोग अपने रब की तरफ से हिदायत पर हैं, और वही लोग कामयाब हैं। (5)

वेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया, उन पर बराबर है आप (स) उन्हें डराएं या न डराएं वह ईमान नहीं लाएंगे। (6)

अल्लाह ने उन के दिलों पर और उन के कानों पर सुहर लगा दी। और उन की आँखों पर पर्दा है। और उन के लिए बड़ा अज़ाब है। (7)

और कुछ लोग हैं जो कहते हैं हम ईमान लाए अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर और वह ईमान वाले नहीं। (8)

वह धोका देते हैं अल्लाह को और ईमान वालों को, हालांकि वह नहीं धोका देते मगर अपने आप को, और वह नहीं समझते। (9)

उन के दिलों में बीमारी है, सो अल्लाह ने उन की बीमारी बढ़ा दी, और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। क्योंकि वह झूट बोलते हैं। (10)

और जब उन्हें कहा जाता है कि ज़मीन में फ़साद न फैलाओ तो कहते हैं कि हम सिर्फ़ इस्लाह करने वाले हैं। (11)

सुन रखो वेशक वही लोग फ़साद करने वाले हैं और लेकिन नहीं समझते। (12)

और जब उन्हें कहा जाता है तुम ईमान लाओ जैसे लोग ईमान लाए तो वह कहते हैं क्या हम ईमान लाएँ जैसे बेवकूफ़ ईमान लाएँ? सुन रखो खुद वही बेवकूफ़ हैं लेकिन वह जानते नहीं। (13)

और जब उन लोगों से मिलते हैं जो ईमान लाए तो कहते हैं हम ईमान लाए और जब अपने शैतानों के पास अकेले होते हैं तो कहते हैं हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो महज़ मज़ाक़ करते हैं। (14)

अल्लाह उन से मज़ाक़ करता है और उन को उन की सरकशी में बढ़ाता है, वह अन्धे हो रहे हैं। (15)

أُولَئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٥﴾

5	कामयाब	वह	और वही लोग	अपना रब	से	हिदायत	पर	वही लोग
---	--------	----	------------	---------	----	--------	----	---------

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ

डराएं उन्हें	न	या	खाह आप उन्हें डराएं	उन पर	बराबर	कुफ़ किया	जिन लोगों ने	वेशक
--------------	---	----	---------------------	-------	-------	-----------	--------------	------

لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٦﴾ خَتَمَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ سَمْعِهِمْ وَعَلَىٰ

और पर	उन के कान	और पर	उन के दिल	पर	सुहर लगा दी अल्लाह ने	6	ईमान लाएंगे	नहीं
-------	-----------	-------	-----------	----	-----------------------	---	-------------	------

أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٧﴾ وَمِنَ النَّاسِ

लोग	और से	7	बड़ा	अज़ाब	और उन के लिए	पर्दा	उन की आँखें
-----	-------	---	------	-------	--------------	-------	-------------

مَنْ يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٨﴾

8	ईमान वाले	वह	और नहीं	आखिरत	और दिन पर	अल्लाह पर	हम ईमान लाए	कहते हैं	जो
---	-----------	----	---------	-------	-----------	-----------	-------------	----------	----

يُخَدِعُونَ اللَّهَ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَمَا يَخْدَعُونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ

अपने आप	मगर	धोका देते	और नहीं	ईमान लाए	और जो लोग	अल्लाह	वह धोका देते हैं
---------	-----	-----------	---------	----------	-----------	--------	------------------

وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٩﴾ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا

बीमारी	सो अल्लाह ने बढ़ा दी उन की	बीमारी	उन के दिल (जमा)	में	9	समझते हैं	और नहीं
--------	----------------------------	--------	-----------------	-----	---	-----------	---------

وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠﴾ وَإِذَا قِيلَ

कहा जाता है	और जब	10	वह झूट बोलते हैं	क्योंकि	दर्दनाक	अज़ाब	और उन के लिए
-------------	-------	----	------------------	---------	---------	-------	--------------

لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ﴿١١﴾

11	इस्लाह करने वाले	हम	सिर्फ़	वह कहते हैं	ज़मीन में	न फ़साद फैलाओ	उन्हें
----	------------------	----	--------	-------------	-----------	---------------	--------

إِلَّا إِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَكِن لَّا يَشْعُرُونَ ﴿١٢﴾ وَإِذَا

और जब	12	नहीं समझते	और लेकिन	फ़साद करने वाले	वही	वेशक वह	सुन रखो
-------	----	------------	----------	-----------------	-----	---------	---------

قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا كَمَا آمَنَ النَّاسُ قَالُوا أَنُؤْمِنُ كَمَا آمَنَ

ईमान लाए	जैसे	क्या हम ईमान लाएँ	वह कहते हैं	लोग	ईमान लाए	जैसे	तुम ईमान लाओ	उन्हें	कहा जाता है
----------	------	-------------------	-------------	-----	----------	------	--------------	--------	-------------

السُّفَهَاءُ إِلَّا إِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَاءُ وَلَكِن لَّا يَعْلَمُونَ ﴿١٣﴾

13	वह जानते	नहीं	और लेकिन	बेवकूफ़	वही	खुद वह	सुन रखो	बेवकूफ़
----	----------	------	----------	---------	-----	--------	---------	---------

وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَوْا إِلَىٰ

पास	अकेले होते हैं	और जब	हम ईमान लाए	कहते हैं	ईमान लाए	जो लोग	और जब मिलते हैं
-----	----------------	-------	-------------	----------	----------	--------	-----------------

شَيْطَانِهِمْ قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِءُونَ ﴿١٤﴾

14	मज़ाक़ करते हैं	हम	महज़	तुम्हारे साथ	हम	कहते हैं	अपने शैतान
----	-----------------	----	------	--------------	----	----------	------------

اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١٥﴾

15	अन्धे हो रहे हैं	उन की सरकशी में	और बढ़ाता है उन को	उन से	मज़ाक़ करता है	अल्लाह
----	------------------	-----------------	--------------------	-------	----------------	--------

أُولَئِكَ الَّذِينَ اشْتَرُوا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ فَمَا رَبِحَتْ تِجَارَتُهُمْ						
उन की तिजारत	तो न फाइदा दिया	हिदायत के बदले	गुमराही	मोल ली	जिन्होंने ने	यही लोग
وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿١٦﴾ مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِينَ اسْتَوْفَدَ نَارًا						
आग	भड़काई	वह जिस ने	जैसे मिसाल	उन की मिसाल	16	वह हिदायत पाने वाले और न थे
فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ وَتَرَكَّهُمْ فِي						
में	और उन्हें छोड़ दिया	उन की रौशनी	छीन ली अल्लाह ने	उस का इर्द गिर्द	रौशन कर दिया	फिर जब
ظُلُمْتَ لَا يُبْصِرُونَ ﴿١٧﴾ صُمُّ بَكُمْ عَمَىٰ فَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿١٨﴾						
18	नहीं लौटेंगे	सो वह	अन्धे	गूँगे	वहरे	17
أَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَاءِ فِيهِ ظُلُمَةٌ وَّرَعْدٌ وَّبَرْقٌ يَجْعَلُونَ						
वह ठोंस लेते हैं	और बिजली की चमक	और गरज	अन्धे	उस में	आस्मान	से जैसे बारिश या
أَصَابِعُهُمْ فِي آذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ وَاللَّهُ مُحِيطٌ						
घेरे हुए	और अल्लाह	मौत	डर	कड़क (बिजली)	सबव	अपने कान में अपनी उनगलियां
بِالْكَافِرِينَ ﴿١٩﴾ يَكَادُ الْبَرْقُ يَحْطِفُ أَبْصَارَهُمْ كُلَّمَا أَضَاءَ لَهُمْ						
उन पर	वह चमकी	जब भी	उन की निगाहें	उचक ले	बिजली	करीब है 19 काफिरों को
مَشَوْا فِيهِ ۖ وَإِذَا أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوا ۗ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَذَهَبَ						
छीन लेता	चाहता अल्लाह	और अगर	वह खड़े हुए	उन पर	अन्धेरा हुआ	और उस में चल पड़े
بِسْمِعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٠﴾						
20	कादिर	हर चीज़	पर	वेशक अल्लाह	और उन की आँखें	उन की शुनवाई
يَأْتِيهَا النَّاسُ عَابِدُونَ رَبَّهُمُ الَّذِينَ خَلَقُوا وَالَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ						
तुम से पहले	से	और वह लोग जो	तुम्हें पैदा किया	जिस ने	अपना रब	तुम इवादत करो लोगो ऐ
لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٢١﴾ الَّذِينَ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فِرَاشًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً						
छत	और आस्मान	फर्श	ज़मीन	तुम्हारे लिए	बनाया	जिस ने 21 परहेज़गार हो जाओ ताकि तुम
وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَّكُمْ						
तुम्हारे लिए	रिज़क	फल (जमा)	से	उस के ज़रीए	फिर निकाला	पानी आस्मान से और उतारा
فَلَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ أُنْدَادًا ۗ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٢﴾ وَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ						
शक	में	तुम हो	और अगर	22	जानते हो	और तुम कोई शरीक अल्लाह के लिए ठहराओ सो न
مِمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّن مِّثْلِهِ ۗ وَادْعُوا						
और बुला लो	इस जैसी	से	एक सूत	तो ले आओ	अपना बन्दा	पर हम ने उतारा से जो
شُهَدَاءَكُمْ ۗ مِّن دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٣﴾						
23	सच्चे	तुम हो	अगर	अल्लाह	सिवा	से अपने मददगार

यही लोग हैं जिन्होंने ने हिदायत के बदले गुमराही मोल ली, तो उन की तिजारत ने कोई फाइदा न दिया, और न वह हिदायत पाने वाले थे। (16)

उन की मिसाल उस शख्स जैसी है जिस ने आग भड़काई, फिर आग ने उस का इर्द गिर्द रौशन कर दिया तो अल्लाह ने छीन ली उन की रौशनी और उन्हें अन्धे में छोड़ दिया वह नहीं देखते। (17)

वह वहरे गूँगे और अन्धे हैं सो वह नहीं लौटेंगे। (18)

या जैसे आस्मान से बारिश हो, उस में अन्धे हों और गरज और बिजली की चमक, वह अपने कानों में अपनी उनगलियां ठोंस लेते हैं कड़क के सबव मौत के डर से, और अल्लाह काफिरों को घेरे हुए है। (19)

करीब है कि बिजली उन की निगाहें उचक ले, जब भी वह उन पर चमकी वह उस में चल पड़े और जब उन पर अन्धेरा हुआ वह खड़े हो गए और अगर अल्लाह चाहता तो छीन लेता उन की शुनवाई और उन की आँखें, वेशक अल्लाह हर चीज़ पर कादिर है। (20)

ऐ लोगो! तुम अपने रब की इवादत करो जिस ने तुम्हें पैदा किया और उन लोगों को जो तुम से पहले हुए ताकि तुम परहेज़गार हो जाओ। (21)

जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फर्श बनाया और आस्मान को छत, और आस्मान से पानी उतारा, फिर उस के ज़रीए फल निकाले तुम्हारे लिए रिज़क, सो अल्लाह के लिए कोई शरीक न ठहराओ और तुम जानते हो। (22)

और अगर तुम्हें इस (कलाम) में शक हो जो हम ने अपने बन्दे पर उतारा तो इस जैसी एक सूत ले आओ, और बुला लो अपने मददगार अल्लाह के सिवा अगर तुम सच्चे हो। (23)

फिर अगर तुम न कर सको और हरगिज़ न कर सकोगे तो उस आग से डरो जिस का इंधन इन्सान और पत्थर है, काफ़िरों के लिए तैयार की गई है। (24)

और उन लोगों को खुशख़बरी दो जो ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए उन के लिए बागात है जिन के नीचे नहरें बहती हैं, जब भी उन्हें उस से कोई फल खाने को दिया जाएगा वह कहेंगे यह वही है जो हमें इस से पहले खाने को दिया गया हालांकि उन्हें उस से मिलता जुलता दिया गया, और उन के लिए उस में वीवियां हैं पाकीज़ा, और वह उस में हमेशा रहेंगे। (25)

वेशक अल्लाह नहीं शर्माता कि कोई मिसाल बयान करे जो मच्छर जैसी हो खाह उस के ऊपर (बढ़ कर) सो जो लोग ईमान लाए वह तो जानते हैं कि वह उन के रब की तरफ़ से हक़ है, और जिन लोगों ने कुफ़ किया वह कहते हैं अल्लाह ने इस मिसाल से क्या इरादा किया, वह इस से बहुत लोगों को गुमराह करता है और इस से बहुत लोगों को हिदायत देता है, और इस से नाफ़रमानों के सिवा किसी को गुमराह नहीं करता, (26)

जो लोग अल्लाह का अ़हद तोड़ते हैं उस से पुख़्ता इक़्रार करने के बाद, और उस को काटते हैं जिस का अल्लाह ने हुक़म दिया था कि वह उसे जोड़े रखें और वह ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं, वही लोग नुक्सान उठाने वाले हैं। (27)

तुम किस तरह अल्लाह का कुफ़ करते हो, और तुम बेजान थे सो उस ने तुम्हें ज़िन्दगी बख़शी, फिर वह तुम्हें मारेगा फिर तुम्हें जिलाएगा फिर उस की तरफ़ लौटाए जाओगे। (28)

वही है जिस ने तुम्हारे लिए पैदा किया जो ज़मीन में है सब का सब, फिर उस ने आस्मान की तरफ़ क़सद किया, फिर उन को ठीक बना दिया सात आस्मान, और वह हर चीज़ का जानने वाला है। (29)

فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوا وَلَنْ تَفْعَلُوا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي وَقُودُهَا										
उस का इंधन	जिस का	आग	तो डरो	और हरगिज़ न कर सकोगे	तुम न कर सको	फिर अगर				
النَّاسِ وَالْحِجَارَةَ ۗ أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ﴿٢٤﴾ وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا										
ईमान लाए	जो लोग	और खुशख़बरी दो	24	काफ़िरों के लिए	तैयार की गई	इन्सान और पत्थर				
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّ لَهُمْ جَنَّتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ كُلَّمَا										
जब भी	नहरें	उन के नीचे	से	बहती है	बागात	उन के लिए कि	नेक	और उन्होंने ने अमल किए		
رُزِقُوا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِزْقًا قَالُوا هَذَا الَّذِي رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ										
पहले	से	हमें खाने को दिया गया	वह जो कि	यह	वह कहेंगे	रिज़्क	कोई फल	उस से	खाने को दिया जाएगा	
وَأَتُوا بِهِ مُتَشَابِهًا وَلَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا										
उस में	और वह	पाकीज़ा	वीवियां	उस में	और उन के लिए	मिलता जुलता	उस से	हालांकि उन्हें दिया गया		
خَالِدُونَ ﴿٢٥﴾ إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَحْيِي أَنْ يَضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعْضُهُ فَمَا										
खाह जो	मच्छर	जो	कोई मिसाल	वह बयान करे	कि	नहीं शर्माता	वेशक अल्लाह	25	हमेशा रहेंगे	
فَوْقَهَا فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ										
उन का रब	से	हक़	कि वह	वह जानते हैं	ईमान लाए	सो जो लोग	उस से ऊपर			
وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَيَقُولُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا ۗ يُضِلُّ										
वह गुमराह करता है	मिसाल	इस से	इरादा किया अल्लाह ने	क्या	वह कहते हैं	कुफ़ किया	और जिन लोगों ने			
بِهِ كَثِيرًا وَيَهْدِي بِهِ كَثِيرًا وَمَا يُضِلُّ بِهِ إِلَّا الْفَاسِقِينَ ﴿٢٦﴾										
26	नाफ़रमान	मगर	इस से	और नहीं गुमराह करता	बहुत लोग	इस से	और हिदायत देता है	बहुत लोग	इस से	
الَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ										
और काटते हैं	पुख़्ता इक़्रार	से बाद	अल्लाह से किया गया अ़हद	तोड़ते हैं	जो लोग					
مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ أُولَٰئِكَ										
वही लोग	ज़मीन	में	और वह फ़साद फैलाते हैं	वह जोड़े रखें	कि	उस से	जिस का हुक़म दिया अल्लाह ने			
هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿٢٧﴾ كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَكُنْتُمْ أَمْوَاتًا										
बेजान	और तुम थे	अल्लाह का	तुम कुफ़ करते हो	किस तरह	27	नुक्सान उठाने वाले	वह			
فَاحْيَاكُمْ ۖ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٨﴾										
28	तुम लौटाए जाओगे	उस की तरफ़	फिर	तुम्हें जिलाएगा	फिर	तुम्हें मारेगा	फिर	तो उस ने तुम्हें ज़िन्दगी बख़शी		
هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَىٰ										
तरफ़	क़सद किया	फिर	सब	ज़मीन	में	जो	तुम्हारे लिए	पैदा किया	जिस ने	वह
السَّمَاءِ فَسَوَّاهُنَّ سَبْعَ سَمَوَاتٍ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٩﴾										
29	जानने वाला	चीज़	हर	और वह	आस्मान	सात	फिर उन को ठीक बना दिया	आस्मान		

وقف لائح

ع ۲



وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنۡبِئُوۡنِيۡ فِىۡ الْاَرْضِ خَلِيۡفَةً ۗ قَالُوۡۤا									
उन्होंने ने कहा	एक नाइव	ज़मीन	में	बनाने वाला	कि मैं	फ़रिश्तों से	तुम्हारा रब	कहा	और जब
اَتَجْعَلُ فِيۡهَا مَنۡ يُفۡسِدُ فِيۡهَا وَيَسۡفِكُ الدِّمَآءَ ۗ وَنَحۡنُ نُسَبِّحُ									
वे ऐव कहते हैं	और हम	खून	और बहाएगा	उस में	फ़साद करेगा	जो	उस में	क्या तू बनाएगा	
بِحَمۡدِكَ وَنُقۡدِسُ لَكَ ۗ قَالَ اِنۡبِئُوۡنِيۡ مَا لَا تَعۡلَمُوۡنَ ۗ (30) وَعَلَّمَ									
और सिखाए	30	तुम नहीं जानते	जो	जानता हूँ	बेशक मैं	उस ने कहा	तेरी	और पाकीज़गी बयान करते हैं	तेरी तारीफ़ के साथ
اٰدَمَ الْاَسۡمَآءَ كُلِّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلٰٓى الْمَلٰٓئِكَةِ فَقَالَ اَنۡبِئُوۡنِيۡ									
मुझ को बतलाओ	फिर कहा	फरिश्ते	पर	उन्हें सामने किया	फिर	सब चीज़ें	नाम	आदम (अ)	
بِاَسۡمَآءِ هٰۤؤُلَآءِ اِنۡ كُنۡتُمْ صٰدِقِيۡنَ ۗ (31) قَالُوۡۤا سُبۡحٰنَكَ لَا عِلۡمَ لَنَا									
हमें	इल्म नहीं	तू पाक है	उन्होंने ने कहा	31	सच्चे	तुम हो	अगर	इन	नाम
اِلَّا مَا عَلَّمۡنَا ۗ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيۡمُ الْحَكِيۡمُ ۗ (32) قَالَ يٰۤاٰدَمُ اَنۡبِئِهِمۡ									
उन्हें बता दे	ऐ आदम	उस ने फ़रमाया	32	हिक्मत वाला	जानने वाला	तू	बेशक तू	तू ने हमें सिखाया	जो मगर
بِاَسۡمَآئِهِمۡ ۗ فَلَمَّا اَنۡبَاَهُمۡ بِاَسۡمَآئِهِمۡ ۗ قَالَ اَلَمْ اَقُلۡ لَّكُمْ اِنۡبِئُوۡنِيۡ مَا									
जानता हूँ	कि मैं	तुम्हें	मैं ने कहा	क्या नहीं	उस ने फ़रमाया	उन के नाम	उस ने उन्हें बतलाए	सो जब	उन के नाम
عَرۡبِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرْضِ ۗ وَاَعۡلَمۡ مَا تُبۡدُوۡنَ وَمَا كُنۡتُمْ تَكۡتُمُوۡنَ ۗ (33)									
33	छुपाते हो	तुम	और जो	तुम ज़ाहिर करते हो	जो	और मैं जानता हूँ	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	छुपी हुई बातें
وَإِذۡ قُلۡنَا لِلۡمَلٰٓئِكَةِ اسۡجُدُوۡۤا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوۡۤا اِلَّا اِبۡلِیۡسَ ۗ									
इब्लिस	सिवाए	तो उन्होंने ने सिज्दा किया	आदम को	तुम सिज्दा करो	फ़रिश्तों को	हम ने कहा	और जब		
اَبٰى وَاسۡتَكۡبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيۡنَ ۗ (34) وَقُلۡنَا يٰۤاٰدَمُ اسۡكُنۡ اٰنۡتَ									
तुम	तुम रहो	ऐ आदम	और हम ने कहा	34	काफ़िर	से	और हो गया	उस ने इन्कार किया और तकबुर किया	
وَزَوۡجَكَ الْجَنۡةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغۡدًا حَیۡثُ شِئۡمًا ۗ وَلَا تَقۡرَبَا									
करीब जाना	और न	तुम चाहो	जहां	इत्मिनान से	उस से	और तुम दोनों खाओ	जन्नत	और तुम्हारी बीबी	
هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوۡنَا مِنَ الظَّٰلِمِيۡنَ ۗ (35) فَازۡلَمٰ الشَّيۡطٰنُ									
शैतान	फिर उन दोनों को फुसलाया	35	ज़ालिम (जमा)	से	फिर तुम हो जाओगे	दरख़्त	इस		
عَنۡهَا فَاخۡرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيۡهِ ۗ وَقُلۡنَا اهۡبِطُوۡۤا بَعۡضُكُمۡ									
तुम्हारे बाज़	तुम उतर जाओ	और हम ने कहा	उस में	वह थे	से जो	फिर उन्हें निकलवा दिया	उस से		
لِبَعۡضِ عَدُوٍّ ۗ وَلَكُمْ فِىۡ الْاَرْضِ مُسۡتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ اِلٰى حِيۡنٍ ۗ (36) فَتَلَقٰى									
फिर हासिल कर लिए	36	वक़्त तक	और सामान	ठिकाना	ज़मीन में	और तुम्हारे लिए	दुश्मन	बाज़ के	
اٰدَمَ مِنْ رَبِّهِ كَلِمٰتٍ فَسَابَ عَلَیۡهِ ۗ اِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيۡمُ ۗ (37)									
37	रहम करने वाला	तौवा कुबूल करने वाला	वह	बेशक वह	उस की	फिर उस ने तौवा कुबूल की	कुछ कलिमात	अपना रब से	आदम

और जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं ज़मीन में एक नाइव बनाने वाला हूँ, उन्होंने ने कहा क्या तू उस में बनाएगा जो उस में फ़साद करेगा और खून बहाएगा? और हम तेरी तारीफ़ के साथ तुझ को वे ऐव कहते हैं और तेरी पाकीज़गी बयान करते हैं, उस ने कहा बेशक मैं जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (30) और उस ने आदम (अ) को सब चीज़ों के नाम सिखाए, फिर उन्हें फ़रिश्तों के सामने किया, फिर कहा मुझ को उन के नाम बतलाओ अगर तुम सच्चे हो। (31) उन्होंने ने कहा, तू पाक है, हमें कोई इल्म नहीं मगर (सिर्फ़ वह) जो तू ने हमें सिखा दिया, बेशक तू ही जानने वाला हिक्मत वाला है। (32) उस ने फ़रमाया ऐ आदम! उन्हें उन के नाम बतला दे, सो जब उस ने उन के नाम बतलाए उस ने फ़रमाया क्या मैं ने नहीं कहा था कि मैं जानता हूँ छुपी हुई बातें आस्मानों और ज़मीन की और मैं जानता हूँ जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। (33) और जब हम ने फ़रिश्तों को कहा तुम आदम को सिज्दा करो तो इब्लिस के सिवाए उन्होंने ने सिज्दा किया, उस ने इन्कार किया और तकबुर किया और वह काफ़िरों में से हो गया। (34) और हम ने कहा ऐ आदम! तुम रहो और तुम्हारी बीबी जन्नत में, और तुम दोनों उस में से खाओ जहां से चाहो इत्मिनान से, और न करीब जाना उस दरख़्त के (वरना) तुम हो जाओगे ज़ालिमों में से। (35) फिर शैतान ने उन दोनों को फुसलाया उस से। फिर उन्हें निकलवा दिया उस हालत से जिस में वह थे, और हम ने कहा तुम उतर जाओ, तुम्हारे बाज़, बाज़ के दुश्मन हैं, और तुम्हारे लिए ज़मीन में ठिकाना है और एक वक़्त तक सामाने (ज़िन्दगी) है। (36) फिर आदम (अ) ने हासिल कर लिए अपने रब से कुछ कलिमात, फिर उस ने उस (आदम) की तौवा कुबूल की, बेशक वह तौवा कुबूल करने वाला रहम करने वाला है। (37)

हम ने कहा तुम सब यहां से उतर जाओ, पस जब तुम्हें मेरी तरफ से कोई हिदायत पहुँचे, सो जो चला मेरी हिदायत पर, न उन पर कोई खौफ होगा न वह गमगीन होंगे। (38)

और जिन लोगों ने कुफ़ किया और झुटलाया हमारी आयतों को, वही दोज़ख़ वाले हैं, वह हमेशा उस में रहेंगे। (39)

ऐ बनी इस्राईल (औलादे याकूब)! मेरी नेमत याद करो जो मैं ने तुम्हें बख़शी और पूरा करो मेरे साथ किया गया अ़हद, मैं तुम्हारे साथ किया गया अ़हद पूरा करूँगा, और मुझ ही से डरो। (40)

और उस पर ईमान लाओ जो मैं ने नाज़िल किया, उस की तसदीक़ करने वाला जो तुम्हारे पास है, और सब से पहले उस के काफ़िर न हो जाओ और मेरी आयत के इवज़ थोड़ी कीमत न लो, और मुझ ही से डरो। (41)

और न मिलाओ हक़ को वातिल से, और हक़ को न छुपाओ जब कि तुम जानते हो। (42)

और तुम काइम करो नमाज़ और अदा करो ज़कात और रुकूअ़ करो रुकूअ़ करने वालों के साथ। (43)

क्या तुम लोगों को नेकी का हुक्म देते हो और अपने आप को भूल जाते हो? हालांकि तुम पढ़ते हो किताब, क्या फिर तुम समझते नहीं? (44)

और तुम मदद हासिल करो सब्र और नमाज़ से, और वह बड़ी (दुशवार) है मगर अ़ाजिज़ी करने वालों पर (नहीं) (45)

वह जो समझते हैं कि वह अपने रब के रूबरू होने वाले हैं और यह कि वह उस की तरफ़ लौटने वाले हैं। (46)

ऐ बनी इस्राईल (औलादे याकूब)! तुम मेरी नेमत याद करो जो मैं ने तुम्हें बख़शी और यह कि मैं ने तुम्हें फ़ज़ीलत दी ज़माने वालों पर। (47)

और उस दिन से डरो जिस दिन कोई शख्स किसी का कुछ बदला न वनेगा, और न उस से कोई सिफ़ारिश कुबूल की जाएगी, और न उस से कोई मुआवज़ा लिया जाएगा, और न उन की मदद की जाएगी। (48)

قُلْنَا اهْبِطُوا مِنْهَا جَمِيعًا ۚ فَمَا يَأْتِيَنَّكُمْ مِنِّي هُدًى فَمَنْ تَبِعَ									
हम ने	तुम	यहां से	सब	पस जब	तुम्हें पहुँचे	मेरी तरफ़ से	कोई हिदायत	सो जो	चला
هُدًى فَلَا خَوْفَ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا									
मेरी हिदायत	तो न	कोई खौफ़	उन पर	और न	वह	गमगीन होंगे	38	और जिन लोगों ने	कुफ़ किया
وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٣٩﴾									
और झुटलाया	हमारी आयत	वही	दोज़ख़ वाले	वह	उस में	हमेशा रहेंगे	39		
يُنِنِّي إِسْرَائِيلَ ۚ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَوْفُوا									
ऐ औलाद	याकूब	तुम याद करो	मेरी नेमत	जो	मैं ने बख़शी	तुम्हें	और पूरा करो		
بِعَهْدِي أُوفِ بِعَهْدِكُمْ ۖ وَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ ﴿٤٠﴾ وَآمِنُوا بِمَا									
मेरे साथ किया गया अ़हद	मैं पूरा करूँगा	तुम्हारे साथ किया गया अ़हद	और मुझ ही से	डरो	40	और तुम ईमान लाओ	उस पर जो		
أَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُونُوا أَوْلَٰ كَافِرٍ بِهِ ۖ وَلَا تَشْتَرُوا									
मैं ने नाज़िल किया	तसदीक़ करने वाला	उस की जो	तुम्हारे पास	और न	हो जाओ	पहले	काफ़िर	उस के	और न
بِآيَاتِي ثَمَنًا قَلِيلًا ۚ وَإِيَّايَ فَاتَّقُونِ ﴿٤١﴾ وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ									
मेरी आयत	कीमत	थोड़ी	और मुझ ही से	डरो	41	और न	मिलाओ	हक़	वातिल से
وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤٢﴾ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ									
और न छुपाओ	हक़	जब कि तुम	जानते हो	42	और काइम करो	नमाज़	और अदा करो	ज़कात	
وَارْكَعُوا مَعَ الرُّكَّعِينَ ﴿٤٣﴾ أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ									
और रुकूअ़ करो	साथ	रुकूअ़ करने वाले	43	क्या तुम हुक्म देते हो	लोग	नेकी का	और तुम भूल जाते हो		
أَنْفُسَكُمْ وَأَنْتُمْ تَتْلُونَ الْكِتَابَ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٤٤﴾ وَاسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ									
अपने आप	हालांकि तुम	पढ़ते हो	किताब	क्या फिर नहीं	तुम समझते	44	और तुम मदद हासिल करो	सब्र से	
وَالصَّلَاةِ ۗ وَآئِهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى الْخَاشِعِينَ ﴿٤٥﴾ الَّذِينَ يَظُنُّونَ									
और नमाज़	और वह	बड़ी (दुशवार)	पर	मगर	पर	अ़ाजिज़ी करने वाले	45	वह जो	समझते हैं
أَنَّهُمْ مُّلقُوا رَبِّهِمْ وَأَنَّهُمْ إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ﴿٤٦﴾ يَبْنِي إِسْرَائِيلَ									
कि वह	रूबरू होने वाले	अपना रब	और यह कि वह	उस की तरफ़	लौटने वाले	46	ऐ औलादे	याकूब	
اِذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٤٧﴾									
तुम याद करो	मेरी नेमत	जो	मैं ने बख़शी	तुम पर	और यह कि मैं ने	तुम्हें फ़ज़ीलत दी	पर	ज़माने वाले	47
وَاتَّقُوا يَوْمًا لَا تَجْزِي نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا وَلَا يُقْبَلُ									
और डरो	उस दिन	न बदला वनेगा	कोई शख्स	से	किसी	कुछ	और न	कुबूल की जाएगी	
مِنْهَا شَفَاعَةٌ ۚ وَلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ ۚ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤٨﴾									
उस से	कोई सिफ़ारिश	और न	लिया जाएगा	उस से	कोई मुआवज़ा	और न	उन	मदद की जाएगी	48

ع ۲

ع ۵

وَإِذْ نَجَّيْنَكُمْ مِنَ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ								
अज़ाब	बुरा	वह तुम्हें दुख देते थे	आले फिरऔन	से	हम नें तुम्हें रिहाई दी	और जब		
يُذَبِّحُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي ذَلِكُمْ بَلَاءٌ مِّنْ								
से	आज़माइश	उस	और में	तुम्हारी औरतें	और ज़िन्दा छोड़ देते थे	तुम्हारे बेटे	वह जुबह करते थे	
رَبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿٤٩﴾ وَإِذْ فَرَقْنَا بِكُمْ الْبَحْرَ فَأَنْجَيْنَاكُمْ وَأَغْرَقْنَا								
और हम ने डुबो दिया	फिर तुम्हें बचा लिया	दर्या	तुम्हारे लिए	हम ने फाड़ दिया	और जब	49	बड़ी	तुम्हारा रब
آلِ فِرْعَوْنَ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ﴿٥٠﴾ وَإِذْ وَعَدْنَا مُوسَىٰ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً								
रात	चालीस	मूसा (अ)	हम ने वादा किया	और जब	50	देख रहे थे	और तुम	आले फिरऔन
ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعَجَلَ مِنَ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ ظَلِمُونَ ﴿٥١﴾ ثُمَّ عَفَوْنَا								
हम ने माफ़ कर दिया	फिर	51	ज़ालिम (जमा)	और तुम	उन के बाद	बछड़ा	तुम ने बना लिया	फिर
عَنْكُمْ مِّنْ بَعْدِ ذَلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٥٢﴾ وَإِذْ آتَيْنَا مُوسَىٰ								
मूसा (अ)	हम ने दी	और जब	52	एहसान मानो	ताकि तुम	यह	उस के बाद	तुम से
الْكِتَابَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿٥٣﴾ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ								
अपनी कौम से	मूसा	कहा	और जब	53	हिदायत पा लो	ताकि तुम	और कसौटी	किताब
يَقَوْمِ إِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ أَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعَجَلَ فَتُوبُوا								
सो तुम रुजूअ करो	बछड़ा	तुम ने बना लिया	अपने ऊपर	तुम ने जुल्म किया	वेशक तुम	ऐ कौम		
إِلَىٰ بَارِيكُمْ فَاقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ								
नज़दीक	तुम्हारे लिए	बेहतर	यह	अपनी जानें	सो तुम हलाक करो	पैदा करने वाला	तरफ़	
بَارِيكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿٥٤﴾ وَإِذْ								
और जब	54	रहम करने वाला	तौबा कुबूल करने वाला	वह	वेशक	तुम्हारी	उस ने तौबा कुबूल की	तुम्हारा पैदा करने वाला
قُلْتُمْ يَا مُوسَىٰ لَنْ نُؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ نَرَىٰ اللَّهَ جَهْرَةً فَأَخَذْتُمُ								
फिर तुम्हें आ लिया	खुल्लम खुल्ला	हम देख लें अल्लाह को	जब तक	तुझे	हम हरगिज़ न मानेंगे	ऐ मूसा	तुम ने कहा	
الطَّعْفَةَ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ﴿٥٥﴾ ثُمَّ بَعَثْنَاكُمْ مِنْ بَعْدِ مَوْتِكُمْ								
तुम्हारी मौत	बाद	से	हम ने तुम्हें ज़िन्दा किया	फिर	55	तुम देख रहे थे	और तुम	विजली की कड़क
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٥٦﴾ وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَأَنْزَلْنَا								
और हम ने उतारा	बादल	तुम पर	और हम ने साया किया	56	एहसान मानो	ताकि तुम		
عَلَيْكُمْ الْمَنَّانَ وَالسَّلْوىٰ كُلُّوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ								
हम ने तुम्हें दी	जो	पाक चीज़ें	से	तुम खाओ	और सलवा	मन्न	तुम पर	
﴿٥٧﴾ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَكِن كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ								
57	वह जुल्म करते थे	अपनी जानें	थे	और लेकिन	उन्होंने नें जुल्म किया हम पर	और नहीं		

और जब हम नें तुम्हें आले फिरऔन से रिहाई दी, वह तुम्हें दुख देते थे बुरा अज़ाब। और वह तुम्हारे बेटों को जुबह करते थे और तुम्हारी औरतों को ज़िन्दा छोड़ देते थे, और उस में तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ी आज़माइश थी। (49)

और जब हम नें तुम्हारे लिए फाड़ दिया दर्या, फिर हम ने तुम्हें बचा लिया और आले फिरऔन को डुबो दिया, और तुम देख रहे थे। (50)

और जब हम ने मूसा (अ) से चालीस रातों का वादा किया, फिर तुम ने बछड़े को उन के बाद (मावूद) बना लिया, और तुम ज़ालिम हुए। (51)

फिर हम ने तुम्हें उस के बाद माफ़ कर दिया ताकि तुम एहसान मानो। (52)

और जब हम ने मूसा को किताब दी और कसौटी (हक़ और बातिल के दरमियान फ़रक़ करने वाला) ताकि तुम हिदायत पा लो। (53)

और जब मूसा (अ) ने अपनी कौम से कहा, ऐ कौम! वेशक तुम ने अपने ऊपर जुल्म किया बछड़े को (मावूद) बना कर, सो तुम अपने पैदा करने वाले की तरफ़ रुजूअ करो, अपनों को हलाक करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक, सो उस ने तुम्हारी तौबा कुबूल कर ली, वेशक वह तौबा कुबूल करने वाला रहम करने वाला है। (54)

और जब तुम ने कहा ऐ मूसा! हम तुझे हरगिज़ न मानेंगे जब तक अल्लाह को हम खुल्लम खुल्ला न देख लें, फिर तुम्हें विजली की कड़क ने आ लिया, और तुम देख रहे थे। (55)

फिर हम ने तुम्हें तुम्हारी मौत के बाद ज़िन्दा किया ताकि तुम एहसान मानो। (56)

और हम ने तुम पर बादल का साया किया और हम ने तुम पर मन्न और सलवा उतारा, वह पाक चीज़ें खाओ जो हम ने तुम्हें दी। और उन्होंने नें हम पर जुल्म नहीं किया और लेकिन वह अपनी जानों पर जुल्म करते थे। (57)

और जब हम ने कहा तुम दाखिल हो जाओ उस बस्ती में, फिर उस में जहां से चाहो बाफरागत खाओ और दरवाज़े से दाखिल हो सिज्दा करते हुए, और कहो बख्श दे, हम तुम्हें तुम्हारी ख़ताएं बख्श देंगे, और अ़नक़रीब ज़ियादा देंगे नेकी करने वालों को। (58)

फिर ज़ालिमों ने दूसरी बात से उस बात को बदल डाला जो कही गई थी उन्हें, फिर हम ने ज़ालिमों पर आस्मान से अ़ज़ाब उतारा, क्योंकि वह नाफ़रमानी करते थे। (59)

और जब मूसा (अ) ने अपनी क़ौम के लिए पानी मांगा, फिर हम ने कहा अपना अ़सा पत्थर पर मारो, तो फूट पड़े उस से बारह चश्मे, हर क़बीले ने अपना घाट जान लिया, तुम खाओ और पियो अल्लाह के रिज़्क से, और ज़मीन में न फिरो फ़साद मचाते। (60)

और जब तुम ने कहा ऐ मूसा! हम एक खाने पर हरगिज़ सब्द न करेंगे, आप हमारे लिए अपने रब से दुआ करें कि हमारे लिए निकाले जो ज़मीन उगाती है, कुछ तरकारी और ककड़ी और गन्दुम और मसूर और प्याज़। उस ने कहा क्या तुम बदलना चाहते हो? वह जो अदना है उस से जो बेहतर है, तुम शहर में उतरो बेशक तुम्हारे लिए होगा जो तुम मांगते हो, और उन पर ज़िल्लत और मोहताजी डाल दी गई, और वह लौटे अल्लाह के ग़ज़ब के साथ, यह इस लिए हुआ कि वह अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे और नाहक़ नबियों को क़त्ल करते थे, यह इस लिए हुआ कि उन्होंने ने नाफ़रमानी की और वह हद से बढ़ते थे। (61)

وَإِذْ قُلْنَا ادْخُلُوا هَذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ								
तुम चाहो	जहां	उस से	फिर खाओ	बस्ती	उस	तुम दाखिल हो	हम ने कहा	और जब
رَعَدًا وَاَدْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُولُوا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ								
तुम्हें	हम बख्श देंगे	बख्शदे	और कहो	सिज्दा करते हुए	दरवाज़ा	और तुम दाखिल हो	बाफरागत	
حَطِيئِكُمْ وَسَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٨﴾ فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا قَوْلًا								
बात	जिन लोगों ने जुल्म किया (ज़ालिम)	फिर बदल डाला	58	नेकी करने वाले	और अ़नक़रीब ज़ियादा देंगे	तुम्हारी ख़ताएं		
غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا رِجْزًا								
अ़ज़ाब	जिन लोगों ने जुल्म किया (ज़ालिम)	पर	फिर हम ने उतारा	उन्हें	कही गई	वह जो कि	दूसरी	
مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٥٩﴾ وَإِذِ اسْتَسْقَىٰ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ								
अपनी क़ौम के लिए	मूसा (अ)	पानी मांगा	और जब	59	वह नाफ़रमानी करते थे	क्योंकि	आस्मान	से
فَقُلْنَا اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا								
चश्मे	बारह	उस से	तो फूट पड़े	पत्थर	अपना अ़सा	मारो	फिर हम ने कहा	
قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ كُلُوا وَاشْرَبُوا مِنْ رِزْقِ اللَّهِ								
अल्लाह के दिये हुए रिज़्क से	और पियो	तुम खाओ	अपना घाट	हर क़ौम	जान लिया			
وَلَا تَعَثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٦٠﴾ وَإِذْ قُلْتُمْ يَا مُوسَىٰ								
ऐ मूसा	तुम ने कहा	और जब	60	फ़साद मचाते	ज़मीन	में	और न फिरो	
لَنْ نَصْبِرَ عَلَىٰ طَعَامٍ وَاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا								
उस से जो	निकाले हमारे लिए	अपना रब	हमारे लिए	दुआ करें	एक	खाना	पर	हरगिज़ न सब्द करेंगे
تُنْبِتُ الْأَرْضُ مِنْ بَقْلِهَا وَقِثَّائِهَا وَفُومِهَا وَعَدَسِهَا								
और मसूर	और गन्दुम	और ककड़ी	तरकारी	से (कुछ)	ज़मीन	उगाती है		
وَبَصْلِهَا قَالِ اتَّسَبَدْلُونَ الَّذِي هُوَ أَدْنَىٰ بِالَّذِي هُوَ خَيْرٌ								
बेहतर	वह	उस से जो	वह अदना	जो कि	क्या तुम बदलना चाहते हो	उस ने कहा	और प्याज़	
إِهْبِطُوا مِصْرًا فَإِنَّ لَكُمْ مَّا سَأَلْتُمْ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ								
ज़िल्लत	उन पर	और डालदी गई	जो तुम मांगते हो	तुम्हारे लिए	पस बेशक	शहर	तुम उतरो	
وَالْمَسْكَنَةَ وَبِأَعْوَابِهِمْ مِّنَ اللَّهِ ذَلِكِ بِأَنَّهُمْ								
इस लिए कि वह	यह	अल्लाह	से	ग़ज़ब के साथ	और वह लौटे	और मोहताजी		
كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّنَ								
नबियों को	और क़त्ल करते थे	अल्लाह की आयतों का	वह इन्कार करते	वह थे				
بِغَيْرِ الْحَقِّ ذَلِكِ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿٦١﴾								
61	हद से बढ़ते	और थे	उन्होंने ने नाफ़रमानी की	इस लिए कि	यह	नाहक़		

۱  
۲  
۱

۴  
۲

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئِينَ						
और साबी	और नसारा	यहूदी हुए	और जो लोग	ईमान लाए	वेशक जो लोग	
مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ						
उन का अजर	तो उन के लिए	नेक	और अमल करे	और रोज़े आखिरत	अल्लाह पर	ईमान लाए जो
عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾ وَإِذْ أَخَذْنَا						
हम ने लिया	और जब	62	ग़मगीन होंगे	वह और न	उन पर कोई ख़ौफ़	और न उन का रब पास
مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمْ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَكُمْ بِقُوَّةٍ						
मज़बूती से	जो हम ने तुम्हें दिया	पकड़ो	कोहे तूर	तुम्हारे ऊपर	और हम ने उठाया	तुम से इक्कार
وَادْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ بَعْدِ ذَلِكَ						
उस	बाद	तुम फिर गए	फिर	63	परहेज़गार हो जाओ	ताकि तुम उस में जो और याद रखो
فَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٦٤﴾						
64	नुक्सान उठाने वाले	से	तो तुम थे	और उस की रहमत	तुम पर	अल्लाह का फ़ज़ल पस अगर न
وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِينَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ						
उन से	तब हम ने कहा	हफ़ते के दिन में	तुम से	ज़ियादती की	जिन्होंने ने	तुम ने जान लिया और अलबत्ता
كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ﴿٦٥﴾ فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا						
सामने वालों के लिए	इव्रत	फिर हम ने उसे बनाया	65	ज़लील	बन्दर	तुम हो जाओ
وَمَا خَلَفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٦٦﴾ وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ						
अपनी कौम से	मूसा (अ)	कहा	और जब	66	परहेज़गारों के लिए	और नसीहत उस के पीछे और जो
إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَذْبَحُوا بَقْرَةً قَالُوا أَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا						
मज़ाक	क्या तुम करते हो हम से	वह कहने लगे	एक गाय	तुम जुबह करो	कि	तुम्हें हुकम देता है वेशक अल्लाह
قَالَ أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٦٧﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا						
हमारे लिए	दुआ करें	उन्होंने ने कहा	67	जाहिलों से	कि हो जाऊँ	अल्लाह की मैं पनाह लेता हूँ उस ने कहा
رَبِّكَ يُبَيِّنُ لَنَا مَا هِيَ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقْرَةٌ						
गाय	कि वह	फ़रमाता है	वेशक वह	उस ने कहा	कैसी है वह	हमें वतलाए अपना रब
لَّا فَارِضٌ وَلَا بَكْرٌ عَوَانٌ بَيْنَ ذَلِكَ فَافْعَلُوا مَا تُؤْمَرُونَ ﴿٦٨﴾						
68	जो तुम्हें हुकम दिया जाता है	पस करो	उस	दरमियान	जवान	छोटी उम्र और न न बूढ़ी
قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبِّكَ يُبَيِّنُ لَنَا مَا لَوْنُهَا قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ						
फ़रमाता है	वेशक वह	उस ने कहा	कैसा उस का रंग	हमें	वह वतलादे	अपना रब हमारे लिए दुआ करें उन्होंने ने कहा
إِنَّهَا بَقْرَةٌ صَفْرَاءٌ فَاقْعُ لَوْنَهَا تَسْرُ النَّظِيرِينَ ﴿٦٩﴾						
69	देखने वाले	अच्छी लगती	उस का रंग	गहरा	ज़र्द रंग	एक गाय कि वह

वेशक जो लोग ईमान लाए और जो यहूदी हुए और नसरानी और साबी, जो ईमान लाए अल्लाह पर और रोज़े आखिरत पर और नेक अमल करे तो उन के लिए उन के रब के पास उन का अजर है, और उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे। (62)

और जब हम ने तुम से इक्कार लिया, और हम ने तुम्हारे ऊपर कोहे तूर उठाया, जो हम ने तुम्हें दिया है वह मज़बूती से पकड़ो, और जो उस में है उसे याद रखो ताकि तुम परहेज़गार हो जाओ। (63)

फिर उस के बाद तुम फिर गए, पस अगर अल्लाह का फ़ज़ल न होता तुम पर और उस की रहमत तो तुम नुक्सान उठाने वालों में से थे। (64)

और अलबत्ता तुम ने (उन लोगों को) जान लिया जिन्होंने ने तुम में से हफ़ते के दिन में ज़ियादती की, तब हम ने उन से कहा तुम ज़लील बन्दर हो जाओ। (65)

फिर हम ने उसे सामने वालों के लिए और पीछे आने वालों के लिए इव्रत बनाया और नसीहत परहेज़गारों के लिए। (66)

और जब मूसा (अ) ने अपनी कौम से कहा वेशक अल्लाह तुम्हें हुकम देता है कि तुम एक गाय जुबह करो, वह कहने लगे क्या तुम हम से मज़ाक करते हो? उस ने कहा मैं अल्लाह की पनाह लेता हूँ (इस से) कि मैं जाहिलों से हो जाऊँ। (67)

उन्होंने ने कहा अपने रब से हमारे लिए दुआ करें कि वह हमें वतलाए वह कैसी है? उस ने कहा वेशक वह फ़रमाता है कि वह गाय न बूढ़ी है और न छोटी उम्र की, उस के दरमियान जवान है, पस तुम्हें जो हुकम दिया जाता है करो। (68)

उन्होंने ने कहा हमारे लिए दुआ करें अपने रब से कि वह हमें वतला दे उस का रंग कैसा है? उस ने कहा वेशक वह फ़रमाता है कि वह एक गाय है ज़र्द रंग की, उस का रंग खूब गहरा है, देखने वालों को अच्छी लगती है। (69)

उन्होंने ने कहा हमारे लिए अपने रब से दुआ करें वह हमें बतला दे वह कैसी है? क्योंकि गाय में हम पर इशतिबाह हो गया, और अगर अल्लाह ने चाहा तो बेशक हम ज़रूर हिदायत पा लेंगे। (70)

उस ने कहा बेशक वह फरमाता है कि वह एक गाय है न सधी हो, न ज़मीन जोतती न खेती को पानी देती, वे ऐब है, उस में कोई दाग नहीं, वह बोले अब तुम ठीक बात लाए, फिर उन्होंने ने उसे जुबह किया, और वह लगते न थे कि वह (जुबह) करें। (71)

और जब तुम ने एक आदमी को कत्ल किया फिर तुम उस में झगड़ने लगे और अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था जो तुम छुपाते थे। (72)

फिर हम ने कहा तुम उस (मकतूल) को गाय का एक टुकड़ा मारो, इस तरह अल्लाह मुर्दा को ज़िन्दा करेगा, वह तुम्हें दिखाता है अपनी निशानियां ताकि तुम ग़ौर करो। (73)

फिर उस के बाद तुम्हारे दिल सख्त हो गए, सो वह पत्थर जैसे हो गए या उस से ज़ियादा सख्त, और बेशक बाज़ पत्थरों से नहरें फूट निकलती हैं, और बेशक उन में से बाज़ फट जाते हैं तो निकलता है उन से पानी, और उन में से बाज़ अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं, और अल्लाह उस से बेखबर नहीं जो तुम करते हो। (74)

फिर क्या तुम तबक्को रखते हो? कि वह मान लेंगे तुम्हारी खातिर, और उन में से एक फ़रीक अल्लाह का कलाम सुनता है फिर वह उस को बदल डालते हैं उस को समझ लेने के बाद, और वह जानते हैं। (75)

और जब वह उन लोगों से मिलते हैं जो ईमान लाए तो कहते हैं हम ईमान लाए, और जब उन के बाज़ दूसरों के पास अकेले होते हैं तो कहते हैं क्या तुम उन्हें वह बतलाते हो जो अल्लाह ने तुम पर ज़ाहिर किया ताकि वह उस के ज़रीए तुम्हारे रब के सामने हुज्जत लाएं तुम पर, तो क्या तुम नहीं समझते? (76)

قَالُوا اِدْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ ۗ اِنَّ الْبَقْرَ تَشَبَهَ عَلَيْنَا ۗ										
हम पर	इशतिबाह हो गया	गाय	क्योंकि	वह कैसी	हमें	वह बतला दे	अपना रब	हमारे लिए	दुआ करें	उन्होंने ने कहा
وَإِنَّا اِنْ شَاءَ اللهُ لَمُهْتَدُونَ ﴿٧٠﴾ قَالَ اِنَّهُ يَقُولُ اِنَّهَا بَقْرَةٌ										
एक गाय	कि वह	फरमाता है	बेशक वह	उस ने कहा	70	ज़रूर हिदायत पा लेंगे	अल्लाह ने चाहा	अगर	और बेशक हम	
لَا ذَلُولٌ تُثِيرُ الْاَرْضَ وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ مُسَلَّمَةً لَا شِئَةَ فِيهَا ۗ										
उस में	कोई दाग	नहीं	वे ऐब	खेती	पानी देती	और न	ज़मीन जोतती	न सधी हुई		
قَالُوا اَلَنْ جِئْتِ بِالْحَقِّ فَدَبَحْنَاهَا وَمَا كَادُوا يَفْعَلُونَ ﴿٧١﴾										
71	वह करें	और वह लगते न थे	फिर उन्होंने ने जुबह किया उस को	ठीक बात	तुम लाए	अब	वह बोले			
وَاذْ قَاتَلْتُمْ نَفْسًا فَاذْرُءْتُمْ فِيهَا ۗ وَاللهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ										
जो तुम थे	ज़ाहिर करने वाला	और अल्लाह	उस में	फिर तुम झगड़ने लगे	एक आदमी	तुम ने कत्ल किया	और जब			
تَكْتُمُونَ ﴿٧٢﴾ فقلنا اضربوه ببعضها ۗ كذلك يحيى الله الموتى										
मुर्दे	ज़िन्दा करेगा अल्लाह	इस तरह	उस का टुकड़ा	उसे मारो	फिर हम ने कहा	72	छुपाते			
وَيُرِيكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٧٣﴾ ثُمَّ قَسَتْ قُلُوْبُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ										
बाद	तुम्हारे दिल	सख्त हो गए	फिर	73	ग़ौर करो	ताकि तुम	अपने निशान	और तुम्हें दिखाता है		
ذٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ قَسْوَةً ۗ وَاِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ										
पत्थर	से	और बेशक	सख्त	उस से ज़ियादा	या	पत्थर जैसे	सो वह	उस		
لَمَّا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهَارُ ۗ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَّا يَشَقُّ فَيَخْرُجُ مِنْهُ										
उस से	तो निकलता है	फट जाते हैं	अलबत्ता जो	उस से (बाज़)	और बेशक	नहरें	उस से	फूट निकलती है	अलबत्ता	
الْمَآءِ ۗ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَّا يَهْبِطُ مِنْ حَشِيَةِ اللهِ وَمَا اللهُ بِغَافِلٍ										
बेखबर	और नहीं अल्लाह	अल्लाह का डर	से	अलबत्ता गिरता है	उस से	और बेशक	पानी			
عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٧٤﴾ اَفَتَطْمَعُونَ اَنْ يُؤْمِنُوْا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ										
और था	तुम्हारे लिए	मान लेंगे	कि	क्या फिर तुम तबक्को रखते हो	74	तुम करते हो	से जो			
فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُونَ كَلِمَ اللهِ ثُمَّ يَحَرِّفُوْنَهُ مِّنْۢ بَعْدِ										
बाद	वह बदल डालते हैं उस को	फिर	अल्लाह का कलाम	वह सुनते हैं	उन से	एक फ़रीक				
مَا عَقَلُوْهُ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾ وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْا										
वह कहते हैं	ईमान लाए	जो लोग	वह मिलते हैं	और जब	75	जानते हैं	और वह	जो उन्होंने ने समझ लिया		
اٰمِنًا ۗ وَاِذَا خَلَا بِبَعْضِهِمْ اِلٰى بَعْضٍ قَالُوْا اتَّخَذْتُوْنَهُمْ بِمَآ										
जो	क्या बतलाते हो उन्हें	कहते हैं	बाज़	पास	उन के बाज़	अकेले होते हैं	और जब	हम ईमान लाए		
فَتَحَّ اللهُ عَلٰىكُمْ لِيَحَاجُّوْكُمْ بِهٖ عِنْدَ رَبِّكُمْ ۗ اَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٧٦﴾										
76	तो क्या तुम नहीं समझते	तुम्हारा रब	सामने	उस के ज़रीए	ताकि वह हुज्जत लाएं तुम पर	तुम पर	ज़ाहिर किया अल्लाह ने			

أَوَلَا يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٧﴾							
77	वह ज़ाहिर करते हैं	और जो	जो वह छुपाते हैं	जानता है	कि अल्लाह	वह जानते	क्या नहीं
وَمِنْهُمْ أُمِّيُونَ لَا يَعْلَمُونَ الْكِتَابَ إِلَّا أَمَانِيَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ﴿٧٨﴾							
मगर	वह	और नहीं	आजूएं	सिवाए	किताब	वह नहीं जानते	अनपढ़ और उन में
فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ يَكْتُمُونَ الْكِتَابَ بِأَيْدِيهِمْ ثُمَّ يَقُولُونَ هَذَا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ لَيْسَتْ رُؤَا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَوَيْلٌ لِمَنْ كَتَبَ تَمَسْنَا النَّارَ إِلَّا أَيَّامًا مَعْدُودَةً قُلْ اتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللَّهِ عَهْدًا فَلَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ عَهْدَهُ أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨٠﴾							
फिर	अपने हाथों से	किताब	लिखते हैं	उन के लिए जो	सो खराबी	78	गुमान से काम लेते हैं
सो खराबी	थोड़ी	कीमत	उस से	ताकि वह हासिल करें	अल्लाह के पास	से	यह वह कहते हैं
لَهُمْ مِمَّا كَتَبَتْ أَيْدِيهِمْ وَوَيْلٌ لَهُمْ مِمَّا يَكْسِبُونَ ﴿٧٩﴾ وَقَالُوا							
और उन्होंने ने कहा	79	वह कमाते हैं	उस से जो	उन के लिए	और खराबी	उन के हाथ	लिखा उस से जो उन के हाथों ने लिखा, और उन के लिए खराबी है उस से जो वह कमाते हैं। (79)
لَنْ تَمَسَّنَا النَّارَ إِلَّا أَيَّامًا مَعْدُودَةً قُلْ اتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللَّهِ عَهْدًا فَلَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ عَهْدَهُ أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨٠﴾							
अल्लाह के पास	क्या तुम ने लिया	कह दो	चन्द	दिन	सिवाए	आग	हरगिज़ नहीं छुएगी
जो नहीं	अल्लाह पर	तुम कहते हो	या	अपना वादा	खिलाफ करेगा अल्लाह	कि हरगिज़ न	कोई वादा
تَعْلَمُونَ ﴿٨٠﴾ بَلَىٰ مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَأَحَاطَتْ بِهِ خَطِيئَتُهُ فَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٨١﴾							
उस की खताएं	उस को	और घेर लिया	कोई बुराई	कमाई	जिस ने	क्यों नहीं	80 तुम जानते
فَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٨١﴾							
और जो लोग	81	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	आग वाले (दोज़खी)	पस यही लोग	क्यों नहीं! जिस ने कमाई कोई बुराई और उस को उस की खताओं ने घेर लिया पस यही लोग दोज़खी हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (81)
أَمِنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٨٢﴾							
वह	जन्नत वाले	यही लोग	अच्छे अमल	और उन्होंने ने किए	ईमान लाए	और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए यही लोग जन्नत वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (82)	
لَا تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ ۖ وَالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا ۗ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ ۗ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْكُمْ وَأَنْتُمْ مُّعْرِضُونَ ﴿٨٣﴾							
और करावतदार	हुस्ने सुलूक	और माँ बाप से	सिवाए अल्लाह	तुम इबादत न करना	और यतीम (जमा)	और मिस्कीन (जमा)	और करावतदारों, यतीमों और मिस्कीनों से। और तुम कहना लोगों से अच्छी बात, और नमाज़ काइम करना और ज़कात देना, फिर तुम फिर गए तुम में से चन्द एक के सिवा, और तुम फिर जाने वाले हो। (83)
अच्छी बात	लोगों से	और तुम कहना	और मिस्कीन (जमा)	और यतीम (जमा)	और तुम काइम करना	और तुम काइम करना	
फिर	ज़कात	और देना	नमाज़	और तुम काइम करना	और तुम काइम करना	और तुम काइम करना	
ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْكُمْ وَأَنْتُمْ مُّعْرِضُونَ ﴿٨٣﴾							
83	फिर जाने वाले	और तुम	तुम में से	चन्द एक	सिवाए	तुम फिर गए	

क्या वह नहीं जानते कि अल्लाह जानता है जो वह छुपाते हैं और जो वह ज़ाहिर करते हैं। (77)

और उन में कुछ अनपढ़ हैं जो किताब नहीं जानते सिवाए चन्द आजूओं के, और वह सिर्फ गुमान से काम लेते हैं। (78)

सो उन के लिए खराबी है जो वह किताब लिखते हैं अपने हाथों से, फिर कहते हैं यह अल्लाह के पास से है ताकि उस के ज़रीए हासिल कर लें थोड़ी सी कीमत, सो उन के लिए खराबी है उस से जो उन के हाथों ने लिखा, और उन के लिए खराबी है उस से जो वह कमाते हैं। (79)

और उन्होंने ने कहा कि हमें आग हरगिज़ न छुएगी सिवाए गिनती के चन्द दिन, कह दो, क्या तुम ने अल्लाह के पास से कोई वादा लिया है कि अल्लाह हरगिज़ अपने वादे के खिलाफ नहीं करेगा या तुम अल्लाह पर वह कहते हो जो तुम नहीं जानते? (80)

क्यों नहीं! जिस ने कमाई कोई बुराई और उस को उस की खताओं ने घेर लिया पस यही लोग दोज़खी हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (81)

और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए यही लोग जन्नत वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (82)

और जब हम ने लिया बनी इस्राईल से पुख़्ता अ़हद कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करना, और माँ बाप से हुस्ने सुलूक करना, और करावतदारों, यतीमों और मिस्कीनों से। और तुम कहना लोगों से अच्छी बात, और नमाज़ काइम करना और ज़कात देना, फिर तुम फिर गए तुम में से चन्द एक के सिवा, और तुम फिर जाने वाले हो। (83)

और फिर जब हम ने तुम से पुख्ता अहद लिया कि तुम अपनों के खून न बहाओगे और न तुम अपनों को अपनी बसतियों से निकालोगे, फिर तुम ने इकरार किया और तुम गवाह हो। (84)

फिर तुम वह लोग हो जो कत्ल करते हो अपनों को, और अपने एक फ़रीक़ को उन के बतन से निकालते हो, तुम चढ़ाई करते हो उन पर गुनाह और सरकशी से, और अगर वह तुम्हारे पास कैदी आए तो बदला दे कर उन्हें छुड़ाते हो, हालांकि उन का निकालना तुम पर हराम किया गया था, तो क्या तुम किताब के बाज़ हिस्से पर ईमान लाते हो और बाज़ हिस्से का इन्कार करते हो? सो तुम में जो ऐसा करे उस की क्या सज़ा है? सिवाए इस के कि दुनिया की ज़िन्दगी में रुसवाई और वह क़ियामत के दिन सख़्त अज़ाब की तरफ़ लौटाए जाएंगे, और जो तुम करते हो अल्लाह उस से बेख़बर नहीं। (85)

यही लोग हैं जिन्होंने ख़रीद ली आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी, सो उन से अज़ाब हलका न किया जाएगा, और न वह मदद किए जाएंगे। (86)

और अलबत्ता हम ने मूसा (अ) को किताब दी, और हम ने उस के वाद पै दर पै भेजे रसूल, और हम ने मरयम के बेटे ईसा (अ) को खुली निशानियां दी और उस की मदद की जिब्राईल (अ) के ज़रीए, क्या फिर जब तुम्हारे पास कोई रसूल उस के साथ आया जो तुम्हारे नफ़्स न चाहते थे तो तुम ने तकब्बुर किया, सो एक गिरोह को तुम ने झुटलाया और एक गिरोह को तुम कत्ल करने लगे। (87)

और उन्होंने ने कहा हमारे दिल पर्दे में हैं, बल्कि उन पर उन के कुफ़्र के सबब अल्लाह की लानत है, सो थोड़े हैं जो ईमान लाते हैं। (88)

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُونَ دِمَاءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُونَ						
तुम निकालोगे	और न	अपनों के खून	न तुम बहाओगे	तुम से पुख्ता अहद	हम ने लिया	और जब
أَنْفُسَكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ أَقْرَرْتُمْ وَأَنْتُمْ تَشْهَدُونَ (84)						
84	गवाह हो	और तुम	तुम ने इकरार किया	फिर	अपनी बसतियां से	अपनों
ثُمَّ أَنْتُمْ هَؤُلَاءِ تَقْتُلُونَ أَنْفُسَكُمْ وَتُخْرِجُونَ فَرِيقًا مِنْكُمْ						
अपने से	एक फ़रीक़	और तुम निकालते हो	अपनों को	कत्ल करते हो	वह लोग	तुम फिर
مِّنْ دِيَارِهِمْ تَظْهَرُونَ عَلَيْهِم بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَإِنْ يَأْتُوكُمْ أُسْرَى تَفْدُوهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ إِخْرَاجُهُمْ						
निकालना उन का	तुम पर	हराम किया गया	हालांकि वह	तुम बदला दे कर छुड़ाते हो उन्हें	कैदी	वह आए तुम्हारे पास
أَفْتُومِنُونَ بِبَعْضِ الْكِتَابِ وَتَكْفُرُونَ بِبَعْضٍ فَمَا جَزَاءُ						
सज़ा	सो क्या	बाज़ हिस्से	और इन्कार करते हो	किताब	बाज़ हिस्से	तो क्या तुम ईमान लाते हो
مَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ مِنْكُمْ إِلَّا خِزْيٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا						
दुनिया	ज़िन्दगी	में	रुसवाई	सिवाए	तुम में से	यह करे जो
وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يُرَدُّونَ إِلَىٰ أَشَدِّ الْعَذَابِ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا						
उस से जो	बेख़बर	अल्लाह	और नहीं	सख़्त अज़ाब	तरफ़	वह लौटाए जाएंगे और क़ियामत के दिन
تَعْمَلُونَ (85) أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرُوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ						
आख़िरत के बदले	दुनिया	ज़िन्दगी	ख़रीद ली	वह जिन्होंने ने	यही लोग	85 तम करते हो
فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ (86)						
86	मदद किए जाएंगे	वह	और न	अज़ाब	उन से	सो हलका न किया जाएगा
وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَقَفَّيْنَا مِنْ بَعْدِهِ بِالرُّسُلِ						
रसूल	उस के बाद	और हम ने पै दर पै भेजे	किताब	मूसा	और अलबत्ता हम ने दी	
وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنَاتِ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ						
जिब्राईल (अ) के ज़रीए	और उस की मदद की	खुली निशानियां	मरयम का बेटा	ईसा (अ)	और हम ने दी	
أَفَكَلَّمَا جَاءَكُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَىٰ أَنْفُسُكُمْ اسْتَكْبَرْتُمْ						
तुम ने तकब्बुर किया	तुम्हारे नफ़्स	न चाहते	उस के साथ जो	कोई रसूल	आया तुम्हारे पास	क्या फिर जब
فَفَرِيقًا كَذَّبْتُمْ وَفَرِيقًا تَقْتُلُونَ (87) وَقَالُوا قُلُوبُنَا غُلْفٌ						
पर्दे में	हमारे दिल	और उन्होंने ने कहा	87	तुम कत्ल करने लगे	और एक गिरोह	तुम ने झुटलाया सो एक गिरोह
بَلْ لَعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيلًا مَّا يُؤْمِنُونَ (88)						
88	जो ईमान लाते हैं	सो थोड़े	उन के कुफ़्र के सबब	उन पर लानत अल्लाह की	बल्कि	



وَلَمَّا جَاءَهُمْ كِتَابٌ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ <sup>٧</sup>							
उन के पास	उस की जो	तसदीक करने वाली	अल्लाह के पास	से	किताब	उन के पास आई	और जब
وَكَانُوا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُونَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا <sup>٨</sup> فَلَمَّا							
सो जब	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)		पर	फ़्तह मांगते	इस से पहले	और वह थे	
جَاءَهُمْ مَا عَرَفُوا كَفَرُوا بِهِ فَلَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الْكَافِرِينَ (89)							
89	काफ़िर (जमा)	पर	सो लानत अल्लाह की	उस के मुन्किर हो गए	वह पहचानते थे	जो	आया उन के पास
بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهِ أَنْفُسَهُمْ أَنْ يَكْفُرُوا بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ بَغْيًا							
ज़िद	नाज़िल किया अल्लाह ने	उस से जो	वह मुन्किर हुए	कि	अपने आप	उस के बदले	वेच डाला उन्होंने ने
أَنْ يُنَزِّلَ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ عَلَى مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ <sup>٩</sup>							
अपने बन्दे	से	जो वह चाहता है	पर	अपना फ़ज़ल	से	नाज़िल करता है अल्लाह	कि
فَبَاءُوا بِغَضَبٍ عَلَى غَضَبٍ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ							
अज़ाब	और काफ़िरों के लिए		ग़ज़ब	पर	ग़ज़ब	सो वह कमा लाए	
مُّهَيِّنٌ (90) وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ امْنُوا بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا							
वह कहते हैं	नाज़िल किया अल्लाह ने	उस पर जो	तुम ईमान लाओ	उन्हें	और जब कहा जाता है	90	रुसवा करने वाला
نُؤْمِنُ بِمَا أَنْزَلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُونَ بِمَا وَرَاءَهُ <sup>١٠</sup> وَهُوَ الْحَقُّ							
हक़	हालाकि वह	उस के अ़लावा	उस से जो	और इन्कार करते हैं	हम पर	नाज़िल किया गया	उस पर जो हम ईमान लाते हैं
مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ <sup>١١</sup> قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُونَ أَنْبِيَاءَ اللَّهِ							
अल्लाह के नबी (जमा)	तुम क़त्ल करते रहे	सो क्यों	कह दें	उन के पास	उस की जो	तसदीक करने वाला	
مِنْ قَبْلُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ (91) وَلَقَدْ جَاءَكُمْ							
तुम्हारे पास आए	और अलबत्ता	91	मोमिन (जमा)	तुम हो	अगर	इस से पहले	
مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ							
और तुम	उस के बाद	बछड़ा	तुम ने बना लिया	फिर	खुली निशानियों के साथ	मूसा	
ظَلْمُونَ (92) وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ <sup>١٢</sup>							
कोहे तूर	तुम्हारे ऊपर	और हम ने बुलन्द किया	तुम से पुख़्ता अ़हद	हम ने लिया	और जब	92	ज़ालिम (जमा)
خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَأَسْمِعُوا قَالُوا سَمِعْنَا							
हम ने सुना	वह बोले	और सुनो	मज़बूती से	जो हम ने दिया तुम्हें	पकड़ो		
وَعَصَيْنَا وَأَشْرَبُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ <sup>١٣</sup>							
वसवव उन के कुफ़्र	बछड़ा	उन के दिल	में	और रचा दिया गया	और नाफ़रमानी की		
قُلْ بِئْسَمَا يَأْمُرُكُمْ بِهِ إِيمَانُكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ (93)							
93	मोमिन	अगर तुम हो	ईमान तुम्हारा	उस का	तुम्हें हुक़्म देता है	क्या ही बुरा जो	कह दें

और जब उन के पास अल्लाह की तरफ़ से किताब आई, उस की तसदीक करने वाली जो उन के पास है और वह इस से पहले काफ़िरों पर फ़्तह मांगते थे, सो जब उन के पास वह आया जो वह पहचानते थे वह उस के मुन्किर हो गए, सो काफ़िरों पर अल्लाह की लानत। (89)

बुरा है जिस के बदले उन्होंने ने अपने आप को बेच डालो कि वह उस के मुन्किर हो गए जो अल्लाह ने नाज़िल किया इस ज़िद से कि अल्लाह नाज़िल करता है अपने फ़ज़ल से अपने जिस बन्दे पर वह चाहता है, सो कमा लाए ग़ज़ब पर ग़ज़ब, और काफ़िरों के लिए रुसवा करने वाला अज़ाब है। (90)

और जब उन से कहा जाता है कि तुम ईमान लाओ उस पर जो अल्लाह ने नाज़िल किया तो कहते हैं हम उस पर ईमान लाते हैं जो हम पर नाज़िल किया गया और इन्कार करते हैं उस का जो उस के अ़लावा है, हालाकि वह हक़ है, उस की तसदीक करने वाला जो उन के पास है, आप कह दें सो क्यों तुम अल्लाह के नबियों को इस से पहले क़त्ल करते रहे हो? अगर तुम मोमिन हो। (91)

और अलबत्ता मूसा (अ) तुम्हारे पास खुली निशानियों के साथ आए, फिर तुम ने उस के बाद बछड़े को (माबूद) बना लिया और तुम ज़ालिम हो। (92)

और जब हम ने तुम से पुख़्ता अ़हद लिया और तुम्हारे ऊपर कोहे तूर बुलन्द किया (और कहा) जो हम ने तुम्हें दिया है मज़बूती से पकड़ो और सुनो, तो वह बोले हम ने सुना और नाफ़रमानी की, और उन के दिलों में बछड़ा रचा दिया गया उन के कुफ़्र के सबब, कह दें क्या ही बुरा है जिस का तुम्हें हुक़्म देता है तुम्हारा ईमान, अगर तुम मोमिन हो। (93)

कह दें अगर तुम्हारे लिए है आखिरत का घर अल्लाह के पास खास तौर पर दूसरे लोगों के सिवा, तो तुम मौत की आर्जू करो अगर तुम सच्चे हो। (94)

और वह हरगिज़ कभी मौत की आर्जू न करेंगे उस के सबब जो उन के हाथों ने आगे भेजा, और अल्लाह ज़ालिमों को जानने वाला है। (95)

और अलवत्ता तुम उन्हें दूसरे लोगों से ज़ियादा ज़िन्दगी पर हरीस पाओगे, और मुशर्रकों से (भी ज़ियादा), उन में से हर एक चाहता है काश वह हजार साल की उम्र पाए, और इतनी उम्र दिया जाना उसे अज़ाब से दूर करने वाला नहीं, और अल्लाह देखने वाला है जो वह करते हैं। (96)

कह दें जो जिब्रील (अ) का दुश्मन हो तो बेशक उस ने यह आप के दिल पर नाज़िल किया है अल्लाह के हुकम से, उस की तसदीक करने वाला जो इस से पहले है, और हिदायत और खुशखबरी ईमान वालों के लिए। (97)

जो दुश्मन हो अल्लाह का और उस के फ़रिश्तों और उस के रसूलों का और जिब्रील और मिकाईल का, तो बेशक अल्लाह काफ़िरों का दुश्मन है। (98)

और अलवत्ता हम ने आप (स) की तरफ़ वाज़ेह निशानियां उतारी और उन का इन्कार सिर्फ़ नाफ़रमान करते हैं। (99)

क्या (ऐसा नहीं) जब भी उन्होंने ने कोई अहद किया तो उस को तोड़ दिया उन में से एक फ़रीक़ ने, बल्कि उन के अक्सर ईमान नहीं रखते। (100)

और जब उन के पास एक रसूल आया अल्लाह की तरफ़ से, उस की तसदीक करने वाला जो उन के पास है, तो फेंक दिया एक फ़रीक़ ने अहले किताब के, अल्लाह की किताब को अपनी पीठ पीछे, गोया कि वह जानते ही नहीं। (101)

قُلْ إِنْ كَانَتْ لَكُمْ الدَّارُ الْآخِرَةُ عِنْدَ اللَّهِ خَالِصَةً					
खास तौर पर	अल्लाह के पास	आखिरत का घर	तुम्हारे लिए	अगर है	कह दें
مِّنْ دُونِ النَّاسِ فَتَمَتُّوا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ (94)					
94	सच्चे	तुम हो	अगर	मौत	तो तुम आर्जू करो
وَلَنْ يَّتَمَتَّوْهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمْتُمْ أَيْدِيَهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ					
जानने वाला	और अल्लाह	उन के हाथ	वसवव जो आगे भेजा	कभी	और वह हरगिज़ उस की आर्जू न करेंगे
بِالظَّالِمِينَ (95) وَلَتَجِدَنَّاهُمْ أَحْرَصَ النَّاسِ عَلَى حَيَاتِهِمْ					
ज़िन्दगी पर	लोग	ज़ियादा हरीस	और अलवत्ता तुम पाओगे उन्हें	95	ज़ालिमों को
وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ أَلْفَ سَنَةٍ					
साल	हज़ार	काश वह उम्र पाए	उन का हर एक	चाहता है	जिन लोगों ने शिर्क़ किया (मुशर्रक)
وَمَا هُوَ بِمُزَحَّزَجِهِ مِنَ الْعَذَابِ أَنْ يُعَمَّرَ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا					
जो	देखने वाला	और अल्लाह	कि वह उम्र दिया जाए	अज़ाब	से उसे दूर करने वाला और वह नहीं
يَعْمَلُونَ (96) قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِجِبْرِيلَ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ					
यह नाज़िल किया	तो बेशक उस ने	जिब्रील का	दुश्मन	हो	जो कह दें 96 वह करते हैं
عَلَى قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللَّهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى					
और हिदायत	इस से पहले	उस की जो	तसदीक करने वाला	अल्लाह के हुकम से	तेरे दिल पर
وَبُشْرَى لِّلْمُؤْمِنِينَ (97) مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ					
और उस के फ़रिश्ते	अल्लाह का	दुश्मन	हो	जो 97	ईमान वालों के लिए और खुशखबरी
وَرُسُلِهِ وَجِبْرِيلَ وَمِيكَالَ فَإِنَّ اللَّهَ عَدُوٌّ لِّلْكَافِرِينَ (98)					
98	काफ़िरों का	दुश्मन	तो बेशक अल्लाह	और मिकाईल	और जिब्रील और उस के रसूल
وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ وَمَا يَكْفُرُ بِهَا					
उस का	और नहीं इन्कार करते	निशानियां वाज़ेह	आप की तरफ़	हम ने उतारी	और अलवत्ता
إِلَّا الْفَاسِقُونَ (99) أَوْ كَلَّمَا عَاهَدُوا عَهْدًا نَّبَذَهُ فَرِيقٌ مِّنْهُمْ					
उन में से	एक फ़रीक़	तोड़ दिया उस को	कोई अहद	उन्होंने ने अहद किया	क्या जब भी 99 नाफ़रमान मगर
بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ (100) وَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ					
अल्लाह की तरफ़ से	एक रसूल	आया उन के पास	और जब	100	ईमान नहीं रखते अक्सर उन के बल्कि
مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيقٌ مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ					
किताब दी गई (अहले किताब)	जिन्हें	से	एक फ़रीक़	फेंक दिया	उन के पास उस की जो तसदीक करने वाला
كُتِبَ اللَّهُ وَرَاءَهُمْ ظُهُورِهِمْ كَانَتْهُمْ لَا يَعْلَمُونَ (101)					
101	जानते नहीं	गोया कि वह	अपनी पीठ	पीछे	अल्लाह की किताब

معاينة ۲ عند التلاوة

۱۱

وَاتَّبَعُوا مَا تَتْلُوا الشَّيْطِينُ عَلَىٰ مُلْكِ سُلَيْمَانَ ۖ وَمَا كَفَرَ						
और कुफ़ न किया	सुलेमान (अ)	बादशाहत	में	शैतान	पढ़ते थे	जो और उन्होंने ने पैरवी की
سُلَيْمَانَ وَلَكِنَّ الشَّيْطِينَ كَفَرُوا يُعَلِّمُونَ النَّاسَ السِّحْرَ						
जादू	लोग	वह सिखाते	कुफ़ किया	शैतान (जमा)	लेकिन	सुलेमान (अ)
وَمَا أُنزِلَ عَلَى الْمَلَائِكِينَ بِبَابِلَ هَارُوتَ وَمَارُوتَ						
और मारूत	हारूत	बाबिल में	दो फ़रिश्ते	पर	और जो नाज़िल किया गया	
وَمَا يُعَلِّمُونَ مِنْ أَحَدٍ حَتَّى يَقُولَا إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ						
पस तू कुफ़ न कर	आज़माइश	हम	सिर्फ़	वह कह देते	यहां तक	किसी को और वह न सिखाते
فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ بِهِ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهِ						
और उस की बीवी	खाविन्द	दरमियान	उस से	जिस से जुदाई डालते	उन दोनों से	सो वह सीखते
وَمَا هُمْ بِضَارِّينَ بِهِ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ						
अल्लाह	हुकम से	मगर	किसी को	उस से	नुक्सान पहुँचाने वाले	और वह नहीं
وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ۗ وَلَقَدْ عَلِمُوا						
और वह जान चुके	उन्हें नफ़ा दे	और न	जो उन्हें नुक्सान पहुँचाए	और वह सीखते हैं		
لَمَنْ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۗ وَلَبِئْسَ						
और अलबत्ता बुरा	कोई हिस्सा	आखिरत में	नहीं उस के लिए	यह ख़रीदा	जिस ने	
مَا شَرَوْا بِهِ أَنْفُسَهُمْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿١٠٢﴾ وَلَوْ أَنَّهُمْ						
वह	और अगर	102	वह जानते होते	काश	अपने आप को	उस से जो उन्होंने ने बेच दिया
أَمَنُوا وَاتَّقُوا لَمَثُوبَةً مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ خَيْرٌ						
बेहतर	अल्लाह के पास	से	तो ठिकाना पाते	और परहेज़गार बन जाते	वह ईमान लाते	
لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿١٠٣﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقُولُوا رَاعِنَا						
राइना	न कहो	ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ	103	काश वह जानते होते
وَقُولُوا انظُرْنَا وَاسْمَعُوا ۗ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠٤﴾						
104	दर्दनाक	अज़ाब	और काफ़िरों के लिए	और सुनो	उनजुरना	और कहो
مَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَلَا الْمُشْرِكِينَ						
मुश्रिक (जमा)	और न	अहले किताब	से	कुफ़ किया	जिन लोगों ने	नहीं चाहते
أَنْ يُنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِنْ خَيْرٍ مِّنْ رَبِّكُمْ ۗ وَاللَّهُ يَخْتَصُّ						
खास कर लेता है	और अल्लाह	तुम्हारा रब	से	भलाई	से	तुम पर नाज़िल की जाए कि
بِرَحْمَتِهِ مَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿١٠٥﴾						
105	बड़ा	फ़ज़ल वाला	और अल्लाह	जिसे चाहता है	अपनी रहमत से	

और उन्होंने ने उस की पैरवी की जो शैतान सुलेमान (अ) की बादशाहत में पढ़ते थे। और कुफ़ नहीं किया सुलेमान (अ) ने लेकिन शैतानों ने कुफ़ किया, वह लोगों को जादू सिखाते, और जो बाबिल में हारूत और मारूत दो फ़रिश्तों पर नाज़िल किया गया, और वह न सिखाते किसी को यहां तक कि कह देते हम तो सिर्फ़ आज़माइश है पस तू कुफ़ न कर, सो वह सीखते उन दोनों से वह कुछ जिस से खाविन्द और उस की बीवी के दरमियान जुदाई डालते, और वह नुक्सान पहुँचाने वाले नहीं उस से किसी को मगर अल्लाह के हुकम से, और वह सीखते जो उन्हें नुक्सान पहुँचाए और उन्हें नफ़ा न दे, और अलबत्ता वह जान चुके थे कि जिस ने यह ख़रीदा उस के लिए आखिरत में कोई हिस्सा नहीं, और अलबत्ता बुरा है जिस के बदले उन्होंने ने अपने आप को बेच दिया। काश वह जानते होते। (102)

और अगर वह ईमान ले आते और परहेज़गार बन जाते तो अल्लाह के पास अच्छा बदला पाते, काश वह जानते होते। (103)

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो (मोमिनो)! राइना न कहो और उनजुरना (हमारी तरफ़ तवज्जह फ़रमाइए) कहो और सुनो, और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (104)

अहले किताब में से जिन लोगों ने कुफ़ किया वह नहीं चाहते और न मुश्रिक कि तुम पर तुम्हारे रब की तरफ़ से कोई भलाई नाज़िल की जाए और अल्लाह जिसे चाहता है अपनी रहमत से खास कर लेता है और अल्लाह बड़े फ़ज़ल वाला है। (105)

कोई आयत जिसे हम मनसूख करते हैं या उसे हम भुला देते हैं उस से बेहतर या उस जैसी ले आते हैं, क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह हर शौ पर कादिर है। (106)

क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह के लिए है आस्मानों और ज़मीन की वादशाहत, और तुम्हारे लिए नहीं अल्लाह के सिवा कोई हामी और न मददगार। (107)

क्या तुम चाहते हो कि अपने रसूल से सवाल करो जैसे सवाल किए गए इस से पहले मूसा (अ) से, और जो ईमान के बदले कुफ़ इख्तियार कर ले सो वह भटक गया सीधे रास्ते से। (108)

बहुत से अहले किताब ने चाहा कि वह काश तुम्हें लौटा दें तुम्हारे ईमान के बाद कुफ़ में, अपने दिल के हसद की वजह से, उस के बाद जब कि उन पर हक़ वाज़ेह हो गया, पस तुम माफ़ कर दो और दरगुज़र करो यहां तक कि अल्लाह अपना हुक़म लाए, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर कादिर है। (109)

और नमाज़ काइम करो और देते रहो ज़कात, और अपने लिए जो भलाई आगे भेजोगे तुम उसे पा लोगे अल्लाह के पास, बेशक तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे देखने वाला है। (110)

और उन्हीं ने कहा हरगिज़ दाख़िल न होगा जन्नत में सिवाए उस के जो यहूदी हो या नसरानी, यह उन की झूटी आर्जूएँ हैं, कह दीजिए तुम लाओ अपनी दलील अगर तुम सच्चे हो। (111)

क्यों नहीं? जिस ने अपना चेहरा अल्लाह के लिए झुका दिया और वह नेकोकार हो तो उस के लिए उस का अजर उस के रब के पास है, और उन पर कोई खौफ़ नहीं और न वह ग़मगीन होंगे। (112)

مَا نَنْسَخُ مِنْ آيَةٍ أَوْ نُنسِهَا نَأْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَا أَوْ مِثْلَهَا ۗ									
या उस जैसा	उस से	बेहतर	ले आते हैं	या उसे भुला देते हैं	कोई आयत	जो हम मनसूख करते हैं			
أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٠٦﴾ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ									
उस के लिए	कि अल्लाह	क्या तू नहीं जानता	106	कादिर	हर शौ	पर	कि अल्लाह	तू जानता	क्या नहीं
مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللَّهِ مِنْ									
कोई	अल्लाह के सिवा	से	तुम्हारे लिए	और नहीं	और ज़मीन	आस्मानों	वादशाहत		
وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿١٠٧﴾ أَمْ تُرِيدُوْنَ اَنْ تَسْأَلُوْا رَسُوْلَكُمْ كَمَا									
जैसे	अपना रसूल	सवाल करो	कि	क्या तुम चाहते हो	107	और न मददगार	हामी		
سِئَلِ مُوسٰى مِنْ قَبْلُ ۗ وَمَنْ يَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْاِيْمٰنِ									
ईमान के बदले	कुफ़	इख्तियार कर ले	और जो	इस से पहले	मूसा	सवाल किए गए			
فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿١٠٨﴾ وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ									
अहले किताब	से	बहुत	चाहा	108	रास्ता	सीधा	सो वह भटक गया		
لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ اِيْمٰنِكُمْ كُفْرًا ۗ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ									
वजह से	हसद	कुफ़ में	तुम्हारे ईमान	बाद	से	काश तुम्हें लौटा दें			
اَنْفُسِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۗ فَاَعْفُوْا									
पस तुम माफ़ कर दो	हक़	उन पर	वाज़ेह हो गया	जब कि	बाद	अपने दिल			
وَاصْفَحُوْا حَتّٰى يٰتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ									
चीज़	हर	पर	बेशक अल्लाह	अपना हुक़म	लाए अल्लाह	यहां तक	और दरगुज़र करो		
قَدِيْرٌ ﴿١٠٩﴾ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَآتُوا الزَّكٰوةَ ۗ وَمَا تُقَدِّمُوْا									
आगे भेजोगे	और जो	ज़कात	और देते रहो	नमाज़	और तुम काइम करो	109	कादिर		
لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ									
जो कुछ तुम करते हो	बेशक अल्लाह	अल्लाह के पास	तुम पा लोगे उसे	भलाई	अपने लिए				
بَصِيْرٌ ﴿١١٠﴾ وَقَالُوْا لَنْ يَدْخُلَ الْجَنَّةَ اِلَّا مَنْ كَانَ هُوْدًا									
यहूदी	हो	जो	सिवाए	जन्नत	हरगिज़ दाख़िल न होगा	और उन्हीं ने कहा	110	देखने वाला	
اَوْ نَضْرِبُ تِلْكَ اَمٰنِيْهُمْ ۗ قُلْ هَاتُوْا بُرْهٰنَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ									
अगर तुम हो	अपनी दलील	तुम लाओ	कह दीजिए	झूटी आर्जूएँ	यह	या नसरानी			
صٰدِقِيْنَ ﴿١١١﴾ بَلٰى ۗ مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهٗ									
तो उस के लिए	नेकोकार	और वह	अल्लाह के लिए	अपना चेहरा	झुका दिया	जिस	क्यों नहीं	111	सच्चे
اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۗ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿١١٢﴾									
112	ग़मगीन होंगे	वह	और न	उन पर	कोई खौफ़	और न	उस का रब	पास	उस का अजर

۱۱

۱۲

وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتِ النَّصْرَىٰ عَلَىٰ شَيْءٍ ۖ وَقَالَتِ النَّصْرَىٰ							
नसारा	और कहा	किसी चीज़	पर	नसारा	नहीं	यहूद	और कहा
لَيْسَتِ الْيَهُودُ عَلَىٰ شَيْءٍ ۖ وَهُمْ يَتْلُونَ الْكِتَابَ ۚ كَذَلِكَ قَالَ الَّذِينَ							
जो लोग	कहा	इसी तरह	किताब	पढ़ते हैं	हालांकि वह	किसी चीज़ पर	यहूद नहीं
لَا يَعْلَمُونَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ							
क़ियामत के दिन	फ़ैसला करेगा उन के दरमियान		सो अल्लाह	उन की बात	जैसी	इल्म नहीं रखते	
فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١١٣﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن مَّنَعَ							
रोका	से-जो	बड़ा ज़ालिम	और कौन	113	इख़तिलाफ़ करते	उस में	वह थे जिस में
مَسْجِدَ اللَّهِ أَنْ يُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ وَسَعَىٰ فِي خَرَابِهَا ۗ							
उस की वीरानी	में	और कोशिश की	उस का नाम	उस में	ज़िक्र किया जाए	कि	अल्लाह की मसजिदें
أُولَٰئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ أَنْ يَدْخُلُوهَا إِلَّا خَائِفِينَ ۗ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا							
दुनिया में	उन के लिए	डरते हुए	मगर	वहां दाखिल होते	कि	उन के लिए	न था यह लोग
خِزْيٌ ۖ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١١٤﴾ وَاللَّهُ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ							
और मग़रिब	और अल्लाह के लिए मशरिफ़		114	बड़ा	अज़ाब	आख़िरत में	और उन के लिए रुसवाई
فَإِنَّمَا تُؤَلُّوهُ فَتَمَّ وَجْهَ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾							
115	जानने वाला है	बुसअत वाला	वेशक अल्लाह	अल्लाह का सामना	तो उस तरफ़	तुम मुँह करो	सो जिस तरफ़
وَقَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۗ وَلَدًا سُبْحٰنَهُ ۗ بَلْ لَّهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ							
आस्मानों में	जो	बल्कि उस के लिए	वह पाक है	बेटा	बना लिया अल्लाह ने	और उन्होंने ने कहा	
وَالْأَرْضِ ۗ كُلُّ لَّهُ قٰنِئُونَ ﴿١١٦﴾ بَدِيعُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ							
और ज़मीन	आस्मानों	पैदा करने वाला	116	ज़ेरे फ़रमान	उस के लिए	सब	और ज़मीन
وَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿١١٧﴾ وَقَالَ الَّذِينَ							
जो लोग	और कहा	117	तो वह हो जाता है	“हो जा” उसे	कहता है	तो यही	कोई वह फ़ैसला करता है और जब
لَا يَعْلَمُونَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللَّهُ أَوْ تَأْتِينَا آيَةٌ ۗ كَذَلِكَ							
इसी तरह	कोई निशानी	हमारे पास आती	या	हम से कलाम करता अल्लाह	क्यों नहीं	इल्म नहीं रखते	
قَالَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۗ تَشَابَهَتْ قُلُوبُهُمْ ۗ							
उन के दिल	एक जैसे हो गए	इन की बात	जैसी	इन से पहले	जो लोग	कहा	
قَدْ بَيَّنَّا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿١١٨﴾ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ							
हक़ के साथ	आप को भेजा	वेशक हम	118	यकीन रखते हैं	लोगों के लिए	निशानियां	हम ने वाज़ेह कर दी
بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۗ وَلَا تُسْأَلُ عَنْ أَصْحَابِ الْجَحِيمِ ﴿١١٩﴾							
119	दोज़ख़ वाले	से	और न आप से पूछा जाएगा	और डराने वाला	खुशख़बरी देने वाला		

और यहूद ने कहा नसारा किसी चीज़ पर नहीं, और नसारा ने कहा यहूदी किसी चीज़ पर नहीं हालांकि वह पढ़ते हैं किताब। इसी तरह उन लोगों ने उन जैसी बात कही जो इल्म नहीं रखते, सो अल्लाह उन के दरमियान क़ियामत के दिन फ़ैसला करेगा जिस (बात) में वह इख़तिलाफ़ करते थे। (113)

और उस से बड़ा ज़ालिम कौन जिस ने अल्लाह की मसजिदों से रोका कि उन में अल्लाह का नाम लिया जाए, और उस की वीरानी की कोशिश की, उन लोगों के लिए (हक़) न था कि वहां दाखिल होते मगर डरते हुए, उन के लिए दुनिया में रुसवाई है और उन के लिए आख़िरत में बड़ा अज़ाब है। (114)

और अल्लाह के लिए है मशरिफ़ और मग़रिब, सो जिस तरफ़ तुम मुँह करो उसी तरफ़ अल्लाह का सामना है, वेशक अल्लाह बुसअत वाला, जानने वाला है। (115)

और उन्होंने ने कहा अल्लाह ने बेटा बना लिया है, वह पाक है, बल्कि उसी के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में है, सब उसी के ज़ेरे फ़रमान है। (116)

वह पैदा करने वाला है आस्मानों का और ज़मीन का, और जब वह किसी काम का फ़ैसला करता है तो उसे यही कहता है “हो जा” तो वह हो जाता है। (117)

और जो लोग इल्म नहीं रखते, उन्होंने ने कहा अल्लाह हम से कलाम क्यों नहीं करता या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती? इसी तरह इन से पहले लोगों ने इन जैसी बात कही, इन (अगले पिछले गुमराहों) के दिल एक जैसे हैं। हम ने यकीन रखने वाले लोगों के लिए निशानियां वाज़ेह कर दी हैं। (118)

वेशक हम ने आप को भेजा हक़ के साथ, खुशख़बरी देने वाला, डराने वाला, और आप से न पूछा जाएगा दोज़ख़ वालों के बारे में। (119)

और आप से हरगिज़ राज़ी न होंगे यहूदी और न नसारा जब तक आप उन के दीन की पैरवी न करें, कह दें! बेशक अल्लाह की हिदायत वही हिदायत है, और अगर आप ने उन की खाहिशात की पैरवी की उस के बाद जब कि आप के पास इल्म आ गया, आप के लिए अल्लाह से कोई हिमायत करने वाला नहीं और न मददगार। (120)

हम ने जिन्हें किताब दी वह उस की तिलावत करते हैं जैसे तिलावत का हक है, वह उस पर ईमान रखते हैं, और जो उस का इन्कार करें वही ख़सारह पाने वाले हैं। (121) ऐ बनी इस्राईल! मेरी नेमत याद करो जो मैं ने तुम पर की और यह कि मैं ने तुम्हें ज़माने वालों पर फ़ज़ीलत दी। (122)

और उस दिन से डरो (जिस दिन) कोई शख्स बदला न हो सकेगा किसी शख्स का कुछ भी, और न उस से कोई मुआवज़ा कुबूल किया जाएगा, और न उसे कोई सिफ़ारिश नफ़ा देगी, और न उन की मदद की जाएगी। (123)

और जब इब्राहीम (अ) को उन के रव ने चन्द बातों से आज़माया तो उन्होंने न वह पूरी कर दी, उस ने फ़रमाया बेशक मैं तुम्हें लोगों का इमाम बनाने वाला हूँ, उस ने कहा और मेरी औलाद को (भी)? उस ने फ़रमाया मेरा अ़हद ज़ालिमों को नहीं पहुँचता। (124)

और जब हम नें खाने क़अ़वा को बनाया लोगों के लिए (बार बार) लौटने (इज़तिमाज़) की जगह और अमन की जगह, और “मुक़ामे इब्राहीम” को नमाज़ की जगह बनाओ, और हम ने हुक़म दिया इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ) को कि वह मेरा घर पाक रखें तवाफ़ करने वालों और एतिकाफ़ करने वालों के लिए, और रुकूअ़ सिज्दा करने वालों के लिए। (125)

और जब इब्राहीम (अ) ने कहा ऐ मेरे रव! इस शहर को बना अमन वाला, और इस के रहने वालों को फलों की रोज़ी दे जो उन में से ईमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर, उस ने फ़रमाया जिस ने कुफ़ किया उस को थोड़ा सा नफ़ा दूँगा फिर उस को मजबूर करूँगा दोज़ख़ के अज़ाब की तरफ़, और वह लौटने की बुरी जगह है। (126)

وَلَنْ تَرْضَىٰ عَنْكَ الْيَهُودُ وَلَا النَّصَارَىٰ حَتَّىٰ تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ۗ

उन का दीन	आप पैरवी (न) करें	जब तक	नसारा	और न	यहूदी	आप से	और हरगिज़ राज़ी न होंगे
-----------	-------------------	-------	-------	------	-------	-------	-------------------------

قُلْ إِنَّ هُدَىٰ اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ ۗ وَلَئِنَّ آتَابِعْتَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ الَّذِي

वह जो कि (जबकि)	वाद	उन की खाहिशात	आप ने पैरवी की	और अगर	हिदायत	वही	अल्लाह की हिदायत	बेशक	कह दें
-----------------	-----	---------------	----------------	--------	--------	-----	------------------	------	--------

جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۗ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۗ (120)

120	मददगार	और न	हिमायत करने वाला	कोई	अल्लाह से	नहीं आप के लिए	इल्म	से	आप के पास आगया
-----	--------	------	------------------	-----	-----------	----------------	------	----	----------------

الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْكِتَابَ يَتْلُونَهُ حَقَّ تِلَاوَتِهِ ۗ أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۗ

ईमान रखते हैं उस पर	वही लोग	उस की तिलावत	हक़	उस की तिलावत करते हैं	किताब	हम ने दी उन्हें	जिन्हें
---------------------	---------	--------------	-----	-----------------------	-------	-----------------	---------

وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ فَاُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ۗ (121) يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اذْكُرُوْا

तुम याद करो	ऐ बनी इस्राईल	121	ख़सारह पाने वाले	वह	वही	इन्कार करें उस का	और जो
-------------	---------------	-----	------------------	----	-----	-------------------	-------

نِعْمَتِي الَّتِيْ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ ۗ وَاِنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَي الْعٰلَمِيْنَ ۗ (122)

122	ज़माने वाले	पर	तुम्हें फ़ज़ीलत दी	और यह कि मैं ने	तुम पर	मैं ने इन्ज़ाम की	जो कि	मेरी नेमत
-----	-------------	----	--------------------	-----------------	--------	-------------------	-------	-----------

وَاتَّقُوا يَوْمًا لَا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا ۗ وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا

उस से	और न कुबूल किया जाएगा	कुछ	किसी शख्स से	कोई शख्स	बदला न होगा	वह दिन	और डरो
-------	-----------------------	-----	--------------	----------	-------------	--------	--------

عَدْلٌ ۗ وَلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ ۗ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۗ (123) وَاِذْ اٰتٰنَا

आज़माया	और जब	123	मदद की जाएगी	उन	और न	कोई सिफ़ारिश	उसे नफ़ा देगी	और न	कोई मुआवज़ा
---------	-------	-----	--------------	----	------	--------------	---------------	------	-------------

اِبْرٰهِيْمَ رَبُّهُ بِكَلِمٰتٍ فَاْتَمَّهِنَّ ۗ قَالَ اِنِّيْ جَاعِلٌ لِّلنَّاسِ اِمَامًا ۗ قَالَ

उस ने कहा	इमाम	लोगों का	तुम्हें बनाने वाला हूँ	बेशक मैं	उस ने फ़रमाया	तो वह पूरी कर दी	चन्द बातों से	उन का रव	इब्राहीम (अ)
-----------	------	----------	------------------------	----------	---------------	------------------	---------------	----------	--------------

وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ۗ قَالَ لَا يِنَالُ عَهْدِي الظّٰلِمِيْنَ ۗ (124) وَاِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ

खाने क़अ़वा	बनाया हम ने	और जब	124	ज़ालिम (जमा)	मेरा अ़हद	नहीं पहुँचता	उस ने फ़रमाया	मेरी औलाद	और से
-------------	-------------	-------	-----	--------------	-----------	--------------	---------------	-----------	-------

مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاْمَنًا ۗ وَاَتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهِيْمَ مُصَلًّٰى وَعَهْدَنَا

और हम ने हुक़म दिया	नमाज़ की जगह	“मुक़ामे इब्राहीम”	से	और तुम बनाओ	और अमन की जगह	लोगों के लिए	इज़तिमाज़ की जगह
---------------------	--------------	--------------------	----	-------------	---------------	--------------	------------------

اِلٰى اِبْرٰهِيْمَ وَاَسْمِعِيْلَ اَنْ طَهَّرَا بَيْتِيْ لِلطّٰاِفِيْنَ وَالْعٰكِفِيْنَ وَالرُّكَّعِ

और रुकूअ़ करने वाले	और एतिकाफ़ करने वाले	तवाफ़ करने वालों के लिए	मेरा घर	पाक रखें	कि वह	और इस्माईल (अ)	इब्राहीम (अ) को
---------------------	----------------------	-------------------------	---------	----------	-------	----------------	-----------------

السُّجُوْدِ ۗ (125) وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا اِمْنًا وَاَرْزُقْ

और रोज़ी दे	अमन वाला	यह शहर	बना	ऐ मेरे रव	इब्राहीम (अ)	कहा	और जब	125	सिज्दा करने वाले
-------------	----------	--------	-----	-----------	--------------	-----	-------	-----	------------------

اَهْلَهُ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۗ قَالَ وَمَنْ

और जो	उस ने फ़रमाया	और आख़िरत का दिन	अल्लाह पर	उन से	ईमान लाए	जो	फल (जमा)	से	इस के रहने वाले
-------	---------------	------------------	-----------	-------	----------	----	----------	----	-----------------

كَفَرَ فَاَمْتَعْتُهُ قَلِيْلًا ثُمَّ اَصْطَرَفْتُهُ اِلٰى عَذَابِ النَّارِ ۗ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۗ (126)

126	लौटने की जगह	और बुरी	दोज़ख़ का अज़ाब	तरफ़	मजबूर करूँगा उस को	फिर	थोड़ा	उसे नफ़ा दूँगा	उस ने कुफ़ किया
-----	--------------	---------	-----------------	------	--------------------	-----	-------	----------------	-----------------

وقف منزل

ع ۱۲

وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمَاعِيلُ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ۗ									
क़बूल फ़रमा ले हम से	ऐ हमारे रब	और इस्माईल (अ)	ख़ाने क़अवा	से	बुन्यादे	इब्राहीम (अ)	उठाते थे	और जब	
إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٢٧﴾ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمِينَ لَكَ									
अपना	फ़रमांवरदार	और हमें बना ले	ऐ हमारे रब	127	जानने वाला	सुनने वाला	तू	वेशक तू	
وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا أُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۗ وَإِنَّا مِنَّا مُّسْلِمُونَ									
और हमारी तौवा क़बूल फ़रमा	हज़ के तरीके	और हमें दिखा	अपनी	फ़रमांवरदार	उम्मत	हमारी औलाद	और से		
إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١٢٨﴾ رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيهِمْ رَسُولًا									
एक रसूल	उन में	और भेज	ऐ हमारे रब	128	रहम करने वाला	तौवा क़बूल करने वाला	तू	वेशक	
مِّنْهُمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ									
और हिक्मत (दानाई)	“किताब”	और उन्हें तालीम दे	तेरी आयतें	उन पर	वह पढ़े	उन से			
وَيُزَكِّيهِمْ ۗ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٢٩﴾ وَمَنْ يَّرْغَبْ عَن قِبَلَةِ									
दीन	से	मुँह मोड़े	और कौन	129	हिक्मत वाला	ग़ालिब	तू	वेशक	और उन्हें पाक करे
إِبْرَاهِيمَ إِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهُ ۗ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا									
दुनिया में	हम ने उसे चुन लिया	और वेशक	अपने आप	बेवकूफ़ बनाया	जिस ने	सिवाए	इब्राहीम (अ)		
وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ﴿١٣٠﴾ إِذْ قَالَ لَهُ رَبُّهُ أَسْلِمْ									
सर झुका दे	उस का रब	उस को	जब कहा	130	नेकोकार (जमा)	से	आखिरत में	और वेशक वह	
قَالَ أَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٣١﴾ وَوَصَّى بِهَا إِبْرَاهِيمَ بَنِيهِ									
अपने बेटे	इब्राहीम (अ)	उस की	और वसीयत की	131	तमाम जहान	रब के लिए	मैं ने सर झुका दिया	उस ने कहा	
وَيَعْقُوبُ ۗ يَبْنِي ۖ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ لَكُمْ الدِّينَ فَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا									
मगर	पस तुम हरगिज़ न मरना	दीन	तुम्हारे लिए	चुन लिया	वेशक अल्लाह	मेरे बेटो	और याकूब (अ)		
وَأَنْتُمْ مُّسْلِمُونَ ﴿١٣٢﴾ أَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاءَ إِذْ حَضَرَ يَعْقُوبَ الْمَوْتُ									
मौत	याकूब (अ)	आई	जब	मौजूद	क्या तुम थे	132	मुसलमान (जमा)	और तुम	
إِذْ قَالَ لِبَنِيهِ مَا تَعْبُدُونَ مِن بَعْدِي ۖ قَالُوا نَعْبُدُ									
हम इबादत करेंगे	उन्होंने ने कहा	मेरे बाद	किस की तुम इबादत करोगे?	अपने बेटों को	जब उस ने कहा				
الْهَكَ وَالْهَآءَ ابْنَآءَ إِِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ ۗ وَالْهَآءَ									
वाहिद	माबूद	और इसहाक (अ)	और इस्माईल (अ)	इब्राहीम (अ)	तेरे बाप दादा	और माबूद	तेरा माबूद		
وَنَحْنُ لَهُ مُّسْلِمُونَ ﴿١٣٣﴾ تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ									
जो उस ने कमाया	उस के लिए	गुज़र गई	एक उम्मत	यह	133	फ़रमांवरदार	उसी के	और हम	
وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۗ وَلَا تُسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٣٤﴾									
134	जो वह करते थे	उस के बारे में	और तुम से न पूछा जाएगा	जो तुम ने कमाया	और तुम्हारे लिए				

और जब उठाते थे इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ) ख़ाने क़अवा की बुन्यादे (यह दुआ करते थे) ऐ हमारे परवरदिगार! हम से क़बूल फ़रमा ले, वेशक तू सुनने वाला, जानने वाला है। (127)

ऐ हमारे रब! और हमें अपना फ़रमांवरदार बना ले और हमारी औलाद में से एक अपनी फ़रमांवरदार उम्मत बना और हमें हज़ के तरीके दिखा और हमारी तौवा क़बूल फ़रमा, वेशक तू ही तौवा क़बूल करने वाला, रहम करने वाला है। (128)

ऐ हमारे रब! और उन में एक रसूल भेज उन में से, वह उन पर तेरी आयतें पढ़े और उन्हें “किताब” और “हिक्मत” (दानाई) की तालीम दे, और उन्हें पाक करे, वेशक तू ही ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (129)

और कौन है जो मुँह मोड़े इब्राहीम (अ) के दीन से? सिवाए उस के जिस ने अपने आप को बेवकूफ़ बनाया, और वेशक हम ने उसे दुनिया में चुन लिया। और वेशक वह आखिरत में नेकोकारों में से है। (130)

जब उस को उस के रब ने कहा तू सर झुका दे, उस ने कहा मैं ने तमाम जहानों के रब के लिए सर झुका दिया। (131)

और इब्राहीम (अ) ने अपने बेटों को और याकूब (अ) ने (भी) उसी की वसीयत की, ऐ मेरे बेटो! अल्लाह ने वेशक चुन लिया है तुम्हारे लिए दीन, पस तुम हरगिज़ न मरना मगर मुसलमान। (132)

क्या तुम थे मौजूद जब याकूब (अ) को मौत आई, जब उस ने अपने बेटों को कहा: मेरे बाद तुम किस की इबादत करोगे? उन्होंने ने कहा हम इबादत करेंगे तेरे माबूद की, और तेरे बाप दादा इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ) और इसहाक (अ) के माबूदे वाहिद की, और हम उसी के फ़रमांवरदार हैं। (133)

यह एक उम्मत थी जो गुज़र गई, उस के लिए जो उस ने कमाया और तुम्हारे लिए है जो तुम ने कमाया, और तुम से उस के बारे में न पूछा जाएगा जो वह करते थे। (134)

और उन्होंने ने कहा तुम यहूदी या नसरानी हो जाओ हिदायत पा लोगे, कह दीजिए बल्कि (हम पैरवी करते हैं) एक अल्लाह के हो जाने वाले इब्राहीम (अ) के दीन की और वह मुश्रिकों में से न थे। (135)

कह दो हम ईमान लाए अल्लाह पर और जो हमारी तरफ नाज़िल किया गया और जो नाज़िल किया गया इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ) और इसहाक (अ) और याकूब (अ) और औलादे याकूब (अ) की तरफ, और जो दिया गया मूसा (अ) और ईसा (अ) को और जो दिया गया नबियों को उन के रब की तरफ से, हम उन में से किसी एक के दरमियान फर्क नहीं करते, और हम उसी के फरमांवरदार हैं। (136)

पस अगर वह ईमान ले आएँ जैसे तुम उस पर ईमान लाए हो तो वह हिदायत पा गए, और अगर उन्होंने ने मुँह फेरा तो बेशक वही ज़िद में है, पस अ़नक़रीब उन के मुक़ाबिले में आप के लिए अल्लाह काफ़ी होगा, और वह सुनने वाला, जानने वाला है। (137)

(हम ने लिया) रंग अल्लाह का, और किस का अच्छा है रंग अल्लाह से? और हम उसी की इबादत करने वाले हैं। (138)

कह दीजिए, क्या तुम हम से झगड़ते हो अल्लाह के बारे में हालांकि वही है हमारा रब और तुम्हारा रब, और हमारे लिए हमारे अ़मल और तुम्हारे लिए तुम्हारे अ़मल, और हम ख़ालिस उसी के हैं। (139)

क्या तुम कहते हो कि इब्राहीम (अ) और इस्माईल (अ), और इसहाक (अ), और याकूब (अ) और औलादे याकूब (अ) यहूदी थे या नसरानी। कह दीजिए क्या तुम ज़ियादा जानने वाले हो या अल्लाह? और कौन है बड़ा ज़ालिम उस से जिस ने वह गवाही छुपाई जो अल्लाह की तरफ से उस के पास थी, और अल्लाह बेख़बर नहीं उस से जो तुम करते हो। (140)

यह एक उम्मत थी जो गुज़र चुकी, उस के लिए है जो उस ने कमाया और तुम्हारे लिए है जो तुम ने कमाया, और तुम से उस के बारे में न पूछा जाएगा जो वह करते थे। (141)

وَقَالُوا كُونُوا هُودًا أَوْ نَصْرَى تَهْتَدُوا قُلْ بَلْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ								
इब्राहीम (अ)	बल्कि दीन	कह दीजिए	तुम हिदायत पा लोगे	नसरानी	या	यहूदी	हो जाओ	और उन्होंने ने कहा
حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٣٥﴾ قُولُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ								
नाज़िल किया गया	और जो	अल्लाह पर	हम ईमान लाए	कह दो	135	मुश्रिकीन	से	और न थे एक अल्लाह के हो जाने वाले
إِلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ								
और याकूब (अ)	और इसहाक (अ)	और इस्माईल (अ)	इब्राहीम (अ)	तरफ	नाज़िल किया गया	और जो	हमारी तरफ	
وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَمَا أُوتِيَ النَّبِيُّونَ مِنْ رَبِّهِمْ								
उन के रब से	नबियों	दिया गया	और जो	और ईसा (अ)	मूसा (अ)	दिया गया	और जो	और औलादे याकूब (अ)
لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿١٣٦﴾ فَإِن								
पस अगर	136	फरमांवरदार	उसी के	और हम	उन से	किसी एक	दरमियान	हम फर्क नहीं करते
أَمِنُوا بِمِثْلِ مَا آمَنْتُمْ بِهِ فَقَدِ اهْتَدَوْا وَإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا								
तो बेशक वही	उन्होंने ने मुँह फेरा	और अगर	तो वह हिदायत पा गए	उस पर	तुम ईमान लाए	जैसे	वह ईमान लाएँ	
هُمْ فِي شِقَاقٍ فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللَّهُ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٣٧﴾								
137	जानने वाला	सुनने वाला	और वह	अल्लाह	पस अ़नक़रीब आप के लिए उन के मुक़ाबिले में काफ़ी होगा	ज़िद	में	वह
صِبْغَةَ اللَّهِ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ صِبْغَةً وَنَحْنُ لَهُ								
उसी की	और हम	रंग	अल्लाह	से	अच्छा	और किस	रंग अल्लाह का	
عِبْدُونَ ﴿١٣٨﴾ قُلْ أَتَحَاجُّونَنَا فِي اللَّهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ وَلَنَا								
और हमारे लिए	और तुम्हारा रब	हमारा रब	हालांकि वही	अल्लाह के बारे में	क्या तुम हम से झगड़ा करते हो?	कह दीजिए	138	इबादत करने वाले
أَعْمَالِنَا وَلَكُمْ أَعْمَالِكُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُخْلِصُونَ ﴿١٣٩﴾ أَمْ تَقُولُونَ								
तुम कहते हो	क्या	139	ख़ालिस	उसी के	और हम	तुम्हारे अ़मल	और तुम्हारे लिए	हमारे अ़मल
إِنَّ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطَ كَانُوا								
थे	और औलादे याकूब (अ)	और याकूब (अ)	और इसहाक (अ)	और इस्माईल (अ)	इब्राहीम (अ)	कि		
هُودًا أَوْ نَصْرَى قُلْ ءَأَنْتُمْ أَعْلَمُ أَمْ اللَّهُ وَمَنْ أَظْلَمُ								
बड़ा ज़ालिम	और कौन	या अल्लाह	ज़ियादा जानने वाले	क्या तुम	कह दीजिए	या नसरानी	यहूदी	
مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةَ عِنْدَهُ مِنَ اللَّهِ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ								
बेख़बर	और नहीं अल्लाह	अल्लाह से	उस के पास	गवाही	छुपाई	से-जिस		
عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٤٠﴾ تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ								
उस ने कमाया	जो	उस के लिए	गुज़र चुकी	एक उम्मत	यह	140	तुम करते हो	उस से जो
وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ وَلَا تُسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤١﴾								
141	वह करते थे	उस से जो	और तुम से न पूछा जाएगा	जो तुम ने कमाया	और तुम्हारे लिए			

11  
12  
11



سَيَقُولُ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَّهُمْ عَن قِبَلَتِهِمْ							
उन का क़िबला	से	उन्हें (मुसलमानों को) फेर दिया	किस	लोग	से	वेवकूफ	अब कहेंगे
الَّتِي كَانُوا عَلَيْهَا قُلْ لِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ							
जिस को चाहता है	वह हिदायत देता है	और मगरिब	मशरिफ	अल्लाह आप के लिए	आप कह दें	उस पर	वह थे जिस
إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ (١٤٢) وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ							
गवाह	ताकि तुम हो	मोअतदिल	उम्मत	हम ने तुम्हें बनाया	और उसी तरह	142	सीधा रास्ता तरफ
عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي							
वह जिस	क़िबला	और नहीं मुकर्रर किया हम ने	गवाह	तुम पर	रसूल	और हो	लोग पर
كُنْتَ عَلَيْهَا إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَتَّبِعِ الرَّسُولَ مِمَّنْ يَنْقَلِبُ عَلٰى عَقْبَيْهِ							
अपनी एड़ियां	पर	फिर जाता है	उस से जो	रसूल (स)	पैरवी करता है	ताकि हम मालूम कर लें कौन	मगर उस पर आप (स) थे
وَإِنْ كَانَتْ لَكَبِيرَةً إِلَّا عَلَى الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ وَمَا كَانَ اللَّهُ							
अल्लाह	और नहीं	अल्लाह	हिदायत दी	जिन्हें	पर	मगर भारी बात	यह थी और वेशक
لِيُضِيعَ إِيمَانَكُمْ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ (١٤٣) قَدْ نَرَى تَقَلُّبَ							
बार बार फिरना	हम देखते हैं	143	रहम करने वाला	बड़ा शफ़ीक	लोगों के साथ	वेशक अल्लाह	तुम्हारा ईमान कि वह ज़ाया करे
وَجْهَكَ فِي السَّمَاءِ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَاهَا فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ							
तरफ	अपना मुँह	पस आप फेर लें	उसे आप (स) पसन्द करते हैं	क़िबला	तो ज़रूर हम फेर देंगे आप को	आस्मान	में आप (स) का मुँह (तरफ)
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ وَإِنَّ الَّذِينَ							
जिन्हें	और वेशक	उस की तरफ	अपने मुँह	सो फेर लिया करो	तुम हो	और जहाँ कहीं	मसजिदे हराम (खाने कअबा)
أَوْتُوا الْكِتَابَ لَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا							
उस से जो	वेखबर	अल्लाह	और नहीं	उन का रब	से	हक कि यह	वह ज़रूर जानते हैं दी गई किताब (अहले किताब)
يَعْمَلُونَ (١٤٤) وَلَئِنْ آتَيْتَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ بِكُلِّ آيَةٍ مَا تَبِعُوا							
वह पैरवी न करेंगे	निशानियां	तमाम	दी गई किताब (अहले किताब)	जिन्हें	आप (स) लाएं	और अगर	144 वह करते हैं
قِبْلَتِكَ وَمَا أَنْتَ بِتَابِعٍ قِبَلَتِهِمْ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ							
किसी	क़िबला	पैरवी करने वाला	उन से कोई	और नहीं	उन का क़िबला	पैरवी करने वाले	आप (स) और आप (स) का क़िबला
وَلَئِنْ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ مِّن بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ إِنَّكَ							
वेशक आप (स)	इल्म	कि आ चुका आप के पास	उस के बाद	उन की खाहिशात	आप ने पैरवी की	और अगर	
إِذَا لَمِنَ الظَّالِمِينَ (١٤٥) الَّذِينَ اتَّيْنَهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ							
वह पहचानते हैं	जैसे	वह उसे पहचानते हैं	किताब	हम ने दी	और जिन्हें	145	वे इन्साफ से अब
أَبْنَاءَهُمْ وَإِنَّ فَرِيقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ (١٤٦)							
146	वह जानते हैं	हालाकि वह	हक	वह छुपाते हैं	उन से	एक गिरोह	और वेशक अपने बेटे

٢

وقف الراء  
وقف منزل

अब वेवकूफ कहेंगे कि मुसलमानों को किस चीज ने उस क़िबले से फेर दिया जिस पर वह थे? आप कह दें कि मशरिफ और मगरिब अल्लाह (ही) का है, वह जिस को चाहता है हिदायत देता है सीधे रास्ते की तरफ। (142)

और उसी तरह हम ने तुम्हें मोअतदिल उम्मत बनाया ताकि तुम हो लोगों पर गवाह, और रसूल (स) तुम पर गवाह हों, और हम ने मुकर्रर नहीं किया था वह क़िबला जिस पर आप (स) थे मगर (इस लिए) कि हम मालूम कर लें कौन रसूल (स) की पैरवी करता है और कौन फिर जाता है अपनी एड़ियों पर (उलटे पावों), और वेशक यह भारी बात थी मगर उन पर (नहीं) जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी और अल्लाह (ऐसा) नहीं कि तुम्हारा ईमान ज़ाया कर दे, वेशक अल्लाह लोगों के साथ बड़ा शफ़ीक, रहम करने वाला है। (143)

हम देखते हैं बार बार आप (स) का मुँह आस्मान की तरफ फिरना, तो ज़रूर हम आप को उस क़िबले की तरफ फेर देंगे जिसे आप (स) पसन्द करते हैं, पस आप (स) अपना मुँह मसजिदे हराम (खाने कअबा) की तरफ फेर लें, और जहाँ कहीं तुम हो फेर लिया करो अपने मुँह उस की तरफ, और वेशक अहले किताब ज़रूर जानते हैं कि यह हक है उन के रब की तरफ से, और अल्लाह उस से वेखबर नहीं जो वह करते हैं। (144)

और अगर आप (स) लाएं अहले किताब के पास तमाम निशानियां वह (फिर भी) आप (स) के क़िबले की पैरवी न करेंगे, और न आप (स) उन के क़िबले की पैरवी करने वाले हैं, और उन में से कोई किसी (दूसरे) के क़िबले की पैरवी करने वाला नहीं, और अगर आप ने उन की खाहिशात की पैरवी की उस के बाद कि आप के पास इल्म आ चुका तो अब वेशक आप वे इन्साफों में से होंगे। (145)

और जिन्हें हम ने किताब दी वह उसे पहचानते हैं जैसे वह अपने बेटों को पहचानते हैं, और वेशक उन में से एक गिरोह हक को छुपाता है हालांकि वह जानते हैं। (146)

(यह) हक है आप के रब की तरफ से, पस आप न हो जाएं शक करने वालों में से। (147)

और हर एक के लिए एक सिम्त है जिस तरफ वह रख करता है, पस तुम नेकियों में सबकत ले जाओ, जहां कहीं तुम होगे अल्लाह तुम्हें इकटठा कर लेगा, बेशक अल्लाह हर चीज पर क़ुदरत रखने वाला है। (148)

और जहां से आप (स) निकलें, पस अपना रख मसजिदे हराम की तरफ कर लें, और बेशक आप के रब (की तरफ) से यही हक है और अल्लाह उस से बेखबर नहीं जो तुम करते हो। (149)

और जहां कहीं से आप निकलें, अपना रख मसजिदे हराम की तरफ कर लें, और तुम जहां कहीं हो सो कर लो अपने रख उस की तरफ, ताकि लोगों के लिए तुम पर कोई हुज्जत न रहे, सिवाए उन के जो उन में से बे इन्साफ हैं, सो तुम उन से न डरो, और मुझ से डरो ताकि मैं अपनी नेमत तुम पर पूरी कर दूँ, और ताकि तुम हिदायत पाओ। (150)

जैसा कि हम ने तुम में एक रसूल तुम में से भेजा, वह तुम पर हमारी आयतें पढ़ते हैं और वह तुम्हें पाक करते हैं, और तुम्हें किताब ओ हिक्मत (दानाई) सिखाते हैं, और तुम्हें वह सिखाते हैं जो तुम न थे जानते। (151)

सो मुझे याद करो, मैं तुम्हें याद रखूंगा, और तुम मेरा शुक्र अदा करो और मेरी नाशुक्रि न करो। (152)

ऐ ईमान वालो! तुम सवर और नमाज़ से मदद मांगो, बेशक अल्लाह सवर करने वालों के साथ है। (153)

और जो अल्लाह की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा न कहो, बल्कि वह ज़िन्दा हैं, लेकिन तुम (उस का) शऊर नहीं रखते। (154)

और हम तुम्हें ज़रूर आजमाएंगे कुछ खौफ से, और भूक से, और माल ओ जान और फलों के नुकसान से, और आप (स) खुशखबरी दें सवर करने वालों को। (155)

वह जिन्हें जब कोई मुसीबत पहुँचे तो वह कहें: हम अल्लाह के लिए हैं और हम उसी की तरफ लौटने वाले हैं। (156)

<p>الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿١٤٧﴾ وَلِكُلِّ وِجْهَةٍ هُوَ</p>										
वह	एक सिम्त	और हर एक के लिए	147	शक करने वाले	से	पस आप न हो जाएं	आप का रब	से	हक	
<p>مُؤَيِّدَهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ ۗ آيِنَ مَا تَكُونُوا يَأْتِ بِكُمْ اللَّهُ جَمِيعًا ۗ</p>										
इकटठा	अल्लाह	ले आया तुम्हें	तुम होगे	जहां कहीं	नेकियां	पस तुम सबकत ले जाओ	उस तरफ रख करता है			
<p>إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٤٨﴾ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ</p>										
अपना रख	पस कर लें	आप (स) निकलें	जहां	और से	148	क़ुदरत रखने वाला	चीज़	हर	पर	बेशक अल्लाह
<p>شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَإِنَّهُ لِلْحَقِّ مِنْ رَبِّكَ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا</p>										
उस से जो	बेखबर	अल्लाह	और नहीं	आप (स) के रब से	हक	और बेशक यही	मसजिदे हराम	तरफ		
<p>تَعْمَلُونَ ﴿١٤٩﴾ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ</p>										
मसजिदे हराम	तरफ	अपना रख	पस कर लें	आप निकलें	और जहां से	149	तुम करते हो			
<p>وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ ۗ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ</p>										
तुम पर	लोगों के लिए	रहे	ताकि न	उस की तरफ	अपने रख	सो कर लो	तुम हो	और जहां कहीं		
<p>حُجَّةٌ ۗ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ ۗ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِي ۗ وَلَا تَمَّ</p>										
ताकि मैं पूरी कर दूँ	और डरो मुझ से	सो तुम न डरो उन से	उन से	बे इन्साफ	वह जो कि	सिवाए	कोई हुज्जत			
<p>نِعْمَتِي عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٥٠﴾ كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رَسُولًا مِّنكُمْ</p>										
तुम में से	एक रसूल	तुम में	हम ने भेजा	जैसा कि	150	हिदायत पाओ	और ताकि तुम	तुम पर	अपनी नेमत	
<p>يَتْلُوا عَلَيْكُمْ آيَاتِنَا وَيُزَكِّيكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُم مَّا</p>										
जो	और सिखाते हैं तुम्हें	और हिक्मत	किताब	और सिखाते हैं तुम को	और पाक करते हैं तुम्हें	हमारे हुक्म	तुम पर	वह पढ़ते हैं		
<p>لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ﴿١٥١﴾ فَادْكُرُونِي أذكُرْكُمْ وَأشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُونِ ﴿١٥٢﴾</p>										
152	नाशुक्रि करो मेरी	और न	और तुम शुक्र करो मेरा	मैं याद रखूंगा तुम्हें	सो याद करो मुझे	151	जानते	तुम न थे		
<p>يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ ۗ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿١٥٣﴾</p>										
153	सवर करने वाले	साथ	बेशक अल्लाह	और नमाज़	सवर से	तुम मदद मांगो	ईमान लाए	जो कि	ऐ	
<p>وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتٌ ۗ بَلْ أَحْيَاءٌ ۗ وَلَكِنْ</p>										
और लेकिन	ज़िन्दा	बल्कि	मुर्दा	अल्लाह	रास्ता	में	मारे जाएं	उसे जो	कहो	और न
<p>لَا تَشْعُرُونَ ﴿١٥٤﴾ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصِ</p>										
और नुकसान	और भूक	खौफ	से	कुछ	और ज़रूर हम आजमाएंगे तुम्हें	154	तुम शऊर नहीं रखते			
<p>مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ ۗ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ﴿١٥٥﴾ الَّذِينَ إِذَا</p>										
जब	वह जो	155	सवर करने वाले	और खुशखबरी दें	और फल (जमा)	और जान (जमा)	माल (जमा)	से		
<p>أَصَابَتْهُمْ مُّصِيبَةٌ ۗ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَأَنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ﴿١٥٦﴾</p>										
156	लौटने वाले	उस की तरफ	और हम	हम अल्लाह के लिए	वह कहें	कोई मुसीबत	पहुँचे उन्हें			

١٤٧  
١٤٨  
١٤٩  
١٥٠  
١٥١  
١٥٢  
١٥٣  
١٥٤  
١٥٥  
١٥٦

١٨  
معاذقة ٣  
عند التّائخرين ١٢

أُولَئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ (157)										
157	हिदायत यापता	वह	और यही लोग	और रहमत	उन का रव	से	इनायतें	उन पर	यही लोग	
إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوْ اعْتَمَرَ										
उमरा करे	या	खाने कअवा	हज करे	पस जो	अल्लाह	निशानात	से	और मरवा	सफा	वेशक
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ اللَّهَ										
तो वेशक अल्लाह	कोई नेकी	खुशी से करे	और जो	उन दोनों	वह तवाफ करे	कि	उस पर	तो नहीं कोई हर्ज		
شَاكِرٌ عَلِيمٌ (158) إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَى										
और हिदायत	खुली निशानियां	से	जो नाज़िल किया हम ने	छुपाते हैं	जो लोग	वेशक	158	जानने वाला	कद्रदान	
مِّنْ بَعْدِ مَا بَيَّنَّاهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ أُولَئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ										
लानत करता है उन पर अल्लाह	यही लोग	किताब में	लोगों के लिए	हम ने वाज़ेह कर दिया	उस के बाद					
وَيَلْعَنُهُمُ اللَّهُ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَى (159) إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنَّاهُ										
और वाज़ेह किया	और इस्लाह की	उन्होंने ने तौबा की	वह लोग जो	सिवाए	159	लानत करने वाले	और लानत करते हैं उन पर			
فَأُولَئِكَ أَتُوبُ عَلَيْهِمْ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيمُ (160) إِنَّ الَّذِينَ										
जो लोग	वेशक	160	रहम करने वाला	माफ करने वाला	और मैं	उन्हें	मैं माफ करता हूँ	पस यही लोग हैं		
كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ أُولَئِكَ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ										
और फरिश्ते	अल्लाह	लानत	उन पर	यही लोग	काफिर	और वह	और वह मर गए	काफिर हुए		
وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ (161) خَلِدِينَ فِيهَا لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ										
अज़ाब	उन से	न हलका होगा	उस में	हमेशा रहेंगे	161	तमाम	और लोग			
وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ (162) وَاللَّهُمَّ إِلَهُ وَاحِدٌ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَنُ										
निहायत मेहरवान	सिवाए उस के	नहीं इबादत के लाइक	(एक) यकता	माबूद	और माबूद तुम्हारा	162	मोहलत दी जाएगी	और न उन्हें		
الرَّحِيمِ (163) إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ										
रात	और बदलते रहना	और ज़मीन	आस्मानों	पैदाइश	में	वेशक	163	रहम करने वाला		
وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَا										
और जो कि	लोग	नफा देती है	साथ जो	समन्दर	में	बहती है	जो कि	और कशती	और दिन	
أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ مَّاءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا										
उस के मरने के बाद	ज़मीन	उस से	फिर ज़िन्दा किया	पानी	से	आस्मानों से	अल्लाह	उतारा		
وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ وَتَصْرِيفِ الرِّيحِ وَالسَّحَابِ										
और बादल	हवाएं	और बदलना	हर (किसम) के जानवर	से	उस में	और फैलाए				
الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ (164)										
164	अक़ल वाले	लोगों के लिए	निशानियां	और ज़मीन	आस्मान	दरमियान	ताबे			

यही लोग हैं जिन पर उन के रव की तरफ से इनायतें हैं और रहमत है, और यही लोग हिदायत यापता है। (157)

वेशक सफा और मरवा अल्लाह के निशानात में से हैं, पस जो कोई खाने कअवा का हज करे या उमरा तो उस पर कोई हर्ज नहीं कि उन दोनों का तवाफ करे, और जो खुशी से कोई नेकी करे तो वेशक अल्लाह कद्रदान, जानने वाला है। (158)

वेशक जो लोग छुपाते हैं जो अल्लाह ने खुली निशानियां और हिदायत नाज़िल की, उस के बाद कि हम ने उसे किताब में लोगों के लिए वाज़ेह कर दिया, यही लोग हैं जिन पर अल्लाह लानत करता है, और उन पर लानत करते हैं लानत करने वाले। (159)

सिवाए उन लोगों के जिन्होंने ने तौबा की और इस्लाह की और वाज़ेह कर दिया, पस यही लोग हैं जिन्हें मैं माफ करता हूँ, और मैं माफ करने वाला, रहम करने वाला हूँ। (160)

वेशक जो लोग काफिर हुए और वह (काफिर) ही मर गए, यही लोग हैं जिन पर लानत है अल्लाह की और फरिश्तों की और तमाम लोगों की। (161)

वह उस में हमेशा रहेंगे, उन से अज़ाब हलका न होगा, और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। (162)

और तुम्हारा माबूद यकता माबूद है, उस के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं, निहायत मेहरवान, रहम करने वाला। (163)

वेशक ज़मीन और आस्मानों की पैदाइश में, और रात और दिन के बदलते रहने में, और कशती में जो समन्दर में बहती है (उन चीज़ों के) साथ जो लोगों को नफा देती हैं, और जो अल्लाह ने आस्मानों से पानी उतारा, फिर उस से ज़मीन को ज़िन्दा किया उस के मरने के बाद, और उस में हर किसम के जानवर फैलाए, और हवाओं के बदलने में, और आस्मान ओ ज़मीन के दरमियान ताबे बादलों में निशानियां हैं (उन) लोगों के लिए (जो) अक़ल वाले हैं। (164)

और जो लोग अल्लाह के सिवा शरीक अपनाते हैं वह उन से मुहब्बत करते हैं जैसे अल्लाह से मुहब्बत, और जो लोग ईमान लाए (उन्हें) अल्लाह की मुहब्बत सब से ज़ियादा है, और अगर देख लें जिन्होंने ने जुल्म किया (उस वक़्त को) जब यह अज़ाब देखेंगे कि तमाम कुव्वत अल्लाह के लिए है और यह कि अल्लाह का अज़ाब सख़्त है। (165)

जब बेज़ार हो जाएंगे वह जिन की पैरवी की गई उन से जिन्होंने ने पैरवी की थी और वह अज़ाब देख लेंगे, और उन से तमाम वसाइल कट जाएंगे। (166)

और वह कहेंगे जिन्होंने ने पैरवी की थी काश हमारे लिए दोबारा (दुन्या में लौट जाना होता) तो हम उन से बेज़ारी करते जैसे उन्होंने ने हम से बेज़ारी की, उसी तरह अल्लाह उन के अमल उन्हें हसरतें बना कर दिखाएगा, और वह आग से निकलने वाले नहीं। (167)

ऐ लोगो! खाओ उस में से जो ज़मीन में है हलाल और पाक, और पैरवी न करो शैतान के कदमों की, वेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (168)

वह तुम्हें हुक्म देता है सिर्फ़ बुराई और बेहयाई का और यह कि तुम अल्लाह (के बारे में) कहो जो तुम नहीं जानते। (169)

और जब उन्हें कहा जाता है उस की पैरवी करो जो अल्लाह ने उतारा तो वह कहते हैं बल्कि हम उस की पैरवी करेंगे जिस पर हम ने पाया अपने बाप दादा को, भला अगरचे उन के बाप दादा कुछ न समझते हों और हिदायत याफ़ता न हों। (170)

और जिन लोगों ने कुफ़ किया उन की मिसाल उस शख्स की हालत के मानिंद है जो उस को पुकारता है जो नहीं सुनता सिवाए पुकारने और चिल्लाने (की आवाज़ के), वह वहरे, गूँगे, अंधे हैं, पस वह नहीं समझते। (171)

ऐ वह लोग जो ईमान लाए हो, तुम पाकीज़ा चीज़ों में से खाओ जो हम ने तुम्हें दी है और तुम अल्लाह का शुक्र अदा करो अगर तुम सिर्फ़ उस की बन्दगी करते हो। (172)

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَتَّخِذُ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَنْدَادًا يُحِبُّونَهُمْ										
मुहब्बत करते हैं उन से	शरीक	अल्लाह	सिवाए	से	अपनाते हैं	जो	लोग	और से		
كُحِبِّ اللَّهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَشَدُّ حُبًّا لِلَّهِ وَلَوْ يَرَى الَّذِينَ ظَلَمُوا										
जुल्म किया	वह जिन्होंने ने	देख लें	और अगर	अल्लाह के लिए	मुहब्बत	सब से ज़ियादा	ईमान लाए	और जो लोग	जैसे मुहब्बत	
إِذْ يَرُونَ الْعَذَابَ أَنَّ الْقُوَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا وَأَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعَذَابِ (165)										
165	अज़ाब	सख़्त	अल्लाह	और यह कि	तमाम	अल्लाह के लिए	कुव्वत	कि	अज़ाब	जब देखेंगे
إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا مِنَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا وَرَأَوْا الْعَذَابَ										
अज़ाब	और वह देखेंगे	पैरवी की	जिन्होंने ने	से	पैरवी की गई	वह लोग जो	जब बेज़ार हो जाएंगे			
وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْأَسْبَابَ (166) وَقَالَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّا كَرَّتْ										
दोबारा	हमारे लिए	काश कि	पैरवी की	वह जिन्होंने ने	और कहेंगे	166	वसाइल	उन से	और कट जाएंगे	
فَنَتَبَرَّأَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوا مِنَّا كَذَلِكَ يُرِيهِمُ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ										
उन के अमल	अल्लाह	उन्हें दिखाएगा	उसी तरह	हम से	उन्होंने ने बेज़ारी की	जैसे	उन से	तो हम बेज़ारी करते		
حَسْرَتٍ عَلَيْهِمْ وَمَا هُمْ بِخَارِجِينَ مِنَ النَّارِ (167) يَا أَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا										
तुम खाओ	लोग	ऐ	167	आग से	निकलने वाले	और नहीं वह	उन पर	हसरतें		
مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلَالًا طَيِّبًا وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوتَ الشَّيْطَانِ										
शैतान	कदमों	पैरवी करो	और न	पाक	हलाल	ज़मीन में	उस से जो			
إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ (168) إِنَّمَا يَأْمُرُكُم بِالسُّوءِ وَالْفَحْشَاءِ وَأَنَّ										
और यह कि	और बेहयाई	बुराई	तुम्हें हुक्म देता है	सिर्फ़	168	खुला	दुश्मन	तुम्हारा	वेशक वह	
تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ (169) وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا										
पैरवी करो	उन्हें	कहा जाता है	और जब	169	तुम जानते	जो नहीं	अल्लाह पर	तुम कहो		
مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا أَوَلَوْ كَانَ										
हों	भला अगरचे	अपने बाप दादा	उस पर	जो हम ने पाया	बल्कि हम पैरवी करेंगे	वह कहते हैं	अल्लाह	जो उतारा		
أَبَاؤُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ (170) وَمَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا										
जिन लोगों ने कुफ़ किया	और मिसाल	170	और न हिदायत याफ़ता हों	कुछ	न समझते हों	उन के बाप दादा				
كَمَثَلِ الَّذِينَ يَنْعِقُونَ بِمَا لَا يَسْمَعُ إِلَّا دُعَاءً وَنِدَاءً صُمٌّ بُكْمٌ										
गूँगे	वहरे	और आवाज़	पुकारना	सिवाए	नहीं सुनता	उस को जो	पुकारता है	वह जो	मानिंद हालत	
عُمًى فَهُمْ لَا يَعْقِلُونَ (171) يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ										
पाक	से	तुम खाओ	ईमान लाए	जो लोग	ऐ	171	नहीं समझते	पस वह	अंधे	
مَا رَزَقْنَاكُمْ وَاشْكُرُوا لِلَّهِ إِنَّ كُنتُمْ تَعْبُدُونَ (172)										
172	बन्दगी करते हो	सिर्फ़ उस की	अगर तुम हो	अल्लाह का	और शुक्र करो	जो हम ने तुम्हें दिया				

٢٠  
٢

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالِدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهْلَ بِهِ									
उस पर	पुकारा गया	और जो	सुब्बर	और गोशत	और खून	मुर्दार	तुम पर	हराम किया	दर हकीकत
لِغَيْرِ اللَّهِ فَمَنْ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ									
वेशक अल्लाह	उस पर	गुनाह	तो नहीं	हद से बढ़ने वाला	और न	न सरकशी करने वाला	लाचार हो जाए	पस जो	अल्लाह के सिवा
غَفُورٌ رَّحِيمٌ (173) إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ الْكِتَابِ									
किताब	से	अल्लाह	जो उतारा	छुपाते हैं	जो लोग	वेशक	173	रहम करने वाला	बख़्शने वाला
وَيَشْتَرُونَ بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا أُولَٰئِكَ مَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ									
अपने पेटों	में	नहीं खाते	यही लोग	थोड़ी	कीमत	उस से	और वसूल करते हैं		
إِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ									
अज़ाब	और उन के लिए	पाक करेगा उन्हें	और न	कियामत के दिन	अल्लाह	बात करेगा	और न	आग	मगर (सिर्फ)
أَلِيمٌ (174) أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرُوا الضَّلَالََةَ بِالْهُدَىٰ وَالْعَذَابِ									
और अज़ाब	हिदायत के बदले	गुमराही	मोल ली	जिन्होंने ने	यही लोग	174	दर्दनाक		
بِالْمَغْفِرَةِ فَمَا أَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ (175) ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ نَزَّلَ									
नाज़िल की	अल्लाह	इस लिए कि	यह	175	आग	पर	बहुत सवर करने वाले वह	सो किस कद्र	मग़फ़िरत के बदले
الْكِتَابَ بِالْحَقِّ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِي الْكِتَابِ لَفِي									
में	किताब	में	इख़्तिलाफ़ किया	जो लोग	और वेशक	हक के साथ	किताब		
شِقَاقٍ بَعِيدٍ (176) لَيْسَ الْبِرَّ أَنْ تُوَلُّوا وُجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ									
मशरिफ़	तरफ़	अपने मुँह	तुम कर लो	कि	नेकी	नहीं	176	दूर	ज़िद
وَالْمَغْرِبِ وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَالْمَلَائِكَةِ									
और फरिशते	आखिरत	और दिन	अल्लाह पर	ईमान लाए	जो	नेकी	और लेकिन	और मगरिब	
وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّنَ وَآتَى الْمَالَ عَلَىٰ حُبِّهِ ذَوِي الْقُرْبَىٰ									
रिशतेदार	उस की मुहब्बत पर	माल	और दे	और नबियों	और किताब				
وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَابْنَ السَّبِيلِ وَالسَّائِلِينَ وَفِي الرِّقَابِ									
और गर्दनों में	और सवाल करने वाले	और मुसाफ़िर	और मिसकीन (जमा)	और यतीम (जमा)					
وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَالْمُوفُونَ بِعَهْدِهِمْ									
अपने अहद	और पूरा करने वाले	ज़कात	और अदा करे	नमाज़	और काइम करे				
إِذَا عَاهَدُوا وَالصَّابِرِينَ فِي الْبَأْسَاءِ وَالصَّرَآءِ وَحِينَ الْبَأْسِ									
जंग	और वक़्त	और तकलीफ़	सख़्ती	में	और सवर करने वाले	वह अहद करें	जब		
أُولَٰئِكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ (177)									
177	परहेज़गार	वह	और यही लोग	उन्होंने ने सच कहा	वह जो कि	यही लोग			

दर हकीकत (हम ने) तुम पर हराम किया है मुर्दार और खून और सुब्बर का गोशत और जिस पर अल्लाह के सिवा (किसी और का नाम) पुकारा गया, पस जो लाचार हो जाए मगर न सरकशी करने वाला हो न हद से बढ़ने वाला तो उस पर कोई गुनाह नहीं, वेशक अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। (173)

वेशक जो लोग छुपाते हैं जो अल्लाह ने (बसूरत) किताब नाज़िल किया और उस से वसूल करते हैं थोड़ी कीमत, यही लोग हैं जो अपने पेटों में सिर्फ़ आग भरते हैं और उन से बात नहीं करेगा अल्लाह कियामत के दिन, और न उन्हें पाक करेगा, और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (174)

यही लोग हैं जिन्होंने ने हिदायत के बदले गुमराही मोल ली, और मग़फ़िरत के बदले अज़ाब, सो किस कद्र ज़यादा वह आग पर सवर करने वाले हैं। (175)

यह इस लिए कि अल्लाह ने हक के साथ किताब नाज़िल की, और वेशक जिन लोगों ने किताब में इख़्तिलाफ़ किया वह ज़िद में दूर (जा पड़े हैं)। (176)

नेकी यह नहीं कि तुम अपने मुँह मशरिफ़ या मगरिब की तरफ़ कर लो, मगर नेकी यह है जो ईमान लाए अल्लाह पर और यौमे आखिरत पर और फरिशतों और किताबों पर और नबियों पर, और उस (अल्लाह) की मुहब्बत पर माल दे रिशतेदारों को और यतीमों और मिसकीनों को और मुसाफ़िरों को और सवाल करने वालों को और गर्दनों के आज़ाद कराने में, और नमाज़ काइम करे और ज़कात अदा करे, और जब वह अहद करें तो उसे पूरा करें, और सवर करने वाले सख़्ती में और तकलीफ़ में और जंग के वक़्त, यही लोग सच्चे हैं, और यही लोग परहेज़गार हैं। (177)

ऐ ईमान वालो! तुम पर फर्ज किया गया किसास मकतूलों (के वारे) में, आज़ाद के बदले आज़ाद, और गुलाम के बदले गुलाम, और औरत के बदले औरत, पस जिससे उस के भाई की तरफ से कुछ माफ़ किया जाए तो दस्तूर के मुताबिक़ पैरवी करे, और उसे अच्छे तरीके से अदा करे, यह तुम्हारे रब की तरफ़ से आसानी और रहमत है, पस जिस ने उस के बाद ज़ियादती की तो उस के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (178)

और तुम्हारे लिए किसास में ज़िन्दगी है, ऐ अक़ल वालो! ताकि तुम परहेज़गार हो जाओ। (179)

तुम पर फर्ज किया गया है कि जब तुम में से किसी को मौत आए, अगर वह माल छोड़े तो वसीयत करे माँ बाप के लिए और रिशतेदारों के लिए दस्तूर के मुताबिक़, यह लाज़िम है परहेज़गारों पर। (180)

फिर जो कोई उसे बदल दे उस के बाद कि उस ने उस को सुना तो उस का गुनाह सिर्फ़ उन लोगों पर है जिन्होंने उसे बदला, बेशक़ अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (181)

पस जो कोई वसीयत करने वाले से तरफ़दारी या गुनाह का ख़ौफ़ करे फिर सुलह करा दे उन के दरमियान तो उस में कोई गुनाह नहीं, बेशक़ अल्लाह बख़शने वाला रहम करने वाला है। (182)

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो (मोमिनो)! तुम पर रोज़े फर्ज किए गए हैं जैसे तुम से पहले लोगों पर फर्ज किए गए थे ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ। (183)

गिनती के चन्द दिन हैं, पस तुम में से जो कोई बीमार हो या सफ़र पर हो तो गिनती पूरी करे बाद के दिनों में, और उन पर है जो ताक़त रखते हैं एक नादार को खाना खिलाना, पस जो खुशी से कोई नेकी करे वह उस के लिए बेहतर है, और अगर तुम रोज़ा रखो तो तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो। (184)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلِ ١٧٨										
मकतूलों में	किसास	फर्ज किया गया तुम पर	ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ					
الْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْأُنْثَىٰ بِالْأُنْثَىٰ ۖ فَمَنْ عُفِيَ لَهُ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٌ فَاتَّبِعْهُ بِالْمَعْرُوفِ ۚ وَأَدَاءُ إِلَيْهِ بِإِحْسَانٍ ۗ ذَلِكَ تَخْفِيفٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ۗ فَمَنِ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ ١٧٩										
उस का भाई	से	उस के लिए	माफ़ किया जाए	पस जिसे	औरत के बदले	और औरत	गुलाम के बदले	और गुलाम	आज़ाद के बदले	आज़ाद
आसानी	यह	अच्छा तरीका	उसे	और अदा करना	मुताबिक़ दस्तूर	तो पैरवी करना	कुछ			
وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يَّأُوْلٰى ٱلْأَبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ١٧٩										
178	दर्दनाक	अज़ाब	तो उस के लिए	उस	बाद	ज़ियादती की	पस जो	और रहमत	तुम्हारा रब	से
كُتِبَ عَلَيْكُمُ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ إِن تَرَكَ خَيْرًا ۗ الْوَصِيَّةُ لِلْوَٰلِدَيْنِ وَٱلْأَقْرَبِينَ بِٱلْمَعْرُوفِ ۗ حَقًّا عَلَى ٱلْمُتَّقِينَ ١٨٠										
वसीयत	माल	छोड़ा	अगर	मौत	तुम्हारा कोई	आए	जब	फर्ज किया गया तुम पर		
فَمَنْ بَدَّلَهُ بَعْدَ مَا سَمِعَهُ فَإِنَّمَا إِثْمُهُ عَلَى ٱلَّذِينَ يُبَدِّلُونَهُ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ١٨١										
उसे बदला	जो लोग	पर	उस का गुनाह	तो सिर्फ़	उस को सुना	बाद जो	बदल दे उसे	फिर जो		
या गुनाह	तरफ़दारी	वसीयत करने वाला	से	खौफ़ करे	पस जो	181	जानने वाला	सुनने वाला	बेशक़ अल्लाह	
فَاصْلَحْ بَيْنَهُمْ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ١٨٢										
182	रहम करने वाला	बख़शने वाला	बेशक़ अल्लाह	उस पर	तो नहीं गुनाह	उन के दरमियान	फिर सुलह करा दे			
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ١٨٣										
जो लोग	पर	फर्ज किए गए	जैसे	रोज़े	तुम पर	फर्ज किए गए	ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ	
हो	पस जो	गिनती के	चन्द दिन	183	परहेज़गार बन जाओ	ताकि तुम	तुम से पहले			
مِنْكُمْ مَّرِيضًا ۙ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ ۖ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۗ وَعَلَى ٱلَّذِينَ يُطِيقُونَهِ فِدْيَةٌ ۖ طَعَامٌ مِّسْكِينٍ ۗ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُ ۗ وَأَن تَصُومُوا خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ١٨٤										
जो लोग	और पर	दूसरे (बाद) के दिन	से	तो गिनती	सफ़र	पर	या	बीमार	तुम में से	
कोई नेकी	खुशी से करे	पस जो	नादार	खाना	बदला	ताक़त रखते हों				
184	जानते हो	तुम हो	अगर	बेहतर तुम्हारे लिए	तुम रोज़ा रखो	और अगर	बेहतर उस के लिए	तो वह		

۲۲  
ع  
۱

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى لِّلنَّاسِ							
महीना	रमज़ान	जिस	नाज़िल किया गया	उस में	कुरआन	हिदायत	लोगों के लिए
وَبَيَّنَّتْ مِّنَ الْهُدَى وَالْفُرْقَانِ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ							
महीना	और रौशन दलीलें	से	हिदायत	और फुरकान	पस जो	पाए	तुम में से
فَلْيُصِمُّهُ وَمَنْ كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ							
चाहिए कि रोज़े रखे	और जो	हो	बीमार	या	पर	सफ़र	तो गिनती पूरी करले
يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ							
चाहता है	अल्लाह	तुम्हारे लिए	आसानी	और नहीं चाहता	तुम्हारे लिए	दुश्वारी	और ताकि तुम पूरी करो
وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَيْكُم وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٨٥﴾ وَإِذَا سَأَلَكَ							
और ताकि तुम बड़ाई करो	अल्लाह	पर	जो तुम्हें हिदायत दी	और ताकि तुम	शुक्र अदा करो	185	और जब
عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ							
मेरे बन्दे	मेरे वारे में	तो मैं	करीब	मैं कबूल करता हूँ	दुआ	पुकारने वाला	जब
فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ﴿١٨٦﴾							
पस चाहिए हुकम मानें	मेरा	और ईमान लाएं	मुझ पर	ताकि वह	वह हिदायत पाएं	186	
أَحَلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصَّيَامِ الرَّفَثُ إِلَىٰ نِسَائِكُمْ هُنَّ							
जाइज़ कर दिया गया	तुम्हारे लिए	रात	रोज़ा	वेपर्दा होना	तरफ़ (से)	अपनी औरतें	वह
لِبَاسِكُمْ وَأَنْتُمْ لِبَاسٍ لَّهُنَّ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ							
लिबास	तुम्हारे लिए	और तुम	लिबास	उन के लिए	जान लिया अल्लाह	कि तुम	तुम थे
تَخْتَانُونَ أَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ فَالآنَ							
खियानत करते	अपने तई	सो माफ़ कर दिया	तुम को	और दरगुज़र की	तुम से	पस अब	
بَاشِرُوهُنَّ وَابْتَغُوا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّىٰ							
उन से मिलो	और तलब करो	जो	लिख दिया अल्लाह	तुम्हारे लिए	और खाओ	और पियो	यहां तक कि
يَتَبَيَّنَ لَكُمْ الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ							
वाज़ेह हो जाए	तुम्हारे लिए	धारी	सफ़ेद	से	धारी	सियाह	से
ثُمَّ أَتَمُّوا الصَّيَامَ إِلَىٰ اللَّيْلِ وَلَا تُبَاشِرُوهُنَّ وَأَنْتُمْ							
फिर	तुम पूरा करो	रोज़ा	तक	रात	और न	उन से मिलो	जबकि तुम
عَكْفُونَ فِي الْمَسْجِدِ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَقْرَبُوهَا							
एतिकाफ़ करने वाले	मसजिदों में	यह	हदें	अल्लाह	पस न	उन के करीब जाओ	
كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لِّلنَّاسِ لِيَعْلَمُوا بِتَقْوَىٰ ۗ ﴿١٨٧﴾							
इसी तरह	वाज़ेह करता है	अल्लाह	अपने हुकम	लोगों के लिए	ताकि वह	परहेज़गार हो जाएं	187

रमज़ान का महीना है जिस में कुरआन नाज़िल किया गया, कुरआन लोगों के लिए हिदायत है, और हिदायत की रौशन दलीलें, और फुरकान (हक़ को वातिल से जुदा करने वाला), पस जो तुम में से यह महीना पाए उसे चाहिए कि रोज़े रखे और जो बीमार हो या सफ़र पर हो वह बाद के दिनों में गिनती पूरी कर ले, अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है और दुश्वारी नहीं चाहता, और ताकि तुम गिनती पूरी करो और ताकि तुम अल्लाह की बड़ाई बयान करो उस पर कि उस ने तुम्हें हिदायत दी, और ताकि तुम शुक्र अदा करो। (185)

और जब मेरे बन्दे आप (स) से मेरे मुतअल्लिक़ पूछें तो मैं करीब हूँ, मैं कबूल करता हूँ पुकारने वाले की दुआ जब वह मुझ से मांगे, पस चाहिए कि वह मेरा हुकम मानें और मुझ पर ईमान लाएं ताकि वह हिदायत पाएं! (186)

तुम्हारे लिए जाइज़ कर दिया गया रोज़े की रात में अपनी औरतों से वेपर्दा होना, वह तुम्हारे लिए लिबास है और तुम उन के लिए लिबास हो, अल्लाह ने जान लिया कि तुम अपने तई खियानत करते थे सो उस ने तुम को माफ़ कर दिया और तुम से दरगुज़र की, पस अब उन से मिलो और जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है तलब करो, और खाओ और पियो यहां तक कि वाज़ेह हो जाए तुम्हारे लिए फ़ज़र की सफ़ेद धारी सियाह धारी से, फिर तुम रात तक रोज़ा पूरा करो, और उन से न मिलो जब तुम मोतकिफ़ हो मसजिदों में (हालते एतिकाफ़ में), यह अल्लाह की हदें हैं, पस उन के करीब न जाओ, इसी तरह वाज़ेह करता है अल्लाह लोगों के लिए अपने हुकम ताकि वह परहेज़गार हो जाएं। (187)

और अपने माल आपस में न खाओ नाहक, और उस से हाकिमों तक (रिश्वत) न पहुँचाओ ताकि तुम लोगों के माल से कोई हिस्सा खाओ गुनाह से (नाजाइज़ तौर पर) और तुम जानते हो। (188)

और आप (स) से नए चाँद के बारे में पूछते हैं? आप कह दें यह (पैमाना-ए-) औकात लोगों और हज के लिए है, और नेकी यह नहीं कि तुम घरों में आओ उन की पुश्त से, बल्कि नेक वह है जो परहेज़गारी करे, और घरों में उन के दरवाज़ों से आओ, और अल्लाह से डरो ताकि तुम कामयाबी हासिल करो। (189)

और तुम अल्लाह के रास्ते में उन से लड़ो जो तुम से लड़ते हैं और ज़ियादती न करो, बेशक अल्लाह ज़ियादती करने वालों को दोस्त नहीं रखता! (190)

और उन्हें मार डालो जहाँ उन्हें पाओ और उन्हें निकाल दो जहाँ से उन्होंने ने तुम्हें निकाला, और फ़ित्ना क़त्ल से ज़ियादा संगीन है, और उन से मस्जिदे हराम (खानाए क़़वा) के पास न लड़ो यहाँ तक कि वह यहाँ तुम से लड़ें, पस अगर वह तुम से लड़ें तो तुम उन से लड़ो, इसी तरह सज़ा है काफ़िरों की! (191)

फिर अगर वह वाज़ आ जाएं तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। (192)

और तुम उन से लड़ो यहाँ तक कि कोई फ़ित्ना न रहे और दीन अल्लाह के लिए हो जाए, पस अगर वह वाज़ आ जाएं तो नहीं (किसी पर) ज़ियादती सिवाए ज़ालिमों के। (193)

وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوا بِهَا							
उस से	और (न) पहुँचाओ	नाहक	आपस में	अपने माल	खाओ	और न	
إِلَى الْحُكَّامِ لِتَأْكُلُوا فَرِيقًا مِّنْ أَمْوَالِ النَّاسِ							
लोग	माल	से	कोई हिस्सा	ताकि तुम खाओ	हाकिमों तक		
بِالْإِثْمِ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٨٨﴾ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَهْلِ							
नए चाँद	से	वह आप से पूछते हैं	188	जानते हो	और तुम	गुनाह से	
فُلْ هِيَ مَوَاقِيتٌ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَنْ							
यह कि	नेकी	और नहीं	और हज	लोगों के लिए	औकात	यह	आप कह दें
تَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ ظُهُورِهَا وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقَى							
परहेज़गारी करे	जो	नेकी	और लेकिन	उन की पुश्त	से	घर (जमा)	तुम आओ
وَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ أَبْوَابِهَا وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ							
ताकि तुम	अल्लाह	और तुम डरो	दरवाज़े	से	घर (जमा)	और तुम आओ	
تُفْلِحُونَ ﴿١٨٩﴾ وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ							
वह जो कि	अल्लाह	रास्ता	में	और तुम लड़ो	189	कामयाबी हासिल करो	
يُقَاتِلُونَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿١٩٠﴾							
190	ज़ियादती करने वाले	नहीं पसन्द करता	बेशक अल्लाह	और ज़ियादती न करो		तुम से लड़ते हैं	
وَأَقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ وَأَخْرِجُوهُمْ مِّنْ							
से	और उन्हें निकाल दो	तुम उन्हें पाओ	जहाँ	और उन्हें मार डालो			
حَيْثُ أَخْرِجْتُمْ وَأَلْفِتْنَةً أَسَدُّ مِنَ الْقَتْلِ							
क़त्ल	से	ज़ियादा संगीन	और फ़ित्ना	उन्होंने ने तुम्हें निकाला	जहाँ		
وَلَا تُقَاتِلُوهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتَّىٰ يُقَاتِلُوكُمْ							
वह तुम से लड़ें	यहाँ तक कि	मस्जिदे हराम (खानाए क़़वा)	पास	उन से लड़ो	और न		
فِيهِ فَإِنْ قَاتَلُوكُمْ فَاقْتُلُوهُمْ كَذَلِكَ جَزَاءُ							
बदला	इसी तरह	तो तुम उन से लड़ो	वह तुम से लड़ें	पस अगर	उस में		
الْكَافِرِينَ ﴿١٩١﴾ فَإِنْ أَنْتَهُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٩٢﴾							
192	रहम करने वाला	बख़्शने वाला	अल्लाह तो बेशक	वह वाज़ आ जाएं	फिर अगर	191	काफ़िर (जमा)
وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ							
दीन	और हो जाए	कोई फ़ित्ना	न रहे	यहाँ तक कि	और तुम उन से लड़ो		
لِلَّهِ فَإِنْ أَنْتَهُوا فَلَا عُدْوَانَ إِلَّا عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿١٩٣﴾							
193	ज़ालिम (जमा)	पर	सिवाए	ज़ियादती	तो नहीं	वह वाज़ आ जाएं	पस अगर अल्लाह के लिए

٢٣  
٤



الشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمَتُ قِصَاصٌ فَمَنْ اعْتَدَى						
ज़ियादती की	पस जिस	बदला	और हुर्मतें	बदला हुर्मत वाला महीना	हुर्मत वाला महीना	
عَلَيْكُمْ فَاَعْتَدُوا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدَى عَلَيْكُمْ						
तुम पर	उस ने ज़ियादती की	जो	जैसी	उस पर	तो तुम ज़ियादती करो	तुम पर
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ (194) وَأَنْفِقُوا فِي						
में	और तुम खर्च करो	194	परहेज़गारों	साथ अल्लाह कि	और जान लो	अल्लाह और तुम डरो
سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ وَأَحْسِنُوا						
और नेकी करो	हलाकत	तरफ	अपने हाथ	डालो	और न	अल्लाह रास्ता
إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ (195) وَاتَّمُوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ						
अल्लाह के लिए	और उमरा	हज	और पूरा करो	195	नेकी करने वाले	दोस्त रखता है
فَإِنْ أَحْصَرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ وَلَا تَحْلِقُوا رُءُوسَكُمْ حَتَّى						
यहां तक	अपने सर	मुंडवाओ	और न	कुरबानी	से	मयस्सर आए तो जो तुम रोक दिए जाओ फिर अगर
يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحَلَّهُ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيضًا أَوْ بِهِ أَذًى						
तक्लीफ	उस के	या	बीमार	तुम में से	हो	पस जो अपनी जगह कुरबानी पहुँच जाए
مِّنْ رَّأْسِهِ ففِدْيَةٌ مِّنْ صِيَامٍ أَوْ صَدَقَةٍ أَوْ نُسُكٍ فَإِذَا أَمِنْتُمْ						
तुम अमन में हो	फिर जब	कुरबानी	या	सदका	या	रोज़ा से तो बदला उस का सर से
فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ						
कुरबानी से	मयस्सर आए	तो जो	हज	तक	उमरे का	फाइदा उठाए तो जो
فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ إِذَا رَجَعْتُمْ						
जब तुम वापस आजाओ	और सात	हज में	दिन	तीन	तो रोज़ा रखे	न पाए फिर जो
تِلْكَ عَشْرَةٌ كَامِلَةٌ ذَلِكَ لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ أَهْلَهُ حَاضِرِي						
मौजूद	उस के घर वाले	न हों	लिए-जो	यह	पूरे	दस यह
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ (196)						
196	अज़ाब	सख्त	अल्लाह कि	और जान लो	अल्लाह और तुम डरो	मसजिदे हराम
الْحَجَّ أَشْهُرٌ مَّعْلُومَةٌ فَمَنْ فَرَضَ فِيهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوقَ						
और न गाली दे	बेपर्दा हो	तो न	हज	उन में	लाज़िम कर लिया	पस जिस ने मालूम (मुकर्रर) महीने हज
وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ وَمَا تَفَعَّلُوا مِنْ خَيْرٍ يَّعْلَمُهُ اللَّهُ وَتَزَوَّدُوا						
और तुम ज़ादेराह ले लिया करो	अल्लाह	उसे जानता है	नेकी से	तुम करोगे	और जो	हज में और न झगड़ा
فَإِنَّ خَيْرَ الرِّزَادِ التَّقْوَى وَاتَّقُونِ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ (197)						
197	ऐ अक़ल वालो	और मुझ से डरो	तक़्वा	ज़ादे राह	बेहतर	पस बेशक

हुर्मत वाला महीना बदला है हुर्मत वाले महीने का, और हुर्मतों का बदला है, पस जिस ने तुम पर ज़ियादती की तो तुम उस पर ज़ियादती करो जैसी उस ने तुम पर ज़ियादती की, और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह साथ है परहेज़गारों के। (194)

और अल्लाह की राह में खर्च करो और (अपने आप को) अपने हाथों न डालो हलाकत में, और नेकी करो, बेशक अल्लाह नेकी करने वालों को दोस्त रखता है। (195)

और पूरा करो हज और उमरा अल्लाह के लिए, फिर अगर तुम रोक दिए जाओ तो जो कुरबानी मयस्सर आए (पेश करो) और अपने सर न मुंडवाओ यहां तक कि कुरबानी अपनी जगह पहुँच जाए, फिर जो कोई तुम में से बीमार हो या उस के सर में तक्लीफ हो तो वह बदला दे रोजे से या सदके से या कुरबानी से, फिर जब तुम अमन में हो तो जो फाइदा उठाए हज के साथ उमरा (मिला कर) तो उसे जो कुरबानी मयस्सर आए (देदे), फिर जो न पाए तो वह रोजे रख ले तीन दिन हज के अथ्याम में और सात जब तुम वापस आजाओ, यह दस पूरे हुए, यह उस के लिए है जिस के घर वाले मसजिदे हराम में मौजूद न हों (न रहते हों) और तुम अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह सख्त अज़ाब देने वाला है। (196)

हज के महीने मुकर्रर हैं, पस जिस ने उन में हज लाज़िम कर लिया तो वह न बेपर्दा हो, न गाली दे, न झगड़ा करे हज में, और तुम जो नेकी करोगे अल्लाह उसे जानता है, और तुम ज़ादेराह ले लिया करो, पस बेशक बेहतर ज़ादे राह तक़्वा है, और ऐ अक़ल वालो! मुझ से डरते रहो। (197)

तुम पर कोई गुनाह नहीं अगर तुम अपने रब का फ़ज़ल तलाश करो (तिज़ारत करो), फिर जब तुम अ़रफ़ात से लौटो तो अल्लाह को याद करो मशअ़रे हराम के नज़दीक (मुज़दलिफ़ा में), और अल्लाह को याद करो जैसे उस ने तुम्हें हिदायत दी और बेशक उस से पहले तुम नावाक़िफ़ों में से थे। (198)

फिर तुम लौटो जहां से लोग लौटें, और अल्लाह से मग्फ़िरत चाहो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है (199)

फिर जब तुम हज़ के मरासिम अदा कर चुको तो अल्लाह को याद करो जैसा कि तुम अपने बाप दादा को याद करते थे या उस से भी ज़ियादा याद करो, पस कोई आदमी कहता है ऐ हमारे रब! हमें दुन्या में (भलाई) दे और उस के लिए नहीं है आख़िरत में कुछ हिस्सा। (200)

और उन में से कोई कहता है ऐ हमारे रब! हमें दे दुन्या में भलाई और आख़िरत में भलाई, और दोज़ख़ के अज़ाब से बचा ले। (201)

यही लोग हैं उन के लिए हिस्सा है उस में से जो उन्हीं ने कमाया, और अल्लाह हिसाब लेने में तेज़ है। (202)

और तुम अल्लाह को याद करो गिनती के चन्द (मुकर्रर) दिनों में, पस जो दो दिन में जलदी चला गया तो उस पर कोई गुनाह नहीं और जिस ने ताख़ीर की उस पर कोई गुनाह नहीं (यह उस के लिए है) जो डरता रहा, और तुम अल्लाह से डरो, और जान लो कि तुम उस की तरफ़ जमा किए जाओगे। (203)

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَبْتَغُوا فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ ۗ							
अपना रब	से	फ़ज़ल	तलाश करो	अगर तुम	कोई गुनाह	तुम पर	नहीं
فَإِذَا أَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفَاتٍ فَاذْكُرُوا اللَّهَ عِندَ							
नज़दीक	अल्लाह	तो याद करो	अ़रफ़ात	से	तुम लौटो	फिर जब	
الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۗ وَاذْكُرُوهُ كَمَا هَدَيْتُمْ ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ							
तुम थे	और बेशक	उस ने तुम्हें हिदायत दी	जैसे	और उसे याद करो	मशअ़रे हराम		
مِّن قَبْلِهِ لَمَنِ الضَّالِّينَ ﴿١٩٨﴾ ثُمَّ أَفِيضُوا مِمَّنْ حَيْثُ							
से - जहां	तुम लौटो	फिर	198	नावाक़िफ़	ज़रूर - से	उस से पहले	
أَفْاضَ النَّاسِ ۗ وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ ۗ إِنَّ اللَّهَ							
अल्लाह	बेशक	अल्लाह	और मग्फ़िरत चाहो	लोग	लौटें		
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٩٩﴾ فَإِذَا قَضَيْتُمْ مَنَاسِكَكُمْ							
हज़ के मरासिम	तुम अदा कर चुको	फिर जब	199	रहम करने वाला	बख़्शने वाला		
فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ آبَاءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا ۗ							
याद	ज़ियादा	या	अपने बाप दादा	जैसी तुम्हारी याद	अल्लाह	तो याद करो	
فَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا							
दुन्या	में	हमें दे	ऐ हमारे रब	कहता है	जो	पस - से - आदमी	
وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَقٍ ﴿٢٠٠﴾ وَمِنْهُمْ مَّن يَقُولُ							
कहता है	जो	और उन से	200	कुछ हिस्सा	आख़िरत	में	उस के लिए और नहीं
رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً							
भलाई	और आख़िरत में	भलाई	दुन्या में	हमें दे	ऐ हमारे रब		
وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿٢٠١﴾ أُولَٰئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبُوا ۗ							
उन्हीं ने कमाया	उस से जो	हिस्सा	उन के लिए	यही लोग	201	आग (दोज़ख़)	अज़ाब और हमें बचा
وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٢٠٢﴾ وَاذْكُرُوا اللَّهَ فِي							
में	अल्लाह	और तुम याद करो	202	हिसाब लेने वाला	तेज़	और अल्लाह	
أَيَّامٍ مَّعْدُودَاتٍ ۗ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِي يَوْمَيْنِ فَلَا إِثْمَ							
गुनाह	तो नहीं	दो दिन	में	जल्द चला गया	पस जो	दिन गिनती के	
عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَأَخَّرَ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ لِمَنِ اتَّقَىٰ ۗ							
डरता रहा	लिए - जो	उस पर	गुनाह	तो नहीं	ताख़ीर की	और जिस	उस पर
وَاتَّقُوا اللَّهَ ۗ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٠٣﴾							
203	जमा किए जाओगे	उस की तरफ़	कि तुम	और जान लो	अल्लाह	और तुम डरो	

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُعْجِبُكَ قَوْلُهُ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيُشْهَدُ اللَّهُ								
और वह गवाह बनाता है अल्लाह को	दुनिया	ज़िन्दगी	में	उस की बात	तुम्हें भली मालूम होती है	जो	लोग	और से
عَلَىٰ مَا فِي قَلْبِهِ ۖ وَهُوَ أَلَدُّ الْخِصَامِ ﴿٢٠٤﴾ وَإِذَا تَوَلَّىٰ سَعَىٰ								
दौड़ता फिरे	वह लौटे	और जब	204	झगड़ा लू	सख्त	हालाकि वह	उस के दिल में	जो पर
فِي الْأَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۗ								
और नस्ल	खेती	और तबाह करे	उस में	ताकि फ़साद करे	ज़मीन	में		
وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْفُسَادَ ﴿٢٠٥﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُ اتَّقِ اللَّهَ								
अल्लाह	डर	उस को	कहा जाए	और जब	205	फ़साद	न पसन्द करता है	और अल्लाह
أَخَذْتَهُ الْعِزَّةَ بِالْإِثْمِ فَحَسْبُهُ جَهَنَّمُ ۗ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٢٠٦﴾								
206	ठिकाना	और अलवत्ता बुरा	जहन्नम	तो काफी है उस को	गुनाह पर	इज़ज़त (गुरूर)	उसे आमादा करे	
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَشْرِي نَفْسَهُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ ۗ								
अल्लाह की रज़ा	हासिल करना	अपनी जान	बेच डालता है	जो	लोग	और से		
وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ادْخُلُوا								
तुम दाखिल हो जाओ	जो लोग ईमान लाए	ऐ	207	बन्दों पर	मेहरबान	और अल्लाह		
فِي السَّلَامِ كَآفَّةً ۖ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۗ								
शैतान	कदम	पैरवी करो	और न	पूरे पूरे	इस्लाम	में		
إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٢٠٨﴾ فَإِنْ زَلْتُمْ مِنْ بَعْدِ								
उस के बाद	तुम डगमगा गए	फिर अगर	208	खुला	दुश्मन	तुम्हारा	बेशक वह	
مَا جَاءَتْكُمْ الْبَيِّنَاتُ فَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٠٩﴾								
209	हिक्मत वाला	ग़ालिब	अल्लाह कि	तो जान लो	वाज़ेह अहकाम	तुम्हारे पास आए	जो	
هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَهُمُ اللَّهُ فِي ظُلَلٍ								
सायबानों में	अल्लाह	आए उन के पास	कि	सिवाए (यही)	वह इन्तिज़ार करते हैं	क्या		
مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلَائِكَةُ وَقُضِيَ الْأَمْرُ ۗ								
मामला	और चुका दिया जाए	और फ़रिश्ते	बादल	से				
وَأَلَىٰ اللَّهُ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٢١٠﴾ سَلْ بَنِي إِسْرَائِيلَ								
बनी इस्राईल	पूछो	210	तमाम मामलात	लौटेंगे	अल्लाह	और तरफ़		
كَمْ آتَيْنَهُمْ مِنْ آيَةٍ بَيِّنَةٍ ۗ وَمَنْ يُبَدِّلْ نِعْمَةَ اللَّهِ								
अल्लाह	नेमत	बदल डाले	और जो	खुली	निशानियाँ	से	हम ने उन्हें दी	किस कद्र
مِّنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٢١١﴾								
211	अज़ाब	सख्त	अल्लाह	तो बेशक	आई उस के पास	जो	उस के बाद	

और लोगों में (कोई ऐसा भी है) कि उस की बात तुम्हें भली मालूम होती है दुनयवी ज़िन्दगी (के उमूर) में और वह अल्लाह को गवाह बनाता है अपने दिल की बात पर, हालांकि वह सख्त झगड़ा लू है। (204)

और जब वह लौटे तो ज़मीन (मुल्क) में दौड़ता फिरे ताकि उस में फ़साद करे, और तबाह करे खेती और नस्ल, और अल्लाह फ़साद को नापसंद करता है। (205)

और जब उस को कहा जाए कि अल्लाह से डर, तो उस को इज़ज़त (गुरूर) गुनाह पर आमादा करे, तो उस के लिए जहन्नम काफी है, और अलवत्ता वह बुरा ठिकाना है। (206)

और लोगों में (एक वह है) जो अपनी जान बेच डालता है अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए, और अल्लाह बन्दों पर मेहरबान है। (207)

ऐ ईमान वालो! तुम इस्लाम में पूरे पूरे दाखिल हो जाओ, और शैतान के कदमों की पैरवी न करो, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (208)

फिर अगर तुम उस के बाद डगमगा गए जबकि तुम्हारे पास वाज़ेह अहकाम आ गए तो जान लो कि अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (209)

क्या वह सिर्फ़ (यह) इन्तिज़ार करते हैं कि अल्लाह उन के पास आए सायबानों में बादल के, और फ़रिश्ते, और मामला चुका दिया जाए, और तमाम मामलात अल्लाह की तरफ़ लौटेंगे। (210)

पूछो बनी इस्राईल से हम ने उन्हें कितनी खुली निशानियाँ दीं? और जो अल्लाह की नेमत बदल डाले उस के बाद कि वह उस के पास आ गई तो बेशक अल्लाह सख्त अज़ाब देने वाला है। (211)

आरास्ता की गई काफ़िरों के लिए दुन्या की जिन्दगी, और वह हँसते हैं उन पर जो ईमान लाए, और जो परहेज़गार हुए वह क़यामत के दिन उन से बालातर होंगे, और अल्लाह जिसे चाहता है रिज़क़ देता है बेशुमार। (212)

लोग एक उम्मत थे, फिर अल्लाह ने नबी भेजे खुशख़बरी देने वाले और डराने वाले, और उन के साथ बरहक़ किताब नाज़िल की ताकि फ़ैसला करे लोगों के दरमियान जिस में उन्होंने ने इख़तिलाफ़ किया, और जिन्हें (किताब) दी गई थी उन्होंने ने इख़तिलाफ़ नहीं किया मगर उस के बाद जब कि उन के पास बाज़ेह अहक़ाम आ गए आपस की ज़िद की वजह से, पस अल्लाह ने उन लोगों को हिदायत दी अपने इज़्ज़न से जो ईमान लाए उस सच्ची बात पर जिस में उन्होंने ने इख़तिलाफ़ किया था, और अल्लाह हिदायत देता है जिसे वह चाहता है सीधे रास्ते की तरफ़। (213)

क्या तुम ख़याल करते हो कि जन्नत में दाख़िल हो जाओगे और जबकि (अभी) तुम पर (ऐसी हालत) नहीं आई जैसे तुम से पहले लोगों पर गुज़री, उन्हें पहुँची सख़्ती और तकलीफ़, और वह हिला दिए गए यहां तक कि रसूल और वह जो उन के साथ ईमान लाए कहने लगे अल्लाह की मदद कब आएगी? आगाह रहो बेशक अल्लाह की मदद करीब है। (214)

वह आप (स) से पूछते हैं क्या कुछ ख़र्च करें? आप कह दें जो माल तुम ख़र्च करो, सो माँ बाप के लिए और कराबतदारों के लिए, और यतीमों और मोहताजों और मुसाफ़िरों के लिए, और तुम जो नेकी करोगे तो बेशक अल्लाह उसे जानने वाला है। (215)

رُيِّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُونَ مِنَ الَّذِينَ							
जो लोग	से	और वह हँसते हैं	दुन्या	जिन्दगी	वह लोग जो कुफ़ किया	आरास्ता की गई	
امَنُوا وَالَّذِينَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَاللَّهُ يَرْزُقُ							
रिज़क़ देता है	और अल्लाह	क़यामत के दिन	उन से बालातर	परहेज़गार हुए	और जो लोग	ईमान लाए	
مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢١٢﴾ كَانَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً							
एक	उम्मत	लोग	थे	212	हिसाब	बग़ैर	वह चाहता है जिसे
فَبَعَثَ اللَّهُ النَّبِينَ مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ وَأَنْزَلَ							
और नाज़िल की	और डराने वाले	खुशख़बरी देने वाले	नबी	अल्लाह	फिर भेजे		
مَعَهُمُ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيمَا اخْتَلَفُوا							
उन्होंने ने इख़तिलाफ़ किया	जिस में	लोग	दरमियान	ताकि फ़ैसला करे	बरहक़	किताब	उन के साथ
فِيهِ وَمَا اخْتَلَفَ فِيهِ إِلَّا الَّذِينَ أُوتُوهُ مِنْ بَعْدِ							
बाद	दी गई	जिन्हें	मगर	उस में	इख़तिलाफ़ किया	और नहीं	उस में
مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَاتُ بَعِيًّا بَيْنَهُمْ فَهَدَى اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا							
ईमान लाए	जो लोग	अल्लाह	पस हिदायत दी	उन के दरमियान (आपस की)	ज़िद	बाज़ेह अहक़ाम	आए उन के पास जो - जब
لِمَا اخْتَلَفُوا فِيهِ مِنَ الْحَقِّ بِأَدْنَاهُ وَاللَّهُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ							
वह चाहता है	जिसे	हिदायत देता है	और अल्लाह	अपने इज़्ज़न से	सच	से (पर)	उस में
							उन्होंने ने इख़तिलाफ़ किया लिए - जो
إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٢١٣﴾ أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ							
जन्नत	तुम दाख़िल हो जाओगे	कि	तुम ख़याल करते हो	क्या	213	सीधा	रास्ता तरफ़
وَلَمَّا يَأْتِكُمْ مَثَلُ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ							
तुम से पहले	से	गुज़रे	जो	जैसे	आई तुम पर	और जब कि नहीं	
مَسَّتْهُمْ الْبَأْسَاءُ وَالضَّرَاءُ وَزُلْزِلُوا حَتَّى يَقُولَ الرَّسُولُ							
रसूल	कहने लगे	यहां तक	और वह हिला दिए गए	और तकलीफ़	सख़्ती	पहुँची उन्हें	
وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ مَتَى نَصُرَ اللَّهُ أَلَا إِنَّ نَصْرَ اللَّهِ							
अल्लाह	मदद	बेशक	आगाह रहो	अल्लाह की मदद	कब	उन के साथ	ईमान लाए और वह जो
قَرِيبٌ ﴿٢١٤﴾ يَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ قُلْ مَا أَنْفَقْتُ مِنْ							
से	तुम ख़र्च करो	जो	आप कह दें	ख़र्च करें	क्या कुछ	वह आप से पूछते हैं	214 करीब
خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ وَالْيَتَامَى وَالْمَسْكِينِ							
और मोहताज (जमा)	और यतीम (जमा)	और कराबतदार (जमा)	सो माँ बाप के लिए	माल			
وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا تَفَعَّلُوا مِنْ خَيْرٍ فإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ﴿٢١٥﴾							
215	जानने वाला	उसे अल्लाह	तो बेशक	कोई नेकी	तुम करोगे	और जो	और मुसाफ़िर

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهُ لَكُمْ وَعَسَىٰ أَنْ تَكْرَهُوا شَيْئًا									
एक चीज़	तुम नापसन्द करो	कि	और मुमकिन है	तुम्हारे लिए	नागवार	और वह	जंग	तुम पर फर्ज की गई	
وَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَعَسَىٰ أَنْ تُحِبُّوا شَيْئًا وَهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ									
तुम्हारे लिए	बुरी	और वह	एक चीज़	तुम पसन्द करो	कि	और मुमकिन है	तुम्हारे लिए	बेहतर	और वह
وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢١٦﴾ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ									
महीना	हुर्मत वाला	से	वह आप से सवाल करते हैं	216	नहीं जानते	और तुम	जानता है	और अल्लाह	
قِتَالٍ فِيهِ قُلٌّ فِيهِ كَبِيرٌ وَصَدُّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ									
अल्लाह	रास्ता	से	और रोकना	बड़ा	उस में	जंग	आप कह दें	उस में	जंग
وَكُفْرٌ بِهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَإِخْرَاجُ أَهْلِهِ مِنْهُ أَكْبَرُ عِنْدَ اللَّهِ									
अल्लाह के नजदीक	बहुत बड़ा	उस से	उस के लोग	और निकाल देना	और मसजिदे हराम		उस का	और न मानना	
وَالْفِتْنَةُ أَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ وَلَا يَزَالُونَ يُقَاتِلُونَكُمْ									
वह तुम से लड़ेंगे	और वह हमेशा रहेंगे	कत्ल	से	बहुत बड़ा	और फित्ना				
حَتَّىٰ يَرُدُّوكُمْ عَنْ دِينِكُمْ إِنِ اسْتَطَاعُوا وَمَنْ يَرْتَدِدْ									
फिर जाए	और जो	वह कर सकें	अगर	तुम्हारा दीन	से	तुम्हें फेर दें	यहां तक कि		
مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ فَيُمِتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَأُولَٰئِكَ حَبِطَتْ									
जाया हो गए	तो यही लोग	काफिर	और वह	फिर मर जाए	अपना दीन	से	तुम में से		
أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ									
दोज़ख	वाले	और यही लोग	और आखिरत	दुनिया	में	उन के अमल			
هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢١٧﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا									
उन्होंने ने हिज्रत की	और वह लोग जो	ईमान लाए	जो लोग	वेशक	217	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	
وَجَاهِدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ									
अल्लाह की रहमत	उम्मीद रखते हैं	यही लोग	अल्लाह का रास्ता	में	और उन्होंने ने जिहाद किया				
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢١٨﴾ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ									
और जुआ	शराब	से (बारे में)	वह पूछते हैं आप से	218	रहम करने वाला	बख्शने वाला	और अल्लाह		
قُلْ فِيهِمَا إِثْمٌ كَبِيرٌ وَمَنْفَعٌ لِلنَّاسِ وَإِثْمُهُمَا أَكْبَرُ									
बहुत बड़ा	और उन दोनों का गुनाह	लोगों के लिए	ओर फाइदे	बड़ा	गुनाह	उन दोनों में	आप कह दें		
مِنْ نَّفْعِهِمَا وَيَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ قُلِ الْعَفْوَ									
जाइद अज़ ज़रूरत	आप कह दें	वह खर्च करें	क्या कुछ	वह पूछते हैं आप (स) से	उन का फाइदा	से			
كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ﴿٢١٩﴾									
219	गौर ओ फिक्र करो	ताकि तुम	अहकाम	तुम्हारे लिए	अल्लाह	वाज़ेह करता है	इसी तरह		

तुम पर जंग फर्ज की गई और वह तुम्हें नागवार है, और मुमकिन है कि तुम एक चीज़ नापसन्द करो और वह तुम्हारे लिए बेहतर हो, और मुमकिन है कि तुम एक चीज़ पसन्द करो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो, और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। (216)

वह आप से सवाल करते हैं हुर्मत वाले महीने में जंग (के बारे) में, आप (स) कह दें उस में जंग करना बड़ा (गुनाह) है, और अल्लाह के रास्ते से रोकना और उस (अल्लाह) को न मानना और मसजिदे हराम (से रोकना) और उस के लोगों को वहां से निकालना अल्लाह के नजदीक बहुत बड़ा गुनाह है और फित्ना कत्ल से (भी) बड़ा गुनाह है, और वह हमेशा तुम से लड़ते रहेंगे यहां तक कि अगर वह कर सकें तो तुम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें, और तुम में से जो फिर जाए अपने दीन से और वह मर जाए (उस हाल में कि) वह काफिर हो तो यही लोग हैं जिन के अमल जाया हो गए दुनिया में और आखिरत में और यही लोग दोज़ख वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (217)

वेशक जो ईमान लाए और जिन लोगों ने हिज्रत की और अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया, यही लोग अल्लाह की रहमत की उम्मीद रखते हैं, और अल्लाह बख्शने वाला, रहम करने वाला है। (218)

वह आप (स) से पूछते हैं शराब और जुआ के बारे में, आप कह दें कि उन दोनों में बड़ा गुनाह है और लोगों के लिए फाइदे (भी) है (लेकिन) उन का गुनाह उन के फाइदे से बहुत बड़ा है, और वह आप (स) से पूछते हैं कि वह क्या कुछ खर्च करें? आप कह दें जाइद अज़ ज़रूरत, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम वाज़ेह करता है ताकि तुम गौर ओ फिक्र करो (219)

दनिया में और आखिरत में, और वह आप (स) से यतीमों के बारे में पूछते हैं, आप कह दें उन की इस्लाह बेहतर है, और अगर उन को मिला लो तो वह तुम्हारे भाई हैं, और अल्लाह खराबी करने वाले और इस्लाह करने वाले को खूब जानता है, और अगर अल्लाह चाहता तो तुम को जरूर मुशक़क़त में डाल देता, बेशक अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (220)

और मुशर्रिक औरतों से निकाह न करो यहां तक कि वह ईमान न लाएं, और अलबत्ता मुसलमान लौंडी बेहतर है मुशर्रिक औरत से अगरचे तुम्हें वह भली लगे, और मुशर्रिकों से निकाह न करो यहां तक कि वह ईमान न लाएं, और अलबत्ता मुसलमान गुलाम बेहतर है मुशर्रिक से अगरचे वह तुम्हें भला लगे, यह लोग दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते हैं, और अल्लाह बुलाता है अपने हुक्म से जन्नत और बख़्शिश की तरफ़, और लोगों के लिए अपने अहकाम वाज़ेह करता है ताकि वह नसीहत पकड़ें। (221)

वह आप (स) से हालते हैज़ के बारे में पूछते हैं, आप कह दें कि वह गन्दगी है, पस तुम औरतों से अलग रहो हालते हैज़ में और उन के करीब न जाओ यहां तक कि वह पाक हो जाएं, पस जब वह पाक हो जाएं तो तुम उन के पास आओ जहां से अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है, बेशक अल्लाह दोस्त रखता है तौबा करने वालों को और दोस्त रखता है पाक रहने वालों को। (222)

तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेती हैं, पस तुम अपनी खेती में आओ जहां से चाहो और अपने लिए आगे भेजो (आगे की तदबीर करो) और अल्लाह से डरो, और तुम जान लो कि तुम अल्लाह से मिलने वाले हो, और खुशख़बरी दें ईमान वालों को। (223)

और अपनी कस्मों के लिए अल्लाह (के नाम) को निशाना न बनाओ कि तुम हुस्ने सुलूक और परहेज़गारी और लोगों के दरमियान सुलह कराने (से वाज़ रहो) और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (224)

فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْيَتَامَىٰ قُلْ إِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ وَإِنْ تُخَالِطُوهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَعْنَتَكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ (٢٢٠)							
इस्लाह	आप कह दें	यतीम (जमा)	से (बारे में)	और वह आप (स) से पूछते हैं	और आखिरत	दुनिया में	
खराबी करने वाला	जानता है	और अल्लाह	तो भाई तुम्हारे	मिला लो उन को	और अगर	बेहतर	उन की
220	हिक्मत वाला	ग़ालिब	बेशक अल्लाह	जरूर मुशक़क़त में डालता तुम को	चाहता अल्लाह	और अगर	इस्लाह करने वाला (को)
وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكَةَ حَتَّىٰ يُؤْمِنَ وَلَا مَآءَةَ مُؤْمِنَةٍ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَلَوْ أَعْجَبَتْكُمْ وَلَا تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ يُؤْمِنُوا							
से	बेहतर	मुसलमान	और अलबत्ता लौंडी	वह ईमान लाएं	यहां तक कि	मुशर्रिक औरतें	निकाह करो और न
वह ईमान लाएं	यहां तक कि	मुशर्रिकों	निकाह करो	और न	वह भली लगे तुम्हें	अगरचे	मुशर्रिक औरत
وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ أُولَٰئِكَ يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ							
वही लोग	वह भला लगे तुम्हें	अगरचे	मुशर्रिक	से	बेहतर	मुसलमान	और अलबत्ता गुलाम
بِإِذْنِهِ وَيُبَيِّنُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ (٢٢١)							
221	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	लोगों के लिए	अपने अहकाम	और वाज़ेह करता है	अपने हुक्म से	
وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْمَحِيضِ قُلْ هُوَ أَذَىٰ فَاعْتَزِلُوا النِّسَاءَ فِي الْمَحِيضِ وَلَا تَقْرَبُوهُنَّ حَتَّىٰ يَطْهُرْنَ فَإِذَا تَطَهَّرْنَ فَأْتُوهُنَّ							
औरतें	पस तुम अलग रहो	गन्दगी	वह	आप कहें दें	हालते हैज़	से (बारे में)	और वह पूछते हैं आप (स) से
तो आओ उन के पास	वह पाक हो जाएं	पस जब	वह पाक हो जाएं	यहां तक कि	करीब जाओ उन के	और न	हालते हैज़ में
مِنْ حَيْثُ أَمَرَكُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ (٢٢٢)							
और दोस्त रखता है	तौबा करने वाले	दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह	अल्लाह	हुक्म दिया तुम्हें	जहां से	
وَقَدِّمُوا لِأَنفُسِكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ مُّلَقَوهُ							
मिलने वाले उस से	कि तुम	और तुम जान लो	अल्लाह	और डरो	अपने लिए	और आगे भेजो	तुम चाहो
وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ (٢٢٣)							
कि	अपनी कस्मों के लिए	निशाना	अल्लाह	बनाओ	और न	223	ईमान वाले और खुशख़बरी दें
تَبَرُّوا وَتَتَّقُوا وَتُصْلِحُوا بَيْنَ النَّاسِ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ (٢٢٤)							
224	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	लोग	दरमियान	और सुलह कराओ	और परहेज़गारी करो तुम हुस्ने सुलूक करो

٢٤  
ع  
١١

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ								तुम्हें नहीं पकड़ता अल्लाह तुम्हारी
पकड़ता है तुम्हें	और लेकिन	कस्में तुम्हारी	में	लगू (बेहूदा)	अल्लाह	नहीं पकड़ता तुम्हें		वेहूदा कस्मों पर, लेकिन तुम्हें
بِمَا كَسَبَتْ قُلُوبُكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿٢٢٥﴾ لِلَّذِينَ يُؤْلُونَ								पकड़ता है उस पर जो तुम्हारे
कस्म खाते हैं	उन लोगों के लिए जो	225	बुर्दवार	बख्शने वाला	और अल्लाह	दिल तुम्हारे	कमाया	पर-जो
مِنْ نِسَائِهِمْ تَرَبُّصُ أَرْبَعَةِ أَشْهُرٍ فَإِنْ فَاءُوا فَإِنَّ اللَّهَ								दिलों ने कमाया (इरादे से किया)
तो बेशक अल्लाह	रुजूअ करलें	फिर अगर	महीने	चार	इन्तिज़ार	औरतें अपनी	से	और अल्लाह बख्शने वाला, बुर्दवार है। (225)
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٢٦﴾ وَإِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَإِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ								उन लोगों के लिए जो अपनी
सुनने वाला	अल्लाह	तो बेशक	तलाक	उन्होंने ने इरादा किया	और अगर	226	रहम करने वाला	बख्शने वाला
عَلِيمٌ ﴿٢٢٧﴾ وَالْمُطَلَّقَاتُ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوءٍ								औरतों के (पास न जाने की) कस्म
सुददते हैज़	तीन	अपने तई	इन्तिज़ार करें	और तलाक यापता औरतें	227	जानने वाला		खाते हैं इन्तिज़ार करना है चार
وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ أَنْ يَكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللَّهُ فِي أَرْحَامِهِنَّ إِنْ								माह, फिर अगर वह रुजूअ कर लें
अगर	उन के रहम (जमा)	में	अल्लाह पैदा किया	जो	वह छुपाएं	कि	उन के लिए	और जाइज़ नहीं
كُنَّ يُؤْمِنَنَّ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَبُعُولَتُهُنَّ أَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ								तो बेशक अल्लाह बख्शने वाला,
वापसी उन की	ज़ियादा हकदार	और खाविन्द उन के	और आखिरत का दिन	अल्लाह पर	ईमान रखती है			रहम करने वाला है। (226)
فِي ذَلِكَ إِنْ أَرَادُوا إِصْلَاحًا وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَّ								और अगर उन्होंने ने तलाक का
औरतों पर (फर्ज़)	जो	जैसे	और औरतों के लिए	बेहतरी (हुसने सुलूक)	वह चाहें	अगर	उस में	इरादा कर लिया तो बेशक
بِالْمَعْرُوفِ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ وَاللَّهُ عَزِيزٌ								अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला
ग़ालिव	और अल्लाह	एक दर्जा	उन पर	और मर्दों के लिए	दस्तूर के मुताबिक			है। (227)
حَكِيمٌ ﴿٢٢٨﴾ الطَّلَاقُ مَرَّتَيْنِ فَاِمْسَاكُ بِمَعْرُوفٍ أَوْ								और तलाक यापता औरतें अपने तई
या	दस्तूर के मुताबिक	फिर रोक लेना	दो बार	तलाक	228	हिक्मत वाला		इन्तिज़ार करें तीन हैज़ तक, और
تَسْرِيحٌ بِإِحْسَانٍ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَأْخُذُوا مِمَّا								उन के लिए जाइज़ नहीं कि वह
उस से जो	तुम ले लो	कि	तुम्हारे लिए	जाइज़	और नहीं	हुस्ने सुलूक से	ख़सत करना	उस के लिए जाइज़ नहीं कि वह
اتَّيْمُوهُنَّ شَيْئًا إِلَّا أَنْ يَخَافَا إِلَّا يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ								छुपाएं जो अल्लाह ने उन के रहमों
अल्लाह कि हदूद	काइम रख सकेंगे	कि न	दोनों अन्देशा करें	कि	सिवाए	कुछ	तुम ने दिया उन को	में पैदा किया अगर वह अल्लाह
فَإِنْ خِفْتُمْ إِلَّا يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا								पर और यौमे आखिरत पर ईमान
उन दोनों पर	तो गुनाह नहीं	अल्लाह की हदूद	कि वह काइम न रख सकेंगे	तुम डरो	फिर अगर			रखती हैं, और उन के खाविन्द उन
فِيمَا افْتَدَتْ بِهِ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَعْتَدُوهَا								की वापसी के ज़ियादा हकदार है
आगे बढ़ो उस से	पस न	अल्लाह की हदूद	यह	उस का	औरत बदला दे	उस में जो		उस (सुददत) में अगर वह बेहतरी
وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٢٩﴾								(हुस्ने सुलूक) करना चाहें, और
229	ज़ालिम	वह	पस वही लोग	अल्लाह की हदूद	आगे बढ़ता है	और जो		औरतों के लिए (हक) है जैसे
								औरतों पर (मर्दों का) हक है दस्तूर
								के मुताबिक, और मर्दों का उन पर
								एक दर्जा (बरतरी) है और अल्लाह
								ग़ालिव, हिक्मत वाला है। (228)
								तलाक दो बार है, फिर रोक लेना
								है दस्तूर के मुताबिक या ख़सत
								कर देना हुस्ने सुलूक से, और नहीं
								तुम्हारे लिए जाइज़ कि जो तुम ने
								उन्हें दिया है उस से कुछ वापस
								ले लो सिवाए उस के कि दोनों
								अन्देशा करें कि अल्लाह की हदूद
								काइम न रख सकेंगे, फिर अगर
								तुम डरो कि वह दोनों अल्लाह
								की हदूद काइम न रख सकेंगे तो
								गुनाह नहीं उन दोनों पर कि औरत
								उस का बदला (फ़िदया) देदे, यह
								अल्लाह की हदूद है, पस उन के
								आगे न बढ़ो, और जो अल्लाह की
								हदूद से आगे बढ़ता है पस वही
								लोग ज़ालिम है। (229)

पस अगर उस को तलाक दे दी तो जाइज़ नहीं उस के लिए उस के बाद यहां तक कि वह उस के अलावा किसी (दूसरे) खाविन्द से निकाह कर ले, फिर अगर वह उसे तलाक देदे तो गुनाह नहीं उन दोनों पर अगर वह रूजूअ कर लें, वशर्त यह कि वह खयाल करें कि वह अल्लाह की हुदूद काइम रखेंगे, और यह अल्लाह की हुदूद है, वह उन्हें जानने वालों के लिए वाज़ेह करता है। (230)

और जब तुम औरतों को तलाक दे दो फिर वह अपनी इद्दत पूरी कर लें तो उन को दस्तूर के मुताबिक़ रोको या दस्तूर के मुताबिक़ रखसत कर दो और तुम उन्हें नुक़सान पहुँचाने के लिए न रोको ताकि तुम ज़ियादती करो, और जो यह करेगा बेशक उस ने अपने ऊपर जुल्म किया, और अल्लाह के अहकाम को मज़ाक़ न ठहराओ, और तुम पर जो अल्लाह की नेमत है उसे याद करो, और जो उस ने तुम पर किताब और हिक्मत उतारी, वह उस से तुम्हें नसीहत करता है, और तुम अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (231)

और जब तुम औरतों को तलाक़ दे दो, फिर वह पूरी कर लें अपनी इद्दत तो उन्हें अपने खाविन्दों से निकाह करने से न रोको जब वह राजी हों आपस में दस्तूर के मुताबिक़, यह उस को नसीहत की जाती है जो तुम में से ईमान रखता है अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर, यही तुम्हारे लिए ज़ियादा सुथरा और ज़ियादा पाकीज़ा है, और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। (232)

فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدُ حَتَّى تَنْكِحَ						
वह निकाह कर ले	यहां तक कि	उस के बाद	उस के लिए	तो जाइज़ नहीं	तलाक़ दी उस को	फिर अगर
زَوْجًا غَيْرَهُ فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ						
अगर	उन दोनों पर	तो गुनाह नहीं	तलाक़ देदे उस को	फिर अगर	उस के अलावा	खाविन्द
يَتَرَاجَعَا إِنْ ظَنَّا أَنْ يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ وَتِلْكَ						
और यह	अल्लाह की हुदूद	वह काइम रखेंगे	कि	वह खयाल करें	वशर्त यह कि	वह रूजूअ कर लें
حُدُودَ اللَّهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٢٣٠﴾ وَإِذَا طَلَّقْتُمُ						
तुम तलाक़ दो	और जब	230	जानने वालों के लिए	उन्हें वाज़ेह करता है	अल्लाह की हुदूद	
النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ						
दस्तूर के मुताबिक़	तो रोको उन को	अपनी इद्दत	फिर वह पूरी कर लें	औरतें		
أَوْ سَرِّحُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَلَا تُمْسِكُوهُنَّ ضِرَارًا						
नुक़सान	और तुम न रोको उन्हें	दस्तूर के मुताबिक़	रखसत कर दो	या		
لِتَعْتَدُوا وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ						
अपनी जान	तो बेशक उस ने जुल्म किया	यह	करेगा	और जो	ताकि तुम ज़ियादती करो	
وَلَا تَتَّخِذُوا آيَاتِ اللَّهِ هُزُوعًا وَادْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ						
अल्लाह की नेमत	और याद करो	मज़ाक़	अल्लाह के अहकाम	ठहराओ	और न	
عَلَيْكُمْ وَمَا أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنَ الْكِتَابِ وَالْحِكْمَةِ						
और हिक्मत	किताब	से	तुम पर	उस ने उतारा	और जो	तुम पर
يُعِظُكُمْ بِهِ وَآتُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ						
चीज़	हर	अल्लाह	कि	और जान लो	अल्लाह और तुम डरो	उस से वह नसीहत करता है तुम्हें
عَلِيمٌ ﴿٢٣١﴾ وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ						
अपनी इद्दत	फिर वह पूरी कर लें	औरतें	तुम तलाक़ दो	और जब	231	जानने वाला
فَلَا تَعْضُلُوهُنَّ أَنْ يَنْكِحْنَ أَزْوَاجَهُنَّ إِذَا تَرَاضُوا						
वह राजी हों	जब	खाविन्द अपने	वह निकाह करें	कि	रोको उन्हें	तो न
بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوفِ ذَلِكَ يُوعَظُ بِهِ مَنْ كَانَ						
हो	जो	उस से	नसीहत की जाती है	यह	दस्तूर के मुताबिक़	आपस में
مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ذَلِكَمْ آيَاتُ						
ज़ियादा सुथरा	यही	और यौमे आख़िरत	अल्लाह पर	ईमान रखता	तुम में से	
لَكُمْ وَأَطَّهَرُ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢٣٢﴾						
232	जानते	नहीं	और तुम	जानता है	और अल्लाह	और ज़ियादा पाकीज़ा तुम्हारे लिए

٢٩  
٤٣  
١٢



وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعْنَ أَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ أَرَادَ						
चाहे	जो कोई	पूरे	दो साल	अपनी औलाद	दूध पिलाएं	और माएँ
أَنْ يُتِمَّ الرَّضَاعَةَ وَعَلَى الْمَوْلُودِ لَهُ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ						
दस्तूर के मुताबिक	और उन का लिबास	उन का खाना	जिस का बच्चा (बाप)	और पर	दूध पिलाने कि मुद्दत	कि वह पूरी करे
لَا تُكَلِّفُ نَفْسٌ إِلَّا وُسْعَهَا لَا تُضَارُّ وَالِدَةُ بَوْلِهَا وَلَا مَوْلُودٌ لَهُ						
जिस का बच्चा (बाप)	और न	उस के बच्चे के सबब	माँ	न नुकसान पहुँचाया जाए	उस की वुसअत मगर	कोई शख्स नहीं तकलीफ दी जाती
بِوَالِدِهِ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذَلِكَ فَإِنْ أَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ						
आपस की रज़ामन्दी से	दूध छुड़ाना	दोनों चाहें	फिर अगर	यह-उस	ऐसा	वारिस और पर
مِنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا وَإِنْ أَرَدْتُمْ أَنْ						
कि	तुम चाहो	और अगर	उन दोनों पर	गुनाह	तो नहीं	और बाहम मशवरा दोनों से
تَسْتَرْضِعُوا أَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذَا سَلَّمْتُمْ مَا آتَيْتُمْ						
तुम ने दिया था	जो	तुम हवाले कर दो	जब	तुम पर	तो गुनाह नहीं	अपनी औलाद तुम दूध पिलाओ
بِالْمَعْرُوفِ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَعَلِمُوا أَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ (233)						
233	देखने वाला	तुम करते हो	से-जो	अल्लाह	कि	और जान लो अल्लाह और डरो दस्तूर के मुताबिक
وَالَّذِينَ يُتَوَقَّفُونَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ						
अपने आप को	वह इन्तिज़ार में रखें	बीवियाँ	और छोड़ जाएँ	तुम से	वफात पा जाएँ	और जो लोग
أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ						
तुम पर	तो नहीं गुनाह	अपनी मुद्दत (इद्दत)	वह पहुँच जाएँ	फिर जब	और दस (दिन)	महीने चार
فِي مَا فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ (234)						
234	वाख़बर	जो तुम करते हो उस से	और अल्लाह	दस्तूर के मुताबिक	अपनी जानें (अपने हक)	में वह करें में-जो
وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُمْ بِهِ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَاءِ أَوْ أَكْنُتُمْ						
तुम छुपाओ	या	औरतों को	पैगामे निकाह	उस से	इशारे में	में-जो तुम पर और नहीं गुनाह
فِي أَنْفُسِكُمْ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ سَتَذْكُرُونَهُنَّ وَلَكِنْ لَا تُوَاعِدُوهُنَّ						
न वादा करो उन से	और लेकिन	जल्द ज़िक्र करोगे उन से	कि तुम	जानता है अल्लाह	अपने दिलों में	
سِرًّا إِلَّا أَنْ تَقُولُوا قَوْلًا مَعْرُوفًا وَلَا تَعْزِمُوا عُقْدَةَ النِّكَاحِ						
निकाह	गिरह	इरादा करो	और न	दस्तूर के मुताबिक	बात तुम कहो	मगर यह कि छुप कर
حَتَّى يَبْلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ وَعَلِمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي						
में	जो	जानता है	अल्लाह	कि	और जान लो	उस की मुद्दत इद्दत पहुँच जाएँ यहाँ तक
أَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوهُ وَعَلِمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ (235)						
235	तहम्मूल वाला	बख़शने वाला	अल्लाह	कि	और जान लो	सो डरो उस से अपने दिल

और माएँ अपनी औलाद को पूरे दो साल दूध पिलाएँ जो कोई दूध पिलाने की मुद्दत पूरी करना चाहे, और उन (माओं) का खाना और उन का लिबास बाप पर (वाजिब है) दस्तूर के मुताबिक, और किसी को तकलीफ नहीं दी जाती मगर उस की वुसअत (बरदाशत) के मुताबिक, माँ को नुकसान न पहुँचाया जाए उस के बच्चे के सबब और न बाप को उस के बच्चे के सबब, और वारिस पर भी ऐसा ही (वाजिब) है, फिर अगर वह दोनों दूध छुड़ाना चाहें आपस की रज़ामन्दी और मशवरे से तो दोनों पर कोई गुनाह नहीं, और अगर तुम चाहो कि अपनी औलाद को दूध पिलाओ (गैर औरत से) तो तुम पर कोई गुनाह नहीं जब तुम दस्तूर के मुताबिक (उन के) हवाले कर दो जो तुम ने देना ठहराया था, और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उसे देखने वाला है। (233)

और तुम में से जो लोग वफात पा जाएँ और छोड़ जाएँ बीवियाँ, वह (वेवाएँ) अपने आप को इन्तिज़ार में रखें चार माह दस दिन, फिर जब वह अपनी मुद्दत को पहुँच जाएँ (इद्दत पूरी कर लें) तो उस में तुम पर कोई गुनाह नहीं जो वह अपने हक में करें दस्तूर के मुताबिक, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस से वाख़बर है। (234)

और तुम पर उस में कोई गुनाह नहीं कि तुम औरतों को इशारे कनाएँ में निकाह का पैगाम दो या अपने दिलों में छुपाओ, अल्लाह जानता है तुम जल्द उन से ज़िक्र कर दोगे, लेकिन उन से छुप कर (निकाह का) वादा न करो, मगर यह कि तुम दस्तूर के मुताबिक वात करो, और निकाह की गिरह बाँधने का इरादा न करो यहाँ तक कि इद्दत अपनी मुद्दत तक पहुँच जाएँ, और जान लो कि जो कुछ तुम्हारे दिलों में है अल्लाह जानता है, सो तुम उस से डरो और जान लो कि अल्लाह बख़शने वाला, तहम्मूल वाला है। (235)

तुम पर कोई गुनाह नहीं अगर तुम औरतों को तलाक़ दो जब कि तुम ने उन्हें हाथ न लगाया हो या उन के लिए मेहर मुकर्रर न किया हो, और उन्हें खर्च दो, खुशहाल पर उस की हैसियत के मुताबिक़ और तंगदस्त पर उस की हैसियत के मुताबिक़, खर्च दस्तूर के मुताबिक़ (देना) नेकोकारों पर लाज़िम है। (236)

और अगर तुम उन्हें तलाक़ दो इस से पहले कि तुम ने उन्हें हाथ लगाया हो और उन के लिए तुम मेहर मुकर्रर कर चुके हो तो उस का निस्फ़ (दे दो) जो तुम ने मुकर्रर किया सिवाए उस के कि वह माफ़ कर दें या वह माफ़ कर दे जिस के हाथ में अक़दे निकाह है, और अगर तुम माफ़ कर दो तो यह परहेज़गारी के करीब तर है, और बाहम एहसान करना न भूलो, वेशक़ जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देखने वाला है। (237)

तुम नमाज़ों की हिफ़ाज़त करो (खुसूसन) दरमियानी नमाज़ की और अल्लाह के लिए फ़रमांवरदार (बन कर) खड़े रहो। (238)

फिर अगर तुम्हें डर हो तो प्यादापा या सवार (अदा करो), फिर जब अमन पाओ तो अल्लाह को याद करो जैसा कि उस ने तुम्हें सिखाया है जो तुम न थे जानते। (239)

और जो लोग तुम में से वफ़ात पा जाएं और वीवियां छोड़ जाएं तो अपनी वीवियों के लिए एक साल तक नान नफ़का की वसीयत करें निकाले बग़ैर, फिर अगर वह खुद निकल जाएं तो तुम पर कोई गुनाह नहीं जो वह अपने तई दस्तूर के मुताबिक़ करें, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (240)

और मुतल्लका औरतों के लिए दस्तूर के मुताबिक़ नान नफ़का लाज़िम है परहेज़गारों पर। (241)

इसी तरह तुम्हारे लिए अल्लाह अपने अहकाम वाज़ेह करता है ताकि तुम समझो। (242)

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ مَا لَمْ تَمْسُوهُنَّ أَوْ تَفْرِضُوا لَهُنَّ فَرِيضَةً ۖ وَمَتَّعُوهُنَّ عَلَى الْمَوْسِعِ قَدْرَهُ										
या	तुम ने उन्हें हाथ लगाया	जो न	औरतें	तुम तलाक़ दो	अगर	तुम पर	नहीं गुनाह			
उस की हैसियत	खुशहाल	पर	और उन्हें खर्च दो	मेहर	उन के लिए	मुकर्रर किया				
وَعَلَى الْمُقْتَرِ قَدْرَهُ ۖ مَتَاعًا بِالْمَعْرُوفِ ۖ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِينَ (٢٣٦)										
236	नेकोकार	पर	लाज़िम	दस्तूर के मुताबिक़	खर्च	उस की हैसियत	तंगदस्त और पर			
وَإِنْ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمْسُوهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ إِلَّا أَنْ يَعْفُونَ أَوْ يَعْفُوا الَّذِي بِيَدِهِ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ۚ وَأَنْ تَعْفُوا أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ ۖ وَلَا تَنْسُوا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ (٢٣٧)										
या	वह माफ़ कर दें	यह कि	सिवाए	तुम ने मुकर्रर किया	जो	तो निस्फ़	मेहर	उन के लिए		
परहेज़गारी के	ज़ियादा करीब	तुम माफ़ कर दो	और अगर	निकाह की गिरह	उस के हाथ में	वह जो	माफ़ कर दे			
وَلَا تَنْسُوا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ (٢٣٧)										
237	देखने वाला	तुम करते हो	उस से जो	वेशक़ अल्लाह	बाहम	एहसान करना	और न भूलो			
حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَىٰ وَقُومُوا لِلَّهِ قَانِتِينَ (٢٣٨) فَإِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا أَوْ رُكْبَانًا ۖ فَإِذَا أَمِنْتُمْ فَأَذْكُرُوا اللَّهَ										
अल्लाह के लिए	और खड़े रहो	दरमियानी	और नमाज़	नमाज़ों की	तुम हिफ़ाज़त करो					
अल्लाह	तो याद करो	तुम अमन पाओ	फिर जब	सवार	या	तो प्यादापा	तुम्हें डर हो	238	फिर अगर	फ़रमांवरदार (जमा)
كَمَا عَلَّمَكُمْ مَا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ (٢٣٩) وَالَّذِينَ يُتَوَقَّؤْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا ۖ وَصِيَّةً لِأَزْوَاجِهِمْ مَتَاعًا إِلَى الْحَوْلِ غَيْرِ إِخْرَاجٍ ۖ فَإِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوفٍ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ (٢٤٠)										
वफ़ात पा जाएं	और जो लोग	239	जानते	तुम न थे	जो	उस ने तुम्हें सिखाया	जैसा कि			
नान नफ़का	अपनी वीवियों के लिए	वसीयत	वीवियां	और छोड़ जाएं	तुम में से					
إِلَى الْحَوْلِ غَيْرِ إِخْرَاجٍ ۖ فَإِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوفٍ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ (٢٤٠)										
में	तुम पर	गुनाह	तो नहीं	वह निकल जाएं	फिर अगर	निकाले	वग़ैर	एक साल	तक	
240	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और अल्लाह	दस्तूर	से	अपने तई	में	जो वह करें		
وَلِلْمُطَلَّاتِ مَتَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ ۖ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ (٢٤١)										
241	परहेज़गारों	पर	लाज़िम	दस्तूर के मुताबिक़	नान नफ़का	और मुतल्लका औरतों के लिए				
كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ (٢٤٢)										
242	समझो	ताकि तुम	अपने अहकाम	तुम्हारे लिए	अल्लाह	वाज़ेह करता है	इसी तरह			

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ									
मौत	डर	हज़ारों	और वह	अपने घर (जमा)	से	निकले	वह लोग जो	तरफ	क्या तुम ने नहीं देखा
فَقَالَ لَهُمُ اللَّهُ مُوتُوا ثُمَّ أَحْيَاهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ									
फ़ज़ल वाला	वेशक अल्लाह	उन्हे ज़िन्दा किया	फिर	तुम मर जाओ	अल्लाह	उन्हें	सो कहा		
عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٢٤٣﴾ وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ									
अल्लाह का रास्ता	में	और तुम लड़ो	243	शुक्र अदा नहीं करते	लोग	अक्सर	और लेकिन	लोगों पर	
وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٤﴾ مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ									
कर्ज़ दे अल्लाह	जो कि	वह	कौन	244	जानने वाला	सुनने वाला	अल्लाह	कि	और जान लो
قَرْضًا حَسَنًا فَيُضِعْفَهُ لَهُ أَضْعَافًا كَثِيرَةً وَاللَّهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُطُ									
और फ़राखी करता है	तंगी करता है	और अल्लाह	कई गुना ज़ियादा	उस के लिए	पस वह उसे बढ़ा दे	कर्ज़ अच्छा			
وَأَلَيْهِ تَرْجَعُونَ ﴿٢٤٥﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الْمَلَأِ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ مِنْ بَعْدِ									
वाद	से	बनी इस्राईल	से	सरदारों	तरफ	क्या तुम ने नहीं देखा	245	तुम लौटाए जाओगे	और उस की तरफ
مُوسَىٰ إِذْ قَالُوا لِنَبِيِّ لَهُمْ ابْعَثْ لَنَا مَلَكًا يُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ									
अल्लाह का रास्ता	में	हम लड़ें	एक बादशाह	हमारे लिए	मुक़र्र कर दें	अपने नबी से	उन्होंने कहा	जब	मूसा (अ)
قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ أَلَّا تُقَاتِلُوا									
कि तुम न लड़ो	जंग	तुम पर फ़र्ज़ की जाए	अगर	हो सकता है कि तुम	क्या	उस ने कहा			
قَالُوا وَمَا لَنَا أَلَّا نُقَاتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَدْ أُخْرِجْنَا مِنْ									
से	हम निकाले गए	और अलबत्ता	अल्लाह की राह	में	हम लड़ेंगे	कि न	और हमें क्या हुआ	वह कहने लगे	
دِيَارِنَا وَأَبْنَائِنَا فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا إِلَّا قَلِيلًا									
चन्द	सिवाए	वह फिर गए	जंग	उन पर फ़र्ज़ की गई	फिर जब	और अपनी आल औलाद	अपने घर		
مِّنْهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿٢٤٦﴾ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اللَّهَ									
वेशक अल्लाह	उन का नबी	उन्हें	और कहा	246	ज़ालिमों को	जानने वाला	और अल्लाह	उन में से	
قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوتَ مَلَكًا قَالُوا أَنَّىٰ يَكُونُ لَهُ الْمُلْكُ									
बादशाहत	उस के लिए	हो सकती है	कैसे	वह बोले	बादशाह	तालूत	तुम्हारे लिए	मुक़र्र कर दिया है	
عَلَيْنَا وَنَحْنُ أَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ									
माल	से	बुसज़त	और नहीं दी गई	उस से	बादशाहत के	ज़ियादा हक़दार	और हम	हम पर	
قَالَ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهُ بَسْطَةً فِي الْعِلْمِ									
इल्म	में	बुसज़त	और उसे ज़ियादा दी	तुम पर	उसे चुन लिया	अल्लाह	वेशक	उस ने कहा	
وَالْجِسْمِ وَاللَّهُ يُؤْتِي مَلَكَهُ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٧﴾									
247	जानने वाला है	बुसज़त वाला	और अल्लाह	चाहता है	जिसे	अपना मुल्क	देता है	और अल्लाह	और जिस्म

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने घरों से निकले मौत के डर से? और वह हज़ारों थे, सो अल्लाह ने उन्हें कहा तुम मर जाओ, फिर उन्हें ज़िन्दा किया, वेशक अल्लाह फ़ज़ल वाला है लोगों पर, लेकिन अक्सर लोग शुक्र अदा नहीं करते। (243)

और तुम अल्लाह के रास्ते में लड़ो और जान लो कि अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (244) कौन है जो अल्लाह को कर्ज़ दे अच्छा कर्ज़, फिर वह उसे कई गुना ज़ियादा बढ़ा दे, अल्लाह तंगी (भी) देता है और फ़राखी (भी) देता है और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। (245)

क्या तुम ने बनी इस्राईल के सरदारों की तरफ नहीं देखा मूसा के बाद? जब उन्होंने अपने नबी से कहा हमारे लिए एक बादशाह मुक़र्र कर दें ताकि हम लड़ें अल्लाह के रास्ते में, उस ने कहा: हो सकता है कि अगर तुम पर जंग फ़र्ज़ की जाए तो तुम न लड़ो, वह कहने लगे और हमें क्या हुआ कि हम अल्लाह की राह में न लड़ेंगे, और अलबत्ता हम अपने घरों से और अपनी आल औलाद से निकाले गए हैं, फिर जब उन पर जंग फ़र्ज़ की गई तो उन में से चन्द एक के सिवा (सब) फिर गए, और अल्लाह ज़ालिमों को जानने वाला है। (246)

और कहा उन्हें उन के नबी ने वेशक अल्लाह ने तुम्हारे लिए तालूत को बादशाह मुक़र्र कर दिया है, वह बोले कैसे हम पर उस की बादशाहत हो सकती है? हम उस से ज़ियादा बादशाहत के हक़दार हैं, और उसे बुसज़त नहीं दी गई माल से, उस ने कहा वेशक अल्लाह ने उसे तुम पर चुन लिया है और उसे ज़ियादा बुसज़त दी है इल्म और जिस्म में, और अल्लाह जिसे चाहता है अपना मुल्क देता है, और अल्लाह बुसज़त वाला जानने वाला है। (247)

और उन्हें उन के नबी ने कहा वेशक उस की हुकूमत की निशानी यह है कि तुम्हारे पास ताबूत आएगा, उस में तुम्हारे रब की तरफ से सामाने तसकीन होगा और बची हुई चीजें जो आले मूसा और आले हारून ने छोड़ी थीं उसे फरिश्ते उठा लाएंगे, वेशक उस में तुम्हारे लिए निशानी है अगर तुम ईमान वाले हो। (248)

फिर जब तालूत लश्कर के साथ बाहर निकला, उस ने कहा वेशक अल्लाह एक नहर से तुम्हारी आजमाइश करने वाला है, पस जिस ने उस से (पानी) पी लिया वह मुझ से नहीं, और जिस ने उसे न चखा वह वेशक मुझ से है सिवाए उस के जो अपने हाथ से एक चुल्लू भर ले, फिर चन्द एक के सिवा उन्होंने ने उसे पी लिया, पस जब वह (तालूत) और जो उस के साथ ईमान लाए थे उस के पार हुए, उन्होंने ने कहा आज हमें ताकत नहीं जालूत और उस के लश्कर के साथ (मुक़ाबिले की), जो लोग यकीन रखते थे कि वह अल्लाह से मिलने वाले हैं उन्होंने ने कहा, बारहा छोटी जमाअतें ग़ालिब हुई हैं अल्लाह के हुकम से बड़ी जमाअतों पर, और अल्लाह सब् र करने वालों के साथ है। (249)

और जब जालूत और उस के लश्कर आमने सामने हुए तो उन्होंने ने कहा ऐ हमारे रब! हमारे (दिलों में) सब् डाल दे, और हमारे कदम जमादे, और हमारी मदद कर काफ़िर क़ौम पर। (250)

फिर उन्होंने ने अल्लाह के हुकम से उन्हें शिकस्त दी और दाऊद (अ) ने जालूत को क़तल किया, और अल्लाह ने उसे मुल्क और हिक्मत अ़ता की और उसे सिखाया जो चाहा, और अगर अल्लाह न हटाता बाज़ लोगों को बाज़ लोगों के ज़रीए तो ज़मीन ज़रूर ख़राब हो जाती और लेकिन अल्लाह तमाम ज़हानों पर फ़ज़ल वाला है। (251)

यह अल्लाह के अहकाम हैं, हम वही आप को ठीक ठीक सुनाते हैं और वेशक आप (स) ज़रूर रसूलों में से हैं। (252)

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ التَّابُوتُ فِيهِ									
उस में	ताबूत	आएगा तुम्हारे पास	कि	उस की हुकूमत	निशानी	वेशक	उन का नबी	उन्हें	और कहा
سَكِينَةً مِّن رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ آلُ مُوسَىٰ وَآلُ هَارُونَ									
और आले हारून	आले मूसा	छोड़ा	उस से जो	और बची हुई	तुम्हारा रब	से	सामाने तसकीन		
تَحْمِلُهُ الْمَلَائِكَةُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّكُمْ إِنَّ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿٢٤٨﴾									
248	ईमान वाले	तुम हो	अगर तुम्हारे लिए	निशानी	उस में	वेशक	फ़रिश्ते	उठाएंगे उसे	
فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ بِالْجُنُودِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيكُمْ بِنَهَرٍ									
एक नहर से	तुम्हारी आजमाइश करने वाला	वेशक अल्लाह	उस ने कहा	लश्कर के साथ	तालूत	बाहर निकला	फिर जब		
فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي وَمَنْ لَّمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّي إِلَّا									
सिवाए	मुझ से	तो वेशक वह	उसे न चखा	और जिस	मुझ से	तो नहीं	उस से	पी लिया	पस जिस
مَنِ اعْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهِ فَشَرِبُوا مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ فَلَمَّا جَاوَزَهُ									
उस के पार हुए	पस जब	उन से	चन्द एक	सिवाए	उस से	फिर उन्होंने ने पी लिया	अपने हाथ से	एक चुल्लू भर ले	जो
هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ قَالُوا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ									
और उस का लश्कर	जालूत के साथ	आज	हमारे लिए	नहीं ताकत	उन्होंने ने कहा	उस के साथ	ईमान लाए	और वह जो	वह
قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُّلقُوا اللَّهَ كَمْ مِّن فِئَةٍ قَلِيلَةٍ									
छोटी	जमाअतें	से	बारहा	अल्लाह	मिलने वाले	कि वह	यकीन रखते थे	जो लोग	कहा
غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيرَةً بِإِذْنِ اللَّهِ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٢٤٩﴾ وَلَمَّا									
और जब	249	सब् र करने वाले	साथ	और अल्लाह	अल्लाह के हुकम से	बड़ी	जमाअतें	ग़ालिब हुई	
بَرَزُوا لِّجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالُوا رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَثَبِّتْ									
और जमादे	सब् र	हम पर	डाल दे	ऐ हमारे रब	उन्होंने ने कहा	और उस का लश्कर	जालूत के	आमने सामने हुए	
أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٢٥٠﴾ فَهَرَمُوهُمْ بِإِذْنِ اللَّهِ									
अल्लाह के हुकम से	फिर उन्होंने ने शिकस्त दी उन्हें	250	काफ़िर (जमा)	क़ौम	पर	और हमारी मदद कर	हमारे क़दम		
وَقَتَلَ دَاوُدُ جَالُوتَ وَآتَاهُ اللَّهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهُ									
और उसे सिखाया	और हिक्मत	मुल्क	अल्लाह	और उसे दिया	जालूत	दाऊद (अ)	और क़तल किया		
مِمَّا يَشَاءُ وَلَوْ لَا دَفَعُ اللَّهُ النَّاسَ بَعْضُهُمْ بِبَعْضٍ									
बाज़ के ज़रीए	बाज़ लोग	लोग	अल्लाह	हटाता	और अगर न	चाहा	जो		
لَّفَسَدَتِ الْأَرْضُ وَلَكِنَّ اللَّهَ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٢٥١﴾ تِلْكَ									
यह	251	तमाम ज़हान	पर	फ़ज़ल वाला	अल्लाह	और लेकिन	ज़मीन	ज़रूर ख़राब हो जाती	
آيَةُ اللَّهِ نَسَلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٢٥٢﴾									
252	रसूल (जमा)	ज़रूर-से	और वेशक आप (स)	ठीक ठीक	आप पर	हम सुनाते हैं उन को	अल्लाह के अहकाम		

٣٢  
ع  
١١

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضٍ مِنْهُمْ						
उन में	बाज़	पर	उन के बाज़	हम ने फ़ज़ीलत दी	यह रसूल (जमा)	
مَنْ كَلَّمَ اللَّهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجَاتٍ وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ						
मरयम (अ) का बेटा	ईसा (अ)	और हम ने दी	दरजे	उन के बाज़	और बुलन्द किए जिस से अल्लाह ने कलाम किया	
الْبَيِّنَاتِ وَآتَيْنَاهُ بُرُوحَ الْقُدُسِ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِينَ						
वह जो	वाहम लड़ते	न	चाहता अल्लाह	और अगर	रूहुल कुदुस (जिब्राईल अ) से और उस की ताईद की हम ने खुली निशानियां	
مِنْ بَعْدِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَاتُ وَلَكِنْ اخْتَلَفُوا						
उन्होंने ने इख़तिलाफ़ किया	और लेकिन	खुली निशानियां	जो (जब) आ गई उन के पास	वाद से	उन के बाद	
فَمِنْهُمْ مَّنْ آمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا اقْتَتَلُوا						
वह वाहम न लड़ते	चाहता अल्लाह	और अगर	कुफ़ किया	कोई-बाज़	और उन से ईमान लाया जो-कोई फिर उन से	
وَلَكِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ﴿٢٥٣﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا						
तुम खर्च करो	जो ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	253	जो वह चाहता है	करता है और लेकिन अल्लाह	
مِمَّا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا بَيْعَ فِيهِ وَلَا خُلَّةٌ						
और न दोस्ती	उस में	न ख़रीद ओ फ़रोख़्त	वह दिन	आजाए	कि से पहले हम ने दिया तुम्हें	से जो
وَلَا شَفَاعَةً وَالْكَافِرُونَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٥٤﴾ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ						
सिवाए उस के	नहीं माबूद	अल्लाह	254	ज़ालिम (जमा)	वही और काफ़िर (जमा)	और न सिफ़ारिश
الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا						
और जो	आस्मानों में	जो	उसी का है	नीन्द	और न ऊन्ध	न उसे आती है थामने वाला ज़िन्दा
فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا						
जो	वह जानता है	उस की इजाज़त से	मगर (बग़ैर)	उस के पास	सिफ़ारिश करे	वह जो कौन जो ज़मीन में
بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ إِلَّا						
मगर	उस का इल्म	से	किसी चीज़ का	वह अहाता करते हैं	और नहीं	उन के पीछे और जो उन के सामने
بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا						
उन की हिफ़ाज़त	थकाती उस को	और नहीं	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	उस की कुर्सी	समा लिया जितना वह चाहे
وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ﴿٢٥٥﴾ لَا إِكْرَاهَ فِي الدِّينِ قَدْ تَبَيَّنَ الرُّشْدُ						
हिदायत	वेशक जुदा हो गई	दीन	में	नहीं ज़बरदस्ती	255	अज़मत वाला बुलन्द मरतबा और वह
مِنَ الْغَيِّ فَمَنْ يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِنْ بِاللَّهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ						
उस ने थाम लिया	पस तहकीक़	अल्लाह पर	और ईमान लाए	गुमराह करने वाले को	न माने	पस जो गुमराही से
بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ لَا انْفِصَامَ لَهَا وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٥٦﴾						
256	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	उस को	टूटना नहीं	मज़बूती हलक़े को

यह रसूल है! हम ने उन में से बाज़ को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी। उन में (बाज़) से अल्लाह ने कलाम किया और उन में से बाज़ के दरजे बुलन्द किए, और हम ने मरयम के बेटे ईसा (अ) को खुली निशानियां दीं और हम ने रूहुल कुदुस (अ) से उस की ताईद की, और अगर अल्लाह चाहता तो वह वाहम न लड़ते जो उन के बाद हुए, उस के बाद जबकि उन के पास खुली निशानियां आगई, लेकिन उन्होंने ने इख़तिलाफ़ किया, फिर उन में से कोई ईमान लाया और उन में से किसी ने कुफ़ किया, और अगर अल्लाह चाहता तो वह वाहम न लड़ते, लेकिन अल्लाह जो चाहता है करता है। (253)

ऐ ईमान वालो! जो हम ने तुम्हें दिया उस में से खर्च करो इस से पहले कि वह दिन आजाए जिस में न ख़रीद ओ फ़रोख़्त होगी, न दोस्ती और न सिफ़ारिश, और काफ़िर वही ज़ालिम है। (254)

अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, ज़िन्दा, सब को थामने वाला, न उसे ऊन्ध आती है और न नीन्द, उसी का है जो आस्मानों और ज़मीन में है, कौन है जो सिफ़ारिश करे उस के पास उस की इजाज़त के बग़ैर, वह जानता है जो उन के सामने है और जो उन के पीछे है, और वह नहीं अहाता कर सकते उस के इल्म में से किसी चीज़ का मगर जितना वह चाहे, उस की कुर्सी समाए हुए है आस्मानों और ज़मीन को, उस को उन की हिफ़ाज़त नहीं थकाती, और वह बुलन्द मरतबा, अज़मत वाला है। (255)

ज़बरदस्ती नहीं दीन में, वेशक हिदायत से गुमराही जुदा हो गई है, पस जो गुमराह करने वाले को न माने और अल्लाह पर ईमान लाए, पस तहकीक़ उस ने हलक़े को मज़बूती से थाम लिया, टूटना नहीं उस को, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (256)

जो लोग ईमान लाए अल्लाह उन का मददगार है, वह उन्हें निकालता है अन्धेरो से रौशनी की तरफ, और जो लोग काफिर हुए उन के साथी गुमराह करने वाले हैं, वह उन्हें निकालते हैं रौशनी से अन्धेरो की तरफ, यही लोग दोज़खी हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (257)

क्या आप ने उस शख्स की तरफ नहीं देखा जिस ने इब्राहीम (अ) से उन के रब के बारे में झगड़ा किया कि अल्लाह ने उसे बादशाहत दी थी, जब इब्राहीम (अ) ने कहा मेरा रब वह है जो ज़िन्दा करता है और मारता है। उस ने कहा मैं ज़िन्दा करता हूँ और मारता हूँ, इब्राहीम (अ) ने कहा वेशक अल्लाह सूरज को मशरिफ़ से निकालता है, पस तू उसे ले आ मशरिफ़ से, तो वह काफिर हैरान रह गया, और अल्लाह नाइन्साफ़ लोगों को हिदायत नहीं देता। (258)

या उस शख्स के मानिंद जो एक बस्ती से गुज़रा, और वह अपनी छतों पर गिरी पड़ी थी, उस ने कहा अल्लाह उस के मरने के बाद उसे क्योंकर ज़िन्दा करेगा? तो अल्लाह ने उसे एक सौ साल मुर्दा रखा, फिर उसे उठाया (ज़िन्दा किया), अल्लाह ने पूछा तू कितनी देर रहा? उस ने कहा मैं एक दिन या दिन से कुछ कम रहा, उस ने फ़रमाया बल्कि तू एक सौ साल रहा है, पस तू अपने खाने पीने की तरफ़ देख, वह सड़ नहीं गया, और अपने गधे की तरफ़ देख, और हम तुझे लोगों के लिए एक निशानी बनाएंगे, और हड्डियों की तरफ़ देख हम उन्हें किस तरह जोड़ते हैं, फिर उन्हें गोशत चढ़ाते हैं, फिर जब उस पर वाज़ेह हो गया तो उस ने कहा मैं जान गया कि अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाला है। (259)

اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا يُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ									
रौशनी	तरफ़	अन्धेरो	से	वह उन्हें निकालता है	जो लोग ईमान लाए	मददगार	अल्लाह		
وَالَّذِينَ كَفَرُوا أُولَئِكَمُ الظَّالِمُونَ يُخْرِجُونَهُم مِّنَ النُّورِ									
रौशनी	से	और उन्हें निकालते हैं	शैतान	उन के साथी	और जो लोग काफिर हुए				
إِلَى الظُّلُمَاتِ أُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ (257)									
257	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	दोज़खी	यही लोग	अन्धेरे (जमा)	तरफ़		
أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ حَاجَّ بِرَبِّهِمْ فِي رَبِّهِ أَنْ اتَّهَمَ اللَّهُ									
अल्लाह ने उसे दी	कि	उस का रब	वारे (में)	इब्राहीम (अ)	झगड़ा किया	वह शख्स जो	तरफ़	क्या नहीं देखा आप (स) ने	
الْمَلِكُ إِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّيَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ قَالَ أَنَا									
मैं	उस ने कहा	और मारता है	ज़िन्दा करता है	जो कि	मेरा रब	इब्राहीम	कहा	जब	बादशाहत
أُحْيِي وَأُمِيتُ قَالَ إِبْرَاهِيمُ فَإِنَّ اللَّهَ يَأْتِي بِالشَّمْسِ									
सूरज को	लाता है	वेशक अल्लाह	इब्राहीम	कहा	और मैं मारता हूँ	ज़िन्दा करता हूँ			
مِنَ الْمَشْرِقِ فَأْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِي كَفَرَ									
जिस ने कुफ़ किया (काफिर)	तो वह हैरान रह गया	मशरिफ़	से	पस तू उसे ले आ	मशरिफ़	से			
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ (258) أَوْ كَالَّذِي مَرَّ عَلَى قَرْيَةٍ									
एक बस्ती	पर (से)	गुज़रा	उस शख्स के मानिंद जो	या	258	नाइन्साफ़ लोग	नहीं हिदायत देता	और अल्लाह	
وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَى عُرُوشِهَا قَالَ أَنَّى يُحْيِي هَذِهِ اللَّهُ بَعْدَ									
बाद	अल्लाह	इस	ज़िन्दा करेगा	क्योंकर	उस ने कहा	अपनी छतों पर	गिर पड़ी थी	और वह	
مَوْتِهَا فَمَاتَهُ اللَّهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ									
कितनी देर रहा	उस ने पूछा	उसे उठाया	फिर	साल	एक सौ	तो अल्लाह ने उस को मुर्दा रखा	इस का मरना		
قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ قَالَ بَلْ لَبِثْتَ									
तू रहा	बल्कि	उस ने कहा	दिन से कुछ कम	या	एक दिन	मैं रहा	उस ने कहा		
مِائَةَ عَامٍ فَانظُرْ إِلَى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ وَانظُرْ									
और देख	वह नहीं सड़ गया	और अपना पीना	अपना खाना	तरफ़	पस तू देख	एक सौ साल			
إِلَى حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ آيَةً لِّلنَّاسِ وَانظُرْ إِلَى الْعِظَامِ									
हड्डियां	तरफ़	और देख	लोगों के लिए	एक निशानी	और हम तुझे बनाएंगे	अपना गधा	तरफ़		
كَيْفَ نُنشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوها لَحْمًا فَلَمَّا تَبَيَّنَ									
वाज़ेह हो गया	फिर जब	गोशत	हम उसे पहनाते हैं	फिर	हम उन्हें जोड़ते हैं	किस तरह			
لَهُ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (259)									
259	कुदरत वाला	हर चीज़	पर	कि अल्लाह	मैं जान गया	उस ने कहा	उस पर		

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ ارْنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَىٰ قَالَ أُولَٰئِمُ									
क्या नहीं	उस ने कहा	मुर्दा	तू ज़िन्दा करता है	क्योंकर	मुझे दिखा	मेरे रब	इब्राहीम	कहा	और जब
تُؤْمِنُ قَالَ بَلَىٰ وَلَٰكِن لَّا يَظْمِنُ قَلْبِي قَالَ فَخُذْ أَرْبَعَةً									
चार (4)	पस पकड़ ले	उस ने कहा	मेरा दिल	ताकि इत्मिनान हो जाए	और लेकिन	क्यों नहीं	उस ने कहा	यकीन किया	
مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلَىٰ كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ									
उन से (उन के)	पहाड़	हर	पर	रख दे	फिर	अपने साथ	फिर उन को हिला	परिन्दे	से
جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَأْتِينَكَ سَعْيًا وَاعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ									
गालिव	कि अल्लाह	और जान ले	दौड़ते हुए	वह तेरे पास आएंगे	उन्हें बुला	फिर	टुकड़े		
حَكِيمٌ ﴿٢٦٠﴾ مَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ									
अल्लाह का रास्ता	में	अपने माल	खर्च करते हैं	जो लोग	मिसाल	260	हिक्मत वाला		
كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَنْبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِي كُلِّ سُنبُلَةٍ مِّائَةٌ حَبَّةٌ									
दाने	सौ (100)	हर बाल	में	वालों	सात	उगें	एक दाना	मानिंद	
وَاللَّهُ يُضْعِفُ لِمَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٦١﴾ الَّذِينَ									
जो लोग	261	जानने वाला	बुस्रत वाला	और अल्लाह	चाहता है	जिस के लिए	बढ़ाता है	और अल्लाह	
يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ لَا يُتَّبَعُونَ مَا أَنْفَقُوا									
जो उन्होंने ने खर्च किया	बाद में नहीं रखते	फिर	अल्लाह का रास्ता	में	अपने माल	खर्च करते हैं			
مِنَّا وَلَا أَدَىٰ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ									
उन पर	कोई खौफ	और न	उन का रब	पास	उन का अजर	उन के लिए	कोई तकलीफ	और न एहसान	कोई
وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٦٢﴾ قَوْلٌ مَّعْرُوفٌ وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ									
खैरात	से	बेहतर	और दरगुज़र	अच्छी	वात	262	ग़मगीन होंगे	वह	और न
يَتَّبَعَهَا أَدَىٰ وَاللَّهُ غَنِيٌّ حَلِيمٌ ﴿٢٦٣﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا									
ईमान वालो	ऐ	263	बुर्दवार	बेनियाज़	और अल्लाह	ईज़ा देना (सताना)	उस के बाद हो		
لَا تُبْطِلُوا صَدَقَتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْأَذَىٰ كَالَّذِي يُنْفِقُ مَالَهُ									
अपना माल	खर्च करता	उस शख्स की तरह जो	और सताना	एहसान जतला कर	अपने खैरात	न ज़ाया करो			
رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ									
जैसी मिसाल	पस उस की मिसाल	और आखिरत का दिन	अल्लाह पर	और ईमान नहीं रखता	लोग	दिखलावा			
صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَأَصَابَهُ وَابِلٌ فَتَرَكَهُ صَلْدًا لَا يَقْدِرُونَ									
वह कुदरत नहीं रखते	साफ़	तो उसे छोड़ दे	तेज़ बारिश	फिर उस पर बरसे	मिट्टी	उस पर	चिकना पत्थर		
عَلَىٰ شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوا وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿٢٦٤﴾									
264	काफ़ि़रों की कौम	राह नहीं दिखाता	और अल्लाह	उन्होंने ने कमाया	उस से जो	कोई चीज़	पर		

और जब इब्राहीम (अ) ने कहा मेरे रब! मुझे दिखा दे तू क्योंकर मुर्दा को ज़िन्दा करता है, अल्लाह ने कहा

क्या तू ईमान नहीं रखता? उस ने कहा क्यों नहीं? बल्कि (चाहता हूँ) ताकि मेरे दिल को इत्मिनान हो जाए, उस ने कहा पस तू चार परिन्दे पकड़ ले, फिर उन को अपने साथ हिला ले, फिर रख दे हर पहाड़ पर उन के टुकड़े, फिर उन्हें बुला वह तेरे पास दौड़ते हुए आएंगे, और जान ले कि अल्लाह गालिव हिक्मत वाला है। (260)

उन लोगों की मिसाल जो खर्च करते हैं अपने माल अल्लाह के रास्ते में, एक दाने के मानिंद है जिस से सात बालें उगें, हर बाल में सौ दाने हों, और अल्लाह जिस के लिए चाहता है बढ़ाता है, और अल्लाह बुस्रत वाला जानने वाला है। (261)

जो लोग अपने माल अल्लाह के रास्ते में खर्च करते हैं, फिर नहीं रखते खर्च करने के बाद कोई एहसान, न कोई तकलीफ (पहुँचाते हैं) उन के लिए उन के रब के पास अजर है, न कोई खौफ उन पर और न वह ग़मगीन होंगे। (262)

अच्छी बात करना और दरगुज़र करना बेहतर है उस खैरात से जिस के बाद ईज़ा देना हो, और अल्लाह बेनियाज़ बुर्दवार है। (263)

ऐ ईमान वालो! अपने खैरात एहसान जतला कर और सता कर ज़ाया न करो उस शख्स की तरह जो अपना माल लोगों के दिखलावे को खर्च करता है और अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान नहीं रखता, पस उस की मिसाल उस साफ़ पत्थर जैसी है जिस पर मिट्टी हो, फिर उस पर तेज़ बारिश बरसे तो उसे छोड़ दे बिलकुल साफ़, वह उस पर कुछ कुदरत नहीं रखते जो उन्होंने ने कमाया, और अल्लाह राह नहीं दिखाता काफ़ि़रों को। (264)

और (उन की) मिसाल जो अपने माल खर्च करते हैं खुशनूदी हासिल करने अल्लाह की, और अपने दिलों के पूरे सवात ओ करार के साथ, (ऐसी है) जैसे बुलन्दी पर एक बाग है, उस पर तेज़ बारिश पड़ी तो उस ने दुगना फल दिया, फिर अगर तेज़ बारिश न पड़ी तो फूवार (ही काफी है), और अल्लाह जो तुम करते हो देखने वाला है। (265)

क्या तुम में से कोई पसन्द करता है कि उस का एक बाग हो खजूर और अंगूरों का, उस के नीचे नहरें बहती हों, उस के लिए उस में हर किसम के फल हों, और उस पर बुढ़ापा आ गया हो और उस के वच्चे बहुत कमज़ोर हों, तब उस पर एक बगोला आ पड़ा, उस में आग थी तो वह (बाग) जल गया, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए निशानियां बाज़ेह करता है ताकि तुम ग़ौर ओ फ़िक्र करो। (266)

ऐ ईमान वालो! खर्च करो उस में से पाकीज़ा चीज़ें जो तुम कमाओ और उस में से जो हम ने निकाला तुम्हारे लिए ज़मीन से, और उस में से गन्दी चीज़ खर्च करने का इरादा न करो, जबकि तुम खुद उस को लेने वाले नहीं मगर यह कि तुम चशम पोशी कर जाओ, और जान लो कि अल्लाह बेनियाज़ खूबियों वाला है। (267)

शैतान तुम को तंगदस्ती से डराता है और तुम्हें बेहयाई का हुकम देता है, और अल्लाह तुम से अपनी वख़्शिश और फ़ज़ल का वादा करता है, और अल्लाह वुस़्तत वाला जानने वाला है। (268)

वह जिसे चाहता है हिक्मत (दानाई) अता करता है, और जिसे हिक्मत दी गई तहकीक उसे दी गई बहुत भलाई, और अज़ल वालों के सिवा कोई नसीहत कुबूल नहीं करता। (269)

وَمَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ							
अल्लाह की खुशनूदी	हासिल करना	अपने माल	खर्च करते हैं	जो लोग	और मिसाल		
وَتَثْبِيْتًا مِّنْ أَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍ بِرَبْوَةٍ أَصَابَهَا وَابِلٌ							
तेज़ बारिश	उस पर पड़ी	बुलन्दी पर	एक बाग	जैसे	अपने दिल (जमा)	से	और सवात ओ यकीन
فَأَتَتْ أَكْلَهَا ضِعْفَيْنِ فَإِن لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ وَاللَّهُ							
और अल्लाह	तो फूवार	तेज़ बारिश	न पड़ी	फिर अगर	दुगना	फल	तो उस ने दिया
بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٦٥﴾ أَيُّودٌ أَحَدُكُمْ أَنْ تَكُونَ لَهُ جَنَّةٌ مِّن							
से (का)	एक बाग	उस का	हो	कि	तुम में से कोई	क्या पसन्द करता है	265 देखने वाला तुम करते हो जो
نَخِيلٍ وَأَعْنَابٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُ فِيهَا مِنْ							
से	उस में	उस के लिए	नहरें	उस के नीचे	से	बहती हों	और अंगूर खजूर
كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَأَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهُ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَاءٌ فَأَصَابَهَا							
तब उस पर पड़ा	बहुत कमज़ोर	वच्चे	और उस के	बुढ़ापा	और उस पर आ गया	हर किसम के फल	
إِعْصَاءٌ فِيهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ							
निशानियां	तुम्हारे लिए	अल्लाह बाज़ेह करता है	इसी तरह	तो वह जल गया	आग	उस में	एक बगोला
لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ﴿٢٦٦﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِنْ							
से	तुम खर्च करो	जो ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	266	गौर ओ फ़िक्र करो	ताकि तुम	
طَيِّبَاتٍ مَّا كَسَبْتُمْ وَمِمَّا أَخْرَجْنَا لَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ							
ज़मीन	से	तुम्हारे लिए	हम ने निकाला	और से-जो	तुम कमाओ	जो	पाकीज़ा
وَلَا تَيْمَمُوا الْخَبِيثَ مِنْهُ تُنْفِقُونَ وَلَسْتُمْ بِأَخِيذِهِ							
उस को लेने वाले	जब कि तुम नहीं हो	तुम खर्च करते हो	से-जो	गन्दी चीज़	इरादा करो	और न	
إِلَّا أَنْ تُغْمِضُوا فِيهِ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ﴿٢٦٧﴾							
267	खूबियों वाला	बेनियाज़	कि अल्लाह	और तुम जान लो	उस में	चशम पोशी करो	यह कि मगर
الشَّيْطَانُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَاءِ وَاللَّهُ							
और अल्लाह	बेहयाई का	और तुम्हें हुकम देता है	तंगदस्ती	तुम को डराता है	शैतान		
يَعِدُّكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٦٨﴾							
268	जानने वाला	वुस़्तत वाला	और अल्लाह	और फ़ज़ल	उस से (अपनी)	वख़्शिश	तुम से वादा करता है
يُؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَاءُ وَمَنْ يُؤْتَ الْحِكْمَةَ							
हिक्मत	दी गई	और जिसे	वह चाहता है	जिसे	हिक्मत, दानाई	वह अता करता है	
فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُوا الْأَلْبَابِ ﴿٢٦٩﴾							
269	अज़ल वाले	सिवाए	नसीहत कुबूल करता	और नहीं	बहुत	भलाई	तहकीक दी गई



وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ أَوْ نَذْرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ						
कोई नज़र	तुम नज़र मानो	या	कोई ख़ैरात	से	तुम खर्च करोगे	और जो
فَإِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُهُ ۗ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ (٢٧٠)						
270	कोई मददगार	ज़ालिमों के लिए	और नहीं	उसे जानता है	तो बेशक अल्लाह	
إِنْ تُبَدُّوا الصَّدَقَاتِ فَبِعِمَّا هِيَ ۗ وَإِنْ تُحْفُواهَا						
उस को छुपाओ	और अगर	यह	तो अच्छी बात	ख़ैरात	ज़ाहिर (अलानिया) दो	अगर
وَتُؤْتُوهَا الْفُقَرَاءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۗ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ						
तुम से	और दूर कर देगा	तुम्हारे लिए	बेहतर	तो वह	तंगदस्त (जमा)	और वह पहुँचाओ
مِّنْ سَيِّئَاتِكُمْ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ (٢٧١) لَيْسَ						
नहीं	271	बाख़बर	जो कुछ तुम करते हो	और अल्लाह	तुम्हारी बुराइयाँ	से, कुछ
عَلَيْكَ هُدَاهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۗ وَمَا						
और जो	वह चाहता है	जिसे	हिदायत देता है	और लेकिन अल्लाह	उन की हिदायत	आप पर (आप का ज़िम्मा)
تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَلِأَنْفُسِكُمْ ۗ وَمَا تُنْفِقُونَ إِلَّا ابْتِغَاءَ						
हासिल करना	मगर	खर्च करो	और न	तो अपने वासते	माल से	तुम खर्च करोगे
وَجْهِ اللَّهِ ۗ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ يُؤَفِّ إِلَيْكُمْ						
तुम्हें	पूरा मिलेगा	माल से	तुम खर्च करोगे	और जो	अल्लाह की रज़ा	
وَأَنْتُمْ لَا تُظْلَمُونَ (٢٧٢) لِلْفُقَرَاءِ الَّذِينَ أَحْصَرُوا						
रुके हुए	जो	तंगदस्तों के लिए	272	न ज़ियादती की जाएगी तुम पर	और तुम	
فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ ضَرْبًا فِي الْأَرْضِ						
ज़मीन (मुल्क) में	चलना फिरना	नहीं कर सकते	अल्लाह का रास्ता	में		
يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ أَغْنِيَاءَ مِنَ التَّعْقُفِ ۗ تَعْرِفُهُمْ بِسِيمَاهُمْ ۗ						
उन के चहरे से	तू पहचानता है उन्हें	सवाल न करने से	मालदार	नावाक़िफ़	उन्हें समझे	
لَا يَسْأَلُونَ النَّاسَ إِلْحَافًا ۗ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ						
माल से	तुम खर्च करोगे	और जो	लिपट कर	लोग	वह सवाल नहीं करते	
فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ (٢٧٣) الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ						
अपने माल	खर्च करते हैं	जो लोग	273	जानने वाला	उस को	तो बेशक अल्लाह
بِالْأَيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ						
उन का अजर	पस उन के लिए है	और ज़ाहिर	पोशीदा	और दिन	रात में	
عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ (٢٧٤)						
274	ग़मगीन होंगे	वह	और न	उन पर	कोई ख़ौफ़	और न उन का रब पास

और जो तुम खर्च करोगे कोई ख़ैरात या तुम कोई नज़र मानोगे तो बेशक अल्लाह उसे जानता है, और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं। (270)

अगर तुम ख़ैरात ज़ाहिर (अलानिया) दो तो यह अच्छी बात है, और अगर तुम उस को छुपाओ और तंगदस्तों को पहुँचाओ तो वह तुम्हारे लिए (ज़ियादा) बेहतर है, और वह दूर करेगा तुम्हारी कुछ बुराइयाँ, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (271)

उन की हिदायत आप का ज़िम्मा नहीं, लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है, और तुम जो माल खर्च करोगे तो अपने (ही) वासते, और खर्च न करो मगर अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए, और तुम जो माल खर्च करोगे तुम्हें पूरा पूरा मिलेगा, और तुम पर ज़ियादती न की जाएगी। (272)

तंगदस्तों के लिए जो रुके हुए हैं अल्लाह की राह में, वह मुल्क में चलने फिरने की ताकत नहीं रखते, उन्हें समझे नावाक़िफ़ उन के सवाल न करने की वजह से मालदार, तूम उन्हें उन के चहरे से पहचान सकते हो, वह सवाल नहीं करते लोगों से लिपट लिपट कर, और तुम जो माल खर्च करोगे तो बेशक अल्लाह उस को जानने वाला है। (273)

जो लोग अपने माल खर्च करते हैं रात में और दिन को, पोशीदा और ज़ाहिर, पस उन के लिए है उन का अजर उन के रब के पास, न उन पर कोई ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे। (274)

जो लोग सूद खाते हैं वह न खड़े होंगे मगर जैसे वह शख्स खड़ा होता है जिस को पागल बना दिया हो शैतान ने छू कर, यह इस लिए कि उन्होंने ने कहा तिजारत दर हकीकत सूद के मानिंद है। हालांकि अल्लाह ने तिजारत को हलाल किया और सूद को हराम किया, पस जिस को नसीहत पहुँची उस के रब की तरफ से फिर वह बाज़ आ गया तो उस के लिए है जो हो चुका, और उस का मामला अल्लाह के सुपर्द है और जो फिर (सूद की तरफ) लौटे तो वही दोज़ख वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (275)

अल्लाह सूद को मिटाता है और खैरात को बढ़ाता है, और अल्लाह हर एक (किसी) नाशुके गुनाहगार को पसन्द नहीं करता। (276)

वेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए, और नमाज़ काइम की और ज़कात अदा की, उन के लिए उन का अजर है उन के रब के पास, और न उन पर कोई ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे। (277)

ऐ ईमान वाले! तुम अल्लाह से डरो, और जो सूद बाकी रह गया वह छोड़ दो अगर तुम ईमान वाले हो। (278)

फिर अगर तुम न छोड़ोगे तो अल्लाह और उस के रसूल से जंग के लिए खबरदार हो जाओ, और अगर तुम ने तौबा कर ली तो तुम्हारा असल ज़र तुम्हारे लिए है, न तुम जुल्म करो न तुम पर जुल्म किया जाएगा। (279)

और अगर वह तंगदस्त हो तो कुशादगी होने तक मोहलत दे दो, और अगर (क़र्ज़) बख़श दो तो तुम्हारे लिए ज़ियादा बेहतर है अगर तुम जानते हो। (280)

और उस दिन से डरो (जस दिन) तुम अल्लाह की तरफ़ लौटाए जाओगे, फिर हर शख्स को पूरा पूरा दिया जाएगा जो उस ने कमाया और उन पर जुल्म न होगा। (281)

الَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبَا لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ الَّذِي							
वह शख्स जो	खड़ा होता है	जैसे	मगर	न खड़े होंगे	सूद	खाते हैं	जो लोग
يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطَانُ مِنَ الْمَسِّ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا إِنَّمَا الْبَيْعُ							
तिजारत	दर हकीकत	उन्होंने ने कहा	इस लिए कि वह	यह	छूने से	शैतान	उस को पागल बना दिया
مِثْلُ الرِّبَا وَأَحَلَّ اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبَا فَمَنْ جَاءَهُ							
पहुँचे उस को	पस जिस	सूद	और हराम किया	तिजारत	हालांकि अल्लाह ने हलाल किया	सूद	मानिंद
مَوْعِظَةً مِّن رَّبِّهِ فَانْتَهَى فَلَهُ مَا سَلَفَ وَأَمْرُهُ إِلَى اللَّهِ							
अल्लाह की तरफ़	और उस का मामला	जो हो चुका	तो उस के लिए	फिर वह बाज़ आ गया	उस का रब	से	नसीहत
وَمَنْ عَادَ فَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ (275)							
275	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	दोज़ख वाले	तो वही	फिर करे	और जो
يَمْحَقُ اللَّهُ الرِّبَا وَيُزْبِي الصَّدَقَاتِ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ							
पसन्द नहीं करता	और अल्लाह	खैरात	और बढ़ाता है	सूद	मिटाता है अल्लाह		
كُلَّ كَفَّارٍ أَثِيمٍ (276) إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ							
नेक	और उन्होंने ने अमल किए	जो लोग ईमान लाए	वेशक	276	गुनाहगार	हर एक नाशुका	
وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ							
उन का रब	पास	उन का अजर	उन के लिए	ज़कात	और अदा की	नमाज़	और उन्होंने ने काइम की
وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ (277) يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا							
तुम डरो	जो ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	277	ग़मगीन होंगे	और न वह	उन पर	कोई ख़ौफ़ और न
اللَّهَ وَذُرُوا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبَا إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ (278)							
278	ईमान वाले	तुम हो	अगर	सूद	से	जो बाकी रह गया	और छोड़ दो अल्लाह
فَإِن لَّمْ تَفْعَلُوا فَأْذَنُوا بِحَرْبٍ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِن تُبْتُمْ							
तुम ने तौबा कर ली	और अगर	और उस का रसूल	अल्लाह	से	जंग के लिए	तो खबरदार हो जाओ	तुम न छोड़ोगे फिर अगर
فَلَکُمْ رُءُوسُ أَمْوَالِکُمْ لَا تَظْلِمُونَ وَلَا تُظْلَمُونَ (279)							
279	और न तुम पर जुल्म किया जाएगा	न तुम जुल्म करो	तुम्हारी असल पूंजी	तो तुम्हारे लिए			
وَإِن كَانَ ذُو عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ إِلَىٰ مَيْسَرَةٍ وَأَن تَصَدَّقُوا							
तुम बख़शदो	और अगर	कुशादगी	तक	सुहलत	तंगदस्त	हो	और अगर
خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ (280) وَاتَّقُوا يَوْمًا تُرْجَعُونَ فِيهِ							
उस में	तुम लौटाए जाओगे	वह दिन	और तुम डरो	280	जानते	तुम हो	अगर तुम्हारे लिए बेहतर
إِلَى اللَّهِ ثُمَّ تُوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ (281)							
281	जुल्म न किये जाएंगे	और वह	उस ने कमाया	जो	हर शख्स	पूरा दिया जाएगा	फिर अल्लाह की तरफ़

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى								
मुकर्ररा	एक मुददत	तक	उधार का	तुम मामला करो	जब	ईमान लाए	वह जो कि	ऐ
فَاكْتُبُوهُ ۖ وَلْيَكْتُب بَيْنَكُمْ كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ ۚ وَلَا يَأْب كَاتِبٌ								
कातिब	और न इन्कार करे	इन्साफ से	कातिब	तुम्हारे दरमियान	और चाहिए कि लिख दे	तो उसे लिख लिया करो		
أَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللَّهُ ۚ فَلْيَكْتُب ۚ وَلْيَمْلِكِ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ								
उस पर हक	वह जो	और लिखाता जाए	चाहिए कि लिख दे	अल्लाह ने उस को सिखाया	जैसे	कि वह लिखे		
وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْئًا ۚ فَإِنْ كَانَ الَّذِي								
वह जो	है	फिर अगर	कुछ	उस से	कम करे	और न	अपना रब	और अल्लाह से डरे
عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيهَا أَوْ ضَعِيفًا أَوْ لَا يَسْتَطِيعُ أَنْ يُمِلَّ هُوَ فَلْيَمْلِكْ								
तो चाहिए कि लिखाए	लिखाए वह	कि	न कर सकता हो	या	कमजोर	या	बेअक़ल	उस पर हक
وَلِيُّهُ بِالْعَدْلِ ۚ وَأَسْتَشْهِدُوا شَهِيدَيْنِ مِنْ رِجَالِكُمْ ۚ								
अपने मर्द	से	दो गवाह	और गवाह कर लो	इन्साफ से	उस का सरपरस्त			
فَإِنْ لَّمْ يَكُونَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَامْرَأَتَانِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ								
तुम पसन्द करो	से-जो	और दो औरतें	तो एक मर्द	दो मर्द	न हों	फिर अगर		
مِنَ الشَّهَادَةِ أَنْ تَضِلَّ إِحْدَاهُمَا فَتُذَكَّرَ إِحْدَاهُمَا الْأُخْرَىٰ ۚ								
दूसरी	उन में से एक	तो याद दिला दे	उन में से एक	भूल जाए	अगर	गवाह (जमा)	से	
وَلَا يَأْب الشَّهَادَةَ إِذَا مَا دُعُوا ۚ وَلَا تَسْمَمُوا أَنْ تَكْتُبُوهُ								
तुम लिखो	की	सुस्ती करो	और न	वह बुलाए जाएं	जब	गवाह	और न इन्कार करें	
صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا إِلَىٰ أَجَلِهِ ۚ ذَلِكُمْ أَفْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ وَأَقْوَمُ								
और ज़ियादा मज़बूत	अल्लाह के नज़दीक	ज़ियादा इन्साफ	यह	एक मीआद	तक	बड़ा	या	छोटा
لِلشَّهَادَةِ وَأَدْنَىٰ ۚ أَلَّا تَرْتَابُوا ۚ إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً حَاضِرَةً								
हाज़िर (हाथों हाथ)	सौदा	हो	सिवाए कि	शुबा में पड़ो	कि न	और ज़ियादा करीब	गवाही के लिए	
تُدِيرُونَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَلَّا تَكْتُبُوهَا ۚ								
कि तुम वह न लिखो	तुम पर कोई गुनाह	तो नहीं	आपस में	जिसे तुम लेते रहते हो				
وَأَشْهِدُوا إِذَا تَبَايَعْتُمْ ۚ وَلَا يُضَارَّ كَاتِبٌ وَلَا شَهِيدٌ								
गवाह	और न	लिखने वाला	और न नुक़सान पहुँचाया जाये	जब तुम सौदा करो	और तुम गवाह कर लो			
وَإِنْ تَفَعَّلُوا فإِنَّهُ فُسُوقٌ بِكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ								
और अल्लाह से तुम डरो	तुम पर	गुनाह	तो बेशक यह	तुम करोगे	और अगर			
وَيُعَلِّمُكُمُ اللَّهُ ۚ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٨٢﴾								
282	जानने वाला	हर चीज़	और अल्लाह	और अल्लाह सिखाता है तुम्हें				

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो (मोमिनो!) जब तुम एक मुकर्ररा मुददत तक (के लिए) उधार का मामला करो तो उसे लिख लिया करो और चाहिए कि लिख दे लिखने वाला तुम्हारे दरमियान इन्साफ से, और कातिब लिखने से इन्कार न करे, जैसे उस को सिखाया है अल्लाह ने, उसे चाहिए कि लिख दे, और जिस पर हक (कर्ज़) है वह लिखाता जाए, और अपने रब अल्लाह से डरे, और न उस से कुछ कम करे, फिर अगर वह जिस पर हक (कर्ज़) है वह बेअक़ल या कमजोर है या न लिखा सकता हो बोल कर तो चाहिए कि उस का सरपरस्त इन्साफ से लिखा दे और अपने मर्दों में से दो गवाह कर लो, फिर अगर दो मर्द न हों तो एक मर्द और दो औरतें जिन को तुम गवाह पसन्द करो (ताकि) अगर उन में से एक भूल जाए तो उन में से एक (दूसरी) याद दिला दे, और गवाह इन्कार न करें जब बुलाए जाएं, और तुम लिखने में सुस्ती न करो (खाह मामला) छोटा हो या बड़ा, वापस लौटाने का वक़्त, यह ज़ियादा इन्साफ है और गवाही के लिए ज़ियादा मज़बूत है अल्लाह के नज़दीक, और ज़ियादा करीब है कि तुम शुबा में न पड़ो, उस के सिवाए कि सौदा हाथों हाथ का हो जिसे तुम आपस में लेते रहते हो, तो कोई गुनाह नहीं कि तुम वह न लिखो और जब तुम सौदा करो तो गवाह कर लिया करो, और न नुक़सान पहुँचाया जाये कातिब को और न गवाह को, और अगर तुम ऐसा करोगे तो यह बेशक तुम पर गुनाह है, और तुम अल्लाह से डरो, और अल्लाह तुम्हें सिखाता है, और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (282)

और अगर तुम सफ़र पर हो और कोई लिखने वाला न पाओ तो गिरवी रखना चाहिए क़ब्ज़े में, फिर अगर तुम में कोई किसी का एतिबार करे तो जिस शख्स को अमीन बनाया गया है उसे चाहिए कि लौटा दे उस की अमानत और अपने रब अल्लाह से डरे, और तुम गवाही न छुपाओ, और जो शख्स उसे छुपाएगा तो बेशक उस का दिल गुनाहगार है, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे जानने वाला है। (283)

अल्लाह के लिए है जो आस्मानों और ज़मीन में है, और अगर तुम जाहिर करो जो तुम्हारे दिलों में है या तुम उसे छुपाओ, अल्लाह तुम से उस का हिसाब लेगा, फिर जिस को वह चाहे बख़्श दे और जिसको वह चाहे अज़ाब दे, और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है। (284)

रसूल ने मान लिया जो कुछ उस की तरफ़ उतरा उस के रब की तरफ़ से और मोमिनो ने (भी), सब ईमान लाए अल्लाह पर और उस के फ़रिश्तों पर और उस की किताबों पर और उस के रसूलों पर, हम उस के रसूलों में से किसी एक के दरमियान फ़र्क नहीं करते, और उन्होंने ने कहा हम ने सुना और हम ने इताअत की, तेरी बख़्शिश चाहिए ऐ हमारे रब! और तेरी तरफ़ लौट कर जाना है। (285)

अल्लाह किसी को तकलीफ़ नहीं देता मगर उस की गुनजाइश (के मुताबिक), उस के लिए (अज़र) है जो उस ने कमाया और उस पर (अज़ाब) है जो उस ने कमाया, ऐ हमारे रब! हमें न पकड़ अगर हम भूल जाएं या हम चूकें, ऐ हमारे रब! हम पर बोझ न डाल जैसे तू ने डाला हम से पहले लोगों पर, ऐ हमारे रब! हम से न उठवा जिस की हम को ताक़त नहीं, और दरगुज़र फ़रमा हम से, और हमें बख़्श दे, और हम पर रहम कर, तू हमारा आका है, पस हमारी मदद कर काफ़िरो की कौम पर। (286)

وَإِنْ كُنْتُمْ عَلَىٰ سَفَرٍ وَلَمْ تَجِدُوا كَاتِبًا فَرِهْنِ مَّقْبُوضَةً										
क़ब्ज़े में	तो गिरवी रखना	कोई लिखने वाला	तुम पाओ	और न	सफ़र	पर	तुम हो	और अगर		
فَإِنْ أَمِنَ بَعْضُكُم بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي أُؤْتِمِنَ أَمَانَتَهُ وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ وَمَنْ يَكْتُمْهَا فَإِنَّهُ إِثْمٌ قَلْبُهُ										
और अल्लाह से डरे	उस की अमानत	अमीन बनाया गया	जो शख्स	तो चाहिए कि लौटा दे	किसी का	तुम्हारा कोई	एतिबार करे	फिर अगर		
उस का दिल	गुनाहगार	तो बेशक	उसे छुपाएगा	और जो	गवाही	और तुम न छुपाओ	अपना रब			
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٢٨٣﴾ اللَّهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ										
ज़मीन में	और जो	आस्मानों	में	जो	अल्लाह के लिए	283	जानने वाला	तुम करते हो	उसे जो	और अल्लाह
وَإِنْ تُبَدُّوا مَا فِي أَنْفُسِكُمْ أَوْ تُخْفَوُهَا يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللَّهُ										
अल्लाह	उस का	तुम्हारा हिसाब लेगा	तुम उसे छुपाओ	या	तुम्हारे दिल	में	जो	तुम जाहिर करो	और अगर	
पर	और अल्लाह	वह चाहे	जिस को	वह अज़ाब देगा	वह चाहे	जिस को	फिर बख़्श देगा			
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٨٤﴾ آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ										
उस का रब	से	उस की तरफ़	उतरा	जो कुछ	रसूल	मान लिया	284	कुदरत रखने वाला	हर चीज़	
وَالْمُؤْمِنُونَ كُلٌّ آمَنَ بِاللَّهِ وَمَلَكَاتِهِ وَكُتِبَ لَهُ										
और उस के रसूल	और उस की किताबें	और उस के फ़रिश्ते	अल्लाह पर	ईमान लाए	सब	और मोमिन (जमा)				
لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهِ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا										
और हम ने इताअत की	हम ने सुना	और उन्होंने ने कहा	उस के रसूल के	किसी एक	दरमियान	नहीं हम फ़र्क करते				
غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ﴿٢٨٥﴾ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا										
मगर	किसी पर	नहीं जिम्मदारी का बोझ डालता अल्लाह	285	लौट कर जाना	और तेरी तरफ़	हमारे रब	तेरी बख़्शिश			
وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا										
ऐ हमारे रब	जो उस ने कमाया	और उस पर	उस ने कमाया	जो	उस के लिए	उस की गुनजाइश				
لَا تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا										
हम पर	डाल	और न	ऐ हमारे रब	हम चूकें	या	हम भूल जाएं	अगर	तो न पकड़ हमें		
إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا										
हम से उठवा	और न	ऐ हमारे रब	हम से पहले	जो लोग	पर	तू ने डाला	जैसे	बोझ		
مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ وَاعْفُ عَنَّا وَاعْفِرْ لَنَا										
और बख़्श दे हमें	और दरगुज़र कर तू हम से	उस की	हम को	न ताक़त	जो					
وَارْحَمْنَا أَنْتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْكُفْرِينَ ﴿٢٨٦﴾										
286	काफ़िर (जमा)	कौम	पर	पस मदद कर हमारी	हमारा आका	तू	और हम पर रहम कर			

آيَاتُهَا ٢٠٠ ❁ سُورَةُ اِلِ عِمْرَانَ ❁ رُكُوعَاتُهَا ٢٠										
रुकुआत 20		(3) सूरह आले इमरान (इमरान का घराना)			आयात 200					
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝										
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है										
اَلَمْ ۙ (1) اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ (2) نَزَلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبُ										
किताब	आप (स) पर	उस ने उतारी	2	संभालने वाला	हमेशा ज़िन्दा	उस के सिवा	नहीं माबूद	अल्लाह 1	अलिफ-लाम-मीम	
بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَنْزَلَ التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ (3)										
3	और इन्जील	तौरत	और उस ने उतारी	उस से पहली	उस के लिए जो	तसदीक करती	हक के साथ			
مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَأَنْزَلَ الْفُرْقَانَ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا										
इन्कार किया	जिन्होंने ने	वेशक	फुरकान	और उतारा	लोगों के लिए	हिदायत	उस से पहले			
بَايَتِ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَاللّٰهُ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ (4)										
4	वदला लेने वाला	ज़बरदस्त	और अल्लाह	सख्त	अज़ाब	उन के लिए	अल्लाह की आयतों से			
إِنَّ اللّٰهَ لَا يَخْفَىٰ عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ (5)										
5	आस्मान में	और न	ज़मीन में	कोई चीज़	उस पर	नहीं छुपी हुई	वेशक अल्लाह			
هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ لَا إِلٰهَ										
नहीं माबूद	वह चाहे	जैसे	रहम (जमा)	में	सूरत बनाता है तुम्हारी	जो कि	वही है			
إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ (6) هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ										
उस से (में)	किताब	आप पर	नाज़िल की	जिस	वही	6	हिक्मत वाला	ज़बरदस्त	उस के सिवा	
آيَاتٍ مُّحْكَمَاتٍ هُنَّ أُمُّ الْكِتٰبِ وَأُخْرٍ مُّتَشٰبِهَاتٍ فَأَمَّا الَّذِينَ										
जो लोग	पस जो	मुताशाबेह	और दूसरी	किताब की असल	वह	मुहक्कम (पुख्ता)	आयतें			
فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ										
चाहना (गर्ज़)	उस से	मुताशाबिहात	सो वह पैरवी करते हैं	कजी	उन के दिल	में				
الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ إِلَّا اللّٰهُ										
सिवाए अल्लाह	उस का मतलब	जानता है	और नहीं	उस का मतलब	ढूंडना	फ़साद-गुमराही				
وَالرُّسُخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ آمَنَّا بِهِ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا										
हमारा रब	से-पास (तरफ़)	सब	उस पर	हम ईमान लाए	कहते हैं	इल्म में	और मज़बूत			
وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ (7) رَبَّنَا لَا تَجْعَلْ قُلُوبَنَا بَعْدَ										
वाद	हमारे दिल	फेर	न	ऐ हमारे रब	7	अक़ल वाले	मगर	समझते	और नहीं	
إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ (8)										
8	सब से बड़ा देने वाला	तू	वेशक तू	रहमत	अपने पास	से	हमें	और इनायत फ़रमा	तू ने हमें हिदायत दी	जब

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

अलिफ-लाम-मीम (1)

अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, हमेशा ज़िन्दा, (सब का) संभालने वाला। (2)

उस ने आप (स) पर किताब उतारी हक के साथ जो उस से पहली (किताबों) की तसदीक करती है, और उस ने तौरत और इन्जील उतारी (3)

उस से पहले लोगों की हिदायत के लिए, और उस ने फुरकान (हक को बातिल से जुदा करने वाला) उतारा, वेशक जिन्होंने ने अल्लाह की आयतों से इन्कार किया उन के लिए सख्त अज़ाब है, और अल्लाह ज़बरदस्त है, वदला लेने वाला। (4)

वेशक अल्लाह पर छुपी हुई नहीं कोई चीज़ ज़मीन में और न आस्मान में, (5)

वही तो है जो तुम्हारी सूरत बनाता है (माँ के) रहम में जैसे वह चाहे, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, ज़बरदस्त हिक्मत वाला। (6)

वही तो है जिस ने आप (स) पर किताब नाज़िल की, उस में मुहक्कम (पुख्ता) आयतें हैं वह किताब की असल हैं, और दूसरी मुताशाबेह (कई मज़ने देने वाली), पस जिन लोगों के दिलों में कजी है सो वह उस से मुताशाबिहात की पैरवी करते हैं, फ़साद (गुमराही) की गर्ज़ से और उस का (ग़लत) मतलब ढूंडने की गर्ज़ से, और उस का मतलब अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता, और मज़बूत (पुख्ता) इल्म वाले कहते हैं हम उस पर ईमान लाए सब हमारे रब की तरफ़ से है। और नहीं समझते मगर अक़ल वाले (सिर्फ़ अक़ल वाले समझते हैं) (7)

ऐ हमारे रब! हमारे दिल न फेर इस के बाद जब कि तू ने हमें हिदायत दी और हमें इनायत फ़रमा अपने पास से रहमत, वेशक तू सब से बड़ा देने वाला है। (8)

ऐ हमारे रब! वेशक तू लोगों को उस दिन जमा करने वाला है कोई शक नहीं जिस में, वेशक अल्लाह वादे के खिलाफ नहीं करता। (9)

वेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया, हरगिज़ न उन के माल उन के काम आएंगे और न उन की औलाद अल्लाह के सामने कुछ भी, और वही वह दोज़ख़ का ईधन है। (10)

जैसे फिरऔन वालों का मामला हुआ और वह जो उन से पहले थे, उन्होंने ने हमारी आयतों को झुटलाया तो अल्लाह ने उन्हें उन के गुनाहों पर पकड़ा, और अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है। (11)

जिन लोगों ने कुफ़ किया उन्हें कह दें तुम अनक़रीब मग़लूब होगे और जहन्नम की तरफ़ हाँके जाओगे, और वह बुरा ठिकाना है। (12)

अलबत्ता तुम्हारे लिए उन दो गिरोहों में निशानी है जो वाहम मुक़ाबिल हुए, एक गिरोह लड़ता था अल्लाह की राह में और दूसरा काफ़िर था, वह उन्हें खुली आँखों से अपने से दो चन्द दिखाई देते थे, और अल्लाह अपनी मदद से जिसे चाहता है ताईद करता है, वेशक उस में देखने वालों (अक्लमन्दों) के लिए एक इव्रत है। (13)

लोगों के लिए मरगूब चीज़ों की सुहव्वत खुशनुमा कर दी गई, मसलन औरतें और बेटे, और ढेर जमा किए हुए सोने और चाँदी के, और निशान ज़दा घोड़े, और मवेशी, और खेती, यह दुनिया की ज़िन्दगी का साज़ ओ सामान है, और अल्लाह के पास अच्छा ठिकाना है। (14)

कह दें, क्या मैं तुम्हें इस से बेहतर बताऊँ? उन लोगों के लिए जो परहेज़गार हैं, उन के रब के पास वागात हैं जिन के नीचे नहरें जारी (रवाँ) हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, और पाक बीबियाँ और अल्लाह की खुशनुमी, और अल्लाह बन्दों को देखने वाला है। (15)

رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ

नहीं ख़िलाफ़ करता	वेशक अल्लाह	उस में	नहीं शक	उस दिन	लोगों	जमा करने वाला	वेशक तू	ऐ हमारे रब
-------------------	-------------	--------	---------	--------	-------	---------------	---------	------------

الْمِعَادَ (9) إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ

उन के माल	उन के	काम आएंगे	हरगिज़ न	उन्होंने ने कुफ़ किया	वह लोग जो	वेशक	9	वादा
-----------	-------	-----------	----------	-----------------------	-----------	------	---	------

وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَأُولَئِكَ هُمْ وَقُودُ النَّارِ (10)

10	आग (दोज़ख़)	ईधन	वह	और वही	कुछ	अल्लाह से	उन की औलाद	और न
----	-------------	-----	----	--------	-----	-----------	------------	------

كَذَابٍ آلِ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَآخَذَهُمْ

सो उन्हें पकड़ा	हमारी आयतें	उन्होंने ने झुटलाया	उन से पहले	और वह जो कि	फिरऔन वाले	जैसे-मामला
-----------------	-------------	---------------------	------------	-------------	------------	------------

اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ (11) قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا

उन्होंने ने कुफ़ किया	वह जो कि	कह दें	11	अज़ाब	सख़्त	और अल्लाह	उन के गुनाहों पर	अल्लाह
-----------------------	----------	--------	----	-------	-------	-----------	------------------	--------

سَتْعَلْبُونَ وَتُحْشَرُونَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ وَبِئْسَ الْمِهَادُ (12) قَدْ كَانَ

है	अलबत्ता	12	ठिकाना	और बुरा	जहन्नम	तरफ़	और तुम हाँके जाओगे	अनक़रीब तुम मग़लूब होगे
----	---------	----	--------	---------	--------	------	--------------------	-------------------------

لَكُمْ آيَةٌ فِي فِتْنَتِي الثَّقَاتِ فَنَّهُ تَقَاتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأُخْرَىٰ

और दूसरा	अल्लाह की राह	में	लड़ता था	एक गिरोह	वह वाहम मुक़ाबिल हुए	दो गिरोह	में	एक निशानी	तुम्हारे लिए
----------	---------------	-----	----------	----------	----------------------	----------	-----	-----------	--------------

كَافِرَةٌ يَرَوْنَهُمْ مِثْلِهِمْ رَأَىٰ الْعَيْنِ وَاللَّهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهِ

अपनी मदद	ताईद करता है	और अल्लाह	खुली आँखें	उन के दो चन्द	वह उन्हें दिखाई देते	काफ़िर
----------	--------------	-----------	------------	---------------	----------------------	--------

مَنْ يَشَاءُ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ (13)

13	देखने वालों के लिए	एक इव्रत	उस	में	वेशक	वह चाहता है	जिसे
----	--------------------	----------	----	-----	------	-------------	------

زَيْنَ لِلنَّاسِ حُبِّ الشَّهَوَاتِ مِنَ النِّسَاءِ وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرِ

और ढेर	और बेटे	औरतें	से (मसलन)	मरगूब चीज़ें	सुहव्वत	लोगों के लिए	खुशनुमा कर दी गई
--------	---------	-------	-----------	--------------	---------	--------------	------------------

الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْأَنْعَامِ

और मवेशी	निशान ज़दा	और घोड़े	और चाँदी	सोना	से	जमा किए हुए
----------	------------	----------	----------	------	----	-------------

وَالْحَرْثِ ذَٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَاللَّهُ عِنْدَهُ

उस के पास	और अल्लाह	दुनिया	ज़िन्दगी	साज़ ओ सामान	यह	और खेती
-----------	-----------	--------	----------	--------------	----	---------

حُسْنُ الْمَا (14) قُلْ أُوْنِبْتُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذَٰلِكُمْ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا

परहेज़गार हैं	उन लोगों के लिए जो	उस	से	बेहतर	क्या मैं तुम्हें बताऊँ	कह दें	14	ठिकाना	अच्छा
---------------	--------------------	----	----	-------	------------------------	--------	----	--------	-------

عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَأَزْوَاجٌ

और बीबियाँ	उस में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	से	जारी हैं	बागात	उन का रब	पास
------------	--------	--------------	-------	------------	----	----------	-------	----------	-----

مُطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ (15)

15	बन्दों को	देखने वाला	और अल्लाह	अल्लाह	से	और खुशनुमी	पाक
----	-----------	------------	-----------	--------	----	------------	-----

الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا إِنَّنا اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَقِنَا						
और हमें वचा	हमारे गुनाह	सो बख़्शदे हमें	ईमान लाए	वेशक हम	ऐ हमारे रब	कहते हैं जो लोग
عَذَابِ النَّارِ ﴿١٦﴾ الصّٰرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِئِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ						
और खर्च करने वाले	और हुक्म बजा लाने वाले	और सच्चे	सब्र करने वाले	16	दोज़ख़	अज़ाब
وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحٰرِ ﴿١٧﴾ شَهِدَ اللهُ اَنَّهُ لَا اِلهَ						
नहीं मावूद	कि वह	अल्लाह ने गवाही दी	17	रात के आख़िर हिस्से में	और बख़्शिश मांगने वाले	
اِلَّا هُوَ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُوْلُو الْعِلْمِ قٰٓئِمًا بِالْقِسْطِ						
इन्साफ़ के साथ	काईम (हाकिम)	और इल्म वाले	और फरिश्ते	सिवाए-उस		
لَا اِلهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾ اِنَّ الدِّيْنَ						
दीन	वेशक	18	हिकमत वाला	ज़बरदस्त	सिवाए उस	नहीं मावूद
عِنْدَ اللهِ الْاِسْلَامُ ۗ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا						
मगर	किताब दी गई	वह जिन्हें	इख़्तिलाफ़ किया	और नहीं	इस्लाम	अल्लाह के नज़दीक
مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَعِيًّا بَيْنَهُمْ ۗ وَمَنْ يَكْفُرْ						
इन्कार करे	और जो	आपस में	ज़िद	इल्म	जब आ गया उन के पास	वाद से
بِآيٰتِ اللهِ فَاِنَّ اللهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٩﴾ فَاِنْ حَآجُّوْكَ فَقُلْ						
तो कह दें	वह आप (स) से झगड़ें	फिर अगर	19	हिसाब	तेज़	तो वेशक अल्लाह
اَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلّٰهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ وَقُلْ لِلَّذِيْنَ						
वह जो कि	और कह दें	मेरी पैरवी की	और जो-जिस	अल्लाह के लिए	अपना मुँह	मैं ने झुका दिया
اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْاَمِّيْنَ ؕ اَسْلَمْتُمْ ۗ فَاِنْ اَسْلَمْتُمْ اَفَقَدْ اِهْتَدَوْا ۗ						
तो उन्होंने ने राह पा ली	वह इस्लाम लाए	पस अगर	क्या तुम इस्लाम लाए	और अनपढ़	किताब दिए गए (अहले किताब)	
وَ اِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَآ عَلَيْكَ الْبَلٰغُ ۗ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠﴾						
20	बन्दों को	देखने वाला	और अल्लाह	पहुँचा देना	आप पर	तो सिर्फ़
اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِآيٰتِ اللهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيْنَ						
नवियों को	और क़त्ल करते हैं	अल्लाह की आयात का	इन्कार करते हैं	वह जो	वेशक	
بِغَيْرِ حَقٍّ وَيَقْتُلُوْنَ الَّذِيْنَ يٰمُرُوْنَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ ۗ						
लोगों से	इन्साफ़ का	हुक्म करते हैं	जो लोग	और क़त्ल करते हैं	नाहक	
فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابِ الْاِيْمِ ﴿٢١﴾ اُوْلٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَبِطَتْ						
जाया हो गए	वह जो कि	यही	21	दर्दनाक	अज़ाब	सो उन्हें खुशख़बरी दें
اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۗ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٢﴾						
22	मददगार	कोई	उन का	और नहीं	और आख़िरत	दुनिया में उन के अमल

जो लोग कहते हैं ऐ हमारे रब! वेशक हम ईमान लाए, सो हमें हमारे गुनाह बख़्शदे और हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा। (16)

सब्र करने वाले और सच्चे, हुक्म बजा लाने वाले, खर्च करने वाले और बख़्शिश मांगने वाले रात के आख़िर हिस्से में। (17)

अल्लाह ने गवाही दी कि उस के सिवा कोई मावूद नहीं, और फरिश्तों और इल्म वालों ने (भी), (वही) हाकिम है इन्साफ़ के साथ, उस के सिवा कोई मावूद नहीं, ज़बरदस्त हिकमत वाला। (18)

वेशक दीन अल्लाह के नज़दीक इस्लाम है, और जिन्हें किताब दी गई (अहले किताब) ने इख़्तिलाफ़ नहीं किया मगर उस के बाद जब कि उन के पास आ गया इल्म, आपस की ज़िद से, और जो अल्लाह की आयात (हुक़्मों) का इन्कार करे तो वेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (19)

फिर अगर वह आप (स) से झगड़ें तो कह दें मैं ने अपना मुँह अल्लाह के लिए झुका दिया और जिस ने मेरी पैरवी की, और आप (स) अहले किताब और अनपढ़ों से कह दें क्या तुम इस्लाम लाए? पस अगर वह इस्लाम ले आए तो उन्होंने ने राह पा ली, और अगर वह मुँह फेर लें तो आप पर सिर्फ़ पहुँचा देना है, और अल्लाह देखने वाला है (अपने) बन्दों को। (20)

वेशक जो लोग अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं और नवियों को क़त्ल करते हैं नाहक, और उन्हें क़त्ल करते हैं जो लोग इन्साफ़ का हुक्म करते हैं, सो उन्हें दर्दनाक अज़ाब की खुशख़बरी दें। (21)

यही वह लोग हैं जिन के अमल ज़ाया हो गए दुनिया में और आख़िरत में, और उन का कोई मददगार नहीं। (22)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें दिया गया किताब का एक हिस्सा, वह अल्लाह की किताब की तरफ बुलाए जाते हैं ता कि वह उन के दरमियान फ़ैसला करे, फिर उन का एक फ़रीक़ फिर जाता है, और वह मुँह फेरने वाले हैं। (23)

यह इस लिए है कि वह कहते हैं हमें (दोज़ख़) की आग़ हरगिज़ न छुएगी मगर गिनती के चन्द दिन, और उन्हें उन के दीन (के बारे) में धोके में डाल दिया उस ने जो वह घड़ते थे। (24)

सो क्या (हाल होगा) जब हम उन्हें उस दिन जमा करेंगे जिस में कोई शक़ नहीं, और हर शख़्स पूरा पूरा पाएगा जो उस ने कमाया और उन की हक़ तलफ़ी न होगी। (25)

आप कहें ऐ अल्लाह! मालिके मुल्क तू जिसे चाहे मुल्क दे, तू मुल्क छीन ले जिस से तू चाहे, और तू जिसे चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़लील कर दे, तेरे हाथ में तमाम भलाई है, बेशक़ तू हर चीज़ पर कादिर है। (26)

तू रात को दिन में दाख़िल करता है और दाख़िल करता है दिन को रात में, और तू बेजान से जानदार निकालता है और जानदार से बेजान निकालता है, और जिसे चाहे बेहिसाब रिज़्क़ देता है। (27)

मोमिन न बनाएं मोमिनों को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त, और जो ऐसा करे तो उस का अल्लाह से कोई तअल्लुक़ नहीं सिवाए इस के कि तुम उन से बचाव करो, और अल्लाह तुम्हें डराता है अपनी ज़ात से, और अल्लाह की तरफ़ लौट कर जाना है। (28)

कह दें जो कुछ तुम्हारे दिलों में है अगर तुम छुपाओ या उसे ज़ाहिर करो अल्लाह उसे जानता है, और वह जानता है जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है, और अल्लाह हर चीज़ पर कादिर है। (29)

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يُدْعَوْنَ إِلَىٰ									
तरफ़	बुलाए जाते हैं	किताब	से	एक हिस्सा	दिया गया	वह लोग जो	तरफ़ (को)	क्या नहीं देखा	
كِتَابِ اللَّهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ فَرِيقًا مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُونَ ﴿٢٣﴾									
23	मुँह फेरने वाले	और वह	उन से	एक फ़रीक़	फिर जाता है	फिर	उन के दरमियान	ता कि वह फ़ैसला करे	अल्लाह की किताब
ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَن تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ									
गिनती के	चन्द दिन	मगर	आग	हमें हरगिज़ न छुएगी	कहते हैं	इस लिए कि वह	यह		
وَعَرَّهْمُ فِي دِينِهِمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢٤﴾ فَكَيْفَ إِذَا جَمَعْنَاهُمْ لِيَوْمٍ									
उस दिन	उन्हें हम जमा करेंगे	जब	सो क्या	24	वह घड़ते थे	जो	उन का दीन	में	और उन्हें धोके में डाल दिया
لَا رَيْبَ فِيهِ ۗ وَوَفَّيْتُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٥﴾									
25	हक़ तलफ़ी न होगी	और वह	उस ने कमाया	जो	शख़्स	हर	और पूरा पाएगा	उस में	शक़ नहीं
قُلِ اللَّهُمَّ مَلِكُ الْمَلِكِ تُؤْتِي الْمَلِكَ مَن تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمَلِكَ									
मुल्क	और छीन ले	तू चाहे	जिसे	मुल्क	तू दे	मुल्क	मालिक	ऐ अल्लाह	आप कहें
مِمَّن تَشَاءُ ۗ وَتُعَزُّ مَن تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَن تَشَاءُ ۗ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۗ									
तमाम भलाई	तेरे हाथ में	तू चाहे	जिसे	और ज़लील कर दे	तू चाहे	जिसे	और इज़्ज़त दे	तू चाहे	जिस से
إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٦﴾ تُوَلِّجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُوَلِّجُ النَّهَارَ									
दिन	और दाख़िल करता है तू	दिन में	रात	तू दाख़िल करता है	26	कादिर	चीज़	हर	पर
فِي اللَّيْلِ ۗ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ۗ									
जानदार	से	बेजान	और तू निकालता है	बेजान	से	जानदार	और तू निकालता है	रात में	
وَتَرْزُقُ مَن تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢٧﴾ لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُونَ									
मोमिन (जमा)	न बनाएं	27	बे हिसाब	तू चाहे	जिसे	और तू रिज़्क़ देता है			
الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ ۚ مِن دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۗ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ									
ऐसा	करे	और जो	मोमिन (जमा)	अलावा (छोड़ कर)	दोस्त (जमा)	काफ़िर (जमा)			
فَلَيْسَ مِنَ اللَّهِ فِي شَيْءٍ إِلَّا أَن تَتَّقُوا مِنْهُمْ تُقَاةً ۗ									
बचाव	उन से	बचाव करो	कि	सिवाए	कोई तअल्लुक़	अल्लाह	से	तो नहीं	
وَيُحَذِّرُكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ ۗ وَاللَّهُ الْمَصِيرُ ﴿٢٨﴾ قُلْ إِنْ									
अगर तुम	कह दें	28	लौट जाना	और अल्लाह की तरफ़	अपनी ज़ात	और अल्लाह डराता है तुम्हें			
تُخَفُّوا مَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ تُبْدُوهُ يُعَلِّمَهُ اللَّهُ ۗ وَيَعْلَمُ مَا									
जो	और वह जानता है	अल्लाह उसे जानता है	तुम ज़ाहिर करो	या	तुम्हारे सीने (दिल)	में	जो	छुपाओ	
فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٩﴾									
29	कादिर	चीज़	हर	पर	और अल्लाह	ज़मीन में	और जो	आस्मानों	में



يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مِمَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُحْضَرًا وَمِمَّا عَمِلَتْ مِنْ											
से- कोई	उस ने की	और जो	मौजूद	नेकी	से (कोई)	उस ने की	जो	शख्स	हर	पाएगा	दिन
سُوَّءٍ تَوَدُّ لَوْ أَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهُ أَمَدًا بَعِيدًا وَيُحَذِّرُكُمُ اللَّهُ											
और अल्लाह तुम्हें डराता है			दूर	फासला	और उस के दरमियान		उस के दरमियान	काश कि	आरजू करेगा	बुराई	
نَفْسَهُ وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ (30) قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي											
तो मेरी पैरवी करो	अल्लाह	सुहब्वत रखते	अगर तुम हो	आप कह दें	30	बन्दों पर	शफ़क़त करने वाला	और अल्लाह	अपनी ज़ात		
يُحِبِّكُمْ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ (31)											
31	रहम करने वाला	बख़शने वाला	और अल्लाह	गुनाह तुम्हारे	और तुम्हें बख़शदेगा	तुम से सुहब्वत करेगा अल्लाह					
قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِينَ (32)											
32	काफ़िर (जमा)	नहीं दोस्त रखता	तो बेशक अल्लाह	वह फिर जाएँ	फिर अगर	और रसूल	अल्लाह	तुम इताअत करो	आप कह दें		
إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ آدَمَ وَنُوحًا وَآلَ إِبْرٰهِيْمَ وَآلَ عِمْرٰنَ											
और इमरान का घराना		और इब्राहीम (अ) का घराना			और नूह (अ)	आदम (अ)	चुन लिया	बेशक अल्लाह			
عَلَى الْعٰلَمِينَ (33) ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ (34)											
34	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	दूसरे	से	वह एक	औलाद	33	सारे जहान	पर	
إِذْ قَالَتِ امْرَأَتُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَدَرْتُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي											
मेरे पेट में	जो	तेरे लिए	मैं ने नज़र किया	बेशक मैं	ऐ मेरे रब	इमरान की वीवी		कहा	जब		
مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّي إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ (35) فَلَمَّا وَضَعَتْهَا											
उस ने उस को जन्म दिया	सो जब	35	जानने वाला	सुनने वाला	तू	बेशक तू	मुझ से	सो तू कुबूल कर ले	आज़ाद किया हुआ		
قَالَتْ رَبِّ إِنِّي وَضَعْتُهَا أُنْثَىٰ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعْتَ											
उस ने जना	जो	खूब जानता है	और अल्लाह	लड़की	जन्म दी	मैं ने	ऐ मेरे रब	उस ने कहा			
وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْأُنْثَىٰ وَإِنِّي سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَإِنِّي أُعِيذُهَا											
पनाह में देती हूँ उस को	और मैं	मरयम	उस का नाम रखा	और मैं	मानिंद लड़की	लड़का	और नहीं				
بِكَ وَذُرِّيَّاتِهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ (36) فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ											
कुबूल	उस का रब	तो कुबूल किया उस को	36	मरदूद	शैतान	से	और उस की औलाद	तेरी			
حَسَنٍ وَأَنْبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا											
उस के पास	दाख़िल होता	जिस वक़्त भी	ज़करिया (अ)	और सुपुर्द किया उस को	अच्छा	बढ़ाना	और परवान चढ़ाया उस को	अच्छा			
زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا قَالَ يَمْرِئُ أَيْ لَكَ هَذَا											
यह	तेरे लिए	कहाँ	ऐ मरयम	उस ने कहा	खाना	उस के पास	पाया	मेहराब (हुज़रा)	ज़करिया (अ)		
قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ (37)											
37	बे हिसाब	चाहे	जिसे	रिज़क देता है	बेशक अल्लाह	पास अल्लाह	से	यह	उस ने कहा		

जिस दिन हर शख्स (मौजूद) पाएगा जो उस ने की कोई नेकी, और जो उस ने कोई बुराई की। वह आरजू करेगा काश उस के दरमियान और उस (बुराई) के दरमियान दूर का फासला होता, और अल्लाह तुम्हें अपनी ज़ात से डराता है, और अल्लाह शफ़क़त करने वाला है बन्दों पर। (30)

आप कह दें अगर तुम अल्लाह से सुहब्वत रखते हो तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह तुम से सुहब्वत करेगा और तुम्हारे गुनाह बख़शदेगा, और अल्लाह बख़शने वाला रहम करने वाला है। (31)

आप कह दें तुम इताअत करो अल्लाह की और रसूल की, फिर अगर वह फिर जाएँ तो बेशक अल्लाह काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता। (32)

बेशक अल्लाह ने चुन लिया आदम (अ) और नूह (अ) को और इब्राहीम (अ) ओ इमरान के घराने को सारे जहान पर। (33)

वह औलाद थे एक दूसरे की, और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (34)

जब इमरान की वीवी ने कहा ऐ मेरे रब! जो मेरे पेट में है, मैं ने तेरी नज़र किया (सब से) आज़ाद रख कर, सो तू मुझ से कुबूल कर ले, बेशक तू सुनने वाला, जानने वाला है। (35)

सो जब उस ने उस (मरयम) को जन्म दिया तो वह बोली ऐ मेरे रब! मैं ने जन्म दी है लड़की, और अल्लाह खूब जानता है जो उस ने जन्म दिया, और लड़का लड़की के मानिंद नहीं होता और मैं ने उस का नाम मरयम रखा, और मैं उस को और उस की औलाद को तेरी पनाह में देती हूँ शैतान मरदूद से। (36)

तो उस को उस के रब ने अच्छी तरह कुबूल किया और उस को अच्छी तरह परवान चढ़ाया और ज़करिया (अ) को उस का कफ़ील बनाया। जब भी ज़करिया (अ) उस के पास हुज़रे में दाख़िल होते उस के पास खाना पाते,

उस (ज़करिया (अ) ने कहा ऐ मरयम! यह तेरे पास कहां से आया? उस ने कहा यह अल्लाह के पास से है, बेशक अल्लाह जिसे चाहे बेहिसाब रिज़क देता है। (37)

वहीं ज़करिया (अ) ने अपने रब से दुआ की। ऐ मेरे रब! मुझे अपने पास से पाक औलाद अता कर, तू वेशक दुआ सुनने वाला है। (38)

तो उन्हें आवाज़ दी फ़रिश्तों ने जब वह हज़रे में खड़े हुए नमाज़ पढ़ रहे थे कि अल्लाह तुम्हें यहया (अ) की खुशखबरी देता है अल्लाह के कलिमे की तस्दीक करने वाला, सरदार, और नफ़्स को काबू रखने वाला, और नबी (होगा) नेकोकारों में से। (39)

उस ने कहा ऐ मेरे रब! मेरे लड़का कहां से होगा? जब कि मुझे बुढ़ापा पहुँच चुका है, और मेरी औरत बांझ है, उस ने कहा इसी तरह अल्लाह जो चाहता है करता है। (40)

उस ने कहा ऐ मेरे रब! मुक़र्रर फ़रमा दे मेरे लिए कोई निशानी? उस ने कहा तेरी निशानी यह है कि तू लोगों से तीन दिन बात न करेगा मगर इशारे से, तू अपने रब को बहुत याद कर, और सुबह ओ शाम तस्वीह कर। (41)

और जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरयम! वेशक अल्लाह ने तुझ को चुन लिया और तुझ को पाक किया और तुझ को बरगुज़ीदा किया औरतों पर तमाम जहान की। (42)

ऐ मरयम! तू अपने रब की फ़रमावरदारी कर और सिज्दा कर और रुकूअ कर रुकूअ करने वालों के साथ। (43)

यह ग़ैब की ख़बरें हैं, हम आप की तरफ़ वहि करते हैं, और आप उन के पास न थे जब वह (कुरआ के लिए) अपने कलम डाल रहे थे कि उन में से कौन मरयम की पर्वरिश करेगा? और आप (स) उन के पास न थे जब वह झगड़ते थे। (44)

जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरयम! वेशक अल्लाह तुझे अपने एक कलमे की वशारत देता है, उस का नाम मसीह (अ) ईसा (अ) इब्ने मरयम है, दुनिया और आखिरत में वाआबरू, और मुक़र्रिबों से होगा, (45)

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً									
औलाद	अपने पास	से	अता कर मुझे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	अपना रब	ज़करिया	दुआ की	वहीं
طَيْبَةً إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ﴿٣٨﴾ فَنَادَتْهُ الْمَلِكَةُ وَهُوَ قَائِمٌ									
खड़े हुए	और वह	फ़रिश्ते	तो आवाज़ दी उस को	38	दुआ	सुनने वाला	वेशक तू	पाक	
يُصَلِّي فِي الْمِحْرَابِ أَنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِيحْيَى مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ									
कलिमा	तस्दीक करने वाला	यहया (अ)	तुम्हें खुशखबरी देता है	कि अल्लाह	मेहराब (हुज़रा)	में	नमाज़ पढ़ते		
مِّنَ اللَّهِ وَسَيِّدًا وَحَصُورًا وَنَبِيًّا مِّنَ الصَّالِحِينَ ﴿٣٩﴾ قَالَ رَبِّ									
ऐ मेरे रब	उस ने कहा	39	नेकोकार (जमा)	से	और नबी	और नफ़्स को काबू में रखने वाला	और सरदार	अल्लाह	से
أَنِّي يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَقَدْ بَلَغَنِي الْكِبَرُ وَامْرَأَتِي عَاقِرٌ									
बांझ	और मेरी औरत	बुढ़ापा	जब कि मुझे पहुँच गया	लड़का	मेरे लिए	होगा	कहां		
قَالَ كَذَلِكَ اللَّهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ﴿٤٠﴾ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّي آيَةً									
कोई निशानी	मेरे लिए	मुक़र्रर फ़रमा दे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	40	जो वह चाहता है	करता है अल्लाह	इसी तरह	उस ने कहा
قَالَ آيَتُكَ إِلَّا تَكَلَّمَ النَّاسُ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ إِلَّا رَمَزًا وَّادْكُرُ رَبِّكَ									
अपना रब	और तू याद कर	इशारा	मगर	तीन दिन	लोग	कि न बात करेगा	तेरी निशानी	उस ने कहा	
كَثِيرًا وَسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ﴿٤١﴾ وَادُّ قَالَتِ الْمَلِكَةُ									
फ़रिश्ते	कहा	और जब	41	और सुबह	शाम	और तस्वीह कर	बहुत		
يَمْرِيْمُ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفَاكِ عَلَىٰ									
पर	और बरगुज़ीदा किया तुझ को	और पाक किया तुझ को	चुन लिया तुझ को	वेशक अल्लाह	ऐ मरयम				
نِسَاءِ الْعُلَمَيْنِ ﴿٤٢﴾ يَمْرِيْمُ أَفْنِي لِرَبِّكِ وَاسْجُدِي وَارْكَعِي									
और रुकूअ कर	और सिज्दा कर	अपने रब की	तू फ़रमावरदारी कर	ऐ मरयम	42	तमाम जहान	औरतें		
مَعَ الرُّكْعَيْنِ ﴿٤٣﴾ ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ									
तेरी तरफ़	हम यह वहि करते हैं	ग़ैब	ख़बरें	से	यह	43	रुकूअ करने वाले	साथ	
وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يُلْقُونَ أَفْلَامَهُمْ أَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرِيْمَ									
मरयम	पर्वरिश करे	कौन-उन	अपने कलम	वह डालते थे	जब	उन के पास	और तू न था		
وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ﴿٤٤﴾ إِذْ قَالَتِ الْمَلِكَةُ يَمْرِيْمُ									
ऐ मरयम	फ़रिश्ते	जब कहा	44	जब वह झगड़ते थे	उन के पास	और तू न था			
إِنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ اسْمُهُ الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرِيْمَ									
इब्ने मरयम	ईसा	मसीह (अ)	उस का नाम	अपने	एक कलिमा की	तुझे वशारत देता है	वेशक अल्लाह		
وَجِيهًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٤٥﴾									
45	मुक़र्रिब (जमा)	और से	और आखिरत	दुनिया	में	वा आबरू			

وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَمِنَ الصُّلِحِينَ ﴿٤٦﴾ قَالَتْ											
वह बोली	46	नेकोकार	और से	और पुख्ता उम्र	पालने में	लोग	और बातें करेगा				
رَبِّ أُنِّي يَكُونُ لِي وَلَدٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي بَشْرٌ قَالَ كَذَلِكَ اللَّهُ											
अल्लाह	इसी तरह	उस ने कहा	कोई मर्द	हाथ लगाया मुझे	और नहीं	बेटा	होगा मेरे हां कैसे ऐ मेरे रब				
يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٤٧﴾											
47	सो वह हो जाता है	हो जा	उस को	वह कहता है	तो	कोई काम	वह इरादा करता है	जब	जो वह चाहता है	पैदा करता है	
وَيُعَلِّمُهُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ ﴿٤٨﴾ وَرَسُولًا إِلَىٰ											
तरफ़	और एक रसूल	48	और इन्जील	और तौरत	और दानाई	और वह सिखाएगा उस को किताब					
بَنِي إِسْرَائِيلَ أَنِّي قَدْ جِئْتُكُمْ بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ أَنِّي أَخْلُقُ											
बनाता हूँ	कि मैं	तुम्हारा रब	से	एक निशानी के साथ	आया हूँ तुम्हारी तरफ़	कि मैं	बनी इस्राईल				
لَكُمْ مِّنَ الطَّيْنِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ فَنفُخُ فِيهِ فَيَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِ											
हुक्म से	परिन्दा	तो वह हो जाता है	उस में	फिर फूंक मारता हूँ	परिन्दा	मानिंद-शकल	गारा	से	तुम्हारे लिए		
اللَّهِ وَأُبْرِئُ الْأَكْمَةَ وَالْأَبْرَصَ وَأُحْيِي الْمَوْتَىٰ بِإِذْنِ اللَّهِ											
अल्लाह के हुक्म से	मुर्द	और मैं जिन्दा करता हूँ	और कोढ़ी को	मादरजाद अन्धा	और मैं अच्छा करता हूँ	अल्लाह					
وَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَأْكُلُونَ وَمَا تَدَّخِرُونَ فِي بُيُوتِكُمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ											
उस	में	वेशक	घरों अपने	में	तुम जखीरा करते हो	और जो	तुम खाते हो	जो	और तुम्हें बताता हूँ		
لَايَةً لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿٤٩﴾ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ											
अपने से पहली	जो	और तसदीक करने वाला	49	ईमान वाले	तुम हो	अगर	तुम्हारे लिए	एक निशानी			
مِّنَ التَّوْرَةِ وَلِأَحْلِ لَّكُمْ بَعْضَ الَّذِي حُرِّمَ عَلَيْكُمْ وَجِئْتُكُمْ											
और आया हूँ तुम्हारे पास	तुम पर	हराम की गई	वह जो कि	बाज़	तुम्हारे लिए	और ता कि हलाल कर हूँ	तौरत	से			
بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَإِنِّي أَنزَلْتُ											
और तुम्हारा रब	मेरा रब	वेशक अल्लाह	50	और मेरा कहा मानो	सो तुम अल्लाह से डरो	तुम्हारा रब	से	एक निशानी			
فَاعْبُدُوهُ هَذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴿٥١﴾ فَلَمَّا أَحَسَّ عَيْسَىٰ											
ईसा (अ)	महसूस किया	फिर जब	51	सीधा	रास्ता	यह	सो तुम इबादत करो उस की				
مِنْهُمْ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ											
हवारी (जमा)	कहा	अल्लाह की तरफ़	मेरी मदद करने वाला	कौन	उस ने कहा	कुफ़	उन से				
نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ آمَنَّا بِاللَّهِ وَأَشْهَدُ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ﴿٥٢﴾ رَبَّنَا آمَنَّا											
हम ईमान लाए	ऐ हमारे रब	52	फरमावरदार	कि हम	तू गवाह रह	अल्लाह पर	हम ईमान लाए	अल्लाह की मदद करने वाले	हम		
بِمَا أَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُولَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ﴿٥٣﴾											
53	गवाही देने वाले	साथ	सो तू हमें लिख ले	रसूल	और हम ने पैरवी की	तू ने नाज़िल किया	जो				

और लोगों से गहवारे में और पुख्ता उम्र में बातें करेगा और नेकोकारों में से होगा। (46)

वह बोली ऐ मेरे रब! मेरे हां बेटा कैसे होगा? और किसी मर्द ने मुझे हाथ नहीं लगाया, उस ने कहा इसी तरह अल्लाह जो चाहे पैदा करता है, जब वह किसी काम का इरादा करता है तो वह कहता है उस को "हो जा" सो वह हो जाता है। (47)

और वह उस को सिखाएगा किताब और दानाई और तौरत और इन्जील। (48)

और बनी इस्राईल की तरफ़ एक रसूल, (उस ने कहा) कि मैं तुम्हारी तरफ़ एक निशानी के साथ आया हूँ तुम्हारे रब की तरफ़ से, मैं तुम्हारे लिए गारे से परिन्दे जैसी शकल बनाता हूँ, फिर उस में फूंक मारता हूँ तो वह अल्लाह के हुक्म से परिन्दा

हो जाता है, और मैं अच्छा करता हूँ मादरजाद अन्धे और कोढ़ी को, और मैं अल्लाह के हुक्म से मुर्द जिन्दा करता हूँ, और मैं तुम्हें बताता हूँ जो तुम खाते हो और जो तुम अपने घरों में जखीरा करते हो, वेशक उस में तुम्हारे लिए एक निशानी है अगर तुम हो ईमान वाले। (49)

और मैं अपने से पहली (किताब) तौरत की तसदीक करने वाला हूँ और ता कि तुम्हारे लिए बाज़ वह चीज़ें हलाल कर दूँ जो तुम पर हराम की गई थी, और तुम्हारे पास एक निशानी के साथ आया हूँ तुम्हारे रब से, सो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो। (50)

वेशक अल्लाह (ही) मेरा और तुम्हारा रब है, सो तुम उस की इबादत करो, यह सीधा रास्ता है। (51)

फिर जब ईसा (अ) ने महसूस किया उन से कुफ़ (तो) कहा कौन है अल्लाह की तरफ़ मेरी मदद

करने वाला? हवारियों ने कहा हम अल्लाह की मदद करने वाले हैं, हम अल्लाह पर ईमान लाए, और गवाह रह कि हम फरमावरदार हैं, (52)

ऐ हमारे रब! हम उस पर ईमान लाए जो तू ने नाज़िल किया और हम ने रसूल की पैरवी की, सो तू हमें गवाही देने वालों के साथ लिख ले। (53)

और उन्होंने ने मक्कर किया और अल्लाह ने खुफिया तदबीर की, और अल्लाह (सब) तदबीर करने वालों से बेहतर है। (54)

जब अल्लाह ने कहा ऐ ईसा (अ): मैं तुझे कब्ज़ कर लूँगा और तुझे अपनी तरफ उठा लूँगा और तुझे पाक कर दूँगा उन लोगों से जिन्होंने कुफ़ किया, और जिन्होंने ने तेरी पैरवी की उन्हें ऊपर (ग़ालिब) रखूँगा उन के जिन्होंने कुफ़ किया क़ियामत के दिन तक। फिर तुम्हें मेरी तरफ लौट कर आना है, फिर मैं तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करूँगा जिस (बारे) में तुम इख़तिलाफ़ करते थे। (55)

पस जिन लोगों ने कुफ़ किया, सो उन्हें सख़्त अज़ाब दूँगा दुनिया और आख़िरत में, और उन का कोई मददगार न होगा। (56)

और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक काम किए तो (अल्लाह) उन के अजर उन्हें पूरे देगा, और अल्लाह दोस्त नहीं रखता ज़ालिमों को। (57)

हम आप (स) पर यह आयतें और हिक्मत वाली नसीहत पढ़ते हैं। (58)

वेशक अल्लाह के नज़दीक ईसा (अ) की मिसाल आदम (अ) जैसी है, उसे मिट्टी से पैदा किया, फिर कहा उस को "हो जा" तो वह हो गया। (59)

हक़ आप के रब की तरफ़ से है, पस शक़ करने वालों में से न होना। (60)

जो आप (स) से इस बारे में झगड़े उस के वाद जब कि आप के पास इल्म आगया तो आप (स) कह दें! आओ हम बुलाएं अपने बेटे और तुम्हारे बेटे, और अपनी औरतें और तुम्हारी औरतें, और हम खुद और तुम खुद (भी), फिर हम सब इलतिजा करें, फिर झूठों पर अल्लाह की लानत भेजें। (61)

वेशक यही सच्चा बयान है, और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, और वेशक अल्लाह ही ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (62)

وَمَكْرُوا وَمَكَرَ اللَّهُ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَكْرِينَ ﴿٥٤﴾ إِذْ قَالَ اللَّهُ											
अल्लाह ने कहा	जब	54	तदबीर करने वाले	बेहतर	और अल्लाह	और अल्लाह ने खुफिया तदबीर की	और उन्होंने ने मक्कर किया				
يُعَيْسِي إني مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِينَ											
वह लोग जो	से	और पाक कर दूँगा तुझे	अपनी तरफ़	और उठा लूँगा तुझे	कब्ज़ कर लूँगा तुझे	मैं	ऐ ईसा (अ)				
كَفَرُوا وَجَاعِلُ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ											
तक	कुफ़ किया	जिन्होंने ने	ऊपर	तेरी पैरवी की	वह जिन्होंने ने	और रखूँगा	उन्होंने ने कुफ़ किया				
يَوْمِ الْقِيَمَةِ ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنْتُمْ											
तुम थे	जिस में	तुम्हारे दरमियान	फिर मैं फ़ैसला करूँगा	तुम्हें लौट कर आना है	मेरी तरफ़	फिर	क़ियामत का दिन				
فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٥٥﴾ فَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَأَعَذِبُهُمْ عَذَابًا											
अज़ाब	सो उन्हें अज़ाब दूँगा	कुफ़ किया	जिन लोगों ने	पस	55	इख़तिलाफ़ करते	में				
شَدِيدًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ﴿٥٦﴾											
56	मददगार	से	उन का	और नहीं	और आख़िरत	दुनिया में	सख़्त				
وَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ											
उन के अजर	तो पूरा देगा	नेक	और उन्होंने ने काम किए	ईमान लाए	जो लोग	और जो					
وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿٥٧﴾ ذَلِكَ نَتَلُوهُ عَلَيْكَ مِنَ الْآيَاتِ											
आयतें	से	आप (स) पर	हम पढ़ते हैं	यह	57	ज़ालिम (जमा)	दोस्त नहीं रखता और अल्लाह				
وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ ﴿٥٨﴾ إِنَّ مَثَلَ عِيسَىٰ عِنْدَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ خَلَقَهُ											
उस को पैदा किया	आदम	मिसाल जैसी	अल्लाह के नज़दीक	ईसा	मिसाल	वेशक	58	हिक्मत वाली और नसीहत			
مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٥٩﴾ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا											
पस न	आप का रब	से	हक़	59	सो वह हो गया	हो जा	उस को	कहा	फिर	मिट्टी	से
تَكُنْ مِنَ الْمُؤْمِرِينَ ﴿٦٠﴾ فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ											
जब आगया	वाद	से	इस में	आप (स) से झगड़े	सो जो	60	शक़ करने वाले	से	हो		
مِنَ الْعِلْمِ فُكُلُ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا											
और अपनी औरतें	और तुम्हारे बेटे	अपने बेटे	हम बुलाएं	तुम आओ	तो कह दें	इल्म	से				
وَنِسَاءَكُمْ وَأَنْفُسَنَا وَأَنْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتِهَلْ فَنجعل لَعْنَتَ اللَّهِ											
अल्लाह की लानत	फिर करें (डालें)	हम इलतिजा करें	फिर	और तुम खुद	और हम खुद	और तुम्हारी औरतें					
عَلَى الْكٰذِبِينَ ﴿٦١﴾ إِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ وَمَا											
और नहीं	सच्चा	बयान	यही	यह	वेशक	61	झूटे	पर			
مِنْ إِلٰهِ إِلَّا اللَّهُ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦٢﴾											
62	हिक्मत वाला	ग़ालिब	वही	और वेशक अल्लाह	अल्लाह के सिवा	कोई माबूद					

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِالْمُفْسِدِينَ ﴿٦٣﴾ قُلْ						
आप कह दें	63	फ़साद करने वालों को	जानने वाला	तो बेशक अल्लाह	वह फिर जाएं	फिर अगर
يَاهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ						
कि न हम इबादत करें	और तुम्हारे दरमियान	हमारे दरमियान	बराबर	एक बात	तरफ़ (पर)	आओ
إِلَّا اللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا						
रब (जमा)	किसी को	हम में से कोई	और न बनाए	कुछ	उस के साथ	और न हम शरीक करें
مَنْ دُونِ اللَّهِ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ﴿٦٤﴾						
64	मुसल्लिम (फ़रमावरदार)	कि हम	तुम गवाह रहो	तो कह दो तुम	वह फिर जाएं	फिर अगर
يَاهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تُحَاجُّونَ فِي إِبْرَاهِيمَ وَمَا أُنزِلَتِ التَّوْرَةُ						
तौरत	नाज़िल की गई	और नहीं	इब्राहीम (अ)	में	तुम झगड़ते हो	क्यों
وَالْإِنْجِيلَ إِلَّا مِنْ بَعْدِهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٦٥﴾ هَآنْتُمْ						
हां तुम	65	तो क्या तुम अक्ल नहीं रखते	उस के बाद	मगर	और इन्ज़ील	
هَآؤُلَاءِ حَآجُّكُمْ فِيمَا لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ فَلِمَ						
अब क्यों	इल्म	उस का	तुम्हें	जिस में	तुम ने झगड़ा किया	वह लोग
تُحَاجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ						
और तुम	जानता है	और अल्लाह	कुछ इल्म	उस का	तुम्हें	नहीं
لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٦﴾ مَا كَانَ إِبْرَاهِيمَ يَهُودِيًّا وَلَا نَصْرَانِيًّا						
नसरानी	और न	यहूदी	इब्राहीम (अ)	न थे	66	जानते
وَلَكِنْ كَانَ حَنِيفًا مُسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٦٧﴾						
67	मुश्रिक (जमा)	से	थे	और न	मुसल्लिम (फ़रमावरदार)	एक रख
إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لَلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ وَهَذَا						
और इस	उन्होंने ने पैरवी की उन की	उन लोग	इब्राहीम (अ)	लोग	सब से ज़ियादा मुनासिबत	बेशक
النَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٨﴾						
68	मोमिनीन	कारसाज़	और अल्लाह	ईमान लाए	और वह लोग जो	नबी
وَدَّتْ طَائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يُضِلُّوكُمْ						
वह गुमराह कर दें तुम्हें	काश	अहले किताब	से (की)	एक जमाअत	चाहती है	
وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٦٩﴾						
69	वह समझते	और नहीं	अपने आप	मगर	और नहीं वह गुमराह करते	
يَاهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأَنْتُمْ تَشْهَدُونَ ﴿٧٠﴾						
70	गवाह हो	हालाकि तुम	अल्लाह की आयतों का	तुम इन्कार करते हो	क्यों	ऐ अहले किताब

फिर अगर वह फिर जाएं तो बेशक अल्लाह फ़साद करने वालों को खूब जानता है। (63)

आप (स) कह दें ऐ अहले किताब! उस एक बात पर आओ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान बराबर (मुशतरिक) है कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करें और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराएं और हम में से कोई किसी को न बनाए रब अल्लाह के सिवा, फिर अगर वह फिर जाएं तो तुम कह दो कि तुम गवाह रहो कि हम तो मुसल्लिम (फ़रमावरदार) हैं। (64)

ऐ अहले किताब! तुम इब्राहीम (अ) के बारे में क्यों झगड़ते हो? और नहीं नाज़िल की गई तौरत और इन्ज़ील मगर उन के बाद, तो क्या तुम अक्ल नहीं रखते? (65)

हां! तुम वही लोग हो कि तुम ने उस (बारे) में झगड़ा किया जिस का तुम्हें इल्म था तो अब क्यों झगड़ते हो उस (बारे) में जिस का तुम्हें कुछ इल्म नहीं, और अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते। (66)

इब्राहीम (अ) न यहूदी थे न नसरानी, (बल्कि) वह हनीफ़ (सब से रख मोड़ कर अल्लाह के हो जाने वाले) मुसल्लिम (फ़रमावरदार) थे, और वह मुश्रिकों में से न थे। (67)

बेशक सब लोगों से ज़ियादा मुनासिबत है इब्राहीम (अ) से उन लोगों को जिनमें ने उन की पैरवी की, और इस नबी को और वह लोग जो ईमान लाए, और अल्लाह मोमिनों का कारसाज़ है। (68)

अहले किताब की एक जमाअत चाहती है काश! वह तुम्हें गुमराह कर दें, और वह अपने सिवा किसी को गुमराह नहीं करते, और वह समझते नहीं। (69)

ऐ अहले किताब! तुम क्यों इन्कार करते हो अल्लाह की आयतों का? हालांकि तुम गवाह हो। (70)

ऐ अहले किताब! तुम क्यों मिलते हो सच को झूट के साथ और तुम हक को छुपाते हो हालांकि तुम जानते हो। (71)

और एक जमाअत ने कहा अहले किताब की कि जो कुछ मुसलमानों पर नाज़िल किया गया है, उसे दिन के अक्वल हिस्से में मान लो और मुन्किर हो जाओ उस के आखिर हिस्से में (शाम को) शायद कि वह फिर जाए। (72)

और तुम (किसी की बात) न मानो सिवाए उस के जो पैरवी करे तुम्हारे दीन की, आप (स) कह दें बेशक हिदायत अल्लाह ही की हिदायत है कि किसी को दिया गया जैसा कि तुम्हें दिया गया था, या वह तुम से तुम्हारे रब के सामने हुज्जत करें, आप (स) कह दें, बेशक फ़ज़ल अल्लाह के हाथ में है, वह देता है जिस को वह चाहता है, और अल्लाह वुसअत वाला, जानने वाला है। (73)

वह जिस को चाहता है अपनी रहमत से खास कर लेता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़ल वाला है। (74)

और अहले किताब में कोई (ऐसा है) कि अगर आप (स) उस के पास अमानत रखें ढेरों माल तो वह आप (स) को अदा करदे, और उन में से कोई (ऐसा है) अगर आप उस के पास एक दीनार अमानत रखें तो वह अदा न करे मगर जब तक आप (स) उस के सर पर खड़े रहें, यह इस लिए है कि उन्होंने ने कहा हम पर उम्मियों के (वारे) में (इल्ज़ाम की) कोई राह नहीं, और वह अल्लाह पर झूट बोलते हैं, और वह जानते हैं। (75)

क्यों नहीं? जो कोई अपना इक़रार पूरा करे और परहेज़गार रहे तो बेशक अल्लाह परहेज़गारों को दोस्त रखता है। (76)

बेशक जो लोग अल्लाह के अहद और अपनी क़स्मों से हासिल करते हैं थोड़ी कीमत, यही लोग हैं जिन के लिए आखिरत में कोई हिस्सा नहीं और न अल्लाह उन से कलाम करेगा और न उन की तरफ़ नज़र करेगा क़ियामत के दिन और न उन्हें पाक करेगा, और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (77)

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَلْبِسُونَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُونَ الْحَقَّ							
हक	और तुम छुपाते हो	झूट के साथ	सच	तुम उलझाते हो	क्यों	ऐ अहले किताब	
وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٧١﴾ وَقَالَتْ طَآئِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ آمِنُوا بِالَّذِي							
जो कुछ	तुम मान लो	अहले किताब	से (की)	एक जमाअत	और कहा	71	जानते हो
أَنْزَلَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَجْهَ النَّهَارِ وَآكْفُرُوا آخِرَهُ لَعَلَّهُمْ							
शायद	उस का आखिर (शाम)	और मुन्किर हो जाओ	दिन का अक्वल हिस्सा	जो लोग ईमान लाए (मुसलमान)	पर	नाज़िल किया गया	
يَرْجِعُونَ ﴿٧٢﴾ وَلَا تُؤْمِنُوا إِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِينَكُمْ قُلْ إِنَّ الْهُدَى							
हिदायत	बेशक	कह दें	तुम्हारा दीन	पैरवी करे	उस की जो	सिवाए	मानो तुम और न 72
هُدَى اللَّهِ أَنْ يُؤْتَى أَحَدٌ مِّثْلَ مَا أُوتِيتُمْ أَوْ يُحَاجُّوكُمْ							
वह हुज्जत करे तुम से	या	कुछ तुम्हें दिया गया	जैसा	किसी को	दिया गया	कि	अल्लाह की हिदायत
عِنْدَ رَبِّكُمْ قُلْ إِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ							
वह चाहता है	जिसे	वह देता है	अल्लाह के हाथ में	फ़ज़ल	बेशक	कह दें	तुम्हारा रब सामने
وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٧٣﴾ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ							
वह चाहता है	जिसे	अपनी रहमत से	वह खास कर लेता है	73	जानने वाला	वुसअत वाला	और अल्लाह
وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٧٤﴾ وَمِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مَنْ إِنْ تَأْمَنَهُ							
अगर अमानत रखें उस को	जो	अहले किताब	और से	74	बड़ा-बड़े	फ़ज़ल वाला	और अल्लाह
بِقِنْطَارٍ يُؤَدِّهِ إِلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَنْ إِنْ تَأْمَنَهُ بَدِينَارٍ							
एक दीनार	आप अमानत रखें उस को	अगर	और उन से जो	आप को	अदा करे	ढेर माल	
لَا يُؤَدِّهِ إِلَيْكَ إِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَائِمًا ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا							
उन्होंने ने कहा	इस लिए कि	यह	खड़े	उस पर	तक रहें	मगर जब	आप को वह अदा न करे
لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْأُمِّينَ سَبِيلٌ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ							
झूट	अल्लाह पर	और वह बोलते हैं	कोई राह	उम्मी (जमा)	में	हम पर	नहीं
وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾ بَلَىٰ مَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ وَاتَّقَىٰ فَإِنَّ اللَّهَ							
तो बेशक अल्लाह	और परहेज़गार रहे	अपना इक़रार	पूरा करे	जो	क्यों नहीं?	75	जानते हैं और वह
يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ﴿٧٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا							
कीमत	और अपनी क़स्मों से	अल्लाह का इक़रार	खरीदते (हासिल करते) हैं	जो लोग	बेशक	76	परहेज़गार (जमा) दोस्त रखता है
قَلِيلًا أُولَٰئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ وَلَا							
और न	उन से कलाम करेगा अल्लाह	और न	आखिरत में	उन के लिए	हिस्सा	नहीं	यही लोग थोड़ी
يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٧﴾							
77	दर्दनाक	अज़ाब	और उन के लिए	उन्हें पाक करेगा	और न	क़ियामत के दिन	उन की तरफ़ नज़र करेगा

وَإِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيقًا يَلُونُ أَلْسِنَتَهُم بِالْكِتَابِ لِتَحْسَبُوهُ						
ता कि तुम समझो	किताब में	अपनी ज़बानें	मरोड़ते हैं	एक फ़रीक़	उन से (उन में)	और वेशक
مِنَ الْكِتَابِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ						
से	वह	और वह कहते हैं	किताब	से	वह	और नहीं किताब से
عِنْدِ اللَّهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبُ						
झूट	अल्लाह पर	और वह बोलते हैं	अल्लाह की तरफ़	से	वह	हालांकि नहीं अल्लाह की तरफ़
وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٨﴾ مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُؤْتِيَهُ اللَّهُ الْكِتَابَ						
किताब	उसे अता करे अल्लाह	कि	किसी आदमी के लिए	नहीं	78	वह जानते हैं और वह
وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُولُ لِلنَّاسِ كُونُوا عِبَادًا لِي						
मेरे	बन्दे	तुम हो जाओ	लोगों को	वह कहे	फिर	और नुबूहत और हिक्मत
مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ كُونُوا رَبَّيْنَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُونَ الْكِتَابَ						
किताब	तुम सिखाते हो	इस लिए कि	अल्लाह वाले	तुम हो जाओ	और लेकिन	अल्लाह सिवा (बजाए)
وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُونَ ﴿٧٩﴾ وَلَا يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَتَّخِذُوا						
तुम ठहराओ	कि	हुकम देगा तुम्हें	और न	79	तुम पढ़ते हो	और इस लिए कि
الْمَلَائِكَةَ وَالنَّبِيِّنَ أَرْبَابًا أَيَأْمُرُكُمْ بِالْكَفْرِ بَعْدَ						
वाद	कुफ़ का	क्या वह तुम्हें हुकम देगा?	परवरदिगार	और नबी		फ़रिश्ते
إِذْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ﴿٨٠﴾ وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّنَ لَمَا						
जो कुछ	नबी (जमा)	अहद	अल्लाह ने लिया	और जब	80	मुसलमान तुम जब
اتَّبَعْتُمْ مِنْ كِتَابٍ وَحِكْمَةٍ ثُمَّ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مُصَدِّقٌ						
तसदीक करता हुआ	रसूल	आए तुम्हारे पास	फिर	और हिक्मत	किताब	से मैं तुम्हें दूँ
لِمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ وَلَتَنْصُرُنَّهُ قَالَ أَأَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ						
और तुम ने कुबूल किया	क्या तुम ने इक़रार किया	उस ने फ़रमाया	और तुम ज़रूर मदद करोगे उस की	उस पर	तुम ज़रूर ईमान लाओगे	तुम्हारे पास जो
عَلَىٰ ذَلِكُمْ إِصْرِي قَالُوا أَفَرَرْنَا قَالِ فَاشْهَدُوا وَأَنَا مَعَكُمْ						
तुम्हारे साथ	और मैं	पस तुम गवाह रहो	उस ने फ़रमाया	हम ने इक़रार किया	उन्होंने ने कहा	मेरा अहद इस पर
مِّنَ الشَّاهِدِينَ ﴿٨١﴾ فَمَنْ تَوَلَّىٰ بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُم						
वह	तो वही	इस	बाद	फिर जाए	फिर जो	81 गवाह (जमा) से
الْفٰسِقُونَ ﴿٨٢﴾ أَفَغَيْرَ دِينِ اللَّهِ يَبْغُونَ وَلَٰهٗ أَسْلَمَ مَنْ						
जो	फ़रमांवरदार है	और उस के लिए	वह ढूँढते हैं	अल्लाह का दीन	क्या? सिवा	82 नाफ़रमान
فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَاِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ﴿٨٣﴾						
83	वह लौटाए जाएंगे	और उस की तरफ़	और नाखुशी से	खुशी से	और ज़मीन	आस्मानों में

और वेशक उन में एक फ़रीक़ है जो किताब (पढ़ते वक़्त) अपनी ज़बानें मरोड़ते हैं, ताकि तुम समझो कि वह किताब से है, हालांकि वह किताब से नहीं (होता), और वह कहते हैं कि वह अल्लाह की तरफ़ से है, हालांकि वह नहीं अल्लाह की तरफ़ से, और अल्लाह पर झूट बोलते हैं और वह जानते हैं। (78)

किसी आदमी के लिए (यह शायान) नहीं कि अल्लाह उसे किताब और हिक्मत और नुबूहत अता करे, फिर वह लोगों को कहे कि तुम अल्लाह के बजाए मेरे बन्दे हो जाओ, लेकिन (वह यहि कहेगा कि) तुम अल्लाह वाले हो जाओ, इस लिए कि तुम किताब सिखाते हो और तुम खुद (भी) पढ़ते हो। (79)

और न वह तुम्हें हुकम देगा कि तुम फ़रिश्तों और नबियों को परवरदिगार ठहराओ, क्या वह तुम्हें हुकम देगा कुफ़ का? इस के बाद कि तुम मुसलमान (फ़रमांवरदार) हो चुके। (80)

और जब अल्लाह ने अहद लिया नबियों से कि जो कुछ मैं तुम्हें किताब और हिक्मत दूँ, फिर तुम्हारे पास रसूल आए उस की तसदीक करता हुआ जो तुम्हारे पास है तो तुम उस पर ज़रूर ईमान लाओगे, और ज़रूर उस की मदद करोगे, उस ने फ़रमाया क्या तुम ने इक़रार किया और तुम ने इस पर मेरा अहद कुबूल किया? उन्होंने ने कहा कि हम ने इक़रार किया, उस ने फ़रमाया पस तुम गवाह रहो और मैं तुम्हारे साथ गवाहों में से हूँ। (81)

फिर जो इस के बाद फिर जाए तो वही नाफ़रमान है। (82)

क्या वह अल्लाह के दीन के सिवा (कोई और दीन) चाहते हैं? और उसी का फ़रमांवरदार है जो आस्मानों और ज़मीन में है, चार ओ नाचार, और उसी की तरफ़ वह लौटाए जाएंगे। (83)

कह दें हम ईमान लाए अल्लाह पर, और जो हम पर नाज़िल किया गया और जो नाज़िल किया गया

इब्राहीम (अ), इस्माईल (अ), इसहाक (अ), याकूब (अ) और उन की औलाद पर, और जो दिया गया मूसा (अ) और ईसा (अ) और नबियों को उन के रब की तरफ़ से, हम फ़र्क नहीं करते उन में से किसी एक के दरमियान, और हम उसी के फ़रमावरदार हैं। (84)

और जो कोई चाहेगा इस्लाम के सिवा कोई और दीन तो उस से हरगिज़ कुबूल न किया जाएगा, और वह आखिरत में नुक़सान उठाने वालों में से होगा। (85)

अल्लाह ऐसे लोगों को क्योंकर हिदायत देगा जो काफ़िर हो गए अपने ईमान के बाद और गवाही दे चुके कि यह रसूल सच्चे हैं, और उन के पास खुली निशानियां आ गई, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (86)

ऐसे लोगों की सज़ा है कि उन पर लानत है अल्लाह की और फ़रिश्तों की और तमाम लोगों की। (87)

वह उस में हमेशा रहेंगे। न उन से अज़ाब हलका किया जाएगा और न उन्हें मुहलत दी जाएगी। (88)

मगर जिन लोगों ने इस के बाद तौबा की और इस्लाह की, तो वेशक अल्लाह बख़शने वाला, रहम करने वाला है। (89)

वेशक जो लोग काफ़िर हो गए अपने ईमान के बाद, फिर बढ़ते गए कुफ़्र में, उन की तौबा हरगिज़ न कुबूल की जाएगी, और वही लोग गुमराह हैं। (90)

वेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और वह मर गए हालते कुफ़्र में, तो हरगिज़ न कुबूल किया जाएगा उन में से किसी से ज़मीन भर सोना भी, अगरचे वह उस को बदले में दे, यही लोग हैं उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है और उन के लिए कोई मददगार नहीं। (91)

قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَا اُنزِلَ عَلَيْنَا وَمَا اُنزِلَ عَلٰى اٰبْرٰهِيْمَ

इब्राहीम (अ)	पर	नाज़िल किया गया	और जो	हम पर	नाज़िल किया गया	और जो	अल्लाह पर	हम ईमान लाए	कह दें
--------------	----	-----------------	-------	-------	-----------------	-------	-----------	-------------	--------

وَاسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبٰطِ وَمَا اُوْتِيَ مُوسٰى

मूसा (अ)	दिया गया	और जो	और औलाद	और याकूब (अ)	और इसहाक (अ)	और इस्माईल (अ)
----------	----------	-------	---------	--------------	--------------	----------------

وَعِيسٰى وَالنَّبِيّٰوْنَ مِنْ رَبّٰهِمْ ۗ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ

और हम	उन से	कोई एक	दरमियान	फ़र्क करते	नहीं	उन का रब	से	और नबी (जमा)	और ईसा (अ)
-------	-------	--------	---------	------------	------	----------	----	--------------	------------

لَهُ مُسْلِمُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۗ

उस से	कुबूल किया जाएगा	तो हरगिज़ न	कोई दीन	इस्लाम	सिवा	चाहेगा	और जो	84	फ़रमावरदार	उसी के
-------	------------------	-------------	---------	--------	------	--------	-------	----	------------	--------

وَهُوَ فِى الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٨٥﴾ كَيْفَ يَهْدِى اللّٰهُ

हिदायत देगा अल्लाह	क्योंकर	85	नुक़सान उठाने वाले	से	आखिरत	में	और वह
--------------------	---------	----	--------------------	----	-------	-----	-------

قَوْمًا كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْا اَنَّ الرّٰسُوْلَ حَقٌّ وَجَآءَهُمْ

और आए उन के पास	सच्चे	रसूल	कि	और उन्होंने ने गवाही दी	उन का (अपना) ईमान	बाद	ऐसे लोग जो काफ़िर हो गए
-----------------	-------	------	----	-------------------------	-------------------	-----	-------------------------

الْبَيِّنٰتُ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٦﴾ اُوْلٰئِكَ جَزَاؤُهُمْ

उन की सज़ा	ऐसे लोग	86	ज़ालिम (जमा)	लोग	हिदायत देता	नहीं	और अल्लाह	खुली निशानियां
------------	---------	----	--------------	-----	-------------	------	-----------	----------------

اِنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنّٰسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٧﴾

87	तमाम	और लोग	और फ़रिश्ते	अल्लाह की लानत	उन पर	कि
----	------	--------	-------------	----------------	-------	----

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ الْعَذٰبُ وَلَا هُمْ يُنظَرُوْنَ ﴿٨٨﴾

88	मुहलत दी जाएगी	उन्हें	और न	अज़ाब	उन से	हलका किया जाएगा	न	उस में	हमेशा रहेंगे
----	----------------	--------	------	-------	-------	-----------------	---	--------	--------------

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۗ فَاِنَّ اللّٰهَ

तो वेशक अल्लाह	और इस्लाह की	इस	बाद	तौबा की	जो लोग	मगर
----------------	--------------	----	-----	---------	--------	-----

غَفُوْرٌ رّٰحِيْمٌ ﴿٨٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ ثُمَّ

फिर	अपने ईमान	बाद	काफ़िर हो गए	जो लोग	वेशक	89	रहम करने वाला	बख़शने वाला
-----	-----------	-----	--------------	--------	------	----	---------------	-------------

اَزْدَادُوْا كُفْرًا لّٰنْ تَقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۗ وَاُوْلٰئِكَ هُمُ الضّٰلُّوْنَ ﴿٩٠﴾

90	गुमराह	वह	और वही लोग	उन की तौबा	कुबूल की जाएगी	हरगिज़ न	कुफ़्र में	बढ़ते गए
----	--------	----	------------	------------	----------------	----------	------------	----------

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفّٰرٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ

कुबूल किया जाएगा	तो हरगिज़ न	हालते कुफ़्र	और वह	और वह मर गए	कुफ़्र किया	जो लोग	वेशक
------------------	-------------	--------------	-------	-------------	-------------	--------	------

مِّنْ اَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوْ اَفْتَدٰى بِهٖ

उस को	बदला दे	अगरचे	सोना	ज़मीन	भरा हुआ	उन में कोई	से
-------	---------	-------	------	-------	---------	------------	----

اُوْلٰئِكَ لَهُمْ عَذٰبٌ اَلِيْمٌ ۗ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٩١﴾

91	मददगार	कोई	उन के लिए	और नहीं	दर्दनाक	अज़ाब	उन के लिए	यही लोग
----	--------	-----	-----------	---------	---------	-------	-----------	---------



لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ وَمَا تُنْفِقُوا							
तुम खर्च करोगे	और जो	तुम मुहब्बत रखते हो	उस से जो	तुम खर्च करो	जब तक	नेकी	तुम हरगिज़ न पहुँचोगे
مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ﴿٩٢﴾ كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حَلَالًا							
हलाल	थे	खाने	तमाम	92	जानने वाला	उस को	तो बेशक अल्लाह से (कोई) चीज़
لَبَنِي إِسْرَائِيلَ إِلَّا مَا حَرَّمَ إِسْرَائِيلُ عَلَى نَفْسِهِ مِنْ قَبْلِ أَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرَةُ فُلْ فَاتُوا بِالْتَّوْرَةِ فَاتْلُوهَا إِنْ كُنْتُمْ							
कि	कब्ल	से	अपनी जान	पर	इसाईल (याकूब अ)	जो हराम कर लिया	मगर वनी इसाईल के लिए
صَادِقِينَ ﴿٩٣﴾ فَمَنْ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ الْكُذِبَ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ							
इस	से - बाद	झूट	अल्लाह पर	झूट बाँधे	फिर जो	93	सच्चे
فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٩٤﴾ قُلْ صَدَقَ اللَّهُ فَاتَّبِعُوا مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ							
इब्राहीम (अ)	दीन	पस पैरवी करो	अल्लाह ने सच फरमाया	आप कह दें	94	ज़ालिम (जमा)	वह तो वही लोग
حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٩٥﴾ إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُضِعَ لِلنَّاسِ							
लोगों के लिए	मुकर्रर किया गया	घर	पहला बेशक	95	मुश्रिक (जमा)	से थे और न	हनीफ
لَلَّذِي بِبَكَّةَ مُبْرَكًا وَهُدًى لِلْعَالَمِينَ ﴿٩٦﴾ فِيهِ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ مَقَامُ							
मुकामे	खुली	निशानियाँ	उस में	96	तमाम जहानों के लिए	और हिदायत	बरकत वाला मक्का में जो
إِبْرَاهِيمَ وَمَنْ دَخَلَهُ كَانَ آمِنًا وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ							
खानाए कअबा का हज करना	लोग	पर	और अल्लाह के लिए	अमन में	हो गया	दाखिल हुआ उस में	और जो इब्राहीम
مَنْ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ							
से	वेनियाज़	तो बेशक अल्लाह	कुफ़ किया	और जो-जिस	राह	उस की तरफ़	इसतिताअत रखता हो जो
الْعَالَمِينَ ﴿٩٧﴾ قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ							
और अल्लाह	अल्लाह की आयतों से	तुम कुफ़ करते हो	क्यों	ऐ अहले किताब	कह दें	97	जहान वाले
شَهِدٌ عَلَىٰ مَا تَعْمَلُونَ ﴿٩٨﴾ قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَصُدُّونَ عَن							
से	क्यों रोकते हो?	ऐ अहले किताब	कह दें	98	जो तुम करते हो	पर	गवाह
سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ آمَنَ تَبْغُونَهَا عِوَجًا وَأَنْتُمْ شُهَدَاءُ وَمَا اللَّهُ							
अल्लाह	और नहीं	गवाह (जमा)	और तुम खुद	कजी	तुम ढूँढते हो उस में	ईमान लाए	जो अल्लाह का रास्ता
بِعَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٩٩﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ تُطِيعُوا فَرِيقًا							
एक गिरोह	तुम कहा मानोगे	अगर	ईमान लाए	वह जो कि	ऐ	99	तुम करते हो से-जो बेखबर
مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ يَرُدُّوكُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ كُفْرِينَ ﴿١٠٠﴾							
100	हालते कुफ़	तुम्हारे ईमान	बाद	वह फेर देंगे तुम्हें	दी गई किताब	वह लोग जो	से

तुम हरगिज़ नेकी को न पहुँचोगे जब तक उस में से खर्च न करो जिस से तुम मुहब्बत रखते हो, और जो तुम खर्च करोगे कोई चीज़ तो बेशक अल्लाह उस को जानने वाला है। (92)

तमाम खाने हलाल थे वनी इसाईल के लिए, मगर जो याकूब (अ) ने अपने आप पर हराम कर लिया था उस से कब्ल कि तौरत उतरे, आप कह दें कि तुम तौरत लाओ, फिर उस को पढ़ो अगर तुम सच्चे हो। (93)

फिर जो कोई अल्लाह पर इस के वाद झूट बाँधे तो वही लोग ज़ालिम हैं। (94)

आप कह दें अल्लाह ने सच फरमाया, पस तुम इब्राहीम हनीफ़ (एक के हो जाने वाले) के दीन की पैरवी करो और वह मुश्रिकों में से न थे। (95)

बेशक सब से पहले जो घर मुकर्रर किया गया लोगों के लिए वह जो मक्का में है बरकत वाला और सारे जहानों के लिए हिदायत। (96)

उस में निशानियाँ हैं खुली (जैसे) मुकामे इब्राहीम (अ), और जो उस में दाखिल हुआ वह अमन में हो गया, और अल्लाह के लिए (अल्लाह का हक़ है) लोगों पर खानाए कअबा का हज करना जो उस की तरफ़ राह (चलने की) इसतिताअत रखता हो, और जिस ने कुफ़ किया तो बेशक अल्लाह जहान वालों से वेनियाज़ है। (97)

आप (स) कह दें: ऐ अहले किताब! क्यों तुम अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हो? और अल्लाह उस पर गवाह है (बाखबर है) जो तुम करते हो। (98)

आप (स) कह दें: ऐ अहले किताब! तुम अल्लाह के रास्ते से क्यों रोकते हो (उस को) जो अल्लाह पर ईमान लाए, तुम उस में कजी ढूँढते हो, और तुम खुद गवाह हो, और अल्लाह उस से बेखबर नहीं जो तुम करते हो। (99)

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो (ऐ ईमान वालो!) अगर कहा मानोगे उन लोगों के एक फ़रीक़ का जिन्हें किताब दी गई (अहले किताब) वह तुम्हारे ईमान लाने के बाद तुम्हें (हालते) कुफ़ में फेर देंगे। (100)

और तुम कैसे कुफ़र करते हो जबकि तुम पर अल्लाह की आयतें पढ़ी जाती हैं और तुम्हारे दरमियान उस का रसूल (स) मौजूद है, और जो कोई मज़बूती से पकड़ेगा अल्लाह (की रस्सी) को तो उसे सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत दी गई। (101)

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो (ऐ ईमान वालो)! अल्लाह से डरो जैसा कि उस से डरने का हक़ है और तुम हरगिज़ न मरना मगर (उस हाल में) कि तुम मुसलमान हो। (102)

और मज़बूती से पकड़ लो अल्लाह की रस्सी को सब मिल कर और आपस में फूट न डालो, और अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो, जब तुम (एक दूसरे के) दुश्मन थे तो उस ने तुम्हारे दिलों में उलफ़त डाल दी तो तुम उस के फज़ल से भाई भाई हो गए, और तुम आग के गढ़े के किनारे पर थे तो उस ने तुम्हें उस से बचा लिया, इसी तरह वह तुम्हारे लिए अपनी आयात वाज़ेह करता है ताकि तुम हिदायत पाओ। (103)

और चाहिए कि तुम में से एक जमाअत रहे, वह भलाई की तरफ़ बुलाए और अच्छे कामों का हुक्म दे और बुराई से रोके, और यही लोग कामयाब होने वाले हैं। (104)

और उन लोगों की तरह न हो जाओ जो मुतफ़र्रिक़ हो गए और वाहम इख़तिलाफ़ करने लगे उस के बाद कि उन के पास वाज़ेह हुक्म आगए, और यही लोग हैं जिन के लिए है अज़ाब बहुत बड़ा। (105)

जिस दिन बाज़ चेहरे सफ़ेद होंगे और बाज़ चेहरे सियाह होंगे, पस जिन लोगों के सियाह हुए चेहरे (उन से कहा जाएगा) क्या तुम ने अपने ईमान के बाद कुफ़र किया? तो अब अज़ाब चखो क्यों कि तुम कुफ़र करते थे। (106)

और अलबत्ता जिन लोगों के चेहरे सफ़ेद होंगे वह अल्लाह की रहमत में होंगे, वह उस में हमेशा रहेंगे। (107)

यह अल्लाह की आयात हैं, हम आप पर ठीक ठीक पढ़ते हैं, और अल्लाह जहान वालों पर कोई जुल्म नहीं चाहता। (108)

وَكَيْفَ تَكْفُرُونَ وَأَنْتُمْ تُثَلِّىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتِ اللَّهِ وَفِيكُمْ رَسُولُهُ							
उस का रसूल	और तुम्हारे दरमियान	अल्लाह की आयतें	तुम पर	पढ़ी जाती है	जबकि तुम	तुम कुफ़र करते हो	और कैसे
وَمَنْ يَّعْتَصِمِ بِاللَّهِ فَقَدْ هُدِيَ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ (١٠١)							
101	सीधा रास्ता	तरफ़	तो उसे हिदायत दी गई	अल्लाह को	मज़बूत पकड़ेगा	और जो	
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تَقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ							
और तुम	मगर	और तुम हरगिज़ न मरना	उस से डरना	हक़	तुम डरो अल्लाह से	ईमान लाए	वह जो कि ऐ
مُسْلِمُونَ (١٠٢) وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللَّهِ جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُوا وَاذْكُرُوا							
और याद करो	आपस में फूट न डालो	और न	सब मिल कर	अल्लाह की रस्सी को	और मज़बूती से पकड़ लो	102	मुसलमान (जमा)
نِعْمَتِ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ كُنْتُمْ أَعْدَاءً فَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ							
तो तुम हो गए	तुम्हारे दिलों में	तो उलफ़त डाल दी	दुश्मन (जमा)	जब तुम थे	तुम पर	अल्लाह की नेमत	
بِنِعْمَتِهِ إِخْوَانًا وَكُنْتُمْ عَلَىٰ شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَأَنْقَذَكُمْ							
तो तुम्हें बचा लिया	आग	से (के)	गढ़ा	किनारा	पर	और तुम थे	उस के फज़ल से
مِنْهَا كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ (١٠٣) وَلَتَكُنَّ							
और चाहिए रहे	103	हिदायत पाओ	ताकि तुम	अपनी आयात	तुम्हारे लिए	वाज़ेह करता है अल्लाह	इसी तरह उस से
مِّنْكُمْ أُمَّةٌ يَّدْعُونَ إِلَىٰ الْخَيْرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ							
और वह रोके	अच्छे कामों का	और वह हुक्म दे	भलाई	तरफ़	वह बुलाए	एक जमाअत	तुम से (में)
عَنِ الْمُنْكَرِ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ (١٠٤) وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ							
उन की तरह जो	और न हो जाओ	104	कामयाब होने वाले	वह	और यही लोग	बुराई से	
تَفَرَّقُوا وَآخْتَلَفُوا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ							
उन के लिए	और यही लोग	वाज़ेह हुक्म	उन के पास आगए	कि	उस के बाद	और वाहम इख़तिलाफ़ करने लगे	मुतफ़र्रिक़ हो गए
عَذَابٌ عَظِيمٌ (١٠٥) يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ							
बाज़ चेहरे	और सियाह होंगे	बाज़ चेहरे	सफ़ेद होंगे	दिन	105	बड़ा	अज़ाब
فَأَمَّا الَّذِينَ اسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ أَكْفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ							
अपने ईमान	बाद	क्या तुम ने कुफ़र किया	उन के चेहरे	सियाह हुए	लोग	पस जो	
فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ (١٠٦) وَأَمَّا الَّذِينَ ابْيَضَّتْ وُجُوهُهُمْ							
उन के चेहरे	सफ़ेद होंगे	वह लोग जो	और अलबत्ता	106	कुफ़र करते	तुम थे	क्यों कि अज़ाब तो चखो
فَفِي رَحْمَةِ اللَّهِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ (١٠٧) تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ							
अल्लाह की आयात	यह	107	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	अल्लाह की रहमत	सो - में
نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِّلْعَالَمِينَ (١٠٨)							
108	जहान वालों के लिए	कोई जुल्म	चाहता	और नहीं अल्लाह	ठीक ठीक	आप (स) पर	हम पढ़ते हैं वह

١٠٤

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاللّٰهُ تَرْجِعُ الْاُمُوْرَ (109)							
109	तमाम काम	लौटाए जाएंगे	और अल्लाह की तरफ़	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	और अल्लाह के लिए जो
كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ							
अच्छे कामों का		तुम हुक्म करते हो		लोगों के लिए	भेजी गई	उम्मत	बेहतरीन तुम हो
وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَوْ اٰمَنَ							
ईमान ले आते	और अगर	अल्लाह पर	और ईमान लाते हो	बुरे काम	से	और मना करते हो	
اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لّٰهُمْ مِنْهُمْ الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمْ							
और उन के अक्सर		ईमान वाले	उन से	उन के लिए	बेहतर	तो था	अहले किताब
الْفٰسِقُوْنَ (110) لَنْ يُّصْرُوْكُمْ اِلَّا اَذٰى وَاَنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمْ الْاَدْبَارَ							
पीठ (जमा)	वह तुम्हें पीठ दिखाएंगे	वह तुम से लड़ेंगे	और अगर	सताना	सिवाए	बिगाड़ सकेंगे तुम्हारा	हरगिज़ न 110 नाफरमान
ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ (111) ضَرِبْتَ عَلَيْهِمُ الدَّلٰةَ اَيْنَ مَا							
जहां कहीं		ज़िल्लत	उन पर	चस्पां कर दी गई	111	उन की मदद न होगी	फिर
تُقْفَلُوْا اِلَّا بِحَبْلِ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلِ مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبِ							
ग़ज़ब के साथ	वह लौटे	लोगों से	और उस (अहद)	अल्लाह से	उस (अहद)	सिवाए	वह पाए जाएं
مِّنَ اللّٰهِ وَضَرِبْتَ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةَ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا							
थे	इस लिए कि वह	यह	मोहताजी	उन पर	और चस्पां कर दी गई	अल्लाह से (के)	
يَكْفُرُوْنَ بِآيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ الْاَنْبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقِّ ذٰلِكَ							
यह	नाहक़	नबी (जमा)	और क़त्ल करते थे	अल्लाह की आयतें से	कुफ़ करते		
بِمَا عَصَوْا وَكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ (112) لَيْسُوْا سَوَآءًا مِّنْ							
से (में)	बराबर	नहीं	112	हद से बढ़ जाते	और थे	उन्होंने ने नाफरमानी की	इस लिए
اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةً قٰآئِمَةً يَّتْلُوْنَ آيٰتِ اللّٰهِ اِنۡاءَ الْيَلِ							
रात के औकात		अल्लाह की आयत	वह पढ़ते हैं	काइम	एक जमाअत	अहले किताब	
وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ (113) يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ							
आखिरत	और दिन	अल्लाह पर	ईमान रखते हैं	113	सिज्दा करते हैं	और वह	
وَيَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُوْنَ							
और वह दौड़ते हैं		बुरे काम	से	और मना करते हैं	अच्छी बात का	और हुक्म करते हैं	
فِي الْخَيْرٰتِ وَاُوَلِّبِكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ (114) وَمَا يَفْعَلُوْا							
वह करेंगे	और जो	114	नेकोकार (जमा)	से	और यही लोग	नेक काम	में
مِّنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُكْفَرُوْهُ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِالْمُتَّقِيْنَ (115)							
115	परहेज़गारों को	जानने वाला	और अल्लाह	तो हरगिज़ नाक़्द्री न होगी उस की	नेकी	से (कोई)	

और अल्लाह के लिए है जो आस्मानों और ज़मीन में है, और तमाम काम अल्लाह की तरफ़ लौटाए जाएंगे। (109)

तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिए भेजी गई (पैदा की गई) तुम अच्छे कामों का हुक्म करते हो और बुरे कामों से मना करते हो और अल्लाह पर ईमान लाते हो, और अगर अहले किताब ईमान ले आते तो उन के लिए बेहतर था, उन में (कुछ) ईमान वाले हैं और उन में से अक्सर नाफरमान हैं। (110)

वह सताने के सिवा तुम्हारा हरगिज़ कुछ न बिगाड़ सकेंगे, और अगर वह तुम से लड़ेंगे तो वह तुम्हें पीठ दिखाएंगे, फिर उन की मदद न होगी, (111)

उन पर ज़िल्लत चस्पां कर दी गई जहां कहीं वह पाए जाएं सिवाए उस के कि अल्लाह के अहद में आ जाएं और लोगों के अहद में, वह लौटे अल्लाह के ग़ज़ब के साथ और उन पर चस्पां कर दी गई मोहताजी, यह इस लिए कि वह अल्लाह की आयात का इनकार करते थे और नबियों को नाहक़ क़त्ल करते थे, यह इस लिए (था) कि उन्होंने ने नाफरमानी की और वह हद से बढ़ जाते थे। (112)

अहले किताब में सब बराबर नहीं, एक जमाअत (सीधी राह पर) काइम है और रात के औकात में अल्लाह की आयत पढ़ते हैं और वह सिज्दा करते हैं। (113)

वह ईमान रखते हैं अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर और वह अच्छी बात का हुक्म करते हैं और बुरे काम से रोकते हैं और वह नेक कामों में दौड़ते हैं, और यही लोग नेकोकारों में से हैं। (114)

और वह जो करेंगे कोई नेकी तो हरगिज़ उस की नाक़्द्री न होगी, और अल्लाह परहेज़गारों को जानने वाला है। (115)

वेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया, हरगिज़ अल्लाह के आगे उन के माल और न उन की औलाद कुछ भी काम आएंगे, और यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (116)

उन की मिसाल जो खर्च करते हैं इस दुनिया में ऐसी है जैसे हवा हो, उस में पाला हो, वह जा लगे खेती को उस कौम की जिन्हों ने अपनी जानों पर जुल्म किया, फिर उस को तबाह कर दे, अल्लाह ने उन पर जुल्म नहीं किया बल्कि वह अपनी जानों पर खुद जुल्म करते हैं। (117)

ऐ ईमान वालो! अपनों के सिवा किसी को राज़दार न बनाओ, वह तुम्हारी खराबी में कमी नहीं करते, वह चाहते हैं कि तुम तकलीफ़ पाओ, (उन की) दुश्मनी ज़ाहिर हो चुकी है उन के मुँह से, और जो उन के सीनों में छुपा हुआ है वह (उस से भी) बड़ा है, हम ने तुम्हारे लिए आयात खोल कर बयान कर दी हैं अगर तुम अक़्ल रखते हो। (118)

सुन लो! तुम वह लोग हो जो उन को दोस्त रखते हो और वह तुम्हें दोस्त नहीं रखते और तुम सब किताबों पर ईमान रखते हो, और जब तुम से मिलते हैं तो कहते हैं हम ईमान लाए, और जब अकेले होते हैं तो वह तुम पर गुस्से से उंगलियां चबाते हैं, कह दीजिए! तुम अपने गुस्से में मर जाओ, वेशक अल्लाह दिल की बातों को (खूब) जानने वाला है। (119)

अगर तुम्हें कोई भलाई पहुँचे तो उन्हें बुरी लगती है, और अगर तुम्हें कोई बुराई पहुँचे तो वह उस से खुश होते हैं, और अगर तुम सबर करो और परहेज़गारी करो, तुम्हारा न बिगाड़ सकेगा उन का फ़रेब कुछ भी, वेशक जो कुछ वह करते हैं अल्लाह उसे घेरे हुए है। (120)

और जब आप सुबह सवेरे निकले अपने घर से, मोमिनों को जंग के मोर्चों पर बिठाने लगे, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (121)

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ							
वह लोग जो	कुफ़ किया	हरगिज़ काम न आएगा	उन से (के)	उन के माल	और न	उन की औलाद	वेशक
مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا وَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١١٦﴾							
अल्लाह से (के आगे)	कुछ	और यही लोग	आग (दोज़ख) वाले	वह	उस में	हमेशा रहेंगे	116
مَثَلُ مَا يُنْفِقُونَ فِي هَذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيحٍ							
मिसाल	जो	खर्च करते हैं	में	इस	ज़िन्दगी	दुनिया	हवा
فِيهَا صِرٌّ أَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ فَأَهْلَكَتْهُ وَمَا							
उस में	पाला	वह जा लगे	खेती	कौम	उन्हों ने जुल्म किया	जानें अपनी	फिर उस को हलाक कर दे
ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَكِنِ أَنفُسُهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا							
जुल्म किया उन पर अल्लाह	बल्कि	अपनी जानें	वह जुल्म करते हैं	117	ऐ	जो ईमान लाए (ईमान वालो)	
لَا تَتَّخِذُوا بَطَانَةً مِّن دُونِكُمْ لَا يَأْلُونَكُمْ خَبَالًا وَدُّوا مَا عَنِتُّمْ							
न बनाओ	दोस्त (राज़दार)	से	सिवाए- अपने	वह कमी नहीं करते	वह चाहते हैं	कि	तुम तकलीफ़ पाओ
قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَاءُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ وَمَا تُخْفَىٰ صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ							
अलबत्ता ज़ाहिर हो चुकी	दुश्मनी	से	उन के मुँह	और जो	छुपा हुआ	उन के सीने	बड़ा
قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ إِن كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١١٨﴾ هَآنَتُمْ أَوْلَآءِ							
हम ने खोल कर बयान कर दिया	तुम्हारे लिए	आयात	अगर	तुम हो	अक़्ल रखते	118	वह लोग
تُحِبُّونَهُمْ وَلَا يُحِبُّونَكُمْ وَتُؤْمِنُونَ بِالْكِتَابِ كُلِّهِ وَإِذَا لَقُوكُمْ							
तुम दोस्त रखते हो उन को	और नहीं	वह दोस्त रखते हैं तुम्हें	और तुम ईमान रखते हो	किताब पर	सब	और जब	वह तुम से मिलते हैं
قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَوْا عَضُّوا عَلَيْكُمُ الْأَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ							
कहते हैं	हम ईमान लाए	और जब	अकेले होते हैं	वह काटते हैं	तुम पर	उंगलियां	गुस्से से
قُلْ مُوتُوا بِغَيْظِكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١١٩﴾							
कह दीजिए	तुम मर जाओ	अपने गुस्से में	वेशक अल्लाह	जानने वाला	सीने वाली (दिल की बातें)	119	
إِنْ تَمَسَّكُمْ حَسَنَةٌ تَسُوهُمْ وَإِنْ تَصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَفْرَحُوا بِهَا							
अगर	पहुँचे तुम्हें	कोई भलाई	उन्हें बुरी लगती है	और अगर	तुम्हें पहुँचे	कोई बुराई	उस से
وَإِنْ تَصَبِرُوا وَتَتَّقُوا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا							
और अगर	तुम सबर करो	और परहेज़गारी करो	न बिगाड़ सकेगा तुम्हारा	उन का फ़रेब	कुछ		
إِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿١٢٠﴾ وَإِذْ غَدَوْتَ مِنْ أَهْلِكَ							
वेशक अल्लाह	जो कुछ	वह करते हैं	घेरे हुए है	120	और जब	आप (स) सुबह सवेरे निकले	अपने घर से
تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِينَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٢١﴾							
बिठाने लगे	मोमिन (जमा)	ठिकाने	जंग के	और अल्लाह	और	सुनने वाला	जानने वाला
				121			

إِذْ هَمَّتْ طَّائِفَتَيْنِ مِنْكُمْ أَنْ تَفْشَلَا وَاللَّهُ وَلِيُهُمَا وَعَلَى اللَّهِ							
जब	इरादा किया	दो गिरोह	तुम से	कि	हिम्मत हार दें	और अल्लाह	उनका मददगार
فَلَيْتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ (122) وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرِ وَأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ							
कमज़ोर	जबकि तुम	बद्र में	मदद कर चुका तुम्हारी अल्लाह	और अलबत्ता	122	मोमिन	चाहिए भरोसा करें
فَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ (123) إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ							
मोमिनों को	जब आप कहने लगे	123	शुक्रगुज़ार हो	ताकि तुम	तो डरो अल्लाह से		
أَلَنْ يَكْفِيَكُمْ أَنْ يُمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلَاثَةِ أَلْفٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ							
फ़रिश्ते	से	तीन हज़ार से	तुम्हारा रब	मदद करे तुम्हारी	कि	क्या काफ़ी नहीं तुम्हारे लिए	
مُنزَلِينَ (124) بَلَىٰ إِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا وَيَأْتُوكُمْ مِنْ فُورِهِمْ							
फ़ौरन-वह	से	और तुम पर आएँ	और परहेज़गारी करो	तुम सब्र करो	अगर क्यों नहीं	124	उतारे हुए
هَذَا يُمِدُّكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ أَلْفٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُسَوِّمِينَ (125)							
125	निशान ज़दा	फ़रिश्ते	से	पाँच हज़ार	तुम्हारा रब	मदद करेगा तुम्हारी	यह
وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوبُكُمْ بِهِ							
उस से	तुम्हारे दिल	और इस लिए कि इत्मीनान हो	तुम्हारे लिए	खुशख़बरी	मगर (सिर्फ)	उस को बनाया अल्लाह ने	और नहीं
وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ (126) لِيَقْطَعَ طَرَفًا							
गिरोह	ताकि काट डाले	126	हिक्मत वाला	ग़ालिब	अल्लाह के पास	से	मगर (सिवाए)
مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَوْ يَكْتُمُهُمْ فَيَنْقَلِبُوا خَاسِبِينَ (127) لَيْسَ لَكَ							
नहीं - आप (स) के लिए	127	नामुराद	तो वह लौट जाएँ	उन्हें ज़लील करे	या	उन्होंने ने कुफ़ किया	वह लोग जो
مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبُهُمْ فَأِنَّهُمْ ظَالِمُونَ (128)							
128	ज़ालिम (जमा)	क्यों कि वह	उन्हें अज़ाब दे	या	उन की	खाह तौबा कुबूल कर ले	कुछ
وَاللَّهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ يَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ							
चाहे	जिस को	वह बख़्श दे	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	और अल्लाह के लिए जो	
وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ (129) يَا أَيُّهَا الَّذِينَ							
जो	ऐ	129	मेहरबान	बख़्शने वाला	और अल्लाह	चाहे	जिस
أَمَنُوا لَا تَأْكُلُوا الرِّبَا أَضْعَافًا مُّضَاعَفَةً وَاتَّقُوا اللَّهَ							
और डरो अल्लाह से	दुगना हुआ (चौगना)	दुगना	सूद	न खाओ	ईमान लाए (ईमान वाले)		
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ (130) وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي أُعِدَّتْ							
तैयार की गई	जो कि	आग	और डरो	130	फ़लाह पाओ	ताकि तुम	
لِلْكَافِرِينَ (131) وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ (132)							
132	रहम किया जाए	ताकि तुम पर	और रसूल	अल्लाह	और हुक्म मानो तुम	131	काफ़िरों के लिए

जब तुम में से दो गिरोहों ने इरादा किया कि हिम्मत हार दें, और अल्लाह उन का मददगार था, और अल्लाह पर चाहिए कि मोमिन भरोसा करें। (122)

और अलबत्ता अल्लाह तुम्हारी बद्र में मदद कर चुका है जबकि तुम कमज़ोर (समझे जाते) थे, तो अल्लाह से डरो ताकि तुम शुक्रगुज़ार हो। (123)

जब आप मोमिनों को कहते थे क्या तुम्हारे लिए यह काफ़ी नहीं कि तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करे तीन हज़ार फ़रिश्तों से उतारे हुए। (124)

क्यों नहीं अगर तुम सब्र करो और परहेज़गारी करो, और वह (दुश्मन) तुम पर चढ़ आएँ तो फ़ौरन तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करेगा पाँच हज़ार निशान ज़दा फ़रिश्तों से। (125)

और यह अल्लाह ने सिर्फ तुम्हारी खुशख़बरी के लिए किया और इस लिए कि उस से तुम्हारे दिलों को इत्मीनान हो, और नहीं मदद मगर (सिर्फ) अल्लाह के पास से है जो ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (126)

ताकि वह उन लोगों के एक गिरोह को काट डाले जिन्होंने ने कुफ़ किया या उन्हें ज़लील कर दे तो वह नामुराद लौट जाएँ। (127)

आप (स) का इस में दख़ल नहीं कुछ भी, खाह (अल्लाह) उन की तौबा कुबूल करे या उन्हें अज़ाब दे क्यों कि वह ज़ालिम हैं। (128)

और अल्लाह ही के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और जिस को चाहे बख़्श दे और अज़ाब दे जिस को चाहे, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (129)

ईमान वालो! न खाओ सूद दुगना चौगना, और अल्लाह से डरो ताकि तुम फ़लाह पाओ। (130)

और डरो उस आग से जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है। (131)

और तुम अल्लाह और रसूल (स) का हुक्म मानो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (132)

और दौड़ो अपने रब की बख्शिश और जन्नत की तरफ जिस का अर्ज आस्मानों और ज़मीन (के बराबर) है, तैयार की गई है परहेज़गारों के लिए। (133)

जो खर्च करते हैं खुशी (खुशहाली) और तकलीफ में और पी जाते हैं गुस्सा और माफ़ कर देते हैं लोगों को, और अल्लाह दोस्त रखता है एहसान करने वालों को। (134)

और वह लोग जो बेहयाई करें या अपने तई कोई जुल्म कर बैठें तो वह अल्लाह को याद करें, फिर अपने गुनाहों के लिए बख्शिश मांगें, और कौन गुनाह बख़शता है अल्लाह के सिवा? और जो उन्हीं ने (ग़लत) किया उस पर जानते बूझते न अड़ें। (135)

ऐसे ही लोगों की जज़ा उन के रब की तरफ़ से बख्शिश और बागात है जिन के नीचे बहती हैं नहरें, वह उन में हमेशा रहेंगे, और कैसा अच्छा बदला है काम करने वालों का! (136)

गुज़र चुके हैं तुम से पहले तरीके (वाकिज़ात) तो ज़मीन में चलो फिरो, फिर देखो कैसा अन्जाम हुआ झुटलाने वालों का! (137)

यह बयान है लोगों के लिए और हिदायत और नसीहत परहेज़गारों के लिए। (138)

और तुम सुस्त न पड़ो और ग़म न खाओ, और तुम ही ग़ालिब रहोगे अगर तुम ईमान वाले हो। (139)

अगर तुम को ज़ख़म पहुँचा तो अलबत्ता पहुँचा है उस कौम को (भी) उस जैसा ही ज़ख़म, और यह (खुशी और ग़म के) दिन हैं जो हम लोगों के दरमियान बारी बारी बदलते रहते हैं, और ताकि अल्लाह मालूम कर ले उन लोगों को जो ईमान लाए और तुम में से (वाज़ को) शहीद बनाए (दरजए शहादत दे), और अल्लाह ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता। (140)

وَسَارِعُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمَوَاتُ

आस्मान (जमा)	उस का अर्ज	और जन्नत	अपना रब	से	बख्शिश	तरफ़	और दौड़ो
--------------	------------	----------	---------	----	--------	------	----------

وَالْأَرْضِ ۗ أُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ ﴿١٣٣﴾ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ فِي السَّرَّاءِ

खुशी में	खर्च करते हैं	जो लोग	133	परहेज़गारों के लिए	तैयार की गई	और ज़मीन
----------	---------------	--------	-----	--------------------	-------------	----------

وَالصَّرَّاءِ ۗ وَالْكُظُمِينَ الْغَیْظَ وَالْعَافِیْنَ عَنِ النَّاسِ ۗ

लोग	से	और माफ़ करते हैं	गुस्सा	और पी जाते हैं	और तकलीफ़
-----	----	------------------	--------	----------------	-----------

وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٣٤﴾ وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا

जुल्म करें	या	कोई बेहयाई	वह करें	जब	और वह लोग जो	134	एहसान करने वाले	दोस्त रखता है	और अल्लाह
------------	----	------------	---------	----	--------------	-----	-----------------	---------------	-----------

أَنفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللَّهَ فَاسْتَغْفَرُوا لِذُنُوبِهِمْ ۗ وَمَن يَغْفِرِ الذُّنُوبَ

गुनाह	बख़शता है	और कौन	अपने गुनाहों के लिए	फिर बख्शिश मांगें	वह अल्लाह को याद करें	अपने तई
-------	-----------	--------	---------------------	-------------------	-----------------------	---------

إِلَّا اللَّهُ ۗ وَلَمْ يُصِرُّوا عَلَىٰ مَا فَعَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٣٥﴾

135	जानते हैं	और वह	उन्हीं ने किया	जो	पर	वह अड़ें	और न	अल्लाह के सिवा
-----	-----------	-------	----------------	----	----	----------	------	----------------

أُولَٰئِكَ جَزَاؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَجَنَّةٌ

और बागात	उन का रब	से	बख्शिश	उन की जज़ा	यही लोग
----------	----------	----	--------	------------	---------

تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۗ وَنَعْمَ

और कैसा अच्छा	उस में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उस के नीचे	से	बहती है
---------------	--------	--------------	-------	------------	----	---------

أَجْرُ الْعَمَلِينَ ﴿١٣٦﴾ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۖ فَسِيرُوا

तो चलो फिरो	तरीके (वाकिज़ात)	तुम से पहले	गुज़र चुके	136	काम करने वाले	बदला
-------------	------------------	-------------	------------	-----	---------------	------

فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكْذِبِينَ ﴿١٣٧﴾

137	झुटलाने वाले	अन्जाम	हुआ	कैसा	फिर देखो	ज़मीन में
-----	--------------	--------	-----	------	----------	-----------

هَذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ ﴿١٣٨﴾

138	परहेज़गारों के लिए	और नसीहत	और हिदायत	लोगों के लिए	बयान	यह
-----	--------------------	----------	-----------	--------------	------	----

وَلَا تَهِنُوا وَلَا تَحْزَنُوا ۗ وَأَنْتُمْ الْأَعْلَوْنَ إِن كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿١٣٩﴾

139	ईमान वाले	अगर तुम हो	ग़ालिब	और तुम	और ग़म न खाओ	और सुस्त न पड़ो
-----	-----------	------------	--------	--------	--------------	-----------------

إِن يَمَسُّكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهُ ۗ وَتِلْكَ الْأَيَّامُ

अय्याम	और यह	उस जैसा	ज़ख़म	कौम	पहुँचा	तो अलबत्ता	ज़ख़म	तुम्हें पहुँचा	अगर
--------	-------	---------	-------	-----	--------	------------	-------	----------------	-----

نُداوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۗ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ الَّذِينَ أَمَنُوا

ईमान लाए	जो लोग	और ताकि मालूम कर ले अल्लाह	लोगों के दरमियान	हम बारी बारी बदलते हैं इस को
----------	--------	----------------------------	------------------	------------------------------

وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَاءَ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿١٤٠﴾

140	ज़ालिम (जमा)	दोस्त नहीं रखता	और अल्लाह	शहीद (जमा)	तुम से	और बनाए
-----	--------------	-----------------	-----------	------------	--------	---------

وَلِيْمَحْصِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَمْحَقِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٤١﴾						
141	काफ़िर (जमा)	और मिटा दे	ईमान लाए	जो लोग	और ताकि पाक साफ़ कर दे	अल्लाह
اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوْا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا						
जिहाद करने वाले	जो लोग	अल्लाह ने मालूम किया	और अभी नहीं	जन्नत	तुम दाखिल होगे	क्या तुम समझते हो? कि
مِنْكُمْ وَيَعْلَمِ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٤٢﴾ وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ						
से	मौत	तुम तमन्ना करते थे	और अलवत्ता	142	सब्र करने वाले	और मालूम किया तुम में से
قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ فَقَدْ رَاَيْتُمْوْهُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿١٤٣﴾						
143	देखते हो	और तुम	तो अब तुम ने उसे देख लिया	तुम उस से मिलो	कि	कब्ल
وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهٖ الرُّسُلُ						
रसूल (जमा)	उन से पहले	अलवत्ता गुज़रे	एक रसूल	मगर (तो)	मुहम्मद (स)	और नहीं
اَفَايْنَ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ اِنْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ وَمَنْ يَنْقَلِبْ						
फिर जाए	और जो	अपनी एड़ियों पर	तुम फिर जाओगे	कतल हो जाए	या	वह वफ़ात पा लें क्या फिर अगर
عَلٰٓى عَقْبِيْهِ فَلَنْ يُّصْرَّ اللّٰهُ شَيْئًا وَّسَيَجْزِي اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٤﴾						
144	शुक्र करने वाले	और जल्द जज़ा देगा अल्लाह	कुछ भी	तो हरगिज़ न बिगाड़ेगा अल्लाह का	अपनी एड़ियों पर	
وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّوْجَلًّا						
मुकर्ररा वक़्त	लिखा हुआ	अल्लाह के हुकम से	बग़ैर	वह मरे	कि	किसी शख्स के लिए और नहीं
وَمَنْ يُرِدْ يُرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَمَنْ يُرِدْ						
चाहेगा	और जो	उस से	हम देंगे उस को	दुनिया	इन्ज़ाम	चाहेगा और जो
ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَسَنَجْزِي الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٥﴾						
145	शुक्र करने वाले	और हम जल्द जज़ा देंगे	उस से	हम देंगे उस को	आखिरत	बदला
وَكٰٓيِنٌ مِّنْ نَّبِيٍّ قُتِلَ مَعَهُ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ فَمَا وَهَنُوْا						
सुस्त पड़े	पस न	बहुत	अल्लाह वाले	उन के साथ	लड़े	नबी और बहुत से
لِمَا اَصَابَهُمْ فِى سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكٰنُوْا						
और न दब गए	उन्होंने ने कमज़ोरी की	और न	अल्लाह की राह	में	उन्हें पहुँचे	ब सबव-जो
وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٤٦﴾ وَمَا كَانَ قَوْلُهُمْ اِلَّا اَنْ						
कि	सिवाए	उन का कहना	और न था	146	सब्र करने वाले	दोस्त रखता है और अल्लाह
قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرٰفَنَا فِىْ اٰمِرِنَا						
हमारे काम में	और हमारी ज़ियादती	हमारे गुनाह	बख़्शदे हम को	ऐ हमारे रब	उन्होंने ने दुआ की	
وَتَبَتْ اَقْدَامُنَا وَاَنْصُرْنَا عَلٰٓى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٤٧﴾						
147	काफ़िर (जमा)	कौम	पर	और हमारी मदद फ़रमा	हमारे क़दम	और साबित रख

और ताकि अल्लाह पाक साफ़ कर दे उन लोगों को जो ईमान लाए और मिटा दे काफ़िरों को। (141)

क्या तुम यह समझते हो कि तुम जन्नत में दाखिल हो जाओगे और अभी अल्लाह ने मालूम नहीं किया (इमतिहान नहीं लिया) कि कौन तुम में से जिहाद करने वाले हैं और सब्र करने वाले हैं। (142)

और अलवत्ता तुम मौत से मिलने से कब्ल उस की तमन्ना करते थे, तो अब तुम ने उसे (मौत को) देख लिया और तुम उसे (अपनी आँखों से) देख रहे हो। (143)

और मुहम्मद (स) तो एक रसूल हैं, अलवत्ता गुज़र चुके हैं उन से पहले बहुत से रसूल, फिर अगर वह वफ़ात पा लें या कतल हो जाए तो क्या तुम अपनी एड़ियों पर (उलटे पाऊँ) लौट जाओगे? और जो अपनी एड़ियों पर (उलटे पाऊँ) फिर जाए तो वह हरगिज़ अल्लाह का कुछ न बिगाड़ेगा, और अल्लाह जल्द जज़ा देगा शुक्र करने वालों को। (144)

और किसी शख्स के लिए (मुमकिन) नहीं कि वह अल्लाह के हुकम के बग़ैर मर जाए, लिखा हुआ है एक मुकर्ररा वक़्त, और जो दुनिया का इन्ज़ाम चाहेगा हम उसे उस में से दे देंगे, और जो चाहेगा आखिरत का बदला हम उसे उस में से देंगे, और हम शुक्र करने वालों को जल्द जज़ा देंगे। (145)

और बहुत से नबी (हुए हैं) उन के साथ (मिल कर) बहुत से अल्लाह वाले लड़े, पस वह सुस्त न पड़े (उन मुसीबतों) के सबव जो उन्हें अल्लाह की राह में पहुँची और न उन्होंने ने कमज़ोरी (ज़ाहिर) की और न दब गए, और अल्लाह सब्र करने वालों को दोस्त रखता है। (146)

और उन का कहना न था उस के सिवाए कि उन्होंने ने दुआ की: ऐ हमारे रब! हमें बख़्शदे हमारे गुनाह, और हमारी ज़ियादती हमारे काम में, और साबित रख हमारे क़दम और काफ़िरों की कौम पर हमारी मदद फ़रमा। (147)

तो अल्लाह ने उन्हें इन्ज़ाम दिया दुनिया का और आखिरत का अच्छा इन्ज़ाम, और अल्लाह एहसान करने वालों को दोस्त रखता है। (148)

ऐ ईमान वालो! अगर तुम काफ़िरों का कहा मानोगे तो वह तुम्हें एड़ियों पर (उलटे पाऊँ) फेर देंगे फिर तुम घाटे में पलट जाओगे। (149)

बल्कि अल्लाह तुम्हारा मददगार है और वह सब से बेहतर मददगार है। (150)

हम अनकरीब काफ़िरों के दिलों में रुअब डाल देंगे इस लिए कि उन्होंने ने अल्लाह का शरीक किया जिस की उस ने कोई सनद नहीं उतारी, और उन का ठिकाना दोज़ख़ है, और बुरा ठिकाना है ज़ालिमों का। (151)

और अलबत्ता अल्लाह ने तुम से अपना वादा सच्चा कर दिखाया जब तुम उन्हें उस के हुक्म से क़त्ल करने लगे यहां तक कि जब तुम ने बुज़दिली की और काम में झगड़ा किया और उस के बाद नाफ़रमानी की जबकि तुम्हें दिखाया जो तुम चाहते थे, तुम में से कोई दुनिया चाहता था और तुम में से कोई आखिरत चाहता था, फिर उस ने तुम्हें उन से पस्या कर दिया ताकि तुम्हें आज़माएँ, और तहकीक़ उस ने तुम्हें माफ़ कर दिया, और अल्लाह मोमिनों पर फ़ज़ल करने वाला है। (152)

जब तुम (मुँह उठा कर) चढ़ते जाते थे और किसी को पीछे मुड़ कर न देखते थे और रसूल (स) तुम्हारे पीछे से तुम्हें पुकारते थे, फिर तुम्हें ग़म पर ग़म पहुँचा ताकि तुम रंज न करो उस पर जो (तुम्हारे हाथ से) निकल गया और न (उस पर) जो तुम्हें पेश आए, और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (153)

فَاتَهُمُ اللَّهُ ثَوَابِ الدُّنْيَا وَحُسْنِ ثَوَابِ الْآخِرَةِ ۖ						
इन्ज़ाम-ए-आखिरत	और अच्छा	दुनिया	इन्ज़ाम	तो उन्हें दिया अल्लाह		
وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٤٨﴾ يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا						
ईमान लाए	लोग जो	ऐ	148	एहसान करने वाले	दोस्त रखता है	और अल्लाह
إِنْ تُطِيعُوا الَّذِينَ كَفَرُوا يَرُدُّوكُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا						
फिर तुम पलट जाओगे	तुम्हारी एड़ियाँ	पर		जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	अगर तुम कहा मानोगे	
خُسْرَيْنِ ﴿١٤٩﴾ بَلِ اللَّهُ مَوْلَاكُمْ ۖ وَهُوَ خَيْرُ النَّاصِرِينَ ﴿١٥٠﴾						
150	मददगार (जमा)	बेहतर	और वह	तुम्हारा मददगार	बल्कि अल्लाह	149 घाटे में
سَنُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَا أَشْرَكُوا						
इस लिए कि उन्होंने ने शरीक किया	रुअब	जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	दिल (जमा)	में	अनकरीब हम डाल देंगे	
بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ سُلْطَانًا ۖ وَمَأْوَاهُمُ النَّارُ						
दोज़ख़	और उन का ठिकाना	कोई सनद	उस की	नहीं उतारी	जिस	अल्लाह का
وَبِئْسَ مَثْوَى الظَّالِمِينَ ﴿١٥١﴾ وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللَّهُ وَعْدَهُ						
अपना वादा	सच्चा कर दिया तुम से अल्लाह	और अलबत्ता	151	ज़ालिम (जमा)	ठिकाना	और बुरा
إِذْ تَحْسُونَهُمْ بِإِذْنِهِ حَتَّىٰ إِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَارَعْتُمْ						
और झगड़ा किया	तुम ने बुज़दिली की	जब	यहां तक कि	उस के हुक्म से	तुम क़त्ल करने लगे उन्हें	जब
فِي الْأَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِمَّنْ بَعْدَ مَا أَرْكَبْتُمْ ۖ فَكَفَرْتُمْ						
तुम चाहते थे	जो	जब तुम्हें दिखाया	उस के बाद	और तुम ने नाफ़रमानी की	काम में	
مِنْكُمْ مَّنْ يُرِيدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۖ						
आखिरत	जो चाहता था	और तुम से	दुनिया	जो चाहता था	तुम से	
ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۖ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ۗ						
तुम से (तुम्हें)	माफ़ किया	और तहकीक़	ताकि तुम्हें आज़माएँ	उन से	तुम्हें फेर दिया	फिर
وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَلَىٰ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٥٢﴾ إِذْ تُصْعِدُونَ وَلَا						
और न	तुम चढ़ते थे	जब	152	मोमिन (जमा)	पर	फ़ज़ल करने वाला और अल्लाह
تَلُونَ عَلَىٰ أَحَدٍ ۖ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ فِي أَحْرَابِكُمْ						
तुम्हारे पीछे से	तुम्हें पुकारते थे	और रसूल (स)	किसी को	मुड़ कर देखते थे		
فَأَثَابَكُمْ غَمًّا بِغَمِّ لَكِيلًا تَحْزَنُوا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ						
जो तुम से निकल गया	पर	तुम रंज करो	ताकि न	ग़म पर ग़म	फिर तुम्हें पहुँचाया	
وَلَا مَا أَصَابَكُمْ ۗ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٥٣﴾						
153	उस से जो तुम करते हो	बाख़बर	और अल्लाह	तुम्हें पेश आए	जो	और न



ثُمَّ أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ بَعْدِ الْغَمِّ أَمَنَةً نُّعَاسًا يَغْشَى طَآئِفَةً مِّنْكُمْ ۖ										
तुम में से	एक जमाअत	ढाँक लिया	ऊँघ	अमन	ग़म	बाद	तुम पर	उस ने उतारा	फिर	
وَطَآئِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ أَنفُسُهُمْ يَظُنُّونَ بِاللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ										
वे हकीकत	अल्लाह के बारे में	वह गुमान करते थे	अपनी जानें	उन्हें फिक्र पड़ी थी	और एक जमाअत					
ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةُ يَقُولُونَ هَلْ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ مِنْ شَيْءٍ قُلْ إِنَّ الْأَمْرَ										
काम	कि	आप कह दें	कुछ	काम	से	हमारे लिए	क्या	वह कहते थे	जाहिलियत	गुमान
كُلَّهُ لِلَّهِ يُخْفُونَ فِي أَنفُسِهِمْ مَا لَا يُبْدُونَ لَكَ يَقُولُونَ لَوْ كَانَ										
अगर होता	वह कहते हैं	आप के लिए (पर)	ज़ाहिर नहीं करते	जो	अपने दिल	में	वह छुपाते हैं	तमाम - अल्लाह के लिए		
لَنَا مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ مَا قَتَلْنَا هُنَا قُلْ لَوْ كُنْتُمْ فِي بُيُوتِكُمْ										
अपने घर (जमा)	में	अगर तुम होते	आप कह दें	यहां	हम न मारे जाते	थोड़ा सा इख़्तियार	हमारे लिए			
لَبَرَزَ الَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ إِلَىٰ مَضَاجِعِهِمْ وَلِيَبْتَلِيَ اللَّهُ										
और ताकि आज़माए अल्लाह	अपनी कतलगाह (जमा)	तरफ़	मारा जाना	उन पर	लिखा था	ज़रूर निकल खड़े होते वह लोग				
مَا فِي صُدُورِكُمْ وَلِيَمَحَّصَ مَا فِي قُلُوبِكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ										
जानने वाला	और अल्लाह	तुम्हारे दिल	में	जो	और ताकि साफ़ कर दे	तुम्हारे सीनों में	जो			
بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١٥٤﴾ إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ										
आमने सामने हुई दो जमाअतें	दिन	तुम में से	पीठ फेरेंगे	जो लोग	वेशक	154	सीनों वाले (दिलों के भेद)			
إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا ۖ وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ ۗ										
उन से	माफ़ कर दिया अल्लाह	और अलवत्ता	जो उन्होंने ने कमाया (आमाल)	बाज़ की वजह से	शैतान	दरहकीकत उन को फिसला दिया				
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٥٥﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا										
न हो जाओ	ईमान वालो (ईमान लाए)	जो लोग	ऐ	155	हिलम वाला	बख़्शाने वाला	वेशक अल्लाह			
كَالَّذِينَ كَفَرُوا وَقَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ إِذَا ضَرَبُوا فِي الْأَرْضِ										
वह सफ़र करें ज़मीन (राह) में	जब	अपने भाइयों को	और वह कहते हैं	काफ़िर	उन लोगों की तरह					
أَوْ كَانُوا غَزَىٰ لَوْ كَانُوا عِنْدَنَا مَا مَاتُوا وَمَا قُتِلُوا ۗ لِيَجْعَلَ اللَّهُ										
ताकि बना दे अल्लाह	और न मारे जाते	वह मरते	न	हमारे पास	अगर वह होते	जंग में हों	या			
ذَلِكَ حَسْرَةٌ فِي قُلُوبِهِمْ ۗ وَاللَّهُ يُحْيِي وَيُمِيتُ										
और मारता है	ज़िन्दा करता है	और अल्लाह	उन के दिल	में	हस्रत	यह - उस				
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١٥٦﴾ وَلَئِن قُتِلْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ										
अल्लाह की राह	में	तुम मारे जाओ	और अलवत्ता अगर	156	देखने वाला	तुम करते हो	जो कुछ	और अल्लाह		
أَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿١٥٧﴾										
157	वह जमा करते हैं	उस से जो	बेहतर	और रहमत	अल्लाह (की तरफ़) से	यकीनन बख़्शिश	या तुम मर जाओ			

फिर उस ने तुम पर ग़म के बाद अमन ऊँघ (की सूत में) उतारी, एक जमाअत को ढाँक लिया तुम में से, और एक जमाअत को अपनी जान की फ़िक्र पड़ी थी, वह अल्लाह के बारे में वे हकीकत गुमान करते थे जाहिलियत के गुमान, वह कहते थे क्या कोई काम कुछ हमारे लिए (हमारे इख़्तियार में) है? आप (स) कह दें, कि तमाम काम अल्लाह के लिए (अल्लाह के इख़्तियार में) है, वह अपने दिलों में छुपाते हैं जो आप के लिए (आप पर) ज़ाहिर नहीं करते, वह कहते हैं अगर कुछ काम हमारे लिए (हमारे इख़्तियार में) होता तो हम यहां न मारे जाते, आप कह दें अगर तुम अपने घरों में होते तो जिन पर (जिन की किस्मत में) मारा जाना लिखा था वह ज़रूर निकल खड़े होते अपनी कतलगाहों की तरफ़, ताकि अल्लाह आज़माए जो तुम्हारे सीनों में है, और ताकि साफ़ कर दे जो तुम्हारे दिलों में है, और अल्लाह दिलों के भेद खूब जानने वाला है। (154)

वेशक जो लोग तुम में से पीठ फेर गए जिस दिन दो जमाअतें आमने सामने हुई, दरहकीकत उन्हें शैतान ने फिसलाया उन के बाज़ आमाल की वजह से, और अलवत्ता अल्लाह ने उन्हें माफ़ कर दिया, वेशक अल्लाह बख़्शाने वाला बर्दाह है। (155)

ऐ ईमान वालो! तुम उन लोगों की तरह न हो जाओ जो काफ़िर हुए और वह कहते हैं अपने भाइयों को जब वह सफ़र करें ज़मीन में या जंग में शरीक हों, अगर वह होते हमारे पास तो वह न मरते और न मारे जाते, ताकि अल्लाह उस को हस्रत बना दे उन के दिलों में, और अल्लाह (ही) ज़िन्दा करता है और मारता है, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह देखने वाला है। (156)

और अगर तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ या तुम मर जाओ तो यकीनन बख़्शिश और रहमत है अल्लाह की तरफ़ से, (यह) उस से बेहतर है जो वह (दौलत) जमा करते हैं। (157)

11  
ع  
2

और अगर तुम मर गए या मार दिए गए तो यकीनन अल्लाह की तरफ़ इकट्ठे किए जाओगे। (158)

पस अल्लाह की रहमत (ही) से है कि आप (स) उन के लिए नरम दिल हैं, और अगर तुन्दखू सख्त दिल होते तो वह आप (स) के पास से मुन्तशिर हो जाते, पस आप (स) माफ़ कर दें उन्हें और उन के लिए बख्शिश मांगें, और काम में उन से मश्वरा कर लिया करें, फिर जब आप (स) (पुख्ता) इरादा कर लें तो अल्लाह पर भरोसा करें, वेशक अल्लाह भरोसा करने वालों को दोस्त रखता है। (159)

अगर अल्लाह तुम्हारी मदद करे तो तुम पर कोई ग़ालिब आने वाला नहीं, और अगर वह तुम्हें छोड़ दे तो कौन है जो तुम्हारी मदद करे उस के बाद, और चाहिए कि ईमान वाले अल्लाह पर भरोसा करें। (160)

और नबी के लिए (शायान) नहीं कि वह छुपाए, और जो छुपाएगा वह अपनी छुपाई हुई चीज़ क़ियामत के दिन लाएगा, फिर पूरा पूरा पाएगा हर शख्स जो उस ने कमाया (अमल किया) और वह जुल्म नहीं किए जाएंगे। (161)

तो क्या जिस ने पैरवी की रज़ाए इलाही (अल्लाह की खुशनुदी की) उस के मानिन्द है जो अल्लाह के गुस्से के साथ लौटा? और उस का ठिकाना जहन्नम है, और (वहुत) बुरा ठिकाना है। (162)

उन के (मुखतलिफ़) दरजे हैं अल्लाह के पास, और वह जो कुछ करते हैं अल्लाह देखने वाला है। (163)

वेशक अल्लाह ने ईमान वालों (मोमिनीन) पर एहसान किया जब उन में एक रसूल (स) भेजा उन में से, वह उन पर उस की आयतें पढ़ता है, और उन्हें पाक करता है, और उन्हें किताब ओ हिक्मत सिखाता है, और वेशक वह उस से कब्ल अलबत्ता खुली गुमराही में थे। (164)

क्या जब तुम्हें पहुँची कोई मुसीबत, अलबत्ता तुम उस से दो चंद पहुँचा चुके थे, तुम कहते हो यह कहां से आई? आप कह दें वह तुम्हारे अपने (ही) पास से, वेशक अल्लाह हर चीज़ पर कादिर है। (165)

وَلَيْنَ مُتِّمٌ أَوْ قَتِلْتُمْ لِيَالِي اللَّهِ تُحْشَرُونَ ﴿١٥٨﴾ فَبِمَا رَحْمَةٍ									
रहमत	पस - से	158	तुम इकट्ठे किए जाओगे	यकीनन अल्लाह की तरफ़	तुम मार दिए गए	या	तुम मर गए	और अगर	
مِّنَ اللَّهِ لِنْتَ لَهُمْ ۖ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوا مِنْ حَوْلِكَ ۗ									
आप (स) के पास	से	तो वह मुन्तशिर हो जाते	सख्त दिल	तुन्दखू	और अगर आप (स) होते	उन के लिए	नरम दिल	अल्लाह (की तरफ़) से	
فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ ۗ									
काम	में	और मश्वरा करें उन से	उन के लिए	और बख्शिश मांगें	उन से (उन्हें)	आप (स) माफ़ कर दें			
فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ ﴿١٥٩﴾									
159	भरोसा करने वाले	दोस्त रखता है	वेशक अल्लाह	अल्लाह पर	तो भरोसा करें	आप (स) इरादा कर लें	फिर जब		
إِنَّ يَنْصُرْكُمْ اللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۗ وَإِنْ يَخْذَلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِي									
जो कि	वह	तो कौन?	वह तुम्हें छोड़ दे	और अगर	तुम पर	तो नहीं ग़ालिब आने वाला	अल्लाह	वह मदद करे तुम्हारी	अगर
يَنْصُرْكُمْ مِّنْ بَعْدِهِ ۗ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٦٠﴾ وَمَا كَانَ									
था - है	और नहीं	160	ईमान वाले	चाहिए कि भरोसा करें	और अल्लाह पर	उस के बाद	वह तुम्हारी मदद करे		
لِنَبِيِّ أَنْ يُغَلِّ ۗ وَمَنْ يَّغُلْ يَأْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ									
क़ियामत के दिन	जो उस ने छुपाया	लाएगा	छुपाएगा	और जो	कि छुपाए	नबी के लिए			
ثُمَّ تُؤَفِّي كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٦١﴾ أَفَمَنْ أَتَّبَعِ									
पैरवी की	तो क्या जिस	161	जुल्म न किए जाएंगे	और वह	उस ने कमाया	जो	हर शख्स	पूरा पाएगा	फिर
رِضْوَانَ اللَّهِ كَمَنْ بَاءَ بِسَخِطٍ مِّنَ اللَّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ ۗ									
जहन्नम	और उस का ठिकाना	अल्लाह के	गुस्से के साथ	लौटा	मानिन्द - जो	अल्लाह	रज़ा (खुशनुदी)		
وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٦٢﴾ هُمْ دَرَجَاتٌ عِنْدَ اللَّهِ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا									
जो	देखने वाला	और अल्लाह	अल्लाह के पास	दरजे	वह - उन	162	ठिकाना	और बुरा	
يَعْمَلُونَ ﴿١٦٣﴾ لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا									
एक रसूल	उन में	जब भेजा	ईमान वाले (मोमिनीन)	पर	अल्लाह ने एहसान किया	अलबत्ता वेशक	163	वह करते हैं	
مِّنْ أَنْفُسِهِمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ									
किताब	और उन्हें सिखाता है	और उन्हें पाक करता है	उस की आयतें	उन पर	वह पढ़ता है	उन की जानें (उन के दरमियान)	से		
وَالْحِكْمَةَ ۗ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿١٦٤﴾									
164	खुली	गुमराही	अलबत्ता - में	उस से कब्ल	वह थे	और वेशक	और हिक्मत		
أَوْلَمَّا أَصَابَتْكُمْ مُّصِيبَةٌ قَدْ أَصَبْتُمْ مِثْلَيْهَا ۗ فَلْتُمْ إِلَىٰ هَذَا ۗ									
कहां से यह?	तुम कहते हो	उस से दो चंद	अलबत्ता तुम ने पहुँचाई	कोई मुसीबत	तुम्हें पहुँची	क्या जब			
قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ أَنْفُسِكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٦٥﴾									
165	कादिर	शै	हर पर	वेशक अल्लाह	तुम्हारी जानें (अपने पास)	पास से	वह	आप कह दें	

<p>وَمَا أَصَابَكُمْ يَوْمَ التَّقِي الْجَمْعِن فَبَادِنِ اللّٰهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٦٦﴾</p>								
166	ईमान वाले	और ताकि वह मालूम कर ले	तो अल्लाह के हुक्म से	दो जमाअतों	मुडभेड़ हुई	दिन	तुम्हें पहुँचा	और जो
<p>وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ نَافَقُوا ۗ وَقِيلَ لَهُمْ تَعَالُوا قَاتِلُوا</p>								
लड़ो	आओ	उन्हें	और कहा गया	मुनाफिक हुए	वह जो कि	और ताकि जान ले		
<p>فِي سَبِيلِ اللّٰهِ أَوْ ادْفَعُوا ۗ قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّاتَّبَعْنَاكُمْ ۗ</p>								
ज़रूर तुम्हारा साथ देते	जंग	अगर हम जानते	वह बोले	दिफ़ाअ करो	या	अल्लाह की राह	में	
<p>هُم لِّلْكَفْرِ يَوْمَئِذٍ أَقْرَبُ مِنْهُمْ لِّلْإِيمَانِ ۗ يَقُولُونَ بِأَفْوَاهِهِمْ</p>								
अपने मुँह से	वह कहते हैं	व निसबत ईमान	उन से	ज़ियादा करीब	उस दिन	कुफ़ के लिए (कुफ़ से)	वह	
<p>مَا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ ۗ وَاللّٰهُ أَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُونَ ﴿١٦٧﴾ الَّذِينَ قَالُوا</p>								
उन्होंने ने कहा	वह लोग जो	167	वह छुपाते हैं	जो	खूब जानने वाला	और अल्लाह	उन के दिलों में	जो नहीं
<p>لِإِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوا لَوْ أَطَاعُونَا مَا قُتِلُوا ۗ قُلْ فَادْرَأُوا عَنْ</p>								
से	तुम हटा दो	कह दीजिए	वह न मारे जाते	वह हमारी मानते	अगर	और वह बैठे रहे	अपने भाइयों के बारे में	
<p>أَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٦٨﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا</p>								
मारे गए	जो लोग	हरगिज़ खयाल करो	और न	168	सच्चे	तुम हो	अगर	मौत अपनी जानें
<p>فِي سَبِيلِ اللّٰهِ أَمْوَاتًا ۗ بَلْ أَحْيَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ﴿١٦٩﴾</p>								
169	वह रिज़क़ दिए जाते हैं	अपना रब	पास	ज़िन्दा (जमा)	बल्कि	मुर्दा (जमा)	अल्लाह का रास्ता	में
<p>فَرِحِينَ بِمَا آتَاهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهِ ۗ وَيَسْتَبْشِرُونَ بِالَّذِينَ لَمْ</p>								
नहीं	उन की तरफ़ से जो	और खुश वक़्त है	अपने फ़ज़ल से	उन्हें अल्लाह ने दिया	से-जो	खुश		
<p>يَلْحَقُوا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ ۗ أَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١٧٠﴾</p>								
170	ग़मगीन होंगे	वह	और न	उन पर	कोई खौफ़	यह कि नहीं	उन के पीछे	से उन से मिले
<p>يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ ۗ وَأَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيعُ</p>								
ज़ाया नहीं करता	और यह कि अल्लाह	और फ़ज़ल	अल्लाह	से	नेमत से	वह खुशियां मना रहे हैं		
<p>أَجْرَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٧١﴾ الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِلّٰهِ وَالرَّسُولِ مِنْ بَعْدِ مَا</p>								
कि	वाद	और रसूल	अल्लाह का	कुबूल किया	जिन लोगों ने	171	ईमान वाले	अज़र
<p>أَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۗ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا مِنْهُمْ وَاتَّقُوا ۗ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٧٢﴾</p>								
172	बड़ा	अज़र	और परहेज़गारी की	उन में से	उन्होंने ने नेकी की	उन के लिए जो	ज़हम	पहुँचा उन्हें
<p>الَّذِينَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ</p>								
पस उन से डरो	तुम्हारे लिए	जमा किया है	लोग	कि	लोग	उन के लिए	कहा	वह लोग जो
<p>فَرَادَهُمْ إِيمَانًا ۗ وَقَالُوا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ﴿١٧٣﴾</p>								
173	कारसाज़	और कैसा अच्छा	हमारे लिए काफी है अल्लाह	और उन्होंने ने कहा	ईमान	तो ज़ियादा हुआ उन का		

और तुम्हें जो (तकलीफ) पहुँची जिस दिन दो जमाअतों में मुडभेड़ हुई तो अल्लाह के हुक्म से (पहुँची) ताकि वह मालूम कर ले ईमान वालों को। (166)

और ताकि जान ले उन लोगों को जो मुनाफिक हुए, और उन्हें कहा गया: आओ! अल्लाह की राह में लड़ो या दिफ़ाअ करो, तो वह बोले अगर हम जंग जानते तो ज़रूर तुम्हारा साथ देते, वह उस दिन कुफ़ से ज़ियादा करीब थे व निसबत ईमान के, वह अपने मुँह से कहते हैं जो उन के दिलों में नहीं, और अल्लाह खूब जानने वाला है जो वह छुपाते हैं। (167)

वह लोग जिन्होंने ने अपने भाइयों के बारे में कहा और खुद बैठे रहे अगर वह हमारी बात मानते तो वह न मारे जाते, कह दीजिए! तुम अपनी जानों से मौत को हटा दो अगर तुम सच्चे हो। (168)

जो लोग अल्लाह की राह में मारे गए उन्हें हरगिज़ खयाल न करो मुर्दा, बल्कि वह ज़िन्दा हैं अपने रब के पास से वह रिज़क़ पाते हैं। (169)

खुश है उस से जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़ल से दिया, और वह उन लोगों की तरफ़ से खुश वक़्त है जो नहीं मिले उन से उन के पीछे, उन पर न कोई खौफ़ है और न वह ग़मगीन होंगे। (170)

वह खुशियां मना रहे हैं अल्लाह की नेमत और फ़ज़ल से, और यह कि अल्लाह ज़ाया नहीं करता ईमान वालों का अज़र। (171)

जिन लोगों ने अल्लाह और उस के रसूल का (हुक्म) कुबूल किया उस के बाद कि उन्हें ज़हम पहुँचा, उन में से जिन लोगों ने नेकी और परहेज़गारी की उन के लिए बड़ा अज़र है। (172)

जिन्हें लोगों ने कहा कि लोगों ने तुम्हारे (मुक़ाबले के लिए सामान) जमा कर लिया है, पस उन से डरो तो उन का ईमान ज़ियादा हुआ, और उन्होंने ने कहा हमारे लिए अल्लाह काफी है और वह कैसा अच्छा कारसाज़ है! (173)

وقف الام

١٦٨

١٧٣

फिर वह लौटे अल्लाह की नेमत और फज़ल के साथ, उन्हें कोई बुराई न पहुँची, और उन्होंने न पैरवी की रज़ाए इलाही की, और अल्लाह बड़े फज़ल वाला है। (174)

इस के सिवा नहीं कि शैतान तुम्हें डराता है अपने दोस्तों से, सो तुम उन से न डरो और मुझ से डरो अगर तुम ईमान वाले हो। (175)

और आप को ग़मगीन न करें वह लोग जो कुफ़्र में दौड़ धूप करते हैं, यकीनन वह हरगिज़ अल्लाह का न बिगाड़ सकेंगे कुछ, अल्लाह चाहता है कि उन को आख़िरत में कोई हिस्सा न दे, और उन के लिए अज़ाब है बड़ा। (176)

वेशक जिन लोगों ने ईमान के बदले कुफ़्र मोल लिया वह हरगिज़ नहीं बिगाड़ सकते अल्लाह का कुछ, और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (177)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह हरगिज़ गुमान न करें कि हम जो उन्हें ढील दे रहे हैं यह उन के लिए बेहतर है, दरहकीकत हम उन्हें ढील देते हैं ताकि वह गुनाह में बड़ जाएं, और उन के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है। (178)

अल्लाह (ऐसा) नहीं है कि ईमान वालों को (इस हाल पर) छोड़ दे जिस पर तुम हो यहां तक कि नापाक को पाक से जुदा कर दे, और अल्लाह (ऐसा) नहीं है कि तुम्हें ग़ैब की ख़बर दे, लेकिन अल्लाह अपने रसूलों में से जिस को चाहे चुन लेता है, तो तुम अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाओ, और अगर तुम ईमान लाओ और परहेज़गारी करो तो तुम्हारे लिए बड़ा अजर है। (179)

और वह लोग हरगिज़ यह ख़याल न करें जो उस (माल) में बुख़ल करते हैं जो अल्लाह ने अपने फ़ज़ल से उन्हें दिया कि वह बेहतर है उन के लिए, बल्कि वह उन के लिए बुरा है, जिस (माल) में उन्होंने ने बुख़ल किया अनक़रीब क़ियामत के दिन तौक़ (बना कर) पहनाया जाएगा, और अल्लाह ही वारिस है आस्मानों का और ज़मीन का, और जो तुम करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (180)

فَانْقَلَبُوا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمَسَّهُمْ سُوءٌ ۙ وَاتَّبَعُوا							
और उन्होंने ने पैरवी की	कोई बुराई	उन्हें नहीं पहुँची	और फ़ज़ल	अल्लाह	से	नेमत के साथ	फिर वह लौटे
رِضْوَانَ اللَّهِ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَظِيمٍ (١٧٤) إِنَّمَا ذِكْمُ الشَّيْطَانِ							
शैतान	यह तुम्हें	इस के सिवा नहीं	174	बड़ा	फ़ज़ल वाला	और अल्लाह	अल्लाह की रज़ा
يُخَوِّفُ أَوْلِيَاءَهُ ۖ فَلَا تَخَافُوهُمْ وَخَافُونَ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ (١٧٥)							
175	ईमान वाले	तुम हो	अगर	और डरो मुझ से	उन से डरो	सो न	अपने दोस्त डराता है
وَلَا يَحْزُنكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ إِنَّهُمْ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا ۗ							
कुछ	अल्लाह	हरगिज़ न बिगाड़ सकेंगे	यकीनन वह	कुफ़्र में	दौड़ धूप करते हैं	जो लोग	आप को ग़मगीन करें और न
يُرِيدُ اللَّهُ أَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حِزَابًا فِي الْآخِرَةِ ۗ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ (١٧٦)							
176	बड़ा	अज़ाब	और उन के लिए	आख़िरत में	कोई हिस्सा	उन को	दे कि न चाहता है अल्लाह
إِنَّ الَّذِينَ اشْتَرُوا الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا ۗ وَلَهُمْ							
और उन के लिए	कुछ	बिगाड़ सकते अल्लाह का	हरगिज़ नहीं	ईमान के बदले	कुफ़्र	उन्होंने ने मोल लिया	वह लोग जो वेशक
عَذَابٌ أَلِيمٌ (١٧٧) وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّمَا نُمَلِّئُ لَهُمْ خَيْرٌ							
बेहतर	उन्हें	हम ढील देते हैं	यह कि	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	हरगिज़ गुमान करें	और न	177 दर्दनाक अज़ाब
لِّأَنفُسِهِمْ ۗ إِنَّمَا نُمَلِّئُ لَهُمْ لِيَزْدَادُوا إِثْمًا ۗ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ (١٧٨)							
178	ज़लील करने वाला	अज़ाब	और उन के लिए	गुनाह	ताकि वह बड़ जाएं	उन्हें	हम ढील देते हैं दरहकीकत उन के लिए
مَا كَانَ اللَّهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَىٰ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتَّىٰ							
यहां तक कि	उस पर	तुम	जो	पर	ईमान वाले	कि छोड़े	अल्लाह नहीं है
يَمِينِزَ الْخَبِيثِ مِنَ الطَّيِّبِ ۗ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُظْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ							
ग़ैब	पर	कि तुम्हें ख़बर दे	अल्लाह	और नहीं है	पाक	से	नापाक जुदा कर दे
وَلَكِنَّ اللَّهَ يَجْتَبِيٰ مِنْ رُّسُلِهِ مَنْ يَشَاءُ ۗ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهِ ۗ							
और उस के रसूल	अल्लाह पर	तो तुम ईमान लाओ	वह चाहे	जिस को	अपने रसूल	से	चुन लेता है और लेकिन अल्लाह
وَإِنْ تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا فَلَكُمْ أَجْرٌ عَظِيمٌ (١٧٩) وَلَا يَحْسَبَنَّ							
हरगिज़ ख़याल करें	और न	179	बड़ा	अजर	तो तुम्हारे लिए	और परहेज़गारी करो	तुम ईमान लाओ और अजर
الَّذِينَ يَبْخَلُونَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ۗ							
उन के लिए	बेहतर	वह	अपने फ़ज़ल से	उन्हें दिया अल्लाह ने	में-जो	बुख़ल करते हैं	जो लोग
بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ۗ سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخَلُوا بِهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ							
क़ियामत	दिन	उस में	उन्होंने ने बुख़ल किया	जो	अनक़रीब तौक़ पहनाया जाएगा	उन के लिए	बुरा वह बल्कि
وَاللَّهُ مِيرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ (١٨٠)							
180	बाख़बर	जो तुम करते हो	और अल्लाह	और ज़मीन	आस्मानों	और अल्लाह के लिए	मीरास

لَقَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ فَقِيرٌ وَنَحْنُ أَغْنِيَاءُ ۗ							
मालदार	और हम	फ़कीर	कि अल्लाह	कहा	जिन लोगों ने	कौल (बात)	अलबत्ता सुन लिया अल्लाह ने
سَنَكْتُبُ مَا قَالُوا وَقَتْلُهُمُ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۗ							
नाहक	नबी (जमा)	और उन का कत्ल करना	जो उन्होंने ने कहा	अब हम लिख रखेंगे			
وَنَقُولُ ذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿١٨١﴾ ذَلِكَ بِمَا قَدَّمْتُمْ							
आगे भेजा	बदला - जो	यह	181	जलाने वाला	अज़ाब	तुम चखो	और हम कहेंगे
أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿١٨٢﴾ الَّذِينَ قَالُوا							
कहा	जिन लोगों ने	182	बन्दों पर	जुल्म करने वाला	नहीं	और यह कि अल्लाह	तुम्हारे हाथ
إِنَّ اللَّهَ عَهِدَ إِلَيْنَا إِلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُولٍ حَتَّىٰ يَأْتِينَا							
वह लाए हमारे पास	यहाँ तक कि	किसी रसूल पर	हम ईमान लाए	कि न	हम से	अहद किया	कि अल्लाह
بِقُرْبَانٍ تَأْكُلُهُ النَّارُ قُلْ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّن قَبْلِي بِالْبَيِّنَاتِ							
निशानियों के साथ	मुझ से पहले	बहुत से रसूल	अलबत्ता तुम्हारे पास आए	आप कह दें	आग	जिसे खा ले	कुरबानी
وَبِالَّذِي قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوهُمْ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٨٣﴾							
183	सच्चे	तुम हो	अगर	तुम ने उन्हें कत्ल किया	फिर क्यों	तुम कहते हो	और उस के साथ जो
فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقَدْ كُذِّبَ رَسُولٌ مِّن قَبْلِكَ جَاءُوا							
वह आए	आप से पहले	बहुत से रसूल	झुटलाए गए	तो अलबत्ता	वह झुटलाए आप (स) को	फिर अगर	
بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ﴿١٨٤﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ							
मौत	चखना	जान	हर	184	रौशन	और किताब	और सहीफे
وَأَنَّمَا تُوقَفُونَ أَجْوَرَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَمَنْ							
फिर जो	कियामत के दिन	तुम्हारे अजर	पूरे पूरे मिलेंगे	और वेशक			
رُحِرَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا							
दुनिया	ज़िन्दगी	और नहीं	पस मुराद को पहुँचा	जन्नत	और दाखिल किया गया	दोज़ख	से दूर किया गया
إِلَّا مَتَاعَ الْغُرُورِ ﴿١٨٥﴾ لَسْبُلُونَ فِي أَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ							
और अपनी जानें	अपने माल	में	तुम ज़रूर आज़माए जाओगे	185	धोका	सौदा	सिवाए
وَلَتَسْمَعَنَّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِن قَبْلِكُمْ							
तुम से पहले	किताब दी गई	वह लोग जिन्हें	से	और ज़रूर सुनोगे			
وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا أَدَىٰ كَثِيرًا							
बहुत	दुख देने वाली	जिन लोगों ने शिर्क किया (मुश्रिक)	और - से				
وَأَنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ ذَلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ﴿١٨٦﴾							
186	काम (जमा)	हिम्मत	से	यह	तो वेशक	और परहेज़गारी करो	तुम सब्द करो और अजर

अलबत्ता अल्लाह ने उन की बात सुन ली जिन लोगों ने कहा कि अल्लाह फ़कीर है और हम मालदार हैं। अब हम लिख रखेंगे जो उन्होंने ने कहा और उन का नवियों को नाहक कत्ल करना, और कहेंगे: चखो जलाने वाला अज़ाब। (181)

यह उस का बदला है जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा और यह कि अल्लाह बन्दों पर जुल्म करने वाला नहीं। (182)

जिन लोगों ने कहा कि अल्लाह ने हम से अहद कर रखा है कि हम किसी रसूल पर ईमान न लाएँ यहाँ तक कि वह हमारे पास कुरबानी लाए जिसे आग खा ले, आप (स) कह दें अलबत्ता तुम्हारे पास मुझ से पहले बहुत से रसूल आए निशानियों के साथ और उस के साथ भी जो तुम कहते हो, फिर क्यों तुम ने उन्हें कत्ल किया अगर तुम सच्चे हो, (183)

फिर अगर वह आप को झुटलाए तो अलबत्ता झुटलाए गए हैं आप (स) से पहले बहुत से रसूल जो आए खुली निशानियों के साथ, और सहीफे और रौशन किताब (ले कर)। (184)

हर जान को मौत (का ज़ाइका) चखना है, और कियामत के दिन तुम्हारे अजर पूरे पूरे मिलेंगे, फिर जो कोई दोज़ख से दूर किया गया और जन्नत में दाखिल किया गया पस वह मुराद को पहुँचा, और दुनिया की ज़िन्दगी (कुछ) नहीं एक धोके के सौदे के सिवा। (185)

तुम अपने मालों और अपनी जानों में ज़रूर आज़माए जाओगे, और तुम ज़रूर सुनोगे उन लोगों से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई और मुश्रिकों से (भी) दुख देने वाली (बातें) बहुत सी, और अगर तुम सब्द करो और परहेज़गारी करो तो वेशक यह बड़े हिम्मत के कामों में से है। (186)

और (याद करो) जब अल्लाह ने अहले किताब से अहद लिया कि तुम उसे लोगों के लिए ज़रूर बयान करना और न उसे छुपाना, उन्होंने ने उसे अपनी पीठ पीछे फेंक दिया और उस के बदले थोड़ी कीमत हासिल की, तो कितना बुरा है जो वह खरीदते हैं! (187)

आप हरगिज़ न समझें जो लोग खुश होते हैं जो उन्होंने ने किया (अपने किए पर) और चाहते हैं कि उस पर उन की तारीफ़ की जाए जो उन्होंने ने नहीं किया, पस आप (स) उन्हें रिहा शुदा न समझें अज़ाब से, और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (188)

और अल्लाह के लिए है बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की, और अल्लाह हर शै पर क़दिर है। (189)

वेशक पैदाइश में आस्मानों की और ज़मीन की, और रात दिन के आने जाने में अक़ल वालों के लिए निशानियां हैं। (190)

जो लोग अल्लाह को खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर याद करते हैं, और ग़ौर करते हैं आस्मानों की और ज़मीन की पैदाइश में, ऐ हमारे रब! तू ने यह बेमक़सद पैदा नहीं किया, तू पाक है, तू बचा ले हमें दोज़ख़ के अज़ाब से। (191)

ऐ हमारे रब! तू ने जिस को दोज़ख़ में दाख़िल किया तो ज़रूर तू ने उस को रुसवा किया, और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। (192)

ऐ हमारे रब! वेशक हम ने एक पुकारने वाले को सुना जो ईमान की तरफ़ पुकारता है कि अपने रब पर ईमान ले आओ, सो हम ईमान लाए, ऐ हमारे रब! तो हमें बख़श दे हमारे गुनाह, और हम से हमारी बुराइयां दूर कर दे, और हमें नेकों के साथ मौत दे। (193)

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لُبِّيْنَهُ						
और जब	अल्लाह ने लिया	अहद	वह लोग जिन्हें	किताब दी गई	उसे ज़रूर बयान कर देना	
لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُونَهُ فَنَبَذُوهُ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهِ						
लोगों के लिए	और न	छुपाना उसे	तो उन्होंने ने उसे फेंक दिया	पीछे	अपनी पीठ (जमा)	हासिल की उस के बदले
ثَمَنًا قَلِيلًا فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُونَ (187) لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ						
कीमत	थोड़ी	तो कितना बुरा है जो	वह खरीदते हैं	187	आप हरगिज़ न समझें	जो लोग
يَفْرَحُونَ بِمَا آتَوْا وَيُحِبُّونَ أَنْ يُحْمَدُوا بِمَا						
खुश होते हैं	उस पर जो	उन्होंने ने किया	और वह चाहते हैं	कि	उन की तारीफ़ की जाए	उस पर जो
لَمْ يَفْعَلُوا فَلَا تَحْسَبَنَّاهُمْ بِمَفَازَةٍ مِنَ الْعَذَابِ وَلَهُمْ						
उन्होंने ने नहीं किया	पस न	समझें आप उन्हें	रिहा शुदा	से	अज़ाब	और उन के लिए
عَذَابٍ أَلِيمٍ (188) وَاللَّهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ						
अज़ाब	दर्दनाक	188	और अल्लाह के लिए बादशाहत	आस्मानों	और ज़मीन	और अल्लाह
عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (189) إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ						
पर	हर शै	क़दिर	189	वेशक	में	पैदाइश
وَإِخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَآيَاتٍ لِأُولِي الْأَلْبَابِ (190)						
और आना जाना	रात	और दिन	और निशानियां हैं	अक़ल वालों के लिए	190	
الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ قِيَمًا وَقَعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِهِمْ						
जो लोग	याद करते हैं अल्लाह को	खड़े	और बैठे	और पर	अपनी करवटें	
وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبَّنَا مَا						
और वह ग़ौर करते हैं	पैदाइश में	आस्मानों	और ज़मीन	ऐ हमारे रब	नहीं	
خَلَقْتَ هَذَا بَاطِلًا سُبْحَانَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (191)						
तू ने पैदा किया	यह	बे मक़सद	तू पाक है	तू हमें बचा ले	अज़ाब	191
رَبَّنَا إِنَّكَ مَنْ تَدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ أَخْزَيْتَهُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ						
ऐ हमारे रब	वेशक तू	जो-जिस	दाख़िल किया	आग (दोज़ख़)	तो ज़रूर	तू ने उस को रुसवा किया
और नहीं	और ज़ालिमों के लिए					
مِنْ أَنْصَارٍ (192) رَبَّنَا إِنَّا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُنَادِي						
कोई	मददगार	192	ऐ हमारे रब	वेशक हम ने	सुना	पुकारने वाला
لِإِيمَانٍ أَنْ آمِنُوا بِرَبِّكُمْ فَآمَنَّا رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا						
ईमान के लिए	कि ईमान ले आओ	अपने रब पर	सो हम ईमान लाए	ऐ हमारे रब	तो बख़श दे	हमें
ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَقَّنَا مِنَ الْآبْرَارِ (193)						
हमारे गुनाह	और दूर कर दे हम से	हमारी बुराइयां	और हमें मौत दे	नेकों के साथ	193	

19  
10

رَبَّنَا وَإِنَّا مَا وَعَدْتَنَا عَلَىٰ رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ									
कियामत के दिन	और न रुसवा कर हमें	अपने रसूल (जमा)	पर (ज़रीज़ा)	तू ने हम से वादा किया	जो	और हमें दे	ऐ हमारे रब		
إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ ﴿١٩٤﴾ فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أُضِيعُ عَمَلَ									
मेहनत	ज़ाया नहीं करता	कि मैं	उन का रब	उन के लिए	पस कुबूल की	194	वादा	नहीं खिलाफ करता	बेशक तू
عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ ۖ بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ ۗ									
वाज़ से (आपस में)	तुम में से वाज़	या औरत	मर्द से	तुम में से	कोई मेहनत करने वाला				
فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأُوذُوا فِي سَبِيلِي									
मेरी राह में	और सताए गए	अपने शहरों	से	और निकाले गए	उन्होंने ने हिज़्रत की	सो लोग			
وَقَاتِلُوا وَقَاتِلُوا لَأَكْفِرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَاَدْخَلَنَّهُمْ									
और ज़रूर उन्हें दाखिल करूँगा	उन की बुराइयाँ	उन से	मैं ज़रूर दूर करूँगा	और मारे गए	और लड़े				
جَنَّتِ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ									
अल्लाह के पास (तरफ)	से	सवाब	नहरें	उन के नीचे	से	बहती है	बागात		
وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿١٩٥﴾ لَا يَغْرُنَكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ كَفَرُوا									
जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	चलना फिरना	न धोका दे आप (स) को	195	सवाब	अच्छा	उस के पास	और अल्लाह		
فِي الْبِلَادِ ﴿١٩٦﴾ مَتَاعٌ قَلِيلٌ ثُمَّ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ									
दोज़ख़	उन का ठिकाना	फिर	थोड़ा	फाइदा	196	शहर (जमा)	में		
وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٩٧﴾ لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنَّتِ تَجْرِي									
बहती है	बागात	उन के लिए	अपना रब	डरते रहे	जो लोग	लेकिन	197	बिछौना (आराम गाह)	और कितना बुरा
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا									
और जो	अल्लाह के पास	से	मेहमानी	उस में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	से	
عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ لِّلْأَبْرَارِ ﴿١٩٨﴾ وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَنْ									
बाज़ वह जो	अहले किताब	से	और बेशक	198	नेक लोगों के लिए	बेहतर	अल्लाह के पास		
يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْهِمْ خُشِعِينَ لِلَّهِ									
अल्लाह के आगे	आजिज़ी करते हैं	उन की तरफ	नाज़िल किया गया	और जो	तुम्हारी तरफ	नाज़िल किया गया	और जो	अल्लाह पर	ईमान लाते हैं
لَا يَشْتَرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۗ أُولَٰئِكَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ									
उन का अजर	उन के लिए	यही लोग	थोड़ा	मोल	अल्लाह की आयतों का	मोल नहीं लेते			
عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿١٩٩﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اصْبِرُوا									
तुम सब्द करो	ईमान वाले	ऐ	199	हिसाब	तेज़	बेशक अल्लाह	उन का रब	पास	
وَصَابِرُوا وَرَابِطُوا ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٢٠٠﴾									
200	सुराद को पहुँचो	ताकि तुम	और डरो अल्लाह से	और जंग की तैयारी करो	और मुकाबले में मज़बूत रहो				

ऐ हमारे रब! और हमें दे जो तू ने अपने रसूलों के ज़रीए हम से वादा किया और हमें कियामत के दिन रुसवा न कर, बेशक तू नहीं खिलाफ़ करता (अपना) वादा। (194)

पस उन के रब ने (उन की दुआ) कुबूल की कि मैं किसी मेहनत करने वाले की मेहनत ज़ाया नहीं करता तुम में से मर्द हो या औरत, तुम आपस में (एक हो), सो जिन लोगों ने हिज़्रत की और अपने शहरों से निकाले गए, और मेरी राह में सताए गए और लड़े और मारे गए, मैं उन की बुराइयाँ उन से ज़रूर दूर करदूँगा और उन्हें बागात में दाखिल करूँगा, बहती है जिन के नीचे नहरें, (यह) अल्लाह की तरफ़ से सवाब है, और अल्लाह के पास अच्छा सवाब है। (195)

शहरों में काफ़िरों का चलना फिरना आप (स) को धोका न दे। (196)

(यह) थोड़ा सा फाइदा है, फिर उन का ठिकाना दोज़ख़ है, और वह कितनी बुरी आराम गाह है? (197)

जो लोग अपने रब से डरते रहे उन के लिए बागात है जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे, मेहमानी है अल्लाह के पास से, और जो अल्लाह के पास है नेक लोगों के लिए बेहतर है। (198)

और बेशक अहले किताब में से बाज़ वह है जो ईमान लाए हैं अल्लाह पर और जो तुम्हारी तरफ़ नाज़िल किया गया और जो उन की तरफ़ नाज़िल किया गया, अल्लाह के आगे आजिज़ी करते हैं, अल्लाह की आयतों के बदले थोड़ा मोल नहीं लेते, यही लोग हैं उन के लिए उन के रब के पास अजर है, बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (199)

ऐ ईमान वालो! तुम सब्द करो, और मुकाबले में मज़बूत रहो, और जंग की तैयारी करो, और अल्लाह से डरो, ताकि तुम मुराद को पहुँचो। (200)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

ऐ लोगो! अपने रब से डरो जिस ने तुम्हें एक जान (आदम अ) से पैदा किया और उसी से उस का जोड़ा पैदा किया, और उन दोनों से फैलाए बहुत से मर्द और औरतें, और अल्लाह से डरो जिस के नाम पर तुम आपस में मांगते हो और (खयाल रखो) रिश्तों का, बेशक अल्लाह है तुम पर निगहवान। (1)

और यतीमों को उन के माल दो और न बदलो नापाक (हराम) को पाक (हलाल) से, और उन के माल न खाओ अपने मालों के साथ (मिला कर), बेशक यह बड़ा गुनाह है। (2)

और अगर तुम को डर हो कि यतीम (के हक) में इन्साफ़ न कर सकोगे तो निकाह कर लो जो औरतें तुम्हें भली लगें, दो दो और तीन तीन और चार चार, फिर अगर तुम्हें अन्देशा हो कि इन्साफ़ न कर सकोगे तो एक ही, या जिस लौडी के तुम मालिक हो, यह उस के करीब है कि न झुक पड़ोगे। (3)

और औरतों को उन के मेहर खुशी से दे दो, फिर अगर वह खुशी से तुम्हें छोड़ दें उस में से कुछ तो उसे मज़ेदार खुशगवार समझ कर खाओ। (4)

और न दो बेज़रक़लों को अपने माल जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए सहारा (गुज़रान का ज़रीआ) बनाया है और उन्हें उस से खिलाने और पहनाते रहो, और कहो उन से मज़रूफ़ बात। (5)

<p>آيَاتُهَا ١٧٦ ﴿٤﴾ سُورَةُ النَّسَاءِ ﴿٤﴾ ﴿٤﴾ رُكُوعَاتُهَا ٢٤</p>							
रुकुआत 24		(4) सूरतुन निसा (औरतें)				आयात 176	
<p>بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ</p>							
<p>अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है</p>							
<p>يَأْتِيهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ</p>							
जान	से	तुम्हें पैदा किया	वह जिस ने	अपना रब	डरो	लोगो	ऐ
<p>وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا</p>							
बहुत	मर्द (जमा)	दोनों से	और फैलाए	जोड़ा उस का	उस से	और पैदा किया	एक
<p>وَنِسَاءً ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ</p>							
और रिश्ते	उस से (उस के नाम पर)	आपस में मांगते हो	वह जो	और अल्लाह से डरो	और औरतें		
<p>إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا ﴿١﴾ وَآتُوا الْيَتَامَىٰ أَمْوَالَهُمْ</p>							
उन के माल	यतीम (जमा)	और दो	1	निगहवान	तुम पर	है	बेशक अल्लाह
<p>وَلَا تَبَدَّلُوا الْخَبِيثَ بِالطَّيِّبِ وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَهُمْ</p>							
उन के माल	खाओ	और न	पाक से	नापाक	बदलो	और न	
<p>إِلَىٰ أَمْوَالِكُمْ ۗ إِنَّهُ كَانَ حُوبًا كَبِيرًا ﴿٢﴾ وَإِنْ حِفْظٌ إِلَّا</p>							
कि न	तुम डरो	और अगर	2	बड़ा	गुनाह	है	बेशक अपने माल तरफ (साथ)
<p>تُقْسَطُوا فِي الْيَتَامَىٰ فَانكِحُوا مَا طَابَ لَكُمْ</p>							
तुम्हें	पसन्द हो	जो	तो निकाह कर लो	यतीमों	में	इन्साफ़ कर सकोगे	
<p>مِّنَ النِّسَاءِ مَثْنَىٰ وَثُلثَ وَرُبْعَ ۚ فَإِنْ حِفْظٌ إِلَّا تَعَدَّلُوا</p>							
इन्साफ़ कर सकोगे	कि न	तुम्हें अन्देशा हो	फिर अगर	और चार, चार	और तीन, तीन	दो, दो	औरतें से
<p>فَوَاحِدَةً أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۗ ذَلِكَ أَدْنَىٰ ۖ أَلَّا تَعُولُوا ﴿٣﴾</p>							
3	झुक पड़ो	कि न	करीब तर	यह	लौडी जिस के तुम मालिक हो	जो या	तो एक ही
<p>وَآتُوا النِّسَاءَ صَدُقَاتِهِنَّ نِحْلَةً ۗ فَإِنْ طِبَّنَ لَكُمْ</p>							
तुम को	खुशी से छोड़ दें	फिर अगर	खुशी से	उन के मेहर	औरतें	और दे दो	
<p>عَنْ شَيْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوهُ هَنِيئًا مَّرِيئًا ﴿٤﴾ وَلَا تُؤْتُوا</p>							
दो	और न	4	मज़ेदार, खुशगवार	तो उसे खाओ	दिल से	उस से	कुछ
<p>السُّفَهَاءَ أَمْوَالِكُمُ الَّتِي جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ قِيَمًا ۖ وَارْزُقُوهُمْ</p>							
और उन्हें खिलाने रहो	सहारा	तुम्हारे लिए	अल्लाह ने बनाया	जो	अपने माल	बेज़रक़ल (जमा)	
<p>فِيهَا ۖ وَاكْسُوهُمْ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ﴿٥﴾</p>							
5	मज़रूफ़	बात	उन से	और कहो	और उन्हें पहनाते रहो	उस में	



وَابْتَلُوا الْيَتَامَىٰ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۖ فَإِنْ آنَسْتُمْ							
तुम पाओ	फिर अगर	निकाह	वह पहुँचें	जब	यहां तक कि	यतीम (जमा)	और आजमाते रहो
مِّنْهُمْ زُشْدًا فَادْفَعُوا إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ ۖ وَلَا تَأْكُلُوهَا							
वह खाओ	और न	उन के माल	उन के	तो हवाले कर दो	सलाहियत	उन में	
إِسْرَافًا وَبِدَارًا أَنْ يَكْبَرُوا ۗ وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا							
गनी	हो	और जो	वह बड़े हो जाएंगे	कि	और जल्दी जल्दी	ज़रूरत से ज़ियादा	
فَلْيَسْتَعْفِفْ ۖ وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوفِ ۗ							
दस्तूर के मुताबिक	तो खाए	हाजत मन्द	हो	और जो	वचता रहे		
فَإِذَا دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ فَأَشْهِدُوا عَلَيْهِمْ ۗ							
उन पर	तो गवाह कर लो	उन के माल	उन के	हवाले करो	फिर जब		
وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا ﴿٦﴾ لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ							
छोड़ा	उस से जो	हिस्सा	मर्दों के लिए	6	हिसाब लेने वाला	अल्लाह	और काफी
الْوَالِدِينَ وَالْأَقْرَبُونَ ۚ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا							
उस से जो	हिस्सा	और औरतों के लिए	और कराबतदार	माँ बाप			
تَرَكَ الْوَالِدِينَ وَالْأَقْرَبُونَ ۚ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ أَوْ كَثُرَ							
ज़ियादा	या	उस से	थोड़ा	उस में से	और कराबतदार	माँ बाप	छोड़ा
نَصِيبًا مَّفْرُوضًا ﴿٧﴾ وَإِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ							
तकसीम के वक़्त	हाज़िर हों	और जब	7	मुक़र्रर किया हुआ	हिस्सा		
أَوْلُوا الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينُ فَارْزُقُوهُمْ مِنْهُ							
उस से	तो उन्हें खिला दो (दे दो)	और मिस्क़ीन	और यतीम	रिशतेदार			
وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ﴿٨﴾ وَلِيخَشِ الَّذِينَ							
वह लोग	और चाहिए कि डरें	8	अच्छी	बात	उन से	और कहो	
لَوْ تَرَكَوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعْفًا خَافُوا							
उन्हें फ़िक्र हो	नातवां	औलाद	अपने पीछे	से	छोड़ जाएं	अगर	
عَلَيْهِمْ ۖ فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ وَلْيَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ﴿٩﴾							
9	सीधी	बात	और चाहिए कि कहें	पस चाहिए कि वह डरें अल्लाह से	उन का		
إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ ظُلْمًا إِنَّمَّا							
उस के सिवा कुछ नहीं	जुल्म से	यतीमों	माल	खाते हैं	जो लोग	वेशक	
يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا ۖ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا ﴿١٠﴾							
10	आग (दोज़ख)	और अ़नक़रीब दाख़िल होंगे	आग	अपने पेट	में	वह भर रहे हैं	

और यतीमों को आजमाते रहो यहाँ तक कि वह निकाह की उम्र को पहुँच जाएं, फिर अगर उन में सलाहियत (हुस्ने तदवीर) पाओ तो उन के माल उन के हवाले कर दो, और उन का माल न खाओ ज़रूरत से ज़ियादा और जल्दी (इस ख़याल से) कि वह बड़े हो जाएंगे, और जो गनी हो वह (माले यतीम से) बचता रहे, और जो हाजत मन्द हो वह दस्तूर के मुताबिक़ खाए, फिर जब उन के माल उन के हवाले करो तो उन पर गवाह कर लो, और अल्लाह काफी है हिसाब लेने वाला। (6)

मर्दों के लिए हिस्सा है उस में से जो माँ बाप ने और कराबतदारों ने छोड़ा, और औरतों के लिए हिस्सा है उस में से जो छोड़ा माँ बाप ने और कराबतदारों ने, ख़ाह थोड़ा हो या ज़ियादा, हिस्सा मुक़र्रर किया हुआ है। (7)

और जब हाज़िर हों तकसीम के वक़्त रिश्तेदार और यतीम और मिस्क़ीन तो उस में से उन्हें भी (कुछ) दे दो और कहो उन से अच्छी बात। (8)

और चाहिए कि वह लोग डरें कि अगर वह छोड़ जाएं अपने पीछे नातवां औलाद तो उन्हें उन के तअल्लुक से कैसा कुछ डर होता, पस चाहिए कि वह अल्लाह से डरें और चाहिए कि बात कहें सीधी। (9)

वेशक जो लोग जुल्म से यतीमों का माल खाते हैं, कुछ नहीं बस वह अपने पेटों में आग भर रहे हैं, और अ़नक़रीब दोज़ख़ में दाख़िल होंगे। (10)

अल्लाह तुम्हें वसीयत करता है तुम्हारी औलाद (के बारे) में, मर्द का हिस्सा दो औरतों के बराबर है, फिर अगर औरतें हों दो से ज़ियादा तो उन के लिए (उस में से) दो तिहाई है जो (वारिस ने) छोड़ा, और अगर एक ही हो तो उस के लिए निसफ़ है, और उस के माँ बाप के लिए दोनों में से हर एक का छटा हिस्सा है उस में से जो (मय्यत ने) छोड़ा अगर उस की औलाद हो। फिर अगर उस की औलाद न हो और माँ बाप ही उस के वारिस हों तो उस की माँ का तिहाई हिस्सा है, फिर अगर उस (मय्यत) के कई भाई बहन हों तो उस की माँ का छटा हिस्सा है उस वसीयत के बाद जो वह कर गया या (बाद अदाए) कर्ज़, तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे तो तुम को नहीं मालूम उन में से कौन तुम्हारे लिए नफ़ा (पहुँचाने में) नज़दीक तर है, यह अल्लाह का मुक़र्र किया हुआ हिस्सा है, बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (11)

और तुम्हारे लिए आधा है जो छोड़ मरें तुम्हारी बीवियां अगर उन की कोई औलाद न हो, फिर अगर उन की औलाद हो तो तुम्हारे लिए उस में से जो वह छोड़ें चौथाई हिस्सा है वसीयत के बाद जिस की वह वसीयत कर जाएं या (बाद अदाए) कर्ज़, और उस में से उन के लिए चौथाई हिस्सा है जो तुम छोड़ जाओ अगर न हो तुम्हारी औलाद, फिर अगर तुम्हारी औलाद हो तो जो तुम छोड़ जाओ उस में से उन का आठवां (1/8) हिस्सा है उस वसीयत (के निकालने) के बाद जो तुम वसीयत कर जाओ या (अदाए) कर्ज़, और अगर ऐसे मर्द की मीरास है या ऐसी औरत की जो “कलाला” है (उस का बाप बेटा नहीं) और उस के भाई बहन हों तो उन दोनों में से हर एक का छटा हिस्सा है, फिर अगर वह एक से ज़ियादा हों तो वह सब शरीक है एक तिहाई में उस वसीयत के बाद जो वसीयत कर दी जाए या (बाद अदाए) कर्ज़ (बशर्त यह कि किसी को) नुक़सान न पहुँचाया हो, यह अल्लाह का हुक्म है, और अल्लाह जानने वाला, हिल्म वाला है। (12)

يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنثَيَيْنِ فَإِنْ كُنَّ								
हों	फिर अगर	दो औरतें	हिस्सा	मानिंद (बराबर)	मर्द को	तुम्हारी औलाद	में	तुम्हें वसीयत करता है अल्लाह
نِسَاءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ وَإِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا								
तो उस के लिए	एक	हो	और अगर	जो छोड़ा (तरका)	दो तिहाई (2/3)	तो उन के लिए	दो	ज़ियादा औरतें
النِّصْفُ وَلِأَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا الشُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ إِنْ كَانَ								
अगर हो	छोड़ा (तरका)	उस से जो	छटा हिस्सा (1/6)	उन दोनों में से	हर एक के लिए	और माँ बाप के लिए	निसफ़ (1/2)	
لَهُ وَلِدٌ فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ وَلَدٌ وَوَرِثَهُ أَبُوهُ فَلِأُمِّهِ الثُّلُثُ								
तिहाई (1/3)	तो उस की माँ का	माँ बाप	और उस के वारिस हों	उस की औलाद	न हो	फिर अगर	उस की औलाद	
فَإِنْ كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فَلِأُمِّهِ الشُّدُسُ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةِ								
वसीयत	बाद	से	छटा (1/6)	तो उस की माँ का	कई भाई बहन	उस के हों	फिर अगर	
يُوصَىٰ بِهَا أَوْ دَيْنٍ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ لَا تَدْرُونَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ لَكُمْ								
नज़दीक तर तुम्हारे लिए	उन में से कौन	तुम को नहीं मालूम	और तुम्हारे बेटे	तुम्हारे बाप	या कर्ज़	उस की वसीयत की हो		
نَفْعًا فَرِيضَةً مِنَ اللَّهِ إِنْ اللَّهُ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا (11)								
11	हिक्मत वाला	जानने वाला	है	बेशक अल्लाह	अल्लाह का	हिस्सा मुक़र्र किया हुआ है	नफ़ा	
وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ أَزْوَاجُكُمْ إِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُنَّ وَلَدٌ فَإِنْ كَانَ								
हो	फिर अगर	उन की कोई औलाद	न हो	अगर	तुम्हारी बीवियां	जो छोड़ मरें	आधा (1/2)	और तुम्हारे लिए
لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمْ الرُّبْعُ مِمَّا تَرَكَنَّ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةِ يُوصِينَ بِهَا								
उस की	वह वसीयत कर जाएं	वसीयत	बाद	उस में से जो वह छोड़ें	चौथाई (1/4)	तो तुम्हारे लिए	उन की औलाद	
أَوْ دَيْنٍ وَلَهُنَّ الرُّبْعُ مِمَّا تَرَكَتُمْ إِنْ لَمْ يَكُنْ لَكُمْ وَلَدٌ فَإِنْ								
फिर अगर	तुम्हारी औलाद	न हो	अगर	तुम छोड़ जाओ	उस में से जो	चौथाई (1/4)	और उन के लिए	या कर्ज़
كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكَتُمْ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةِ								
वसीयत	बाद	से	उस में से जो तुम छोड़ जाओ	आठवां (1/8)	तो उन के लिए	औलाद	हो तुम्हारी	
تُوصُونَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ وَإِنْ كَانَ رَجُلٌ يُورَثُ كَلَلَةً أَوْ امْرَأَةً								
या औरत	जिस का बाप बेटा न हो	मीरास हो	ऐसा मर्द	हो	और अगर	या कर्ज़	उस की	तुम वसीयत करो
وَلَهُ أَخٌ أَوْ أُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا الشُّدُسُ فَإِنْ كَانُوا أَكْثَرَ								
ज़ियादा	हों	फिर अगर	छटा (1/6)	उन में से हर एक	तो तमाम के लिए	या बहन	भाई	और उस
مِنْ ذَلِكَ فَهُمْ شُرَكَاءُ فِي الثُّلُثِ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةِ يُوصَىٰ بِهَا								
जिस की वसीयत की जाए	वसीयत	उस के बाद	तिहाई (1/3) में	शरीक	तो वह सब	उस से (एक से)		
أَوْ دَيْنٍ غَيْرَ مُضَارٍّ وَصِيَّةً مِنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَلِيمٌ (12)								
12	हिल्म वाला	जानने वाला	और अल्लाह	अल्लाह से	हुक्म	नुक़सान बह न हो	या कर्ज़	

تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ								
वागात	वह उसे दाखिल करेगा	और उस का रसूल	अल्लाह की इताअत करे	और जो	अल्लाह की (मुकर्रर कर दह) हदें	यह		
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَذَلِكَ الْفَوْزُ								
कामयावी	और यह	उन में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	बहती है		
الْعَظِيمِ (١٣) وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ حُدُودَهُ								
उस की हदें	और बढ़ जाए	और उस का रसूल	अल्लाह	नाफरमानी करे	और जो	13 बड़ी		
يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ مُهِينٌ (١٤) وَالَّتِي								
और जो औरतें	14	ज़लील करने वाला	अज़ाब	और उस के लिए	उस में	हमेशा रहेगा	आग	वह उसे दाखिल करेगा
يَأْتِينَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نَسَائِكُمْ فَاَسْتَشْهِدُوا عَلَيْهِنَّ								
उन पर	तो गवाह लाओ	तुम्हारी औरतें	से	बदकारी	मुर्तकिब हों			
أَرْبَعَةً مِنْكُمْ فَإِنْ شَهِدُوا فَأَمْسِكُوهُنَّ فِي الْبُيُوتِ								
घरों में	उन्हें बन्द रखो	वह गवाही दें	फिर अगर	अपनों में से	चार			
حَتَّى يَتَوَفَّيَهُنَّ الْمَوْتُ أَوْ يَجْعَلَ اللَّهُ لَهُنَّ سَبِيلًا (١٥)								
15	कोई सबील	उन के लिए	कर दे अल्लाह	या	मौत	उन्हें उठा ले	यहां तक कि	
وَالَّذِينَ يَأْتِيَنَهَا مِنْكُمْ فَاذُوهُمَا فَإِنْ تَابَا وَأَصْلَحَا								
और इसलाह कर लें	फिर अगर वह तौबा करें	तो उन्हें ईज़ा दो	तुम में से	मुर्तकिब हों	और जो दो			
فَاعْرِضْهُمَا غَنُومًا إِنَّ اللَّهَ كَانَ تَوَّابًا رَحِيمًا (١٦)								
16	निहायत मेहरवान	तौबा कुबूल करने वाला	है	वेशक अल्लाह	उन का	तो पीछा छोड़ दो		
إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السُّوءَ بِجَهَالَةٍ								
नादानी से	बुराई	वह करते हैं	उन लोगों के लिए	अल्लाह पर (अल्लाह के ज़िम्मे)	तौबा कुबूल करना	उस के सिवा नहीं		
ثُمَّ يَتُوبُونَ مِنْ قَرِيبٍ فَأُولَئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ								
तौबा कुबूल करता है अल्लाह	पस यही लोग हैं	जल्दी से	तौबा करते हैं	फिर				
عَلَيْهِمْ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا (١٧) وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ								
तौबा	और नहीं	17	हिक्मत वाला	जानने वाला	और है अल्लाह	उन की		
لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ حَتَّى إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ								
उन में से किसी को	सामने आ जाए	जब	यहां तक	बुराइयां	वह करते हैं	उन के लिए (उन की)		
الْمَوْتُ قَالَ إِنْ تَبَّتْ أَلْسُنٌ وَلَا الَّذِينَ يَمُوتُونَ								
मर जाते हैं	वह लोग जो	और न	अब	तौबा करता हूँ	कि मैं	कहे	मौत	
وَهُمْ كُفَّارٌ أُولَئِكَ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا (١٨)								
18	दर्दनाक	अज़ाब	उन के लिए	हम ने तैयार किया	यही लोग	काफ़िर	और वह	

यह अल्लाह की (मुकर्रर करदा) हदें हैं, और जो अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करेगा वह उसे वागात में दाखिल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, और यह बड़ी कामयावी है। (13)

और जो अल्लाह और उस के रसूल की नाफरमानी करेगा और बढ़ जाएगा उस की हदों से तो वह उसे आग में दाखिल करेगा, वह उस में हमेशा रहेंगे, और उन के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है। (14)

और तुम्हारी औरतों में से जो बदकारी की मुर्तकिब हों उन पर गवाह लाओ चार अपनों में से, फिर अगर वह गवाही दें तो उन औरतों को घरों में बन्द रखो यहां तक कि मौत उन्हें उठा ले या अल्लाह उन के लिए कोई सबील कर दे (कोई राह निकाले)। (15)

और जो दो मुर्तकिब हों तुम में से तो उन्हें ईज़ा दो, फिर अगर वह तौबा कर लें और अपनी इसलाह कर लें तो उन का पीछा छोड़ दो, वेशक अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला निहायत मेहरवान है। (16)

इस के सिवा नहीं कि तौबा कुबूल करना अल्लाह के ज़िम्मे उन ही लोगों के लिए है जो करते हैं बुराई नादानी से, फिर जल्दी से तौबा कर लेते हैं, पस यही लोग हैं अल्लाह तौबा कुबूल करता है उन की, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (17)

और उन लोगों के लिए तौबा नहीं जो बुराइयां (गुनाह) करते रहते हैं यहां तक कि जब मौत उन में से किसी के सामने आ जाए तो कहे कि मैं अब तौबा करता हूँ और न उन लोगों की जो मर जाते हैं हालते कुफ़ में, यही लोग हैं हम ने तैयार किया है उन के लिए दर्दनाक अज़ाब। (18)

ऐ ईमान वाले! तुम्हारे लिए हलाल नहीं कि तुम वारिस बन जाओ औरतों के ज़वरदस्ती, और न उन्हें रोके रखो कि उन से अपना दिया हुआ कुछ (वापस) ले लो मगर यह कि वह खुली बेहयाई की मुर्तकिब हों, और उन औरतों के साथ दस्तूर के मुताबिक़ गुज़रान करो, फिर अगर वह तुम्हें नापसन्द हों तो अैन मुमकिन है कि तुम्हें एक चीज़ नापसन्द हो और अल्लाह रखे उस में बहुत भलाई। (19)

और अगर बदल लेना चाहो एक वीवी की जगह दूसरी वीवी, और तुम ने उन में से किसी एक को खज़ाना दिया है तो उस से कुछ वापस न लो, क्या तुम वह लेते हो बुहतान (लगा कर) और सरीह (खुले) गुनाह से? (20)

और तुम वह कैसे वापस लोगे? और अलबत्ता तुम में से एक दूसरे तक पहुँच चुका (सुहवत कर चुका), और उन्होंने ने तुम से पुख़्ता अहद लिया। (21)

और उन औरतों से निकाह न करो जिन से तुम्हारे बाप ने निकाह किया हो मगर जो (पहले) गुज़र चुका, बेशक यह बेहयाई और ग़ज़ब की बात थी और बुरा रास्ता (ग़लत तरीक़ा) था। (22)

तुम पर हराम की गई तुम्हारी माँ और तुम्हारी बेटियाँ और तुम्हारी बहनें, और तुम्हारी फूफियाँ और तुम्हारी ख़ालाएँ, और भतीजियाँ और बेटियाँ बहन की (भाजियाँ), और तुम्हारी रज़ाई माँ जिन्होंने ने तुम्हें दूध पिलाया और तुम्हारी दूध शरीक बहनें, और तुम्हारी औरतों की माँ (सास), और तुम्हारी वह बेटियाँ जो तुम्हारी पर्वरिश में हैं तुम्हारी उन वीवियों से जिन से तुम ने सुहवत की, पस अगर तुम ने उन से सुहवत नहीं की तो कुछ गुनाह नहीं है तुम पर, और तुम्हारे उन बेटों की वीवियाँ जो तुम्हारी पुशत से हैं, और यह कि तुम दो बहनों को जमा करो मगर जो पहले गुज़र चुका, बेशक अल्लाह बख़शने वाला, मेहरबान है। (23)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَرِثُوا النِّسَاءَ كَرِهًا وَلَا							
और न	ज़वरदस्ती	औरतें	कि वारिस बन जाओ	तुम्हारे लिए	हलाल नहीं	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ
تَعْضُلُوهُنَّ لِتَذْهَبُوا بِبَعْضِ مَا آتَيْتُمُوهُنَّ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ							
मुर्तकिब हों	यह कि	मगर	उन को दिया हो	जो	कुछ	कि ले लो	उन्हें रोके रखो
بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ فَإِنْ كَرِهْتُمُوهُنَّ							
वह नापसन्द हों	फिर अगर	दस्तूर के मुताबिक़	और उन से गुज़रान करो	खुली हुई	बेहयाई		
فَعَسَى أَنْ تَكْرَهُوا شَيْئًا وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا كَثِيرًا ﴿١٩﴾							
19	बहुत	भलाई	उस में	और रखे अल्लाह	एक चीज़	कि तुम को नापसन्द हो	तो मुमकिन है
وَأَنْ أَرَدْتُمْ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَكَانَ زَوْجٍ وَأَتَيْتُمْ أَحَدَهُنَّ قِنطَارًا							
खज़ाना	उन में से एक को	और तुम ने दिया है	दूसरी वीवी	जगह (बदले)	एक वीवी	बदल लेना	तुम चाहो और अगर
فَلَا تَأْخُذُوا مِنْهُ شَيْئًا تَأْخُذُونَهُ بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ﴿٢٠﴾							
20	सरीह (खुला)	और गुनाह	बुहतान	क्या तुम वह लेते हो	कुछ	उस से	तो न (वापस) लो
وَكَيْفَ تَأْخُذُونَهُ وَقَدْ أَفْضَى بَعْضُكُمْ إِلَى بَعْضٍ وَأَخَذْنَ مِنْكُمْ							
तुम से	और उन्होंने ने लिया	दूसरे तक	तुम में एक	पहुँच चुका	और अलबत्ता	तुम उसे लोगे	और कैसे
مِيثَاقًا غَلِيظًا ﴿٢١﴾ وَلَا تَنْكِحُوا مَا نَكَحَ آبَاؤُكُمْ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا							
मगर	औरतें	से	तुम्हारे बाप	जिस से निकाह किया	निकाह करो	और न	21 पुख़्ता अहद
مَا قَدْ سَلَفَ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَمَقْتًا وَسَاءَ سَبِيلًا ﴿٢٢﴾ حُرِّمَتْ							
हराम की गई	22	रास्ता (तरीक़ा)	और बुरा	और ग़ज़ब की बात	बेहयाई था	बेशक वह	जो गुज़र चुका
عَلَيْكُمْ أُمَّهَاتُكُمْ وَبَنَاتُكُمْ وَأَخَوَاتُكُمْ وَعَمَّاتُكُمْ وَخَالَاتُكُمْ وَبَنَاتُ الْأَخِ							
और भतीजियाँ	और तुम्हारी ख़ालाएँ	और तुम्हारी फूफियाँ	और तुम्हारी बहनें	और तुम्हारी बेटियाँ	तुम्हारी माँ	तुम पर	
وَبَنَاتُ الْأَخْتِ وَأُمَّهَاتُكُمُ اللَّاتِي أَرْضَعْنَكُمْ وَأَخَوَاتُكُمُ مِنَ الرَّضَاعَةِ							
दूध शरीक	से	और तुम्हारी बहनें	तुम्हें दूध पिलाया	वह जिन्होंने ने	और तुम्हारी माँ	और बहन कि बेटियाँ	
وَأُمَّهَاتُ نِسَائِكُمْ وَرَبَائِبُكُمُ اللَّاتِي فِي حُجُورِكُمْ مِنْ نِسَائِكُمُ اللَّاتِي							
जिन से	तुम्हारी वीवियाँ	से	तुम्हारी पर्वरिश	में	जो कि	और तुम्हारी बेटियाँ	और तुम्हारी औरतों की माँ
دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَإِنْ لَمْ تَكُونُوا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ							
तुम पर	तो नहीं गुनाह	उन से	तुम ने नहीं की सुहवत	पस अगर	उन से	तुम ने सुहवत की	
وَحَلَائِلُ أَبْنَائِكُمُ الَّذِينَ مِنْ أَصْلَابِكُمْ وَأَنْ تَجْمَعُوا بَيْنَ الْأُخْتَيْنِ							
दो बहनों को	तुम जमा करो	और यह कि	तुम्हारी पुशत	से	जो	तुम्हारे बेटे	और वीवियाँ
إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٢٣﴾							
23	मेहरबान	बख़शने वाला	है	बेशक अल्लाह	पहले गुज़र चुका	मगर जो	

٢٤  
١٢

<b>وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ</b>							
तुम्हारे दाहने हाथ	मालिक हो जाएं	जो - जिस	मगर	औरतें	से	और ख़ावन्द वाली औरतें	
<b>كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ وَأُحِلَّ لَكُمْ مَا وَرَاءَ ذَلِكَ أَنْ تَبْتَغُوا</b>							
तुम चाहो	कि	उन के	सिवा	तुम्हारे लिए	और हलाल की गई	तुम पर	अल्लाह का हुक्म
<b>بِأَمْوَالِكُمْ مٌحْصِنِينَ غَيْرِ مُسْفِحِينَ ۖ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهِ مِنْهُنَّ فَآتُوهُنَّ</b>							
तो उन को दो	उन में से	उस से	तुम नफ़ा (लज़ज़त) हासिल करो	पस जो	हवसरानी को	न	क़ैदे (निकाह) में लाने को अपने मालों से
<b>أَجُورَهُنَّ فَرِيضَةً ۖ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا تَرْضَيْتُمْ بِهِ مِنْ بَعْدِ</b>							
उस के बाद	उस से	तुम बाहम रज़ामन्द हो जाओ	उस में जो	तुम पर	गुनाह	और नहीं	उन के मेहर मुक़रर किए हुए
<b>الْفَرِيضَةِ ۖ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا (24) وَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ</b>							
ताक़त रखे	न	और जो	24	हिक्मत वाला	जानने वाला	है	बेशक अल्लाह मुक़रर किया हुआ
<b>مِنْكُمْ طَوْلًا أَنْ يَنْكَحَ الْمُحْصَنَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ فَمَنْ مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ</b>							
तुम्हारे हाथ मालिक हो जाएं	जो	तो-से	मोमिन (जमा)	वीवियां	कि निकाह करे	तुम में से मक़दूर	
<b>مِنْ فَتَيَاتِكُمُ الْمُؤْمِنَاتِ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَيْمَانِكُمْ بَعْضُكُمْ مِنْ بَعْضٍ</b>							
वाज़ (एक दूसरे से)	से	तुम्हारे वाज़	तुम्हारे ईमान को	खूब जानता है	और अल्लाह	मोमिन मुसलमान	तुम्हारी कनीज़ें से
<b>فَانْكَحُوهُنَّ بِإِذْنِ أَهْلِهِنَّ وَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ مُحْصَنَاتٍ</b>							
क़ैदे (निकाह) में आने वालियां	दस्तूर के मुताबिक़	उन के मेहर	और उन को दो	उन के मालिक	इजाज़त से	सो उन से निकाह करो	
<b>غَيْرِ مُسْفِحَاتٍ وَلَا تُتَّخَذَتِ أَعْدَانٍ ۖ فَإِذَا أَحْصِنَّ فَإِنَّ أَتَيْنَ</b>							
वह करें	फिर अगर	निकाह में आजाएं	पस जब	चोरी छुपे	आशानाई करने वालियां	और न	मस्ती निकालने वालियां न कि
<b>بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنَاتِ مِنَ الْعَذَابِ ۗ ذَلِكَ</b>							
यह	(सज़ा) अज़ाब	से	आज़ाद औरतें	पर	जो	निसफ़	तो उन पर वेहयाई
<b>لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ وَأَنْ تَصْبِرُوا خَيْرٌ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ</b>							
बड़शने वाला	और अल्लाह	तुम्हारे लिए	बेहतर	तुम सब्द करो	और अगर	तुम में से	तक़लीफ़ (ज़िना) डरा उस के लिए जो
<b>رَحِيمٌ (25) يُرِيدُ اللَّهُ لِيُبينَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ</b>							
तुम से पहले	वह जो कि	तरीके	और तुम्हें हिदायत दे	तुम्हारे लिए	ताकि बयान कर दे	चाहता है अल्लाह	25 रहम करने वाला
<b>وَيُثُوبَ عَلَيْكُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ (26) وَاللَّهُ يُرِيدُ أَنْ يَتُوبَ</b>							
तबज़ुह करे	कि	चाहता है	और अल्लाह	26	हिक्मत वाला	जानने वाला	और तबज़ुह करे
<b>عَلَيْكُمْ ۗ وَيُرِيدُ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الشَّهَوَاتِ أَنْ تَمِيلُوا مَيْلًا عَظِيمًا (27)</b>							
27	बहुत ज़ियादा	फिर जाना	फिर जाओ	कि	खाहिशात	जो लोग पैरवी करते हैं	और चाहते हैं तुम पर
<b>يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُخَفِّفَ عَنْكُمْ ۗ وَخُلِقَ الْإِنْسَانُ ضَعِيفًا (28)</b>							
28	कमज़ोर	इन्सान	और पैदा किया गया	तुम से	हलका कर दे	कि	चाहता है अल्लाह

और ख़ावन्द वाली औरतें (हराम हैं) मगर (काफ़िरों की औरतें) जिन के मालिक तुम्हारे दाहने हाथ हो जाएं (तुम मालिक हो जाओ), यह तुम पर अल्लाह का हुक्म है, और उन के सिवा सब औरतें तुम्हारे लिए हलाल की गई हैं बशर्त यह कि तुम चाहो अपने मालों से क़ैदे (निकाह) में लाने को, न कि हवसरानी को, पस तुम में से जो उन से नफ़ा (लज़ज़त) हासिल करें तो उन को उन के मुक़रर किए हुए मेहर दे दें और तुम पर उस में कुछ गुनाह नहीं जिस पर तुम बाहम रज़ामन्द हो जाओ उस के मुक़रर कर लेने के बाद, बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (24)

और जिस को तुम में से मक़दूर न हो कि वह (आज़ाद) मुसलमान वीवियों से निकाह करे तो जो मुसलमान कनीज़ें तुम्हारे हाथ की मिल्क हों (कबूज़े में हों), और अल्लाह तुम्हारे ईमान को खूब जानता है, तुम एक दूसरे के (हम ज़िन्स हो), सो उन के मालिक की इजाज़त से उन से निकाह कर लो, और उन को दे दो उन के मेहर दस्तूर के मुताबिक़, क़ैदे निकाह में आने वालियां न कि मस्ती निकालने वालियां न आशानाई करने वालियां चोरी छुपे, पस जब निकाह में आजाएं फिर अगर वह वेहयाई का काम करें तो उन पर निसफ़ सज़ा है जो आज़ाद औरतों पर है, यह उस के लिए जो तुम में से डरे (बदकारी की) तक़लीफ़ में पड़ने से, और अगर तुम सब्द करो तो तुम्हारे लिए बेहतर है, और अल्लाह बड़शने वाला मेहरबान है। (25)

अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे लिए बयान कर दे और तुम्हें हिदायत दे तुम से पहले लोगों के तरीकों की, और तुम पर तबज़ुह करे (तौबा कबूल करे) और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (26)

और अल्लाह चाहता है कि वह तबज़ुह करे तुम पर, और जो लोग ख़ाहिशात की पैरवी करते हैं वह चाहते हैं कि तुम (राहे हिदायत से) फिर जाओ बहुत ज़ियादा। (27)

अल्लाह चाहता है कि तुम से (बोझ) हलका कर दे, और इन्सान पैदा किया गया है कमज़ोर। (28)

ऐ मोमिनों अपने माल आपस में न खाओ नाहक (तौर पर) मगर यह कि तुम्हारी आपस की खुशी से कोई तिजारत हो, और कतल न करो एक दूसरे को, वेशक अल्लाह तुम पर बहुत मेहरबान है। (29)

और जो शख्स यह करेगा सरकशी (ज़ोर) और जुल्म से, पस अनकरीब हम उस को आग में डाल देंगे, और यह अल्लाह पर आसान है। (30)

अगर तुम बड़े गुनाहों से बचते रहे जो तुम्हें मना किए गए हैं तो हम तुम से दूर कर देंगे तुम्हारे छोटे गुनाह और हम तुम्हें इज़्ज़त के मुक़ाम में दाख़िल कर देंगे। (31)

और आज़ू न करो (उस की) जो बड़ाई दी अल्लाह ने तुम में से बाज़ को बाज़ पर, मर्दी के लिए हिस्सा है उस से जो उन्होंने ने कमाया, और औरतों के लिए हिस्सा है उस से जो उन्होंने ने कमाया, और अल्लाह से उस का फ़ज़ल मांगो, वेशक अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानने वाला है। (32)

और हम ने हर एक के लिए वारिस मुक़र्र कर दिए हैं उस (माल) के लिए जो छोड़ मरें वालिदैन और कराबतदार, और जिन लोगों से तुम्हारा अ़हद ओ पैमान बन्ध चुका तो उन को उन का हिस्सा दे दो, वेशक अल्लाह हर चीज़ पर गवाह (मुत्तला) है। (33)

मर्द औरतों पर हाकिम (निगरान) है इस लिए कि अल्लाह ने एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी और इस लिए कि उन्होंने ने अपने माल ख़र्च किए, पस जो नेकोकार हैं (मर्द की) तावे फ़रमान हैं, पीठ पीछे (अ़दम मौज़ूदगी में) हिफ़ाज़त करने वाली हैं अल्लाह की हिफ़ाज़त से। और तुम्हें डर हो जिन औरतों की वद ख़ूई का पस उन को समझाओ और खावगाहों में उन को तन्हा छोड़ दो और उन को मारो, फिर अगर वह तुम्हारा कहा मानें तो उन पर (इलज़ाम की) कोई राह तलाश न करो। वेशक अल्लाह सब से आला (बुलन्द) सब से बड़ा है। (34)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ							
नाहक	आपस में	अपने माल	न खाओ	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ		
إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ وَلَا تَقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ							
अपने नसफ़ (एक दूसरे)	और न कतल करो	तुम से	आपस की खुशी से	कोई तिजारत	यह कि हो	मगर	
إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ﴿٢٩﴾ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ عُذْوَانًا وَظُلْمًا							
और जुल्म से	सरकशी (ज़ोर)	यह	करेगा	और जो	29	बहुत मेहरबान	तुम पर है
فَسَوْفَ نُصَلِّيهِ نَارًا وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿٣٠﴾							
अगर	30	आसान	अल्लाह पर	यह	और है	आग	उस को डालेंगे
تَجْتَنِبُوا كَبَائِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَنُدْخِلَكُمْ							
और हम तुम्हें दाख़िल कर देंगे	तुम्हारे छोटे गुनाह	तुम से	हम दूर कर देंगे	उस से	जो मना किए गए	बड़े गुनाह	तुम बचते रहो
مُدْخَلًا كَرِيمًا ﴿٣١﴾ وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللَّهُ بِهِ بَعْضَكُمْ عَلَى بَعْضٍ							
बाज़	पर	तुम में से बाज़	उस से	जो बड़ाई दी अल्लाह	आज़ू करो	और न	31
لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوا وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ							
उन्होंने ने कमाया	उस से जो	हिस्सा	और औरतों के लिए	उन्होंने ने कमाया	उस से जो	हिस्सा	मर्दी के लिए
وَسَأَلُوا اللَّهَ مِنْ فَضْلِهِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٣٢﴾							
और हर एक के लिए	32	जानने वाला	चीज़	हर	है	वेशक अल्लाह	उस के फ़ज़ल से
جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدِينَ وَالْأَقْرَبُونَ وَالَّذِينَ عَقَدَتْ							
बन्ध चुका	और वह जो कि	और कराबतदार	वालिदैन	छोड़ मरें	उस से जो	वारिस	हम ने मुक़र्र किए
أَيْمَانَكُمْ فَأَتَوْهُمْ نَصِيبَهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ﴿٣٣﴾							
33	गवाह (मुत्तला)	हर चीज़	ऊपर	है	वेशक अल्लाह	उन का हिस्सा	तो उन को दे दो
الرِّجَالِ قَوْمُونَ عَلَى النِّسَاءِ بِمَا فَضَّلَ اللَّهُ بَعْضُهُمْ عَلَى							
उन में से बाज़ पर	अल्लाह ने फ़ज़ीलत दी	इस लिए कि	औरतें	पर	हाकिम (निगरान)	मर्द	
بَعْضٍ وَبِمَا أَنْفَقُوا مِنْ أَمْوَالِهِمْ ۗ فَالضَّالِحَاتُ فَنِتُّ حَفِظْتُ							
निगहवानी करने वालियां	तावे फ़रमान	पस नेकोकार औरतें	अपने माल	से	उन्होंने ने ख़र्च किए	और इस लिए कि	बाज़
لِّلغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللَّهُ ۗ وَالَّتِي تَخَافُونَ نُشُوزَهُنَّ فَعِظُوهُنَّ							
पस उन को समझाओ	उन की वद ख़ूई	तुम डरते हो	और वह जो	अल्लाह	हिफ़ाज़त की	उस से जो	पीठ पीछे
وَاهْجُرُوهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَاصْرَبُوهُنَّ ۗ فَإِنْ أَطَعْنَكُمْ							
वह तुम्हारा कहा मानें	फिर अगर	और उन को मारो	खावगाहों में	और उन को तन्हा छोड़ दो			
فَلَا تَبْغُوا عَلَيْهِنَّ سَبِيلًا ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا كَبِيرًا ﴿٣٤﴾							
34	सब से बड़ा	सब से आला	है	वेशक अल्लाह	कोई राह	उन पर	तो न तलाश करो

وَإِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوا حَكَمًا مِّنْ أَهْلِهِ							
मर्द का खानदान	से	एक मुन्सिफ	तो मुकर्रर करदो	उन के दरमियान	ज़िद (कशमकश)	तुम डरो	और अगर
وَحَكَمًا مِّنْ أَهْلِهَا إِنْ يُرِيدَا إِصْلَاحًا يُوَفِّقِ اللَّهُ بَيْنَهُمَا							
उन दोनों में	अल्लाह	सुवाफकत कर देगा	सुलह कराना	दोनों चाहेंगे	अगर	औरत का खानदान	से और एक मुन्सिफ
إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا خَبِيرًا (35) وَأَعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ							
और न शरीक करो उस के साथ	और तुम अल्लाह की इबादत करो	35	बहुत बाख़बर	बड़ा जानने वाला	है	वेशक अल्लाह	
شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَبِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ							
और यतीम (जमा)	और करावतदारों से	अच्छा सुलूक	और माँ बाप से	कुछ-किसी को			
وَالْمَسْكِينِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَالْجَارِ الْجُنْبِ							
अजन्वी	और हमसाया	करावत वाले	और हमसाया	और मोहताज (जमा)			
وَالصَّاحِبِ بِالْجَنبِ وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ إِنَّ اللَّهَ							
वेशक अल्लाह	तुम्हारी मिलक (कनीज़-गुलाम)	और जो	और मुसाफिर	और पास बैठने वाले (हम मजलिस) से			
لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُحْتَالًا فَخُورًا (36) الَّذِينَ يَبْخُلُونَ وَيَأْمُرُونَ							
और हुक्म करते (सिखाते) हैं	बुख़ल करते हैं	जो लोग	36	बड़ मारने वाला	इतराने वाला	हो	जो दोस्त नहीं रखता
النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُونَ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ							
अपना फ़ज़ल	से	अल्लाह ने उन्हें दिया	जो	और छुपाते हैं	बुख़ल	लोग	
وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا (37) وَالَّذِينَ يُنْفِقُونَ							
खर्च करते हैं	और जो लोग	37	ज़िल्लत वाला	अज़ाब	काफ़िरों के लिए	और हम ने तैयार कर रखा है	
أَمْوَالَهُمْ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ							
आखिरत के दिन पर	और न	अल्लाह पर	ईमान लाते	और नहीं	लोग	दिखावे को	अपने माल
وَمَنْ يَكُنِ الشَّيْطَانُ لَهُ قَرِينًا فَسَاءَ قَرِينًا (38) وَمَاذَا							
और क्या	38	साथी	तो बुरा	साथी	उस का	शैतान	हो और जो-जिस
عَلَيْهِمْ لَوْ آمَنُوا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَانْفَقُوا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللَّهُ							
अल्लाह	उन्हें दिया	उस से जो	और वह खर्च करते	और यौमे आखिरत पर	अल्लाह पर	अगर वह ईमान लाते	उन पर
وَكَانَ اللَّهُ بِهِمْ عَلِيمًا (39) إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ وَإِنْ تَكَ							
हो	और अगर	ज़र्रा	बराबर	जुल्म नहीं करता	वेशक अल्लाह	39	खूब जानने वाला
حَسَنَةً يُضَعِفَهَا وَيُوتِ مِنْ لَّدُنْهُ أَجْرًا عَظِيمًا (40) فَكَيْفَ							
फिर कैसा-क्या	40	बड़ा	सवाब	अपने पास से	और देता है	उस को कई गुना करता है	कोई नेकी
إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَىٰ هَؤُلَاءِ شَهِيدًا (41)							
41	गवाह	इन के	पर	आप को	और बुलाएंगे	एक गवाह	हर उम्मत से हम बुलाएंगे

और अगर तुम डरो उन दोनों के दरमियान ज़िद (कशमकश) से तो मुकर्रर कर दो एक मुन्सिफ मर्द के खानदान से और एक मुन्सिफ औरत के खानदान से, अगर वह दोनों सुलह कराना चाहेंगे तो अल्लाह उन दोनों के दरमियान सुवाफकत कर देगा, वेशक अल्लाह बड़ा जानने वाला बहुत बाख़बर है। (35)

और अल्लाह की इबादत करो और उस के साथ शरीक न करो किसी को और अच्छा सुलूक करो माँ बाप से और करावतदारों से और यतीमों और मोहताजों से और करावत वाले हमसाया से और अजन्वी हमसाया से और पास बैठने वाले (हम मजलिस) से और मुसाफिर से और जो तुम्हारी मिलक हों (कनीज़ गुलाम), वेशक अल्लाह उसे दोस्त नहीं रखता जो इतराने वाला, बड़ मारने वाला हो, (36)

और जो बुख़ल करते हैं और लोगों को बुख़ल सिखाते हैं और वह छुपाते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़ल से दिया, और हम ने काफ़िरों के लिए तैयार कर रखा है ज़िल्लत वाला अज़ाब। (37)

और जो लोग अपने माल लोगों के दिखावे को खर्च करते हैं और ईमान नहीं लाते अल्लाह पर और न आखिरत के दिन पर, और जिस का शैतान साथी हो तो वह बुरा साथी है। (38)

और उन का क्या (नुक़सान) होता अगर वह ईमान ले आते अल्लाह पर और यौमे आखिरत पर और उस से खर्च करते जो अल्लाह ने उन्हें दिया, और अल्लाह उन को खूब जानने वाला है। (39)

वेशक अल्लाह ज़र्रा बराबर जुल्म नहीं करता, और अगर कोई नेकी हो तो उसे कई गुना कर देता है और देता है अपने पास से बड़ा सवाब। (40)

फिर क्या (कैफ़ियत होगी) जब हम हर उम्मत से एक गवाह बुलाएंगे और आप (स) को इन पर गवाह बना कर बुलाएंगे। (41)

उस दिन आर्जू करेंगे वह लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया और रसूल की नाफ़रमानी की, काश! (उन्हें मिट्टी में दबा कर) ज़मीन बराबर कर दी जाए, और वह अल्लाह से न छुपा सकेंगे कोई बात। (42)

ऐ ईमान वाले! तुम नमाज़ के नज़दीक न जाओ जब तुम नशे (की हालत में) हो, यहां तक कि समझने लगे जो (ज़बान से) कहते हो, और न (उस वक़्त जब कि) गुस्ल की हाज़त हो सिवाए हालते सफ़र के, यहां तक कि तुम गुस्ल कर लो, और अगर तुम मरीज़ हो या सफ़र में या तुम में से कोई जाए ज़रूर (बैतुलखला) से आए या तुम औरतों के पास गए (हम सुहबत हुए) फिर तुम ने पानी न पाया तो पाक मिट्टी से तयम्मूम करो, मसह कर लो अपने मुँह और हाथों का, वेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, बख़शने वाला है। (43)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया, वह मोल लेते हैं (इख़्तियार करते हैं) गुमराही, और चाहते हैं कि तुम रास्ते से भटक जाओ। (44)

और अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को खूब जानता है और अल्लाह काफ़ी है हिमायती, और अल्लाह काफ़ी है मददगार। (45)

बाज़ यहूदी लोग कलिमात ओ अलफ़ाज़ को उन की जगह से बदल देते हैं (तहरीफ़ करते हैं) और कहते हैं “हम ने सुना” और “नाफ़रमानी की” (कहते हैं हमारी) सुनो (तुम्हें) न सुनवाया जाए। और राइना (कहते हैं) अपनी ज़बानों को मोड़ कर दीन में ताने की नीयत से, और अगर वह कहते “हम ने सुना और इताज़त की” (और कहते) “सुनिए और हम पर नज़र कीजिए” तो यह उन के लिए बेहतर होता और ज़ियादा दुरुस्त होता, लेकिन अल्लाह ने उन के कुफ़ के सबब उन पर लानत की, पस वह ईमान नहीं लाते मगर थोड़े। (46)

يَوْمَئِذٍ يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَعَصُوا الرَّسُولَ لَوْ تُسَوَّىٰ									
काश बराबर कर दी जाए	रसूल	और नाफ़रमानी की	वह लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया	आर्जू करेंगे	उस दिन				
بِهِمُ الْأَرْضُ وَلَا يَكْتُمُونَ اللَّهَ حَدِيثًا ﴿٤٢﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ									
वह लोग जो	ऐ	42	कोई बात	अल्लाह	छुपाएंगे	और न	ज़मीन उन पर		
امْنُوا لَا تَقْرُبُوا الصَّلَاةَ وَأَنْتُمْ سُكَرَىٰ حَتَّىٰ تَعْلَمُوا									
समझने लगे	यहां तक कि	नशे	जब कि तुम	नमाज़	न नज़दीक जाओ	ईमान लाए			
مَا تَقُولُونَ وَلَا جُنْبًا إِلَّا عَابِرِي سَبِيلٍ حَتَّىٰ تَغْتَسِلُوا									
तुम गुस्ल कर लो	यहां तक कि	हालते सफ़र	सिवाए	गुस्ल की हाज़त में	और न	तुम कहते हो	जो		
وَأَنْ كُنْتُمْ مَّرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنَ									
से	तुम में	कोई	या आए	सफ़र	पर-में	या	मरीज़ तुम हो और अगर		
الْغَايِبِ أَوْ لِمَسْتُمُ النِّسَاءِ فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا									
तो तयम्मूम करो	पानी	फिर तुम ने न पाया	औरतें	तुम पास गए	या	जाए ज़रूर			
صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ									
है	वेशक अल्लाह	और अपने हाथ	अपने मुँह	मसह कर लो	पाक	मिट्टी			
عَافُوا غَفُورًا ﴿٤٣﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أَوْتُوا نَصِيبًا مِنَ الْكِتَابِ									
किताब	से	एक हिस्सा	दिया गया	वह लोग जो	तरफ़	क्या तुम ने नहीं देखा	43	बख़शने वाला	माफ़ करने वाला
يَشْتَرُونَ الضَّلَالَةَ وَيُرِيدُونَ أَنْ تَضِلُّوا السَّبِيلَ ﴿٤٤﴾ وَاللَّهُ									
और अल्लाह	44	रास्ता	भटक जाओ	कि	और वह चाहते हैं	गुमराही	मोल लेते हैं		
أَعْلَمُ بِأَعْدَائِكُمْ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَلِيًّا وَكَفَىٰ بِاللَّهِ نَصِيرًا ﴿٤٥﴾									
45	मददगार	अल्लाह	और काफ़ी	हिमायती	अल्लाह	और काफ़ी	तुम्हारे दुश्मनों को	खूब जानता है	
مِنَ الَّذِينَ هَادُوا يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ مَوَاضِعِهِ									
उस की जगह	से	कलिमात	तहरीफ़ करते हैं (बदल देते हैं)	यहूदी हो गए	वह लोग जो	से (बाज़)			
وَيَقُولُونَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَأَسْمَعُ غَيْرَ مَسْمَعٍ وَرَاعِنَا									
और राइना	सुनवाया जाए	न	और सुनो	और हम ने नाफ़रमानी की	हम ने सुना	और कहते हैं			
لِيًّا بِالسِّنِّهِمْ وَطَعْنَا فِي الدِّينِ وَلَوْ أَنَّهُمْ قَالُوا سَمِعْنَا									
हम ने सुना	कहते	वह	और अगर	दीन में	ताने की नीयत से	अपनी ज़बानों को	मोड़ कर		
وَأَطَعْنَا وَأَسْمَعُ وَأَنْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ وَأَقْوَمٌ									
और ज़ियादा दुरुस्त	उन के लिए	बेहतर	तो होता	और हम पर नज़र कीजिए	और सुनिए	और हम ने इताज़त की			
وَلَكِنْ لَعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٤٦﴾									
46	थोड़े	मगर	पस ईमान नहीं लाते	उन के कुफ़ के सबब	अल्लाह	उन पर लानत की	और लेकिन		



يَا أَيُّهَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ آمِنُوا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِمَا							
जो	तस्दीक करने वाला	हम ने नाज़िल किया	उस पर जो	ईमान लाओ	किताब दिए गए (अहले किताब)	वह लोग जो	ऐ
مَعَكُمْ مِّن قَبْلِ أَنْ نَنْظُرَ وَجُوهَهَا فَنَرُدَّهَا عَنَّا أَدْبَارَهَا							
उन की पीठ	पर	फिर उलट दें	चेहरे	हम मिटा दें	कि	इस से पहले	तुम्हारे पास
أَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّا أَصْحَابَ السَّبْتِ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ﴿٤٧﴾							
47	होकर (रहने वाला)	अल्लाह का हुक्म	और है	हफते वाले	हम ने लानत की	जैसे	हम उन पर लानत करें या
إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ							
जिस को	उस के सिवा	जो	और बख़्शता है	शरीक ठहराए उस का	कि	नहीं बख़्शता	बेशक अल्लाह
يَشَاءُ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ افْتَرَىٰ إِثْمًا عَظِيمًا ﴿٤٨﴾							
48	बड़ा	गुनाह	पस उस ने बान्धा	अल्लाह का	शरीक ठहराया	और जो-जिस	वह चाहे
أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُزَكُّونَ أَنفُسَهُمْ بَلِ اللَّهُ يُزَكِّي مَن							
जिसे	पाक करता है	बल्कि अल्लाह	अपने आप को	पाक मुकद्दस कहते हैं	वह जो कि	तरफ़ (को)	क्या तुम ने नहीं देखा
يَشَاءُ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ﴿٤٩﴾ أَنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ							
अल्लाह पर	बान्धते हैं	कैसा	देखो	49	धागे के बराबर	और उन पर जुल्म न होगा	वह चाहता है
الْكَذِبِ وَكَفَىٰ بِهِ إِثْمًا مُّبِينًا ﴿٥٠﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ							
वह लोग जो	तरफ़ (को)	क्या तुम ने नहीं देखा	50	सरीह	गुनाह	यही	और काफी है झूट
أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يُؤْمِنُونَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوتِ							
और सरकश (शैतान)	बुत (जमा)	वह मानते हैं	किताब	से	एक हिस्सा	दिया गया	
وَيَقُولُونَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا هَوْلًا ۖ أَهْدَىٰ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا							
जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	से	राहे रास्त पर	यह लोग	जिन लोगों ने कुफ़्र क्या (काफ़िर)	और कहते हैं		
سَبِيلًا ﴿٥١﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ وَمَنْ يَلْعَنِ							
लानत करे	और जिस पर	उन पर अल्लाह ने लानत की	वह लोग जो	यही लोग	51	राह	
اللَّهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ نَصِيرًا ﴿٥٢﴾ أَمْ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّنَ الْمُلْكِ							
सलतनत	से	कोई हिस्सा	उन का	क्या	52	कोई मददगार	तो हरगिज़ नहीं अल्लाह
فَإِذَا لَا يُؤْتُونَ النَّاسَ نَقِيرًا ﴿٥٣﴾ أَمْ يَحْسُدُونَ النَّاسَ							
लोग	वह हसद करते हैं	या	53	तिल बराबर	लोग	न दें	फिर उस वक़्त
عَلَىٰ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۗ فَقَدْ آتَيْنَا							
सो हम ने दिया	अपना फ़ज़ल	से	जो अल्लाह ने उन्हें दिया	पर			
الْأَبْرَهِيمَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَآتَيْنَاهُمْ مُلْكًا عَظِيمًا ﴿٥٤﴾							
54	बड़ा	मुल्क	और उन्हें दिया	और हिक्मत	किताब	आले इब्राहीम (अ)	

ऐ अहले किताब! ईमान लाओ उस पर जो हम ने नाज़िल किया उस की तस्दीक करने वाला जो तुम्हारे पास है उस से पहले कि हम चहरे मिटा डालें (मसख़ कर दें) फिर उन (चहरों) को उलट दें उन की पीठ की तरफ़ या हम उन पर लानत करें जैसे “हफ़ते वालों” पर लानत की, और अल्लाह का हुक्म (पूरा) हो कर रहने वाला है। (47)

बेशक अल्लाह (उस को) नहीं बख़्शता जो उस का शरीक ठहराए, और उस के सिवा जिस को चाहे बख़्श दे, और जिस ने अल्लाह का शरीक ठहराया पस उस ने बड़ा गुनाह (बुहतान) बान्धा। (48)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा? वह जो अपने आप को मुकद्दस कहते हैं, बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है मुकद्दस बनाता है और उन पर खजूर की गुठली के रेशे (धागे) के बराबर भी जुल्म न होगा। (49)

देखो! अल्लाह पर कैसा झूट (बुहतान) बान्धते हैं, और यही सरीह गुनाह काफी है। (50)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया, वह मानते हैं बुतों को और शैतान को, और काफ़िरों को कहते हैं कि यह मोमिनों से ज़ियादा राह (रास्त) पर है। (51)

यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की, और जिस पर अल्लाह लानत करे तो हरगिज़ तू उस का कोई मददगार नहीं पाएगा। (52)

क्या उन के पास सलतनत का कोई हिस्सा है? फिर उस वक़्त यह न दें लोगों को तिल बराबर भी। (53)

या लोगों से उस पर हसद करते हैं जो अल्लाह ने उन्हें दिया अपने फ़ज़ल से, सो हम ने दी है आले इब्राहीम (अ) को किताब और हिक्मत और उन्हें दिया है बड़ा मुल्क। (54)

फिर उन में से कोई उस पर ईमान लाया और उन में से कोई रुका (ठटका) रहा, और जहननम काफी है भड़कती हुई आग। (55)

जिन लोगों ने हमारी आयतों का कुफ़ किया बेशक उन्हें हम अनकरीब आग में डाल देंगे, जिस वक़्त उन की खालें पक (गल) जाएंगी हम उस के अलावा (दूसरी) बदल देंगे ताकि वह अज़ाब चखें, बेशक अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (56)

और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए, हम अनकरीब उन्हें बागात में दाख़िल करेंगे जिन के नीचे नहरें बहती हैं और उस में रहेंगे हमेशा हमेशा, उन के लिए उस में पाक सुथरी वीवियां हैं, और हम उन्हें घनी छाऊँ (साया) में दाख़िल करेंगे। (57)

बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें अमानत वालों को पहुँचा दो, और जब तुम लोगों के दरमियान फ़ैसला करने लगे तो इन्साफ़ से फ़ैसला करो, बेशक अल्लाह तुम्हें अच्छी नसीहत करता है, बेशक अल्लाह सुनने वाला देखने वाला है। (58)

ऐ ईमान वालों! इताअत करो अल्लाह की और इताअत करो रसूल (स) की और उन की जो तुम में से साहिबे हुक्मत हैं, फिर अगर तुम झगड़ पड़ो किसी बात में तो उस को अल्लाह और रसूल (स) की तरफ़ रूजूअ करो अगर तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर, यह बेहतर है और उस का अन्जाम बहुत अच्छा है। (59)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो दावा करते हैं कि वह उस पर ईमान ले आए जो आप (स) पर नाज़िल किया गया और जो आप (स) से पहले नाज़िल किया गया वह चाहते हैं कि (अपना) मुक़दमा तागूत (सरकश) शैतान के पास ले जाएं हालांकि उन्हें हुक्म हो चुका है कि वह उस को न मानें और शैतान चाहता है कि उन्हें वहका कर दूर गुमराही (में डाल दे)। (60)

فَمِنْهُمْ مَّنْ آمَنَ بِهِ وَمِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ عَنْهُ وَكَفَىٰ بِجَهَنَّمَ								
जहननम	और काफी	उस से	रुका रहा	कोई	और उन में से	उस पर	कोई ईमान लाया	फिर उन में से
سَعِيرًا ﴿٥٥﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا سَوْفَ نُصَلِّيهِمْ نَارًا كَلَّمَآ								
जिस वक़्त	आग	हम उन्हें डालेंगे	अनकरीब	हमारी आयतों का	कुफ़ किया	जो लोग	बेशक	55
भड़कती हुई आग								
نَصَبَتْ جُلُودَهُمْ بَدَلَهُمْ جُلُودًا غَيْرَهَا لِيَذُوقُوا الْعَذَابَ								
अज़ाब	ताकि वह चखें	उस के अलावा	खालें	हम बदल देंगे	उन की खालें	पक जाएंगी		
إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿٥٦﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ								
नेक	और उन्होंने ने अमल किए	ईमान लाए	और वह लोग जो	56	हिक्मत वाला	ग़ालिब	है	बेशक अल्लाह
سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا								
हमेशा	उस में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	बहती है	बागात	अनकरीब हम उन्हें दाख़िल करेंगे	
لَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيلًا ﴿٥٧﴾ إِنَّ اللَّهَ								
बेशक अल्लाह	57	घनी	छाऊँ	और हम उन्हें दाख़िल करेंगे	पाक सुथरी	वीवियां	उस में	उन के लिए
يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا وَإِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ								
लोग	दरमियान	तुम फ़ैसला करने लगे	और जब	अमानत वाले	तरफ़ (को)	अमानतें	पहुँचा दो	कि तुम्हें हुक्म देता है
أَنْ تَحْكُمُوا بِالْعَدْلِ إِنَّ اللَّهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ								
है	बेशक अल्लाह	इस से	नसीहत करता है तुम्हें	अच्छी	बेशक अल्लाह	इन्साफ़ से	तुम फ़ैसला करो	तो
سَمِيعًا بَصِيرًا ﴿٥٨﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا								
और इताअत करो	इताअत करो अल्लाह की	वह लोग जो ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	58	देखने वाला	सुनने वाला		
الرَّسُولَ وَأُولَى الْأَمْرِ مِنْكُمْ فَإِنْ تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ								
तो उस को रूजूअ करो	किसी बात में	तुम झगड़ पड़ो	फिर अगर	तुम में से	और साहिबे हुक्मत	रसूल		
إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ								
और रोज़े आख़िरत	अल्लाह पर	तुम ईमान रखते हो	अगर	और रसूल (स)	अल्लाह की तरफ़			
ذَلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ﴿٥٩﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ								
दावा करते हैं	वह लोग जो	तरफ़ (को)	क्या तुम ने नहीं देखा	59	अन्जाम	और बहुत अच्छा	बेहतर	यह
أَنَّهُمْ آمَنُوا بِمَا نُزِّلَ إِلَيْكَ وَمَا نُزِّلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيدُونَ								
वह चाहते हैं	आप (स) से पहले	और जो नाज़िल किया गया	आप (स) की तरफ़	उस पर जो नाज़िल किया गया	ईमान लाए	कि वह		
أَنْ يَتَحَاكَمُوا إِلَى الطَّاغُوتِ وَقَدْ أُمِرُوا أَنْ يَكْفُرُوا								
वह न मानें	कि	हालांकि उन्हें हुक्म हो चुका	तागूत (सरकश)	तरफ़ (पास)	मुक़दमा ले जाएं	कि		
بِهِ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُضِلَّهُمْ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿٦٠﴾								
60	दूर	गुमराही	उन्हें वहका दे	कि	शैतान	और चाहता है	उस को	

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ							
रसूल (स)	और तरफ	जो अल्लाह ने नाज़िल किया	तरफ	आओ	उन्हें	कहा जाता है	और जब
رَأَيْتَ الْمُتَفِقِينَ يَصُدُّونَ عَنْكَ صُدُودًا ﴿٦١﴾ فَكَيْفَ إِذَا							
जब	फिर कैसी	61	रुक कर	आप से	हटते हैं	मुनाफिकीन	आप देखेंगे
أَصَابَتْهُمْ مُصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ثُمَّ جَاءَهُمْ							
फिर वह आएँ	आप (स) के पास	उन के हाथ	आगे भेजा	उस के सबब जो	कोई मुसीबत	उन्हें पहुँचे	
يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا أَحْسَنًا وَتَوْفِيقًا ﴿٦٢﴾ أُولَٰئِكَ							
यह लोग	62	और मुवाफकत	भलाई	सिवाएँ (सिर्फ)	हम ने चाहा	कि	अल्लाह की कसम खाते हुए
الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَعْرَضَ عَنْهُمْ وَعِظُهُمْ							
और उन को नसीहत करें	उन से	तो आप (स) तगाफुल करें	उन के दिलों में	जो	अल्लाह जानता है	वह जो कि	
وَقُلْ لَهُمْ فِي أَنْفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيغًا ﴿٦٣﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ							
कोई रसूल	हम ने भेजा	और नहीं	63	असर कर जाने वाली बात	उन के हक में	उन से	और कहें
إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللَّهِ وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ							
अपनी जानों पर	जब उन्होंने ने जुल्म किया	यह लोग	और अगर	अल्लाह के हुक्म से	ताकि इताअत की जाए	मगर	
جَاءَهُمْ فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ							
रसूल	उन के लिए	और मग़फ़िरत चाहता	फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहते वह	वह आते आप (स) के पास			
لَوْجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَّحِيمًا ﴿٦٤﴾ فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ							
वह मोमिन न होंगे	पस कसम है आप के रब की	64	मेहरबान	तौबा कुबूल करने वाला	तो वह ज़रूर पाते अल्लाह को		
حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنْفُسِهِمْ							
अपने दिलों में	वह न पाएँ	फिर	उन के दरमियान	झगड़ा उठे	उस में जो	आप को मुनसिफ बनाएँ	जब तक
حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ﴿٦٥﴾ وَلَوْ أَنَّا كَتَبْنَا							
हम लिख देते (हुक्म करते)	और अगर	65	खुशी से	और तसलीम कर लें	आप (स) फ़ैसला करें	उस से जो	कोई तंगी
عَلَيْهِمْ أَنْ أَقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَخْرَجُوا مِنْ دِيَارِكُمْ							
अपने घर	से	या निकल जाओ	अपने आप	क़त्ल करो तुम	कि	उन पर	
مَا فَعَلُوهُ إِلَّا قَلِيلٌ مِّنْهُمْ وَلَوْ أَنَّهُمْ فَعَلُوا مَا يُوعَظُونَ							
नसीहत की जाती है	जो	करते	यह लोग	और अगर	उन से	सिवाएँ चन्द एक	वह यह न करते
بِهِ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ وَأَشَدَّ تَثْبِيتًا ﴿٦٦﴾ وَإِذَا لَا تَأْتِنَهُمْ							
हम उन्हें देते	और उस सूरात में	66	साबित रखने वाला	और ज़ियादा	उन के लिए	बेहतर	अलबत्ता होता उस की
مِّنْ لَّدُنَّا أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٦٧﴾ وَلَهَدَيْنَهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ﴿٦٨﴾							
68	सीधा	रास्ता	और हम उन्हें हिदायत देते	67	बड़ा (ज़ज़ीम)	अजर	अपने पास से

और जब उन्हें कहा जाता है कि जो अल्लाह ने नाज़िल किया उस की तरफ आओ और रसूल (स) की तरफ तो आप (स) मुनाफिकों को देखेंगे कि वह रुक कर आप (स) से हटते हैं (पहलु तही करते हैं)। (61)

फिर कैसी (नदामत होगी) जब उन्हें कोई मुसीबत पहुँचे उस के सबब जो उन के हाथों ने आगे भेजा फिर वह आप (स) के पास अल्लाह की कसम खाते हुए आएँ कि हम ने सिर्फ़ भलाई चाही थी और मुवाफकत। (62)

यह लोग हैं कि अल्लाह जानता है जो उन के दिलों में है, तो आप (स) तगाफुल करें उन से। और आप (स) उन को नसीहत करें और उन से उन के हक में असर कर जाने वाली बात कहें। (63)

और हम ने नहीं भेजा कोई रसूल मगर इस लिए कि अल्लाह के हुक्म से उस की इताअत की जाए, और यह लोग जब उन्होंने ने अपनी जानों पर जुल्म किया था अगर वह आप (स) के पास आते, फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहते और उन के लिए रसूल (स) अल्लाह से मग़फ़िरत चाहते तो वह ज़रूर पाते अल्लाह को तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान। (64)

पस कसम है आप (स) के रब की वह मोमिन न होंगे जब तक आप (स) को मुनसिफ न बनाएँ उस झगड़े में जो उन के दरमियान उठे, फिर वह अपने दिलों में आप (स) के फ़ैसले से कोई तंगी न पाएँ और उस को खुशी से (पूरी तरह) तसलीम करलें। (65)

और अगर हम उन पर लिख देते (फ़र्ज़ कर देते) कि अपने आप को क़त्ल कर डालो या अपने घर वार (छोड़ कर) निकल जाओ तो उन में से चन्द एक के सिवा वह (कभी ऐसा) न करते, और अगर यह लोग वह करें जिस की उन्हें नसीहत की जाती है तो यह उन के लिए बेहतर होता और (दीन में) ज़ियादा साबित रखने वाला होता। (66)

और उस सूरात में हम उन्हें अपने पास से बड़ा अजर देते। (67)

और उन्हें सीधे रास्ते की हिदायत देते। (68)

और जो इताअत करे अल्लाह और रसूल (स) की तो यही लोग हैं उन लोगों के साथ जिन पर अल्लाह तआला ने इन्आम किया (यानी) अंबिया और सिद्दीकीन और शुहदा और सालिहीन (नेक बन्दे), और यह अच्छे साथी हैं। (69)

यह अल्लाह की तरफ से फज़ल है, और अल्लाह काफी है जानने वाला। (70)

ऐ ईमान वालो! अपने बचाओ (का सामान, हथियार) ले लो, फिर जुदा जुदा (दस्तों की सूरत में) या सब इकट्ठे हो कर कूच करो। (71)

वेशक तुम में (कोई ऐसा भी है) जो ज़रूर देर लगादेगा, फिर अगर तुम्हें पहुँचे कोई मुसीबत तो कहे कि अल्लाह ने मुझ पर इन्आम किया कि मैं उन के साथ न था। (72)

और तुम्हें अल्लाह की तरफ से कोई फज़ल (नेमत) पहुँचे तो ज़रूर कहेगा, गोया (जैसे) कि न थी तुम्हारे और उस के दरमियान कोई दोस्ती, “ऐ काश! मैं उन के साथ होता तो बड़ी मुराद पाता”। (73)

सो चाहिए कि अल्लाह के रास्ते में लड़ें वह लोग जो दुनिया की ज़िन्दगी बेचते (कुरवान करते) हैं आखिरत के बदले, और जो अल्लाह के रास्ते में लड़ें फिर मारा जाए या ग़ालिब आए हम अज़र देंगे उसे बड़ा अज़र देंगे। (74)

और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के रास्ते में नहीं लड़ते कमज़ोर (बेबस) मर्दों और औरतों और बच्चों (की खातिर) जो दुआ कर रहे हैं: ऐ हमारे रब! हमें इस बस्ती से निकाल जिस के रहने वाले ज़ालिम हैं और बनादे हमारे लिए अपने पास से हिमायती और बनादे हमारे लिए अपने पास से मददगार। (75)

وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَأُولَئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ وَالصّٰدِقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصّٰلِحِينَ							
इन्आम किया	उन लोगों के साथ	तो यही लोग	और रसूल	अल्लाह	इताअत करे	और जो	
وَحَسَنَ أَوْلِيَّكَ رَفِيقًا ٦٩ ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللَّهِ وَكَفَىٰ							
और सालिहीन	और शुहदा	और सिद्दीकीन	अंबिया	से (यानी)	उन पर	अल्लाह	
और काफी	अल्लाह से	फज़ल	यह	69	साथी	यह लोग	और अच्छे
بِاللَّهِ عَلِيمًا ٧٠ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا خُذُوا حِذْرَكُمْ فَانفِرُوا							
फिर निकलो	अपने बचाओ (हथियार)	ले लो	वह लोग जो ईमान लाए (ईमान वालो)	ऐ	70	जानने वाला	अल्लाह
फिर अगर	ज़रूर देर लगादेगा	वह है जो	तुम में	और वेशक	71	सब	या निकलो (कूच करो) जुदा जुदा
ثَبَاتٍ أَوْانْفِرُوا جَمِيعًا ٧١ وَإِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيَبْطِئَنَّ فَإِنْ							
उन के साथ	मैं न था	जब	मुझ पर	वेशक अल्लाह ने इन्आम किया	कहे	कोई मुसीबत	तुम्हें पहुँचे
شَهِيدًا ٧٢ وَلَئِنْ أَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللَّهِ لَيَقُولَنَّ كَأَن لَّمْ تَكُنْ							
न थी	गोया	तो ज़रूर कहेगा	अल्लाह से	कोई फज़ल	तुम्हें पहुँचे	और अगर	72
بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ مَوَدَّةٌ يُلَيِّتَنِي كُنْتُ مَعَهُمْ فَأَفُوزَ							
तो मुराद पाता	उन के साथ	मैं होता	ऐ काश मैं	कोई दोस्ती	और उस के दरमियान	तुम्हारे दरमियान	
فَوْزًا عَظِيمًا ٧٣ فَلْيُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يَشْرُونَ							
बेचते हैं	वह जो कि	अल्लाह का रास्ता	में	सो चाहिए कि लड़ें	73	बड़ी	मुराद
الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ وَمَنْ يُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ							
अल्लाह का रास्ता	में	लड़ें	और जो	आखिरत के बदले	दुनिया	ज़िन्दगी	
فَيُقْتَلْ أَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ٧٤ وَمَا لَكُمْ							
तुम्हें	और क्या	74	बड़ा अज़र	हम उसे देंगे	अज़र करीब	ग़ालिब आए	या फिर मारा जाए
لَا تُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ							
मर्द (जमा)	से	और कमज़ोर (बेबस)	अल्लाह का रास्ता	में	तुम नहीं लड़ते		
وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا							
हमें निकाल	ऐ हमारे रब	कहते हैं (दुआ)	जो	और बच्चे	और औरतें		
مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظّٰلِمِ اٰهْلِهَا وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ							
से	हमारे लिए	और बनादे	उस के रहने वाले	ज़ालिम	बस्ती	इस	से
لَدُنْكَ وَلِيًّا ٧٥ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَدُنْكَ نَصِيرًا ٧٥							
75	मददगार	अपने पास	से	हमारे लिए	और बनादे	(हिमायती) दोस्त	अपने पास

الَّذِينَ آمَنُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا									
वह लोग जिन्होंने कुफ़ किया (काफ़िर)	अल्लाह का रास्ता	में	वह लड़ते हैं	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)					
يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ الطَّاغُوتِ فَقَاتِلُوا أَوْلِيَاءَ الشَّيْطَانِ									
शैतान	दोस्त (साथी)	सो तुम लड़ो	तागूत (सरकश)	रास्ता	में	वह लड़ते हैं			
إِنَّ كَيْدَ الشَّيْطَانِ كَانَ ضَعِيفًا ﴿٧٦﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ قِيلَ									
कहा गया	वह लोग जो	तरफ़	क्या तुम ने नहीं देखा	76	कमज़ोर (बोदा)	है	शैतान	चाल	वेशक
لَهُمْ كُفِّرُوا أَيَّدِيكُمْ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ فَلَمَّا									
फिर जब	ज़कात	और अदा करो	नमाज़	और काइम करो	अपने हाथ	रोक लो	उन को		
كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللَّهِ									
जैसे अल्लाह का डर	लोग	डरते हैं	उन में से	एक फ़रीक़	जब	लड़ना (जिहाद)	उन पर फ़र्ज़ हुआ		
أَوْ أَشَدَّ خَشْيَةً وَقَالُوا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ									
लड़ना (जिहाद)	हम पर	तू ने क्यों लिखा	ऐ हमारे रब	और वह कहते हैं	डर	ज़ियादा	या		
لَوْ لَا أَخْرَجْنَا إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ قُلُوبَنَا قَلِيلٌ وَالْآخِرَةُ									
और आख़िरत	थोड़ा	दुनिया	फ़ाइदा	कह दें	थोड़ी	मुद्दत	तक	हमें ढील दी	क्यों न
خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقَىٰ وَلَا تُظْلَمُونَ فَتِيلًا ﴿٧٧﴾ أَيْنَ مَا تَكُونُوا									
तुम होगे	जहाँ कहीं	77	धागे बराबर	और न तुम पर जुल्म होगा	परहेज़गार के लिए	बेहतर			
يُدْرِكُكُمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِي بُرُوجٍ مُّشِيدَةٍ وَإِنْ تُصِبْهُمْ									
उन्हें पहुँचे	और अगर	मज़बूत	बुर्जों में	अगरचे तुम हो	मौत	तुम्हें पा लेगी			
حَسَنَةً يَّقُولُوا هَذِهِ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ									
कुछ बुराई	उन्हें पहुँचे	और अगर	अल्लाह के पास (तरफ़)	से	यह	वह कहते हैं	कोई भलाई		
يَّقُولُوا هَذِهِ مِنْ عِنْدِكَ قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ فَمَالِ									
तो क्या हुआ	अल्लाह के पास (तरफ़)	से	सब	कह दें	आप (स) की तरफ़ से	से	यह	वह कहते हैं	
هَؤُلَاءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ حَدِيثًا ﴿٧٨﴾ مَا أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ									
कोई भलाई	तुझे पहुँचे	जो	78	बात	कि समझें	नहीं लगते	कौम	इस	
فَمِنَ اللَّهِ وَمَا أَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنَ نَفْسِكَ وَأَرْسَلْنَاكَ									
और हम ने तुम्हें भेजा	तो तेरे नफ़्स से	कोई बुराई	तुझे पहुँचे	और जो	सो अल्लाह से				
لِلنَّاسِ رَسُولًا وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ﴿٧٩﴾ مَنْ يُطِعِ الرَّسُولَ									
रसूल (स)	इताअत की	जो-जिस	79	गवाह	अल्लाह	और काफी है	रसूल	लोगों के लिए	
فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهُ وَمَنْ تَوَلَّىٰ فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ﴿٨٠﴾									
80	निगहबान	उन पर	हम ने आप (स) को भेजा	तो नहीं	रू गर्दानी की	और जो-जिस	अल्लाह	पस तहकीक इताअत की	

ईमान लाने वाले अल्लाह के रास्ते में लड़ते हैं और काफ़िर लड़ते हैं तागूत (सरकश मुफ़सिद) के रास्ते में, सो तुम शैतान के साथियों से लड़ो, बेशक शैतान की चाल कमज़ोर (बोदा) है! (76)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें कहा गया अपने हाथ रोक लो और काइम करो नमाज़ और ज़कात अदा करो, फिर जब उन पर जिहाद फ़र्ज़ हुआ तो उन में से एक फ़रीक़ लोगों से डरता है जैसे अल्लाह का डर हो या उस से भी ज़ियादा डर, और वह कहते हैं ऐ हमारे रब! तू ने हम पर जिहाद क्यों फ़र्ज़ कर दिया, हमें और थोड़ी मुद्दत क्यों न मुहलत दी? कह दें, दुनिया का फ़ाइदा थोड़ा है और आख़िरत बेहतर है परहेज़गार के लिए, और तुम पर जुल्म न होगा धागे बराबर (भी), (77)

तुम जहाँ कहीं होगे तुम्हें मौत पा लेगी अगरचे तुम होगे बुर्जों में मज़बूत, और अगर उन्हें कोई भलाई पहुँचे तो वह कहते हैं कि यह अल्लाह की तरफ़ से है, और अगर उन्हें कुछ बुराई पहुँचे तो कहते हैं कि यह आप (स) की तरफ़ से है। आप (स) कह दें सब कुछ अल्लाह की तरफ़ से है, उस कौम को (उन लोगों को) क्या हो गया है कि यह बात समझते नहीं लगते (बात समझते मज़लूम नहीं होते) (78)

जो तुम्हें कोई भलाई पहुँचे सो वह अल्लाह की तरफ़ से है, और जो तुम्हें कोई बुराई पहुँचे तो वह तुम्हारे नफ़्स से है, और हम ने तुम्हें लोगों के लिए रसूल बना कर भेजा है, और अल्लाह काफी है गवाह। (79)

जिस ने रसूल की इताअत की पस तहकीक उस ने अल्लाह की इताअत की, और जिस ने रू गर्दानी की तो हम ने आप (स) को उन पर निगहबान नहीं भेजा। (80)

वह (मुँह से तो) यह कहते हैं कि हम ने माना, फिर जब बाहर जाते हैं आप (स) के पास से तो उन में से एक गिरोह रात को उस के खिलाफ मशवरा करता है जो वह कह चुके, और अल्लाह लिख लेता है जो वह रात को मशवरे करते हैं, आप (स) उन से मुँह फेर लें और अल्लाह पर भरोसा करें, और अल्लाह काफी है कारसाज़। (81)

फिर क्या वह कुरआन पर गौर नहीं करते? और अगर अल्लाह के सिवा किसी और के पास से होता तो उस में ज़रूर बहुत इख़्तिलाफ़ पाते। (82)

और जब उन के पास कोई अमन की ख़बर आती है या ख़ौफ़ की तो उसे मशहूर कर देते हैं और अगर उसे पहुँचाते रसूल की तरफ़ और अपने हाकिमों की तरफ़ तो जो लोग उन में से तहकीक़ कर लिया करते हैं उस को जान लेते। और अगर अल्लाह का फ़ज़ल न होता तुम पर और उस की रहमत (न होती) तो चन्द एक के सिवा तुम शैतान के पीछे लग जाते। (83)

पस आप (स) अल्लाह की राह में लड़ें, आप (स) मुकल्लफ़ नहीं मगर अपनी जान के, और मोमिनों को आमदा करें, क़रीब है कि अल्लाह रोक दे काफ़िरों की जंग (का ज़ोर) और अल्लाह की जंग सख़्त तरीन है और उस की सज़ा सब से सख़्त है। (84)

जो कोई नेक बात में सिफ़ारिश करे उस के लिए उस से हिस्सा होगा, और जो कोई सिफ़ारिश करे बुरी बात में उस को उस का वोझ (हिस्सा) मिलेगा, और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है। (85)

और जब तुम्हें कोई दुआ दे (सलाम करे) तो तुम उस से बेहतर दुआ दो या वही कह दो, बेशक अल्लाह हर चीज़ का हिसाब करने वाला है। (86)

अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह ज़रूर तुम्हें क़ियामत के दिन इकट्ठा करेगा जिस में कोई शक़ नहीं, और कौन ज़ियादा सच्चा है बात में अल्लाह से। (87)

وَيَقُولُونَ طَاعَةٌ فَإِذَا بَرَّرُوا مِنَ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَائِفَةٌ							
एक गिरोह	रात को मशवरा करता है	आप (स) के पास	से	बाहर जाते हैं	फिर जब	(हम ने) हुक्म माना	और वह कहते हैं
مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِي تَقُولُ وَاللَّهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُونَ فَأَعْرِضْ							
मुँह फेरलें	जो वह रात को मशवरे करते हैं	लिख लेता है	और अल्लाह	कहते हैं	उस के खिलाफ़ जो	उन से	
عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿٨١﴾ أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ							
फिर क्या वह गौर नहीं करते?	81	कारसाज़	अल्लाह	और काफ़ी है	अल्लाह पर	और भरोसा करें	उन से
الْقُرْآنَ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللَّهِ لَوَجَدُوا فِيهِ اخْتِلَافًا							
इख़्तिलाफ़	उस में	ज़रूर पाते	अल्लाह के सिवा	पास	से	और अगर होता	कुरआन
كَثِيرًا ﴿٨٢﴾ وَإِذَا جَاءَهُمْ أَمْرٌ مِنَ الْأَمْنِ أَوْ الْخَوْفِ أَذَاعُوا بِهِ							
उसे	मशहूर कर देते हैं	ख़ौफ़	या	अमन	से (की)	कोई ख़बर	उन के पास आती है
وَلَوْ رَدُّوهُ إِلَى الرَّسُولِ وَإِلَىٰ أُولِي الْأَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِينَ							
जो लोग	तो उस को जान लेते	अपने में से	हाकिम	और तरफ़	रसूल की तरफ़	उसे पहुँचाते	और अगर
يَسْتَنْبِطُونَهُ مِنْهُمْ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَاتَّبَعْتُمُ							
तुम पीछे लग जाते	और उस की रहमत	तुम पर	अल्लाह का फ़ज़ल	और अगर न	उन से	सही नतीजा निकाल लिया करते हैं	
الشَّيْطَانَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٨٣﴾ فَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا تُكَلَّفُ إِلَّا							
मगर	मुकल्लफ़ नहीं	अल्लाह की राह	में	पस लड़ें	83	चन्द एक	सिवाए
نَفْسِكَ وَحَرِّضَ الْمُؤْمِنِينَ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَكْفِ بِأَسِ الَّذِينَ							
जिन लोगों ने	जंग	रोक दे	कि	क़रीब है कि अल्लाह	मोमिन (जमा)	और आमदा करें	अपनी ज़ात
كَفَرُوا وَاللَّهُ أَشَدُّ بَأْسًا وَأَشَدُّ تَنْكِيلًا ﴿٨٤﴾ مَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً							
सिफ़ारिश	सिफ़ारिश करे	जो	84	सज़ा देना	और सब से सख़्त	जंग	सख़्त तरीन
حَسَنَةً يَّكُنْ لَهُ نَصِيبٌ مِّنْهَا وَمَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ لَهُ							
होगा - उस के लिए	बुरी बात	सिफ़ारिश	सिफ़ारिश करे	और जो	उस में से	हिस्सा	होगा - उस के लिए
كِفْلٌ مِّنْهَا وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ مُّقِيتًا ﴿٨٥﴾ وَإِذَا حُيِّتُمْ							
तुम्हें दुआ दे	और जब	85	कुदरत रखने वाला	हर चीज़	पर	अल्लाह	और है
بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوا بِأَحْسَنَ مِنْهَا أَوْ رُدُّوهَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ							
पर (का)	है	बेशक अल्लाह	या वही लौटा दो (कह दो)	उस से	बेहतर	तो तुम दुआ दो	किसी दुआ (सलाम) से
كُلِّ شَيْءٍ حَسِيبًا ﴿٨٦﴾ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ لِيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَىٰ							
तरफ़	वह तुम्हें ज़रूर इकट्ठा करेगा	उस के सिवा	नहीं इबादत के लाइक़	अल्लाह	86	हिसाब करने वाला	हर चीज़
يَوْمَ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ حَدِيثًا ﴿٨٧﴾							
87	बात में	अल्लाह से	ज़ियादा सच्चा	और कौन?	इस में	नहीं शक	रोज़े क़ियामत

فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنْفِقِينَ فِتْنِينَ وَاللَّهُ أَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوا <sup>ط</sup>						
उस के सबब जो उन्होंने ने कमाया (किया)	उन्हें उलट दिया (औन्धा कर दिया)	और अल्लाह	दो फरीक	मुनाफिकीन के बारे में	सो क्या हुआ तुम्हें?	
أَتْرِيدُونَ أَنْ تَهْدُوا مَنْ أَضَلَّ اللَّهُ وَمَنْ يُضِلِّ اللَّهُ فَمَا لَهُ سَبِيلًا						
गुमराह करे अल्लाह	और जो-जिस	अल्लाह ने गुमराह किया	जो-जिस	कि राह पर लाओ	क्या तुम चाहते हो?	
فَلَنْ تَجِدَ لَهُ سَبِيلًا (88) وَذُوا لَوْ تَكْفُرُونَ كَمَا كَفَرُوا						
वह काफिर हुए	जैसे	काश तुम काफिर हो जाओ	वह चाहते हैं	88	कोई राह	उस के लिए पस तुम हरगिज़ न पाओगे
فَتَكُونُونَ سَوَاءً فَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ أَوْلِيَاءَ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا						
वह हिज्रत करें	यहां तक कि	दोस्त	उन से	पस तुम न बनाओ	बराबर	तो तुम हो जाओ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَحُذَوْهُمْ وَأَقْتُلُوهُمْ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ وِلِيًّا وَلَا نَصِيرًا (89) إِلَّا						
जहां कहीं	और उन्हें क़त्ल करो	तो उन को पकड़ो	मुँह मोड़ें	फिर अगर	अल्लाह की राह में	
وَجَدْتُمُوهُمْ وَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ وِلِيًّا وَلَا نَصِيرًا (89) إِلَّا						
मगर	89	मददगार	और न	दोस्त	उन से	बनाओ और न तुम उन्हें पाओ
الَّذِينَ يَصِلُونَ إِلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقٌ أَوْ						
या	अहद (मुआहदा)	और उन के दरमियान	तुम्हारे दरमियान	कौम	तरफ (से)	मिल गए हैं (तअल्लुक रखते हैं) जो लोग
جَاءَكُمْ حَصْرَتْ صُدُورُهُمْ أَنْ يُقَاتِلُوكُمْ أَوْ يُقَاتِلُوا						
लड़ें	या	वह तुम से लड़ें	कि	उन के सीने (दिल)	तंग हो गए	वह तुम्हारे पास आए
قَوْمَهُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقَاتِلُوكُمْ فَإِنْ						
फिर अगर	तो वह तुम से ज़रूर लड़ते	तुम पर	उन्हें मुसल्लत कर देता	चाहता अल्लाह	और अगर	अपनी कौम से
اِعْتَزَلُوكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوكُمْ وَالْقَوَا إِلَيْكُمْ السَّلَامُ						
सुलह	तुम्हारी तरफ	और डालें	वह तुम से लड़ें	फिर न	तुम से किनारा कश हों	
فَمَا جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيلًا (90) سَتَجِدُونَ الْخَرِيفَ						
और लोग	अब तुम पाओगे	90	कोई राह	उन पर	तुम्हारे लिए	अल्लाह तो नहीं दी
يُرِيدُونَ أَنْ يُآمِنُوكُمْ وَيَأْمِنُوا قَوْمَهُمْ كُلَّمَا رُذِّقُوا إِلَىٰ الْفِتْنَةِ						
फितने की तरफ	जब कभी लौटाए (बुलाए जाते हैं)	अपनी कौम	और अमन में रहें	कि तुम से अमन में रहें	वह चाहते हैं	
أَرْكَسُوا فِيهَا فَإِنْ لَمْ يَعْتَزِلُوكُمْ وَيُلْقُوا إِلَيْكُمْ						
तुम्हारी तरफ	और (न) डालें वह	तुम से किनारा कशी न करें	पस अगर	उस में	पलट जाते हैं	
السَّلَامَ وَيَكْفُرُوا أَيْدِيَهُمْ فَحُذَوْهُمْ وَأَقْتُلُوهُمْ حَيْثُ						
जहां कहीं	और उन्हें क़त्ल करो	तो उन्हें पकड़ो	अपने हाथ	और रोकें	सुलह	
ثَقَفْتُمُوهُمْ <sup>ط</sup> وَأَوْلِيكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا مُّبِينًا (91)						
91	खुली	सनद (हुज्जत)	उन पर	तुम्हारे लिए	हम ने दी	और यही लोग तुम उन्हें पाओ

सो तुम्हें क्या हो गया है?

मुनाफिकीन के बारे में दो गिरोह (हो रहे हो) और अल्लाह ने उन्हें औन्धा कर दिया उस के सबब जो उन्होंने ने किया, क्या तुम चाहते हो कि उसे राह पर लाओ जिस को अल्लाह ने गुमराह किया? और जिस को अल्लाह गुमराह करे तुम हरगिज़ उस के लिए कोई राह न पाओगे। (88)

वह चाहते हैं काश तुम (भी) काफिर हो जाओ जैसे वह काफिर हुए तो तुम बराबर हो जाओ। पस तुम उन में से (किसी को) दोस्त न बनाओ यहां तक कि वह हिज्रत करें अल्लाह की राह में, फिर अगर वह मुँह मोड़ें तो तुम जहां कहीं उन्हें पाओ पकड़ो और क़त्ल करो, और उन में से (किसी को) न दोस्त बनाओ न मददगार, (89)

मगर जो लोग तअल्लुक रखते हैं (ऐसी) कौम से कि तुम्हारे और उन के दरमियान मुआहदा है, या तुम्हारे पास आए (उस हाल में) कि तंग हो गए हैं उन के दिल (उस बात से) कि तुम से लड़ें या अपनी कौम से लड़ें, और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें तुम पर मुसल्लत कर देता तो वह तुम से ज़रूर लड़ते, फिर अगर वह तुम से किनारा कश रहें फिर तुम से न लड़ें और तुम्हारी तरफ सुलह (का पयाम) डालें, तो अल्लाह ने तुम्हारे लिए उन पर (सताने की) कोई राह नहीं रखी। (90)

अब तुम और लोग पाओगे जो चाहते हैं कि वह तुम से (भी) अमन में रहें और अपनी कौम से (भी) अमन में रहें, जब कभी फितना (फसाद) की तरफ बुलाए जाते हैं तो उस में पलट जाते हैं, पस अगर तुम से किनारा कशी न करें और वह न डालें तुम्हारी तरफ (पैगामे) सुलह, और (न) रोकें अपने हाथ, तो उन्हें पकड़ो और क़त्ल करो जहां कहीं तुम उन्हें पाओ, और यही लोग हैं जिन पर हम ने तुम्हें खुली सनद (हुज्जत) दी। (91)

और नहीं किसी मुसलमान के (शायां) कि वह किसी मुसलमान को कत्ल कर दे मगर ग़लती से। और जो किसी मुसलमान को कत्ल करे ग़लती से तो वह एक गुलाम आज़ाद करे और खून बहा उस के वारिसों के हवाले कर दे मगर यह कि वह माफ़ कर दें। फिर अगर वह तुम्हारी दुश्मन कौम से हो और वह खुद मुसलमान हो तो आज़ाद करे एक मुसलमान गुलाम। और अगर ऐसी कौम से हो कि उन के और तुम्हारे दरमियान मुआहदा है तो खून बहा उस के वारिसों के हवाले कर दे और एक मुसलमान गुलाम को आज़ाद कर दे। सो जो न पाए (मयस्सर न हो) तो दो माह लगातार रोज़े रखे, यह तौबा है अल्लाह की तरफ़ से, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (92)

और जो कोई किसी मुसलमान को दानिस्ता कत्ल कर दे तो उस की सज़ा जहन्नम है, वह हमेशा रहेगा उस में, और उस पर अल्लाह का ग़ज़ब होगा और उस की लानत, और उस के लिए (अल्लाह ने) बड़ा अज़ाब तैयार कर रखा है (93)

ऐ ईमान वालो! जब तुम अल्लाह की राह में (जिहाद के लिए) सफ़र करो तो तहकीक़ कर लिया करो, और जो तुम्हें सलाम करे उसे न कहो कि तू मुसलमान नहीं है, तुम चाहते हो दुनिया की ज़िन्दगी का सामान, फिर अल्लाह के पास बहुत ग़नीमतें हैं, तुम उसी तरह थे इस से पहले तो अल्लाह ने तुम पर एहसान किया, सो तहकीक़ कर लिया करो, बेशक जो तुम करते हो उस से अल्लाह खूब बाख़्बर है। (94)

बग़ैर उज़ूर बैठ रहने वाले मोमिनीन और वह बराबर नहीं जो अल्लाह की राह में अपने मालों से और अपनी जानों से जिहाद करने वाले हैं, अल्लाह ने फ़ज़ीलत दी दरजे में अपने मालों से और अपनी जानों से जिहाद करने वालों को बैठ रहने वालों पर, और हर एक को अल्लाह ने अच्छा वादा दिया है, और अल्लाह ने मुजाहिदों को बैठ रहने वालों पर फ़ज़ीलत दी है अजरे अज़ीम (के एतबार से)। (95)

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ أَنْ يَقْتُلَ مُؤْمِنًا إِلَّا خَطَاً وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَاً									
ग़लती से	किसी मुसलमान	कत्ल करे	और जो	मगर ग़लती से	किसी मुसलमान	कि वह कत्ल करे	किसी मुसलमान के लिए	है	और नहीं
فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ وَدِيَةٌ مُسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهَا إِلَّا أَنْ يَصَّدَّقُوا فَإِنْ									
फिर अगर	वह माफ़ कर दें	यह कि	मगर	उस के वारिसों को	हवाले करना	और खून बहा	मुसलमान	एक गर्दन (गुलाम)	तो आज़ाद करे
كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ وَإِنْ									
और अगर	मुसलमान	एक गर्दन (गुलाम)	तो आज़ाद कर दे	मुसलमान	और वह	तुम्हारी	दुश्मन कौम	से	हो
كَانَ مِنْ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقٌ فَدِيَةٌ مُسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهَا									
उस के वारिसों को	हवाले करना	खून बहा	अहद (मुआहदा)	और उन के दरमियान	तुम्हारे दरमियान	ऐसी कौम से	हो		
وَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ									
लगातार	दो माह	तो रोज़े रखे	न पाए	सो जो	मुसलमान	एक गर्दन (गुलाम)	और आज़ाद करना		
تَوْبَةً مِنَ اللَّهِ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا (92) وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا									
दानिस्ता (कस्दन)	किसी मुसलमान को	कत्ल कर दे	और जो कोई	92	हिक्मत वाला	जानने वाला	अल्लाह और है	अल्लाह से	तौबा
فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيهَا وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهُ وَأَعَدَّ لَهُ									
उस के लिए तैयार कर रखा है	और उस की लानत	उस पर	और अल्लाह का ग़ज़ब	उस में	हमेशा रहेगा	जहन्नम	तो उस की सज़ा		
عَذَابًا عَظِيمًا (93) يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا ضَرَبْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ									
अल्लाह की राह	में	तुम सफ़र करो	जब	ईमान लाए	जो लोग	ऐ	93	बड़ा	अज़ाब
فَتَبَيَّنُوا وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ أَلْقَىٰ إِلَيْكُمُ السَّلَامَ لَسْتَ مُؤْمِنًا تَبْتَغُونَ									
तुम चाहते हो	मुसलमान	तू नहीं है	सलाम	तुम्हारी तरफ़	डाले (करे)	जो कोई	तुम कहो	और न	तो तहकीक़ कर लो
عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللَّهِ مَغَانِمٌ كَثِيرَةٌ كَذَلِكَ كُنْتُمْ مِنْ قَبْلُ									
इस से पहले	तुम थे	उसी तरह	बहुत	ग़नीमतें	फिर अल्लाह के पास	दुनिया की ज़िन्दगी	असवाब (सामान)		
فَمَنْ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوا إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا (94)									
94	खूब बाख़्बर	तुम करते हो	उस से जो	है	बेशक अल्लाह	सो तहकीक़ कर लो	तुम पर	तो एहसान किया अल्लाह	
لَا يَسْتَوِي الْقُعْدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولَى الضَّرِّ وَالْمُجَاهِدُونَ									
और मुजाहिद (जमा)	उज़ूर वाले (मअज़ूर)	बग़ैर	मोमिनीन	से	बैठ रहने वाले	बराबर नहीं			
فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ									
जिहाद करने वाले	अल्लाह ने फ़ज़ीलत दी	और अपनी जानें	अपने मालों से	अल्लाह की राह	में				
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقُعْدِينَ دَرَجَةً وَكَلَّا وَعَدَّ اللَّهُ									
अल्लाह ने वादा दिया	और हर एक	दरजे	बैठ रहने वाले	पर	और अपनी जानें	अपने मालों से			
الْحُسْنَىٰ وَفَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ عَلَى الْقُعْدِينَ أَجْرًا عَظِيمًا (95)									
95	अजरे अज़ीम	बैठ रहने वाले	पर	मुजाहिदीन	और अल्लाह ने फ़ज़ीलत दी	अच्छा			



١٢  
ع ١٠

دَرَجَاتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا					
बख्शने वाला	अल्लाह	और है	और रहमत	और बख्शिश	उस की तरफ से
رَّحِيمًا (٩٦) إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّيْتُمُ الْمَلَائِكَةَ ظَالِمِينَ					
जुल्म करते थे	फरिश्ते	उन की जान निकालते हैं	वह लोग जो	वेशक	96 मेहरबान
أَنفُسِهِمْ قَالُوا فِيمَ كُنْتُمْ قَالُوا كُنَّا مُسْتَضْعَفِينَ					
वेबस	वह कहते हैं हम थे	तुम थे	किस (हाल) में	वह कहते हैं	अपनी जानें
فِي الْأَرْضِ قَالُوا أَلَمْ تَكُنْ أَرْضَ اللَّهِ وَاسِعَةً					
वसीज़	अल्लाह की ज़मीन	क्या न थी	वह कहते हैं	ज़मीन (मुल्क)	में
فَتُهَاجِرُوا فِيهَا فَأُولَئِكَ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَسَاءَتْ مَصِيرًا (٩٧)					
97	पहुँचने की जगह	और बुरा है	जहन्नम	उन का ठिकाना	पस तुम हिज़त कर जाते उस में
إِلَّا الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانَ					
और बच्चे	और औरतें	मर्द (जमा)	से	वेबस	मगर
لَا يَسْتَطِيعُونَ حِيلَةً وَلَا يَهْتَدُونَ سَبِيلًا (٩٨)					
98	कोई रास्ता	पाते हैं	और न	कोई तदवीर	नहीं कर सकते
فَأُولَئِكَ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَعْفُوَ عَنْهُمْ وَكَانَ اللَّهُ					
और है अल्लाह	उन से (उन को)	कि माफ़ फ़रमाए	उम्मीद है कि अल्लाह	सो ऐसे लोग हैं	
غَفُورًا غَفُورًا (٩٩) وَمَنْ يُهَاجِرْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَجِدْ					
वह पाएगा	अल्लाह का रास्ता	में	हिज़त करे	और जो	99 बख्शने वाला माफ़ करने वाला
فِي الْأَرْضِ مُرْغَمًا كَثِيرًا وَسِعَةً وَمَنْ يَخْرُجْ					
निकले	और जो	और कुशादगी	बहुत (वाफ़िर) जगह	ज़मीन	में
مِنْ بَيْتِهِ مُهَاجِرًا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ يُدْرِكُهُ					
आ पकड़े उस को	फिर	और उस का रसूल	अल्लाह की तरफ़	हिज़त कर के	अपना घर से
الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا					
बख्शने वाला	अल्लाह	और है	अल्लाह पर	उस का अजर	मौत तो साबित हो गया
رَّحِيمًا (١٠٠) وَإِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ					
तुम पर	पस नहीं	ज़मीन में	तुम सफ़र करो	और जब	100 मेहरबान
جُنَاحٌ أَنْ تَقْضُوا مِنَ الصَّلَاةِ إِنْ خِفْتُمْ أَنْ يَفْتِنَكُمْ					
तुम्हें सताएंगे	कि	तुम को डर हो	अगर	नमाज़	से कसर करो कि कोई गुनाह
الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ الْكُفْرَيْنَ كَانُوا لَكُمْ عَدُوًّا مُّبِينًا (١٠١)					
101	दुश्मन खुले	तुम्हारे	हैं	काफ़िर (जमा)	वेशक वह लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)

उस की तरफ़ से दरजे हैं और बख्शिश और रहमत है, और अल्लाह है बख्शने वाला मेहरबान। (96)

वेशक वह लोग जिन की फ़रिश्ते जान निकालते हैं (उस हाल में कि वह) जुल्म करते थे अपनी जानों पर, वह (फ़रिश्ते) कहते हैं तुम किस हाल में थे? वह कहते हैं कि हम वेबस थे इस मुल्क में, (फ़रिश्ते) कहते हैं क्या अल्लाह की ज़मीन वसीज़ न थी? पस तुम उस में हिज़त कर जाते, सो यही लोग हैं उन का ठिकाना जहन्नम है और वह पहुँचने (पलटने) की बुरी जगह है। (97)

मगर जो वेबस है मर्द और औरतें और बच्चे कि कोई तदवीर नहीं कर सकते और न कोई रास्ता पाते हैं, (98)

सो उम्मीद है कि ऐसे लोगों को अल्लाह माफ़ फ़रमाए, और अल्लाह माफ़ करने वाला, बख्शने वाला। (99)

और जो अल्लाह के रास्ते में हिज़त करे वह पाएगा ज़मीन में बहुत (वाफ़िर) जगह और कुशादगी, और जो अपने घर से हिज़त कर के निकले अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़, फिर उस को मौत आ पकड़े तो उस का अजर अल्लाह

पर साबित हो गया, और अल्लाह बख्शने वाला, मेहरबान है। (100)

और जब तुम मुल्क में सफ़र करो, पस नहीं तुम पर कोई गुनाह कि तुम नमाज़ कसर करो (कम कर लो) अगर तुम को डर हो कि तुम्हें सताएंगे काफ़िर, वेशक काफ़िर तुम्हारे खुले दुश्मन है। (101)

١٢  
ع ١१

और जब आप (स) उन में मौजूद हों, फिर उन के लिए नमाज़ काइम करें (नमाज़ पढ़ाने लगे) तो चाहिए कि उन में से एक जमाअत आप के साथ खड़ी हो और चाहिए कि वह अपने हथियार ले लें, फिर जब वह सिज्दा कर लें तो तुम्हारे पीछे हो जाएं, और (अब) आप दूसरी जमाअत (जिस ने) नमाज़ नहीं पढ़ी, पस वह आप (स) के साथ नमाज़ पढ़ें, और चाहिए कि वह लिए रहें अपना बचाओ और अपना अस्लीहा, काफ़िर चाहते हैं कि कहीं तुम अपने हथियारों और अपने सामान से ग़ाफ़िल हो तो तुम पर यकवारगी झुक पड़ें (हमला कर दें), और तुम पर गुनाह नहीं अगर तुम्हें बारिश के सबब तकलीफ़ हो या तुम बीमार हो कि तुम अपना अस्लीहा उतार रखो, और अपना बचाओ ले लो, बेशक अल्लाह ने काफ़िरों के लिए ज़िल्लत वाला अज़ाब तैयार कर रखा है। (102)

फिर जब तुम नमाज़ अदा कर चुको तो अल्लाह को याद करो खड़े और बैठे अपनी करवटों पर लेटे हुए, फिर जब तुम मुत्मइन (खातिर जमा) हो जाओ तो (हस्बे दस्तूर) नमाज़ काइम करो, बेशक नमाज़ मोमिनों पर (वक़ैदे वक़्त) मुक़र्ररा औकात में फ़र्ज़ है। (103)

और कुफ़ार का पीछा (तज़ाक़ुब) करने में हिम्मत न हारो, अगर तुम्हें दुख पहुँचता है तो बेशक उन्हें (भी) दुख पहुँचता है जैसे तुम्हें दुख पहुँचता है, और तुम अल्लाह से उम्मीद रखते हो जो वह उम्मीद नहीं रखते, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (104)

बेशक हम ने आप (स) की तरफ़ किताब नाज़िल की सच्ची ताकि आप लोगों के दरमियान फ़ैसला कर दें जो आप को अल्लाह दिखा दे (सुझा दे) और आप न हों दगाबाज़ों के तरफ़दार। (105)

وَإِذَا كُنْتُمْ فِيهِمْ فَأَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلَاةَ فَلْتَقُمْ طَآئِفَةٌ							
एक जमाअत	तो चाहिए कि खड़ी हो	नमाज़	उन के लिए	फिर काइम करें	उन में	आप हों	और जब
مِّنْهُمْ مَّعَكَ وَلْيَأْخُذُوا أَسْلِحَتَهُمْ فَإِذَا سَجَدُوا فَلْيَكُونُوا							
तो हो जाएं	वह सिज्दा कर लें	फिर जब	अपने हथियार	और चाहिए कि वह ले लें	आप (स) के साथ	उन में से	
مِنْ وَّرَآئِكُمْ ۖ وَلِتَاتِ طَآئِفَةٌ أُخْرَىٰ لَمْ يُصَلُّوا فَلْيُصَلُّوا							
पस वह नमाज़ पढ़ें	नमाज़ नहीं पढ़ी	दूसरी	जमाअत	और चाहिए कि आए	तुम्हारे पीछे		
مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا حِذْرَهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ ۗ وَذَ الَّذِينَ							
चाहते हैं जिन लोगों ने	और अपना अस्लीहा	अपना बचाओ	और चाहिए कि लें	आप (स) के साथ			
كَفَرُوا لَوْ تَعَفَّلُونَ عَنْ أَسْلِحَتِكُمْ وَأَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيلُونَ							
तो वह झुक पड़ें (हमला करें)	और अपने सामान	अपने हथियार (जमा)	से	कहीं तुम ग़ाफ़िल हो	कुफ़ किया (काफ़िर)		
عَلَيْكُمْ مَّيْلَةً وَاحِدَةً ۗ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ كَانَ بِكُمْ							
तुम्हें	हो	अगर	तुम पर	गुनाह	और नहीं	एक बार (यकवारगी)	तुम पर
أَذَىٰ مِّنْ مَّطَرٍ ۚ أَوْ كُنْتُمْ مَّرْضَىٰ أَنْ تَضَعُوا أَسْلِحَتَكُمْ							
अपना अस्लीहा	कि उतार रखो	बीमार	या तुम हो	बारिश से	तकलीफ़		
وَأُخَذُوا حِذْرَهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿١٠٢﴾							
102	ज़िल्लत वाला	अज़ाब	काफ़िरों के लिए	तैयार किया	बेशक अल्लाह	अपना बचाओ	और ले लो
فَإِذَا قُضِيَّتِ الصَّلَاةُ فَادْكُرُوا اللَّهَ قِيَمًا وَقَعُودًا							
और बैठे	खड़े	तो अल्लाह को याद करो	नमाज़	तुम अदा कर चुको	फिर जब		
وَعَلَىٰ جُنُوبِكُمْ ۖ فَإِذَا اطْمَأْنَنْتُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ ۗ إِنَّ							
बेशक	नमाज़	तो काइम करो	तुम मुत्मइन हो जाओ	फिर जब	अपनी करवटें	और पर	
الصَّلَاةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مَّقْشُورًا ﴿١٠٣﴾							
103	मुक़र्ररा औकात में	फ़र्ज़	मोमिनीन	पर	है	नमाज़	
وَلَا تَهِنُوا فِي ابْتِغَاءِ الْقَوْمِ ۗ إِنْ تَكُونُوا تَأْلَمُونَ فَإِنَّهُمْ							
तो बेशक उन्हें	तुम्हें तकलीफ़ पहुँचती है	अगर	क़ौम (कुफ़ार)	पीछा करने में	और हिम्मत न हारो		
يَأْلَمُونَ كَمَا تَأْلَمُونَ ۖ وَتَرْجُونَ مِنَ اللَّهِ مَا لَا يَرْجُونَ ۗ							
वह उम्मीद रखते	जो नहीं	अल्लाह से	और तुम उम्मीद रखते हो	जैसे तुम्हें तकलीफ़ पहुँचती है	तकलीफ़ पहुँचती है		
وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٠٤﴾ ۗ إِنَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ							
ताकि आप फ़ैसला करें	हक़ के साथ (सच्ची)	किताब	आप (स) की तरफ़	हम ने नाज़िल किया	बेशक हम	104	हिक्मत वाला जानने वाला और है अल्लाह
بَيْنَ النَّاسِ بِمَا أَرَبَكَ اللَّهُ ۗ وَلَا تَكُنْ لِلْخَائِبِينَ خَصِيمًا ﴿١٠٥﴾							
105	झगड़ने वाला (तरफ़दार)	ख़ियानत करने वालों (दगाबाज़ों) के लिए	हैं	और न	अल्लाह	जो दिखाए आप को	लोग दरमियान

وَأَسْتَغْفِرِ اللَّهَ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿١٠٦﴾ وَلَا تُجَادِلْ عَنِ							
से	और न झगड़ें	106	मेहरबान	बख़शने वाला	है	वेशक अल्लाह	और अल्लाह से बख़्शिश मांगें
الَّذِينَ يَخْتَانُونَ أَنفُسَهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَن كَانَ							
जो हो	दोस्त नहीं रखता	वेशक अल्लाह	अपने तई	ख़ियानत करते हैं	जो लोग		
خَوَانًا أَثِيمًا ﴿١٠٧﴾ يَسْتَخْفُونَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُونَ							
और नहीं छुपते (शर्माते)	लोग	से	वह छुपते (शर्माते) हैं	107	गुनाहगार	खाइन (दगावाज़)	
مِنَ اللَّهِ وَهُوَ مَعَهُمْ إِذْ يُبَيِّتُونَ مَا لَا يَرْضَى							
पसन्द करता	जो नहीं	जब रातों को मशवरा करते हैं	उन के साथ	हालाकि वह	अल्लाह से		
مِنَ الْقَوْلِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطًا ﴿١٠٨﴾ هَآئِنَّمِ							
हाँ तुम	108	अहाता किए (घेरे) हुए	वह करते हैं	उसे जो	अल्लाह और है	बात	से
هَؤُلَاءِ جَادَلْتُمْ عَنْهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۗ فَمَن يُجَادِلْ							
झगड़ेगा	सो- कौन	दुनियावी ज़िन्दगी	में	उन (की तरफ) से	तुम ने झगड़ा किया	वह	
اللَّهُ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَمْ مَن يَكُونُ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ﴿١٠٩﴾							
109	वकील	उन पर (उन का)	होगा	कौन? या	रोज़े कियामत	उन (की तरफ) से	अल्लाह
وَمَن يَعْمَلْ سُوءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهُ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللَّهَ يَجِدِ							
वह पाएगा	फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहे	अपनी जान	या जुल्म करे	बुरा काम	काम करे	और जो	
اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿١١٠﴾ وَمَن يَكْسِبْ إِثْمًا فَإِنَّمَا يَكْسِبُهُ							
वह कमाता है	तो फ़क़्त	गुनाह	कमाए	और जो	110	मेहरबान	बख़शने वाला अल्लाह
عَلَىٰ نَفْسِهِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١١١﴾ وَمَن يَكْسِبْ خَطِيئَةً							
ख़ता	कमाए	और जो	111	हिक्मत वाला	जानने वाला	अल्लाह और है	अपनी जान पर
أَوْ إِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهِ بَرِيئًا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ﴿١١٢﴾							
112	सरीह (खुला)	और गुनाह	भारी बुहतान	तो उस ने लादा	किसी बेगुनाह	उस की तुहमत लगा दे	फिर या गुनाह
وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهُ لَهَمَّتْ طَائِفَةٌ مِّنْهُمْ							
उन में से	एक जमाअत	तो क़स्द किया ही था	और उस की रहमत	आप पर	अल्लाह का फ़ज़ल	और अगर न	
أَن يُضِلُّوكَ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّونَكَ							
और नहीं बिगाड़ सकते आप (स) का	अपने आप	मगर	बहका रहे हैं	और नहीं	कि आप को बहका दें		
مِن شَيْءٍ ۗ وَأَنْزَلَ اللَّهُ عَلَيْكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ							
और आप को सिखाया	और हिक्मत	किताब	आप (स) पर	और अल्लाह ने नाज़िल की	कुछ भी		
مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ۗ وَكَانَ فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ عَظِيمًا ﴿١١٣﴾							
113	बड़ा	आप (स) पर	अल्लाह का फ़ज़ल	और है	तुम जानते	जो नहीं थे	

और अल्लाह से बख़्शिश मांगें, वेशक अल्लाह है बख़शने वाला मेहरबान। (106)

आप उन लोगों की तरफ से न झगड़ें जो अपने तई ख़ियानत करते हैं, वेशक अल्लाह उसे दोस्त नहीं रखता जो खाइन (दगावाज़) गुनाहगार हो। (107)

वह लोगों से छुपते (शर्माते) हैं और अल्लाह से नहीं छुपते (शर्माते) हालाकि वह उन के साथ है जब कि वह रातों को मशवरा करते हैं जो बात (अल्लाह को) पसन्द नहीं, और जो वह करते हैं अल्लाह उसे अहाता किए (घेरे हुए) है। (108)

हाँ (सुनो) तुम वह लोग हो तुम ने उन (की तरफ) से दुनियावी ज़िन्दगी में झगड़ा किया, सो कौन अल्लाह से झगड़ेगा रोज़े कियामत उन की तरफ से, या कौन उन का वकील होगा? (109)

और जो कोई करे बुरा काम या अपनी जान पर जुल्म करे, फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहे तो वह अल्लाह को बख़शने वाला मेहरबान पाएगा। (110)

और जो कोई गुनाह कमाए तो वह फ़क़्त अपनी जान पर (अपने हक़ में) कमाता है। और अल्लाह है जानने वाला, हिक्मत वाला। (111)

और जो कोई ख़ता या गुनाह कमाए, फिर उस की तुहमत लगा दे किसी बेगुनाह पर तो उस ने भारी बुहतान और सरीह (खुला) गुनाह लादा। (112)

और अगर अल्लाह का फ़ज़ल और उस की रहमत आप (स) पर न होती तो उन की एक जमाअत ने क़स्द कर ही लिया था कि आप को बहका दें, और वह नहीं बहका रहे हैं मगर अपने आप को, और आप (स) का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते, और अल्लाह ने आप (स) पर नाज़िल की किताब और हिक्मत, और आप (स) को सिखाया जो आप (स) न जानते थे, और है आप (स) पर अल्लाह का बड़ा फ़ज़ल। (113)

उन के अक्सर मशवरों (सरगोशियों) में कोई भलाई नहीं मगर यह कि जो हुकम दे खैरात का या अच्छी बात का या लोगों के दरमियान इसलाह कराने का, और जो यह करे अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए, सो अ़नक़रीब हम उसे बड़ा सवाब देंगे। (114)

और जो कोई उस के बाद रसूल (स) की मुख़ालिफ़त करे जब कि उस पर हिदायत ज़ाहिर हो चुकी है, और सब मोमिनों के रास्ते के ख़िलाफ़ चले हम उस के हवाले कर देंगे जो उस ने इख़्तियार किया और हम उसे जहन्नम में दाख़िल करेंगे, और यह पलटने की बुरी जगह है। (115)

वेशक अल्लाह उस को नहीं बख़्शता कि उस का शरीक ठहराया जाए और बख़्श देगा उस के सिवा जिस को चाहे, और जिस ने अल्लाह का शरीक ठहराया, सो वह गुमराह हुआ, गुमराही में बहुत दूर निकल गया। (116)

वह उस (अल्लाह) के सिवा नहीं पुकारते (परसूतिश करते) मगर औरतों को, और नहीं पुकारते मगर सरकश शैतान को, (117)

अल्लाह ने उस पर लानत की। उस (शैतान) ने कहा मैं तेरे बन्दों से अपना हिस्सा ज़रूर लूंगा मुकर्ररा। (118)

और मैं उन्हें ज़रूर बहकाऊंगा, और ज़रूर उम्मीदें दिलाऊंगा, और उन्हें ज़रूर सिखाऊंगा तो वह ज़रूर चीरेंगे (बुतों की खातिर) जानवरों के कान, और मैं उन्हें सिखाऊंगा तो वह अल्लाह की (बनाई हुई) सूरतें बदलेंगे, और जो बनाए अल्लाह के सिवा शैतान को दोस्त तो वह सरीह नुक़सान में पड़ गया। (119)

वह उन को वादे करता है और उम्मीदें दिलाता है और शैतान उन्हें वादे नहीं करता मगर सिर्फ़ फ़रेब (निरा धोका) (120)

यही लोग है जिन का ठिकाना जहन्नम है और वह उस से भागने की जगह न पाएंगे। (121)

لَا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِّنْ نَّجْوَاهُمْ إِلَّا مَنْ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ								
या	खैरात का	हुकम दे	मगर	उन की सरगोशियों	से	अक्सर	में	नहीं कोई भलाई
यह			करे	और जो	लोगों के दरमियान	या इसलाह कराना	अच्छी बात का	
ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١١٤﴾ وَمَنْ								
और जो	114	बड़ा	सवाब	हम उसे देंगे	सो अ़नक़रीब	अल्लाह की रज़ा	हासिल करना	
हिदायत			उस के लिए	ज़ाहिर हो चुकी	जब	उस के बाद	रसूल	मुख़ालिफ़त करे
وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ وَنُصَلِّهِ								
और हम उसे दाख़िल करेंगे	जो उस ने इख़्तियार किया	हम हवाले कर देंगे	मोमिनों का रास्ता			ख़िलाफ़	और चले	
جَهَنَّمَ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ﴿١١٥﴾ إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ								
कि शरीक ठहराया जाए	नहीं बख़्शता	वेशक अल्लाह	115	पहुँचने (पलटने) की जगह	और बुरी जगह	जहन्नम		
بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ								
अल्लाह का	शरीक ठहराया	और जिस	वह चाहे	जिस को	उस	सिवा	जो	और बख़्शेगा उस का
فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿١١٦﴾ إِنَّ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ								
उस के सिवा			वह नहीं पुकारते	116	दूर	गुमराही	सो गुमराह हुआ	
إِلَّا إِنثًا وَإِنْ يَدْعُونَ إِلَّا شَيْطَانًا مَّرِيدًا ﴿١١٧﴾ لَعَنَهُ اللَّهُ								
अल्लाह ने उस पर लानत की	117	सरकश	शैतान	मगर	पुकारते है	और नहीं	मगर औरतें	
وَقَالَ لَا تَخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا ﴿١١٨﴾								
118	मुकर्ररा	हिस्सा	तेरे बन्दे	से	मैं ज़रूर लूंगा	और उस ने कहा		
وَلَا ضَلَّيْنَهُمْ وَلَا مَنِّيَنَهُمْ وَلَا أَمْرَتَهُمْ فَلْيُبْتِئِكُنَّ آذَانَ								
कान	तो वह ज़रूर चीरेंगे	और उन्हें हुकम दुँगा	और उन्हें ज़रूर उम्मीदें दिलाऊंगा			और उन्हें ज़रूर बहकाऊंगा		
الْأَنْعَامِ وَلَا أَمْرَتَهُمْ فَلْيَغْيِرَنَّ خَلْقَ اللَّهِ وَمَنْ يَتَّخِذِ								
पकड़े (बनाए)	और जो	अल्लाह की (बनाई हुई) सूरतें	तो वह ज़रूर बदलेंगे	और उन्हें हुकम दुँगा			जानवर (जमा)	
الشَّيْطَانَ وَلِيًّا مِّنْ دُونِ اللَّهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِينًا ﴿١١٩﴾								
119	सरीह	नुक़सान	तो वह पड़ा नुक़सान में	अल्लाह के सिवा			दोस्त	शैतान
يَعِدُّهُمْ وَيَمَنِّيَنَهُمْ وَمَا يَعِدُّهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ﴿١٢٠﴾								
120	सिर्फ़ फ़रेब	मगर	शैतान	और उन्हें वादे नहीं देता	और उन्हें उम्मीदें दिलाता है			वह उन को वादा देता है
أُولَٰئِكَ مَاؤُهُمْ جَهَنَّمُ وَلَا يَجِدُونَ عَنْهَا مَحِيصًا ﴿١٢١﴾								
121	भागने की जगह	उस से	और वह न पाएंगे	जहन्नम	जिन का ठिकाना			यही लोग

١٤  
٤٣  
١٢

وقف

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ							
वागात	हम अनकरीब उन्हें दाखिल करेंगे	अच्छे	और उन्होंने ने अमल किए	ईमान लाए	और जो लोग		
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا وَعَدَّ اللَّهُ							
अल्लाह का वादा	हमेशा हमेशा	उस में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	से	बहती है
حَقًّا وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ قِيلًا (122) لَيْسَ بِأَمَانِيِّكُمْ							
तुम्हारी आर्जूओं पर	न	122	वात में	अल्लाह	से	सच्चा	और कौन सच्चा
وَلَا أَمَانِيَّ أَهْلِ الْكِتَابِ مَنْ يَعْمَلْ سُوءًا يُجْزَ بِهِ							
उस की सज़ा पाएगा	बुराई	जो करेगा	अहले किताब	आर्जूएं	और न		
وَلَا يَجِدْ لَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا (123) وَمَنْ يَعْمَلْ							
करेगा	और जो	123	और न मददगार	कोई दोस्त	अल्लाह के सिवा	अपने लिए	और न पाएगा
مِنَ الصَّالِحَاتِ مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ							
तो ऐसे लोग	मोमिन	वशर्त यह कि वह	या औरत	मर्द	से	अच्छे काम	से
يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ نَقِيرًا (124) وَمَنْ أَحْسَنُ							
ज़ियादा बेहतर	और कौन	124	तिल बराबर	उन पर जुल्म होगा	और न	जन्नत	दाखिल होंगे
دِينًا مِمَّنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَاتَّبَعَ مِلَّةَ							
दीन	और उस ने पैरवी की	नेकोकार	और वह	अल्लाह के लिए अपना मुँह	झुका दिया	से-जिस	दीन
إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَاتَّخَذَ اللَّهُ إِبْرَاهِيمَ خَلِيلًا (125) وَاللَّهُ مَا							
और अल्लाह के लिए जो	125	दोस्त	इब्राहीम (अ)	और अल्लाह ने बनाया	एक का हो कर रहने वाला	इब्राहीम (अ)	
فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطًا (126)							
126	अहाता किए हुए	चीज़	हर	और है अल्लाह	ज़मीन	में	और जो आस्मानों में
وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي النِّسَاءِ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِيهِنَّ وَمَا							
और जो	उन के बारे में	तुम्हें हुक्म देता है	अल्लाह	आप कहें	औरतों के बारे में	और वह आप से हुक्म दरयाफ्त करते हैं	
يُثْبِتُ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ فِيمَا يُنْفِقُ فِي النِّسَاءِ الَّتِي							
वह जिन्हें	औरतें	यतीम	(बारे) में	किताब (कुरआन) में	तुम्हें	सुनाया जाता है	
لَا تُؤْتُونَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُونَ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ							
उन को निकाह में ले लो	कि	और नहीं चाहते हो	उन के लिए	जो लिखा गया (मुकर्रर)	तुम उन्हें नहीं देते		
وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الْوُلْدَانِ وَأَنْ تَقُومُوا لِلْيَتَامَىٰ							
यतीमों के बारे में	काइम रहो	और यह कि	बच्चे	से (बारे में)	और बेवस		
بِالْقِسْطِ وَمَا تَفَعَّلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِهِ عَلِيمًا (127)							
127	उस को जानने वाला	है	तो बेशक अल्लाह	कोई भलाई	और जो तुम करोगे	इन्साफ़ पर	

और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए हम अनकरीब उन्हें वागात में दाखिल करेंगे जिन के नीचे नहरें बहती हैं वह उस में हमेशा हमेशा रहेंगे, अल्लाह का वादा सच्चा है, और कौन है अल्लाह से ज़ियादा सच्चा वात में? (122)

(अज़ाब ओ सवाब) न तुम्हारी आर्जूओं पर है और न अहले किताब की आर्जूओं पर, जो कोई बुराई करेगा उस की सज़ा पाएगा और अपने लिए नहीं पाएगा अल्लाह के सिवा कोई दोस्त और न मददगार। (123)

और जो अच्छे काम करेगा, मर्द हो या औरत, वशर्त यह कि वह मोमिन हो तो ऐसे लोग जन्नत में दाखिल होंगे, और उन पर तिल बराबर जुल्म न होगा। (124)

और किस का दीन उस से बेहतर? जिस ने अपना मुँह अल्लाह के लिए झुका दिया और वह नेकोकार भी है, और उस ने एक के हो रहने वाले इब्राहीम (अ) के दीन की पैरवी की, और अल्लाह ने इब्राहीम (अ) को दोस्त बनाया। (125)

और अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में है और जो ज़मीन में है, और अल्लाह हर चीज़ को अहाता किए हुए है। (126)

आप (स) से औरतों के बारे में हुक्म दरयाफ्त करते हैं, आप (स) कह दें अल्लाह तुम्हें उन के बारे में हुक्म (इजाज़त) देता है, और जो तुम्हें कुरआन मजीद में सुनाया जाता है यतीम औरतों के बारे में, जिन्हें तुम नहीं देते उन का मुकर्रर किया हुआ (मेहर) और नहीं चाहते कि उन को निकाह में ले लो, और बेवस बच्चों के बारे में, और यह कि तुम यतीमों के बारे में इन्साफ़ पर काइम रहो, और तुम जो भलाई करोगे तो बेशक अल्लाह उस को जानने वाला है। (127)

और अगर कोई औरत डरे (अन्देश करे) अपने खावन्द (की तरफ) से ज़ियादती या बेरगबती तो उन दोनों पर गुनाह नहीं कि वह सुलह कर लें आपस में, और सुलह बेहतर है, और तबीज़तों में बुख़ल हाज़िर किया गया है (मौजूद होता ही है), और अगर तुम नेकी करो और परहेज़गारी इख़्तियार करो तो बेशक तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (128)

और हरगिज़ न कर सकोगे अगरचे तुम बोहतेरा चाहो कि औरतों के दरमियान बराबरी रखो, पस न झुक पड़ो बिलकुल (एक ही तरफ) कि एक को (आध में) लटकती हुई डाल रखो, और अगर तुम इस्लाह करते रहो और परहेज़गारी करो तो बेशक अल्लाह बख़शने वाला, मेहरवान है। (129)

और अगर दोनों (मियां बीवी) जुदा हो जाएं तो अल्लाह हर एक को बेनियाज़ कर देगा अपनी कशाइश से, और अल्लाह कशाइश वाला हिक्मत वाला है। (130)

और अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और हम ने ताकीद कर दी है उन लोगों को जिन्हें किताब दी गई तुम से पहले और तुम्हें (भी) कि अल्लाह से डरते रहो, और अगर तुम कुफ़ करोगे तो बेशक अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और अल्लाह बेनियाज़ है, सब ख़ुबियों वाला। (131)

और अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और काफ़ी है अल्लाह कारसाज़। (132)

अगर (अल्लाह) चाहे कि तुम्हें ले जाए (फना कर दे) ऐ लोगो! और दूसरों को ले आए (ला बसाए), और अल्लाह उस पर कादिर है। (133)

जो कोई दुनिया का सबाब चाहता है तो अल्लाह के पास दुनिया और आख़िरत का सबाब है, और अल्लाह सुनने वाला, और देखने वाला है। (134)

وَإِنْ أَمْرًا خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُورًا أَوْ إِعْرَاضًا							
बे रगबती	या	ज़ियादती	अपने खावन्द से	डरे	कोई औरत	और	अगर
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يُصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا وَالصُّلْحُ خَيْرٌ							
बेहतर	और सुलह	सुलह	आपस में	कि वह सुलह कर लें	उन दोनों पर	तो नहीं गुनाह	
وَأُحْضِرَتِ الْأَنْفُسُ الشُّحَّ وَإِنْ تُحْسِنُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ							
तो बेशक अल्लाह	और परहेज़गारी करो	तुम नेकी करो	और अगर	बुख़ल	तबीज़तें	और हाज़िर किया गया (मौजूद है)	
كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا (128) وَلَنْ تَسْتَطِيعُوا أَنْ تَعْدِلُوا							
बराबरी रखो	कि	कर सकोगे	और हरगिज़ न	128	बाख़बर	जो तुम करते हो	है
بَيْنَ النِّسَاءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيلُوا كُلَّ الْمِيلِ فَتَدْرُوهَا							
कि एक को डाल रखो	बिलकुल झुक जाना	पस न झुक पड़ो	बोहतेरा चाहो	अगरचे	औरतों के दरमियान		
كَالْمُعَلَّقَةِ وَإِنْ تُصْلِحُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا							
बख़शने वाला	है	तो बेशक अल्लाह	और परहेज़गारी करो	इस्लाह करते रहो	और अगर	जैसे लटकती हुई	
رَحِيمًا (129) وَإِنْ يَتَفَرَّقَا يُغْنِ اللَّهُ كُلاَّ مِنْ سَعَتِهِ وَكَانَ							
और है	अपनी कशाइश से	से	हर एक को	अल्लाह बेनियाज़ कर देगा	दोनों जुदा हो जाएं	और अगर	129 मेहरवान
اللَّهُ وَاسِعًا حَكِيمًا (130) وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ							
ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	और अल्लाह के लिए जो	130	हिक्मत वाला	कशाइश वाला	अल्लाह
وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَإِيَّاكُمْ							
और तुम्हें	तुम से पहले	से	जिन्हें किताब दी गई	वह लोग	और हम ने ताकीद कर दी है		
أَنْ اتَّقُوا اللَّهَ وَإِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا							
और जो	आस्मानों में	जो	तो बेशक अल्लाह के लिए	तुम कुफ़ करोगे	और अगर	कि डरते रहो अल्लाह से	
فِي الْأَرْضِ وَكَانَ اللَّهُ غَنِيًّا حَمِيدًا (131) وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ							
आस्मानों में	में	और अल्लाह के लिए जो	131	सब ख़ुबियों वाला	बेनियाज़ अल्लाह	और है	ज़मीन में
وَمَا فِي الْأَرْضِ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا (132) إِنْ يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ							
तुम्हें ले जाए	अगर वह चाहे	132	कारसाज़	अल्लाह	और काफ़ी	ज़मीन में	और जो
أَيُّهَا النَّاسُ وَيَأْتِ بِالْآخِرِينَ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى ذَلِكَ							
उस पर	और है अल्लाह	दूसरों को	और ले आए	ऐ लोगो			
قَدِيرًا (133) مَنْ كَانَ يُرِيدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللَّهِ							
तो अल्लाह के पास	दुनिया का सबाब	चाहता है	जो	133	कादिर		
ثَوَابَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا بَصِيرًا (134)							
134	देखने वाला	सुनने वाला	और है अल्लाह	और आख़िरत	दुनिया	सबाब	

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوْمِينَ بِالْقِسْطِ شُهَدَاءَ لِلَّهِ						
गवाही देने वाले अल्लाह के लिए	इन्साफ़ पर	काइम रहने वाले	हो जाओ	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	ऐ ईमान वालो! हो जाओ इन्साफ़ पर काइम रहने वाले अल्लाह के लिए गवाही देने वाले अगरचे खुद तुम्हारे खिलाफ़ या माँ बाप और कराबतदारों (के खिलाफ़) हो, चाहे कोई मालदार हो या मोहताज (बहर हाल) अल्लाह उन का (सब से बढ़ कर) ख़ैर खाह है, सो तुम खाहिश (नफूस) की पैरवी न करो इन्साफ़ करने में, और अगर तुम (गवाही में) ज़वान दवाओगे या पहलूतही करोगे तो बेशक अल्लाह उस से वाख़बर है जो तुम करते हो। (135)
कोई मालदार	अगर (चाहे) हो	और कराबतदार	माँ बाप	या	खुद तुम्हारे ऊपर (खिलाफ़)	अगरचे
أَوْ فَقِيرًا فَاللَّهُ أَوْلَىٰ بِهِمَا ۖ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوَىٰ أَنْ تَعْدِلُوا ۗ						
की इन्साफ़ करो	खाहिश	पैरवी करो	सो-न	उन का	ख़ैर खाह	पस अल्लाह
وَأَنْ تَلَوْا أَوْ تُعْرَضُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا (135)						
135	वाख़बर	तुम करते हो	जो	है	तो बेशक अल्लाह	या पहलूतही करोगे
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا آمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي نَزَّلَ						
जो उस ने नाज़िल की	और किताब	और उस का रसूल	अल्लाह पर	ईमान लाओ	जो लोग ईमान लाए (ईमान वालो)	ऐ
عَلَىٰ رَسُولِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي نَزَّلَ مِنْ قَبْلُ ۗ وَمَنْ يَكْفُرْ بِاللَّهِ						
अल्लाह का	इन्कार करे	और जो	इस से कब्ल	जो उस ने नाज़िल की	और किताब	अपने रसूल पर
وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْمِ الْأَخِيرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا						
गुमराही	तो वह भटक गया	और रोज़े आख़िरत	और उस के रसूलों	और उस की किताबों	और उस के फ़रिशतों	में। (136)
بَعِيدًا (136) إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ						
फिर	फिर काफ़िर हुए	ईमान लाए	फिर	फिर काफ़िर हुए	जो लोग ईमान लाए	बेशक 136 दूर
أَزْدَادُوا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيَغْفِرْ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيلًا (137)						
137	राह	और न दिखाएगा	उन्हें	कि बख़शदे	अल्लाह	नहीं है
بَشِيرِ الْمُنْفِقِينَ بَأَنَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا (138) الَّذِينَ يَتَّخِذُونَ						
पकड़ते हैं (बनाते हैं)	जो लोग	138	दर्दनाक अज़ाब	उन के लिए	कि	मुनाफ़िक (जमा)
الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۗ أَيْبَتَعُونَ عِنْدَهُمْ						
उन के पास	क्या ढूँडते हैं?	मोमिनीन	सिवाए (छोड़ कर)	दोस्त	काफ़िर (जमा)	जो लोग मोमिनों को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं, क्या वह उन के पास इज़्जत ढूँडते हैं? बेशक सारी इज़्जत अल्लाह ही के लिए है। (139)
الْعِزَّةَ فَإِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا (139) وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ						
किताब में	तुम पर	उतार चुका	और तहकीक	139	सारी	अल्लाह के लिए
أَنْ إِذَا سَمِعْتُمْ آيَةَ اللَّهِ يَكْفُرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَأُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوا						
तो न बैठो	उस का	मज़ाक उड़ाया जाता है	उस का	इन्कार किया जाता है	अल्लाह की आयतें	जब तुम सुनो
مَعَهُمْ حَتَّىٰ يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ۗ إِنَّكُمْ إِذَا مِثْلَهُمْ ۗ						
उन जैसे	उस सूरत में	यकीनन तुम	उस के सिवा	वात	में	वह मशगूल हों
إِنَّ اللَّهَ جَامِعُ الْمُنْفِقِينَ وَالْكَافِرِينَ فِي جَهَنَّمَ جَمِيعًا (140)						
140	तमाम	जहन्नम में	और काफ़िर (जमा)	मुनाफ़िक (जमा)	जमा करने वाला	बेशक अल्लाह

जो लोग तकते (इन्तिज़ार करते) रहते हैं तुम्हारा, फिर अगर तुम को अल्लाह की तरफ़ से फ़तह हो तो कहते हैं क्या हम तुम्हारे साथ न थे? और अगर काफ़िरों के लिए हिस्सा हो (फ़तह हो) तो कहते हैं क्या हम तुम पर ग़ालिब नहीं आए थे? और हम ने तुम्हें बचाया था मुसलमानों से। सो अल्लाह क़ियामत के दिन तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करेगा, और हरगिज़ न देगा अल्लाह काफ़िरों को मुसलमानों पर राह (ग़लबा)। (141)

वेशक मुनाफ़िक़ धोका देते हैं अल्लाह को, और वह उन को धोके (का जवाब) देगा, और जब नमाज़ को खड़े हों तो सुस्ती से खड़े हों, वह दिखाते हैं लोगों को और अल्लाह को याद नहीं करते मगर बहुत कम। (142)

उस के दरमियान अधर में लटके हुए हैं न इन की तरफ़ न उन की तरफ़, और जिस को अल्लाह गुमराह करे तू हरगिज़ उस के लिए न पाएगा कोई राह। (143)

ऐ ईमान वालो! काफ़िरों को दोस्त न बानओ मुसलमानों को छोड़ कर, क्या तुम चाहते हो कि तुम अपने ऊपर अल्लाह का सरीह इल्ज़ाम लो? (144)

वेशक मुनाफ़िक़ दोज़ख़ के सब से निचले दरजे में होंगे, और तू हरगिज़ उन का कोई मददगार न पाएगा। (145)

मगर जिन लोगों ने तौबा की और (अपनी) इस्लाह कर ली और मज़बूती से अल्लाह (की रस्सी) को पकड़ लिया और अपना दीन अल्लाह के लिए ख़ालिस कर लिया तो ऐसे लोग मोमिनों के साथ होंगे, और अल्लाह जल्द मोमिनों को बड़ा सवाब देगा। (146)

अगर तुम शुक्र करोगे और ईमान लाओगे तो अल्लाह तुम्हें अज़ाब दे कर क्या करेगा? और अल्लाह क़द्रदान, ख़ूब जानने वाला है। (147)

الَّذِينَ يَتَرَبَّصُونَ بِكُمْ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللَّهِ قَالُوا							
कहते हैं	अल्लाह (की तरफ़) से	फ़तह	तुम को	फिर अगर हो	तुम्हें	तकते रहते हैं	जो लोग
أَلَمْ نَكُنْ مَعَكُمْ وَإِنْ كَانَ لِلْكَافِرِينَ نَصِيبٌ قَالُوا							
कहते हैं	हिस्सा	काफ़िरों के लिए	हो	और अगर	तुम्हारे साथ	क्या हम न थे?	
أَلَمْ نَسْتَحِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعَكُم مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ فَاللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ							
तुम्हारे दरमियान	फ़ैसला करेगा	सो अल्लाह	मोमिनीन	से	और हम ने मना किया था (बचाया था) तुम्हें	तुम पर	क्या हम ग़ालिब नहीं आए थे
يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَنْ يَجْعَلَ اللَّهُ لِلْكَافِرِينَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ سَبِيلًا (١٤١)							
141	राह	मोमिनों पर	काफ़िरों को	अल्लाह	और हरगिज़ न देगा	क़ियामत के दिन	
إِنَّ الْمُنَافِقِينَ يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ وَإِذَا قَامُوا							
खड़े हों	और जब	उन्हें धोका देगा	और वह	धोका देते हैं अल्लाह को	वेशक मुनाफ़िक़		
إِلَى الصَّلَاةِ قَامُوا كَسَالَىٰ يُرَاءُونَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ							
याद करते	और नहीं	लोग	वह दिखाते हैं	खड़े हों सुस्ती से	नमाज़	तरफ़ (को)	
اللَّهِ إِلَّا قَلِيلًا (١٤٢) مُذَبْذَبِينَ بَيْنَ ذَلِكَ لَا إِلَىٰ هَؤُلَاءِ وَلَا							
और न	इन की तरफ़	न	उस	दरमियान	अधर में लटके हुए	142	मगर बहुत कम
إِلَىٰ هَؤُلَاءِ وَمَنْ يُضِلِّ اللَّهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ سَبِيلًا (١٤٣) يَا أَيُّهَا							
ऐ	143	कोई राह	उस के लिए	तू हरगिज़ न पाएगा	गुमराह करे अल्लाह	और जो-जिस	उन की तरफ़
الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِن دُونِ							
सिवाए	दोस्त	काफ़िर (जमा)	न पकड़ो (न बनाओ)	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)			
الْمُؤْمِنِينَ أَتْرِيدُونَ أَنْ تَجْعَلُوا لِلَّهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا مُّبِينًا (١٤٤)							
144	सरीह	इल्ज़ाम	तुम पर (अपने ऊपर)	अल्लाह का	कि तुम करो (लो)	क्या तुम चाहते हो	मोमिनीन
إِنَّ الْمُنَافِقِينَ فِي الدَّرَكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ وَلَنْ تَجِدَ							
और हरगिज़ न पाएगा	दोज़ख़	से	सब से नीचे का दरजा	में	मुनाफ़िक़ (जमा)	वेशक	
لَهُمْ نَصِيرًا (١٤٥) إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَاعْتَصَمُوا بِاللَّهِ							
अल्लाह को	और मज़बूती से पकड़ा	और इस्लाह की	जिन्होंने ने तौबा की	मगर	145	कोई मददगार	उन के लिए
وَأَخْلَصُوا دِينَهُمْ لِلَّهِ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ وَسَوْفَ							
और जल्द	मोमिनों के साथ	तो ऐसे लोग	अल्लाह के लिए	अपना दीन	और ख़ालिस कर लिया		
يُؤْتِ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ أَجْرًا عَظِيمًا (١٤٦) مَا يَفْعَلُ اللَّهُ بِعَدَابِكُمْ							
तुम्हारे अज़ाब से	अल्लाह	क्या करेगा	146	बड़ा सवाब	मोमिन (जमा)	देगा अल्लाह	
إِنْ شَكَرْتُمْ وَأَمْنْتُمْ وَكَانَ اللَّهُ شَاكِرًا عَلِيمًا (١٤٧)							
147	ख़ूब जानने वाला	क़द्रदान	अल्लाह	और है	और ईमान लाओगे	अगर तुम शुक्र करोगे	

٢٠  
ع  
١٢



١٤٨

لَا يُحِبُّ اللَّهُ الْجَهْرَ بِالسُّوِّءِ مِنَ الْقَوْلِ إِلَّا مَنْ ظَلِمَ ۗ									
जुल्म हुआ हो	जो-जिस	मगर	बात	बुरी	ज़ाहिर करना	अल्लाह	पसन्द नहीं करता		
وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا عَلِيمًا ﴿١٤٨﴾									
या माफ़ कर दो	या उसे छुपाओ	कोई भलाई	अगर तुम खुल्लम खुल्ला करो	148	जानने वाला	सुनने वाला	अल्लाह	और है	
عَنْ سُوءٍ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفْوًا قَدِيرًا ﴿١٤٩﴾									
इन्कार करते हैं	जो लोग	वेशक	149	कुदरत वाला	माफ़ करने वाला	है	अल्लाह	तो वेशक	बुराई से
بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيُرِيدُونَ أَنْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ اللَّهِ وَرُسُلِهِ									
और उस के रसूल	अल्लाह	दरमियान	फर्क निकालें	कि	और चाहते हैं	और उस के रसूलों	अल्लाह का		
وَيَقُولُونَ نُوْمِنُ بِبَعْضٍ وَنَكْفُرُ بِبَعْضٍ وَيُرِيدُونَ أَنْ									
कि	और वह चाहते हैं	वाज़ को	और नहीं मानते	वाज़ को	हम मानते हैं	और कहते हैं			
يَتَّخِذُوا بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا ﴿١٥٠﴾									
असल	काफिर (जमा)	वह	यही लोग	150	एक राह	उस के दरमियान	पकड़ें (निकालें)		
وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿١٥١﴾									
अल्लाह पर	और जो लोग ईमान लाए	151	ज़िल्लत का	अज़ाब	काफिरों के लिए	और हम ने तैयार किया है			
وَرُسُلِهِ وَلَمْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ أَحَدٍ مِنْهُمْ أَوْلِيكَ سَوْفَ يُؤْتِيهِمْ أَجْرَهُمْ ۗ									
उन के अजर	उन्हें देगा	अनकरीब	यही लोग	उन में से	किसी के	और फर्क नहीं करते दरमियान	और उस के रसूलों पर		
وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿١٥٢﴾									
उतार लाए	कि	अहले किताब	आप (स) से सवाल करते हैं	152	निहायत मेहरवान	बख़शने वाला	अल्लाह	और है	
عَلَيْهِمْ كِتَابًا مِّنَ السَّمَاءِ فَقَدْ سَأَلُوا مُوسَىٰ أَكْبَرَ مِنْ ذَلِكَ									
उस से	बड़ा	मूसा (अ)	सो वह सवाल कर चुके हैं	आस्मान	से	किताब	उन पर		
فَقَالُوا أَرِنَا اللَّهُ جَهْرَةً فَأَخَذَتْهُمُ الصَّعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۗ ثُمَّ									
फिर	उन के जुल्म के वाइस	बिजली	सो उन्हें आ पकड़ा	अलानिया	अल्लाह	हमें दिखा दे	उन्होंने कहा		
اتَّخَذُوا الْعَجَلَ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَاتُ فَعَفَوْنَا									
सो हम ने दरगुज़र किया	निशानियां	उन के पास आईं	कि	उस के बाद	बछड़ा (गौशाला)	उन्होंने बना लिया			
عَنْ ذَلِكَ ۗ وَآتَيْنَا مُوسَىٰ سُلْطٰنًا مُّبِينًا ﴿١٥٣﴾									
उन के ऊपर	और हम ने बुलन्द किया	153	ज़ाहिर (सरीह)	ग़लबा	मूसा (अ)	और हम ने दिया	उस से (उस को)		
الطُّورَ بِمِيثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمْ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُلْنَا									
और हम ने कहा	सिज़्दा करते	दरवाज़ा	तुम दाख़िल हो	उन के लिए (उन से)	और हम ने कहा	उन से अहद लेने की गर्ज़ से	तूर		
لَهُمْ لَا تَعْدُوا فِي السَّبْتِ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيثَاقًا غَلِيظًا ﴿١٥٤﴾									
154	मज़बूत	अहद	उन से	और हम ने लिया	हफ़्ते का दिन	में	न ज़ियादती करो	उन से	

अल्लाह (किसी की) बुरी बात का ज़ाहिर करना पसन्द नहीं करता मगर जिस पर जुल्म हुआ हो, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (148)

अगर तुम कोई भलाई खुल्लम खुल्ला करो या उसे छुपाओ या माफ़ कर दो कोई बुराई तो वेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, कुदरत वाला है। (149)

वेशक जो लोग इन्कार करते हैं अल्लाह का और उस के रसूलों का और चाहते हैं कि अल्लाह और उस के रसूलों के दरमियान फर्क निकालें, और कहते हैं कि हम वाज़ को मानते हैं और वाज़ को नहीं मानते, और वह चाहते हैं कि कुफ़ और ईमान के दरमियान निकालें एक राह। (150)

यही लोग असल काफिर है, और हम ने काफिरों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है (151)

और जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाए और उन में से किसी के दरमियान फर्क नहीं करते यही वह लोग हैं अनकरीब उन्हें (अल्लाह) उन के अजर देगा, और अल्लाह बख़शने वाला, निहायत मेहरवान है। (152)

अहले किताब आप (स) से सवाल करते हैं कि उन पर आस्मान से किताब उतार लाएं, सो वह सवाल कर चुके हैं मूसा (अ) से उस से भी बड़ा, उन्होंने ने कहा हमें अल्लाह को अलानिया (खुल्लम खुल्ला) दिखादे, सो उन्हें बिजली ने आ पकड़ा उन के जुल्म के वाइस, फिर उन्होंने ने बछड़े (गौशाला) को (माबूद) बना लिया उस के बाद कि उन के पास निशानियां आगईं, उस पर भी हम ने उन से दरगुज़र किया, और हम ने मूसा (अ) को सरीह ग़लबा दिया। (153)

और हम ने उन के ऊपर बुलन्द किया "तूर" पहाड़ उन से अहद लेने की गर्ज़ से, और हम ने उन से कहा दरवाज़े में सिज़्दा करते हुए दाख़िल हो, और हम ने उन से कहा हफ़्ते के दिन में ज़ियादती न करो, और हम ने उन से मज़बूत अहद लिया। (154)

٢١

(उन को सज़ा मिली) बसबव उन के अहद ओ पैमान तोड़ने, और उन के अल्लाह की आयतों का इन्कार करने, और उन के नबियों को नाहक़ क़त्ल करने, और उन के यह कहने (के सबव) कि हमारे दिल पर्दे में (महफूज़) हैं, बल्कि अल्लाह ने उन पर उन के कुफ़ के सबव मोहर कर दी, सो ईमान नहीं लाते मगर कम। (155)

(और उन को सज़ा मिली) उन के कुफ़ और मरयम (अ) पर बड़ा बुहतान बान्धने के सबव। (156)

और उन के यह कहने (के सबव) कि हम ने क़त्ल किया अल्लाह के रसूल ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) को, और उन्हीं ने उस को क़त्ल नहीं किया और उन्हीं ने उस को सूली नहीं दी बल्कि उन के लिए (उन जैसी) सूत बना दी गई और वेशक जो लोग उस (बारे) में इख़्तिलाफ़ करते हैं वह अलबत्ता उस बारे में शक में हैं, अटकल की पैरवी के सिवा उन्हीं उस का कोई इल्म नहीं, और उस (अ) को उन्हीं ने यकीनन क़त्ल नहीं किया, (157)

बल्कि अल्लाह ने उस (अ) को अपनी तरफ़ उठा लिया, और अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (158)

और कोई अहले किताब से न रहेगा मगर उस (अ) पर अपनी मौत से पहले ज़रूर ईमान लाएगा, और क़ियामत के दिन वह (अ) उन पर गवाह होंगे। (159)

सो हम ने यहूदियों पर (बहुत सी) पाक चीज़ों जो उन के लिए हलाल थीं हाराम कर दी उन के जुल्म की वजह से और उन के अल्लाह के रास्ते से बहुत रोकने की वजह से, (160)

और उन के सूद लेने (की वजह से) हालांकि वह उस से रोक दिए गए थे और (इस वजह से) कि वह खाते थे लोगों के माल नाहक़, और हम ने उन में से काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है। (161)

लेकिन उन में से जो इल्म में पुख़्ता हैं, और जो मोमिन हैं वह उस को मानते हैं जो नाज़िल किया गया आप (स) की तरफ़ और जो आप (स) से पहले नाज़िल किया गया, और नमाज़ काइम रखने वाले हैं और अदा करने वाले हैं ज़कात और अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाने वाले हैं, ऐसे लोगों को हम ज़रूर बड़ा अजर देंगे। (162)

فَبِمَا نَفْسِهِمْ مِيثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بَايَتِ اللَّهِ وَقَتْلِهِمُ الْأَنْبِيَاءَ						
नबियों (जमा)	और उन का क़त्ल करना	अल्लाह की आयत	और उन का इन्कार करना	अपना अहद ओ पैमान	उन का तोड़ना	बसबव
بِغَيْرِ حَقٍّ وَقَوْلِهِمْ قُلُوبُنَا غُلْفٌ بَلْ طَبَعَ اللَّهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ						
उन के कुफ़ के सबव	उन पर	मोहर कर दी अल्लाह ने	बल्कि	पर्दे में	हमारे दिल (जमा)	और उन का कहना
فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝١٥٥ وَبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلَىٰ مَرْيَمَ						
मरयम (अ)	पर	और उन का कहना (बान्धना)	और उन के कुफ़ के सबव	155	कम	मगर
بُهْتَانًا عَظِيمًا ۝١٥٦ وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ عِيسَىٰ ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ						
रसूल	इब्ने मरयम (अ)	ईसा (अ)	मसीह (अ)	हम ने क़त्ल किया	हम	और उन का कहना
اللَّهِ وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلْبُوهُ وَلَكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا						
जो लोग इख़्तिलाफ़ करते हैं	और वेशक	उन के लिए	सूरत बना दी गई	और बल्कि	और नहीं सूली दी उस को	और नहीं क़त्ल किया उस को
فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا اتِّبَاعَ						
पैरवी	मगर	कोई इल्म	उस का	नहीं उन को	उस से	अलबत्ता शक में
الظَّنِّ وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا ۝١٥٧ بَلْ رَفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا						
ग़ालिब	अल्लाह	और है	अपनी तरफ़	अल्लाह	उस को उठा लिया	बल्कि
حَكِيمًا ۝١٥٨ وَإِنَّ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا لِيُؤْمِنَنَّ بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ						
अपनी मौत	पहले	उस पर	ज़रूर ईमान लाएगा	मगर	अहले किताब	से
وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا ۝١٥٩ فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِينَ هَادُوا						
जो यहूदी हुए (यहूदी)	से	सो जुल्म के सबव	159	गवाह	उन पर	होगा
حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبَاتٍ أُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنِ سَبِيلِ اللَّهِ						
अल्लाह का रास्ता	से	और उन के रोकने की वजह से	उन के लिए	हलाल थी	पाक चीज़ें	उन पर
كَثِيرًا ۝١٦٠ وَأَخَذَهُمُ الرَّبُّوا وَقَدْ نُهُوا عَنْهُ وَأَكْلِهِمْ أَمْوَالَ النَّاسِ						
लोग	माल (जमा)	और उन का खाना	उस से	हालांकि वह रोक दिए गए थे	सूद	और उन का लेना
بِالْبَاطِلِ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝١٦١ لَكِن						
लेकिन	161	दर्दनाक	अज़ाब	उन में से	काफ़िरों के लिए	और हम ने तैयार किया
الرُّسُخُونَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُونَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ						
आप की तरफ़	नाज़िल किया गया	जो	वह मानते हैं	और मोमिनीन	उन में से	इल्म में
وَمَا أُنزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيمِينَ الصَّلَاةَ وَالْمُؤْتُونَ الزَّكَاةَ						
ज़कात	और अदा करने वाले	नमाज़	और काइम रखने वाले	आप (स) से पहले	से	नाज़िल किया गया
وَالْمُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أُولَٰئِكَ سَنُؤْتِيهِمْ أَجْرًا عَظِيمًا ۝١٦٢						
162	बड़ा	अजर	हम ज़रूर देंगे उन्हें	यही लोग	और आख़िरत का दिन	अल्लाह पर

إِنَّا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ كَمَا أَوْحَيْنَا إِلَى نُوحٍ وَالنَّبِيِّنَ مِنْ بَعْدِهِ								
उस के बाद	और नबियों	नूह (अ)	तरफ	हम ने वहि भेजी	जैसे	आप (स) की तरफ	हम ने वहि भेजी	वेशक हम
وَأَوْحَيْنَا إِلَى إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ								
और याकूब (अ)	और इसहाक (अ)	और इस्माईल (अ)	इब्राहीम (अ)	तरफ	और हम ने वहि भेजी			
وَالْأَسْبَاطِ وَعِيسَى وَأَيُّوبَ وَيُونُسَ وَهَارُونَ وَسُلَيْمَانَ								
और सुलैमान (अ)	और हारून (अ)	और यूनस (अ)	और अय्यूब (अ)	और ईसा (अ)	और औलादे याकूब			
وَأَتَيْنَا دَاوُدَ زَبُورًا (163) وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنَاهُمْ عَلَيْكَ								
आप (स) पर (आप से)	हम ने उन का अहवाल सुनाया	और ऐसे रसूल (जमा)	163	ज़बूर	दाऊद (अ)	और हम ने दी		
مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَمْ نَقُصِّصْهُمْ عَلَيْكَ وَكَلَّمَ اللَّهُ مُوسَى								
मूसा (अ)	अल्लाह	और कलाम किया	आप पर (आप को)	हम ने हाल बयान किया	नहीं	और ऐसे रसूल	इस से कब्ल	
تَكَلِيمًا (164) رُسُلًا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ								
लोगों के लिए	ताकि न रहे	और डराने वाले	खुशखबरी सुनाने वाले	रसूल (जमा)	164	कलाम करना (खूब)		
عَلَى اللَّهِ حُجَّةٌ بَعْدَ الرُّسُلِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا (165)								
165	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और है अल्लाह	रसूलों के बाद	हुज्जत	अल्लाह	पर	
لَكِنَّ اللَّهَ يَشْهَدُ بِمَا أَنْزَلَ إِلَيْكَ أَنْزَلَهُ بِعِلْمِهِ وَالْمَلَكُ								
और फ़रिश्ते	अपने इल्म के साथ	वह नाज़िल किया	आप (स) की तरफ	उस ने नाज़िल किया	उस पर जो	गवाही देता है	अल्लाह	लेकिन
يَشْهَدُونَ وَكَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا (166) إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا								
उन्होंने ने कुफ़ किया	वह लोग जो	वेशक	166	गवाह	अल्लाह	और काफी है	गवाही देते हैं	
وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ قَدْ ضَلُّوا ضَلَالًا بَعِيدًا (167) إِنَّ								
वेशक	167	दूर	गुमराही	तहकीक वह गुमराही में पड़े	अल्लाह का रास्ता	से	और उन्होंने ने रोका	
الَّذِينَ كَفَرُوا وَظَلَمُوا لَمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيُغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ								
उन्हें हिदायत दे	और न	उन्हें	कि बख़्शदे	अल्लाह	नहीं है	और जुल्म किया	उन्होंने ने कुफ़ किया	वह लोग जो
طَرِيقًا (168) إِلَّا طَرِيقَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا وَكَانَ ذَلِكَ								
यह	और है	हमेशा	उस में	रहेंगे	जहननम	रास्ता	मगर	168
عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا (169) يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ الرَّسُولُ بِالْحَقِّ								
हक के साथ	रसूल	तुम्हारे पास आया	लोग	ऐ	169	आसान	अल्लाह पर	
مِنْ رَبِّكُمْ فَاْمُنُوا خَيْرًا لَكُمْ وَإِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلَّهِ مَا								
जो	अल्लाह के लिए	तो वेशक	तुम न मानोगे	और अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर	सो ईमान लाओ	तुम्हारा रब से
فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا (170)								
170	हिक्मत वाला	जानने वाला	अल्लाह	और है	और ज़मीन	आस्मानों में		

वेशक हम ने आप (स) की तरफ वहि भेजी है जैसे हम ने वहि भेजी थी नूह (अ) की तरफ और उस के बाद नबियों की तरफ और हम ने वहि भेजी इब्राहीम (अ), इस्माईल (अ), इसहाक (अ), याकूब (अ) और औलादे याकूब (अ) की तरफ और ईसा (अ) अय्यूब (अ) यूनस (अ) हारून (अ) और सुलैमान (अ) (की तरफ वहि भेजी) और हम ने दाऊद (अ) को दी ज़बूर। (163)

और ऐसे रसूल (भेजे) हैं जिन के अहवाल हम ने उस से कब्ल आप (स) से बयान किए और ऐसे रसूल (भी भेजे) जिनके अहवाल हम ने आप (स) से बयान नहीं किए, और अल्लाह ने मूसा (अ) से (खूब) कलाम किया (164)

(हम ने भेजे) रसूल खुशखबरी सुनाने वाले और डराने वाले ताकि रसूलों के बाद लोगों को अल्लाह पर कोई हुज्जत न रहे, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (165)

लेकिन अल्लाह उस पर गवाही देता है जो उस ने आप (स) की तरफ नाज़िल किया, वह अपने इल्म से नाज़िल किया और फ़रिश्ते (भी) गवाही देते हैं, और गवाह (तो) अल्लाह ही काफी है। (166)

वेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, तहकीक वह गुमराही में दूर जा पड़े। (167)

वेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया और जुल्म किया, अल्लाह उन्हें नहीं बख़्शेगा और न उन्हें हिदायत देगा (सीधे) रास्ते की, (168)

मगर जहननम का रास्ता, उस में हमेशा रहेंगे, और यह अल्लाह पर आसान है। (169)

ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से हक के साथ रसूल (स) आगया है, सो ईमान ले आओ तुम्हारे लिए बेहतर है, और अगर तुम न मानोगे तो वेशक जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है अल्लाह के लिए है, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (170)

ऐ अहले किताब! अपने दीन में गुलू न करो (हद से न बढ़ो) और न कहो अल्लाह के बारे में हक के सिवा, इस के सिवा नहीं कि मसीह (अ) ईसा (अ) इवने मरयम अल्लाह के रसूल हैं और उस का कलिमा, जिस को मरयम की तरफ डाला और उस (की तरफ) से आत्मा है, सो तुम अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाओ और न कहो (खुदा) तीन हैं, (उस से) बाज़ रहो, तुम्हारे लिए बेहतर है, इस के सिवा नहीं (वेशक) कि अल्लाह मावूदे वाहिद है और उस से पाक है कि उस की औलाद हो। जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है उस का है, और अल्लाह कारसाज़ काफ़ी है। (171)

मसीह (अ) को हरगिज़ आर (शर्म) नहीं कि वह अल्लाह का बन्दा हो, और न मुकर्रिब फ़रिशतों को (आर है) और जो कोई उस (अल्लाह) की बन्दगी से आर और तकब्बुर करे तो वह अनकरीब उन्हें अपने पास जमा करेगा सब को। (172)

फिर जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए वह उन्हें उन के अजर पूरे पूरे देगा और उन्हें ज़ियादा देगा अपने फ़ज़ल से, और जिन लोगों ने (बन्दगी को) आर समझा और तकब्बुर किया तो वह उन्हें अज़ाब देगा, दर्दनाक अज़ाब। और वह अपने लिए अल्लाह के सिवा न पाएंगे कोई दोस्त और न मदद्गार। (173)

ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से रौशन दलील आ चुकी और हम ने तुम्हारी तरफ़ नाज़िल की है वाज़ह रौशनी। (174)

पस जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और उन्होंने ने उस को मज़बूती से पकड़ा, वह उन्हें अनकरीब दाख़िल करेगा अपनी रहमत और फ़ज़ल में, और उन्हें अपनी तरफ़ सीधे रास्ते की हिदायत देगा। (175)

يَاهِلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ وَلَا تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ								
पर (बारे में)	और न कहो	अपने दीन में	गुलू न करो	ऐ अहले किताब				
अल्लाह								
إِلَّا الْحَقُّ إِنَّمَا الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولُ اللَّهِ وَكَلِمَتُهُ								
और उस का कलिमा	अल्लाह	रसूल	इवने मरयम (अ)	ईसा	मसीह	इस के सिवा नहीं	हक	सिवाए
और उस	अल्लाह	रसूल	इवने मरयम (अ)	ईसा	मसीह	इस के सिवा नहीं	हक	सिवाए
और न	और उस के रसूल	अल्लाह पर	सो ईमान लाओ	उस से	और रूह	मरयम (अ)	तरफ़	उस को डाला
تَقُولُوا ثَلَاثَةً إِنْتَهُوا خَيْرًا لَّكُمْ إِنَّمَا اللَّهُ إِلَهُ وَاحِدٌ								
मावूदे वाहिद	अल्लाह	इसके सिवा नहीं	तुम्हारे लिए	बेहतर	बाज़ रहो	तीन	कहो	
سُبْحٰنَهُ أَنْ يَكُونَ لَهُ وَلَدٌ لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا								
और जो	आस्मानों में	जो	उस का	औलाद	उस की	हो	कि	वह पाक है
فِي الْأَرْضِ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿١٧١﴾ لَنْ يَسْتَنْكِفَ الْمَسِيحُ أَنْ								
कि	मसीह (अ)	हरगिज़ आर नहीं	171	कारसाज़	अल्लाह	और काफ़ी है	ज़मीन में	
يَكُونَ عَبْدًا لِلَّهِ وَلَا الْمَلَائِكَةُ الْمُقَرَّبُونَ وَمَنْ يَسْتَنْكِفْ								
आर करे	और जो	मुकर्रिब (जमा)	फ़रिशते	और न	अल्लाह का	बन्दा	हो	
عَنْ عِبَادَتِهِ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ إِلَيْهِ جَمِيعًا ﴿١٧٢﴾ فَأَمَّا								
फिर जो	172	सब	अपने पास	तो अनकरीब उन्हें जमा करेगा	और तकब्बुर करे	उस की इबादत	से	
الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ								
उन के अजर	उन्हें पूरा देगा	नेक	ईमान लाए और उन्होंने ने अमल किए	लोग				
وَيَزِيدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ وَأَمَّا الَّذِينَ اسْتَنْكَفُوا وَاسْتَكْبَرُوا								
और उन्होंने ने तकब्बुर किया	उन्होंने ने आर समझा	वह लोग जो	और फिर	अपना फ़ज़ल	से	और उन्हें ज़ियादा देगा		
فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ								
अल्लाह के सिवा	से (के)	अपने लिए	और वह न पाएंगे	दर्दनाक	अज़ाब	तो उन्हें अज़ाब देगा		
وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿١٧٣﴾ يَأْتِيهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُم بُرْهَانٌ								
रौशन दलील	तुम्हारे पास आ चुकी	ऐ लोगो!	173	मदद्गार	और न	दोस्त		
مِّن رَّبِّكُمْ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ نُورًا مُّبِينًا ﴿١٧٤﴾ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا								
जो लोग ईमान लाए	पस	174	वाज़ेह	रौशनी	तुम्हारी तरफ़	और हम ने नाज़िल किया	तुम्हारा रब	से
بِاللَّهِ وَأَعْتَصَمُوا بِهِ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِي رَحْمَةٍ								
रहमत में	वह उन्हें अनकरीब दाख़िल करेगा	उस को	और मज़बूत पकड़ा	अल्लाह पर				
مِّنْهُ وَفَضْلٍ وَيَهْدِيهِمْ إِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ﴿١٧٥﴾								
175	सीधा	रास्ता	अपनी तरफ़	और उन्हें हिदायत देगा	और फ़ज़ल	उस से (अपनी)		

وقال لهم  
١٧٣  
ع  
١٧٤  
ع  
١٧٥  
ع

يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلَالَةِ إِنَّ امْرُؤًا هَلَكَ								
मर जाए	कोई मर्द	अगर	कलाला (के बारे) में	तुम्हें हुक्म बताता है	अल्लाह	कह दें	आप से हुक्म दरयापत करते हैं	
لَيْسَ لَهُ وَلَدٌ وَلَهُ أُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ وَهُوَ يَرِثُهَا								
उस का वारिस होगा	और वह	जो उस ने छोड़ा (तर्का)	निस्फ (1/2)	तो उस के लिए	एक बहन	और उस की हो	उस की कोई औलाद	न हो
إِنْ لَمْ يَكُنْ لَهَا وَلَدٌ فَإِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثُ مِمَّا								
उस से जो	दो तिहाई (2/3)	तो उन के लिए	दो बहनें	हों	फिर अगर	कोई औलाद	उस की	न हो अगर
تَرَكَ وَإِنْ كَانُوا إِخْوَةً رِجَالًا وَنِسَاءً فَلِلَّذَكَرِ مِثْلُ حَظِّ								
हिस्सा	बराबर	तो मर्द के लिए	और कुछ औरतें	कुछ मर्द	भाई बहन	हों	और अगर	उस ने छोड़ा (तर्का)
الْأُنثَيَيْنِ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ أَنْ تَضِلُّوا وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٧٦﴾								
176	जानने वाला	चीज़	हर	और अल्लाह	ताकि भटक न जाओ	तुम्हारे लिए	अल्लाह	खोल कर बयान करता है
آيَاتُهَا ١٢٠ ﴿٥﴾ سُورَةُ الْمَائِدَةِ ﴿١٧٦﴾ زُكُوعَاتُهَا ١٦								
रुकुआत 16			सूरतुल माइदा (5) खान			आयात 120		
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ								
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है								
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَوْفُوا بِالْعُقُودِ أُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيمَةُ								
चीपाए	हलाल किए गए तुम्हारे लिए	अहद-कौल	पूरा करो	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ			
الْأَنْعَامِ إِلَّا مَا يُتْلَى عَلَيْكُمْ غَيْرِ مُحِلِّي الصَّيْدِ وَأَنْتُمْ حُرْمٌ إِنَّ اللَّهَ								
वेशक अल्लाह	एहराम में हो	जब कि तुम	हलाल जाने हुए शिकार	मगर	पढ़े जाएंगे (सुनाए जाएंगे) तुम्हें	जो	सिवाए	मवेशी
يَحْكُمُ مَا يُرِيدُ ﴿١﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحِلُّوا شَعَائِرَ اللَّهِ وَلَا								
और न	अल्लाह की निशानियां	हलाल न समझो	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	1	जो चाहे	हुक्म करता है	
الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَائِدَ وَلَا آمِينَ الْبَيْتِ الْحَرَامِ								
एहताराम वाला घर (खाने क़ज़वा)	क़सद करने वाले (आने वाले)	और न	गले में पट्टा डाले हुए	और न	नियाज़े क़ज़वा	और न	महीने अदब वाले	
يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِّن رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا وَإِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوا								
तो शिकार कर लो	एहराम खोल दो	और जब	और खुशनुदी	अपने रब से	फ़ज़ल	वह चाहते हैं		
وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَا نَقَوْمٍ أَنْ صَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ								
मसजिद हाराम (खाने क़ज़वा)	से	तुम को रोकती थी	जो	कौम	दुश्मनी	तुम्हारे लिए वाइस हो	और न	
أَنْ تَعْتَدُوا وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ								
गुनाह	पर (में)	और एक दूसरे की मदद न करो	और तज़वा (परहेज़गारी)	नेकी पर (में)	और एक दूसरे की मदद करो	कि तुम ज़ियादती करो		
وَالْعُدْوَانَ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٢﴾								
2	अज़ाब	सख़्त	वेशक अल्लाह	और डरो अल्लाह से	और ज़ियादती (सरकशी)			

आप (स) से हुक्म दरयापत करते हैं, आप (स) कह दें अल्लाह तुम्हें कलाला के बारे में हुक्म बताता है। अगर कोई (ऐसा) मर्द मर जाए जिस की कोई औलाद न हो और उस की एक बहन हो तो उस (बहन) को उस के तरके का निस्फ मिलेगा, और वह उस का वारिस होगा अगर उस (बहन) की कोई औलाद न हो, फिर अगर (मरने वाले की) दो बहनें हों तो उन के लिए दो तिहाई है उस (भाई) के तरके में से, और अगर भाई बहन कुछ मर्द और कुछ औरतें हों तो एक मर्द के लिए दो औरतों के बराबर हिस्सा है। अल्लाह तुम्हारे लिए खोल कर बयान करता है ताकि तुम भटक न जाओ और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है। (176)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है  
ऐ ईमान वालो! अपने अहद पूरे करो, तुम्हारे लिए चौपाए मवेशी हलाल किए गए सिवाए उन के जो तुम्हें सुनाए जाएंगे, मगर शिकार को हलाल न जानो जबकि तुम (हालते) एहराम में हो, वेशक अल्लाह जो चाहे हुक्म करता है। (1)  
ऐ ईमान वालो! शज़ाएर अल्लाह (अल्लाह की निशानियां) हलाल न समझो और न अदब वाले महीने (जुलक़अदह, जुलहिज्जह, मोहर्रम, रज्जब) और न नियाज़े क़ज़वा (के जानवर) और न गले में (कुरबानी के) पट्टा डाले हुए, और न आने वाले खाने क़ज़वा को जो अपने रब का फ़ज़ल और खुशनुदी चाहते हैं। और जब एहराम खोलदो (चाहो) तो शिकार करलो, और (उस) कौम की दुश्मनी जो तुम को रोकती थी मसजिदे हाराम (खाने क़ज़वा) से (उस का) वाइस न बने कि तुम ज़ियादती करो। और एक दूसरे की मदद करो नेकी और परहेज़गारी में, और एक दूसरे की मदद न करो गुनाह और सरकशी में, और अल्लाह से डरो, वेशक अल्लाह का अज़ाब सख़्त है। (2)

١٧٦

المائدة الطاق ٢

وقف الام

الربيع

हराम कर दिया गया तुम पर मुर्दार और खून और सुव्वर का गोश्त और जिस पर पुकारा गया अल्लाह के सिवा (किसी और का नाम), और गला घोटने से मरा हुआ और चोट खाकर मरा हुआ और गिर कर मरा हुआ और सींग मारा हुआ, और जिस को दरिन्दे ने खाया हो मगर जो तुम ने जुबह कर लिया, और (हराम किया गया) जो आसथाने (परसूतिश गाहों) पर जुबह किया गया, और यह कि तुम तीरों से (पांसे डाल कर) तकसीम करो, यह गुनाह है। आज काफ़िर तुम्हारे दिन से मायूस हो गए, सो तुम उन से न डरो और मुझ से डरो, आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारा दिन मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी, और मैं ने तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन की हेसियत से पसन्द किया। फिर जो भूक में लाचार हो जाए (लेकिन) माइल न हो गुनाह की तरफ (उस के लिए गुंजाइश है) बेशक अल्लाह बख़शने वाला मेहरबान है। (3)

आप (स) से पूछते हैं उन के लिए क्या हलाल किया गया है? कह दें तुम्हारे लिए पाक चीज़ें हलाल की गई हैं और जो तुम शिकारी जानवर सधाओ शिकार पर दौड़ाने को कि तुम उन्हें सिखाते हो उस से जो अल्लाह ने तुम्हें सिखाया है, पस उस में से खाओ जो वह तुम्हारे लिए पकड़ रखें, और उस पर अल्लाह का नाम लो (जुवह कर लो) और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (4)

आज तुम्हारे लिए पाक चीज़ें हलाल की गई, और अहले किताब का खाना तुम्हारे लिए हलाल है, और तुम्हारा खाना उन के लिए हलाल है, और पाक दामन मोमिन औरतें और पाक दामन औरतें उन में से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई (हलाल है), जब तुम उन्हें उन के मेहर दे दो (कैदे निकाह) में लाने को, न कि मस्ती निकालने को और न चोरी छुपे आशनाई करने को, और जो ईमान का मुन्क़िर हुआ उस का अमल जाया हुआ, और वह आख़िरत में नुक़सान उठाने वालों में से है। (5)

حَرَمْتُ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالْدَّمَ وَالْخِنْزِيرِ وَمَا أَهْلًا						
पुकारा गया	और जो-जिस	और सुव्वर का गोश्त	और खून	मुर्दार	तुम पर	हराम कर दिया गया
لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ وَالْمُنْخِنِقَةَ وَالْمَوْفُودَةَ وَالْمُتَرَدِّيَةَ وَالنَّطِيحَةَ وَمَا						
और जो-जिस	और सींग मारा हुआ	और गिर कर मरा हुआ	और चोट खाकर मरा हुआ	और गला घोटने से मरा हुआ	उस पर	अल्लाह के सिवा
أَكَلَ السَّبْعِ إِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصَبِ وَأَنْ تَسْتَقْسِمُوا						
तुम तकसीम करो	और यह कि	थानों पर	जुबह किया गया	और जो	तुम ने जुबह कर लिया	मगर जो दरिन्दा खाया
بِالْأَزْلَامِ ذَلِكُمْ فَسُقُ الْيَوْمَ يَسِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ دِينِكُمْ						
तुम्हारे दिन से	जिन लोगो ने कुफ़ किया (काफ़िर)	मायूस हो गए	आज	गुनाह	यह	तीरों से
فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتَمَمْتُ						
और पूरी कर दी	तुम्हारा दिन	तुम्हारे लिए	मैं ने मुकम्मल कर दिया	आज	और मुझ से डरो	सो तुम उन से न डरो
عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيْتُ لَكُمْ الْإِسْلَامَ دِينًا فَمَنِ اضْطُرَّ فِي						
में	लाचार हो जाए	फिर जो	दीन	इस्लाम	तुम्हारे लिए	और मैं ने पसन्द किया अपनी नेमत तुम पर
مَخْمَصَةٍ غَيْرِ مُتَجَانِفٍ لِإِثْمٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٣﴾ يَسْأَلُونَكَ						
आप (स) से पूछते हैं	3	मेहरबान	बख़शने वाला	तो बेशक अल्लाह	गुनाह की तरफ	माइल हो न भूक
مَاذَا أَحَلَّ لَهُمْ قُلْ أَحَلَّ لَكُمْ الطَّيِّبَاتُ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِنَ الْجَوَارِحِ						
शिकारी जानवर	से	तुम सुधाओ	और जो	पाक चीज़ें	तुम्हारे लिए	हलाल की गईं कह दें उन के लिए हलाल किया गया क्या
مُكَلِّبِينَ تَعْلَمُونَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللَّهُ فَكُلُوا مِمَّا أَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ						
तुम्हारे लिए	वह पकड़ रखें	उस से जो	पस तुम खाओ	अल्लाह	तुम्हें सिखाया	उस से जो तुम उन्हें सिखाते हो शिकार पर दौड़ाए हुए
وَادْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهِ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٤﴾						
4	तेज़ हिसाब लेने वाला	बेशक अल्लाह	अल्लाह	और डरो	उस पर	अल्लाह नाम और याद करो (लो)
الْيَوْمَ أَحَلَّ لَكُمْ الطَّيِّبَاتُ وَطَعَامُ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ حَلَّلٌ						
हलाल	किताब दिए गए (अहले किताब)	वह लोग जो	और खाना	पाक चीज़ें	तुम्हारे लिए	हलाल की गईं आज
لَكُمْ وَطَعَامُكُمْ حَلَّلٌ لَهُمْ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُحْصَنَاتُ						
और पाक दामन	मोमिन औरतें	से	और पाक दामन औरतें	उन के लिए	हलाल	और तुम्हारा खाना तुम्हारे लिए
مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ إِذَا اتَّيَمُّوهُنَّ أَجُورَهُنَّ						
उन के मेहर	तुम उन्हें देदो	जब	तुम से पहले	किताब दी गई	वह लोग जो	से
مُحْصِنِينَ غَيْرِ مُسْفِحِينَ وَلَا مُتَّخِذِي أَخْدَانٍ وَمَنْ يَكْفُرْ						
मुन्क़िर हुआ	और जो	छुपी आशनाई	और न बनाने को	न कि मस्ती निकालने को	कैदे में लाने को	
بِالْإِيمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَسِرِينَ ﴿٥﴾						
5	नुक़सान उठाने वाले	से	आख़िरत में	और वह	उस का अमल	तो जाया हुआ ईमान से

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَاغْسِلُوا						
तो धो लो	नमाज़ के लिए	तुम उठो	जब	वह जो ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	
وَأَرْجُلَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ						
और अपने पाऊँ	अपने सरों का	और मसह करो	कुहनियां	तक	और अपने हाथ	अपने मुँह
إِلَى الْكَعْبَيْنِ وَإِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوا وَإِنْ كُنْتُمْ						
तुम हो	और अगर	तो खूब पाक हो जाओ	नापाक	तुम हो	और अगर	टखनों तक
مَرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِّنْكُم مِّنَ الْغَايِبِ						
वैतुलखला से	तुम में से	कोई	आए	और	सफ़र पर (में)	या बीमार
أَوْ لَمَسْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا						
मिट्टी	तो तयम्मूम कर लो	पानी	फिर न पाओ	औरतों से	या तुम मिलो (सुहबत की)	
طَيِّبًا فَاْمَسَحُوا بِأَيْدِيكُمْ وَأَيْدِيكُمْ مِنْهُ مَا يُرِيدُ اللَّهُ						
अल्लाह	नहीं चाहता	उस से	और अपने हाथ	अपने मुँह	तो मसह करो	पाक
لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ حَرَجٍ وَلَكِنْ يُرِيدُ لِيُطَهِّرَكُمْ						
कि तुम्हें पाक करे	चाहता है	और लेकिन	तंगी	कोई	तुम पर	कि करे
وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٦﴾ وَاذْكُرُوا						
और याद करो	6	एहसान मानो	ताकि तुम	तुम पर	अपनी नेमत	और यह कि पूरी करे
نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمِيثَاقَهُ الَّذِي وَاثَقَكُمْ بِهِ						
उस से	तुम ने बान्धा	जो	और उस का अहद	तुम पर (अपने ऊपर)	अल्लाह की नेमत	
إِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَأَتَقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ						
वात	जानने वाला	वेशक अल्लाह	और अल्लाह से डरो	और हम ने माना	हम ने सुना	जब तुम ने कहा
الضُّدُورِ ﴿٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوْمِينَ لِلَّهِ						
अल्लाह के लिए	खड़े होने वाले	हो जाओ	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	7	दिलों की
شُهَدَاءَ بِالْقِسْطِ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلَىٰ						
पर	किसी कौम	दुशमनी	और तुम्हें न उभारे	इन्साफ़ के साथ	गवाह	
إِلَّا تَعْدِلُوا إِعْدِلُوا هُوَ أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ وَاتَّقُوا						
और डरो	तक़्वा के	ज़ियादा करीब	वह (यह)	तुम इन्साफ़ करो	कि इन्साफ़ न करो	
اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٨﴾ وَعَدَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا						
जो लोग ईमान लाए	अल्लाह	वादा किया	8	जो तुम करते हो	खूब बाख़बर	वेशक अल्लाह अल्लाह
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٩﴾						
9	बड़ा	और अजर	बख़्शिश	उन के लिए	अच्छे	और उन्होंने ने अमल किए

ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो धो लो अपने मुँह और अपने हाथ कुहनियों तक और अपने सरों का मसह करो और अपने पाऊँ (धो) टखनों तक, और अगर तुम नापाक हो (गुस्ल की हाजत हो) तो खूब पाक हो जाओ (गुस्ल कर लो) और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुम में से कोई वैतुलखला से आए या तुम ने औरतों से सुहबत की, फिर न पाओ पानी तो पाक मिट्टी से तयम्मूम कर लो (यानी) उस से अपने मुँह और हाथों का मसह करो, अल्लाह नहीं चाहता कि तुम पर कोई तंगी करे लेकिन चाहता है कि तुम्हें पाक करे और यह कि अपनी नेमत पूरी करे तुम पर ताकि तुम एहसान मानो। (6)

और अपने ऊपर अल्लाह की नेमत याद करो और उस का अहद जो तुम ने उस से बान्धा जब तुम ने कहा हम ने सुना और हम ने माना, और अल्लाह से डरो, वेशक अल्लाह दिलों की बात जानने वाला है। (7)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह के लिए खड़े होने वाले हो जाओ इन्साफ़ की गवाही देने को, और किसी कौम की दुशमनी तुम्हें (उस पर) न उभारे कि इन्साफ़ न करो, तुम इन्साफ़ करो यह तक़्वा के ज़ियादा करीब है, और अल्लाह से डरो, वेशक तुम जो करते हो अल्लाह उस से खूब बाख़बर है। (8)

जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए अल्लाह ने वादा किया कि उन के लिए बख़्शिश और बड़ा अजर है। (9)

और जिन लोगों ने कुफ़ किया और हमारी आयतों को झुटलाया यही जहन्नम वाले हैं। (10)

ऐ ईमान वालो! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत (एहसान) याद करो जब एक गिरोह ने इरादा किया कि वह बढ़ाएं तुम्हारी तरफ़ अपने हाथ (दस्त दराज़ी करने को) तो उस ने तुम से उन के हाथ रोक दिए, और अल्लाह से डरो, और चाहिए कि अल्लाह पर भरोसा करें ईमान वाले। (11)

और अलबत्ता अल्लाह ने बनी इस्राईल से अ़हद लिया, और हम ने उन में से मुक़र्र किए वारह (12) सरदार, और अल्लाह ने कहा मैं तुम्हारे साथ हूँ अगर तुम नमाज़ काइम रखोगे और देते रहोगे ज़कात और मेरे रसूलों पर ईमान लाओगे और उन की मदद करोगे और अल्लाह को कर्ज़ हसना (अच्छा कर्ज़) दोगे, मैं तुम्हारे गुनाह ज़रूर दूर करदूंगा और तुम्हें (उन) बागात में ज़रूर दाख़िल करूंगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं, फिर उस के बाद तुम में से जिस ने कुफ़ किया बेशक वह सीधे रास्ते से गुमराह हुआ। (12)

सो उन के अ़हद तोड़ने पर हम ने उन पर लानत की और उन के दिलों को सख़्त कर दिया, वह कलाम को उस के मवाक़े से फेर देते हैं (बदल देते) हैं और वह भूल गए (फ़रामोश कर बैठे) उस का बड़ा हिस्सा जिस की उन्हें नसीहत की गई थी, और आप (स) उन में से थोड़ों के सिवा हमेशा उन की ख़ियानत पर ख़बर पाते रहते हैं, सो उन को माफ़ करदें और दरगुज़र करें, बेशक अल्लाह एहसान करने वालों को दोस्त रखता है। (13)

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ (١٠)						
10	जहन्नम वाले	यही	हमारी आयतें	और झुटलाया	और जिन लोगों ने कुफ़ किया	
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ						
अपने ऊपर	अल्लाह	नेमत	तुम याद करो	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)		ऐ
إِذْ هُمْ قَوْمٌ لَّا يَبْسُطُونَ إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ						
पस रोक दिए	अपने हाथ	तुम्हारी तरफ़	बढ़ाएं	कि	एक गिरोह	जब इरादा किया
أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۗ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ						
चाहिए भरोसा करें	अल्लाह	और पर	अल्लाह	और डरो	तुम से	उन के हाथ
الْمُؤْمِنُونَ (١١) وَلَقَدْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ						
बनी इस्राईल	अ़हद	अल्लाह ने लिया	और अलबत्ता	11	ईमान वाले	
وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيبًا وَقَالَ اللَّهُ إِنِّي مَعَكُمْ						
बेशक मैं तुम्हारे साथ	अल्लाह	और कहा	सरदार	वारह (12)	उन से	और हम ने मुक़र्र किए
لَئِنْ أَقَمْتُمُ الصَّلَاةَ وَآتَيْتُمُ الزَّكَاةَ وَآمَنْتُمْ						
और ईमान लाओगे	ज़कात	और देते रहोगे	नमाज़	काइम रखोगे	अगर	
بِرُسُلِي وَعَزَّرْتُمُوهُمْ وَأَقْرَضْتُمُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا						
हसना	कर्ज़	अल्लाह	और कर्ज़ दोगे	और उन की मदद करोगे	मेरे रसूलों पर	
لَّا كُفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَلَا يُدْخِلَنَّكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي						
बहती है	बागात	और ज़रूर दाख़िल कर दूंगा तुम्हें	तुम्हारे गुनाह	तुम से	मैं ज़रूर दूर करदूंगा	
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۗ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ مِنْكُمْ						
तुम में से	उस के बाद	कुफ़ किया	फिर जो-जिस	नहरें	उन के नीचे	से
فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ (١٢) فِيمَا نَقَضْتُمْ مِيثَاقَهُمْ						
उन का अ़हद	उनका तोड़ना	सो बसबव (पर)	12	रास्ता	सीधा	बेशक गुमराह हुआ
لَعْنَتُهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوبَهُمْ قَسِيَةً يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ						
से	कलाम	वह फेर देते हैं	सख़्त	उन के दिल (जमा)	और हम ने कर दिया	हम ने उन पर लानत की
مَوَاضِعِهِ ۗ وَنَسُوا حَظًّا مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ ۗ وَلَا تَزَالُ						
और हमेशा	उन्हें जिस की नसीहत की गई	उस से जो	एक बड़ा हिस्सा	और वह भूल गए	उस के मवाक़े	
تَطَّلِعُ عَلَى خَائِنَةٍ مِنْهُمْ إِلَّا قَلِيلًا ۗ مِنْهُمْ						
उन से	थोड़े	सिवाए	उन से	ख़ियानत	पर	आप ख़बर पाते रहते हैं
فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ۗ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ (١٣)						
13	एहसान करने वाले	दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह	और दरगुज़र कर	उन को	सो माफ़ कर

٦  
٦



وَمِنَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصْرَىٰ أَخَذْنَا مِيثَاقَهُمْ					
उन का अहद	हम ने लिया	नसारा	हम	जिन लोगो ने कहा	और से
فَنَسُوا حَظًّا مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ فَأَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ					
उन के दरमियान	तो हम ने लगा दी	जिस की नसीहत की गई थी	उस से जो	एक बड़ा हिस्सा	फिर वह भूल गए
الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَسَوْفَ					
और जल्द	रोज़े कियामत	तक	और बुग़ज़	अ़दावत	
يُنَبِّئُهُمُ اللَّهُ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿١٤﴾ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ					
ऐ अहले किताब	14	करते थे	जो वह	अल्लाह	उन्हें जता देगा
قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيرًا مِّمَّا					
बहुत सी बातें जो	तुम्हारे लिए	वह ज़ाहिर करते हैं	हमारे रसूल	यकीनन तुम्हारे पास आगए	
كُنْتُمْ تُخْفُونَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَعْفُوا عَنْ كَثِيرٍ					
बहुत उमूर से	और वह दरगुज़र करता है	किताब से	छुपाते	तुम थे	
قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُّبِينٌ ﴿١٥﴾					
15	रौशन	और किताब	नूर	अल्लाह से	तहकीक़ तुम्हारे पास आगया
يَهْدِي بِهِ اللَّهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهُ سُبُلَ السَّلَامِ					
सलामती	राहें	उस की रज़ा	जो तावे हुआ	अल्लाह	उस से हिदायत देता है
وَيُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِهِ					
अपने हुक़म से	नूर की तरफ	अन्धेरे	से	और वह उन्हें निकालता है	
وَيَهْدِيهِمْ إِلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿١٦﴾ لَقَدْ كَفَرَ					
तहकीक़ काफ़िर हो गए	16	सीधा	रास्ता	तरफ	और उन्हें हिदायत देता है
الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ					
इब्ने मरयम	वही मसीह (अ)		वेशक अल्लाह	जिन लोगो ने कहा	
قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ أَنْ يُهْلِكَ					
हलाक कर दे	अगर वह चाहे कि	कुछ भी	अल्लाह के आगे	बस चलता है	तो किस कह दीजिए
الْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا					
सब	ज़मीन	में	और जो	और उस की माँ	इब्ने मरयम मसीह (अ)
وَاللَّهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا يَخْلُقُ					
वह पैदा करता है	उन दोनों के दरमियान	और जो	और ज़मीन	आस्मानों	और अल्लाह के लिए सल्तनत
مَا يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٧﴾					
17	कादिर	हर शै	पर	और अल्लाह	जो वह चाहता है

और उन लोगो से जिन्हों ने कहा हम नसारा हैं, हम ने उन का अहद लिया, फिर वह उस का बड़ा हिस्सा भूल गए जिस की उन्हें नसीहत की गई थी तो हम ने उन के दरमियान लगा दिया (डाल दिया) रोज़े कियामत तक अ़दावत और बुग़ज़, और अल्लाह जल्द उन्हें जता देगा जो वह करते थे। (14)

ऐ अहले किताब! यकीनन तुम्हारे पास हमारे रसूल (मुहम्मद (स) आगए, वह तुम्हारे लिए (तुम पर) बहुत सी बातें ज़ाहिर करते हैं जो तुम किताब में से छुपाते थे और वह बहुत उमूर से दरगुज़र करते हैं, तहकीक़ तुम्हारे पास आगया अल्लाह की तरफ़ से नूर और रौशन किताब। (15)

उस से अल्लाह सलामती की राहों की उसे हिदायत देता है जो उस की रज़ा के तावे हुआ और वह उन्हें निकालता है अन्धेरो से नूर की तरफ़ अपने हुक़म से और उन्हें सीधे रास्ते की हिदायत देता है। (16)

तहकीक़ काफ़िर हो गए वह जिन लोगो ने कहा अल्लाह वही मसीह (अ) इब्ने मरयम (अ) है। कह दीजिए: तो किस का बस चलता है अल्लाह के आगे कुछ भी। अगर वह चाहे कि मसीह (अ) इब्ने मरयम (अ) को और उस की माँ को हलाक कर दे और जो ज़मीन में है सब को। और अल्लाह के लिए है सल्तनत आस्मानों की और ज़मीन की और जो कुछ उन के दरमियान है, वह पैदा करता है जो वह चाहता है, और अल्लाह हर शै पर कादिर है। (17)

और यहूद ओ नसारा ने कहा हम अल्लाह के बेटे और उस के प्यारे हैं, कह दीजिए फिर वह तुम्हारे गुनाहों पर तुम्हें सज़ा क्यों देता है? (नहीं) बल्कि तुम भी एक बशर हो उस की मखलूक में से, वह जिस को चाहता है बख़्श देता है और जिस को चाहता है अज़ाब देता है। और अल्लाह के लिए है सलतनत आस्मानों की और ज़मीन की और जो कुछ उन के दरमियान है, और उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। (18)

ऐ अहले किताब! तुम्हारे पास हमारे रसूल (मुहम्मद (स) आ गए वह नबियों का सिलसिला टूट जाने के बाद तुम पर खोल कर बयान करते हैं कि कहीं तुम यह कहो हमारे पास कोई खुशखबरी सुनाने वाला नहीं आया और न डराने वाला, तहकीक तुम्हारे पास (मुहम्मद (स) खुशखबरी सुनाने वाले और डराने वाले आगए, और अल्लाह हर शै पर कादिर है। (19)

और जब मूसा (अ) ने अपनी कौम को कहा: ऐ मेरी कौम! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत याद करो जब उस ने तुम में नबी बनाए और तुम्हें बादशाह बनाया और तुम्हें दिया जो जहानों में किसी को नहीं दिया। (20)

ऐ मेरी कौम! अर्ज़ मुकद्दस में दाखिल हो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दी है और अपनी पीठ फेरते हुए न लौटो वरना तुम नुक्सान में जा पड़ोगे। (21)

उन्होंने कहा ऐ मूसा (अ)! बेशक उस में एक ज़बरदस्त कौम है, और हम वहां हरगिज़ दाखिल न होंगे यहां तक कि वह उस में से निकल जाएं, फिर अगर वह उस में से निकले तो हम ज़रूर उस में दाखिल होंगे। (22)

डरने वालों में से दो आदमियों ने कहा, उन दोनों पर अल्लाह ने इन्शाम किया था: कि तुम उन पर दरवाज़े से (हमला कर के) दाखिल हो जाओ, जब तुम उस में दाखिल होंगे तो तुम ही ग़ालिब होंगे, और अल्लाह पर भरोसा रखो अगर तुम ईमान वाले हो। (23)

وَقَالَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصْرِيُّ نَحْنُ أَبْنَاءُ اللَّهِ وَأَحِبَّاؤُهُ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوبِكُمْ بَلْ أَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ									
और कहा	यहूद	और नसारा	हम	बेटे	अल्लाह	और उस के प्यारे	कह दीजिए	फिर क्यों	
وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ (١٨) يَا هَلْ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا									
और अज़ाब देता है	तुम्हें अज़ाब देता है	तुम्हारे गुनाहों पर	बल्कि तुम	वशर	उन में से	उस ने पैदा किया (मखलूक)	वह बख़्श देता है	जिस को	वह चाहता है
يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلَى فِتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ أَنْ تَقُولُوا مَا جَاءَنَا مِنْ بَشِيرٍ وَلَا نَذِيرٍ فَقَدْ جَاءَكُمْ بَشِيرٌ وَنَذِيرٌ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (١٩) وَاذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يُقَوْمِ ادْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ									
उन दोनों के दरमियान	और उसी की तरफ़	लौट कर जाना है	18	ऐ अहले किताब	तहकीक तुम्हारे पास आए	हमारे रसूल			
वह खोल कर बयान करते हैं	तुम्हारे लिए	पर (बाद)	सिलसिला टूट जाना	से (के)	रसूल (जमा)	कि कहीं	तुम कहो	हमारे पास नहीं आया	कोई
और न	डराने वाला	तहकीक तुम्हारे पास आगए	खुशखबरी सुनाने वाले	और डराने वाले	और अल्लाह	पर	हर शै		
कादिर	19	और जब	कहा	मूसा	अपनी कौम को	ऐ मेरी कौम	तुम याद करो	अल्लाह की नेमत	
عَلَيْكُمْ إِذْ جَعَلَ فِيكُمْ أَنْبِيَاءَ وَجَعَلَكُمْ مُلُوكًا وَآتَاكُمْ									
अपने ऊपर	जब	उस ने बनाया	तुम में	नबी (जमा)	और तुम्हें बनाया	वादशाह	और तुम्हें दिया		
जो नहीं	दिया	किसी को	से	जहानों में	20	ऐ मेरी कौम	दाखिल हो जाओ		
مَّا لَمْ يُؤْتِ أَحَدًا مِّنَ الْعَالَمِينَ (٢٠) يُقَوْمِ ادْخُلُوا									
और हम बेशक	हरगिज़ दाखिल न होंगे	यहां तक कि	वह निकल जाएं	उस से	और न	लौटो	पर	अपनी पीठ	
فَتَنقَلِبُوا خٰسِرِينَ (٢١) قَالُوا يٰمُوسٰى اِنَّ فِيهَا قَوْمًا جَبٰرِيْنَ									
वरना तुम जा पड़ोगे	नुक्सान में	21	उन्होंने कहा	ऐ मूसा (अ)	बेशक उस में	एक कौम	ज़बरदस्त		
وَإِنَّا لَن نَّدْخُلَهَا حَتَّىٰ يَخْرُجُوا مِنْهَا فَإِن يَخْرُجُوا مِنْهَا									
और हम	हरगिज़ दाखिल न होंगे	यहां तक कि	वह निकल जाएं	उस से	फिर अगर	वह निकले	उस से		
فَإِنَّا دٰخِلُونَ (٢٢) قَالَ رَجُلَيْنِ مِّنَ الَّذِينَ يَخٰفُونَ اَنعَمَ اللّٰهُ									
तो हम ज़रूर	दाखिल होंगे	22	कहा	दो आदमी	उन लोगों से जो	डरने वाले	अल्लाह ने इन्शाम किया था		
عَلَيْهِمَا ادْخُلُوا عَلَيْهِمُ الْبَابَ فَاِذَا دَخَلْتُمُوهُ فَانكُم									
उन दोनों पर	तुम दाखिल हो उन पर (हमला कर दो)	दरवाज़ा	पस जब	तुम दाखिल होगे उस में	तो तुम				
غٰلِبُونَ وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْا اِنَّ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ (٢٣)									
ग़ालिब आओगे	और अल्लाह पर	भरोसा रखो	अगर तुम हो	ईमान वाले	23				

قَالُوا يَمُوسَى إِنَّا لَن نَدْخُلَهَا أَبَدًا مَّا دَامُوا فِيهَا فَادْهَبْ							
सो जा	उस में	जब तक वह है	कभी भी	हरगिज़ वहां दाखिल न होंगे	वेशक हम	ऐ मूसा	उन्होंने ने कहा
أَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا إِنَّا هَهُنَا قُعْدُونَ ﴿٢٤﴾ قَالَ رَبِّ إِنِّي							
मैं	ऐ मेरे	मूसा (अ) ने कहा	24	बैठे हैं	यही	हम	तुम दोनों लड़ो
वेशक	रब	ने कहा					और तेरा रब तू
لَا أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِي وَأَخِي فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ							
कौम	और दरमियान	हमारे दरमियान	पस जुदाई कर दे	और अपना भाई	अपनी जान के सिवा	इखतियार नहीं रखता	
الْفٰسِقِينَ ﴿٢٥﴾ قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ سَنَةً							
साल	चालीस	उन पर	हराम कर दी गई	पस यह	उस ने कहा	25	नाफरमान
يَتِيهُونَ فِي الْأَرْضِ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفٰسِقِينَ ﴿٢٦﴾							
26	नाफरमान	कौम	पर	तू अफसोस न कर	ज़मीन में	भटकते फिरेंगे	
وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ابْنَى آدَمَ بِالْحَقِّ إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقْبِلَ							
तो कुबूल कर ली गई	कुछ नियाज़	जब दोनों ने पेश की	अहवाल-ए-वाक़्ज़ी	आदम के दो बेटे	खबर	उन्हें	और सुना
مِنْ أَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْآخَرِ قَالَ لَأَقْتُلَنَّكَ قَالَ							
उस ने कहा	मैं तुझे ज़रूर मार डालूंगा	उस ने कहा	दूसरे से	और न कुबूल की गई	उन में से एक	से	
إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ﴿٢٧﴾ لَبِئْسَ بَسَطَتِ إِلَيَّ يَدَكَ							
अपना हाथ	मेरी तरफ़	अलबत्ता अगर तू बढ़ाएगा	27	परहेज़गार (जमा)	से	अल्लाह	कुबूल करता है
لِتَقْتُلَنِي مَا أَنَا بِبَاسِطٍ يَدَيْ إِلَيْكَ لِأَقْتُلَنَّكَ إِنِّي أَخَافُ							
डरता हूँ	वेशक मैं	कि तुझे क़त्ल करूँ	तेरी तरफ़	अपना हाथ	बढ़ाने वाला	मैं नहीं	कि मुझे क़त्ल करे
اللَّهُ رَبِّ الْعٰلَمِينَ ﴿٢٨﴾ إِنِّي أُرِيدُ أَنْ تَبُوءَ بِإِثْمِي							
मेरे गुनाह	कि तू हासिल करे	चाहता हूँ	वेशक मैं	28	परवरदिगार सारे जहान का	अल्लाह	
وَإِثْمِكَ فَتَكُونَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ وَذٰلِكَ جَزَاؤُ الظّٰلِمِينَ ﴿٢٩﴾							
29	ज़ालिम (जमा)	सज़ा	और यह	जहनन्म वाले	से	फिर तू हो जाए	और अपने गुनाह
فَطَوَّعَتْ لَهُ نَفْسُهُ قَتْلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُ فَأَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِينَ ﴿٣٠﴾							
30	नुक्सान उठाने वाले	से	तो वह हो गया	सो उस ने उस को क़त्ल कर दिया	अपना भाई	क़त्ल	उस का नफ्स को फिर राज़ी किया
فَبَعَثَ اللَّهُ غُرَابًا يَبْحَثُ فِي الْأَرْضِ لِيُرِيَهُ كَيْفَ يُورِي							
वह छुपाए	कैसे	ताकि उसे दिखाए	ज़मीन में	कुरेदता था	एक कच्चा	अल्लाह	फिर भेजा
سَوْءَةَ أَخِيهِ قَالَ يُؤِيلَتِي أَعْجَزْتُ أَنْ أَكُونَ مِثْلَ هٰذَا							
इस-यह	जैसा	कि मैं हो जाऊँ	मुझ से न हो सका	हाए अफसोस मुझ पर	उस ने कहा	अपना भाई	लाश
الْغُرَابِ فَأَوَارِي سَوْءَةَ أَخِي فَأَصْبَحَ مِنَ النَّٰدِمِينَ ﴿٣١﴾							
31	नादिम होने वाले	से	पस वह हो गया	अपना भाई	लाश	फिर छुपाऊँ	कच्चा

उन्होंने ने कहा ऐ मूसा (अ)! जब तक वह उस में है हम वहां कभी भी हरगिज़ दाखिल न होंगे, सो तू जा और तेरा रब, तुम दोनों लड़ो, हम तो यहीं बैठे हैं। (24)

मूसा (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! वेशक मैं इखतियार नहीं रखता सिवाए अपनी जान के और अपने भाई के, पस हमारे और हमारी नाफरमान कौम के दरमियान जुदाई डाल दे (फैसला कर दे)। (25)

अल्लाह ने कहा पस यह सरज़मीन हराम कर दी गई उन पर चालीस साल, वह ज़मीन में भटकते फिरेंगे, तू नाफरमान कौम पर अफसोस न कर। (26)

उन्हें आदम (अ) के दो बेटों का हाले वाक़्ज़ी सुनाओ, जब दोनों ने कुछ नियाज़ पेश की तो उन में से एक की कुबूल कर ली गई और दूसरे से कुबूल न की गई, उस ने (भाई को) कहा मैं तुझे ज़रूर मार डालूंगा, उस ने कहा अल्लाह सिर्फ़ कुबूल करता है परहेज़गारों से। (27)

अलबत्ता अगर तू मेरी तरफ़ अपना हाथ मुझे क़त्ल करने के लिए बढ़ाएगा, मैं (फिर भी) अपना हाथ तेरी तरफ़ बढ़ाने वाला नहीं कि तुझे क़त्ल करूँ, वेशक मैं सारे जहान के परवरदिगार अल्लाह से डरता हूँ। (28)

वेशक मैं चाहता हूँ कि तू हासिल करे (ज़िम्मेदार हो जाए) मेरे गुनाह का और अपने गुनाह का, फिर तू जहनन्म वालों में से होजाए और ज़ालिमों की यही सज़ा है। (29)

फिर उस को उस के नफ्स ने अपने भाई के क़त्ल पर आमादा कर लिया, उस ने उस को क़त्ल कर दिया तो नुक्सान उठाने वालों में से हो गया। (30)

फिर अल्लाह ने भेजा एक कच्चा ज़मीन कुरेदता ताकि वह उसे दिखाए कि वह अपने भाई की लाश कैसे छुपाए। उस ने कहा हाए अफसोस! मुझ से इतना न हो सका कि उस कच्चे जैसा हो जाऊँ कि अपने भाई की लाश को छुपाऊँ, पस वह नादिम (पशेमां) होने वालों में से होगया। (31)

उस वजह से हम ने बनी इस्राईल पर लिख दिया कि जिस ने किसी एक जान को किसी जान के (बदले के) बगैर या मुल्क में फ़साद करने के बगैर क़त्ल किया तो गोया उस ने क़त्ल किया तमाम लोगों को, और जिस ने (किसी एक को) ज़िन्दा रखा (बचाया) तो गोया उस ने तमाम लोगों को ज़िन्दा रखा (बचा लिया), और उन के पास आ चुके हमारे रसूल रौशन दलाइल के साथ, फिर उस के बाद उन में से अक़्सर ज़मीन में हद से बढ़ जाने वाले हैं। (32)

यही सज़ा है (उन की) जो लोग अल्लाह और उस के रसूल से जंग करते हैं और सज़ाई करते हैं मुल्क में फ़साद बर्पा करने की कि वह क़त्ल किए जाएं या सूली दिए जाएं या उन के हाथ और पाऊँ काटे जाएं मुख़ालिफ़ जानिव से (एक तरफ़ का हाथ दूसरी तरफ़ का पाऊँ), या मुल्क बदर कर दिए जाएं, यह उन के लिए दुनिया में रुसवाई है और उन के लिए आख़िरत में बड़ा अज़ाब है। (33)

मगर वह लोग जिन्हों ने उस से पहले तौबा कर ली कि तुम काबू पाओ उन पर, तो जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (34)

ऐ ईमान वालो! डरो अल्लाह से और उस की तरफ़ (उस का) कुर्व तलाश करो और उस के रास्ते में जिहाद करो ताकि तुम फ़लाह पाओ। (35)

जिन लोगों ने कुफ़्र किया जो कुछ ज़मीन में है अगर सब का सब और उस के साथ और इतना ही उन के पास हो कि वह उस को कियामत के दिन अज़ाब के फ़िदये (बदला) में दें तो वह उन से कुबूल न किया जाएगा, और उन के लिए अज़ाब है दर्दनाक। (36)

مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ كَتَبْنَا عَلَى بَنِي إِسْرَائِيلَ أَنَّهُ							
कि	बनी इस्राईल	पर	हम ने लिख दिया	उस	वजह	से	
जो-जिस							
مَنْ قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ							
उस ने क़त्ल किया	तो गोया	ज़मीन (मुल्क) में	या फ़साद करना	किसी जान के बगैर	कोई जान	कोई क़त्ल करे	
النَّاسَ جَمِيعًا وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَا أَحْيَا النَّاسَ جَمِيعًا							
तमाम	लोग	उस ने ज़िन्दा रखा	तो गोया	उस को ज़िन्दा रखा	और जो-जिस	तमाम	लोग
وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ إِنَّ كَثِيرًا مِّنْهُمْ							
उन में से	अक़्सर	वेशक	फिर	रौशन दलाइल के साथ	हमारे रसूल	और उन के पास आ चुके	
بَعَدَ ذَلِكَ فِي الْأَرْضِ لَمُسْرِفُونَ ﴿٣٢﴾ إِنَّمَا جَزَاءُ الَّذِينَ يُحَارِبُونَ							
जंग करते हैं	जो लोग	सज़ा	यही	32	हद से बढ़ने वाले	ज़मीन (मुल्क) में	उस के बाद
اللَّهِ وَرُسُولَهُ وَيَسْعُونَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَنْ يُقَتَّلُوا							
कि वह क़त्ल किए जाएं	फ़साद करने	जमीन (मुल्क) में	और कोशिश करते हैं	और उस का रसूल (स)	अल्लाह		
أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَافٍ							
एक दूसरे के मुख़ालिफ़ से	से	और उन के पाऊँ	उन के हाथ	काटे जाएं	या	वह सूली दिए जाएं	या
أَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْأَرْضِ ذَلِكَ لَهُمْ حِزْبٌ فِي الدُّنْيَا							
दुनिया में	रुसवाई	उन के लिए	यह	मुल्क से	या मुल्क बदर कर दिए जाएं		
وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٣٣﴾ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا							
वह लोग जिन्हों ने तौबा कर ली	मगर	33	बड़ा	अज़ाब	आख़िरत में	और उन के लिए	
مِنْ قَبْلِ أَنْ تَقْدِرُوا عَلَيْهِمْ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ							
बख़्शने वाला	अल्लाह	कि	तो जान लो	उन पर	तुम काबू पाओ	कि	उस से पहले
رَحِيمٌ ﴿٣٤﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا							
और तलाश करो	अल्लाह	डरो	जो लोग ईमान लाए	ऐ	34	मेहरबान	
إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ وَجَاهِدُوا فِي سَبِيلِهِ لَعَلَّكُمْ							
ताकि तुम	उस का रास्ता	में	और जिहाद करो	कुर्व	उस की तरफ़		
تُفْلِحُونَ ﴿٣٥﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَّا							
जो	उन के लिए	यह कि	अगर	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	वेशक	35	फ़लाह पाओ
فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لِيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ							
अज़ाब	से	उस के साथ	कि फ़िदया (बदले में) दें	उस के साथ	और इतना	सब का सब	ज़मीन में
يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَا تُقْبَلُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٣٦﴾							
36	दर्दनाक	अज़ाब	और उन के लिए	उन से	कुबूल किया जाएगा	न	कियामत का दिन

يُرِيدُونَ أَنْ يُخْرِجُوا مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ بِخَارِجِينَ						
निकलने वाले	हालाकि नहीं वह	आग	से	वह निकल जाएं	कि	वह चाहेंगे
مِنْهَا وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِمٌ ﴿٣٧﴾ وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوا						
काट दो	और चोर औरत	और चोर मर्द	37	हमेशा रहने वाला	अज़ाब	और उन के लिए
أَيْدِيَهُمَا جِزَاءً بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَزِيزٌ						
ग़ालिब	और अल्लाह	अल्लाह	से	इव्रत	उस की जो उन्होंने ने किया	सज़ा
حَكِيمٌ ﴿٣٨﴾ فَمَنْ تَابَ مِنْ بَعْدِ ظُلْمِهِ وَأَصْلَحَ فَإِنَّ اللَّهَ						
तो वेशक अल्लाह	और इसलाह की	अपना जुल्म	बाद	से	पस जो - जिस तौबा की	38
يَتُوبُ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٩﴾ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ						
उसी की	अल्लाह	कि	क्या तू नहीं जानता	39	मेहरवान	वख़शने वाला
مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَغْفِرُ						
और वख़शदे	जिसे चाहे	अज़ाब दे	और ज़मीन	आस्मानों	सल्तनत	
لِمَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤٠﴾ يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ						
रसूल (स)	ऐ	40	कादिर	हर शै	पर	और अल्लाह
لَا يَحْزُنكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِينَ قَالُوا						
उन्होंने ने कहा	जो लोग	से	कुफ़्र	में	भाग दौड़ करते हैं	जो लोग
أَمَنًا بِأَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ قُلُوبُهُمْ ۗ وَمِنَ الَّذِينَ هَادُوا ۗ						
वह लोग जो यहूदी हुए	और से	उन के दिल	और मोमिन नहीं	अपने मुँह से (जमा)	हम ईमान लाए	
سَمِعُونَ لِكَلِمَةٍ سَمِعُونِ لِقَوْمٍ آخِرِينَ لَمْ يَأْتُوكَ						
वह आप (स) तक नहीं आए	दूसरी	कौम के लिए	वह जासूस है	झूट के लिए	जासूसी करते हैं	
يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ مِنْ بَعْدِ مَوَاضِعِهِ يَقُولُونَ						
कहते हैं	उस का ठिकाना	बाद	कलाम	वह फेर देते हैं		
إِنْ أُوْتِيْتُمْ هَذَا فَخُذُوهُ وَإِنْ لَمْ تُؤْتُوهُ فَاحْذَرُوا ۗ						
तो उस से बचो	यह तुम्हें न दिया जाए	और अगर	उस को क़बूल कर लो	यह	अगर तुम्हें दिया जाए	
وَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ فِتْنَتَهُ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۗ						
कुछ	अल्लाह	से	उस के लिए	तू हरगिज़ न आ सकेगा	गुमराह करना	अल्लाह चाहे
أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَمْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يُطَهِّرَ قُلُوبَهُمْ ۗ لَهُمْ						
उन के लिए	उन के दिल	पाक करे	कि	अल्लाह	नहीं चाहा	वह लोग जो
فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۗ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٤١﴾						
41	बड़ा	अज़ाब	आख़िरत	में	और उन के लिए	दुनिया में

वह चाहेंगे कि वह आग से निकल जाएं हालांकि वह उस से निकलने वाले नहीं, और उन के लिए हमेशा रहने वाला (दाइमी) अज़ाब है। (37)

चोर मर्द और चोर औरत दोनों के हाथ काट दो यह सज़ा है उस की जो उन्होंने ने किया, इव्रत है अल्लाह की तरफ़ से, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (38)

पस जिस ने तौबा की अपने जुल्म के बाद और इसलाह कर ली तो वेशक अल्लाह उस की तौबा क़बूल करता है, वेशक अल्लाह वख़शने वाला मेहरवान है। (39)

क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह ही की है सल्तनत आस्मानों की और ज़मीन की? वह जिसे चाहे अज़ाब दे और जिस को चाहे वख़शदे, और अल्लाह हर शै पर कादिर है। (40)

ऐ रसूल (स)! आप (स) को वह लोग ग़मगीन न करें जो कुफ़्र में भाग दौड़ करते हैं, वह लोग जो अपने मुँह से कहते हैं हम ईमान लाए हालांकि उन के दिल मोमिन नहीं, वह जो यहूदी हुए वह झूट के लिए जासूसी करते हैं, वह जासूस हैं एक दूसरी जमाअत के जो आप (स) तक नहीं आए, कलाम को फेर देते (बदल डालते) हैं उस के ठिकाने के बाद (ठिकाना छोड़ कर), कहते हैं अगर तुम्हें यह दिया जाए तो उस को क़बूल कर लो और अगर तुम्हें न दिया जाए तो उस से बचो, और जिस को अल्लाह गुमराह करना चाहे तो उस के लिए तू अल्लाह के हौं कुछ न कर सकेगा, यही लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने नहीं चाहा कि उन के दिल पाक करे, उन के लिए दुनिया में रुसवाई है और उन के लिए आख़िरत में बड़ा अज़ाब है। (41)

झूट के लिए जासूसी करने वाले, हराम खाने वाले, पस अगर वह आप (स) के पास आए तो आप (स) उन के दरमियान फ़ैसला कर दें या उन से मुँह फेर लें, और अगर आप (स) उन से मुँह फेर लें तो हरगिज़ आप (स) का कुछ न बिगाड़ सकेंगे, और अगर आप (स) फ़ैसला करें तो उन के दरमियान इन्साफ़ से फ़ैसला करें, वेशक अल्लाह दोस्त रखता है इन्साफ़ करने वालों को। (42)

और वह आप (स) को कैसे मुन्सिफ़ बनाते हैं जबकि उन के पास तौरात है जिस में अल्लाह का हुक्म है, फिर उस के बाद वह फिर जाते हैं, और वह मानने वाले नहीं। (43)

वेशक हम ने नाज़िल की तौरात। उस में हिदायत और नूर है, उस के ज़रीआ हमारे नबी जो फ़रमांवरदार थे हुक्म देते थे यहूद को, और दर्वेश और उलमा (भी) इस लिए कि वह अल्लाह की किताब के निगहवान मुक़र्रर किए गए थे और उस पर निगरान थे, पस तुम लोगों से न डरो और मुझ (ही) से डरो और न हासिल करो मेरी आयतों के बदले थोड़ी क़ीमत, और जो उस के मुताबिक़ फ़ैसला न करे जो अल्लाह ने नाज़िल किया है सो यही लोग काफ़िर हैं। (44)

और हम ने उस (किताब) में उन पर फ़र्ज़ कर दिया कि जान के बदले जान, आँख के बदले आँख, और नाक के बदले नाक, और कान के बदले कान, और दाँत के बदले दाँत है, और ज़ख़्मों का क़िसास (बदला) है, फिर जिस ने उस (क़िसास) को माफ़ कर दिया तो वह उस के लिए कफ़फ़ारा है, और जो उस के मुताबिक़ फ़ैसला नहीं करते जो अल्लाह ने नाज़िल किया तो यही लोग ज़ालिम हैं। (45)

سَمْعُونَ لِلْكَذِبِ أَكْلُونَ لِلْأَسْحَابِ فَإِنْ جَاءُوكَ فَاحْكُم بَيْنَهُمْ أَوْ أَعْرِضْ عَنْهُمْ ۖ وَإِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَصْرِفُوا عَنْهُمْ شَيْئًا ۚ وَإِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُم بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ﴿٤٢﴾							
तो फ़ैसला कर दें आप (स)	आप (स) के पास आए	पस अगर	हaram	बड़े खाने वाले	झूट के लिए	जासूसी करने वाले	
आप (स) का बिगाड़ सकेंगे	तो हरगिज़ न	उन से	आप (स) मुँह फेर लें	और अगर	उन से	मुँह फेर लें	या उन के दरमियान
سَمْعُونَ لِلْكَذِبِ أَكْلُونَ لِلْأَسْحَابِ فَإِنْ جَاءُوكَ فَاحْكُم بَيْنَهُمْ أَوْ أَعْرِضْ عَنْهُمْ ۖ وَإِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَصْرِفُوا عَنْهُمْ شَيْئًا ۚ وَإِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُم بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ﴿٤٢﴾							
दोस्त रखता है	वेशक अल्लाह	इन्साफ़ से	उन के दरमियान	तो फ़ैसला करें	आप फ़ैसला करें	और अगर	कुछ
उस में	तौरात	जबकि उन के पास	वह आप (स) को मुन्सिफ़ बनाएंगे	और कैसे	42	इन्साफ़ करने वाले	
حُكْمَ اللَّهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَمَا أُولَئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٣﴾							
वह लोग	और नहीं	उस	बाद	फिर जाते हैं	फिर	अल्लाह का हुक्म	
और नूर	हिदायत	उस में	तौरात	हम ने नाज़िल की	वेशक हम	43	मानने वाले
يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّونَ الَّذِينَ أَسْلَمُوا لِلَّذِينَ هَادُوا							
उन लोगों के लिए जो यहूदी हुए (यहूद को)	जो फ़रमांवरदार थे			नबी (जमा)	उस के ज़रीआ	हुक्म देते थे	
وَالرَّبَّنِيُّونَ وَالْأَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوا مِنْ كِتَابِ اللَّهِ							
अल्लाह की किताब	से (की)	वह निगहवान किए गए	इस लिए कि	और उलमा	अल्लाह वाले (दर्वेश)		
وَكَانُوا عَلَيْهِ شُهَدَاءَ ۚ فَلَا تَحْشَوْا النَّاسَ وَاحْشَوْنَ							
और डरो मुझ से	लोग	पस न डरो	निगरान (मुहाफ़िज़)	उस पर	और थे		
وَلَا تَشْتَرُوا بِآيَاتِي ثَمَنًا قَلِيلًا ۚ وَمَنْ لَمْ يَحْكَمْ بِمَا							
उस के मुताबिक़ जो	फ़ैसला न करे	और जो	थोड़ी क़ीमत	मेरी आयतों के बदले	और न ख़रीदो (न हासिल करो)		
أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ ﴿٤٤﴾							
उन पर	और हम ने लिखा (फ़र्ज़ किया)	44	काफ़िर (जमा)	वह	सो यही लोग	अल्लाह ने नाज़िल किया	
فِيهَا أَنْ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنْفَ							
और नाक	आँख के बदले	और आँख	जान के बदले	जान	कि	उस में	
بِالْأَنْفِ وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ وَالْجُرُوحَ							
और ज़ख़्मों	दाँत के बदले	और दाँत	कान के बदले	और कान	नाक के बदले		
قِصَاصٌ ۚ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهِ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهُ ۚ وَمَنْ							
और जो	उस के लिए	कफ़फ़ारा	तो वह	उस को	माफ़ कर दिया	फिर जो-जिस	बदला
لَمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٤٥﴾							
45	ज़ालिम (जमा)	वह	तो यही लोग	अल्लाह	नाज़िल किया	उस के मुताबिक़ जो	फ़ैसला नहीं करता

٦  
١٠

وَقَمَيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِعَيْسَىٰ ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا							
उस की जो	तसदीक करने वाला	इब्ने मरयम	ईसा (अ)	उन के निशाने कदम	पर	और हम ने पीछे भेजा	
بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ ۚ وَآتَيْنَاهُ الْإِنجِيلَ فِيهِ هُدًى وَنُورٌ							
और नूर	हिदायत	उस में	इंजील	और हम ने उसे दी	तौरात	से	उस से पहले
وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةً							
और नसीहत	और हिदायत	तौरात	से	उस से पहले	उस की जो	और तसदीक करने वाली	
لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٤٦﴾ وَلِيَحْكُمَ أَهْلَ الْإِنجِيلِ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فِيهِ ۖ وَمَنْ							
और जो	उस में	अल्लाह	नाज़िल किया	उस के साथ जो	इंजील वाले	और फ़ैसला करें	46 परहेज़गारों के लिए
لَّمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٤٧﴾ وَأَنْزَلْنَا							
और हम ने नाज़िल की	47	फ़ासिक (नाफ़रमान)	वह	तो यही लोग	अल्लाह	नाज़िल किया	उस के मुताबिक़ जो फ़ैसला नहीं करता
إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتَابِ							
किताब	से	उस से पहले	उस की जो	तसदीक करने वाली	सच्चाई के साथ	किताब	आप की तरफ़
وَمُهَيِّمًا عَلَيْهِ فَاحْكُم بَيْنَهُم بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ							
और न पैरवी करें	अल्लाह	नाज़िल किया	उस से जो	उन के दरमियान	सो फ़ैसला करें	उस पर	और निगहवान ओ मुहाफ़िज़
أَهْوَاءَهُمْ عَمَّا جَاءَكَ مِنَ الْحَقِّ لِكُلِّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شُرْعَةً							
दस्तूर	तुम में से	हम ने मुकर्रर किया है	हर एक के लिए	हक़	से	तुम्हारे पास आगया	उस से उन की खाहिशात
وَمِنْهَا جَا ۖ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً ۚ وَلَكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ							
ताकि तुम्हें आज़माए	और लेकिन	वाहिदा (एक)	उम्मत	तो तुम्हें कर देता	अल्लाह चाहता	और अगर	और रास्ता
فِي مَا آتَاكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ ۗ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُكُمْ							
वह तुम्हें बतलादेगा	सब को	तुम्हें लौटना	अल्लाह	तरफ़	नेकियां	पस सबक़त करो	उस ने तुम्हें दिया जो में
بِمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٤٨﴾ وَإِنْ أَحْكَمْتُمْ بَيْنَهُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ							
अल्लाह	नाज़िल किया	उस से जो	उन के दरमियान	और फ़ैसला करें	48	इख़तिलाफ़ करते	उस में तुम थे जो
وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ أَنْ يَفْتِنُوكَ عَنْ بَعْضِ مَا							
जो	बाज़ (किसी)	से	बहका न दें	कि	और उन से बचते रहो	उन की खाहिशों	और न चलो
أَنْزَلَ اللَّهُ إِلَيْكَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوا أَنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُصِيبَهُمْ							
उन्हें पहुँचादे	कि	अल्लाह	चाहता है	सिर्फ़ यही	तो जान लो	वह सुँह फेर लें	फिर अगर आप की तरफ़ अल्लाह नाज़िल किया
بِبَعْضِ دُنُوبِهِمْ ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ لَفَاسِقُونَ ﴿٤٩﴾ أَفَحُكْمَ							
क्या हुक़म	49	नाफ़रमान	लोग	से	अक़सर	और वेशक	उस के गुनाह बसबव बाज़
الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُونَ ۗ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿٥٠﴾							
50	यकीन रखते हैं	लोगों के लिए	हुक़म	अल्लाह	से	बेहतर	और किस वह चाहते हैं जाहिलियत

और हम ने ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) को उन के निशाने कदम पर भेजा, उस की तसदीक करने वाला जो उस (ईसा (अ) से पहले तौरात से थी, और हम ने उसे इंजील दी, उस में हिदायत और नूर है और उस की तसदीक करने वाली जो उस से पहले तौरात से थी और परहेज़गारों के लिए हिदायत ओ नसीहत थी। (46)

और इंजील वाले उस के साथ फ़ैसला करें जो अल्लाह ने उस में नाज़िल किया, और जो उस के मुताबिक़ फ़ैसला नहीं करते जो अल्लाह ने नाज़िल किया है तो यही लोग फ़ासिक (नाफ़रमान) हैं। (47)

और हम ने आप (स) की तरफ़ किताब सच्चाई के साथ नाज़िल की अपने से पहली किताबों की तसदीक करने वाली और उस पर निगहवान ओ मुहाफ़िज़, सो उन के दरमियान फ़ैसला करें उस से जो अल्लाह ने नाज़िल किया और उन की खाहिशात की पैरवी न करें उस के बाद (जबकि) तुम्हारे पास हक़ आगया, हम ने मुकर्रर किया है तुम में से हर एक के लिए (अलग) दस्तूर और (जुदा) रास्ते, और अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हें उम्मत वाहिदा (एक उम्मत) कर देता, लेकिन (वह चाहता है) ताकि वह तुम्हें उस से आज़माए जो उस ने तुम्हें दिया है, पस नेकियों में सबक़त करो, तुम सब को अल्लाह की तरफ़ लौट कर जाना है वह तुम्हें बतला देगा जिस बात में तुम इख़तिलाफ़ करते थे। (48)

और उन के दरमियान फ़ैसला करें उस से जो नाज़िल किया अल्लाह ने, और उन कि खाहिशों पर न चलो और उन से बचते रहो कि तुम्हें बहका न दें किसी ऐसे (हुक़म) से जो नाज़िल किया है अल्लाह ने आप (स) की तरफ़, फिर अगर वह सुँह फेर लें तो जान लो कि अल्लाह सिर्फ़ यही चाहता है कि उन्हें (सज़ा) पहुँचाए उन के बाज़ गुनाहों के सबब, और उन में से अक़सर लोग नाफ़रमान हैं। (49)

क्या वह (दौरे) जाहिलियत का हुक़म (रस्म ओ रिवाज़) चाहते हैं? और अल्लाह से बेहतर हुक़म किस का है उन लोगों के लिए जो यकीन रखते हैं? (50)

ऐ ईमान वालो! यहूद और नसारा को दोस्त न बनाओ, उन में से बाज़ दोस्त हैं बाज़ के (एक दूसरे के दोस्त हैं) और तुम में से जो कोई उन से दोस्ती रखेगा तो बेशक वह उन में से होगा, बेशक अल्लाह हिदायत नहीं देता ज़ालिम लोगों को। (51)

पस तू देखेगा जिन लोगों के दिलों में रोग है वह उन (यहूद ओ नसारा) की तरफ़ दौड़ते हैं, वह कहते हैं हमें डर है कि हम पर गर्दिशे (ज़माना) न आजाए, सो करीब है कि अल्लाह फतह लाए या अपने पास से कोई हुकम (लाए) तो वह अपने दिलों में जो छुपाते थे उस पर पछताते रह जाएं। (52)

और मोमिन कहेंगे क्या यह वही लोग हैं जो अल्लाह की पक्की कस्में खाते थे कि वह तुम्हारे साथ है। उन के अमल अकारत गए, पस वह नुकसान उठाने वाले (हो कर) रह गए। (53)

ऐ ईमान वालो! तुम में से जो कोई अपने दीन से फिरगा तो अज़करीब अल्लाह ऐसी कौम लाएगा जिन्हें वह मेहबूब रखता है और वह उसे मेहबूब रखते हैं, वह मोमिनों पर नरम दिल है काफ़िरों पर ज़बरदस्त है, अल्लाह की राह में जिहाद करते हैं और किसी मलामत करने वाले की मलामत से नहीं डरते, यह अल्लाह का फ़ज़ल है वह जिस को चाहता है देता है, और अल्लाह वुस्त्रत वाला, इल्म वाला है। (54)

तुम्हारे रफ़ीक़ तो सिर्फ़ अल्लाह और उस का रसूल और ईमान वाले हैं, और वह जो नमाज़ काइम करते हैं और ज़कात देते हैं और (अल्लाह के हुज़ूर) झुकने वाले हैं। (55)

जो दोस्त रखें अल्लाह और उस के रसूल (स) को और ईमान वालों को, तो बेशक अल्लाह की जमाअत ही (सब पर) ग़ालिब होगी। (56)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُودَ وَالنَّصَارَىٰ أَوْلِيَاءَ ۚ							
दोस्त	और नसारा	यहूद	न बनाओ	ईमान लाए	जो लोग	ऐ	
بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ مِنْكُمْ فإِنَّهُ مِنْهُمْ ۗ							
उन से	तो बेशक वह	तुम में से	उन से दोस्ती रखेगा	और जो	बाज़ (दूसरे)	दोस्त	उन में से बाज़
إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٥١﴾ فَتَرَى الَّذِينَ فِي							
में	वह लोग जो	पस तू देखेगा	51	ज़ालिम	लोग	हिदायत नहीं देता	बेशक अल्लाह
قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ يُسَارِعُونَ فِيهِمْ يَقُولُونَ نَخْشَىٰ أَنْ							
कि	हमें डर है	कहते हैं	उन में (उन की तरफ)	दौड़ते हैं	रोग	उन के दिल	
تُصِيبَنَا دَائِرَةً ۚ فَعَسَىٰ اللَّهُ أَنْ يَأْتِيَ بِالْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ مِّنْ عِنْدِهِ							
अपने पास	से	या कोई हुकम	लाए फतह	कि	अल्लाह	सो करीब है	गर्दिश
हम पर (न) आजाए							
فَيُضْبِحُوا عَلَىٰ مَا أَسْرُوا فِي أَنفُسِهِمْ نَدِمِينَ ﴿٥٢﴾ وَيَقُولُ							
और कहते हैं	52	पछताने वाले	अपने दिल (जमा)	में	वह छुपाते थे	जो	पर तो रह जाएं
الَّذِينَ آمَنُوا أَهْلَاءَ الَّذِينَ أَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ أَنَّهُمْ							
कि वह	अपनी कस्में	पक्की	अल्लाह की	कस्में खाते थे	जो लोग	क्या यह वही है	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)
لَمَعَكُمْ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَاصْبِرُوا خَيْرِينَ ﴿٥٣﴾ يَا أَيُّهَا							
ऐ	53	नुकसान उठाने वाले	पस रह गए	उन के अमल	अकारत गए	तुम्हारे साथ	
الَّذِينَ آمَنُوا مَنْ يَرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ فَسَوْفَ يَأْتِي اللَّهُ بِقَوْمٍ							
ऐसी कौम	लाएगा अल्लाह	तो अज़करीब	अपना दीन	से	तुम से	फिरेगा	जो जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)
يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ ۗ أَذِلَّةٌ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٌ عَلَى الْكٰفِرِينَ ۗ							
काफ़िर (जमा)	पर	ज़बरदस्त	मोमिनीन	पर	नर्म दिल	और वह उसे मेहबूब रखते हैं	वह उन्हें मेहबूब रखता है
يُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَائِمٍ ۚ ذَلِكَ							
यह	कोई मलामत करने वाला	मलामत	और नहीं डरते	अल्लाह	में रास्ता	जिहाद करते हैं	
فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٥٤﴾ إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ							
तुम्हारा रफ़ीक	उस के सिवा नहीं (सिर्फ)	54	इल्म वाला	वुस्त्रत वाला	और अल्लाह	जिसे चाहता है	वह देता है
अल्लाह	फ़ज़ल						
اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۗ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلٰوةَ							
नमाज़	काइम करते हैं	जो लोग	ओर जो लोग ईमान लाए	और उस का रसूल	अल्लाह		
وَيُؤْتُونَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ زَكٰعُونَ ﴿٥٥﴾ وَمَنْ يَتَوَلَّ اللَّهَ							
अल्लाह	दोस्त रखते हैं	और जो	55	रुकुअ करने वाले	और वह	ज़कात	और देते हैं
وَرَسُولَهُ ۗ وَالَّذِينَ آمَنُوا فَإِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْغٰلِبُونَ ﴿٥٦﴾							
56	ग़ालिब (जमा)	वह	अल्लाह की जमाअत	तो बेशक	ओर जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	और उस का रसूल	



يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَكُمْ										
तुम्हारा दीन	जो लोग ठहराते हैं	न बनाओ	ईमान लाए (ईमान वाले)	जो लोग	ऐ					
هُزُوا وَلَعِبًا مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ										
तुम से कब्ल	किताब दिए गए	वह लोग - जो	से	और खेल	एक मज़ाक					
وَالْكَفَّارَ أَوْلِيَاءَ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٥٧﴾										
57	ईमान वाले	अगर तुम हो	अल्लाह	और डरो	दोस्त और काफ़िर					
وَإِذَا نَادَيْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ اتَّخَذُوهَا هُزُوءًا وَلَعِبًا ذَلِكِ										
यह	और खेल	एक मज़ाक	वह उसे ठहराते हैं	नमाज़	तरफ (लिए)	तुम पुकारते हो	और जब			
بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٥٨﴾ قُلْ يَا هَلْ الْكِتَابِ هَلْ تَنْقِمُونَ										
क्या ज़िद रखते हो	ऐ अहले किताब	आप (स) कह दें	58	अक़ल नहीं रखते हैं (बेअक़ल)	लोग	इस लिए कि वह				
مِنَّا إِلَّا أَنْ آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ مِنْ قَبْلُ										
उस से कब्ल	नाज़िल किया गया	और जो	हमारी तरफ़	नाज़िल किया गया	और जो	अल्लाह पर	हम ईमान लाए	यह कि	मगर	हम से
وَأَنَّ أَكْثَرَكُمْ فَسِقُونَ ﴿٥٩﴾ قُلْ هَلْ أُنبِئُكُمْ بِشَرِّ مِّنْ ذَلِكَ										
उस	से	बद तर	तुम्हें बतलाऊँ	क्या	आप कह दें	59	नाफ़रमान	तुम में अक़सर	और यह कि	
مَثُوبَةً عِنْدَ اللَّهِ مَن لَّعَنَهُ اللَّهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ										
और बना दिया	उस पर	और ग़ज़ब किया	अल्लाह	उस पर लानत की	जो - जिस	अल्लाह	हां	ठिकाना (जज़ा)		
مِنْهُمْ الْقِرْدَةَ وَالْخَنَازِيرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوتِ أُولَئِكَ شَرٌّ										
बद तरीन	वही लोग	तागूत	और गुलामी	और ख़िनज़ीर (जमा)	बन्दर (जमा)	उन से				
مَكَانًا وَأَضَلُّ عَن سَوَاءِ السَّبِيلِ ﴿٦٠﴾ وَإِذَا جَاءُوكُمْ قَالُوا										
कहते हैं	तुम्हारे पास आएँ	और जब	60	रास्ता	सीधा	से	बहुत बहके हुए	दरजे में		
آمَنَّا وَقَدْ دَخَلُوا بِالْكَفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوا بِهِ وَاللَّهُ										
और अल्लाह	उस (कुफ़) के साथ	निकले चले गए	और वह	कुफ़ की हालत में	हालांकि वह दाख़िल हुए (आएँ)	हम ईमान लाए				
أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا يَكْتُمُونَ ﴿٦١﴾ وَتَرَى كَثِيرًا مِنْهُمْ يُسَارِعُونَ										
वह भाग दौड़ करते हैं	उन से	बहुत	और तू देखेगा	61	छुपाते	थे	वह जो	खूब जानता है		
فِي الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَأَكْلِهِمُ الشُّحْتَ لَبِئْسَ مَا كَانُوا										
जो वह	बुरा है	हराम	और उन का खाना	और ज़ियादती	गुनाह	में				
يَعْمَلُونَ ﴿٦٢﴾ لَوْلَا يَنْهَاهُمُ الرَّبُّنِيُّونَ وَالْأَحْبَارُ عَنْ										
से	और उलमा	अल्लाह वाले (दर्वेश)	क्यों उन्हें मना नहीं करते	62	कर रहे हैं					
قَوْلِهِمُ الْإِثْمَ وَأَكْلِهِمُ الشُّحْتَ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿٦٣﴾										
63	वह कर रहे हैं	जो	बुरा है	हराम	और उन का खाना	उन की बातें गुनाह की				

ऐ ईमान वालो! उन लोगों को जो तुम्हारे दीन को एक मज़ाक और खेल ठहराते हैं (यानी वह) जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई और काफ़िरों को दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो अगर तुम ईमान वाले हो। (57)

और जब तुम नमाज़ के लिए पुकारते हो (अज़ान देते हो) तो वह उसे एक मज़ाक और खेल ठहराते हैं, यह इस लिए है कि वह लोग अक़ल नहीं रखते। (58)

आप (स) कह दें ऐ अहले किताब! क्या तुम हम से यही ज़िद रखते हो (इन्तिकाम लेते हो) कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस पर जो हमारी तरफ़ नाज़िल किया गया और जो उस से कब्ल नाज़िल किया गया, और यह कि तुम में से अक़सर नाफ़रमान है। (59)

आप (स) कह दें क्या मैं तुम्हें बतलाऊँ उस से बदतर जज़ा (किस की है) अल्लाह के हाँ (वही) जिस पर अल्लाह ने लानत की और उस पर ग़ज़ब किया और उन में से बना दिए बन्दर और ख़िनज़ीर, और (उन्होंने) तागूत (सरकश - शैतान) की गुलामी की। वही लोग बदतरीन दरजे में हैं, और सीधे रास्ते से सब से ज़ियादा बहके हुए हैं। (60)

और जब तुम्हारे पास आएँ तो कहते हैं हम ईमान लाए हालांकि आए थे कुफ़ की हालत में और निकले तो कुफ़ के साथ, और अल्लाह खूब जानता है जो वह छुपाते हैं। (61)

और तू देखेगा उन में से बहुत से भाग दौड़ करते हैं गुनाह और ज़ियादती में और हराम खाने में, बुरा है जो वह कर रहे हैं। (62)

उन्हें क्यों मना नहीं करते दर्वेश और उलमा गुनाह (की बात) कहने से और उन के हराम खाने से, बुरा है जो वह कर रहे हैं। (63)

और यहूद कहते हैं अल्लाह का हाथ बन्धा हुआ है (अल्लाह बखील है), बाँध दिए जाएं उन के हाथ, और जो उन्होंने ने कहा उस से उन पर लानत की गई। बल्कि अल्लाह के हाथ कुशादा हैं, वह खर्च करता है जैसे वह चाहता है, और जो आप (स) पर आप (स) के रब की तरफ से नाज़िल किया गया उस से उन में से बहुतों की सरकशी ज़रूर बढ़ेगी और कुफ़, और हम ने उन के अन्दर कियामत के दिन तक के लिए दुश्मनी और बैर डाल दिया है, वह जब कभी लड़ाई की आग भड़काते हैं अल्लाह उसे बुझा देता है, और वह मुल्क में फ़साद करते हुए दौड़ते हैं (फ़साद बर्पा करते हैं), और अल्लाह फ़साद करने वालों को पसन्द नहीं करता। (64)

और अगर अहले किताब ईमान लाते और परहेज़गारी करते तो हम अलबत्ता उन से उन की बुराइयां दूर कर देते और नेमत के बागात में ज़रूर दाखिल करते। (65)

और अगर वह तौरत और इंजील काइम रखते और जो उन के रब की तरफ से उन पर नाज़िल किया गया तो वह खाते अपने ऊपर से और अपने पाऊँ के नीचे से, उन में से एक जमाअत मियााना रो है, और उन में से अक्सर बुरे काम करते हैं। (66)

ऐ रसूल (स) पहुँचादो जो आप (स) के रब की तरफ से आप (स) पर नाज़िल किया गया है, और अगर यह न किया तो (गोया) आप (स) ने उस का पैग़ाम नहीं पहुँचाया, और अल्लाह आप (स) को लोगों से बचा लेगा, वेशक अल्लाह कौमे कुपफ़ार को हिदायत नहीं देता। (67)

आप (स) कह दें: ऐ अहले किताब! तुम कुछ भी नहीं हो जब तक तुम (न) काइम करो तौरत और इंजील और जो तुम्हारे रब की तरफ से तुम पर नाज़िल किया गया है, और ज़रूर बढ़ जाएगी उन में से अक्सर की सरकशी और कुफ़ उस की वजह से जो आप (स) पर आप (स) के रब की तरफ से नाज़िल किया गया है तो आप (स) अफ़सोस न करें (ग़म न खाएँ) कौमे कुपफ़ार पर। (68)

وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللَّهِ مَعْلُومَةٌ غَلَّتْ أَيْدِيهِمْ وَلَعْنُوا بِمَا							
उस से जो	और उन पर लानत की गई	उन के हाथ	बाँध दिए जाएं	बन्धा हुआ	अल्लाह का हाथ	यहूद	और कहा (कहते हैं)
قَالُوا بَلْ يَدُهُ مَبْسُوتَةٌ يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَاءُ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا							
बहुत से	और ज़रूर बढ़ेगी	वह चाहता है	जैसे	वह खर्च करता है	कुशादा है	उस (अल्लाह) के हाथ	बल्कि उन्होंने ने कहा
مِنْهُمْ مَا أَنْزَلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا وَالْقَيْنَا بَيْنَهُمْ							
उन के अन्दर	और हम ने डाल दिया	और कुफ़	सरकशी	आप का रब	से	आप की तरफ	जो नाज़िल किया गया उन से
الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ كُلَّمَا أَوْقَدُوا نَارًا							
आग	भड़काते हैं	जब कभी	कियामत का दिन	तक	और बुगज़ (बैर)	दुश्मनी	
لِلْحَرْبِ أَطْفَاهَا اللَّهُ وَيَسْعُونَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا وَاللَّهُ							
और अल्लाह	फ़साद करते	ज़मीन (मुल्क) में	और वह दौड़ते हैं	अल्लाह	उसे बुझा देता है	लड़ाई की	
لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ﴿٦٤﴾ وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَابِ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا							
अलबत्ता हम दूर कर देते	और परहेज़गारी करते	ईमान लाते	अहले किताब	यह कि	और अगर	64	फ़साद करने वाले पसन्द नहीं करता
عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَادَخَلْنَاهُمْ جَنَّتِ النَّعِيمِ ﴿٦٥﴾ وَلَوْ أَنَّهُمْ							
काइम रखते	वह	और अगर	65	नेमत के बागात	और ज़रूर हम उन्हें दाखिल करते	उन की बुराइयां	उन से
أَقَامُوا التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أَنْزَلَ إِلَيْهِمْ مِنْ رَبِّهِمْ لَأَكْلُوا مِنْ							
से	तो वह खाते	उन का रब	से	उन की तरफ (उन पर)	नाज़िल किया गया	और जो	और इंजील तौरत
فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ مِنْهُمْ أُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ وَكَثِيرٌ							
और अक्सर	सीधी राह पर (मियााना रो)	एक जमाअत	उन से	अपने पाऊँ	नीचे	और से	अपने ऊपर
مِنْهُمْ سَاءَ مَا يَعْمَلُونَ ﴿٦٦﴾ يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا أَنْزَلَ إِلَيْكَ							
तुम्हारी तरफ (तुम पर)	जो नाज़िल किया गया	पहुँचा दो	रसूल (स)	ऐ	66	जो वह करते हैं	बुरा उन से
مِنْ رَبِّكَ وَإِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهُ وَاللَّهُ يَعْصِمُكَ							
आप (स) को बचाले गा	और अल्लाह	उस का पैग़ाम	आप (स) ने पहुँचाया	तो नहीं	यह न किया	और अगर	तुम्हारा रब से
مِنَ النَّاسِ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿٦٧﴾ قُلْ							
आप कह दें	67	कौमे कुपफ़ार	हिदायत नहीं देता	वेशक अल्लाह	लोग	से	
يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَسْتُمْ عَلَى شَيْءٍ حَتَّى تُقِيمُوا التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا							
और जो	और इंजील	तौरत	तुम काइम करो	जब तक	किसी चीज़ पर (कुछ भी)	तुम नहीं हो	ऐ अहले किताब
أَنْزَلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ مَا أَنْزَلَ إِلَيْكَ							
आप की तरफ (आप पर)	जो नाज़िल किया गया	उन से	अक्सर	और ज़रूर बढ़ जाएगी	तुम्हारा रब	से	तुम्हारी तरफ (तुम पर) नाज़िल किया गया
مِنْ رَبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٦٨﴾							
68	कौमे कुपफ़ार	पर	तो अफ़सोस न करें	और कुफ़	सरकशी	आप के रब की तरफ से	

وقف لاج

ع ١٣

<p>إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِقُونَ وَالنَّاصِرِينَ</p>								
और नसारा	और साबी	यहूदी हुए	और जो लोग	जो लोग ईमान लाए	वेशक			
<p>مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ</p>								
और न वह	उन पर	तो कोई खौफ नहीं	अच्छे	और उस ने अमल किए	और आखिरत के दिन	अल्लाह पर	ईमान लाए	जो
<p>يَحْزَنُونَ ﴿٦٩﴾ لَقَدْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَارْسَلْنَا إِلَيْهِمْ</p>								
उन की तरफ	और हम ने भेजे	बनी इस्राईल	पुछता अहद	हम ने लिया	वेशक	69	गमगीन होंगे	
<p>رُسُلًا كَلَّمَا جَاءَهُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَىٰ أَنفُسُهُمْ فَرِيقًا كَذَّبُوا</p>								
झुटलाया	एक फरीक	उन के दिल	न चाहते थे	उस के साथ जो	कोई रसूल	आया उन के पास	जब भी	रसूल (जमा)
<p>وَفَرِيقًا يَّقْتُلُونَ ﴿٧٠﴾ وَحَسِبُوا إِلَّا تَكُونُ فِتْنَةً فَاعْمُوا وَصَمُّوا ثُمَّ</p>								
तो	और बहरे हो गए	सो वह अन्धे हुए	कोई खराबी	कि न होगी	और उन्होंने ने गुमान किया	70	कत्ल कर डालते	और एक फरीक
<p>تَابَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوا وَصَمُّوا كَثِيرٌ مِنْهُمْ وَاللَّهُ بِصِيرٍ بِمَا</p>								
जो	देख रहा है	और अल्लाह	उन से	अक्सर	और बहरे होगए	अंधे होगए	फिर	उन की अल्लाह तौबा कुबूल की
<p>يَعْمَلُونَ ﴿٧١﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ</p>								
इब्ने मरयम	मसीह (अ)	वही अल्लाह	तहकीक	वह जिन्हों ने कहा	वेशक काफिर हुए	71	वह करते हैं	
<p>وَقَالَ الْمَسِيحُ بَنِي إِسْرَائِيلَ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ إِنَّهُ</p>								
वेशक वह	और तुम्हारा रब	मेरा रब	अल्लाह	इबादत करो	ऐ बनी इस्राईल	मसीह (अ)	और कहा	
<p>مَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ</p>								
दोज़ख	और उस का ठिकाना	जन्नत	उस पर	अल्लाह ने हराम कर दी	तो तहकीक	अल्लाह का	शारीक ठहराए	जो
<p>وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ﴿٧٢﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ ثَالِثُ</p>								
तीन का	वेशक अल्लाह	वह लोग जिन्हों ने कहा	अलबत्ता काफिर हुए	72	मददगार	कोई	ज़ालिमों के लिए	और नहीं
<p>ثَلَاثَةٌ وَمَا مِنْ إِلَهٍ إِلَّا إِلَهُ وَاحِدٌ وَإِنْ لَمْ يَنْتَهُوا عَمَّا يَقُولُونَ</p>								
वह कहते हैं	उस से जो	वह बाज़ न आए	और अगर	वाहद	माबूद	सिवाए	माबूद	कोई और नहीं तीसरा (एक)
<p>لَيَمَسَّنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابَ أَلِيمٍ ﴿٧٣﴾ أَفَلَا يَتُوبُونَ</p>								
पस वह क्यों तौबा नहीं करते	73	दर्दनाक	अज़ाब	उन से	जिन्हों ने कुफ़ किया	ज़रूर पहुँचेगा		
<p>إِلَى اللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٧٤﴾ مَا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ</p>								
इब्ने मरयम	मसीह (अ)	नहीं	74	मेहरबान	बख़शने वाला	और अल्लाह	और उस से बख़्शीश मांगते	अल्लाह की तरफ (आगे)
<p>إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۗ وَأُمُّهُ صِدِّيقَةٌ ۗ كَانَا يَأْكُلَنِ</p>								
खाते थे	वह दोनों	सिददीका (सच्ची - वली)	और उस की माँ	रसूल	उस से पहले	गुज़र चुके	रसूल	मगर
<p>الطَّعَامِ ۗ أَنْظِرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمْ الْآيَاتِ ۗ ثُمَّ أَنْظِرْ أَيْ يُؤْفَكُونَ ﴿٧٥﴾</p>								
75	औन्धे जा रहे हैं	कहाँ (कैसे)	देखो	फिर	आयात (दलाइल)	उन के लिए	हम बयान करते हैं	कैसे देखो खाना

वेशक जो लोग ईमान लाए और जो यहूदी हुए और साबी (सितारा परस्त) और नसारा, जो भी ईमान लाए अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर और अच्छे अमल करे तो कोई खौफ नहीं उन पर और न वह गमगीन होंगे। (69)

वेशक हम ने बनी इस्राईल से पुछता अहद लिया और हम ने उन की तरफ रसूल भेजे, जब भी उन के पास कोई रसूल आया उस (हुकम) के साथ जो उन के दिल न चाहते थे तो एक फरीक को झुटलाया और एक फरीक को कत्ल कर डाला, (70)

और उन्होंने ने गुमान किया कि कोई खराबी न होगी, सो वह अन्धे हो गए और बहरे हो गए, फिर अल्लाह ने उन्हें माफ़ किया, फिर उन में से अक्सर अन्धे और बहरे हो गए, सो अल्लाह देख रहा है जो वह करते हैं। (71)

वेशक वह काफिर हुए जिन्हों ने कहा तहकीक अल्लाह वही है मसीह (अ) इब्ने मरयम, और मसीह (अ) ने कहा ऐ बनी इस्राईल! अल्लाह की इबादत करो जो मेरा (भी) रब है और तुम्हारा (भी) रब है, वेशक जो अल्लाह का शरीक ठहराए तो तहकीक अल्लाह ने उस पर जन्नत हराम कर दी है और उस का ठिकाना दोज़ख है और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं। (72)

अलबत्ता वह लोग काफिर हुए जिन्हों ने कहा वेशक अल्लाह तीन में का एक है। और माबूद वाहद के सिवा कोई माबूद नहीं, और अगर वह उस से बाज़ न आए जो वह कहते हैं तो उन में से जिन्हों ने कुफ़ किया उन्हें ज़रूर दर्दनाक अज़ाब पहुँचेगा। (73)

और वह तौबा क्यों नहीं करते अल्लाह के आगे और उस से गुनाहों की बख़्शीश क्यों नहीं मांगते? और अल्लाह बख़शने वाला मेहरबान है। (74)

मसीह (अ) इब्ने मरयम (अ) नहीं मगर रसूल (वह सिर्फ एक रसूल है) उस से पहले रसूल गुज़र चुके हैं, और उस की माँ सिददीका (सच्ची - वली) है, वह दोनों खाना खाते थे, देखो! हम उन के लिए कैसे दलाइल बयान करते हैं, फिर देखो ये कैसे औन्धे जा रहे हैं? (75)

وقف الان

कह दें: क्या तुम अल्लाह के सिवा उसे पूजते हो जो तुम्हारे लिए मालिक नहीं किसी नुकसान का और न नफ़ा का, और अल्लाह ही सुनने वाला जानने वाला है। (76)

कह दें: ऐ अहले किताब! अपने दीन में नाहक मुवालिगा न करो और उन लोगों की खाहिशात की पैरवी न करो जो उस से कबल गुमराह हो चुके हैं और उन्होंने ने बहुत सों को गुमराह किया और (खुद भी) बहक गए सीधे रास्ते से। (77)

वनी इस्राईल में से जिन लोगों ने कुफ़ किया वह मलऊन हुए दाऊद (अ) और ईसा (अ) इवने मरयम (अ) की ज़बानी, यह इस लिए कि उन्होंने ने नाफ़रमानी की और वह हद से बढ़ते थे। (78)

वह एक दूसरे को बुरे काम से जो वह कर रहे थे न रोकते थे, अलबत्ता बुरा है जो वह करते थे। (79)

आप (स) देखेंगे उन में से अक्सर काफ़िरों से दोस्ती करते हैं। अलबत्ता बुरा है जो आगे भेजा खुद उन्होंने ने अपने लिए कि उन पर अल्लाह ग़ज़वनाक हुआ और वह हमेशा अज़ाब में रहने वाले हैं। (80)

और अगर (काश) वह अल्लाह और रसूल पर ईमान ले आते और उस पर जो उस की तरफ़ नाज़िल किया गया तो उन्हें दोस्त न बनाते लेकिन उन में से अक्सर नाफ़रमान हैं। (81)

तुम सब लोगों से ज़ियादा दुश्मन पाओगे अहले ईमान (मुसलमानों) का यहूद को और मुशरिकों को, और अलबत्ता तुम मुसलमानों के लिए दोस्ती में सब से क़रीब पाओगे (उन लोगों को) जिन लोगों ने कहा हम नसारा हैं, यह इस लिए कि उन में अ़ल्लिम और दर्वेश हैं, और यह कि वह तकब्वुर नहीं करते। (82)

قُلْ أَتَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا								
और न नफ़ा	नुक़सान	तुम्हारे लिए	मालिक	जो नहीं	अल्लाह के सिवा	से	क्या तुम पूजते हो	कह दें
وَاللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٧٦﴾ قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي								
में	गुलू (मुवालिगा) न करो	ऐ अहले किताब	कह दें	76	जानने वाला	सुनने वाला	वही	और अल्लाह
دِينِكُمْ غَيْرِ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوا مِنْ قَبْلُ								
इस से कबल	गुमराह हो चुके	वह लोग	खाहिशात	पैरवी करो	और न	नाहक	अपना दीन	
وَأَضَلُّوا كَثِيرًا وَضَلُّوا عَنْ سَوَاءِ السَّبِيلِ ﴿٧٧﴾ لُعِنَ								
लानत किए गए (मलऊन हुए)	77	रास्ता	सीधा	से	और भटक गए	बहुत से	और उन्होंने ने गुमराह किया	
الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَى لِسَانِ دَاوُدَ وَعِيسَى								
और ईसा (अ)	दाऊद (अ)	ज़वान	पर	वनी इस्राईल	से	जिन लोगों ने कुफ़ किया		
ابْنِ مَرْيَمَ ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿٧٨﴾ كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ								
एक दूसरे को न रोकते थे	78	हद से बढ़ते	और वह थे	उन्होंने ने नाफ़रमानी की	इस लिए कि	यह	इवने मरयम	
عَنْ مُنْكَرٍ فَعَلُوهُ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٧٩﴾								
79	करते	जो वह थे	अलबत्ता बुरा है	वह करते थे	बुरे काम	से		
تَرَى كَثِيرًا مِنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ								
जो आगे भेजा	अलबत्ता बुरा है	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	दोस्ती करते हैं	उन से	अक्सर	आप (स) देखेंगे		
لَهُمْ أَنْفُسُهُمْ أَنْ سَخِطَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ								
वह	और अज़ाब में	उन पर	ग़ज़वनाक हुआ अल्लाह	कि	उन की जानें	अपने लिए		
خَالِدُونَ ﴿٨٠﴾ وَلَوْ كَانُوا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالنَّبِيِّ وَمَا أُنزِلَ								
नाज़िल किया गया	और जो	और रसूल	अल्लाह	वह ईमान लाए	और अगर	80	हमेशा रहने वाले	
إِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوهُمْ أَوْلِيَاءَ وَلَكِنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ								
उन से	अक्सर	और लेकिन	दोस्त	उन्हें बनाते	न	उस की तरफ़		
فَاسْقُونَ ﴿٨١﴾ لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِلَّذِينَ آمَنُوا								
अहले ईमान (मुसलमानों) के लिए	दुश्मनी	लोग	सब से ज़ियादा	तुम ज़रूर पाओगे	81	नाफ़रमान		
الْيَهُودَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا وَلَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُمْ مَوَدَّةً								
दोस्ती	सब से ज़ियादा क़रीब	और अलबत्ता ज़रूर पाओगे	और जिन लोगों ने शिर्क किया	यहूद				
لِلَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَضْرِيْ ذَٰلِكَ بِأَنَّ								
इस लिए कि	यह	नसारा	हम	जिन लोगों ने कहा	ईमान लाए (मुसलमान)	उन के लिए जो		
مِنْهُمْ قَسِيْرَيْنَ وَرُءْبَانًا وَأَنَّ هُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٨٢﴾								
82	तकब्वुर नहीं करते	और यह कि वह	और दर्वेश	अ़ल्लिम	उन से			

10  
13

وَإِذَا سَمِعُوا مَا أُنزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرَى أَعْيُنُهُمْ						
और जब	सुनते हैं	जो नाज़िल किया गया	तरफ़	रसूल	तू देखे	उन की आँखें
تَفِيضٌ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا مِنَ الْحَقِّ يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا						
वह पड़ती है	से	आँसू	इस (वजह से)	उन्होंने ने पहचान लिया	से-को	हक़
हम ईमान लाए	ऐ हमारे रब	वह कहते हैं	हक़	हम ईमान न लाए	अल्लाह पर	और जो हमारे पास आया
فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ﴿٨٣﴾ وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا						
पस हमें लिख ले	साथ	गवाह (जमा)	83	और क्या	हम को	हमारे पास आया
مِنَ الْحَقِّ وَنَطْمَعُ أَنْ يُدْخِلَنَا رَبَّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصَّالِحِينَ ﴿٨٤﴾						
से-पर	हक़	और हम तमझ रखते हैं	कि	हमें दाखिल करे	हमारा रब	साथ
हमेशा रहेंगे	नहरें	उस के नीचे	से	वहती है	बागात	उस के बदले जो उन्होंने ने कहा
فَاتَّبَعُهُمُ اللَّهُ بِمَا قَالُوا جَنَّتِ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ						
पस दिए उन को	अल्लाह	उस के बदले जो उन्होंने ने कहा	उस के बदले जो उन्होंने ने कहा	वहती है	बागात	हमेशा रहेंगे
فِيهَا وَذَلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٥﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا						
उस (उन) में	और यह	जज़ा	नेकोकार (जमा)	85	और जो लोग	उन्होंने ने कुफ़ किया
हमेशा रहेंगे	नहरें	उस के नीचे	से	वहती है	बागात	उस के बदले जो उन्होंने ने कहा
بِآيَاتِنَا أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿٨٦﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا						
हमारी आयात	हमारी आयात	यही लोग	साथी (वाले)	दोज़ख़	86	ऐ
पस दिए उन को	अल्लाह	उस के बदले जो उन्होंने ने कहा	उस के बदले जो उन्होंने ने कहा	वहती है	बागात	हमेशा रहेंगे
لَا تُحَرِّمُوا طَيِّبَاتِ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ						
न हराम ठहराओ	पाकीज़ा चीज़ें	जो	हलाल की अल्लाह ने	तुम्हारे लिए	और हद से न बढ़ो	वेशक अल्लाह
لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿٨٧﴾ وَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا						
नहीं पसन्द करता	हद से बढ़ने वाले	87	और खाओ	उस से जो	तुम्हें दिया अल्लाह ने	पाकीज़ा
पस दिए उन को	अल्लाह	उस के बदले जो उन्होंने ने कहा	उस के बदले जो उन्होंने ने कहा	वहती है	बागात	हमेशा रहेंगे
وَأْتَقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿٨٨﴾ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ						
और डरो अल्लाह से	वह जिस	तुम	उस को	मानते हो	88	नहीं
पस दिए उन को	अल्लाह	उस के बदले जो उन्होंने ने कहा	उस के बदले जो उन्होंने ने कहा	वहती है	बागात	हमेशा रहेंगे
بِاللَّعْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَدْتُمُ الْإِيمَانَ						
बेहूदा	में-पर	तुम्हारी कसमें	और लेकिन	मुआख़ज़ा करता है तुम्हारा	उस पर जो	मज़बूत बांधा
पस दिए उन को	अल्लाह	उस के बदले जो उन्होंने ने कहा	उस के बदले जो उन्होंने ने कहा	वहती है	बागात	हमेशा रहेंगे
فَكَفَّارَتُهُ إِطْعَامُ عَشْرَةِ مَسْكِينٍ مِنْ أَوْسَطِ مَا تُطْعَمُونَ						
सो उस का कफ़ारा	खाना खिलाना	दस	मोहताज (जमा)	से-का	औसत	जो
पस दिए उन को	अल्लाह	उस के बदले जो उन्होंने ने कहा	उस के बदले जो उन्होंने ने कहा	वहती है	बागात	हमेशा रहेंगे
أَهْلِيكُمْ أَوْ كِسْوَتُهُمْ أَوْ تَحْرِيرُ رَقَبَةٍ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ						
अपने घर वाले	या उन्हें कपड़े पहनाना	या आज़ाद करना	एक गर्दन	पस जो	न पाए	तो रोज़ा रखे
पस दिए उन को	अल्लाह	उस के बदले जो उन्होंने ने कहा	उस के बदले जो उन्होंने ने कहा	वहती है	बागात	हमेशा रहेंगे
ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ ذَلِكَ كَفَّارَةُ أَيْمَانِكُمْ إِذَا حَلَفْتُمْ وَاحْفَظُوا						
तीन दिन	यह	कफ़ारा	तुम्हारी कसमें	जब	तुम कसम खाओ	और हिफाज़त करो
पस दिए उन को	अल्लाह	उस के बदले जो उन्होंने ने कहा	उस के बदले जो उन्होंने ने कहा	वहती है	बागात	हमेशा रहेंगे
أَيْمَانَكُمْ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٨٩﴾						
अपनी कसमें	इसी तरह	बयान करता है अल्लाह	तुम्हारे लिए	अपने अहकाम	ताकि तुम	शुक्र करो

और जब वह सुनते हैं जो रसूल (स) की तरफ़ नाज़िल किया गया, तू देखे कि उन की आँखें आँसूओं से बह पड़ती हैं (उबल पड़ती हैं) इस वजह से कि उन्होंने ने हक़ को पहचान लिया, वह कहते हैं कि ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए, पस हमें गवाहों (ईमान लाने वालों) के साथ लिख ले। (83)

और हम को क्या हुआ कि हम ईमान न लाए अल्लाह पर और उस हक़ पर जो हमारे पास आया, और हम तमझ रखते हैं कि हमें दाखिल करे हमारा रब नेक लोगों के साथ। (84)

पस जो उन्होंने ने कहा उस के बदले अल्लाह ने उन्हें बागात दिए जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, और यह नेकोकारों की जज़ा है। (85)

और जिन लोगों ने कुफ़ किया और हमारी आयात को झुटलाया, यही लोग दोज़ख़ वाले हैं। (86)

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए: पाकीज़ा चीज़ें जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की वह हराम न ठहराओ, और हद से न बढ़ो, वेशक अल्लाह नहीं पसन्द करता हद से बढ़ने वालों को। (87)

और जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से हलाल और पाकीज़ा खाओ और अल्लाह से डरो वह जिस को तुम मानते हो। (88)

अल्लाह तुम्हारा मुआख़ज़ा नहीं करता (नहीं पकड़ता) तुम्हारी बेहूदा कसमों पर लेकिन तुम्हारा मुआख़ज़ा करता है (पकड़ता है) जिस कसम को तुम ने मज़बूत बांधा (पुख़ता कसम पर), सो उस का कफ़ारा दस मोहताजों को खाना खिलाना है औसत (दरजे) का जो तुम अपने घर वालों को खिलाते हो या उन्हें कपड़े पहनाना या एक गर्दन (गुलाम) आज़ाद करना, पस जो यह न पाए वह तीन दिन के रोज़े रखे, यह तुम्हारी कसमों का कफ़ारा है जब तुम कसम खाओ, और अपनी कसमों की हिफाज़त करो, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपने अहकाम बयान करता है ताकि तुम शुक्र करो। (89)

ऐ ईमान वालो! इस के सिवा नहीं कि शराब, जुआ और बुत और पांसे (फ़ाल के तीर) नापाक है, शैतानी काम हैं, सो उन से बचो ताकि तुम फ़लाह (कामयाबी और नजात) पाओ। (90)

इस के सिवा नहीं कि शैतान चाहता है कि तुम्हारे दरमियान शराब और जुए से दुश्मनी डाले और तुम्हें रोके अल्लाह की याद से और नमाज़ से, पस क्या तुम बाज़ आओगे? (91)

और तुम इताअत करो अल्लाह की और रसूल (स) की, और बचते रहो, फिर अगर तुम फिर जाओगे तो जान लो कि हमारे रसूल (स) के ज़िम्मे सिर्फ़ खोल कर (बाज़ेह तौर पर) पहुँचा देना है। (92)

जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए उन पर उस में कोई गुनाह नहीं जो वह खा चुके जबकि (आइन्दाह) उन्होंने ने परहेज़ किया और ईमान लाए और नेक अमल किए, फिर वह डरे और ईमान लाए, फिर वह डरे और उन्होंने ने नेकोकारी की, और अल्लाह नेकोकारों को दोस्त रखता है। (93)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तुम्हें ज़रूर आजमाएगा किसी क़द्र (उस) शिकार से जिस तक तुम्हारे हाथ और तुम्हारे नेज़े पहुँचते हैं ताकि अल्लाह मालूम कर ले कौन उस से बिन देखे डरता है, सो इस के बाद जिस ने ज़ियादती की उस के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (94)

ऐ ईमान वालो! न मारो शिकार जब कि तुम हालते एहराम में हो, और तुम में से जो उस को जान बूझ कर मारे तो जो वह मारे उस के बराबर बदला है मवेशियों में से, जिस का तुम में से दो मोतबर फ़ैसला करें, खाने क़ब़ा नियाज़ पहुँचाए या (इस का) कफ़ारा है खाना चन्द मोहताजों का, या उस के बराबर रोज़े रखना ताकि वह अपने किए की सज़ा चखे, अल्लाह ने माफ़ किया जो पहले हो चुका और जो फिर करे तो अल्लाह उस से बदला लेगा, और अल्लाह ग़ालिब बदला लेने वाला है। (95)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنْصَابُ وَالْأَزْلَامُ									
और पांसे	और बुत	और जुआ	इस के सिवा नहीं कि शराब	ईमान वालो	ऐ				
رِجْسٍ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ فَاجْتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٩٠﴾ إِنَّمَا									
इस के सिवा नहीं	90	फ़लाह पाओ	ताकि तुम	सो उन से बचो	शैतान	काम	से	नापाक	
يُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُوقِعَ بَيْنَكُمْ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ فِي الْخَمْرِ									
शराब	में-से	और बैर	दुश्मनी	तुम्हारे दरमियान	कि डाले	शैतान	चाहता है		
وَالْمَيْسِرِ وَيُصَدِّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَعَنِ الصَّلَاةِ فَهَلْ أَنْتُمْ مُنتَهُونَ ﴿٩١﴾									
91	बाज़ आओगे	तुम	पस क्या	और नमाज़ से	अल्लाह की याद	से	और तुम्हें रोके	और जुआ	
وَاطِيعُوا اللَّهَ وَاطِيعُوا الرَّسُولَ وَاحْذَرُوا فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَأَعْلَمُوا إِنَّمَا									
सिर्फ़	तो जान लो	तुम फिर जाओगे	फिर अगर	और बचते रहो	रसूल	और इताअत करो	अल्लाह	और इताअत करो	
عَلَى رَسُولِنَا الْبَلِّغِ الْمُبِينِ ﴿٩٢﴾ لَيْسَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ									
और उन्होंने ने अमल किए नेक	जो लोग ईमान लाए	पर	नहीं	92	खोल कर	पहुँचा देना	हमारा रसूल (स)	पर (ज़िम्मा)	
جُنَاحٌ فِيمَا طَعُمُوا إِذَا مَا اتَّقَوْا وَآمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ									
और उन्होंने ने अमल किए नेक	और वह ईमान लाए	उन्होंने ने परहेज़ किया	जब	वह खा चुके	में-जो	कोई गुनाह			
ثُمَّ اتَّقَوْا وَآمَنُوا ثُمَّ اتَّقَوْا وَأَحْسَنُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿٩٣﴾									
93	नेकोकार (जमा)	दोस्त रखता है	और अल्लाह	और उन्होंने ने नेकोकारी की	वह डरे	फिर	और ईमान लाए	फिर वह डरे	
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِيَبْلُوتَكُمْ اللَّهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالَهُ أَيْدِيكُمْ									
तुम्हारे हाथ	उस तक पहुँचते हैं	शिकार	से	कुछ (किसी क़द्र)	ज़रूर तुम्हें आजमाएगा अल्लाह	ईमान वालो	ऐ		
وَرِمَاحِكُمْ لِيَعْلَمَ اللَّهُ مَن يَخَافُهُ بِالْغَيْبِ فَمَنِ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَلِكَ									
इस के बाद	ज़ियादती की	सो जो-जिस	बिन देखे	उस से डरता है	कौन	ताकि अल्लाह मालूम करले	और तुम्हारे नेज़े		
فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٩٤﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَأَنْتُمْ									
और जब कि तुम	शिकार	न मारो	ईमान वालो	ऐ	94	दर्दनाक	अज़ाब	सो उसके लिए	
حُرْمٌ وَمَنْ قَتَلَهُ مِنْكُمْ مُتَعَمِّدًا فَجَزَاءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعْمِ									
मवेशी से	जो वह मारे	बराबर	तो बदला	जान बूझ कर	तुम में से	उस को मारे	और जो	हालते एहराम में	
يَحْكُمُ بِهِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ هَدِيًّا بَلِغَ الْكَعْبَةِ أَوْ كَفَّارَةً طَعَامٌ									
खाना	या कफ़ारा	क़ब़ा	पहुँचाए	नियाज़	तुम से	दो मोतबर	उस का	फ़ैसला करें	
مَسْكِينٍ أَوْ عَدْلٌ ذَلِكِ صِيَامًا لِّيَذُوقَ وَبَالَ أَمْرِهُ عَفَا اللَّهُ عَمَّا سَلَفُ									
पहले हो चुका	उस से जो	अल्लाह ने माफ़ किया	अपने काम (किए) की सज़ा	ताकि चखे	रोज़े	उस	या बराबर	मोहताज (जमा)	
وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللَّهُ مِنْهُ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٩٥﴾									
95	बदला लेने वाला	ग़ालिब	और अल्लाह	उस से	तो अल्लाह बदला लेगा	फिर करे	और जो		

۱۲  
ع  
۲

أَحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهُ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ وَحَرَّمَ							
और हARAM किया गया	और मूसाफ़िरोँ के लिए	तुम्हारे लिए	फाइदा	और उस का खाना	दर्या का शिकार	तुम्हारे लिए	हलाल किया गया
عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرْمًا وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ							
उस की तरफ	वह जो	अल्लाह	और डरो	हालते एहराम में	जब तक तुम हो	खुशकी का शिकार	तुम पर
تُحْشَرُونَ ﴿٩٦﴾ جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيَمًا لِلنَّاسِ							
लोगों के लिए	क़ियाम का वाइस	एहतिराम वाला घर	क़़बा	अल्लाह	बनाया	96	तुम जमा किए जाओगे
وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَائِدَ ذَلِكَ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ							
कि अल्लाह	ताकि तुम जान लो	यह	और पट्टे पड़े हुए जानवर	और कुर्वानी	और हुर्मत वाले महीने		
يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ							
चीज़	हर	और यह कि अल्लाह	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	उसे मालूम है
عَلِيمٌ ﴿٩٧﴾ اَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ وَأَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ							
बख़शने वाला	और यह कि अल्लाह	अज़ाब	सख़्त	अल्लाह	कि	जान लो	97
رَحِيمٌ ﴿٩٨﴾ مَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلْغُ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ							
जो तुम ज़ाहिर करते हो	जानता है	और अल्लाह	मगर पहुँचा देना	रसूल (स) पर-रसूल के ज़िम्मे	नहीं	98	मेहरबान
وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٩٩﴾ قُلْ لَا يَسْتَوِي الْخَبِيثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ							
खाह	और पाक	नापाक	बराबर नहीं	कह दीजिए	99	तुम छुपाते हो	और जो
اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيثِ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ							
ताकि तुम	ऐ अक़ल वालो	सो डरो अल्लाह से	नापाक	कसूरत	तुम्हें अच्छी लगे		
تُفْلِحُونَ ﴿١٠٠﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْأَلُوا عَن أَشْيَاءَ إِن تُبَدَ							
जो ज़ाहिर की जाएँ	चीज़ें	से-मुतअल्लिक	न पूछो	ईमान वाले	ऐ	100	फ़लाह पाओ
لَكُمْ تَسْأَلُكُمْ وَإِن تَسْأَلُوا عَنْهَا حِينَ يُنَزَّلُ الْقُرْآنُ تُبَدَ لَكُمْ							
ज़ाहिर कर दी जाएंगी तुम्हारे लिए	नाज़िल किया जा रहा है कुरआन	जब	उनके मुतअल्लिक	तुम पूछोगे	और अगर	तुम्हें बुरी लगे	तुम्हारे लिए
عَفَا اللَّهُ عَنْهَا وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٠١﴾ قَدْ سَأَلَهَا قَوْمٌ							
एक कौम	उस के मुतअल्लिक पूछा	101	बुर्दवार	बख़शने वाला	और अल्लाह	उस से	अल्लाह ने दरगुज़र की
مِّن قَبْلِكُمْ ثُمَّ أَصْبَحُوا بِهَا كُفْرِينَ ﴿١٠٢﴾ مَا جَعَلَ اللَّهُ مِنْ بَحِيرَةٍ							
बहीरा	अल्लाह	नहीं बनाया	102	इन्कार करने वाले (मुन्किर)	उस से	वह हो गए	फिर तुम से कब्ल
وَلَا سَابِئَةٍ وَلَا وَصِيلَةٍ وَلَا حَامٍ وَلَكِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا							
जिन लोगों ने कुफ़ किया	और लेकिन	और न हाम	और न वसीला	और न साइबा			
يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَأَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٠٣﴾							
103	नहीं रखते अक़ल	और उन के अक़सर	झूटे	अल्लाह पर	वह बुहतान बान्धते हैं		

तुम्हारे लिए हलाल किया गया दर्या का शिकार और उस का खाना तुम्हारे फाइदे के लिए है और मूसाफ़िरोँ के लिए, और तुम पर खुशकी (जंगल) का शिकार हराम किया गया जब तक तुम हालते एहराम में हो, और अल्लाह से डरो जिस की तरफ़ तुम जमा किए जाओगे। (96)

अल्लाह ने बनाया क़़बा एहतिराम वाला घर, लोगों के लिए क़ियाम का वाइस, और हुर्मत वाले महीने और कुर्वानी और गले में पट्टा (कुर्वानी की अ़लामत) पड़े हुए जानवर। यह इस लिए है ताकि तुम जान लो कि अल्लाह को मालूम है जो कुछ आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और यह कि अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है। (97)

जान लो कि अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है और यह कि अल्लाह बख़शने वाला मेहरबान है। (98)

रसूल (स) के ज़िम्मे सिर्फ़ (पैग़ाम) पहुँचा देना है, और अल्लाह जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। (99)

कह दीजिए! बराबर नहीं नापाक और पाक, खाह तुम्हें नापाक की कसूरत अच्छी लगे, सो ऐ अक़ल वालो! अल्लाह से डरो ताकि तुम फ़लाह (कामयाबी और नजात) पाओ। (100)

ऐ ईमान वालो! न पूछो उन चीज़ों के मुतअल्लिक जो तुम्हारे लिए ज़ाहिर की जाएँ तो तुम्हें बुरी लगे, और अगर उन के मुतअल्लिक (ऐसे वक़्त) पूछोगे जब कुरआन नाज़िल किया जा रहा है तो तुम्हारे लिए ज़ाहिर कर दी जाएंगी, अल्लाह ने उस से दरगुज़र की, और अल्लाह बख़शने वाला बुर्दवार है। (101)

इसी क़िस्म के सवालात तुम से कब्ल एक कौम ने पूछा, फिर वह उस से मुन्किर हो गए। (102)

अल्लाह ने नहीं बनाया बहीरा और न साइबा, और न वसीला और न हाम, लेकिन जिन लोगों ने कुफ़ किया वह अल्लाह पर झूट बान्धते हैं, और उन के अक़सर अक़ल नहीं रखते। (103)

और जब उन से कहा जाए आओ उस की तरफ जो अल्लाह ने नाज़िल किया और रसूल (स) की तरफ (तो) वह कहते हैं हमारे लिए वह काफी है जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया, तो क्या (उस सूरत में भी कि) उन के बाप दादा कुछ न जानते हों और न हिदायत याफ़ता हों। (104)

ऐ ईमान वालो! तुम पर अपनी जानों (की फ़िक्र लाज़िम) है, जब तुम हिदायत पर हो तो जो गुमराह हुआ तुम्हें नुक़सान न पहुँचा सकेगा। तुम सब को अल्लाह की तरफ लौटना है, फिर वह तुम्हें जतला देगा जो तुम करते थे। (105)

ऐ ईमान वालो! तुम्हारे दरमियान गवाही (का तरीका यह है) कि जब तुम में से किसी को मौत आए वसीयत के वक़्त तुम में से दो मोतबर शख्स हों या तुम्हारे सिवा दो और, अगर तुम ज़मीन में सफ़र कर रहे हो, फिर तुम्हें मौत की मुसीबत पहुँचे, उन दोनों को रोक लो नमाज़ के बाद, अगर तुम्हें शक हो तो दोनों अल्लाह की क़सम खाएँ कि हम उस के इवज़ कोई कीमत मोल नहीं लेते खाह रिशतेदार हों, और हम अल्लाह की गवाही नहीं छुपाते (वरना) हम बेशक गुनाहगारों में से हैं। (106)

फिर अगर उस की ख़बर हो जाए कि वह दोनों गुनाह के सज़ावार हुए हैं तो उन की जगह उन में से दो और खड़े हों जिन का हक़ मारना चाहा जो सब से ज़ियादा (मय्यत के) क़रीब हों, फिर वह अल्लाह की क़सम खाएँ कि हमारी गवाही उन दोनों की गवाही से ज़ियादा सही है और हम ने ज़ियादती नहीं की (वरना) उस सूरत में हम बेशक ज़ालिमों में से होंगे। (107)

यह क़रीब तर है कि वह गवाही उस के सही तरीके पर अदा करें या वह डरें कि (हमारी) क़सम उन की क़सम के बाद रद् कर दी जाएगी, और अल्लाह से डरो और सुनो और अल्लाह नहीं हिदायत देता नाफ़रमान क़ौम को। (108)

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَإِلَىٰ الرَّسُولِ قَالُوا										
वह कहते हैं	रसूल	और तरफ	अल्लाह ने नाज़िल किया	जो तरफ	आओ तुम	उन से	कहा जाए	और जब		
حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا أَوْلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ										
जानते	न	उन के बाप दादा	क्या खाह हों	अपने बाप दादा	उस पर	जो हम ने पाया	हमारे लिए काफी			
شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ﴿١٠٤﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسُكُمْ										
अपनी जाने	तुम पर	ईमान वाले	ऐ	104	और न हिदायत याफ़ता हों	कुछ				
لَا يَضُرُّكُمْ مَن ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ إِلَىٰ اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا فَبِئْسَ لَكُم										
फिर वह तुम्हें जतला देगा	सब	तुम्हें लौटना है	अल्लाह की तरफ	हिदायत पर हो	जब गुमराह हुआ	जो न नुक़सान पहुँचाएगा				
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٠٥﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةٌ بَيْنَكُمْ إِذَا										
जब तुम्हारे दरमियान	गवाही	ईमान वाले	ऐ	105	तुम करते थे	जो				
حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِينَ الْوَصِيَّةِ اثْنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ										
तुम से	इन्साफ़ वाले (मोतबर)	दो	वसीयत	वक़्त	मौत	तुम में से किसी को	आए			
أَوْ آخَرٍ مِّنْ غَيْرِكُمْ إِنْ أَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَأَصَابَتْكُمْ										
फिर तुम्हें पहुँचे	ज़मीन में	सफ़र कर रहे हो	तुम	अगर	तुम्हारे सिवा	से और दो	या			
مُصِيبَةُ الْمَوْتِ تَحْسِبُونَهُمَا مِنْ بَعْدِ الصَّلَاةِ فَيُقْسِمْنَ بِاللَّهِ										
अल्लाह की	दोनों क़सम खाएँ	नमाज़	बाद	उन दोनों को रोक लो	मौत	मुसीबत				
إِنْ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِي بِهِ ثَمَنًا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ وَلَا نَكْتُمُ										
और हम नहीं छुपाते	रिशतेदार	खाह हों	कोई कीमत	इस के इवज़	हम मोल नहीं लेते	तुम्हें शक हो	अगर			
شَهَادَةَ اللَّهِ إِنَّا إِذَا لَمِنَ الْأَثِمِينَ ﴿١٠٦﴾ فَإِنْ عُثِرَ عَلَىٰ أَنَّهُمَا اسْتَحَقَّا										
दोनों सज़ावार हुए	कि वह दोनों	उस पर	ख़बर हो जाए	फिर अगर	106	गुनाहगारों	से	उस वक़्त	बेशक हम अल्लाह	गवाही
إِثْمًا فَاخْرَجْنِ يَقُومِنِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِينَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ										
उन पर	मुसतहिक् (जिन का हक़ मारना चाहा)	वह लोग	से	उन की जगह	खड़े हों	तो दो और	गुनाह			
الْأُولَيْنِ فَيُقْسِمْنَ بِاللَّهِ لَشَهَادَتُنَا أَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا										
उन दोनों की गवाही	से	ज़ियादा सही	कि हमारी गवाही	अल्लाह की	फिर वह क़सम खाएँ	सब से ज़ियादा क़रीब				
وَمَا اعْتَدَيْنَا إِنَّا إِذَا لَمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٧﴾ ذَلِكَ أَدَّتْ أَنْ										
कि	ज़ियादा क़रीब	यह	107	ज़ालिम (जमा)	अलबल्ला-से	उस सूरत में	बेशक हम	हम ने ज़ियादती की	और नहीं	
يَأْتُوا بِالشَّهَادَةِ عَلَىٰ وَجْهٍ أَوْ يَخَافُونَ أَنْ تُرَدَّ أَيْمَانٌ بَعْدَ أَيْمَانِهِمْ										
उन की क़सम	वाद	क़सम	कि रद् कर दीजाएगी	वह डरें	या	उस का रूख़ (सही तरीका)	पर	वह लाएँ (अदा करें)	गवाही	
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَسْمَعُوا وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿١٠٨﴾										
108	नाफ़रमान (जमा)	क़ौम	नहीं हिदायत देता	और अल्लाह	और सुनो	और डरो अल्लाह से				



يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَا أُجِبْتُمْ قَالُوا لَا عِلْمَ									
नहीं खबर	वह कहेंगे	तुम्हें जवाब मिला	क्या	फिर कहेगा	रसूल (जमा)	जमा करेगा अल्लाह	दिन		
لَنَا إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ (109) إِذْ قَالَ اللَّهُ يَعْيسَى ابْنَ مَرْيَمَ									
इवने मरयम (अ)	ऐ ईसा (अ)	अल्लाह ने कहा	जब	109	छुपी बातें	जानने वाला	तू	वेशक तू	हमें
اذْكُرْ نِعْمَتِي عَلَيْكَ وَعَلَىٰ وَالِدَتِكَ إِذْ أَيَّدتْكَ بِرُوحِ الْقُدُسِ									
रूहे पाक से	जब मैं ने तेरी मदद की	तेरी (अपनी) वालिदा	और पर	तुझ (आप) पर	मेरी नेमत	याद कर			
تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَإِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتَابَ									
किताब	तुझे सिखाई	और जब	और बड़ी उमर	पन्धोड़े में	लोग	तू बातें करता था			
وَالْحِكْمَةَ وَالسُّورَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَإِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّينِ									
मिट्टी	से	तू बनाता था	और जब	और इन्जील	और तौरात	और हिक्मत			
كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ بِأَذْنِي فَتَنْفُخُ فِيهَا فَتَكُونُ طَيْرًا بِأَذْنِي									
मेरे हुक्म से	उड़ने वाला	तो वह हो जाता	फिर फूंक मारता था उस में	मेरे हुक्म से	परिन्दे की सूरत				
وَتُبْرِئُ الْأَكْمَةَ وَالْأَبْرَصَ بِأَذْنِي وَإِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ بِأَذْنِي									
मेरे हुक्म से	मुर्दा	निकाल खड़ा करता	और जब	मेरे हुक्म से	और कोढ़ी	मादरज़ाद अन्धा	और शिफा देता		
وَإِذْ كَفَفْتُ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَنْكَ إِذْ جِئْتَهُم بِالْبَيِّنَاتِ									
निशानियों के साथ	जब तू उन के पास आया	तुझ से	बनी इस्राईल	मैं ने रोका	और जब				
فَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ إِنْ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ (110)									
110	खुला	जादू	मगर (सिर्फ)	यह	नहीं	उन से	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	तो कहा	
وَإِذْ أَوْحَيْتُ إِلَى الْحَوَارِيِّينَ أَنْ آمِنُوا بِي وَبِرَسُولِي قَالُوا									
उन्होंने ने कहा	और मेरे रसूल (अ) पर	ईमान लाओ मुझ पर	कि	हवारी (जमा)	तरफ़	मैं ने दिल में डाल दिया	और जब		
أَمَّا وَاشْهَدْ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ (111) إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ									
हवारी (जमा)	जब कहा	111	फरमांवरदार	कि वेशक हम	और आप गवाह रहें	हम ईमान लाए			
يَعْيسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ رَبُّكَ أَنْ يُنَزِّلَ									
उतारे	कि वह	तुम्हारा रब	कर सकता है	क्या	इवने मरयम (अ)	ऐ ईसा (अ)			
عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ قَالَ اتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ كُنْتُمْ									
तुम हो	अगर	अल्लाह से डरो	उस ने कहा	आस्मान	से	खान	हम पर		
مُؤْمِنِينَ (112) قَالُوا نُرِيدُ أَنْ نَأْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوبُنَا									
हमारे दिल	और मुत्मईन हों	उस से	हम खाएं	कि	हम चाहते हैं	उन्होंने ने कहा	112	मोमिन (जमा)	
وَنَعْلَمَ أَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُونُ عَلَيْهَا مِنَ الشَّاهِدِينَ (113)									
113	गवाह (जमा)	से	उस पर	और हम रहें	तुम ने हम से सच कहा	कि	और हम जान लें		

अल्लाह जिस दिन रसूलों को जमा करेगा, फिर कहेगा तुम्हें क्या जवाब मिला था? वह कहेंगे हमें खबर नहीं, वेशक तू छुपी बातों को जानने वाला है। (109)

जब अल्लाह ने कहा ऐ ईसा (अ) इवने मरयम (अ)! मेरी नेमत अपने ऊपर और अपनी वालिदा पर याद करो जब मैं ने रूहे पाक (जिब्राईल) से तुम्हारी मदद की, तुम लोगों से पन्धोड़े में और बुढ़ापे में बातें करते थे, और जब मैं ने तुम्हें सिखाई किताब और हिक्मत और तौरात और इन्जील, और जब तुम मेरे हुक्म से मिट्टी से परिन्दे की सूरत बनाते थे, फिर उस में फूंक मारते थे तो वह हो जाता मेरे हुक्म से उड़ने वाला, और तुम मादरज़ाद अन्धे और कोढ़ी को मेरे हुक्म से शिफा देते थे, और जब तुम मुर्दे को मेरे हुक्म से निकाल खड़ा करते थे, और जब मैं ने बनी इस्राईल को तुम से रोका जब तुम खुली निशानियों के साथ उन के पास आए तो काफ़िरों ने उन में से कहा यह सिर्फ़ खुला जादू है। (110)

और जब मैं ने हवारियों के दिल में डाल दिया कि मुझ पर और मेरे रसूल (अ) पर ईमान लाओ, उन्होंने ने कहा हम ईमान लाए और आप गवाह रहें वेशक हम फरमांवरदार हैं। (111)

जब हवारियों ने कहा ऐ ईसा इवने मरयम (अ)! क्या तेरा रब यह कर सकता है कि हम पर आस्मान से खान उतारे? उस ने कहा अल्लाह से डरो अगर तुम मोमिन हो। (112)

उन्होंने ने कहा हम चाहते हैं कि उस में से खाएं और हमारे दिल मुत्मईन हों और हम जान लें कि तुम ने हम से सच कहा और हम उस पर गवाह रहें। (113)

ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) ने कहा ऐ अल्लाह! हमारे खब! हम पर आस्मान से खान उतार कि हमारे पहलों और पिछलों के लिए ईद हो और तेरी तरफ से निशानी हो, और हमें रोज़ी दे, तू सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है। (114)

अल्लाह ने कहा बेशक मैं वह तुम पर उतारूंगा। फिर उस के बाद तुम में से जो नाशुक्री करेगा तो मैं उस को ऐसा अज़ाब दूंगा जो न अज़ाब दूंगा जहान वालों में से किसी को। (115)

और जब अल्लाह ने कहा ऐ ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ)! क्या तू ने लोगों से कहा था कि मुझे और मेरी माँ को अल्लाह के सिवा दो माबूद ठहरा लो, उस ने कहा तू पाक है, मेरे लिए (रवा) नहीं कि मैं (ऐसी बात) कहूँ जिस का मुझे हक नहीं। अगर मैं ने यह कहा होता तो तुझे ज़रूर उस का इल्म होता, तू जानता है जो मेरे दिल में है और मैं नहीं जानता जो तेरे दिल में है। बेशक तू छुपी बातों को जानने वाला है। (116)

मैं ने उन्हें नहीं कहा मगर सिर्फ़ वह जिस का तू ने मुझे हुक्म दिया कि तुम अल्लाह की इबादत करो जो मेरा और तुम्हारा खब है, और मैं जब तक उन में रहा उन पर खबरदार (बाख़बर) था। फिर जब तू ने मुझे उठा लिया तो उन पर तू निगरान था और तू हर शै से बाख़बर है। (117)

अगर तू उन्हें अज़ाब दे तो बेशक वह तेरे बन्दे हैं, और अगर तू बख़श दे उन को तो बेशक तू ग़ालिब हिक्मत वाला है। (118)

अल्लाह ने फ़रमाया यह दिन है कि सच्चों को नफ़ा देगा उन का सच, उन के लिए बागात हैं जिन के नीचे नेहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, अल्लाह राज़ी हुआ उन से और वह राज़ी हुए उस से, यह बड़ी कामयाबी है। (119)

अल्लाह के लिए है बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की और जो कुछ उन के दरमियान है, और वह हर शै पर कादिर है। (120)

قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا أَنْزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ

आस्मान	से	खान	हम पर	उतार	हमारे खब	ऐ अल्लाह	इब्ने मरयम (अ)	ईसा (अ)	कहा
--------	----	-----	-------	------	----------	----------	----------------	---------	-----

تَكُونُ لَنَا عِيدًا لِأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً مِّنكَ ۖ وَارزُقْنَا وَأَنْتَ

और तू	और हमें रोज़ी दे	तुझ से	और निशानी	और हमारे पिछले	हमारे पहलों के लिए	ईद	हमारे लिए	हो
-------	------------------	--------	-----------	----------------	--------------------	----	-----------	----

خَيْرُ الرّٰزِقِينَ ﴿١١٤﴾ قَالَ اللَّهُ إِنِّي مَنزِلُهَا عَلَيْكُمْ ۖ فَمَنْ يَكْفُرْ بَعْدُ

बाद	नाशुक्री करेगा	फिर जो	तुम पर	वह उतारूंगा	बेशक मैं	कहा अल्लाह ने	114	रोज़ी देने वाला	बेहतर
-----	----------------	--------	--------	-------------	----------	---------------	-----	-----------------	-------

مِّنكُمْ فَإِنِّي أُعَذِّبُهُ عَذَابًا لَّا أُعَذِّبُهُ أَحَدًا مِّنَ الْعَالَمِينَ ﴿١١٥﴾

115	जहान वाले	से	किसी को	अज़ाब दूंगा	न	उसे अज़ाब दूंगा ऐसा अज़ाब	तो मैं	तुम से
-----	-----------	----	---------	-------------	---	---------------------------	--------	--------

وَإِذْ قَالَ اللَّهُ لِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ءَأَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي

मुझे ठहरा लो	लोगों से	तू ने कहा	क्या तू	इब्ने मरयम (अ)	ऐ ईसा (अ)	अल्लाह ने कहा	और जब
--------------	----------	-----------	---------	----------------	-----------	---------------	-------

وَأُمِّي إِلَهَيْنِ مِن دُونِ اللَّهِ ۗ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُونُ لِي أَن أَقُولَ

मैं कहूँ	कि	मेरे लिए	है	नहीं	तू पाक है	उस ने कहा	अल्लाह के सिवा	से	दो माबूद	और मेरी माँ
----------	----	----------	----	------	-----------	-----------	----------------	----	----------	-------------

مَا لَيْسَ لِي بِحَقِّ ۖ إِن كُنْتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ ۖ تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي

मेरा दिल	में	जो	तू जानता है	तो तुझे ज़रूर उस का इल्म होता	मैं ने यह कहा होता	अगर	हक	मेरे लिए	नहीं
----------	-----	----	-------------	-------------------------------	--------------------	-----	----	----------	------

وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ ۗ إِنَّكَ أَنْتَ عَلٰمُ الْغُيُوبِ ﴿١١٦﴾ مَا قُلْتُ لَهُمْ

उन्हें	मैं ने नहीं कहा	116	छुपी बातें	जानने वाला	तू	बेशक तू	तेरे दिल में	जो	और मैं नहीं जानता
--------	-----------------	-----	------------	------------	----	---------	--------------	----	-------------------

إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ ۖ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۖ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ

उन पर	और मैं था	और तुम्हारा खब	मेरा खब	तुम अल्लाह की इबादत करो	कि	उस का	जो तू ने मुझे हुक्म दिया	मगर
-------	-----------	----------------	---------	-------------------------	----	-------	--------------------------	-----

شَهِيدًا ۗ مَا دُمْتُ فِيهِمْ ۖ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتُ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ ۗ

उन पर	निगरान	तू	तो था	तू ने मुझे उठा लिया	फिर जब	उन में	जब तक मैं रहा	खबरदार
-------	--------	----	-------	---------------------	--------	--------	---------------	--------

وَأَنْتَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١١٧﴾ إِنَّ تُعَذِّبُهُمْ فَإِنَّهُمْ عَبَادُكَ ۗ وَإِن

और अगर	तेरे बन्दे	तो बेशक वह	तू उन्हें अज़ाब दे	अगर	117	बाख़बर	हर शै	पर-से	और तू
--------	------------	------------	--------------------	-----	-----	--------	-------	-------	-------

تَغْفِرَ لَهُمْ فإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١١٨﴾ قَالَ اللَّهُ هٰذَا يَوْمٌ يَنْفَعُ

नफ़ा देगा	दिन	यह	अल्लाह ने फ़रमाया	118	हिक्मत वाला	ग़ालिब	तू	तो बेशक तू	उन को	तू बख़शदे
-----------	-----	----	-------------------	-----	-------------	--------	----	------------	-------	-----------

الصّٰدِقِينَ صِدْقُهُمْ لَهُمْ جَنَّٰتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خٰلِدِينَ

हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	बहती है	बागात	उन के लिए	उन का सच	सच्चे
--------------	-------	------------	---------	-------	-----------	----------	-------

فِيهَا أَبَدًا ۗ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۗ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١٩﴾

119	बड़ी	कामयाबी	यह	उस से	और वह राज़ी हुए	उन से	अल्लाह राज़ी हुआ	हमेशा	उन में
-----	------	---------	----	-------	-----------------	-------	------------------	-------	--------

لِلَّهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ ۗ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٢٠﴾

120	कूदरत वाला- कादिर	हर शै	पर	और वह	उन के दरमियान	और जो	और ज़मीन	बादशाहत आस्मानो की	अल्लाह के लिए
-----	-------------------	-------	----	-------	---------------	-------	----------	--------------------	---------------

آيَاتُهَا ١٦٥ ﴿٦﴾ سُورَةُ الْأَنْعَامِ ﴿٦﴾ رُكُوعَاتُهَا ٢٠									
रुकुआत 20			(6) सूरतुल अनआम मवेशी				आयात 165		
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمَاتِ									
अन्धेरों	और बनाया	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	पैदा किया	वह जिस ने	तमाम तारीफें अल्लाह के लिए			
وَالنُّورِ ثُمَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِي									
जिस ने	वह	1	बराबर करते हैं	अपने रब के साथ	कुफ़ किया (काफ़िर)	जिन्होंने ने	फिर	और रौशनी	
خَلَقَكُمْ مِنْ طِينٍ ثُمَّ قَضَىٰ أَجَلًا وَأَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهُ ثُمَّ أَنْتُمْ									
तुम	फिर	उस के हों	मुक़र्रर	और एक वक़्त	एक वक़्त	मुक़र्रर किया	फिर	मिट्टी	से तुम्हें पैदा किया
تَمْتَرُونَ ﴿٢﴾ وَهُوَ اللَّهُ فِي السَّمَوَاتِ وَفِي الْأَرْضِ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ									
तुम्हारा वातिन	वह जानता है	ज़मीन	और में	आस्मान (जमा)	में	अल्लाह	और वह	2	शक करते हो
وَجَهْرُكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُونَ ﴿٣﴾ وَمَا تَأْتِيهِمْ مِنْ آيَةٍ مِنْ آيَاتِ									
निशानियां	से	निशानी	से-कोई	और उन के पास नहीं आई	3	जो तुम कमाते हो	और जानता है	और तुम्हारा ज़ाहिर	
رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٤﴾ فَقَدْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ									
उन के पास आया	जब	हक़ को	पस बेशक उन्होंने ने झुटलाया	4	मुँह फेरने वाले	उस से	होते हैं वह	मगर	उन का रब
فَسَوْفَ يَأْتِيهِمْ أَنْبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٥﴾ أَلَمْ يَرَوْا كَمْ									
कितनी	क्या उन्होंने ने नहीं देखा	5	मज़ाक़ उड़ाते	उस का	जो वह थे	ख़बर (हकीकत)	उन के पास आजाएगी	सो जलद	
أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قَرْنٍ مَكَّنَّهِمْ فِي الْأَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَكُمْ									
तुम्हें	नहीं जमाया	जो	ज़मीन (मुल्क) में	हम ने उन्हें जमा दिया था	उम्मतें	से	उन से क़व्ल	से	हम ने हलाक कर दी
وَأَرْسَلْنَا السَّمَاءَ عَلَيْهِمْ مِدْرَارًا وَجَعَلْنَا الْأَنْهَارَ تَجْرِي مِنْ									
से	बहती है	नहरें	और हम ने बनाई	मूसलाधार	उन पर	बादल	और हम ने भेजा		
تَحْتِهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَأَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ﴿٦﴾									
6	दूसरी	उम्मतें	उन के बाद	से	और हम ने खड़ी की	उन के गुनाहों के सबब	फिर हम ने उन्हें हलाक किया	उन के नीचे	
وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتَابًا فِي قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوهُ بِأَيْدِيهِمْ لَقَالُوا									
अलबत्ता कहेंगे	अपने हाथों से	फिर उसे छू लें	कागज़	में	कुछ लिखा हुआ	तुम पर	और अगर हम उतारें		
الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٧﴾ وَقَالُوا لَوْلَا أَنْزَلَ									
क्यों नहीं उतारा गया	और कहते हैं	7	खुला	जादू	मगर	नहीं यह	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)		
عَلَيْهِ مَلَكٌ وَلَوْ أَنْزَلْنَا مَلَكًا لَقُضِيَ الْأَمْرُ ثُمَّ لَا يُنظَرُونَ ﴿٨﴾									
8	उन्हें मोहलत न दी जाती	फिर	काम	तो तमाम हो गया होता	फ़रिश्ता	हम उतारते	और अगर	फ़रिश्ता	उस पर

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जिस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया और अन्धेरों और रौशनी को बनाया, फिर काफ़िर अपने रब के साथ बराबर करते हैं (औरों को बराबर ठहराते हैं)। (1)

वह जिस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर ज़िन्दगी की मुददत मुक़र्रर कि, और उस के हों एक वक़्त (क़ियामत का) मुक़र्रर है, फिर तुम शक करते हो। (2)

और वही है अल्लाह आस्मानों में और ज़मीन में, वह तुम्हारा वातिन और तुम्हारा ज़ाहिर जानता है और जानता है जो तुम कमाते हो (करते हो)। (3)

और उन के पास नहीं आई उन के रब की निशानियों में से कोई निशानी मगर वह उस से मुँह फेर लेते हैं। (4)

पस बेशक उन्होंने ने हक़ को झुटलाया जब उन के पास आया। सो जलद ही उस की हकीकत उन के सामने आजाएगी जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (5)

क्या उन्होंने ने नहीं देखा? हम ने उन से क़व्ल कितनी उम्मतें हलाक की? हम ने उन्हें मुल्क में जमाया था (इक़्तिदार दिया था) जितना तुम्हें नहीं जमाया (इक़्तिदार दिया) और हम ने उन पर मूसलाधार (बरस्ता) बादल भेजा, और हम ने नहरें बनाई जो उन के नीचे बहती थीं, फिर हम ने उन के गुनाहों के सबब उन्हें हलाक किया और उन के बाद हम ने दूसरी उम्मतें खड़ी की (बदल दी)। (6)

और अगर हम उतारें तुम पर कागज़ में लिखा हुआ, फिर वह उसे अपने हाथों से छू (भी) लें। अलबत्ता काफ़िर कहेंगे यह नहीं है मगर (सिर्फ़) खुला जादू। (7)

और कहते हैं उस पर फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा गया? और अगर हम फ़रिश्ता उतारते तो काम तमाम हो गया होता, फिर उन्हें मोहलत न दी जाती। (8)

और अगर हम उसे फ़रिश्ता बनाते तो हम उसे आदमी (ही) बनाते, और हम उन पर शुबा डालते (जिस में वह अब) पड़ रहे हैं। (9)

और अल्वत्ता आप (स) से पहले रसूलों के साथ हँसी की गई, तो घेर लिया उन में से हँसी करने वालों को (उस चीज़ ने) जिस पर वह हँसी करते थे। (10)

आप (स) कह दें मुल्क में सैर करो (चल फिर कर देखो) फिर देखो झुटलाने वालों का अन्जाम कैसा हुआ? (11)

आप (स) पूछें किस के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में है? कह दें (सब) अल्लाह के लिए है, अल्लाह ने अपने ऊपर रहमत लिख ली है (अपने ज़िम्में ले ली है), कियामत के दिन तुम्हें ज़रूर जमा करेगा जिस में कोई शक नहीं, जिन लोगों ने अपने आप को ख़सारे में डाला तो वही ईमान नहीं लाएंगे। (12)

और उस के लिए है जो बस्ता है रात में और दिन में, और वह सुनने वाला जानने वाला है। (13)

आप (स) कह दें क्या मैं अल्लाह के सिवाए (किसी और को) कारसाज़ बनाऊँ? (जो) आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला है, वह (सब को) खिलता है और वह खुद नहीं खाता। आप (स) कह दें वेशक मुझे हुकम दिया गया है कि सब से पहला हो जाऊँ जिस ने हुकम माना, और तुम हरगिज़ शिर्क करने वालों से न होना। (14)

आप (स) कह दें वेशक अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूँ तो बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ। (15)

उस दिन जिस से (अज़ाब) फेर दिया जाए, तहकीक़ उस पर अल्लाह ने रहम किया और यह खुली कामयाबी है। (16)

और अगर अल्लाह तुम्हें सख़्ती पहुँचाए तो कोई दूर करने वाला नहीं उस को उस के सिवा, और अगर वह कोई भलाई पहुँचाए तुम्हें तो वह हर शै पर कादिर है। (17)

और वह अपने बन्दों पर ग़ालिब है, और वह हिक्मत वाला (सब की) ख़बर रखने वाला है। (18)

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ مَلَكًا لَجَعَلْنَاهُ رَجُلًا وَلَلَبَسْنَا عَلَيْهِم

उन पर	और हम शुबा डालते	आदमी	तो हम उसे बनाते	फ़रिश्ता	हम उसे बनाते	और अगर
-------	------------------	------	-----------------	----------	--------------	--------

مَا يَلْبَسُونَ ٩ وَلَقَدْ اسْتَهْزَيْ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَحَاقَ

तो घेर लिया	आप (स) से पहले	से	रसूलों के साथ	हँसी की गई	और अल्वत्ता	9	जो वह शुबा करते हैं
-------------	----------------	----	---------------	------------	-------------	---	---------------------

بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ١٠ قُلْ

आप कह दें	10	हँसी करते	उस पर	वह थे	जो-जिस	उन से	हँसी की	उन लोगों को जिन्होंने ने
-----------	----	-----------	-------	-------	--------	-------	---------	--------------------------

سِيرُوا فِي الْأَرْضِ ثُمَّ انظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكْذِبِينَ ١١

11	झुटलाने वाले	अन्जाम	हुआ	कैसा	देखो	फिर	ज़मीन (मुल्क) में	सैर करो
----	--------------	--------	-----	------	------	-----	-------------------	---------

قُلْ لِمَن مَّا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ قُلْ لِلَّهِ كَتَبَ عَلَىٰ نَفْسِهِ

अपने (नफ्स) आप पर	लिखी है	कह दें अल्लाह के लिए	और ज़मीन	आस्मानों में	जो	किस के लिए	आप पूछें
-------------------	---------	----------------------	----------	--------------	----	------------	----------

الرَّحْمَةَ لِيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ الَّذِينَ

जो लोग	उस में	नहीं शक	कियामत का दिन	तुम्हें ज़रूर जमा करेगा	रहमत
--------	--------	---------	---------------	-------------------------	------

خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ١٢ وَلَهُ مَا سَكَنَ فِي اللَّيْلِ

रात	में	बस्ता है	जो	और उस के लिए	12	ईमान नहीं लाएंगे	तो वही	अपने आप	ख़सारे में डाला
-----	-----	----------	----	--------------	----	------------------	--------	---------	-----------------

وَالنَّهَارِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ١٣ قُلْ أَعْيَرَ اللَّهُ اتَّخَذُ وَلِيًّا

कारसाज़	मैं बनाऊँ	अल्लाह	क्या सिवाए	आप (स) कह दें	13	जानने वाला	सुनने वाला	और वह	और दिन
---------	-----------	--------	------------	---------------	----	------------	------------	-------	--------

فَاطِرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُهُ وَلَا يُطْعَمُ قُلْ

आप (स) कह दें	और खाता नहीं	खिलाता है	और वह	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	बनाने वाला
---------------	--------------	-----------	-------	----------	--------------	------------

إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ

से	और तू हरगिज़ न हो	हुकम माना	जो-जिस	सब से पहला	मैं हो जाऊँ	कि	वेशक मुझे हुकम दिया गया
----	-------------------	-----------	--------	------------	-------------	----	-------------------------

الْمُشْرِكِينَ ١٤ قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ

अज़ाब	अपना रब	मैं नाफ़रमानी करूँ	अगर	मैं डरता हूँ	वेशक मैं	आप (स) कह दें	14	शिर्क करने वाले
-------	---------	--------------------	-----	--------------	----------	---------------	----	-----------------

يَوْمٍ عَظِيمٍ ١٥ مَنْ يُصِرْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهُ

उस पर रहम किया	तहकीक़	उस दिन	उस से	फेर दिया जाए	जो-जिस	15	बड़ा दिन
----------------	--------	--------	-------	--------------	--------	----	----------

وَذَلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ١٦ وَإِنْ يَمَسُّكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ

दूर करने वाला	तो नहीं	कोई सख़्ती	तुम्हें पहुँचाए अल्लाह	और अगर	16	कामयाबी खुली	और यह
---------------	---------	------------	------------------------	--------	----	--------------	-------

لَهُ إِلَّا هُوَ وَإِنْ يَمَسُّكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ

हर शै	पर	तो वह	कोई भलाई	वह पहुँचाए तुम्हें	और अगर	उस के सिवा	उस का
-------	----	-------	----------	--------------------	--------	------------	-------

قَدِيرٌ ١٧ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ١٨

18	ख़बर रखने वाला	हिक्मत वाला	और वह	अपने बन्दे	ऊपर	ग़ालिब	और वह	17	कादिर
----	----------------	-------------	-------	------------	-----	--------	-------	----	-------

قُلْ أَيُّ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً قُلِ اللَّهُ شَهِيدٌ بَيْنَكُمْ									
और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	गवाह	अल्लाह	आप (स) कह दें	गवाही	सब से बड़ी	चीज़	कौन सी	आप (स) कहें
وَأَوْحَىٰ إِلَيْنَا هَذَا الْقُرْآنَ لِأُنذِرْكُمْ بِهِ وَمَنْ بَلَغْ أَيْنَكُم									
क्या तुम बेशक	पहुँचे	और जिस	इस से	ताकि मैं तुम्हें डराऊँ	कुरआन	यह	मुझ पर	और वहि किया गया	
لَتَشْهَدُونَ أَنَّ مَعَ اللَّهِ إِلَهَةً أُخْرَىٰ قُلْ لَا أَشْهَدُ قُلْ إِنَّمَا									
सिर्फ	आप (स) कह दें	मैं गवाही नहीं देता	आप (स) कह दें	दूसरा	कोई माबूद	अल्लाह के साथ	कि	तुम गवाही देते हो	
هُوَ إِلَهُ وَاحِدٌ وَإِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ﴿١٩﴾ الَّذِينَ اتَّيْنَهُمْ									
हम ने दी उन्हें	वह जिन्हें	19	तुम शिर्क करते हो	उस से जो	वेज़ार	और बेशक मैं	यकता	माबूद	वह
الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ									
अपने आप	ख़सारे में डाला	वह जिन्होंने	अपने बेटे	वह पहचानते हैं	जैसे	वह उस को पहचानते हैं	किताब		
فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٢٠﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا									
झूट	अल्लाह पर	बुहतान बान्धे	उस से जो	सब से बड़ा ज़ालिम	और कौन	20	ईमान नहीं लाते	सो वह	
أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿٢١﴾ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا									
सब	उन को जमा करेंगे	और जिस दिन	21	ज़ालिम (जमा)	फ़लाह नहीं पाते	बिला शुवा वह	उस की आयतें	या झुटलाए	
ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا آيِنَ شِرْكَائِكُمْ الَّذِينَ كُنْتُمْ									
तुम थे	जिन का	तुम्हारे शरीक	कहाँ	शिर्क किया (मुशर्रिकों)	उन को जिन्होंने	हम कहेंगे	फिर		
تَزْعُمُونَ ﴿٢٢﴾ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فَتَنَتَّهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا وَاللَّهِ رَبَّنَا مَا كُنَّا									
न थे हम	हमारा रब	कसम अल्लाह की	वह कहें	कि	सिवाए	उन की शरारत	न होगी - न रही	22	दावा करते
مُشْرِكِينَ ﴿٢٣﴾ أَنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ									
उन से	और खोई गई	अपनी जानों	पर	उन्होंने ने झूट बान्धा	कैसे	देखो	23	शिर्क करने वाले	
مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢٤﴾ وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ وَجَعَلْنَا عَلَىٰ									
पर	और हम ने डाल दिया	आप (स) की तरफ़	कान लगाता था	जो	और उन से	24	वह बातें बनाते थे	जो	
فُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا وَإِنْ يَرَوْا كَلًّا									
तमाम	वह देखें	और अगर	बोझ	और उन के कानों में	वह (न) समझें उसे	कि	पर्दे	उन के दिल	
آيَةً لَا يُؤْمِنُوا بِهَا حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوكَ يُجَادِلُونَكَ يَقُولُ الَّذِينَ									
जिन लोगों ने	कहते हैं	आप (स) से झगड़ते हैं	आप (स) के पास आते हैं	जब	यहां तक कि	न ईमान लाएंगे उस पर	निशानी		
كَفَرُوا إِنْ هَذَا إِلَّا آسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٢٥﴾ وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ									
उस से	रोकते हैं	और वह	25	पहले लोग (जमा)	कहानियां	मगर (सिर्फ)	यह	नहीं	उन्होंने ने कुफ़ किया
وَيَنْهَوْنَ عَنْهُ وَإِنْ يُهْلِكُونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾									
26	और वह शऊर नहीं रखते	अपने आप	मगर (सिर्फ)	हलाक करते हैं	और नहीं	उस से	और भागते हैं		

आप (स) कहें सब से बड़ी गवाही किस की? आप (स) कह दें मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह गवाह है, और मुझ पर यह कुरआन वहि किया गया है ताकि मैं तुम्हें इस से डराऊँ और जिस तक यह पहुँचे, क्या तुम (वाकई) गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ कोई और भी माबूद है! आप (स) कह दें मैं (ऐसी) गवाही नहीं देता,

आप (स) कह दें सिर्फ वह माबूद यकता है, और मैं उस से वेज़ार हूँ जो तुम शिर्क करते हो। (19)

वह लोग जिन्हें हम ने किताब दी वह उस को पहचानते हैं जैसे वह अपने बेटों को पहचानते हैं। जिन लोगो ने ख़सारे में डाला अपने आप को सो वह ईमान नहीं लाते। (20)

और उस से बड़ा ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बुहतान बन्धे या झुटलाए उस की आयतों को, बेशक ज़ालिम फ़लाह (कामयाबी) नहीं पाते। (21)

और जिस दिन हम उन सब को जमा करेंगे, फिर हम कहेंगे मुशर्रिकों को: कहाँ हैं तुम्हारे शरीक जिन का तुम दावा करते थे। (22)

फिर न होगी उन की शरारत (उन का उज़र) इस के सिवा कि वह कहेंगे: हमारे रब अल्लाह की कसम हम मुशर्रिक न थे। (23)

देखो! उन्होंने ने कैसे झूट बान्धा अपनी जानों पर और वह जो बातें बनाते थे उन से खोई गई। (24)

और उन से (बाज़) आप की तरफ़ कान लगाए रखते हैं और हम ने उन के दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि वह उसे न समझें और उन के कानों में बोझ है, और अगर वह देखें तमाम निशानियां (फिर भी) उस पर ईमान न लाएंगे यहां तक कि जब आप (स) के पास आते हैं तो आप (स) से झगड़ते हैं, कहते हैं वह लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर): यह सिर्फ़ पहलों की कहानियां हैं। (25)

और वह उस से (दूसरों को) रोकते हैं और (खुद भी) उस से भागते हैं, और वह सिर्फ़ अपने आप को हलाक करते हैं और शऊर नहीं रखते। (26)

और कभी तुम देखो जब वह आग (दोज़ख़) पर खड़े किए जाएंगे तो कहेंगे ऐ काश! हम वापस भेजे जाएं और अपने रब की आयतों को न झुटलाएं और हो जाएं ईमान वालों में से। (27)

बल्कि वह उस से क़ब्ल जो छुपाते थे उन पर ज़ाहिर हो गया और वह अगर वापस भेजे जाएं तो फिर (वही) करने लगे जिस से वह रोके गए और वेशक वह झूटे हैं। (28)

और कहते हैं हमारी सिर्फ़ यही दुनिया की ज़िन्दगी है और हम उठाए जाने वाले नहीं (हमें फिर ज़िन्दा नहीं होना)। (29)

और कभी तुम देखो जब वह अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे। वह फ़रमाएगा क्या यह नहीं सच, वह कहेंगे हां हमारे रब की कसम (क्यों नहीं), वह फ़रमाएगा पस अज़ाब चखो इस लिए कि तुम कुफ़्र करते थे। (30)

तहकीक़ वह लोग घाटे में पड़े ज़िन्हों ने अल्लाह के मिलने को झुटलाया यहां तक कि जब अचानक उन पर क़ियामत आ पहुँची कहने लगे हाए हम पर अफ़सोस! जो हम ने उस में कोताही की, और वह अपने बोझ अपनी पीठों पर उठाए होंगे। आगाह रहो बुरा है जो वह उठाएंगे। (31)

और दुनिया की ज़िन्दगी सिर्फ़ खेल और जी का वेहलावा है, और आख़िरत का घर उन लोगों के लिए बेहतर है जो परहेज़गारी करते हैं, सो क्या तुम अक्ल से काम नहीं लेते। (32)

वेशक हम जानते हैं आप (स) को वह (बात) ज़रूर रंजीदा करती है जो वह कहते हैं, सो वह यकीनन आप (स) को नहीं झुटलाते बल्कि ज़ालिम लोग अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं। (33)

और अलबत्ता रसूल झुटलाए गए आप (स) से पहले, पस उन्हीं ने सब् र किया उस पर जो वह झुटलाए गए और सताए गए यहां तक कि उन पर हमारी मदद आगई, और (कोई) बदलने वाला नहीं अल्लाह की बातों को, और अलबत्ता आप (स) के पास रसूलों की कुछ ख़बरें पहुँच चुकी हैं। (34)

وَلَوْ تَرَىٰ اِذْ وَقَفُوا عَلٰى النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذَّبْ

और न झुटलाएं हम	वापस भेजे जाएं	ऐ काश हम	तो कहेंगे	आग	पर	जब खड़े किए जाएंगे	तुम देखो	और अगर (कभी)
-----------------	----------------	----------	-----------	----	----	--------------------	----------	--------------

بٰاٰیٰتِ رَبِّنَا وَنَكُوْنُ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧﴾ بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا

जो	ज़ाहिर हो गया उन पर	बल्कि	27	ईमान वाले	से	और हो जाएं हम	अपना रब	आयतों को
----	---------------------	-------	----	-----------	----	---------------	---------	----------

كَانُوْا يُخْفُوْنَ مِنْ قَبْلُ ۗ وَلَوْ رُدُّوْا لَعٰدُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَانَّهُمْ

और वेशक वह	उस से	वही रोके गए	तो फिर करने लगे	वापस भेजे जाएं	और अगर	उस से पहले	वह छुपाते थे
------------	-------	-------------	-----------------	----------------	--------	------------	--------------

لَكَذِبُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَقَالُوْا اِنْ هٰى اِلَّا حٰیٰتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ

हम	और नहीं	दुनिया	हमारी ज़िन्दगी	मगर (सिर्फ़)	है	नहीं	और कहते हैं	28	झूटे
----	---------	--------	----------------	--------------	----	------	-------------	----	------

بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ تَرَىٰ اِذْ وَقَفُوا عَلٰى رَبِّهِمْ ۗ قَالَ اٰیْسَ

क्या नहीं	वह फ़रमाएगा	अपना रब	पर (सामने)	खड़े किए जाएंगे	तुम देखो	और अगर (कभी)	29	उठाए जाने वाले
-----------	-------------	---------	------------	-----------------	----------	--------------	----	----------------

هٰذَا بِالْحَقِّ ۗ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ۗ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذٰبَ بِمَا

इस लिए कि	अज़ाब	पस चखो	वह फ़रमाएगा	कसम हमारे रब की	हां	वह कहेंगे	सच	यह
-----------	-------	--------	-------------	-----------------	-----	-----------	----	----

كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٠﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقٰءِ اللّٰهِ ۗ حَتّٰى

यहां तक कि	अल्लाह से मिलना	वह लोग ज़िन्हों ने झुटलाया	घाटे में पड़े	तहकीक़	30	तुम कुफ़्र करते थे
------------	-----------------	----------------------------	---------------	--------	----	--------------------

اِذَا جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوْا يٰحَسْرَتُنَا عَلٰى مَا فَرَطْنَا فِيْهَا ۗ

इस में	जो हम ने कोताही की	पर	हाए हम पर अफ़सोस	वह कहने लगे	अचानक	क़ियामत	आ पहुँची उन पर	जब
--------	--------------------	----	------------------	-------------	-------	---------	----------------	----

وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ عَلٰى ظُهُورِهِمْ ۗ اِلَّا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿٣١﴾

31	जो वह उठाएंगे	बुरा	आगाह रहो	अपनी पीठ (जमा)	पर	अपने बोझ	उठाए होंगे	और वह
----	---------------	------	----------	----------------	----	----------	------------	-------

وَمَا الْحٰیوةُ الدُّنْيَا اِلَّا لَعِبٌ وَلَهُوٌ ۗ وَلِلْآٰخِرَةِ الْاٰخِرَةُ ۗ خَيْرٌ ۗ لِلَّذِيْنَ

उन के लिए	बेहतर	और आख़िरत का घर	और जी का वेहलावा	खेल	मगर (सिर्फ़)	दुनिया	ज़िन्दगी	और नहीं
-----------	-------	-----------------	------------------	-----	--------------	--------	----------	---------

يَتَّقُوْنَ ۗ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٣٢﴾ قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهُ لَيَحْزُنْكَ الَّذِیْ

जो वह	आप को ज़रूर रंजीदा करती है	कि वह	वेशक हम जानते हैं	32	सो क्या तुम अक्ल से काम नहीं लेते	परहेज़गारी करते हैं
-------	----------------------------	-------	-------------------	----	-----------------------------------	---------------------

يَقُوْلُوْنَ فَاِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَلَكِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بٰاٰیٰتِ اللّٰهِ

अल्लाह की आयतों का	ज़ालिम लोग	और लेकिन (बल्कि)	नहीं झुटलाते आप (स) को	सो वह यकीनन	कहते हैं
--------------------	------------	------------------	------------------------	-------------	----------

يَجْحَدُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى

पर	पस सब् र किया उन्हीं ने	आप (स) से पहले	रसूल (जमा)	और अलबत्ता झुटलाए गए	33	इन्कार करते हैं
----	-------------------------	----------------	------------	----------------------	----	-----------------

مَا كُذِّبُوْا ۗ وَاُوْدُوْا حَتّٰى اَتَهُمْ نَصْرُنَا ۗ وَلَا مُبَدِّلَ

और नहीं बदलने वाला	हमारी मदद	उन पर आगई	यहां तक कि	और सताए गए	जो वह झुटलाए गए
--------------------	-----------	-----------	------------	------------	-----------------

لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۗ وَلَقَدْ جَآءَكَ مِنْ نَّبٰٓئِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣٤﴾

34	रसूल (जमा)	ख़बर	से (कुछ)	आप के पास पहुँची	और अलबत्ता	अल्लाह की बातों को
----	------------	------	----------	------------------	------------	--------------------

٣  
٩

وَإِنْ كَانَ كُبُرَ عَلَيْكَ إِعْرَاضُهُمْ فَإِنِ اسْتَطَعْتَ أَنْ تَبْتَغِيَ									
और अगर	है	गरां	आप (स) पर	उन का मुँह फेरना	तो अगर	तुम से हो सके	कि	डूँड लो	
نَفَقًا فِي الْأَرْضِ أَوْ سَلَمًا فِي السَّمَاءِ فَتَاتِيَهُمْ بَايَةٌ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ									
कोई सुरंग	ज़मीन में	या	कोई सीढ़ी	आस्मान में	फिर ले आओ उन के पास	कोई निशानी	और अगर	चाहता अल्लाह	
لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدَى فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْجَاهِلِينَ (35) إِنَّمَا يَسْتَجِيبُ									
तो उन्हें जमा कर देता	हिदायत पर	सो आप (स) न हों	से	वे ख़बर (जमा)	35	सिर्फ़ वह	मानते है		
الَّذِينَ يَسْمَعُونَ وَالْمَوْتَى يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ (36)									
जो लोग	सुनते है	और मुर्दे	उन्हें उठाएगा अल्लाह	फिर	उस की तरफ़	वह लौटाए जाएंगे	36		
وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّ اللَّهَ قَادِرٌ عَلَى أَنْ									
और वह कहते है	क्यों नहीं उतारी गई	उस पर	कोई निशानी	से	उस का रब	आप (स) कह दें	बेशक अल्लाह	कादिर	पर
يُنزِّلَ آيَةً وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ (37) وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ									
उतारे	निशानी	और लेकिन	उन में अक्सर	नहीं जानते	37	और नहीं	कोई	चलने वाला	ज़मीन में
وَلَا طَيْرٍ يَطِيرُ بِجَنَاحَيْهِ إِلَّا أُمَمٌ أَمْثَلُكُمْ مَا فَرَطْنَا									
और न	परिन्दा	उड़ता है	अपने परों से	मगर	उम्मतें (जमाअतें)	तुम्हारी तरह	नहीं छोड़ी हम ने		
فِي الْكِتَابِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يُحْشَرُونَ (38) وَالَّذِينَ كَذَّبُوا									
किताब में	कोई	चीज़	फिर	तरफ़	अपना रब	जमा किए जाएंगे	38	और वह लोग जो कि	उन्होंने ने झुटलाया
بِآيَاتِنَا صُومٌ وَبُكْمٌ فِي الظُّلُمَاتِ مَنْ يَشَأِ اللَّهُ يُضِلَّهُ وَمَنْ يَشَأِ									
हमारी आयात	बहरे	और गूंगे	में	अन्धेरे	जो - जिस	अल्लाह चाहे	उसे गुमराह कर दे	और जिसे चाहे	
يَجْعَلُهُ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ (39) قُلْ أَرَأَيْتَكُمْ إِنْ أَتَكُمْ عَذَابٌ									
उसे कर दे (चला दे)	पर	रास्ता	सीधा	39	आप (स) कह दें	भला देखो	अगर	तुम पर आए	अज़ाब
اللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمُ السَّاعَةُ أَغَيْرَ اللَّهِ تَدْعُونَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ (40)									
अल्लाह	या आप तुम पर	क़ियामत	क्या अल्लाह के सिवा	तुम पुकारोगे	अगर	तुम हो	सच्चे	40	
بَلْ إِيَّاهُ تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِنْ شَاءَ وَتَنْسَوْنَ									
बल्कि	उसी को	तुम पुकारते हो	पस खोल देता है (दूर करदेता है)	जिसे पुकारते हो	उस के लिए	अगर	वह चाहे	और तुम भूल जाते हो	
مَا تُشْرِكُونَ (41) وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِنْ قَبْلِكَ فَآخَذْنَاهُمْ بِالْبَأْسَاءِ									
जो - जिस	तुम शरीक करते हो	41	और तहकीक हम ने भेजे (रसूल)	उम्मतें तरफ़	तुम से पहले	पस हम ने उन्हें पकड़ा	सख़्ती में		
وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُونَ (42) فَلَوْلَا إِذْ جَاءَهُمْ بَأْسُنَا تَضَرَّعُوا									
और तक्लीफ़	और तक्लीफ़	ताकि वह	गिड़गिड़ाएं	42	फिर क्यों न	जब	आया उन पर	हमारा अज़ाब	वह गिड़गिड़ाए
وَلَكِنْ قَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (43)									
और लेकिन	सख़्त हो गए	दिल उन के	आरास्ता कर दिखाया	उन को	शैतान	जो	वह करते थे	43	

और अगर आप (स) पर गरां है उन का मुँह फेरना तो अगर तुम से हो सके तो ज़मीन में कोई सुरंग या आस्मान में कोई सीढ़ी डूँड निकालो फिर तुम उन के पास कोई निशानी ले आओ, और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें हिदायत पर जमा कर देता, सो आप (स) वे ख़बरों में से न हों। (35) मानते सिर्फ़ वह है जो सुनते है, और मुर्दे को अल्लाह उठाएगा (दोबारा ज़िन्दा करेगा) फिर वह उस की तरफ़ लौटाए जाएंगे। (36) और वह कहते है कि उस पर उस के रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई? आप (स) कह दें बेशक अल्लाह उस पर कादिर है कि वह उतारे निशानी, लेकिन उन में अक्सर नहीं जानते। (37) और ज़मीन में कोई चलने वाला (हैवान) नहीं और न कोई परिन्दा जो अपने परों से उड़ता है मगर (उन की भी) तुम्हारी तरह जमाअतें हैं, हम ने किताब में कोई चीज़ नहीं छोड़ी, फिर अपने रब की तरफ़ जमा किए जाएंगे। (38) और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया वह बहरे और गूंगे है, अन्धेरो में है, जिस को अल्लाह चाहे गुमराह कर दे, और जिस को चाहे सीधे रास्ते पर चलादे। (39) आप (स) कह दें भला देखो अगर तुम पर अल्लाह का अज़ाब आय या तुम पर क़ियामत आजाए, क्या तुम अल्लाह के सिवा (किसी और को) पुकारोगे? अगर तुम सच्चे हो। (40) बल्कि तुम उसी को पुकारते हो, पस जिस (दुख) के लिए उसे पुकारते हो अगर वह चाहे तो वह उसे दूर कर देता है, और तुम भूल जाते हो जिस को तुम शरीक करते हो। (41) तहकीक हम ने तुम से पहली उम्मतों की तरफ़ रसूल भेजे फिर हम ने (उन की नाफ़रमानी के सबब) उन्हें पकड़ा सख़्ती और तक्लीफ़ में ताकि वह गिड़गिड़ाएं। (42) फिर जब उन पर हमारा अज़ाब आया वह क्यों न गिड़गिड़ाए लेकिन उन के दिल सख़्त हो गए और जो वह करते थे शैतान ने उन को आरास्ता कर दिखाया। (43)

النصف  
وقف منزل  
وقف غفران

फिर जब वह भूल गए वह नसीहत जो उन्हें की गई तो हम ने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए यहां तक कि जब वह उस से खुश हो गए जो उन्हें दी गई तो हम ने उन को अचानक पकड़ा (धर लिया) पस उस वक़्त वह मायूस हो कर रह गए। (44)

फिर ज़ालिम कौम की जड़ काट दी गई, और हर तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो सारे ज़हानों का रब है। (45)

आप (स) कह दें भला देखो, अगर अल्लाह तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें छीन ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगादे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद है जो तुम को यह चीज़ें ला दे (वापस करदे), देखो हम कैसे बदल बदल कर आयतें बयान करते हैं फिर वह किनारा करते हैं। (46)

आप (स) कह दें देखो तो सही अगर तुम पर अल्लाह का अज़ाब अचानक या खुल्लम खुल्ला आए क्या ज़ालिम लोगों के सिवा (और कोई) हलाक होगा? (47)

और हम रसूल नहीं भेजते मगर खुशख़बरी देने वाले और डर सुनाने वाले। पस जो ईमान लाया और संवर गया तो उन पर कोई ख़ौफ़ नहीं और न वह ग़मगीन होंगे। (48)

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया उन्हें अज़ाब पहुँचेगा इस लिए कि वह नाफ़रमानी करते थे। (49)

आप (स) कह दें, मैं नहीं कहता तुम से कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न मैं ग़ैब को जानता हूँ, और न मैं तुम से कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ, मैं पैरवी नहीं करता मगर (सिर्फ़ उस की) जो मेरी तरफ़ वहि किया जाता है, आप (स) कह दें क्या नाबीना और बीना बराबर हो सकते हैं? सो क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (50)

और उस से उन लोगों को डरावें जो ख़ौफ़ रखते हैं कि अपने रब के सामने जमा किए जाएंगे, उस के सिवा उन का न होगा कोई हिमायती और न कोई सिफ़ारिश करने वाला, ताकि वह बचते रहें। (51)

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ فَتَحْنَا عَلَيْهِم أَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ ۗ							
हर चीज़	दरवाज़े	उन पर	तो हम ने खोल दिए	उस के साथ	जो नसीहत की गई	वह भूल गए	फिर जब
حَتَّىٰ إِذَا فَرِحُوا بِمَا أُوتُوا أَخَذْنَاهُمْ بَغْتَةً فَإِذَا هُمْ مُبْلِسُونَ ﴿٤٤﴾							
वह	पस उस वक़्त	अचानक	हम ने पकड़ा उन को	उन्हें दी गई	उस से जो	खुश हो गए	जब यहाँ तक कि
فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ فَتَحْنَا عَلَيْهِم أَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ ۗ							
और हर तारीफ़ अल्लाह के लिए	जिन लोगों ने जुलूम किया (ज़ालिम)	कौम	जड़	फिर काट दी गई	44	मायूस रह गए	
رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٥﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ							
तुम्हारे कान	ले (छीन ले) अल्लाह	अगर	भला तुम देखो	आप (स) कह दें	45	सारे ज़हानों का रब	
وَأَبْصَارَكُمْ وَخَمَمَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرِ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِهِ ۗ أَنْظُرْ							
देखो	यह	तुम को लादे	अल्लाह	सिवाए	माबूद	कौन	तुम्हारे दिल पर
كَيْفَ نَصَرَفُ الْآيَاتِ ثُمَّ هُمْ يَصْذِفُونَ ﴿٤٦﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ							
अगर	तुम देखो तो सही	आप (स) कह दें	46	किनारा करते हैं	वह	फिर	आयतें बदल बदल कर बयान करते हैं
أَتَّكُم عَذَابَ اللَّهِ بَغْتَةً أَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلِكُ إِلَّا الْقَوْمَ							
लोग	सिवाए	हलाक होगा	क्या	या खुल्लम खुल्ला	अचानक	अज़ाब अल्लाह का	तुम पर आए
الظَّالِمُونَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ							
और डर सुनाने वाले	खुशख़बरी देने वाले	मगर	रसूल (जमा)	और नहीं भेजते हम	47	ज़ालिम (जमा)	
فَمَنْ آمَنَ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٤٨﴾							
48	ग़मगीन होंगे	और न वह	उन पर	तो कोई ख़ौफ़ नहीं	और संवर गया	ईमान लाया	पस जो
وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا							
इस लिए कि	अज़ाब	उन्हें पहुँचे गा	हमारी आयतों को	उन्होंने ने झुटलाया	और वह लोग जो		
كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٤٩﴾ قُلْ لَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ							
मैं जानता	और नहीं	अल्लाह के ख़ज़ाने	मेरे पास	तुम से नहीं कहता मैं	आप कह दें	49	वह करते थे नाफ़रमानी
الْغَيْبِ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ إِنِّي مَلَكٌ ۚ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ ۗ							
मेरी तरफ़	जो वहि किया जाता है	मगर	मैं नहीं पैरवी करता	फ़रिश्ता	कि मैं	तुम से	और नहीं कहता मैं
قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ۗ أَفَلَا تَتَفَكَّرُونَ ﴿٥٠﴾							
50	सो क्या तुम ग़ौर नहीं करते	और बीना	नाबीना	बराबर है	क्या	आप कह दें	
وَأَنْذِرْ بِهِ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنْ يُحْشَرُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ لَيْسَ							
नहीं	अपना रब	तरफ़ (सामने)	वह जमा किए जाएंगे	कि	ख़ौफ़ रखते हैं	वह लोग जो	उस से और डरावें
لَهُمْ مِنْ دُونِهِ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٥١﴾							
51	बचते रहें	ताकि वह	सिफ़ारिश करने वाला	और न	कोई हिमायती	उस के सिवा	कोई उन के लिए

٥٩



وَلَا تَطْرُدِ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْعَدْوَةِ وَالْعَشِيِّ						
और शाम	सुबह	अपना रब	पुकारते हैं	वह लोग जो	और दूर न करें आप	
يُرِيدُونَ وَجْهَهُ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ						
कुछ	उन का हिसाब	से	आप (स) पर	नहीं	उस का रख (रज़ा)	वह चाहते हैं
وَمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُونَ مِنَ						
से	तो हो जाओगे	कि तुम उन्हें दूर करोगे	कुछ	उन पर	आप (स) का हिसाब	और नहीं
الظَّالِمِينَ ﴿٥٢﴾ وَكَذَلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِيَقُولُوا أَهَؤُلَاءِ						
क्या यही है	ताकि वह कहें	बाज़ से	उन के बाज़	आज़माया हम ने	और इसी तरह	ज़ालिम (जमा) 52
مَنْ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنْ بَيْنِنَا أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِالشَّكِرِينَ ﴿٥٣﴾						
53	शुक्र गुज़ार (जमा)	खूब जानने वाला	क्या नहीं अल्लाह	हमारे दरमियान से	उन पर	अल्लाह ने फज़ल किया
وَإِذَا جَاءَكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِنَا فَقُلْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ						
लिख ली	तुम पर	सलाम	तो कह दें	हमारी आयतों पर	ईमान रखते हैं	वह लोग आप के पास आएँ और जब
رَبُّكُمْ عَلَىٰ نَفْسِهِ الرَّحْمَةُ ۖ أَنَّهُ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوءً بِجَهَالَةٍ						
नादानी से	कोई बुराई	तुम से	करे	जो	कि	रहमत अपनी ज़ात पर तुम्हारा रब
ثُمَّ تَابَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَصْلَحَ ۗ فَآتَاهُ غُفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٥٤﴾ وَكَذَلِكَ نَفِصَلُ						
और इसी तरह हम तफ़सील से बयान करते हैं	54	मेहरबान	बख़्शने वाला	तो बेशक अल्लाह	और नेक हो जाए	उस के बाद तौबा कर ले फिर
الْآيَاتِ وَلِتَسْتَبِينَ سَبِيلَ الْمُجْرِمِينَ ﴿٥٥﴾ قُلْ إِنِّي						
बेशक मैं	कह दें	55	गुनाहगार (जमा)	रास्ता - तरीका	और ताकि ज़ाहिर हो जाए	आयतें
نُهِيتٌ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۗ قُلْ						
कह दें	अल्लाह के सिवा	से	तुम पुकारते हो	वह जिन्हें	कि मैं बन्दगी करूँ	मुझे रोका गया है
لَا أَتَّبِعُ أَهْوَاءَكُمْ ۖ قَدْ ضَلَلْتُ إِذَا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ﴿٥٦﴾						
56	हिदायत पाने वाले	से	और मैं नहीं	उस सूरत में	बेशक मैं बहक जाऊँगा	तुम्हारी खाहिशात मैं पैरवी नहीं करता
قُلْ إِنِّي عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّنْ رَبِّي وَكَذَّبْتُمْ بِهِ ۗ مَا عِنْدِي مَا						
जिस	नहीं मेरे पास	उस को	और तुम झुटलाते हो	अपना रब	से	रौशन दलील पर बेशक मैं आप कह दें
تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ ۗ إِنَّ الْحُكْمَ إِلَّا لِلَّهِ ۗ يَقْضِ الْحَقُّ وَهُوَ						
और वह	हक़	बयान करता है	सिर्फ़ अल्लाह के लिए	हुक़म	मगर	उस की तुम जल्दी कर रहे हो
خَيْرُ الْفَصْلِينَ ﴿٥٧﴾ قُلْ لَوْ أَنَّ عِنْدِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ						
उस की	तुम जल्दी करते हो	जो	मेरे पास	होती अगर	कह दें	57 फ़ैसला करने वाला बेहतर
لَقُضِيَ الْأَمْرُ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۗ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ ﴿٥٨﴾						
58	ज़ालिमों को	खूब जानने वाला	और अल्लाह	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	फ़ैसला अलबत्ता हो चुका होता

और आप (स) उन लोगों को दूर न करें जो अपने रब को पुकारते हैं सुबह और शाम, वह उस की रज़ा चाहते हैं और आप (स) पर (आप (स) के ज़िम्मे) उन के हिसाब में से कुछ नहीं, और न आप (स) के हिसाब में से उन पर कुछ है। अगर उन्हें दूर करोगे तो ज़ालिमों से हो जाओगे। (52)

और इसी तरह हम ने उन में से बाज़ को बाज़ से आज़माया ताकि वह कहें क्या यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने फज़ल किया हम में से? क्या अल्लाह शुक्र गुज़ारों को खूब जानने वाला नहीं? (53)

और जब आप (स) के पास वह लोग आएँ जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं तो आप (स) कह दें तुम पर सलाम है, तुम्हारे रब ने अपने आप पर रहमत लिख ली (लाज़िम कर ली) है कि तुम में जो कोई बुराई करे नादानी से फिर उस के बाद तौबा कर ले और नेक हो जाए तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (54)

और इसी तरह हम तफ़सील से बयान करते हैं आयतें और (यह इस लिए कि) गुनाहगारों का तरीका ज़ाहिर हो जाए। (55)

आप कह दें मुझे (इस बात से) रोका गया है कि मैं उन की बन्दगी करूँ जिन्हें तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा, आप कह दें मैं तुम्हारी खाहिशात की पैरवी नहीं करता, उस सूरत में बेशक मैं बहक जाऊँगा और हिदायत पाने वालों में से न हों गा। (56)

आप (स) कह दें बेशक मैं अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील पर हूँ और तुम उस को झुटलाते हो, तुम जिस (अज़ाब) की जल्दी कर रहे हो मेरे पास नहीं। हुक़म सिर्फ़ अल्लाह के लिए है, वह हक़ बयान करता है और वह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (57)

आप (स) कह दें अगर मेरे पास होती (वह चीज़) जिस की तुम जल्दी करते हो तो अलबत्ता मेरे और तुम्हारे दरमियान फ़ैसला हो चुका होता, और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानने वाला है। (58)

और उस के पास ग़ैब की कुनज़ियां हैं, उन को उस के सिवा कोई नहीं जानता, वह जानता है जो खुशकी और तरी में है, और नहीं गिरता कोई पत्ता मगर वह उस को जानता है और कोई दाना नहीं ज़मीन के अन्धेरों में, और न कोई तर न कोई खुशक, मगर सब रौशन किताब (लौहे महफूज़) में है। (59)

और वही तो है जो रात में तुम्हारी (रूह) कब्ज़ कर लेता है और जानता है जो तुम दिन में कमा चुके हो, फिर तुम्हें उस (दिन) में उठाता है ताकि मुददत मुकर्ररा पूरी हो, फिर तुम्हें उसी की तरफ़ लौटना है, फिर तुम्हें जता देगा जो तुम करते थे। (60)

और वही अपने बन्दों पर ग़ालिव है, और तुम पर निगेहवान भेजता है यहां तक कि जब तुम में से किसी को मौत आ पहुँचे तो हमारे फ़रिश्ते उस की (रूह) कब्ज़े में ले लेते हैं और वह कोताही नहीं करते। (61)

फिर लौटाए जाएंगे अपने सच्चे मौला की तरफ़, सुन रखो! हुक्म उसी का है और वह हिसाब लेने में बहुत तेज़ है। (62)

आप (स) कह दें तुम्हें खुशकी और दर्या के अन्धेरों से कौन बचाता है? (उस वक़्त) तुम उस को गिड़गिड़ा कर और चुपके से पुकारते हो (और कहते हो) कि अगर हमें इस से बचाते तो हम शुक्र अदा करने वालों में से होंगे। (63)

आप (स) कह दें अल्लाह तुम्हें उस से बचाता है और हर सख़्ती से, फिर तुम शिर्क करते हो। (64)

आप (स) कह दें वह कादिर है कि तुम पर भेजे अज़ाब तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पाऊँ के नीचे से या तुम्हें फ़िर्का-फ़िर्का कर के भिड़ा दे, और तुम में से एक को चखा दे दूसरे की लड़ाई (का मज़ा), देखो हम किस तरह आयात फेर फेर कर बयान करते हैं ताकि वह समझ जाएं। (65)

और तुम्हारी कौम ने उस को झुटलाया हालांकि वह हक़ है, आप (स) कह दें मैं तुम पर दारोगा नहीं। (66)

हर ख़बर के लिए एक ठिकाना (मकर्ररा वक़्त) है और तुम जल्द जान लोगे। (67)

وَعِنْدَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ										
और उस के पास	कुनज़ियां	ग़ैब	नहीं	उन को जानता	सिवा	वह	और जानता है	जो	खुशकी में	और तरी
وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِي ظِلْمِ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ										
और नहीं	गिरता	कोई	पत्ता	मगर	वह उस को जानता है	और न कोई दाना	में	अन्धेरे	ज़मीन	और न कोई तर
وَلَا يَابِسُ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ﴿٥٩﴾ وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّكُم بِاللَّيْلِ										
और न	खुशक	मगर	में	किताब	रौशन	59	और वह	जो कि	कब्ज़ कर लेता है तुम्हारी (रूह)	रात में
وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضَىٰ أَجَلٌ مُّسَمًّى										
और जानता है	जो तुम कमा चुके हो	दिन में	फिर	तुम्हें उठाता है	उस में	ताकि पूरी हो	मुददत	मुकर्ररा		
ثُمَّ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٦٠﴾ وَهُوَ الْقَاهِرُ										
फिर	उस की तरफ़	तुम्हारा लौटना	फिर	तुम्हें जता देगा	जो	तुम करते थे	60	और वही	ग़ालिव	फिर
فَوْقَ عِبَادِهِ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَكُمْ										
पर	अपने बन्दे	और भेजता है	तुम पर	निगेहवान	यहाँ तक के	जब	आ पहुँचे	किसी	तुम में से एक-	पर
الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلْنَا وَهُمْ لَا يُفْرِطُونَ ﴿٦١﴾ ثُمَّ رُدُّوْا إِلَى اللَّهِ										
मौत	कब्ज़े में लेते हैं उस को	हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते)	और वह	नहीं करते कोताही	61	फिर	लौटाए जाएंगे	अल्लाह की तरफ़		
مَوْلَاهُمْ الْحَقِّ إِلَّا لَهُ الْحُكْمُ وَهُوَ أَسْرَعُ الْحُسَيْنِ ﴿٦٢﴾ قُلْ مَنْ										
उन का मौला	सच्चा	सुन रखो	उसी का	हुक्म	और वह	बहुत तेज़	हिसाब लेने वाला	62	आप कह दें	कौन
يُنَجِّيْكُمْ مِّنْ ظِلْمِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُونَهُ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً لِّئِنْ										
बचाता है तुम्हें	से	अन्धेरे	खुशकी	और दर्या	तुम पुकारते हो उस को	गिड़गिड़ा कर	और चुपके से	कि अगर		
أَنْجِنَا مِنْ هَذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿٦٣﴾ قُلِ اللَّهُ يُنَجِّيْكُمْ										
हमें बचा ले	से	इस	तो हम हों	से	शुक्र अदा करने वाले	63	आप (स) कह दें	अल्लाह	तुम्हें बचाता है	
مِنْهَا وَمَنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ أَنْتُمْ تُشْرِكُونَ ﴿٦٤﴾ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَىٰ										
उस से	और से	हर सख़्ती	तुम	शिर्क करते हो	64	आप कह दें	वह	कादिर	पर	
أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ										
कि	भेजे	तुम पर	अज़ाब	से	तुम्हारे ऊपर	या	से	नीचे	तुम्हारे पाऊँ	
أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيْعًا وَيُذِيقَ بَعْضَكُمْ بَأْسَ بَعْضٍ أَنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ										
या भिड़ा दे तुम्हें	फ़िर्का - फ़िर्का	और चखाए	तुम में से एक	लड़ाई	दूसरा	देखो	किस तरह	हम फेर फेर कर बयान करते हैं		
الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُونَ ﴿٦٥﴾ وَكَذَّبَ بِهِ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ قُلْ										
आयात	ताकि वह	समझ जाएं	65	और झुटलाया	उस को	तुम्हारी कौम	हालांकि वह	हक़	आप कह दें	
لَسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ﴿٦٦﴾ لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ وَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٦٧﴾										
मैं नहीं	तुम पर	दारोगा	66	हर एक के लिए	ख़बर	एक ठिकाना	और जल्द	तुम जान लोगे	67	

ع ۱۲

وَإِذَا رَأَيْتَ الَّذِينَ يَخُوضُونَ فِي آيَاتِنَا فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتَّىٰ								
यहां तक कि	उन से	तो किनारा कर ले	हमारी आयतें	में	झगड़तें है	वह लोग जो कि	तू देखे	और जब
يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ وَإِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ								
तो न बैठ	शैतान	भुलादे तुझे	और अगर	उस के अलावा	कोई बात	में	वह मशगूल हों	
بَعْدَ الذِّكْرِ مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٦٨﴾ وَمَا عَلَى الَّذِينَ يَتَّقُونَ								
परहेज़ करते हैं	वह लोग जो	पर	और नहीं	68	ज़ालिम (जमा)	कौम (लोग)	साथ (पास)	याद आना
مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ وَلَكِنْ ذِكْرِي لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٦٩﴾ وَذَرِ								
और छोड़ दे	69	डरें	ताकि वह	नसीहत करना	लेकिन	चीज़	कोई	उन का हिसाब से
الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَعِبًا وَلَهْوًا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا								
दुनिया	ज़िन्दगी	और उन्हें धोके में डाल दिया	और तमाशा	खेल	अपना दीन	उन्होंने ने बना लिया	वह लोग जो	
وَذَكِّرْ بِهِ أَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌ بِمَا كَسَبَتْ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ								
सिवाए अल्लाह	से	उस के लिए	नहीं	उस ने किया	बसवव जो	कोई	पकड़ा (न) जाए	ताकि इस से और नसीहत करो
وَلِيٍّ وَلَا شَفِيعٍ ۖ وَإِنْ تَعَدَلَ كُلٌّ قَدْلًا لَا يُؤْخَذُ مِنْهَا أُولَٰئِكَ								
यही लोग	उस से	न लिए जाएं	मुआवज़े	तमाम	बदले में दे	और अगर	कोई सिफारिश करने वाला	और न कोई हिमायती
الَّذِينَ أُبْسِلُوا بِمَا كَسَبُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ								
और अज़ाब	गर्म	से	पीना (पानी)	उन के लिए	जो उन्होंने ने कमाया (अपना लिया)	पकड़े गए	वह लोग जो	
أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٧٠﴾ قُلْ أَدْعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا								
जो	सिवाए अल्लाह	से	क्या हम पुकारें	कह दें	70	वह कुफ़र करते थे	इस लिए कि	दर्दनाक
لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلَىٰ أَعْقَابِنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْنَا اللَّهُ								
अल्लाह	जब हिदायत दी हमें	बाद	अपनी एड़ियां (उलटे पाऊँ)	पर	और हम फिर जाएं	और न नुक़सान करे हमें	न हमें नफ़ा दे	
كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيْطَانُ فِي الْأَرْضِ حَيْرَانَ ۗ لَهُ أَصْحَابٌ								
साथी	उस के	हैरान	ज़मीन	में	शैतान	भुला दिया उस को	उस की तरह जो	
يَدْعُونَهُ إِلَىٰ الْهُدَىٰ آتَيْنَا ۖ قُلْ إِنَّ هُدَىٰ اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ ۗ								
हिदायत	वही	अल्लाह की हिदायत	वेशक	कह दें	हमारे पास आ	हिदायत	तरफ़	बुलाते हों उस को
وَأْمُرْنَا لِنُسَلِّمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٧١﴾ وَأَنْ أَقِيمُوا الصَّلَاةَ								
नमाज़	काइम करो	और यह कि	71	तमाम ज़हान	परवरदिगार के लिए	कि फ़रमांवरदार रहें	और हुक़म दिया गया हमें	
وَأَتَّقُوهُ ۗ وَهُوَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٧٢﴾ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ								
पैदा किया	वह जो-जिस	और वही	72	तुम इकट्ठे किए जाओगे	उस की तरफ़	वह जिस की	और वही	और उस से डरो
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ بِالْحَقِّ ۗ وَيَوْمَ يَقُولُ كُن فَيَكُونُ ۗ								
तो वह हो जाएगा	हो जा	कहेगा वह	और जिस दिन	ठीक तौर पर	और ज़मीन	आस्मान (जमा)		

और जब तू उन लोगों को देखे जो हमारी आयतों में झगड़तें हैं तो उन से किनारा कर ले यहां तक कि वह मशगूल हो जाएं उस के अलावा किसी और बात में, और अगर तुझे शैतान भुलादे तो याद आने के बाद न बैठ ज़ालिम लोगों के पास। (68)

और जो लोग परहेज़ करते हैं (परहेज़गार हैं) उन पर उन (झगड़ने वालों) के हिसाब में से कोई चीज़ नहीं, लेकिन नसीहत करना ताकि वह डरें (वाज़ आजाएं)। (69)

और उन लोगों को छोड़ दें जिन्होंने अपने दीन को खेल और तमाशा बना लिया है और दुनिया की ज़िन्दगी ने उन्हें धोके में डाल दिया है, और उस (कुरआन) से नसीहत करो ताकि कोई अपने किए (अपने अमल) से पकड़ा न जाए, उस के लिए नहीं अल्लाह के सिवा कोई हिमायती और न कोई सिफारिश करने वाला, और अगर बदले में तमाम मुआवज़े दें तो उस से न लिए जाएं (कुबूल न हों), यही वह लोग हैं जो अपने किए पर पकड़े गए, उन्हें गर्म पानी पीना है और दर्दनाक अज़ाब है इस लिए कि वह कुफ़र करते थे। (70)

कह दें क्या हम अल्लाह के सिवा उस को पुकारें जो हमें न नफ़ा दे सके न हमारा नुक़सान कर सके और (क्या) हम उलटे पाऊँ फिर जाएं उस के बाद जब कि अल्लाह ने हमें हिदायत दे दी उस शख्स की तरह जिसे शैतान ने भुला दिया ज़मीन (जंगल) में, वह हैरान हो, उस के साथी उस को हिदायत की तरफ़ बुलाते हों कि हमारे पास आ। आप (स) कह दें वेशक अल्लाह की हिदायत ही हिदायत है और हमें हुक़म दिया गया है कि तमाम ज़हानों के परवरदिगार के फ़रमांवरदार रहें। (71)

और यह कि नमाज़ काइम करो और उस से डरो, और वही है जिस की तरफ़ तुम इकट्ठे किए जाओगे। (72)

और वही है जिस ने आस्मानों और ज़मीन को ठीक तौर पर पैदा किया। और जिस दिन कहेगा “हो जा” तो वह “हो जाएगा”,

उस की बात सच्ची है, और मुल्क उसी का है, जिस दिन सूर फूँका जाएगा, ग़ैब और ज़ाहिर का जानने वाला, और वही है हिक्मत वाला, ख़बर रखने वाला। (73)

और जब इब्राहीम (अ) ने कहा अपने बाप आज़र को: क्या तू बुतों को माबूद बनाता है? वेशक मैं तुझे और तेरी क़ौम को खुली गुमराही में देखता हूँ। (74)

और इस तरह हम इब्राहीम (अ) को आस्मानों और ज़मीन की बादशाही (अज़ाइवात) दिखाने लगे ताकि वह यकीन करने वालों में से हो जाए। (75)

फिर जब उस पर रात अन्धेरा कर लिया तो एक सितारा देखा, कहा यह मेरा रब है। फिर जब गाइब हो गया तो (इब्राहीम अ) कहने लगे मैं दोस्त नहीं रखता गाइब होने वालों को। (76)

फिर जब चमकता हुआ चाँद देखा तो बोले यह मेरा रब है, फिर जब वह गाइब हो गया तो कहा अगर मुझे हिदायत न दे मेरा रब तो मैं भटकने वाले लोगों में से हो जाऊँ। (77)

फिर जब उस ने जगमगाता हुआ सूरज देखा तो बोले यह मेरा रब है, यह सब से बड़ा है। फिर जब वह गाइब हो गया तो कहा ऐ मेरी क़ौम! वेशक मैं उन से बेज़ार हूँ जिन को तुम शरीक करते हो। (78)

वेशक मैं ने अपना मुँह यक रख हो कर उस की तरफ़ मोड़ लिया जिस ने ज़मीन और आस्मान बनाए और मैं शिर्क करने वालों से नहीं। (79)

और उस की क़ौम ने उस से झगड़ा किया तो उस ने कहा क्या तुम मुझ से अल्लाह (के बारे) में झगड़ते हो? उस ने मुझे हिदायत दे दी है और मैं उन से नहीं डरता जिन्हें तुम शरीक ठहराते हो उस का, मगर यह कि मेरा रब कुछ (तक्लीफ़) पहुँचाना चाहे, मेरे रब के इल्म ने हर चीज़ का अहाता कर लिया है, सो क्या तुम सोचते नहीं? (80)

और मैं तुम्हारे शरीक से क्योंकर डरूँ? और तुम (इस से) नहीं डरते कि अल्लाह का शरीक करते हो जिस की उस ने नहीं उतारी तुम पर कोई दलील, सो दोनों फ़रीक़ में से अमन (दिलजमई) का कौन ज़ियादा हक़दार है? (बताओ) अगर तुम जानते हो। (81)

قَوْلُهُ الْحَقُّ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ عِلْمُ الْغَيْبِ									
उस की बात	सच्ची	और उस का	मुल्क	जिस दिन	फूँका जाएगा	सूर	जानने वाला	ग़ैब	
وَالشَّهَادَةُ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ﴿٧٣﴾ وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ أَرَزَّرَ									
और ज़ाहिर	और वही	हिक्मत वाला	ख़बर रखने वाला	73	और जब	कहा	इब्राहीम (अ)	अपने बाप को	आज़र
أَتَّخِذُ أَصْنَامًا آلِهَةً إِنِّي أَرَاكَ وَقَوْمَكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٧٤﴾									
क्या तू बनाता है	बुत (जमा)	माबूद	वेशक मैं	तुझे देखता हूँ	और तेरी क़ौम	गुमराही में	खुली	74	
وَكَذَلِكَ نُرِي إِبْرَاهِيمَ مَلَكَوتِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلِيَكُونَ									
और इसी तरह	हम दिखाने लगे	इब्राहीम (अ)	बादशाही	आस्मानों (जमा)	और ज़मीन	और ताकि हो जाए वह			
مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٥﴾ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ اللَّيْلُ رَأَى كَوْكَبًا قَالَ هَذَا									
से	यकीन करने वाले	75	फिर जब	अन्धेरा कर लिया	उस पर	रात	उस ने देखा	एक सितारा	उस ने कहा
رَبِّي فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَا أُحِبُّ الْإِفْلِينَ ﴿٧٦﴾ فَلَمَّا رَأَى الْقَمَرَ بَازِعًا									
मेरा रब	फिर जब	गाइब हो गया	उस ने कहा	नहीं	मैं दोस्त रखता	गाइब होने वाले	76	फिर जब देखा	चाँद
قَالَ هَذَا رَبِّي فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَئِن لَّمْ يَهْدِنِي رَبِّي لَأَكُونَنَّ									
बोले	यह	मेरा रब	फिर जब	गाइब होगया	कहा	अगर	न हिदायत दे मुझे	मेरा रब	तो मैं हो जाऊँ
مِنَ الْقَوْمِ الضَّالِّينَ ﴿٧٧﴾ فَلَمَّا رَأَى الشَّمْسَ بَازِعَةً قَالَ هَذَا رَبِّي									
से	क़ौम-लोग	भटकने वाले	77	फिर जब उस ने देखा	सूरज	जगमगाता हुआ	बोले	यह	मेरा रब
هَذَا أَكْبَرُ فَلَمَّا أَفَلَتْ قَالَ يُقَوْمِ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ﴿٧٨﴾									
यह	सब से बड़ा	फिर जब	वह गाइब हो गया	कहा	ऐ मेरी क़ौम	वेशक मैं	बेज़ार	उस से जो	तुम शिर्क करते हो
إِنِّي وَجْهْتُ وَجْهِيَ لِلذَّيِّ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ حَنِيفًا وَمَا أَنَا									
वेशक मैं	मैं ने मुँह मोड़ लिया	मैं ने मुँह मोड़ लिया	अपना मुँह	उस की तरफ़ जिस	बनाए	आस्मान (जमा)	और ज़मीन	यक रख हो कर	और नहीं मैं
مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٧٩﴾ وَحَاجَّهُ قَوْمُهُ قَالَ أَتُحَاجُّونَنِي فِي اللَّهِ									
से	शिर्क करने वाले	79	और उस से झगड़ा किया	उस की क़ौम	उस ने कहा	क्या तुम मुझ से झगड़ते हो	अल्लाह (के बारे) में		
وَقَدْ هَدِنْتُ وَلَا أَخَافُ مَا تُشْرِكُونَ بِهِ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ رَبِّي شَيْئًا									
और उस ने मुझे हिदायत दे दी है	और नहीं डरता मैं	जो तुम शरीक करते हो	उस का	मगर	यह कि	चाहे	मेरा रब	कुछ	
وَسِعَ رَبِّي كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٨٠﴾ وَكَيْفَ أَخَافُ									
अहाता कर लिया	मेरा रब	हर चीज़	इल्म	सो क्या तुम नहीं सोचते	80	और क्योंकर	मैं डरूँ		
مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُمْ بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ عَلَيْكُمْ									
जो तुम शरीक करते हो (तुम्हारे शरीक)	और तुम नहीं डरते	कि तुम	शरीक करते हो	अल्लाह का	जो	नहीं उतारी	उस की	तुम पर	
سُلْطَانًا فَإِنَّ الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨١﴾									
कोई दलील	सो कौन	दोनों फ़रीक़	ज़ियादा हक़दार	अमन का	अगर	तुम	जानते हो	81	

9  
13  
15

الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ							
अमन (दिलजमई)	उन के लिए	यही लोग	जुल्म से	अपना ईमान	और न मिलाया	ईमान लाए	जो लोग
وَهُمْ مُهْتَدُونَ ﴿٨٢﴾ وَتِلْكَ حُجَّتُنَا آتَيْنَهَا إِبْرَاهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِ							
उस की कौम	पर	इब्राहीम (अ)	हम ने यह दी	हमारी दलील	और यह	82	हिदायत याफ़ता
نَزَعُ دَرَجَاتٍ مِّنْ نَّشَاءٍ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٨٣﴾ وَوَهَبْنَا							
और बख़शा हम ने	83	जानने वाला	हिक्मत वाला	तुम्हारा रब	वेशक	हम चाहें	जो - जिस
لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ كُلًّا هَدَيْنَا وَنُوحًا هَدَيْنَا مِن قَبْلُ							
उस से कब्ल	हम ने हिदायत दी	और नूह (अ)	हिदायत दी हम ने	सब को	और याकूब (अ)	इसहाक (अ)	उस को
وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِ دَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ وَأَيُّوبَ وَيُوسُفَ وَمُوسَىٰ وَهَارُونَ							
और हारून (अ)	और मूसा (अ)	और यूसुफ़ (अ)	और अय्यूब (अ)	और सुलेमान (अ)	दाऊद (अ)	उन की औलाद	और से
وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٤﴾ وَزَكَرِيَّا وَيَحْيَىٰ وَعِيسَىٰ وَإِيلَىٰ							
और इलयास (अ)	और ईसा (अ)	और यहया (अ)	और ज़करिया (अ)	84	नेक काम करने वाले	हम बदला देते हैं	और इसी तरह
كُلٌّ مِّنَ الصَّالِحِينَ ﴿٨٥﴾ وَاسْمَاعِيلَ وَالْيَسَعَ وَيُونُسَ وَلُوطًا							
और लूत (अ)	और यूनस (अ)	और अलयसज़ (अ)	और इस्माईल (अ)	85	नेक बन्दे	से	सब
وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٨٦﴾ وَمِن آبَائِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ							
और उन की औलाद	उन के बाप दादा	और से (कुछ)	86	तमाम जहान वाले	पर	हम ने फज़ीलत दी	और सब
وَإِخْوَانِهِمْ وَاجْتَبَيْنَاهُمْ وَهَدَيْنَاهُمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٨٧﴾							
87	सीधा	रास्ता	तरफ़	हम ने हिदायत दी उन्हें	और हम ने चुना उन्हें	और उन के भाई	
ذَٰلِكَ هُدَىٰ اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَن يَشَاءُ مِن عِبَادِهِ							
अपने बन्दे	से	चाहे	जिसे	इस से	हिदायत देता है	अल्लाह की रहनुमाई	यह
وَلَوْ أَشْرَكُوا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٨٨﴾ أُولَئِكَ الَّذِينَ							
वह लोग जो	यह	88	वह करते थे	जो कुछ	उन से	तो ज़ाया हो जाते	वह शिर्क करते
آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ فَإِن يَّكْفُرْ بِهَا هَٰؤُلَاءِ							
यह लोग	इस का	इन्कार करें	पस अगर	और नबूवत	और शरीअत	किताब	हम ने दी उन्हें
فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوا بِهَا بِكَافِرِينَ ﴿٨٩﴾ أُولَئِكَ							
यही लोग	89	इन्कार करने वाले	इस के	वह नहीं	ऐसे लोग	इन के लिए	तो हम मुर्करर कर देते हैं
الَّذِينَ هَدَىٰ اللَّهُ فَيُهْدِيهِمْ أَقْتَدَهُ فَلَا آسَأَلُكُمْ							
नहीं मांगता मैं तुम से	आप (स) कह दें	चलो	सो उन की राह पर	अल्लाह ने हिदायत दी	वह जो		
عَلَيْهِ أَجْرًا إِنَّ هُوَ إِلَّا ذِكْرِي لِلْعَالَمِينَ ﴿٩٠﴾							
90	तमाम जहान वाले	नसीहत	मगर	यह	नहीं	कोई उज़रत	इस पर

जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अपने ईमान को जुल्म से न मिलाया, उन्हीं लोगों के लिए दिलजमई है और वही हिदायत याफ़ता है। (82)

और यह हमारी दलील है जो हम ने इब्राहीम (अ) को उन की कौम पर दी, हम जिस के दरजे चाहें वुलन्द करते हैं। वेशक तुम्हारा रब हिक्मत वाला, जानने वाला। (83)

और हम ने उन (इब्राहीम अ) को बख़शा इसहाक (अ) और याकूब (अ), हम ने सब को हिदायत दी और नूह (अ) को हम ने हिदायत दी उस से कब्ल, और उन की औलाद में से दाऊद (अ) और सुलेमान (अ) और अय्यूब (अ) और यूसुफ़ (अ) और मूसा (अ) और हारून (अ) को, और इसी तरह हम नेक काम करने वालों को बदला देते हैं। (84)

और ज़करिया (अ) और यहया (अ) और ईसा (अ) और इलयास (अ), सब नेक बन्दों में से हैं। (85)

और इस्माईल (अ) और अलयसज़ (अ) और युनुस (अ) और लूत (अ), और सब को हम ने तमाम जहान वालों पर फज़ीलत दी। (86)

और कुछ उन के बाप दादा और उन की औलाद और उन के भाइयों को, और हम ने उन्हें चुना और सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत दी। (87)

यह अल्लाह की रहनुमाई है। वह इस से हिदायत देता है अपने बन्दों में से जिसे चाहे, और अगर वह शिर्क करते तो जो कुछ वह करते थे ज़ाया हो जाता। (88)

यह वह लोग हैं जिन्हें हम ने किताब दी और शरीअत और नबूवत दी, पस अगर यह लोग इस का इन्कार करें तो हम ने इन (बातों) के लिए मुर्करर कर दिए हैं ऐसे लोग जो इस के इन्कार करने वाले नहीं। (89)

यही वह लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी, सो उन की राह पर चलो, आप कह दें मैं उस पर तुम से कोई उज़रत नहीं मांगता, यह तो नहीं मगर नसीहत तमाम जहान वालों के लिए। (90)

10  
16

और उन्होंने ने अल्लाह की कद्र न की (जैसे) उस की कद्र का हक था जब उन्होंने ने कहा कि अल्लाह ने किसी इन्सान पर कोई चीज़ नहीं उतारी, आप (स) कहें (वह) किताब किस ने उतारी जो मूसा (अ) ले कर आए लोगों के लिए, रौशनी और हिदायत। तुम ने उसे बरक़ बरक़ कर दिया है, तुम उसे जाहिर करते हो और अक़सर छुपा लेते हो, और उस ने तुम्हें सिखाया जो न तुम जानते थे और न तुम्हारे बाप दादा, आप (स) कह दें अल्लाह (ने नाज़िल की), फिर उन्हें छोड़ दें अपने बेहूदा शुग़ल में खेलते रहें। (91)

और यह (कुरआन) किताब है बरक़त वाली, हम ने नाज़िल की, अपने से पहली (किताबों) की तसदीक़ करने वाली ताकि तुम डराओ अहले मक्का को और जो उस के ईर्द गिर्द हैं (तमाम आस पास वाले), और जो लोग आख़िरत पर ईमान रखते हैं वह उस पर ईमान लाते हैं और वह अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करते हैं। (92)

और उस से बड़ा ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट (बुहतान) बान्धे, या कहे मेरी तरफ़ वहि की गई है और उसे कुछ वहि नहीं की गई, (उसी तरह वह) जो कहे मैं अभी उतारता हूँ उस के मिस्ल जो अल्लाह ने नाज़िल किया। और अगर तू देखे जब ज़ालिम मौत की सख़्तियों में हों और फ़रिश्ते अपने हाथ फैलाए हों कि अपनी जानें निकालो, आज तुम्हें ज़िल्लत का अज़ाब दिया जाएगा उस सबब से कि तुम अल्लाह के बारे में झूटी बातें कहते थे और उस की आयतों से तकव्वुर करते थे। (93)

और अलबत्ता तुम हमारे पास अकेले अकेले आगए जैसे हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था और जो हम ने तुम्हें (माल ओ असबाब) दिया था छोड़ आए अपनी पीठ पछि, और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे वह सिफ़ारिश करने वाले नहीं देखते (जिन की निसबत) तुम गुमान करते थे कि वह तुम में (तुम्हारे) साझी है, अलबत्ता तुम्हारे दरमियान (रिशता) कट गया और तुम जो दावे करते थे सब जाते रहे। (94)

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ إِذْ قَالُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَيَّ بَشِيرًا										
कोई इन्सान	पर	अल्लाह ने उतारी	नहीं	जब उन्होंने ने कहा	उस की कद्र	हक़	उन्होंने ने अल्लाह की कद्र जानी	और नहीं		
مِّنْ شَيْءٍ قُلْ مَنْ أَنْزَلَ الْكِتَابَ الَّذِي جَاءَ بِهِ مُوسَى نُورًا										
रौशनी	मूसा (अ)	लाए उस को	वह जो	किताब	उतारी	किस	आप (स) कह दें	कोई चीज़		
وَهَدَىٰ لِلنَّاسِ تَجْعَلُونَهُ قَرَاتِيَسِ تُبَدُونَهَا وَتُحْفُونَ كَثِيرًا										
अक़सर	और तुम छुपाते हो	तुम जाहिर करते हो उस को	बरक़ बरक़	तुम ने कर दिया उस को	लोगों के लिए	और हिदायत				
وَعَلَّمْتُمْ مَا لَمْ تَعْلَمُوا أَنْتُمْ وَلَا آبَاؤُكُمْ قُلِ اللَّهُ تَمَّ ذَرَهُمْ										
उन्हें छोड़ दें	फिर	अल्लाह	आप कह दें	तुम्हारे बाप दादा	और न	तुम	तुम न जानते थे	जो	और सिखाया तुम्हें	
فِي خَوْصِهِمْ يَلْعَبُونَ ﴿٩١﴾ وَهَذَا كِتَابٌ مُّبْرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِي										
जो	तसदीक़ करने वाली	बरक़त वाली	हम ने नाज़िल की	किताब	और यह	91	वह खेलते रहें	अपने बेहूदा शुग़ल	में	
بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ										
ईमान रखते हैं	और जो लोग	उस के ईर्द गिर्द	और जो	अहले मक्का	और ताकि तुम डराओ	अपने से पहली (किताबें)				
بِالْآخِرَةِ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَهُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٩٢﴾ وَمَنْ										
और कौन	92	हिफ़ाज़त करते हैं	अपनी नमाज़	पर (की)	और वह	इस पर	ईमान लाते हैं	आख़िरत पर		
أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ قَالَ أُوحِيَ إِلَيَّ وَلَمْ يُوحَ										
और नहीं वहि की गई	मेरी तरफ़	वहि की गई	कहे	या	झूट	अल्लाह पर	घड़े (बान्धे)	से-जो	बड़ा ज़ालिम	
إِلَيْهِ شَيْءٌ وَمَنْ قَالَ سَأُنزِلُ مِثْلَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ										
जब	तू देखे	और अगर	अल्लाह	जो नाज़िल किया	मिस्ल	मैं अभी उतारता हूँ	कहे	और जो	कुछ	उस की तरफ़
الظَّالِمُونَ فِي غَمَرَاتِ الْمَوْتِ وَالْمَلَائِكَةُ بَاسِطُوَ أَيْدِيهِمْ أَخْرِجُوا										
निकालो	अपने हाथ	फैलाए हों	और फ़रिश्ते	मौत	सख़्तियों में	ज़ालिम (जमा)				
أَنْفُسَكُمْ ٱلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ										
अल्लाह पर (के बारे में)	तुम कहते थे	बसबब	ज़िल्लत	अज़ाब	आज तुम्हें बदला दिया जाएगा	अपनी जानें				
غَيْرِ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ آيَاتِهِ تَسْتَكْبِرُونَ ﴿٩٣﴾ وَلَقَدْ جِئْتُمُونَا										
तुम आगए हमारे पास	और अलबत्ता	93	तकव्वुर करते	उस की आयतें	से	और तुम थे	झूट			
فُرَادَىٰ كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَتَرَكْتُمْ مَا خَوَّلْنَاكُمْ وَرَاءَ ظُهُورِكُمْ										
अपनी पीठ	पीछे	हम ने दिया था तुम्हें	जो	और तुम छोड़ आए	बार	पहली	हम ने तुम्हें पैदा किया	जैसे	एक एक (अकेले)	
وَمَا نَرَىٰ مَعَكُمْ شُفَعَاءَكُمُ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ أَنَّهُمْ فِيكُمْ شُرَكَؤُا										
साझी है	तुम में	कि वह	तुम गुमान करते थे	वह जो	सिफ़ारिश करने वाले तुम्हारे	तुम्हारे साथ	हम देखते	और नहीं		
لَقَدْ تَقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَصَلَ عَنكُمْ مَا كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٩٤﴾										
94	तुम दावा करते थे	जो	तुम से	और जाते रहे	तुम्हारे दरमियान	अलबत्ता कट गया				

<p>إِنَّ اللَّهَ فَلِقُ الْحَبِّ وَالنَّوَى يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ</p>								
और निकालने वाला	मुर्दा	से	ज़िन्दा	निकालता है	और गुठली	दाना	फाड़ने वाला	वेशक अल्लाह
<p>الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ذَلِكُمْ اللَّهُ فَاتَى تُؤَفَّكُونَ ﴿٩٥﴾ فَالِقُ الْإِصْبَاحِ</p>								
चौर कर (चाक करके) निकालने वाला सुबह	95	तुम वहके जा रहे हो	पस कहां	यह है तुम्हारा अल्लाह	ज़िन्दा	से	मुर्दा	
<p>وَجَعَلَ اللَّيْلَ سَكَنًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ذَلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ</p>								
ग़ालिब	अन्दाज़ा	यह	हिसाब	और चाँद	और सूरज	सुकून	रात	और उस ने बनाया
<p>الْعَلِيمِ ﴿٩٦﴾ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ النُّجُومَ لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي</p>								
में	उन से	ताकि तुम रास्ता मालूम करो	सितारे	तुम्हारे लिए	बनाए	वह जिस	और वही	96
<p>الْعِلْمِ وَالْبَحْرِ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٩٧﴾</p>								
97	इल्म रखते हैं	लोगों के लिए	वेशक हम ने खोल कर बयान कर दी है आयतें	और दर्या	खुशकी	अन्धेरे		
<p>وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَمُسْتَوْدَعٌ</p>								
और अमानत की जगह	फिर एक ठिकाना	एक	वजूद-शख्स	से	पैदा किया तुम्हें	वह जो-जिस	और वही	
<p>قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَفْقَهُونَ ﴿٩٨﴾ وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ</p>								
से	उतारा	वह जो-जिस	और वही	98	जो समझते हैं	लोगों के लिए	वेशक हम ने खोल कर बयान कर दी है आयतें	
<p>السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا</p>								
सबज़ी	उस से	फिर हम ने निकाली	हर चीज़	उगने वाली	उस से	फिर हम ने निकाली	पानी	आस्मान
<p>تُخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُتَرَاكِبًا وَمِنَ النَّخْلِ مِنَ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ</p>								
झुके हुए	खोशे	गाभा	से	खजूर	और	एक पर एक चढ़ा हुआ	दाने	उस से
<p>وَجَنَّتِ مِنَ الْأَعْنَابِ وَالزَّيْتُونِ وَالرَّمَّانِ مُشْتَبِهًا وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ</p>								
और नहीं भी मिलते	मिलते जुलते	और अनार	और ज़ैतून	अंगूर के	और बागात			
<p>أَنْظُرُوا إِلَى ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَيَنْعِهِ إِنَّ فِي ذَلِكُمْ</p>								
उस	में	वेशक	और उस का पकना	फलता है	जब	उस का फल	तरफ	देखो
<p>لَايَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٩٩﴾ وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ</p>								
हालांकि उस ने उन्हें पैदा किया	जिन	शरीक	अल्लाह का	और उन्होंने ने ठहराया	99	ईमान रखते हैं	लोगों के लिए	निशानियां
<p>وَخَرَقُوا لَهُ بَنِينَ وَبَنَاتٍ بِغَيْرِ عِلْمٍ سُبْحٰنَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُصِفُونَ ﴿١٠٠﴾</p>								
100	वह बयान करते हैं	उस से जो	और बुलन्द तर	वह पाक है	इल्म के बग़ैर (जहालत से)	और बेटियां	बेटे	उस के लिए
<p>بَدِيعِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ أَتَى يَكُونُ لَهُ وَلَدٌ وَلَمْ تَكُنْ لَهُ</p>								
उस की	जबकि नहीं	बेटा	उस का	हो सकता है	क्योंकर	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	नई तरह बनाने वाला
<p>صَاحِبَةً وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٠١﴾</p>								
101	जानने वाला	हर चीज़	और वह	हर चीज़	और उस ने पैदा की	वीवी		

वेशक अल्लाह फाड़ने वाला दाने और गुठली का, वह मुर्दा से ज़िन्दा निकालता है और ज़िन्दा से मुर्दा निकालने वाला, यह है तुम्हारा अल्लाह, पस तुम कहां वहके जा रहे हो? (95)

(रात की तारीकी) चाक कर के सुबह निकालने वाला, और उस ने रात को (ज़रीज़ा) सुकून बनाया और सूरज और चाँद को (ज़रीज़ा) हिसाब, यह अन्दाज़ा है ग़ालिब, इल्म वाले का। (96)

वही है जिस ने तुम्हारे लिए सितारे बनाए ताकि तुम उन से खुशकी और दर्या के अन्धेरे में रास्ते मालूम करो, वेशक हम ने आयतें खोल खोल कर बयान कर दी हैं उन लोगों के लिए जो इल्म रखते हैं। (97)

और वही है जिस ने तुम्हें एक वजूद से पैदा किया, फिर तुम्हारा एक ठिकाना है और अमानत रहने की जगह। वेशक हम ने आयात खोल कर बयान कर दी है समझ वालों के लिए। (98)

और वही है जिस ने आस्मानों से पानी उतारा, फिर हम ने उस से निकाली उगने वाली हर चीज़, फिर हम ने उस से हरे हरे केत और दरखत निकाले जिस से एक पर एक चढ़े हुए दाने निकालते हैं, और खजूरों के गाभे से झुके हुए खोशे, और अंगूर और ज़ैतून और अनार के

वागात एक दूसरे से मिलते जुलते और नहीं भी मिलते, उस के फल की तरफ देखो जब वह फलता है और उस का पकना (देखो), वेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ईमान रखते हैं। (99)

और उन्होंने ने जिन्नों को अल्लाह का शरीक ठहराया हालांकि उस ने उन्हें पैदा किया है और वह उस के लिए बेटे और बेटियां तराशते हैं जहालत से, वह पाक है और उस से बुलन्द तर है जो वह बयान करते हैं। (100)

नई तरह (नमूने के बग़ैर) आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला, उस के बेटा क्योंकर हो सकता है? जबकि उस की बीबी नहीं और उस ने हर चीज़ पैदा की है, और वह हर चीज़ का जानने वाला है। (101)

12  
18

यही अल्लाह तुम्हारा रब है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं, हर चीज़ का पैदा करने वाला, सो तुम उस की इबादत करो, और वह हर चीज़ का कारसाज़ और निगहवान है। (102)

(मखलूक की) आँखें उस को नहीं पा सकती और वह आँखों को पा सकता है और वह भेद जानने वाला खबरदार है। (103)

तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानियाँ आ चुकीं। तो जिस ने देख लिया सो अपने वास्ते, और जो अन्धा रहा तो (उस का बवाल) उस की जान पर, और मैं तुम पर निगहवान नहीं। (104)

और उसी तरह हम आयतें फेर फेर कर बयान करते हैं ताकि वह कहें: तू ने (किसी से) पढ़ा है, और ताकि हम जानने वालों के लिए वाज़ेह कर दें। (105)

उस पर चलो जो वहि आए तुम्हारे रब से तुम्हारी तरफ़, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, और मुश्रिकों से मुँह फेर लो। (106)

अगर अल्लाह चाहता तो वह शिर्क न करते और हम ने तुम्हें उन पर निगहवान नहीं बनाया, और तुम उन पर दारोगा नहीं। (107)

और अल्लाह के सिवा वह जिन्हें पुकारते हैं तुम उन्हें गाली न दो, पस वह अल्लाह को वे समझे बूझे गुस्ताखी से बुरा कहेंगे, उसी तरह हम ने हर फिरके को उस का अमल भला दिखाया, फिर उन्हें अपने रब की तरफ़ लौटना है, वह फिर उन को जता देगा जो वह करते थे। (108)

और वह ताकीद से अल्लाह की कसम खाते हैं कि अगर उन के पास कोई निशानी आए तो ज़रूर उस पर ईमान लाएंगे, आप (स) कह दें कि निशानियाँ तो अल्लाह के पास हैं, और तुम्हें क्या खबर कि जब आ भी जाएं तो यह ईमान न लाएंगे। (109)

और हम उन के दिल और उन की आँखें उलट देंगे, जैसे वह उन (निशानियों) पर पहली बार ईमान नहीं लाए, और हम उन्हें छोड़ देंगे उन की सरकशी में कि वह बहकते रहें। (110)

ذِكْمُ اللّٰهٖ رَبُّكُمْ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوهُ ۚ							
सो तुम उस की इबादत करो	हर चीज़	पैदा करने वाला	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	तुम्हारा रब	यही अल्लाह	
وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ﴿١٠٢﴾ لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ							
पा सकता है	और वह	आँखें	नहीं पा सकती उस को	102	कारसाज़-निगहवान	हर चीज़	पर और वह
الْاَبْصَارَ وَهُوَ اللّٰطِيفُ الْخَبِيرُ ﴿١٠٣﴾ قَدْ جَاءَكُمْ بَصَائِرُ مِنْ							
से	निशानियाँ	आ चुकीं तुम्हारे पास	103	खबरदार	भेद जानने वाला	और वह	आँखें
رَبِّكُمْ ۚ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا وَمَا اَنَا عَلَيْكُمْ							
तुम पर	मैं	और नहीं	तो उस की जान पर	अन्धा रहा	और जो	सो अपने वास्ते	देख लिया सो जो-जिस तुम्हारा रब
بِحَفِیْظٍ ﴿١٠٤﴾ وَكَذٰلِكَ نُوْصِرُ الْاٰیٰتِ وَلِيَقُوْلُوْا دَرَسَتْ							
तू ने पढ़ा है	और ताकि वह कहें	आयतें	हम फेर फेर कर बयान करते हैं	और उसी तरह	104	निगहवान	
وَلِنَبِيْنَهٗ لِقَوْمٍ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠٥﴾ اَتَّبِعْ مَا اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ ۚ							
तुम्हारा रब	से	तुम्हारी तरफ़	जो वहि आए	तुम चलो	105	जानने वालों के लिए	और ताकि हम वाज़ेह कर दें
لَا اِلَهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرَضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٦﴾ وَلَوْ شَاءَ اللّٰهُ							
चाहता अल्लाह	और अगर	106	मुश्रिकीन	से	और मुँह फेर लो	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद
مَا اَشْرَكُوْا ۚ وَمَا جَعَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِیْظًا ۚ وَمَا اَنْتَ عَلَيْهِمْ							
उन पर	तुम	और नहीं	निगहवान	उन पर	बनाया तुम्हें	और नहीं	न शिर्क करते वह
بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٧﴾ وَلَا تُسَبُّوْا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوْا							
पस वह बुरा कहेंगे	अल्लाह के सिवा	से	वह परस्तिश करते हैं	वह जिन्हें	और तुम न गाली दो	107	दारोगा
اللّٰهَ عَدُوًّا بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۚ ثُمَّ							
फिर	उन का अमल	फिर्का	हम ने भला दिखाया हर एक	उसी तरह	वे समझे बूझे	गुस्ताखी से	अल्लाह
اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٨﴾ وَاَقْسَمُوْا							
और वह कसम खाते थे	108	करते थे	जो वह	वह फिर उन को जता देगा	उन को लौटना	अपना रब	तरफ़
بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَبِنَ جَاءَتْهُمْ اٰیَةٌ لِّیُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ قُلْ							
आप कह दें	उस पर	तो ज़रूर ईमान लाएंगे	कोई निशानी	उन के पास आए	अलवत्ता अगर	ताकीद से	अल्लाह की
اِنَّمَا الْاٰیٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۚ اِنَّهَا اِذَا جَاءَتْ							
जब आएँ	कि वह	खबर तुम्हें	और क्या	अल्लाह के पास	निशानियाँ	कि	
لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٩﴾ وَنُقَلِّبُ اَفْئِدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوْا							
वह ईमान नहीं लाए	जैसे	और उन की आँखें	उन के दिल	और हम उलट देंगे	109	ईमान न लाएंगे	
بِهٖٓ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّ نَذَرُهُمْ فِیْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١١٠﴾							
110	वह बहकते रहें	उन की सरकशी	में	और हम छोड़ देंगे उन्हें	पहली बार	उस पर	



<b>وَلَوْ أَنَّا نَزَّلْنَا إِلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتَىٰ</b>						
मुर्दे	और उन से बातें करते	फरिश्ते	उन की तरफ	उतारते	हम	और अगर
<b>وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا إِلَّا أَنْ</b>						
यह कि	मगर	वह ईमान लाते	न	सामने	हर शौ	उन पर
<b>يَشَاءَ اللَّهُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُونَ ﴿١١١﴾ وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ</b>						
हर नबी के लिए	हम ने बनाया	और इसी तरह	111	जाहिल (नादान) है	उन में अक्सर	और लेकिन चाहे अल्लाह
<b>عَدُوًّا شَيْطِينِ الْإِنْسِ وَالْجِنَّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ</b>						
बाज़	तरफ	उन के बाज़	डालते हैं	और जिन	इन्सान	शैतान (जमा)
<b>زُحْرَفِ الْقَوْلِ غُرُورًا ۗ وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُ فَذَرْهُمْ</b>						
पस छोड़ दें उन्हें	वह न करते	तुम्हारा रब	चाहता	और अगर	बहकाने के लिए	बातें
<b>وَمَا يَفْتَرُونَ ﴿١١٢﴾ وَلِتَصْغَىٰ إِلَيْهِ أَفِيدَةُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ</b>						
ईमान नहीं रखते	वह लोग जो	दिल (जमा)	उस की तरफ	और ताकि माइल हो जाएं	112	वह झूट घड़ते हैं
<b>بِالْآخِرَةِ وَلِيَرِضُوهُ وَلِيَقْتَرِفُوا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُونَ ﴿١١٣﴾ أَفَعَيَّرَ اللَّهُ</b>						
तो क्या अल्लाह के सिवा	113	बुरे काम करते हैं	वह	जो	और ताकि वह करते रहें	और ताकि वह उस को पसन्द करलें
<b>أَبْتَعَىٰ حَكْمًا وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ إِلَيْكُمُ الْكِتَابَ مُفَصَّلًا ۗ</b>						
मुफ़ससिल (वाज़ेह)	किताब	तुम्हारी तरफ	नाज़िल की	जो-जिस	और वह	कोई मुनसिफ़
<b>وَالَّذِينَ اتَّيْنَهُمُ الْكِتَابَ يَعْلَمُونَ أَنَّهُ مُنَزَّلٌ مِّن رَّبِّكَ</b>						
तुम्हारा रब	से	उतारी गई है	कि यह	वह जानते हैं	किताब	हम ने उन्हें दी
<b>بِالْحَقِّ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿١١٤﴾ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ</b>						
तेरा रब	वात	और पूरी है	114	शक करने वाले	से	सो तुम न होना
<b>صِدْقًا وَعَدْلًا ۗ لَا مُبَدَّلَ لِكَلِمَتِهِ ۗ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١١٥﴾</b>						
115	जानने वाला	सुनने वाला	और वह	उस के कलिमात	नहीं बदलने वाला	और इन्साफ़
<b>وَإِنْ تُطِعْ أَكْثَرَ مَن فِي الْأَرْضِ يُضِلُّوكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ</b>						
अल्लाह का रास्ता	से	वह तुझे भटका देंगे	ज़मीन में	जो	अक्सर	तू कहा माने
<b>إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿١١٦﴾ إِنَّ رَبَّكَ</b>						
तेरा रब	वेशक	116	अटकल दौड़ाते हैं	मगर	वह	और नहीं गुमान
<b>هُوَ أَعْلَمُ مَن يَضِلُّ عَنْ سَبِيلِهِ ۗ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿١١٧﴾</b>						
117	हिदायत याफ़ता लोगों को	खूब जानता है	और वह	उस का रास्ता	से	बहकता है
<b>فَكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾</b>						
118	ईमान वाले	उस की आयतों पर	तुम हो	अगर	उस पर	अल्लाह का नाम लिया गया

और अगर हम उन की तरफ़ फ़रिश्ते उतारते, और उन से मुर्दे बातें करते, और हम जमा कर देते उन पर (उन के सामने) हर चीज़ तो भी वह ईमान न लाते मगर यह कि अल्लाह चाहे, और लेकिन उन में अक्सर नादान हैं। (111)

और इसी तरह हम ने हर नबी के लिए इन्सानों और जिनों के शयातीन को दुश्मन बना दिया, एक दूसरे की तरफ़ मुलम्मा की हुई बातें बहकाने के लिए इलका करते रहते हैं, और अगर तुम्हारा रब चाहता तो वह ऐसा न करते, पस उन्हें छोड़ दें (उस के साथ) जो वह झूट घड़ते हैं। (112)

और ताकि उन लोगों के दिल उस की तरफ़ माइल हो जाएं जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, और ताकि वह उस को पसन्द करें, और ताकि वह करते रहें जो वह बुरे काम करते हैं। (113)

क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और मुनसिफ़ ढूँढ़ूँ? और वही है जिस ने तुम्हारी तरफ़ मुफ़ससिल (वाज़ेह) किताब नाज़िल की है, और जिन्हें हम ने किताब दी है (अहले किताब) वह जानते हैं कि यह तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ के साथ उतारी गई है, सो तुम शक करने वालों में से न होना। (114)

और कामिल है तेरे रब की बात सच और इन्साफ़ के ऐतिवार से, उस के कलिमात को कोई बदलने वाला नहीं, और वह सुनने वाला, जानने वाला है। (115)

और ज़मीन में अक्सर (ऐसे हैं) अगर तू उन का कहा माने तो वह तुझे अल्लाह के रास्ते से भटका देंगे, वह नहीं पैरवी करते मगर सिर्फ़ गुमान की, और वह सिर्फ़ अटकल दौड़ाते हैं। (116)

वेशक तेरा रब उसे खूब जानता है जो बहकता है उस के रास्ते से, और वह हिदायत याफ़ता लोगों को खूब जानता है। (117)

सो तुम उस में से खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया अगर तुम उस की आयतों पर ईमान रखते हो। (118)

और तुम्हें क्या हुआ कि तुम उस में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया है हालांकि वह तुम्हारे लिए वाज़ेह कर चुका है जो उस ने तुम पर हाराम किया है मगर यह कि तुम लाचार हो जाओ, और बहुत से (लोग) अपनी खाहिशात से इल्म (तहकीक) के बग़ैर गुमराह करते हैं, वेशक तुम्हारा रब हद से बढ़ने वालों को खूब जानता है। (119)

और छोड़ दो खुला गुनाह और छुपा हुआ, वेशक जो लोग गुनाह करते हैं अ़नक़रीब उस की सज़ा पालेंगे जो वह बुरे काम करते थे। (120)

और उस से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम नहीं लिया गया और वेशक यह गुनाह है, और वेशक शैतान अपने दोस्तों के (दिलों में वसवसा) डालते हैं ताकि वह तुम से झगड़ा करें, और अगर तुम ने उन का कहा माना तो वेशक तुम मुशर्रिक होगे। (121)

क्या (वह शख्स) जो मुर्दा था फिर हम ने उस को ज़िन्दा क्या और हम ने उस के लिए नूर बनाया, वह चलता है उस (नूर की रौशनी) से लोगों में, (क्या) उस जैसा हो जाएगा जो अन्धेरो में है? उस से निकलने वाला नहीं, इसी तरह काफ़िरो के लिए उन के अ़मल ज़ीनत दिए गए। (122)

और इसी तरह हम ने हर बस्ती में बनाए उस के बड़े मुज़रिम ताकि वह उस में मकर करें, और वह मकर नहीं करते मगर अपनी जानों पर, (अपनी ही जानों पर चालें चलते हैं), ओर वह शऊर नहीं रखते। (123)

और जब उन के पास कोई आयत आती है तो कहते हैं कि हम हरगिज़ न मानेंगे जब तक हमें उस जैसा न दिया जाए जो अल्लाह के रसूलों को दिया गया, अल्लाह खूब जानता है कि अपनी रिसालत कहां भेजे, अ़नक़रीब उन लोगों को पहुँचेगी जिन्होंने ने जुर्म किया, अल्लाह के हौं ज़िल्लत और सख़्त अज़ाब, उस का बदला कि वह मकर करते थे। (124)

وَمَا لَكُمْ إِلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ إِلَيْهِ وَإِنَّ كَثِيرًا لَّيُضِلُّونَ بِأَهْوَاءِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ﴿١١٩﴾ وَذَرُوا ظَاهِرَ الْإِثْمِ وَبَاطِنَهُ إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ الْإِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوا يَقْتَرِفُونَ ﴿١٢٠﴾ وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ وَإِنَّ الشَّيْطَانَ لِيُوحِوْنَ إِلَىٰ أَوْلِيَٰهِمْ لِيُجَادِلُوكُمْ ۖ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ ﴿١٢١﴾ أَوْ مَن كَانَ مَيِّتًا فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ كَمَن مَّثَلَهُ فِي الظُّلْمِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ۗ كَذَلِكَ زُيِّنَ لِلْكَافِرِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢٢﴾ وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكْبَرَ مُجْرِمِيهَا لِيَمْكُرُوا فِيهَا وَمَا يَمْكُرُونَ إِلَّا بِأَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿١٢٣﴾ وَإِذَا جَاءَتْهُمْ آيَةٌ قَالُوا لَنْ نُؤْمِنَ حَتَّىٰ نُؤْتَىٰ مِثْلَ مَا أُوتِيَ رُسُلُ اللَّهِ ۗ اللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُ ۗ سَيُصِيبُ الَّذِينَ أَجْرَمُوا صَغَارٌ عِنْدَ اللَّهِ وَعَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا كَانُوا يَمْكُرُونَ ﴿١٢٤﴾							
हालांकि वह वाज़ेह कर चुका है	उस पर	नाम अल्लाह का	लिया गया	उस से जो	कि तुम न खाओ	और क्या हुआ तुम्हें	
बहुत से	और वेशक	उसकी तरफ़ (उस पर)	तुम लाचार हो जाओ	जिस मगर	तुम पर	जो उस ने हाराम किया	तुम्हारे लिए
खूब जानता है	वह	तेरा रब	वेशक	इल्म के बग़ैर	अपनी खाहिशात से	गुमराह करते हैं	
जो लोग	वेशक	और उस का छुपा हुआ	खुला गुनाह	और छोड़ दो	119	हद से बढ़ने वालों को	
और न खाओ	120	वह बुरे काम करते	थे	उस की जो	अ़नक़रीब सज़ा पाएंगे	गुनाह	कमाते (करते) हैं
शैतान (जमा)	और वेशक	अलबत्ता गुनाह	और वेशक यह	उस पर	अल्लाह का नाम	नहीं लिया गया	उस से जो
तो वेशक तुम	तुम ने उन का कहा माना	और अगर	ताकि वह झगड़ा करें तुम से	अपने दोस्त	तरफ़ (में)	डालते हैं	
नूर	उस के लिए	और हम ने बनाया	फिर हम ने उस को ज़िन्दा किया	मुर्दा था	क्या जो	121	मुशर्रिक होगे
निकलने वाला	नहीं	अन्धेरे	में	उस जैसा जो	लोग	में	उस से वह चलता है
और इसी तरह	122	जो वह करते थे (अ़मल)	जो	काफ़िरो के लिए	ज़ीनत दिए गए	इसी तरह	उस से
और नहीं	उस में	ताकि वह मकर करें	उस के मुज़रिम	बड़े	बस्ती	हर	में हम ने बनाए
उन के पास आती है	और जब	123	वह शऊर रखते	और नहीं	अपनी जानों पर	मगर	वह मकर करते
अल्लाह	रसूल (जमा)	दिया गया	उस जैसा जो	हम को दिया जाए	जब तक	हम हरगिज़ न मानेंगे	कोई आयत
उन्होंने ने जुर्म किया	वह लोग जो	अ़नक़रीब पहुँचेगी	अपनी रिसालत	रखे (भेजे)	कहाँ	खूब जानता है	अल्लाह
124	वह मकर करते थे	उस का बदला	सख़्त	और अज़ाब	अल्लाह के हौं	ज़िल्लत	

۱۲

وقف منزل

فَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يَهْدِيَهُ يَشْرَحْ صَدْرَهُ لِإِسْلَامٍ						
इस्लाम के लिए	उस का सीना	खोल देता है	कि उसे हिदायत दे	अल्लाह चाहता है	पस जिस	
وَمَنْ يُرِدْ أَنْ يُضِلَّهُ يَجْعَلْ صَدْرَهُ ضَيِّقًا حَرَجًا كَانَمَا						
गोया कि	भींचा हुआ	तंग	उस का सीना	कर देता है	उसे गुमराह करे	कि चाहता है और जिस
يَصْعَدُ فِي السَّمَاءِ كَذَلِكَ يَجْعَلُ اللَّهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ						
जो लोग	पर	नापाकी (अज़ाब)	कर देता है (डाले गा) अल्लाह	इसी तरह	आस्मानों में- आस्मान पर	ज़ोर से चढ़ता है
لَا يُؤْمِنُونَ (125) وَهَذَا صِرَاطٌ رَبِّكَ مُسْتَقِيمًا قَدْ فَصَّلْنَا						
हम ने खोल कर बयान कर दी है	सीधा	तुम्हारा रब	रास्ता	और यह	125	ईमान नहीं लाते
الآيَاتِ لِقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ (126) لَهُمْ دَارُ السَّلَامِ عِنْدَ رَبِّهِمْ						
उन का रब	पास-हां	सलामती का घर	उन के लिए	126	जो नसीहत पकड़ते हैं	उन लोगों के लिए आयात
وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (127) وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ						
वह जमा करेगा	और जिस दिन	127	वह करते थे	उसका सिला जो	दोस्त दार- कारसाज़	और वह
جَمِيعًا يَمْعَشَرُ الْجِنَّةِ قَدْ اسْتَكْثَرْتُمْ مِنَ الْإِنْسِ وَقَالَ						
और कहेंगे	इन्सान- आदमी	से	तुम ने बहुत घेर लिए (अपने ताबे कर लिए)	ऐ जिन्नात के गिरोह	सब	
أَوْلِيَّيَهُمْ مِنَ الْإِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَبَلَّغْنَا						
और हम पहुँचे	बाज़ से	हमारे बाज़	हम ने फाइदा उठाया	ऐ हमारे रब	इन्सान	से उन के दोस्त
أَجَلَنَا الَّذِي أَجَلْتَنَا لَنَا قَالَ النَّارُ مَثْوَاكُمْ خَلِدِينَ						
हमेशा रहेंगे	तुम्हारा ठिकाना	आग	फरमाएगा	हमारे लिए	तू ने सुर्कर की थी	जो मीज़ाद
فِيهَا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ (128) وَكَذَلِكَ						
और इसी तरह	128	जानने वाला	हिकमत वाला	तुम्हारा रब	वेशक	अल्लाह चाहे जिसे मगर उस मे
نُؤَلِّي بَعْضَ الظَّالِمِينَ بَعْضًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ (129)						
129	जो वह करते थे (उन के आमाल)	उसके सबब	बाज़ पर	ज़ालिम (जमा)	बाज़	हम मुसल्लत कर देते हैं
يَمْعَشَرُ الْجِنَّةِ وَالْإِنْسِ أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ						
तुम में से	रसूल (जमा)	क्या नहीं आए तुम्हारे पास	और इन्सान	जिन्नात	ऐ गिरोह	
يَقُضُونَ عَلَيْكُمْ أَيْتِي وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ						
तुम्हारा दिन	सुलाकात (देखना)	और तुम्हें डराते थे	मेरी आयात	तुम पर	सुनाते थे (बयान करते थे)	
هَذَا قَالُوا شَهِدْنَا عَلَى أَنْفُسِنَا وَعَظَّمْتَهُمُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا						
दुनिया	ज़िन्दगी	और उन्हें धोके में डाल दिया	अपनी जानें	पर (खिलाफ)	वह कहेंगे हम गवाही देते हैं	इस
وَشَهِدُوا عَلَى أَنْفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ (130)						
130	कुफ़ करने वाले थे	कि वह	अपनी जाने (अपने)	पर (खिलाफ)	और उन्होंने ने गवाही दी	

पस अल्लाह जिस को हिदायत देना चाहता है, उस का सीना इस्लाम के लिए खोल देता है। और जिस को चाहता है कि उसे गुमराह करे, उस का सीना तंग भींचा हुआ (निहायत तंग) कर देता है। गोया कि वह ज़ोर से (बमुश्किल) आस्मान पर चढ़ रहा है, इसी तरह अल्लाह उन लोगों पर अज़ाब डालेगा जो ईमान नहीं लाते। (125)

यह रास्ता है तुम्हारे रब का सीधा, हम ने आयात खोल कर बयान कर दी है उन लोगों के लिए जो नसीहत पकड़ते हैं, (126)

उन के लिए उन के रब के पास सलामती का घर है और वह उन का कारसाज़ है उस के सिले में जो वह करते थे। (127)

और जिस दिन वह जमा करेगा उन सब को (फरमाएगा) ऐ गिरोह जिन्नात! तुम ने बहुत से आदमी अपने ताबे कर लिए, और इन्सानों में से उन के दोस्त कहेंगे ऐ हमारे रब! हमारे बाज़ ने बाज़ (एक दूसरे) से फाइदा उठाया और हम उस मीज़ाद (घड़ी) को पहुँच गए जो तू ने मूकर्र की थी। फरमाएगा आग तुम्हारा ठिकाना है, उस में हमेशा रहेंगे मगर जिसे अल्लाह चाहे, वेशक तुम्हारा रब हिकमत वाला, जानने वाला है। (128)

और इसी तरह हम बाज़ ज़ालिमों को बाज़ पर (एक दूसरे पर) मुसल्लत कर देते हैं उन के आमाल के सबब। (129)

ऐ गिरोहे जिन्नात ओ इन्सान! क्या तुम्हारे पास तुम में से हमारे रसूल नहीं आए? वह तुम पर हमारे अहकाम बयान करते थे और तुम्हें डराते थे यह दिन देखने से। वह कहेंगे हम अपनी जानों के खिलाफ़ (अपने खिलाफ़) गवाही देते हैं, और उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने धोके में डाल दिया और उन्होंने ने अपने खिलाफ़ गवाही दी कि वह काफ़िर थे। (130)

यह इस लिए है कि तेरा रब जुल्म की सज़ा में बसतियों को हलाक करने वाला नहीं जब कि उन के लोग बेख़बर हों। (131)

और हर एक के लिए उन के आमाल के दरजे हैं और तुम्हारा रब उस से बेख़बर नहीं जो वह करते हैं। (132)

और तुम्हारा रब बेनियाज़ है, रहमत वाला, अगर वह चाहे तो तुम्हें ले जाए (हलाक कर दे) और जिस को चाहे तुम्हारे बाद जानशीन कर दे, जैसे उस ने तुम्हें उठाया औलाद से एक दूसरी कौम की। (133)

बेशक जिस का तुम से वादा किया जाता है वह ज़रूर आने वाली है और तुम आज़िज़ करने वाले नहीं। (134)

आप (स) फ़रमा दें, ऐ मेरी कौम! तुम अपनी जगह काम करते रहो, मैं भी काम कर रहा हूँ, पस तुम अ़नक़रीब जान लोगे किस के लिए है आक़िबत का घर। बेशक ज़ालिम (दो जहान की) कामयाबी नहीं पाते। (135)

और (अल्लाह ने) जो खेती और मवेशी पैदा किए हैं उस से उन्होंने ने ठहराया है अल्लाह के लिए एक हिस्सा, पस उन्होंने ने अपने ख़याल में कहा यह अल्लाह के लिए है और यह हमारे शरीकों के लिए है, पस जो उन के शरीकों के लिए है तो वह नहीं पहुँचता अल्लाह को। और जो अल्लाह के लिए है वह उन के शरीकों को पहुँच जाता है, बुरा है जो वह फ़ैसला करते हैं। (136)

और इसी तरह बहुत से मुश्रिकों के लिए उन के शरीकों ने औलाद का क़त्ल अरास्ता कर दिया है ताकि वह उन्हें हलाक कर दें, और उन पर उन का दीन गुड मड कर दें। और अगर अल्लाह चाहता तो वह (ऐसा) न करते, सो तुम उन्हें छोड़ो और वह जो झूट बान्धते हैं (वह जानें और उन का झूट)। (137)

ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَّاهْلَهَا							
जब कि उन के लोग	जुल्म से	बसतियां	हलाक कर डालने वाला	तेरा रब	नहीं है	इस लिए कि	यह
غٰفِلُوْنَ (131) وَّلِكُلِّ دَرَجٰتٍ مِّمَّا عَمِلُوْا وَّمَا رَبُّكَ							
तुम्हारा रब	और नहीं	उन्होंने ने किया (उन के आमाल)	उस से जो	दरजे	और हर एक के लिए	131	बेख़बर हों
بِغٰفِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ (132) وَرَبُّكَ الْعَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ							
रहमत वाला	बेनियाज़	और तुम्हारा रब	132	वह करते हैं	उस से जो		बेख़बर
اِنْ يَّشَآءْ يُّدْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ كَمَا							
जैसे	जिस को चाहे	तुम्हारे बाद	और जानशीन बनादे	तुम्हें ले जाए	वह चाहे	अगर	
اَنْشَاكُمْ مِنْ ذُرِّيَّةٍ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ (133) اِنْ مَّا تُوعَدُوْنَ							
तुम से वादा किया जाता है	जिस	बेशक	133	दूसरी	कौम	औलाद	उस ने तुम्हें उठाया
لَآتٍ وَّمَا اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ (134) قُلْ يٰقَوْمِ اَعْمَلُوْا عَلٰى							
पर	काम करते रहो	ऐ कौम	फ़रमा दें	134	आज़िज़ करने वाले	तुम	और ज़रूर आने वाली है
مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ فَاَسُوْفَ تَعْلَمُوْنَ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ							
उस का	होता है	किस	तुम जान लोगे	पस जल्द	काम कर रहा हूँ	मैं	अपनी जगह
عَاقِبَةُ الدَّارِ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُوْنَ (135) وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ							
और उन्होंने ने ठहराया अल्लाह के लिए	135	ज़ालिम	फ़लाह नहीं पाते	बेशक	घर	आख़िरत	
مِمَّا ذَرَا مِنْ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا							
पस उन्होंने ने कहा	एक हिस्सा	और मवेशी	खेती से	उस ने पैदा किए	उस से जो		
هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا فَمَا كَانَ							
है	पस जो	हमारे शरीकों के लिए	और यह	उन के झूटे ख़याल के मूताबिक	यह अल्लाह के लिए		
لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهٗو							
तो वह	अल्लाह के लिए है	और जो	अल्लाह तरफ़ को	पहुँचता	तो नहीं	उन के शरीकों के लिए	
يَصِلُ اِلَى شُرَكَآئِهِمْ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ (136) وَكَذٰلِكَ							
और इसी तरह	136	जो वह फ़ैसला करते हैं	बुरा है	उन के शरीक	तरफ़ (को)	पहुँचता है	
زَيِّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ							
उन की औलाद	क़त्ल	मुश्रिक (जमा)	से	अकसर के लिए	अरास्ता कर दिया है		
شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنََهُمْ							
उन का दीन	उन पर	और गुड मड कर दें	ताकि वह उन्हें हलाक करदें	उन के शरीक			
وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ (137)							
137	वह झूट बान्धते हैं	और जो	सो तुम उन्हें छोड़ दो	वह न करते	अल्लाह	और अगर चाहता	

وَقَالُوا هَذِهِ أَنْعَامٌ وَحَرَّتْ حَجْرٌ لَّا يَطْعُمَهَا إِلَّا مَنْ							
जिस को	मगर	उसे न खाए	ममनूअ (मना किए हुए)	और खेती	मवेशी	यह	और उन्होंने ने कहा
نَشَاءُ بِزَعْمِهِمْ وَأَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُورُهَا وَأَنْعَامٌ							
और कुछ मवेशी	उन की पीठ (जमा)	हराम की गई	और कुछ मवेशी	उन के गलत खयाल के मूताविक	हम चाहें		
لَّا يَذْكُرُونَ اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا افْتِرَاءً عَلَيْهِ سَيَجْزِيهِمْ							
हम जल्द उन्हें सज़ा देंगे	उस पर	झूट बान्धते हैं	उस पर	नाम अल्लाह का	वह नहीं लेते		
بِمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿١٣٨﴾ وَقَالُوا مَا فِي بُطُونِ هَذِهِ الْأَنْعَامِ							
मवेशी (जमा)	इन	पेट में	जो	और उन्होंने ने कहा	138	झूट बान्धते थे	उस की जो
خَالِصَةً لِّذِكْرِنَا وَمَحْرَمٌ عَلَىٰ أَرْوَاجِنَا وَإِنْ يَكُنْ							
हो	और अगर	हमारी औरतें	पर	और हराम	हमारे मर्दों के लिए	ख़ालिस	
مَيْتَةً فَهُمْ فِيهِ شُرَكَاءُ سَيَجْزِيهِمْ وَصَفَهُمْ ۗ إِنَّهُ حَكِيمٌ							
हिक्मत वाला	वेशक वह	उन का बातें बनाना	वह जल्द उन को सज़ा देगा	शरीक	उस में	तो वह सब	मुर्दा
عَلِيمٌ ﴿١٣٩﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا							
वेवकूफी से	अपनी औलाद	उन्होंने ने क़त्ल किया	वह लोग जिन्होंने ने	अलबत्ता घाटे में पड़े	139	जानने वाला	
بِغَيْرِ عِلْمٍ وَحَرَّمُوا مَا رَزَقَهُمُ اللَّهُ افْتِرَاءً عَلَىٰ اللَّهِ							
अल्लाह पर	झूट बान्धते हुए	अल्लाह ने उन्हें दिया	जो	और हराम ठहराया	बेख़बरी (नादानी से)		
قَدْ ضَلُّوا وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿١٤٠﴾ وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَ							
पैदा किए	जिस ने	और वह	140	हिदायत पाने वाले	और वह न थे	यक़ीनन वह गुमराह हुए	
جَنَّتِ مَعْرُوشَتٍ وَغَيْرِ مَعْرُوشَتٍ وَالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ							
और खेती	और खजूर	और न चढ़ाए हुए			चढ़ाए हुए	वागात	
مُخْتَلِفًا أَكْلُهُ وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ							
और ग़ैर मुशाबह (जुदा जुदा)	मुशाबह (मिलते जुलते)	और अनार	और जैतून	उस के फल	मुखतलिफ़		
كُلُّوا مِنْ ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَآتُوا حَقَّهُ يَوْمَ حَصَادِهِ ۗ							
उस के काटने के दिन	उस का हक़	और अदा करो	वह फल लाए	जब	उस के फल	से	खाओ
وَلَا تُسْرِفُوا ۗ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ﴿١٤١﴾ وَمَنْ							
और से	141	बेजा खर्च करने वाले	पसन्द नहीं करता	वेशक वह	और बेजा खर्च न करो		
الْأَنْعَامِ حَمُولَةً وَفَرْشًا ۗ كُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ							
अल्लाह ने तुम्हें दिया	उस से जो	खाओ	और ज़मीन से लगे हुए	वार बरदार (बड़े बड़े)	चौपाए		
وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوتِ الشَّيْطَانِ ۗ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿١٤٢﴾							
142	खुला	दुश्मन	तुम्हारा	वेशक वह	शैतान	क़दम (जमा)	और न पैरवी करो

और उन्होंने ने कहा यह मवेशी और खेती ममनूअ है, उसे कोई न खाए मगर जिस को हम चाहें उन के (झूटे) खयाल के मुताबिक और कुछ मवेशी है कि उन की पीठ पर (सवारी) हराम की है और कुछ मवेशी हैं (जुबूह करते वक़्त) उन पर अल्लाह का नाम नहीं लेते, (यह) झूट बान्धना है उस (अल्लाह) पर, हम जल्द उन्हें उस की सज़ा देंगे जो वह झूट बान्धते थे। (138)

और उन्होंने ने कहा जो उन मवेशियों के पेट में है वह ख़ालिस हमारे मर्दों के लिए है और हमारी औरतों पर हराम है, और अगर मुर्दा हो तो सब उस में शरीक है, वह जल्द उन्हें उन के बातें बनाने की सज़ा देगा, वह बेशक हिक्मत वाला जानने वाला है। (139)

अलबत्ता वह लोग घाटे में पड़े जिन्होंने ने वेवकूफी, नादानी से अपनी औलाद को क़त्ल किया और जो अल्लाह ने उन्हें दिया वह हराम ठहरा लिया झूट बान्धते हुए अल्लाह पर, यक़ीनन वह गुमराह हुए, और वह हिदायत पाने वाले न थे। (140)

और वही (ख़ालिक) है जिस ने वागात पैदा किए (छतरियों पर) चढ़ाए हुए (जैसे अंगूर) और (छतरियों पर) न चढ़ाए हुए, और खजूर और खेती, उस के फल मुखतलिफ़ (किस्म के) और जैतून और अनार मिलते जुलते और जुदा जुदा, जब वह फल लाए तो उस के फल खाओ, और उस के काटने के दिन उस का हक़ (उशर) अदा कर दो, और बेजा खर्च न करो, बेशक अल्लाह बेजा खर्च करने वालों को पसन्द नहीं करता। (141)

और चौपायों में से (पैदा किए) वार बरदार (बड़े बड़े) और ज़मीन पर लगे हुए (छोटे छोटे), जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से खाओ और शैतान के क़दमों की पैरवी न करो, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (142)

11  
12  
13  
14  
15  
16  
17  
18  
19  
20  
21  
22  
23  
24  
25  
26  
27  
28  
29  
30  
31  
32  
33  
34  
35  
36  
37  
38  
39  
40  
41  
42  
43  
44  
45  
46  
47  
48  
49  
50  
51  
52  
53  
54  
55  
56  
57  
58  
59  
60  
61  
62  
63  
64  
65  
66  
67  
68  
69  
70  
71  
72  
73  
74  
75  
76  
77  
78  
79  
80  
81  
82  
83  
84  
85  
86  
87  
88  
89  
90  
91  
92  
93  
94  
95  
96  
97  
98  
99  
100

आठ जोड़े (नर और मादा पैदा किए) दो भेड़ से दो बकरी से, आप पूछें क्या (अल्लाह ने) दोनों नर हराम किए हैं या दोनों मादा? या वह जो दोनों मादा के रहम में लिपटा हुआ (अभी पेट में) हो? मुझे किसी इल्म से बताओ अगर तुम सच्चे हो। (143)

और दो ऊँट से और दो गाए से (पैदा किए), आप (स) पूछें क्या अल्लाह ने दोनों नर हराम किए हैं या दोनों मादा? या जो दोनों के रहमों में लिपटा हुआ हो (अभी पेट में हो)? क्या तुम उस वक़्त मौजूद थे जब अल्लाह ने तुम्हें उस का हुक्म दिया था? पस उस से बड़ा ज़ालिम कौन है जो अल्लाह पर बुहतान बान्धे झूट ताकि लोगों को इल्म के बग़ैर (जहालत से) गुमराह करे, बेशक अल्लाह जुल्म करने वाले लोगों को हिदायत नहीं देता। (144)

आप (स) फ़रमा दीजिए, जो वहि मुझे दी गई है उस में किसी खाने वाले पर कोई खाना हराम नहीं पाता मगर यह कि वह मुर्दार हो या बहता हुआ खून या सुव्वर का गोश्त, पस वह नापाक है, या गुनाह का (नाजाइज़ ज़बीहा) जिस पर ग़ैर अल्लाह का नाम पुकारा गया हो, पस जो लाचार हो जाए, न नाफ़रमानी करने वाला हो और न सरकश हो तो बेशक तेरा रब बख़शने वाला निहायत मेहरबान है। (145)

और उन लोगों पर जो यहूदी हुए, हम ने हराम कर दिया हर नाखुन वाला जानवर, और हम ने गाए और बकरी की चरबी उन पर हराम कर दी, सिवाए उस के जो उन की पीठ या अंतड़ियों से लगी हो या हड्डियों के साथ मिली हो, यह हम ने उन को बदला दिया उन की सरकशी का, और बेशक हम सच्चे हैं। (146)

ثُمَّ نَبِيَّةٌ أَرْوَجُ <sup>ع</sup> مِنَ الصَّانِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْرِ اثْنَيْنِ <sup>ط</sup>							
आठ (8)	जोड़े	से	भेड़	दो (2)	और से	बकरी	दो (2)
قُلْ ذَا الذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ <sup>م</sup> أَمِ الْأُنثَيَيْنِ أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ							
पूछें	क्या दोनों नर	हराम किए	या दोनों मादा	या जो	लिपट रहा हो	उस पर	
أَرْحَامِ الْأُنثَيَيْنِ نَبِّئُونِي بِعِلْمٍ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ <sup>ل</sup> (143)							
रहम (जमा)	दोनों मादा	मुझे बताओ	किसी इल्म से	अगर	तुम	सच्चे	143
وَمِنَ الْإِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ قُلْ ذَا الذَّكَرَيْنِ							
और से	ऊँट	दो (2)	और से	गाय	दो (2)	आप पूछें	क्या दोनों नर
حَرَّمَ أَمِ الْأُنثَيَيْنِ أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامِ الْأُنثَيَيْنِ <sup>ط</sup>							
उस ने हराम किए	या	दोनों मादा	या जो	लिपट रहा हो	उस पर	रहम (जमा)	दोनों मादा
أَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاءَ إِذْ وَصَّكُمْ اللَّهُ بِهَذَا <sup>ع</sup> فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن							
क्या	तुम थे	मौजूद	जब	अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया	इस का	पस कौन	बड़ा ज़ालिम
أَفْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا لِيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ إِنَّ اللَّهَ							
बुहतान बान्धे	अल्लाह पर	झूट	ताकि गुमराह करे	लोग	बग़ैर	इल्म	बेशक अल्लाह
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ <sup>ع</sup> (144) قُلْ لَا أَجِدُ فِي مَا أُوحِيَ إِلَيَّ							
हिदायत नहीं देता	लोग	जुल्म करने वाले	144	फ़रमा दीजिए	मैं नहीं पाता	में	जो वहि की गई
مُحَرَّمًا عَلَى طَاعِمٍ يَطْعَمُهُ إِلَّا أَنْ يَكُونَ مَيْتَةً أَوْ دَمًا							
हराम	पर	कोई खाने वाला	इस को खाए	मगर	यह कि हो	मुर्दार	या खून
مَسْفُوحًا أَوْ لَحْمَ خِنزِيرٍ فَإِنَّهُ رِجْسٌ أَوْ فِسْقًا							
बहता हुआ	या गोश्त	सुव्वर	पस वह	नापाक	या गुनाह की चीज़		
أَهْلٍ لِّغَيْرِ اللَّهِ بِهِ <sup>ع</sup> فَمَنْ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ							
पुकारा गया	ग़ैर अल्लाह का नाम	उस पर	पस जो	लाचार हो जाए	न नाफ़रमानी करने वाला	और न सरकश	तो बेशक
رَبِّكَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ <sup>ع</sup> (145) وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا							
तेरा रब	बख़शने वाला	निहायत मेहरबान	145	और पर	वह जो कि	यहूदी हुए	हम ने हराम कर दिया
كُلَّ ذِي ظُفْرِ <sup>ع</sup> وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُومَهُمَا							
हर एक	नाखुन वाला जानवर	और गाय से	और बकरी	हम ने हराम कर दिया	उन पर	उन की चरबियां	
إِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُورُهُمَا أَوْ الْحَوَايَا أَوْ مَا اخْتَلَطَ							
सिवाए	जो उठाती हो (लगी हो)	उन की पीठ (जमा)	या अंतड़ियां	या	जो मिली हो		
بِعَظْمٍ <sup>ط</sup> ذَلِكَ جَزَيْنَهُمْ بِبَغْيِهِمْ <sup>ط</sup> وَإِنَّا لَصَادِقُونَ <sup>ع</sup> (146)							
हड्डी से	यह	हम ने उन को बदला दिया	उनकी सरकशी का	और बेशक हम	सच्चे हैं	146	

۱۴  
۲

فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ رَبُّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ وَاسِعَةٍ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهُ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ (147)						
और टाला नहीं जाता	वसीअ	रहमत वाला	तुम्हारा रब	तो आप (स) कह दें	आप को झुटलाएं	पस अगर
لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَمْنَا مِنْ شَيْءٍ ط						
जिन लोगों ने शिर्क किया (मुश्रिक)	जल्द कहेंगे	147	मुजरिमों की कौम		से	उस का अज़ाव
كَذَلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتَّى ذَاقُوا بَأْسَنَا ط						
कोई चीज़	हम हराम ठहराते	और न	हमारे बाप दादा	और न	हम शिर्क न करते	चाहता अल्लाह अगर
قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ (148)						
हमारा अज़ाव	उन्होंने ने चखा	यहां तक कि	इन से पहले	जो लोग	झुटलाया	इसी तरह
तुम पीछे चलते हो	नहीं	तो उस को निकालो (ज़ाहिर करो) हमारे लिए	कोई इल्म (यकीनी बात)	तुम्हारे पास	क्या	फरमा दीजिए
فَلَوْ شَاءَ لَهَدَيْكُمْ أَجْمَعِينَ (149)						
अपने गवाह	लाओ	फरमा दें	149	सब को	तो तुम्हें हिदायत देता	पस अगर वह चाहता
الَّذِينَ يَشْهَدُونَ أَنَّ اللَّهَ حَرَّمَ هَذَا فَمَنْ شَهِدُوا						
वह गवाही दें	फिर अगर	यह	हराम किया	कि अल्लाह	गवाही दें	जो
فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَّبُوا						
झुटलाया	जो लोग	खाहिशात	और न पैरवी करना	उन के साथ	तो तुम गवाही न देना	
بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ						
अपने रब के	और वह	आखिरत पर	ईमान लाते हैं	नहीं	और जो लोग	हमारी आयतों को
يَعْدِلُونَ (150) قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ						
तुम पर	तुम्हारा रब	जो हराम किया	मैं पढ़ कर सुनाऊँ	आओ	फरमा दें	150 बराबर ठहराते हैं
إِلَّا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالَّذِينَ أَحْسَنَّا وَلَا تَقْتُلُوا						
और न क़त्ल करो	नेक सुलूक	और वालिदैन के साथ	कुछ-कोई	उस के साथ	कि न शरीक ठहराओ	
أَوْلَادِكُمْ مِنْ إِمْلَاقٍ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ وَلَا تَقْرَبُوا						
और करीब न जाओ	और उन को	तुम्हें रिज़ूक देते हैं	हम	सुफ़लिसी	से	अपनी औलाद
الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطْنٌ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي						
जो-जिस	जान	और न क़त्ल करो	छुपी हो	और जो	जो ज़ाहिर हो उस से (उन में)	वेहयाई (जमा)
حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ذَلِكَُمْ وَصَّكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ (151)						
151	अक़ल से काम लो (समझो)	ताकि तुम	इस का	तुम्हें हुक़्म दिया है	यह	मगर हक़ पर अल्लाह ने हुर्मत दी

पस अगर वह आप (स) को झुटलाएं तो आप (स) कहें तुम्हारा रब वसीअ रहमत वाला है, और उस का अज़ाव मुजरिमों की कौम से टाला नहीं जाता। (147)

मुश्रिक जल्द कहेंगे कि अगर अल्लाह चाहता तो न हम शिर्क करते न हमारे बाप दादा, और न हम कोई चीज़ हराम ठहराते, इसी तरह (उन लोगों ने) झुटलाया जो उन से पहले थे यहां तक कि उन्होंने ने हमारा अज़ाव चखा, आप (स) फरमा दीजिए क्या तुम्हारे पास कोई यकीनी बात है? तो उस को हमारे सामने ज़ाहिर करो, तुम सिर्फ़ गुमान के पीछे चलते हो और तुम सिर्फ़ अटकल चलाते हो। (148)

आप (स) फरमा दें: अल्लाह ही की हुज्जत पूरी (ग़ालिब) है, अगर वह चाहता तो तुम सब को हिदायत दे देता। (149)

आप (स) फरमा दें: लाओ अपने गवाह जो गवाही दें कि अल्लाह ने यह हराम किया है, फिर अगर वह गवाही दे दें तो भी तुम उन के साथ गवाही न देना, और उन की खाहिशात की पैरवी न करना जिन्होंने ने हमारी आयतों को झुटलाया और वह लोग आखिरत पर ईमान नहीं लाते और वह (माबूदाने वातिल को) अपने रब के बराबर ठहराते हैं। (150)

आप (स) फरमा दें आओ मैं पढ़ कर सुनाऊँ जो हराम किया है तुम पर तुम्हारे रब ने कि उस के साथ शरीक न ठहराओ और वालिदैन के साथ नेक सुलूक करो, और क़त्ल न करो अपनी औलाद को सुफ़लिसी (के डर) से, हम तुम्हें रिज़ूक देते हैं और उन को (भी), और वेहयाइयों के करीब न जाओ जो उन में खुली हो और जो छुपी हो, और जिस जान को अल्लाह ने हुर्मत दी है उसे क़त्ल न करो मगर हक़ पर, यह तुम्हें इस का हुक़्म दिया है ताकि तुम समझो। (151)

और यतीम के माल के करीब न जाओ मगर इस तरह कि वह बेहतर हो यहां तक कि वह अपनी जवानी को पहुँच जाए, और इन्साफ़ के साथ माप तोल पूरा करो, हम किसी को तकलीफ़ नहीं देते (बोझ नहीं डालते) मगर उस के मक़दूर के मुताबिक़, और जब बात करो तो इन्साफ़ की करो, खाह रिशतेदार (का मामला) हो। और अल्लाह का अ़हद पूरा करो, उस ने तुम्हें यह हुक्म दिया है ताकि तुम नसीहत पकड़ो। (152)

और यह मेरा रास्ता सीधा है, पस उस पर चलो और दूसरे रास्तों पर न चलो कि वह तुम्हें इस रास्ते से जुदा कर देंगे, उस ने तुम्हें इस का हुक्म दिया ताकि तुम परहेज़गारी इख़्तियार करो। (153)

फिर हम ने मूसा (अ) को किताब दी, उस पर अपनी नेमत पूरी करने को जो नेकोकार है, और हर चीज़ की तफ़सील के लिए, और हिदायत ओ रहमत के लिए, ताकि वह अपने रब से मुलाक़ात पर ईमान ले आए। (154)

और हम ने यह किताब उतारी है बरकत वाली, पस इस की पैरवी करो और परहेज़गारी इख़्तियार करो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (155)

कि (कहें) तुम कहो कि हम से पहले दो गिरोहों पर किताब उतारी गई, और यह कि हम उन के पढ़ने पढ़ाने से बेख़बर थे। (156)

या कहो कि अगर हम पर किताब उतारी जाती तो हम ज़ियादा हिदायत पर होते उन से, सो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से रौशन दलील और हिदायत और रहमत आ गई, पस उस से बड़ा ज़ालिम कौन है जो अल्लाह की आयतों को झुटलादे और उन से कतराए, हम उन लोगों को जल्द सज़ा देंगे जो कतराते हैं हमारी आयतों से, बुरा अज़ाब उस के बदले कि वह कतराते थे। (157)

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ							
यहां तक कि	बेहतर हो	वह	ऐसे जो	मगर	यतीम	माल	और करीब न जाओ
يَبْلُغَ أَشُدَّهُ وَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ لَا نُكَلِّفُ							
हम तकलीफ़ नहीं देते	इन्साफ़ के साथ	और तोल	माप	और पूरा करो	अपनी जवानी	पहुँच जाए	
نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ							
रिशतेदार	खाह हो	तो इन्साफ़ करो	तुम बात करो	और जब	उस की वुसूत (मक़दूर)	मगर	किसी को
وَبِعَهْدِ اللَّهِ أَوْفُوا ذَلِكُمْ وَصَّكُم بِهِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿١٥٢﴾							
152	नसीहत पकड़ो	ताकि तुम	इस का	उस ने तुम्हें हुक्म दिया	यह	पूरा करो	और अल्लाह का अ़हद
وَأَنَّ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ فَاتَّبِعُوهُ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ							
रास्ते	और न चलो	पस उस पर चलो	सीधा	मेरा रास्ता	यह	और यह कि	
فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ ذَلِكُمْ وَصَّكُم بِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٥٣﴾							
153	परहेज़गारी इख़्तियार करो	ताकि तुम	तुम्हें हुक्म दिया इस का	यह	उस का रास्ता	से	तुम्हें पस जुदा कर दें
ثُمَّ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ تَمَامًا عَلَى الَّذِي أَحْسَنَ وَتَفْصِيلًا							
और तफ़सील	नेकोकार है	जो	पर	नेमत पूरी करने को	किताब	मूसा (अ)	फिर हम ने दी
لِكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿١٥٤﴾							
154	ईमान लाएं	अपना रब	मुलाक़ात पर	ताकि वह	और रहमत	और हिदायत	हर चीज़ की
وَهَذَا كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ مُبْرَكٌ فَاتَّبِعُوهُ وَاتَّقُوا لَعَلَّكُمْ							
ताकि तुम पर	और परहेज़गारी इख़्तियार करो	पस उसकी पैरवी करो	बरकत वाली	हम ने नाज़िल की	किताब	और यह	
تُرْحَمُونَ ﴿١٥٥﴾ أَنْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَنْزَلَ الْكِتَابَ عَلَىٰ طَائِفَتَيْنِ							
दो गिरोह	पर	किताब	उतारी गई थी	इस के सिवा नहीं	तुम कहो	कि	155 रहम किया जाए
مِنْ قَبْلِنَا وَإِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغَفْلِينَ ﴿١٥٦﴾ أَوْ تَقُولُوا							
या तुम कहो	156	बेख़बर	उन के पढ़ने पढ़ाने	से	और यह कि हम थे	हम से पहले	
لَوْ أَنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ لَكُنَّا أَهْدَىٰ مِنْهُمْ فَقَدْ جَاءَكُمْ							
पस आ गई तुम्हारे पास	उन से	ज़ियादा हिदायत पर	अलबत्ता हम होते	किताब	हम पर	उतारी जाती	अगर हम
بَيِّنَةً مِّن رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةً فَمَنْ أَظْلَمُ							
बड़ा ज़ालिम	पस कौन	और रहमत	और हिदायत	तुम्हारा रब	से	रौशन दलील	
مِمَّنْ كَذَّبَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَصَدَفَ عَنْهَا سَنَجْزِي الَّذِينَ							
उन लोगों को जो	हम जल्द सज़ा देंगे	उस से	और कतराए	अल्लाह की आयतों को	झुटलादे	उस से जो	
يَصْدِفُونَ عَنِ آيَاتِنَا سُوءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يَصْدِفُونَ ﴿١٥٧﴾							
157	वह कतराते थे	उस के बदले	अज़ाब	बुरा	हमारी आयतों	से	कतराते हैं



هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ رَبُّكَ أَوْ يَأْتِيَ										
या आए	तुम्हारा रब	या आए	फरिश्ते	उन के पास आए	यह	मगर	क्या वह इन्तिज़ार कर रहे हैं			
بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا										
किसी को	न काम आएगा	तुम्हारा रब	निशानी	कोई	आई	जिस दिन	तुम्हारा रब	निशानियां	कुछ	
إِيمَانُهَا لَمْ تَكُنْ آمَنَتْ مِنْ قَبْلُ أَوْ كَسَبَتْ فِي إِيمَانِهَا خَيْرًا قُلْ										
फरमा दें	कोई भलाई	अपने ईमान में	कमाई	या	उस से पहले	ईमान लाया	न था	उस का ईमान		
أَنْتَظِرُوا إِنَّا مُنْتَظِرُونَ ﴿١٥٨﴾ إِنَّ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيَعًا										
गिरोह दर गिरोह	और हो गए	अपना दिन	तफ़रका डाला	वह लोग जिन्होंने	वेशक	158	मुन्तज़िर है	हम	इन्तिज़ार करो तुम	
لَسْتَ مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ إِنَّمَا أَمْرُهُمْ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا										
वह जो	वह जतला देगा उन्हें	फिर	अल्लाह के हवाले	उन का मामला	फ़क़त	किसी चीज़ में (कोई तअल्लुक)	उन से	नहीं आप (स)		
كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿١٥٩﴾ مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا وَمَنْ										
और जो	उस के बराबर	दस	तो उस के लिए	लाए कोई नेकी	जो	159	करते थे			
جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٦٠﴾ قُلْ إِنِّي										
वेशक मुझे	कह दीजिए	160	न जुल्म किए जाएंगे	और वह	मगर उस के बराबर	तो न बदला पाएगा	कोई बुराई लाए			
هَدَيْتَنِي رَبِّيَ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ دِينًا قِيمًا مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ										
इब्राहीम (अ)	मिल्लत	दुरुस्त	दीन	सीधा	रास्ता	तरफ़	मेरा रब	राह दिखाई		
حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٦١﴾ قُلْ إِنْ صَلَاتِي وَنُسُكِي										
मेरी कुरबानी	मेरी नमाज़	वेशक	आप कह दें	161	मुशर्रिक (जमा)	से	और न थे	एक का हो कर रहने वाला		
وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٢﴾ لَا شَرِيكَ لَهُ وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ										
मुझे हुक्म दिया गया	और उसी का	उस का	नहीं कोई शरीक	162	सारे जहान का	रब	अल्लाह के लिए	और मेरा मरना	और मेरा जीना	
وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٦٣﴾ قُلْ أَغْيَرَ اللَّهُ أَبْعَى رَبًّا وَهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ										
हर शै	रब	और वह	कोई रब	मैं ढूँढूँ	क्या सिवाए अल्लाह	आप कह दें	163	मुसलमान (फ़रमांबरदार)	सब से पहला	और मैं
وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ إِلَّا عَلَيْهَا وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ثُمَّ إِلَىٰ										
तरफ़	फिर	बोझ दूसरा	उठाएगा कोई उठाने वाला	और न	उस के ज़िम्मे	मगर (सिर्फ)	हर शख्स	और न कमाएगा		
رَبِّكُمْ مَرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿١٦٤﴾ وَهُوَ الَّذِي										
जिस ने	और वह	164	तुम इख़तिलाफ़ करते	उस में	तुम थे	वह जो	पस वह तुम्हें जतला देगा	तुम्हारा लौटना	तुम्हारा (अपना) रब	
جَعَلَكُمْ خَلِيفَ الْأَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِيَبْلُوكُمْ										
ताकि तुम्हें आज़माए	दरजे	वाज़	पर-ऊपर	तुम में से वाज़	और बुलन्द किए	ज़मीन	नाइब	तुम्हें बनाया		
فِي مَا آتَاكُمْ إِنَّ رَبَّكَ سَرِيعُ الْعِقَابِ ﴿١٦٥﴾ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٦٥﴾										
165	निहायत मेहरबान	यकीनन बख़शने वाला	और वेशक वह	सज़ा देने वाला	तेज़	तुम्हारा रब	वेशक	जो उस ने तुम्हें दिया		

क्या वह इन्तिज़ार कर रहे हैं मगर यह कि उन के पास फरिश्ते आए या तुम्हारा रब आए या तुम्हारे रब की वाज़ निशानी आए, जिस दिन आएगी तुम्हारे रब की वाज़ निशानी, किसी के काम न आएगा उस का ईमान लाना जो पहले से ईमान न लाया था या अपने ईमान में कोई भलाई न कमाई थी, आप (स) फ़रमा दें इन्तिज़ार करो हम (भी) मुन्तज़िर हैं। (158) वेशक जिन लोगों ने तफ़रका डाला अपने दिन में और गिरोह दर गिरोह हो गए, आप (स) का उन से कोई तअल्लुक नहीं, उन का मामला फ़क़त अल्लाह के हवाले है, फिर वह उन्हें जतला देगा वह जो कुछ करते थे। (159) जो शख्स कोई नेकी लाए तो उस के लिए उस का दस बराबर (दस गुना अजर) है, और जो कोई बुराई लाए तो वह बदला न पाएगा मगर उस के बराबर (सिर्फ़ उस के बराबर), और वह जुल्म न किए जाएंगे। (160) आप (स) कह दीजिए वेशक मुझे मेरे रब ने सीधे रास्ते की तरफ़ राह दिखाई है, दुरुस्त दीन, इब्राहीम (अ) की मिल्लत, जो एक (अल्लाह) के हो रहने वाले थे, और वह मुशर्रिकों में से न थे। (161) आप (स) कह दें वेशक मेरी नमाज़ और मेरी कुरबानी और मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह के लिए है जो सारे जहानों का रब है। (162) उस का कोई शरीक नहीं, मुझे उसी का हुक्म दिया गया है, और मैं सब से पहला मुसलमान (फ़रमांबरदार) हूँ। (163) आप (स) कह दें क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और रब ढूँढूँ? और वही है हर शै का रब, हर शख्स जो कुछ कमाएगा (उस का गुनाह) सिर्फ़ उस के ज़िम्मे (होगा), कोई उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा, फिर तुम्हें अपने रब की तरफ़ लौटना है, पस वह तुम्हें जतला देगा जिस में तुम इख़तिलाफ़ करते थे। (164) और वही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में नाइब बनाया, और बुलन्द किए तुम में से वाज़ के दरजे वाज़ पर, ताकि वह तुम्हें उस में आज़माए जो उस ने तुम्हें दिया, वेशक तुम्हारा रब जल्द सज़ा देने वाला है, और वह वेशक यकीनन बख़शने वाला, निहायत मेहरबान है। (165)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-मीम-साँद (1)

यह किताब तुम्हारी तरफ़ नाज़िल की गई है तो इस से तुम्हारे सीने में कोई तंगी न हो ताकि तुम उस (के ज़रीए) से डराओ, और ईमान वालों के लिए नसीहत है। (2)

उस की पैरवी करो जो तुम्हारे ख़ब की तरफ़ से तुम पर नाज़िल किया गया है, और पीछे न लगो उस के सिवा (और) रफ़ीकों के, बहुत कम तुम नसीहत कुबूल करते हो। (3)

और हम ने कितनी ही बसतियां हलाक कीं, पस उन पर हमारा अज़ाब रात को सोते में आया या दोपहर को आराम करते। (4)

पस उन की पुकार (इस के सिवा) न थी जब उन पर आया हमारा अज़ाब, तो उन्होंने ने कहा कि वेशक ज़ालिम हम ही थे। (5)

सो हम उन से ज़रूर पूछेंगे जिन की तरफ़ रसूल भेजे गए और हम रसूलों से (भी) ज़रूर पूछेंगे। (6)

अलबत्ता हम उन को अपने इल्म से अहवाल सुना देंगे और हम गाइब न थे। (7)

और उस दिन (आमाल का) वज़न होना बरहक़ है, तो जिन की नेकियों के वज़न भारी हुए, वही फ़लाह (नजात) पाने वाले हैं। (8)

और जिन के (नेकियों के) वज़न हलके हुए तो वही लोग हैं जिन्होंने अपनी जानों का नुक़सान किया, क्यों कि वह हमारी आयतों से ना इन्साफ़ी करते थे। (9)

और वेशक़ हम ने तुम्हें ज़मीन में ठिकाना दिया और हम ने उस में तुम्हारे लिए ज़िन्दगी के सामान बनाए, बहुत कम है जो शुक्र करते हैं। (10)

और अलबत्ता हम ने तुम्हें पैदा किया और फिर हम ने तुम्हारी शक़ल ओ सूरत बनाई, फिर हम ने फ़रिश्तों को कहा आदम (अ) को सिज्दा करो तो उन्होंने ने सिज्दा किया सिवाए इब्लीस के, वह सिज्दा करने वालों में से न था। (11)

آيَاتُهَا ۲۰۶ ﴿۷﴾ سُورَةُ الْأَعْرَافِ ﴿۷﴾ رُكُوعَاتُهَا ۲۴

रुकुआत 24

(7) सूरतुल आराफ़  
बुलनदियां

आयात 206

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

الْمَصِّ (۱) كِتَابٌ أَنْزَلَ إِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِي صَدْرِكَ حَرَجٌ

कोई तंगी	तुम्हारे सीने में	सो न हो	तुम्हारी तरफ़	नाज़िल की गई	किताब	1	अलिफ़-लाम-मीम-साद
----------	-------------------	---------	---------------	--------------	-------	---	-------------------

وَأَنْتَ لِتُنذِرَ بِهِ وَذِكْرَى لِّلْمُؤْمِنِينَ (۲) اتَّبِعُوا مَا أَنْزَلَ

जो नाज़िल किया गया	पैरवी करो	2	ईमान वालों के लिए	और नसीहत	इस से	ताकि तुम डराओ	इस से
--------------------	-----------	---	-------------------	----------	-------	---------------	-------

إِلَيْكُمْ مِّن رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوا مِنْ دُونِهَا أَوْلِيَاءَ قَلِيلًا مَّا

जो	बहुत कम	रफ़ीक़ (जमा)	उस के सिवा	से	और पीछे न लगो	तुम्हारा ख़ब	से	तुम्हारी तरफ़ (तुम पर)
----	---------	--------------	------------	----	---------------	--------------	----	------------------------

تَذَكَّرُونَ (۳) وَكَمْ مِّن قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا فَجَاءَهَا بَأْسُنَا بَيَاتًا

रात में सोते	हमारा अज़ाब	पस उन पर आया	हम ने हलाक कीं	वसतियां	से	और कितनी ही	3	नसीहत कुबूल करते हो
--------------	-------------	--------------	----------------	---------	----	-------------	---	---------------------

أَوْ هُمْ قَائِلُونَ (۴) فَمَا كَانَ دَعْوَاهُمْ إِذْ جَاءَهُمْ بَأْسُنَا إِلَّا أَنْ

मगर यह कि (तो)	हमारा अज़ाब	उन पर आया	जब	उन का कहना (उन की पुकार)	पस न था	4	कैलूला करते (दोपहर को आराम करते)	या वह
----------------	-------------	-----------	----	--------------------------	---------	---	----------------------------------	-------

قَالُوا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ (۵) فَلَنَسْأَلَنَّ الَّذِينَ أُرْسِلَ إِلَيْهِمْ

उन की तरफ़	भेजे गए (रसूल)	उन से जो	सो हम ज़रूर पूछेंगे	5	ज़ालिम (जमा)	वेशक़ हम थे	उन्होंने ने कहा
------------	----------------	----------	---------------------	---	--------------	-------------	-----------------

وَلَنَسْأَلَنَّ الْمُرْسَلِينَ (۶) فَلَنَقْصِنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَمَا كُنَّا

और हम न थे	इल्म से	उन को	अलबत्ता हम अहवाल सुना देंगे	6	रसूल (जमा)	और हम ज़रूर पूछेंगे
------------	---------	-------	-----------------------------	---	------------	---------------------

غَائِبِينَ (۷) وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ

मीज़ान (नेकियों के वज़न)	भारी हुए	तो जिस	बरहक़	उस दिन	और वज़न	7	गाइब
--------------------------	----------	--------	-------	--------	---------	---	------

فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ (۸) وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَئِكَ

तो वही लोग	वज़न	हलके हुए	और जिस	8	फ़लाह पाने वाले	वह	तो वही
------------	------	----------	--------	---	-----------------	----	--------

الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَظْلِمُونَ (۹) وَلَقَدْ

और वेशक़	9	ना इन्साफ़ी करते	हमारी आयतों से	क्यों कि थे	अपनी जानें	नुक़सान किया	वह जिन्होंने ने
----------	---	------------------	----------------	-------------	------------	--------------	-----------------

مَكَّنَّاكُمْ فِي الْأَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشٌ قَلِيلًا

बहुत कम	ज़िन्दगी के सामान	उस में	तुम्हारे लिए	और हम ने बनाए	ज़मीन में	हम ने तुम्हें ठिकाना दिया
---------	-------------------	--------	--------------	---------------	-----------	---------------------------

مَا تَشْكُرُونَ (۱۰) وَلَقَدْ خَلَقْنَاكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنَاكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلَكَةِ

फ़रिश्तों को	फिर हम ने कहा	हम ने तुम्हारी शक़ल ओ सूरत बनाई	फिर	हम ने तुम्हें पैदा किया	और अलबत्ता	10	जो तुम शुक्र करते हो
--------------	---------------	---------------------------------	-----	-------------------------	------------	----	----------------------

اسْجُدُوا لِآدَمَ ۖ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ ۖ لَمْ يَكُنْ مِنَ السَّاجِدِينَ (۱۱)

11	सिज्दा करने वाले	से	वह न था	इब्लीस	सिवाए	तो उन्होंने ने सिज्दा किया	आदम को	सिज्दा करो
----	------------------	----	---------	--------	-------	----------------------------	--------	------------

<p>قَالَ مَا مَنَّكَ إِلَّا تَسْجُدَ إِذْ أَمَرْتُكَ قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِنْهُ خَلَقْتَنِي</p>										
तू ने मुझे पैदा किया	उस से	बेहतर	मैं	वह बोला	जब मैं ने तुझे हुक्म दिया	कि तू सिज्दा न करे	किस ने तुझे मना किया	उस ने फरमाया		
<p>مِنْ نَارٍ وَخَلَقْتَهُ مِنْ طِينٍ (12) قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُونُ لَكَ</p>										
तेरे लिए	है	तो नहीं	इस (यहां) से	पस तू उतर जा	फरमाया	12	मिट्टी	से	और तू ने उसे पैदा किया	आग से
<p>أَنْ تَتَكَبَّرَ فِيهَا فَاخْرُجْ إِنَّكَ مِنَ الصُّغْرَيْنِ (13) قَالَ أَنْظِرْنِي</p>										
मुझे मोहलत दे	वह बोला	13	ज़लील (जमा)	से	वेशक तू	पस निकल जा	इस में (यहां)	तू तकबुर करे	कि	
<p>إِلَى يَوْمٍ يُعْتَبُونَ (14) قَالَ إِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ (15) قَالَ فَبِمَا أَغْوَيْتَنِي</p>										
तू ने मुझे गुमराह किया	तो जैसे	वह बोला	15	मोहलत मिलने वाले	से	वेशक तू	फरमाया	14	उठाए जाएंगे	उस दिन तक
<p>لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيمَ (16) ثُمَّ لَا تِيْنَهُمْ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ</p>										
उन के सामने	से	मैं ज़रूर उन तक आऊंगा	फिर	16	सीधा	तेरा रास्ता	उन के लिए	मैं ज़रूर बैटूंगा		
<p>وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَائِلِهِمْ وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ</p>										
उन के अक्सर	और तू न पाएगा	उन के बाएं	और से	उन के दाएं	और से	और पीछे से उन के				
<p>شَاكِرِينَ (17) قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْذُومًا مَدْحُورًا لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ</p>										
उन से	तेरे पीछे लगा	अलवत्ता जो	मर्दूद हो कर	ज़लील	यहां से	निकल जा	फरमाया	17	शुक्र करने वाले	
<p>لَا مَلَائِكٌ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ أَجْمَعِينَ (18) وَيَادُمْ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ</p>										
जन्नत	और तेरी वीवी	तू	रहो	और ऐ आदम (अ)	18	सब	तुम से	जहननम	ज़रूर भर दूंगा	
<p>فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ</p>										
से	पस हो जाओगे	दरख्त	उस	और करीब न जाना	तुम चाहो	जहां से	तुम दोनों खाओ			
<p>الظَّالِمِينَ (19) فَوَسَّسَ لَهُمَا الشَّيْطَانُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وُورِيَ عَنْهُمَا مِنْ</p>										
से	उन से	जो पोशीदा थी	उन के लिए	ताकि ज़ाहिर कर दे	शैतान	उन के लिए	पस वस्वसा डाला	19	ज़ालिम (जमा)	
<p>سَوَاتِحِهِمَا وَقَالَ مَا نَهَاكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ إِلَّا أَنْ تَكُونَا</p>										
तुम हो जाओ	इस लिए कि	मगर	दरख्त	उस से	तुम्हारा रब	तुम्हें मना किया	और वह बोला	उन की सत्र की चीज़ें		
<p>مَلَائِكِينَ أَوْ تَكُونَا مِنَ الْخَالِدِينَ (20) وَقَاسَمَهُمَا إِنِّي لَكُمَا لَمِنَ</p>										
अलवत्ता-से	तुम्हारे लिए	मैं	वेशक	और उन से कसम खागया	20	हमेशा रहने वाले	से	या हो जाओ	फरिश्ते	
<p>النَّاصِحِينَ (21) فَدَلَّسَهُمَا بِغُرُورٍ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوَاتِحُهُمَا</p>										
उन की सत्र की चीज़ें	उन के लिए	खुल गईं	दरख्त	उन दोनों ने चखा	पस जब	धोके से	पस उन को माइल कर लिया	21	खैर खाह (जमा)	
<p>وَطَفِقَا يَخْصِفْنَ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ وَنَادَيْتُهُمَا رَبُّهُمَا أَلَمْ أَنهَكُمَا</p>										
क्या तुम्हें मना न किया था	उन का रब	और उन्हें पुकारा	जन्नत	पत्ते	से	अपने ऊपर	जोड़ जोड़ कर रखने	और लगे		
<p>عَنْ تَلْكُمَا الشَّجَرَةَ وَأَقْلُ لَكُمَا إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُبِينٌ (22)</p>										
22	खुला	दुश्मन	तुम्हारा	शैतान	वेशक	तुम से	और कहा	दरख्त	उस से मुतअल्लिक	

उस ने फरमाया जब मैं ने तुझे हुक्म दिया तो तुझे किस ने मना किया कि तू सिज्दा न करे? वह बोला मैं उस से बेहतर हूँ, तू ने मुझे आग से पैदा किया और उसे मिट्टी से पैदा किया। (12) फरमाया पस तू यहां से उतर जा, तेरे लिए (लाइक) नहीं कि तू गुरूर ओ तकबुर करे यहां, पस निकल जा, वेशक तू ज़लीलों में से है। (13) वह बोला मुझे उस दिन तक मोहलत दे (जिस दिन मुर्दे) उठाए जाएंगे। (14) फरमाया वेशक तू मोहलत मिलने वालों में से है (तुझे मोहलत दी गई) (15) वह बोला जैसे तू ने मेरे गुमराह (होने का फ़ैसला) किया है। मैं ज़रूर बैटूंगा उन के लिए (गुमराह करने के लिए) तेरे सीधे रास्ते पर। (16) फिर मैं उन तक ज़रूर आऊंगा उन के सामने से और उन के पीछे से, और उन के दाएं से और उन के बाएं से, और तू उन में से अक्सर को शुक्र करने वाले न पाएगा। (17) फरमाया यहां से निकल जा ज़लील मर्दूद हो कर। उन में से जो तेरे पीछे लगा, अलवत्ता मैं ज़रूर जहननम को भर दूंगा तुम सब से। (18) ऐ आदम (अ)! तुम और तुम्हारी वीवी (हव्वा) जन्नत में रहो, पस खाओ जहां से तुम चाहो और उस दरख्त के करीब न जाना, (अगर ऐसा करोगे) तो ज़ालिमों में से हो जाओगे। (19) पस वस्वसा डाला शैतान ने उन के लिए (उन के दिल में) ताकि उन के सत्र की चीज़ें जो उन से पोशीदा थीं उन के लिए ज़ाहिर कर दे, और बोला तुम्हारे रब ने तुम्हें उस दरख्त से मना नहीं किया मगर इस लिए कि (कहीं) तुम फरिश्ते हो जाओ या हो जाओ हमेशा रहने वालों में से। (20) और उन से कसम खागया कि मैं वेशक तुम्हारे लिए खैर खाहों से हूँ। (21) पस उस ने उन को माइल कर लिया धोके से, पस जब उन्होंने ने दरख्त चखा तो उन के लिए उन की सत्र की चीज़ें खुल गईं और वह अपने ऊपर जोड़ जोड़ कर रखने लगे (सत्र छुपाने के लिए) जन्नत के पत्ते, और उन के रब ने उन्हें पुकारा क्या मैं ने तुम्हें उस दरख्त से मना नहीं किया था? और कहा था तुम्हें कि वेशक शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है। (22)

उन दोनों ने कहा ऐ हमारे रब! हम ने अपने ऊपर जुल्म किया, और अगर तू ने हमें न बख़्शा और हम पर रहम न किया तो हम ज़रूर ख़सारा पाने वालों में से हो जाएंगे। (23)

फ़रमाया तुम उतरो, तुम में से बाज़ बाज़ के दुश्मन है, और तुम्हारे लिए ज़मीन में एक वक़्त (मुऐयन) तक ठिकाना और सामाने ज़ीस्त है। (24)

फ़रमाया उस में तुम जियोगे और उस में तुम मरोगे और उसी से तुम निकाले जाओगे। (25)

ऐ औलादे आदम (अ)! हम ने तुम पर उतारा लिबास जो ढाके तुम्हारे सत्तर और (मौजिबे) ज़ीनत हो, और परहेज़गारी का लिबास सब से बेहतर है, यह (लिबास) अल्लाह की निशानियों में से है ताकि वह ग़ौर करें। (26)

ऐ औलादे आदम (अ)! कहीं शैतान तुम्हें वहका न दे, जैसे उस ने निकाला तुम्हारे माँ बाप (आदम ओ हव्वा) को जन्नत से, उन के लिबास उतरवा दिए ताकि उन के सत्तर ज़ाहिर कर दे, वेशक तुम्हें देखता है वह और उस का कबीला उस जगह से जहाँ तुम उन्हें नहीं देखते, वेशक हम ने शैतानों को उन लोगों का रफ़ीक़ बना दिया जो ईमान नहीं लाते। (27)

और जब वह बेहयाई करें तो कहें हम ने अपने बाप दादा को उस पर पाया है और अल्लाह ने हमें हुकम दिया है उस का, आप (स) फ़रमा दें, वेशक अल्लाह बेहयाई का हुकम नहीं देता, क्या तुम अल्लाह पर (वह बात) लगाते हो जो तुम नहीं जानते। (28)

आप (स) फ़रमा दें मेरे रब ने मुझे इन्साफ़ का हुकम दिया है, और अपने चहरे हर नमाज़ के वक़्त सीधे करो, और उसे पुकारो ख़ालिस उस के हुकम के फ़रमांवरदार हो कर, जैसे तुम्हें (पहले) पैदा किया तुम दोबारा भी (पैदा किए जाओगे)। (29)

एक फ़रीक़ को हिदायत दी और एक फ़रीक़ पर गुमराही साबित हो गई, वेशक उन्होंने ने अल्लाह के सिवा शैतानों को अपना रफ़ीक़ बना लिया है और समझते हैं कि वह वेशक हिदायत पर है। (30)

قَالَ رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا وَإِن لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٢٣﴾ قَالَ اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ									
से	हम ज़रूर हो जाएंगे	और हम पर रहम (न) किया	न बख़्शा तू ने हमें	और अगर	अपने ऊपर	हम ने जुल्म किया	ऐ हमारे रब	उन दोनों ने कहा	
जमीन में	और तुम्हारे लिए	दुश्मन	बाज़	तुम में से बाज़	उतरो	फ़रमाया	23	ख़सारा पाने वाले	
مُسْتَقَرًّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ﴿٢٤﴾ قَالَ فِيهَا تَحْيَوْنَ وَفِيهَا تَمُوتُونَ وَمِنْهَا تُخْرَجُونَ ﴿٢٥﴾ يُبْنَىٰ آدَمَ قَدْ أَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا									
और उस में	तुम जियोगे	उस में	फ़रमाया	24	एक वक़्त तक	और सामान	ठिकाना		
लिबास	तुम पर	हम ने उतारा	ऐ औलादे आदम (अ)	25	तुम निकाले जाओगे	और उस से	तुम मरोगे		
يُؤَارِي سَوَاتِكُمْ وَرِيشًا وَلِبَاسَ التَّقْوَىٰ ذَلِكَ خَيْرٌ ذَلِكَ مِنْ آيَةِ اللَّهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿٢٦﴾ يُبْنَىٰ آدَمَ لَا يَفْتِنَنَّ الشَّيْطَانَ									
से	यह	बेहतर	यह	परहेज़गारी	और लिबास	और ज़ीनत	तुम्हारे सत्तर	ढांके	
शैतान	न वहका दे तुम्हें	ऐ औलादे आदम (अ)	26	वह ग़ौर करें	ताकि वह	अल्लाह की निशानियाँ			
كَمَا أَخْرَجَ أَبَوَيْكُم مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوَاتِهِمَا ۖ إِنَّهُ يَرْكُم هُوَ وَفِيلُهُ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۗ إِنَّا جَعَلْنَا الشَّيْطَانَ أَوْلِيَاءَ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٢٧﴾ وَإِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً قَالُوا وَجَدْنَا									
उन के सत्तर	ताकि ज़ाहिर कर दे	उन के लिबास	उन से	उतरवा दिए	जन्नत	से	तुम्हारे माँ बाप	उस ने निकाला	जैसे
शैतान (जमा)	वेशक हम ने बनाया	तुम उन्हें नहीं देखते	जहाँ	से	और उस का कबीला	वह	तुम्हें देखता है वह	वेशक	
हम ने पाया	कहें	कोई बेहयाई	वह करें	और जब	27	ईमान नहीं लाते	उन लोगों के लिए	दोस्त - रफ़ीक़	
عَلَيْهَا آبَاءَنَا وَاللَّهُ أَمَرْنَا بِهَا ۗ قُلْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ ۗ اتَّقُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢٨﴾ قُلْ أَمَرَ رَبِّي بِالْقِسْطِ ۗ وَأَقِيمُوا وُجُوهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۗ كَمَا بَدَأَكُمْ تَعُودُونَ ﴿٢٩﴾ فَرِيقًا هَدَىٰ									
बेहयाई का	हुकम नहीं देता	वेशक अल्लाह	फ़रमा दें	उस का	हमें हुकम दिया	और अल्लाह	अपने बाप दादा	इस पर	
इन्साफ़ का	मेरा रब	हुकम दिया	फ़रमा दें	28	तुम नहीं जानते	जो	अल्लाह पर	क्या तुम कहते हो (लगाते हो)	
لَهُ الدِّينَ ۗ كَمَا بَدَأَكُمْ تَعُودُونَ ﴿٢٩﴾ فَرِيقًا هَدَىٰ وَفَرِيقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلَالَةُ ۗ إِنَّهُمْ اتَّخَذُوا الشَّيْطَانَ									
ख़ालिस हो कर	और पुकारो	हर मसज़िद (नमाज़)	नज़दीक (वक़्त)	अपने चहरे	और काइम करो (सीधे करो)				
उस ने हिदायत दी	एक फ़रीक़	29	दोबारा (पैदा) होगे	तुम्हारी इब्तिदा की (पैदा किया)	जैसे	दीन (हुकम)	उस के लिए		
أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَيَحْسَبُونَ أَنََّّهُم مُّهْتَدُونَ ﴿٣٠﴾									
शैतान (जमा)	उन्होंने ने बना लिया	वेशक वह	गुमराही	उन पर	साबित हो गई	और एक फ़रीक़			
30	हिदायत पर है	कि वह वेशक	और समझते हैं	अल्लाह के सिवा	से	रफ़ीक़			

۲  
۱۵  
۹

31

يَبْنِيْ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا											
और पियो	और खाओ	हर मस्जिद (नमाज़)	करीब (वक़्त)	अपनी ज़ीनत	लेलो (इख्तियार करलो)	ऐ औलादे आदम					
وَلَا تُسْرِفُوْا ۗ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣١﴾ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ											
अल्लाह की ज़ीनत	हराम किया	किस	फ़रमा दें	31	फुजूल खर्च करने वाले	दोस्त नहीं रखता	वेशक वह	और बेजा खर्च न करो			
الَّتِيْ اَخْرَجَ لِعِبَادِهِۦ وَالطَّيِّبَاتِ مِنَ الرِّزْقِ ۗ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا											
ईमान लाए	उन लोगों के लिए जो	यह	फ़रमा दें	रिज़क	से	और पाक	अपने बन्दों के लिए	उस ने निकाली	जो कि		
فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ											
गिरोह के लिए	आयतें	हम खोल कर बयान करते हैं	इसी तरह	क़ियामत के दिन	ख़ालिस तौर पर	दुनिया	ज़िन्दगी में				
يَّعْلَمُوْنَ ﴿٣٢﴾ قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّي الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَّنَ											
पोशीदा	और जो	उन से	ज़ाहिर है	जो	बेहयाई	मेरा रब	हराम किया	सिर्फ़ (तो)	फ़रमा दें	32	वह जानते हैं
وَالاِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ وَاَنْ تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا											
कोई सनद	उस की	नहीं नाज़िल की	जो-जिस	अल्लाह के साथ	तुम शरीक करो	और यह कि	नाहक़ को	और सरकशी	और गुनाह		
وَاَنْ تَقُوْلُوْا عَلٰى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۗ فَاِذَا جَاءَ											
आएगा	पस जब	एक मुददत मुक़र्रर	और हर उम्मत के लिए	33	तुम नहीं जानते	जो	अल्लाह पर	तुम कहो (लगाओ)	और यह कि		
اَجْلُهُمْ لَا يَسْتَاخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٤﴾ يَبْنِيْ اٰدَمَ اِمًا											
अगर	ऐ औलादे आदम	34	आगे बढ़ सकेंगे	और न	एक घड़ी	न वह पीछे हो सकेंगे	उन का मुक़र्ररा वक़्त				
يَاْتِيْنَكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُوْنَ عَلَيْكُمْ اٰیٰتِيْ ۗ فَمَنْ اَتَقٰی وَاصْلَحَ											
और इस्लाह कर ली	डरा	तो जो	मेरी आयात	तुम पर (तुम्हें)	बयान करें (सुनाएं)	तुम में से	रसूल	तुम्हारे पास आएँ			
فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَّلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا											
हमारी आयात को	झुटलाया	और वह लोग जो	35	ग़मगीन होंगे	वह	और न	उन पर	कोई ख़ौफ़ नहीं			
وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا ۗ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۗ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٣٦﴾ فَمَنْ											
पस कौन	36	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	दोज़ख़ वाले	यही लोग	उन से	और तक्बुर किया			
اَظْلَمُ مِمَّنْ اَفْتَرٰی عَلٰى اللّٰهِ كَذِبًا ۗ اَوْ كَذَّبَ بِاٰیٰتِهٖ ۗ اُولٰٓئِكَ											
यही लोग	उस की आयतों को	या झुटलाया	झूट	अल्लाह पर	बुहतान बान्धा	उस से जो	बड़ा ज़ालिम				
يَنٰلُهُمْ نَصِيْبُهُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ ۗ حَتّٰی اِذَا جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا											
हमारे भेजे हुए	उन के पास आएंगे	जब	यहां तक कि	किताब (लिखा हुआ)	से	उन का नसीब (हिस्सा)	उन्हें पहुँचेगा				
يَتَوْفُّوْنَهُمْ ۗ قَالُوْٓا اٰیْنُ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ ۗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ											
अल्लाह के सिवा	से	पुकारते	तुम थे	कहाँ जो	वह कहेंगे	उन की जान निकालने					
﴿٣٧﴾ قَالُوْٓا ضَلُّوْٓا عَنَّا وَشَهِدُوْٓا عَلٰى اَنْفُسِهِمْ ۗ اَنَّهُمْ كَانُوْٓا كٰفِرِيْنَ											
37	काफ़िर थे	कि वह	अपनी जानें	पर	और गवाही देंगे	हम से	वह गुम हो गए	वह कहेंगे			

ऐ औलादे आदम (अ)! अपनी ज़ीनत हर नमाज़ के वक़्त इख्तियार करो और खाओ और पियो और बेजा खर्च न करो, वेशक अल्लाह फुजूल खर्च करने वालों को दोस्त नहीं रखता। (31)

आप (स) फ़रमा दें किस ने हराम की है अल्लाह की (वह) ज़ीनत जो उस ने अपने बन्दों के लिए निकाली (पैदा) की है, और पाक रिज़क, आप (स) फ़रमा दें यह दुनिया की ज़िन्दगी में उन लोगों के लिए है जो ईमान लाए और ख़ालिस तौर पर क़ियामत के दिन (उन्हीं का हिस्सा है), इसी तरह हम आयतें खोल कर बयान करते हैं उस गिरोह के लिए जो जानते हैं। (32)

आप फ़रमा दें मेरे रब ने तो हराम करार दिया है बेहयाइयों को, उन में जो ज़ाहिर हैं और जो पोशीदा हैं, और गुनाह और सरकशी नाहक़ को, और यह कि तुम अल्लाह के साथ शरीक करो जिस की उस ने कोई सनद नहीं उतारी और यह कि तुम अल्लाह पर लगाओ (वह बात) जो तुम नहीं जानते। (33)

और हर उम्मत के लिए एक मुददत मुक़र्रर है, पस जब उन का मुक़र्ररा वक़्त आजाएगा तो न वह पीछे हो सकेंगे एक घड़ी और न आगे बढ़ सकेंगे। (34)

ऐ औलादे आदम (अ)! अगर तुम्हारे पास तुम ही से मेरे रसूल आएँ, सुनाएँ तुम्हें मेरी आयात तो जो डरा और उस ने इस्लाह कर ली, उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे। (35)

और जिन लोगों ने हमारी आयात को झुटलाया और उन से तक्बुर किया यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (36)

पस उस से बड़ा ज़ालिम कौन जिस ने अल्लाह पर झूट बुहतान बान्धा या उस की आयतों को झुटलाया, यही वह लोग हैं जिन्हें उन का हिस्सा किताब (लौहे महफूज़) में लिखा हुआ पहुँचेगा, यहाँ तक जब हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) उन के पास उन की जान निकालने आएंगे वह कहेंगे कहां है वह जिन को तुम अल्लाह के सिवा पुकारते थे? वह (जवाब में) कहेंगे वह हम से गुम हो गए, और वह अपनी जानों पर (अपने ख़िलाफ़) गवाही देंगे कि वह काफ़िर थे। (37)

(अल्लाह) फ़रमाएगा तुम दाख़िल हो जाओ जहन्नम में उन उम्मतों के हमराह जो गुज़र चुकीं तुम से क़ब्ब, जिन्नों और इन्सानों में से, जब कोई उम्मत दाख़िल होगी वह अपनी साथी (पहली उम्मत) पर लानत करेगी, यहां तक कि जब सब उस में दाख़िल हो जाएंगे तो उन के पिछले अपने पहलों के बारे में कहेंगे, ऐ हमारे रब! यह है जिन्होंने ने हम को गुमराह किया, पस उन्हें आग का दो गुना अज़ाब दे। (अल्लाह तआला) फ़रमाएगा हर एक के लिए दो गुना है, लेकिन तुम जानते नहीं। (38)

और उन के पहले अपने पिछलों को कहेंगे, तुम्हें हम पर कोई बड़ाई नहीं, लिहाज़ा चखो अज़ाब उस के बदले जो तुम करते थे। (39)

वेशक जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया और उन से तक़्बुर किया, उन के लिए आस्मान के दरवाज़े न खोले जाएंगे और जन्नत में दाख़िल न होंगे जब तक ऊँट दाख़िल (न) हो जाए सुई के नाके में (जो मुमकिन नहीं), इसी तरह हम मुज़्रिमों को बदला देते हैं। (40)

उन के लिए जहन्नम का बिछौना है और उन के ऊपर से (जहन्नम ही का) ओढ़ना है, इसी तरह हम ज़ालिमों को बदला देते हैं। (41)

और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए, हम किसी पर बोझ नहीं डालते मगर उस की विसात के मुताबिक, यही लोग जन्नत वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (42)

और हम ने उन के सीतों से कीने खींच लिए, उन (जन्नतों) के नीचे नहरें बहती हैं, और वह कहेंगे तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिस ने हमें इस की तरफ़ रहनुमाई की, और अगर अल्लाह हमें हिदायत न देता (रहनुमाई न फ़रमाता) तो हम हिदायत पाने वाले न थे। अलबत्ता हमारे रब के रसूल हक के साथ आए, और उन्हें निदा दी जाएगी कि तुम इस जन्नत के वारिस बनाए गए (उन आमाल के) सिले में जो तुम करते थे। (43)

قَالَ ادْخُلُوا فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ									
और इन्सान	जिन्नात	से	तुम से क़ब्ब	गुज़र चुकी	उम्मतों में (हमराह)	तुम दाख़िल हो जाओ	फ़रमाएगा		
فِي النَّارِ كُلَّمَا دَخَلَتْ أُمَّةٌ لَعَنَتْ أُخْتَهَا حَتَّى إِذَا آدَارُكُوا فِيهَا									
उस में	मिल जाएंगे	जब	यहां तक	अपनी साथी	लानत करेगी	कोई उम्मत	दाख़िल होगी	जब भी	आग (दोज़ख) में
جَمِيعًا ۚ قَالَتْ أُحْرِبُهُمْ لِأُولِهِمْ رَبَّنَا هَؤُلَاءِ أَصَلُّونَا فَاتِهِمْ									
पस दे उन को	उन्होंने ने हमें गुमराह किया	यह है	ऐ हमारे रब	अपने पहलों के बारे में	उन की पिछली कौम	कहेगी	सब		
عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ۚ قَالَ لِكُلِّ ضِعْفٍ وَلَكِنْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٣٨﴾									
38	तुम जानते	नहीं	और लेकिन	दो गुना	हर एक के लिए	फ़रमाएगा	आग का	दो गुना	अज़ाब
وَقَالَتْ أُولَهُمْ لِأُحْرِبُهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ									
कोई बड़ाई	हम पर	है तुम्हें	पस नहीं	अपने पिछलों को	उन के पहले	और कहेंगे			
فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٣٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا									
झुटलाया	वह लोग जो	वेशक	39	तुम कमाते थे (करते थे)	उस का बदला	अज़ाब	चखो		
بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتِّحُ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا									
और न	आस्मान	दरवाज़े	उन के लिए	न खोले जाएंगे	उन से	और तक़्बुर किया उन्होंने ने	हमारी आयतों को		
يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّى يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ ۚ وَكَذَلِكَ									
और इसी तरह	सुई	नाका	में	ऊँट	दाख़िल होजाए	यहां तक (जब तक)	जन्नत	दाख़िल होंगे	
نَجَزَى الْمُجْرِمِينَ ﴿٤٠﴾ لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۚ									
ओढ़ना	उन के ऊपर	और से	बिछौना	जहन्नम का	उन के लिए	40	मुज़्रिम (जमा)	हम बदला देते हैं	
وَكَذَلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿٤١﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ									
अच्छे	और उन्होंने ने अमल किए	ईमान लाए	और जो लोग	41	ज़ालिम (जमा)	हम बदला देते हैं	और इसी तरह		
لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا									
उस में	वह	जन्नत वाले	यही लोग	उस की वुसूअत	मगर	किसी पर	हम बोझ नहीं डालते		
خَالِدُونَ ﴿٤٢﴾ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِّنْ غَلٍّ تَجْرِي مِنْ									
से	बहती है	कीने	उन के सीने	में	जो	और खींच लिए हम ने	42	हमेशा रहेंगे	
تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ ۚ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَذَا ۖ وَمَا كُنَّا									
हम थे	और न	इस की तरफ़	हमारी रहनुमाई की	जिस ने	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफ़ें	और वह कहेंगे	नहरें	उन के नीचे
لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنَّ هَدَانَا اللَّهُ ۖ لَقَدْ جَاءَتْ رُسُلٌ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ									
हक के साथ	हमारा रब	रसूल	आए	अलबत्ता	अल्लाह	कि हमें हिदायत देता	अगर न	कि हम हिदायत पाते	
وَنُودُوا أَن تِلْكَمُ الْجَنَّةُ أَوْرَثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾									
43	करते थे	तुम थे	सिले में	तुम उस के वारिस होंगे	जन्नत	यह कि तुम	कि	और उन्हें निदा दी जाएगी	

ع ۱۱

۱۱

وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابَ النَّارِ أَنْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا									
हम से वादा किया	जो	तहकीक हम ने पा लिया	कि	दोज़ख़ वालों को	जन्नत वाले	और पुकारेंगे			
رَبَّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا قَالُوا نَعَمْ ۖ فَآذَنَ									
तो पुकारेगा	हाँ	वह कहेंगे	सच्चा	तुम्हारा रब	जो वादा किया	तुम ने पाया	तो क्या	सच्चा	हमारा रब
مُؤَذِّنًا بَيْنَهُمْ أَنْ لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿٤٤﴾ الَّذِينَ يَصُدُّونَ									
रोकते थे	जो लोग	44	ज़ालिम (जमा)	पर	अल्लाह की लानत	कि	उन के दरमियान	एक पुकारने वाला	
عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۗ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ كَفُورُونَ ﴿٤٥﴾									
45	काफ़िर (जमा)	आखिरत के	और वह	कजी	और उस में तलाश करते थे	अल्लाह का रास्ता	से		
وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۖ وَعَلَى الْأَعْرَافِ رِجَالٌ يَعْرِفُونَ كُلًّا بِسِيمَتِهِمْ ۖ وَنَادُوا									
और पुकारेंगे	उन की पेशानी से	हर एक	पहचान लेंगे	कुछ आदमी	आराफ़	और पर	एक हिजाब	और उन के दरमियान	
أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ سَلَّمَ عَلَيْكُمْ ۖ لَمْ يَدْخُلُوهَا وَهُمْ يَطْمَعُونَ ﴿٤٦﴾									
46	उम्मीदवार है	और वह	वह उस में दाख़िल नहीं हुए	तुम पर	सलाम	कि	जन्नत वाले		
وَإِذَا صُرِفَتْ أَبْصَارُهُمْ تِلْقَاءَ أَصْحَابِ النَّارِ قَالُوا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا									
हमें न कर	ऐ हमारे रब	कहेंगे	दोज़ख़ वाले	तरफ़	उन की निगाहें	फिरेंगी	और जब		
مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٤٧﴾ وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْأَعْرَافِ رِجَالًا يَعْرِفُونَهُمْ									
वह उन्हें पहचान लेंगे	कुछ आदमी	आराफ़ वाले	और पुकारेंगे	47	ज़ालिम (जमा)	लोग	साथ		
بِسِيمَتِهِمْ قَالُوا مَا أَغْنَىٰ عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ ﴿٤٨﴾									
48	तुम तकबुर करते थे	और जो	तुम्हारा जल्था	तुम्हें	न फ़ाइदा दिया	वह कहेंगे	उन की पेशानी से		
أَهْوَاءِ الَّذِينَ أَفْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللَّهُ بِرَحْمَةٍ ۗ									
अपनी कोई रहमत	अल्लाह	उन्हें न पहुँचाएगा	तुम कसम खाते थे	वह जो कि	क्या अब यह वही				
أَدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفَ عَلَيْكُمْ وَلَا أَنْتُمْ تَحْزَنُونَ ﴿٤٩﴾ وَنَادَىٰ									
और पुकारेंगे	49	गमगीन होंगे	तुम	और न	तुम पर	कोई ख़ौफ़	न	जन्नत	तुम दाख़िल हो जाओ
أَصْحَابَ النَّارِ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ أَفِيضُوا عَلَيْنَا مِنَ الْمَاءِ أَوْ مِمَّا									
उस से जो	या	पानी	से	हम पर	बहाओ (पहुँचाओ)	कि	जन्नत वाले	दोज़ख़ वाले	
رِزْقِكُمْ اللَّهُ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ حَرَمَهُمَا عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٥٠﴾ الَّذِينَ									
वह लोग जो	50	काफ़िर (जमा)	पर	उसे हराम कर दिया	बेशक अल्लाह	वह कहेंगे	अल्लाह	तुम्हें दिया	
اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَهْوًا وَلَعِبًا ۗ وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَوةُ الدُّنْيَا ۖ فَالْيَوْمَ									
पस आज	दुनिया	ज़िन्दगी	और उन्हें धोके में डाल दिया	और कूद	खेल	अपना दीन	उन्होंने ने बना लिया		
نَنسَهُمْ كَمَا نَسُوا لِقَاءَ يَوْمِهِمْ هَذَا ۖ وَمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ﴿٥١﴾									
51	इन्कार करते	हमारी आयतों से	और जैसे-थे	यह-इस	उन का दिन	मिलना	जैसे उन्होंने ने भुलाया	हम उन्हें भुलादेंगे	

और जन्नत वाले दोज़ख़ वालों को पुकारेंगे कि तहकीक हम ने पालिया जो हम से वादा किया था हमारे रब ने सच्चा, तुम से तुम्हारे रब ने जो वादा किया था क्या तुम ने भी पालिया सच्चा? वह कहेंगे हाँ! तो एक पुकारने वाला पुकारेगा उन के दरमियान कि (उन) ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत। (44)

जो लोग अल्लाह के रास्ते से रोकते थे और उस में कजी तलाश करते थे, और वह आखिरत के काफ़िर (मुन्क़िर) थे। (45)

और उन के दरमियान एक हिजाब (पर्दा) है, आराफ़ पर कुछ आदमी होंगे, वह हर एक को उस की पेशानी से पहचान लेंगे, और जन्नत वालों को पुकारेंगे कि सलाम हो तुम पर, वह (आराफ़ वाले) जन्नत में दाख़िल नहीं हुए, और वह उम्मीदवार है। (46)

और जब उन की निगाहें फिरेंगी दोज़ख़ वालों की तरफ़ तो कहेंगे ऐ हमारे रब! हमें ज़ालिमों के साथ न कर। (47)

और पुकारेंगे आराफ़ वाले कुछ आदमियों को कि उन्हें उन की पेशानी से पहचान लेंगे, वह कहेंगे तुम्हें कुछ फ़ाइदा न दिया तुम्हारे जल्थे ने और जिन पर तुम तकबुर करते थे। (48)

क्या अब यह वही लोग नहीं है कि तुम कसम खाया करते थे कि अल्लाह उन्हें अपनी कोई रहमत न पहुँचाएगा, आज उन्हें से कहा गया कि तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओ, न तुम पर कोई ख़ौफ़ है न तुम गमगीन होंगे। (49)

और दोज़ख़ वाले पुकारेंगे जन्नत वालों को कि हम पर (थोड़ा) पानी बहाओ (पहुँचाओ) या उस में से (कुछ) जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है, वह कहेंगे बेशक अल्लाह ने यह काफ़िरों पर हराम कर दिया है। (50)

जिन्होंने ने अपने दीन को खेल कूद बना लिया और दुनिया की ज़िन्दगी ने उन्हें धोके में डाल दिया, पस आज हम उन्हें भुलादेंगे जैसे उन्होंने ने (आज के) इस दिन का मिलना फ़रामोश कर दिया था, और जैसे हमारी आयतों से इन्कार करते थे। (51)

وقف الام

٥٨ ١٢

और हम उन के पास एक किताब लाए जिसे हम ने तफ़सील से बयान किया इल्म (की बुन्याद) पर ईमान लाने वाले लोगों के लिए हिदायत और रहमत। (52)

क्या वह यही इन्तिज़ार कर रहे हैं कि उस का कहा हुआ पूरा हो जाए, जिस दिन उस का कहा हुआ हो जाएगा, तो वह लोग जिन्होंने उसे पहले भुला दिया था वह कहेंगे, बेशक हमारे रब के रसूल हक़ बात लाए थे, तो क्या हमारे लिए कोई सिफ़ारिश करने वाले हैं कि हमारी सिफ़ारिश करें, या हम (दुनिया) में लौटाए जाएं कि हम उस के खिलाफ़ अमल करें जो हम (पहले) करते थे, बेशक उन्होंने अपनी जानों का (अपना) नुक़सान किया, और उन से गुम हो गया जो वह झूट घड़ते थे। (53)

बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिस ने आस्मानो और ज़मीन छः दिन में बनाए, और फिर करार फ़रमाया अर्श पर, रात को दिन पर ढांक देता है, उस के पीछे (दिन) दौड़ता हुआ आता है, और सूरज और चाँद और सितारे उस के हुक़म से मुसख़्ख़र है, याद रखो उसी के लिए है पैदा करना और हुक़म देना, अल्लाह बरक़त वाला है सारे ज़हानों का रब। (54)

अपने रब को पुकारो गिड़ गिड़ा कर और आहिस्ता से, बेशक वह हद से गुज़रने वालों को दोस्त नहीं रखता। (55)

और फ़साद न मचाओ ज़मीन में उस की इस्लाह के बाद, और उसे पुकारो डरते और उम्मीद रखते हुए, बेशक अल्लाह की रहमत करीब है नेकी करने वालों के। (56)

और वही है जो अपनी रहमत (वारिश) से पहले हवाएं बतौरे खुशख़बरी भेजता है, यहां तक कि जब वह भारी बादल उठा लाए तो हम ने उन्हें किसी मुर्दा शहर की तरफ़ हांक दिया, फिर उस से पानी उतारा (बरसाया) फिर हम ने निकाले उस से हर किस्म के फल, इसी तरह हम मुर्दों को निकालेंगे ताकि तुम ग़ौर करो। (57)

وَلَقَدْ جِئْنَهُمْ بِكِتَابٍ فَصَّلْنَاهُ عَلَىٰ عِلْمٍ هُدًى وَرَحْمَةً								
और रहमत	हिदायत	इल्म	पर	हम ने उसे तफ़सील से बयान किया	एक किताब	और अलवत्ता हम लाए उन के पास		
لَقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾ هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا تَأْوِيلَهُ يَوْمَ يَأْتِي								
आएगा	जिस दिन	उस का कहना पूरा हो जाए	मगर (यही कि)	वह इन्तिज़ार कर रहे हैं	क्या	52	जो ईमान लाए है	लोगों के लिए
تَأْوِيلَهُ يَقُولُ الَّذِينَ نَسُوهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَاءَتْ رُسُلٌ								
रसूल (जमा)	बेशक लाए	पहले से	उन्होंने ने भुला दिया	वह लोग जो	कहेंगे	उस का कहा हुआ		
رَبِّنَا بِالْحَقِّ فَهَلْ لَنَا مِنْ شَفَعَاءَ فَيَشْفَعُوا لَنَا أَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلْ								
सो हम करें	या हम लौटाए जाएं	हमारी	कि सिफ़ारिश करें	सिफ़ारिश करने वाले	कोई	हमारे लिए	तो क्या है	हक़ हमारा रब
غَيْرِ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ قَدْ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا								
जो	उन से	और गुम हो गया	अपनी जानें	बेशक नुक़सान किया उन्होंने ने	हम करते थे	उस के खिलाफ़ जो		
كَانُوا يَفْتُرُونَ ﴿٥٣﴾ إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ								
आस्मान (जमा)	पैदा किया	वह जो-जिस	अल्लाह	तुम्हारा रब	बेशक	53	वह इफ़तिरा करते (झूट घड़ते) थे	
وَالْأَرْضِ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُعْشَى الْيَلِ								
रात	ढांकता है	अर्श	पर	करार फ़रमाया	फिर	दिन	छः (6)	में और ज़मीन
النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ مُسَخَّرَاتٍ								
मुसख़्ख़र	और सितारे	और चाँद	और सूरज	दौड़ता हुआ	उस के पीछे आता है	दिन		
بِأَمْرِهِ إِلَّا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ تَبْرَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٥٤﴾ أَدْعُوا								
पुकारो	54	तमाम ज़हान	रब	बरक़त वाला है अल्लाह	और हुक़म देना	पैदा करना	उस के लिए	याद रखो उस का हुक़म
رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿٥٥﴾ وَلَا تُفْسِدُوا								
और न फ़साद मचाओ	55	हद से गुज़रने वाले	दोस्त नहीं रखता	बेशक वह	और आहिस्ता	गिड़ गिड़ा कर	अपने रब को	
فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا وَطَمَعًا إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ								
अल्लाह की रहमत	बेशक	और उम्मीद रखते	डरते	और उसे पुकारो	उस की इस्लाह	बाद	ज़मीन में	
قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾ وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيْحَ								
हवाएं	भेजता है	जो-जिस	और वह	56	एहसान (नेकी) करने वाले	से	करीब	
بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ حَتَّىٰ إِذَا أَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا								
भारी	बादल	उठा लाए	जब	यहां तक कि	अपनी रहमत (वारिश)	आगे	बतौरे खुशख़बरी	
سُقْنَهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَنْزَلْنَا بِهِ الْمَاءَ فَأَخْرَجْنَا بِهِ مِنْ								
से	उस से	फिर हम ने निकाला	पानी	उस से	फिर हम ने उतारा	मुर्दा	किसी शहर की तरफ़	हम ने उन्हें हांक दिया
كُلِّ الثَّمَرَاتِ كَذَلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٥٧﴾								
57	ग़ौर करो	ताकि तुम	सुर्दे	हम निकालेंगे	इसी तरह	हर फल		



ع ۱۲

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهُ بِإِذْنِ رَبِّهِ وَالَّذِي خَبُثَ							
ना पाकीज़ा (ख़राब)	और वह जो	उस का रब	हुक़्म से	उस का सबज़ह	निकलता है	पाकीज़ा	और ज़मीन
لَا يَخْرُجُ إِلَّا نَكِدًا كَذَلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَشْكُرُونَ ﴿٥٨﴾							
58	वह शुक्र अदा करते हैं	लोगों के लिए	आयतें	फेर फेर कर बयान करते हैं	इसी तरह	नाकिस	मगर नहीं निकलता
لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا							
नहीं	अल्लाह की इबादत करो	ऐ मेरी क़ौम	पस उस ने कहा	उस की क़ौम	तरफ़	नूह (अ)	अलबत्ता हम ने भेजा
لَكُمْ مِّنْ إِلَهِ غَيْرُهُ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٥٩﴾							
59	एक बड़ा दिन	अज़ाब	तुम पर	डरता हूँ	वेशक मैं	उस के सिवा	कोई माबूद तुम्हारे लिए
قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٦٠﴾ قَالَ							
उस ने कहा	60	खुली	गुमराही	में	अलबत्ता तुझे देखते हैं	वेशक हम	उस की क़ौम से सरदार बोले
يٰقَوْمِ لَيْسَ بِي ضَلَالَةٌ وَلَكِنِّي رَسُولٌ مِّنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦١﴾							
61	सारे जहान	रब	से	भेजा हुआ	और लेकिन मैं	कुछ भी गुमराही	मेरे अन्दर नहीं ऐ मेरी क़ौम
أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَأَنْصَحُ لَكُمْ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٢﴾							
62	तुम जानते	जो नहीं	अल्लाह (की तरफ़) से	और जानता हूँ	तुम्हें	और नसीहत करता हूँ	अपना रब पैग़ाम (जमा) मैं पहुँचाता हूँ तुम्हें
أَوْعَجِبْتُمْ أَنْ جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَبِّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنْكُمْ							
तुम में से	एक आदमी	पर	तुम्हारा रब	से	नसीहत	तुम्हारे पास आई	कि क्या तुम्हें तअज़्जुब हुआ
لِيُنذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٦٣﴾ فَكَذَّبُوهُ فَأَنْجَيْنَاهُ							
तो हम ने उसे बचा लिया	पस उन्होंने ने उसे झुटलाया	63	रहम	और ताकि किया जाए	और ताकि तुम पर	और ताकि तुम परहेज़गारी इख़्तियार करो	ताकि वह डराए तुम्हें
وَالَّذِينَ مَعَهُ فِي الْفُلِكِ وَاعْرِفْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا							
हमारी आयतें	उन्होंने ने झुटलाया	वह लोग जो	और हम ने गर्क कर दिया	कशती में	उस के साथ	और जो लोग	
إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا عَمِينَ ﴿٦٤﴾ وَإِلَىٰ عَادِ أَخَاهُمْ هُودًا قَالَ							
उस ने कहा	हूद (अ)	उन के भाई	आद	और तरफ़	64	अन्धे	लोग थे वेशक वह
يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلَهِ غَيْرُهُ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٦٥﴾							
65	तो क्या तुम नहीं डरते	उस के सिवा	माबूद	कोई	तुम्हारे लिए नहीं	अल्लाह की इबादत करो	ऐ मेरी क़ौम
قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرِكَ فِي							
में	अलबत्ता हम तुझे देखते हैं	उस की क़ौम	से	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	सरदार	बोले	
سَفَاهَةٍ وَإِنَّا لَنَنْظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِينَ ﴿٦٦﴾ قَالَ يٰقَوْمِ							
ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	66	झूटे	से	और हम वेशक तुझे गुमान करते हैं	वेवकूफी	
لَيْسَ بِي سَفَاهَةٌ وَلَكِنِّي رَسُولٌ مِّنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٧﴾							
67	तमाम जहान	रब	से	भेजा हुआ	और लेकिन मैं	कोई वेवकूफी	मुझ में नहीं

और पाकीज़ा ज़मीन से उस का सबज़ह उस के रब के हुक़्म से (पाकीज़ा ही) निकलता है, और जो ख़राब है उस से नहीं निकलता मगर नाकिस, उसी तरह हम शुक्र गुज़ार लोगों के लिए आयतें फेर फेर कर बयान करते हैं। (58)

अलबत्ता हम ने नूह (अ) को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा, पस उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, वेशक मैं डरता हूँ तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब से। (59)

उस की क़ौम के सरदार बोले: हम तुझे खुली गुमराही में देखते हैं। (60)

उस ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! मेरे अन्दर कुछ भी गुमराही (की बात) नहीं लेकिन मैं भेजा हुआ (रसूल) हूँ सारे जहानों के रब की तरफ़ से। (61)

मैं तुम्हें अपने रब के पैग़ाम पहुँचाता हूँ और तुम्हें नसीहत करता हूँ और अल्लाह (की तरफ़) से जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (62)

क्या तुम्हें तअज़्जुब हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक नसीहत तुम में से एक आदमी पर आई ताकि वह तुम्हें डराए, और ताकि तुम परहेज़गारी इख़्तियार करो, और ताकि तुम पर रहम किया जाए। (63)

पस उन्होंने ने उसे झुटलाया तो हम ने उसे और उन लोगों को जो कशती में उस के साथ थे बचा लिया, और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया उन्हें हम ने गर्क कर दिया, वेशक वह लोग (हक़ शनासी से) अन्धे थे। (64)

और आद की तरफ़ (भेजा) उन के भाई हूद (अ) को, और उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तो क्या तुम डरते नहीं? (65)

उस की क़ौम के काफ़िर सरदार बोले अलबत्ता हम तुझे देखते हैं वेवकूफी में और हम वेशक तुझे झूटों में से गुमान करते हैं। (66)

उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! मुझ में वेवकूफी (की कोई बात) नहीं, लेकिन मैं तमाम जहानों के रब का भेजा हुआ (रसूल) हूँ। (67)

ع ۱۵

मैं तुम्हें अपने रब का पैगाम पहुँचाता हूँ और मैं तुम्हारा ख़ैर खाह, अमीन हूँ। (68)

क्या तुम्हें तज़जुब हुआ कि तुम्हारे पास आई तुम्हारे रब की तरफ़ से एक नसीहत तुम में से एक आदमी पर ताकि वह तुम्हें डराए, और तुम याद करो जब उस ने तुम्हें कौमे नूह (अ) के बाद जानशीन बनाया, और तुम्हें ज़ियादा दिया जिस्म में फैलाओ (डेल डोल), सो अल्लाह की नेमतें याद करो ताकि तुम फ़लाह (कामयाबी) पाओ। (69)

वह बोले, क्या तू हमारे पास इस लिए आया है कि हम अल्लाह वाहिद की इबादत करें और छोड़ दें जिन्हें हमारे बाप दादा पूजते थे, तो ले आ जिस का तू हम से वादा करता है (धमकाता है) अगर तू सच्चे लोगों में से है। (70)

उस ने कहा अलबत्ता तुम पर तुम्हारे रब की तरफ़ से पड़ गया अज़ाब और ग़ज़ब, क्या तुम मुझ से उन नामों के बारे में झगड़ते हो जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं, नहीं नाज़िल की अल्लाह ने उस के लिए कोई सनद, सो तुम इन्तिज़ार करो, मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों में से हूँ। (71)

तो हम ने उस को बचा लियो और उन को जो उस के साथ थे अपनी रहमत स, और हम ने उन लोगों की जड़ काट दी जिन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया और वह न थे ईमान लाने वाले। (72)

और समूद की तरफ़ (भेजा) उन के भाई सालेह (अ) को, उस ने कहा ऐ मेरी कौम! अल्लाह की इबादत करो, तुम्हारा उस के सिवा कोई माबूद नहीं, तहकीक़ तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानी आ चुकी है, यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है, सो उसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाए, और उसे बुराई से हाथ न लगाओ वरना तुम्हें दर्दनाक अज़ाब पकड़ लेगा। (73)

أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَتِ رَبِّي وَأَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ أَمِينٌ ﴿٦٨﴾ أَوْعَجِبْتُمْ								
क्या तुम्हें तज़जुब हुआ	68	अमीन	ख़ैर खाह	तुम्हारा	और मैं	अपना रब	पैगाम (जमा)	मैं तुम्हें पहुँचाता हूँ
أَنْ جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَبِّكُمْ عَلَى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنذِرَكُمْ ۗ								
ताकि वह तुम्हें डराए	तुम में से	एक आदमी	पर	तुम्हारा रब	से	नसीहत	तुम्हारे पास आई	कि
وَأذْكُرُوا إِذْ جَعَلْنَا خُلَفَاءَ مِنْ بَعْدِ قَوْمِ نُوحٍ وَرَادَكُمْ								
और तुम्हें ज़ियादा दिया	कौमे नूह	बाद	जानशीन	उस ने तुम्हें बनाया	जब	और तुम याद करो		
فِي الْخَلْقِ بَصُطَةً ۗ فَادْكُرُوا الْآيَةَ اللَّهُ لَعَلَّكُمْ تَفْلِحُونَ ﴿٦٩﴾								
69	फ़लाह (कामयाबी) पाओ	ताकि तुम	अल्लाह की नेमतें	सो याद करो	फैलाओ	खलक़त (जिस्म)	में	
قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللَّهَ وَحْدَهُ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ								
पूजते थे	जो - जिस	और हम छोड़ दें	वाहिद (अकेले)	अल्लाह	कि हम इबादत करें	क्या तू हमारे पास आया	वह बोले	
أَبَائِنَا ۗ فَاتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿٧٠﴾								
70	सच्चे लोग	से	तू है	अगर	जिस का हम से वादा करता है	तो ले आ हम पर	हमारे बाप दादा	
قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَبِّكُمْ رِجْسٌ وَغَضَبٌ								
और ग़ज़ब	अज़ाब	तुम्हारा रब	से	तुम पर	अलबत्ता पड़ गया	उस ने कहा		
أَتَجَادِلُونَنِي فِي أَسْمَاءٍ سَمَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ وَإِبَائُكُمْ مَا								
नहीं	और तुम्हारे बाप दादा	तुम	तुम ने उन के रख लिए हैं	नाम (जमा)	में	क्या तुम झगड़ते हो मुझ से		
نَزَّلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۖ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِّن								
से	तुम्हारे साथ	वेशक़ मैं	सो तुम इन्तिज़ार करो	सनद	कोई	उस के लिए	अल्लाह ने नाज़िल की	
الْمُنْتَظِرِينَ ﴿٧١﴾ فَانْجَيْنَهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا								
अपनी	रहमत से	उस के साथ थे	और वह लोग जो	तो हम ने उसे नजात दी (बचा लियो)	71	इन्तिज़ार करने वाले		
وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِينَ كَذَبُوا بآيٰتِنَا وَمَا كَانُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٧٢﴾								
72	ईमान लाने वाले	और न थे	हमारी आयात	उन्होंने ने झुटलाया	वह लोग जो	जड़	और हम ने काट दी	
وَإِلَى ثَمُودَ أَخَاهُمْ صٰلِحًا ۖ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ								
तुम अल्लाह की इबादत करो	ऐ मेरी कौम	उस ने कहा	सालेह (अ)	उन के भाई	समूद	और तरफ़		
مَا لَكُمْ مِّنْ إِلٰهِ غَيْرُهُ ۗ قَدْ جَاءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَبِّكُمْ ۗ								
तुम्हारा रब	से	निशानी	तहकीक़ आ चुकी तुम्हारे पास	उस के सिवा	माबूद	कोई	तुम्हारे लिए नहीं	
هٰذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةٌ ۖ فَذُرُّوهَا تَأْكُلْ فِي								
में	कि खाए	सो उसे छोड़ दो	एक निशानी	तुम्हारे लिए	अल्लाह की ऊँटनी	यह		
أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٣﴾								
73	दर्दनाक	अज़ाब	वरना पकड़ लेगा तुम्हें	बुराई से	उसे हाथ लगाओ	और न	अल्लाह की ज़मीन	

ع ۱۱  
وَقِيْلَ

وَأَذْكُرُوا إِذْ جَعَلْنَا خُلَفَاءَ مِنْ بَعْدِ عَادٍ وَبَوَّأْنَاكُمْ فِي الْأَرْضِ						
और तुम्हें ठिकाना दिया	आद	वाद	जांनशीन	तुम्हें बनाया उस ने	जब	और तुम याद करो
وَأَذْكُرُوا إِذْ جَعَلْنَا خُلَفَاءَ مِنْ بَعْدِ عَادٍ وَبَوَّأْنَاكُمْ فِي الْأَرْضِ						
और तराशते हो	महल (जमा)	उस की नर्म जगह	से	बनाते हो	ज़मीन	में
الْجِبَالِ بُيُوتًا فَادْكُرُوا الْآءَ اللَّهِ وَلَا تَعْتُوا فِي الْأَرْضِ						
ज़मीन (मुल्क) में	और न फिरो	अल्लाह की नेमतें	सो याद करो	मकानात	पहाड़	
مُفْسِدِينَ ﴿٧٤﴾ قَالَ الْمَلَأَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ قَوْمِهِ						
उस की कौम	से	तकबुर किया (मुतकबिर)	वह जिन्हों ने	सरदार	बोले	74 फ़साद करने वाले (फ़साद करते)
لِلَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِمَنْ آمَنَ مِنْهُمْ اتَّعَلَمُونَ أَنْ صَلِحًا						
सालेह (अ)	कि	क्या तुम जानते हो	उन से	ईमान लाए	उन से जो	ज़ईफ़ (कमज़ोर) बनाए गए
مُرْسَلٌ مِنْ رَبِّهِ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلَ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿٧٥﴾						
75	ईमान रखते हैं	उस के साथ भेजा गया	उस पर जो	वेशक हम	उन्हों ने कहा	अपना रब से भेजा हुआ
قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا بِالَّذِي آمَنْتُمْ بِهِ						
तुम ईमान लाए उस पर	वह जिस पर	हम	तकबुर किया	वह जिन्हों ने	बोले	
كُفْرُونَ ﴿٧٦﴾ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ						
अपना रब	हुक्म	से	और सरकशी की	ऊँटनी	उन्हों ने कूचें काट दी	76 कुफ़र करने वाले (मुनकिर)
وَقَالُوا يُصْلِحُ اتِّينَا بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنْ						
से	तू है	अगर	जिस का तू हम से वादा करता है	ले आ	ऐ सालेह (अ)	और बोले
الْمُرْسَلِينَ ﴿٧٧﴾ فَأَخَذْتَهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ						
अपने घर	में	तो रह गए	ज़लज़ला	पस उन्हें आ पकड़ा	77	रसूल (जमा)
جَثَمِينَ ﴿٧٨﴾ فَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰ قَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ						
तहकीक मै ने तुम्हें पहुँचा दिया	ऐ मेरी कौम	और कहा	उन से	फिर मुँह फेरा	78	औन्धे
رِسَالَةَ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلَكِنْ لَا تُحِبُّونَ النَّصِيحِينَ ﴿٧٩﴾						
79	खैर खाह (जमा)	तुम पसन्द नहीं करते	और लेकिन	तुम्हारी	और खैर खाही की	अपना रब पैगाम
وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ						
जो तुम से पहले नहीं की	क्या आते हो बेहयाई के पास (बेहयाई करते हो)	अपनी कौम से	कहा	जब	और लूत (अ)	
بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِّنَ الْعَالَمِينَ ﴿٨٠﴾ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ						
मर्द (जमा)	जाते हो	वेशक तुम	80	सारे जहान	से	किसी ने ऐसी
شَهْوَةً مِّنْ دُونَ النِّسَاءِ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ﴿٨١﴾						
81	हद से गुज़र जाने वाले	लोग	तुम	बल्कि	औरतें	अलावा (छोड़ कर) शहवत से

और याद करो जब तुम्हें आद के बाद जांनशीन बनाया और तुम्हें ज़मीन में ठिकाना दिया, बनाते हो उस की नर्म जगह में महल और तराशते हो पहाड़ों के मकानात, सो अल्लाह की नेमतें याद करो, और मुल्क में फ़साद मचाते न फिरो। (74)

सरदार बोले उन की कौम के जो मुतकबिर थे, उन ग़रीब लोगों से जो उन में से ईमान ला चुके थे: क्या तुम जानते हो कि सालेह (अ) अपने रब की तरफ़ से भेजा हुआ है (रसूल है), उन्हों ने कहा वेशक वह जो कुछ दे कर भेजा गया है हम उस पर ईमान रखते हैं। (75)

वह जिन्हों ने तकबुर किया (सरदार) बोले तुम जिस पर ईमान लाए हो हम उस के मुनकिर हैं। (76)

उन्हों ने ऊँटनी की कूचें काट दी और अपने रब के हुक्म से सरकशी की और बोले ऐ सालेह (अ)! ले आ जिस का तू हम से वादा करता है (धमकाता है) अगर तू रसूलों में से है। (77)

पस ज़लज़ले ने उन्हें आ पकड़ा तो अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। (78)

फिर (सालेह (अ) ने उन से मुँह फेरा और कहा ऐ मेरी कौम! मै ने तुम्हें अपने रब का पैगाम पहुँचाया और तुम्हारी खैर खाही की, लेकिन तुम खैर खाहों को पसन्द नहीं करते। (79)

लूत (अ) (को भेजा) जब उस ने अपनी कौम से कहा, क्या तुम वह बेहयाई करते हो जो तुम से पहले सारे जहान में किसी ने नहीं की। (80)

वेशक तुम मर्दों के पास शहवत से जाते हो औरतों को छोड़ कर, बल्कि तुम हद से गुज़र जाने वाले लोग हो। (81)

और उस की कौम का जवाब न था मगर यह कि उन्होंने ने कहा: उन्हें (लूत (अ) को) अपनी बस्ती से निकाल दो, यह लोग पाकीज़गी चाहते हैं। (82)

सो हम ने नजात दी उस को और उस के घर वालों को सिवाए उस की वीवी के जो पीछे रह जाने वालों में से थी। (83)

और हम ने उन पर (पत्थरों की) एक वारिश बरसाई, पस देखो मुज़्रिमों का कैसा अन्जाम हुआ? (84)

और हम नें मदयन की तरफ़ उन के भाई शुऐब (अ) (को भेजा), उस ने कहा ऐ मेरी कौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तहकीक़ तुम्हारे पास एक दलील पहुँच चुकी है तुम्हारे रब (की तरफ़) से, पस नाप और तोल पूरा करो और लोगों की अशिया न घटाओ, (घटा कर न दो) और मुल्क में इसलाह के बाद फ़साद न (मचाओ), तुम्हारे लिए यह बेहतर है अगर तुम ईमान वाले हो। (85)

और हर रास्ते पर न बैठो कि तुम (राहगीरों को) डराओ और उसे अल्लाह के रास्ते से रोको जो उस पर ईमान लाया, और उस में कज़ी ढूँडो, और याद करो जब तुम थोड़े थे तो उस ने तुम्हें बढ़ा दिया, और देखो! फ़साद करने वालों का अन्जाम कैसा हुआ? (86)

और अगर तुम में एक गिरोह है जो उस पर ईमान लाया जिस के साथ मैं भेजा गया हूँ और एक गिरोह (है जो) ईमान नहीं लाया तो तुम सब्र करो यहां तक कि फ़ैसला कर दे अल्लाह हमारे दरमियान, और वह बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है। (87)

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَخْرِجُوهُمْ							
उन्हें निकाल दो	उन्होंने ने कहा	यह कि	मगर	उस की कौम	जवाब	था	और न
مِّن قَرْيَتِكُمْ إِنَّهُمْ أَنَاسٌ يَّتَطَهَّرُونَ ﴿٨٢﴾ فَأَنْجَيْنَاهُ							
हम ने नजात दी उस को	82	पाकीज़गी चाहते हैं	यह लोग	वेशक	अपनी बस्ती	से	
وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ ۗ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ﴿٨٣﴾ وَأَمْطَرْنَا							
और हम ने वारिश बरसाई	83	पीछे रहने वाले	से	वह थी	उस की वीवी	मगर	और उस के घर वाले
عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۖ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٨٤﴾							
84	मुज़्रिमिन	अन्जाम	हुआ	कैसा हुआ	पस देखो	एक वारिश	उन पर
وَالِي مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۗ قَالَ يَاقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ							
अल्लाह की इबादत करो	ऐ मेरी कौम	उस ने कहा	शुऐब (अ)	उन के भाई	मदयन	और तरफ़	
مَا لَكُمْ مِّنْ إِلَهِ غَيْرُهُ ۚ قَدْ جَاءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ							
से	एक दलील	तहकीक़ पहुँच चुकी तुम्हारे पास	उस के सिवा	कोई माबूद	से	नहीं तुम्हारा	
فَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ							
लोग	और न घटाओ	और तोल	नाप	पस पूरा करो	तुम्हारा रब		
أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا							
उस की इसलाह	बाद	ज़मीन (मुल्क) में	फ़साद मचाओ	और न	उन की अशिया		
ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٨٥﴾ وَلَا تَقْعُدُوا							
बैठो	और न	85	ईमान वाले	तुम हो	अगर	तुम्हारे लिए	यह
بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ							
अल्लाह का रास्ता	से	और तुम रोको	तुम डराओ	रास्ता	हर		
مِّنْ أَمْنٍ بِهِ وَتُبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ وَأَذْكُرُوا إِذْ كُنْتُمْ							
तुम थे	जब	और याद करो	कज़ी	और ढूँडो उस में	उस पर	ईमान लाया	जो
قَلِيلًا فَكَثَرْتُمْ ۚ وَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ							
अन्जाम	हुआ	कैसा	और देखो	तो उस ने तुम्हें बढ़ा दिया	थोड़े		
الْمُفْسِدِينَ ﴿٨٦﴾ وَإِنْ كَانَ ظَافِقًا مِّنْكُمْ أَمْنًا							
ईमान लाया	तुम से	एक गिरोह	है	और अगर	86	फ़साद करने वाले	
بِالَّذِي أُرْسِلْتُ بِهِ وَظَافِقًا لَّمْ يُؤْمِنُوا فَاصْبِرُوا							
तुम सब्र कर लो	ईमान नहीं लाया	और एक गिरोह	जिस के साथ	मैं भेजा गया	उस पर जो		
حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ﴿٨٧﴾							
87	फ़ैसला करने वाला	बेहतर	और वह	हमारे दरमियान	फ़ैसला कर दे अल्लाह	यहां तक कि	

۱۰  
۱۲

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لِنُخْرِجَنَّكَ									
हम तुझे ज़रूर निकाल दंगे	उस की कौम	से	तकबुर करते थे (बड़े बनते थे)	वह जो कि	सरदार	बोले			
يُسْعِيْبُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكَ مِنْ قَرِيْبَتِنَا أَوْ لَتَعُوْدَنَّ فِيْ مِلَّتِنَا									
हमारे दीन	में	या यह कि तुम लौट आओ	हमारी बस्ती	से	तेरे साथ	ईमान लाए	और वह जो	ऐं शुऐब (अ)	
قَالَ اَوْلُوْا كُنَّا كَرِهِيْنَ ﴿٨٨﴾ قَدْ افْتَرَيْنَا عَلٰى اللّٰهِ كَذْبًا اِنْ عُدْنَا									
हम लौट आएँ	अगर	झूटा	अल्लाह पर	अलबत्ता हम ने बुहतान वान्धा (वान्धेंगे)	88	नापसन्द करते हैं	हम हों	क्या खाह	उस ने कहा
فِيْ مِلَّتِكُمْ بَعْدَ اِذْ نَجَّيْنَا اللّٰهَ مِنْهَا وَمَا يَكُوْنُ لَنَا اَنْ نُّعُوْدَ فِيْهَا									
उस में	कि हम लौट आएँ	हमारे लिए	और नहीं है	उस से	हम को बचा लिया अल्लाह	जब	बाद	तुम्हारा दीन	में
اِلَّا اَنْ يَّشَاءَ اللّٰهُ رَبُّنَا وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا عَلٰى اللّٰهِ									
अल्लाह पर	इल्म में	हर शै	हमारा रब	अहाता कर लिया है	हमारा रब	अल्लाह	यह कि चाहे	मगर	
تَوَكَّلْنَا رَبُّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ									
बेहतर	और तू	हक के साथ	हमारी कौम	और दरमियान	हमारे दरमियान	फैसला कर दे	हमारा रब	हम ने भरोसा किया	
الْفَتِيْحِيْنَ ﴿٨٩﴾ وَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لِيْنِ اتَّبَعْتُمْ									
तुम ने पैरवी की	अगर	उस की कौम	से	कुफ़ किया	वह जिन्हों ने	सरदार	और बोले	89	फैसला करने वाला
شُعَيْبًا اِنَّكُمْ اِذَا لَخِسْرُوْنَ ﴿٩٠﴾ فَاخَذْتَهُمُ الرَّجْفَةُ فَاصْبَحُوا									
सुबह के वक़्त रह गए	ज़लज़ला	तो उन्हें आ लिया	90	ख़सारे में होंगे	उस सू़रत में	तो तुम ज़रूर	शुऐब (अ)		
فِيْ دَارِهِمْ جَثِيْمِيْنَ ﴿٩١﴾ الَّذِيْنَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا									
न बस्ते थे	गोया	शुऐब (अ)	झुटलाया	वह जिन्हों ने	91	औन्धे पड़े	अपने घर	में	
فِيْهَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَاَنْوْا هُمُ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٢﴾ فَتَوَلّٰى									
फिर मुहँ फेरा	92	ख़सारा पाने वाले	वही	वह हुए	शुऐब	झुटलाया	वह जिन्हों ने	उस में वहां	
عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلَتِ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ									
तुम्हारी	और ख़ैर खाही की	अपना रब	पैग़ाम (जमा)	मैं ने पहुँचा दिए तुम्हें	अलबत्ता	ऐं मेरी कौम	और कहा	उन से	
فَكَيْفَ اَسٰى عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿٩٣﴾ وَمَا اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِيٍّ									
नबी	कोई	किसी बस्ती	में	और न भेजा हम ने	93	काफिर (जमा)	कौम	पर	ग़म खाऊँ तो कैसे
اِلَّا اَخَذْنَا اٰهْلَهَا بِالْبَاسِءِ وَالطَّرَآءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَعُوْنَ ﴿٩٤﴾									
94	आजिज़ी करें	ताकि वह	और तकलीफ़	सख़्ती में	वहां के लोग	हम ने पकड़ा	मगर		
ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى عَفَوْا وَقَالُوْا قَدْ مَسَّ									
पहुँच चुकी है	और कहने लगे	वह बढ़ गए	यहां तक कि	भलाई	बुराई	जगह	हम ने बदली	फिर	
اِبَآءَنَا الطَّرَآءِ وَالسَّرَآءِ فَاخَذْنَهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٩٥﴾									
95	वेख़बर थे	और वह	अचानक	पस हम ने उन्हें पकड़ा	और खुशी	तकलीफ़	हमारे बाप दादा		

उस की कौम के वह सरदार जो बड़े बनते थे बोले ऐं शुऐब (अ)! हम ज़रूर निकाल दंगे तुझे और उन्हें जो तेरे साथ ईमान लाए हैं अपनी बस्ती से या यह कि तुम हमारे दीन में लौट आओ, फरमाया खाह हम नापसन्द करते हों (फिर भी?)। (88)

अलबत्ता हम अल्लाह पर झूटा बुहतान वान्धेंगे अगर हम उस के बाद तुम्हारे दीन में लौट आएँ जबकि अल्लाह ने हमें उस से बचा लिया है और हमारा काम नहीं कि हम उस में लौट आएँ मगर यह कि अल्लाह हमारा रब चाहे, हमारे रब ने अपने इल्म में हर शै का अहाता कर लिया है, हम ने अल्लाह पर भरोसा किया, ऐं हमारे रब! फैसला कर दे हमारे दरमियान और हमारी कौम के दरमियान हक के साथ और तू बेहतर फैसला करने वाला है। (89)

और वह सरदार बोले जिन्हों ने कुफ़ किया उस की कौम के, अगर तुम ने शुऐब (अ) की पैरवी की तो उस सू़रत में तुम खुद ख़सारे में होंगे। (90)

तो उन्हें ज़लज़ले ने आ लिया, पस वह सुबह के वक़्त अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। (91)

जिन्हों ने शुऐब (अ) को झुटलाया (वह ऐसे मिटे) गोया (कभी) बस्ते न थे वहां। जिन्हों ने शुऐब (अ) को झुटलाया वही ख़सारा पाने वाले हुए। (92)

फिर उन से उस ने मुहँ फेरा और कहा ऐं मेरी कौम! मैं ने तुम्हें अपने रब के पैग़ाम पहुँचा दिए और तुम्हारी ख़ैर खाही कर चुका तो (अब) काफ़िर कौम पर कैसे ग़म खाऊँ? (93)

और हम ने किसी बस्ती में कोई नबी नहीं भेजा मगर हम ने वहां के लोगों को सख़्ती में पकड़ा और तकलीफ़ में ताकि वह आजिज़ी करें। (94)

फिर हम ने बुराई की जगह भलाई से बदली यहां तक कि वह बढ़ गए और कहने लगे तकलीफ़ और खुशी हमारे बाप दादा को पहुँच चुकी है, पस हम ने उन्हें अचानक पकड़ा और वह वेख़बर थे। (95)

और अगर बसतियों वाले ईमान ले आते और परहेज़गारी इख्तियार करते तो अलबत्ता हम उन पर बरकतें खोल देते ज़मीन और आस्मान से, लेकिन उन्होंने ने झुटलाया तो हम ने उन्हें पकड़ा उस के नतीजे में जो वह करते थे। (96)

क्या अब वे ख़ौफ़ है बसतियों वाले कि उन पर हमारा अज़ाब रातों रात आ जाए और वह सोए हुए हों। (97)

क्या बसतियों वाले उस से वे ख़ौफ़ है कि उन पर हमारा अज़ाब दिन चढ़े आ जाए और वह खेल कूद रहे हों। (98)

क्या वह अल्लाह की तदबीर से वे ख़ौफ़ हो गए? सो वे ख़ौफ़ नहीं होते अल्लाह की तदबीर से मगर ख़सारा उठाने वाले। (99)

किया उन लोगों को हिदायत न मिली जो ज़मीन के वारिस हुए वहां के रहने वालों के बाद, अगर हम चाहते तो उन के गुनाहों के सबब उन पर मुसीबत डालते, और हम उन के दिलों पर मुहर लगाते हैं, सो वह सुनते नहीं। (100)

यह बसतियां हैं जिन की ख़बरें हम तुम पर बयान करते हैं, और अलबत्ता उन के पास आए उन के रसूल निशानियां ले कर, सो वह ईमान न लाए क्योंकि उस से पहले उन्होंने ने झुटलाया था, इसी तरह अल्लाह काफ़िरों के दिलों पर मुहर लगाता है। (101)

और हम ने उन के अक्सर में अहद का कोई पास न पाया और दरहकीकत हम ने उन में अक्सर नाफ़रमान वद किर्दार पाए। (102)

फिर हम ने उन के बाद मूसा (अ) को अपनी निशानियों के साथ भेजा फ़िरज़ौन की तरफ़ और उस के सरदारों की तरफ़ तो उन्होंने ने उन (निशानियों का) इन्कार किया, सो तुम देखो फ़साद करने वालों का अन्जाम क्या हुआ? (103)

और कहा मूसा (अ) ने, ऐ फ़िरज़ौन! वेशक मैं तमाम ज़हानों के रब की तरफ़ से रसूल हूँ। (104)

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرَىٰ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِم بَرَكَاتٍ							
बरकतें	उन पर	तो अलबत्ता हम खोल देते	और परहेज़गारी करते	ईमान लाते	बसतियों वाले	यह होता कि	और अगर
مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَلَٰكِن كَذَّبُوا فَأَخَذْنَاهُم بِمَا							
उस के नतीजे में	तो हम ने उन्हें पकड़ा	उन्होंने ने झुटलाया	और लेकिन	और ज़मीन	आस्मान	से	
كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٩٦﴾ أَفَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَنْ يَأْتِيَهُمْ							
उन पर आए	कि	बसतियों वाले	क्या बेख़ौफ़ है	96	जो वह करते थे		
بِأَسْنَاءِ بَيَاتٍ وَأَهُم نَائِمُونَ ﴿٩٧﴾ وَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَنْ							
कि	बसतियों वाले	क्या बेख़ौफ़ है	97	सोए हुए हों	और वह	रातों रात	हमारा अज़ाब
يَأْتِيَهُمْ بِأَسْنَاءِ ضُحَىٰ وَأَهُم يَلْعَبُونَ ﴿٩٨﴾ أَفَأَمِنُوا مَكْرَ اللَّهِ							
अल्लाह की तदबीर	किया वह बेख़ौफ़ हो गए	98	खेल कूद रहे हों	और वह	दिन चढ़े	हमारा अज़ाब	उन पर आ जाए
فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٩٩﴾ أَوَلَمْ يَهْدِ							
हिदायत मिली	क्या न	99	ख़सारा उठाने वाले	लोग	मगर	अल्लाह की तदबीर	बेख़ौफ़ नहीं होते
لِلَّذِينَ يَرِثُونَ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ أَهْلِهَا أَنْ لَّو نَشَاءُ							
अगर हम चाहते	कि	वहां के रहने वाले	बाद	ज़मीन	वारिस हुए	वह लोग जो	
أَصْبْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَنَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠٠﴾							
100	नहीं सुनते है	सो वह	उन के दिल	पर	और हम मुहर लगाते है	उन के गुनाहों के सबब	तो हम उन पर मुसीबत डालते
تِلْكَ الْقُرَىٰ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِهَا وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ							
आए उन के पास	और अलबत्ता	उन की कुछ ख़बरें	से	तुम पर	हम बयान करते है	बसतियां	यह
رُسُلَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا مِنْ قَبْلُ							
उस से पहले	उन्होंने ने झुटलाया	क्योंकि	वह ईमान लाते	सो न	निशानियां ले कर	उन के रसूल	
كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْكَافِرِينَ ﴿١٠١﴾ وَمَا وَجَدْنَا							
हम ने पाया	और न	101	काफ़िर (जमा)	दिल (जमा)	पर	मुहर लगाता है अल्लाह	इसी तरह
لِأَكْثَرِهِمْ مِنْ عَهْدٍ وَإِنْ وَجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ لَفَسِقِينَ ﴿١٠٢﴾							
102	नाफ़रमान - वद किर्दार	उन में अक्सर	हम ने पाए	और दरहकीकत	अहद का पास	उन के अक्सर में	
ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ							
और उसके सरदार	तरफ़ फ़िरज़ौन	अपनी निशानियों के साथ	मूसा (अ)	उन के बाद	हम ने भेजा	फिर	
فَطَلَمُوا بِهَا فَاَنْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٠٣﴾							
103	फ़साद करने वाले	अन्जाम	हुआ	क्या	सो तुम देखो	उन का तो उन्होंने ने जुल्म (इन्कार) किया	
وَقَالَ مُوسَىٰ يُفْرِعُونَ إِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٠٤﴾							
104	तमाम ज़हान	रब	से	रसूल	वेशक मैं	ऐ फ़िरज़ौन	मूसा और कहा

12  
ع  
2

حَقِيقٌ عَلَىٰ أَنْ لَا أَقُولَ عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقُّ قَدْ جِئْتُمْ بِبَيِّنَةٍ									
तहकीक तुम्हारे पास लाया हूँ निशानियां	मगर हक	अल्लाह पर	मैं न कहूँ	कि	पर	शायां			
مِّن رَّبِّكُمْ فَارْسَلْ مَعِيَ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٠٥﴾ قَالَ إِنْ كُنْتَ									
तू	अगर	बोला	105	वनी इस्राईल	मेरे साथ	पस भेज दे	तुम्हारा रब	से	
جِئْتَ بِآيَةٍ فَآتِ بِهَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿١٠٦﴾ فَأَلْقَىٰ عَصَاهُ									
अपना असा	पस उस ने डाला	106	सच्चे	से	अगर तू है	तो वह ले आ	लाया है कोई निशानी		
فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ﴿١٠٧﴾ وَنَزَعَ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ									
नूरानी	पस नागाह वह	अपना हाथ	और निकाला	107	सरीह (साफ)	अज़दहा	पस वह अचानक		
لِنُظْرِينَ ﴿١٠٨﴾ قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ									
यह जादूगर	वेशक	फिरऔन	क़ौम	से	सरदार	बोले	108	नाज़िरीन के लिए	
عَلِيمٌ ﴿١٠٩﴾ يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِّنْ أَرْضِكُمْ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ﴿١١٠﴾									
110	कहते हो	तो अब क्या	तुम्हारी सरज़मीन	से	तुम्हें निकाल दे	कि	चाहता है	109	इल्म वाला (माहिर)
قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَرْسِلْ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ﴿١١١﴾ يَأْتُوكَ									
तेरे पास ले आएँ	111	इकटठा करने वाले (नकीब)	शहरों में	और भेज	और उस का भाई	रोक ले	वह बोले		
بِكُلِّ سِحْرٍ عَلِيمٍ ﴿١١٢﴾ وَجَاءَ السَّحْرُ فِرْعَوْنَ قَالُوا إِنَّ لَنَا لَأَجْرًا									
कोई अजर (इन्आम)	हमारे लिए	यकीनन	वह बोले	फिरऔन	जादूगर (जमा)	और आए	112	इल्म वाला (माहिर)	जादूगर
إِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ﴿١١٣﴾ قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿١١٤﴾									
114	मुकर्रवीन	अलबत्ता-से	और तुम वेशक	हाँ	उस ने कहा	113	ग़ालिब (जमा)	हम	हुए
قَالُوا يَمْؤُوسَىٰ إِمَّا أَنْ تُلْقَىٰ وَإِمَّا أَنْ نَكُونَ نَحْنُ الْمُلْقِينَ ﴿١١٥﴾									
115	डालने वाले	हम	हैं	यह कि	और या (वरना)	तू डाल	यह कि	या	ऐ मूसा (अ)
قَالَ الْقَوْمُ فَلَمَّا أَلْقَوْا سَحَرُوا أَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوهُمْ									
और उन्हें डराया	लोग	आँखें	सिहर कर दिया	उन्होंने ने डाला	पस जब	तुम डालो	कहा		
وَجَاءُوا بِسِحْرِ عَظِيمٍ ﴿١١٦﴾ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَلْقِ عَصَاكَ									
अपना असा	डालो	कि	मूसा (अ)	तरफ	और हम ने वहि भेजी	116	बड़ा	और वह लाए जादू	
فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿١١٧﴾ فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا									
जो	और वातिल हो गया	हक	पस सावित हो गया	117	जो उन्होंने ने ढकोस्ला बनाया था	निगलने लगा	वह	तो नागाह	
كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٨﴾ فَغَلِبُوا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوا صَغِيرِينَ ﴿١١٩﴾									
119	ज़लील	और लौटे	वही	पस मगलूब हो गए	118	वह करते थे			
وَأَلْقَى السَّحْرَ سَجْدِينَ ﴿١٢٠﴾ قَالُوا أَمَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٢١﴾									
121	तमाम जहान (जमा)	रब पर	हम ईमान लाए	वह बोले	120	सिज्दा करने वाले	जादूगर	और गिर गए	

शायां है कि मैं न कहूँ अल्लाह पर मगर हक, तहकीक मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से निशानियां लाया हूँ, पस मेरे साथ वनी इस्राईल को भेज दे। (105)

बोला अगर तू कोई निशानी लाया है तो वह ले आ, अगर तू सच्चों में से है। (106)

पस उस (मूसा अ) ने डाला अपना असा, पस अचानक वह साफ अज़दहा हो गया। (107)

और अपना हाथ (गरेवान) से निकाला तो नागाह वह नाज़िरीन के लिए नूरानी हो गया। (108)

फिरऔन की क़ौम के सरदार बोले वेशक यह तो माहिर जादूगर है! (109)

चाहता है कि तुम्हें निकाल दे तुम्हारी सरज़मीन से, तो अब क्या कहते हो (क्या मश्वरा है)? (110)

वह बोले उस को और उस के भाई को रोक ले और शहरों में भेज दे नकीब। (111)

तेरे पास हर माहिर जादूगर ले आएँ। (112)

और जादूगर फिरऔन के पास आए, वह बोले यकीनन हमारे लिए कोई इन्आम हो गा अगर हम ग़ालिब हुए। (113)

उस ने कहा हॉ! तुम वेशक (मेरे) मुकर्रवीन में से होंगे। (114)

वह बोले, ऐ मूसा (अ)! या तू डाल वरना हम डालने वाले हैं। (115)

(मूसा अ) ने कहा तुम डालो, पस जब उन्होंने ने डाला लोगों की आँखों पर सिहर कर दिया और उन्हें डराया और वह बड़ा जादू लाए थे। (116)

और हम ने मूसा (अ) की तरफ वहि भेजी कि अपना असा डालो, नागाह वह निगलने लगा जो ढकोस्ला उन्होंने ने बनाया था। (117)

पस हक सावित हो गया और वह जो करते थे वातिल हो गया। (118)

पस वह वही मगलूब हो गए और लौटे ज़लील हो कर। (119)

और जादूगर सिज्दे में गिर गए, (120)

वह बोले कि हम तमाम जहानों के रब पर ईमान ले आए। (121)

(यानी) मूसा (अ) और हारून (अ) के रब पर। (122)

फ़िरऔन बोला क्या तुम उस पर ईमान ले आए इस से कब्ल कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ? बेशक यह एक चाल है कि शहर में तुम ने चली है ताकि उस के रहने वालों को यहां से निकाल दो, तुम जल्द (उस का नतीजा) मालूम कर लोगे। (123)

मैं ज़रूर काट डालूंगा तुम्हारे (एक तरफ़ के) हाथ और दूसरी तरफ़ के पाऊँ, फिर मैं तुम सब को ज़रूर सूली दूँगा। (124)

वह बोले बेशक हम अपने रब की तरफ़ लौटने वाले हैं। (125)

और तुझ को हम से दुश्मनी नहीं मगर सिर्फ़ यह कि हम अपने रब की निशानियों पर ईमान लाए जब वह हमारे पास आ गई, ऐ हमारे रब! हम पर सब्र के दहाने खोल दे और हमें मौत दे (उस हाल में कि हम) मुसलमान हों। (126)

और सरदार बोले फ़िरऔन की कौम के, क्या तू मूसा (अ) और उस की कौम को छोड़ रहा है कि वह ज़मीन में फ़साद करें और वह (मूसा अ) तुझे छोड़ दे और तेरे माबूदों को, उस ने कहा हम अज़ीब उन के बेटों को क़त्ल कर डालेंगे और बेटियों को ज़िन्दा छोड़ देंगे, और हम उन पर ज़ोर आवर हैं। (127)

मूसा (अ) ने अपनी कौम से कहा कि तुम अल्लाह से मदद मांगो और सब्र करो, बेशक ज़मीन अल्लाह की है, वह अपने बन्दों में से जिस को चाहता है उस का वारिस बना देता है, और अन्जाम कार परहेज़गारों के लिए है। (128)

वह बोले हम अज़ीयत दिए गए इस से कब्ल कि आप हम में आए और उस के बाद कि आप हम में आए, (मूसा (अ) ने) कहा करीब है तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर दे और तुम्हें ज़मीन में खलीफ़ा (नाइव) बना दे, फिर देखेगा तुम कैसे काम करते हो। (129)

और अलबत्ता हम ने पकड़ा फ़िरऔन वालों को क़हतों में और फलों के नुक़सान में ताकि वह नसीहत पकड़ें। (130)

رَبِّ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ﴿١٢٢﴾ قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ									
कि	पहले	उस पर	क्या तुम ईमान लाए	फ़िरऔन	बोला	122	और हारून	मूसा (अ)	रब
اٰذَنْ لَكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكْرْتُمْوُهٗ فِى الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَا									
यहां से	ताकि निकाल दो	शहर	में	जो तुम ने चली	एक चाल है	यह	बेशक	मैं इजाज़त दूँ तुम्हें	
اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٢٣﴾ لَاقْطِعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ									
और तुम्हारे पाऊँ	तुम्हारे हाथ	मैं ज़रूर काट डालूंगा	123	तुम मालूम कर लोगे	पस जल्द	उस के रहने वाले			
مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَأَصْلَبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٢٤﴾ قَالُوْا اِنَّا اِلٰى رَبِّنَا									
अपना रब	तरफ़	बेशक हम	वह बोले	124	सब को	मैं तुम्हें ज़रूर सूली दूँगा	फिर	दूसरी तरफ़	से
مُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٢٥﴾ وَمَا تَنْقِمُ مِنَّا اِلَّا اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا									
जब	अपना रब	निशानियां	हम ईमान लाए	यह कि	मगर हम से	तुझ को दुश्मनी	और नहीं	125	लौटने वाले
جَآءَتْنَا رَبَّنَا اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ﴿١٢٦﴾ وَقَالَ									
और बोले	126	मुसलमान (जमा)	और हमें मौत दे	सब्र	हम पर	दहाने खोल दे	हमारा रब	वह हमारे पास आए	
الْمَلَا مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوسٰى وَقَوْمَهٗ لِيْفْسِدُوْا									
ताकि वह फ़साद करें	और उस की कौम	मूसा	क्या तू छोड़ रहा है	फ़िरऔन	कौम	से (के)	सरदार		
فِى الْاَرْضِ وَيَذَرُكَ وَالْهٰتِكَ ۗ قَالَ سَنُقْتِلُ اَبْنَاءَهُمْ									
उन के बेटे	हम अज़ीब उन के क़त्ल कर देंगे	उस ने कहा	और तेरे माबूद	और वह छोड़ दे तुझे	ज़मीन	में			
وَنَسْتَحْيِ نِسَاءَهُمْ ۗ وَاِنَّا فَوْقَهُمْ قَاهِرُوْنَ ﴿١٢٧﴾ قَالَ مُوسٰى									
मूसा (अ)	कहा	127	ज़ोर आवर (जमा)	उन पर	और हम	उन की औरतों (बेटियां)	और ज़िन्दा छोड़ देंगे		
لِقَوْمِهٖ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاَصْبِرُوْا ۗ اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۗ									
अल्लाह की	ज़मीन	बेशक	और सब्र करो	अल्लाह से	तुम मदद मांगो	अपनी कौम से			
يُوْرثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۗ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٨﴾									
128	परहेज़गारों के लिए	और अन्जाम कार	अपने बन्दे	से	चाहता है	जिस	वह उस का वारिस बनाता है		
قَالُوْا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيْنَا وَمِنْۢ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ۗ									
आप आए हम में	और बाद	आप (अ) हम में आते	कि	कब्ल	से	हम अज़ीयत दिए गए	वह बोले		
قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوْكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِى									
में	और तुम्हें खलीफ़ा बना दे	तुम्हारा दुश्मन	हलाक कर दे	कि	तुम्हारा रब	करीब है	उस ने कहा		
الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٩﴾ وَلَقَدْ اٰخَذْنَا									
हम ने पकड़ा	और अलबत्ता	129	तुम काम करते हो	कैसे	फिर देखेगा	ज़मीन			
اِلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَنَقَصِ مِنَ الثَّمَرِ لَعَلَّهُمْ يَذَكَّرُوْنَ ﴿١٣٠﴾									
130	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	फल (जमा)	से (में)	और नुक़सान	क़हतों में	फ़िरऔन वाले		

12  
ع  
18  
2

15  
ع  
5



فَإِذَا جَاءَتْهُمْ الْحَسَنَةُ قَالُوا لَنَا هَذِهِ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ								
कोई बुराई	पहुँचती	और अगर	यह	हमारे लिए	वह कहने लगे	भलाई	आई उन के पास	फिर जब
يَظُنُّوْنَ بِمُوسَىٰ وَمَنْ مَّعَهُ ۗ أَلَا إِنَّمَا طَّيَّرَهُمْ عِنْدَ اللَّهِ								
अल्लाह के पास	उन की बदनसीबी	इस के सिवा नहीं	याद रखो	और जो उन के साथ (साथी)	मूसा से	बदशगूनी लेते		
وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٣١﴾ وَقَالُوا مَهْمَا تَأْتِنَا بِهِ								
हम पर तू लाएगा	जो कुछ	और वह कहने लगे	131	नहीं जानते	उन के अक्सर	और लेकिन		
مِّنْ آيَةٍ لَّتَسْحَرْنَ بِهَا ۖ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿١٣٢﴾ فَأَرْسَلْنَا								
फिर हम ने भेजे	132	ईमान लाने वाले	तुझ पर	हम	तो नहीं	उस से	कि हम पर जादू करे	कैसी भी निशानी
عَلَيْهِمُ الطُّوفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالِدَّمَ ۗ أَيْتٍ								
निशानियां	और खून	और मेंडक	और जुए-चच्छी	और टिड्डी	तूफान	उन पर		
مُفَصَّلَاتٍ ۖ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ﴿١٣٣﴾ وَلَمَّا								
और जब	133	मुजरिम (जमा)	एक कौम (लोग)	और वह थे	तो उन्होंने ने तकव्वुर किया	जुदा जुदा		
وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرَّجْزُ قَالُوا يُمُوسَىٰ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ								
अहद	सबब - जो	अपना रब	हमारे लिए	दुआ कर	ऐ मूसा	कहने लगे	अज़ाब	उन पर
عِنْدَكَ ۖ لَبِئْسَ كَاشِفَتْنَا عَنِ الرَّجْزِ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ								
और हम ज़रूर भेज देंगे	तुझ पर	हम ज़रूर ईमान लाएंगे	अज़ाब	हम से	तू ने खोल दिया (उठा लिया)	अगर	तेरे पास	
مَعَكَ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٣٤﴾ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمْ الرَّجْزَ								
अज़ाब	उन से	हम ने खोल दिया (उठा लिया)	फिर जब	134	बनी इस्राईल	तेरे साथ		
إِلَىٰ أَجَلٍ هُمْ بَلِغُوهُ إِذَا هُمْ يَنْكُثُونَ ﴿١٣٥﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ								
उन से	फिर हम ने इन्तिकाम लिया	135	अहद तोड़ देते	वह	उसी वक़्त	उस तक पहुँचना था	उन्हें	एक मुद्दत तक
فَاغْرَقْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا								
उन से	और वह थे	हमारी आयतों को	झुटलाया	क्योंकि उन्होंने	दर्या में	पस उन्हें गर्क कर दिया		
غَافِلِينَ ﴿١٣٦﴾ وَأَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوا يُسْتَضْعَفُونَ								
कमज़ोर समझे जाते	थे	वह जो	कौम	और हम ने वारिस किया	136	गाफिल (जमा)		
مَشَارِقِ الْأَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا ۗ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ								
वादा	और पूरा हो गया	उस में	हम ने बरकत रखी	वह जिस	और उस के मग़रिब (जमा)	ज़मीन	मशरिफ़ (जमा)	
رَبِّكَ الْحُسْنَىٰ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ ۗ بِمَا صَبَرُوا ۗ وَدَمَّرْنَا								
और हम ने बरवाद कर दिया	उन्होंने ने सबर किया	बदले में	बनी इस्राईल	पर	अच्छा	तेरा रब		
مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهُ وَمَا كَانُوا يَعْرِشُونَ ﴿١٣٧﴾								
137	वह ऊँचा फैलाते थे	और जो	और उस की कौम	फिरज़ौन	बनाते थे (बनाया था)	जो		

जब उन के पास आई भलाई तो वह कहने लगे यह हमारे लिए है, और कोई बुराई पहुँचती तो मूसा (अ) और उन के साथियों से बदशगूनी (बद नसीबी) लेते, याद रखो! इस के सिवा नहीं कि उन की बदनसीबी अल्लाह के पास है, लेकिन उन के अक्सर नहीं जानते। (131)

और वह कहने लगे तू हम पर कैसी भी निशानी लाएगा कि उस से हम पर जादू करे तो (भी) हम तुझ पर ईमान लाने वाले नहीं। (132)

फिर हम ने उन पर भेजे तूफान, और टिड्डी, और जुए, और मेंडक, और खून, जुदा जुदा निशानियां, तो उन्होंने ने तकव्वुर किया और वह मुजरिम कौम के लोग थे। (133)

और जब उन पर अज़ाब वाके हुआ तो कहने लगे कि ऐ मूसा (अ): तू हमारे लिए दुआ कर अपने रब से (अल्लाह के) उस अहद के सबब जो तेरे पास है, अगर तू ने हम से अज़ाब उठा लिया तो हम ज़रूर तुझ पर ईमान ले आएंगे और बनी इस्राईल को तेरे साथ ज़रूर भेज देंगे। (134)

फिर जब हम ने उन से अज़ाब उठा लिया एक मुद्दत तक (जिसे आखिर कार) उन्हें पहुँचना था, उसी वक़्त वह अहद तोड़ देते। (135)

फिर हम ने उन से इन्तिकाम लिया और उन्हें दर्या में गर्क कर दिया क्योंकि उन्होंने ने हमारी आयतों को झुटलाया और वह उन से गाफिल थे। (136)

और हम ने उस कौम को वारिस कर दिया जो कमज़ोर समझे जाते थे, (उस) ज़मीन के मशरिफ़ ओ मग़रिब का जिस में हम ने बरकत रखी है (सर ज़मीने फलसतीन ओ शाम), और बनी इस्राईल पर तेरे रब का वादा पूरा हो गया उस के बदले में कि उन्होंने ने सबर किया, और हम ने बरवाद कर दिया जो फिरज़ौन और उस की कौम ने बनाया था और जो वह ऊँचा फैलाते थे (उन के बुलन्द ओ वाला महल्लात)। (137)

और हम ने उतारा बनी इस्राईल को बहरे (कुलजुम) के पार, पस वह एक ऐसी कौम के पास आए जो अपने बुतों (की पूजा) पर जमे बैठे थे, वह बोले ऐ मूसा (अ)! हमारे लिए ऐसे बुत बना दे जैसे उन के हैं, (मूसा अ) ने कहा बेशक तुम लोग जहल (नादानी) करते हो। (138)

बेशक यह लोग जिस (बुत परस्ती) में लगे हुए हैं वह तबाह होने वाली है और वातिल है वह जो यह कर रहे हैं। (139)

मूसा (अ) ने कहा: किया अल्लाह के सिवा तुम्हारे लिए कोई और माबूद तलाश करूँ? हालांकि उस ने तुम्हें सारे जहान पर फज़ीलत दी। (140)

और (याद करो) जब हम ने तुम्हें फ़िरअौन वालों से नजात दी, वह तुम्हें बुरे अज़ाब से तकलीफ़ देते थे, तुम्हारे बेटों को मार डालते और तुम्हारी बेटियों को जीता छोड़ देते थे। और उस में तुम्हारे लिए तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ी आज़माइश थी। (141)

और हम ने मूसा (अ) से वादा किया तीस (30) रातों का और उस को दस (10) (और बढ़ा कर) पूरा किया तो उस के रब की मुद्दत चालीस (40) रात पूरी हुई, और मूसा (अ) ने अपने भाई हारून (अ) से कहा मेरे नाइब रहो मेरी कौम में और इस्लाह करना और मुफ़सिदों के रास्ते की पैरवी न करना। (142)

और जब मूसा (अ) आए हमारी वादा गाह पर और अपने रब से कलाम किया, मूसा (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! मुझे दिखा कि मैं तुझे देखूँ, अल्लाह ने कहा तू मुझे हरगिज़ न देख सकेगा, अलबत्ता पहाड़ की तरफ़ देख, पस अगर वह अपनी जगह ठहरा रहा तो तभी मुझे देख लेगा, पस जब उस के रब ने तजल्ली की पहाड़ की तरफ़ (तो) उस को रेज़ा रेज़ा कर दिया और मूसा (अ) बेहोश हो कर गिर पड़े, फिर जब होश आया तो उस ने कहा, तू पाक है, मैं ने तौबा की तेरी तरफ़ और मैं ईमान लाने वालों में सब से पहला हूँ। (143)

وَجَوْرُنَا بِنِي إِسْرَائِيلَ الْبَحْرَ فَاتُوا عَلَى قَوْمٍ يَعْكُفُونَ										
जमे बैठे थे	एक कौम	पर (पास)	पस वह आए	बहरे (कुलजुम)	बनी इस्राईल को	और हम ने पार उतारा				
عَلَىٰ أَصْنَامٍ لَهُمْ ۗ قَالُوا يُمُوسَىٰ اجْعَلْ لَنَا إِلَهًا كَمَا لَهُمْ										
उन के लिए	जैसे	बुत	हमारे लिए	बना दे	ऐ मूसा (अ)	वह बोले	अपने	सनम (जमा) बुत	पर	
الِهَةَ ۗ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ﴿١٣٨﴾										
वह	जो	तबाह होने वाली है	यह लोग	बेशक	138	जहल करते हो	तुम लोग	बेशक तुम	उस ने कहा	माबूद (जमा) बुत
فِيهِ وَبِطُلٍّ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٣٩﴾ قَالَ أَغَيْرَ اللَّهِ أَبْغِيكُمْ										
तलाश करूँ तुम्हारे लिए	क्या अल्लाह के सिवा	उस ने कहा	139	वह कर रहे हैं	जो	और वातिल	उस में			
إِلَهًا وَهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿١٤٠﴾ وَإِذْ أَنْجَيْنَاكَ مِنَ										
से	हम ने तुम्हें नजात दी	और जब	140	सारे जहान	पर	फज़ीलत दी तुम्हें	हालांकि वह	कोई माबूद		
الِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكَ سُوءَ الْعَذَابِ ۗ يُقْتَلُونَ أَبْنَاءَكُمْ										
तुम्हारे बेटे	मार डालते थे	अज़ाब	बुरा	तुम्हें तकलीफ़ देते थे	फ़िरअौन वाले					
وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ ۗ وَفِي ذَلِكُمْ بَلَاءٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿١٤١﴾										
141	बड़ा-बड़ी	तुम्हारा रब	से	आज़माइश	और उस में तुम्हारे लिए	तुम्हारी औरतें (बेटियाँ)	और जीता छोड़ देते थे			
وَوَعَدْنَا مُوسَىٰ ثَلَاثِينَ لَيْلَةً وَأَتَمَمْنَا بِعَشْرِ فِتْمٍ										
तो पूरी हुई	दस (10) से	और उस को हम ने पूरा किया	रात	तीस (30)	मूसा (अ)	और हम ने वादा किया				
مِيقَاتٍ رَبِّهِ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ۗ وَقَالَ مُوسَىٰ لِأَخِيهِ										
अपने भाई से	मूसा	और कहा	रात	चालीस (40)	उस का रब	मुद्दत				
هُرُونَ أَخْلَفْنِي فِي قَوْمِي وَأَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ										
रास्ता	और न पैरवी करना	और इस्लाह करना	मेरी कौम में	मेरा खलीफ़ा (नाइब) रह	हारून (अ)					
الْمُفْسِدِينَ ﴿١٤٢﴾ وَلَمَّا جَاءَ مُوسَىٰ لِمِيقَاتِنَا وَكَلَّمَهُ رَبُّهُ ۗ قَالَ										
उस ने कहा	अपना रब	और उस ने कलाम किया	हमारी वादा गाह पर	मूसा (अ)	आया	और जब	142	मुफ़सिद (जमा)		
رَبِّ أَرِنِي أَنْظُرْ إِلَيْكَ ۗ قَالَ لَنْ تَرِنِي وَلَكِنِ انظُرْ إِلَىٰ										
तरफ़	तू देख	और लेकिन (अलबत्ता)	तू मुझे हरगिज़ न देखेगा	उस ने कहा	तेरी तरफ़	मैं देखूँ	मुझे दिखा	ऐ मेरे रब		
الْجَبَلِ فَإِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهُ فَسَوْفَ تَرِنِي ۗ فَلَمَّا تجلّىٰ										
तजल्ली की	पस जब	तू मुझे देख लेगा	तो तभी	अपनी जगह	वह ठहरा रहा	पस अगर	पहाड़			
رَبُّهُ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَكًّا وَخَرَّ مُوسَىٰ صَعِقًا ۗ فَلَمَّا أَفَاقَ										
होश आया	फिर जब	बेहोश	मूसा (अ)	और गिरा	रेज़ा रेज़ा	उसको कर दिया	पहाड़ की तरफ़	उस का रब		
قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ إِلَيْكَ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٤٣﴾										
143	ईमान लाने वाले	सब से पहला	और मैं	तेरी तरफ़	मैं ने तौबा की	तू पाक है	उस ने कहा			

11  
12  
1

قَالَ يُمُوسَىٰ إِنِّي اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسَالَتِي						
अपने पैगामात से	लोग	पर	मैं ने तुझे चुन लिया	वेशक मैं	ऐ मूसा	कहा
وَبِكَلَامِي ۗ فَخُذْ مَا آتَيْتُكَ وَكُن مِّنَ الشَّاكِرِينَ ﴿١٤٤﴾ وَكَتَبْنَا						
और हम ने लिख दी	144	शुक्र गुज़ार (जमा)	से	और रहो	जो मैं ने तुझे दिया	पस और अपने कलाम से पकड़ ले
لَهُ فِي الْأَنْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةٌ وَتَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ ۗ						
हर चीज़ की	और तफ़सील	नसीहत	हर चीज़	से	तख्तियां	में उस के लिए
فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَأْمُرْ قَوْمَكَ يَأْخُذُوا بِأَحْسَنِهَا ۗ						
उस की अच्छी बातें	वह पकड़ें (इख्तियार करें)	और हुकम दे अपनी कौम	कुव्वत से	पस तू उसे पकड़ ले		
سَأُورِيكُمْ دَارَ الْفَاسِقِينَ ﴿١٤٥﴾ سَأَصْرِفُ عَنْ آيَتِيَ الَّذِينَ						
वह लोग जो	अपनी आयात	से	मैं अनकरीब फेर दूंगा	145	नाफरमानों का घर	अनकरीब मैं तुम्हें दिखाऊंगा
يَتَكَبَّرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَإِنْ يَرَوْا كَلِمًا						
हर निशानी	वह देख लें	और अगर	नाहक	ज़मीन में	तकबुर करते हैं	
لَّا يُؤْمِنُوا بِهَا ۗ وَإِنْ يَرَوْا سَبِيلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ۗ						
रास्ता	न पकड़ें (इख्तियार करें)	हिदायत	रास्ता	देख लें	और अगर	न ईमान लाएं उस पर
وَإِنْ يَرَوْا سَبِيلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ۗ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ						
इस लिए कि उन्होंने ने	यह	रास्ता	इख्तियार कर लें उसे	गुमराही	रास्ता	देख लें और अगर
كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غٰفِلِينَ ﴿١٤٦﴾ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا						
झुटलाया	और जो लोग	146	गाफ़िल (जमा)	उस से	और थे	हमारी आयात झुटलाया
بِآيَاتِنَا وَلِقَاءِ الْآخِرَةِ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ ۗ هَلْ يُجْزَوْنَ						
वह बदला पाएंगे	क्या	उन के अमल	जाया हो गए	आखिरत	और मुलाकात	हमारी आयात को
إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤٧﴾ وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوسَىٰ مِنۢ بَعْدِهِ						
उस के बाद	मूसा	कौम	और बनाया	147	वह करते थे	जो मगर
مِّنۢ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهُ خُوَارٌ ۗ أَلَمْ يَرَوْا أَنَّهُ لَا يُكَلِّمُهُمْ						
नहीं कलाम करता उन से	कि वह	क्या न देखा उन्होंने ने	गाय की आवाज़	उस में	एक धड़	एक बछड़ा अपने ज़ेवर से
وَلَا يَهْدِيهِمْ سَبِيلًا ۗ اتَّخَذُوهُ وَكَانُوا ظٰلِمِينَ ﴿١٤٨﴾ وَلَمَّا						
और जब	148	और वह ज़ालिम थे	उन्होंने ने बना लिया	रास्ता	और नहीं दिखाता उन्हें	
سُقِطَ فِي أَيْدِيهِمْ وَرَأَوْا أَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوا ۗ قَالُوا لَئِن						
अगर	वह कहने लगे	तहकीक गुमराह हो गए	कि वह	और देखा उन्होंने ने	गिरे अपने हाथों में (नादिम हुए)	
لَّمۡ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُونَ مِنَ الْخٰسِرِينَ ﴿١٤٩﴾						
149	खसारा पाने वाले	से	ज़रूर हो जाएंगे हम	और (न) बख़्श दिया	हमारा रब	रहम न किया हम पर

अल्लाह ने कहा ऐ मूसा (अ)! वेशक मैं ने तुझे लोगों पर चुन लिया अपने पैगामों और अपने कलाम से, पस जो मैं ने तुझे दिया है (कुव्वत से) पकड़ ले और शुक्र गुज़ारों में से रहो। (144)

और हम ने उस के लिए लिख दी तख्तियों में हर चीज़ की नसीहत, हर चीज़ की तफ़सील, पस तू उसे कुव्वत से पकड़ ले और हुकम दे अपनी कौम को कि वह उस के बेहतर मफहूम की पैरवी करें, अनकरीब मैं तुझे नाफरमानों का घर (अनज़ाम) दिखाऊंगा। (145)

मैं अनकरीब फेर दूंगा उन लोगों को अपनी आयातों से जो ज़मीन में नाहक तकबुर करते हैं, और अगर वह हर निशानी देख लें (फिर भी) उस पर ईमान न लाएं, और अगर हिदायत का रास्ता देख लें तो भी उस रास्ते को इख्तियार न करें, और अगर देख लें गुमराही का रास्ता तो इख्तियार कर लें, यह इस लिए कि उन्होंने ने हमारी आयात को झुटलाया और वह उस से गाफ़िल थे। (146)

और जिन लोगों ने झुटलाया हमारी आयात को और आखिरत की मुलाकात को, उन के अमल जाया हो गए, वह क्या बदला पाएंगे मगर (वही) जो वह करते थे। (147)

और मूसा (अ) की कौम ने उस के बाद बनाया अपने ज़ेवर से एक बछड़ा, (महज़) एक धड़ जिस में गाय की आवाज़ थी, क्या उन्होंने ने न देखा कि न वह उन से कलाम करता है न उन्हें दिखाता है रास्ता? उन्होंने ने उसे (माबूद) बना लिया और वह ज़ालिम थे। (148)

और जब वह नादिम हुए और उन्होंने ने देखा कि वह गुमराह हो गए तो कहने लगे अगर हमारे रब ने हम पर रहम न किया और हमें न बख़्श दिया तो हम ज़रूर हो जाएंगे खसारा पाने वालों में से। (149)

١٤٦

وقف الهم

और जब मूसा (अ) लौटा अपनी कौम की तरफ़ गुस्से में भरा हुआ, रंजीदा, उस ने कहा किस कद्र बुरी मेरी जानशीनी की तुम ने मेरे बाद! क्या तुम ने अपने परवरदिगार के हुक्म से जल्दी की? और उस (मूसा अ) ने तख्तियाँ डाल दीं और सर (बालों से) पकड़ा अपने भाई का और उसे अपनी तरफ़ खींचने लगा, वह (हारून अ) बोला ऐ मेरे माँ जाए! लोगों ने मुझे कमज़ोर समझा और करीब था कि मुझे कत्ल कर डाले, पस मुझ पर दुश्मनों को खुश न कर और मुझे ज़ालिम लोगों के साथ शामिल न कर। (150)

उस ने (मूसा अ) ने कहा, ऐ मेरे रब! मुझे और मेरे भाई को बख़्श दे और हमें अपनी रहमत में दाख़िल कर, और तू सब से ज़ियादा रहम करने वाला है। (151)

वेशक जिन लोगों ने बछड़े को (माबूद) बना लिया, अ़नक़रीब उन्हें उन के रब का ग़ज़ब पहुँचेगा और ज़िल्लत दुनिया की ज़िन्दगी में, और इसी तरह हम बुहतान बान्धने वालों को सज़ा देते हैं। (152)

और जिन लोगों ने बुरे अ़मल किए फिर उस के बाद तौबा की और वह ईमान ले आए, वेशक तुम्हारा रब उस (तौबा) के बाद बख़्शाने वाला, मेहरबान है। (153)

और जब मूसा (अ) का गुस्सा फ़रू हुआ, उस ने तख्तियों को उठा लिया, और उन की तहरीर में हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिए जो अपने रब से डरते हैं। (154)

और मूसा (अ) ने अपनी कौम से हमारे वादे के लिए सत्तर (70) आदमी चुन लिए, फिर जब उन्हें ज़लज़ले ने आ लिया, उस ने कहा ऐ मेरे रब! तू अगर चाहता तो इस से पहले इन्हें और मुझे हलाक कर देता, क्या तू हमें उस पर हलाक कर देगा जो हम में से बेवकूफ़ों ने किया! यह नहीं मगर (सिर्फ़) तेरी आज़माइश है, तू उस से जिस को चाहे गुमराह करे और तू जिस को चाहे हिदायत दे, तू हमारा कारसाज़ है, सो हमें बख़्श दे और हम पर रहम फ़रमा और तू बहतरीन बख़्शने वाला है। (155)

وَلَمَّا رَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا قَالَ بِئْسَمَا

क्या बुरी	उस ने कहा	रंजीदा	गुस्से में भरा हुआ	अपनी कौम की तरफ़	मूसा (अ)	लौटा	और जब
-----------	-----------	--------	--------------------	------------------	----------	------	-------

خَلَفْتُمُونِي مِنْ بَعْدِي ۖ أَعَجِلْتُمْ أَمْرَ رَبِّكُمْ ۖ وَأَلْقَى الْأَوَاحِ

तख्तियाँ	डाल दें	अपना परवरदिगार	हुक्म	क्या जल्दी की तुम ने	मेरे बाद	तुम ने मेरी जानशीनी की
----------	---------	----------------	-------	----------------------	----------	------------------------

وَأَخَذَ بِرَأْسِ أَخِيهِ يَجُرُّهُ إِلَيْهِ ۗ قَالَ ابْنٌ أُمِّ إِنَّ الْقَوْمَ

कौम - लोग	वेशक	ऐ मेरे माँ जाए	वह बोला	अपनी तरफ़	उसे खींचने लगा	अपना भाई	सर	और पकड़ा
-----------	------	----------------	---------	-----------	----------------	----------	----	----------

اسْتَضَعُّونَنِي ۖ وَكَادُوا يَقْتُلُونَنِي ۖ فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْأَعْدَاءَ

दुश्मन (जमा)	मुझ पर	पस खुश न कर	मुझे कत्ल कर डालें	और करीब थे	कमज़ोर समझा मुझे
--------------	--------	-------------	--------------------	------------	------------------

وَلَا تَجْعَلْنِي مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿١٥٠﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِأَخِي

और मेरा भाई	मुझे बख़्श दे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	150	ज़ालिम (जमा)	कौम (लोग)	साथ	और मुझे न बना (शामिल न कर)
-------------	---------------	-----------	-----------	-----	--------------	-----------	-----	----------------------------

وَادْخُلْنَا فِي رَحْمَتِكَ ۖ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ ﴿١٥١﴾ إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا

उन्होंने ने बना लिया	वह लोग जो	वेशक	151	सब से ज़ियादा रहम करने वाला	और तू	अपनी रहमत में	और हमें दाख़िल कर
----------------------	-----------	------	-----	-----------------------------	-------	---------------	-------------------

الْعِجْلَ سَيْنَأَهُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّهِمْ ۖ وَذَلَّةٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۗ

दुनिया	ज़िन्दगी	में	और ज़िल्लत	उन के रब का	ग़ज़ब	अ़नक़रीब उन्हें पहुँचेगा	बछड़ा
--------	----------	-----	------------	-------------	-------	--------------------------	-------

وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِينَ ﴿١٥٢﴾ وَالَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ ثُمَّ تَابُوا

तौबा की	फिर	बुरे	अ़मल किए	और जिन लोगों ने	152	बुहतान बान्धने वाले	हम सज़ा देते हैं	और इसी तरह
---------	-----	------	----------	-----------------	-----	---------------------	------------------	------------

مِّن بَعْدِهَا وَأَمْنُوا ۗ إِنَّ رَبَّكَ مِنَ بَعْدِهَا لَعَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٥٣﴾

153	मेहरबान	बख़्शाने वाला	उस के बाद	तुम्हारा रब	वेशक	और ईमान लाए	उस के बाद
-----	---------	---------------	-----------	-------------	------	-------------	-----------

وَلَمَّا سَكَتَ عَن مُّوسَى الْغَضَبَ أَخَذَ الْأَوَاحِ ۗ وَفِي نُسُخَتِهَا

और उन की तहरीर में	तख्तियाँ	लिया- उठा लिया	गुस्सा	मूसा (अ)	से- का	ठहरा (फ़रू हुआ)	और जब
--------------------	----------	----------------	--------	----------	--------	-----------------	-------

هُدًى وَرَحْمَةً لِّلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُونَ ﴿١٥٤﴾ وَاخْتَارَ مُوسَىٰ

मूसा	और चुन लिए	154	डरते हैं	अपने रब से	वह	उन लोगों के लिए जो	और रहमत	हिदायत
------	------------	-----	----------	------------	----	--------------------	---------	--------

قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا لِّمِيقَاتِنَا ۖ فَلَمَّا أَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ

ऐ मेरे रब	उस ने कहा	ज़लज़ला	उन्हें पकड़ा (आ लिया)	फिर जब	हमारे वादे के वक़्त के लिए	मर्द	सत्तर (70)	अपनी कौम
-----------	-----------	---------	-----------------------	--------	----------------------------	------	------------	----------

لَوْ شِئْتَ أَهْلَكْتَهُمْ مِّن قَبْلِ وَإِيَّائِي ۗ أَتَهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الشُّفَهَاءُ

बेवकूफ़ (जमा)	किया	उस पर जो	क्या तू हमें हलाक करेगा	और मुझे	इस से पहले	इन्हें हलाक कर देता	अगर तू चाहता
---------------	------	----------	-------------------------	---------	------------	---------------------	--------------

مِنَّا ۚ إِنَّ هِيَ إِلَّا فِتْنَتُكَ ۖ تُضِلُّ بِهَا مَن تَشَاءُ وَتَهْدِي مَن

जो- जिस	और तू हिदायत दे	तू चाहे	जिस	उस से	तू गुमराह करे	तेरी आज़माइश	मगर	यह नहीं	हम में से
---------	-----------------	---------	-----	-------	---------------	--------------	-----	---------	-----------

تَشَاءُ ۗ أَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا ۖ وَأَنْتَ خَيْرُ الْغَافِرِينَ ﴿١٥٥﴾

155	बख़्शने वाला	बहतरीन	और तू	और हम पर रहम फ़रमा	सो हमें बख़्श दे	हमारा कारसाज़	तू	तू चाहे
-----	--------------	--------	-------	--------------------	------------------	---------------	----	---------

وَكَتُبْنَا لَنَا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ إِنَّا							
वैशक हम	और आखिरत में	भलाई	दुनिया	इस	में	हमारे लिए	और लिख दे
هُدَانًا إِلَيْكَ قَالَ عَذَابِي أُصِيبُ بِهِ مَنْ أَشَاءُ <sup>ع</sup> وَرَحْمَتِي							
और मेरी रहमत	मैं चाहूँ	जिस	उस को	मैं पहुँचाता हूँ (हूँ)	अपना अज़ाब	उस ने फ़रमाया	हम ने रुज़ूअ किया
وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ فَسَاكُتُهَا لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ							
और देते हैं	डरते हैं	उन के लिए जो	सो मैं अनकरीब वह लिख दूँगा	हर शौ	वसीअ है		
الزَّكَاةَ وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٥٦﴾ الَّذِينَ							
वह लोग जो	156	ईमान रखते हैं	हमारी आयात पर	वह	और वह जो	ज़कात	
يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ الَّذِي يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا							
लिखा हुआ	उसे पाते हैं	वह जो - जिस	उम्मी	नबी	रसूल	पैरवी करते हैं	
عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ يَأْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوفِ							
भलाई	वह हुक्म देता है उन्हें	और इंजील	तौरत	में	अपने पास		
وَيَنْهَاهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمْ							
उन पर	और हराम करता है	पाकीज़ा चीज़ें	उन के लिए	और हलाल करता है	बुराई	से	और रोकता है उन्हें
الْخَبِيثَاتِ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ الَّتِي كَانَتْ							
थे	जो	और तौक	उन के बोझ	उन से	और उतारता है	नापाक चीज़ें	
عَلَيْهِمْ <sup>ط</sup> فَالَّذِينَ آمَنُوا بِهِ وَعَزَّرُوهُ وَنَصَرُوهُ							
और उस की मदद की	और उस की रफ़ाक़त (हिमायत) की	ईमान लाए उस पर	पस जो लोग	उन पर			
وَاتَّبَعُوا النُّورَ الَّذِي أُنزِلَ مَعَهُ <sup>١٥٧</sup> أُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ							
157	फलाह पाने वाले	वह	वही लोग	उस के साथ	उतारा गया	जो	नूर और पैरवी की
قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا							
सब	तुम्हारी तरफ़	अल्लाह का रसूल	वैशक मैं	लोगो	ऐ	कह दें	
إِلَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي							
ज़िन्दा करता है	वह	मगर	माबूद नहीं	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	बादशाहत	उस की वह जो
وَيُمِيتُ <sup>١٥٨</sup> فَاْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ النَّبِيِّ الْأُمِّيَّ الَّذِي							
वह जो	उम्मी	नबी	और उस का रसूल	अल्लाह पर	सो तुम ईमान लाओ	और मारता है	
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَكَلِمَاتِهِ وَاتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ							
158	हिदायत पाओ	ताकि तुम	और उस की पैरवी करो	और उस के सब कलाम	अल्लाह पर	ईमान रखता है	
وَمِنْ قَوْمِ مُوسَى أُمَّةٌ يَهْتَدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ							
159	इन्साफ़ करते हैं	और उस के मुताबिक़	हक़ की	हिदायत देता है	एक गिरोह	कौमे मूसा	और से (में)

और हमारे लिए इस दुनिया में और आखिरत में भलाई लिख दे, वैशक हम ने तेरी तरफ़ रुज़ूअ किया, उस ने फ़रमाया मैं अपना अज़ाब जिस को चाहूँ दूँ, और मेरी रहमत हर शौ पर वसीअ है, सो मैं वह अनकरीब लिख दूँगा उन के लिए जो डरते हैं और ज़कात देते हैं और हमारी आयात पर ईमान रखते हैं। (156)

वह लोग जो पैरवी करते हैं (हमारे) रसूल (मुहम्मद स) नबी उम्मी की, जिसे वह लिखा हुआ पाते हैं अपने पास तौरत में और इंजील में, वह उन्हें हुक्म देता है भलाई का और उन्हें रोकता है बुराई से, और उन के लिए हलाल करता है पाकीज़ा चीज़ें और उन पर हराम करता है नापाक चीज़ें, और उतारता है उन (के सरो) से बोझ और (उन की गर्दनो से) तौक जो उन पर थे, पस जो लोग उस पर ईमान लाए और उन्होंने ने उस की हिमायत की और उस की मदद की और उस नूर की पैरवी की जो उस के साथ उतारा गया है, वही फ़लाह पाने वाले हैं। (157)

आप कह दें, ऐ लोगो! वैशक मैं तुम सब की तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ, वह जिस की बादशाहत है आस्मानों पर और ज़मीन में, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, वही ज़िन्दा करता है और मारता है, सो तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उस के रसूल नबी उम्मी (मुहम्मद स) पर, वह जो ईमान रखता है अल्लाह पर और उस के सब कलामों पर, और उस की पैरवी करो ताकि तुम हिदायत पाओ। (158)

और मूसा (अ) की कौम में एक गिरोह है जो हक़ की हिदायत देता है और वह उसी के मुताबिक़ इन्साफ़ करते हैं, (159)

और हम ने उन्हें जुदा कर दिया (तक़सीम कर दिया) बारह कबीले (गिरोह गिरोह की सूत में) और जब उस की कौम ने उस से पानी मांगा, हम ने मूसा की तरफ़ वहि भेजी कि मारो अपनी लाठी उस पत्थर पर, तो उस से बारह चश्मे फूट निकले, हर शख्स ने पहचान लिया अपना घाट, और हम ने उन पर अब्र का साया किया और उन पर मन्न (एक किस्म का गोन्द) और सलवा (बटेर जैसा परिन्दा) उतारा, तुम खाओ पाकीज़ा चीज़ों में से जो हम ने तुम्हें दी और उन्होंने ने हमारा कुछ न बिगाड़ा लेकिन वह अपनी जानों पर जुल्म करते थे। (160)

और जब उन से कहा गया तुम इस शहर में रहो और इस से खाओ जैसे तुम चाहो और "हित्तुन" (बख़्श दे) कहो और दरवाज़े (में) सिज्दा करते हुए दाक़िल हो, हम तुम्हें तुम्हारी ख़ताएं बख़्श देंगे, हम अनक़रीब नेकी करने वालों को ज़ियादा देंगे। (161)

पस बदल डाला उन में से ज़ालिमों ने उस के सिवा लफ़्ज़ जो उन्हें कहा गया था, सो हम ने उन पर अज़ाब भेजा आस्मान से क्योंकि वह जुल्म करते थे। (162)

और उन से उस बस्ती के बारे में पूछो जो दर्या के किनारे पर थी, जब वह "सव्त" (हफ़ता) के हुक्म के बारे में हद से बढ़ने लगे, उन के सव्त (हफ़ते) के दिन मछलियां उन के सामने आजाती और जिस दिन "सव्त" न होता न आती, इसी तरह हम उन्हें आज़माते क्योंकि वह नाफ़रमानी करते थे। (163)

وَقَطَّعْنَهُمْ اثْنَيْ عَشَرَ نَبِطًا وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ							
तरफ़	और वहि भेजी हम ने	गिरोह गिरोह	बाप दादा की औलाद (कबीले)	बारह (12)	और हम ने जुदा कर दिया उन्हें		
مُوسَىٰ إِذِ اسْتَسْقَاهُ قَوْمُهُ أَنْ اَضْرِبَ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ							
पत्थर	अपनी लाठी	मारो	कि	उसकी कौम	उस ने पानी मांगा	जब	मूसा
فَانْبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ							
शख्स	हर	जान लिया (पहचान लिया)	चश्मे	बारह (12)	उस से	तो फूट निकले	
مَشْرَبَهُمْ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَأَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ							
उन पर	और हम ने उतारा	अब्र	उन पर	और हम ने साया किया	अपना घाट		
الْمَنَّ وَالسَّلْوَىٰ كُلُّوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ							
जो हम ने तुम्हें दी	पाकीज़ा	से	तुम खाओ	और सलवा	मन्न		
وَمَا ظَلَمُونَا وَلَكِنْ كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١٦٠﴾ وَإِذْ قَبِلَ							
कहा गया	और जब	160	जुल्म करते	अपनी जानों पर	वह थे	और लेकिन	और हमारा कुछ न बिगाड़ा उन्होंने ने
لَهُمْ اسْكُنُوا هَذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ							
जैसे	इस से	और खाओ	शहर	इस	तुम रहो	उन से	
شَيْئٍمْ وَقُولُوا حِطَّةً وَادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ							
हम बख़्श देंगे तुम्हें	सिज्दा करते हुए	दरवाज़ा	और दाख़िल हो	हित्ता (बख़्श दे)	और कहो	तुम चाहो	
خَطِيئَتِكُمْ سَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٦١﴾ فَبَدَّلَ الَّذِينَ							
वह जिन्होंने ने	पस बदल डाला	161	नेकी करने वाले	अनक़रीब हम ज़ियादा देंगे	तुम्हारी ख़ताएं		
ظَلَمُوا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ							
उन्हें	कहा गया	वह जो	सिवा	लफ़्ज़	उन से	जुल्म किया (ज़ालिम)	
فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا							
क्योंकि	आस्मान	से	अज़ाब	उन पर	सो हम ने भेजा		
كَانُوا يَظْلِمُونَ ﴿١٦٢﴾ وَسَأَلَهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ							
थी	वह जो कि	बस्ती	से (बारे में)	और पूछो उन से	162	वह जुल्म करते थे	
حَاضِرَةَ الْبَحْرِ إِذْ يَعْدُونَ فِي السَّبْتِ إِذْ تَأْتِيهِمْ							
उन के सामने आजाती	जब	हफ़ते में	हद से बढ़ने लगे	जब	दर्या	सामने (किनारे)	
حَيْثَانَهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَيَوْمَ لَا يَسْبِتُونَ							
सव्त न होता	और जिस दिन	खुल्लम खुल्ला (सामने)	उन का सव्त	दिन	मछलियां उन की		
لَا تَأْتِيهِمْ كَذَلِكَ نَبَلُوهُم بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿١٦٣﴾							
163	वह नाफ़रमानी करते थे	क्योंकि	हम उन्हें आज़माते थे	इसी तरह	वह न आती थी		

ع 10

وقف لزم

النصف

عند المتأخرين 12

وَإِذْ قَالَتْ أُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُونَ قَوْمًا ۗ اللَّهُ مُهْلِكُهُمْ أَوْ							
या	उन्हें हलाक करने वाला	अल्लाह	ऐसी कौम	क्यों नसीहत करते हो	उन में से	एक गिरोह	कहा और जब
مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۗ قَالُوا مَعذِرَةٌ إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ							
और शायद कि वह	तुम्हारा रब	तरफ	माज़िरत	वह बोले	सख्त	अज़ाब	उन्हें अज़ाब देने वाला
يَتَّقُونَ ﴿١٦٤﴾ فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ ۗ أَنجَيْنَا الَّذِينَ يَنْهَوْنَ							
मना करते थे	वह जो कि	हम ने बचा लिया	उन्हें समझाई गई थी	जो	वह भूल गए	फिर जब	164 डरें
عَنِ السُّوءِ ۗ وَأَخَذْنَا الَّذِينَ ظَلَمُوا بِعَدَابِ بَيْسٍ ۖ بِمَا							
क्योंकि	बुरा	अज़ाब में	जुल्म किया	वह लोग जिन्होंने ने	और हम ने पकड़ लिया	बुराई से	
كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿١٦٥﴾ فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَا نُهُوا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُونُوا							
उन को हो जाओ	हम ने हुकम दिया	उस से	जिस से मना किए गए थे	से	सरकशी करने लगे	फिर जब	165 नाफरमानी करते थे
قِرَدَةً خَاسِئِينَ ﴿١٦٦﴾ وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ إِلَىٰ							
तक	उन पर	अलबलता ज़रूर भेजता रहेगा	तुम्हारा रब	खबर दी	और जब	166 ज़लील ओ खार	बन्दर
يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۖ مَنْ يَسُومُهُمْ سُوءَ الْعَذَابِ ۗ إِنَّ رَبَّكَ							
तुम्हारा रब	वेशक	बुरा अज़ाब	तकलीफ़ दे उन्हें	जो	रोज़े कियामत		
لَسَرِيعُ الْعِقَابِ ۗ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٦٧﴾ وَقَطَعْنَاهُمْ فِي الْأَرْضِ آمَمًا ۗ							
गिरोह दर गिरोह	ज़मीन में	और परागन्दा कर दिया हम ने उन्हें	167	मेहरवान	बख़शने वाला	और वेशक वह	जल्द अज़ाब देने वाला
مِنْهُمْ الصَّالِحُونَ ۖ وَمِنْهُمْ دُونَ ذَلِكَ ۗ وَبَلَّوْنَاهُمْ بِالْحَسَنَاتِ							
अच्छाइयों में	और आजमाया हम ने उन्हें	उस	सिवा	और उन से	नेकोकार	उन से	
وَالسَّيِّئَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿١٦٨﴾ فَخَلَفَ مِنْ بَعدِهِمْ خَلْفٌ وَرِثُوا							
वह वारिस हुए	नाखलफ	उन के बाद	पीछे आए	168	रुजूअ करें	ताकि वह	और बुराइयों में
الْكِتَابَ يَأْخُذُونَ عَرَضَ هَذَا الْأَدْنَىٰ وَيَقُولُونَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۗ							
अब हमें बख़श दिया जाएगा	और कहते हैं	इस अदना ज़िन्दगी	मताअ (असबाब)	वह लेते हैं	किताब		
وَإِنْ يَأْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلَهُ يَأْخُذُوهُ ۗ أَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِيثَاقُ							
अहद	उन पर (उन से)	क्या नहीं लिया गया	उस को ले लें	उस जैसा	माल ओ असबाब	आए उन के पास	और अगर
الْكِتَابِ أَنْ لَا يَقُولُوا عَلَىٰ اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ ۗ وَدَرَسُوا مَا فِيهِ ۗ وَالذَّارِ							
और घर	जो उस में	और उन्होंने ने पढ़ा	सच	मगर	अल्लाह पर (के बारे में)	वह न कहे	कि किताब
الْآخِرَةَ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يَتَّقُونَ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٦٩﴾ وَالَّذِينَ يُمَسِّكُونَ							
मजबूत पकड़े हुए हैं	और जो लोग	169	क्या तुम समझते नहीं	परहेज़गार	उन के लिए जो	बेहतर	आखिरत
بِالْكِتَابِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ ۗ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ الْمُصْلِحِينَ ﴿١٧٠﴾							
170	नेकोकार (जमा)	अजर	जाया नहीं करते	वेशक हम	नमाज़	और काइम रखते हैं	किताब को

और जब उन में से एक गिरोह ने कहा तुम ऐसी कौम को क्यों नसीहत करते हो जिसे अल्लाह हलाक करने वाला है या अज़ाब देने वाला है सख्त अज़ाब, वह बोले तुम्हारे रब के पास माज़िरत पेश करने के लिए और (इस उम्मीद पर) कि शायद वह डरें। (164)

फिर जब वह भूल गए जो उन्हें समझाई गई थी, जो बुराई से रोकते थे हम ने उन्हें बचा लिया, और जिन लोगों ने जुल्म किया हम ने उन्हें बुरे अज़ाब में पकड़ लिया क्योंकि वह नाफरमानी करते थे। (165)

फिर जब वह उस से सरकशी करने लगे जिस से मना किए गए थे तो हम ने हुकम दिया उन को ज़लील ओ खार बन्दर हो जाओ। (166)

और जब तुम्हारे रब ने खबर दी कि अलबलता वह इन (यहूद) पर ज़रूर भेजता रहेगा रोज़े कियामत तक (ऐसे अफ़राद) जो उन्हें बुरे अज़ाब से तक्लीफ़ दें, वेशक तुम्हारा रब सज़ा देने में तेज़ है, और वेशक वह बख़शने वाला मेहरवान है। (167)

फिर हम ने उन्हें ज़मीन में परागन्दा कर दिया गिरोह दर गिरोह, उन में से (कुछ) नेकोकार हैं और उन में से (कुछ) उस के सिवा हैं, और हम ने उन्हें आजमाया अच्छाइयों और बुराइयों में ताकि वह रुजूअ करें। (168)

पीछे आए उन के बाद नाखलफ़ जो किताब के वारिस हुए, वह इस अदना ज़िन्दगी का असबाब लेते हैं और कहते हैं अब हमें बख़श दिया जाएगा, और अगर उन के पास उस जैसा माल ओ असबाब (फिर) आए तो उस को ले लें, क्या नहीं लिया गया उन से अहद (जो) किताब (तौरत) में है कि वह अल्लाह के बारे में न कहे मगर सच और उन्होंने ने पढ़ा है जो उस (तौरत) में है, और आखिरत का घर बेहतर है उन के लिए जो परहेज़गार हैं, क्या तुम समझते नहीं? (169)

और जो लोग मजबूत पकड़ते हैं किताब को और नमाज़ काइम करते हैं, वेशक हम नेकोकारों का अजर जाया नहीं करते। (170)

और (याद करो) जब हम ने उठाया पहाड़ उन के ऊपर गोया कि वह साइवान है और उन्होंने ने गुमान किया गोया कि वह उन के ऊपर गिरने वाला है, जो हम ने तुम्हें दिया है वह मज़बूती से पकड़ो और जो उस में है याद करो ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ। (171)

और (याद करो) जब तुम्हारे रब ने निकाली आदम की पुशत से उन की औलाद, और उन्हें उन की जानों पर (उन पर) गवाह बनाया, क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? वह बोले क्यों नहीं! हम गवाह हैं, कभी तुम क्रियामत के दिन कहो बेशक हम इस से ग़ाफ़िल (बेख़बर) थे। (172)

या तुम कहो शिर्क तो इस से क़ब्ल हमारे बाप दादा ने किया और उन के बाद हम (उन की) औलाद हुए, सो क्या तू हमें हलाक करता है उस पर जो ग़लत कारों ने किया। (173)

और इसी तरह हम आयतें खोल कर बयान करते हैं ताकि वह रुज़ूअ करें (लौट आएँ)। (174)

और उन्हें उस शख्स की खबर सुनाओ जिसे हम ने अपनी आयतें दी तो वह उस से साफ़ निकल गया तो शैतान उस के पीछे लग गया, सो वह हो गया गुमराहों में से। (175)

और अगर हम चाहते तो उसे उन (आयतों) के ज़रीए बुलन्द करते, लेकिन वह ज़मीन की तरफ़ माइल हो गया, और उस ने पैरवी की अपनी खाहिशात की, तो उस का हाल कुत्ते जैसा है, अगर तू उस पर हमला करे तो हांपे या उसे छोड़ दे तो (फिर भी) हांपे, यह मिसाल उन लोगों की है जिन्होंने ने हमारी आयतों को झुटलाया, सो (यह) अहवाल बयान कर दो ताकि वह ग़ौर करें। (176)

बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने ने हमारी आयतों को झुटलाया और अपनी जानों पर जुल्म करते थे। (177)

अल्लाह जिस को हिदायत दे वही हिदायत याफ़ता है, और जिस को गुमराह कर दे सो वही लोग घाटा पाने वाले हैं। (178)

وَإِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَأَنَّهُ ظُلَّةٌ وَظَنُّوا أَنَّهُ وَاقِعٌ بِهِمْ ۗ										
और उन पर	गिरने वाला	कि वह	और उन्होंने ने गुमान किया	साइवान	गोया कि वह	उन के ऊपर	पहाड़	उठाया हम ने	और जब	
خُذُوا مَا آتَيْنَكُم بِقُوَّةٍ وَّادْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٧١﴾										
171	परहेज़गार बन जाओ	ताकि तुम	जो उस में	और याद करो	मज़बूती से	दिया हम ने तुम्हें	जो	तुम पकड़ो		
وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِن بَنِي آدَمَ مِن ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ										
उन की औलाद	उन की पुशत	से	वनी आदम	से (की)	तुम्हारा रब	लिया (निकाली)	और जब			
وَأَشْهَدَهُمْ عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ ۗ أَلَسَتْ بِرَبِّكُمْ ۗ قَالُوا بَلَىٰ ۗ شَهِدْنَا ۗ إِنَّ										
कि (कभी)	हम गवाह है	हां, क्यों नहीं	वह बोले	तुम्हारा रब	क्या नहीं हूँ मैं	उन की जानें	पर	और गवाह बनाया उन को		
تَقُولُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَذَا غٰفِلِينَ ﴿١٧٢﴾ أَوْ تَقُولُوا إِنَّمَا										
इस के सिवा नहीं (सिर्फ)	तुम कहो	या	172	ग़ाफ़िल (जमा)	उस	से	थे	बेशक हम	क्रियामत के दिन	तुम कहो
أَشْرَكَ آبَاؤُنَا مِن قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّن بَعْدِهِمْ ۗ أَفَتُهْلِكُنَا										
सो क्या तू हमें हलाक करता है	उन के बाद	औलाद	और थे हम	उस से क़ब्ल	हमारे बाप दादा	शिर्क किया				
بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُونَ ﴿١٧٣﴾ وَكَذٰلِكَ نَفْصَلُ الْآيٰتِ وَلَعَلَّهُمْ										
और ताकि वह	आयतें	हम खोल कर बयान करते हैं	और इसी तरह	173	अहले बातिल (ग़लत कार)	किया	उस पर जो			
يَرْجِعُونَ ﴿١٧٤﴾ وَآتٰل عَلَيْهِمْ نَبَا الَّذِي آتَيْنَاهُ الْاِيْتِنَا فَاَنْسَلَخْ										
तो साफ़ निकल गया	हमारी आयतें	हम ने उस को दी	वह जो कि	ख़बर	उन पर (उन्हें)	और पढ़ (सुनाओ)	174	रुज़ूअ करें		
مِنْهَا فَاتَّبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿١٧٥﴾ وَلَوْ شِئْنَا										
हम चाहते	और अगर	175	गुमराह (जमा)	से	सो हो गया	शैतान	तो उस के पीछे लगा	उस से		
لَرْفَعْنٰهُ بِهَا وَلَكِنَّهٗ اٰخَلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هُوَ ۗ فَمَثَلُهُ										
तो उस का हाल	अपनी खाहिशात	और उस ने पैरवी की	ज़मीन की तरफ़	गिर पड़ा (माइल होगया)	और लेकिन वह	उन के ज़रीए	उसे बुलन्द करते			
كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۗ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكُهٗ يَلْهَثْ ۗ										
हांपे	या उसे छोड़ दे	वह हांपे	उस पर	तू हमला करे	अगर	कुत्ता	मानिंद - जैसा			
ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِآيٰتِنَا ۗ فَاقْصِصْ										
पस बयान कर दो	हमारी आयात	उन्होंने ने झुटलाया	वह जो कि	लोग	मिसाल	यह				
الْقَصْصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿١٧٦﴾ سَآءَ مَثَلًا لِّلْقَوْمِ الَّذِيْنَ										
वह जो	लोग	मिसाल	बुरी	176	ग़ौर करें	ताकि वह	अहवाल (किस्से)			
كَذَّبُوْا بِآيٰتِنَا وَاَنْفُسِهِمْ كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿١٧٧﴾ مِّنْ يَّهْدِي اللّٰهُ										
अल्लाह हिदायत दे	जो - जिस	177	जुल्म करते	वह थे	और अपनी जानें	हमारी आयात	उन्होंने ने झुटलाया			
فَهُوَ الْمُهْتَدِيٌّ وَمَنْ يُضَلِّ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٧٨﴾										
178	घाटा पाने वाले	वह	सो वही लोग	गुमराह कर दे	और जिस	हिदायत याफ़ता	तो वही			

ع ۱۱

عند المشاورين ۱۲

معاينة ۷



وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ لَهُمْ قُلُوبٌ									
दिल	उन के	और इन्सान	जिन	से	बहुत से	जहन्नम के लिए	और हम ने पैदा किए		
لَا يَفْقَهُونَ بِهَا وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَا يُبْصِرُونَ بِهَا وَلَهُمْ آذَانٌ لَا يَسْمَعُونَ									
नहीं सुनते	कान	और उन के लिए	उन से	नहीं देखते	आँखें	और उन के लिए	उन से	समझते नहीं	
بِهَا أُولَئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ أُولَئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ (179)									
179	गाफिल (जमा)	वह	यही लोग	बदतरिन गुमराह	वह	बल्कि	चौपायों के मानिंद	यही लोग	उन से
وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ فَادْعُوهُ بِهَا وَذَرُوا الَّذِينَ يُلْحِدُونَ									
कज रची करते हैं	वह लोग जो	और छोड़ दो	उन से	पस उस को पुकारो	अच्छे	और अल्लाह के लिए नाम (जमा)			
فِي أَسْمَائِهِ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (180) وَمِمَّنْ خَلَقْنَا أُمَّةً									
एक उम्मत (गिरोह)	हम ने पैदा किया	और से- जो	180	वह करते थे	जो	अनकरीब वह बदला पाएंगे	उस के नाम	में	
يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ (181) وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا									
हमारी आयात को	उन्होंने ने झुटलाया	और वह लोग जो	181	फैसला करते हैं	और उस के मुताबिक	हक के साथ (ठीक)	वह बतलाते हैं		
سَنَسْتَدْرِجُهُم مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ (182) وَأُمْلِي لَهُمْ إِنَّ كَيْدِي									
मेरी खुफिया तदबीर	वेशक	उन के लिए	और मैं ढील दूँगा	182	वह न जानेंगे (खबर न होगी)	इस तरह	आहिस्ता आहिस्ता उन को पकड़ेंगे		
مَتِينٌ (183) أَوْلَمْ يَتَفَكَّرُوا مَا بِصَاحِبِهِم مِّنْ جِنَّةٍ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ									
डराने वाले	मगर	वह	नहीं	जुनून	से	नहीं उन के साहब को	क्या वह गौर नहीं करते	183	पुख्ता
مُسِينٌ (184) أَوْلَمْ يَنْظُرُوا فِي مَلَكُوتِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا خَلَقَ									
पैदा किया	और जो	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	बादशाहत	में	क्या वह नहीं देखते	184	साफ	
اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ وَأَنْ عَسَىٰ أَنْ يَكُونَ قَدِ اقْتَرَبَ أَجَلُهُمْ فَبِأَيِّ									
तो किस	उनकी अजल (मौत)	करीब आगई हो	हो	कि	शायद	और यह कि	कोई चीज़	अल्लाह	
حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ (185) مَنْ يُضِلِّ اللَّهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ									
उस को	हिदायत देने वाला	तो नहीं	गुमराह करे अल्लाह	जिस	185	वह ईमान लाएंगे	इस के बाद	बात	
وَيَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ (186) يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا									
उस का काइम होना	कब है	घड़ी (कियामत)	से (वारे में)	वह आप (स) से पूछते हैं	186	बहकते हैं	उन की सरकशी	में	वह छोड़ देता है उन्हें
قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّي لَا يُجَلِّيهَا لِوَقْتِهَا إِلَّا هُوَ ثَقُلَتْ									
भारी है	वह (अल्लाह)	सिवा	उस के वक़्त पर	उस को ज़ाहिर न करेगा	मेरा रब	पास	उस का इल्म	सिर्फ	कह दें
فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَا تَأْتِيكُمُ إِلَّا بَعَثَةٌ يَسْأَلُونَكَ كَأَنَّكَ حَفِيٌّ									
सुतलाशी	गोया कि आप	आप (स) से पूछते हैं	अचानक	मगर	आएगी तुम पर	न	और ज़मीन	आस्मानों	में
عَنْهَا قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ (187)									
187	नहीं जानते	लोग	अक्सर	और लेकिन	अल्लाह के पास	उस का इल्म	सिर्फ	कह दें	उस के

और हम ने जहन्नम के लिए बहुत से जिन और इन्सान पैदा किए, उन के दिल हैं उन से समझते नहीं, और उन की आँखें हैं उन से वह देखते नहीं, और उन के कान हैं वह सुनते नहीं उन से, यही लोग चौपायों की मानिंद हैं बल्कि (उन से भी) बदतरिन गुमराह हैं, यही लोग गाफिल हैं। (179)

और अल्लाह के लिए हैं अच्छे नाम, सो तुम उस को उन (ही) से पुकारो, और उन लोगों को छोड़ दो जो उस के नामों में कज रची करते हैं, जो वह करते थे अनकरीब वह उस का बदला पाएंगे। (180)

और जो लोग हम ने पैदा किए (उन में) एक गिरोह है जो ठीक राह बतलाते हैं और उस के मुताबिक फैसला करते हैं। (181)

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया, आहिस्ता आहिस्ता हम उन को पकड़ेंगे कि उन्हें खबर भी न होगी। (182)

और मैं उन के लिए ढील दूँगा, बेशक मेरी खुफिया तदबीर पुख्ता है। (183)

क्या वह गौर नहीं करते? कि उन के साहब (महम्मद स) को कुछ जुनून नहीं, वह नहीं मगर साफ़ साफ़ डराने वाले। (184)

क्या वह नहीं देखते? बादशाहत आस्मानों और ज़मीन की और जो अल्लाह ने कोई चीज़ (भी) पैदा की है, और यह कि शायद करीब आगई हो उन की अजल (मौत की घड़ी), तो इस के बाद किस बात पर वह ईमान लाएंगे? (185)

जिस को अल्लाह गुमराह करे तो कोई हिदायत देने वाला नहीं उस को। और वह उन्हें उन की सरकशी में बहकते छोड़ देता है। (186)

वह आप (स) से कियामत के बारे में पूछते हैं कि कब है उस के काइम होने (का वक़्त)? आप (स) कह दें उस का इल्म सिर्फ़ मेरे रब के पास है, उस को उस के वक़्त पर अल्लाह के सिवा कोई ज़ाहिर न करेगा। भारी है आस्मानों और ज़मीन में, और तुम पर न आएगी (वाक़े होगी) मगर अचानक, आप (स) से (यूँ) पूछते हैं गोया कि आप (स) उस के सुतलाशी हैं, आप (स) कह दें: इस का इल्म सिर्फ़ अल्लाह के पास है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (187)

आप (स) कह दें: मैं मालिक नहीं अपनी ज़ात के लिए नफ़ा का न नुक़सान का मगर जो अल्लाह चाहे, और अगर मैं ग़ैब जानता होता तो मैं बहुत भलाई जमा कर लेता, और मुझे कोई बुराई न पहुँचती, मैं बस डराने वाला खुशख़बरी सुनाने वाला हूँ उन लोगों के लिए (जो) ईमान रखते हैं। (188)

वही है जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया, उस से बनाया उस का जोड़ा ताकि उस के पास सुकून हासिल करे, फिर जब मर्द ने उसे ढांप लिया तो उसे हलका सा हमल रहा, फिर वह उस को लिए फिरी, फिर जब वह बोझल हो गई तो दोनों ने अपने रब अल्लाह को पुकारा, अगर तू ने हमें सालेह बच्चा दिया तो हम ज़रूर तेरे शुक्र करने वालों में से होंगे। (189)

फिर जब अल्लाह ने उन्हें सालेह बच्चा दिया तो जो अल्लाह ने उन्हें दिया था उन्होंने ने उस में शरीक ठहराए, सो अल्लाह उस से बरतर है जो वह शरीक ठहराते हैं। (190)

क्या वह उन्हें शरीक ठहराते हैं जो कुछ भी पैदा नहीं करते बल्कि वह पैदा किए जाते हैं (ख़ालिक नहीं, मख़लूक हैं)। (191)

और वह उन की मदद की कुदरत नहीं रखते और न खुद अपनी मदद कर सकते हैं। (192)

और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो वह तुम्हारी पैरवी न करें, तुम्हारे लिए बराबर है ख़ाह तुम उन्हें बुलाओ या ख़ामोश रहो। (193)

वेशक तुम जिन्हें पुकारते हो अल्लाह के सिवा, वह तुम्हारे जैसे बन्दे हैं, फिर उन्हें पुकारो तो चाहिए था कि वह तुम्हें जवाब दें अगर तुम सच्चे हो। (194)

क्या उन के पाऊँ हैं जिन से वह चलते हैं, या उन के हाथ हैं जिन से वह पकड़ते हैं, या उन की आँखें हैं जिन से वह देखते हैं, या उन के कान हैं जिन से वह सुनते हैं, कह दें, पुकारो अपने शरीकों को, फिर मुझ पर दाओ चलो, पस मुझे मोहलत न दो। (195)

قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ وَلَوْ										
और अगर	अल्लाह चाहे	जो	मगर	नुक़सान	और न	नफ़ा	अपनी ज़ात के लिए	मैं मालिक नहीं	कह दें	
كُنْتُ أَعْلَمُ الْغَيْبِ لَأَسْتَكْثِرُ مِنَ الْخَيْرِ وَمَا مَسْنِيَ										
पहुँचती मुझे	और न	बहुत भलाई	से	मैं अलबत्ता जमा कर लेता	ग़ैब	जानता	मैं होता			
السُّوءِ إِنَّ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١٨٨﴾ هُوَ الَّذِي										
जो - जिस	वह	188	ईमान रखते हैं	लोगों के लिए	और खुशख़बरी सुनाने वाला	डराने वाला	मगर (सिर्फ)	मैं	बस (फ़क़त)	कोई बुराई
خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ إِلَيْهَا										
उस की तरफ़ (पास)	ताकि वह सुकून हासिल करे	उस का जोड़ा	उस से	और बनाया	एक	जान	से	पैदा किया तुम्हें		
فَلَمَّا تَغَشَّهَا حَمَلَتْ حَمَلًا خَفِيفًا فَمَرَّتْ بِهِ فَلَمَّا أَثْقَلَتْ										
बोझल हो गई	फिर जब	उस के साथ (उसको)	फिर वह लिए फिरी	हलका सा	हमल	उसे हमल रहा	मर्द ने उस को ढांप लिया	फिर जब		
دَعَا اللَّهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ آتَيْنَا صَالِحًا لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿١٨٩﴾										
189	शुक्र करने वाले	से	हम ज़रूर होंगे	सालेह	तू ने हमें दिया	अगर	दोनों का (अपना) रब	दोनों ने पुकारा अल्लाह को		
فَلَمَّا آتَاهُمَا صَالِحًا جَعَلَ لَهُ شُرَكَاءَ فِيمَا آتَاهُمَا فَتَعَالَى اللَّهُ										
सो अल्लाह बरतर	उन्हें दिया	उस में जो	शरीक	उस के	उन दोनों ने ठहराए	सालेह बच्चा	उस ने दिया उन्हें	फिर जब		
عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١٩٠﴾ أَيُشْرِكُونَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلِقُونَ ﴿١٩١﴾										
191	पैदा किए जाते हैं	और वह	कुछ भी	नहीं पैदा करते	जो	क्या वह शरीक ठहराते हैं	190	वह शरीक करते हैं	उस से जो	
وَلَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرًا وَلَا أَنفُسَهُمْ يَنْصُرُونَ ﴿١٩٢﴾ وَإِنْ										
और अगर	192	मदद करते हैं	खुद अपनी	और न	मदद	उन की	वह कुदरत नहीं रखते			
تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ لَا يَتَّبِعُوكُمْ سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ أَدَعَوْتُمُوهُمْ										
ख़ाह तुम उन्हें बुलाओ	तुम पर (तुम्हारे लिए)	बराबर	न पैरवी करें तुम्हारी	हिदायत	तरफ़	तुम उन्हें बुलाओ				
أَمْ أَنْتُمْ صَامِتُونَ ﴿١٩٣﴾ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ										
सिवाए अल्लाह	से	तुम पुकारते हो	वह जिन्हें	वेशक	193	ख़ामोश रहो	या तुम			
عِبَادٌ أَمْثَالُكُمْ فَادْعُوهُمْ فَلْيَسْتَجِيبُوا لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ										
तुम हो	अगर	तुम्हें	फिर चाहिए कि वह जवाब दें	पस पुकारो उन्हें	तुम्हारे जैसे	बन्दे				
صَادِقِينَ ﴿١٩٤﴾ أَلَهُمْ أَرْجُلٌ يَمْشُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ أَيْدٍ يَبْطِشُونَ										
वह पकड़ते हैं	उन के हाथ	या	उन से	वह चलते हैं	क्या उन के पाऊँ	194	सच्चे			
بِهَا أَمْ لَهُمْ أَعْيُنٌ يُبْصِرُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ										
सुनते हैं	कान	या उन के	उन से	देखते हैं	आँखें	उन की	या	उन से		
بِهَا قُلْ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ كِيدُونِ فَلَا تُنظِرُونَ ﴿١٩٥﴾										
195	पस न दो मुझे मोहलत	मुझ पर दाओ चलो	फिर	अपने शरीक	पुकारो	कह दें	उन से			

عند الطّائرين ١٣  
معاينة ٨  
١٢

إِنَّ وَلِيَّ اللَّهِ الَّذِي نَزَّلَ الْكِتَابَ ۗ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِينَ ﴿١٩٦﴾									
196	नेक बन्दे	हिमायत करता है	और वह	किताब	नाज़िल कि	वह जिस	अल्लाह	मेरा कारसाज़	वेशक
وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ نِدْعَتَكُمْ وَلَا									
और न	तुम्हारी मदद	कुदरत रखते वह	नहीं	उस के सिवा	पुकारते हैं	और जो लोग			
أَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُونَ ﴿١٩٧﴾ وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ لَا يَسْمَعُوا ۗ									
न सुनें वह	हिदायत	तरफ़	तुम पुकारो उन्हें	और अगर	197	वह मदद करें	खुद अपनी		
وَتَرْبُهُمْ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ﴿١٩٨﴾ خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ									
और हुक्म दें	दरगुज़र	पकड़ें (करें)	198	नहीं देखते हैं	हालांकि	तेरी तरफ़	वह तकते हैं	और तू उन्हें देखता है	
بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ ﴿١٩٩﴾ وَإِنَّمَا يَنْزِعُكَ مِنْ									
से	तुझे उभारे	और अगर	199	जाहिल (जमा)	से	और मुँह फेर लें	भलाई का		
الشَّيْطَانِ نَزْعٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٠٠﴾ إِنَّ الَّذِينَ									
जो लोग	वेशक	200	जानने वाला	सुनने वाला	वेशक वह	अल्लाह की	तो पनाह में आजा	कोई छेड़	शैतान
اتَّقُوا إِذَا مَسَّهُمْ طَافٌ مِّنَ الشَّيْطَانِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُمْ									
वह	तो फौरन	वह याद करते हैं	शैतान	से	कोई गुज़रने वाला (वस्वसा)	उन्हें छूता है (पहुँचता है)	जब	डरते हैं	
مُبْصِرُونَ ﴿٢٠١﴾ وَإِحْوَانُهُمْ يَمُدُّونَهُمْ فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُفْصِرُونَ ﴿٢٠٢﴾									
202	वह कमी नहीं करते	फिर	गुमराही	में	वह उन्हें खींचते हैं	और उन के भाई	201	देख लेते हैं	
وَإِذَا لَمْ تَأْتِهِمْ بَيِّنَةٌ قَالُوا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا قُلْ إِنَّمَا أَتَّبِعُ									
मैं पैरवी करता हूँ	सिर्फ	कह दें	उसे घड़ लिया	क्यों नहीं	कहते हैं	कोई आयत	तुम न लाओ उन के पास	और जब	
مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ مِنْ رَبِّي هَذَا بَصَائِرُ مِنْ رَبِّكُمْ وَهُدًى									
और हिदायत	तुम्हारा रब	से	सूझ की बातें	यह	मेरा रब	से	मेरी तरफ़	जो वहि की जाती है	
وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٢٠٣﴾ وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا									
तो सुनो	कुरआन	पढ़ा जाए	और जब	203	ईमान रखते हैं	लोगों के लिए	और रहमत		
لَهُ وَأَنْصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٢٠٤﴾ وَادْكُرْ رَبَّكَ فِي نَفْسِكَ									
अपना दिल	में	अपना रब	और याद करो	204	रहम किया जाए	ताकि तुम पर	और चुप रहो	उस को	
تَضَرُّعًا وَخِيفَةً وَدُؤْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ									
सुवह	आवाज़	से	बुलन्द	और बग़ैर	और डरते हुए	आजिज़ी से			
وَالْأَصَالِ وَلَا تَكُنْ مِنَ الْغَافِلِينَ ﴿٢٠٥﴾ إِنَّ الَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ									
तेरा रब	नज़्दीक	जो लोग	वेशक	205	बेखबर (जमा)	से	और न हो	और शाम	
لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَيُسَبِّحُونَهُ وَلَهُ يَسْجُدُونَ ﴿٢٠٦﴾									
206	सिज्दा करते हैं	और उसी को	और उस की तस्वीह करते हैं	उस की इबादत	से	तकब्युर नहीं करते			

वेशक मेरा कारसाज़ अल्लाह है, जिस ने किताब नाज़िल की और वह नेक बन्दों की हिमायत करता है। (196)

और उस (अल्लाह) के सिवा जिन को तुम पुकारते हो, वह कुदरत नहीं रखते तुम्हारी मदद की और न खुद अपनी मदद ही करने के काबिल हैं। (197)

और अगर तुम उन्हें पुकारो हिदायत की तरफ़ तो वह (कुछ) न सुनें और तू उन्हें देखता है कि वह तेरी तरफ़ तकते हैं हालांकि वह (कुछ) नहीं देखते। (198)

आप (स) दरगुज़र करें और भलाई का हुक्म दें और जाहिलों से मुँह फेर लें। (199)

और अगर तुझे उभारे शैतान की तरफ़ से कोई छेड़ तो अल्लाह की पनाह में आजा, वेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। (200)

वेशक जो लोग (अल्लाह से) डरते हैं जब उन्हें पहुँचता है शैतान (की तरफ़ से) कोई वस्वसा, वह (अल्लाह को) याद करते हैं तो वह फौरन (राहे सवाब) देख लेते हैं। (201)

और उन (शैतानों) के भाई उन्हें गुमराही में खींचते हैं, फिर वह कमी नहीं करते। (202)

और जब तुम उन के पास कोई आयत न लाओ तो वह कहते हैं: तू क्यों नहीं (खुद) घड़ लेता, आप (स) कह दें मैं तो सिर्फ़ उस की पैरवी करता हूँ जो मेरे रब की तरफ़ से मेरी तरफ़ वहि की जाती है, यह (कुरआन) सूझ की बातें हैं तुम्हारे रब की तरफ़ से, और हिदायत ओ रहमत उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। (203)

और जब कुरआन पढ़ा जाए तो (पूरी तवज़ूह) से सुनो उस को और चुप रहो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (204)

और अपने रब को याद करो अपने दिल में आजिज़ी से और डरते हुए और बुलन्द आवाज़ के बग़ैर सुवह ओ शाम, और बेखबरों से न हो। (205)

वेशक जो लोग तेरे रब के नज़्दीक हैं, वह उस की इबादत से तकब्युर नहीं करते और उस की तस्वीह करते हैं और उसी को सिज्दा करते हैं। (206)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

आप (स) से गनीमत के बारे में पूछते हैं, कह दें गनीमत अल्लाह और रसूल (स) के लिए है, पस अल्लाह से डरो और दुरुस्त करो आपस में (तअल्लुकात) और अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअत करो अगर तुम मोमिन हो। (1)

दरहकीकत मोमिन वह लोग है जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाए तो उन के दिल डर जाएं और उन पर (उन के सामने) उस की आयतें पढ़ी जाएं तो वह (आयात) उन का ईमान ज़ियादा करें, और वह अपने रब पर भरोसा करते हैं। (2)

वह लोग जो नमाज़ काइम करते हैं और जो हम ने दिया उस में से खर्च करते हैं। (3)

यही लोग सच्चे मोमिन हैं, उन के लिए उन के रब के पास दरजे हैं और बख्शिश और रिज़्क इज़्जत वाला। (4)

जैसा कि आप (स) को आप (स) के रब ने आप (स) के घर से हक (दुरुस्त तदवीर) के साथ निकाला, और बेशक अहले ईमान की एक जमाअत नाखुश थी। (5)

वह आप (स) से हक के मामले में झगड़ते थे जबकि वह ज़ाहिर हो चुका, गोया कि वह हांके जा रहे हैं मौत की तरफ, और वह (उसे) देख रहे हैं। (6)

और (याद करो) अल्लाह तुम्हें वादा देता था कि (अबू जहल और अबू सुफियान के) दो गिरोहों में से एक तुम्हारे लिए और तुम चाहते थे कि (जिस में) कांटा न लगे तुम्हारे लिए हो, और अल्लाह चाहता था कि साबित कर दे हक अपने कलिमात से, और काफिरों की जड़ काट दे। (7)

ताकि हक को हक साबित कर दे और वातिल को वातिल, खाह मुज़्रिम नापसन्द करें। (8)

آيَاتهَا ٧٥ ﴿٨﴾ سُورَةُ الْأَنْفَالِ ﴿١٠﴾ زُكُوعَاتُهَا

रुकुआत 10

(8) सूरतुल अंफाल  
(गनाइम)

आयात 75

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَنْفَالِ قُلِ الْأَنْفَالُ لِلَّهِ وَالرَّسُولِ فَاتَّقُوا

पस डरो	और रसूल	अल्लाह के लिए	गनीमत	कह दें	गनीमत	से (बारे में)	आप (स) से पूछते हैं
--------	---------	---------------	-------	--------	-------	---------------	---------------------

اللَّهِ وَأَصْلِحُوا ذَاتَ بَيْنِكُمْ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ إِنْ كُنْتُمْ

तुम हो	अगर	और उस का रसूल	और अल्लाह की इताअत करो	आपस में	अपने तई	और दुरुस्त करो	अल्लाह
--------	-----	---------------	------------------------	---------	---------	----------------	--------

مُؤْمِنِينَ ﴿١﴾ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَّتْ

डर जाएं	ज़िक्र किया जाए अल्लाह का	जब	वह लोग	मोमिन (जमा)	दरहकीकत	1	मोमिन (जमा)
---------	---------------------------	----	--------	-------------	---------	---	-------------

فُلُوبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُهُ زَادَتْهُمْ إِيمَانًا

ईमान	वह ज़ियादा करें	उस की आयात	उन पर	पढ़ी जाएं	और जब	उन के दिल
------	-----------------	------------	-------	-----------	-------	-----------

وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٢﴾ الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا

और उस से जो	नमाज़	काइम करते हैं	वह लोग जो	2	भरोसा करते हैं	और वह अपने रब पर
-------------	-------	---------------	-----------	---	----------------	------------------

رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ﴿٣﴾ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ

उन के लिए	सच्चे	मोमिन (जमा)	वह	यही लोग	3	वह खर्च करते हैं	हम ने उन्हें दिया
-----------	-------	-------------	----	---------	---	------------------	-------------------

دَرَجَاتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٤﴾ كَمَا

जैसा कि	4	इज़्जत वाला	और रिज़्क	और बख्शिश	उन का रब	पास	दरजे
---------	---	-------------	-----------	-----------	----------	-----	------

أَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّ فَرِيقًا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ

अहले ईमान	से (का)	एक जमाअत	और बेशक	हक के साथ	आप का घर	से	आप का रब	आप (स) को निकाला
-----------	---------	----------	---------	-----------	----------	----	----------	------------------

لَكَرِهُونَ ﴿٥﴾ يُجَادِلُونَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَأَنَّمَا يُسَاقُونَ

हांके जा रहे हैं	गोया कि वह	वह ज़ाहिर हो चुका	जबकि	बाद	हक	में	वह आप (स) से झगड़ते थे	5	नाखुश
------------------	------------	-------------------	------	-----	----	-----	------------------------	---	-------

إِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ﴿٦﴾ وَإِذْ يَعِدُكُمُ اللَّهُ إِحْدَى

एक का	अल्लाह	तुम्हें वादा देता था	और जब	6	देख रहे हैं	और वह	मौत	तरफ
-------	--------	----------------------	-------	---	-------------	-------	-----	-----

الطَّائِفَتَيْنِ أَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّونَ أَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ

बग़ैर कांटे वाला	कि	और चाहते थे	तुम्हारे लिए	कि वह	दो गिरोह
------------------	----	-------------	--------------	-------	----------

تَكُونُ لَكُمْ وَيُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَيَقْطَعَ دَابِرَ

जड़	और काट दे	अपने कलिमात से	हक	साबित कर दे	कि	और चाहता था अल्लाह	तुम्हारे लिए	हो
-----	-----------	----------------	----	-------------	----	--------------------	--------------	----

الْكَافِرِينَ ﴿٧﴾ لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ﴿٨﴾

8	मुज़्रिम (जमा)	नापसन्द करें	खाह	वातिल	और वातिल साबित करदे	हक	ताकि हक साबित करदे	7	काफिर (जमा)
---	----------------	--------------	-----	-------	---------------------	----	--------------------	---	-------------

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُمْ بِالْفِ							
एक हज़ार	मदद करूँगा तुम्हारी	कि मैं	तुम्हारी	तो उस ने कुबूल करली	अपना रब	तुम फर्याद करते थे	जब
مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُرَدِّفِينَ ﴿٩﴾ وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ وَلِتَطْمَئِنَّ							
और ताकि मुत्तमइन हों	खुशखबरी	मगर	अल्लाह ने बनाया उसे	और नहीं	9	एक दूसरे के पीछे (लगातार)	फरिश्ते से
بِهِ قُلُوبُكُمْ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ							
ग़ालिब	वेशक अल्लाह	अल्लाह के पास	से	मगर	मदद	और नहीं	तुम्हारे दिल उस से
حَكِيمٌ ﴿١٠﴾ إِذْ يُغَشِّيكُمُ النُّعَاسَ أَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنزِلُ عَلَيْكُمْ							
तुम पर	और उतारा उस ने	उस से	तस्कीन	ऊँघ	तुम्हें ढाँप लिया (तारी कर दी)	जब	10 हिक्मत वाला
مِّنَ السَّمَاءِ مَاءً لِّيُطَهِّرَكُم بِهِ وَيُذْهِبَ عَنْكُم رِجْزَ							
पलीदी (नापाकी)	तुम से	और दूर कर दे	उस से	ताकि पाक कर दे तुम्हें	पानी	आस्मान	से
الشَّيْطَانِ وَلِيَرْبِطَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ ﴿١١﴾							
11	क़दम	उस से	और जमा दे	तुम्हारे दिल	पर	और ताकि बान्ध दे (मज़बूत करदे)	शैतान
إِذْ يُوحِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلَائِكَةِ أَنِّي مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِينَ آمَنُوا							
ईमान लाए (मोमिन)	जो लोग	तुम साबित रखो	तुम्हारे साथ	कि मैं	फरिश्ते	तरफ़ (को)	तेरा रब जब वहि भेजी
سَالِقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرَّعْبَ فَاضْرِبُوا فَوْقَ							
ऊपर	सो तुम ज़र्व लगाओ	रुअब	कुफ़ किया (काफ़िर)	जिन लोगों ने	दिल (जमा)	में	अनक़रीब डाल दूँगा
الْأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ﴿١٢﴾ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ							
कि वह	यह इस लिए	12	पूर	हर	उन से (उन की)	और ज़र्व लगाओ	गर्दन
شَاقُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَمَنْ يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ							
तो वेशक	और उस का रसूल	अल्लाह	मुख़ालिफ़ होगा	और जो	और उस का रसूल	अल्लाह	मुख़ालिफ़ हुए
اللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿١٣﴾ ذَلِكَم فَذُوقُوهُ وَأَنَّ لِلْكَافِرِينَ							
काफ़िरों के लिए	और यकीनन	पस चखो	तो तुम	13	अज़ाब (मार)	सख़्त	अल्लाह
عَذَابِ النَّارِ ﴿١٤﴾ يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِينَ							
उन लोगों से	तुम्हारी मुडभेड़ हो	जब	ईमान लाए	जो लोग	ऐ	14	दोज़ख़ अज़ाब
كَفَرُوا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوهُمُ الْأَدْبَارَ ﴿١٥﴾ وَمَنْ يُوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ							
उस दिन	उन से फेरे	और जो कोई	15	पीठ (जमा)	तो उन से न फेरो	(मैदाने जंग में) लड़ने को	कुफ़ किया
دُبْرَهُ إِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَىٰ فِئَةٍ فَقَدْ بَاءَ							
पस वह लौटा	अपनी जमाअत	तरफ़	या जा मिलने को	जंग के लिए	घात लगाता हुआ	सिवाए	अपनी पीठ
بِغَضَبٍ مِّنَ اللَّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٦﴾							
16	पलटने की जगह (ठिकाना)	और बुरी	जहननम	और उस का ठिकाना	अल्लाह	से	ग़ज़ब के साथ

(याद करो) जब तुम अपने रब से फर्याद करते थे तो उस ने तुम्हारी (दुआ) कुबूल कर ली कि मैं तुम्हारी मदद करूँगा एक हज़ार लगातार आने वाले फरिश्तों से। (9)

और अल्लाह ने उस को नहीं बनाया मगर खुशखबरी, और ताकि उस से मुत्तमइन हों तुम्हारे दिल, और मदद नहीं है मगर अल्लाह के पास से, वेशक अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (10)

(याद करो) जब उस ने तुम पर ऊँघ तारी कर दी, यह उस (अल्लाह) की तरफ से तस्कीन (थी) और तुम पर आस्मान से पानी उतारा ताकि तुम्हें पाक कर दे उस से, और तुम से शैतान की डाली हुई नापाकी दूर कर दे, और ताकि तुम्हारे दिल मज़बूत कर दे, और उस से जमा दे (तुम्हारे) क़दम। (11)

(याद करो) जब तुम्हारे रब ने फरिश्तों को वहि भेजी कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, तुम साबित रखो मोमिनों के (दिल), मैं अनक़रीब काफ़िरों के दिलों में रुअब डाल दूँगा, तुम उन की गर्दनों के ऊपर ज़र्व लगाओ और उन के एक एक पूर पर ज़र्व लगाओ। (12)

यह इस लिए हुआ कि वह अल्लाह और उस के रसूल के मुख़ालिफ़ हुए और जो अल्लाह और उस के रसूल का मुख़ालिफ़ होगा (वह याद रखे) वेशक अल्लाह की मार सख़्त है। (13)

तो तुम यह चखो और यकीनन काफ़िरों के लिए दोज़ख़ का अज़ाब है। (14)

ऐ ईमान वालो, जब उन से तुम्हारी मुडभेड़ हो जिन्होंने कुफ़ किया मैदाने जंग में तो उन से पीठ न फेरो। (15)

और जो कोई उस दिन उन से अपनी पीठ फेरे सिवाए उस के कि घात लगाता हो जंग के लिए या अपनी जमाअत की तरफ़ जा मिलने को, पस वह लौटा अल्लाह के ग़ज़ब के साथ और उस का ठिकाना जहननम है, और यह बुरा ठिकाना है। (16)

ع. 15

सो तुम ने उन्हें क़तल नहीं किया बल्कि अल्लाह ने उन्हें क़तल किया, और आप (स) ने (मुट्ठी भर खाक) नहीं फेंकी जब आप (स) ने फेंकी बल्कि अल्लाह ने फेंकी, और ताकि मोमिनों को एक बेहतरीन आजमाइश से कामयाबी के साथ गुज़ार दे। वेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (17)

यह तो हुआ, और यह कि अल्लाह काफ़िरों का दाओ सुस्त करने वाला है। (18)

(काफ़िरो!) अगर तुम फ़ैसला चाहते हो तो अलबत्ता तुम्हारे पास फ़ैसला (इस्लाम की फ़तह की सूत्र में) आगया है, और अगर तुम वाज़ आजाओ तो वह तुम्हारे लिए बेहतर है, और अगर फिर (यही) करोगे तो हम (भी) फिर करेंगे और तुम्हारा ज़त्था हरगिज़ तुम्हारे काम न आएगा खाह उस की कसरत हो और वेशक अल्लाह मोमिनों के साथ है। (19)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उस के रसूल का हुक्म मानो, और उस से न फिरो जबकि तुम सुनते हो। (20)

और उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्होंने ने कहा हम ने सुना, हालांकि वह सुनते नहीं। (21)

वेशक जानवरों से बदतरीन अल्लाह के नज़्दीक (वह है जो) बहरे गूंगे हैं, जो समझते नहीं। (22)

और अगर अल्लाह उन में कोई भलाई जानता तो उन्हें ज़रूर सुना देता, और अगर अल्लाह उन्हें सुना दे तो ज़रूर फिर जाएं, और वह मुँह फेरने वाले हैं। (23)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उस के रसूल (की दावत) कुबूल करो जब वह तुम्हें उस के लिए बुलाएँ तो तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शे और जान लो कि अल्लाह हाइल हो जाता है आदमी और उस के दिल के दरमियान, और यह कि तुम उसी की तरफ़ (रोज़े हशर) उठाए जाओगे। (24)

और उस फ़ितने से डरो जो न पहुँचेगा तुम में से खास तौर पर उन लोगों को जिन्होंने ने जुल्म किया, और जान लो कि अल्लाह शदीद अज़ाब देने वाला है। (25)

فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ قَتَلَهُمْ وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ

आप ने फेंकी	जब	और आप (स) ने न फेंकी थी	उन्हें क़तल किया	अल्लाह	बल्कि	सो तुम ने नहीं क़तल किया उन्हें
-------------	----	-------------------------	------------------	--------	-------	---------------------------------

وَلَكِنَّ اللَّهَ رَمَىٰ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِينَ مِنْهُ بَلَاءً حَسَنًا إِنَّ اللَّهَ

वेशक अल्लाह	अच्छा	आज़माइश	अपनी तरफ़ से	मोमिन (जमा)	और ताकि आजमाएँ	फेंकी	अल्लाह	बल्कि
-------------	-------	---------	--------------	-------------	----------------	-------	--------	-------

سَمِيعٌ عَلِيمٌ (17) ذَلِكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ مُوهِنٌ كَيْدِ الْكَافِرِينَ (18) إِنَّ

अगर	18	काफ़िर (जमा)	मक् - दाओ	सुस्त करने वाला	और यह कि अल्लाह	यह तो हुआ	17	जानने वाला	सुनने वाला
-----	----	--------------	-----------	-----------------	-----------------	-----------	----	------------	------------

تَسْتَفْتِحُوا فَقَدْ جَاءَكُمْ الْفَتْحُ وَإِنْ تَنْتَهُوا فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ

तुम्हारे लिए	बेहतर	तो वह	तुम वाज़ आजाओ	और अगर	फ़ैसला	आगया तुम्हारे पास	तो अलबत्ता	तुम फ़ैसला चाहते हो
--------------	-------	-------	---------------	--------	--------	-------------------	------------	---------------------

وَإِنْ تَعُودُوا نَعُدَّ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتِكُمْ شَيْئًا وَلَوْ كَثُرَتْ

और खाह कसरत हो	कुछ	तुम्हारा ज़त्था	तुम्हारे	काम आएगा	और हरगिज़ न	हम फिर करेंगे	फिर करोगे	और अगर
----------------	-----	-----------------	----------	----------	-------------	---------------	-----------	--------

وَإِنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ (19) يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اطِّعُوا

हुक्म मानो	ईमान लाए	वह लाग जो	ऐ	19	मोमिन (जमा)	साथ	और वेशक अल्लाह
------------	----------	-----------	---	----	-------------	-----	----------------

اللَّهِ وَرَسُولَهُ وَلَا تَوَلَّوْا عَنهُ وَأَنْتُمْ تَسْمَعُونَ (20) وَلَا تَكُونُوا

और न हो जाओ	20	सुनते हो	जबकि तुम	उस से	और मत फिरो	अल्लाह और उस का रसूल
-------------	----	----------	----------	-------	------------	----------------------

كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ (21) إِنَّ

वेशक	21	वह नहीं सुनते	हालांकि	हम ने सुना	उन्होंने ने कहा	उन लोगों की तरह जो
------	----	---------------	---------	------------	-----------------	--------------------

شَرَّ السَّادَاتِ عِنْدَ اللَّهِ الضُّمُّ الْبُكْمِ الَّذِينَ

जो कि	गूंगे	बहरे	अल्लाह के नज़्दीक	जानवर (जमा)	बदतरीन
-------	-------	------	-------------------	-------------	--------

لَا يَعْقِلُونَ (22) وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا لَأَسْمَعَهُمْ وَلَوْ

और अगर	तो ज़रूर सुना देता उन को	कोई भलाई	उन में	जानता अल्लाह	और अगर	22	समझते नहीं
--------	--------------------------	----------	--------	--------------	--------	----	------------

أَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَهُمْ مُّعْرِضُونَ (23) يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا

ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ	23	मुँह फेरने वाले	और वह	वह ज़रूर फिर जाएँ	उन्हें सुना दे
----------	-----------	---	----	-----------------	-------	-------------------	----------------

اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ

उस के लिए जो ज़िन्दगी बख़्शे तुम्हें	वह बुलाएँ तुम्हें	जब	और उसके रसूल का	अल्लाह का	कुबूल कर लो
--------------------------------------	-------------------	----	-----------------	-----------	-------------

وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ وَأَنَّهُ إِلَيْهِ

उस की तरफ़	और यह कि	और उस का दिल	आदमी	दरमियान	हाइल हो जाता है	कि अल्लाह	और जान लो
------------	----------	--------------	------	---------	-----------------	-----------	-----------

تُحْشَرُونَ (24) وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَا تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا

उन्होंने ने जुल्म किया	वह लोग जो	न पहुँचेगा	वह फ़ितना	और डरो	24	तुम उठाए जाओगे
------------------------	-----------	------------	-----------	--------	----	----------------

مِنْكُمْ خَاصَّةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ (25)

25	अज़ाब	शदीद	कि अल्लाह	और जान लो	खास तौर पर	तुम में से
----	-------	------	-----------	-----------	------------	------------

ع 17

وَأذْكُرُوا إِذْ أَنْتُمْ قَلِيلٌ مُسْتَضْعَفُونَ فِي الْأَرْضِ تَخَافُونَ							
तुम डरते थे	ज़मीन	में	जईफ़ (कमज़ोर) समझे जाते थे	थोड़े	तुम	जब	और याद करो
أَنْ يَتَخَفَكُمُ النَّاسُ فَاوْكُمُ وَيَأْيِدِكُمْ بِنَصْرِهِ وَرَزَقَكُمُ							
और तुम्हें रिज़क़ दिया	अपनी मदद से	और तुम्हें कुव्वत दी	पस ठिकाना दिया उस ने तुम्हें	लोग	उचक ले जाएं तुम्हें	कि	
مِنَ الطَّيِّبَاتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٢٦﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا							
ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ	26	शुक्र गुज़ार हो जाओ	ताकि तुम	पाकीज़ा चीज़ें	से
لَا تَخُونُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ وَتَخُونُوا أَمْنِيَكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٧﴾							
27	जानते हो	जब कि तुम	अपनी अमानतें	और न ख़ियानत करो	और रसूल	अल्लाह	ख़ियानत न करो
وَأَعْلَمُوا أَنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ وَأَنَّ اللَّهَ							
और यह कि अल्लाह	बड़ी आजमाइश	और तुम्हारी औलाद	तुम्हारे माल	दरहकीकत	और जान लो		
عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٢٨﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ تَتَّقُوا اللَّهَ							
तुम अल्लाह से डरोगे	अगर	ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ	28	बड़ा	अजर
يَجْعَلَ لَكُمْ فُرْقَانًا وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ							
और बख़्श देगा तुम्हें	तुम्हारी बुराइयां	तुम से	और दूर कर देगा	फुरकान	तुम्हारे लिए	वह बना देगा	
وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٢٩﴾ وَإِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا							
कुफ़्र किया (काफ़िर)	वह लोग जिन्होंने	खुफ़िया तदवीरें करते थे	और जब	29	बड़ा	फज़ल वाला	और अल्लाह
لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ أَوْ يُخْرِجُوكَ وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ اللَّهُ							
और खुफ़िया तदवीर करता है अल्लाह	और वह खुफ़िया तदवीरें करते थे	या निकाल दें तुम्हें	या क़त्ल कर दें तुम्हें	तुम्हें कैद कर लें			
وَاللَّهُ خَيْرُ الْمُكْرِينَ ﴿٣٠﴾ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا قَالُوا							
वह कहते हैं	हमारी आयात	उन पर	पढ़ी जाती है	और जब	30	तदवीर करने वाला	वैहतरिन और अल्लाह
قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هَذَا إِنْ هَذَا إِلَّا							
मगर (सिर्फ़)	यह	नहीं	उस	मिस्ल	कि हम कह लें	अगर हम चाहें	अलबत्ता हम ने सुन लिया
أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٣١﴾ وَإِذْ قَالُوا اللَّهُمَّ إِنْ كَانَ هَذَا							
यह	है	अगर	ऐ अल्लाह	वह कहने लगे	और जब	31	पहले (अगले) किस्से कहानियां
هُوَ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَابًا مِنَ السَّمَاءِ							
आस्मान	से	पत्थर	हम पर	तो बरसा	तेरी तरफ़	से	हक़ वह
أَوَانْتِنَا بِعَذَابِ الْيَمِّ ﴿٣٢﴾ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ							
जबकि आप (स)	कि उन्हें अज़ाब दे	अल्लाह	और नहीं है	32	दर्दनाक	अज़ाब	या ले आ हम पर
فِيهِمْ وَمَا كَانَ اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ﴿٣٣﴾							
33	बख़्शिष मांगते हों	जबकि वह	उन्हें अज़ाब देने वाला	अल्लाह	है	और नहीं	उन में

और याद करो जब तुम ज़मीन में थोड़े थे, कमज़ोर समझे जाते थे, तुम डरते थे कि तुम्हें उचक ले जाएंगे लोग, पस उस ने तुम्हें ठिकाना दिया और अपनी मदद से कुव्वत दी और पाकीज़ा चीज़ों से तुम्हें रिज़क़ दिया ताकि तुम शुक्र गुज़ार हो जाओ। (26)

ऐ ईमान वालो! ख़ियानत न करो अल्लाह की और रसूल (स) की, और ख़ियानत न करो अपनी अमानतों में जब कि तुम जानते हो (दीदा ओ दानिस्ता)। (27)

और जान लो कि दरहकीकत तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद बड़ी आजमाइश हैं, और यह कि अल्लाह के पास बड़ा अजर है। (28)

ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह से डरोगे तो वह तुम्हारे लिए बना देगा (हक़ को बातिल से जुदा करने वाला) फुरकान और तुम से तुम्हारी बुराइयां दूर कर देगा और तुम्हें बख़्श देगा, और अल्लाह बड़े फज़ल वाला है। (29)

और (याद करो) जब काफ़िर आप (स) के बारे में खुफ़िया तदवीरें करते थे कि आप (स) को कैद कर लें या क़त्ल कर दें या (मक्के से) निकाल दें, और वह खुफ़िया तदवीरें करते थे और अल्लाह (भी) खुफ़िया तदवीर करता है, और अल्लाह वैहतरिन तदवीर करने वाला है। (30)

और जब उन पर पढ़ी जाती है हमारी आयात तो वह कहते हैं अलबत्ता हम ने सुन लिया, अगर हम चाहें तो हम भी इस जैसी (आयात) कह लें, यह तो सिर्फ़ किस्से कहानियां हैं अगलों की। (31)

और जब वह कहने लगे ऐ अल्लाह! अगर तेरी तरफ़ से यही हक़ है तो बरसा हम पर आस्मान से पत्थर या हम पर दर्दनाक अज़ाब ले आ। (32)

और अल्लाह (ऐसा) नहीं है कि उन्हें अज़ाब दे जबकि आप (स) उन में हैं, और अल्लाह उन्हें अज़ाब देने वाला नहीं जबकि वह बख़्शिष मांग रहे हों। (33)

ع 12

और उन में क्या है? कि अल्लाह उन्हें अज़ाब न दे जबकि वह मस्जिदे हराम से रोकते हैं, और वह नहीं है उस के मुतवल्ली। उस के मुतवल्ली तो सिर्फ़ मुत्तकी है, लेकिन उन में से अक्सर नहीं जानते। (34)

और खाने क़ज़वा के नज़्दीक उन की नमाज़ क्या होती है मगर सिर्फ़ सीटियां और तालियां, पस अज़ाब चखो उस के बदले जो तुम कुफ़ करते थे। (35)

वेशक काफ़िर अपने माल खर्च करते हैं ताकि रोकेँ अल्लाह के रास्ते से, सो अब वह खर्च करेंगे, फिर उन पर हसरत होगी, फिर वह मग़लूब होंगे, और काफ़िर जहन्नम की तरफ़ इकट्ठे किए जाएंगे। (36)

ताकि अल्लाह गन्दे को पाक से जुदा कर दे और गन्दे को एक दूसरे पर रखे, फिर सब को एक ढेर कर दे, फिर उस को जहन्नम में डाल दे, यही लोग हैं ख़सारा पाने वाले। (37)

काफ़िरों से कह दें अगर वह बाज़ आजाएँ तो उन्हें माफ़ कर दिया जाएगा जो गुज़र चुका, और अगर वह फिर वही करें तो तहकीक़ पहलों की रविश गुज़र चुकी है। (38)

और उन से जंग करो यहां तक कि कोई फ़ितना न रहे और दीन पूरा का पूरा अल्लाह का हो जाए, फिर अगर वह बाज़ आजाएँ तो वेशक अल्लाह देखने वाला है जो वह करते हैं। (39)

और अगर वह मुँह मोड़ लें तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा साथी है, क्या खूब साथी और क्या खूब मददगार है! (40)

وَمَا لَهُمْ آلَا يُعَذِّبُهُمُ اللَّهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ							
मस्जिदे हराम	से	रोकते हैं	जबकि वह	अल्लाह उन्हें अज़ाब दे	कि न	उन के लिए (उन में)	और क्या
وَمَا كَانُوا أَوْلِيَاءَهُ ۗ إِنَّ أَوْلِيَاءَهُ إِلَّا الْمُتَّقُونَ							
मुत्तकी (जमा)	मगर (सिर्फ़)	उस के मुतवल्ली	नहीं	उस के मुतवल्ली	वह है	और नहीं	
وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾ وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ							
उन की नमाज़	थी	और नहीं	34	नहीं जानते	उन में से अक्सर	और लेकिन	
عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءً وَتَصَدِيقَةً فَذُوقُوا الْعَذَابَ							
अज़ाब	पस चखो	और तालियां	सीटियां	मगर	खाने क़ज़वा	नज़्दीक	
بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٥﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنْفِقُونَ							
खर्च करते हैं	कुफ़ किया (काफ़िर)	जिन लोगों ने	वेशक	35	तुम कुफ़ करते थे	उस के बदले जो	
أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ فَسَيُنْفِقُونَهَا ثُمَّ							
फिर	सो अब खर्च करेंगे	रास्ता अल्लाह का	से	ताकि रोकेँ	अपने माल		
تَكُونُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُونَ وَالَّذِينَ كَفَرُوا							
कुफ़ किया (काफ़िर)	और जिन लोगों ने	वह मग़लूब होंगे	फिर	हसरत	उन पर	होगा	
إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُحْشَرُونَ ﴿٣٦﴾ لِيَمِيزَ اللَّهُ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ							
पाक	से	गन्दा	ताकि अल्लाह जुदा करदे	36	इकट्ठे किए जाएंगे	जहन्नम	तरफ़
وَيَجْعَلِ الْخَبِيثَ عَلَىٰ بَعْضِهِمْ بَعْضًا فَيُرْكَمُهُ جَمِيعًا							
सब	फिर ढेर कर दे	दूसरे	पर	उस के एक	गन्दा	और रखे	
فَيَجْعَلُهُ فِي جَهَنَّمَ ۗ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿٣٧﴾ قُلْ لِلَّذِينَ							
उन से जो	कहदें	37	ख़सारा पाने वाले	वह	यही लोग	जहन्नम	में फिर डाल दे उस को
كَفَرُوا إِنْ يَنْتَهُوا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ وَإِنْ يَعُودُوا							
फिर वही करें	और अगर	गुज़र चुका	जो	उन्हें	माफ़ कर दिया जाए	वह बाज़ आजाएँ	उन्होंने कुफ़ किया (काफ़िर)
فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْأَوَّلِينَ ﴿٣٨﴾ وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ							
यहां तक कि	और उन से जंग करो	38	पहले लोग	सुन्नत (रविश)	गुज़र चुकी है	तो तहकीक़	
لَا تَكُونَ فِتْنَةً وَيَكُونَ الدِّينُ كُلُّهُ لِلَّهِ فَإِنِ انْتَهَوْا							
वह बाज़ आजाएँ	फिर अगर	अल्लाह का	सब	दीन	और हो जाए	कोई फ़ितना	न रहे
فَإِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٣٩﴾ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَاَعْلَمُوا							
तो जान लो	वह मुँह मोड़ लें	और अगर	39	देखने वाला	वह करते हैं	जो वह	तो वेशक अल्लाह
أَنَّ اللَّهَ مَوْلَاكُمْ نِعَمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعَمَ النَّصِيرِ ﴿٤٠﴾							
40	मददगार	और खूब	साथी	खूब	तुम्हारा साथी	कि अल्लाह	



<b>وَأَعْلَمُوا أَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَإِنَّ لِلَّهِ خُمُسَهُ</b>							
उस का पांचवा हिस्सा	अल्लाह के वास्ते	सो	किसी चीज़	से	तुम गनीमत लो	जो कुछ	और तुम जान लो
<b>وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ</b>							
और मुसाफ़िरोँ	और मिस्क़ीनों	और यतीमों	और कराबतदारों के लिए	और रसूल के लिए			
<b>إِنْ كُنْتُمْ آمَنْتُمْ بِاللَّهِ وَمَا أُنزَلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ</b>							
फैसले के दिन	अपना बन्दा	पर	हम ने नाज़िल किया	और जो	अल्लाह पर	ईमान रखते	तुम हो अगर
<b>يَوْمَ اتَّقَىٰ الْجَمْعَيْنِ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤١﴾</b>							
41	कुदरत वाला	हर चीज़	पर	और अल्लाह	दोनों फौजें भिड़ गईं	जिस दिन	
<b>إِذْ أَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوَىٰ</b>							
परला	किनारे पर	और वह	इधर वाला	किनारे पर	तुम	जब	
<b>وَالرَّكْبِ اسْفَلَ مِنْكُمْ وَلَوْ تَوَاعَدْتُمْ لِاخْتِلَافْتُمْ فِي الْمِيْعَدِ</b>							
वादे में	अलबत्ता तुम इख़तिलाफ़ करते	तुम वाहम वादा करते	और अगर	तुम से	नीचे	और काफ़िला	
<b>وَلَكِنْ لِّيَقْضَىٰ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا لِّيَهْلِكَ</b>							
ताकि हलाक हो	हो कर रहने वाला	था	जो काम	अल्लाह	ताकि पूरा कर दे	और लेकिन	
<b>مَنْ هَلَكَ عَنْ بَيِّنَةٍ وَيَحْيَىٰ مَنْ حَيٍّ عَنْ بَيِّنَةٍ وَإِنَّ</b>							
और वेशक	दलील	से	ज़िन्दा रहना है	जिस	और ज़िन्दा रहे	दलील	से हलाक हो जो
<b>اللَّهُ لَسَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٤٢﴾ إِذْ يُرِيكُهُمُ اللَّهُ فِي مَنَامِكَ قَلِيلًا</b>							
थोड़ा	तुम्हारी खाब	में	अल्लाह	तुम्हें दिखाया उन्हें	जब	42	जानने वाला सुनने वाला अल्लाह
<b>وَلَوْ أَرَاكَهُمْ كَثِيرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ</b>							
मामले में	और तुम झगड़ते	तो तुम बुज़दिली करते	बहुत ज़ियादा	तुम्हें दिखाता उन्हें	और अगर		
<b>وَلَكِنَّ اللَّهَ سَلَّمَ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٤٣﴾</b>							
43	दिलों की बात	जानने वाला	वेशक वह	बचा लिया	अल्लाह	और लेकिन	
<b>وَإِذْ يُرِيكُمُوهُمْ إِذِ التَّفَیْتُمْ فِي آعِينِكُمْ قَلِيلًا وَيُقَلِّلُكُمْ</b>							
और तुम्हें थोड़े करके दिखलाए	थोड़ा	तुम्हारी आँखें	में	तुम आमने सामने हुए	जब तो	वह तुम्हें दिखलाए	और जब
<b>فِي آعِينِهِمْ لِيَقْضَىٰ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا وَاللَّهُ</b>							
और अल्लाह की तरफ़	हो कर रहने वाला	था	काम	ताकि पूरा कर दे अल्लाह	उन की आँखें	में	
<b>تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٤٤﴾ يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً</b>							
कोई जमाअत	तुम्हारा आमना सामना हो	जब	ईमान वाले	ऐ	44	काम (जमा)	लौटना (बाज़गशत)
<b>فَاتَّبِعُوا وَادْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٤٥﴾</b>							
45	फ़लाह पाओ	ताकि तुम	बकसूरत	और अल्लाह को याद करो	तो साबित कदम	रहो	

और जान लो कि तुम जो कुछ किसी चीज़ से गनीमत हासिल किया है उस का पांचवा हिस्सा अल्लाह के लिए और रसूल के लिए, और (उन के) कराबतदारों के लिए, और यतीमों और मिस्क़ीनों के लिए, अगर तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर और जो हम ने अपने बन्दे पर फैसला (बदर) के दिन नाज़िल किया। जिस दिन (कुफ़्र ओ इस्लाम की) दोनों फौजें भिड़ गईं, और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाला है। (41)

जब तुम इधर वाले किनारे पर थे और वह परले किनारे पर थे, और काफ़िला तुम से नीचे (तराई में) था, अगर (तुम और काफ़िर) वाहम ते करलेते तो अलबत्ता तुम वादे में इख़तिलाफ़ करते (वक़्त पर न पहुँचते) लेकिन (अल्लाह ने जमा किया) ताकि पूरा कर दे अल्लाह वह काम जो हो कर रहने वाला था, ताकि जो हलाक हो वह दलील से हलाक हो और जिस को ज़िन्दा रहना है वह ज़िन्दा रहे दलील से, और वेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (42)

और जब अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी खाब में उन (काफ़िरोँ) को दिखाया थोड़ा, और अगर तुम्हें उन (की तादाद) को बहुत दिखाता तो तुम बुज़दिली करते, और (जंग के) मामले में झगड़ते, लेकिन अल्लाह ने बचा लिया, वेशक वह दिलों की बात जानने वाला है। (43)

और जब तुम आमने सामने हुए तो वह (अल्लाह) तुम्हें दिखलाए तुम्हारी आँखों में (दुश्मन को) थोड़े, और तुम्हें उन की आँखों में दिखलाया थोड़ा ताकि अल्लाह पूरा कर दे वह काम जो हो कर रहने वाला था, और तमाम कामों की बाज़गशत अल्लाह की तरफ़ है। (44)

ऐ ईमान वालों! जब किसी जमाअते (कुफ़र) से तुम्हारा आमना सामना हो तो साबित कदम रहो और अल्लाह को बकसूरत याद करो ताकि तुम फ़लाह (दो जहान में कामयाबी) पाओ। (45)

और इताअत करो अल्लाह की और उस के रसूल (स) की, और आपस में झगड़ा न करो कि वुज़दिल हो जाओगे और तुम्हारी हवा जाती रहेगी (उखड़ जाएगी) और सब्र करो, वेशक अल्लाह साथ है सब्र करने वालों के। (46)

और उन लोगों की तरह न हो जाना जो अपने घरों से निकले इतराते और लोगों के दिखावे को, और अल्लाह के रास्ते से रोकते हुए, और वह जो करते हैं अल्लाह अहाता किए हुए है। (47)

और जब शैतान ने उन के काम खुशनुमा कर के दिखाए, और कहा आज लोगों में से तुम पर कोई गालिब (आने वाला) नहीं, और मैं तुम्हारा रफ़ीक़ (हिमायती) हूँ, फिर जब दोनों लशकर आमने सामने हुए तो अपनी एड़ियों पर उलटा फिर गया और बोला मैं तुम से ला तअल्लुक हूँ, मैं देखता हूँ जो तुम नहीं देखते, मैं अल्लाह से डरता हूँ (कि मुझे हलाक न कर दे) और अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है। (48)

जब मुनाफ़िक़ और वह लोग जिन के दिलों में मरज़ था कहने लगे कि उन्हें (मुसलमानों को) उन के दीन ने ख़व्त में मुव्तला कर रखा है, और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो वेशक अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (49)

और अगर तू देखे जब फ़रिश्ते काफ़िरों की जान निकालते हैं, मारते (जाते) हैं उन के चहरों और उन की पीठों पर और (कहते जाते हैं) दोज़ख़ का अज़ाब चखो। (50)

यह उस का बदला है जो तुम्हारे हाथों ने (आमाल) आगे भेजे हैं और यह कि अल्लाह बन्दों पर जुल्म करने वाला नहीं। (51)

जैसा कि फ़िरअौन वालों का और उन से पहले लोगों का दस्तूर था, उन्होंने ने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया, और अल्लाह ने उन्हें उन के गुनाहों पर पकड़ा, वेशक अल्लाह कुव्वत वाला सख़्त अज़ाब देने वाला है। (52)

وَاطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ وَاصْبِرُوا إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٤٦﴾ وَلَا تَكُونُوا						
और जाती रहेगी	पस वुज़दिल हो जाओगे	और आपस में झगड़ा न करो	और उस का रसूल	अल्लाह	और इताअत करो	
और न हो जाना	46	सब्र करने वाले	साथ	वेशक अल्लाह	और सब्र करो	तुम्हारी हवा
كَالَّذِينَ حَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطْرًا وَرِئَاءَ النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿٤٧﴾						
लोग	और दिखावा	इतराते	अपने घर	से	निकले	उन की तरह जो
47	अहाता किए हुए	वह करते हैं	से-जो	और अल्लाह	अल्लाह का रास्ता	से और रोकते
وَإِذْ زَيْنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمْ						
तुम्हारे लिए (तुम पर)	कोई ग़ालिब नहीं	और कहा	उन के काम	शैतान	उन के लिए	खुशनुमा कर दिया और जब
الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَإِنِّي جَارٌ لَكُمْ ۖ فَلَمَّا تَرَآتِ الْفَيْثِنَ						
दोनों लशकर	आमने सामने हुए	फिर जब	तुम्हारा	रफ़ीक़	और वेशक मैं	लोग से आज
نَكَصَ عَلَىٰ عَقْبَيْهِ وَقَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِّنْكُمْ إِنِّي أَرَىٰ مَا لَا						
नहीं जो	देखता हूँ	मैं वेशक	तुम से	जुदा, ला तअल्लुक	वेशक मैं	और अपनी एड़ियां पर उलटा फिर गया
تَرَوْنَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ ۗ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٤٨﴾ إِذْ يَقُولُ						
कहने लगे	जब	48	अज़ाब	सख़्त	और अल्लाह	अल्लाह से डरता हूँ मैं वेशक तुम देखते
الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ غَرَّ هَؤُلَاءِ دِينُهُمْ ۗ						
उन का दीन	उन्हें	धोका दे दिया	मरज़	उन के दिलों में	और वह जो कि	मुनाफ़िक़ (जमा)
وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٤٩﴾						
49	हिक्मत वाला	ग़ालिब	तो वेशक अल्लाह	अल्लाह पर	भरोसा करे	और जो
وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ يَتَوَفَّى الَّذِينَ كَفَرُوا الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ						
मारते हैं	फ़रिश्ते	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	जान निकालते हैं	जब	तू देखे	और अगर
وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ۗ وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿٥٠﴾ ذَلِكِ						
यह	50	भड़कता हुआ (दोज़ख़)	अज़ाब	और चखो	और उन की पीठ (जमा)	उन के चहरे
بِمَا قَدَّمْتُمْ أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿٥١﴾						
51	बन्दों पर	जुल्म करने वाला	नहीं	और यह कि अल्लाह	तुम्हारे हाथ	आगे भेजे बदला जो
كَذَابِ الْفِرْعَوْنَ ۗ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ						
अल्लाह की आयतों का	उन्होंने ने इन्कार किया	उन से पहले	और जो लोग	फ़िरअौन वाले	जैसा कि दस्तूर	
فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٥٢﴾						
52	अज़ाब	सख़्त	कुव्वत वाला	वेशक अल्लाह	उनके गुनाहों पर	तो अल्लाह ने उन्हें पकड़ा

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً أَنْعَمَهَا عَلَىٰ قَوْمٍ حَتَّىٰ							
जब तक	किसी कौम को	उसे दी	कोई नेमत	बदलने वाला	नहीं है	इस लिए कि अल्लाह	यह
يُغَيِّرُوا مَا بِأَنْفُسِهِمْ ۗ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٥٣﴾ كَذَابٍ							
जैसा कि दस्तूर	53	जानने वाला	सुनने वाला	और यह कि अल्लाह	उन के दिलों में	जो	वह बदलें
إِلٰ فِرْعَوْنَ ۗ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُمْ							
तो हम ने उन्हें हलाक कर दिया	अपना रब	आयतों को	उन्होंने ने झुटलाया	उन से पहले	और वह लोग जो	फिरऔन वाले	
بِذُنُوبِهِمْ وَأَعْرَفْنَا إِلٰ فِرْعَوْنَ ۗ وَكُلُّ كَانُوا ظَالِمِينَ ﴿٥٤﴾							
54	ज़ालिम	थे	और सब	फिरऔन वाले	और हम ने गर्क कर दिया	उन के गुनाहों के सबब	
إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الَّذِينَ كَفَرُوا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٥٥﴾							
55	ईमान नहीं लाते	सो वह	कुफ़ किया	वह जिन्होंने ने	अल्लाह के नज़दीक	जानवर (जमा)	बदतरिन वेशक
الَّذِينَ عَاهَدتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُونَ عَهْدَهُمْ فِي كُلِّ مَرَّةٍ							
हर बार	में	अपना मुआहदा	तोड़ देते हैं	फिर	उन से	तुम ने मुआहदा किया	वह लोग जो
وَهُمْ لَا يَتَّقُونَ ﴿٥٦﴾ فِيمَا تَثَقَّفَتْهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِدْ بِهِمْ							
उन के ज़रीए	तो भगा दो	जंग में	तुम उन्हें पाओ	पस अगर	56	डरते नहीं	और वह
مِّن خَلْفِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿٥٧﴾ وَإِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ							
किसी कौम	से	तुम्हें खौफ़ हो	और अगर	57	इब्रत पकड़ें	अज़ब नहीं कि वह	उन के पीछे जो
خِيَانَةً فَأَنْبِذ إِلَيْهِمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِنِينَ ﴿٥٨﴾							
58	दगाबाज़ (जमा)	पसन्द नहीं करता	वेशक अल्लाह	बराबरी	पर	उन की तरफ़	तो फ़ेंक दो ख़ियानत (दगाबाज़ी)
وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَبَقُوا ۗ إِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُونَ ﴿٥٩﴾							
59	वह आज़िज़ न कर सकेंगे	वेशक वह	बाज़ी ले गए	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	और हरगिज़ ख़याल न करें		
وَأَعِدُّوا لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ قُوَّةٍ وَمِنْ رِبَاطِ الْخَيْلِ							
पले हुए घोड़े	और से	कुव्वत	से	तुम से हो सके	जो	उन के लिए	और तैयार रखो
تُرْهَبُونَ بِهِ ۗ عَدُوُّ اللَّهِ وَعَدُوُّكُمْ وَآخِرِينَ مِنْ دُونِهِمْ ۗ							
उन के सिवा	से	और दूसरे	और तुम्हारे (अपने) दुश्मन	अल्लाह के दुश्मन	उस से	धाक बिठाओ	
لَا تَعْلَمُونَهُمْ ۗ اللَّهُ يَعْلَمُهُمْ ۗ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ							
अल्लाह का रास्ता	में	कुछ	तुम खर्च करोगे	और जो	अल्लाह जानता है उन्हें	तुम उन्हें नहीं जानते	
يُؤَفَّفَ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تَظْلَمُونَ ﴿٦٠﴾ وَإِنْ جَنَحُوا لِلسَّلْمِ							
सुलह की तरफ़	वह झुकें	और अगर	60	तुम्हारा नुक़सान न किया जाएगा	और तुम	तुम्हें	पूरा पूरा दिया जाएगा
فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۗ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦١﴾							
61	जानने वाला	सुनने वाला	वह	वेशक	अल्लाह पर	और भरोसा रखो	तो सुलह कर लो

यह इस लिए है कि अल्लाह (कभी) उस नेमत को बदलने वाला नहीं जो उस ने किसी कौम को दी जब तक वह (न) बदल डालें जो उन के दिलों में है (अपना अकीदा ओ अहवाल) और यह कि अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (53)

जैसा कि दस्तूर था फिरऔन वालों का और उन लोगों का जो उन से पहले थे, उन्होंने ने अपने रब की आयतों को झुटलाया तो हम ने उन्हें उन के गुनाहों के सबब हलाक कर दिया और फिरऔन वालों को गर्क कर दिया, और वह सब ज़ालिम थे। (54)

वेशक अल्लाह के नज़दीक सब जानवरों से बदतर वह लोग हैं जिन्होंने ने कुफ़ किया, सो वह ईमान नहीं लाते। (55)

वह लोग जिन से तुम ने मुआहदा किया, फिर वह अपना मुआहदा तोड़ देते हैं हर बार, और वह डरते नहीं। (56)

पस अगर तुम उन्हें जंग में पाओ तो (उन्हें ऐसी सज़ा दो कि) उन के ज़रीए भगा दो उन को जो उन के पीछे है, अज़ब नहीं कि वह इब्रत पकड़ें। (57)

अगर तुम्हें किसी कौम से दगा बाज़ी का डर हो तो (उन का मुआहदा) फ़ेंक दो उन की तरफ़ बराबरी पर (बराबरी का जवाब दो), वेशक अल्लाह दगाबाज़ों को पसन्द नहीं करता। (58)

और काफ़िर हरगिज़ ख़याल न करें कि वह बाज़ी ले गए, वेशक वह आज़िज़ न कर सकेंगे। (59)

और उन के (मुक़ाबले के) लिए तैयार रखो कुव्वत जो तुम से हो सके और पले हुए घोड़े, उस से धाक बिठाओ अल्लाह के दुश्मनों और अपने दुश्मनों पर, और दूसरों पर उन के सिवा जिन्हें तुम नहीं जानते, अल्लाह उन्हें जानता है, और तुम जो कुछ अल्लाह के रास्ते में खर्च करोगे तुम्हें पूरा पूरा दिया जाएगा और तुम्हारा नुक़सान न किया जाएगा। (60)

और अगर वह सुलह की तरफ़ झुकें तो (तुम भी) उस (सुलह) की तरफ़ झुको, और अल्लाह पर भरोसा रखो, वेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। (61)

और अगर वह तुम्हें धोका देना चाहें तो बेशक तुम्हारे लिए अल्लाह काफी है, वह जिस ने तुम्हें अपनी मदद से और मुसलमानों से ज़ोर दिया। (62)

और उल्फ़त डाल दी उन के दिलों में, अगर तुम सब कुछ खर्च कर देते जो ज़मीन में है उन के दिलों में उल्फ़त न डाल सकते थे लेकिन अल्लाह ने उन के दरमियान उल्फ़त डाल दी, बेशक वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (63)

ऐ नबी (स)! अल्लाह काफी है तुम्हें और तुम्हारे पैरू मोमिनों के लिए। (64)

ऐ नबी (स)! मोमिनों को जिहाद पर तरगीब दो, अगर तुम में से बीस (20) सब्ब वाले (साबित क़दम) होंगे तो वह दो सो (200) पर ग़ालिब आएंगे, और अगर तुम में से एक सो (100) हों तो वह एक हज़ार (1000) काफ़िरों पर ग़ालिब आएंगे, इस लिए कि वह लोग (काफ़िर) समझ नहीं रखते। (65)

अब अल्लाह ने तुम से तख़फ़ीफ़ कर दी, और मालूम कर लिया कि तुम में कमज़ोरी है, पस अगर तुम में से एक सो (100) सब्ब वाले हों तो वह दो सो (200) पर ग़ालिब आएंगे, अगर तुम में से एक हज़ार (1000) हों तो वह अल्लाह के हुक्म से दो हज़ार (2000) पर ग़ालिब रहेंगे और अल्लाह सब्ब करने वालों के साथ है। (66)

किसी नबी के लिए (लाइक) नहीं कि उस के (कब्ज़े में) कैदी हूँ जब तक वह ज़मीन में दुश्मनों को अचछी तरह कुचल न दे, तुम दुनिया का माल चाहते हो, और अल्लाह आख़िरत चाहता है, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (67)

अगर अल्लाह (की तरफ़) से पहले ही लिखा हुआ न होता तो उस (फ़िदया) के लेने की वजह से तुम्हें पहुँचता बड़ा अज़ाब। (68)

पस उस में से खाओ जो तुम्हें ग़नीमत में हलाल पाक मिला, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (69)

وَأَنْ يُرِيدُوا أَنْ يَخْدَعُوكَ فَإِنَّ حَسْبَكَ اللَّهُ هُوَ الَّذِي									
जिस ने	वह	तुम्हारे लिए काफी है अल्लाह	तो	तुम्हें धोका दें	कि	वह चाहें	और अगर		
أَيْدِكَ بِنَصْرِهِ وَبِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٢﴾ وَأَلْفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ لَوْ أَنْفَقْتَ									
तुम खर्च करते	अगर	उन के दिल	दरमियान (में)	और उल्फ़त डाल दी	62	और मुसलमानों से	अपनी मदद से	तुम्हें ज़ोर दिया	
مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مَّا أَلْفَتْ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ									
अल्लाह	और लेकिन	उन के दिल	में	उल्फ़त डाल सकते	न	सब कुछ	ज़मीन	में जो	
أَلْفَ بَيْنَهُمْ إِنَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٦٣﴾ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبَكَ اللَّهُ									
अल्लाह	काफी है तुम्हें	नबी (स)	ऐ	63	हिक्मत वाला	ग़ालिब	वेशक वह	उन के दरमियान	उल्फ़त डाल दी
وَمَنْ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٤﴾ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضَ الْمُؤْمِنِينَ									
मोमिन (जमा)	तरगीब दो	नबी (स)	ऐ	64	मोमिन (जमा)	से	तुम्हारे पैरू है	और जो	
عَلَى الْقِتَالِ إِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ عَشْرُونَ صَبْرُونَ يَغْلِبُوا									
ग़ालिब आएंगे	सब्ब वाले	बीस (20)	तुम में से	हों	अगर	क़िताल (जिहाद)	पर		
مِائَتِينَ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ يَغْلِبُوا أَلْفًا مِّن									
से	एक हज़ार (1000)	वह ग़ालिब आएंगे	एक सो (100)	तुम में से	हों	और अगर	दो सो (200)		
الَّذِينَ كَفَرُوا بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ﴿٦٥﴾ أَلَنْ خَفَّفَ اللَّهُ عَنْكُمْ									
तुम से	अल्लाह ने तख़फ़ीफ़ कर दी	अब	65	समझ नहीं रखते	लोग	इस लिए कि वह	वह लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)		
وَعَلِمَ أَنَّ فِيكُمْ ضَعْفًا فَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ صَابِرَةٌ يَغْلِبُوا									
वह ग़ालिब आएंगे	सब्ब वाले	एक सो (100)	तुम में से	पस अगर हों	कमज़ोरी	तुम में	कि और मालूम कर लिया		
مِائَتِينَ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ أَلْفٌ يَغْلِبُوا أَلْفِينَ بِإِذْنِ اللَّهِ									
अल्लाह के हुक्म से	दो हज़ार (2000)	वह ग़ालिब रहेंगे	एक हज़ार (1000)	तुम में से	हों	और अगर	दो सो (200)		
وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٦٦﴾ مَا كَانَ لِنَبِيِّ أَنْ يَكُونَ لَهُ أَسْرَى حَتَّىٰ									
जब तक	कैदी	उस के	हों	कि किसी नबी के लिए	नहीं है	66	सब्ब वाले	साथ और अल्लाह	
يُثَخِّنَ فِي الْأَرْضِ تُرِيدُونَ عَرَصَ الدُّنْيَا وَاللَّهُ يُرِيدُ									
चाहता है	और अल्लाह	दुनिया	माल	तुम चाहते हो	ज़मीन	में	खूनरेज़ी कर ले		
الْآخِرَةَ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٦٧﴾ لَوْلَا كِتَابٌ مِّنَ اللَّهِ سَبَقَ									
पहले ही	अल्लाह से	लिखा हुआ	अगर न	67	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और अल्लाह	आख़िरत	
لَمَسَّكُمْ فِيمَا أَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٦٨﴾ فَكُلُوا مِمَّا غَنِمْتُمْ									
तुम्हें ग़नीमत में मिला	उस से जो	पस खाओ	68	बड़ा	अज़ाब	तुम ने लिया	उस में जो	तुम्हें पहुँचता	
حَلَالًا طَيِّبًا وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٦٩﴾									
69	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	और अल्लाह से डरो	पाक	हलाल			

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِمَنْ فِي أَيْدِيكُمْ مِنَ الْأَسْرَىٰ إِنَّ يَعْلَمَ اللَّهُ فِي										
में	मालूम कर लेगा अल्लाह	अगर	कैदी	से	तुम्हारे हाथ	में	उन से जो	कह दे	नबी	ऐ
قُلُوبِكُمْ خَيْرًا يُؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّا أُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرَ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ										
वख़शने वाला	और अल्लाह	तुम्हें	और वख़शदेगा	तुम से	लिया गया	उस से जो	तुम्हें देगा बेहतर	कोई भलीई	तुम्हारे दिल	
رَّحِيمٌ ﴿٧٠﴾ وَإِنْ يُرِيدُوا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللَّهَ مِنْ قَبْلُ										
इस से कब्ल	तो उन्होंने ने ख़ियानत की अल्लाह से	आप (स) से ख़ियानत का	वह इरादा करेंगे	और अगर	70	निहायत मेहरबान				
فَأَمْكَنَ مِنْهُمْ وَاللَّهُ عَلَيْهِمْ حَكِيمٌ ﴿٧١﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا										
और उन्होंने ने हिज़्रत की	ईमान लाए	जो लोग	वेशक	71	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	उन से (उन्हें)	तो कबज़े में दे दिया	
وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوُوا										
ठिकाना दिया	और वह लोग जो	अल्लाह का रास्ता	में	और अपनी जानें	अपने मालों से	और जिहाद किया				
وَنَصَرُوا أَوْلِيَّكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٌ وَالَّذِينَ آمَنُوا										
ईमान लाए	और वह लोग जो	बाज़ (दूसरे)	रफ़ीक	उन के बाज़	वही लोग	और मदद की				
وَلَمْ يُهَاجِرُوا مَا لَكُمْ مِنْ وَلَايَتِهِمْ مِنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا										
वह हिज़्रत करें	यहां तक कि	कुछ शौ (सरोकार)	उन की रफ़ाक़त	से	तुम्हें नहीं	और उन्होंने ने हिज़्रत न की				
وَإِنْ اسْتَنْصَرُوكُمْ فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ إِلَّا عَلَىٰ قَوْمٍ										
वह कौम	पर (ख़िलाफ़)	मगर	मदद	तो तुम पर (लाज़िम है)	दीन में	वह तुम से मदद मांगें	और अगर			
بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقٌ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٧٢﴾ وَالَّذِينَ										
और वह लोग	72	देखने वाला	तुम करते हो	जो	और अल्लाह	सुझाहदा	और उन के दरमियान	तुम्हारे दरमियान		
كَفَرُوا بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٌ إِلَّا تَفْعَلُوهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ										
ज़मीन में	फ़ित्ना	होगा	अगर तुम ऐसा न करोगे	बाज़ (दूसरे)	रफ़ीक	उन के बाज़	जिन्होंने ने कुफ़ किया			
وَفَسَادٌ كَبِيرٌ ﴿٧٣﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي										
में	और जिहाद किया उन्होंने ने	और उन्होंने ने हिज़्रत की	ईमान लाए	और वह लोग जो	73	बड़ा	और फ़साद			
سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوُوا وَنَصَرُوا أَوْلِيَّكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ										
मोमिन (जमा)	वह	वही लोग	और मदद की	ठिकाना दिया	और वह लोग जो	अल्लाह का रास्ता				
حَقًّا لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٧٤﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْ بَعْدُ										
उस के बाद	ईमान लाए	और वह लोग जो	74	इज़ज़त	और रोज़ी	वख़शिश	उन के लिए	सच्चे		
وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا مَعَكُمْ فَأَوْلِيَّكُمْ مِنْكُمْ وَأُولُوا الْأَرْحَامِ										
और कराबतदार	तुम में से	पस वही लोग	तुम्हारे साथ	और उन्होंने ने जिहाद किया	और उन्होंने ने हिज़्रत की					
بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٧٥﴾										
75	जानने वाला	हर चीज़	वेशक अल्लाह	अल्लाह का हुक्म	में (रू से)	बाज़ (दूसरे) के	क़रीब (ज़ियादा हक़ दार)	उन के बाज़		

ऐ नबी (स)! आप (स) के हाथ (कबज़े) में जो कैदी हैं, उन से कह दें कि अगर अल्लाह तुम्हारे दिलों में कोई भलाई मालूम कर लेगा तो तुम्हें उस से बेहतर देगा जो तुम से लिया गया और वह तुम्हें वख़श देगा, और अल्लाह वख़शने वाला निहायत मेहरबान है। (70)

और अगर आप (स) से ख़ियानत का इरादा करेंगे तो उन्होंने ने उस से कब्ल अल्लाह से ख़ियानत की तो अल्लाह ने उन्हें (तुम्हारे) कबज़े में दे दिया, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (71)

वेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने हिज़्रत की और अपने मालों और जानों से अल्लाह की राह में जिहाद किया, और जिन लोगों ने ठिकाना दिया और मदद की वही लोग एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं, और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने हिज़्रत न की, तुम्हें नहीं है कुछ सरोकार उन की रफ़ाक़त से, यहां तक कि वह हिज़्रत करें, और अगर वह तुम से दीन में मदद मांगें तो तुम पर मदद लाज़िम है, मगर उस कौम के ख़िलाफ़ नहीं जिस के और तुम्हारे दरमियान मुझाहदा हो, और जो तुम करते हो अल्लाह उसे देखने वाला है। (72)

और जिन लोगों ने कुफ़ किया वह एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं, अगर तुम ऐसा न करोगे तो फ़ित्ना होगा ज़मीन में और बड़ा फ़साद (होगा)। (73)

और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने हिज़्रत की और जिहाद किया अल्लाह के रास्ते में, और जिन लोगों ने ठिकाना दिया और मदद की वही लोग सच्चे मोमिन हैं, उन के लिए वख़शिश और इज़ज़त की रोज़ी है। (74)

और जो लोग उस के बाद ईमान लाए और उन्होंने ने हिज़्रत की और तुम्हारे साथ (मिल कर) जिहाद किया पस वही तुम में से हैं, और कराबतदार (आपस में) एक दूसरे के ज़ियादा हक़ दार हैं अल्लाह के हुक्म से, वेशक अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (75)

ع ١٠

अल्लाह और उस के रसूल (स) (की तरफ) से क़तअ तअल्लुक है उन मुश्रिकों से जिन्होंने तुम से अहद किया हुआ था। (1)

पस (मुश्रिकों) ज़मीन में चार महीने चल फिर लो, और जान लो कि तुम अल्लाह को अज़िज़ करने वाले नहीं, और यह कि अल्लाह काफ़िरों को रुस्वा करने वाला है। (2)

और अल्लाह और उस के रसूल (की तरफ) से हज़-ए-अक़्बर के दिन लोगों के लिए एलान है कि अल्लाह और उस के रसूल का मुश्रिकों से क़तअ तअल्लुक है, पस अगर तुम तौबा कर लो तो यह तुम्हारे लिए बेहतर है, और अगर तुम ने मुँह फेर लिया तो जान लो कि तुम अल्लाह को अज़िज़ करने वाले नहीं, और आगाह कर दो उन लोगों को जिन्होंने न कुफ़ किया अज़ाब दर्दनाक से। (3)

सिवाए उन मुश्रिक लोगों के जिन से तुम ने अहद किया था, फिर उन्होंने तुम से (अहद में) कुछ भी कमी न की और न उन्होंने तुम्हारे खिलाफ़ किसी की मदद की, तो उन से उन का अहद उन की (मुकररा) मुदत तक पूरा करो, बेशक अल्लाह परहेज़गारों को दोस्त रखता है। (4)

फिर जब हुर्मत वाले महीने गुज़र जाएं तो मुश्रिकों को क़त्ल करो जहाँ तुम उन्हें पाओ, और उन्हें पकड़ो और उन्हें घेर लो, और उन के लिए हर घात में बैठो, फिर अगर वह तौबा कर लें और नमाज़ काइम करें और ज़कात अदा करें तो उन का रास्ता छोड़ दो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (5)

और अगर मुश्रिकीन हि से कोई आप (स) से पनाह मांगे तो उसे पनाह दे दें यहाँ तक कि वह सुन ले अल्लाह का कलाम, फिर उसे उस की अमन की जगह पहुँचा दें, यह इस लिए है कि वह इल्म नहीं रखते (नादान है)। (6)

## آيَاتُهَا ١٢٩ ﴿٩﴾ سُورَةُ التَّوْبَةِ ﴿٩﴾ ﴿١٦﴾ رُكُوعَاتُهَا ١٦

रुक़आत 16

(9) सूरतुत तौबा

आयात 129

بَرَاءَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١﴾

1	मुश्रिकीन	से	तुम से अहद किया	वह लोग जिन्होंने ने	तरफ	और उस का रसूल (स)	अल्लाह	से	एलान-ए-बरात
---	-----------	----	-----------------	---------------------	-----	-------------------	--------	----	-------------

فَسِيحُوا فِي الْأَرْضِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَلِمُوا أَنكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ ۚ

अल्लाह को अज़िज़ करने वाले	नहीं	कि तुम	और जान लो	महीने	चार	ज़मीन में	पस चल फिर लो
----------------------------	------	--------	-----------	-------	-----	-----------	--------------

وَأَنَّ اللَّهَ مُخْزِي الْكَافِرِينَ ﴿٢﴾ وَأَذَانٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى

तरफ (लिए)	और उस का रसूल	अल्लाह से	और एलान	2	काफिर (जमा)	रुस्वा करने वाला	और यह कि अल्लाह
-----------	---------------	-----------	---------	---	-------------	------------------	-----------------

النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْأَكْبَرِ أَنَّ اللَّهَ بَرِيءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ ۚ

मुश्रिक (जमा)	से	क़तअ तअल्लुक	कि अल्लाह	हज़-ए-अक़्बर	दिन	लोग
---------------	----	--------------	-----------	--------------	-----	-----

وَرَسُولُهُ ۚ فَإِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ وَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوا أَنكُمْ

कि तुम	तो जान लो	तुम ने मुँह फेर लिया	और अगर	तुम्हारे लिए बेहतर	तो यह	तुम तौबा करो	पस अगर	और उस का रसूल
--------	-----------	----------------------	--------	--------------------	-------	--------------	--------	---------------

غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ ۚ وَبَشِّرِ الَّذِينَ كَفَرُوا بِعَذَابِ آلِيمٍ ۚ إِلَّا

सिवाए	3	दर्दनाक	अज़ाब से	उन्होंने न कुफ़ किया	वह लोग जो	और खुशख़बरी दो (आगाह कर दो)	अल्लाह	अज़िज़ करने वाले	न
-------	---	---------	----------	----------------------	-----------	-----------------------------	--------	------------------	---

الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوكُمْ شَيْئًا وَلَمْ

और न	कुछ भी	उन्होंने तुम से कमी न की	फिर	मुश्रिक (जमा)	से	तुम ने अहद किया था	वह लोग जो
------	--------	--------------------------	-----	---------------	----	--------------------	-----------

يُظَاهِرُوا عَلَيْكُمْ أَحَدًا فَأَتِمُّوا إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ إِلَىٰ مُدَّتِهِمْ ۗ

उन की मुदत	तक	उन का अहद	उन से	तो पूरा करो	किसी की	तुम्हारे खिलाफ़	उन्होंने न मदद की
------------	----	-----------	-------	-------------	---------	-----------------	-------------------

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ﴿٤﴾ فَإِذَا انْسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرْمُ فَاقْتُلُوا

तो क़त्ल करो	हुर्मत वाले	महीने	गुज़र जाएं	फिर जब	4	परहेज़गार (जमा)	दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह
--------------	-------------	-------	------------	--------	---	-----------------	---------------	-------------

الْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَخَذُوهُمْ وَاحْضَرُوهُمْ

और उन्हें घेर लो	और उन्हें पकड़ो	तुम उन्हें पाओ	जहाँ	मुश्रिक (जमा)
------------------	-----------------	----------------	------	---------------

وَأَقْعُدُوا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ

नमाज़	और काइम करें	वह तौबा कर लें	फिर अगर	हर घात	उन के लिए	और बैठो
-------	--------------	----------------	---------	--------	-----------	---------

وَاتُوا الزَّكَاةَ فَخَلُّوا سَبِيلَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥﴾ وَإِنْ

और अगर	5	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	उन का रास्ता	तो छोड़ दो	और ज़कात अदा करें
--------	---	----------------	--------------	-------------	--------------	------------	-------------------

أَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّىٰ يَسْمَعَ كَلِمَ اللَّهِ

अल्लाह का कलाम	वह सुन ले	यहाँ तक कि	तो उसे पनाह दे दो	आप से पनाह मांगे	मुश्रिकीन	से	कोई
----------------	-----------	------------	-------------------	------------------	-----------	----	-----

ثُمَّ أَبْلغَهُ مَأْمَنَهُ ۚ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦﴾

6	इल्म नहीं रखते	लोग	इस लिए कि वह	यह	उस की अमन की जगह	उसे पहुँचा दें	फिर
---	----------------	-----	--------------	----	------------------	----------------	-----

كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عَهْدٌ عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ رَسُولِهِ						
और उस के रसूल के पास	अल्लाह के पास	अहद	मुश्रिकों के लिए	हो	क्यों कर	
إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ فَمَا اسْتَقَامُوا						
वह काइम रहें	सो जब तक	मस्जिदे हराम	पास	तुम ने अहद किया	वह लोग जो	सिवाए
لَكُمْ فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ﴿٧﴾ كَيْفَ وَإِنْ						
और अगर	कैसे	7	परहेज़गार (जमा)	दोस्त रखता है	वेशक अल्लाह	उन के लिए
يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا فِيكُمْ إِلَّا وَلَا ذِمَّةً يُرْضُونَكُمْ						
वह तुम्हें राज़ी कर देते हैं	और न अहद	करावत	तुम्हारी	न लिहाज़ करें	तुम पर	वह ग़ालिब आजाएँ
بِأَفْوَاهِهِمْ وَتَأْبَى قُلُوبُهُمْ وَأَكْثَرُهُمْ فَاسِقُونَ ﴿٨﴾						
8	नाफ़रमान	और उन के अक्सर	उन के दिल	लेकिन नहीं मानते	अपने मुहँ (जमा) से	
إِشْتَرَوْا بِآيَةِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِهِ						
उस का रास्ता	से	फिर उन्होंने ने रोका	थोड़ी	कीमत	अल्लाह की आयात से	उन्होंने ने ख़रीद ली
إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩﴾ لَا يَرْقُبُونَ فِي مُؤْمِنٍ إِلَّا						
करावत	किसी मोमिन	(बारे) में	लिहाज़ नहीं करते	9	वह करते हैं	जो बुरा वेशक वह
وَلَا ذِمَّةً وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُونَ ﴿١٠﴾ فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا						
और काइम करें	तौबा कर लें	फिर अगर वह	10	हद से बढ़ने वाले	वह और वही लोग	अहद और न
الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ وَنُفَصِّلُ						
और खोल कर बयान करते हैं	दीन	में	तो तुम्हारे भाई	और अदा करें ज़कात	नमाज़	
الْأَيِّتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿١١﴾ وَإِنْ نَكَثُوا أَيْمَانَهُمْ						
अपनी कस्में	वह तोड़ दें	और अगर	11	इल्म रखते हैं	लोगों के लिए	आयात
مِّنْ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعْنُوا فِي دِينِكُمْ فَقَاتِلُوا						
तो जंग करो	तुम्हारा दीन	में	और ऐब निकालें	अपना अहद	के बाद से	
أَيِّمَةَ الْكُفْرِ إِنَّهُمْ لَأَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ						
शायद वह	उन की	नहीं कस्म	वेशक वह	कुफ़ के सरदार		
يَنْتَهُونَ ﴿١٢﴾ أَلَا تَقَاتِلُونَ قَوْمًا نَّكَثُوا أَيْمَانَهُمْ						
अपना अहद	उन्होंने ने तोड़ डाला	ऐसी कौम	क्या तुम न लड़ोगे?	12	बाज़ आजाएँ	
وَهُمْؤَا بِإِخْرَاجِ الرَّسُولِ وَهُمْ بَدَءُوكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ						
पहली बार	तुम से पहल की	और वह	रसूल (स)	निकालने का	और इरादा किया	
أَتَخْشَوْنَهُمْ فَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَوْهُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٣﴾						
13	ईमान वाले	अगर तुम हो	तुम उस से डरो	कि	ज़ियादा हक़दार	तो अल्लाह क्या तुम उन से डरते हो?

क्यों कर हो मुश्रिकों के लिए अल्लाह के पास और उस के रसूल (स) के पास कोई अहद सिवाए उन लोगों के जिन से तुम ने अहद किया मस्जिदे हराम (खाने क़अबा) के पास, सो जब तक वह तुम्हारे लिए (अहद पर) काइम रहें तुम (भी) उन के लिए काइम रहो, वेशक अल्लाह परहेज़गारों को दोस्त रखता है। (7)

कैसे (सुलह हो जब हाल यह है कि) अगर वह तुम पर ग़ालिब आजाएँ तो न लिहाज़ करें तुम्हारी करावत का और न अहद का, वह तुम्हें अपने मुहँ से (महेज़ ज़बानी) राज़ी कर देते हैं, लेकिन उन के दिल नहीं मानते, और उन में अक्सर नाफ़रमान हैं। (8)

उन्होंने ने अल्लाह की आयात से थोड़ी कीमत ख़रीद ली, फिर उन्होंने ने उस के रास्ते से रोका, वेशक बुरा है जो वह करते हैं। (9)

वह किसी मोमिन के बारे में न करावत का लिहाज़ करते हैं न अहद का, और वही लोग हैं हद से बढ़ने वाले। (10)

फिर अगर वह तौबा कर लें और नमाज़ काइम करें और ज़कात अदा करें तो तुम्हारे भाई हैं दीन में, और हम आयात खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो इल्म रखते हैं। (11)

और अगर वह अपनी कस्में तोड़ दें अपने अहद के बाद और तुम्हारे दीन में ऐब निकालें, तो कुफ़ के सरदारों से जंग करो, वेशक उन की कस्में कुछ नहीं, शायद वह (ताक़त के ज़ोर ही से) बाज़ आजाएँ। (12)

क्या तुम ऐसी कौम से न लड़ोगे? जिन्होंने ने अपना अहद तोड़ डाला और उन्होंने ने रसूल (स) को निकालने (जिला वतन करने) का इरादा किया और उन्होंने ने तुम से पहल की, क्या तुम उन से डरते हो? तो अल्लाह ज़ियादा हक़ रखता है कि तुम उस से डरो अगर तुम ईमान वाले हो। (13)

तुम उन से लड़ो (ताकि) अल्लाह उन्हें अज़ाब दे तुम्हारे हाथों से और उन्हें रसूवा करे और तुम्हें उन पर गालिब करे, और दिल ठन्डे करे मोमिन लोगों के, (14)

और उन के दिलों से गुस्सा दूर करे, और अल्लाह जिस की चाहे तौबा कुबूल करता है, और अल्लाह इल्म वाला हिक्मत वाला है। (15)

क्या तुम गुमान करते हो कि तुम छोड़ दिए जाओगे? (जबकि) अल्लाह ने अभी उन को मालूम नहीं किया तुम में से जिन्होंने जिहाद किया, और उन्होंने ने नहीं बनाया अल्लाह के सिवा और उस के रसूल (स) और मोमिनों (के सिवा) राज़दार। और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (16)

मुश्रिकों का (काम) नहीं कि वह आबाद करें अल्लाह की मसजिदें (जबकि) अपने ऊपर कुफ़ को तसलीम करते हों, वही लोग हैं जिन के अमल अकारत गए, और वह हमेशा जहनन्म में रहेंगे। (17)

अल्लाह की मसजिदें सिर्फ वही आबाद करता है जो अल्लाह और यौमे आखिरत पर ईमान लाया, और उस ने नमाज़ काइम की और ज़कात अदा की और अल्लाह के सिवा किसी से न डरा, सो उम्मीद है कि वही लोग हिदायत पाने वालों में से हों। (18)

क्या तुम ने हाजियों को पानी पिलाना और मसजिद हराम (खाना क़अवा) की मुजावरी करने को ठहराया है उस के मानिंद जो अल्लाह पर और यौमे आखिरत पर ईमान लाया और उस ने अल्लाह की राह में जिहाद किया, वह बराबर नहीं है अल्लाह के नज़दीक, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (19)

जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने हिज़्रत की और अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद किया (उन के) दरजे अल्लाह के हां बहुत बड़े हैं, और वही लोग मुराद को पहुँचने वाले हैं। (20)

قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبَهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنْزُرْكُمْ عَلَيْهِمْ							
उन पर	और तुम्हें गालिब करे	और उन्हें रसूवा करे	तुम्हारे हाथों से	उन्हें अज़ाब दे अल्लाह	तुम उन से लड़ो		
وَيَشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ ۗ وَيُدْهَبُ غَيْظَ قُلُوبِهِمْ ۗ							
उन के दिल (जमा)	गुस्सा	और दूर कर दे	14	मोमिनीन	लोग	सीने (दिल)	और शिफा वख़शे (ठन्डे करे)
وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝۱۵ ۝ أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ							
कि	क्या तुम समझते हो	15	हिक्मत वाला	इल्म वाला	और अल्लाह	जिसे चाहे	पर और अल्लाह तौबा कुबूल करता है
تُتْرَكُوا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوا							
और उन्होंने ने नहीं बनाया	तुम में से	उन्होंने ने जिहाद किया	वह लोग जो	मालूम किया अल्लाह	और अभी नहीं	तुम छोड़ दिए जाओगे	
مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَا رَسُولَهُ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ ۗ وَلِيَجْزِيَ اللَّهُ خَبِيرًا							
बाख़बर	और अल्लाह	राज़दार	और न मोमिनीन	और न उस का रसूल (स)	अल्लाह	सिवा	
بِمَا تَعْمَلُونَ ۝۱۶ ۝ مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ أَنْ يَعْمُرُوا مَسْجِدَ اللَّهِ							
अल्लाह की मसजिदें	वह आबाद करें	कि	मुश्रिकों के लिए	नहीं है	16	उस से जो तुम करते हो	
شَاهِدِينَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ۗ أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ ۗ							
उन के आमाल	अकारत गए	वही लोग	कुफ़ को	अपनी जानें (अपने ऊपर)	पर	तसलीम करते हों	
وَفِي النَّارِ هُمْ خَالِدُونَ ۝۱۷ ۝ إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسْجِدَ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ							
अल्लाह पर	ईमान लाया	जो	अल्लाह की मसजिदें	वह आबाद करता है	सिर्फ	17	हमेशा रहेंगे
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۗ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَىٰ الزَّكَاةَ وَلَمْ يَحْشَ إِلَّا اللَّهَ ۗ							
अल्लाह	सिवाए	और वह न डरा	और ज़कात अदा की	और उस ने नमाज़ काइम की	और आखिरत का दिन		
فَعَسَىٰ أُولَٰئِكَ أَنْ يَكُونُوا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ۝۱۸ ۝ أَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ							
पानी पिलाना	क्या तुम ने बनाया (ठहराया)	18	हिदायत पाने वाले	से	हों	कि	वही लोग सो उम्मीद है
الْحَاجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ							
और यौमे आखिरत	अल्लाह पर	ईमान लाया	उस के मानिंद	मसजिदे हराम	और आबाद करना	हाजी (जमा)	
وَجَاهِدَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَئْذِنُ عِنْدَ اللَّهِ							
अल्लाह के नज़दीक	वह बराबर नहीं	अल्लाह की राह	में	और उस ने जिहाद किया			
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝۱۹ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا							
ईमान लाए	जो लोग	19	ज़ालिम (जमा)	लोग	हिदायत नहीं देता	और अल्लाह	
وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۗ							
और अपनी जानें	अपने मालों से	अल्लाह का रास्ता	में	और जिहाद किया	और उन्होंने ने हिज़्रत की		
أَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللَّهِ ۗ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ۝۲۰ ۝							
20	मुराद को पहुँचने वाले	वह	और वही लोग	अल्लाह के हां	दरजे	बहुत बड़े	

ع ۸

ع ۸



يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَجَّئْتِ لَهُمْ فِيهَا							
उन में	उन के लिए	और बागात	और खुशनुदी	अपनी तरफ से	रहमत की	उन का रव	उन्हें खुशखुबरी देता है
نَعِيمٌ مُّقِيمٌ ﴿٢١﴾ خَلِيدِينَ فِيهَا أَبَدًا إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ							
उस के हां	वेशक अल्लाह	हमेशा	उस में	हमेशा रहेंगे	21	दाइमी	नेमत
أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٢٢﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا آبَاءَكُمْ							
अपने बाप दादा	तुम न बनाओ	वह लोग जो ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	22	अज़ीम	अजर	
وَإِخْوَانَكُمْ أَوْلِيَاءَ إِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْإِيمَانِ وَمَنْ							
और जो	ईमान पर (ईमान के मुकाबिल)	कुफ़	अगर वह पसन्द करें	रफ़ीक	और अपने भाई		
يَتَوَلَّهُمْ مِنْكُمْ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٣﴾ قُلْ إِنْ كَانَ							
हों	अगर	कहे दें	23	ज़ालिम (जमा)	वह तो वही लोग	तुम में से	दोस्ती करेगा उन से
أَبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ							
और तुम्हारे कुंबे	और तुम्हारी वीवियां	और तुम्हारे भाई	और तुम्हारे बेटे	तुम्हारे बाप दादा			
وَأَمْوَالٌ اقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا							
उस का नुकसान	तुम डरते हो	और तिजारत	जो तुम ने कमाए	और माल			
وَمَسْكِنٌ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ إِلَيْكُمْ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ							
और उस का रसूल	अल्लाह से	तुम्हारे लिए (तुम्हें)	ज़ियादा प्यारे	जो तुम पसन्द करते हो	और घर		
وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُوا حَتَّى يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ وَاللَّهُ							
और अल्लाह	उस का हुकम	ले आए अल्लाह	यहां तक कि	इन्तिज़ार करो	उस की राह में	और जिहाद	
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿٢٤﴾ لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ فِي							
में	अल्लाह ने तुम्हारी मदद की	अलबत्ता	24	नाफ़रमान	लोग	हिदायत नहीं देता	
مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ وَيَوْمَ حُنَيْنٍ إِذْ أَعْجَبْتُمْ كَثْرَتَكُمْ							
अपनी कसूरत	तुम खुश हुए (इतरा गए)	जब	और हुनैन के दिन	बहुत से	मैदान (जमा)		
فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا وَضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحَبَتْ							
फ़राखी के बावजूद	ज़मीन	तुम पर	और तंग हो गई	कुछ	तुम्हें	तो न फ़ाइदा दिया	
ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُدْبِرِينَ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ أَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ							
अपनी तस्कीन	अल्लाह ने नाज़िल की	फिर	25	पीठ दे कर	तुम फिर गए	फिर	
عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَنْزَلَ جُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا							
वह तुम ने न देखे	लशकर	और उतारे उस ने	मोमिनीन	और पर	अपने रसूल (स)	पर	
وَعَذَّبَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَذَلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ ﴿٢٦﴾							
26	काफ़िर (जमा)	सज़ा	और यही	वह लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	और अज़ाब दिया		

उन का रव उन्हें अपनी तरफ से रहमत और खुशनुदी और बागात की खुशखुबरी देता है, उन में उन के लिए दाइमी नेमत है। (21)

वह उस में हमेशा हमेशा रहेंगे, वेशक अल्लाह के (हां) अजरे अज़ीम है। (22)

ऐ ईमान वालो! अपने बाप दादा को और अपने भाइयों को रफ़ीक न बनाओ अगर वह लोग ईमान के खिलाफ कुफ़ को पसन्द करें, और तुम में से जो उन से दोस्ती करेगा तो वही लोग ज़ालिम है। (23)

कह दें, अगर तुम्हारे बाप दादा, तुम्हारे बेटे, और तुम्हारे भाई, और तुम्हारी वीवियां, और तुम्हारे कुंबे, और माल जो तुम ने कमाए, और तिजारत जिस के नुकसान से तुम डरते हो, और घर जिन को तुम पसन्द करते हो, तुम्हें अल्लाह से और उस के रसूल से और उस की राह में जिहाद से ज़ियादा प्यारे हों तो इन्तिज़ार करो यहां तक कि अल्लाह का हुकम आजाए, और अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (24)

अलबत्ता अल्लाह ने तुम्हारी मदद की बहुत से मैदानों में, और हुनैन के दिन, जब तुम अपनी कसूरत पर इतरा गए तो उस (कसूरत) ने तुम्हें कुछ फ़ाइदा न दिया, और तुम पर ज़मीन फ़राखी के बावजूद तंग हो गई, फिर तुम पीठ दे कर फिर गए। (25)

फिर अल्लाह ने अपने रसूल (स) पर और मोमिनीन पर अपनी तस्कीन नाज़िल की, और उस ने लशकर उतारे जो तुम ने न देखे और काफ़िरों को अज़ाब दिया, और यही सज़ा है काफ़िरों की। (26)

फिर उस के बाद अल्लाह जिस की चाहे तौबा कुबूल करेगा, और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (27)

ऐ मोमिनों! इस के सिवा नहीं कि मुश्रिक पलीद है, लिहाज़ा वह करीब न जाए उस साल के बाद मसजिदे हराम (खाने क़़बा) के। और अगर तुम्हें मोहताजी का डर हो तो अल्लाह तुम्हें जल्द ग़नी कर देगा अपने फ़ज़ल से अगर चाहे, बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (28)

तुम उन लोगों से लड़ो जो ईमान नहीं लाए अल्लाह पर और न यौमे आख़िरत पर, और न हराम जानते हैं वह जो अल्लाह और उस के रसूल (स) ने हराम ठहराया है, और न दीने हक़ को कुबूल करते हैं उन लोगों में से जो अहले किताब हैं, यहां तक कि वह जिज़या दें अपने हाथ से ज़लील हो कर। (29)

यहूद ने कहा ऊज़ैर (अ) अल्लाह का बेटा है और कहा नसारा ने मसीह (अ) अल्लाह का बेटा है, यह बातें है उन के मुँह की, वह रीस करते हैं पहले काफ़िरों की बात की। अल्लाह उन्हें हलाक करे, कहां वहके जा रहे हैं? (30)

उन्होंने ने बना लिया अपने उल्मा और अपने दर्वेशों को रब अल्लाह के सिवा, और मसीह (अ) इब्ने मरयम को (भी), और उन्हें हुक्म नहीं दिया गया मगर यह कि वह माबूदे वाहिद की इबादत करें, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, वह उस से पाक है जो वह शिर्क करते हैं। (31)

ثُمَّ يَتُوبُ اللَّهُ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ							
और अल्लाह	जिस की चाहे	पर	इस	बाद	तौबा कुबूल करेगा अल्लाह	फिर	
عَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْمُشْرِكُونَ							
मुश्रिक (जमा)	इस के सिवा नहीं	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ	27	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	
نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هَذَا ۖ							
इस	साल	बाद	मसजिदे हराम	लिहाज़ा वह करीब न जाए	पलीद		
وَإِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيكُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ إِنْ شَاءَ ۗ							
अगर वह चाहे	अपना फ़ज़ल	से	तुम्हें ग़नी कर देगा अल्लाह	तो जल्द	मोहताजी	तुम्हें डर हो	और अगर
إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٢٨﴾ قَاتِلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ							
अल्लाह पर	ईमान नहीं लाए	वह लोग जो	तुम लड़ो	28	हिक्मत वाला	जानने वाला	बेशक अल्लाह
وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ							
जो हराम ठहराया अल्लाह ने	और न हराम जानते हैं	यौमे आख़िरत पर	और न				
وَرَسُولَهُ وَلَا يَدِينُونَ دِينَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِينَ							
वह लोग जो	से	दीने हक़	और न कुबूल करते हैं	और उस का रसूल (स)			
أُوتُوا الْكِتَابَ حَتَّىٰ يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَن يَدٍ وَهُمْ							
और वह	हाथ	से	जिज़या	दें	यहां तक	किताब दिए गए (अहले किताब)	
ضَعُفُونَ ﴿٢٩﴾ وَقَالَتِ الْيَهُودُ عُزَيْرٌ ابْنُ اللَّهِ وَقَالَتِ							
और कहा	अल्लाह का बेटा	ऊज़ैर	यहूद	और कहा	29	ज़लील हो कर	
النَّصْرَى الْمَسِيحَ ابْنَ اللَّهِ ذَلِكَ قَوْلُهُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ							
उन के मुँह की	उन की बातें	यह	अल्लाह का बेटा	मसीह (अ)	नसारा		
يُضَاهِيُونَ قَوْلَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ ۗ							
पहले	वह लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	बात	वह रीस करते हैं				
قَاتَلَهُمُ اللَّهُ ۗ أَلِيٌّ يُؤْفَكُونَ ﴿٣٠﴾ اتَّخَذُوا أَحْبَارَهُمْ							
अपने एहवार (उल्मा)	उन्होंने ने बना लिया	30	वहके जाते हैं	कहां	हलाक करे उन्हें अल्लाह		
وَرُهَبَانَهُمْ أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَالْمَسِيحَ							
और मसीह (अ)	अल्लाह के सिवा	से	रब (जमा)	और अपने राहेब (दर्वेश)			
ابْنَ مَرْيَمَ ۗ وَمَا أُمْرُوًا إِلَّا لِيَعْبُدُوا إِلَهًا وَاحِدًا ۗ							
माबूदे वाहिद	यह कि वह इबादत करें	मगर	उन्हें हुक्म दिया गया	और नहीं	इब्ने मरयम		
لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ سُبْحَانَهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٣١﴾							
31	वह शिर्क करते हैं	उस से जो	वह पाक है	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद		

يُرِيدُونَ أَنْ يُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَيَأْبَى اللَّهُ							
और न मानेगा अल्लाह	अपने मुँह से (जमा)	अल्लाह का नूर	वह बुझा दें	कि	वह चाहते हैं		
إِلَّا أَنْ يُتِمَّ نُورَهُ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ﴿٣٢﴾ هُوَ							
वह	32	काफिर (जमा)	पसन्द न करें	खाह	अपना नूर	पूरा करे	यह कि मगर
الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ							
ताकि उसे ग़ल्वा दे	और दिने हक़	हिदायत के साथ	अपना रसूल	भेजा	वह जिस ने		
عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ﴿٣٣﴾ يَأَيُّهَا الَّذِينَ							
वह लोग जो	ऐ	33	मुश्रिक (जमा)	पसन्द न करें	खाह	तमाम पर	दीन पर
أَمْنُوا إِنَّ كَثِيرًا مِنَ الْآحِبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَأْكُلُونَ							
खाते हैं	और राहेब (दर्वेश)	उल्मा	से	बहुत	वेशक	ईमान लाए	
أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ							
अल्लाह का रास्ता	से	और रोकते हैं	नाहक तीर पर	लोग (जमा)	माल (जमा)		
وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا ينفِقُونَهَا فِي							
में	और वह उसे खर्च नहीं करते	और चाँदी	सोना	जमा कर के रखते हैं	और वह लोग जो		
سَبِيلِ اللَّهِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣٤﴾ يَوْمَ يُحْمَىٰ عَلَيْهَا							
उस पर	दहकाएंगे	जिस दिन	34	दर्दनाक	अज़ाब	सो उन्हें खुशख़बरी दो	अल्लाह की राह
فِي نَارٍ جَهَنَّمَ فُتْكُوى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوبُهُمْ وظُهُورُهُمْ							
और उन की पीठ (जमा)	और उनके पहलू (जमा)	उन की पेशानी	उस से	फिर दागा जाएगा	जहन्नम की आग	में	
هَذَا مَا كَنَزْتُمْ لِأَنفُسِكُمْ فَذُوقُوا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُونَ ﴿٣٥﴾							
35	जो तुम जमा कर के रखते थे	जो	पस मज़ा चखो	अपने लिए	तुम ने जमा कर के रखा	जो	यह है
إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِنْدَ اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِي							
में	महीने	बारह (12)	अल्लाह के नज़दीक	महीनें	तादाद	वेशक	
كِتَابِ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ مِنْهَا							
उन से (उन में)	और ज़मीन	आस्मानों	उस ने पैदा किया	जिस दिन	अल्लाह का हुक्म		
أَرْبَعَةَ حُرْمٍ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ فَلَا تَظْلِمُوا							
फिर न जुल्म करो	सीधा (दुरुस्त) दीन	यह	हुर्मत वाले	चार (4)			
فِيهِنَّ أَنْفُسِكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِينَ كَآفَّةً كَمَا							
जैसे	सब के सब	मुश्रिकों	और लड़ो	अपने ऊपर	उन में		
يُقَاتِلُونَكُمْ كَآفَّةً وَعَلِمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿٣٦﴾							
36	परहेज़गार (जमा)	साथ	कि अल्लाह	और जान लो	सब के सब	वह तुम से लड़ते हैं	

वह चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपने मुँह (की फूकों) से बुझा दें और अल्लाह न मानेगा मगर यह कि अपने नूर को पूरा करे, खाह काफिर पसन्द न करें। (32)

वह जिस ने अपना रसूल (स) भेजा हिदायत के साथ और दिने हक़ के साथ ताकि उसे तमाम दीनों पर ग़ल्वा दे, खाह मुश्रिक पसन्द न करें। (33)

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो (मोमिनो)! वेशक बहुत से उल्मा और दर्वेश लोगो के माल नाहक तीर पर खाते हैं और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, और वह लोग जो सोना चाँदी जमा कर के रखते हैं और उसे अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते, सो उन्हें दर्दनाक अज़ाब की खुशख़बरी दो (आगाह कर दो)। (34)

जिस दिन हम उसे दहकाएंगे जहन्नम की आग में, फिर उस से उन की पेशानियों और उन के पहलूओं और उन की पीठों को दागा जाएगा कि यह है वह जो तुम ने अपने लिए जमा कर के रखा था, पस मज़ा चखो जो तुम जमा कर के रखते थे। (35)

वेशक महिनो की तादाद अल्लाह के नज़दीक अल्लाह की किताब में बारह महीने हैं जब से उस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया, उन में चार हुर्मत वाले (अदब के) महीने हैं, यही है दुरुस्त दीन, पस तुम उन में अपने ऊपर जुल्म न करो, और तुम सब के सब मुश्रिकों से लड़ो जैसे वह सब के सब तुम से लड़ते हैं, और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है। (36)

यह जो महीने का हटा कर (आगे पीछे करना) कुफ़्र में इज़ाफ़ा है, इस से काफ़िर गुमराह होते हैं, वह उसे (उस महीने को) एक साल हलाल कर लेते हैं और दूसरे साल उसे हराम कर लेते हैं ताकि वह गिनती पूरी कर ले उस की जो अल्लाह ने हराम किए। सो वह हलाल करते हैं जो अल्लाह ने हराम किया है, उन के बुरे अमल उन्हें मुज़ैयन कर दिए गए हैं और अल्लाह काफ़िरों की कौम को हिदायत नहीं देता। (37)

ऐ मोमिनो! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुम्हें कहा जाता है कि अल्लाह की राह में कूच करो तो तुम गिरे जाते हो ज़मीन पर, क्या तुम ने आखिरत के मुकाबले में दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द कर लिया? सो (कुछ भी) नहीं है दुनिया की ज़िन्दगी का सामान आखिरत के मुकाबले में मगर थोड़ा। (38)

अगर तुम (राहे खुदा) में न निकलोगे तो (अल्लाह) तुम्हें अज़ाब देगा दर्दनाक, और तुम्हारे सिवा कोई और कौम बदले में ले आएगा, और तुम उस का कुछ भी न बिगाड़ सकोगे, और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है। (39)

अगर तुम उस (नबी पाक (स) की मदद न करोगे तो अलबत्ता अल्लाह ने मदद की है जब काफ़िरों ने उन्हें निकाला था, वह दूसरे थे दोनों में, जब वह दोनों गारे (सूर) में थे, जब वह अपने साथी (अबू बक्र सिददीक) से कहते थे, घबराओ नहीं, यकीनन अल्लाह हमारे साथ है, तो उस ने उन पर तसकीन नाज़िल की और ऐसे लशकरों से उन की मदद की जो तुम ने नहीं देखे और काफ़िरों की वात पस्त कर दी, और अल्लाह का कलिमा (बोल) वाला है, और अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (40)

तुम निकलो हलके हो या भारी, और अपने मालों से जिहाद करो और अपनी जानों से अल्लाह की राह में, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो। (41)

إِنَّمَا النَّسِيءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا							
वह लोग जिन्होंने कुफ़्र किया (काफ़िर)	इस से	गुमराह होते हैं	कुफ़्र में	इज़ाफ़ा	महीने का हटा देना	यह जो	
يُحِلُّونَهُ عَامًا وَيُحَرِّمُونَهُ عَامًا لِّيُوَاطِّئُوا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ							
हराम किया	जो	गिनती	ताकि वह पूरी कर लें	एक साल	और उस को हराम कर लेते हैं	एक साल	वह उस को हलाल करते हैं
اللَّهُ فَيُحِلُّونَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ زَيْنَ لَهُمْ سُوءَ أَعْمَالِهِمْ وَاللَّهُ							
और अल्लाह	उन के आमाल	बुरे	उन्हें	मुज़ैयन कर दिए गए	अल्लाह ने हराम किया	जो	तो वह हलाल करते हैं
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿٣٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا لَكُمْ							
तुम्हें किया हुआ	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ	37	काफ़िर (जमा)	कौम	हिदायत नहीं देता	
إِذَا قِيلَ لَكُمْ أَنْفِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَثَقَلْتُمْ إِلَى الْأَرْضِ							
ज़मीन	तरफ़ (पर)	तुम गिरे जाते हो	अल्लाह की राह	में	कूच करो	तुम्हें	कहा जाता है
أَرْضَيْتُمْ بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا مِنَ الْآخِرَةِ فَمَا مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا							
दुनिया	ज़िन्दगी	सामान	सो नहीं	आखिरत	से (मुकाबला)	दुनिया	ज़िन्दगी को
فِي الْآخِرَةِ إِلَّا قَلِيلٌ ﴿٣٨﴾ إِلَّا تَنْفِرُوا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا							
दर्दनाक	अज़ाब	तुम्हें अज़ाब देगा	अगर न निकलोगे	38	थोड़ा	मगर	आखिरत
وَيَسْتَبَدِّلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّهُ شَيْئًا وَاللَّهُ عَلَى							
पर	और अल्लाह	कुछ भी	और न बिगाड़ सकोगे उस का	तुम्हारे सिवा	और कौम	और बदले में ले आएगा	
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٩﴾ إِلَّا تَنْصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ							
उस को निकाला	जब	तो अलबत्ता अल्लाह ने उस की मदद की है	अगर तुम मदद न करोगे उस की	39	कुदरत रखने वाला	हर चीज़	
الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِي أُنَيْنِ إِذْ هُمْ فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ							
वह कहते थे	जब	ग़ार	में	जब वह दोनों	दो में	दूसरा	जो काफ़िर हुए (काफ़िर)
لصاحبه لا تحزن إن الله معنا فأنزل الله سكينته							
अपनी तसकीन	तो अल्लाह ने नाज़िल की	हमारे साथ	यकीनन अल्लाह	घबराओ नहीं	अपने साथी से		
عليه وأيده بجنود لم ترورها وجعل كلمة الذين كفروا							
उन्होंने कुफ़्र किया	वह लोग जो	वात	और कर दी	जो तुम ने नहीं देखे	ऐसे लशकरों से	और उस की मदद की	उस पर
السفلى وكلمة الله هي العليا والله عزيز حكيم ﴿٤٠﴾							
40	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और अल्लाह	बाला	वह	और अल्लाह का कलिमा (बोल)	पस्त (नीची)
انفروا خفاً وثقالاً وجهدوا بأموالكم وأنفسكم							
और अपनी जानों	अपने मालों से	और जिहाद करो	और भारी	हलका-हलके	तुम निकलो		
في سبيل الله ذلكم خير لكم إن كنتم تعلمون ﴿٤١﴾							
41	जानते हो	तुम हो	अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर	यह तुम्हारे लिए	अल्लाह की राह

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيبًا وَسَفَرًا قَاصِدًا لَاتَّبَعُوكَ						
तो आप (स) के पीछे हो लेते	आसान	और सफ़र	क़रीब	माल (ग़नीमत)	होता	अगर
وَلَكِنْ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ وَسَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ						
अल्लाह की	और अब कस्में खाएंगे	रास्ता	उन पर	दूर नज़र आया	और लेकिन	
لَوْ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ يُهْلِكُونَ أَنْفُسَهُمْ						
अपने आप	वह हलाक कर रहे हैं	तुम्हारे साथ	हम ज़रूर निकलते	अगर हम से हो सकता		
وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٤٢﴾ عَفَا اللَّهُ عَنْكَ لِمَ						
क्यों	तुम्हें	माफ़ करे अल्लाह	42	यकीनन झूटे हैं	कि वह	जानता है और अल्लाह
أَذْنَتْ لَهُمْ حَتَّى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَتَعْلَمَ						
और आप जान लेते	सच्चे	वह लोग जो	आप पर	ज़ाहिर हो जाए	यहां तक कि	तुम ने इजाज़त दी
الْكَاذِبِينَ ﴿٤٣﴾ لَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ						
अल्लाह पर	जो ईमान रखते हैं	वह लोग	नहीं मांगते आप से रूख़सत	43	झूटे	
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَنْ يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ						
और अपनी जान (जमा)	अपने मालों से	वह जिहाद करें	कि	और यौमे आख़िरत पर		
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ ﴿٤٤﴾ إِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ						
वह लोग जो	आप से रूख़सत मांगते हैं	वही सिर्फ़	44	मुत्तकियों को	खूब जानता है	और अल्लाह
لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَآزَّتْ قُلُوبُهُمْ						
उन के दिल	और शक में पड़े हैं	और यौमे आख़िरत	अल्लाह पर	ईमान नहीं रखते		
فَهُمْ فِي رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُونَ ﴿٤٥﴾ وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ						
निकलने का	वह इरादा करते	और अगर	45	भटक रहे हैं	अपने शक में	सो वह
لَأَعَدُّوا لَهُ عُدَّةً وَلَكِنْ كَرِهَ اللَّهُ انْبِعَاثَهُمْ						
उन का उठना	अल्लाह ने नापसन्द किया	और लेकिन	कुछ सामान	उस के लिए	ज़रूर तैयार करते	
فَشَبَّطَهُمْ وَقِيلَ اقْعُدُوا مَعَ الْفَاعِلِينَ ﴿٤٦﴾						
46	बैठने वाले	साथ	बैठ जाओ	और कहा गया	सो उन को रोक दिया	
لَوْ خَرَجُوا فِيكُمْ مَا زَادُوكُمْ إِلَّا خَبَالًا						
ख़राबी	मगर (सिवाए)	तुम्हें बढ़ाते	न	तुम में	वह निकलते	अगर
وَلَا أَوْضَعُوا خِلْكَمَ يَبْغُونَكُمْ الْفِتْنَةَ						
बिगाड़	तुम्हारे लिए चाहते हैं	तुम्हारे दरमियान	और दौड़े फिरते			
وَفِيكُمْ سَمْعُونَ لَهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿٤٧﴾						
47	ज़ालिमों को	खूब जानता है	और अल्लाह	उन के	सुनने वाले	और तुम में

अगर माले ग़नीमत क़रीब और सफ़र आसान होता तो वह आप (स) के पीछे हो लेते, लेकिन दूर नज़र आया उन्हें रास्ता, और अब अल्लाह की कस्में खाएंगे कि अगर हम से हो सकता तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ निकलते, वह अपने आप को हलाक कर रहे हैं, और अल्लाह जानता है कि वह यकीनन झूटे हैं। (42)

अल्लाह तुम्हें माफ़ करे, आप (स) ने (उस से पेशतर) उन्हें क्यों इजाज़त दे दी, यहां तक कि आप पर ज़ाहिर हो जाते वह लोग जो सच्चे हैं और आप (स) जान लेते झूटों को। (43)

आप (स) से वह लोग रूख़सत नहीं मांगते जो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान रखते हैं कि वह जिहाद करें अपने मालों से अपनी जानों से, और अल्लाह मुत्तकियों (डरने वाले, परहेज़गारों) को खूब जानता है। (44)

आप (स) से सिर्फ़ वह लोग रूख़सत मांगते हैं जो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, और उन के दिल शक में पड़े हैं, सो वह अपने शक में भटक रहे हैं। (45)

और अगर वह निकलने का इरादा करते तो उस के लिए ज़रूर तैयार करते कुछ सामान, लेकिन अल्लाह ने उन का उठना नापसन्द किया, सो उन को रोक दिया और कह दिया गया (माज़ूर) बैठने वालों के साथ बैठ जाओ। (46)

और अगर वह तुम में (तुम्हारे साथ) निकलते तो तुम्हारे लिए ख़राबी के सिवा कुछ न बढ़ाते, और तुम्हारे दरमियान दौड़े फिरते, चाहते हुए तुम्हारे लिए बिगाड़, और तुम में उन की बातें सुनने वाले मौजोद हैं, और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानता है। (47)

अलबत्ता उन्होंने ने चाहा था इस से कब्ल भी बिगाड़, और उन्होंने ने तुम्हारे लिए तदवीरें उलट पलट कीं यहां तक कि हक आगया, और गालिब आगया अमरे इलाही और वह पसन्द न करने वाले (ना खुश) रहे। (48)

और उन में से कोई कहता है मुझे इजाज़त दें और मुझे आज़माइश में न डालें, याद रखो वह आज़माइश में पड़ चुके हैं, और बेशक जहन्नम काफ़िरों को घेरे हुए है। (49)

अगर तुम्हें पहुँचे कोई भलाई तो उन्हें बुरी लगे, और तुम्हें कोई मुसीबत पहुँचे तो वह कहें: हम ने अपना काम पहले ही संभाल लिया था और वह खुशियां मनाते लौट जाते हैं। (50)

आप (स) कह दें हमें हरगिज़ न पहुँचेगा मगर (वही) जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दिया है, वही हमारा मौला है। और मोमिनों को अल्लाह पर ही भरोसा करना चाहिए। (51)

आप (स) कह दें: किया तुम दो खूबियों में से हम पर एक का इन्तिज़ार करते हो, और हम तुम्हारे लिए इन्तिज़ार कर रहे हैं कि तुम्हें पहुँचे अल्लाह के पास से कोई अज़ाब या हमारे हाथों से, सो तुम इन्तिज़ार करो, हम (भी) तुम्हारे साथ मुन्तज़िर हैं। (52)

आप (स) कह दें: तुम खुशी से खर्च करो या नाखुशी से, हरगिज़ तुम से कुबूल न किया जाएगा, बेशक तुम हो कौमे-फ़ासिकीन (नाफ़रमानों की कौम)। (53)

और उन के खर्च कुबूल न होने की कोई वजह इस के सिवा नहीं कि उन्होंने ने अल्लाह और रसूल से कुफ़र किया है, और वह नमाज़ को नहीं आते मगर सुस्ती से और वह खर्च नहीं करते मगर नाखुशी से। (54)

لَقَدْ ابْتِغَوْا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوا لَكَ الْأُمُورَ							
तदवीरें	तुम्हारे लिए	उन्होंने ने उलट पलट की	इस से कब्ल	बिगाड़	अलबत्ता चाहा था उन्होंने ने		
48	पसन्द न करने वाले	और वह	अमरे इलाही	और गालिब आगया	हक	आगया	यहां तक कि
وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُولُ ائْذَنْ لِّي وَلَا تَفْتِنِّي اَلَا فِي							
में	याद रखो	और न डाले मुझे आज़माइश में	मुझे	इजाज़त दें	कहता है	जो कोई	और उन में से
الْفِتْنَةَ سَقَطُوا وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ							
49	काफ़िरों को	घेरे हुए	जहन्नम	और बेशक	वह पड़ चुके हैं	आज़माइश	
اِنَّ تُصِيبَكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ وَاِنَّ تُصِيبَكَ مُصِيبَةٌ							
कोई मुसीबत	तुम्हें पहुँचे	और अगर	उन्हें बुरी लगे	कोई भलाई	तुम्हें पहुँचे	अगर	
يَقُولُوا قَدْ اَخَذْنَا اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَهُمْ							
और वह	और वह लौट जाते हैं	इस से पहले	अपना काम	हम ने पकड़ लिया (संभाल लिया) था	तो वह कहें		
فَرِحُونَ ٥٠ قُلْ لَنْ يُصِيبَنَا اِلَّا مَا كَتَبَ اللهُ لَنَا							
हमारे लिए	अल्लाह ने लिख दिया	जो मगर	हरगिज़ न पहुँचेगा हमें	आप कह दें	50	वह खुशियां मनाते	
هُوَ مَوْلَانَا وَعَلَى اللهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ							
51	मोमिन (जमा)	भरोसा करना चाहिए	और अल्लाह पर	हमारा मौला	वही		
قُلْ هَلْ تَرَبَّصُونَ بِنَا اِلَّا اِحْدَى الْحُسْنَيْنِ							
दो खूबियों	एक का	मगर	हम पर	क्या तुम इन्तिज़ार करते हो	आप (स) कह दें		
وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ يُصِيبَكُمْ اللهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهِ							
उस के पास	से	कोई अज़ाब	अल्लाह	तुम्हें पहुँचे	कि	तुम्हारे लिए	और हम इन्तिज़ार करते हैं
اَوْ بِاَيْدِنَا فْتَرَبَّصُوا اِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبَّصُونَ							
52	इन्तिज़ार करने वाले	तुम्हारे साथ	हम	सो तुम इन्तिज़ार करो	हमारे हाथों से	या	
قُلْ اَنْفِقُوا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا لَنْ يُتَقَبَلَ مِنْكُمْ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ							
तुम हो	बेशक तुम	तुम से	हरगिज़ न कुबूल किया जाएगा	नाखुशी से	या	खुशी से	तुम खर्च करो
قَوْمًا فَسِقِينَ ٥٣ وَمَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقَتُهُمْ اِلَّا							
मगर	उन का खर्च	उन से	कुबूल किया जाए	कि	उन के लिए रुकावट बना	और न	53
फ़ासिक (जमा)	कौम						
اِنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللّٰهِ وَرَسُولِهِ وَلَا يَأْتُونَ الصَّلٰوةَ							
नमाज़	और वह नहीं आते	और उस के रसूल के	अल्लाह के	मुन्किर हुए	यह कि वह		
اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُونَ اِلَّا وَهُمْ كَرِهُونَ							
54	नाखुशी से	और वह	मगर	और वह खर्च नहीं करते	सुस्त	और वह	मगर

فَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ						
कि अज़ाब दे उन्हें	चाहता है अल्लाह	यही	उन की औलाद	और न	उन के माल	सो तुम्हें तअज़्जुब न हो
بِهَا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَفِرُونَ ﴿٥٥﴾						
55	काफ़िर हों	और वह	उन की जानें	और निकलें	दुनिया की ज़िन्दगी	में उस से
وَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنَّهُمْ لَمِنكُمْ وَمَا هُمْ مِّنكُمْ وَلَكِنَّهُمْ قَوْمٌ						
लोग	और लेकिन वह	तुम में से	वह	हालाकि नहीं	अलबत्ता तुम में से	वेशक वह अल्लाह की और कस्में खाते हैं
يَفْرُقُونَ ﴿٥٦﴾ لَوْ يَجِدُونَ مَلَجًا أَوْ مَغْرَبًا أَوْ مُدْخَلًا						
घुसने की जगह	या	ग़ार (जमा)	या	पनाह की जगह	वह पाएं	अगर 56 डरते हैं
لَّوَلَوْ أَلِيهِ وَهُمْ يَجْمَحُونَ ﴿٥٧﴾ وَمِنْهُمْ مَّن يَلْمِزُكَ						
तअन करते हैं आप पर	जो (बाज़)	और उन में से	57	रस्सियां तुड़ाते हैं	और वह	उस की तरफ़ तो वह फिर जाएं
فِي الصَّدَقَاتِ فَإِنْ أُعْطُوا مِنْهَا رَضُوا وَإِنْ لَمْ يُعْطُوا						
उन्हें न दिया जाए	और अगर	वह राज़ी हो जाएं	उस से	उन्हें दे दिया जाए	सो अगर	सदकात में
مِنْهَا إِذَا هُمْ يَسْخَطُونَ ﴿٥٨﴾ وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَا آتَاهُمُ اللَّهُ						
अल्लाह	उन्हें दिया	जो	राज़ी हो जाते	अगर वह	क्या अच्छा होता 58	नाराज़ हो जाते हैं वह उसी वक़्त उस से
وَرَسُولُهُ وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ سَيُؤْتِينَا اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ						
अपना फ़ज़ल	से	अल्लाह	अब हमें देगा	हमें काफ़ी है अल्लाह	और वह कहते	और उस का रसूल
وَرَسُولُهُ إِنَّا إِلَى اللَّهِ رَاغِبُونَ ﴿٥٩﴾ إِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ						
मुफ़लिस (जमा)	ज़कात	सिर्फ़	59	रग़वत रखते हैं	अल्लाह की तरफ़	वेशक हम और उस का रसूल
وَالْمَسْكِينِ وَالْعَمَلِينَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ وَفِي						
और में	उन के दिल	और उलफ़त दी जाए	उस पर	और काम करने वाले	मिस्कीन (जमा) मोहताज	
الرِّقَابِ وَالْغَرَمِينَ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ وَابْنِ السَّبِيلِ فَرِيضَةً						
फ़रीज़ा (ठहराया हुआ)	और मुसाफ़िर	अल्लाह की राह	और में	तावान भरने वाले, कर्ज़दार	ग़र्दनों (के छुड़ाने)	
مِّنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٦٠﴾ وَمِنْهُمْ الَّذِينَ يُؤْذُونَ						
ईज़ा देते (सताते) हैं	जो लोग	और उन में से	60	हिक्मत वाला	इल्म वाला	और अल्लाह से
النَّبِيِّ وَيَقُولُونَ هُوَ أذُنٌ قُلُّ أذُنٌ خَيْرٌ لَّكُمْ يُؤْمِنُ						
वह ईमान लाते हैं	भलाई तुम्हारे लिए	कान	आप कह दें	कान	वह (यह)	और कहते हैं नबी
بِاللَّهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِينَ وَرَحْمَةً لِّلَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ						
तुम में	ईमान लाए	उन लोगों के लिए जो	और रहमत	मोमिनों पर	और यकीन रखते हैं	अल्लाह पर
وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ رَسُولَ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦١﴾						
61	दर्दनाक	अज़ाब	उन के लिए	अल्लाह का रसूल	सताते हैं	और जो लोग

सो तुम्हें तअज़्जुब न हो उन के मालों पर और न उन की औलाद पर, अल्लाह यही चाहता है कि उन्हें उस से दुनिया की ज़िन्दगी में अज़ाब दे, और उन की जानें निकलें तो (उस वक़्त) भी वह काफ़िर हों। (55)

और वह अल्लाह की कस्में खाते हैं कि वेशक वह तुम में से है, हालांकि वह तुम में से नहीं, लेकिन वह लोग डरते हैं। (56)

अगर वह पाएं कोई पनाह की जगह, या ग़ार या घुसने (सर समाने) की जगह तो वह उस की तरफ़ फिर जाएं रस्सियां तुड़ाते हुए। (57)

और उन में से बाज़ आप (स) पर सदकात (की तक़सीम में) तअन करते हैं, सो अगर उन में से उन्हें दे दिया जाए तो वह राज़ी हो जाएं और अगर उन्हें उस से न दिया जाए तो वह उसी वक़्त नाराज़ हो जाते हैं। (58)

क्या अच्छा होता अगर वह (उस पर) राज़ी हो जाते जो अल्लाह ने और उस के रसूल (स) ने उन्हें दिया, और वह कहते हमें अल्लाह काफ़ी है, अब हमें देगा अल्लाह अपने फ़ज़ल से और उस का रसूल, वेशक हम अल्लाह की तरफ़ रग़वत रखते हैं। (59)

ज़कात (हक़ है) सिर्फ़ मुफ़लिसों का, और मोहताजों का, और उस पर काम करने वाले (कारकुनों का), और (उन लोगों का) जिन्हें (इस्लाम की) उलफ़त दी जाए, और ग़र्दनों के छुड़ाने (आज़ाद कराने) में और कर्ज़दारों (का कर्ज़ अदा करने में), और अल्लाह की राह में, और मुसाफ़िरों का, (यह) अल्लाह की तरफ़ से ठहराया हुआ फ़रीज़ा है, और अल्लाह इल्म वाला, हिक्मत वाला है। (60)

और उन में से बाज़ लोग नबी को सताते हैं और कहते हैं यह तो कान है (कानों का कच्चा है), कह दें कि तुम्हारी भलाई के लिए आप (स) ऐसे हैं, वह अल्लाह पर ईमान लाते हैं और मोमिनों पर यकीन रखते हैं और उन लोगों के लिए रहमत हैं जो तुम में से ईमान लाए, और जो लोग अल्लाह के रसूल (स) को सताते हैं उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (61)

वह तुम्हारे लिए (तुम्हारे सामने) अल्लाह की कस्में खाते हैं ताकि तुम्हें खुश करें, और अल्लाह और उस के रसूल (स) का ज़ियादा हक है कि वह उन्हें खुश करें अगर वह ईमान वाले हैं। (62)

क्या वह नहीं जानते? कि जो मुकाबला करेगा अल्लाह का और उस के रसूल (स) का तो वेशक उस के लिए दोज़ख़ की आग है वह उस में हमेशा रहेंगे, यह बड़ी रुसवाई है। (63)

मुनाफ़िक़ीन डरते हैं कि मुसलमानों पर कोई ऐसी सूरात नाज़िल (न) हो जाए जो उन्हें (मुसलमानों को) जता दे जो उन (मुनाफ़िक़ों) के दिलों में है, आप (स) कह दें: तुम ठठे (हँसी मज़ाक़) करते रहो, वेशक़ तुम जिस से डरते हो अल्लाह उसे खोलने वाला है (खोल कर रहेगा)। (64)

और अगर तुम उन से पूछो तो वह ज़रूर कहेंगे: हम तो सिर्फ़ दिल्लगी और खेल करते हैं, आप (स) कह दें क्या तुम अल्लाह से, और उस की आयात से, और उस के रसूल (स) से हँसी करते थे? (65)

वहाने न बनाओ, तुम अपने ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गए, और हम तुम में से एक गिरोह को माफ़ कर दें तो दूसरे गिरोह को अज़ाब देंगे, इस लिए कि वह मुज़रिम हैं। (66)

मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें उन में से बाज़, बाज़ के (एक दूसरे के हम जिनस) हैं, बुराई का हुक्म देते हैं और नेकी से रोकते हैं, और अपने हाथ (मुठठियां ख़र्च करने से) बन्द रखते हैं, वह अल्लाह को भूल बैठे तो अल्लाह ने उन्हें भुला दिया, वेशक़ मुनाफ़िक़ नाफ़रमान हैं। (67)

अल्लाह ने मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों, और काफ़िरों को जहन्नम की आग का वादा दिया है, उस में हमेशा रहेंगे, वही उन के लिए काफ़ी है, और उन पर अल्लाह की लानत है, और उन के लिए हमेशा रहने वाला अज़ाब है। (68)

يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ لِيُرْضُوكُمْ وَاللَّهُ وَرَسُولُهُ						
और उस का रसूल	और अल्लाह	ताकि तुम्हें खुश करें	तुम्हारे लिए	अल्लाह की	वह कस्में खाते हैं	
أَحَقُّ أَنْ يُرْضَوْهُ إِنْ كَانُوا مُؤْمِنِينَ ۖ أَلَمْ يَعْلَمُوا						
क्या वह नहीं जानते	62	वह ईमान वाले हैं	अगर	वह उन को खुश करें	कि	ज़ियादा हक
أَنَّهُ مِنْ يُحَادِدِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَأَنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ						
दोज़ख़ की आग	उस के लिए	तो वेशक	और उस के रसूल	अल्लाह	मुकाबला करेगा	जो कि वह
خَالِدًا فِيهَا ذَلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيمُ ۖ يَحْذَرُ الْمُنْفِقُونَ						
मुनाफ़िक़ (जमा)	डरते हैं	63	बड़ी	रुसवाई	यह	उस में हमेशा रहेंगे
أَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُورَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِي قُلُوبِهِمْ						
उन के दिल (जमा)	में	वह जो	उन्हें जता दे	सूरात	उन (मुसलमानों) पर	कि नाज़िल हो
قُلِ اسْتَهْزِئُوا ۖ إِنَّ اللَّهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُونَ ۖ وَلَئِنْ						
और अगर	64	जिस से तुम डरते हो	खोलने वाला	वेशक अल्लाह	ठठे करते रहो	आप कह दें
سَأَلْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ ۚ قُلِ أَبِاللَّهِ						
क्या अल्लाह के	आप (स) कह दें	और खेल करते	दिल्लगी करते	हम थे	कुछ नहीं (सिर्फ)	तो वह ज़रूर कहेंगे
وَأَيْتِهِ وَرَسُولِهِ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِئُونَ ۖ لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُمْ						
तुम काफ़िर हो गए हो	न बनाओ वहाने	65	हँसी करते	तुम थे	और उस के रसूल	और उस की आयात
بَعْدَ إِيمَانِكُمْ ۖ إِنْ تَعْفُ عَنْ طَآئِفَةٍ مِّنْكُمْ						
तुम में से	एक गिरोह	से (को)	हम माफ़ कर दें	अगर	तुम्हारा (अपना) ईमान	बाद
نُعَذِّبُ طَآئِفَةً بِأَنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ۚ أَلَمْ نَفِقُونَ						
मुनाफ़िक़ मर्द (जमा)	66	मुज़रिम (जमा)	थे	इस लिए कि वह	एक (दूसरा) गिरोह	हम अज़ाब दें
وَالْمُنْفِقَاتُ بِعُضُوبِهِمْ مِّنْ بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمُنْكَرِ						
बुराई का	वह हुक्म देते हैं	बाज़ के	से	उन में से बाज़	और मुनाफ़िक़ औरतें	
وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوفِ وَيَقْبِضُونَ أَيْدِيَهُمْ ۗ نَسُوا						
वह भूल बैठे	अपने हाथ	और बन्द रखते हैं	नेकी	से	और मना करते हैं	
اللَّهِ فَنَسِيَهُمْ ۗ إِنَّ الْمُنْفِقِينَ هُمُ الْفٰسِقُونَ ۖ وَعَدَّ اللَّهُ						
अल्लाह ने वादा किया	67	नाफ़रमान (जमा)	वह (ही)	मुनाफ़िक़ (जमा)	वेशक	तो उस ने उन्हें भुला दिया
الْمُنْفِقِينَ وَالْمُنْفِقَاتِ وَالْكُفَّارِ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۗ						
उस में	हमेशा रहेंगे	जहन्नम की आग	और काफ़िर (जमा)	और मुनाफ़िक़ औरतें	मुनाफ़िक़ मर्द (जमा)	
هِيَ حَسْبُهُمْ ۖ وَلَعَنَهُمُ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۖ						
68	हमेशा रहने वाला	अज़ाब	और उन के लिए	और अल्लाह ने उन पर लानत की	उन के लिए काफ़ी	वही



كَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَآكَثَرَ						
और ज़ियादा	कुव्वत	तुम से	वहुत जोर वाले	वह थे	तुम से कव्वत	जिस तरह वह लोग जो
أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا فَاسْتَمْتَعُوا بِخَلْقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ						
सो तुम फाइदा उठा लो	अपने हिस्से से	सो उन्होंने ने फाइदा उठाया	और औलाद	माल में		
بِخَلْقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلْقِهِمْ						
अपने हिस्से से	तुम से पहले	वह लोग जो	फाइदा उठाया	जैसे	अपने हिस्से से	
وَخُضْتُمْ كَالَّذِي خَاضُوا أُولَئِكَ حِطَّتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا						
दुनिया में	उन के आमाल	अकारत गए	वही लोग	घुसे	जैसे वह	और तुम घुसे (बुरी बातों में)
وَالْآخِرَةَ وَأُولَئِكَ هُمُ الْخَسِرُونَ ﴿٦٩﴾ أَلَمْ يَأْتِهِمْ						
क्या इन तक न आई	69	ख़सारा उठाने वाले	वह	और वही लोग	और आख़िरत	
نَبَأَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَقَوْمِ إِبْرَاهِيمَ						
और कौमे इब्राहीम (अ)	और समूद	और झाद	कौमे नूह	इन से पहले	वह लोग जो	खबर
وَأَصْحَابِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكَةَ أَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ						
वाज़ेह अहकाम ओ दलाइल के साथ	उन के रसूल (जमा)	उन के पास आए	और उलटी हुई बस्तियां	और मदयन वाले		
فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ						
अपने ऊपर	वह थे	लेकिन	कि वह उन पर जुल्म करता	अल्लाह	था	सो नहीं
يَظْلِمُونَ ﴿٧٠﴾ وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ						
रफ़ीक़ (जमा)	उन में से बाज़	और मोमिन औरतें	और मोमिन मर्द (जमा)	70	जुल्म करते	
بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ						
बुराई	से	और रोकते हैं	भलाई का	वह हुकम देते हैं	बाज़	
وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيُطِيعُونَ اللَّهَ						
अल्लाह	और इताअत करते हैं	ज़कात	और अदा करते हैं	नमाज़	और वह काइम करते हैं	
وَرَسُولَهُ أُولَئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٧١﴾						
71	हिक्मत वाला	ग़ालिब	वेशक अल्लाह	कि उन पर अल्लाह रहम करेगा	वही लोग	और उस का रसूल
وَعَدَ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا						
उन के नीचे	जारी हैं	जन्नतें	और मोमिन औरतों	मोमिन मर्द (जमा)	वादा किया	अल्लाह
الأنهارِ خَالِدِينَ فِيهَا وَمَسْكِنٍ طَيِّبَةٍ فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ						
हमेशा रहने के बागात	में	पाकीज़ा	और मकानात	उन में	हमेशा रहेंगे	नहरें
وَرِضْوَانٍ مِّنَ اللَّهِ أَكْبَرُ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٧٢﴾						
72	बड़ी	कामयावी	वह	यह	सब से बड़ी अल्लाह	से और खुशनुदी

जिस तरह वह लोग जो तुम से कव्व थे, वह तुम से बहुत जोर वाले थे कुव्वत में और ज़ियादा थे माल में और औलाद में, सो उन्होंने ने अपने हिस्से से फाइदा उठाया, सो तुम अपने हिस्से से फाइदा उठा लो जैसे उन्होंने ने अपने हिस्से से फाइदा उठाया जो तुम से पहले थे, और तुम (बुरी बातों में) घुसे जैसे वह घुसे थे, वही लोग हैं जिन के अमल दुनिया और आख़िरत में अकारत गए, और वही लोग हैं ख़सारा उठाने वाले। (69)

क्या इन तक उन लोगों की ख़बर न आई (न पहुँची) जो इन से पहले थे, कौमे नूह और झाद और समूद, और कौमे इब्राहीम (अ) और मदयन वाले, और वह बस्तियां जो उलट दी गईं, उन के पास उन के रसूल आए वाज़ेह अहकाम ओ दलाइल के साथ, सो अल्लाह ऐसा न था कि उन पर जुल्म करता लेकिन वह अपने ऊपर जुल्म करते थे। (70)

और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें उन में से बाज़, बाज़ के (एक दूसरे के) रफ़ीक़ हैं, वह भलाई का हुकम देते हैं और बुराई से रोकते हैं, और वह नमाज़ काइम करते हैं और ज़कात अदा करते हैं, और अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअत करते हैं, वही लोग हैं जिन पर अल्लाह रहम करेगा, वेशक अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (71)

अल्लाह ने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों से जन्नतों का वादा किया है जिन के नीचे नहरें जारी हैं, उन में हमेशा रहेंगे, और सदा बहार बागात में पाकीज़ा मकानात, और अल्लाह की खुशनुदी सब से बड़ी बात है, यह बड़ी कामयावी है। (72)

ऐ नबी (स)! काफ़िरों और मुनाफ़िकों से जिहाद करें और उन पर सख़्ती करें, और उन का ठिकाना जहन्नम है, और वह पलटने की बुरी जगह है। (73)

वह अल्लाह की कस्में खाते हैं कि उन्होंने ने नहीं कहा, हालांकि उन्होंने ने ज़रूर कुफ़ का कलिमा कहा, और अपने इस्लाम (लाने के) बाद उन्होंने ने कुफ़ किया, और उन्होंने ने वह कुछ करने का इरादा किया जिसे कर न सके, और उन्होंने ने बदला न दिया मगर (सिर्फ़ उस बात का) कि अल्लाह और उस के रसूल (स) ने उन्हें अपने फ़ज़ल से ग़नी कर दिया, सो अगर वह तौबा कर लें तो उन के लिए बेहतर होगा, और अगर वह फिर जाएं तो अल्लाह उन्हें दर्दनाक अज़ाब देगा दुनिया में और आख़िरत में, और उन के लिए न होगा ज़मीन में कोई हिमायती और न मददगार। (74)

और उन में से (बाज़ वह है) जिन्होंने ने अल्लाह से अहद किया कि अगर वह हमें अपने फ़ज़ल से दे तो हम ज़रूर सदका देंगे और हम ज़रूर हो जाएंगे सालिहीन (नेकोकारों) में से। (75)

फिर जब उस ने उन्हें अपने फ़ज़ल से दिया तो उन्होंने ने उस में बुख़ल किया और वह फिर गए, वह रूगर्दानी करने वाले हैं। (76)

तो (अल्लाह ने) उस का अन्जाम कार उन के दिलों में निफ़ाक़ रख दिया रोज़े (क़ियामत) तक कि वह उस से मिलेंगे, क्यों कि उन्होंने ने जो अल्लाह से वादा किया था उस के ख़िलाफ़ किया और क्यों कि वह झूट बोलते थे। (77)

क्या वह नहीं जानते? कि अल्लाह उन के भेद और उन की सरगोशियों को जानता है, और यह कि अल्लाह ग़ैब की बातों को ख़ूब जानने वाला है। (78)

वह लोग जो उन मोमिनो पर ऐब लगाते हैं जो खुशी से ख़ैरात करते हैं, और वह लोग जो नहीं पाते मगर अपनी मेहनत (का सिला), वह (मुनाफ़िक़) उन से मज़ाक़ करते हैं, अल्लाह ने उन के मज़ाक़ (का जवाब) दिया। और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (79)

يَأْتِيهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۗ									
उन पर	और सख़्ती करें	और मुनाफ़िक़ीन	काफ़िर (जमा)	जिहाद करें	नबी (स)	ऐ			
وَمَا أُولَهُمْ جَهَنَّمُ ۗ وَبئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٧٣﴾ يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ مَا قَالُوا ۗ									
नहीं उन्होंने ने कहा	अल्लाह की	वह कस्में खाते हैं	73	पलटने की जगह	और बुरी	जहन्नम	और उन का ठिकाना		
وَلَقَدْ قَالُوا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوا بَعْدَ إِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوا									
और कसद किया उन्होंने ने	उन का (अपना) इस्लाम	वाद	और उन्होंने ने कुफ़ किया	कुफ़ का	कलिमा	हालांकि ज़रूर उन्होंने ने कहा			
بِمَا لَمْ يَنَالُوا ۗ وَمَا نَقَمُوا إِلَّا أَنْ أَغْنَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ									
और उस का रसूल	उन्हें ग़नी कर दिया अल्लाह	यह कि	मगर	और उन्होंने ने बदला न दिया	उन्हें न मिली	उस का जो			
مِنْ فَضْلِهِ ۗ فَإِنْ يَتُوبُوا يَكُ خَيْرًا لَهُمْ ۗ وَإِنْ يَتَوَلَّوْا									
वह फिर जाएं	और अगर	उन के लिए	बेहतर	होगा	वह तौबा कर लें	सो अगर	अपना फ़ज़ल	से	
يُعَذِّبُهُمُ اللَّهُ عَذَابًا أَلِيمًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۗ وَمَا لَهُمْ									
उन के लिए	और नहीं	और आख़िरत	दुनिया में	दर्दनाक	अज़ाब	अज़ाब देगा उन्हें अल्लाह			
فِي الْأَرْضِ مِنْ وَّلِيِّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٧٤﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللَّهُ لَئِنْ									
अलबत्ता- अगर	अहद किया अल्लाह से	जो	और उन से	74	कोई मददगार	और न	हिमायती	कोई	ज़मीन में
اٰتٰنَا مِنْ فَضْلِهِ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾									
75	सालिहीन	से	और हम ज़रूर हो जाएंगे	ज़रूर सदका दें हम	अपना फ़ज़ल	से	हमें दे वह		
فَلَمَّا اٰتٰهُمْ مِّنْ فَضْلِهِ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧٦﴾									
76	रूगर्दानी करने वाले हैं	और वह	और फिर गए	उस में	उन्होंने ने बुख़ल किया	अपना फ़ज़ल	से	उस ने दिया उन्हें	फिर जब
فَاعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِيْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى يَوْمٍ يَلْقَوْنَهٗ بِمَا اٰخَلَفُوْا									
उन्होंने ने ख़िलाफ़ किया	क्यों कि	वह उस से मिलेंगे	उस रोज़ तक	उन के दिल	में	निफ़ाक़	तो उस ने उन का अन्जाम कार किया		
اللّٰهِ مَا وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ﴿٧٧﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْا									
वह जानते	क्या नहीं	77	वह झूट बोलते थे	और क्यों कि	उस से उन्होंने ने वादा किया	जो	अल्लाह		
اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ عَلٰمٌ									
ख़ूब जानने वाला	और यह कि अल्लाह	और उन की सरगोशियां	उन के भेद	जानता है	कि अल्लाह				
الْغُيُوْبِ ﴿٧٨﴾ الَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ									
मोमिन (जमा)	से (जो)	खुशी से करते हैं	ऐब लगाते हैं	वह लोग जो	78	ग़ैब की बातें			
فِي الصّٰدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ									
अपनी मेहनत	मगर	जो वह नहीं पाते	और वह लोग जो	और सदका (जमा) ख़ैरात	में				
فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ۗ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٩﴾									
79	दर्दनाक	अज़ाब	और उन के लिए	उन से	अल्लाह ने मज़ाक़ (का जवाब) दिया	उन से	वह मज़ाक़ करते हैं		

إِسْتَعْفِرُوا لَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرُوا لَهُمْ إِنَّ تَسْتَغْفِرُوا لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً									
बार	सत्तर (70)	उन के लिए	आप (स) बख़्शिश मांगें	अगर	उन के लिए	बख़्शिश न मांगें	या	उन के लिए	तू बख़्शिश मांगें
فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ									
और उस का रसूल	अल्लाह से	उन्होंने ने कुफ़ किया	क्योंकि वह	यह	उन को	बख़्शेगा अल्लाह	तो	हरगिज़ न	
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ (80) فَرِحَ الْمُخَلَّفُونَ بِمَقْعَدِهِمْ									
अपने बैठ रहने से	पीछे रहने वाले	खुश हुए	80	नाफ़रमान (जमा)	लोग	हिदायत नहीं देता	और	अल्लाह	
خَلَفَ رَسُولُ اللَّهِ وَكَرِهُوا أَنْ يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ									
और अपनी जानें	अपने मालों से	वह जिहाद करें	कि	और उन्होंने ने नापसन्द किया	अल्लाह का रसूल	पीछे			
فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَالُوا لَا تَنْفِرُوا فِي الْحَرِّ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ أَشَدُّ									
सब से ज़ियादा	जहनन्म की आग	आप कह दें	गर्मी	में	ना कूच करो	और उन्होंने ने कहा	अल्लाह की राह	में	
حَرًّا لَوْ كَانُوا يَفْقَهُونَ (81) فَلْيُضْحَكُوا قَلِيلًا وَلْيَبْكُوا كَثِيرًا									
ज़ियादा	और रोएं	थोड़ा	चाहिए वह हसें	81	वह समझ रखते	काश	गर्मी में		
جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ (82) فَإِنْ رَجَعَكَ اللَّهُ إِلَى طَائِفَةٍ									
किसी गिरोह	तरफ़	अल्लाह आप को वापस ले जाए	फिर अगर	82	वह कमाते थे	उस का जो	वदला		
مِّنْهُمْ فَاسْتَأْذِنُواكَ لِلْخُرُوجِ فَقُلْ لَنْ تَخْرُجُوا مَعِيَ أَبَدًا									
कभी भी	मेरे साथ	तुम हरगिज़ न निकलोगे	तो आप कह दें	निकलने के लिए	फिर वह आप (स) से इजाज़त मांगें	उन से			
وَلَنْ تُقَاتِلُوا مَعِيَ عَدُوًّا إِنَّكُمْ رَضِيتُمْ بِالْقُعُودِ أَوَّلَ مَرَّةٍ									
बार	पहली	बैठ रहने को	तुम ने पसन्द किया	वेशक तुम	दुश्मन	मेरे साथ	और हरगिज़ न लड़ोगे		
فَأَقْعُدُوا مَعَ الْخُلَفَاءِ (83) وَلَا تُصَلِّ عَلَى أَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّتَّ									
मर गया	उन से	कोई	पर	और न पढ़ना नमाज़	83	पीछे रह जाने वाले	साथ	सो तुम बैठो	
أَبَدًا وَلَا تَقُمْ عَلَى قَبْرِهِ إِنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَمَاتُوا									
और वह मरे	और उस का रसूल	अल्लाह से	उन्होंने ने कुफ़ किया	वेशक वह	उस की क़ब्र	पर	और न खड़े होना	कभी	
وَهُمْ فَسِقُونَ (84) وَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا يُرِيدُ									
चाहता है	सिर्फ़	और उन की औलाद	उन के माल	और आप (स) को तअज़्जुब में न डालें	84	नाफ़रमान	जब कि वह		
اللَّهُ أَنْ يُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ (85)									
85	काफ़िर हों	जब कि वह	उन की जानें	और निकलें	दुनिया में	उस से	उन्हें अज़ाब दे	कि	अल्लाह
وَإِذَا أَنْزَلْنَا سُورَةً مِنْ أَمْرِنَا بِاللَّهِ وَجَاهِدُوا مَعَ رَسُولِهِ									
उस का रसूल	साथ	और जिहाद करो	अल्लाह पर	ईमान लाओ	कि	कोई सूरात	नाज़िल की जाती है	और जब	
اسْتَأْذِنَكَ أَوْلُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوا ذَرْنَا مَعَ الْقَاعِدِينَ (86)									
86	बैठ रह जाने वाले	साथ	हम हो जाएं	छोड़ दे हमें	और कहते हैं	उन से	मक़दूर वाले (मालदार)	आप से इजाज़त चाहते हैं	

आप (स) उन के लिए बख़्शिश मांगें या उन के लिए बख़्शिश न मांगें (बराबर है), अगर आप (स) उन के लिए सत्तर (70) बार (भी) बख़्शिश मांगें तो अल्लाह उन्हें हरगिज़ न बख़्शेगा, यह इस लिए कि उन्होंने ने अल्लाह और उस के रसूल (स) से कुफ़ किया, और अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (80) पीछे रह जाने वाले अपने बैठ रहने से खुश हुए, रसूल (स) (तबूक के लिए निकलने) के बाद, और उन्होंने ने नापसन्द किया कि वह जिहाद करें अपने मालों से और अपनी जानों से अल्लाह कि राह में, और उन्होंने ने कहा गर्मी में कूच न करो, आप (स) कह दें जहनन्म की आग गर्मी में सब से ज़ियादा है, काश वह समझ सकते। (81) चाहिए कि वह हसें थोड़ा और रोएं ज़ियादा, यह उस का वदला है जो वह कमाते थे। (82) फिर अगर अल्लाह आप को किसी गिरोह कि तरफ़ वापस ले जाए उन में से, फिर वह आप (स) से (जिहाद के लिए) निकलने की इजाज़त मांगें तो आप (स) कह दें: तुम मेरे साथ कहीं भी हरगिज़ न निकलोगे, और हरगिज़ न लड़ोगे दुश्मन से मेरे साथ (मिल कर), वेशक तुम ने पहली बार बैठ रहने को पसन्द किया, सो तुम पीछे रहजाने वालों के साथ बैठो। (83) उन में से कोई मर जाए तो कभी उस पर नमाज़े (जनाज़ा) न पढ़ना और न उस कि क़ब्र पर खड़े होना, वेशक उन्होंने ने अल्लाह और उस के रसूल (स) से कुफ़ किया और वह (उस हाल में) मरे जब कि वह नाफ़रमान थे। (84) और आप (स) को तअज़्जुब में न डालें उन के माल और उन की औलाद, अल्लाह तो सिर्फ़ यह चाहता है कि उन्हें उस से दुनिया में अज़ाब दे और (उस हाल में) उन की जानें निकलें जब कि वह काफ़िर हों। (85) और जब कोई सूरात नाज़िल की जाती है कि अल्लाह पर ईमान लाओ और उस के रसूल (स) के साथ (मिल कर) जिहाद करो तो उन में से मक़दूर वाले आप से इजाज़त चाहते हैं, और कहते हैं हमें छोड़ दे कि हम बैठ रह जाने वालों के साथ हो जाएं। (86)

10  
11

वह राज़ी हुए कि पीछे रह जाने वाली औरतों के साथ हो जाएं, और मुहर लग गई उन के दिलों पर, सो वह समझते नहीं। (87)

लेकिन रसूल (स) और वह लोग जो उन के साथ ईमान लाए उन्होंने ने अपने मालों से और अपनी जानों से जिहाद किया, और उन्हीं लोगों के लिए भलाइयां हैं, और यही लोग फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) पाने वाले हैं। (88)

अल्लाह ने उन के लिए बागात तैयार किए हैं, उन के नीचे नहरे जारी हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है। (89)

और देहातियों में से बहाना बनाने वाले आए कि उन को रूखसत दी जाए, और वह लोग बैठ रहे जिन्होंने अल्लाह और उस के रसूल (स) से झूट बोला, अ़नक़रीब पहुँचेगा उन लोगों को दर्दनाक अ़ज़ाब जिन्होंने ने कुफ़ किया। (90)

नहीं कोई हर्ज ज़ईफ़ो पर और न मरीज़ों पर, न उन लोगों पर जो नहीं पाते कि वह खर्च करें, जब कि वह ख़ैर खाह हों अल्लाह और उस के रसूल के, नेकी करने वालों पर कोई इल्ज़ाम नहीं, और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (91)

और न उन लोगों पर (कोई हर्ज है) कि जब आप (स) के पास आए कि आप उन्हें सवारी दें, तो आप (स) ने कहा कि (कोई सवारी) नहीं कि उस पर तुम्हें सवार करूँ, तो वह (उस हाल में) लौटे और ग़म से उन की आँखों से आंसू बह रहे थे कि वह कुछ नहीं पाते जो वह खर्च कर सकें। (92)

इल्ज़ाम सिर्फ़ उन लोगों पर है जो आप (स) से इज़ाज़त चाहते हैं और वह ग़नी (माल दार) हैं, वह उस से खुश हुए कि वह रह जाएं पीछे रह जाने वाली औरतों के साथ, और अल्लाह ने उन के दिलों पर मुहर लगा दी, सो वह कुछ नहीं जानते। (93)

رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطَبَعَ عَلَى قُلُوبِهِمْ							
उन के दिल	पर	और मुहर लग गई	पीछे रह जाने वाली औरतें	साथ	हो जाएं	कि वह	वह राज़ी हुए
فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ﴿٨٧﴾ لَكِنَّ الرَّسُولَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ							
उस के साथ	ईमान लाए	और वह लोग जो	रसूल	लेकिन	87	समझते नहीं	सो वह
جَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ وَأَوْلِيَّكَ لَهُمُ الْخَيْرُ							
भलाइयां	उन के लिए	और यही लोग	और अपनी जानें	अपने मालों से	उन्होंने ने जिहाद किया		
وَأَوْلِيَّكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٨٨﴾ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ جَنَّتٍ تَجْرِي							
जारी है	बागात	उन के लिए	अल्लाह ने तैयार किया	88	फ़लाह पाने वाले	वह	और यही लोग
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٨٩﴾							
89	बड़ी	कामयाबी	यह	उन में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे
وَجَاءَ الْمُعَذِّرُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِينَ							
वह लोग जो	बैठ रहे	उन को	कि रूखसत दी जाए	देहाती (जमा)	से	बहाना बनाने वाले	और आए
كَذَبُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ سَيُصِيبُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ							
उन से	उन्होंने ने कुफ़ किया	वह लोग जो	अ़नक़रीब पहुँचेगा	और उस का रसूल	अल्लाह	झूट बोला	
عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٩٠﴾ لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضَى وَلَا							
और न	मरीज़ (जमा)	पर	और न	ज़ईफ़ (जमा)	पर	नहीं	90 दर्दनाक अ़ज़ाब
عَلَى الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يُنْفِقُونَ حَرَجٌ إِذَا نَصَحُوا لِلَّهِ							
अल्लाह के लिए	वह ख़ैर खाह हों	जब	कोई हर्ज	वह खर्च करें	जो	नहीं पाते	वह लोग जो पर
وَرَسُولِهِ مَا عَلَى الْمُحْسِنِينَ مِنْ سَبِيلٍ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٩١﴾							
91	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	और अल्लाह	कोई राह (इल्ज़ाम)	नेकी करने वाले	पर	नहीं और उस के रसूल
وَلَا عَلَى الَّذِينَ إِذَا مَا أَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَا أَجِدُ							
मैं नहीं पाता	आप ने कहा	ता कि आप (स) उन्हें सवारी दें	आप के पास आए	जब	वह लोग जो	पर	और न
مَا أَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ تَوَلَّوْا وَأَعْيُنُهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ							
आंसू (जमा)	से	वह रहे थे	और उन की आँखें	वह लौटे	उस पर	तुम्हें सवार करूँ	
حَزَنًا إِلَّا يَجِدُوا مَا يُنْفِقُونَ ﴿٩٢﴾ إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ							
वह लोग जो	पर	रास्ता (इल्ज़ाम)	इस के सिवा नहीं (सिर्फ़)	92	वह खर्च करें	जो	कि वह नहीं पाते ग़म से
يَسْتَأْذِنُونَكَ وَهُمْ أَغْيَاءٌ رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا							
वह हो जाएं	कि	वह खुश हुए	ग़नी (जमा)	और वह	आप (स) से इज़ाज़त चाहते हैं		
مَعَ الْخَوَالِفِ وَطَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٩٣﴾							
93	नहीं जानते	सो वह	उन के दिल	पर	और अल्लाह ने मुहर लगादी	पीछे रह जाने वाली औरतें	साथ

ع ۱۱  
۱۲

<b>يَعْتَذِرُونَ إِلَيْكُمْ إِذَا رَجَعْتُمْ إِلَيْهِمْ</b>								
उन की तरफ़	तुम लौट कर जाओगे	जब	तुम्हारे पास	उज़र लाएंगे				
<b>قُلْ لَا تَعْتَذِرُوا لَنْ نُؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَأْنَا اللَّهُ مِنْ خَبَارِكُمْ</b>								
तुम्हारी सब ख़बरें (हालात)	अल्लाह	हमें बता चुका है	तुम्हारा	हरगिज़ हम यकीन न करेंगे	उज़र न करो	आप (स) कह दें		
<b>وَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ</b>								
पोशीदा	जानने वाले	तरफ़	तुम लौटाए जाओगे	फिर	और उस का रसूल	तुम्हारे अमल	अल्लाह	और अभी देखेगा
<b>وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٤﴾ سَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ</b>								
अल्लाह की	अब कस्में खाएंगे	94	तुम करते थे	वह जो	फिर वह तुम्हें जता देगा	और ज़ाहिर		
<b>لَكُمْ إِذَا انْقَلَبْتُمْ إِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوا عَنْهُمْ فَأَعْرِضُوا عَنْهُمْ</b>								
उन से	सो तुम मुँह मोड़ लो	उन से	ताकि तुम दरगुज़र करो	उन की तरफ़	वापस जाओगे तुम	जब	तुम्हारे आगे	
<b>إِنَّهُمْ رَجَسٌ وَمَا لَهُمْ جَهَنَّمَ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٩٥﴾</b>								
95	वह कमाते	थे	उस का जो	बदला	जहन्नम	और उन का ठिकाना	पलीद	वेशक वह
<b>يَحْلِفُونَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ</b>								
तो वेशक अल्लाह	उन से	तुम राज़ी हो जाओ	सो अगर	उन से	ताकि तुम राज़ी हो जाओ	तुम्हारे आगे	वह कस्में खाते हैं	
<b>لَا يَرْضَىٰ عَنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٩٦﴾ الْأَعْرَابُ أَشَدُّ كُفْرًا</b>								
कुफ़्र में	बहुत सख़्त	देहाती	96	नाफ़रमान	लोग	से	राज़ी नहीं होता	
<b>وَنِفَاقًا وَأَجْدَرُ أَلَّا يَعْلَمُوا حُدُودَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ</b>								
पर	अल्लाह	नाज़िल किए	जो	एहकाम	कि वह न जानें	और ज़ियादा लाइक	और निफ़ाक़ में	
<b>رَسُولِهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِمْ حَكِيمٌ ﴿٩٧﴾ وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يَتَّخِذُ</b>								
लेते हैं (समझते हैं)	जो	देहाती	और से (बाज़)	97	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	अपना रसूल (स)
<b>مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَيَتَرَبَّصُ بِكُمْ الدَّوَابِرَ عَلَيْهِمْ</b>								
उन पर	गर्दिशें	तुम्हारे लिए	और इन्तिज़ार करते हैं	तावान	जो वह खर्च करते हैं			
<b>دَابِرَةُ السَّوْءِ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٩٨﴾ وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ</b>								
जो	देहाती	और से (बाज़)	98	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	बुरी	गर्दिश
<b>يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرْبًا</b>								
नज़्दीकियां	जो वह खर्च करें	और समझते हैं	और आख़िरत का दिन	अल्लाह पर	ईमान रखते हैं			
<b>عِنْدَ اللَّهِ وَصَلَوَاتُ الرَّسُولِ أَلَا إِنَّهَا قُرْبَةٌ لَهُمْ</b>								
उन के लिए	नज़्दीकी	यकीनन वह	हां हां	रसूल	और दुआएं	अल्लाह से		
<b>سَيَدْخُلُهُمُ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٩٩﴾</b>								
99	निहायत मेहरबान	बख़शने वाला	वेशक अल्लाह	अपनी रहमत	में	अल्लाह	जल्द दाख़िल करेगा उन्हें	

जब तुम उन की तरफ़ लौट कर जाओगे तो वह तुम्हारे पास उज़र लाएंगे। कह दो कि उज़र न करो, हम हरगिज़ यकीन न करेंगे तुम्हारा, अल्लाह हमें तुम्हारी सब ख़बरें बता चुका है, और अभी अल्लाह तुम्हारे अमल देखेगा और उस का रसूल (स), फिर तुम पोशीदा और ज़ाहिर जानने वाले (अल्लाह) की तरफ़ लौटाए जाओगे, फिर वह तुम्हें जता देगा तुम जो करते थे। (94)

जब तुम उन की तरफ़ वापस जाओगे तब तुम्हारे आगे अल्लाह की कस्में खाएंगे ताकि तुम उन से दरगुज़र करो, सो तुम उन से मुँह मोड़ लो, वेशक वह पलीद हैं, और उन का ठिकाना जहन्नम है, उस का बदला जो वह कमाते थे। (95)

वह तुम्हारे आगे कस्में खाते हैं ताकि तुम उन से राज़ी हो जाओ, सो अगर तुम उन से राज़ी (भी) हो जाओ तो वेशक अल्लाह राज़ी नहीं होता नाफ़रमान लोगों से। (96)

देहाती कुफ़्र और निफ़ाक़ में बहुत सख़्त हैं, और ज़ियादा इमकानात हैं कि वह न जानें जो एहकाम अल्लाह ने अपने रसूल (स) पर नाज़िल किए, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (97)

और बाज़ देहाती हैं जो (अल्लाह की राह में) जो खर्च करते हैं उसे तावान समझते हैं और तुम्हारे लिए गर्दिशों का इन्तिज़ार करते हैं, उन्हीं पर है बुरी गर्दिश, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (98)

और बाज़ देहाती हैं जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं और जो वह खर्च करते हैं उसे अल्लाह से नज़्दीकियों और रसूल (स) की दुआएं (लेने का ज़रीआ) समझते हैं, हां हां! यकीनन वह नज़्दीकी का (ज़रीआ) है उन के लिए, अल्लाह जल्द उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल करेगा, वेशक अल्लाह बख़शने वाला निहायत मेहरबान है। (99)

और सब से पहले (ईमान और इस्लाम में) सबकत करने वाले मुहाजरीन और अन्सार में से, और जिन्होंने ने नेकी के साथ पैरवी की, अल्लाह उन से राज़ी हुआ, और वह उस से राज़ी हुए, और उस ने उन के लिए बागात तैयार किए हैं जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा हमेशा रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है। (100)

और जो देहाती तुम्हारे इर्द गिर्द हैं उन में से बाज़ मुनाफ़िक़ है, और मदीने वालों में से बाज़ निफ़ाक़ पर अड़े हुए हैं, तुम उन्हें नहीं जानते, हम उन्हें जानते हैं और हम जल्द उन्हें दो बार अज़ाब देंगे, फिर वह अज़ाबे अज़ीम की तरफ़ लौटाए जाएंगे। (101)

और कुछ और हैं जिन्होंने ने अपने गुनाहों का एतराफ़ किया, उन्होंने ने एक अच्छा और दूसरा बुरा अमल मिला लिया, करीब है कि अल्लाह उन्हें माफ़ करदे, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (102)

आप (स) उन के मालों में से ज़कात ले लें, आप (स) उन्हें पाक और साफ़ कर दें उस से, और उन पर दुआए (ख़ैर) करें, बेशक आप(स) की दुआ उन के लिए (बाइसे) सुकून है और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (103) क्या उन्हें इल्म नहीं कि अल्लाह ही अपने बन्दों की तौबा कुबूल करता है, और कुबूल करता है सदक़ात और यह कि अल्लाह ही तौबा कुबूल करने वाला, निहायत मेहरबान है। (104)

और आप (स) कहें तुम अमल किए जाओ, पस अब देखेगा अल्लाह और उस का रसूल (स) और मोमिन तुम्हारे अमल, और तुम जल्द पोशीदा और ज़ाहिर जानने वाले (अल्लाह) की तरफ़ लौटाए जाओगे, सो वह तुम्हें जता देगा जो तुम करते थे। (105)

और कुछ और हैं वह अल्लाह के हुक्म पर मौकूफ़ रखे गए हैं, ख़्वाह वह उन्हें अज़ाब दे और ख़्वाह उन की तौबा कुबूल कर ले, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (106)

وَالسَّبِقُونَ الْأَوْلُونَ مِنَ الْمُهَجْرِينَ وَالْأَنْصَارِ وَالَّذِينَ							
और जिन लोगों	और अन्सार	मुहाजरीन	से	सब से पहले	और सबकत करने वाले		
اتَّبَعُوهُمْ بِإِحْسَانٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ							
उन के लिए	और तैयार किया उस ने	उस से	और वह राज़ी हुए	राज़ी हुआ अल्लाह उन से	नेकी के साथ	उस की पैरवी की	
جَنَّتِ تَجْرِي تَحْتَهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ذَلِكَ							
यह	हमेशा	उन में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	बहती है	बागात
الْفَوْزِ الْعَظِيمِ ﴿١٠٠﴾ وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ مُنْفِقُونَ ۗ وَمِنْ							
और से (बाज़)	मुनाफ़िक़ (जमा)	देहाती	से बाज़	तुम्हारे इर्द गिर्द	और उन में जो	100	कामयाबी बड़ी
أَهْلِ الْمَدِينَةِ مَرَدُوا عَلَى النِّفَاقِ ۗ لَا تَعْلَمُهُمْ نَحْنُ							
हम	तुम नहीं जानते उन को	निफ़ाक़	पर	अड़े हुए हैं	मदीने वाले		
نَعْلَمُهُمْ سَنُعَذِّبُهُمْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّونَ إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ ﴿١٠١﴾							
101	अज़ीम	अज़ाब	तरफ़	वह लौटाए जाएंगे	फिर	दो बार	जल्द हम उन्हें अज़ाब देंगे
وَأَخْرُوجُونَ اعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ خَلَطُوا عَمَلًا صَالِحًا وَآخَرَ سَيِّئًا ۗ							
बुरा	और दूसरा	एक अमल अच्छा	उन्होंने ने मिलाया	अपने गुनाहों का	उन्होंने ने एतराफ़ किया	और कुछ और	
عَسَىٰ اللَّهُ أَنْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٠٢﴾ خُذْ							
ले लें आप (स)	102	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	माफ़ कर दे उन्हें	कि	अल्लाह करीब है
مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِمْ بِهَا وَصَلَّ عَلَيْهِمْ ۗ							
उन पर	और दुआ करो	उस से	और साफ़ कर दो	तुम पाक कर दो	ज़कात	उनके माल (जमा)	से
إِنَّ صَلَاتَكَ سَكَنٌ لَهُمْ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٠٣﴾ أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ							
कि	क्या उन्हें इल्म नहीं	103	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	उन के लिए	सुकून आप (स) की दुआ
اللَّهُ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَأْخُذُ الصَّدَقَاتِ							
सदक़ात	और कुबूल करता है	अपने बन्दे	से-की	तौबा	कुबूल करता है	वह	अल्लाह
وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٤﴾ وَقُلِ اعْمَلُوا فَسَيَرَىٰ اللَّهُ							
अल्लाह	पस अब देखेगा	तुम किए जाओ अमल	और कह दें आप (स)	104	निहायत मेहरबान	तौबा कुबूल करने वाला	वह और यह कि अल्लाह
عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ وَالْمُؤْمِنُونَ وَسَيُرَدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ							
जानने वाला पोशीदा	तरफ़	और जल्द लैटाए जाओगे	और मोमिन (जमा)	और उसका रसूल (स)	तुम्हारे अमल		
وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٠٥﴾ وَأَخْرُوجُونَ مُرْجُونَ							
मौकूफ़ रखे गए	और कुछ और	105	तुम करते थे	वह जो	सो वह तुम्हें जता देगा	और ज़ाहिर	
لِأَمْرِ اللَّهِ ۗ إِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَإِمَّا يَتُوبُ عَلَيْهِمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٠٦﴾							
106	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	तौबा कुबूल कर ले उन की	और ख़्वाह	वह उन्हें अज़ाब दे	ख़्वाह अल्लाह के हुक्म पर

عند التثمين ۱۲  
وقف منزل

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَكُفْرًا وَتَفْرِيقًا بَيْنَ						
दरमियान	और फूट डालने को	और कुफ्र के लिए	नुक्सान पहुँचाने को	मस्जिद	उन्होंने ने बनाई	और वह लोग जो
الْمُؤْمِنِينَ وَإِزْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ مِنْ قَبْلُ						
पहले	से	और उस का रसूल (स)	अल्लाह	उस ने जंग की	उस के वासते जो	और घात की जगह बनाने के लिए
وَلِيَحْلِفُنَّ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا الْحُسْنَىٰ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ						
वह यकीनन	गवाही देता है	और अल्लाह	भलाई	मगर (सिर्फ)	हम ने चाहा	नहीं और वह अलबल्ला कस्में खाएंगे
لَكَذِبُونَ ﴿١٠٧﴾ لَا تَقُمْ فِيهِ أَبَدًا لَمَسْجِدٍ أُسِّسَ عَلَى التَّقْوَىٰ						
तक्वा	पर	बुन्याद रखी गई	वेशक वह मस्जिद	कभी	उस में	आप (स) न खड़े होना
مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَنْ تَقُومَ فِيهِ فِيهِ رِجَالٌ يُحِبُّونَ أَنْ						
कि	वह चाहते हैं	ऐसे लोग	उस में	आप (स) खड़े हों उस में	कि	ज़ियादा लाइक
يَتَطَهَّرُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُطَهَّرِينَ ﴿١٠٨﴾ أَفَمَنْ أُسِّسَ بُنْيَانَهُ						
अपनी इमारत	बुन्याद रखी	सो क्या वह जो	108	पाक रहने वाले	महबूब रखता है	और अल्लाह वह पाक रहें
عَلَى تَقْوَىٰ مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَمْ مَنْ أُسِّسَ بُنْيَانَهُ						
अपनी इमारत	बुन्याद रखी	जो - जिस	या	बेहतर	और खुशनुदी	तक्वा (खौफ) पर
عَلَى شَفَا جُرْفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ وَاللَّهُ						
और अल्लाह	दोज़ख़ की आग	में	उस को लेकर	सो गिर पड़ी	गिरने वाला	खाई किनारा पर
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٩﴾ لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا						
बुन्याद रखी	जो कि	उन की इमारत	हमेशा रहेगी	109	ज़ालिम (जमा)	लोग हिदायत नहीं देता
رِيْبَةً فِي قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَنْ تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١١٠﴾						
110	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	उन के दिल	यह कि टुकड़े हो जाएं	मगर उन के दिल में शक
إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ						
और उन के माल	उन की जानें	मोमिन (जमा)	से	खरीद लिए	वेशक अल्लाह	
بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ						
सो वह मारते हैं	अल्लाह की राह	में	वह लड़ते हैं	जन्नत	उन के लिए	उस के बदले
وَيُقْتَلُونَ وَعَدًّا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ						
और इंजील	तौरात में	सच्चा	उस पर	वादा	और मारे जाते हैं	
وَالْقُرْآنِ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ فَاسْتَبْشِرُوا						
पस खुशियां मनाओ	अल्लाह से	अपना वादा	ज़ियादा पूरा करने वाला	और कौन	और कुरआन	
بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١١﴾						
111	अज़ीम	कामयाबी	वह	और यह	उस से तुम ने सौदा किया	जो कि सो अपने सौदे पर

और वह लोग जिन्होंने ने मस्जिद ज़रार (नुक्सान पहुँचाने के लिए) बनाई और कुफ्र करने के लिए, और मोमिनों के दरमियान फूट डालने के लिए और उस के वासते घात की जगह बनाने के लिए जिस ने अल्लाह और उस के रसूल (स) से जंग की उस से पहले, और वह अलबल्ला कस्में खाएंगे कि हम ने सिर्फ भलाई चाही, और अल्लाह गवाही देता है वह यकीनन झूटे हैं। (107)

आप (स) उस में कभी न खड़े होना, बेशक वह मस्जिद जिस की बुन्याद पहले दिन से तक्वे पर रखी गई है ज़ियादा लाइक है कि आप (स) उस में खड़े हों, उस में ऐसे लोग हैं जो चाहते हैं कि वह पाक रहें, और अल्लाह महबूब रखता है पाक रहने वालों को। (108)

सो क्या वह जिस ने अपनी इमारत की बुन्याद अल्लाह के खौफ और (उस की) खुशनुदी पर रखी, वह बेहतर है? या वह जिस ने अपनी इमारत की बुन्याद गिरने वाली खाई (गढ़े) के किनारे पर रखी? सो वह उसको लेकर दोज़ख़ की आग में गिर पड़ी, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (109)

वह इमारत जिस की उन्होंने ने बुन्याद रखी है हमेशा शक डालती रहेगी उन के दिलों में, मगर यह कि उन के दिल टुकड़े टुकड़े हो जाएं, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (110)

वेशक अल्लाह ने खरीद ली मोमिनों से उन की जानें और उन के माल, उस के बदले कि उन के लिए जन्नत है, वह लड़ते हैं अल्लाह की राह में, सो वह मारते हैं और मारे (भी) जाते हैं, उस पर सच्चा वादा है तौरात में, और इंजील और कुरआन में, और अल्लाह से ज़ियादा कौन अपना वादा पूरा करने वाला है? पस अपने उस सौदे पर खुशियां मनाओ जो तुम ने उस से सौदा किया है, और यह अज़ीम कामयाबी है। (111)

तौबा करने वाले, इबादत करने वाले, हम्द ओ सना करने वाले, (अल्लाह की राहे में) सफ़र करने वाले, रुकूअ करने वाले, सिज्दा करने वाले, नेकी का हुक्म देने वाले, और बुराई से रोकने वाले, और अल्लाह की (काइम करदा) हुदूद की हिफ़ाज़त करने वाले, और मोमिनों को खुशख़बरी दो। (112) नबी (स) के लिए और मोमिनों के लिए (शायी) नहीं कि वह मुशर्रिकों के लिए बख़्शिश चाहें, अगरचे वह उन के करावतदार हों, उस के बाद जब कि उन पर ज़ाहिर हो गया कि वह दोज़ख़ वाले हैं। (113) और इब्राहीम (अ) का अपने बाप के लिए बख़्शिश चाहना न था मगर एक वादे के सबव जो वह उस (बाप) से कर चुके थे, फिर जब उन पर ज़ाहिर हो गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो वह उस से बेज़ार हो गए, बेशक इब्राहीम (अ) नर्म दिल बुर्दवार थे। (114) और अल्लाह ऐसा नहीं है कि किसी को उस के बाद गुमराह करे, जबकि उस ने उन्हें हिदायत दे दी जब तक उन पर वाज़ेह न कर दे जिस से वह परहेज़ करें, बेशक अल्लाह हर शै का जानने वाला है। (115) बेशक अल्लाह ही के लिए है वादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की, वह ज़िन्दगी देता है और (वही) मारता है, और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा कोई हीमायती है और न मददगार। (116) अलबत्ता तवज्जुह फ़रमाई अल्लाह ने नबी (स) पर, और मुहाजरीन ओ अनुसार पर, वह जिन्होंने तंगी की घड़ी में उस की पैरवी की, उस के बाद जबकि करीब था कि उन में से एक फ़रीक़ के दिल फिर जाएं, फिर वह उन पर मुतवज्जुह हुआ, बेशक वह उन पर इन्तिहाई शफ़ीक़, निहायत मेहरवान है। (117)

التَّائِبُونَ الْعَبِدُونَ الْحَمِيدُونَ السَّاجِدُونَ الرُّكُوعُونَ					
रुकूअ करने वाले	सफ़र करने वाले	हम्द ओ सना करने वाले	इबादत करने वाले	तौबा करने वाले	
السَّجِدُونَ الْأَمْرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ					
बुराई	से	और रोकने वाले	नेकी का	हुक्म देने वाले	सिज्दा करने वाले
وَالْحَافِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٢﴾ مَا كَانَ					
नहीं है	112	मोमिन (जमा)	और खुशख़बरी दो	अल्लाह की हुदूद की	और हिफ़ाज़त करने वाले
لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ					
मुशर्रिकों के लिए		वह बख़्शिश चाहें	कि	और जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	नबी के लिए
وَلَوْ كَانُوا أَوْلَىٰ قُرْبَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ					
कि वह	उन पर	जब ज़ाहिर हो गया	उस के बाद	करावतदार	वह हों
أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿١١٣﴾ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ					
अपने बाप के लिए	इब्राहीम (अ)	बख़्शिश चाहना	और न था	113	दोज़ख़ वाले
إِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَعَدَهَا إِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهَا أَنَّهُ					
कि वह	उस पर	ज़ाहिर हो गया	फिर जब	उस से	जो उस ने वादा किया
عَدُوٌّ لِلَّهِ تَبَرًّا مِنْهُ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لِأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ﴿١١٤﴾ وَمَا كَانَ اللَّهُ					
अल्लाह	और नहीं है	114	बुर्दवार	नर्म दिल	इब्राहीम (अ)
لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَهُمْ حَتَّىٰ يُبَيِّنَ لَهُمْ					
उन पर	वाज़ेह करदे	जब तक	जब उन्हें हिदायत दे दी	वाद	कोई क़ौम
مَا يَتَّقُونَ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾ إِنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ					
वादशाहत	उस के लिए	बेशक अल्लाह	115	जानने वाला	हर शै का
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَمَا لَكُمْ					
और तुम्हारे लिए नहीं		और वह मारता है	वही ज़िन्दगी देता है	और ज़मीन	आस्मानों
مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيِّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿١١٦﴾ لَقَدْ تَابَ اللَّهُ عَلَىٰ					
पर	अल्लाह	अलबत्ता तवज्जुह फ़रमाई	116	और न मददगार	कोई हिमायती
النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي					
में	उस की पैरवी की	वह जिन्होंने ने	और अनुसार	और मुहाजरीन	नबी (स)
سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيغُ قُلُوبَ فَرِيقٍ					
एक फ़रीक़	दिल (जमा)	फिर जाएं	जब करीब था	उस के बाद	तंगी
مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ إِنَّهُ بِهِمْ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿١١٧﴾					
117	निहायत मेहरवान	इन्तिहाई शफ़ीक़	उन पर	बेशक वह	उन पर



وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِينَ خَلَفُوا حَتَّىٰ إِذَا صَاقَتْ عَلَيْهِمُ							
और पर	वह तीन	वह जो	पीछे रखा गया	यहां तक कि	जब	तंग होगई	उन पर
الْأَرْضِ بِمَا رَحِبَتْ وَصَاقَتْ عَلَيْهِمُ أَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوا أَنْ							
ज़मीन	बावजूद कुशादगी	और वह तंग हो गई	उन पर	उन की जानें	और उन्होंने ने जान लिया	कि	
لَا مَلْجَأَ مِنَ اللَّهِ إِلَّا إِلَيْهِ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوا							
नहीं पनाह	से	अल्लाह	मगर	उस की तरफ़	फिर	वह मुतबज्जुह हुआ उन पर	ताकि वह तौबा करें
إِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١١٨﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ							
बेशक अल्लाह	वह	तौबा कुबूल करने वाला	निहायत मेहरवान	118	ऐ	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	डरो अल्लाह से
وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ ﴿١١٩﴾ مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ							
और हो जाओ	साथ	सच्चे लोग	119	न था	मदीने वालों को	और जो	
حَوْلَهُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ أَنْ يَتَخَلَّفُوا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ							
उन के इर्द गिर्द	देहातियों में से	कि वह पीछे रहजाते	से	अल्लाह के रसूल (स)			
وَلَا يَرْغَبُوا بِأَنْفُسِهِمْ عَنْ نَفْسِهِ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ لَا يُصِيبُهُمْ							
और यह कि ज़ियादा चाहें वह	अपनी जानों को	से	उन की जान	यह	इस लिए कि वह	नहीं पहुँचती उन को	
ظَمًا وَلَا نَصَبٌ وَلَا مَخْمَصَةٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَطْئُونَ							
कोई पयास	और न कोई मुशक्कत	और न	कोई भूख	में	अल्लाह की राह	और न वह कदम रखते हैं	
مَوْطًا يَغِيظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُونَ مِنْ عَدُوِّ نِيْلًا إِلَّا							
ऐसा कदम	गुस्सा हों	काफ़िर (जमा)	और न वह छीनते हैं	से	दुश्मन	कोई चीज़	मगर
كُتِبَ لَهُمْ بِهِ عَمَلٌ صَالِحٌ إِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٢٠﴾							
लिखा जाता है उन के लिए	उस से	नेक अमल	बेशक अल्लाह	ज़ाया नहीं करता	अजर	नेकोकार (जमा)	120
وَلَا يُنْفِقُونَ نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً وَلَا يَقْطَعُونَ							
और न	वह खर्च करते हैं	खर्च	छोटा	और न बड़ा	और न तै करते हैं		
وَأَدْيَا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا							
कोई वादी (मैदान)	मगर	लिखा जाता है उन के लिए	ताकि जज़ा दे उन्हें	अल्लाह	बेहतरीन	जो	
كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢١﴾ وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنْفِرُوا كَافَّةً فَلَوْلَا نَفَرَ							
वह करते थे (उन के आमाल)	121	और नहीं है	मोमिन (जमा)	कि वह कूच करें	सब के सब	पस क्यों न कूच करें	
مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَائِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ							
से	हर गिरोह	उन से (उन की)	एक जमाअत	ताकि वह समझ हसिल करें	दीन में		
وَلِيُنذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ﴿١٢٢﴾							
और ताकि वह डर सुनाएं	अपनी कौम	जब	वह लौटें	उन की तरफ़	ताकि वह (अजब नहीं)	बचते रहें	122

ऐ मोमिनों! अपने नज्दीक के काफिरों से लड़ो, और चाहिए कि वह तुम्हारे अन्दर पाएं सख्ती, और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है। (123)

और जब कोई सूरात नाज़िल की जाती है तो उन में से बाज़ कहते हैं उस ने तुम में से किस का ईमान ज़ियादा कर दिया है? सो जो लोग ईमान लाए हैं उस ने ज़ियादा कर दिया है उन का ईमान, और वह खुशियां मनाते हैं, (124)

और वह लोग जिन के दिलों में बीमारी है, उस ने ज़ियादा कर दी उन की गन्दगी पर गन्दगी, और वह मरने तक काफिर ही रहे। (125)

क्या वह नहीं देखते कि वह हर साल आज़माए जाते हैं? एक बार या दो बार, फिर न वह तौबा करते हैं और न नसीहत पकड़ते हैं। (126)

और जब उतारी जाती है कोई सूरात तो उन में से एक दूसरे को देखने लगता है, क्या तुम्हें कोई (मुसलमान) देखता है? फिर वह फिर जाते हैं, अल्लाह ने उन के दिल फेर दिए, क्योंकि वह लोग समझ नहीं रखते। (127)

अलबत्ता तुम्हारे पास आया एक रसूल (स) तुम में से, जो तुम्हें तकलीफ पहुँचे उस पर गरां है, तुम्हारी (भलाई) का बहुत खाहिशमन्द है, मोमिनों पर शफ़ीक़, निहायत मेहरबान है। (128)

फिर अगर वह मुँह मोड़ें तो आप (स) कह दें मुझे काफ़ी है अल्लाह, उस के सिवा कोई मावूद नहीं, मैं ने उसी पर भरोसा किया, और वह अर्श अज़ीम का मालिक है। (129)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ يَلُونَكُمْ							
नज्दीक तुम्हारे	वह जो	लड़ो	वह जो ईमान लाए (मोमिन)	ऐ			
مِّنَ الْكُفَّارِ وَلِيَجِدُوا فِيكُمْ غِلْظَةً وَعَلِمُوا أَنَّ اللَّهَ							
कि अल्लाह	और जान लो	सख्ती	तुम्हारे अन्दर	और चाहिए कि वह पाएं	कुपफ़ार से (काफिर)		
مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿١٢٣﴾ وَإِذَا مَا أَنْزَلَتْ سُورَةً فَمِنْهُمْ مَّنْ يَقُولُ							
कहते हैं	बाज़	तो उन में से	कोई सूरात	नाज़िल की जाती	और जब	123	परहेज़गारों के साथ
أَيْكُمْ زَادَتْهُ هَذِهِ إِيمَانًا فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا							
वह लोग जो ईमान लाए	सो जो	ईमान	उस ने	ज़ियादा कर दिया (उस का)	तुम में से किस		
فَزَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿١٢٤﴾ وَأَمَّا							
और जो	124	खुशियां मनाते हैं	और वह	ईमान	उस ने ज़ियादा कर दिया उन का		
الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا إِلَىٰ							
तरफ़ (पर)	गन्दगी	उस ने ज़ियादा कर दी उन की	बीमारी	उन के दिल (जमा)	में	वह लोग जो	
رِجْسِهِمْ وَمَاتُوا وَهُمْ كَفِرُونَ ﴿١٢٥﴾ أَوْلَىٰ يَرُونَ							
क्या नहीं वह देखते	125	काफ़िर (जमा)	और वह	और वह मरे	उन की गन्दगी		
أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ							
फिर	दो बार	या	एक बार	हर साल में	आज़माए जाते हैं	कि वह	
لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٢٦﴾ وَإِذَا مَا أَنْزَلَتْ سُورَةً							
कोई सूरात	और उतारी जाती है	और जब	126	नसीहत पकड़ते हैं	वह	और न	न वह तौबा करते हैं
نَّظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ هَلْ يَرِيكُمْ مِّنْ أَحَدٍ ثُمَّ							
फिर	कोई	देखता है तुम्हें	क्या	बाज़ (दूसरे)	को	उन में से (कोई एक)	देखता है
انصَرَفُوا صَرَفَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ							
लोग	क्योंकि वह	उन के दिल	अल्लाह	फेर दिए	वह फिर जाते हैं		
لَا يَفْقَهُونَ ﴿١٢٧﴾ لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ							
गरां	तुम्हारी जानें (तुम)	से	एक रसूल (स)	अलबत्ता तुम्हारे पास आया	127	समझ नहीं रखते	
عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ							
इन्तिहाई शफ़ीक़	मोमिनों पर	तुम पर	हरीस (बहुत खाहिशमन्द)	तुम्हें तकलीफ पहुँचे	जो	उस पर	
رَحِيمٌ ﴿١٢٨﴾ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ							
उस के सिवा	कोई मावूद नहीं	अल्लाह	मुझे काफ़ी है	तो कह दें	फिर अगर वह मुँह मोड़ें	128	निहायत मेहरबान
عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿١٢٩﴾							
129	अज़ीम	अर्श	मालिक	और वह	मैं ने भरोसा किया	उस पर	

آيَاتُهَا ۱۰۹ ❁ (۱۰) سُورَةُ يُوسُفَ ❁ رُكُوعَاتُهَا ۱۱										
11 रकुआत			(10) सूरह यूनुस यूनुस (अ)				109 आयात			
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ										
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है										
الرَّ ۱ تِلْكَ آيَةُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ۱) أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَا										
हम ने	कि	तअज़्जुब	लोगों को	क्या	1	हिक्मत	किताब	आयतें	यह	अलिफ़-लाम रा
वहि भेजी				हुआ		वाली				
إِلَى رَجُلٍ مِّنْهُمْ أَنْ أَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا أَنْ لَهُمْ										
उन के	कि	जो लोग ईमान लाए	और	लोग	वह डराए	कि	उन से	एक	तरफ़-	
लिए		(ईमान वाले)	खुशख़बरी दे					आदमी	पर	
قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ قَالَ الْكُفْرُونَ إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ مُّبِينٌ ۚ 2										
2	खुला	जादूगर	यह	वेशक	काफ़िर	बोले	उन का	पास	सच्चा	पाया
					(जमा)		रब			
إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ										
दिन	छः	में	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा किया	वह जिस	अल्लाह	वेशक तुम्हारा	रब	
	(6)					ने				
ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ ۗ مَا مِنْ شَفِيعٍ إِلَّا										
मगर	सिफ़ारिशी	कोई	नहीं	काम	तदबीर	अर्श पर	काइम	फिर		
					करता है		हुआ			
مِنْ بَعْدِ إِذْنِهِ ۗ ذَلِكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۗ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۚ 3										
उसी की	3	सो क्या तुम	पस उस की	तुम्हारा	अल्लाह	वह है	उस की	वाद		
तरफ़		ध्यान नहीं करते	बन्दगी करो	रब			इजाज़त			
مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا ۗ وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا إِنَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ										
दोबारा	फिर	पहली बार पैदा	वेशक	सच्चा	अल्लाह	वाद	सब	तुम्हारा लौट		
पैदा करेगा		करता है	वही					कर जाना		
لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ بِالْقِسْطِ ۗ وَالَّذِينَ كَفَرُوا										
कुफ़	और वह	इन्साफ़ के	नेक	और उन्होंने ने	ईमान	वह लोग	ताकि जज़ा			
किया	लोग जो	साथ	(जमा)	अमल किए	लाए	जो	दे			
لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۚ 4										
4	वह कुफ़	क्यों	दर्दनाक	और	खौलता	से	पीना है	उन के		
	करते थे	कि		अज़ाब	हुआ		(पानी)	लिए		
هُوَ الَّذِي جَعَلَ الشَّمْسُ ضِيَاءً وَالْقَمَرَ نُورًا وَقَدَرَهُ مَنَازِلَ										
मन्ज़िलें	और मुक़र्रर	नूर	और चाँद	जगमगाता	सूरज	बनाया	जिस ने	वह		
	कर दी उस की	(चमकता)								
لِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ ۗ مَا خَلَقَ اللَّهُ ذَلِكَ إِلَّا بِالْحَقِّ										
हक़	मगर	यह	अल्लाह	नहीं पैदा	और	बरस	गिनती	ताकि तुम		
(दुरुस्त				किया	हिसाब	(जमा)		जान लो		
तदबीर)										
يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۗ 5 إِنَّ فِي اخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ										
और दिन	रात	बदलना	में	वेशक	5	इल्म वालों के लिए	निशानियां	वह खोल कर		
								बयान करता है		
وَمَا خَلَقَ اللَّهُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَّقُونَ ۚ 6										
6	परहेज़गारों	निशानियां	और ज़मीन	आस्मानों में	अल्लाह ने	और				
	के लिए	हैं			पैदा किया	जो				

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरवान, रहम करने वाला है अलिफ़-लाम-रा, यह हिक्मत वाली किताब की आयतें हैं। (1) क्या लोगों को तअज़्जुब हुआ? कि हम ने वहि भेजी एक आदमी पर उन में से कि वह लोगों को डराए, और ईमान वालों को खुशख़बरी दे कि उन के लिए सच्चा पाया (मक़ाम) है उन के रब के पास। काफ़िर बोले वेशक यह तो खुला जादूगर है। (2) वेशक तुम्हारा रब अल्लाह है, जिस ने पैदा किया छः (6) दिनों में आस्मानों को और ज़मीन को, फिर वह अर्श पर काइम हुआ, काम की तदबीर करता है, कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं मगर उस की इजाज़त के बाद, वह अल्लाह है तुम्हारा रब, पस उस की बन्दगी करो, सो क्या तुम ध्यान नहीं देते? (3) उस की तरफ़ तुम सब को लौट कर जाना है, अल्लाह का वादा सच्चा है, वेशक वही पहली बार पैदा करता है फिर उस को दोबारा पैदा करेगा, ताकि उन लोगों को इन्साफ़ के साथ जज़ा दे जो ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए, और जिन लोगों ने कुफ़ किया उन के लिए खौलता हुआ पानी है और दर्दनाक अज़ाब है, क्योंकि वह कुफ़ करते थे। (4) वही है जिस ने सूरज को जगमगाता और चाँद को चमकता बनाया और उस की मन्ज़िलें मुक़र्रर कर दी ताकि तुम बरसों की गिनती जान लो और हिसाब, अल्लाह ने यह नहीं पैदा किया मगर दुरुस्त तदबीर से, वह इल्म वालों के लिए निशानियां खोल कर बयान करता है। (5) वेशक रात और दिन के बदलने में, और जो अल्लाह ने आस्मानों में और ज़मीन में पैदा किया (उस में) निशानियां हैं परहेज़गारों के लिए। (6)

वेशक जो लोग हमारे मिलने की उम्मीद नहीं रखते, और वह दुनिया की जिन्दगी पर राजी हो गए और उस पर सुतमइन हो गए, और जो लोग हमारी आयतों से गाफिल हैं, (7)

यही लोग हैं जिन का ठिकाना जहनन्म है, उस का बदला जो वह कमाते थे। (8)

वेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए, उन का रब उन्हें राह दिखाएगा उन के ईमान की बदौलत (ऐसे महलात की) जिन के नीचे नहरें बहती होंगी, नेमत के बागात में। (9)

उस में उन की दुआ (हो गी) ऐ अल्लाह! तू पाक है, और उस में उन की वक़्ते मुलाकात की दुआ "सलाम" है, और उन की दुआ का ख़ातिमा है तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो सारे जहानों का रब है। (10)

और अगर अल्लाह लोगों को जल्द बुराई भेजता जैसे वह जल्द भलाई चाहते हैं तो पूरी हो चुकी होती उन की उम्र की मीआद, पस हम उन लोगों को जो हमारी मुलाकात की उम्मीद नहीं रखते सरकशी में बहकते छोड़ देते हैं। (11)

और जब इन्सान को कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो वह लेटा हुआ, और बैठा हुआ, और खड़ा हुआ हमें पुकारता है, फिर जब हम दूर कर दें उस से उस की तक्लीफ़, (यूँ) चल पड़ा गोया कि किसी तक्लीफ़ में जो उसे पहुँची, उस ने हमें पुकारा ही न था, उसी तरह हद से बढ़ने वालों को भला कर दिखाया वह काम जो वह करते थे। (12)

और हम ने तुम से पहले कई उम्मतें हलाक कर दीं जब उन्होंने ने जुल्म किया, और उन के पास आए उन के रसूल खुली निशानियों के साथ, और वह ईमान न लाते थे, उसी तरह हम मुजरिमों की कौम को बदला देते हैं। (13)

फिर हम ने तुम्हें ज़मीन में उन के वाद जानशीन बनाया ताकि हम देखें तुम कैसे काम करते हो। (14)

إِنَّ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَضُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا							
दुनिया	जिन्दगी पर	और वह राजी हो गए	हमारा मिलना	उम्मीद नहीं रखते	वह लोग जो	वेशक	
وَاطْمَأَنُّوا بِهَا وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آيَاتِنَا غٰفِلُونَ ﴿٧﴾ أُولَٰئِكَ							
यही लोग	7	गाफिल (जमा)	हमारी आयात	से	वह	और जो लोग	उस पर और वह सुतमइन हो गए
مَا لَهُمْ النَّارُ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا							
जो लोग ईमान लाए	वेशक	8	वह कमाते थे	उस का बदला जो	जहनन्म	उन का ठिकाना	
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُمْ بِآيَاتِنَا تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمْ							
उन के नीचे	से	बहती होंगी	उन के ईमान की बदौलत	उन का रब	उन्हें राह दिखाएगा	नेक	और उन्होंने ने अमल किए
الأنهار في جنات النعيم ﴿٩﴾ دَعْوُهُمْ فِيهَا سُبْحٰنَكَ اللَّهُمَّ							
ऐ अल्लाह	पाक है तू	उस में	उन की दुआ	9	नेमत	बागात	में नहरें
وَتَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ۗ وَأٰخِرُ دَعْوَاهُمْ أَنِ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ							
रब	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफ़ें	कि	उन की दुआ	और ख़ातिमा	सलाम	उस में और मुलाकात के वक़्त की दुआ
الْعٰلَمِينَ ﴿١٠﴾ وَلَوْ يُعَجِّلُ اللَّهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ							
भलाई	जल्द चाहते हैं	बुराई	लोगों को	अल्लाह	जल्द भेज देता	और अगर	10 सारे जहान
لَقُضِيَ إِلَيْهِمْ أَجْلُهُمْ فَنَذَرُ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا فِي							
में	हमारी मुलाकात	वह उम्मीद नहीं रखते	वह लोग जो	पस हम छोड़ देते हैं	उन की उम्र की मीआद	उन की तरफ	तो फिर हो चुकी होती
طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١١﴾ وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا							
वह हमें पुकारता है	कोई तक्लीफ़	इन्सान	पहुँचती है	और जब	11	वह बहकते हैं	उन की सरकशी
لِجَنبَةٍ أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَائِمًا فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهُ مَرَّ							
चल पड़ा	उस की तक्लीफ़	उस से	हम दूर कर दें	फिर जब	खड़ा हुआ	या (और) बैठा हुआ	या अपने पहलू पर (लेटा हुआ)
كَانَ لَمْ يَدْعُنَا إِلَىٰ ضُرِّ مَسَّهُ كَذٰلِكَ زَيْنٌ لِّلْمُسْرِفِينَ							
हद से बढ़ने वालों को	भला कर दिखाया	उसी तरह	उसे पहुँची	तक्लीफ़	किसी	हमें पुकारा न था	गोया कि
مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢﴾ وَلَقَدْ أَهَلَكْنَا الْقُرُونَ مِنْ قَبْلِكُمْ							
तुम से पहले	से	उम्मतें	और हम ने हलाक कर दीं	12	वह करते थे (उन के काम)	जो	
لَمَّا ظَلَمُوا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَمَا							
और न	खुली निशानियों के साथ	उन के रसूल	और उन के पास आए	उन्होंने ने जुल्म किया	जब		
كَانُوا لِيَوْمِنَا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٣﴾ ثُمَّ جَعَلْنَاكُمْ							
हम ने बनाया तुम्हें	फिर	13	मुजरिमों की कौम	हम बदला देते हैं	उसी तरह	ईमान लाते थे	
خَلَٰفٍ فِي الْأَرْضِ مِنْ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾							
14	तुम काम करते हो	कैसे	ताकि हम देखें	उन के बाद	ज़मीन में	जानशीन	

وَإِذَا تُثْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ							
उम्मीद नहीं रखते	वह लोग जो	कहते हैं	वाज़ेह	हमारी आयात	उन पर (उन के सामने)	पढ़ी जाती है	और जब
لِقَاءِنَا أَنتِ بِقُرْآنٍ غَيْرِ هَذَا أَوْ بَدِّلْهُ قُلْ مَا يَكُونُ لِي							
मेरे लिए	नहीं है	आप कह दें	बदलदो इसे	या	इस के अलावा	कोई कुरआन	तुम ले आओ
أَنْ أَبَدِّلَهُ مِنْ تِلْقَائِي نَفْسِي إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ							
मेरी तरफ़	वहि की जाती है	मगर जो	मैं नहीं पैरवी करता	अपनी	जानिव	से	उसे बदलूँ कि
إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٥﴾ قُلْ							
आप कह दें	15	बड़ा	दिन	अज़ाब	अपना रब	मैं ने नाफरमानी की	अगर डरता हूँ
لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا تَلَوْتُهُ عَلَيْكُمْ وَلَا أَدْرِكُمْ بِهِ ۚ فَقَدْ لَبِثْتُ							
तहकीक़ मैं रह चुका हूँ	उस की	और न खबर देता तुम्हें	तुम पर	न पढ़ता मैं उसे	अगर चाहता अल्लाह		
فِيكُمْ عُمْرًا مِّن قَبْلِهِ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٦﴾ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن							
उस से जो	बड़ा ज़ालिम	सो कौन	16	अक़ल से काम लेते तुम	सो क्या न	इस से पहले	एक उम्र तुम में
أَفْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۗ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ							
फ़लाह नहीं पाते	वेशक वह	उस की आयतों को	या झुटलाए	झूट	अल्लाह पर	बान्धे	
الْمُجْرِمُونَ ﴿١٧﴾ وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ							
न ज़रूर पहुँचा सके उन्हें	जो	अल्लाह के सिवा	से	और वह पूजते हैं	17	मुज़रिम (जमा)	
وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَؤُلَاءِ شَفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ							
अल्लाह के पास	हमारे सिफ़ारिशी	यह सब	और वह कहते हैं	और न नफ़ा दे सके उन्हें			
قُلْ أَتَنْبِئُونَ اللَّهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ							
ज़मीन में	और न	आस्मानों में	वह नहीं जानता	उस की जो	अल्लाह	क्या तुम खबर देते हो	आप (स) कह दें
سُبْحٰنَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١٨﴾ وَمَا كَانَ النَّاسُ							
लोग	और न थे	18	वह शिर्क करते हैं	उस से जो	और बालातर	वह पाक है	
إِلَّا أُمَّةً وَاحِدَةً فَاخْتَلَفُوا ۗ وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن							
से	पहले हो चुकी	बात	और अगर न	फिर उन्होंने न इख़तिलाफ़ किया	उम्मतें वाहिद	मगर	
رَبِّكَ لَقَضَىٰ بَيْنَهُمْ فِيمَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٩﴾ وَيَقُولُونَ							
और वह कहते हैं	19	वह इख़तिलाफ़ करते हैं	उस में	उस में जो	उन के दरमियान	तो फ़ैसला हो जाता	तेरा रब
لَوْ لَا أَنْزَلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ۗ فَقُلْ إِنَّمَا							
इस के सिवा नहीं	तो कह दें	उस के रब से	कोई निशानी	उस पर	क्यों न उतरी		
الْغَيْبُ لِلَّهِ فَانْتَبِهُوا ۗ إِنَّنِي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ﴿٢٠﴾							
20	इन्तिज़ार करने वाले	से	तुम्हारे साथ	मैं	सो तुम इन्तिज़ार करो	अल्लाह के लिए	ग़ैब

और जब पढ़ी जाती हैं उन के सामने हमारी वाज़ेह आयतें, तो जो लोग हम से मिलने की उम्मीद नहीं रखते वह कहते हैं, उस के अलावा तुम कोई और कुरआन ले आओ या उसे बदल दो, आप (स) कह दें मेरे लिए (रवा) नहीं कि मैं अपनी जानिव से बदलूँ, मैं पैरवी नहीं करता मगर (उस की) जो मेरी तरफ़ वहि किया जाता है, अगर मैं अपने रब की नाफरमानी करूँ तो मैं बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ। (15)

आप (स) कह दें अगर अल्लाह चाहता तो मैं उसे तुम पर (तुम्हारे सामने) न पढ़ता, और न तुम्हें उस की खबर देता, मैं उस से पहले तुम में एक उम्र रह चुका हूँ, सो क्या तुम अक़ल से काम नहीं लेते? (16)

सो उस से बड़ा ज़ालिम कौन है? जो अल्लाह पर झूट बान्धे या उस की आयतों को झुटलाए, वेशक मुज़रिम फ़लाह (दो ज़हान की कामयाबी) नहीं पाते, (17)

और वह अल्लाह के सिवा उन्हें पूजते हैं जो उन्हें न ज़रूर पहुँचा सके और न नफ़ा दे सकें, और वह कहते हैं यह सब अल्लाह के पास हमारे सिफ़ारिशी है।

आप (स) कह दें क्या तुम अल्लाह को उस की खबर देते हो जो वह नहीं जानता आस्मानों में और न ज़मीन में, वह पाक है और वह बालातर है उस से जो वह शिर्क करते हैं। (18)

और लोग न थे मगर उम्मतें वाहिद, फिर उन्होंने न इख़तिलाफ़ किया, और अगर तेरे रब की तरफ़ से पहले बात न हो चुकी होती तो फ़ैसला हो जाता उन के दरमियान (उस बात का) जिस में वह इख़तिलाफ़ करते हैं। (19)

और वह कहते हैं उस के रब की तरफ़ से उस पर कोई निशानी क्यों न उतरी? तो आप (स) कह दें उस के सिवा नहीं कि ग़ैब अल्लाह के लिए है, सो तुम इन्तिज़ार करो, मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों से हूँ। (20)

और जब हम चखाएं लोगों को रहमत (का मज़ा) एक तकलीफ़ के बाद जो उन्हें पहुँची थी तो उसी वक़्त वह हमारी आयात में हीले (बनाने लगे) आप (स) कह दें अल्लाह सब से तेज़ खुफ़िया तदवीर (बना सकता है), वेशक़ तुम जो हीले साज़ी करते हो हमारे फ़रिशते लिखते हैं। (21)

वही है जो तुम्हें चलाता है खुशकी में और दर्या में, यहां तक कि जब तुम कशती में हो, और वह उन के साथ (उन्हें ले कर) पाकीज़ा हवा के साथ चलें, और वह उस से खुश हुए, उस (कशती) पर एक तुन्द ओ तेज़ हवा आई, और उन पर हर तरफ़ से मौज़ें आगई, और उन्होंने ने जान लिया कि उन्हें घेर लिया गया है, वह अल्लाह को पुकारने लगे उस की बन्दगी में ख़ालिस हो कर, कि अगर तू ने हमें इस से नजात दे दी तो हम ज़रूर तेरे शुक्रगुज़ारों में से होंगे। (22)

फिर जब उस ने उन्हें नजात दे दी उस वक़्त वह ज़मीन में नाहक़ सरकशी करने लगे, ऐ लोगो! इस के सिवा नहीं कि तुम्हारी शरारत (का ववाल) तुम्हारी जानों पर है, दुनिया की ज़िन्दगी के फ़ाइदे (चन्द रोज़ा है) फिर तुम्हें हमारी तरफ़ लौटना है फिर हम तुम्हें बतला देंगे जो तुम करते थे। (23)

इस के सिवा नहीं कि दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल पानी जैसी है, हम ने उसे आस्मान से उतारा तो उस से ज़मीन का सब्ज़ह मिला जुला निकला, जिस से लोग और चौपाए खाते हैं, यहां तक कि जब ज़मीन ने अपनी रौनक़ पकड़ ली, और वह मुज़ैयन हो गई, और ज़मीन बालों ने ख़याल किया कि वह उस पर क़ुदरत रखते हैं तो (अचानक) हमारा हुक्म रात में या दिन के वक़्त आया, तो हम ने उसे कटा हुआ ढेर कर दिया गोया वह कल थी ही नहीं, इसी तरह हम आयतें खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर ओ फ़िक़र करते हैं। (24)

और अल्लाह सलामती के घर की तरफ़ बुलाता है। और जिसे चाहे सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत देता है। (25)

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْ بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُمْ إِذَا لَهُمْ مَكْرٌ									
हीला	उन के लिए	उसी वक़्त	उन्हें पहुँची	तकलीफ़	बाद	रहमत	लोग	हम चखाएं	और जब
فِي آيَاتِنَا قُلِ اللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُونَ مَا تَمْكُرُونَ ﴿٢١﴾									
21	जो तुम हीले साज़ी करते हो	वह लिखते हैं	हमारे फ़रिशते	वेशक़	खुफ़िया तदवीर	सब से जल्द	अल्लाह	आप (स) कह दें	हमारी आयात में
هُوَ الَّذِي يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ حَتَّىٰ إِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلِكِ									
कशती में	तुम हो	जब	यहां तक	और दर्या	खुशकी में	तुम्हें चलाता है	जो कि	वही	
وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيحٍ طَيِّبَةٍ وَفَرِحُوا بِهَا جَاءَتْهَا رِيحٌ عَاصِفٌ									
तुन्द ओ तेज़	एक हवा	उस पर आई	उस से	और वह खुश हुए	पाकीज़ा	हवा के साथ	उन के साथ	और वह चलें	
وَجَاءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ دَعَوُا									
वह पुकारने लगे	उन्हें	घेर लिया गया	कि वह	और उन्होंने ने जान लिया	हर जगह (हर तरफ़)	से	मौज	और उन पर आई	
اللَّهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ لَئِنِ أَنْجَيْتَنَا مِنْ هَذِهِ لَنَكُونَنَّ									
तो हम ज़रूर होंगे	उस	से	तू नजात दे हमें	अलबत्ता अगर	दीन (बन्दगी)	उस के	ख़ालिस हो कर	अल्लाह	
مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿٢٢﴾ فَلَمَّا أَنْجَاهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ									
नाहक़	ज़मीन	में	सरकशी करने लगे	वह	उस वक़्त	उन्हें नजात दे दी	फिर जब	22	शुक्रगुज़ार (जमा)
يَأْتِيهَا النَّاسُ إِنَّمَا بِغَيْرِكُمْ عَلَىٰ أَنْفُسِكُمْ مَتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا									
दुनिया	ज़िन्दगी	फ़ाइदे	तुम्हारी जानों	पर	तुम्हारी शरारत	इस के सिवा नहीं	ऐ लोगो		
ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٣﴾ إِنَّمَا مَثَلُ									
मिसाल	इस के सिवा नहीं	23	तुम करते थे	वह जो	फिर हम बतला देंगे तुम्हें	तुम्हें लौटना	हमारी तरफ़	फिर	
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَا أَنْزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ									
ज़मीन का सब्ज़ा	उस से	तो मिला जुला निकला	आस्मान से	हम ने उसे उतारा	जैसे पानी	दुनिया की ज़िन्दगी			
مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ حَتَّىٰ إِذَا أَخَذَتِ الْأَرْضُ									
ज़मीन	पकड़ ली	जब	यहां तक कि	और चौपाए	लोग	खाते हैं	जिस से		
زُحْرُفَهَا وَارْبَيَّتْ وَظَنَّ أَهْلُهَا أَنَّهُمْ قَدِرُونَ عَلَيْهَا أَتَهَا									
आया	उस पर	क़ुदरत रखते हैं	कि वह	ज़मीन वाले	और ख़याल किया	और मुज़ैयन हो गई	अपनी रौनक		
أَمْرُنَا لَيْلًا أَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنَاهَا حَصِيدًا كَأَن لَّمْ تَغْن									
वह न थी	गोया कि	कटा हुआ ढेर	तो हम ने कर दिया	या दिन के वक़्त	रात में	हमारा हुक्म			
بِالْأَمْسِ كَذَلِكَ نَفِصِلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٢٤﴾ وَاللَّهُ									
और अल्लाह	24	जो ग़ौर ओ फ़िक़र करते हैं	लोगों के लिए	आयतें	हम खोल कर बयान करते हैं	इसी तरह	कल		
يَدْعُوا إِلَىٰ دَارِ السَّلَامِ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٢٥﴾									
25	सीधा	रास्ता	तरफ़	जिसे वह चाहे	और हिदायत देता है	सलामती का घर	तरफ़	बुलाता है	

لِّلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوهَهُمْ قَتَرٌ وَلَا ذِلَّةٌ							
और न ज़िल्लत	सियाही	उन के चहरे	और न चढ़ेगी	और ज़ियादा	भलाई है	उन्होंने भलाई की	वह लोग जो कि
أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٦﴾ وَالَّذِينَ كَسَبُوا							
उन्होंने कमाई	और वह लोग जो	26	हमेशा रहेंगे	उस में	वह सब	जन्नत वाले	वही लोग
السَّيِّئَاتِ جَزَاءُ سَيِّئَةٍ بِمِثْلِهَا وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ مَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ							
अल्लाह से	उन के लिए नहीं	ज़िल्लत	और उन पर चढ़ेगी	उस जैसा	बुराई	बदला	बुराइयां
مِنْ عَاصِمٍ كَأَنَّمَا أُغْشِيَتْ وُجُوهُهُمْ قِطْعًا مِّنَ اللَّيْلِ مُظْلِمًا							
तारीक	रात	से	टुकड़े	उन के चहरे	ढांक दिए गए	गोया कि	बचाने वाला
أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٧﴾ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ							
हम इकट्ठा करेंगे उन्हें	और जिस दिन	27	हमेशा रहेंगे	उस में	वह सब	जहन्नम वाले	वही लोग
جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا مَكَانَكُمْ أَنْتُمْ وَشُرَكَاءُكُمْ							
और तुम्हारे शरीक	तुम	अपनी जगह	जिन्होंने शिर्क किया	उन लोगों को	हम कहेंगे	फिर	सब
فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَاءُهُمْ مَا كُنْتُمْ إِيَّانَا تَعْبُدُونَ ﴿٢٨﴾							
28	बन्दगी करते	हमारी	तुम न थे	उन के शरीक	और कहेंगे	उन के दरमियान	फिर हम जुदाई डाल देंगे
فَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ							
तुम्हारी बन्दगी	से	हम थे	कि	और तुम्हारे दरमियान	हमारे दरमियान	गवाह	अल्लाह
لَغَفْلِينَ ﴿٢٩﴾ هُنَالِكَ تَبْلَأُونَ كُلُّ نَفْسٍ مَّا أَسْلَفَتْ وَرُدُّوْا إِلَى اللَّهِ							
अल्लाह की तरफ	और वह लौटाए जाएंगे	उस ने भेजा	जो	हर कोई	जांच लेगा	वहां	29
مَوْلَاهُمْ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٣٠﴾ قُلْ مَنْ							
कौन	आप (स) पूछें	30	वह झूट बान्धते थे	जो	उन से	और गुम हो जाएगा	उन का (अपना) मौला
يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَمْ نِيَمَلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ							
और आँखें	कान	मालिक है	या कौन	और ज़मीन	आस्मान	से	रिज़क देता है तुम्हें
وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدْبِرِ الْأَمْرَ							
तदबीर करता है काम	और कौन	ज़िन्दा	से	मुर्दा	और निकालता है	मुर्दा	से
فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٣١﴾ فَذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ الْحَقُّ							
सच्चा	तुम्हारा रब	अल्लाह	पस यह है तुम्हारा	31	क्या फिर तुम नहीं डरते	आप कह दें	सो वह बोल उठेंगे
فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ إِلَّا الضَّلَالُ فَأَنَّى تُصْرَفُونَ ﴿٣٢﴾ كَذَلِكَ							
उसी तरह	32	तुम फिर जाते हो	पस किधर	गुमराही	सिवाए	सच के बाद	फिर क्या रह गया
حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ فَسَقُوا أَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٣﴾							
33	ईमान न लाएंगे	कि वह	उन्होंने नाफ़रमानी की	वह लोग जो	पर	तेरा रब	वात सचची हुई

जिन लोगों ने भलाई की उन के लिए भलाई है और (उस से भी) ज़ियादा, और उन के चहरों पर न सियाही चढ़ेगी और न ज़िल्लत, वही लोग जन्नत वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (26)

और जिन लोगों ने बुराइयां कमाई (उन का) बदला उस जैसी बुराई है, और उन पर ज़िल्लत चढ़ेगी, उन के लिए अल्लाह से बचाने वाला कोई नहीं, गोया उन के चहरे ढांक दिए गए तारीक रात के टुकड़े से, वही लोग जहन्नम वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (27)

और जिस दिन हम उन सब को इकट्ठा करेंगे फिर उन लोगों को कहेंगे जिन्होंने शिर्क किया अपनी अपनी जगह (रहो) तुम और तुम्हारे शरीक, फिर हम उन के दरमियान जुदाई डाल देंगे, और उन के शरीक कहेंगे, तुम हमारी बन्दगी न करते थे। (28)

पस हमारे और तुम्हारे दरमियान काफ़ी है अल्लाह गवाह, कि हम तुम्हारी बन्दगी से बेख़बर थे। (29)

वहां हर कोई जांच लेगा जो उस ने आगे भेजा था और वह अपने सच्चे मौला अल्लाह की तरफ लौटाए जाएंगे और उन से गुम हो जाएगा जो वह झूट बान्धते थे। (30)

आप (स) पूछें कौन आस्मान और ज़मीन से तुम्हें रिज़क देता है? या कौन कान और आँखों का मालिक है? और कौन ज़िन्दा को मुर्दे से निकालता है? और निकालता है मुर्दे को ज़िन्दा से? और कौन कामों की तदबीर करता है? सो वह बोल उठेंगे, अल्लाह! आप (स) कहें क्या फिर तुम डरते नहीं? (31)

पस यह है अल्लाह! तुम्हारा सच्चा रब, सच के बाद गुमराही के सिवा क्या रह गया? फिर तुम किधर फिरे जाते हो? (32)

उसी तरह तेरे रब की बात उन लोगों पर जिन्होंने नाफ़रमानी की, सचची हुई कि वह ईमान न लाएंगे, (33)

आप (स) पूछें क्या तुम्हारे शरीकों में से कोई है? जो पहली बार पैदा करे फिर उसे लौटाए, आप(स) कह दें अल्लाह पहली बार पैदा करता है फिर उसे लौटाएगा, पस तुम किधर पलटे जाते हो? (34) आप (स) पूछें क्या तुम्हारे शरीकों में से (कोई) है जो सहीह राह बताए? आप (स) कह दें अल्लाह सहीह राह बताता है, क्या जो सहीह राह बताता है ज़ियादा हकदार है कि उस की पैरवी की जाए? या वह जो (खुद भी) राह नहीं पाता मगर यह कि उसे राह दिखाई जाए, सो तुम्हें क्या हो गया है? कैसा फ़ैसला करते हो? (35) और उन में से अक्सर पैरवी नहीं करते मगर गुमान की, वेशक गुमान हक (की मुआरिफ़त) का कुछ भी काम नहीं देता, वेशक अल्लाह खूब जानता है जो वह करते हैं। (36) और यह कुरआन (ऐसा) नहीं कि कोई अल्लाह के (हुकम के) बग़ैर (अपनी तरफ़ से) बना ले, लेकिन उस की तसदीक करने वाला है जो उस से पहले (नाज़िल हुआ) और किताब की तफ़सील है, उस में कोई शक नहीं कि यह तमाम ज़हानों के रब (की तरफ़) से है। (37) क्या वह कहते हैं? कि वह उसे बना लाया है, आप (स) कह दें पस उस जैसी एक ही सूरत ले आओ और जिसे तुम बुला सको, बुला लो, अल्लाह के सिवा, अगर तुम सच्चे हो। (38) बल्कि उन्होंने ने उसे झुटलाया जिस के इल्म पर उन्होंने ने काबू नहीं पाया, और उस की हकीकत अभी उन के पास नहीं आई, उसी तरह उन से पहलों ने झुटलाया, पस आप (स) देखें कैसा हुआ ज़ालिमों का अन्जाम? (39) और उन में से बाज़ उस पर ईमान लाएंगे, और उन में से बाज़ उस पर ईमान न लाएंगे, और तेरा रब फ़साद करने वालों को खूब जानता है। (40) और अगर वह आप (स) को झुटलाए तो आप (स) कह दें मेरे लिए मेरे अमल, और तुम्हारे लिए तुम्हारे अमल, तुम उस के जवाबदह नहीं जो में करता हूँ, और मैं उस का जवाबदह नहीं जो तुम करते हो। (41)

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَبْدُوا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ قُلِ اللَّهُ									
अल्लाह	आप (स) कह दें	फिर उसे लौटाए	मख़लूक	पहली बार पैदा करे	जो	तुम्हारे शरीक	से	क्या	आप (स) पूछें
يَبْدُوا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ فَأَنْتُمْ تُؤْفَكُونَ ﴿٣٤﴾ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ									
तुम्हारे शरीक	से	क्या	आप(स) पूछें	34	पलटे जाते हो तुम	पस किधर	उसे लौटाएगा	फिर	मख़लूक पहली बार पैदा करता है
مَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ قُلِ اللَّهُ يَهْدِي لِلْحَقِّ أَفَمَنْ يَهْدِي									
राह बताता है	पस क्या जो	सहीह	राह बताता है	अल्लाह	आप कहें	हक की तरफ़ (सहीह)	राह बताए	जो	
إِلَى الْحَقِّ أَحَقُّ أَنْ يُتَّبَعَ أَمْ لَا يَهْدِي إِلَّا أَنْ يَهْدِي فَمَا لَكُمْ									
सो तुम्हें क्या हुआ	उसे राह दिखाई जाए	यह कि	मगर	वह राह नहीं पाता	या जो	पैरवी की जाए	कि	ज़ियादा हक दार	हक की तरफ़ (सही)
كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿٣٥﴾ وَمَا يَتَّبِعُ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا ظَنًّا إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي									
नहीं काम देता	गुमान	वेशक	मगर गुमान	उन के अक्सर	और पैरवी नहीं करते	35	तुम फ़ैसला करते हो	कैसा	
مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾ وَمَا كَانَ هَذَا									
यह - इस	और नहीं है	36	वह करते हैं	वह जो	खूब जानता है	वेशक अल्लाह	कुछ भी	हक	से (का)
الْقُرْآنُ أَنْ يُفْتَرَى مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ تَصْدِيقَ الَّذِي									
उस की जो	तसदीक	और लेकिन	अल्लाह के बग़ैर	से	कि वह बनाले	कुरआन			
بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٣٧﴾									
37	तमाम ज़हानों	रब	से	उस में	कोई शक नहीं	किताब	और तफ़सील	उस से पहले	
أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِثْلِهِ وَادْعُوا مَنِ									
जिसे	और बुला लो तुम	उस जैसी	एक ही सूरत	पस ले आओ तुम	आप (स) कह दें	वह उसे बना लाया है	वह कहते हैं	क्या	
اسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٨﴾ بَلْ كَذَّبُوا									
उन्होंने ने झुटलाया	बल्कि	38	सच्चे	तुम हो	अगर	अल्लाह के सिवा	से	तुम बुला सको	
بِمَا لَمْ يُحِيطُوا بِعِلْمِهِ وَلَمَّا يَأْتِهِمْ تَأْوِيلُهُ كَذَّبَ كَذَّبَ									
झुटलाया	उसी तरह	उस की हकीकत	उन के पास आई	और अभी नहीं	उस के इल्म पर	नहीं काबू पाया	वह जो		
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ﴿٣٩﴾									
39	ज़ालिम (जमा)	अन्जाम	हुआ	कैसा	पस आप (स) देखें	उन से पहले	वह लोग जो		
وَمِنْهُمْ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُمْ مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهِ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ									
खूब जानता है	और तेरा रब	उस पर	नहीं ईमान लाएंगे	जो (बाज़)	और उन में से	उस पर	ईमान लाएंगे	जो (बाज़)	और उन में से
بِالْمُفْسِدِينَ ﴿٤٠﴾ وَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ لِي عَمَلِي وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ									
तुम्हारे अमल	और तुम्हारे लिए	मेरे अमल	मेरे लिए	तो कह दें	वह तुम्हें झुटलाए	और अगर	40	फ़साद करने वालों को	
أَنْتُمْ بَرِيءُونَ مِمَّا أَعْمَلُوا وَأَنَا بَرِيءٌ مِمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٤١﴾									
41	तुम करते हो	उस का जो	जवाबदह नहीं	और मैं	मैं करता हूँ	उस के जो	जवाबदह नहीं	तुम	



وَمِنْهُمْ مَّنْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوا لَا يَعْقِلُونَ ﴿٤٢﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَنْظُرُ إِلَيْكَ أَفَأَنْتَ تَهْدِي الْعُمْى									
ख़्वाह	वहरे	सुनाओगे	तो क्या तुम	आप (स) की तरफ़	कान लगाते है	जो (बाज़)	और उन में से		
وَلَوْ كَانُوا لَا يُبْصِرُونَ ﴿٤٣﴾ إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْئًا وَلَكِنَّ									
अन्धे	राह दिखा दोगे	पस क्या तुम	आप (स) की तरफ़	देखते है	जो (बाज़)	और उन से	42	वह अक्ल न रखते हों	
النَّاسِ أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٤٤﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَأَن لَّمْ يَلْبَثُوا إِلَّا									
और लेकिन	कुछ भी	लोग	जुल्म नहीं करता	वेशक अल्लाह	43	वह देखते न हों	ख़्वाह		
سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا									
मगर	वह न रहे थे	गोया	जमा करेगा उन्हें	और जिस दिन	44	जुल्म करते है	अपने आप पर	लोग	
بِلِقَاءِ اللَّهِ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿٤٥﴾ وَإِنَّا لَنَرِيكَ بَعْضَ الَّذِي									
उन्होंने ने झुटलाया	वह लोग	अलबत्ता ख़सारे में रहे	आपस में	वह पहचानेंगे	दिन से (की)	एक घड़ी			
نَعْدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِنَّا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ									
वह जो	बाज़ (कुछ)	हम तुझे दिखा दें	और अगर	45	हिदायत पाने वाले	वह न थे	अल्लाह से मिलने को		
مَا يَفْعَلُونَ ﴿٤٦﴾ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولٌ فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ									
उन के दरमियान	फ़ैसला कर दिया गया	उन का रसूल	आगया	पस जब	रसूल	उम्मत और हर एक के लिए	46	जो वह करते है	
بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٤٧﴾ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدِ إِنْ									
अगर	वादा	यह	कब	और वह कहते है	47	जुल्म नहीं किए जाते	और वह	इन्साफ़ के साथ	
كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٨﴾ قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا									
जो	मगर	और न नफा	किसी नुक़सान	अपनी जान के लिए	नहीं मालिक हूँ मैं	आप कह दें	48	सच्चे	तुम हो
شَاءَ اللَّهُ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ إِذَا جَاءَ أَجْلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً									
एक घड़ी	पस न ताखीर करेंगे वह	उन का वक़्त	आजाएगा	जब	एक वक़्त मुक़र्रर	हर एक उम्मत के लिए	चाहे अल्लाह		
وَلَا يَسْتَفْتِدُونَ ﴿٤٩﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُهُ بَيَاتًا أَوْ نَهَارًا									
या दिन के वक़्त	रात को	उस का अज़ाब	अगर तुम पर आए	भला तुम देखो	आप (स) कह दें	49	जल्दी करेंगे वह	और न	
مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٥٠﴾ أَتَمَّ إِذَا مَا وَقَعَ أَمْنْتُمْ بِهِ									
उस पर	तुम ईमान लाओगे	वाक़े होगा	जब	क्या फिर	50	मुज़्रिम (जमा)	उस से - उस की	जल्दी करते है	क्या है वह
آلْتَنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٥١﴾ ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا									
उन्होंने ने जुल्म किया (ज़ालिम)	उन लोगों को जो	कहा जाएगा	फिर	51	तुम जल्दी मचाते	उस की	और अलबत्ता तुम थे	अब	
ذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ هَلْ تُجْرُونَ إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٥٢﴾									
52	तुम कमाते थे	वह जो	मगर	तुम्हें बदला दिया जाता	क्या नहीं	हमेशगी	अज़ाब	तुम चखो	

और उन में से बाज़ कान लगाते हैं आप (स) की तरफ़, तो क्या तुम वहरों को सुनाओगे? अगरचे वह अक्ल न रखते हों। (42) और उन में से बाज़ देखते हैं आप(स) की तरफ़, तो क्या आप(स) अन्धों को राह दिखा देंगे? अगरचे वह देखते न हों। (43) वेशक अल्लाह जुल्म नहीं करता लोगों पर कुछ भी, लेकिन लोग अपने आप पर जुल्म करते हैं। (44) और जिस दिन (योमे हशर) वह उन्हें जमा करेगा गोया वह (दुनिया में) न रहे थे मगर दिन की एक घड़ी, आपस में पहचानेंगे, अलबत्ता वह ख़सारे में रहे जिन्होंने ने झुटलाया अल्लाह से मिलने को, और वह हिदायत पाने वाले न थे। (45) और अगर हम तुम्हें बाज़ वादे दिखा दें जो हम उन से कर रहे हैं या हम तुम्हें (दुनिया से) उठा लें, पस उन्हें हमारी तरफ़ लौटना है, फिर अल्लाह उस पर गवाह है जो वह करते हैं। (46) हर एक उम्मत के लिए एक रसूल है, पस जब उन का रसूल आगया, उन के दरमियान इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया गया, और उन पर जुल्म नहीं किया जाता। (47) और वह कहते हैं यह वादा कब (पूरा) होगा? अगर तुम सच्चे हो। (48) आप (स) कह दें मैं अपनी जान के लिए मालिक नहीं हूँ किसी नुक़सान का न नफा का, मगर जो अल्लाह चाहे, हर एक उम्मत के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है, जब उन का वक़्त आजाएगा पस न वह एक घड़ी ताखीर करेंगे न जल्दी कर सकेंगे। (49) आप (स) कह दें भला तुम देखो अगर तुम पर उस का अज़ाब आए रात को या दिन के वक़्त, तो वह क्या है जिस की मुज़्रिम जल्दी कर रहे हैं? (50) क्या फिर जब वाक़े हो जाएगा (उस वक़्त) तुम उस पर ईमान लाओगे? अब (मानते हो) अलबत्ता तुम उस की जल्दी मचाते थे। (51) फिर ज़ालिमों को कहा जाएगा तुम हमेशगी का अज़ाब चखो, तुम्हें वही बदला दिया जाता है जो तुम कमाते थे। (52)

और आप (स) से पूछते हैं क्या वह सच है? आप (स) कहें हां! मेरे रब की कसम! वेशक वह ज़रूर सच है, और तुम आजिज़ करने वाले नहीं। (53)

और अगर हर ज़ालिम शख्स के लिए (वह सब कुछ) हो जो ज़मीन में है, वह उस को फिदये में देदे, और वह चुपके चुपके पशेमान होंगे जब अज़ाब देखेंगे, और उन के दरमियान इन्साफ के साथ फ़ैसला होगा, और उन पर जुल्म न किया जाएगा। (54)

याद रखो! अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में है, याद रखो! वेशक अल्लाह का वादा सच है, लेकिन उन के अक्सर जानते नहीं। (55)

वही ज़िन्दगी देता है, और वही मारता है, और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (56)

ऐ लोगो! तहकीक़ तुम्हारे पास आ गई नसीहत तुम्हारे रब की तरफ़ से, और शिफ़ा उस (रोग) के लिए जो दिलों में है, और मोमिनों के लिए हिदायत ओ रहमत। (57)

आप (स) कहें, अल्लाह के फ़ज़ल से, और उस की रहमत से, सो वह उस पर खुशी मनाएँ, यह उन (सब) से बेहतर है जो वह जमा करते हैं। (58)

आप (स) कह दें, भला देखो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए रिज़क़ उतारा, फिर तुम ने उस में से कुछ हराम बना लिया और कुछ हलाल, आप (स) कह दें, क्या अल्लाह ने तुम्हें हुकम दिया? या अल्लाह पर झूट वान्धते हो? (59)

और उन लोगों का क्या ख़याल है? जो घड़ते हैं अल्लाह पर झूट, क़ियामत के दिन (उन का क्या हाल होगा) वेशक अल्लाह लोगों पर फ़ज़ल करने वाला है, लेकिन उन में से अक्सर शुक्र नहीं करते। (60)

और तुम नहीं होते किसी हाल में, और न उस में से कुछ कुरआन पढ़ते हो, और न कोई अमल करते हो, मगर हम तुम पर गवाह (बाख़वर) होते हैं जब तुम उस में मशगूल होते हो, और नहीं तुम्हारे रब से ग़ाइब एक ज़री वरावर भी ज़मीन में और न आस्मान में, और न उस से छोटा और न बड़ा, मगर रौशन किताब में है। (61)

وَيَسْتَنْبِئُونَكَ أَحَقُّ هُوَ قُلْ إِي وَرَبِّي إِنَّهُ لَحَقٌّ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ٥٣											
53	आजिज़ करने वाले	तुम हो	और नहीं	ज़रूर सच	वेशक वह	मेरे रब की कसम	हां	आप कह दें	वह सच है	और आप (स) से पूछते हैं	
وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ وَأَسْرُوا التَّدَامَةَ											
	पशेमान	और वह चुपके चुपके होंगे	उस को	अलबत्ता फिदया देदे	ज़मीन में	जो कुछ	उस ने जुल्म किया (ज़ालिम)	हर एक शख्स के लिए	हो	और अगर	
لَمَّا رَأُوا الْعَذَابَ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ٥٤											
54	जुल्म न किए जाएंगे	और वह	इन्साफ के साथ	उन के दरमियान	और फ़ैसला होगा	अज़ाब	वह देखेंगे	जब			
آلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ آلا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ٥٥											
	और लेकिन	सच	अल्लाह का वादा	वेशक	याद रखो	और ज़मीन में	आस्मानों में	अल्लाह के लिए जो	वेशक	याद रखो	
هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَاللَّهُ تَرْجِعُونَ ٥٦											
56	तुम लौटाए जाओगे	और उस की तरफ़	और मारता है	ज़िन्दगी देता है	वही	55	जानते नहीं	उन के अक्सर			
يَأْتِيهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَتْكُمْ مَوْعِظَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُورِ											
	सीनों (दिलों) में	उस के लिए जो	और शिफ़ा	तुम्हारा रब	से	नसीहत	तहकीक़ तुम्हारे पास	लोगो	ऐ		
وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ٥٧											
	और उस की रहमत से	अल्लाह	फ़ज़ल से	आप कह दें	57	मोमिनों के लिए	ओ रहमत	और हिदायत			
فَبِذَلِكَ فَلْيَفْرَحُوا هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ٥٨											
	जो उस ने उतारा	भला देखो	आप कह दें	58	वह जमा करते हैं	उस से जो	बेहतर	वह-यह	वह खुशी मनाएँ	सो उस पर	
اللَّهُ لَكُمْ مِّن رِّزْقٍ فَجَعَلْتُم مِّنْهُ حَرَامًا وَحَلَالًا قُلْ اللَّهُ أَذِنَ											
	हुकम दिया	क्या अल्लाह	आप (स) कह दें	और कुछ हलाल	कुछ हराम	उस से	फिर तुम ने बना लिया	रिज़क़	से	तुम्हारे लिए	अल्लाह
لَكُمْ أَمْ عَلَى اللَّهِ تَفْتَرُونَ ٥٩											
	अल्लाह पर	घड़ते हैं	वह लोग जो	ख़याल	और क्या	59	तुम झूट वान्धते हो	अल्लाह पर	या	तुम्हें	
الْكَذِبِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ											
	और लेकिन	लोगों पर	फ़ज़ल करने वाला	वेशक अल्लाह	क़ियामत के दिन	झूट					
أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ٦٠											
	से - कुछ	उस से	और नहीं पढ़ते	किसी हाल में	और नहीं होते तुम	60	शुक्र नहीं करते	उन के अक्सर			
قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ											
	जब तुम मशगूल होते हो	गवाह	तुम पर	हम होते हैं	मगर	कोई अमल	और नहीं करते	कुरआन			
فِيهِ وَمَا يَعْرُزُ عَنْ رَبِّكَ مِنْ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا											
	और न	ज़मीन में	एक ज़री	बराबर	से	तुम्हारा रब	से	ग़ाइब	और नहीं	उस में	
فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ٦١											
	61	किताबे रौशन	में	मगर	बड़ा	और न	उस से	छोटा	और न	आस्मान में	

آلَا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفَ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾									
62	ग़मगीन होंगे	वह	और न	उन पर	न कोई ख़ौफ़	अल्लाह के दोस्त	वेशक	याद रखो	
الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا									
	दुनिया कि ज़िन्दगी	में	वशाहत	उन के लिए	63	और वह तक्वा करते रहे	ईमान लाए	वह लोग जो	
وَفِي الْأَخِرَةِ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ذَٰلِكَ هُوَ									
	वह	यह	अल्लाह	वातों में		तबदीली नहीं	आख़िरत	और में	
الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٦٤﴾ وَلَا يَحْزَنُكَ قَوْلُهُمْ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ									
	अल्लाह के लिए	ग़लबा	वेशक	उन की वात	तुम्हें ग़मगीन करे	और न	64	बड़ी	कामयाबी
جَمِيعًا ۗ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦٥﴾ آلَا إِنَّ لِلَّهِ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ									
	आस्मानों में	जो कुछ	अल्लाह के लिए	वेशक	याद रखो	65	जानने वाला	सुनने वाला	वह
وَمَنْ فِي الْأَرْضِ ۗ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ									
	सिवाए	पुकारते हैं	वह लोग जो	पैरवी करते हैं	क्या - किस		ज़मीन में	और जो	
اللَّهِ شُرَكَاءَ ۗ إِنَّ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا									
	मगर (सिर्फ)	वह	और नहीं	गुमान	मगर	वह नहीं पैरवी करते	शरीक (जमा)	अल्लाह	
يَخْرُضُونَ ﴿٦٦﴾ هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا									
	ताकि तुम सुकून हासिल करो	रात	तुम्हारे लिए	बनाया	जो - जिस	वही	66	अटकलें दौड़ाते हैं	
فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ﴿٦٧﴾									
	67	सुनने वाले लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियाँ	उस में	वेशक	दिखाने वाला (रौशन)	और दिन	उस में	
قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۗ سُبْحٰنَهُ ۗ هُوَ الْغَنِيُّ ۗ لَهُ مَا									
	जो	उस के लिए	वेनियाज़	वह	वह पाक है	बेटा	अल्लाह	बना लिया	वह कहते हैं
فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ إِنَّ عِنْدَكُمْ مِّنْ									
	कोई	तुम्हारे पास	नहीं	ज़मीन में	और जो		आस्मानों में		
سُلْطٰنٍ بِهٰذَا ۗ أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾									
	68	तुम नहीं जानते	जो	अल्लाह पर	क्या तुम कहते हो	उस के लिए	दलील		
قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكٰذِبَ									
		झूट	अल्लाह पर	घड़ते हैं	वह लोग जो	वेशक	आप (स) कह दें		
لَا يُفْلِحُونَ ﴿٦٩﴾ مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ									
	फिर	उन को लौटना	हमारी तरफ़	फिर	दुनिया में	कुछ फ़ाइदा	69	वह फ़लाह नहीं पाएंगे	
نُذِيقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٧٠﴾									
	70	वह कुफ़ करते थे	उस के बदले	शदीद	अज़ाब	हम चखाएंगे उन्हें			

याद रखो! वेशक (जो) अल्लाह के दोस्त हैं न कोई ख़ौफ़ उन पर और न वह ग़मगीन होंगे। (62)

और जो लोग ईमान लाए और तक्वा (ख़ौफ़े खुदा और परहेज़गारी) करते रहे। (63)

उन के लिए वशाहत है दुनिया की ज़िन्दगी में और आख़िरत में, अल्लाह की वातों में कोई तबदीली नहीं, यही बड़ी कामयाबी है। (64)

और उन की वात तुम्हें ग़मगीन न करे। वेशक तमाम ग़लबा अल्लाह के लिए है, वह सुनने वाला जानने वाला है। (65)

याद रखो! वेशक जो आस्मानों में और ज़मीन में है अल्लाह के लिए है, और किसी की पैरवी (नहीं) करते वह लोग जो अल्लाह के सिवा शरीकों को पुकारते हैं मगर (सिर्फ) गुमान की पैरवी करते हैं, ओर वह सिर्फ अटकलें दौड़ाते हैं। (66)

वही है जिस ने बनाई तुम्हारे लिए रात ताकि तुम उस में सुकून हासिल करो और दिन रौशन, वेशक उस में सुनने वाले लोगों के लिए निशानियाँ हैं। (67)

वह कहते हैं अल्लाह ने बना लिया (अपना) बेटा। वह पाक है, वह वेनियाज़ है, उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है, तुम्हारे पास नहीं है उस के लिए कोई दलील, क्या तुम अल्लाह पर वह बात कहते हो जो तुम जानते नहीं? (68)

आप (स) कह दें, वेशक वह लोग जो अल्लाह पर झूट घड़ते हैं फ़लाह (दो ज़हान की कामयाबी) नहीं पाएंगे। (69)

दुनिया में कुछ फ़ाइदा है, फिर उन को हमारी तरफ़ लौटना है, फिर हम उन्हें शदीद अज़ाब (का मज़ा) चखाएंगे उस के बदले जो वह कुफ़ करते थे। (70)

और आप (स) उन्हें नूह (अ) का किस्सा पढ़ कर सुनाएं, जब उस ने अपनी कौम से कहा, ऐ मेरी कौम! अगर तुम पर गारां है मेरा क्रियाम और मेरा अल्लाह की आयतों से नसीहत करना, तो मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया, पस तुम और तुम्हारे शरीक अपना काम मुकर्रर (पक्का) कर लो (ताकि) फिर तुम्हें अपने काम पर कोई शुवाह न रहे, फिर मेरे साथ कर गुज़रो, और मुझे मोहलत न दो। (71)

फिर अगर तुम मुँह फेर लो तो मैं ने तुम से कोई अजर नहीं मांगा, मेरा अजर तो सिर्फ अल्लाह पर है, और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं रहूँ फरमावरदारों में से। (72) तो उन्होंने ने उसे (नूह अ) को झुटलाया, सो हम ने बचा लिया उसे और उन्हें जो उस के साथ कशती में थे, और हम ने उन्हें जाँनशीन बनाया, और उन लोगों को गर्क कर दिया जिन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया, सो देखो (उन लोगों का) अन्जाम कैसा हुआ? जिन्हें डराया गया था। (73)

फिर हम ने उस (नूह अ) के बाद कई रसूल उन की कौमों की तरफ भेजे तो वह उन के पास रौशन दलीलों के साथ आए, सो उन से न हुआ के वह ईमान ले आएँ उस (बात) पर जिसे वह उस से कब्ल झुटला चुके थे, इसी तरह हम हद से बढ़ने वालों के दिलों पर सुहर लगाते हैं। (74)

फिर हम ने भेजा उन के बाद मूसा (अ) और हारून (अ) को अपनी निशानियों के साथ फिरऔन और उस के सरदारों (दरवारियों) की तरफ, तो उन्होंने ने तकबुर किया और वह गुनाहगार लोग थे। (75)

तो जब उन के पास हमारी तरफ से हक पहुँचा तो वह कहने लगे, बेशक यह अलवत्ता खुला जादू है। (76) मूसा (अ) ने कहा, क्या तुम हक की निस्वत (ऐसा) कहते हो? जब वह तुम्हारे पास आगया, क्या यह जादू है? और जादूगर कामयाब नहीं होते। (77)

वह बोले क्या तू हमारे पास (इस लिए) आया है कि हमें उस से फेर दे जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया, और हो जाए तुम दोनों के लिए ज़मीन में बड़ाई (सरदारी मिल जाए) और हम तुम दोनों के मानने वालों में से नहीं। (78)

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ

तुम पर	गरां	अगर है	ऐ मेरी कौम	अपनी कौम से	जब उस ने कहा	नूह (अ)	खबर (किस्सा)	उन पर (उन्हें)	और पढ़ो
--------	------	--------	------------	-------------	--------------	---------	--------------	----------------	---------

مَقَامِي وَتَذَكِيرِي بَايْتِ اللَّهِ فَعَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوا

पस तुम मुकर्रर कर लो	मैं ने भरोसा किया	पस अल्लाह पर	अल्लाह की आयतों से	और मेरा नसीहत करना	मेरा क्रियाम
----------------------	-------------------	--------------	--------------------	--------------------	--------------

أَمْرَكُمْ وَشُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوا إِلَيَّ

मेरे साथ	तुम कर गुज़रो	फिर	कोई शुवाह	तुम पर	तुम्हारा काम	न रहे	फिर	और तुम्हारे शरीक	अपना काम
----------	---------------	-----	-----------	--------	--------------	-------	-----	------------------	----------

وَلَا تُنظِرُونِ (71) فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِي

मेरा अजर	तो-सिर्फ	कोई अजर	तो मैं ने नहीं मांगा तुम से	तुम मुँह फेर लो	फिर अगर	71	और मुझे मोहलत न दो
----------	----------	---------	-----------------------------	-----------------	---------	----	--------------------

إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ (72) فَكَذَّبُوهُ

तो उन्होंने ने उसे झुटलाया	72	फरमावरदार (जमा)	से	मैं रहूँ	कि	और मुझे हुक्म दिया गया	अल्लाह पर	मगर (सिर्फ)
----------------------------	----	-----------------	----	----------	----	------------------------	-----------	-------------

فَنَجَّيْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلِكِ وَجَعَلْنَاهُمْ خَلْفَ وَأَعْرَفْنَا

और हम ने गर्क कर दिया	जाँशीन	और हम ने बनाया उन्हें	कशती में	उस के साथ	और जो	सो हम ने बचा लिया उसे
-----------------------	--------	-----------------------	----------	-----------	-------	-----------------------

الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنذِرِينَ (73)

73	डराए गए लोग	अन्जाम	हुआ	कैसा	सो देखो	हमारी आयतों को	उन्होंने ने झुटलाया	वह लोग जो
----	-------------	--------	-----	------	---------	----------------	---------------------	-----------

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ

रौशन दलीलों के साथ	वह आए उन के पास	उन की कौम	तरफ	कई रसूल	उस के बाद	हम ने भेजे	फिर
--------------------	-----------------	-----------	-----	---------	-----------	------------	-----

فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ كَذَلِكَ نَطْبَعُ عَلَىٰ

पर	हम सुहर लगाते हैं	उसी तरह	उस से कब्ल	उस को	उन्होंने ने झुटलाया	उस पर जो	सो उन से न हुआ कि वह ईमान ले आएँ
----	-------------------	---------	------------	-------	---------------------	----------	----------------------------------

قُلُوبِ الْمُعْتَدِينَ (74) ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُوسَىٰ وَهَارُونَ إِلَىٰ

तरफ	और हारून (अ)	मूसा (अ)	उन के बाद	हम ने भेजा	फिर	74	हद से बढ़ने वाले	दिल (जमा)
-----	--------------	----------	-----------	------------	-----	----	------------------	-----------

فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ بِآيَاتِنَا فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُّجْرِمِينَ (75)

75	गुनाहगार (जमा)	लोग	और वह थे	तो उन्होंने ने तकबुर किया	अपनी निशानियों के साथ	उस के सरदार	फिरऔन
----	----------------	-----	----------	---------------------------	-----------------------	-------------	-------

فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ مُّبِينٌ (76)

76	खुला	अलवत्ता जादू	यह	बेशक	वह कहने लगे	हमारी तरफ	से	हक	आया उन के पास	तो जब
----	------	--------------	----	------	-------------	-----------	----	----	---------------	-------

قَالَ مُوسَىٰ أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَكُمْ أَسِحْرٌ هَذَا وَلَا يُفْلِحُ

और कामयाब नहीं होते	यह	क्या जादू	वह आगया तुम्हारे पास	हक के लिए (निस्वत) जब	क्या तुम कहते हो	मूसा (अ)	कहा
---------------------	----	-----------	----------------------	-----------------------	------------------	----------	-----

السَّحْرُونَ (77) قَالُوا أَجِئْنَا لِنُلْفِتَنَّا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا

उस पर अपने बाप दादा	पाया हम ने	उस से जो	कि फेर दे हमें	क्या तू आया हमारे पास	वह बोले	77	जादूगर
---------------------	------------	----------	----------------	-----------------------	---------	----	--------

وَتَكُونُونَ لَكُمْ الْكِبْرِيَاءَ فِي الْأَرْضِ وَمَا نَحْنُ لَكُمْ بِمُؤْمِنِينَ (78)

78	ईमान लाने वालों में से	तुम दोनों के लिए	हम	और नहीं	ज़मीन में	बड़ाई	तुम दोनों के लिए	और हो जाए
----	------------------------	------------------	----	---------	-----------	-------	------------------	-----------

وَقَالَ فِرْعَوْنُ أَتُونِي بِكُلِّ سِحْرِ عَلِيمٍ ﴿٧٩﴾ فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ											
जादूगर	आ गए	फिर जब	79	इल्म वाला	जादूगर	हर	ले आओ मेरे पास	फिरऔन	और कहा		
قَالَ لَهُمْ مُوسَى أَلْقُوا مَا أَنْتُمْ مُلْقُونَ ﴿٨٠﴾ فَلَمَّا أَلْقَوْا قَالَ مُوسَى											
मूसा (अ)	कहा	उन्होंने ने डाला	फिर जब	80	डालने वाले हो	तुम	जो	तुम डालो	मूसा (अ)	उन से	कहा
مَا جِئْتُمْ بِهِ السَّحَرُ إِنَّ اللَّهَ سَيُبْطِلُهُ إِنَّ اللَّهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ											
काम	नहीं दुरुस्त करता	वेशक अल्लाह	अभी वातिल कर देगा उसे	वेशक अल्लाह	जादू	तुम लाए हो	जो				
الْمُفْسِدِينَ ﴿٨١﴾ وَيُحِقُّ اللَّهُ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ﴿٨٢﴾											
82	मुजरिम (गुनाहगार)	नापसन्द करें	ख्वाह	अपने हुक्म से	हक	अल्लाह	और हक कर देगा	81	फसाद करने वाले		
فَمَا أَمَّنْ لِمُوسَى إِلَّا ذُرِيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهِ عَلَى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ											
फिरऔन	से (के)	खौफ की वजह से	उस की कौम	से	चन्द लड़के	मगर	मूसा (अ) पर	ईमान लाया	सो न		
وَمَلَأِيَهُمْ أَنْ يَفْتِنَهُمْ وَإِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي الْأَرْضِ وَإِنَّهُ											
और वेशक वह	ज़मीन	में	सरकश	फिरऔन	और वेशक	वह आफत में डाले उन्हें	कि	और उन के सरदार			
لَمِنَ الْمُسْرِفِينَ ﴿٨٣﴾ وَقَالَ مُوسَى يَقَوْمِ إِن كُنْتُمْ آمَنْتُمْ بِاللَّهِ											
अल्लाह पर	ईमान लाए	तुम	अगर	ऐ मेरी कौम	मूसा (अ)	और कहा	83	हद से बढ़ने वाले	अलबत्ता-से		
فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوا إِن كُنْتُمْ مُسْلِمِينَ ﴿٨٤﴾ فَقَالُوا عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا											
हम ने भरोसा किया	अल्लाह पर	तो उन्होंने ने कहा	84	फरमांवरदार (जमा)	तुम हो	अगर	भरोसा करो	तो उस पर			
رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٨٥﴾ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِّن											
से	अपनी रहमत से	और हमें छुड़ादे	85	ज़ालिम (जमा)	कौम का	तख़्ता-ए-मशक	न बना हमें	ऐ हमारे रब			
الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٨٦﴾ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ وَأَخِيهِ أَنْ تَبَوَّأَا											
कि घर बनाओ	और उस का भाई	मूसा (अ)	तरफ	और हम ने वहि भेजी	86	काफिर (जमा)	कौम				
لِقَوْمِكَمَا بِمِصْرَ بُيُوتًا وَاجْعَلُوا بُيُوتَكُمْ قِبْلَةً وَأَقِيمُوا											
और काइम करो	किबला रू	अपने घर	और बनाओ	घर	मिसर में	अपनी कौम के लिए					
الصَّلَاةَ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٧﴾ وَقَالَ مُوسَىٰ رَبَّنَا إِنَّكَ											
वेशक तू	ऐ हमारे रब	मूसा (अ)	और कहा	87	मोमिनीन	और खुशख़बरी दो	नमाज़				
آتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَآهَ زِينَةً وَأَمْوَالًا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا											
दुनिया की ज़िन्दगी	में	और माल (जमा)	ज़ीनत	और उस के सरदार	फिरऔन	तू ने दिए					
رَبَّنَا لِيُضِلُّوا عَن سَبِيلِكَ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلَىٰ أَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ											
और मुहर लगा दे	उन के माल	पर	तू मिटा दे	ऐ हमारे रब	तेरा रास्ता	से	कि वह गुमराह करें	ऐ हमारे रब			
عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوا حَتَّىٰ يَرَوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٨٨﴾											
88	दर्दनाक	अज़ाब	वह देख लें	यहां तक कि	कि वह ईमान न लाएं	उन के दिलों पर					

और फिरऔन ने कहा मेरे पास हर इल्म वाला जादूगर ले आओ। (79) फिर जब जादूगर आगए तो मूसा (अ) ने उन से कहा तुम डालो, जो डालने वाले हो (तुम्हें डालना है)। (80) फिर उन्होंने ने डाला तो मूसा (अ) ने कहा तुम जो लाए हो जादू है, वेशक अल्लाह अभी उसे वातिल करदेगा, वेशक अल्लाह फ़साद करने वालों के काम दुरुस्त नहीं करता। (81) और अल्लाह हक़ को अपने हुक्म से हक़ (साबित) कर देगा अगरचे गुनाहगार नापसन्द करें। (82) सो मूसा (अ) पर कोई ईमान न लाया मगर उस की कौम के चन्द लड़के खौफ़ की वजह से फिरऔन और उन के सरदारों के, कि वह उन्हें आफत में न डाल दे, और वेशक फिरऔन ज़मीन (मुल्क) में सरकश था, और वेशक वह हद से बढ़ने वालों में से था। (83) और मूसा (अ) ने कहा ऐ मेरी कौम! अगर तुम अल्लाह पर ईमान लाए हो तो उसी पर भरोसा करो अगर तुम फ़रमांवरदार हो। (84) तो उन्होंने ने कहा हम ने अल्लाह पर भरोसा किया, ऐ हमारे रब! हमें न बना ज़ालिमों की कौम का तख़्ता-ए-मशक। (85) और हमें अपनी रहमत से काफ़िरों की कौम से छुड़ादे। (86) और हम ने मूसा (अ) और उस के भाई की तरफ़ वहि भेजी कि अपनी कौम के लिए मिसर में घर बनाओ और बनाओ अपने घर किबला रू (नमाज़ की जगह), और नमाज़ काइम करो, और मोमिनों को खुशख़बरी दो। (87) और मूसा (अ) ने कहा ऐ हमारे रब! वेशक तू ने फिरऔन और उस के लशकर को दुनिया की ज़िन्दगी में ज़ीनत और बहुत से माल दिए हैं, ऐ हमारे रब! कि वह तेरे रास्ते से गुमराह करें, ऐ हमारे रब! उन के माल मिटा दे, और उन के दिलों पर मुहर लगा दे कि वह ईमान न लाएं यहां तक कि दर्दनाक अज़ाब देख लें। (88)

उस ने फरमाया तुम्हारी दुआ कुबूल हो चुकी है सो तुम दोनों साबित कदम रहो, और उन लोगों की राह न चलना जो नावाक़िफ़ हैं। (89) और हम ने बनी इस्राईल को पार कर दिया दर्या से, पस फिरऔन और उस के लशकर ने सरकशी और ज़ियादती से उन का पीछा किया, यहां तक कि जब उसको सरक़ाबी ने आ पकड़ा वह कहने लगा कि मैं ईमान लाया कि उस के सिवा कोई माबूद नहीं जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाए और मैं हूँ फरमांबरदारों में से। (90) क्या अब? (ईमान की बात करता है) और अलबतता पहले तो नाफ़रमानी करता रहा और तू फ़साद करने वालों में से रहा। (91) सो आज हम तुझे तेरे बदन से बचाएंगे (गरक़ नहीं करेंगे) ताकि तू (तेरी लाश) उन के लिए जो तेरे बाद आए (इब्रत की) एक निशानी रहे, और वेशक लोगों में से अक़सर हमारी निशानियों से राफ़िल है। (92) और हम ने बनी इस्राईल को अच्छा ठिकाना दिया, और हम ने उन्हें रिज़क़ दिया पाकीज़ा चीज़ों से, सो उन्होंने ने इख़तिलाफ़ न किया यहां तक कि उन के पास इल्म आगया, वेशक तुम्हारा रब उन के दरमियान फ़ैसला करेगा उन के दरमियान फ़ैसला करेगा रोज़े कियामत जिस (बात) में वह इख़तिलाफ़ करते थे। (93) पस अगर तू उस (के बारे) में शक़ में हो तो हम ने उतारा तेरी तरफ़, तो उन लोगों से पूछ जो तुझ से पहले किताब पढ़ते हैं, तहकीक़ तेरे पास हक़ आगया है तुम्हारे रब की तरफ़ से, पस शक़ करने वालों से न होना। (94) और न उन लोगों से होना जिन्होंने ने झुटलाया अल्लाह की आयतों को, फिर तुम ख़सारा पाने वालों से हो जाओ। (95) वेशक जिन लोगों पर तुम्हारे रब की बात साबित हो गई वह ईमान न लाएंगे। (96) अगरचे उन के पास हर निशानी आजाए, यहां तक कि वह दर्दनाक अज़ाब देख लें। (97)

قَالَ قَدْ أُجِيبَتْ دَعْوَتُكُمْ فَأَسْتَقِيمَا وَلَا تَتَّبِعَنَّ سَبِيلَ						
रह	और न चलना	सो तुम दोनों साबित कदम रहो	तुम्हारी दुआ	कुबूल हो चुकी	उस ने फरमाया	
الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٨٩﴾ وَجَوَزْنَا بِبَنِي إِسْرَائِيلَ الْبَحْرَ فَأَتَبَعَهُمْ						
पस पीछा किया उन का	दर्या	बनी इस्राईल को	और हम ने पार कर दिया	89	नावाक़िफ़ है	उन लोगों की जो
فِرْعَوْنَ وَجُنُودَهُ بَعِيًّا وَعَادُوا حَتَّىٰ إِذَا أَدْرَكَهُ الْعَرْقُ قَالَ						
वह कहने लगा	गरक़ाबी	जब उसे आ पकड़ा	यहां तक कि	और ज़ियादती	सरकशी	और उस का लशकर
أَمِنْتُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا الَّذِي آمَنْتُ بِهِ بَنُو إِسْرَائِيلَ						
बनी इस्राईल	उस पर	वह जिस पर ईमान लाए	सिवाए	माबूद नहीं	कि वह	मैं ईमान लाया
وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٩٠﴾ أَلَّنْ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنْ						
से	और तू रहा	पहले	और अलबतता तू नाफ़रमानी करता रहा	क्या अब	90	फरमांबरदार (जमा)
الْمُفْسِدِينَ ﴿٩١﴾ فَالْيَوْمَ نُنَجِّكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُونَ لِمَنْ خَلَفَكَ						
तेरे बाद आए	उन के लिए जो	ताकि तू रहे	तेरे बदन से	हम तुझे बचा लेंगे	सो आज	91
أَيَّةً وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ عَنِ ابْتِنَا لَغَفُلُونَ ﴿٩٢﴾ وَلَقَدْ بَوَّأْنَا						
और अलबतता हम ने ठिकाना दिया	92	राफ़िल है	हमारी निशानियां	से	लोगों में से	अक़सर
بَنِي إِسْرَائِيلَ مَبَوَّأً صِدْقٍ وَرَزَقْنَاهُمْ مِّنَ الطَّيِّبَاتِ						
पाकीज़ा चीज़ों	से	और हम ने रिज़क़ दिया उन्हें	अच्छा	ठिकाना	बनी इस्राईल	
فَمَا اخْتَلَفُوا حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْعِلْمُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ						
उन के दरमियान	फ़ैसला करेगा	तुम्हारा रब	वेशक	इल्म	आगया उन के पास	यहां तक कि
يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٩٣﴾ فَإِنْ كُنْتَ فِي شَكِّ						
में शक़ में	तू है	पस अगर	93	वह इख़तिलाफ़ करते	उस में	वह थे
مِمَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ فَسَلِ الَّذِينَ يَقرءُونَ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكَ						
तुम से पहले	किताब	पढ़ते हैं	वह लोग जो	तो पूछ लें	तेरी तरफ	हम ने उतारा
لَقَدْ جَاءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿٩٤﴾						
94	शक़ करने वाले	से	पस न होना	तेरा रब	से	हक़
وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ فَتَكُونُونَ مِنَ						
से	फिर तू हो जाए	अल्लाह	आयतों को	उन्होंने ने झुटलाया	वह लोग जो	से
الْخٰسِرِينَ ﴿٩٥﴾ إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ						
तेरा रब	वात	उन पर	साबित हो गई	वेशक वह लोग जो	95	ख़सारा पाने वाले
لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٩٦﴾ وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ حَتَّىٰ يَرَوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٩٧﴾						
97	दर्दनाक	अज़ाब	वह देख लें	यहां तक कि	हर निशानी	आजाए उन के पास
96						
वह ईमान न लाएंगे						

9  
12

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ أَمَنَتْ فَتَنَفَعَهَا إِيْمَانُهَا إِلَّا قَوْمٌ يُؤْنَسُ لَمَّا								
जब	कौम यूनस (अ)	मगर	उस का ईमान	तो नफ़ा देता उस को	कि वह ईमान लाती	कोई बस्ती	होई	पस क्यों न
أَمْثُوا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنَاهُمْ								
और नफ़ा पहुँचाया उन्हें	दुनिया की ज़िन्दगी	में	रुसवाई	अज़ाब	उन से	हम ने उठा लिया	वह ईमान लाए	
إِلَىٰ حِينٍ ۙ (98) وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَأَمَنَّ مِنَ فِي الْأَرْضِ كُلَّهُمْ جَمِيعًا								
वह सब के सब	ज़मीन में	जो	अलबत्ता ईमान ले आते	तेरा रब	चाहता	और अगर	98	एक मुददत तक
أَفَأَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتَّىٰ يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۙ (99) وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ								
किसी शख्स के लिए	और नहीं है	99	मोमिन (जमा)	वह हो जाए	यहां तक कि	लोग	मजबूर करेगा	पस क्या तू
أَنْ تُؤْمِنَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ								
वह लोग जो	पर	गन्दगी	और वह डालता है	हुक्म इलाही	मगर (बग़ैर)	ईमान लाए	कि	
لَا يَعْقِلُونَ ۗ (100) قُلْ أَنْظِرُوا مَاذَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا تُغْنِي								
और नहीं फाइदा देती	और ज़मीन	आस्मानों	में	क्या है	देखो	आप कह दें	100	अक़ल नहीं रखते
الْآيَاتِ وَالنُّذُرِ عَنْ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ۗ (101) فَهَلْ يَنْتَظِرُونَ إِلَّا								
मगर	वह इन्तिज़ार करते हैं	तो क्या	101	वह नहीं मानते	लोग	से	और डराने वाले	निशानियां
مِثْلَ أَيَّامِ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ قُلْ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ								
तुम्हारे साथ	बेशक मैं	पस तुम इन्तिज़ार करो	आप (स) कह दें	उन से पहले	जो गुज़र चुके	वह लोग	दिन (वाक़िआत)	जैसे
مِّنَ الْمُنتَظِرِينَ ۗ (102) ثُمَّ نُنَجِّي رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا كَذَلِكَ								
उसी तरह	वह ईमान लाए	और वह लोग जो	अपने रसूल (जमा)	हम बचालेते हैं	फिर	102	इन्तिज़ार करने वाले	से
حَقًّا عَلَيْنَا نُنَجِّ الْمُؤْمِنِينَ ۗ (103) قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنْتُمْ								
अगर तुम हो	ऐ लोगो!	आप (स) कह दें	103	मोमिनीन	हम बचालेंगे	हक हम पर		
فِي شَكٍّ مِّن دِينِي فَلَا أَعْبُدُ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ								
अल्लाह	सिवाए	तुम पूजते हो	वह जो कि	तो मैं इबादत नहीं करता	मेरे दिन	से	किसी शक में	
وَلَكِن أَعْبُدُ اللَّهَ الَّذِي يَتَوَفَّكُم ۗ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ								
से	मैं हूँ	कि	और मुझे हुक्म दिया गया	तुम्हें उठालेता है	वह जो	मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ	और लेकिन	
الْمُؤْمِنِينَ ۗ (104) وَأَنْ أَقِمَّ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا ۗ وَلَا تَكُونَنَّ								
और हरगिज़ न होना	सब से सुँह मोड़ कर	दिन के लिए	अपना सुँह	सीधा रख	और यह कि	104	मोमिनीन	
مِّنَ الْمُشْرِكِينَ ۗ (105) وَلَا تَدْعُ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ								
न तुझे नफ़ा दे	जो	अल्लाह	सिवाए	और न पुकार	105	मुश्रिकीन	से	
وَلَا يَضُرُّكَ ۗ فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذَا مِّنَ الظَّالِمِينَ ۗ (106)								
106	ज़ालिम (जमा)	से	उस वक़्त	तो बेशक तू	तू ने किया	फिर अगर	नुक्सान पहुँचाए	और न

पस क्यों न हुई कोई बस्ती कि वह ईमान लाती तो उस को उस का ईमान नफ़ा देता, मगर यूनस(अ) की कौम (कि वह ईमान ले आई), जब वह ईमान लाए तो हम ने उन से दुनिया की ज़िन्दगी में रुसवाई का अज़ाब उठा लिया, और उन्हें एक मुददत तक नफ़ा पहुँचाया। (98) और अगर चाहता तेरा रब अलबत्ता जो ज़मीन में है सब के सब ईमान ले आते, पस क्या तू लोगों को मजबूर करेगा? यहां तक कि वह मोमिन हो जाए। (99) और किसी शख्स के लिए (अपने इख़्तियार में) नहीं कि वह अल्लाह के हुक्म के बग़ैर ईमान ले आए, और वह डालता है (कुफ़ की) गन्दगी उन लोगों पर जो अक़ल नहीं रखते। (100) आप (स) कह दें देखो क्या कुछ है? आस्मानों में और ज़मीन में। और निशानियां और डराने वाले (रसूल) उन लोगों को फ़ाइदा नहीं देते जो नहीं मानते। (101) तो क्या वह इन्तिज़ार कर रहे हैं मगर उन्हीं लोगों जैसे वाक़िआत का जो उन से पहले गुज़र चुके, आप (स) कह दें पस तुम इन्तिज़ार करो बेशक मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों से हूँ। (102) फिर हम बचा लेते हैं अपने रसूलों को, और उसी तरह उन को जो ईमान लाए, हम पर हक़ (ज़िम्मा) है हम बचालेंगे मोमिनों को। (103) आप (स) कह दें, ऐ लोगो! अगर तुम मेरे दिन (के मुतअल्लिक) किसी शक में हो तो मैं इबादत नहीं करता उन की जिन को तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो, लेकिन मैं उस अल्लाह की इबादत करता हूँ जो तुम्हें (दुनिया से) उठा लेता है, और मुझे हुक्म दिया गया कि मोमिनों में से रहूँ। (104) और यह कि अपना सुँह सब से मोड़ कर दिन के लिए सीधा रख, और हरगिज़ मुश्रिकों में से न होना। (105) और अल्लाह के सिवा उसे न पुकार जो न तुझे नफ़ा दे सके, और न कोई नुक़सान पहुँचा सके, फिर अगर तू ने (ऐसा) किया तो उस वक़्त तू बेशक ज़ालिमों में से होगा। (106)

और अगर अल्लाह तुझे पहुँचाए कोई नुकसान तो उस के सिवा कोई उस को हटाने वाला नहीं, और अगर वह तेरा भला चाहे तो कोई उस के फज़ल को रोकने वाला नहीं, वह पहुँचाता है उस को अपने बन्दों में से जिस को चाहता है, और वह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (107)

आप (स) कह दें, ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ पहुँच चुका, तो जिस ने हिदायत पाई सिर्फ़ अपनी जान के लिए हिदायत पाई, और जो गुमराह हुआ तो सिर्फ़ अपने बुरे को गुमराह हुआ, और मैं तुम पर मुख्तार नहीं हूँ। (108)

और (उस की) पैरवी करो जो तुम्हारी तरफ़ बहि हुई है, और सबर करो यहां तक कि अल्लाह फ़ैसला कर दे, और वह बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है। (109)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है अलिफ़-लाम-रा, यह किताब है, इस की आयात मज़बूत की गई, फिर तफ़सील की गई हिक्मत वाले, ख़बरदार के पास से। (1)

यह कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, बेशक मैं उस (की तरफ़) से तुम्हारे लिए डराने वाला और खुशख़बरी देने वाला हूँ। (2)

और यह कि मग़फ़िरत तलब करो अपने रब की, फिर उस की तरफ़ रुज़ू करो वह तुम्हें फ़ाइदा पहुँचाएगा अच्छा सामान, एक मुक़र्रर वक़्त तक, और देगा हर फज़ल वाले को अपना फज़ल, और अगर तुम फिर जाओ तो बेशक मैं तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ। (3)

अल्लाह की तरफ़ तुम्हें लौटना है, और वह हर चीज़ पर कुदरत वाला है। (4) याद रखो! बेशक वह अपने सीने दोहरे करते हैं ताकि उस (अल्लाह) से छुपालें, याद रखो! जब वह अपने कपड़े पहनते हैं वह जानता है जो वह छुपाते हैं और जो वह ज़ाहिर करते हैं, बेशक वह दिलों के भेद जानने वाला है। (5)

وَأَنْ يَّمْسَسَكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ وَإِنْ يُرِدْكَ									
तेरा चाहे	और अगर	उस के सिवा	उस का	तो नहीं हटाने वाला	कोई नुकसान	अल्लाह	पहुँचाए तुझे	और अगर	
بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ لِفَضْلِهِ يُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَهُوَ									
और वह	अपने बन्दे	से	चाहता है	जिसे	उस को	वह पहुँचाता है	उस के फज़ल को	तो नहीं कोई रोकने वाला	भला
الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٧﴾ قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ الْحَقُّ مِنْ									
से	हक़	पहुँच चुका तुम्हारे पास	ऐ लोगो!	आप (स) कह दें	107	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला		
رَبِّكُمْ فَمَنْ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ وَمَنْ ضَلَّٰ فَإِنَّمَا									
तो सिर्फ़	गुमराह हुआ	और जो	अपनी जान के लिए	उस ने हिदायत पाई	तो सिर्फ़	हिदायत पाई	तो जो	तुम्हारा रब	
يَضِلُّ عَلَيْهَا وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ﴿١٠٨﴾ وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ									
वहि होती है	जो	और पैरवी करो	108	मुख्तार	तुम पर	मैं	और नहीं	उस पर (बुरे को)	वह गुमराह हुआ
إِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ ۗ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ﴿١٠٩﴾									
109	फ़ैसला करने वाला	बेहतरीन	और वह	अल्लाह	फ़ैसला कर दे	यहां तक कि	और सबर करो	तुम्हारी तरफ़	
آيَاتِهَا ١٢٣ ﴿١١﴾ سُورَةُ هُودٍ ﴿١١﴾ ﴿١٠٩﴾ رُكُوعَاتُهَا ١٠									
(11) सूरह हूद हूद (अ) आयत 123									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है									
الرَّبِّ كَتَبَ أَحْكَمَتْ آيَتُهُ ثُمَّ فَصَّلَتْ مِنْ لَدُنْ حَكِيمٍ خَبِيرٍ ﴿١﴾									
1	ख़बरदार	हिक्मत वाले	पास से	तफ़सील की गई	फिर	इस की आयात	मज़बूत की गई	यह किताब	अलिफ़ लाम रा
إِلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۗ إِنَّنِي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ ﴿٢﴾ وَإِنْ اسْتَفْهَرُوا									
मग़फ़िरत तलब करो	और यह कि	2	और खुशख़बरी देने वाला	डराने वाला	उस से	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	अल्लाह के सिवा	इबादत करो यह कि न
رَبِّكُمْ ثُمَّ تَوَبُّوا إِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَتَاعًا حَسَنًا إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى									
मुक़र्रर	वक़्त तक	तक	अच्छी	मताज़	वह फ़ाइदा पहुँचाएगा तुम्हें	उस की तरफ़ रुज़ू करो	फिर	अपना रब	
وَيُؤْتِ كُلَّ ذِي فَضْلٍ فَضْلَهُ ۗ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ									
अज़ाब	तुम पर	डरता हूँ	तो बेशक मैं	फिर जाओ	और अगर तुम	अपना फज़ल	फज़ल वाला	हर और देगा	
يَوْمٍ كَبِيرٍ ﴿٣﴾ إِلَىٰ اللَّهُ مَرْجِعُكُمْ ۗ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤﴾ إِلَّا									
याद रखो	4	कुदरत वाला	हर शै	पर	और वह	लौटना है तुम्हें	अल्लाह की तरफ़	3	बड़ा एक दिन
إِنَّهُمْ يَشْتُونَ صُدُورَهُمْ لِيَسْتَخْفُوا مِنْهُ ۗ إِلَّا حِينَ يَسْتَعْشُونُ نِيَابَهُمْ ۗ									
अपने कपड़े	पहनते हैं	जब	याद रखो	उस से	ताकि छुपालें	अपने सीने	दोहरे करते हैं	बेशक वह	
يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۗ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٥﴾									
5	दिलों के भेद	जानने वाला	बेशक वह	और जो वह ज़ाहिर करते हैं	जो वह छुपाते हैं	वह जानता है			

11  
11



وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا									
और नहीं	से (कोई)	चलने वाला	में (पर)	ज़मीन	मगर	पर	अल्लाह	उस का रिज़क़	
وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا كُلُّ فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ﴿٦﴾									
और वह जानता है	उस का ठिकाना	और उस के सोंपे जाने की जगह	सब कुछ	में	रौशन किताब	6			
وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا وَلَئِنْ قُلْتُمْ إِنَّكُمْ مَبْعُوثُونَ مِنْ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُبِينٌ ﴿٧﴾									
और वही	जो - जिस	पैदा किया	आस्मान (जमा)	और ज़मीन	में	छः (6) दिन	और था		
उस का अर्थ	पानी पर	ताकि तुम्हें आजमाए	तुम में कौन	बेहतर	अमल में	और अगर	आप कहें		
إِنَّكُمْ مَبْعُوثُونَ مِنْ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُبِينٌ ﴿٧﴾									
कि तुम	उठाए जाओगे	बाद	मौत - मरना	तो ज़रूर कहेंगे वह	वह लोग जो	उन्होंने न कुफ़ किया	नहीं यह		
मगर (सिर्फ)	जादू	खुला	7	और अगर	हम रोक रखें	उन से	अज़ाब	तक	एक मुदत
مَعْدُودَةٍ لَيَقُولَنَّ مَا يَحْسِبُهُ إِلَّا يَوْمَ يَأْتِيهِمْ لَيْسَ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٨﴾									
गिनी हुई - मुएयन	तो वह ज़रूर कहेंगे	क्या रोक रही है उसे	याद रखो	जिस दिन	उन पर आएगा	न	टाला जाएगा		
उन से	और घेरलेगा	उन्हें	जिस	थे	उस का	मज़ाक़ उड़ाते	8	और अगर	हम चखादें
إِنَّ الْإِنْسَانَ مِمَّا رَحِمَةً ثُمَّ نَزَعْنَاهَا مِنْهُ إِنَّهُ لَكَيْفُوسٌ كَفُورٌ ﴿٩﴾									
इन्सान को	अपनी तरफ़ से	कोई रहमत	फिर	हम छीन लें वह	उस से	वेशक वह	अलवत्ता मायूस	नाशुक्रा	9
और अगर	उसे चखादें	उसे पहुँची	नेमत (आराम)	सख्ती के बाद	उसे पहुँची	तो वह ज़रूर कहेगा	जाती रही		
السَّيِّئَاتِ عَنِّي إِنَّهُ لَفَرِحٌ فَخُورٌ ﴿١٠﴾									
बुराइयां	मुझ से	वेशक वह	इतराने वाला	शेखीख़ोर	10	मगर	जिन लोगों ने सब्र किया		
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿١١﴾									
और अमल किए	नेक	यही लोग	उन के लिए	बख़्शिश	और सवाब	बड़ा	11		
فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضُ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَضَائِقٌ بِهِ									
तो शायद (क्या) तुम	छोड़ दोगे	कुछ हिस्सा	जो	बहि किया गया	तेरी तरफ़	और तंग होगा	उस से		
صَدْرِكَ أَنْ يَقُولُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ أَوْ جَاءَ مَعَهُ									
तेरा सीना (दिल)	कि वह कहते हैं	क्यों न	उतरा	उस पर	खज़ाना	या	आया	उस के साथ	
مَلِكٌ إِنَّمَا أَنْتَ نَذِيرٌ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ﴿١٢﴾									
फरिश्ता	इसके सिवा नहीं	कि तुम	डराने वाले	और अल्लाह	पर	हर शै	इख़्तियार रखने वाला	12	

और कोई ज़मीन पर चलने (फिरने) वाला नहीं, मगर उस का रिज़क़ अल्लाह पर (अल्लाह के ज़िम्मे) है, और वह जानता है उस का ठिकाना और उस के सोंपे जाने की जगह, सब कुछ रौशन किताब (लौहे महफूज़) में है। (6)

और वही है जिस ने पैदा किए आस्मान और ज़मीन छः दिन में, और उस का अर्थ पानी पर था, ताकि तुम्हें वह आजमाए कि तुम में कौन बेहतर है अमल में? और अगर आप (स) कहें कि तुम मरने के बाद उठाए जाओगे तो वह लोग ज़रूर कहेंगे जिन्होंने न कुफ़ किया कि यह सिर्फ़ खुला जादू है। (7)

और अगर हम उन से अज़ाब रोक रखें एक मुदत मुएयन तक वह ज़रूर कहेंगे क्या चीज़ उसे रोक रही है? याद रखो! जिस दिन उन पर (अज़ाब) आएगा उन से न टाला जाएगा, और उन्हें घेर लेगा जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (8)

और अगर हम इन्सान को अपनी तरफ़ से किसी रहमत का मज़ा चखादें फिर वह उस से छीन लें, तो वेशक वह मायूस, नाशुक्रा हो जाता है। (9)

और अगर हम उसे सख्ती के बाद आराम चखा दें जो उसे पहुँची हो तो वह ज़रूर कहेगा मुझ से बुराइयां जाती रहीं, वेशक वह इतराने वाला शेखी ख़ोर है। (10)

मगर जिन लोगों ने सब्र किया और नेक अमल किए यही लोग हैं जिन के लिए बख़्शिश और बड़ा सवाब है। (11)

तो क्या तुम छोड़ दोगे (उस का) कुछ हिस्सा जो तुम्हारी तरफ़ बहि किया गया है, और उस से तुम्हारा दिल तंग होगा कि वह कहते हैं कि उस पर क्यों न उतरा कोई खज़ाना या उस के (साथ) फ़रिश्ता (क्यों न) आया? इस के सिवा नहीं कि तुम डराने वाले हो और अल्लाह हर शै पर इख़्तियार रखने वाला है। (12)

क्या वह कहते हैं? कि उस ने इस (कुरआन) को खुद घड़ लिया है, आप (स) कह दें तो तुम भी इस जैसी दस (10) सूरतें घड़ी हुईं ले आओ और जिस को तुम (मदद के लिए) बुला सको बुला लो अल्लाह के सिवा, अगर तुम सच्चे हो। (13)

फिर अगर वह तुम्हारे (उस चैलेंज का) जवाब न दे सकें तो जान लो कि यह तो अल्लाह के इल्म से नाज़िल किया गया है, और यह कि उस के सिवा कोई मावूद नहीं, पस क्या तुम इस्लाम लाते हो? (14) जो कोई चाहता है दुनिया की जिन्दगी और उस की ज़ीनत, हम उन के लिए उन के अमल इस (दुनिया) में पूरे कर देंगे और उस में उन की कमी न की जाएगी। (15) यही लोग हैं जिन के लिए आखिरत में आग के सिवा कुछ नहीं, और अकारत गया जो इस (दुनिया) में उन्होंने ने किया और जो वह करते थे नावूद हुए। (16)

पस क्या (यह उस के बराबर है) जो अपने रब के खुले रास्ते पर हो और उस के साथ उस (अल्लाह की तरफ़) से गवाह हो, और उस से पहले मूसा (अ) की किताब इमाम (रहनुमा) और रहमत (थी) यही लोग इस (कुरआन) पर ईमान लाते हैं और गिरोहों में से जो इस का मुन्किर हो तो दोज़ख़ उस का ठिकाना है, पस तू शक में न हो इस से, वेशक वह तेरे रब (की तरफ़) से हक़ है, लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (17) और कौन है उस से बढ़ कर ज़ालिम? जो अल्लाह पर झूट बान्धे, यह लोग अपने रब के सामने पेश किए जाएंगे और गवाह कहेंगे कि यही हैं जिन्होंने अपने रब पर झूट बोला, याद रखो! ज़ालिमों पर अल्लाह की फटकार है। (18)

जो लोग अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, और उस में कज़ी ढूँडते हैं, और वह आखिरत के मुन्किर हैं। (19)

<p>أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ سُوْرٍ مِّثْلِهِ مُفْتَرِيَاتٍ</p>							
घड़ी हुई	इस जैसी	दस सूरतें	तो तुम ले आओ	आप (स) कहें	उस को खुद घड़ लिया है	क्या वह कहते हैं	
<p>وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٣﴾</p>							
13	सच्चे	हो	अगर तुम	अल्लाह	सिवाए	जिस को तुम बुला सको	और तुम बुला लो
<p>فَالَمْ يَسْتَجِيبُوا لَكُمْ فَأَعْلَمُوا أَنَّمَا أُنزِلَ بِعِلْمِ اللَّهِ وَأَنْ لَا إِلَهَ</p>							
कोई मावूद नहीं	और यह कि	अल्लाह के इल्म से	नाज़िल किया गया है	कि यह तो	तो जान लो	तुम्हारा	फिर अगर वह जवाब न दे सकें
<p>إِلَّا هُوَ فَهَلْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ﴿١٤﴾ مَن كَانَ يُرِيدُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا</p>							
दुनिया कि जिन्दगी	चाहता है	जो	14	तुम इस्लाम लाते हो	पस क्या	उस के सिवा	
<p>وَزِينَتَهَا نُوْفٍ إِلَيْهِمْ أَعْمَالُهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ﴿١٥﴾</p>							
15	कमी किए जाएंगे (नुक्सान न होगा)	न	इस में	और वह	इस में	उन के अमल	उन के लिए
हम पूरा कर देंगे	और उस की ज़ीनत						
<p>أُولَئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ وَحَبِطَ مَا</p>							
जो	और अकारत गया	आग के सिवा	आखिरत में	उन के लिए	वह जो कि	यही लोग	
<p>صَنَعُوا فِيهَا وَبِطُلٌ مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾ أَفَمَن كَانَ عَلَىٰ</p>							
पर	हो	पस क्या जो	16	वह करते थे	जो	और नावूद हुए	उस में
उन्होंने ने किया							
<p>بَيْنَةٍ مِّن رَّبِّهِ وَيَتْلُوهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِن قَبْلِهِ كُتِبَ مُوسَىٰ</p>							
मूसा (अ) की किताब	उस से पहले	और	उस से	गवाह	और उस के साथ हो	अपने रब के	खुला रास्ता
<p>إِمَامًا وَرَحْمَةً أُولَئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَمَن يَكْفُرْ بِهِ مِّن</p>							
से	मुन्किर हो इस का	और जो	उस पर	ईमान लाते हैं	यही लोग	और रहमत	इमाम
<p>الْأَحْزَابِ فَاَلْتَأْتُوا مَوْعِدَهُ فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ إِنَّهُ الْحَقُّ</p>							
वेशक वह हक़	उस से	शक में	पस तू न हो	तो आग (दोज़ख़) उस का ठिकाना	गिरोहों में		
<p>مِّن رَّبِّكَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٧﴾ وَمَن أَظْلَمُ</p>							
सब से बड़ा ज़ालिम	और कौन	17	ईमान नहीं लाते	अक्सर लोग	और लेकिन	तेरे रब से	
<p>مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أُولَئِكَ يُعْرَضُونَ عَلَىٰ رَبِّهِمْ</p>							
अपने रब के सामने	पेश किए जाएंगे	यह लोग	झूट	अल्लाह पर	बान्धे	उस से जो	
<p>وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ هَؤُلَاءِ الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ أَلَا</p>							
याद रखो	अपने रब पर	झूट बोला	वह जिन्होंने ने	यही है	गवाह (जमा)	और वह कहेंगे	
<p>لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿١٨﴾ الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ</p>							
अल्लाह का रास्ता	से	रोकते हैं	वह लोग जो	18	ज़ालिम (जमा)	पर	अल्लाह की फटकार
<p>وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَفَرُونَ ﴿١٩﴾</p>							
19	मुन्किर (जमा)	वह	आखिरत से	और वह	कज़ी	और उस में ढूँडते हैं	

أُولَئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ							
उन के लिए	और नहीं है	जमीन में	आजिज़ करने वाले, थकाने वाले	नहीं है	यह लोग		
مِّنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَآءُ يُضَعْفُ لَهُمُ الْعَذَابُ مَا							
न	अज़ाब	उन के लिए	दुगना	हिमायती	कोई	अल्लाह	सिवा से
كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوا يُبْصِرُونَ ﴿٢٠﴾ أُولَئِكَ الَّذِينَ							
वह जिन्होंने ने	यही लोग	20	वह देखते थे	और न	सुनना	वह ताक़त रखते थे	
خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢١﴾ لَا جَرَمَ							
शक नहीं	21	वह इफतिरा करते थे (झूट बान्धते थे)	जो	उन से	और गुम हो गया	अपनी जानों का (अपना)	नुक्सान किया
أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْآخَسِرُونَ ﴿٢٢﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا							
और उन्होंने ने अमल किए	जो लोग ईमान लाए	बेशक	22	सब से ज़ियादा नुक्सान उठाने वाले	वह	आखिरत में	कि वह
الصَّالِحَاتِ وَآخَبَتْوَا إِلَىٰ رَبِّهِمْ أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ							
उस में	वह	जन्मत वाले	यही लोग	अपने रब के आगे	और आजिज़ी की	नेक	
فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٣﴾ مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمَىٰ وَالْأَصْمَىٰ							
और देखता	और बहरा	जैसे अन्धा	दोनों फ़रीक	मिसाल	23	हमेशा रहेंगे	
وَالسَّمِيعِ ۗ هَلْ يَسْتَوِينَ مَثَلًا أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٢٤﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا							
और हम ने भेजा	24	क्या तुम ग़ौर नहीं करते	मिसाल (हालत) में	क्या दोनों बराबर हैं	और सुनता		
نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ ۖ إِنِّي لَأَمْلَأُ لَكُم مِّنْهُم مَّا تَشَاءُونَ ﴿٢٥﴾ أَن لَّا تَعْبُدُوا إِلَّا							
सिवाए	न परसतिश करो तुम	कि	25	खुला	डराने वाला	तुम्हारे लिए	बेशक मैं उस की क़ौम तरफ
اللَّهِ ۗ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمِ الْيَوْمِ ﴿٢٦﴾ فَقَالَ الْمَلَأُ							
सरदार	तो बोले	26	दुख देने वाला दिन	अज़ाब	तुम पर	बेशक मैं डरता हूँ	अल्लाह
الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا نَرِكَ إِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرِكَ							
और हम नहीं देखते तुझे	हमारे अपने जैसा	एक आदमी	मगर	हम तुझे नहीं देखते	उस की क़ौम के	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	
اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَادُوا بِادِّ الرَّأْيِ وَمَا نَرَىٰ							
हम देखते	और नहीं	सरसरी नज़र से		नीच लोग हम में	वह	वह लोग जो	सिवाए तेरी पैरवी करें
لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ ۖ بَلْ نَظُنُّكُمْ كَاذِبِينَ ﴿٢٧﴾ قَالَ يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ							
तुम देखो तो	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	27	झूटे	बल्कि हम खयाल करते हैं तुम्हें	फ़ज़ीलत	कोई हम पर तुम्हारे लिए
إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّنْ رَبِّي وَآتَنِى رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهِ							
अपने पास से	रहमत	और उस ने दी मुझे	अपने रब से	वाज़ह दलील	पर	मैं हूँ	अगर
فَعَمِيَتْ عَلَيْكُمْ ۖ أُنزِلْكُمْ مَوَّهَا وَأَنْتُمْ لَهَا كَرِهُونَ ﴿٢٨﴾							
28	वेज़ार हो	उस से	और तुम	क्या हम वह तुम्हें ज़बरदस्ती मनवाएँ	तुम्हें	वह दिखाई नहीं देती	

यह लोग ज़मीन में आजिज़ करने वाले नहीं, और उन के लिए नहीं है अल्लाह के सिवा कोई हिमायती, उन के लिए दुगना अज़ाब है, वह न सुनने की ताक़त रखते थे और न वह देखते थे। (20)

यही लोग हैं जिन्होंने ने अपनी जानों का नुक्सान किया और उन से गुम हो गया जो वह झूट बान्धते थे। (21)

कोई शक नहीं कि वह आखिरत में सब से ज़ियादा नुक्सान उठाने वाले हैं। (22)

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए, और अपने रब के आगे आजिज़ी की, यही लोग जन्नत वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (23)

दोनों फ़रीक की मिसाल (ऐसी है) जैसे एक अन्धा और बहरा और (दूसरा) देखता और सुनता है, क्या वह दोनों बराबर हैं हालत में? क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (24)

और हम ने नूह (अ) को उस की क़ौम की तरफ भेजा कि बेशक मैं तुम्हारे लिए (तुम्हें) डराने वाला हूँ खुला (खोल कर) (25)

कि अल्लाह के सिवा किसी की परसतिश न करो, बेशक मैं तुम पर एक दुख देने वाले दिन के अज़ाब से डरता हूँ। (26)

तो उस क़ौम के वह सरदार जिन्होंने ने कुफ़्र किया, बोले हम तुझे नहीं देखते मगर हमारे अपने जैसा एक आदमी, और हम नहीं देखते कि किसी ने तेरी पैरवी की हो उन के सिवा जो हम में नीच लोग हैं (वह भी) सरसरी नज़र से (वे सोचे समझे) और हम नहीं देखते तुम्हारे लिए अपने ऊपर कोई फ़ज़ीलत, बल्कि हम तुम्हें झूटा खयाल करते हैं। (27)

उस ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! देखो तो, अगर मैं वाज़ह दलील पर हूँ अपने रब (की तरफ) से और उस ने मुझे अपने पास से रहमत दी है, वह तुम्हें दिखाई नहीं देती, तो क्या हम वह तुम्हें ज़बरदस्ती मनवाएँ? और तुम उस से वेज़ार हो। (28)

और ऐ मेरी कौम! मैं तुम से उस पर कुछ माल नहीं मांगता, मेरा अज़र तो सिर्फ़ अल्लाह पर है, और जो ईमान लाए हैं मैं उन्हें हांकने वाला (दूर करने वाला) नहीं, बेशक वह अपने रब से मिलने वाले हैं, लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम एक कौम हो कि जहालत करते हो। (29) और ऐ मेरी कौम! अगर मैं उन्हें हांक दूँ तो मुझे अल्लाह से कौन बचा लेगा? क्या तुम गौर नहीं करते? (30)

और मैं नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न मैं ग़ैब (की बातें) जानता हूँ, और मैं नहीं कहता कि मैं फ़रिश्ता हूँ, और जिन लोगों को तुम्हारी आँखें हकीर समझती हैं (तुम हकीर समझते हो) मैं नहीं कहता अल्लाह उन्हें हरगिज़ कोई भलाई न देगा, जो कुछ उन के दिलों में है अल्लाह ख़ूब जानता है (अगर ऐसा कहूँ तो) उस वक़्त अलबत्ता मैं ज़ालिमों से होंगा। (31) वह बोले ऐ नूह (अ)! तू ने हम से झगड़ा किया, सो हम से बहुत झगड़ा किया, पस वह (अज़ाब) ले आ जिस का तू हम से वादा करता है, अगर तू सच्चों में से है। (32)

उस ने कहा तुम पर लाएगा सिर्फ़ अल्लाह उस (अज़ाब) को अगर वह चाहेगा, और तुम आजिज़ कर देने वाले नहीं हो। (33) और मेरी नसीहत तुम्हें नफ़ा न देगी अगर मैं चाहूँ कि मैं तुम्हें नसीहत करूँ जब कि अल्लाह चाहे कि तुम्हें गुमराह करे, वही तुम्हारा रब है, और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (34)

क्या वह कहते हैं इस (कुरआन) को बना लाया है? आप (स) कह दें अगर मैं ने इस को बना लिया है तो मुझ पर है मेरा गुनाह, और मैं उस से बरी हूँ जो तुम गुनाह करते हो। (35) और नूह (अ) की तरफ़ वहि की गई कि तेरी कौम से (अब) हरगिज़ कोई ईमान न लाएगा, सिवाए उस के जो ईमान ला चुका, पस तू उस पर गुमगीन न हो जो वह करते हैं। (36) और तू हमारे सामने कशती बना और हमारे हुक्म से और ज़ालिमों (के हक) में मुझ से बात न करना, बेशक वह डूबने वाले हैं। (37)

وَيَقَوْمٍ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ۖ إِنِ اجْتَرَىٰ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَمَا								
और नहीं	अल्लाह पर	मगर	मेरा अजर	नहीं	कुछ माल	इस पर	मैं नहीं मांगता तुम से	और ऐ मेरी कौम
أَنَا بِطَارِدِ الَّذِينَ آمَنُوا ۗ إِنَّهُمْ مُلْقُوا رَبِّهِمْ وَلَكِنِّي آتِيكُمْ قَوْمًا								
एक कौम	देखता हूँ तुम्हें	और लेकिन मैं	अपना रब	मिलने वाले	बेशक वह	वह जो ईमान लाए	मैं हांकने वाला	
تَجْهَلُونَ ﴿٢٩﴾ وَيَقَوْمٍ مَنْ يَنْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنِ طَرَدْتَهُمْ ۗ								
मैं हांक दूँ उन्हें	अगर अल्लाह	से	कौन बचाएगा मुझे	और ऐ मेरी कौम	29	जहालत करते हो		
أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٣٠﴾ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ								
और मैं नहीं जानता	अल्लाह के ख़ज़ाने	मेरे पास	तुम्हें	और मैं नहीं कहता	30	क्या तुम गौर नहीं करते		
الْغَيْبِ وَلَا أَقُولُ إِنِّي مَلَكٌ وَلَا أَقُولُ لِلَّذِينَ تَزْدَرِي أَعْيُنُكُمْ								
तुम्हारी आँखें	हकीर समझती है	उन लोगों को जिन्हें	और मैं नहीं कहता	फ़रिश्ता	कि मैं	और मैं नहीं कहता	ग़ैब	
لَنْ يُؤْتِيَهُمُ اللَّهُ خَيْرًا ۗ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا فِي أَنْفُسِهِمْ ۗ إِنِّي								
बेशक मैं	उन के दिलों में	जो कुछ	खूब जानता है	अल्लाह	कोई भलाई	अल्लाह	हरगिज़ न देगा उन्हें	
إِذَا لَمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٣١﴾ قَالُوا يُنُوحُ قَدْ جَادَلْتَنَا فَكُتِرَتْ جِدَالُنَا								
हम से झगड़ा किया	सो बहुत	तू ने झगड़ा किया हम से	ऐ नूह (अ)	वह बोले	31	अलबत्ता ज़ालिमों से	उस वक़्त	
فَاتِنَا بِمَا تَعُدُّنَا ۖ إِن كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿٣٢﴾ قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيكُمْ								
सिर्फ़ लाएगा तुम पर	उस ने कहा	32	सच्चे (जमा)	से	अगर तू है	वह जो तू हम से वादा करता है	पस ले आ	
بِهِ اللَّهُ ۖ إِن شَاءَ ۗ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٣٣﴾ وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِي إِن								
अगर	मेरी नसीहत	और न नफ़ा देगी तुम्हें	33	आजिज़ कर देने वाले	और तुम नहीं	अगर चाहेगा वह	अल्लाह	उस को
أَرَدْتُ أَنْ أَنْصَحَ لَكُمْ ۖ إِن كَانَ اللَّهُ يُرِيدُ أَنْ يُغْوِيَكُمْ ۗ هُوَ رَبُّكُمْ ۗ								
तुम्हारा रब	वह	कि गुमराह करे तुम्हें	अल्लाह चाहे	है	अगर (जबकि)	तुम्हें	कि मैं नसीहत करूँ	मैं चाहूँ
وَالِيهِ تُرْجَعُونَ ﴿٣٤﴾ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۗ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ								
अगर मैं ने उसे बना लिया है	कह दें	बना लाया है उस को	वह कहते हैं	क्या	34	तुम लौट कर जाओगे	और उसी की तरफ़	
فَعَلَيْ إِجْرَامِي ۖ وَأَنَا بَرِيءٌ ۗ مِمَّا تُجْرِمُونَ ﴿٣٥﴾ وَأَوْحَىٰ إِلَىٰ نُوحٍ								
नूह (अ) की तरफ़	और वहि भेजी गई	35	तुम गुनाह करते हो	उस से जो	बरी	और मैं	मेरा गुनाह	तो मुझ पर
أَنَّهُ لَنْ يُؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ إِلَّا مَنْ قَدْ آمَنَ فَلَا تَبْتَسِ								
पस तू गुमगीन न हो	ईमान लाचुका	जो	सिवाए	तेरी कौम	से	हरगिज़ ईमान न लाएगा	कि वह	
بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾ وَأَصْنَعِ الْفُلَكَ بِأَعْيُنِنَا ۖ وَوَحِينَا								
और हमारे हुक्म से	हमारे सामने	कशती	और तू बना	36	वह करते हैं	उस पर जो		
وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۗ إِنَّهُمْ مُّغْرَقُونَ ﴿٣٧﴾								
37	डूबने वाले	बेशक वह	जिन लोगों ने जुल्म किया (ज़ालिम)	में	और न बात करना मुझ से			

وَيَصْنَعُ الْفُلَكَ ۗ وَكَلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَأَ مِنْ قَوْمِهِ سَخِرُوا مِنْهُ ۗ									
और वह बनाता था	कशती	और जब भी	गुजरते	उस पर	सरदार	से (के)	उस की कौम	वह हैंसते	उस से (पर)
قَالَ إِنَّ تَسْخَرُوا مِنَّا فَإِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُونَ ﴿٣٨﴾ فَسَوْفَ									
उस ने कहा	अगर	तुम हैंसते हो	हमें से (पर)	हमें	तो बेशक हम	हमें	तुम से (पर)	जैसे	तुम हैंसते हो
38	सो अनकरीब	38	तुम हैंसते हो	जैसे	तुम से (पर)	हमें	तो बेशक हम	हमें	तुम हैंसते हो
تَعْلَمُونَ ۗ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٣٩﴾									
तुम जान लोगे	किस पर आता है	ऐसा अज़ाब	उस को रुस्वा करे	और उतरता है	उस पर	अज़ाब	दाइमी	39	दाइमी
حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُورُ ۗ قُلْنَا احْمِلْ فِيهَا مِنْ									
यहां तक कि	जब आया	हमारा हुकम	और जोश मारा	तन्नूर	हम ने कहा	चढ़ा ले	उस में	से	यहां तक कि
كُلِّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ									
हर एक जोड़ा	दो (नर मादा)	और अपने घर वाले	मगर	जो	हो चुका	उस पर	हुकम	हुकम	हर एक जोड़ा
وَمَنْ أَمِنَ ۗ وَمَا أَمِنَ مَعَهُ إِلَّا قَلِيلٌ ﴿٤٠﴾ وَقَالَ ارْكَبُوا فِيهَا									
और जो ईमान लाया	और न ईमान लाया	ईमान लाए	उस पर	मगर थोड़े	40	और उस ने कहा	सवार हो जाओ	इस में	और जो
بِسْمِ اللَّهِ مَجْرَاهَا وَمُرْسَهَآ إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٤١﴾ وَهِيَ تَجْرِي									
अल्लाह के नाम से	उस का चलना	उस का ठहरना	और उसका ठहरना	बेशक	मेरा रब	अलबत्ता बख़शने वाला	निहायत मेहरबान	41	और वह चली
بِهِمْ فِي مَوْجٍ كَالْجِبَالِ ۗ وَنَادَىٰ نُوحٌ ابْنَهُ وَكَانَ فِي مَعْزِلٍ									
उन को ले कर	लहरों में	पहाड़ जैसी	और पुकारा	नूह (अ)	अपना बेटा	और था	किनारे में	और जो	उन को ले कर
يُبْنَىٰ ۖ اِرْكَبْ مَعَنَا وَلَا تَكُنْ مَعَ الْكَافِرِينَ ﴿٤٢﴾ قَالَ سَاوِي									
ऐ मेरे बेटे	सवार हो जा	हमारे साथ	और न रहो	काफ़िरों के साथ	42	उस ने कहा	मैं जल्द पनाह ले लेता हूँ	उस ने कहा	ऐ मेरे बेटे
إِلَىٰ جَبَلٍ يَعْصُمُنِي مِنَ الْمَاءِ ۗ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ									
किसी पहाड़ की तरफ	वह बचा लेगा मुझे	पानी से	उस ने कहा	कोई बचाने वाला नहीं	आज	से	अल्लाह का हुकम	अल्लाह का हुकम	किसी पहाड़ की तरफ
إِلَّا مَنْ رَحِمَ ۗ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِينَ ﴿٤٣﴾									
सिवाए	जिस पर वह रहम करे	और आगई	उन के दरमियान	मौज	तो वह हो गया	से	डूबने वाले	43	सिवाए
وَقِيلَ يَا رَأْسُ اِبْلَعِي مَاءَكَ وَيَسْمَاءُ أَفْلَعِي ۗ وَغِيصَ الْمَاءُ									
और कहा गया	ऐ ज़मीन	निगल ले	अपना पानी	और ऐ आस्मान	थम जा	और खुशक कर दिया गया	पानी	और कहा गया	और ऐ आस्मान
وَقَضَىٰ الْأَمْرَ ۗ وَأَسْتَوَتْ عَلَىٰ الْجُودِيِّ ۗ وَقِيلَ بُعْدًا لِلْقَوْمِ									
और पूरा हो चुका (तमाम हो गया)	काम	और जा लगी	जूदी पहाड़ पर	और कहा दूरी	लोगों के लिए	और पूरा हो चुका (तमाम हो गया)	काम	और जा लगी	जूदी पहाड़ पर
الظَّالِمِينَ ﴿٤٤﴾ وَنَادَىٰ نُوحٌ رَبَّهُ فَقَالَ رَبِّ إِنَّ ابْنِي									
ज़ालिम (जमा)	44	और पुकारा	नूह (अ)	अपना रब	पस उस ने कहा	ऐ मेरे रब	वेशक	मेरा बेटा	ज़ालिम (जमा)
مِنْ أَهْلِي ۗ وَإِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ ۗ وَأَنْتَ أَحْكَمُ الْحَكِمِينَ ﴿٤٥﴾									
मेरे घर वालों में से	और बेशक	तेरा वादा	सच्चा	और तू	सब से बड़ा हाकिम	हाकिम (जमा)	45	हाकिम (जमा)	मेरे घर वालों में से

और वह (नूह अ) कशती बनाता था और जब भी उस की कौम के सरदार उस (के पास) से गुजरते तो वह उस पर हैंसते, उस (नूह अ) ने कहा अगर तुम हम पर हैंसते हो तो बेशक हम (भी) तुम पर हैंसेंगे जैसे तुम हैंसते हो। (38)

सो अनकरीब तुम जान लोगे किस पर ऐसा अज़ाब आता है जो उस को रुस्वा करे और उतरता है उस पर दाइमी अज़ाब। (39)

यहां तक कि जब हमारा हुकम आया, और तन्नूर ने जोश मारा (उबल पड़ा) हम ने कहा उस (कशती) में चढ़ा ले हर एक का जोड़ा, नर और मादा, और अपने घर वाले उस के सिवाए जिस पर (गर्कावी का) हुकम हो चुका है और जो ईमान लाया (उसे भी सवार कर ले) और उस पर ईमान न लाए थे मगर थोड़े। (40)

और उस ने कहा इस में सवार हो जाओ, अल्लाह के नाम से है इस का चलना और इस का ठहरना, बेशक अलबत्ता मेरा रब बख़शने वाला, निहायत मेहरबान है। (41)

और वह (कशती) उन को ले कर पहाड़ जैसी लहरों में चली और नूह (अ) ने अपने बेटे को पुकारा, और वह (उस से) किनारे था, ऐ मेरे बेटे! हमारे साथ सवार हो जा, और काफ़िरों के साथ न रहो। (42)

उस ने कहा मैं किसी पहाड़ की तरफ जल्दी पनाह ले लेता हूँ, वह मुझे पानी से बचा लेगा, उस ने कहा आज कोई बचाने वाला नहीं अल्लाह के हुकम से, सिवाए उस के जिस पर वह रहम करे, और उन के दरमियान मौज आगई (हाइल हो गई) तो वह भी डूबने वालों में (शामिल) हो गया। (43)

और कहा गया ऐ ज़मीन! अपना पानी निगल ले, और ऐ आस्मान थम जा, और पानी को खुशक कर दिया गया, और तमाम हो गया काम, और (कशती) जा लगी जूदी पहाड़ पर, और कहा दूरी (लानत) हो ज़ालिम लोगों के लिए। (44)

और पुकारा नूह (अ) ने अपने रब को, पस उस ने कहा ऐ मेरे रब! बेशक मेरा बेटा मेरे घर वालों में से है, और बेशक तेरा वादा सच्चा है, और तू हाकिमों में सब से बड़ा हाकिम है। (45)

उस ने फरमाया, ऐ नूह (अ)!  
वेशक वह तेरे घर वालों में  
से नहीं, वेशक उस के अमल  
नाशाइस्ता हैं, सो मुझ से ऐसी बात  
का सवाल न कर जिस का तुझे  
इल्म नहीं, वेशक मैं तुझे नसीहत  
करता हूँ कि तू नादानों में से (न)  
हो जाए, (46)

उस ने कहा ऐ मेरे रब! मैं तेरी  
पनाह चाहता हूँ कि मैं तुझ से  
ऐसी बात का सवाल करूँ जिस का  
मुझे इल्म न हो, और अगर तू मुझे  
न बख़्शे और मुझ पर रहम न करे  
तो मैं नुक़सान पाने वालों में से  
हो जाऊँ। (47)

कहा गया, ऐ नूह (अ)! हमारी  
तरफ़ से सलामती के साथ उतर  
जाओ और बरकतें हों तुझ पर,  
और उन गिरोहों पर जो तेरे साथ  
हैं और कुछ गिरोह है कि हम उन्हें  
जल्द (दुनिया में) फ़ाइदा देंगे,  
फिर उन्हें हम से पहुँचेगा अज़ाब  
दर्दनाक। (48)

यह ग़ैब की ख़बरें जो हम तुम्हारी  
तरफ़ वहि करते हैं, न तुम उन  
को जानते थे इस से पहले और न  
तुम्हारी क़ौम (जानती थी), पस  
सव्द करो, वेशक परहेज़गारों का  
अन्जाम अच्छा है। (49)  
क़ौम आद की तरफ़ उन के भाई  
हूद (अ) (आए), उस ने कहा  
ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत  
करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई  
माबूद नहीं, तुम सिर्फ़ झूट वान्धते  
हो (इफ़तिरा करते हो) (50)

ऐ मेरी क़ौम! उस पर मैं तुम से  
कोई सिला नहीं मांगता, मेरा सिला  
सिर्फ़ उसी पर है जिस ने मुझे  
पैदा किया, फिर क्या तुम समझते  
नहीं? (51)

और ऐ मेरी क़ौम! अपने रब से  
बख़्शिश मांगो, फिर उसी की  
तरफ़ रुज़्ज़ करो (तौबा करो),  
वह तुम पर आस्मान से ज़ोर की  
वारिश भेजेगा, और तुम्हें कुव्वत  
पर कुव्वत बढ़ाएगा और मुज़रिम  
हो कर रूगर्दानी न करो। (52)

वह बोले ऐ हूद (अ)! तू हमारे पास  
कोई सनद ले कर नहीं आया, और  
हम छोड़ने वाले नहीं अपने माबूदों  
को तेरे कहने से, और हम तुझ पर  
ईमान लाने वाले नहीं। (53)

قَالَ يٰ نُوحُ إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ ۚ إِنَّهُ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ۗ								
नाशाइस्ता	अमल	वेशक वह	तेरे घर वाले	से	नहीं	वेशक वह	ऐ नूह (अ)	उस ने फरमाया
فَلَا تَسْأَلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ ۗ إِنِّي أَعْطُكَ أَنْ تَكُونَ مِنَ								
से	तू हो जाए	कि	वेशक मैं नसीहत करता हूँ तुझे	इल्म	उस का	तुझ को	ऐसी बात कि नहीं	सो मुझ से सवाल न कर
الْجَاهِلِينَ ﴿٤٦﴾ قَالَ رَبِّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَسْأَلَكَ مَا لَيْسَ لِي								
मुझे	ऐसी बात कि नहीं	मैं सवाल करूँ तुझ से	कि	तुझ से	मैं पनाह चाहता हूँ	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	46 नादान (जमा)
بِهِ عِلْمٌ ۗ وَالْأَلَا تَغْفِرُ لِي وَتَرْحَمَنِي أَكُنْ مِنَ الْخٰسِرِينَ ﴿٤٧﴾								
47	नुक़सान पाने वाले	से	हो जाऊँ	और तू मुझ पर रहम न करे	और अगर तू न बख़्शे मुझे	इल्म	उस का	
قِيلَ يٰ نُوحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكَاتٍ عَلَيْنَا وَعَلَىٰ أُمَّ								
और गिरोह पर	तुझ पर	और बरकतें	हमारी तरफ़ से	सलामती के साथ	उतर जाओ तुम	ऐ नूह (अ)	कहा गया	
مِّنْ مَّعَكَ ۗ وَأُمَّ سَنَمْتِعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤٨﴾								
48	दर्दनाक	अज़ाब	हम से	उन्हें पहुँचेगा	फिर	हम उन्हें जल्द फ़ाइदा देंगे	और कुछ गिरोह	तेरे साथ से - जो
تِلْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْعِيبِ نُوحِيهَا إِلَيْكَ ۗ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَا أَنْتَ								
तुम	तुम उन को जानते थे	न	तुम्हारी तरफ़	हम वहि करते हैं उसे	ग़ैब की ख़बरें	से	यह	
وَلَا قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا ۗ فَاصْبِرْ ۗ إِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٤٩﴾								
49	परहेज़गारों के लिए	अच्छा अन्जाम	वेशक	पस सव्द करो	इस से पहले	से	तुम्हारी क़ौम	और न
وَالِىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُوْدًا ۗ قَالَ يٰ قَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ								
कोई माबूद	तुम्हारा नहीं	अल्लाह	तुम इबादत करो	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	हूद (अ)	उन के भाई	क़ौम और आद तरफ़
غَيْرُهُ ۗ اِنَّ اَنْتُمْ اِلَّا مُفْتَرُونَ ﴿٥٠﴾ يٰ قَوْمِ لَا اَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ								
उस पर	मैं तुम से नहीं मांगता	ऐ मेरी क़ौम	50	झूट वान्धते हो	मगर (सिर्फ़)	तुम	नहीं	उस के सिवा
اَجْرًا ۗ اِنَّ اَجْرِي اِلَّا عَلَى الَّذِى فَطَرَنِي ۗ اَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٥١﴾								
51	क्या फिर तुम समझते नहीं	जिस ने मुझे पैदा किया	पर	मगर (सिर्फ़)	मेरा सिला	नहीं	कोई अजर (सिला)	
وَيٰ قَوْمِ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوْا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاءَ								
आस्मान	वह भेजेगा	उसी की तरफ़ रुज़्ज़ करो	फिर	अपना रब	तुम बख़्शिश मांगो	और ऐ मेरी क़ौम		
عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلَىٰ قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا								
और रूगर्दानी न करो	तुम्हारी कुव्वत	तरफ़ (पर)	कुव्वत	और तुम्हें बढ़ाएगा	ज़ोर की वारिश	तुम पर		
مُجْرِمِيْنَ ﴿٥٢﴾ قَالُوْا يٰ هُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَمَا نَحْنُ								
हम	और नहीं	कोई दलील (सनद) ले कर	तू नहीं आया हमारे पास	ऐ हूद (अ)	वह बोले	52	मुज़रिम हो कर	
بِتٰرِكِي الْهَتٰنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٣﴾								
53	ईमान लाने वाले	तेरे लिए (तुझ पर)	हम	और नहीं	तेरे कहने से	अपने माबूद	छोड़ने वाले	

معانقة ٩ عند التّأخّرين ١٢  
الوقوف على فاصبر احسن واليق ١٢

إِنْ تَقُولُ إِلَّا اعْتَرَبَكَ بَعْضُ الْهَيْئَةِ بِسُوِّهِ قَالَ إِنِّي أَشْهَدُ اللَّهَ										
अल्लाह	गवाह करता हूँ	वेशक मैं	उस ने कहा	बुरी तरह	हमारा माबूद	किसी	तुझे आसेव पहुँचाया है	मगर	हम कहते हैं	नहीं
وَأَشْهَدُوا أَنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ﴿٥٤﴾ مِنْ دُونِهِ فَكَيْدُونِي جَمِيعًا										
सब	सो मकर (बुरी तदबीर) करो मेरे वारे में	उस के सिवा	54	तुम शरीक करते हो	उन से	वेज़ार हूँ	वेशक मैं	और तुम गवाह रहो		
ثُمَّ لَا تَنْظُرُونَ ﴿٥٥﴾ إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُمْ مَا مِنْ دَابَّةٍ										
कोई	चलने वाला नहीं	और तुम्हारा रब	मेरा रब	अल्लाह पर	मैं ने भरोसा किया	वेशक मैं	55	मुझे मोहलत न दो	फिर	
إِلَّا هُوَ أَخَذُ بِنَاصِيَتِهَا إِنَّ رَبِّي عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٥٦﴾ فَإِنْ										
फिर अगर	56	सीधा	रास्ता	पर	मेरा रब	वेशक	उस को चोटी से	पकड़ने वाला	वह	मगर
تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ مَا أُرْسِلْتُ بِهِ إِلَيْكُمْ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا										
कोई और कौम	मेरा रब	और काइम मुकाम कर देगा	तुम्हारी तरफ़	उस के साथ	जो मुझे भेजा गया	मैं ने तुम्हें पहुँचा दिया	तुम रूगर्दानी करोगे			
غَيْرِكُمْ وَلَا تَضُرُّونَهُ شَيْئًا إِنَّ رَبِّي عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ﴿٥٧﴾										
57	निगहवान	हर शौ	पर	मेरा रब	वेशक	कुछ	और तुम न बिगाड़ सकोगे उस का	तुम्हारे सिवा		
وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُودًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا										
अपनी	रहमत से	उस के साथ	और वह लोग जो ईमान लाए	हूद (अ)	हम ने बचा लिया	हमारा हुकम	आया	और जब		
وَنَجَّيْنَهُمْ مِنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٨﴾ وَتِلْكَ عَادٌ جَحَدُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ										
अपना रब	आयतों का	उन्होंने ने इन्कार किया	आद	और यह	58	सख्त	अज़ाब	से	और हम ने उन्हें बचा लिया	
وَعَصَوْا رُسُلَهُ وَاتَّبَعُوا أَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ﴿٥٩﴾ وَأَتَّبَعُوا فِي										
में	और उन के पीछे लगादी गई	59	ज़िददी	हर सरकश	हुकम	और पैरवी की	अपने रसूल	और उन्होंने ने नाफरमानी की		
هَذِهِ الدُّنْيَا لَعَنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ إِلَّا إِنْ عَادَا كَفَرُوا رَبَّهُمْ										
अपना रब	वह मुन्किर हुए	आद	वेशक	याद रखो	और रोज़े कियामत	लानत	इस दुनिया			
إِلَّا بُعْدًا لِعَادٍ قَوْمٍ هُودٍ ﴿٦٠﴾ وَإِلَى ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا قَالَ يَقَوْمِ										
ऐ मेरी कौम	उस ने कहा	सालेह (अ)	उन का भाई	और समूद की तरफ़	60	हूद की कौम	आद के लिए	फटकार	याद रखो	
اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ هُوَ أَنْشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ										
ज़मीन से	पैदा किया तुम्हें	वह - उस	उस के सिवा	कोई माबूद	तुम्हारे लिए	नहीं	अल्लाह की इबादत करो			
وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيهَا فَاسْتَغْفِرُوهُ ثُمَّ تَوَبُّوا إِلَيْهِ إِنَّ رَبِّي قَرِيبٌ										
नज़्दीक	मेरा रब	वेशक	रुजूअ करो उस की तरफ़ (तौबा करो)	फिर	सो उस से बख्शिश मांगो	उस में	और बसाया तुम्हें उस ने			
مُجِيبٌ ﴿٦١﴾ قَالُوا يَطْلُحُ قَدْ كُنْتَ فِينَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هَذَا أَتَنْهِنَا										
क्या तू हमें मना करता है	इस से कब्ल	मरकज़े उम्मीद	हम में (हमारे दरमियान)	तू था	ऐ सालेह (अ)	वह बोले	61	कुबूल करने वाला		
أَنْ تَعْبُدَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا وَإِنَّا لَفِي شَكٍّ مِمَّا تَدْعُونَا إِلَيْهِ مُرِيبٌ ﴿٦٢﴾										
62	कवी शुवाह में	उस की तरफ़	तू हमें बुलाता है	उस से जो	शक में है	और	हमारे बाप दादा	उसे जिस की परस्तिश करते थे	कि हम परस्तिश करें	

हम यही कहते हैं कि तुझे आसेव पहुँचाया है हमारे किसी माबूद ने बुरी तरह, उस ने कहा वेशक मैं अल्लाह को गवाह करता हूँ और तुम (भी) गवाह रहो, मैं उन से वेज़ार हूँ जिन को तुम शरीक करते हो (54) उस के सिवा, सो मेरे वारे में सब मकर (बुरी तदबीर) कर लो, फिर मुझे मोहलत न दो। (55) मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया (जो) मेरा रब है और तुम्हारा रब है, कोई चलने (फिरने) वाला नहीं मगर वह उस को चोटी से पकड़ने वाला है (कब्जे में लिए हुए है) वेशक मेरा रब है रास्ते पर सीधे। (56) फिर अगर तुम रूगर्दानी करोगे तो जिस के साथ मुझे तुम्हारी तरफ़ भेजा गया वह मैं तुम्हें पहुँचा चुका, और काइम मुकाम कर देगा मेरा रब तुम्हारे सिवा किसी और कौम को, और तुम उस का कुछ न बिगाड़ सकोगे, वेशक मेरा रब हर शौ पर निगहवान है। (57) और जब हमारा हुकम आया, हम ने हूद (अ) को और जो लोग उस के साथ ईमान लाए अपनी रहमत से बचा लिया, और हम ने उन्हें बचा लिया सख्त अज़ाब से। (58) और यह आद थे और उन्होंने ने अपने रब की आयतों का इन्कार किया, और अपने रसूलों की नाफरमानी की, और हर सरकश ज़िददी की पैरवी की। (59) और लानत उन के पीछे लगादी गई, इस दुनिया में और रोज़े कियामत, याद रखो! आद अपने रब के मुन्किर हुए, याद रखो! हूद (अ) की कौम आद पर फटकार है। (60) और समूद की तरफ़ उन के भाई सालेह (अ) को (भेजा), उस ने कहा ऐ मेरी कौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, उस ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया, और तुम्हें उस में बसाया, पस उस से बख्शिश मांगो, फिर उस से तौबा करो, वेशक मेरा रब नज़्दीक है, कुबूल करने वाला है। (61) वह बोले ऐ सालेह (अ)! तू हमारे दरमियान इस से कब्ल मरकज़े उम्मीद था (तुझ से बड़ी उम्मीदें थीं) क्या तू हमें मना करता है कि हम उन की परस्तिश (न) करें जिन की हमारे बाप दादा परस्तिश करते थे, तो जिस की तरफ़ तू हमें बुलाता है उस में हम कवी शुवाह में हैं। (62)

उस ने कहा, ऐ मेरी कौम! तुम क्या देखते हो (भला देखो तो) अगर मैं अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील पर हूँ, और उस ने मुझे अपनी तरफ़ से रहमत दी है तो अगर मैं उस की नाफ़रमानी करूँ, मुझे अल्लाह से कौन बचाएगा? तुम मेरे लिए नुक़सान के सिवा कुछ नहीं बढ़ाते। (63)

और ऐ मेरी कौम! यह अल्लाह की ऊंटनी है, तुम्हारे लिए निशानी, पस उसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाती (फिरे) और उस को न छुओ (न पहुँचाओ) कोई बुराई (नुक़सान) पस तुम्हें बहुत जल्द अज़ाब पकड़लेगा। (64)

फिर उन्होंने ने उस की कूचें काट दी तो उस (सालेह अ) ने कहा, तुम अपने घरों में बरत लो तीन दिन और, यह झूटा न होने वाला वादा है (पूरा हो कर रहेगा)। (65)

फिर जब हमारा हुक्म आया हम ने सालेह (अ) को बचा लिया और उन लोगों को जो उस के साथ ईमान लाए अपनी रहमत (के ज़रीए), और उस दिन की रसुवाई से, बेशक तुम्हारा रब क़वी, ग़ालिब है। (66)

और ज़ालिमों को चिंघाड़ ने आ पकड़ा, पस उन्होंने ने सुबह की (सुबह के वक़्त) अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। (67)

गोया वह कभी यहां बसे ही न थे, याद रखो! बेशक कौम समूद अपने रब के मुन्क़िर हुए, याद रखो! समूद पर फटकार है। (68)

और हमारे फ़रिश्ते अलबत्ता इब्राहीम (अ) के पास खुशख़बरी ले कर आए, वह सलाम बोले, उस (इब्राहीम अ) ने सलाम कहा, फिर उस ने देर न की एक भुना हुआ बछड़ा ले आया। (69)

फिर जब उस (इब्राहीम अ) ने देखा कि उन के हाथ खाने की तरफ़ नहीं पहुँचते तो वह उन से डरा और दिल में उन से खौफ़ महसूस किया, वह बोले डरो मत, बेशक हम कौम लूत (अ) की तरफ़ भेजे गए हैं। (70)

और उस की बीवी खड़ी हुई थी तो वह हँस पड़ी सो हम ने उसे खुशख़बरी दी इसहाक (अ), और इसहाक (अ) के बाद याकूब (अ) की। (71)

वह बोली अए है! क्या मेरे बच्चा होगा? हालांकि मैं बुढ़या हूँ और यह मेरा ख़ावन्द बूढ़ा है, बेशक यह एक अज़ीब बात है। (72)

قَالَ يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُمْ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَآتَيْنِي مِنْهُ

अपनी तरफ़ से	और उस ने मुझे दी	अपने रब से	रौशन दलील पर	अगर मैं हूँ	क्या देखते हो तुम	ऐ मेरी कौम	उस ने कहा
--------------	------------------	------------	--------------	-------------	-------------------	------------	-----------

رَحْمَةً فَمَنْ يَنْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ عَصَيْتُهُ فَمَا تَزِيدُونَنِي غَيْرَ

सिवाए	तुम मेरे लिए बढ़ाते	तो नहीं	मैं उस की नाफ़रमानी करूँ	अगर	अल्लाह से	मेरी मदद करेगा (बचाएगा)	तो कौन	रहमत
-------	---------------------	---------	--------------------------	-----	-----------	-------------------------	--------	------

تَحْسِيرٍ ﴿٦٣﴾ وَيَقَوْمِ هَذِهِ نَاقَةٌ لَّكُمْ آيَةٌ فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِي

में	खाए	पस उस को छोड़ दो	निशानी	तुम्हारे लिए	अल्लाह की ऊंटनी	यह	और ऐ मेरी कौम	63	नुक़सान
-----	-----	------------------	--------	--------------	-----------------	----	---------------	----	---------

أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيبٌ ﴿٦٤﴾

64	क़रीब (बहुत जल्द)	अज़ाब	पस तुम्हें पकड़ लेगा	बुराई से	और उस को न छुओ तुम	अल्लाह की ज़मीन
----	-------------------	-------	----------------------	----------	--------------------	-----------------

فَعَقَرُوهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوا فِي دَارِكُمْ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ ذَلِكَ وَعَدٌ

वादा	यह	तीन दिन	अपने घरों में	बरत लो	उस ने कहा	उन्होंने ने उस की कूचें काट दी
------	----	---------	---------------	--------	-----------	--------------------------------

غَيْرِ مَكْدُوبٍ ﴿٦٥﴾ فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا صِلْحًا وَالَّذِينَ آمَنُوا

और वह लोग जो ईमान लाए	सालेह (अ)	हम ने बचा लिया	हमारा हुक्म	आया	फिर जब	65	न झूटा होने वाला
-----------------------	-----------	----------------	-------------	-----	--------	----	------------------

مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَمِنْ خِزْيِ يُومِيذٍ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ﴿٦٦﴾

66	ग़ालिब	क़वी	वह	तुम्हारा रब	बेशक	उस दिन की	और रसुवाई से	अपनी रहमत से	उस के साथ
----	--------	------	----	-------------	------	-----------	--------------	--------------	-----------

وَآخِذَ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةَ فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جِثْمِينَ

67	औन्धे पड़े रह गए	अपने घर	में	पस उन्होंने ने सुबह की	चिंघाड़	वह जिन्होंने ने जुल्म किया (ज़ालिम)	और आ पकड़ा
----	------------------	---------	-----	------------------------	---------	-------------------------------------	------------

كَانَ لَمْ يَعْزُوا فِيهَا إِلَّا إِنْ تَمُودًا كَفَرُوا رَبَّهُمْ إِلَّا بَعْدًا

फटकार	याद रखो	अपने रब के	मुन्क़िर हुए	समूद	बेशक	याद रखो	उस में	न बसे थे	गोया
-------	---------	------------	--------------	------	------	---------	--------	----------	------

لَتَمُودَ ﴿٦٨﴾ وَلَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَى قَالُوا سَلَامًا

सलाम	वह बोले	खुशख़बरी ले कर	इब्राहीम (अ)	हमारे फ़रिश्ते	और अलबत्ता आए	68	समूद पर
------	---------	----------------	--------------	----------------	---------------	----	---------

قَالَ سَلَامٌ فَلَمَّا رَأَىٰ أَيْدِيَهُمْ

उस ने देखे उन के हाथ	फिर जब	69	भुना हुआ	एक बछड़ा ले आया	कि	फिर उस ने देर न की	सलाम	उस ने कहा
----------------------	--------	----	----------	-----------------	----	--------------------	------	-----------

لَا تَصِلُ إِلَيْهِ نَكَرَهُمْ وَأَوَّجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً قَالُوا لَا تَخَفْ

तुम डरो मत	वह बोले	खौफ़	उन से	और महसूस किया	वह उन से डरा	उस की तरफ़	नहीं पहुँचते
------------	---------	------	-------	---------------	--------------	------------	--------------

إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ قَوْمِ لُوطٍ ﴿٧٠﴾ وَأَمْرَاتُهُ قَائِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنَاهَا

सो हम ने उसे खुशख़बरी दी	तो वह हँस पड़ी	खड़ी हुई	और उस की बीवी	70	कौम लूत	तरफ़	बेशक हम भेजे गए हैं
--------------------------	----------------	----------	---------------	----	---------	------	---------------------

بِإِسْحَاقَ وَمِنْ وَّرَائِهِ إِسْحَاقُ يَعْقُوبُ ﴿٧١﴾ قَالَتْ يُوَيْلَىٰ ءَأَلِدُ

क्या मेरे बच्चा होगा	ऐ ख़राबी (अए है)	वह बोली	71	याकूब (अ)	इसहाक (अ)	और से (के) बाद	इसहाक (अ) की
----------------------	------------------	---------	----	-----------	-----------	----------------	--------------

وَأَنَا عَجُوزٌ وَهَذَا بَعْلِي شَيْخًا إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ عَجِيبٌ ﴿٧٢﴾

72	अज़ीब	एक चीज़ (बात)	यह	बेशक	बूढ़ा	मेरा ख़ावन्द	और यह	बुढ़या	हालांकि मैं
----	-------	---------------	----	------	-------	--------------	-------	--------	-------------



قَالُوا اتَّعَجِبِينَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ رَحِمَتُ اللَّهِ وَبَرَكَتُهُ عَلَيْكُمْ									
तुम पर	और उस की वरकतें	अल्लाह की रहमत	अल्लाह का हुक्म	से	क्या तू तअज्जुव करती है	वह बोले			
أَهْلِ الْبَيْتِ إِنَّهُ حَمِيدٌ مَجِيدٌ ﴿٧٣﴾ فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ الرَّوْعُ									
खौफ	इब्राहीम (अ)	से (का)	जाता रहा	फिर जब	73	बुजर्गी वाला	खुबियों वाला	वेशक वह	ऐ घर वालो
وَجَاءَتْهُ الْبُشْرَى يُجَادِلُنَا فِي قَوْمِ لُوطٍ ﴿٧٤﴾ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ									
इब्राहीम (अ)	वेशक	74	कौमे लूत	में	हम से झगड़ने लगा	खुशाखबरी	और उस के पास आगई		
لَحْلِيمٌ أَوْأَهُ مُنِيبٌ ﴿٧٥﴾ يَابُرْهِيمُ أَعْرَضَ عَنْ هَذَا إِنَّهُ قَدْ جَاءَ									
आचुका	वेशक यह	इस से	ऐराज़ कर	ऐ इब्राहीम (अ)	75	रुजूअ करने वाला	नर्म दिल	बुर्दवार	
أَمْرُ رَبِّكَ وَأَنْتُمْ آتِيهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُودٍ ﴿٧٦﴾ وَلَمَّا									
और जब	76	न टलाया जाने वाला	अज़ाव	उन पर आगया	और वेशक उन	तेरे रब का हुक्म			
جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سَيِّئًا بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالَ هَذَا									
यह	और बोला	दिल में	उन से	और तंग हुआ	उन से	वह गमगीन हुआ	लूत (अ) के पास	हमारे फ़रिश्ते	आए
يَوْمَ عَصِيبٍ ﴿٧٧﴾ وَجَاءَهُ قَوْمُهُ يُهْرَعُونَ إِلَيْهِ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوا									
और उस से कब्ल	उस की तरफ़	दौड़ती हुई	उस की कौम	और उस के पास आई	77	बड़ा सख़्ती का दिन			
يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ قَالَ يَقَوْمِ هَؤُلَاءِ بَنَاتِي هُنَّ أَطْهَرُ									
निहायत पाकीज़ा	यह	मेरी बेटियां	यह	ऐ मेरी कौम	उस ने कहा	बुरे काम	वह करते थे		
لَكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزُونِ فِي ضَيْفِي أَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ									
एक आदमी	तुम से (तुम में)	क्या नहीं	मेरे मेहमानों में	और न रुस्वा करो मुझे	अल्लाह	पस डरो	तुम्हारे लिए		
رَّشِيدٌ ﴿٧٨﴾ قَالُوا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِي بَنَاتِكَ مِنْ حَقٍّ									
हक	कोई	तेरी बेटियों में	हमारे लिए	नहीं	तू तो जानता है	वह बोले	78	नेक चलन	
وَأَنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيدُ ﴿٧٩﴾ قَالَ لَوْ أَنَّ لِي بِكُمْ قُوَّةً									
कोई ज़ोर	तुम पर	मेरे लिए (मेरा)	काश कि	उस ने कहा	79	चाहते हैं?	हम क्या	खूब जानता है	और वेशक तू
أَوْ آوِي إِلَىٰ رُكْنٍ شَدِيدٍ ﴿٨٠﴾ قَالُوا يَلُوطُ إِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ									
तुम्हारा रब	भेजे हुए	वेशक हम	ऐ लूत (अ)	वह बोले	80	मज़बूत पाया	तरफ़	या मैं पनाह लेता	
لَنْ يَصِلُوا إِلَيْكَ فَأَسْرِبْ أَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ اللَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ									
और न मुड़ कर देखे	रात	से (का)	कोई हिस्सा	अपने घर वालों के साथ	सो ले निकल	तुम तक	वह हरगिज़ नहीं पहुँचेंगे		
مِنْكُمْ أَحَدٌ إِلَّا أَمْرَاتِكَ إِنَّهُ مُصِيبُهَا مَا أَصَابَهُمْ									
उन को पहुँचेगा	जो	उस को पहुँचने वाला	वेशक वह	तुम्हारी वीवी	सिवा	कोई	तुम में से		
إِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ أَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيبٍ ﴿٨١﴾									
81	नज़दीक	सुबह	क्या नहीं	सुबह	उन का वादा	वेशक			

वह बोले क्या तू अल्लाह के हुक्म से (अल्लाह की कुदरत पर) तअज्जुव करती है? तुम पर अल्लाह की रहमत और उस की वरकतें ऐ घर वालो! वेशक वह खूबियों वाला, बुजर्गी वाला है। (73) फिर जब इब्राहीम (अ) का खौफ़ जाता रहा, और उस के पास खुशाखबरी आगई, वह हम से कौमे लूत (अ) (के वारे) में झगड़ने लगा। (74) वेशक इब्राहीम (अ) बुर्दवार, नर्म दिल रुजूअ करने वाला। (75) ऐ इब्राहीम (अ)! उस से ऐराज़ कर (यह खयाल छोड़ दे) वेशक तेरे रब का हुक्म आचुका, और वेशक उन पर न टलाया जाने वाला अज़ाव आने वाला है (आया ही चाहता है)। (76) और जब हमारे फ़रिश्ते लूत (अ) के पास आए वह उस से गमगीन हुआ और तंग दिल हुआ उन (की तरफ़) से और बोला यह बड़ा सख़्ती का दिन है। (77) और उस के पास उस की कौम दौड़ती हुई आई, और वह उस से कब्ल बुरे काम करते थे, उस ने कहा ऐ मेरी कौम! यह मेरी बेटियां (मौजूद) हैं, यह तुम्हारे लिए निहायत पाकीज़ा हैं, पस अल्लाह से डरो और मुझे मेरे मेहमानों में रुस्वा न करो, क्या तुम में एक आदमी (भी) नेक चलन नहीं? (78) वह बोले तू तो जानता है, तेरी बेटियों में हमारे लिए कोई हक़ (गर्ज़) नहीं, और वेशक तू खूब जानता है हम क्या चाहते हैं? (79) उस ने कहा काश मेरा तुम पर कोई ज़ोर होता, या मैं किसी मज़बूत पाए की पनाह लेता। (80) वह (फ़रिश्ते) बोले, ऐ लूत (अ)! वेशक हम तुम्हारे रब के भेजे हुए हैं वह तुम तक हरगिज़ न पहुँच सकेंगा, सो तुम अपने घर वालों के साथ रात के किसी हिस्से में (रातों रात) निकलो, और मुड़ कर न देखे तुम में से तुम्हारी वीवी के सिवा कोई, वेशक जो उन को पहुँचेगा उस को पहुँचने वाला है (पहुँच कर रहेगा), वेशक उन पर (अज़ाव के) वादे का वक़्त सुबह है, क्या सुबह नज़दीक नहीं? (81)

पस जब हमारा हुक्म आया, हम ने उन का बलन्द पस्त कर दिया (ज़ेर ज़बर कर दिया) और हम ने बरसाए उस (वस्ती) पर संगरेज़े के पत्थर तह व तह (लगातार)। (82) तेरे रब के पास निशान किए हुए, और यह नहीं है ज़ालिमों से कुछ दूर। (83) और मदयन की तरफ़ उन के भाई शुऐब (अ) (आए), उस ने कहा: ऐ मेरी कौम! अल्लाह की इबादत करो, अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, और माप तोल में कमी न करो, वेशक मैं तुम्हें आसूदा हाल देखता हूँ, और वेशक मैं तुम पर एक घेर लेने वाले दिन के अज़ाब से डरता हूँ। (84) और ऐ मेरी कौम! इन्साफ़ से माप तोल पूरा करो, लोगों को उन की चीज़ें घटा कर न दो, और ज़मीन में फ़साद करते न फ़िरो। (85) अल्लाह (का दिया हुआ जो) बच रहे तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम ईमान वाले हो, और मैं तुम पर निगहवान नहीं हूँ। (86) वह बोले ऐ शुऐब (अ)! क्या तेरी नमाज़ तुझे हुक्म देती है (सिखाती है)? कि उन्हें छोड़ दें जिन की हमारे बाप दादा परसतिश करते थे, या अपने मालों में हम जो चाहें न करें, (ताने भरे अंदाज़ में बोले) वेशक तुम ही वाबिकार, नेक चलन हो? (87) उस ने कहा ऐ मेरी कौम! तुम्हारा क्या खयाल है? मैं अपने रब की तरफ़ से अगर रौशन दलील पर हूँ और उस ने मुझे अपनी तरफ़ से अच्छी रोज़ी दी है, और मैं नहीं चाहता कि मैं (खुद) उस के खिलाफ़ करूँ जिस से तुम्हें रोकता हूँ, जिस कद्र मुझ से हो सके मैं सिर्फ़ इसलाह चाहता हूँ और मेरी तौफ़ीक़ सिर्फ़ अल्लाह ही से है, उसी पर मैं ने भरोसा किया और उसी की तरफ़ रुजूज़ करता हूँ। (88)

فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا							
उस पर	और हम ने बरसाए	उस का नीचा (पस्त)	उस का ऊपर (बुलन्द)	हम ने करदिया	हमारा हुक्म	आया	पस जब
حِجَارَةً مِّن سِجِّيلٍ مَّنْضُودٍ ﴿٨٢﴾ مُسَوَّمَةٌ عِنْدَ رَبِّكَ ۖ							
तेरे रब के पास	निशान किए हुए	82	तह व तह	कंकर (संगरेज़े)	पत्थर		
وَمَا هِيَ مِنَ الظَّالِمِينَ بِبَعِيدٍ ﴿٨٣﴾ وَإِلَى مَدِينِ آخَاهُمْ شُعَيْبًا ۖ							
शुऐब (अ)	उन का भाई	और मदयन की तरफ़	83	कुछ दूर	ज़ालिम (जमा)	से	यह और नहीं
قَالَ يٰ قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلٰهِ غَيْرُهُ ۖ							
उस के सिवा	कोई माबूद	तुम्हारे लिए नहीं	अल्लाह	इबादत करो	ऐ मेरी कौम	उस ने कहा	
وَلَا تَنْقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ إِنِّي أُرِيكُمْ بِخَيْرٍ وَإِنِّي							
और वेशक मैं	आसूदा हाल	तुम्हें देखता हूँ	वेशक मैं	और तोल	माप	और न कमी करो	
أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيطٍ ﴿٨٤﴾ وَيٰ قَوْمِ أَوْفُوا							
पूरा करो	और ऐ मेरी कौम	84	एक घेरलेने वाला दिन	अज़ाब	तुम पर	डरता हूँ	
الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ ۖ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ							
उन की चीज़	लोग	और न घटाओ	इन्साफ़ से	और तोल	माप		
وَلَا تَعَثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٨٥﴾ بَقِيَّتُ اللَّهِ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنِ							
अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर	अल्लाह	बचा हुआ	85	फ़साद करते हुए	ज़मीन में और न फ़िरो
كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ۖ وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيظٍ ﴿٨٦﴾ قَالُوا يٰ شُعَيْبُ							
ऐ शुऐब (अ)	वह बोले	86	निगहवान	तुम पर	मैं	और नहीं	ईमान वाले तुम हो
أَصَلَوْتِكَ تَأْمُرُكَ أَنْ نَّشْرُكَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا أَوْ أَنْ نَفْعَلَ							
हम न करें	या	हमारे बाप दादा	जो परसतिश करते थे	हम छोड़ दें	कि	तुझे हुक्म देती है	क्या तेरी नमाज़
فِي أَمْوَالِنَا مَا نَشَؤُا۟ إِنَّكَ لَأَنْتَ الْحَلِيمُ الرَّشِيدُ ﴿٨٧﴾ قَالَ							
उस ने कहा	87	नेक चलन	बुर्दवार (वाबिकार)	अलबत्ता तू	वेशक तू	जो हम चाहें	अपने मालों में
يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُمْ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَرَزَقْنِي مِنْهُ							
अपनी तरफ़ से	उस ने मुझे रोज़ी दी	अपना रब	से	रौशन दलील	पर	मैं हूँ	अगर क्या तुम देखते हो (क्या खयाल है) ऐ मेरी कौम
رِزْقًا حَسَنًا ۖ وَمَا أُرِيدُ أَنْ أُخَالِفَكُمْ إِلَىٰ مَا أَنهٰكُمْ							
जिस से मैं तुम्हें रोकता हूँ	तरफ़	मैं उस के खिलाफ़ करूँ	कि	और मैं नहीं चाहता	अच्छी	रोज़ी	
عَنْهُ ۖ إِنْ أُرِيدُ إِلَّا الْإِصْلَاحَ ۖ مَا اسْتَطَعْتُ ۖ وَمَا							
और नहीं	मुझ से हो सके	जो (जिस कद्र)	इस्लाह	मगर (सिर्फ़)	मैं चाहता	नहीं	उस से
تَوْفِيقِي ۖ إِلَّا بِاللَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أَنِيبُ ﴿٨٨﴾							
88	मैं रुजूज़ करता हूँ	और उसी की तरफ़	मैं ने भरोसा किया	उस पर	अल्लाह से	मगर (सिर्फ़)	मेरी तौफ़ीक़

تَوْفِيقِي ۖ

وَيَقُومُ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِي أَنْ يُصِيبَكُمْ مِثْلُ مَا أَصَابَ							
जो पहुँचा	उस जैसा	कि तुम्हें पहुँचे	मेरी ज़िद	तुम्हें आमादा न करदे	और ऐ मेरी कौम		
قَوْمَ نُوحٍ أَوْ قَوْمَ هُودٍ أَوْ قَوْمَ صَالِحٍ وَمَا قَوْمٌ لُوطٍ مِّنْكُمْ							
तुम से	कौमे लूत	और नहीं	कौमे सालेह	या	कौमे हूद	या	कौमे नूह (अ)
بَبَعِيدٍ ﴿٨٩﴾ وَاسْتَعْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُؤْبَوْنَ إِلَيْهِ إِنَّ رَبِّي رَحِيمٌ							
निहायत मेहरबान	मेरा रब	वेशक	उस की तरफ़ रुजूअ़ करो	फिर	अपना रब	और बख़्शिश मांगो	89 कुछ दूर
وَدُودٌ ﴿٩٠﴾ قَالُوا يَشْعِيبُ مَا نَفَقَهُ كَثِيرًا مِّمَّا تَقُولُ وَإِنَّا							
और वेशक हम	उन से जो तू कहता है	बहुत	हम नहीं समझते	ऐ शुऐब (अ)	उन्होंने ने कहा	90	सुहव्वत वाला
لَنُرِكَ فِينَا ضَعِيفًا وَلَوْ لَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنَاكَ وَمَا أَنْتَ عَلَيْنَا							
हम पर	तू	और नहीं	तुझ पर पथराओ करते	और अगर तेरा कुम्बा न होता	जईफ़ (कमज़ोर)	अपने दरमियान	तुझे देखते हैं
بِعَزِيزٍ ﴿٩١﴾ قَالَ يَقُومِ أَرْهَطِي أَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ اللَّهِ							
अल्लाह	से	तुम पर	ज़ियादा ज़ोर वाला	क्या मेरा कुम्बा	ऐ मेरी कौम	उस ने कहा	91 ग़ालिव
وَاتَّخَذْتُمُوهُ وَرَاءَكُمْ ظَهْرِيًّا إِنَّ رَبِّي بِمَا تَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿٩٢﴾							
92	अहाता किए हुए	उसे जो तुम करते हो	मेरा रब	वेशक	पीठ पीछे	अपने से परे	और तुम ने उसे लिया (डाल रखा)
وَيَقُومِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۗ							
तुम जान लोगे	जल्द	काम करता हूँ	वेशक मैं	अपनी जगह	पर	तुम काम करते रहो	ऐ मेरी कौम
مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ وَارْتَقِبُوا							
और तुम इन्तिज़ार करो	झूटा	वह	और कौन?	उस को रुस्वा कर देगा	अज़ाब	उस पर आता है	कौन - किस?
إِنِّي مَعَكُمْ رَقِيبٌ ﴿٩٣﴾ وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا							
शुऐब (अ)	हम ने बचा लिया	हमारा हुक़म	और जब आया	93	इन्तिज़ार	तुम्हारे साथ	मैं वेशक
وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَآخَذَتِ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةَ							
कड़क (चिंघाड़)	उन्होंने ने जुल्म किया	वह लोग जो	और आलिया	अपनी से रहमत से	उस के साथ	और जो लोग ईमान लाए	
فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جِثْمِينَ ﴿٩٤﴾ كَانَ لَمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۗ أَلَا							
याद रखो	उस में (वाहां)	वह नहीं बसे	गोया	94	औन्धे पड़े हुए	अपने घरों में	सो सुबह की उन्होंने ने
بُعْدًا لِّمَدْيِنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُودُ ﴿٩٥﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ							
मूसा (अ)	और हम ने भेजा	95	समूद	जैसे दूर हुए	मदयन के लिए	दूरी है	
بِآيَاتِنَا وَسُلْطَنٍ مُّبِينٍ ﴿٩٦﴾ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ							
और उस के सरदार	फिरज़ौन कि तरफ़	96	रौशन	और दलील	अपनी निशानियों के साथ		
فَاتَّبَعُوا أَمْرَ فِرْعَوْنَ وَمَا أَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيدٍ ﴿٩٧﴾							
97	दुरुस्त	फिरज़ौन का हुक़म	और न	फिरज़ौन का हुक़म	तो उन्होंने ने पैरवी की		

और ऐ मेरी कौम! तुम्हें मेरी ज़िद आमादा न कर दे कि तुम्हें (अज़ाब) पहुँचे उस जैसा जो कौमे नूह (अ) या कौमे हूद (अ) या कौमे सालेह (अ) को, और कौमे लूत (अ) नहीं है तुम से कुछ दूर। (89) और अपने रब से बख़्शिश मांगो, फिर उस की तरफ़ रुजूअ़ करो, वेशक मेरा रब निहायत मेहरबान, सुहव्वत वाला है। (90) उन्होंने ने कहा ऐ शुऐब (अ)! तू जो कहता है उन में से हम बहुत (सी बातें) नहीं समझते और वेशक हम तुझे देखते हैं अपने दरमियान कमज़ोर, और तेरा कुम्बा (भाई बन्द) न होते तो हम तुझ पर पथराओ करते और तू हम पर ग़ालिव नहीं। (91) उस ने कहा ऐ मेरी कौम! क्या मेरा कुम्बा तुम पर अल्लाह से ज़ियादा ज़ोर वाला है? और तुम ने उसे अपनी पीठ पीछे डाल रखा है, वेशक मेरा रब जो तुम करते हो उसे अहाता (काबू) किए हुए है। (92) और ऐ मेरी कौम! तुम अपनी जगह काम करते रहो मैं (अपना) काम करता हूँ, तुम जल्द जान लोगे किस पर वह अज़ाब आता है जो उस को रुस्वा कर देगा? और कौन झूटा है? और तुम इन्तिज़ार करो, वेशक मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार में हूँ। (93) और जब हमारा हुक़म आया, हम ने शुऐब (अ) को और जो लोग उस के साथ ईमान लाए अपनी रहमत से बचा लिया, और जिन लोगों ने जुल्म किया उन्हें चिंघाड़ ने आलिया, सो उन्होंने ने सुबह की (सुबह के वक़्त) अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। (94) गोया वह वहां बसे (ही) न थे, याद रखो! (रहमत से) दूरी हो मदयन के लिए जैसे दूर हुए समूद। (95) और हम ने भेजा मूसा (अ) को अपनी निशानियों और रौशन दलील के साथ, (96) फिरज़ौन और उसके सरदारों की तरफ़, तो उन्होंने ने फिरज़ौन के हुक़म की पैरवी की और फिरज़ौन का हुक़म दुरुस्त न था। (97)

क़ियामत के दिन वह अपनी कौम के आगे होगा, तो वह उन्हें दोज़ख में ला उतारेगा और बुरा है घाट (उन के) उतरने का मुक़ाम। (98) और इस (दुनिया) में उन के पीछे लानत लगादी गई और क़ियामत के दिन, बुरा है (यह) इन्ज़ाम जो उन्हें दिया गया। (99)

यह बसतियों की ख़बरें हैं कि हम तुझ को बयान करते हैं, उन में कुछ मौजूद है और (कुछ की जड़ें) कट चुकी हैं। (100)

और हम ने उन पर जुल्म नहीं किया, बल्कि उन्होंने ने अपनी जानों पर जुल्म किया, सो उन के कुछ काम न आए वह माबूद जिन्हें वह अल्लाह के सिवा पुकारते थे, जब तेरे रब का हुकम आया, और उन्हें हलाकत के सिवा उन्होंने ने कुछ न बढ़ाया। (101)

और ऐसी ही है तेरे रब की पकड़ जब वह बसतियों को पकड़ता है और वह जुल्म करते हों, बेशक उस की पकड़ दर्दनाक, सख्त है। (102)

बेशक इस में अलवत्ता उस के लिए निशानी है जो डरा आख़िरत के अज़ाब से, यह एक दिन है जिस में सब लोग जमा होंगे, और यह एक दिन है पेश होने (हाज़री) का। (103)

और हम पीछे नहीं हटाते (मुलतवी नहीं करते) मगर (सिर्फ़) एक मुक़र्ररा मुद्दत तक के लिए। (104) जब वह दिन आएगा कोई शख्स बात न कर सकेगा, मगर

उस की इजाज़त से, सो कोई उन में बदबख्त है और कोई खुश बख्त। (105)

पस जो बदबख्त हुए वह दोज़ख में हैं, उन के लिए उस में चीखना और दहाड़ना है। (106)

वह उस में हमेशा रहेंगे, जब तक ज़मीन और आस्मान हैं, मगर जितना तेरा रब चाहे, बेशक तेरा रब जो चाहे कर गुज़रने वाला है। (107)

और जो लोग खुश बख्त हुए सो वह हमेशा जन्नत में रहेंगे, जब तक ज़मीन और आस्मान हैं, मगर जितना तेरा रब चाहे, (यह) बख़्शिश है ख़तम न हाने वाली। (108)

يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فَأَوْرَدَهُمُ النَّارَ وَبِئْسَ

और बुरा	दोज़ख	तो ला उतारेगा उन्हें	क़ियामत के दिन	अपनी कौम	आगे होगा
---------	-------	----------------------	----------------	----------	----------

الْوَرْدُ الْمَوْرُودُ ﴿٩٨﴾ وَأَتَّبِعُوا فِي هَذِهِ لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ بِئْسَ

बुरा	और क़ियामत के दिन	लानत	इस में	और उन के पीछे लगादी गई	98	घाट (उतरने का मुक़ाम)
------	-------------------	------	--------	------------------------	----	-----------------------

الرَّفْدُ الْمَرْفُودُ ﴿٩٩﴾ ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْقُرَى نَقُصُّهُ عَلَيْكَ مِنْهَا

उन से	तुझ पर (को)	हम यह बयान करते हैं	बसतियों की ख़बरें	से	यह	99	उन्हें इन्ज़ाम दिया गया	इन्ज़ाम
-------	-------------	---------------------	-------------------	----	----	----	-------------------------	---------

قَائِمٌ وَحَصِيدٌ ﴿١٠٠﴾ وَمَا ظَلَمْنَهُمْ وَلَكِنْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ

अपनी जानों पर	उन्होंने ने जुल्म किया	और लेकिन (बल्कि)	और हम ने जुल्म नहीं किया उन पर	100	और कट चुकी	काइम (मौजूद)
---------------	------------------------	------------------	--------------------------------	-----	------------	--------------

فَمَا أَغْنَتْ عَنْهُمْ آلِهَتُهُمُ الَّتِي يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ

अल्लाह	अलावा	वह पुकारते थे	वह जो	उन के माबूद	उन से (के)	सो न काम आए
--------	-------	---------------	-------	-------------	------------	-------------

مِنْ شَيْءٍ لَّمَّا جَاءَ أَمْرُ رَبِّكَ وَمَا زَادُوهُمْ غَيْرَ تَتَشِيبُ ﴿١٠١﴾

101	सिवाए हलाकत	और न बढ़ाया उन्हें	तेरे रब का हुकम	आया	जब	कुछ भी
-----	-------------	--------------------	-----------------	-----	----	--------

وَكَذَلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ الْقُرَىٰ وَهِيَ ظَالِمَةٌ إِنَّ أَخْذَهُ

उस की पकड़	बेशक	जुल्म करते हों	और वह	बसतियां	जब उस ने पकड़ा (पकड़ता है)	तेरा रब	पकड़	और ऐसी ही
------------	------	----------------	-------	---------	----------------------------	---------	------	-----------

الْيَمِّ شَدِيدٌ ﴿١٠٢﴾ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْآخِرَةِ

आख़िरत का अज़ाब	उस के लिए है जो डरा	अलवत्ता निशानी	उस में	बेशक	102	दर्दनाक सख्त
-----------------	---------------------	----------------	--------	------	-----	--------------

ذَلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوعٌ لَّهُ النَّاسُ وَذَلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُودٌ ﴿١٠٣﴾

103	पेश होने का	एक दिन	और यह	सब लोग	उस में	जमा होंगे	एक दिन	यह
-----	-------------	--------	-------	--------	--------	-----------	--------	----

وَمَا نُؤَخِّرُهُ إِلَّا لِأَجَلٍ مُّعَدَّدٍ ﴿١٠٤﴾ يَوْمَ يَأْتِ لَا تَكَلِّمُ نَفْسٌ إِلَّا

मगर	कोई शख्स	न बात करेगा	वह आएगा	जिस दिन	104	गिनी हुई (मुक़र्ररा)	एक मुद्दत के लिए	मगर	और हम नहीं हटाते पीछे
-----	----------	-------------	---------	---------	-----	----------------------	------------------	-----	-----------------------

بِأَذْنِهِ فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَسَعِيدٌ ﴿١٠٥﴾ فَأَمَّا الَّذِينَ شَقُوا فَفِي النَّارِ

दोज़ख	सो में	बदबख्त	जो लोग	पस	105	और कोई खुश बख्त	कोई बदबख्त	सो उन में	उस की इजाज़त से
-------	--------	--------	--------	----	-----	-----------------	------------	-----------	-----------------

لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَشَهِيْقٌ ﴿١٠٦﴾ خُلِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمَوَاتُ

आस्मान (जमा)	जब तक है	उस में	हमेशा रहेंगे	106	और दहाड़ना	चीखना	उस में	उन के लिए
--------------	----------	--------	--------------	-----	------------	-------	--------	-----------

وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ إِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيدُ ﴿١٠٧﴾

107	जो वह चाहे	कर गुज़रने वाला	तेरा रब	बेशक	तेरा रब	जितना चाहे	मगर	और ज़मीन
-----	------------	-----------------	---------	------	---------	------------	-----	----------

وَأَمَّا الَّذِينَ سَعِدُوا فَفِي الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ

जब तक है	उस में	हमेशा रहेंगे	सो जन्नत में	खुश बख्त हुए	वह लोग जो	और जो
----------	--------	--------------	--------------	--------------	-----------	-------

السَّمَوَاتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ عَطَاءٌ غَيْرَ مَجْدُوذٍ ﴿١٠٨﴾

108	ख़तम न हाने वाली	अता - बख़्शिश	तेरा रब	जितना चाहे	मगर	और ज़मीन	आस्मान (जमा)
-----	------------------	---------------	---------	------------	-----	----------	--------------

فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هَؤُلَاءِ مَا يَعْبُدُونَ إِلَّا كَمَا								
जैसे	मगर	वह नहीं पूजते	यह लोग	पूजते हैं	उस से जो	शक ओ शुबह में	पस तू न रह	
يَعْبُدُ آبَاءَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَإِنَّا لَمُوقِفُوهُمْ نَصِيبَهُمْ								
उन का हिस्सा	उन्हें पूरा फेर देंगे	और वेशक हम	उस से कब्ल	उन के बाप दादा	पूजते थे			
غَيْرِ مَنقُوصٍ ﴿١٠٩﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاحْتَلَفَ فِيهِ								
उस में	सो इख्तिलाफ किया गया	किताब	मूसा (अ)	और अलबत्ता हम ने दी	109	घटाए बगैर		
وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَقَضَىٰ بَيْنَهُمْ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكِّ								
अलबत्ता शक में	और वेशक वह	उन के दरमियान	अलबत्ता फ़ैसला कर दिया जाता	तेरा रब	से	पहले हो चुकी	एक वात और अगर न	
مِّنْهُ مُرِيبٍ ﴿١١٠﴾ وَإِنَّ كَلَّا لَمَّا لِيُوقِنَهُمْ رَبُّكَ أَعْمَالَهُمْ								
उन के अमल	तेरा रब	उन्हें पूरा बदला देगा	जब	सब	और वेशक	110	धोके में डालने वाला उस से	
إِنَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١١١﴾ فَاسْتَقِمْ كَمَا أَمَرْتَ وَمَنْ تَابَ								
तौबा की	और जो	तुम्हें हुक्म दिया गया	जैसे	सो तुम काइम रहो	111	वाखबर	जो वह करते हैं वेशक वह	
مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١٢﴾ وَلَا تَرْكَبُوا إِلَىٰ								
तरफ	और न झुको	112	देखने वाला	तुम करते हो	उस से जो	वेशक वह	और सरकशी न करो तुम्हारे साथ	
الَّذِينَ ظَلَمُوا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ								
कोई	अल्लाह	सिवा	तुम्हारे लिए	और नहीं	आग	पस तुम्हें छुएगी	जुल्म किया उन्होंने ने वह जिन्होंने ने	
أَوْلِيَاءَ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ ﴿١١٣﴾ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفِي النَّهَارِ وَزُلْفَا								
कुछ हिस्सा	दिन	दोनों तरफ	नमाज़	और काइम रखो	113	न मदद दिए जाओगे	फिर मददगार - हिमायती	
مِّنَ اللَّيْلِ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ ذَلِكَ ذِكْرِي								
नसीहत	यह	बुराइयां	मिटा देती है	नेकियां	वेशक	रात	से (के)	
لِلذَّكْرِينَ ﴿١١٤﴾ وَأَصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١١٥﴾								
115	नेकी करने वाले	अजर	ज़ाया नहीं करता	अल्लाह	वेशक	और सब्द करो	114	नसीहत मानने वालों के लिए
فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِنْ قَبْلِكُمْ أُولُوا بَقِيَّةَ يَنْهَوْنَ عَنِ								
से	रोकते	साहबे खैर	तुम से पहले	से	कौमें	से	पस क्यों न हुए	
الْفُسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّنْ أَنْجَيْنَا مِنْهُمْ وَاتَّبَعَ								
और पीछे रहे	उन से	हम ने बचा लिया	से - जो	थोड़े	मगर	ज़मीन में	फ़साद	
الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أَتَرَفُوا فِيهِ وَكَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿١١٦﴾								
116	गुनाहगार	और वह थे	उस में	जो उन्हें दी गई	उन्होंने ने जुल्म किया (ज़ालिम)	वह लोग जो		
وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا مُصْلِحُونَ ﴿١١٧﴾								
117	नेकीकार	जब कि वहाँ के लोग	जुल्म से	वस्तियां	कि हलाक कर दे	तेरा रब	और नहीं है	

पस उस से शक ओ शुबह में न रहो जो यह (काफिर) पूजते हैं, वह नहीं पूजते मगर जैसे उस से कब्ल उन के बाप दादा पूजते थे, और वेशक हम उन्हें उन का हिस्सा घटाए बगैर पूरा फेर देंगे। (109) और हम ने अलबत्ता मूसा (अ) को किताब दी, सो उस में इख्तिलाफ किया गया, और अगर तेरे रब की तरफ से एक वात पहले न हो चुकी होती तो अलबत्ता उन के दरमियान फ़ैसला कर दिया जाता, और अलबत्ता वह इस (कुरआन की तरफ) से धोके में डालने वाले शक में हैं। (110) और वेशक जब (वक़्त आएगा) सब को पूरा पूरा बदला देगा तेरा रब उन के आमाल का, वेशक जो वह करते हैं वह उस से वाखबर है। (111) सो तुम काइम रहो जैसे तुम्हें हुक्म दिया गया है, और वह भी जिस ने तौबा की तुम्हारे साथ, और सरकशी न करो, वेशक जो तुम करते हो वह उस को देख रहा है। (112) और उन की तरफ न झुको जिन्होंने ने जुल्म किया, पस तुम्हें आग छुएगी (आ लगेगी), और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा कोई मददगार नहीं, फिर मदद न दिए जाओगे (मदद न पाओगे)। (113) और नमाज़ काइम रखो दिन के दोनों तरफ (सुबह ओ शाम) और रात के कुछ हिस्से में, वेशक नेकियां मिटा देती हैं बुराइयों को, यह नसीहत है नसीहत मानने वालों के लिए। (114) और सब्द करो, वेशक अल्लाह अजर ज़ाया नहीं करता नेकी करने वालों का। (115) पस तुम से पहले जो कौमें हुई उन में साहबाने खैर क्यों न हुए? कि रोकते ज़मीन में फ़साद से, मगर थोड़े से जिन्हें हम ने उन से बचा लिया और ज़ालिम (उन्हीं लज़ज़तों के) पीछे पड़े रहे जो उन्हें दी गई थी, और वह गुनाहगार थे। (116) और तेरा रब ऐसा नहीं है कि वस्तियों को जुल्म से हलाक कर दे जबकि वहाँ के लोग नेकीकार हों। (117)

और अगर तेरा रब चाहता तो लोगों को एक (ही) उम्मत कर देता और वह हमेशा इख्तिलाफ़ करते रहेंगे। (118)

मगर जिस पर तेरे रब ने रहम किया, और उसी लिए उन्हें पैदा किया, और पूरी हुई तेरे रब की बात, अलबत्ता जहन्नम को भर दूंगा जिन्नों और इन्सानों से इकट्ठे। (119)

और हर बात हम तुम से रसूलों के अहवाल की बयान करते हैं ताकि उस से तुम्हारे दिल को तसल्ली दें, और तुम्हारे पास आया इस में हक, और मोमिनों के लिए नसीहत और याद दिहानी। (120)

और उन लोगों को कह दें जो ईमान नहीं लाते, तुम अपनी जगह काम किए जाओ, हम (अपनी जगह) काम करते हैं। (121)

और तुम इन्तिज़ार करो, हम भी मुन्तज़िर हैं। (122)

और अल्लाह के पास है आस्मानों और ज़मीन के ग़ैब (छुपी हुई बातें), और उस की तरफ़ तमाम कामों की बाज़ग़शत है, सो उस की इवादात करो, और उस पर भरोसा करो, और तुम्हारा रब उस से बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (123)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरवान, रहम करने वाला है अलिफ़-लाम-रा, यह रौशन किताब की आयतें हैं। (1)

वेशक हम ने उसे कुरआन अरबी ज़बान में नाज़िल किया, ताकि तुम समझो। (2)

हम तुम पर बहुत अच्छा किस्सा बयान करते हैं, इस लिए कि हम ने तुम्हारी तरफ़ यह कुरआन भेजा और तहकीक़ तुम उस से क़व्ल अलबत्ता बेख़बरों में से थे। (3)

(याद करो) जब यूसुफ़ (अ) ने अपने बाप से कहा, ऐ मेरे बाप! वेशक मैं ने ग्यारह (11) सितारों और सूरज चाँद को (सपने में) देखा, मैं ने उन्हें अपने लिए

सिज्दा करते देखा। (4)

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَا يَزَالُونَ

और वह हमेशा रहेंगे	एक	उम्मत	लोग (जमा)	तो कर देता	तेरा रब	चाहता	और अगर
--------------------	----	-------	-----------	------------	---------	-------	--------

مُخْتَلِفِينَ ﴿١١٨﴾ إِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ وَلِذَلِكَ خَلَقَهُمْ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ

बात	और पूरी हुई	पैदा किया उन्हें	और उसी लिए	तेरा रब	रहम किया	जो - जिस	मगर	118	इख्तिलाफ़ करते हुए
-----	-------------	------------------	------------	---------	----------	----------	-----	-----	--------------------

رَبِّكَ لِأَمَلَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١١٩﴾ وَكَلَّا

और हर बात	119	इकट्ठे	और इन्सान	जिन (जमा)	से	जहन्नम	अलबत्ता भर दूंगा	तेरा रब
-----------	-----	--------	-----------	-----------	----	--------	------------------	---------

نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهِ فُؤَادَكَ وَجَاءَكَ

और तेरे पास आया	तेरा दिल	उस से	कि हम साबित करें (तसल्ली दें)	रसूल (जमा)	ख़बरें (अहवाल)	से	तुझ पर	हम बयान करते हैं
-----------------	----------	-------	-------------------------------	------------	----------------	----	--------	------------------

فِي هَذِهِ الْحَقِّ وَمَوْعِظَةٌ وَذِكْرَى لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿١٢٠﴾ وَقُلْ لِلَّذِينَ

वह लोग जो	और कह दें	120	मोमिनों के लिए	और याद दिहानी	और नसीहत	हक	इस	में
-----------	-----------	-----	----------------	---------------	----------	----	----	-----

لَا يُؤْمِنُونَ أَعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنَّا عَمِلُونَ ﴿١٢١﴾ وَانْتَظِرُوا إِنَّا

हम भी	और तुम इन्तिज़ार करो	121	काम करते हैं	हम	अपनी जगह	पर	तुम काम किए जाओ	ईमान नहीं लाते
-------	----------------------	-----	--------------	----	----------	----	-----------------	----------------

مُنْتَظِرُونَ ﴿١٢٢﴾ وَاللَّهُ غَيْبِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَيْهِ يُرْجَعُ الْأَمْرُ

काम	बाज़ग़शत	और उसी की तरफ़	और ज़मीन	आस्मानों	ग़ैब	और अल्लाह के पास	122	मुन्तज़िर (जमा)
-----	----------	----------------	----------	----------	------	------------------	-----	-----------------

كُلُّهُ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٢٣﴾

123	तुम करते हो	उस से जो	गाफ़िल (बेख़बर)	तुम्हारा रब	और नहीं	उस पर	और भरोसा करो	सो उस की इवादात करो	तमाम
-----	-------------	----------	-----------------	-------------	---------	-------	--------------	---------------------	------

آيَاتِهَا ۱۱۱ ﴿١٢﴾ سُورَةُ يُوسُفَ ﴿١٢﴾ زُكُوعَاتِهَا ۱۲

रुक़ा़त 12 (12) सूरह यूसुफ़ यूसुफ़ (अ) आयात 111

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

الرَّ قَفِّ تِلْكَ آيَةُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ﴿١﴾ إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا

अरबी	कुरआन	उसे नाज़िल किया	वेशक हम ने	1	रौशन	किताब	आयतें	यह	अलिफ़ लाम रा
------	-------	-----------------	------------	---	------	-------	-------	----	--------------

لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٢﴾ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ أَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَا

इस लिए कि	किस्सा	बहुत अच्छा	तुम पर	बयान करते हैं	हम	2	समझो	ताकि तुम
-----------	--------	------------	--------	---------------	----	---	------	----------

أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ هَذَا الْقُرْآنَ وَإِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهِ لَمَنَّ

अलबत्ता - से	इस से क़व्ल	तू था	और तहकीक़	कुरआन	यह	तुम्हारी तरफ़	हम ने भेजा
--------------	-------------	-------	-----------	-------	----	---------------	------------

الْغُفْلِينَ ﴿٣﴾ إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ

मैं ने देखा	वेशक मैं	ऐ मेरे बाप	अपने बाप से	यूसुफ़ (अ)	कहा	जब	3	बेख़बर (जमा)
-------------	----------	------------	-------------	------------	-----	----	---	--------------

أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَأَيْتُهُمْ لِي سَاجِدِينَ ﴿٤﴾

4	सिज्दा करते	अपने लिए	मैं ने उन्हें देखा	और चाँद	और सूरज	सितारे	ग्यारह (11)
---	-------------	----------	--------------------	---------	---------	--------	-------------

قَالَ يُبْنَىٰ لَا تَقْضُصْ رُءْيَاكَ عَلَىٰ إِخْوَتِكَ فَيَكِيدُوا لَكَ								
तेरे लिए	वह चाल चलेंगे	अपने भाई	पर (से)	अपना ख़्वाब	न बयान करना	ऐ मेरे बेटे	उस ने कहा	
كَيْدًا إِنَّ الشَّيْطَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٥﴾ وَكَذَلِكَ								
और उसी तरह	5	खुला	दुश्मन	इन्सान के लिए (का)	शैतान	वेशक	कोई चाल	
يَجْتَبِيكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهُ								
अपनी नेमत	और मुकम्मल करेगा	वातों	अन्जाम निकालना	से	और सिखाएगा तुझे	तेरा रब	चुन लेगा तुझे	
عَلَيْكَ وَعَلَىٰ آلِ يَعْقُوبَ كَمَا أَتَمَّهَا عَلَىٰ أَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ								
इस से पहले	तेरे बाप दादा	पर	उस ने उसे पूरा किया	जैसे	याकूब (अ) के घर वाले	और पर	तुझ पर	
إِبْرَاهِيمَ وَاسْحَقَ إِنَّ رَبَّكَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٦﴾ لَقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ								
यूसुफ (अ)	में	वेशक है	6	हिक्मत वाला	इल्म वाला	तेरा रब	वेशक और इसहाक (अ) इब्राहीम (अ)	
وَإِخْوَتِهِ آيَاتٍ لِلْسَّالِفِينَ ﴿٧﴾ إِذْ قَالُوا لِيُوسُفُ وَأَخُوهُ أَحَبُّ								
ज़ियादा प्यारा	और उस का भाई	ज़रूर यूसुफ (अ)	उन्होंने ने कहा	जब	7	पूछने वालों के लिए	निशानियां और उस के भाई	
إِلَىٰ آبِنَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّ آبَانَا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٨﴾								
8	सरीह	अलबत्ता ग़लती में	हमारा बाप	वेशक	एक जमाअत	जब कि हम	हम से हमारा बाप तरफ (को)	
إِفْتُلُوا يُوسُفُ أَوْ اظْرَحُوهُ أَرْصًا يَخْلُ لَكُمْ وَجْهُ أَبِيكُمْ								
तुम्हारे बाप	सुँह (तबज्जुह)	तुम्हारे लिए	खाली हो जाए	किसी सर ज़मीन	उसे डाल आओ	या	यूसुफ (अ) मार डालो	
وَتَكُونُوا مِنْ بَعْدِهِ قَوْمًا صَالِحِينَ ﴿٩﴾ قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا								
न क़त्ल करो	उन से	एक कहने वाला	कहा	9	नेक (जमा)	लोग	उस के बाद से और तुम हो जाओ	
يُوسُفَ وَالْقَوْمُ فِي غَيِّبِ الْجُبِّ يَلْتَقِطُهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ								
चलता (मुसाफ़िर)	कोई	उठाले उस को	कुआं	अन्धा (गहरा)	में	और उसे डाल आओ	यूसुफ (अ)	
إِنْ كُنْتُمْ فَعَلِينَ ﴿١٠﴾ قَالُوا يَا أَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَىٰ يُوسُفَ								
यूसुफ (अ)	पर (बारे में)	तू हमारा भरोसा नहीं करता	क्या हुआ तुझे	ऐ हमारे अब्बा	कहने लगे	10	तुम करने वाले हो (करना ही है) अगर	
وَإِنَّا لَهُ لَنَصِحُونَ ﴿١١﴾ أَرْسَلَهُ مَعَنَا غَدًا يَرْتَعُ وَيَلْعَبُ وَإِنَّا								
और	और	वह खाए	कल	हमारे साथ	उसे भेज दे	11	अलबत्ता ख़ैर ख़्वाह उस के और वेशक हम	
لَهُ لَحَفِظُونَ ﴿١٢﴾ قَالَ إِنِّي لَيَحْزُنُنِي أَنْ تَذْهَبُوا بِهِ وَأَخَافُ								
और मैं डरता हूँ	उसे	तुम लेजाओ	कि	ग़मगीन करता है	वेशक मुझे	उस ने कहा	12	अलबत्ता मुहाफ़िज़ उस के
أَنْ يَأْكُلَهُ الذِّبُّ وَأَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُونَ ﴿١٣﴾ قَالُوا لَئِنْ								
अगर	वह बोले	13	वेख़्बर (जमा)	उस से	और तुम	भेड़िया	उसे खाजाए कि	
أَكَلَهُ الذِّبُّ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّا إِذًا لَّخٰسِرُونَ ﴿١٤﴾								
14	ज़ियांकार	उस सूरत में	वेशक हम	एक जमाअत	और हम	भेड़िया	उसे खा जाए	

उस ने कहा ऐ मेरे बेटे! अपना सपना अपने भाइयों से बयान न करना कि वह तेरे लिए कोई चाल चलेंगे, वेशक शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है। (5)

और तेरा रब उसी तरह तुझे चुन लेगा, और तुझे सिखाएगा बातों का अन्जाम निकालना (ख़्वाबों की तावीर) और तुझ पर अपनी नेमत पूरी करदेगा, और याकूब (अ) के घर वालों पर, जैसे उस ने इस से पहले तेरे बाप दादा इब्राहीम (अ) और इसहाक (अ) पर उसे पूरा किया, वेशक तेरा रब इल्म वाला, हिक्मत वाला है। (6)

वेशक यूसुफ (अ) और उस के भाइयों में पूछने वालों के लिए खुली निशानियां हैं। (7)

जब उन्होंने ने कहा ज़रूर यूसुफ (अ) और उस का भाई हमारे बाप को हम से ज़्यादा प्यारे हैं, जब कि हम एक जमाअत (क़बी) हैं, वेशक हमारे अब्बा सरीह ग़लती में हैं। (8)

यूसुफ (अ) को मार डालो, या उसे किसी सर ज़मीन में डाल आओ कि तुम्हारे बाप की तबज्जुह तुम्हारे लिए खाली (खास) हो जाए और तुम हो जाओ (हो जाना) उस के बाद नेक लोग। (9)

उन में से एक कहने वाले ने कहा, यूसुफ (अ) को क़त्ल न करो, और उसे डाल आओ अन्धे कुआं में कि उसे कोई मुसाफ़िर उठा ले (जाए), अगर तुम्हें करना ही है। (10)

कहने लगे ऐ हमारे अब्बा! तुझे क्या हुआ है? तू यूसुफ (अ) के बारे में हमारा एतबार नहीं करता, और वेशक हम तो उस के ख़ैर ख़ाह हैं। (11)

कल उसे हमारे साथ भेज दे वह (जंगल के फल) खाए और खेले कूदे, और वेशक हम उस के मुहाफ़िज़ हैं। (12)

उस ने कहा वेशक मुझे यह ग़मगीन (फ़िक्रमन्द) करता है कि तुम उसे ले जाओ और मैं डरता हूँ कि उसे भेड़िया खाजाए, और तुम उस से वेख़्बर रहो। (13)

वह बोले अगर उसे भेड़िया खाजाए जब कि हम एक क़बी जमाअत हैं, उस सूरत में वेशक हम ज़ियांकार ठहरे। (14)

फिर जब वह उसे लेगा और उन्होंने ने इत्तिफ़ाक़ कर लिया कि उसे अन्धे कुआं में डाल दें, और हम ने उस की तरफ़ वहि भेजी कि तू उन्हें उन के इस काम को ज़रूर जताएगा और वह न जानते (तुझे न पहचानते) होंगे। (15)

और अन्धेरा पड़े वह अपने बाप के पास रोते हुए आए। (16)

बोले! ऐ हमारे अब्बा! हम लगे दौड़ने आगे निकलने को, और हम ने यूसुफ़ (अ) को अपने असबाब के पास छोड़ दिया तो उसे भेड़िया खागया, और तू नहीं हम पर बावर करने वाला अगरचे हम सच्चे हों। (17)

और वह उस की कमीस पर झूटा खून (लगा कर) लाए, उस ने कहा (नहीं) बल्कि तुम्हारे लिए तुम्हारे दिलों ने एक बात बना ली है, पस (सब्र) ही अच्छा है और जो तुम बयान करते हो उस पर अल्लाह (ही) से मदद चाहता हूँ। (18)

और (उधर) एक काफ़िला आया, पस उन्होंने ने अपना पानी भरने वाला भेजा, उस ने अपना डोल डाला, उस ने कहा, आहा खुशी की बात है, यह एक लड़का है और उन्होंने ने उसे माले तिजारत समझ कर छुपा लिया, और अल्लाह खूब जानता है जो वह करते थे। (19)

और उन्होंने ने उसे बेच दिया खोटे दामों गिनती के चन्द दिरहमों में, और वह उस से बेज़ार हो रहे थे। (20)

और मिसर के जिस शाख़्स ने उस को खरीदा उस ने कहा अपनी औरत को: इसे इज़ज़त ओ इकराम से रख, शायद कि हमें नफ़ा पहुँचाए, या हम इसे बेटा बना लें, और इस तरह हम ने यूसुफ़ (अ) को मुल्क (मिसर) में जगह दी, और ताकि हम उसे बातों का अनुज़ाम निकालना (खाबों की तावीर) सिखाएं और अल्लाह अपने काम पर ग़ालिब है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (21)

और जब वह (यूसुफ़ अ) अपनी कुव्वत (जवानी) को पहुँच गया हम ने उसे हुक्म और इल्म अता किया, और उसी तरह हम नेकी करने वालों को जज़ा देते हैं। (22)

فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَاجْمَعُوا أَن يَجْعَلُوهُ فِي غَيْبَتِ الْكُفْرِ

कुआं	अन्धा	में	उसे डाल दें	कि	और उन्होंने ने इत्तिफ़ाक़ कर लिया	वह उस को ले गए	फिर जब
------	-------	-----	-------------	----	-----------------------------------	----------------	--------

وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَهُمْ بِأَمْرِهِمْ هَذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٥﴾

15	न जानते होंगे	और वह	उस	उन का काम	कि तू उन्हें ज़रूर जताएगा	उस की तरफ	और हम ने वहि भेजी
----	---------------	-------	----	-----------	---------------------------	-----------	-------------------

وَجَاءَ وَآبَاهُمُ عِشَاءً يَبْكُونَ ﴿١٦﴾ قَالُوا يَا أَبَانَا إِنَّا ذَهَبْنَا

दौड़ने गए	हम	ऐ हमारे अब्बा	वह बोले	16	रोते हुए	अन्धेरा पड़े	अपने बाप के पास	और वह आए
-----------	----	---------------	---------	----	----------	--------------	-----------------	----------

نَسْتَيْقُ وَتَرَكْنَا يُوسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَآكَلَهُ الذِّبَابُ وَمَا

और नहीं	भेड़िया	तो उसे खागया	अपना असबाब	पास	यूसुफ़ (अ)	और हम ने छोड़ दिया	आगे निकलने
---------	---------	--------------	------------	-----	------------	--------------------	------------

أَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صَادِقِينَ ﴿١٧﴾ وَجَاءَهُ عَلَى قَمِيصِهِ

उस की कमीस	पर	और वह आए (लाए)	17	सच्चे	और ख़्वाह हों हम	हम पर	बावर करने वाला	तू
------------	----	----------------	----	-------	------------------	-------	----------------	----

بِدَمٍ كَذِبٍ قَالِ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْراً فَصَبْرٌ

पस सब्र	एक बात	तुम्हारे दिल	तुम्हारे लिए	बना ली	बल्कि	उस ने कहा	झूटा	खून के साथ
---------	--------	--------------	--------------	--------	-------	-----------	------	------------

جَمِيلٌ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُونَ ﴿١٨﴾ وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ

एक काफ़िला	और आया	18	जो तुम बयान करते हो	पर	मदद चाहता हूँ	और अल्लाह	अच्छा
------------	--------	----	---------------------	----	---------------	-----------	-------

فَأَرْسَلُوا وَارِدَهُمْ فَأَدْلَى دَلْوَهُ قَالَ يَبُشْرَى هَذَا غُلْمٌ

एक लड़का	यह	आहा - खुशी की बात	उस ने कहा	अपना डोल	पस उस ने डाला	अपना पानी भरने वाला	पस उन्होंने ने भेजा
----------	----	-------------------	-----------	----------	---------------	---------------------	---------------------

وَأَسْرُؤُهُ بِضَاعَةٍ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾ وَشَرَّوهُ

और उन्होंने ने उसे बेच दिया	19	वह करते थे	उसे जो	जानने वाला	और अल्लाह	माले तिजारत समझ कर	और उसे छुपा लिया
-----------------------------	----	------------	--------	------------	-----------	--------------------	------------------

بِثَمَنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ وَكَانُوا فِيهِ مِنَ الزَّاهِدِينَ ﴿٢٠﴾

20	बेरग़वत, बेज़ार	से	उस में	और वह थे	गिनती के	दिरहम	खोटे	दाम
----	-----------------	----	--------	----------	----------	-------	------	-----

وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِنْ مِصْرَ لِامْرَأَتِهِ أَكْرِمِي مَثْوَاهُ

उसे इज़ज़त ओ इकराम से रख	अपनी औरत को	मिसर	से	उसे खरीदा	वह जो, जिस	और बोला
--------------------------	-------------	------	----	-----------	------------	---------

عَسَى أَنْ يَنْفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ

यूसुफ़ (अ) को	हम ने जगह दी	और इस तरह	बेटा	हम उसे बना लें	या हम को नफ़ा पहुँचाए	कि	शायद
---------------	--------------	-----------	------	----------------	-----------------------	----	------

فِي الْأَرْضِ وَلِنُعَلِّمَهُ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَاللَّهُ غَالِبٌ

ग़ालिब	और अल्लाह	बातें	अनुज़ाम निकालना	से	और ताकि उसे सिखाएं	ज़मीन (मुल्क)	में
--------	-----------	-------	-----------------	----	--------------------	---------------	-----

عَلَى أَمْرِهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢١﴾ وَلَمَّا بَلَغَ

पहुँच गया	और जब	21	नहीं जानते	लोग	अक्सर	और लेकिन	अपने काम पर
-----------	-------	----	------------	-----	-------	----------	-------------

أَشُدَّهُ آتَيْنَهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٢٢﴾

22	नेकी करने वाले	हम जज़ा देते हैं	और उसी तरह	और इल्म	हुक्म	हम ने उसे अता किया	अपनी कुव्वत
----	----------------	------------------	------------	---------	-------	--------------------	-------------



وَرَاوَدْتُهُ الَّتِي هُوَ فِي بَيْتِهَا عَنْ نَفْسِهِ وَغَلَقَتِ الْأَبْوَابَ									
दरवाज़े	और बन्द कर दिए	अपने आप को रोकने से	उस का घर	में	उस	वह औरत जो	और उसे फुसलाया		
وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ إِنَّهُ رَبِّي أَحْسَنَ مَثْوَايَ									
और रहना सहना	बहुत अच्छा	मेरा मालिक	वेशक वह	अल्लाह की पनाह	उस ने कहा	आजा जल्दी कर	और बोली		
إِنَّهُ لَا يَفْلِحُ الظَّلْمُونَ (23) وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهِ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَا أَنْ									
कि	अगर न होता	उस का	और वह इरादा करते	उस का	और वेशक उस औरत ने इरादा किया	23	ज़ालिम (जमा)	भलाई नहीं पाते	वेशक
رَأَى بُرْهَانَ رَبِّهِ كَذَلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوءَ وَالْفَحْشَاءَ									
और बेहयाई	बुराई	उस से	हम ने फेर दिया	उसी तरह	अपना रब	दलील	वह देखे		
إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِينَ (24) وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ									
और औरत ने फाड़ दी	दरवाज़ा	और दानों दौड़े	24	बरगुज़ीदा	हमारे बन्दे	से	वेशक वह		
فَمِيصَهُ مِنْ دُبُرٍ وَأَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ قَالَتْ مَا جَزَاءُ									
क्या सज़ा?	वह कहने लगी	दरवाज़े के पास	औरत का खावन्द	और दोनों को मिला	पीछे से	उस की कमीस			
مَنْ أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوءًا إِلَّا أَنْ يُسْجَنَ أَوْ عَذَابٌ أَلِيمٌ (25)									
25	दर्दनाक अज़ाब	या	कैद किया जाए	यह कि	सिवाए	बुराई	तेरी बीबी से	इरादा किया	जो - जिस
قَالَ هِيَ رَاوَدَّتْنِي عَنْ نَفْسِي وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ أَهْلِهَا									
उस के लोग	से	एक गवाह	और गवाही दी	मेरा नफ्स	से	मुझे फुसलाया	उस	उस ने कहा	
إِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدًّا مِنْ قَبْلِ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكَاذِبِينَ (26)									
26	झूटे	से	और वह	तो वह सच्ची	आगे से	फटी हुई	उस की कमीस	है	अगर
وَإِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدًّا مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ									
से	और वह	तो वह झूटी	पीछे से	फटी हुई	उस की कमीस	है	और अगर		
الصّٰدِقِينَ (27) فَلَمَّا رَأَى قَمِيصَهُ قُدًّا مِنْ دُبُرٍ قَالَ إِنَّهُ مِنْ									
से	वेशक यह	उस ने कहा	पीछे से	फटी हुई	उस की कमीस	देखा	तो जब	27	सच्चे
كَيْدِكُنَّ إِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيمٌ (28) يُوسُفُ اعْرِضْ عَنْ هَذَا									
उस	से - को	जाने दे	यूसुफ (अ)	28	बड़ा	तुम्हारा फरेब	वेशक	तुम औरतों का फरेब	
وَاسْتَغْفِرِي لِذَنبِكِ إِنَّكَ كُنْتَ مِنَ الْخٰطِئِينَ (29) وَقَالَ									
और कहा	29	ख़ताकार (जमा)	से	तू है	वेशक तू	अपने गुनाह की	और ऐ औरत बख्शिश मांग		
نِسْوَةٌ فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتْسَهَا عَنْ									
से	अपना गुलाम	फुसला रही है	अज़ीज़ की बीबी	शहर में	औरतें				
نَفْسِهِ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا إِنَّا لَنَرِيهَا فِي ضَلٰلٍ مُّبِينٍ (30)									
30	खुली	गुमराही	में	वेशक हम उसे देखती है	उस की मुहब्बत	जगह पकड़ गई है	उस का नफ्स		

उसे (यूसुफ़ अ को) उस औरत ने फुसलाया वह जिस के घर में थे अपने आप को रोकने (काबू रखने) से, और दरवाज़े बन्द कर दिए और बोली आज्जा जल्दी कर, उस ने कहा अल्लाह की पनाह! वेशक वह (अज़ीज़े मिस्र) मेरा मालिक है, उस ने मेरा रहना सहना बहुत अच्छा (रखा), वेशक ज़ालिम भलाई नहीं पाते। (23)

और वेशक उस औरत ने उस का इरादा किया और वह भी उस का इरादा करते, अगर यह न होता कि वह अपने रब की दलील देख लेते, उस तरह हम ने उस से फेर दी बुराई और बेहयाई, वेशक वह हमारे बरगुज़ीदा बन्दों में से था। (24)

और दोनों दरवाज़े की तरफ दौड़े, और उस औरत ने उस की कमीस फाड़ दी पीछे से, और दोनों को उस का खावन्द दरवाज़े के पास मिला, वह कहने लगी उस की क्या सज़ा जिस ने तेरी बीबी से बुरा इरादा किया? सिवाए उस के कि वह कैद किया जाए या दर्दनाक अज़ाब दिया जाए। (25)

उस (यूसुफ़ अ) ने कहा उस ने मुझे मेरे नफ्स (की हिफ़ाज़त) से फुसलाया और गवाही दी उस के लोगों में से एक गवाह ने कि अगर उस की कमीस आगे से फटी हुई है तो वह सच्ची है और वह (यूसुफ़ अ) झूटों में से है। (26)

और अगर उस की कमीस पीछे से फटी हुई है तो वह झूटी है और वह (यूसुफ़ अ) सच्चों में से है। (27)

तो जब उस की कमीस पीछे से फटी हुई देखी तो उस ने कहा यह तुम औरतों का फरेब है, वेशक तुम्हारा फरेब बड़ा है। (28)

यूसुफ़ (अ)! उस (ज़िक्र) को जाने दे और ऐ औरत! अपने गुनाह की बख्शिश मांग, वेशक तू ही ख़ताकारों में से है। (29)

और शहर में औरतों ने कहा, अज़ीज़ की बीबी ने फुसलाया है अपने गुलाम को उस के नफ्स (की हिफ़ाज़त) से, उस की मुहब्बत (उस के दिल में) जगह पकड़ गई है, वेशक हम उसे खुली गुमराही में देखती हैं। (30)

फिर जब उस ने उन के फरेब (का ज़िक्र) सुना तो उन्हें दावत भेजी, और उन के लिए एक महफ़िल तैयार की, और (फल काटने को) दी उन में से हर एक को एक एक छुरी, और कहा उन के सामने निकल आ, फिर जब उन्होंने (यूसुफ़ अ) को देखा उन पर उस का रुझ (हूसन) छागया और उन्होंने (फलों की जगह) अपने हाथ काट लिए और कहने लगी अल्लाह की पनाह! यह बशर नहीं, मगर यह तो बुजुर्ग फरिश्ता है। (31) वह बोली सो यह वही है जिस (के बारे) में तुम ने मुझे मलामत की, और मैं ने उसे उस के नफ़्स (की हिफ़ाज़त से) फुसलाया, तो उस ने (अपने आप को) बचा लिया और जो मैं कहती हूँ अगर उस ने ना किया तो अलबत्ता वह कैद कर दिया जाएगा और बेइज़ज़त लोगों में से होगा। (32) उस (यूसुफ़ अ) ने कहा ऐ मेरे रब! मुझे कैद उस से ज़ियादा पसन्द है जिस की तरफ़ वह मुझे बुलाती है, अगर तू ने मुझ से उन का फरेब न फेरा तो मैं माइल हो जाऊंगा उन की तरफ़, और जाहिलों में से होंगा। (33) सो उस के रब ने उस की दुआ कुबूल करली, पस उस से उन का फरेब फेर दिया, बेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। (34) फिर निशानियां देख लेने के बाद उन्हें सूझा कि उसे ज़रूर कैद में डाल दें एक मुद्दत तक। (35) और उस के साथ दो जवान कैद खाने में दाखिल हुए, उन में से एक ने कहा बेशक मैं (ख़्वाब में) देखता हूँ कि मैं शराब निचोड़ रहा हूँ, और दूसरे ने कहा मैं (ख़्वाब में) देखता हूँ कि अपने सर पर रोटी उठाए हुए हूँ, परिन्दे उस से खा रहे हैं, हमें उस की तावीर बतलाइए, बेशक हम आप को नेकोकारों में से देखते हैं। (36) उस (यूसुफ़ अ) ने कहा तुम्हारे पास खाना नहीं आएगा जो तुम्हें दिया जाता है, मगर मैं तुम्हें उस की तावीर तुम्हारे पास उस के आने से पहले बतलादूंगा, यह उस (इल्म) से है जो मेरे रब ने मुझे सिखाया है, बेशक मैं ने उस कौम का दीन छोड़ दिया जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, और वह (रोज़े) आख़िरत से इन्कार करते हैं। (37)

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكًا							
एक महफ़िल	उन के लिए	और तैयार की	उन की तरफ़	दावत भेजी	उन का फरेब	उस ने सुना	फिर जब
وَأَتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سَكِينًا وَقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ فَلَمَّا							
फिर जब	उन पर (उनके सामने)	निकल आ	और कहा	एक एक छुरी	उन में से	हर एक को	और दी
رَأَيْنَهُ أَكْبَرْنَاهُ وَقَطَعْنَ أَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا هَذَا بَشَرًا							
बशर	नहीं यह	अल्लाह की	पनाह	और कहने लगी	अपने हाथ	और उन्होंने ने काट लिए	उन्होंने ने उसे देखा
إِنَّ هَذَا إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ ﴿٣١﴾ قَالَتْ فَذَلِكُنَّ الَّذِينَ لُمْتُنَنِي فِيهِ							
उस में	तुम ने मलामत की मुझे	जो कि	सो यह वही है	वह बोली	31	बुजुर्ग	फरिश्ता
وَلَقَدْ رَاوَدْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ فَاسْتَعْصَمَ وَلَئِن لَّمْ يَفْعَلْ مَا أَمَرُهُ							
मैं कहती हूँ उसे	जो	उस ने न किया	और अगर	तो उस ने बचा लिया	उस का नफ़्स	से	और मैं ने उसे फुसलाया
لَيْسَجُنَّ وَيَكُونَنَّ مِنَ الصَّغِيرِينَ ﴿٣٢﴾ قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ							
ज़ियादा पसन्द	कैद	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	32	बेइज़ज़त (जमा)	से	और अलबत्ता होजाएगा
إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ وَإِلَّا تَصْرِفْ عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ							
माइल हो जाऊंगा	उन का फरेब	मुझ से	और अगर न फेरा	उस की तरफ़	मुझे बुलाती है	उस से जो	मुझ को
إِلَيْهِنَّ وَأَكُنَّ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٣٣﴾ فَاسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ							
उस से	पस फेर दिया	उस का रब	उस की (दुआ)	सो कुबूल कर ली	33	जाहिल (जमा)	से और मैं होंगा
كَيْدَهُنَّ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٤﴾ ثُمَّ بَدَأَ لَهُمْ مِنْ بَعْدِ مَا رَأَوُا							
उन्होंने जब	बाद	उस के	उन्हें सूझा	फिर	34	जानने वाला	सुनने वाला
الآيَاتِ لَيْسَجُنَّهُ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٣٥﴾ وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيْنٍ قَالَ							
कहा	दो जवान	कैद खाना	उस के साथ	और दाखिल हुए	35	एक मुद्दत तक	उसे ज़रूर कैद में डालें
أَحَدُهُمَا إِنِّي أَرِنِّي أَخَصِرُ خَمْرًا وَقَالَ الْآخَرُ إِنِّي أَرِنِّي أَحْمِلُ فَوْقَ							
ऊपर	उठाए हुए हूँ	मैं देखता हूँ	दूसरा	और कहा	शराब	निचोड़ रहा हूँ	बेशक मैं देखता हूँ
رَأْسِي خُبْرًا تَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ نَبِّئْنَا بِتَأْوِيلِهِ إِنَّا نَرُكُّ مِنْ							
से	बेशक हम तुझे देखते हैं	उस की तावीर	हमें बतलाइए	उस से	परिन्दे	खा रहे हैं	रोटी अपना सर
الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٦﴾ قَالَ لَا يَأْتِيكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقْنِيهِ إِلَّا نَبَأُكُمَا							
मैं तुम्हें बतलादूंगा	मगर	जो तुम्हें दिया जाता है	खाना	तुम्हारे पास नहीं आएगा	उस ने कहा	36	नेकोकार (जमा)
بِتَأْوِيلِهِ قَبْلَ أَنْ يَأْتِيكُمَا ذَلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِي رَبِّي إِنِّي تَرَكْتُ							
मैं ने छोड़ा	बेशक मैं	मेरा रब	मुझे सिखाया	उस से जो	यह	वह आए तुम्हारे पास	कि कब्ल उस की तावीर
مِلَّةَ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَفَرُونَ ﴿٣٧﴾							
37	इन्कार करते हैं	वह	आख़िरत से	और वह	अल्लाह पर	जो ईमान नहीं लाते	वह कौम दीन

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ آبَائِيِ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ مَا كَانَ						
नहीं है	और याकूब (अ)	और इसहाक (अ)	इब्राहीम (अ)	अपने बाप दादा	दीन	और मैं ने पैरवी की
لَنَا اَنْ نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَيْنَا						
हम पर	अल्लाह का फ़ज़ल	से	यह	कोई - किसी शै	अल्लाह का	हम शरीक ठहराएं कि हमारे लिए
وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٨﴾ يٰصٰحِبِي						
ऐ मेरे साथियो!	38	शुक्र अदा नहीं करते	लोग	अक्सर	और लेकिन	और लोगों पर
السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌ اَمْ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٣٩﴾						
39	ज़बरदस्त - ग़ालिब	एक, यकता	या अल्लाह	बेहतर	जुदा जुदा	क्या कई माबूद कैद खाना
مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ اِلَّا اَسْمَاءٌ سَمِيْتُمْوَهَا اَنْتُمْ						
तुम	तुम ने रख लिए हैं	नाम	मगर	उस के सिवा	तुम पूजते	नहीं
وَابَاؤُكُمْ مَا اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ اِنْ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ						
अल्लाह का	मगर	हुकम	नहीं	कोई सनद	उस के लिए	अल्लाह ने उतारी नहीं और तुम्हारे बाप दादा
اَمَرَ اِلَّا تَعْبُدُوْا اِلَّا اِيَّاهُ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ						
और लेकिन	सीधा दीन	यह	सिर्फ उस की	मगर	इबादत करो तुम	कि न उस ने हुकम दिया
اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٠﴾ يٰصٰحِبِي السِّجْنِ اَمَّا اَحَدُكُمْ						
तुम में से एक	जो	कैद खाना	ऐ मेरे साथियो	40	नहीं जानते	अक्सर लोग
فَيَسْقِي رَبَّهُ خَمْرًا وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَيُصَلَّبُ فَتَاْكُلُ الطَّيْرُ						
परिन्दे	पस खाएंगे	तो सूली दिया जाएगा	दूसरा	और जो	शराब	अपना मालिक सो वह पिलाएगा
مِنْ رَّاسِهٖ فُضِيَ الْاَمْرُ الَّذِي فِيْهِ تَسْتَفْتِيْنَ ﴿٤١﴾ وَقَالَ						
और कहा	41	तुम पूछते थे	उस में	वह जो	काम - बात	फैसला हो चुका उस के सर से
لِلَّذِي ظَنَّ اَنَّهُ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكَرْنِيْ عِنْدَ رَبِّكَ فَاَنْسَهُ						
पस उस को भुला दिया	अपना मालिक	पास	मेरा ज़िक्र करना	उन दोनों से	बचेगा वह	कि वह उस ने गुमान किया उस से जिस
الشَّيْطٰنُ ذَكَرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِيْنَ ﴿٤٢﴾						
42	चन्द बरस	कैद में	तो रहा	अपने मालिक से ज़िक्र करना	शैतान	
وَقَالَ الْمَلِكُ اِنِّيْ اَرَى سَبْعَ بَقَرٰتٍ سِمٰنٍ يَّاْكُلُهِنَّ						
वह खाती है	मोटी ताज़ी	गाएं	सात	मैं देखता हूँ	कि मैं	बादशाह और कहा
سَبْعَ عِجَافٍ وَّسَبْعَ سُنْبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاٰخَرَ يَبْسُتُ يَّايُّهَا الْمَلَا						
ऐ मेरे सरदारो	खुश्क	और दूसरे	सब्ज़	खोशे	और सात	दुबली पतली सात
اَفْتُوْنِيْ فِيْ رُءْيَايْ اِنْ كُنْتُمْ لِرُءْيَايَ تَعْبُرُوْنَ ﴿٤٣﴾						
43	तावीर देने वाले	ख़्वाब की	तुम हो	अगर	मेरे ख़्वाब	मैं (की) बतलाओ मुझे तावीर

और मैं ने अपने बाप दादा इब्राहीम (अ), और इसहाक (अ) और याकूब (अ) के दीन की पैरवी की, हमारा (काम) नहीं कि हम शरीक ठहराएं अल्लाह का किसी शै को, यह हम पर और लोगों पर अल्लाह का फ़ज़ल है, लेकिन अक्सर लोग शुक्र अदा नहीं करते। (38)

ऐ मेरे कैद के साथियो! क्या जुदा जुदा कई माबूद बेहतर है? या एक अल्लाह? (सब पर) ग़ालिब। (39)

उस के सिवा तुम कुछ नहीं पूजते मगर नाम हैं जो तुम ने रख लिए (तराश लिए) हैं, और तुम्हारे बाप दादा ने, अल्लाह ने उन की कोई सनद नहीं उतारी, हुकम सिर्फ अल्लाह का है, उस ने हुकम दिया कि उस के सिवा किसी की इबादत न करो, यह सीधा दीन है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (40)

ऐ मेरे कैद खाने के साथियो! तुम में से एक अपने मालिक को शराब पिलाएगा, और जो दूसरा है तो सूली दिया जाएगा, पस परिन्दे उस के सर से खाएंगे। उस बात का फैसला हो चुका जिस (के बारे) में तुम पूछते थे। (41)

और यूसुफ़ (अ) ने उन दोनों में से जिस (के मुतअज़ज़िक्) गुमान किया कि वह बचेगा, उस से कहा अपने मालिक के पास मेरा ज़िक्र करना, पस शैतान ने उसे भुला दिया अपने मालिक से उस का ज़िक्र करना, तो वह कैद में चन्द बरस रहा। (42)

और बादशाह ने कहा कि मैं देखता हूँ सात मोटी ताज़ी गाएं, उन्हें सात दुबली पतली गाएं खा रही हैं, और सात सब्ज़ खोशे और दूसरे खुश्क, ऐ सरदारो! मुझे मेरे ख़्वाब की तावीर बतलाओ, अगर तुम ख़्वाब की तावीर देने वाले हो (तावीर देना जानते हो)। (43)

उन्होंने कहा (यह) परेशान  
ख़्वाब हैं और हम (ऐसे) ख़्वाबों  
की ताबीर जानने वाले नहीं (नहीं  
जानते)। (44)

और वह जो उन दोनों (में) से बचा था  
और उसे एक मुद्दत के बाद याद आया,  
उस ने कहा मैं तुम्हें उस की ताबीर  
बतलाऊंगा, सो मुझे भेज दो। (45)

ऐ यूसुफ़ (अ)! ऐ बड़े सच्चे! हमें  
(ख़्वाब की ताबीर) बता, सात मोटी  
ताज़ी गायों को खा रही हैं सात  
दुबली पतली गाएँ, और सात ख़ोशे  
सब्ज़ हैं और दूसरे खुशक, ताकि  
मैं लोगों के पास लौट कर जाऊँ  
शायद वह आगाह हों। (46)

उस ने कहा तुम सात साल  
लगातार खेती बाड़ी करोगे, फिर  
जो तुम काटो तो उसे उस के खोशे  
में छोड़ दो, मगर थोड़ा जितना जो  
तुम उस में से खालो। (47)

फिर उस के बाद आएंगे सात  
(7) सख्त साल, खा जाएंगे जो  
तुम ने उन के लिए (बचा) रखा,  
सिवाए उस के जो तुम थोड़ा  
बचाओगे। (48)

फिर उस के बाद एक साल आएगा  
उस में लोगों पर बारिश बरसाई  
जाएगी और वह उस में (रस)  
निचोड़ेंगे। (49)

और बादशाह ने कहा उसे मेरे पास  
ले आओ, पस जब कासिद उस के  
पास आया तो उस ने कहा अपने  
मालिक के पास लौट जाओ और  
उस से पूछो उन औरतों का क्या  
हाल है? जिन्होंने अपने हाथ काटे  
थे, वेशक मेरा रब उन के फ़रेब  
से ख़ूब वाकिफ़ है। (50)

बादशाह ने (उन औरतों से) कहा  
तुम्हारा क्या हाले (वाकी) था जब  
तुम ने यूसुफ़ (अ) को उस के  
नफ़्स (की हिफ़ाज़त) से फुसलाया  
वह बोली अल्लाह की पनाह! हन  
ने उस में कोई बुराई नहीं मालूम  
की (नहीं पाई) अज़ीज़े (मिसर) की  
औरत बोली अब हकीकत ज़ाहिर  
हो गई है, मैं ने (ही) उसे उस के  
नफ़्स की हिफ़ाज़त से फुसलाया  
और वह वेशक सच्चों में से है  
(सच्चा है)। (51)

(यूसुफ़ अ ने कहा) यह (इस लिए  
था) ताकि वह जान ले कि मैं ने  
पीठ पीछे उस की ख़ियानत नहीं  
की, और वेशक अल्लाह चलने नहीं  
देता दगाबाज़ों का फ़रेब। (52)

قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ وَمَا نَحْنُ بِتَأْوِيلِ الْأَحْلَامِ بِعَلَمِينَ ﴿٤٤﴾								
44	जानने वाले	ख़्वाब (जमा)	ताबीर देना	हम	और नहीं	ख़्वाब	परेशान	उन्होंने ने कहा
وَقَالَ الَّذِي نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ أُمَّةٍ أَنَا أُنْتَبِهُمُ بِتَأْوِيلِهِ								
उस की ताबीर	मैं बतलाऊंगा तुम्हें	एक मुद्दत	बाद	और उसे याद आया	उन दो से	बचा	वह जो	और उस ने कहा
فَارْسَلُونِ ۙ يُوسُفَ أَيُّهَا الصِّدِّيقُ أَفْتِنَا فِي سَبْعِ بَقَرَاتٍ								
गाएँ	सात	में	हमें बता	ऐ बड़े सच्चे	ऐ यूसुफ़ (अ)	45	सो मुझे भेज दो	
سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعُ عِجَافٍ وَسَبْعُ سُبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ								
और दूसरे	सब्ज़	खोशे	और सात	दुबली पतली	सात	वह खा रही है	मोटी ताज़ी	
يَبِيسَتٍ ۗ لَعَلِّي أَرْجِعُ إِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٤٦﴾ قَالَ تَزْرَعُونَ								
खेती बाड़ी करोगे	उस ने कहा	46	आगाह हों	शायद वह	लोगों की तरफ़ (पास)	मैं लौटूँ	ताकि	खुशक
سَبْعَ سِنِينَ دَابًّا ۚ فَمَا حَصَدْتُمْ فَذَرُوهُ فِي سُنْبُلِهِ إِلَّا قَلِيلًا								
थोड़ा जितना	मगर	उस के खोशे में	तो उसे छोड़ दो	तुम काटो	फिर जो	लगातार	साल	सात
مِمَّا تَأْكُلُونَ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ سَبْعُ شِدَادٍ يَأْكُلْنَ مَا								
जो	खाजाएंगे	सख्त	सात	उस के बाद में	आएंगे	फिर	47	तुम खालो से - जो
قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّا تَحْصِنُونَ ﴿٤٨﴾ ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ								
उस के बाद	आएगा	फिर	48	तुम बचाओगे	से - जो	थोड़ा सा	सिवाए	उन के लिए
عَامٍ فِيهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيهِ يَعْصِرُونَ ﴿٤٩﴾ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي								
मेरे पास ले आओ	बादशाह	और कहा	49	वह निचोड़ेंगे	और उस में	लोग	बारिश बरसाई जाएगी	उस में एक साल
بِهِ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَىٰ رَبِّكَ فَسَأَلْهُ مَا بَالُ								
क्या हाल?	पस उस से पूछो	अपना मालिक	तरफ़ (पास)	लौट जा	उस ने कहा	कासिद	उस के पास आया	पस जब उसे
النِّسْوَةِ الَّتِي قَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ ۚ إِنَّ رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ عَلِيمٌ ﴿٥٠﴾								
50	वाकिफ़	उन का फ़रेब	मेरा रब	वेशक	अपने हाथ	उन्होंने ने काटे	वह जो	औरतें
قَالَ مَا خَطْبُكَ ۖ إِذْ رَأَوْتَنِّي يُوسُفَ عَن نَّفْسِهِ ۚ قُلْنَ حَاشَ								
पनाह	वह बोली	उस का नफ़्स	से	यूसुफ़ (अ)	तुम ने फुसलाया	जब	क्या हाल था तुम्हारा	उस ने कहा
لِلَّهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوءٍ ۗ قَالَتِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ النَّ حَصْحَصَ								
ज़ाहिर हो गई	अब	अज़ीज़	औरत	बोली	कोई बुराई	उस पर (में)	हन ने मालूम की	नहीं
الْحَقُّ أَنَا رَأَوْتُهُ عَنِ نَّفْسِهِ ۚ وَإِنَّهُ لَمِنَ الصِّدِّيقِينَ ﴿٥١﴾ ذَلِكَ لِيَعْلَمَ								
ताकि वह जान ले	यह	51	सच्चे	अलबत्ता - से	और वह वेशक	उस का नफ़्स	से	उसे फुसलाया मैं ने
أَنِّي لَمَ أَحْنَاهُ بِالْغَيْبِ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْخَائِنِينَ ﴿٥٢﴾								
52	दगाबाज़ (जमा)	फ़रेब	नहीं चलने देता	और वेशक अल्लाह	पीठ पीछे	नहीं उस की ख़ियानत की	वेशक मैं	

وَمَا أُبْرِيئُ نَفْسِي إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌ بِالسُّوءِ إِلَّا									
मगर	बुराई	सिखाने वाला	नफ्स	वेशक	अपना नफ्स	और पाक (बेकुसूर) नहीं कहता			
مَا رَحِمَ رَبِّي إِنَّ رَبِّي غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٥٣﴾ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي									
ले आओ मेरे पास	बादशाह	और कहा	53	निहायत मेहरबान	बख्शने वाला	मेरा रब	वेशक	मेरा रब	जिस पर रहम किया
بِهِ اسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِي فَلَمَّا كَلَّمَهُ قَالَ إِنَّكَ الْيَوْمَ لَدِينَا									
हमारे पास	आज	वेशक तुम	उस ने कहा	उस से बात की	फिर जब	अपनी जात के लिए	उस को खास करूँ	उस को	उस को
مَكِينٌ أَمِينٌ ﴿٥٤﴾ قَالَ اجْعَلْنِي عَلَى خَزَائِنِ الْأَرْضِ إِنِّي حَفِيظٌ									
हिफाज़त करने वाला	वेशक मैं	ज़मीन (मुल्क)	खज़ाने	पर	मुझे कर दे	कहा	54	अमीन	वाविकार
عَلِيمٌ ﴿٥٥﴾ وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ يَتَّبِعُوا مِنْهَا حَيْثُ									
जहाँ	उस से (में)	वह रहते	ज़मीन में (मुल्क पर)	यूसुफ (अ) को	हम ने कुदरत दी	और उसी तरह	55	इल्म वाला	इल्म वाला
يَشَاءُ نَصِيبٌ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَشَاءُ وَلَا نُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾									
56	नेकी करने वाले	बदला	और हम ज़ाए नहीं करते	जिस को हम चाहते हैं	अपनी रहमत	हम पहुँचा देते हैं	चाहते वह	चाहते वह	चाहते वह
وَلَا جُزْءَ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٥٧﴾ وَجَاءَ									
और आए	57	परहेज़गारी करते	और थे वह	ईमान लाए	उन के लिए जो	बेहतर	और आखिरत का बदला अलबत्ता	और आखिरत का बदला बेहतर है।	और आखिरत का बदला बेहतर है।
إِخْوَةَ يُوسُفَ فَدَخَلُوا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ﴿٥٨﴾									
58	वह न पहचाने	उस को	और वह	तो उन्हें पहचान लिया	उस के पास	पस वह दाखिल हुए	यूसुफ (अ)	भाई	भाई
وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَّازِهِمْ قَالَ ائْتُونِي بِآخِ لَكُمْ مِّنْ أَبِيكُمْ أَلَا تَرُونَ									
क्या तुम नहीं देखते	तुम्हारे बाप से	तुम्हारा (अपना)	भाई	लाओ मेरे पास	कहा उस ने	उन का सामान	जब उन्हें तैयार कर दिया	और जब	और जब
أَنِّي أُوْفِي الْكَيْلَ وَأَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ ﴿٥٩﴾ فَإِنْ لَّمْ تَأْتُونِي									
मेरे पास न लाए	फिर अगर	59	उतारने वाला (मेहमान नवाज़)	बेहतरिनी	और मैं	पैमाना	पूरा करता हूँ	कि मैं	कि मैं
بِهِ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِي وَلَا تَقْرَبُونِ ﴿٦٠﴾ قَالُوا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ									
उस के सुतझिक	हम खाहिश करेंगे	वह बोले	60	और न आना मेरे पास	मेरे पास	तुम्हारे लिए	तो कोई नाप नहीं	उस को	उस को
أَبَاهُ وَإِنَّا لَفَعِلُونَ ﴿٦١﴾ وَقَالَ لِفَثِينِهِ اجْعَلُوا بِضَاعَتَهُمْ									
उन की पूजी	और तुम रख दो	अपने खिदमतगारों को	और उस ने कहा	61	ज़रूर करने वाले हैं (करना है)	और हम	उस का वाप	उस का वाप	उस का वाप
فِي رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُونَهَا إِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ									
शायद वह	अपने लोग	तरफ	जब वह लौटें	उसको मालूम कर लें	शायद वह	उन के बोरों में	उन के बोरों में	उन के बोरों में	उन के बोरों में
يَرْجِعُونَ ﴿٦٢﴾ فَلَمَّا رَجَعُوا إِلَىٰ أَبِيهِمْ قَالُوا يَا أَبَانَا مُنِعَ مِنَّا									
हम से	रोक दिया गया	ऐ हमारे अब्बा	वह बोले	अपना बाप	तरफ	वह लौटे	पस जब	62	फिर आजाएँ
الْكَيْلُ فَأَرْسَلُ مَعَنَا آخَانًا نَّكَتَلُ وَإِنَّا لَهُ لَحَفِظُونَ ﴿٦٣﴾									
63	निगहबान है	उस के	और वेशक हम	नाप (गुल्ला) लाएँ	हमारा भाई	हमारे साथ	पस भेज दें	नाप	नाप

और मैं अपने नफ्स को पाक नहीं कहता, वेशक नफ्स बुराई सिखाने वाला है, मगर जिस पर मेरे रब ने रहम किया, वेशक मेरा रब बख्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (53) और बादशाह ने कहा उसे मेरे पास ले आओ कि उसे अपनी (खिदमत) के लिए खास करूँ, फिर जब (मालिक) ने उस से बात की कहा वेशक तुम आज हमारे पास वाविकार, अमीन (साहबे एतिवार) हो। (54) उस ने कहा मुझे (मुकरर) कर दे मुल्क के खज़ानों पर, वेशक मैं हिफाज़त करने वाला, इल्म वाला हूँ। (55) और उसी तरह हम ने यूसुफ (अ) को मुल्क पर कुदरत दी, वह उस में जहाँ चाहते रहते, हम जिस को चाहते हैं अपनी रहमत पहुँचा देते हैं, और हम बदला ज़ाए नहीं करते नेकी करने वालों का। (56) और जो ईमान लाए और परहेज़गारी करते रहे, उन के लिए आखिरत का बदला बेहतर है। (57) और यूसुफ (अ) के भाई आए, पस वह उस के पास दाखिल हुए तो उस ने उन्हें पहचान लिया और वह उस को न पहचाने। (58) और जब उन का सामान उन्हें तैयार कर दिया तो कहा अपने भाई को मेरे पास लाओ जो तुम्हारे बाप (की तरफ) से है, क्या तुम नहीं देखते कि मैं पैमाना पूरा (भर) कर देता हूँ और मैं बेहतरिनी मेहमान नवाज़ हूँ। (59) फिर अगर तुम उस को मेरे पास न लाए तो तुम्हारे लिए कोई नाप (गुल्ला) नहीं मेरे पास, और न मेरे पास आना। (60) वह बोले हम उसके बारे में उस के बाप से खाहिश करेंगे और हमें (यह काम) ज़रूर करना है। (61) और उस ने अपने खिदमतगारों को कहा उन की पूजी (गुल्ले की कीमत) उन के बोरों में रख दो, शायद वह उस को मालूम कर लें जब वह लौटें अपने लोगों की तरफ, शायद वह फिर आजाएँ। (62) पस जब वह अपने बाप की तरफ लौटे, बोले ऐ हमारे अब्बा! हम से नाप (गुल्ला) रोक दिया गया, पस हमारे साथ हमारे भाई को भेज दें कि हम गुल्ला लाएँ, और वेशक उसके निगहबान हैं। (63)

उस ने कहा मैं उस के मुतअल्लिक तुम्हारा क्या एतिवार करूँ मगर जैसे इस से पहले मैं ने उस के भाई के मुतअल्लिक तुम्हारा एतिवार किया, सो अल्लाह बेहतर निगहवान है, और वह तमाम मेहरवानों से बड़ा मेहरवानी करने वाला है। (64) और जब उन्होंने ने अपना सामान खोला तो उन्होंने ने अपनी पूंजी पाई जो वापस कर दी गई थी उन्हें, बोले, ऐ हमारे अब्बा! (और) हम क्या चाहते हैं? यह हमारी पूंजी है, हमें लौटा दी गई है, और हम अपने घर गल्ला लाएंगे और हम अपने भाई की हिफ़ाज़त करेंगे, और एक ऊंट का बोझ ज़ियादा लेंगे, यह (जो हम लाए हैं) थोड़ा गल्ला है। (65) उस ने कहा मैं उसे हरगिज़ न भेजूंगा तुम्हारे साथ, यहां तक कि तमू मुझे अल्लाह का पुख़्ता अ़हद दो कि तुम उसे मेरे पास ज़रूर ले कर आओगे, मगर यह कि तुम्हें घेर लिया जाए, फिर जब उन्होंने ने उसे (याकूब अ) को पुख़्ता अ़हद दिया, उसने कहा जो हम कह रहे हैं उस पर अल्लाह ज़ामिन है। (66) और कहा ऐ मेरे बेटों! तुम सब दाख़िल न होना एक (ही) दरवाज़े से, (बलकि) जुदा जुदा दरवाज़ों से दाख़िल होना, और मैं तुम्हें बचा नहीं सकता अल्लाह की किसी बात से, अल्लाह के सिवा किसी का हुक़म नहीं, उस पर मैं ने भरोसा किया, पस चाहिए उस पर भरोसा करें भरोसा करने वाले। (67) और जब वह दाख़िल हुए जहां से उन्हें उन के बाप ने हुक़म दिया था, वह उन्हें नहीं बचा सकता था अल्लाह की किसी बात से, मगर याकूब (अ) के दिल में एक ख़ाहिश थी सो वह उस ने पूरी कर ली, और बेशक वह साहबे इल्म था उस का जो हम ने उसे सिखाया था, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (68) और जब वह यूसुफ़ के पास दाख़िल हुए उस ने अपने भाई को अपने पास जगह दी, कहा बेशक मैं तेरा भाई हूँ, जो वह करते थे तू उस पर ग़मगीन न हो। (69)

قَالَ هَلْ امْنُكُمْ عَلَيْهِ إِلَّا كَمَا امْنُكُمْ عَلَىٰ أَخِيهِ مِنْ قَبْلُ							
इस से पहले	उस के भाई के मुतअल्लिक	मैं ने तुम्हारा एतिवार किया	जैसे	मगर	उस के मुतअल्लिक	क्या मैं तुम्हारा एतिवार करूँ	उस ने कहा
فَاللَّهُ خَيْرٌ حِفْظًا وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ ﴿٦٤﴾ وَلَمَّا فَتَحُوا							
उन्होंने ने खोला	और जब	64	तमाम मेहरवानों से बड़ा मेहरवानी करने वाला	और वह	निगहवान	बेहतर	सो अल्लाह
مَتَاعَهُمْ وَجَدُوا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ إِلَيْهِمْ قَالُوا يَا بَنَا							
ऐ हमारे अब्बा	बोले	उन की तरफ़ (उन्हें)	वापस कर दी गई	अपनी पूंजी	उन्होंने ने पाई	अपना सामान	
مَا نَبغِي هَذِهِ بِضَاعَتَنَا رُدَّتْ إِلَيْنَا وَنَمِيرُ أَهْلَنَا وَنَحْفَظُ أَخَانَا							
अपना भाई	और हम हिफ़ाज़त करेंगे	अपने घर	और हम गल्ला लाएंगे	हमारी तरफ़	लौटा दी गई	हमारी पूंजी	यह क्या चाहते हैं हम
وَنَزِدَادُ كَيْلٍ بَعِيرٌ ذَلِكَ كَيْلٌ يَسِيرٌ ﴿٦٥﴾ قَالَ لَنْ أُرْسِلَهُ							
हरगिज़ न भेजूंगा उसे	उस ने कहा	65	आसान (थोड़ा)	बोझ (गल्ला)	यह	एक ऊंट	बोझ और ज़ियादा लेंगे
مَعَكُمْ حَتَّىٰ تُؤْتُونَ مَوْثِقًا مِّنَ اللَّهِ لَتَأْتِنَنِي بِهِ إِلَّا أَنْ							
यह कि	मगर	तुम ले आओगे ज़रूर मेरे पास उस को	अल्लाह से (का)	पुख़्ता अ़हद	तुम दो मुझे	यहां तक	तुम्हारे साथ
يُحَاطَ بِكُمْ فَلَمَّا اتَّوَهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكَيْلٌ ﴿٦٦﴾							
66	निगहवान (ज़ामिन)	जो हम कहते हैं	पर	अल्लाह कहा उस ने	अपना पुख़्ता अ़हद	उन्होंने ने उसे दिया	फिर जब तुम्हें घेर लिया जाए
وَقَالَ يَبْنَئِي لَا تَدْخُلُوا مِنِّي مِنْ بَابٍ وَاحِدٍ وَاَدْخُلُوا مِنِّي							
से	और दाख़िल होना	एक दरवाज़ा	से	तुम न दाख़िल होना	ऐ मेरे बेटों	और उस ने कहा	
أَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةً وَمَا أُغْنِي عَنْكُمْ مِّنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ							
किसी चीज़ (बात) से	अल्लाह से (की)	तुम से (को)	और मैं नहीं बचा सकता	जुदा जुदा	दरवाजे से		
إِنَّ الْحُكْمَ إِلَّا لِلَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ							
पस चाहिए भरोसा करें	और उस पर	मैं ने भरोसा किया	उस पर	अल्लाह का सिवा	हुक़म	नहीं	
الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿٦٧﴾ وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُمْ مَا كَانَ							
नहीं था	उन का बाप	उन्हें हुक़म दिया	जहां से	वह दाख़िल हुए	और जब	67	भरोसा करने वाले
يُغْنِي عَنْهُمْ مِّنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا حَاجَةً فِي نَفْسِ							
दिल	में	एक ख़ाहिश	मगर	किसी चीज़ (बात)	से	अल्लाह से (की)	उन से (उन्हें) वह बचा सकता
يَعْقُوبَ قَطْبًا وَإِنَّهُ لَدُوٌّ عَلِيمٌ لِّمَا عَلَّمْنَاهُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ							
अक्सर	और लेकिन	हम ने उसे सिखाया	उस का जो	साहबे इल्म	और बेशक वह	वह उसे पूरी कर ली	याकूब (अ)
النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾ وَلَمَّا دَخَلُوا عَلَىٰ يُوسُفَ أَوَىٰ إِلَيْهِ							
अपने पास	उस ने जगह दी	यूसुफ़ (अ) के पास	वह दाख़िल हुए	और जब	68	नहीं जानते	लोग
أَخَاهُ قَالَ إِنِّي أَنَا أَخُوكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٦٩﴾							
69	वह करते थे	उस पर जो	सो तू ग़मगीन न हो	मैं तेरा भाई	बेशक मैं	उस ने कहा	अपना भाई

فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَّازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِي رَحْلِ أَخِيهِ									
अपना भाई	सामान	में	पीने का प्याला	रख दिया	उन का सामान	उन्हें तैयार कर दिया	फिर जब		
ثُمَّ أَذِنَ مُؤَدِّنُ أَيُّهَا الْعَيْزُ إِنَّكُمْ لَسُرْفُونَ ﴿٧٠﴾									
70	अलवत्ता चोर हो	बेशक तुम	ऐ काफ़ले वालो	सुनादी करने वाला	एलान किया	फिर			
قَالُوا وَأَقْبَلُوا عَلَيْهِمْ مَاذَا تَفْقِدُونَ ﴿٧١﴾ قَالُوا نَفَقْدُ صَوَاعَ									
पैमाना	हम गुम कर बैठे (नहीं पाते)	उन्होंने ने कहा	71	तुम गुम कर बैठे	क्या है जो	उन की तरफ़	और उन्होंने ने मुँह किया	वह बोले	
الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَاءَ بِهِ حِمْلُ بَعِيرٍ وَأَنَا بِهِ زَعِيمٌ ﴿٧٢﴾									
72	ज़ामिन	उस का	और मैं	एक ऊंट	बोझ	जो वह लाए	और उस के लिए	बादशाह	
قَالُوا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْأَرْضِ									
ज़मीन (मुल्क) में	कि हम फ़साद करें	हम नहीं आए	तुम खूब जानते हो	अल्लाह की क़सम	वह बोले				
وَمَا كُنَّا سُرْقِينَ ﴿٧٣﴾ قَالُوا فَمَا جَزَاؤُهُ إِنْ كُنْتُمْ كَذِبِينَ ﴿٧٤﴾									
74	झूटे	तुम हो	अगर	सज़ा उस की	फिर क्या	उन्होंने ने कहा	73	चोर (जमा)	और हम नहीं
قَالُوا جَزَاؤُهُ مَنْ وُجِدَ فِي رَحْلِهِ فَهُوَ جَزَاؤُهُ كَذَلِكَ نَجْزِي									
हम सज़ा देते हैं	उसी तरह	उस का बदला	पस वही	उस के सामान में	पाया जाए	जो - जिस	उस कि सज़ा	कहने लगे वह	
الظَّالِمِينَ ﴿٧٥﴾ فَبَدَأَ بِأَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَاءِ أَخِيهِ ثُمَّ									
फिर	अपना भाई	ख़रजी (बोरा)	पहले	उन की ख़रजियों (बोरों) से	पस शुरू किया	75	ज़ालिमों को		
اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِعَاءِ أَخِيهِ كَذَلِكَ كِدْنَا لِيُوسُفَ مَا كَانَ									
न था	यूसुफ़ के लिए	हम ने तदबीर की	इसी तरह	अपना भाई	बोरा	से	उस को निकाला		
لِيَأْخُذَ أَخَاهُ فِي دِينِ الْمَلِكِ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ نَرْفَعُ									
हम बुलन्द करते हैं	अल्लाह चाहे	यह कि	मगर	बादशाह का दीन	में	अपना भाई	वह ले सकता		
دَرَجَاتٍ مِّنْ نَّشَاءٍ وَفَوْقَ كُلِّ ذِي عِلْمٍ عَلِيمٌ ﴿٧٦﴾ قَالُوا إِنْ									
अगर	बोले	76	एक इल्म वाला	साहबे इल्म	हर	और ऊपर	चाहें हम	जो - जिस	दरजे
يَسْرِقَ فَقَدْ سَرَقَ أَخٌ لَّهُ مِنْ قَبْلٍ فَأَسْرَهَا يُوسُفُ فِي نَفْسِهِ									
अपने दिल में	यूसुफ़ (अ)	पस उसे छुपाया	उस से कब्ल	उस का भाई	तो चोरी की थी	उस ने चुराया			
وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ قَالَ أَنْتُمْ شَرُّ مَكَانًا وَاللّٰهُ أَعْلَمُ									
खूब जानता है	और अल्लाह	दरजे में	बदतर	तुम	कहा	उन पर	और वह ज़ाहिर न किया		
بِمَا تَصِفُونَ ﴿٧٧﴾ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ إِنَّ لَهُ أَبًا شَيْخًا									
बूढ़ा	बाप	उस का	बेशक	अज़ीज़	ऐ	कहने लगे	77	जो तुम बयान करते हो	
كَبِيرًا فَخُذْ أَحَدَنَا مَكَانَهُ إِنَّا نَرُكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٧٨﴾									
78	एहसान करने वाले	से	हम देखते हैं बेशक तुझे	उस की जगह	हम में से एक	पस ले (रख ले)	बड़ी उम्र का		

फिर जब उन का सामान तैयार कर दिया अपने भाई के सामान में (पानी) पीने का प्याला रखदिया, फिर एक मुनादी करने वाले न एलान किया ऐ काफ़ले वालो! तुम अलवत्ता चोर हो। (70)

वह उन की तरफ़ मुँह कर के बोले, क्या है जो तुम गुम कर बैठे हो? (71)

उन्होंने ने कहा, हम बादशाह का पैमाना नहीं पाते, और जो कोई वह लाएगा उस के लिए एक ऊंट का बोझ है (बारे शुतुर मिलेगा) और मैं उस का ज़ामिन हूँ। (72)

वह बोले अल्लाह की क़सम! तुम खूब जानते हो हम (इस लिए) नहीं आए कि मुल्क में फ़साद करें, और हम चोर नहीं। (73)

फिर उन्होंने ने कहा अगर तुम झूटे हो (झूटे निकले) फिर उस की क्या सज़ा है? (74)

कहने लगे उस की सज़ा यह है कि पाया जाए जिस के सामान में पस वही है उस का बदला, उस तरह हम ज़ालिमों को सज़ा देते हैं। (75)

पस उन की बोरों से (तलाश करना) शुरू किया अपने भाई के बोरों से पहले, फिर उस को अपने भाई के बोरों से निकाल लिया। इसी तरह हम ने यूसुफ़ (अ) के लिए तदबीर की वह बादशाह के दीन में (क़ानून के मुताबिक) अपने भाई को न ले सकता था मगर यह कि अल्लाह चाहे (अल्लाह की मशियत हो) हम दरजे बुलन्द करते हैं जिस के हम चाहें, और हर साहबे इल्म के ऊपर एक इल्म वाला है। (76)

बोले अगर उस ने चुराया तो चोरी कि थी उस से कब्ल उस के भाई ने, पस यूसुफ़ (अ) ने (उस बात को) अपने दिल में छुपाया और उन पर ज़ाहिर न किया, कहा तुम बदतर दरजे में हो और तुम जो बयान करते हो अल्लाह खूब जानता है। (77)

कहने लगे, ऐ अज़ीज़! बेशक उस का बाप बड़ी उम्र का बूढ़ा है, पस उस की जगह हम में से एक को रख ले, हम देखते हैं कि तू एहसान करने वालों में से है। (78)

उस ने कहा अल्लाह की पनाह कि उसके सिवा हम (किसी और) को पकड़ें, जिस के पास हम ने अपना सामान पाया (उस सूत्र में) हम ज़ालिमों से होंगे, (79)

फिर जब वह उस से मायूस हो गए तो मशवरा करने के लिए अकेले हो बैठे, उन के बड़े (भाई) ने कहा, क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे बाप ने तुम से अल्लाह का पुख्ता अहद लिया, और उस से कब्ल तुम ने यूसुफ़ (अ) के बारे में तक्सीर की, पस मैं हरगिज़ न टलूंगा ज़मीन से (यहां से), यहां तक के मेरा बाप मुझे इजाज़त दे या अल्लाह मेरे लिए कोई तदवीर निकाले, और वह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (80)

अपने बाप के पास लौट जाओ, पस कहो ऐ हमारे बाप! तुम्हारे बेटे ने चोरी की और हम ने गवाही नहीं दी थी (सिर्फ वही कहा था) जो हमें मालूम था, और हम ग़ैब के निगहवान (वाख़वर) न थे। (81)

और पूछ लें उस वस्ति से जिस में हम थे, और उस काफ़ले से जिस में हम आए हैं, और वेशक हम सच्चे हैं। (82)

उस ने कहा (नहीं) बल्कि तुम्हारे दिल ने बना ली है एक बात, पस सब्र ही अच्छा है, शायद अल्लाह उन सब को मेरे पास ले आए, वेशक वह जानने वाला है, हिक्मत वाला है। (83)

और उन से मुँह फेर लिया और कहा हाए अफ़सोस! यूसुफ़ (अ) पर, और उस की आँखें सफ़ेद हो गईं ग़म से, पस वह घुट रहा था (ग़म ज़व्त कर रहा था)। (84)

वह बोले अल्लाह की कसम! तुम हमेशा यूसुफ़ (अ) को याद करते रहोगे यहां तक कि तुम हो जाओ बीमार या हलाक हो जाओ। (85)

उस ने कहा मैं तो अपनी बेकरारी और अपना ग़म बयान करता हूँ सिर्फ अल्लाह के सामने और अल्लाह (की तरफ) से जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (86)

قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ أَنْ نَأْخُذَ إِلَّا مَنْ وَجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهُ ۗ

उस के पास	अपना सामान	हम ने पाया	जिस को	सिवाए	हम पकड़ें	कि	अल्लाह की पनाह	उस ने कहा
-----------	------------	------------	--------	-------	-----------	----	----------------	-----------

إِنَّا إِذَا لَظَلِمُونَ ﴿٧٩﴾ فَلَمَّا اسْتَيْسَسُوا مِنْهُ خَلَصُوا نَجِيًّا ۗ

मशवरा किया	अकेले हो बैठे	उस से	वह मायूस हो गए	फिर जब	79	अलबत्ता ज़ालिमों से	वेशक हम जब
------------	---------------	-------	----------------	--------	----	---------------------	------------

قَالَ كَبِيرُهُمْ أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ أَبَاكُمْ قَدْ أَخَذَ عَلَيْكُمْ

तुम से	लिया है	तुम्हारा बाप	कि	क्या तुम नहीं जानते	उन का बड़ा	कहा
--------	---------	--------------	----	---------------------	------------	-----

مَوْثِقًا مِّنَ اللَّهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُمْ فِي يُوسُفَ فَلَنْ

पस हरगिज़ न	यूसुफ़ (अ)	बारे में	जो तक्सीर की तुम ने	और उस से कब्ल	अल्लाह से (का)	पुख्ता अहद
-------------	------------	----------	---------------------	---------------	----------------	------------

أَبْرَحَ الْأَرْضِ حَتَّىٰ يَأْذَنَ لِيَّ أَبِي أَوْ يَحْكُمَ اللَّهُ لِيَّ وَهُوَ

और वह	हुक़्म दे (तदवीर निकाले) अल्लाह मेरे लिए	या	मेरा बाप	मुझे	इजाज़त दे	यहां तक	ज़मीन	टलूंगा
-------	--	----	----------	------	-----------	---------	-------	--------

خَيْرُ الْحَكَمِينَ ﴿٨٠﴾ اِرْجِعُوا إِلَىٰ آبَائِكُمْ فَقُولُوا يَا أَبَانَا إِنَّ

वेशक	ऐ हमारे बाप	पस कहो	अपना बाप	तरफ़ (पास)	लौट जाओ तुम	80	सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला
------	-------------	--------	----------	------------	-------------	----	------------------------------

ابْنَكَ سَرَقَ وَمَا شَهِدْنَا إِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَمَا كُنَّا

और हम न थे	हमें मालूम था	जो	मगर	और नहीं गवाही दी हम ने	चोरी की	तुम्हारा बेटा
------------	---------------	----	-----	------------------------	---------	---------------

لِلْغَيْبِ حَفِظِينَ ﴿٨١﴾ وَسَأَلَ الْقَرْيَةَ الَّتِي كُنَّا فِيهَا

उस में	हम थे	जो - जिस	बस्ती	और पूछ लें	81	निगहवान	ग़ैब के
--------	-------	----------	-------	------------	----	---------	---------

وَالْعِيرَ الَّتِي أَقْبَلْنَا فِيهَا ۗ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿٨٢﴾ قَالَ بَلْ

बल्कि	उस ने कहा	82	सच्चे	और वेशक हम	उस में	हम आए	जो - जिस	और काफ़ला
-------	-----------	----	-------	------------	--------	-------	----------	-----------

سَأَلْتُمْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا ۖ فَصَبْرٌ جَمِيلٌ ۗ عَسَىٰ اللَّهُ

अल्लाह	शायद	अच्छा	पस सब्र	एक बात	तुम्हारा दिल	तुम्हारे लिए	बना ली है
--------	------	-------	---------	--------	--------------	--------------	-----------

أَنْ يَأْتِيَنِي بِهِمْ جَمِيعًا ۗ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿٨٣﴾ وَتَوَلَّىٰ

और मुँह फेर लिया	83	हिक्मत वाला	जानने वाला	वह	वेशक वह	सब को	उन्हें	कि मेरे पास ले आए
------------------	----	-------------	------------	----	---------	-------	--------	-------------------

عَنْهُمْ وَقَالَ يَا سَفِي عَلَىٰ يُوسُفَ ۖ وَأَبِصَّتْ عَيْنُهُ مِن

से	उस की आँखें	और सफ़ेद हो गईं	यूसुफ़ (अ)	पर	हाए अफ़सोस	और कहा	उन से
----	-------------	-----------------	------------	----	------------	--------	-------

الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيمٌ ﴿٨٤﴾ قَالُوا تَاللَّهِ تَفْتَأُ تَذْكُرُ يُوسُفَ حَتَّىٰ

यहां तक कि	यूसुफ़ (अ)	याद करता	तू हमेशा रहेगा	अल्लाह की कसम	वह बोले	84	घुट रहा था	पस वह	ग़म
------------	------------	----------	----------------	---------------	---------	----	------------	-------	-----

تَكُونَ حَرَضًا أَوْ تَكُونَ مِنَ الْهَالِكِينَ ﴿٨٥﴾ قَالَ إِنَّمَا أَشْكُوا

बयान करता हूँ	मैं तो सिर्फ	उस ने कहा	85	हलाक होने वाले	से	या हो जाओ	बीमार	तुम हो जाओ
---------------	--------------	-----------	----	----------------	----	-----------	-------	------------

بَثِّي وَحُزْنِي إِلَىٰ اللَّهِ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨٦﴾

86	तुम नहीं जानते	जो	अल्लाह से	और जानता हूँ	अल्लाह	तरफ़ सामने	और अपना ग़म	अपनी बेकरारी
----	----------------	----	-----------	--------------	--------	------------	-------------	--------------

ع ۳



يَبْنِي أَذْهَبُوا فَتَحَسَّسُوا مِنْ يُوسُفَ وَأَخِيهِ وَلَا تَأْيَسُوا							
और न मायूस हो	और उस का भाई	यूसुफ़ (अ)	से (का)	पस खोज निकालो	तुम जाओ	ऐ मेरे बेटो	
مِنْ رَوْحِ اللَّهِ إِنَّهُ لَا يَأْتِسُ مِنْ رَوْحِ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ							
लोग	मगर	अल्लाह की रहमत	से	मायूस नहीं होते	वेशक वह	अल्लाह की रहमत	से
الْكَافِرُونَ ﴿٨٧﴾ فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَيْهِ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ مَسَّنَا							
हमें पहुँची	अज़ीज़	ऐ	उन्होंने ने कहा	उस पर - सामने	वह दाखिल हुए	फिर जब	87 काफ़िर (जमा)
وَأَهْلَنَا الضَّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُرْجَاةٍ فَأَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ							
नाप (गुल्ला)	हमें	पस पूरी दें	निकम्मी (नाकिस)	पूँजी के साथ (ले कर)	और हम आए	सख्ती	और हमारे घर
وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا إِنَّ اللَّهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِينَ ﴿٨٨﴾ قَالَ							
कहा	88	सदका करने वाले	जज़ा देता है	वेशक अल्लाह	हम पर (हमें)	सदका करें	
هَلْ عَلِمْتُمْ مَا فَعَلْتُمْ بِيُوسُفَ وَأَخِيهِ إِذْ أَنْتُمْ جَاهِلُونَ ﴿٨٩﴾							
89	नादान	जब तुम	और उस का भाई	यूसुफ़ (अ) के साथ	क्या तुम ने किया है?	क्या तुम्हें खबर है	
قَالُوا ءَأِنَّكَ لَأَنْتَ يُوسُفُ قَالَ أَنَا يُوسُفُ وَهَذَا أَخِي							
मेरा भाई	और यह	मैं यूसुफ़ (अ)	उस ने कहा	यूसुफ़ (अ)	तुम ही	क्या तुम ही	वह बोले
فَدَمِنَ اللَّهُ عَلَيْنَا إِنَّهُ مَنْ يَتَّقِ وَيَصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ							
तो वेशक अल्लाह	और सब्र करता है	जो डरता है	वेशक वह	हम पर	अल्लाह	अलबत्ता एहसान किया है	
لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٩٠﴾ قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ أَثْرَكَ							
तुझे पसन्द किया (फज़ीलत दी)	अल्लाह की क़सम	कहने लगे	90	नेकी करने वाले	अजर	ज़ाए नहीं करता	
اللَّهُ عَلَيْنَا وَإِنْ كُنَّا لَخَطِئِينَ ﴿٩١﴾ قَالَ لَا تَثْرِبَ عَلَيْكُمْ							
तुम पर	मलामत नहीं	उस ने कहा	91	ख़ताकार	हम थे	और वेशक	हम पर अल्लाह
الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّحِمِينَ ﴿٩٢﴾ إِذْهَبُوا							
तुम जाओ	92	मेहरबानी करने वाले	सब से ज़ियादा मेहरबान	और वह	तुम को	अल्लाह	बख़्शे आज
بِقَمِيصِي هَذَا فَالْقُوهُ عَلَىٰ وَجْهِ أَبِي يَأْتِ بَصِيرًا							
वीना हो कर	आएगा	मेरे बाप	चेहरा	पर	पस उस को डालो	यह	मेरी कमीस ले कर
وَأْتُونِي بِأَهْلِكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩٣﴾ وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيرُ							
काफ़ला	जुदा जुदा (रवाना हुआ)	और जब	93	तमाम (सारे)	अपने घर वालों को	और मेरे पास आओ (ले आओ)	
قَالَ أَبُوهُمْ إِنَِّّي لَأَجِدُ رِيحَ يُوسُفَ لَوْلَا أَنَّنِي							
कि	अगर न	यूसुफ़	हवा (खुशबू)	अलबत्ता पाता हूँ	वेशक मैं	उन का बाप	कहा
تَفِيدُونَ ﴿٩٤﴾ قَالُوا تَاللَّهِ إِنَّكَ لَفِي ضَلَالِكَ الْقَدِيمِ ﴿٩٥﴾							
95	पुराना	अपना वहम	में	वेशक तू	अल्लाह की क़सम	वह कहने लगे	94 सुझे वहक गया जानो

ऐ मेरे बेटो! तुम जाओ पस खोज निकालो यूसुफ़ (अ) का और उस के भाई का, और अल्लाह की रहमत से मायूस न हो, वेशक अल्लाह की रहमत से मायूस नहीं होते मगर काफ़िर लोग। (87) फिर जब वह उस के सामने दाखिल हुए उन्होंने ने कहा ऐ अज़ीज़! हमें और हमारे घर को पहुँची है सख्ती, और हम नाकिस पूँजी ले कर आए हैं, हमें पूरा नाप (गुल्ला) दें, और हम पर सदका करें, वेशक अल्लाह सदका करने वालों को जज़ा देता है। (88) (यूसुफ़ अ) ने कहा क्या तुम्हें खबर है? तुम ने यूसुफ़ (अ) और उस के भाई के साथ क्या (सुलूक) किया? जब तुम नादान थे। (89) वह बोले क्या तुम ही यूसुफ़ (अ) हो? उस ने कहा मैं यूसुफ़ (अ) हूँ और यह मेरा भाई है, अल्लाह ने अलबत्ता हम पर एहसान किया है, वेशक जो डरता है और सब्र करता है तो वेशक अल्लाह ज़ाया नहीं करता नेकी करने वालों का अजर। (90) कहने लगे अल्लाह की क़सम! अल्लाह ने तुझे हम पर फज़ीलत दी है और हम वेशक ख़ताकार थे। (91) उस ने कहा आज तुम पर कोई मलामत (इलज़ाम) नहीं, अल्लाह तुम्हें बख़्शे, वह सब से ज़ियादा मेहरबान है मेहरबानी करने वालों में। (92) तुम मेरी यह कमीज़ ले कर जाओ पस उस को मेरे बाप के चहरे पर डालो, वह वीना हो जाएंगे, और मेरे पास अपने तमाम घर वालों को ले आओ। (93) और जब काफ़ला रवाना हुआ उन के बाप ने कहा, वेशक मैं यूसुफ़ (अ) की खुशबू पा रहा हूँ अगर न जानो (न कहो) कि बूढ़ा वहक गया है। (94) वह कहने लगे अल्लाह की क़सम! वेशक तू अपने पुराने वहम में है। (95)

फिर जब खुशखबरी देने वाला आया और उस ने कर्ता उस (याकूब अ) के मुँह पर डाला तो वह लौट कर देखने वाला (वीना) हो गया, बोला क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था? कि मैं अल्लाह की तरफ से जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (96)

वह बोले ऐ हमारे बाप! हमारे लिए बख्शीश मांगिए हमारे गुनाहों की, वेशक हम ख़ताकार थे। (97)

उस ने कहा मैं जल्द अपने रब से तुम्हारे गुनाहों की बख्शीश मांगूंगा, वेशक वह बख्शने वाला निहायत मेहरबान है। (98)

फिर जब वह यूसुफ़ (अ) के पास दाखिल हुए तो उस ने अपने माँ बाप को अपने पास ठिकाना दिया, और कहा अगर अल्लाह चाहे तो तुम मिस्त्र में दिलजमई के साथ दाखिल हो। (99)

और अपने माँ बाप को तख़्त पर ऊंचा बिठाया, और वह उस के आगे गिरगए सिज्दे में और उस ने कहा ऐ मेरे अब्बा! यह है मेरे उस से पहले ख़्वाब की ताबीर, उस को मेरे रब ने सच्चा कर दिया, और वेशक उस ने मुझे पर

एहसान किया जब मुझे कैद खाने से निकाला, और तुम सब को गाऊँ से ले आया उस के बाद कि मेरे और मेरे भाइयों के दरमियान शैतान ने झगड़ा (फ़साद) डाल दिया था, वेशक मेरा रब जिस के लिए चाहे उमदा तदवीर करने वाला है, वेशक वह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (100)

ऐ मेरे रब! तू ने मुझे एक मुल्क अता किया और मुझे सिखाया बातों का अन्जाम (ख़्वाबों की ताबीर) निकालना, ऐ आस्मानों और ज़मीन के पैदा करने वाला! तू मेरा कारसाज़ है दुनिया में और आखिरत में, मुझे (दुनिया से) फ़रमावरदारी की हालत में उठाना और मुझे नेक बन्दों के साथ मिलाना। (101)

यह ग़ैब की ख़बरों में से है जो हम तुम्हारी तरफ़ वहि करते हैं और तुम उन के पास न थे जब उन्होंने ने अपना काम पुख़्ता किया और वह चाल चल रहे थे। (102)

فَلَمَّا أَنْ جَاءَ الْبَشِيرُ أَلْقَاهُ عَلَىٰ وَجْهِهِ فَارْتَدَّ بَصِيرًا ۗ								
देखने वाला	तो लौट कर होगया	उस का मुँह	पर	उस ने वह (कर्ता) डाला	खुशखबरी देने वाला	आया	कि	फिर जब
قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۗ (96)								
96	तुम नहीं जानते	जो	अल्लाह (तरफ) से	वेशक मैं जानता हूँ	तुम से	क्या मैं ने नहीं कहा था		बोला
قَالُوا يَا أَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا إِنَّا كُنَّا خُطِيئِينَ ۗ (97)								
97	ख़ताकार (जमा)	थे	वेशक हम	हमारे गुनाह	हमारे लिए बख्शीश मांग	ऐ हमारे बाप		वह बोले
قَالَ سَوْفَ اسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّي إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۗ (98)								
98	निहायत मेहरबान	बख्शने वाला	वह	वेशक वह	अपना रब	तुम्हारे लिए	मैं बख्शीश मांगूंगा	जल्द उस ने कहा
فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَىٰ يُوسُفَ أَوَىٰ إِلَيْهِ أَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوا مِنصِرَ إِن شَاءَ اللَّهُ مِنِّي ۗ (99) وَرَفَعَ أَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوا لَهُ سُجَّدًا وَقَالَ يَا أَبَتِ هَذَا تَأْوِيلُ رُءْيَايَ ۗ (100) مِنْ قَبْلُ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّي حَقًّا وَقَدْ أَحْسَنَ بِي إِذْ أَخْرَجَنِي مِنَ السِّجْنِ وَجَاءَ بِكُمْ مِنَ الْبَدْوِ مِنْ بَعْدِ أَنْ نَزَغَ الشَّيْطَانُ بَيْنِي وَبَيْنَ إِخْوَتِي ۗ إِنَّ رَبِّي لَطِيفٌ لِمَا يَشَاءُ ۗ (101) وَأَعَلَّمَنِي مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ ۗ فَاطَرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ أَنْتَ وَلِيٌّ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۗ تَوَفَّنِي مُسْلِمًا وَأَلْحَقَنِي بِالصَّالِحِينَ ۗ (102) وَمَا كُنْتُ لَدَيْهِمْ إِذْ أَجْمَعُوا أَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُونَ ۗ (103)								
तुम दाखिल हो	और कहा	अपने माँ बाप	उस ने ठिकाना दिया अपने पास	यूसुफ़ (अ) पर (पास)	वह दाखिल हुए	फिर जब		
तख़्त	पर	अपने माँ बाप	और ऊंचा बिठाया	99	अमन (दिलजमई) के साथ	अल्लाह ने चाहा	अगर	मिस्त्र
मेरा ख़्वाब	ताबीर	यह	ऐ मेरे अब्बा	और उस ने कहा	सिज्दे में	उस के लिए (आगे)	और वह गिरगए	
मुझे निकाला	जब	मुझे पर	और वेशक उस ने एहसान किया	सच्चा	मेरा रब	उस को कर दिया	उस से पहले	
झगड़ा डाल दिया	कि	उस के बाद	गाऊँ	से	तुम सब को	और ले आया	कैद खाना	से
जिस के लिए चाहे	उमदा तदवीर करता है	मेरा रब	वेशक	और मेरे भाइयों के दरमियान	मेरे दरमियान	शैतान		
मुल्क	से - एक	तू ने मुझे अता किया	ऐ मेरे रब	100	हिक्मत वाला	जानने वाला	वह	वेशक वह
और ज़मीन	आस्मान (जमा)	पैदा करने वाला	बातें (ख़्वाब)	अन्जाम निकालना (ताबीर)	से	और मुझे सिखाया		
और मुझे मिला	फ़रमावरदारी की हालत में	मुझे उठा	और आखिरत	दुनिया में	मेरा कारसाज़	तू		
तुम्हारी तरफ़	हम वहि करते हैं	ग़ैब की ख़बरें	से	यह	101	सालेह (नेक बन्दों) के साथ		
102	चाल चल रहे थे	और वह	अपना काम	उन्होंने ने जमा किया (पुख़्ता किया)	जब	उन के पास	और तुम न थे	

وَمَا أَكْثَرَ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٣﴾ وَمَا تَسْأَلُهُمْ عَلَيْهِ							
उस पर	और तुम नहीं मांगते उन से	103	ईमान लाने वाले	तुम चाहो	अगरचे	अक्सर लोग	और नहीं
مَنْ أَجْرٌ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿١٠٤﴾ وَكَأَيِّنْ مِنْ آيَةٍ							
निशानियां	और कितनी ही	104	सारे जहानों के लिए	नसीहत	मगर	यह नहीं	कोई अजर
فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يَمُرُّونَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُونَ ﴿١٠٥﴾							
105	मुँह फेरने वाले	उन से	लेकिन वह	उन पर	वह गुज़रते हैं	और ज़मीन	आस्मानों में
وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللَّهِ إِلَّا وَهُمْ مُشْرِكُونَ ﴿١٠٦﴾ أَفَأَمِنُوا							
पस किया वह बेखौफ हो गए	106	मुश्रिक (जमा)	और वह	मगर	अल्लाह पर	उन में अक्सर	और ईमान नहीं लाते
أَنْ تَأْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللَّهِ أَوْ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً							
अचानक	घड़ी (कियामत)	उन पर आजाए	या	अल्लाह का अज़ाब	से	छा जाने वाली (आफ़त)	कि उन पर आए
وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٠٧﴾ قُلْ هَذِهِ سَبِيلِي أَدْعُوا إِلَى اللَّهِ							
अल्लाह की तरफ	मैं बुलाता हूँ	मेरा रास्ता	यह	आप कह दें	107	उन्हें खबर न हो	और वह
عَلَىٰ بَصِيرَةٍ أَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِي وَسُبْحَانَ اللَّهِ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٠٨﴾							
108	मुश्रिक (जमा)	से	और मैं नहीं	और अल्लाह पाक है	मेरी पैरवी की	और जो-जिस	मैं
وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوحِي إِلَيْهِمْ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ							
वसतियों वाले	से	उन की तरफ	हम वही भेजते थे	मर्द	मगर-सिर्फ	तुम से पहले	और हम ने नहीं भेजा
أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ							
वह लोग जो	अनज़ाम	हुआ	कैसा - क्या	पस वह देखते	ज़मीन (मुल्क) में	क्या पस उन्होंने ने सैर नहीं की	
مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ اتَّقَوْا ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٠٩﴾							
109	पस क्या तुम समझते नहीं	जिन्होंने ने परहेज़ किया	उन के लिए जो	बेहतर	और अलबत्ता आखिरत का घर	उन से पहले	
حَتَّىٰ إِذَا اسْتَيْسَسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوا جَاءَهُمْ							
उन के पास आई	उन से झूट कहा गया	कि वह	और उन्होंने ने गुमान किया	रसूल (जमा)	मायूस होने लगे	जब	यहां तक
نَصْرَنَا فَنَجَّىٰ مَنْ نَّشَاءُ ۗ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ﴿١١٠﴾							
110	मुजरिम (जमा)	कौम	से	हमारा अज़ाब	और नहीं फेरा जाता	हम ने जिन्हें चाहा	पस बचा दिए हमारी मदद
لَقَدْ كَانَ فِي قَصصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ۗ مَا كَانَ							
नहीं है	अक्लमन्दों के लिए	इव्रत (नसीहत)	उन के किस्से	में	है	अलबत्ता	
حَدِيثًا يُفْتَرَىٰ وَلَكِنْ تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ							
उस से (अपने से) पहली	वह जो	तसदीक	और लेकिन (बल्कि)	बनाई हुई	बात		
وَتَفْصِيلَ كُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١١١﴾							
111	जो ईमान लाते हैं	लोगों के लिए	और रहमत	और हिदायत	हर बात	और तफ़सील (बयान)	

अगरचे तुम (कितना ही) चाहो और अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं। (103)

और तुम उन से उस पर कोई अजर नहीं मांगते, यह (और कुछ) नहीं, सारे जहानों के लिए नसीहत है। (104)

और आस्मानों में और ज़मीन में कितनी ही निशानियां हैं वह उन पर गुज़रते हैं, लेकिन वह उन से मुँह फेरने वाले हैं। (105)

और उन में से अक्सर अल्लाह पर ईमान नहीं लाते मगर वह मुश्रिक हैं। (106)

पस किया वह (उस से) बेखौफ हो गए कि उन पर अल्लाह के अज़ाब की आफ़त आजाए, या उन पर आजाए अचानक कियामत, और उन्हें खबर (भी) न हो। (107)

आप (स) कह दें यह मेरा रास्ता है, मैं अल्लाह की तरफ बुलाता हूँ,

समझ बूझ के मुताबिक, मैं (भी) और वह (भी) जिस ने मेरी पैरवी की, और अल्लाह पाक है, और मैं मुश्रिकों में से नहीं। (108)

और हम ने तुम से पहले वसतियों में रहने वाले लोगों में से सिर्फ मर्द

(नवी) भेजे जिन की तरफ हम वही भजते थे, पस क्या उन्होंने ने सैर

नहीं की मुल्क में? कि वह देखते उन से पहले लोगों का अनज़ाम

क्या हुआ? और अलबत्ता आखिरत का घर उन लोगों के लिए बेहतर है जिन्होंने ने परहेज़ किया, पस क्या

तुम नहीं समझते? (109)

यहां तक कि जब (ज़ाहिरी असबाब से) रसूल मायूस होने लगे और

उन्होंने ने गुमान किया कि उन से झूट कहा गया था, उन के पास हमारी मदद आगई, पस जिन्हें हम

ने चाहा वह बचा दिए गए और हमारा अज़ाब नहीं फेरा जाता

मुजरिमों की कौम से। (110)

अलबत्ता उन के किस्सों में अक्लमन्दों के लिए इव्रत है यह

बनाई हुई बात नहीं, बल्कि तसदीक है अपने से पहलों की,

और बयान है हर बात का, और हिदायत ओ रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं। (111)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है अलिफ-लाम-मीम-रा - यह किताब (कुरआन) की आयतें हैं, और जो तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारी तरफ उतारा गया हक है, मगर अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (1) अल्लाह जिस ने आस्मानों को बुलन्द किया किसी सुतून (सहारे) के बगैर तुम देखते हो उसे, फिर अर्श पर करार पकड़ा, और सूरज और चाँद को मुसख़र किया (काम पर लगाया) हर एक चलता है एक मुदत मुकर्ररा तक, अल्लाह काम की तदवीर करता है, वह निशानियां बयान करता है ताकि तुम अपने रब से मिलने का यकीन कर लो। (2) और वही है जिस ने ज़मीन को फैलाया, और उस में पहाड़ बनाए और नहरें (चलाई) और हर किस्म के फल (पैदा किए) और उस में दो, दो किस्म के (तलख़ ओ शिरीन) फल बनाए, और वह दिन को रात से ढांपता है, बेशक उस में निशानियां हैं गौर ओ फ़िक्र करने वाले लोगों के लिए। (3) और ज़मीन में पास पास क़त्आत हैं, और बागात हैं अंगूरों के, और खेतियां और खजूर एक जड़ से दो शाखों वाली और बगैर दो शाखों की, एक ही पानी से (हालाकि) सैराब की जाती है, और हम वेहतर बना देते हैं उन में से एक को दूसरे पर ज़ाइके में, इस में निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो अक़्ल से काम लेते हैं। (4) और अगर तुम तअज़ज़ुब करो तो उन का यह कहना अज़ब है: जब हम मिट्टी हो गए क्या हम (अज़ सरे नौ) नई ज़िन्दगी पाएंगे? वही लोग हैं जो अपने रब के मुन्किर हुए, और वही हैं जिन की गर्दनों में तौक होंगे, और वही दोज़ख़ वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (5)

<p style="text-align: center;"><b>آيَاتُهَا ٤٣ ﴿١٣﴾ سُورَةُ الرَّعْدِ ﴿٦﴾ زُكُوعَاتُهَا ٦</b></p>								
रुक़आत 6			(13) सूरतुर रअद गरज़			आयात 43		
<p><b>بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ</b></p>								
<p>अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है</p>								
<p><b>الْمَرَّةَ تِلْكَ آيَةُ الْكِتَابِ وَالَّذِي أُنزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ</b></p>								
हक	तुम्हारे रब की तरफ़ से	तुम्हारी तरफ़	उतारा गया	और वह जो कि	किताब	आयतें	यह	अलिफ़ लाम मीम रा
<p><b>وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١﴾ اللَّهُ الَّذِي رَفَعَ السَّمَوَاتِ</b></p>								
आस्मान (जमा)	बुलन्द किया	वह जिस ने	अल्लाह	1	ईमान नहीं लाते	अक्सर लोग	और लेकिन (मगर)	
<p><b>بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرْوُنَهَا ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ</b></p>								
और चाँद	सूरज	और काम पर लगाया	अर्श पर	करार पकड़ा	फिर	तुम उसे देखते हो	किसी सुतून के बगैर	
<p><b>كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى يُدَبِّرُ الْأَمْرَ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ</b></p>								
ताकि तुम	निशानियां	वह बयान करता है	काम	तदवीर करता है	मुकर्ररा	एक मुदत	चलता है	हर एक
<p><b>بِلِقَاءِ رَبِّكُمْ تُوقِنُونَ ﴿٢﴾ وَهُوَ الَّذِي مَدَّ الْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيهَا</b></p>								
उस में	और बनाया	ज़मीन	फैलाया	वह - जिस	और वही	2	तुम यकीन कर लो	अपना रब मिलने का
<p><b>رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ جَعَلَ فِيهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ</b></p>								
दो, दो किस्म	जोड़े	उस में	बनाया	हर एक फल (जमा)	और से	और नहरें	पहाड़ (जमा)	
<p><b>يُعْشَىٰ اللَّيْلَ النَّهَارُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٣﴾</b></p>								
3	जो गौर ओ फ़िक्र करते हैं	लोगों के लिए	निशानियां	उस में	बेशक	दिन	रात	वह ढांपता है
<p><b>وَفِي الْأَرْضِ قِطْعٌ مُّتَجَوِّزَةٌ وَجَنَّتْ مِنْ أَعْنَابٍ وَزَرْعٌ وَنَخِيلٌ</b></p>								
और खजूर	और खेतियां	अंगूर (जमा)	से - के	और बागात	पास पास	क़ितआत	ज़मीन	और में
<p><b>صِنَوَانٍ وَغَيْرِ صِنَوَانٍ يُسْقَىٰ بِمَاءٍ وَاحِدٍ وَنُفِصِّلُ بَعْضَهَا</b></p>								
उन का एक	और हम फ़ज़ीलत देते हैं	एक	पानी से	सैराब किया जाता है	दो शाखों वाली	और बगैर	एक जड़ से दो शाखों वाली	
<p><b>عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الْأُكُلِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٤﴾</b></p>								
4	अक़्ल से काम लेते हैं	लोगों के लिए	निशानियां	उस में	बेशक	ज़ाइका	में	दूसरा पर
<p><b>وَأَنْ تَعْجَبَ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ إِذَا كُنَّا ثُرَبًا ءَأَاتَا لَفِي خَلْقٍ</b></p>								
ज़िन्दगी पाएंगे	क्या हम	मिट्टी	हो गए हम	क्या जब	उन का कहना	तो अज़ब	तुम तअज़ज़ुब करो	और अगर
<p><b>جَدِيدِهِ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ الْأَغْلَالُ فِي</b></p>								
में	तौक (जमा)	और वही है	अपने रब के	मुन्किर हुए	जो लोग	वही	नई	
<p><b>أَعْنَاقِهِمْ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٥﴾</b></p>								
5	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	दोज़ख़ वाले	और वही है	उन की गर्दनों		

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ						
से	और (हालांकि) गुज़र चुकी	भलाई (रहमत) से पहले	बुराई (अज़ाब)	और वह तुम से जल्दी मांगते हैं		
قَبْلِهِمُ الْمَثَلُ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ لِلنَّاسِ عَلَى						
पर	लोगों के लिए	अलबत्ता मग़फ़िरत वाला	तुम्हारा रब	और वेशक	सज़ाएं	उन से क़ब्ल
ظَلْمِهِمْ وَإِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٦﴾ وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا						
जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	और कहते हैं	6	अलबत्ता सख़्त अज़ाब देने वाला	तुम्हारा रब	और वेशक	उन का जुल्म
لَوْلَا أَنْزَلَ عَلَيْهِ آيَةً مِنْ رَبِّهِ إِنَّمَا أَنْتَ مُنذِرٌ						
डराने वाले	तुम	उस के सिवा नहीं	उस का रब	से	कोई निशानी	उस पर
وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ﴿٧﴾ اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ أُنْثَىٰ وَمَا تَغِيصُ						
सुकड़ता है	और जो	हर मादा	जो पेट में रखती है	जानता है	अल्लाह	7
और हर क़ौम के लिए	हादी	7	अल्लाह	जानता है	जो पेट में रखती है	हर मादा
الْأَرْحَامِ وَمَا تَزْدَادُ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِمِقْدَارٍ ﴿٨﴾ عِلْمُ الْغَيْبِ						
जानने वाला हर ग़ैब	8	एक अन्दाज़े से	उस के नज़्दीक	चीज़	और हर	बढ़ता है
और जो	और जो	बढ़ता है	और हर	चीज़	उस के नज़्दीक	एक अन्दाज़े से
وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيرِ الْمُتَعَالِ ﴿٩﴾ سَوَاءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ أَسَرَ الْقَوْلَ						
वात	आहिस्ता कहे	जो	तुम में	बराबर	9	बुलन्द मरतवा
और ज़ाहिर	सब से बड़ा	बुलन्द मरतवा	9	बराबर	तुम में	जो
وَمَنْ جَهَرَ بِهِ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِاللَّيْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ ﴿١٠﴾						
10	दिन में	और चलने वाला	रात में	छुप रहा है	वह	और जो
और जो	पुकार कर - उस को	और जो	वह	छुप रहा है	रात में	और चलने वाला
لَهُ مُعَقِّبَاتٌ مِّنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ يَحْفَظُونَهُ						
उस के	पहरेदार	उस (इन्सान) के आगे से	और उस के पीछे	वह उसकी हिफ़ाज़त करते हैं		
مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا مَا						
जो	वह बदल लें	यहां तक कि	किसी क़ौम के पास (अच्छी हालत)	जो	नहीं बदलता	अल्लाह वेशक
अल्लाह का हुक्म	अल्लाह वेशक	नहीं बदलता	जो	यहां तक कि	वह बदल लें	जो
بِأَنفُسِهِمْ وَإِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِقَوْمٍ سُوءًا فَلَا مَرَدَّ لَهُ وَمَا لَهُمْ						
उन के लिए	और नहीं	उस के लिए	तो नहीं फिरना	बुराई	किसी क़ौम से	इरादा करता है अल्लाह
अपने दिलों में (अपनी हालत)	और जब	इरादा करता है अल्लाह	किसी क़ौम से	बुराई	तो नहीं फिरना	और नहीं
مِنْ دُونِهِ مِنْ وَاٰلٍ ﴿١١﴾ هُوَ الَّذِي يُرِيكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا						
उम्मीद दिलाने को	डराने को	विजली	तुम्हें दिखाता है	वह जो कि	वह	11
किसी मददगार	कोई मददगार	11	वह	वह जो कि	तुम्हें दिखाता है	डराने को
وَيُنشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ﴿١٢﴾ وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ						
और उठाता है	बादल	बोझल	12	और पाकीज़गी वयान करती है	गरज	उस की तारीफ़ के साथ
और उठाता है	बादल	बोझल	12	और पाकीज़गी वयान करती है	गरज	उस की तारीफ़ के साथ
مِنْ خِيفَتِهِ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيبُ بِهَا مَنْ						
जिस से	उस के डर से	और वह भेजता है	गरजने वाली विजलियां	फिर गिराता है	उसे	जिस
يَشَاءُ وَهُمْ يُجَادِلُونَ فِي اللَّهِ وَهُوَ شَدِيدُ الْمِحَالِ ﴿١٣﴾						
13	पकड़	सख़्त	और वह	अल्लाह (के वारे) में	झगड़ते हैं	और वह
वह चाहता है	और वह	झगड़ते हैं	अल्लाह (के वारे) में	और वह	पकड़	13

और वह तुम से रहमत से पहले जल्द अज़ाब मांगते हैं, हालांकि गुज़र चुकी है उन से क़ब्ल (इव्रत नाक) सज़ाएं, और वेशक तुम्हारा रब उनके जुल्म के बावजूद लोगों के लिए मग़फ़िरत वाला है, और वेशक तुम्हारा रब सख़्त अज़ाब देने वाला है। (6)

और काफ़िर कहते हैं उस के रब की तरफ़ से उस पर कोई निशानी क्यों न उतरी? उस के सिवा नहीं के तुम डराने वाले हो, और हर क़ौम के लिए हादी हुआ है। (7)

अल्लाह जानता है जो हर मादा पेट में रखती है और जो रहम में सुकड़ता और बढ़ता है, और उस के नज़्दीक हर चीज़ एक अन्दाज़े से है। (8)

जानने वाला है हर ग़ैब और ज़ाहिर का, सब से बड़ा, बुलन्द मरतवा है। (9)

(उस के लिए) बराबर है तुम में से जो आहिस्ता वात कहे और जो उस को पुकार कर कहे और जो रात में छुप रहा है और जो दिन में चलने (फिरने) वाला है। (10)

उस के पहरेदार हैं इन्सान के आगे से और उस के पीछे से, वह अल्लाह के हुक्म से उस की हिफ़ाज़त करते हैं, वेशक अल्लाह किसी क़ौम की अच्छी हालत नहीं बदलता यहां तक कि वह खुद अपनी हालत बदल लें, और जब अल्लाह किसी क़ौम से बुराई का इरादा करता है तो उस के लिए फिरना नहीं (वह टल नहीं सकती) और उन के लिए उस के सिवा कोई मददगार नहीं। (11)

वही है जो तुम्हें विजली दिखाता है डराने को और उम्मीद दिलाने को और उठाता है बोझल बादल। (12)

और गरज उस की तारीफ़ के साथ पाकी वयान करती है और फ़रिशते उस के डर से (उस की तसवीह करते हैं) और वह गरजने वाली विजलियां भेजता है, फिर उन्हें जिस पर चाहता है गिराता है और वह (काफ़िर) अल्लाह के वारे में झगड़ते हैं और वह सख़्त पकड़ वाला है। (13)

उस को पुकारना हक है, और उस के सिवा वह जिन को पुकारते हैं वह उन्हें कुछ भी जवाब नहीं देते मगर जैसे (कोई) अपनी दोनों हथेलियां पानी की तरफ फैलादे ताकि (पानी) उस के मुँह तक पहुँच जाए, और वह उस तक हरगिज़ पहुँचने वाला नहीं, और काफ़िरों की पुकार गुमराही के सिवा कुछ नहीं। (14) और अल्लाह ही को सिज्दा करता है जो आस्मानों और ज़मीन में है, खुशी से या न खुशी से, और सुबह ओ शाम उन के साए (भी)। (15) आप (स) पूछें आस्मानों और ज़मीन का रब कौन है? कह दें, अल्लाह है, कह दें तो क्या तुम उस के सिवा बनाते हो हिमायती जो अपनी जानों के लिए (भी) बस नहीं रखते कुछ नफ़ा का और न नुक़सान का, कह दें क्या बराबर होता है अन्धा और देखने वाला? या क्या उजाला और अन्धेरे बराबर हो जाएंगे? क्या वह अल्लाह के लिए जो शरीक बनालेते हैं उन्होंने (मख़लूक) पैदा की है उस के पैदा करने की तरह? सो पैदाइश उन पर मुशतबह हो गई, कह दें अल्लाह हर शै का पैदा करने वाला है और वह यकता ग़ालिब है। (16) उस ने आस्मानों से पानी उतारा, सो नदी नाले अपने अपने अन्दाज़े से वह निकले, फिर उठा लाया (ऊपर ले आया) नाला फूला हुआ झाग, और जो आग में तपाते हैं ज़ेवर बनाने को या और असबाब बनाने को, (उस में भी) उस जैसा झाग (मैल) होता है, उसी तरह अल्लाह हक़ और बातिल को बयान करता है, सो झाग दूर हो जाता है (जाया हो जाता है) सूख कर, लेकिन जो लोगों को नफ़ा पहुँचाता है वह ज़मीन में ठहरा रहता है (बाकी रहता है) इसी तरह अल्लाह मिसालें बयान करता है। (17)

لَهُ دَعْوَةُ الْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ									
उस को	पुकारना	हक़	और जिन को	वह पुकारते हैं	उस के सिवा	वह जवाब नहीं देते			
لَهُمْ بِشَيْءٍ إِلَّا كَبَاسِطٍ كَفَيْهِ إِلَى الْمَاءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ									
उन को	कुछ भी	मगर	जैसे फैला दे	अपनी हथेलियां	पानी की तरफ़	ताकि पहुँच जाए	उस के मुँह तक	और नहीं	वह
بِبَالِغِهِ وَمَا دُعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ﴿١٤﴾ وَ لِلّٰهِ يَسْجُدُ									
उस तक पहुँचने वाला	और नहीं	पुकार	काफ़िर (जमा)	सिवाए	में	गुमराही	14	और अल्लाह ही को सिज्दा करता है	और
مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَظِلَلُهُمْ بِالْغُدُوِّ									
जो	में	आस्मानों	और ज़मीन	और	खुशी से	या नाखुशी से	और उन के साए	सुबह	
وَالْأَصَالِ ﴿١٥﴾ قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ قُلِ اللّٰهُ									
और शाम	15	पूछें	कौन	आस्मानों का रब	और ज़मीन	और ज़मीन	और ज़मीन	कह दें	अल्लाह
قُلْ أَفَاتَّخَذْتُمْ مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ لَا يَمْلِكُونَ لِأَنفُسِهِمْ نَفْعًا									
कह दें	तो क्या तुम बनाते हो	उस के सिवा	हिमायती	वह बस नहीं रखते	अपनी जानों के लिए	कुछ नफ़ा			
وَلَا ضَرًّا قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ أَمْ هَلْ									
और न नुक़सान	कह दें	क्या	बराबर होता है	नाबीना (अन्धा)	और बीना (देखने वाला)	या	क्या		
تَسْتَوِي الظُّلُمَاتُ وَالنُّورُ أَمْ جَعَلُوا لِلّٰهِ شُرَكَاءَ خَلَقُوا									
बराबर हो जाएगा	अन्धेरे (जमा)	और उजाला	क्या	वह बनाते हैं	अल्लाह के लिए	शरीक	उन्होंने ने पैदा किया है		
كَخَلَقَهُ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ									
उस के पैदा करने की तरह	तो मुशतबह होगई	पैदाइश	उन पर	कह दें	अल्लाह	पैदा करने वाला	हर शै		
وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿١٦﴾ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ									
और वह	यकता	ज़बरदस्त (ग़ालिब)	16	उस ने उतारा	आस्मानों से	पानी	सो वह निकले		
أَوْدِيَةً بِقُدْرَتِهَا فَأَحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَابِيًا وَمِمَّا									
नदी नाले	अपने अपने अन्दाज़े से	फिर उठा लाया	नाला	झाग	फूला हुआ	और उस से जो			
يُوقَدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حُلِيٍّ أَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ									
तपाए है	उस पर	आग में	हासिल करने (बनाने) को	ज़ेवर	या	असबाब	झाग		
مِّثْلَهُ كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ فَأَمَّا									
उसी जैसा	उसी तरह	बयान करता है	अल्लाह	हक़	और बातिल	सो			
الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَاءً ۗ وَأَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ									
झाग	दूर हो जाता है	सूख कर	और लेकिन	जो नफ़ा पहुँचाता है	लोग				
فَيَمْكُثُ فِي الْأَرْضِ كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْأَمْثَالَ ﴿١٧﴾									
तो ठहरा रहता है	ज़मीन में	इसी तरह	बयान करता है	अल्लाह	मिसालें	17			

لِلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ الْحُسْنَىٰ وَالَّذِينَ لَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُ لَوْ أَنَّ									
यह कि	अगर	उस का (हुकम)	न माना	और जिन लोगों ने	भलाई	अपने रब (का हुकम)	उन्होंने ने मान लिया	उन के लिए जिन्होंने ने	
لَهُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ ۗ أُولَٰئِكَ لَهُمْ									
उन के लिए	वही है	उस को	कि फिदये में दें	उस के साथ	और उस जैसा	सब	जो कुछ ज़मीन में	उन के लिए (उन का)	
سُوءَ الْحِسَابِ ۗ وَمَأْوَهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٨﴾ أَمْ مَنْ يَعْلَمُ									
जानता है	पस क्या जो	18	बिछाना (जगह)	और बुरा	जहन्नम	और उन का ठिकाना	हिसाब	बुरा	
أَنَّمَا أَنْزَلَ إِلَيْكَ مِنَ رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۗ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ									
समझते हैं	इस के सिवा नहीं	अन्धा	वह	उस जैसा	हक	तुम्हारा रब	से	तुम्हारी तरफ	उतारा गया कि जो
أُولَٰئِكَ الْأَلْبَابِ ﴿١٩﴾ الَّذِينَ يُؤْفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا يَنْقُضُونَ الْمِيثَاقَ ﴿٢٠﴾									
20	पुख्ता कौल ओ इकरार	और वह नहीं तोड़ते	अल्लाह का अहद	पूरा करते हैं	और वह जो कि	19	अक़ल वाले		
وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ									
अपना रब	और वह डरते हैं	जोड़ा जाए	कि	उस का	अल्लाह ने हुकम दिया	जो	जोड़े रखते हैं	और वह जो कि	
وَيَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ ﴿٢١﴾ وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ									
अपना रब	खुशी	हासिल करने के लिए	उन्होंने ने सबर किया	और वह लोग जो	21	हिसाब	बुरा	और खौफ खाते हैं	
وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَيَدْرءُونَ									
और टाल देते हैं	और ज़ाहिर	पोशीदा	हम ने उन्हें दिया	उस से जो	और खर्च किया	नमाज़	और उन्होंने ने काइम की		
بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةِ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٢﴾ جَنَّتٍ عَدْنٍ									
हमेशगी	बागात	22	आखिरत का घर	उन के लिए	वही है	बुराई	नेकी से		
يَدْخُلُونَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ وَالْمَلَائِكَةُ									
और फरिश्ते	और उन की औलाद	और उन की वीवियां	उन के वाप दादा	से (में)	नेक हुए	और जो	वह उस में दाखिल होंगे		
يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ ﴿٢٣﴾ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ									
पस खूब	तुम ने सबर किया	इस लिए कि	तुम पर	सलामती	23	हर दरवाज़ा	से	उन पर	दाखिल होंगे
عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٤﴾ وَالَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ									
उस को पुख्ता करना	उस के बाद	अल्लाह का अहद	तोड़ते हैं	और वह लोग जो	24	आखिरत का घर			
وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ ۗ أُولَٰئِكَ									
यही है	ज़मीन में	और वह फ़साद करते हैं	कि वह जोड़ा जाए	उस का	अल्लाह ने हुकम दिया	जो	और वह काटते हैं		
لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ﴿٢٥﴾ اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ									
और तंग करता है	जिस के लिए वह चाहता है	रिज़क	कुशादा करता है	अल्लाह	25	बुरा घर	और उनके लिए	लानत	उन के लिए
وَفَرِحُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا مَتَاعٌ ﴿٢٦﴾									
26	मताअ हकीर	मगर (सिर्फ)	आखिरत (के मुकाबले) में	दुनिया की ज़िन्दगी	और नहीं	दुनिया	ज़िन्दगी से	और वह खुश है	

जिन लोगों ने अपने रब का हुकम मान लिया उन के लिए भलाई है, और जिन्होंने उस का हुकम न माना अगर जो कुछ ज़मीन में है सब उन का हो और उस के साथ उस जैसा (और भी हो) कि वह उस को फिदये में दें (फिर भी बचाओ न होगा), उन्हीं लोगों के लिए हिसाब बुरा है, और उन का ठिकाना जहन्नम है और (वह) बुरी जगह है। (18) क्या जो शख्स जानता है कि जो उतारा गया तुम पर तुम्हारे रब की तरफ से, वह हक है उस जैसा (हो सकता है) जो अन्धा हो, इस के सिवा नहीं कि अक़ल वाले ही समझते हैं। (19) वह जो कि अल्लाह का अहद पूरा करते हैं, और पुख्ता कौल ओ इकरार नहीं तोड़ते। (20) और वह लोग जो जोड़े रखते हैं जिस के लिए अल्लाह ने हुकम दिया कि जोड़ा जाए, और वह अपने रब से डरते हैं, और बुरे हिसाब का खौफ खाते हैं। (21) और जिन लोगों ने अपने रब की खुशी हासिल करने के लिए सबर किया, और उन्होंने ने नमाज़ काइम की, और जो हम ने उन्हें दिया उस से खर्च किया पोशीदा और ज़ाहिर, और वह नेकी से बुराई को टाल देते हैं, वही हैं जिन के लिए आखिरत का घर है। (22) हमेशगी के बागात (हैं) उन में वह दाखिल होंगे, और वह जो उन के वाप दादा, और उन की वीवियों, और औलाद में से नेक हुए और उन पर हर दरवाज़े से फरिश्ते दाखिल होंगे, (23) (यह कहते हुए कि) तुम पर सलामती हों इस लिए कि तुम ने सबर किया पस खूब है आखिरत का घर। (24) और जो लोग अल्लाह का अहद उस को पुख्ता करने के बाद तोड़ते हैं, और वह काटते हैं जिस के लिए अल्लाह ने हुकम दिया जो उसे जोड़ा जाए, और वह ज़मीन (मुल्क) में फ़साद करते हैं, यही लोग हैं जिन के लिए लानत है और उन के लिए बुरा घर है। (25) अल्लाह जिस के लिए चाहता है रिज़क कुशादा करता है, और (जिस के लिए चाहता है) तंग करता है, और वह दुनिया की ज़िन्दगी से खुश हैं, और दुनिया की ज़िन्दगी आखिरत के मुकाबले में मताअ हकीर है। (26)

और काफ़िर कहते हैं उस पर उस के रब (की तरफ़) से कोई निशानी क्यों न उतारी गई? आप (स) कह दें वेशक अल्लाह गुमराह करता है जिस को चाहता है, और अपनी तरफ़ उस को राह दिखाता है जो (उस की तरफ़) रजुअ करे। (27)

जो लोग ईमान लाए और इत्मीनान पाते हैं जिन के दिल अल्लाह की याद से, याद रखो! अल्लाह की याद (ही) से दिल इत्मीनान पाते हैं। (28)

जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अमल किए नेक, उन के लिए खुशहाली है और अच्छा ठिकाना। (29)

इसी तरह हम ने तुम्हें उस उम्मत में भेजा है, गुज़र चुकी है इस से पहले उम्मतें ताकि जो हम ने तुम्हारी तरफ़ वहि किया है तुम उन को पढ़ कर (सुनाओ) और वह (अल्लाह) रहमान के मुन्किर होते हैं आप (स) कहें वह मेरा रब है उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उस पर मैं ने भरोसा किया और उसी की तरफ़ मेरा रजुअ है (रजुअ करता हूँ)। (30)

और अगर ऐसा कुरआन होता कि उस से पहाड़ चल पड़ते, या उस से ज़मीन फट जाती, या उस से मुर्दे वात करने लगते (फिर भी यह ईमान न लाते) बल्कि अल्लाह ही के लिए है तमाम कामों (का इख़्तियार), तो क्या मोमिनों को (उस से) इत्मीनान नहीं हुआ कि अगर अल्लाह चाहता तो सब लोगों को हिदायत दे देता और काफ़िरों को उन के आमाल के बदले हमेशा सख्त मुसीबत पहुँचती रहेगी, या उतरेगी करीब उन के घर के, यहां तक कि अल्लाह का वादा आजाए और वेशक अल्लाह वादे के खिलाफ़ नहीं करता। (31)

और अलबत्ता तुम से पहले रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया गया, तो मैं ने काफ़िरों को ढील दी, फिर मैं ने उन की पकड़ की सो मेरा बदला (अज़ाब) कैसा था? (32)

पस क्या जो हर शख्स के आमाल का निगरान है (वह बुतों की तरह हो सकता है?) और उन्होंने ने बना लिए अल्लाह के शरीक, आप (स)

कहें उन के नाम तो लो या तुम (अल्लाह) को वह बतलाते हो जो पूरी ज़मीन में उस के इल्म में नहीं, या महज़ ज़ाहिरी (ऊपरी)

वात करते हो, बल्कि जिन लोगों ने कुफ़ किया उन के लिए उन के फ़रेब खुशनुमा बना दिए गए और वह राह (हिदायत) से रोक दिए गए और जिस को अल्लाह गुमराह करे उस के लिए कोई हिदायत देने

वाला नहीं। (33)

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ قُلْ إِنَّ اللَّهَ

वेशक	आप	उस का	से	कोई	उस	उतारी	क्यों	वह लोग जिन्होंने	और
अल्लाह	कह दें	रब		निशानी	पर	गई	न	कुफ़ किया (काफ़िर)	कहते हैं

يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَن آتَابَ ﴿٢٧﴾ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ

और इत्मीनान	ईमान	जो	27	रजुअ	जो	अपनी	और राह	जिस को	गुमराह
पाते हैं	लाए	लोग		करे		तरफ़	दिखाता है	चाहता है	करता है

قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ اللَّهِ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ﴿٢٨﴾ الَّذِينَ آمَنُوا

ईमान	जो लोग	28	दिल	इत्मीनान	अल्लाह के	याद	अल्लाह के	जिन के
लाए			(जमा)	पाते हैं	ज़िक्र से	रखो	ज़िक्र से	दिल

وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ طُوبَى لَهُمْ وَحَسُنَ مَا بَدَّلْنَاهُمْ مِنْ قَوْمٍ مُّكَرَّمِينَ

मैं	हम ने	इसी तरह	29	ठिकाना	और	उन के	खुशहाली	नेक	और उन्होंने ने
	तुम्हें भेजा				अच्छा	लिए		(जमा)	अमल किए

أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَا أُمَمٌ لَّتَتَلَوْنَ عَلَيْهِمُ الذِّكْرَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ

तुम्हारी	हम ने वहि	वह जो	उन पर	ताकि तुम	उम्मतें	उस से पहले	गुज़र चुकी है	उस
तरफ़	किया	कि	(उन को)	पढ़ो				उम्मत

وَهُمْ يَكْفُرُونَ بِالرَّحْمَنِ قُلْ هُوَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ

और उस	मैं ने भरोसा	उस	उस के	नहीं कोई	मेरा	वह	कह	रहमान के	मुन्किर	और
की तरफ़	किया	पर	सिवा	माबूद	रब		दें		होते हैं	वह

مَتَابٍ ﴿٣٠﴾ وَلَوْ أَنَّ قُرْآنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ أَوْ قُطِعَتْ بِهِ الْأَرْضُ

ज़मीन	उस	फट	या	पहाड़	उस	चलाए	ऐसा	यह के	और	30	मेरा
	से	जाती			से	जाते	कुरआन	(होता)	अगर		रजुअ

أَوْ كُتِبَ بِهِ الْمَوْتُ بَلْ لِلَّهِ الْأَمْرُ جَمِيعًا أَفَلَمْ يَأْيِسْ الَّذِينَ آمَنُوا أَنْ

कि	वह लोग जो ईमान	तो क्या इत्मीनान	तमाम	काम	अल्लाह	बल्कि	मुर्दे	उस	या बात
	लाए (मोमिन)	नहीं हुआ			के लिए			से	करने लगते

لَوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَهْدَى النَّاسَ جَمِيعًا وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا تُصِيبُهُمْ

उन्हें पहुँचेगी	वह लोग जो काफ़िर	और	सब	लोग	तो हिदायत	अगर अल्लाह चाहता
	हुए (काफ़िर)	हमेशा			दे देता	

بِمَا صَنَعُوا قَارِعَةً أَوْ تَحُلُّ قَرِيبًا مِّن دَارِهِمْ حَتَّى يَأْتِيَ وَعْدُ اللَّهِ

अल्लाह का	आजाए	यहां	उन के	से	करीब	या उतरेगी	सख्त	उस के बदले जो उन्होंने
वादा		तक	घर	(के)			मुसीबत	ने किया (आमाल)

إِنَّ اللَّهَ لَا يُخَلِّفُ الْمِيعَادَ ﴿٣١﴾ وَلَقَدْ اسْتَهْزَيْ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَاْمَلَيْتُ

तो मैं ने	तुम से पहले	रसूलों	मज़ाक़	और	31	वादा	खिलाफ़	वेशक
ढील दी		का	उड़ाया गया	अलबत्ता			नहीं करता	अल्लाह

لِلَّذِينَ كَفَرُوا ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٣٢﴾ أَفَمَن هُوَ قَابِئُ

निगरान	वह	पस क्या	32	मेरा बदला	था	सो कैसा	मैं ने उन की	जिन्होंने ने कुफ़ किया
		जो					पकड़ की	(काफ़िर)

عَلَىٰ كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ قُلْ سَمُّوهُمْ أَمْ تُنَبِّئُونَهُ

तुम उसे	या	उन के	आप	शरीक	अल्लाह और	जो उस ने कमाया	हर शख्स	पर
बतलाते हो		नाम लो	कहें	(जमा)	उन्होंने ने	(आमाल)		

بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْأَرْضِ أَمْ بظَاهِرٍ مِّن الْقَوْلِ بَلْ زَيْنٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا

उन लोगों के लिए	बल्कि खुशनुमा	वात	से	महज़	या	ज़मीन में	उस के इल्म	वह
जिन्होंने ने कुफ़ किया	बना दिए गए			ज़ाहिरी			में नहीं	जो

مَكْرُهُمْ وَصَدُّوا عَنِ السَّبِيلِ وَمَن يُضِلِّ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن هَادٍ ﴿٣٣﴾

33	कोई हिदायत	उस के	तो	गुमराह करे	और जो	राह	और वह रोक	उन के
	द देने वाला	लिए	नहीं	अल्लाह	- जिस		दिए गए	फ़रेब



لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلِعَذَابُ الْأَخِرَةِ أَشَقُّ وَمَا							
और नहीं	निहायत तकलीफ़दह	और अलबत्ता आखिरत का अज़ाब	दुनिया की ज़िन्दगी	में	अज़ाब	उन के लिए	
لَهُمْ مِّنَ اللَّهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿٣٤﴾ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وَعَدَ الْمُتَّقُونَ							
परहेज़गार (जमा)	वादा किया गया	और जो कि	जन्नत	कैफ़ियत	34	कोई बचाने वाला	उन के लिए
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ أَكْلُهَا دَائِمٌ وَظِلُّهَا تِلْكَ عُقْبَى							
अन्जाम	यह	और उस का साया	दाइम	उस के फल	नहरें	उस के नीचे	बहती है
الَّذِينَ اتَّقَوْا وَعُقْبَى الْكَافِرِينَ النَّارُ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِينَ اتَّيْنَهُم							
हम ने उन्हें दी	और वह लोग जो	35	जहन्नम	काफ़िरों	और अन्जाम	परहेज़गारों (जमा)	
الْكِتَابَ يَفْرَحُونَ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمِنَ الْأَحْزَابِ مَنْ يُنْكِرُ							
इन्कार करते हैं	जो	गिरोह	और बाज़	तुम्हारी तरफ़	नाज़िल किया गया	उस से जो	वह खुश होते हैं
بَعْضَهُ قُلْ إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ وَلَا أُشْرِكَ بِهِ إِلَيْهِ							
उस की तरफ़	उस का	और न शरीक ठहराऊँ	अल्लाह	मैं इबादत करूँ	कि	मुझे हुकम दिया गया	इस के सिवा नहीं
आप कहें	उस का	और न शरीक ठहराऊँ	अल्लाह	मैं इबादत करूँ	कि	मुझे हुकम दिया गया	इस के सिवा नहीं
أَدْعُوا وَإِلَيْهِ مَابِ ﴿٣٦﴾ وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا وَلَئِنْ							
और अगर	अरबी ज़बान में	हुकम	हम ने उस को नाज़िल किया	और उसी तरह	36	मेरा ठिकाना	और उसी की तरफ़
أَتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ							
अल्लाह से	तेरे लिए नहीं	इल्म (वहि)	जब कि तेरे पास आगया	बाद	उन की खाहिशात	तू ने पैरवी की	
مِّنْ وَّلِيِّيٍّ وَلَا وَاقٍ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ							
तुम से पहले	रसूल (जमा)	और अलबत्ता हम ने भेजे	37	और न कोई बचाने वाला	कोई हिमायती		
وَجَعَلْنَا لَهُمْ أَزْوَاجًا وَذُرِّيَّةً وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ يَأْتِيَ							
लाए	कि	किसी रसूल के लिए	और नहीं हुआ	और औलाद	बीवियाँ	उन को	और हम ने दी
بِأَيَّةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ لِكُلِّ أَجَلٍ كِتَابٌ ﴿٣٨﴾ يَمْحُوا اللَّهُ مَا يَشَاءُ							
जो वह चाहता है	मिटा देता है अल्लाह	38	एक तहरीर	हर वादे के लिए	अल्लाह की इजाज़त से	बग़ैर	कोई निशानी
وَيُثَبِّتُهَا وَعِنْدَهُ أُمُّ الْكِتَابِ ﴿٣٩﴾ وَإِنْ مَا نُرِيَنَّكَ بَعْضُ							
कुछ हिस्सा	तुम्हें दिखा दें हम	और अगर	39	असल किताब (लौहे महफूज़)	उस के पास	और बाकी रखता है	
الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفِّيَنَّكَ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلْغُ وَعَلَيْنَا							
और हम पर (हमारा काम)	पहुँचाना	तुम पर (तुम्हारे ज़िम्मे)	तो इस के सिवा नहीं	हम तुम्हें वफ़ात दें	या	हम ने उन से वादा किया	वह जो कि
الْحِسَابِ ﴿٤٠﴾ أُولَئِكَ يَرَوْنَ أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا							
उस के किनारे	से	उस को घटाते	ज़मीन	कि हम चले आते हैं	क्या वह नहीं देखते	40	हिसाब लेना
وَاللَّهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهِ وَهُوَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٤١﴾							
41	हिसाब लेने वाला	जल्द	और वह	उस के हुकम को	कोई पीछे डालने वाला नहीं	हुकम फ़रमाता है	और अल्लाह

उन के लिए दुनिया की ज़िन्दगी में अज़ाब है, अलबत्ता आखिरत का अज़ाब निहायत तकलीफ़दह है और उन के लिए कोई अल्लाह से बचाने वाला नहीं। (34)

और उस जन्नत की कैफ़ियत जिस का परहेज़गारों से वादा किया गया है (यह है) उस के नीचे नहरें बहती हैं, उस के फल दाइम (हमेशा) हैं और उस का साया (भी) यह है अन्जाम परहेज़गारों का, और काफ़िरों का अन्जाम जहन्नम है। (35)

और जिन लोगों को हम ने दी है किताब (अहले किताब) वह उस से खुश होते हैं जो तुम्हारी तरफ़ उतारा गया, और बाज़ गिरोह उस की बाज़ (वातों) का इन्कार करते हैं। आप (स) कहें उस के सिवा नहीं कि मुझे हुकम दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूँ, और उस का शरीक न ठहराऊँ, मैं उस की तरफ़ बुलाता हूँ और उसी की तरफ़ मेरा ठिकाना है। (36)

और उसी तरह हम ने इस (कुरआन) को अरबी ज़बान में हुकम नाज़िल किया है, और अगर तू ने उन की खाहिशात की पैरवी की उस के बाद जब कि तेरे पास आगया इल्म, न तेरे लिए अल्लाह से (अल्लाह के सामने) कोई हिमायती होगा, न कोई बचाने वाला। (37)

और अलबत्ता हम ने रसूल भेजे तुम से पहले, और हम ने उन को दी बीवियाँ और औलाद, और किसी रसूल के लिए (इख़्तियार में) नहीं हुआ कि वह लाए कोई निशानी अल्लाह की इजाज़त के बग़ैर, हर वादे के लिए एक तहरीर है। (38)

और अल्लाह जो चाहता है मिटा देता है और बाकी रखता है (जो वह चाहता है) और उस के पास लौहे महफूज़ है। (39)

और अगर हम तुम्हें कुछ हिस्सा (उस अज़ाब का) दिखा दें जिस का हम ने उन से वादा किया है, या तुम्हें वफ़ात दे दें, तो इस के सिवा नहीं कि तुम्हारे ज़िम्मे पहुँचाना है और हिसाब लेना हमारा काम है। (40)

क्या वह नहीं देखते? कि हम चले आते हैं ज़मीन को उस के किनारों से घटाते, और अल्लाह हुकम फ़रमाता है, कोई उस के हुकम को पीछे डालने वाला नहीं, और वह तेज़ हिसाब लेने वाला है। (41)

और जो उन से पहले थे उन्होंने ने चालें चली तो सारी चाल तो अल्लाह ही की है, वह जानता है जो कमाता है हर शख्स, और अ़नक़रीब काफ़िर जान लेंगे आक़िवत का घर किस के लिए है। (42)

और काफ़िर कहते हैं: तू रसूल नहीं, आप (स) कह दें, मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह गवाह काफ़ी है, और वह जिस के पास किताब का इल्म है। (43)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरवान, रहम करने वाला है अलिफ़-लाम-रा - यह एक किताब है, हम ने तुम्हारी तरफ़ उतारी, ताकि तुम लोगों को निकालो उन के रब के हुक्म से अन्धेरो से नूर की तरफ़, ग़ालिब, खूबियों वाले अल्लाह के रास्ते की तरफ़, (1)

उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों में है और ज़मीन में है, और काफ़िरो के लिए सख़्त अज़ाब से ख़राबी है। (2) जो दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द करते हैं अख़िरत पर, और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, और उस में कज़ी ढून्डते हैं, यही लोग दूर की गुमराही में हैं। (3)

और हम ने कोई रसूल नहीं भेजा मगर उस की क़ौम की ज़बान में, ताकि वह उन के लिए (अल्लाह के अहक़ाम) खोल कर बयान कर दे फिर अल्लाह जिस को चाहता है गुमराह करता है, और जिस को चाहता है हिदायत देता है, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (4)

और अलवत्ता हम ने मूसा (अ) को अपनी निशानियों के साथ भेजा कि अपनी क़ौम को अन्धेरो से रोशनी की तरफ़ निकाल, और उन्हें अल्लाह के (अज़ीम वाक़िअत के) दिन याद दिला, बेशक उस में हर इन्तिहाई सबर करने वाले, शुक्र गुज़ार के लिए निशानियां हैं। (5)

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلَّهِ الْمَكْرُ جَمِيعًا يَعْلَمُ

वह जानता है	सब	चाल (तदबीर)	तो अल्लाह के लिए	उन से पहले	उन लोगों ने जो	और चालें चली
-------------	----	-------------	------------------	------------	----------------	--------------

مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ وَسَيَعْلَمُ الْكُفْرُ لِمَنْ عُقِبِيَ الدَّارِ (42)

42	आक़िवत का घर	किस के लिए	काफ़िर	और अ़नक़रीब जान लेंगे	हर नफ़्स (शख्स)	जो कमाता है
----	--------------	------------	--------	-----------------------	-----------------	-------------

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَسْتَ مُرْسَلًا قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا

गवाह	अल्लाह	काफ़ी है	आप (स) कहें	रसूल	तू नहीं	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	और कहते हैं
------	--------	----------	-------------	------	---------	---------------------------------	-------------

بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَمَنْ عِنْدَهُ عِلْمُ الْكِتَابِ (43)

43	किताब का इल्म	उस के पास	और जो	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान
----	---------------	-----------	-------	---------------------	--------------

آيَاتُهَا ٥٢ ﴿١٤﴾ سُورَةُ إِبْرَاهِيمَ ﴿٧﴾ زُكُوعَاتُهَا ٧

रुक़आत 7 (14) सूरह इब्राहीम आयात 52

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

الرَّ كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ

नूर की तरफ़	अन्धेरो से	लोग	ताकि तुम निकालो	तुम्हारी तरफ़	हम ने उस को उतारा	एक किताब	अलिफ़ लाम रा
-------------	------------	-----	-----------------	---------------	-------------------	----------	--------------

بِإِذْنِ رَبِّهِمْ إِلَى صِرَاطِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ (1) اللَّهُ الَّذِي لَهُ مَا

जो कुछ	उसी के लिए	वह जो कि	अल्लाह	1	खूबियों वाला	ज़बरदस्त	रास्ता	तरफ़	उन का रब	हुक्म से
--------	------------	----------	--------	---	--------------	----------	--------	------	----------	----------

فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَوَيْلٌ لِلْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيدٍ (2)

2	सख़्त	अज़ाब	से	काफ़िरो के लिए	और ख़राबी	ज़मीन में	और जो कुछ	आस्मानों में
---	-------	-------	----	----------------	-----------	-----------	-----------	--------------

الَّذِينَ يَسْتَحِبُّونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْأٰخِرَةِ وَيَصُدُّونَ عَنْ

से	और रोकते हैं	अख़िरत पर	दुनिया	ज़िन्दगी	पसन्द करते हैं	वह जो कि
----	--------------	-----------	--------	----------	----------------	----------

سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا أُولَٰئِكَ فِي ضَلٰلٍ بَعِيدٍ (3)

3	दूर	गुमराही	में	वही लोग	कज़ी	और उस में ढून्डते हैं	अल्लाह का रास्ता
---	-----	---------	-----	---------	------	-----------------------	------------------

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهِ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ فَيُضِلَّ اللَّهُ

फिर गुमराह करता है अल्लाह	उन के लिए	ताकि खोल कर बयान करदे	उस की क़ौम की	ज़बान में	मगर	कोई रसूल	और हम ने नहीं भेजा
---------------------------	-----------	-----------------------	---------------	-----------	-----	----------	--------------------

مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ (4)

4	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	जिस को चाहता है	और हिदायत देता है	जिस को वह चाहता है
---	-------------	--------	-------	-----------------	-------------------	--------------------

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا أَنْ أَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ

नूर की तरफ़	अन्धेरो से	अपनी क़ौम	तू निकाल	कि	अपनी निशानियों के साथ	मूसा (अ)	और अलवत्ता हम ने भेजा
-------------	------------	-----------	----------	----	-----------------------	----------	-----------------------

وَذَكَرَهُمْ بِآيِمِ اللَّهِ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَآيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ (5)

5	शुक्र गुज़ार	हर सबर करने वाले के लिए	अलवत्ता निशानियां	उस	में	बेशक	अल्लाह के दिन	और याद दिला उन्हें
---	--------------	-------------------------	-------------------	----	-----	------	---------------	--------------------

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ						
अपने ऊपर	अल्लाह की नेमत	तुम याद करो	अपनी कौम को	मूसा (अ)	कहा	और जब
إِذْ أَنْجَاكُمْ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ						
बुरा अज़ाब	वह तुम्हें पहुँचाते थे	फिरऔन की कौम	से	जब उस ने नजात दी तुम्हें		
وَيَذَّبِحُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي ذَلِكُمْ بَلَاءٌ						
आज़माइश	उस	और में	तुम्हारी औरतें	और ज़िन्दा छोड़ते थे	तुम्हारे बेटे	और जुवह करते थे
مِنْ رَبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿٦﴾ وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ						
तुम शुक्र करोगे	अलवत्ता अगर	तुम्हारा रब	और जब आगाह किया	6	बड़ी	तुम्हारा रब से
لَا زِيَدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ﴿٧﴾ وَقَالَ						
और कहा	7	बड़ा सख्त	मेरा अज़ाब	वेशक	तुम ने नाशुकी की	और अलवत्ता अगर तो मैं ज़रूर तुम्हें और ज़ियादा दूंगा
مُوسَى إِنَّ تَكْفُرًا أَنْتُمْ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا فَإِنَّ اللَّهَ						
तो वेशक अल्लाह	सब	ज़मीन में	और जो	तुम	नाशुकी करोगे	अगर मूसा (अ)
لَعَنِي حَمِيدٌ ﴿٨﴾ أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ						
तुम से पहले	वह लोग जो	ख़बर	क्या तुम्हें नहीं आई	8	सब खूबियों वाला	वेनियाज़
قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَالَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ لَا يَعْلَمُهُمْ						
उन की ख़बर नहीं	उन के बाद	और वह जो	और समूद	और अ़ाद	नूह (अ) की कौम	
إِلَّا اللَّهُ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَرَدُّوا أَيْدِيَهُمْ						
अपने हाथ	तो उन्हीं ने लौटाए	निशानियों के साथ	उन के रसूल	उन के पास आए	अल्लाह के सिवाए	
فِي أَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوا إِنَّا كَفَرْنَا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ						
उस के साथ	तुम्हें भेजा गया	वह जो	वेशक हम नहीं मानते	और वह बोले	उन के मुँह	में
وَأَنَا لَفِي شَكٍّ مِمَّا تَدْعُونَنَا إِلَيْهِ مُرِيبٌ ﴿٩﴾ قَالَتْ رُسُلُهُمْ						
उन के रसूल	कहा	9	तरदुद में डालते हुए	उस की तरफ	तुम हमें बुलाते हो	उस से जो शक अलवत्ता में और वेशक हम
أَفِي اللَّهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يَدْعُوكُمْ						
वह तुम्हें बुलाता है	और ज़मीन	आस्मानों	बनाने वाला	शुवाह - शक	क्या अल्लाह में	
لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُخْرِجَكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى						
एक मुद्दत मुकर्ररा	तक	और मोहलत दे तुम्हें	तुम्हारे गुनाह	से (कुछ)	ता कि बख़शदे तुम्हें	
قَالُوا إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا تُرِيدُونَ أَنْ تَصُدُّونَا						
हमें रोक दो	कि	तुम चाहते हो	हम जैसे	बशर	सिर्फ	तुम नहीं वह बोले
عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا فَأَتُونَا بِسُلْطَنٍ مُّبِينٍ ﴿١٠﴾						
10	रौशन	दलील, मोजिज़ा	पस लाओ हमारे पास	हमारे बाप दादा	पूजते थे	उस से जो

और (याद करो) जब कहा मूसा (अ) ने अपनी कौम को, तुम अपने ऊपर अल्लाह की नेमत याद करो, जब उस ने तुम्हें फिरऔन की कौम से नजात दी, वह तुम्हें बुरा अज़ाब पहुँचाते थे, और तुम्हारे बेटों को जुवह करते थे, और तुम्हारी औरतों (लड़कियों) को ज़िन्दा छोड़ देते थे, और उस में तुम्हारे रब की तरफ से बड़ी आज़माइश थी। (6) और जब तुम्हारे रब ने आगाह किया, अलवत्ता अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं ज़रूर तुम्हें और ज़ियादा दूंगा, अलवत्ता अगर तुम ने नाशुकी की तो वेशक मेरा अज़ाब बड़ा सख्त है। (7) और मूसा (अ) ने कहा अगर नाशुकी करोगे तुम और जो ज़मीन में है सब के सब, तो वेशक अल्लाह वेनियाज़, सब खूबियों वाला है। (8) क्या तुम्हें उन लोगों की ख़बर नहीं आई जो तुम से पहले थे (मिसल के लिए) कौम नूह (अ), अ़ाद और समूद, और वह जो उन के बाद हुए, उन की ख़बर (किसी को) नहीं अल्लाह के सिवा, उन के पास उन के रसूल निशानियों के साथ आए, तो उन्हीं ने अपने हाथ उन के मुँह में लौटाए (ख़ामोश कर दिया) और बोले तुम्हें जिस (रिसालत) के साथ भेजा गया है हम नहीं मानते, और अलवत्ता तुम हमें जिस की तरफ बुलाते हो हम शक में हैं तरदुद में डालते हुए। (9) उन के रसूलों ने कहा क्या तुम्हें ज़मीन और आस्मान के बनाने वाले अल्लाह के बारे में शक है? वह तुम्हें बुलाता है ताकि तुम्हारे कुछ गुनाह बख़श दे, और एक मुद्दत मुकर्ररा तक तुम्हें मोहलत दे, वह बोले नहीं तुम सिर्फ हम जैसे बशर हो, तुम चाहते हो कि हमें रोक दो जिन को हमारे बाप दादा पूजते थे, पस हमारे पास रौशन दलील (मोजिज़ा) लाओ। (10)

उन के रसूलों ने उन से कहा (वेशक) हम सिर्फ़ तुम जैसे बशर हैं लेकिन अल्लाह अपने बन्दों में से जिस पर चाहे एहसान करता है, और हमारे लिए (हमारा काम) नहीं कि हम अल्लाह के हुक्म के वग़ैर तुम्हारे पास कोई दलील (मोज़िज़ा) लाएं, और मोमिनों को अल्लाह पर ही भरोसा करना चाहिए। (11) और हमे किया हुआ? कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें, और उस ने हमें हमारी राहें दिखा दी हैं, और तुम हमें जो ईज़ा देते हो हम उस पर ज़रूर सब् करेंगे, और भरोसा करने वालों को अल्लाह पर ही भरोसा करना चाहिए। (12) और काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा हम तुम्हें ज़रूर निकाल देंगे अपनी ज़मीन (मुल्क) से, या तुम हमारे दिन में लौट आओ तो उन के रब ने उन की तरफ़ वहि भेजी कि हम ज़ालिमों को ज़रूर हलाक कर देंगे। (13) और अलबत्ता हम तुम्हें उन के वाद ज़मीन में ज़रूर आबाद कर देंगे, यह इस लिए है जो डरा मेरे रूबरू खड़ा होने से, और डरा मेरे एलाने अज़ाब से। (14) और उन्होंने ने (अबिया ने) फ़तह मांगी, और नामुराद हुआ हर सरकश, ज़िद्दी। (15) उस के पीछे जहननम है, और उसे पीप का पानी पिलाया जाएगा। (16) वह उसे घूट घूट पिएगा, और उसे गले से न उतार सकेगा, और उसे मौत आएगी हर तरफ़ से और वह मरेगा नहीं, और उस के पीछे सख़्त अज़ाब है। (17) उन लोगों की मिसाल जो अपने रब के मुन्किर हुए, उन के अमल राख की तरह है कि उस पर आन्धी के दिन ज़ोर की हवा चली (और सब उड़ा ले गई) जो उन्होंने ने कमाया उन्हें उस से किसी चीज़ पर कुदरत न होगी, यही है दूर की (परले दरजे की) गुमराही। (18) क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया हक के साथ (ठक ठीक) अगर वह चाहे तुम्हें ले जाए और ले आए कोई नई मख़लूक। (19) और यह अल्लाह पर कुछ दुश्वार नहीं। (20)

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِنْ نَحْنُ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَمُنُّ										
एहसान करता है	अल्लाह	और लेकिन	तुम जैसे	बशर	सिर्फ़	हम	नहीं	उन के रसूल	उन से	कहा
عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَمَا كَانَ لَنَا أَنْ نَأْتِيَكُمْ بِسُلْطَنٍ										
कोई दलील	तुम्हारे पास लाएं	कि	हमारे लिए	और नहीं है	अपने बन्दे	से	जिस पर चाहे			
إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَعَلَىٰ اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾ وَمَا لَنَا										
हमारे लिए	और क्या	11	मोमिन (जमा)	पस भरोसा करना चाहिए	और अल्लाह पर	अल्लाह के हुक्म से	मगर (वग़ैर)			
أَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللَّهِ وَقَدْ هَدَانَا سُبُلَنَا وَلَنْصَبِرَنَّ عَلَىٰ مَا										
जो	पर	और हम ज़रूर सब् करेंगे	हमारी राहें	और उस ने हमें दिखा दी	अल्लाह पर	कि हम न भरोसा करें				
أَذِيْتُمُْونَا وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿١٢﴾ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا										
जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	और कहा	12	भरोसा करने वाले	पस भरोसा करना चाहिए	और अल्लाह पर	तुम हमें ईज़ा देते हो				
لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ أَرْضِنَا أَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِي مِلَّتِنَا										
हमारे दिन में	तुम लौट आओ	या	अपनी ज़मीन	से	ज़रूर हम तुम्हें निकाल देंगे	अपने रसूलों को				
فَأَوْحَىٰ إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظَّالِمِينَ ﴿١٣﴾ وَلَنُسَكِّنَنَّكُمْ										
ज़मीन	और अलबत्ता हम तुम्हें आबाद कर देंगे	13	ज़ालिम (जमा)	ज़रूर हम हलाक कर देंगे	उन का रब	उन की तरफ़	तो वहि भेजी			
مِّنْ بَعْدِهِمْ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِي وَخَافَ وَعَبِدَ ﴿١٤﴾ وَاسْتَفْتَحُوا										
और उन्होंने ने फ़तह मांगी	14	वईद (एलाने अज़ाब)	और डरा	मेरे रूबरू खड़ा होना	डरा	उस के लिए जो	यह	उन के वाद		
وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ﴿١٥﴾ مِّنْ وَرَائِهِ جَهَنَّمُ وَيُسْقَىٰ مِنْ مَّاءٍ										
पानी	से	और उसे पिलाया जाएगा	जहननम	उस के पीछे	15	ज़िद्दी	सरकश	हर	और नामुराद हुआ	
صَدِيدٍ ﴿١٦﴾ يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُ وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِنْ										
से	मौत	और आएगी उसे	गले से उतार सकेगा उसे	और न	उसे घूट घूट पिएगा	16	पीप वाला			
كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ وَمِنْ وَرَائِهِ عَذَابٌ غَلِيظٌ ﴿١٧﴾ مَثَلُ										
मिसाल	17	सख़्त अज़ाब	और उस के पीछे	मरने वाला	और न वह	हर तरफ़				
الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ أَعْمَالُهُمْ كَرَمَادٍ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيحُ فِي يَوْمٍ عَاصِفٍ										
आन्धी वाला	दिन	में	हवा	उस पर	ज़ोर की चली	राख की तरह	उन के अमल	अपने रब के	वह लोग जो मुन्किर हुए	
لَا يَقْدِرُونَ مِمَّا كَسَبُوا عَلَىٰ شَيْءٍ ذٰلِكَ هُوَ الصَّلٰٓءُ الْبَعِيْدُ ﴿١٨﴾										
18	दूर	गुमराही	वह	यह	किसी चीज़ पर	उन्होंने ने कमाया	उस से जो	उन्हें कुदरत न होगी		
أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ بِالْحَقِّ إِنْ يَشَأْ يُدْهِبْكُمْ										
तुम्हें ले जाए	वह चाहे	अगर	हक के साथ	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा किया	अल्लाह	कि	क्या तू ने न देखा	
وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿١٩﴾ وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيْزٍ ﴿٢٠﴾										
20	कुछ दुश्वार	अल्लाह पर	यह	और नहीं	19	नई	मख़लूक	और लाए		

وَبَرُّوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعْفُوْ لِذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا اِنَّا كُنَّا							
वेशक हम थे	बड़े बनते थे	उन लोगों से जो	कमज़ोर	फिर कहेंगे	सब	अल्लाह के आगे	और वह हाज़िर होंगे
لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ							
किसी कद	अल्लाह का अज़ाब	से	हम से	दफ़ा करते हो	तुम	तो क्या	ताबे तुम्हारे
قَالُوْا لَوْ هَدٰنَا اللّٰهُ لَهٰدِيْنٰكُمْ سَوَآءٌ عَلَيْنَا اَجْرَعْنَا اَمْ							
या	ख़्वाह हम घबराएं	हम पर (हमारे लिए)	बराबर	अलबत्ता हम हिदायत करते तुम्हें	अल्लाह	हमें हिदायत करता	अगर वह कहेंगे
صَبْرِنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ (21) وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ							
अमर	फैसला हो गया	जब	शैतान	और बोला	21	कोई छुटकारा	नहीं हमारे लिए हम सब्र करें
اِنَّ اللّٰهَ وَعَدٰكُمْ وَعَدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُمْ فَاحْلَفْتُمْ وَمَا كَانَ							
था	और न	फिर मैं ने उस के खिलाफ़ किया तुम से	और मैं ने वादा किया तुम से	सच्चा वादा	वादा किया तुम से	वेशक अल्लाह	
لِيْ عَلِيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا اَنْ دَعَوْتُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ							
मेरा	पस तुम ने कहा मान लिया	मैं ने बुलाया तुम्हें	यह कि मगर	कोई ज़ोर	तुम पर	मेरा	
فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَلُوْمُوْا اَنْفُسَكُمْ مَا اَنَا بِمُصْرِحِكُمْ وَمَا اَنْتُمْ بِمُصْرِحِيْ							
फ़र्याद रसी कर सकते हो मेरी	तुम	और न	फ़र्याद रसी कर सकता तुम्हारी	नहीं मैं	अपने ऊपर	और इल्ज़ाम लगाओ तुम	लिहाज़ा न लगाओ मुझ पर इल्ज़ाम तुम
اِنِّيْ كَفَرْتُ بِمَا اَشْرَكْتُمْ مِّنْ قَبْلُ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ							
उन के लिए	ज़ालिम (जमा)	वेशक	उस से क़व्ल	तुम ने शरीक बनाया मुझे	उस से जो	वेशक मैं इन्कार करता हूँ	
عَذَابٌ اَلِيْمٌ (22) وَاَدْخَلَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ							
नेक	और उन्होंने ने अ़मल किए	जो लोग ईमान लाए	और दाख़िल किए गए	22	दर्दनाक अज़ाब		
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا بِاٰذِنِ رَبِّهِمْ							
अपना रब	हुक़्म से	उस में	वह हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	वहती है	बागात
تَحِيّٰتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ (23) اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا							
मिसाल	बयान की अल्लाह ने	कैसी	क्या तुम ने नहीं देखा	23	सलाम	उस में	उन का तुहफ़ा-ए-मुलाक़ात
كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي السَّمٰوٰتِ (24)							
24	आस्मान	में	और उस की शाख़	मज़बूत	उस की जड़	पाकीज़ा	जैसे दरख़्त कलिमाए तय्यवा (पाक वात)
تُوْتِيْ اَكْلَهَا كُلَّ حِيْنٍ بِاٰذِنِ رَبِّهَا وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ							
मिसाल	अल्लाह	और बयान करता है	अपना रब	हुक़्म से	हर वक़्त	अपना फल	वह देता है
لِلنّٰسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ (25) وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ							
नापाक वात	और मिसाल	25	वह ग़ौर ओ फ़िक्क करें	ताकि वह	लोगों के लिए		
(26) كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةٍ اِجْتَثَتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ							
26	कुछ भी करार	नहीं उस के लिए	ज़मीन	ऊपर	से	उखाड़ दिया गया	मानिंद दरख़्त नापाक

वह सब अल्लाह के आगे हाज़िर होंगे, फिर कहेंगे कमज़ोर उन लोगों से जो बड़े बनते थे, वेशक हम तुम्हारे ताबे थे तो क्या तुम हम से दफ़ा कर सकते हो? किसी कद अल्लाह का अज़ाब, वह कहेंगे अगर अल्लाह हमें हिदायत करता तो अलबत्ता हम तुम्हें हिदायत करते, अब हमारे लिए बराबर है हम घबराएं या सब्र करें, हमारे लिए कोई छुटकारा नहीं। (21) और (रोज़े हिसाब) जब तमाम अमूर (कामों) का फैसला हो गया शैतान बोला वेशक अल्लाह ने तुम से सच्चा वादा किया था, और मैं ने (भी) तुम से वादा किया, फिर मैं ने तुम से उस के खिलाफ़ किया, और न था मेरा तुम पर कोई ज़ोर, मगर यह कि मैं ने तुम्हें बुलाया, और तुम ने मेरा कहा मान लिया, लिहाज़ा तुम मुझ पर कुछ इल्ज़ाम न लगाओ, इल्ज़ाम अपने ऊपर लगाओ, न मैं तुम्हारी फ़र्याद रसी कर सकता हूँ और न तुम मेरी फ़र्याद रसी कर सकते हो, वेशक मैं इन्कार करता हूँ उस का जो तुम ने इस से क़व्ल मुझे शरीक बनाया, वेशक ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (22) और दाख़िल किए गए वह लोग जो ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अ़मल किए बागात में, उन के नीचे नहरें वहती हैं, वह हमेशा रहेंगे उस में अपने रब के हुक़्म से, उस में उन का तुहफ़ाए मुलाक़ात “सलाम” है। (23) क्या तुम ने नहीं देखा? अल्लाह ने कैसी मिसाल बयान की है पाक वात की? जैसे पाकीज़ा पेड़, उस की जड़ मज़बूत और उस की शाख़ आस्मान में, (24) वह देता है हर वक़्त अपना फल अपने रब के हुक़्म से, और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है, ताकि वह ग़ौर ओ फ़िक्क करें। (25) और नापाक वात की मिसाल नापाक पेड़ की तरह है जिसे ज़मीन के ऊपर से उखाड़ दिया गया, उस के लिए कुछ भी करार नहीं। (26)

अल्लाह मोमिनों को मज़बूत बात से मज़बूत रखता है, दुनिया की ज़िन्दगी में और आखिरत में (भी), और अल्लाह ज़ालिमों को भटका देता है, और अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (27)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा? जिन्होंने ने अल्लाह की नेमत को नाशुक्री से बदल दिया, और अपनी क़ौम को उतारा तवाही के घर में। (28)

वह जहननम है वह उस में दाखिल होंगे और वह बुरा ठिकाना है। (29)

और उन्होंने ने अल्लाह के लिए शारीक ठहराए ताकि वह उस के रास्ते से गुमराह करें, आप (स) कह दें, फ़ाइदा उठा लो, बेशक तुम्हारा लौटना (बाज़ग़शत) जहननम की तरफ़ है। (30)

आप (स) मेरे उन बन्दों से कह दें जो ईमान लाए कि वह नमाज़ काइम करें और उस में से खर्च करें जो मैं ने उन्हें दिया है छुपा कर और ज़ाहिरी तौर पर, उस से क़ब्ल कि वह दिन आजाए जिस में न ख़रीद ओ फ़रोख़्त होगी और न दोस्ती। (31)

अल्लाह है जिस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया, और आस्मान से पानी उतारा, फिर उस से निकाला तुम्हारे लिए फलों से रिज़्क, और तुम्हारे लिए कश्ती को मुसख़्बर (तावे फ़रमान) किया ताकि उस (अल्लाह) के हुक़म से दर्या में चले और मुसख़्बर किया तुम्हारे लिए नहरों को। (32)

और तुम्हारे लिए मुसख़्बर किया सूरज और चाँद को कि वह एक दस्तूर पर चल रहे हैं, और तुम्हारे लिए मुसख़्बर किया रात और दिन को, (33)

और उस ने तुम्हें दी हर चीज़ जो तुम ने उस से मांगी, और अगर तुम अल्लाह की नेमत गिनने लगे तुम उसे शुमार में न लासकोगे, बेशक इन्सान बड़ा ज़ालिम, नाशुक्रा है। (34)

और जब इब्राहीम (अ) ने कहा ऐ हमारे रब! बनादे इस शहर को अमन की जगह, और मुझे और मेरी औलाद को उस से दूर रख कि हम बुतों की परस्तिश करने लगे। (35)

يُثَبِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا							
दुनिया की ज़िन्दगी	में	मज़बूत	बात से	वह लोग जो ईमान लाए (मोमिन)	अल्लाह	मज़बूत रखता है	
وَفِي الْآخِرَةِ وَيُضِلُّ اللَّهُ الظَّالِمِينَ وَيَفْعَلُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ (٢٧)							
27	जो चाहता है	अल्लाह	और करता है	ज़ालिम (जमा)	अल्लाह	और भटका देता है	और आखिरत में
أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَتَ اللَّهِ كُفْرًا وَأَحَلُّوا قَوْمَهُمْ							
अपनी क़ौम	और उतारा	नाशुक्री से	अल्लाह की नेमत	बदल दिया	वह जिन्होंने ने	को	क्या तुम ने नहीं देखा
دَارَ الْبُورِ (٢٨) جَهَنَّمَ يَصَلُّونَهَا وَيَسُّ الْقَرَارِ (٢٩) وَجَعَلُوا لِلَّهِ							
और उन्होंने ने ठहराए अल्लाह के लिए	29	ठिकाना	और बुरा	उस में दाखिल होंगे	जहननम	28	तवाही का घर
أَنذَادًا لِّيُضِلُّوا عَنْ سَبِيلِهِ قُلْ تَمَتَّعُوا فَإِن مَّصِيرَكُمْ							
तुम्हारा लौटना	फिर बेशक	फाइदा उठा लो	कह दें	उस का रास्ता	से	ताकि वह गुमराह करें	शारीक
إِلَى النَّارِ (٣٠) قُلْ لِعِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا يُقِيمُوا الصَّلَاةَ							
नमाज़	काइम करें	ईमान लाए	वह जो कि	मेरे बन्दों से	कह दें	30	जहननम तरफ़
وَيَنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَعْلَانِيَةً مِّن قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ							
कि आजाए	उस से क़ब्ल	और ज़ाहिर	छुपा कर	हम ने उन्हें दिया	उस से जो	और खर्च करें	
يَوْمٌ لَا بَيْعُ فِيهِ وَلَا خِلَالٌ (٣١) اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ							
उस ने पैदा किया	वह जो	अल्लाह	31	और न दोस्ती	उस में	न ख़रीद ओ फ़रोख़्त	वह दिन
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ							
उस से	फिर निकाला	पानी	आस्मान से	और उतारा	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	
مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَّكُمْ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ							
दर्या में	ताकि चले	कश्ती	तुम्हारे लिए	और मुसख़्बर किया	तुम्हारे लिए	रिज़्क (जमा)	से
بِأَمْرِهِ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْيَمِينَ (٣٢) وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ							
और चाँद	सूरज	तुम्हारे लिए	और मुसख़्बर किया	32	नहरों (नदियां)	तुम्हारे लिए	और मुसख़्बर किया
وَأَبْيَنَ وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ (٣٣) وَأَتَكُم مِّن كُلِّ مَا							
जो	हर चीज़	से	और उस ने तुम्हें दी	33	और दिन	रात	तुम्हारे लिए
سَأَلْتُمُوهُ وَإِن تَعُدُّوا نِعْمَتَ اللَّهِ لَا تَحْصُوهَا إِنَّ الْإِنْسَانَ							
इन्सान	बेशक	उसे शुमार में न लासकोगे	अल्लाह	नेमत	गिनने लगे तुम	और अगर	तुम ने उस से मांगी
لَظَلُومٌ كَفَّارٌ (٣٤) وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ							
बना दे	ऐ हमारे रब	इब्राहीम (अ)	कहा	और जब	34	नाशुक्रा	बेशक बड़ा ज़ालिम
هَذَا الْبَلَدِ آمِنًا وَاجْنُبْنِي وَبَنِيَّ أَنْ نَعْبُدَ الْأَصْنَامَ (٣٥)							
35	बुत (जमा)	हम परस्तिश करें	कि	और मेरी औलाद	और मुझे दूर रख	अमन की जगह	यह शहर

ع ۱۱

ع ۱۲

رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضَلَّنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ فَمَنْ						
पस जो - जिस	लोग	से	बहुत	उन्हों ने गुमराह किया	वेशक वह	ऐ मेरे रब
تَبِعَنِيْ فَاِنَّهُ مِيَّتِيْ وَمَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ						
बखशने वाला	तो वेशक तू	मेरी नाफरमानी की	और जो - जिस	मुझ से	वेशक वह	मेरी पैरवी की
رَّحِيْمٌ ﴿٣٦﴾ رَبَّنَا اِنِّيْ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ						
बगैर	मैदान	अपनी ओलाद	से - कुछ	मैं ने बसाया	वेशक मैं	ऐ हमारे रब 36 निहायत मेहरवान
ذِي زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا						
ताकि काइम करें	ऐ हमारे रब	एहतिराम वाला	तेरा घर	नजूदीक	खेती वाली	
الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ اَفِيْدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيْ اِلَيْهِمْ						
उन की तरफ़	वह माइल हों	लोग	से	दिल (जमा)	पस कर दे	नमाज़
وَارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٧﴾ رَبَّنَا						
ऐ हमारे रब	37	शुक्र करें	ताकि वह	फल (जमा)	से	और उन्हें रिजूक दे
اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِيْ وَمَا نُعَلِنُ وَمَا يَخْفٰى عَلٰى اللّٰهِ						
अल्लाह पर	छुपी हुई	और नहीं	हम ज़ाहिर करते हैं	और जो	जो हम छुपाते हैं	तू जानता है वेशक तू
مِّنْ شَيْءٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمٰوٰتِ ﴿٣٨﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ						
वह जो - जिस	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफें	38	आस्मान	में	और न ज़मीन में चीज़ से - कोई
وَهَبْ لِيْ عَلٰى الْكَبِيْرِ اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ اِنَّ رَبِّيْ لَسَمِيْعٌ						
अलबत्ता सुनने वाला	मेरा रब	वेशक	और इसहाक (अ)	इस्माइल (अ)	बुढ़ापा	पर - मैं वखशा मुझे
الدُّعٰءِ ﴿٣٩﴾ رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ						
मेरी औलाद	और से - को	नमाज़	काइम करने वाला	मुझे बना	ऐ मेरे रब 39	दुआ
رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعٰءِ ﴿٤٠﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدِيْ						
और मेरे माँ बाप को	मुझे बखशदे	ऐ हमारे रब	40	दुआ	और कुबूल फरमा	ऐ हमारे रब
وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿٤١﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ						
तुम हरगिज़ गुमान करना	और न	41	हिसाब	काइम होगा	जिस दिन	और मोमिनों को
اللّٰهَ غٰفِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ اِنَّهُمْ يُؤَخَّرُهُمْ						
उन्हें मोहलत देता है	सिर्फ	ज़ालिम (जमा)	वह करते हैं	उस से जो	बेखबर	अल्लाह
لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ﴿٤٢﴾ مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ						
उठाए हुए	वह दौड़ते होंगे	42	आँखें	उस में	खुली रह जाएगी	उस दिन तक
رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ وَاَفِيْدَتُهُمْ هَوٰءٌ ﴿٤٣﴾						
43	उड़े हुए	और उन के दिल	उन की निगाहें	उन की तरफ	न लौट सकेंगी	अपने सर

ऐ मेरे रब! वेशक उन्होंने ने बहुत से लोगों को गुमराह किया, पस जिस ने मेरी पैरवी की, वेशक वह मुझ से है, और जिस ने मेरी नाफरमानी की तो वेशक तू बखशने वाला निहायत मेहरवान है। (36)

ऐ हमारे रब! वेशक मैं ने अपनी कुछ औलाद को एक बगैर खेती वाले मैदान में बसाया है तेरे एहतिराम वाले घर के नजूदीक, ऐ हमारे रब! ताकि वह नमाज़ काइम करें, पस लोगों के दिलों को (ऐसा) कर दे कि वह उन की तरफ़ माइल हों, और उन्हें फलों से रिजूक दे, ताकि वह शुक्र करें। (37)

ऐ हमारे रब! वेशक तू जानता है जो हम छुपाते हैं और जो ज़ाहिर करते हैं, और अल्लाह पर कोई चीज़ छुपी हुई नहीं ज़मीन में और न आस्मान में। (38)

तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं, जिस ने मुझे बुढ़ापा में वखशा इस्माइल (अ) और इसहाक (अ), वेशक मेरा रब दुआ सुनने वाला है। (39)

ऐ मेरे रब! मुझे बना नमाज़ काइम करने वाला, और मेरी औलाद को भी, ऐ हमारे रब! मेरी दुआ कुबूल फरमा ले। (40)

ऐ हमारे रब! जिस दिन हिसाब काइम होगा (रोज़े हिसाब) मुझे और मेरे माँ बाप को, और मोमिनों को बखशदे। (41)

और तुम हरगिज़ गुमान न करना कि अल्लाह उस से बेखबर है जो वह ज़ालिम करते हैं। वह सिर्फ़ उन्हें उस दिन तक मोहलत देता है, जिस में खुली रह जाएगी आँखें। (42)

वह अपने सर (ऊपर को) उठाए हुए दौड़ते होंगे, उन की निगाहें उन की तरफ़ न लौट सकेंगी, और उन के दिल (ख़ौफ़ से) उड़े हुए होंगे। (43)

और लोगों को उस दिन से डराओ जब उन पर अज़ाब आएगा, तो कहेंगे ज़ालिम, ऐ हमारे रब! हमें एक थोड़ी मुदत के लिए मोहलत दे दे कि हम तेरी दावत कुबूल कर लें, और हम पैरवी करें रसूलों की, क्या तुम उस से क़बूल कस्में न खाते थे? कि तुम्हारे लिए कोई ज़वाल नहीं। (44)

और तुम रहे थे उन लोगों के घरों में जिन्होंने अपनी जानों पर जुल्म किया था, और तुम पर ज़ाहिर हो गया था कि हम ने उन से कैसा सुलूक किया और हम ने तुम्हारे लिए मिसालें बयान कीं। (45)

और उन्होंने अपने दाओ चले, और अल्लाह के आगे है उन के दाओ, अगरचे उन का दाओ ऐसा था कि उस से पहाड़ टल जाते। (46)

पस तू हरगिज़ खयाल न कर कि अल्लाह ख़िलाफ़ करेगा अपने रसूलों से अपना वादा, वेशक अल्लाह ज़बरदस्त बदला लेने वाला है। (47)

जिस दिन (उस) ज़मीन से बदल दी जाएगी और ज़मीन और (बदले जाएंगे) आस्मान, और वह सब अल्लाह यकता सख़्त क़हर वाले के आगे निकल खड़े होंगे। (48)

और तू देखेगा मुज़्रिम उस दिन वाहम ज़नज़ीरों में जकड़े होंगे। (49) उन के कुर्ते गन्धक के होंगे, और आग उन के चहरे ढांपे होगी। (50)

ताकि अल्लाह हर जान को उस की कमाई (आमाल) का बदला दे, वेशक अल्लाह तेज़ हिसाब लेने वाला है। (51)

यह (कुरआन) लोगों के लिए पैग़ाम है, और ताकि वह उस से डराए जाएं, और ताकि वह जान लें कि वही मावूद यकता है, और ताकि अक़ल वाले नसीहत पकड़ें। (52) अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरवान, रहम करने वाला है अलिफ़-लाम-रा - यह आयतें हैं किताब की, और वाज़ेह (रौशन) कुरआन की। (1)

وَأَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُولُ الَّذِينَ ظَلَمُوا							
उन्होंने ने जुल्म किया (ज़ालिम)	वह लोग जो	तो कहेंगे	अज़ाब	उन पर आएगा	वह दिन	लोग	और डराओ
رَبَّنَا أَخْرِجْنَا إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ نُّجِبُ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرَّسُولَ							
रसूल (जमा)	और हम पैरवी करें	तेरी दावत	हम कुबूल कर लें	थोड़ी	एक मुदत	तरफ़	हमें मोहलत दे
أَوْلَمْ تَكُونُوا أَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ۗ وَسَكَنتُمْ							
और तुम रहे थे	44	कोई ज़वाल	तुम्हारे लिए नहीं	इस से क़बूल	तुम कस्में खाते	तुम थे	या - क्या न
فِي مَسْكِنِ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ							
उन से	हम ने (सुलूक) किया	कैसा	तुम पर	और ज़ाहिर हो गया	अपनी जानों पर	ने जुल्म किया	जिन लोगों
وَضَرَبْنَا لَكُمْ الْأَمْثَالَ ۗ وَقَدْ مَكَرُوا مَكَرَهُمْ وَعِنْدَ اللَّهِ مَكَرُهُمْ							
उन के दाओ	और अल्लाह के आगे	अपने दाओ	और उन्होंने ने दाओ चले	45	मिसालें	तुम्हारे लिए	और हम ने बयान की
وَإِنْ كَانَ مَكَرُهُمْ لِتَزُولَ مِنْهُ الْجِبَالُ ۖ فَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ مُخْلِفًا							
ख़िलाफ़ करेगा	अल्लाह	पस तू हरगिज़ खयाल न कर	46	पहाड़	उस से	कि टल जाए	उन का दाओ
وَعَدِهِ رُسُلَهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ۗ يَوْمَ تُبَدَّلُ الْأَرْضُ							
ज़मीन	बदल दी जाएगी	जिस दिन	47	बदला लेने वाला	ज़बरदस्त	वेशक अल्लाह	अपने रसूल
غَيْرِ الْأَرْضِ وَالسَّمَوَاتِ وَبَرَزُوا لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۗ وَتَرَى							
और तू देखेगा	48	सख़्त क़हर वाला	यकता	अल्लाह के आगे	वह निकल खड़े होंगे	और आस्मान (जमा)	मुख्तलिफ़ ज़मीन
الْمُجْرِمِينَ يَوْمِئِذٍ مُّقْرَنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ۗ سَرَابِيلُهُمْ مِّنْ							
से - के	उन के कुर्ते	49	ज़नज़ीरें	में	वाहम जकड़े हुए	उस दिन	मुज़्रिम (जमा)
قَطْرَانٍ وَتَغْشَىٰ وُجُوهُهُمْ النَّارُ ۗ لِيَجْزِيَ اللَّهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا							
जो	हर जान	अल्लाह	ताकि बदला दे	50	आग	उन के चहरे	और ढांप लेगी
كَسَبَتْ ۗ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۗ هَذَا بَلَاغٌ لِلنَّاسِ وَلِيُنذِرُوا							
और ताकि वह डराए जाएं	लोगों के लिए	यह पहुँचा देना (पैग़ाम)	51	तेज़ हिसाब लेने वाला	वेशक अल्लाह	उस ने कमाया (कमाई)	
بِهِ وَلِيَعْلَمُوا أَنَّمَا هُوَ إِلَهُ وَاحِدٌ وَلِيَذَّكَّرَ أُولُوا الْأَلْبَابِ ۗ							
52	अक़ल वाले	और ताकि नसीहत पकड़ें	यकता	वह मावूद	उस के सिवा नहीं	और ताकि वह जान लें	उस से
آيَاتِهَا ۙ ۞ (۱۵) سُورَةُ الْحَجَرِ ۞ زُكُوعَاتُهَا ۖ							
रुक़आत 6 (15) सूरतुल हिज्र पत्थर आयात 99							
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
الرَّفِّ تِلْكَ آيَةُ الْكِتَابِ وَقُرْآنٍ مُّبِينٍ ۗ							
1	वाज़ेह - रौशन	और कुरआन	किताब	आयतें	यह	अलिफ़ लाम रा	



رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ كَانُوا مُسْلِمِينَ ﴿٢﴾									
2	मुसलमान	काश वह होते	वह लोग जो काफिर हुए	आर्जू करंगे	बसा औकात				
ذُرُّهُمْ يَأْكُلُوا وَيَتَمَتَّعُوا وَيُلْهِهِمُ الْأَمَلُ فَسَوْفَ									
पस अनकरीब	उम्मीद	और गफूलत में रखे उन्हें	और फाइदा उठा लें	वह खाएं	उन्हें छोड़ दो				
يَعْلَمُونَ ﴿٣﴾ وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرِيَةٍ إِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ									
एक लिखा हुआ	उस के लिए	मगर	बस्ती	किसी	हम ने हलाक किया	और नहीं	3	वह जान लेंगे	
مَعْلُومٌ ﴿٤﴾ مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ﴿٥﴾									
5	वह पीछे रहते हैं	और न	अपना मुकर्ररा वक़्त	कोई उम्मत	न सबक़त करती है	4	मुकर्ररा वक़्त		
وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ إِنَّكَ لَمَجْنُونٌ ﴿٦﴾									
6	दीवाना	बेशक तू	याद दिहानी (कुरआन)	उस पर	वह जो कि उतारा गया	ऐ वह	और वह बोले		
لَوْ مَا تَأْتِينَا بِالْمَلَكَةِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿٧﴾ مَا نُنزِّلُ									
हम नाज़िल नहीं करते	7	सच्चा	से	तू है	अगर	फरिश्तों को	हमारे पास तू नहीं ले आता	क्यों	
الْمَلَكَةَ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوا إِذًا مُنظَرِينَ ﴿٨﴾ إِنَّا نَحْنُ									
हम	बेशक	8	मोहलत दिए गए	उस वक़्त	और न होंगे	हक़ के साथ	मगर	फरिश्ते	
نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَفِظُونَ ﴿٩﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ									
से	और यकीनन हम ने भेजे	9	निगहवान	उस के	और बेशक हम	याद दिहानी (कुरआन)	हम ने नाज़िल किया		
قَبْلِكَ فِي شَيْعِ الْأَوَّلِينَ ﴿١٠﴾ وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا									
मगर	कोई रसूल	और नहीं आया उन के पास	10	पहले	गिरोह	में	तुम से पहले		
كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿١١﴾ كَذَلِكَ نَسْلُكُهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٢﴾									
12	मुज़्रिमों	दिल (जमा)	में	हम उसे डाल देते हैं	उसी तरह	11	इस्तिहज़ा करते	उस से	वह थे
لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٣﴾ وَلَوْ فَتَحْنَا									
हम खोल दें	और अगर	13	पहले	रस्म - रविश	और पड़ चुकी है	उस पर	वह ईमान नहीं लाएंगे		
عَلَيْهِمْ بَابًا مِنَ السَّمَاءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ﴿١٤﴾ لَقَالُوا إِنَّمَا									
वान्ध दी गई	इस के सिवा नहीं	तो कहेंगे	14	चढ़ते	उस में	वह रहें	आस्मान	से	कोई दरवाज़ा उन पर
أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَسْحُورُونَ ﴿١٥﴾ وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ									
आस्मान	में	और यकीनन हम ने बनाए	15	सिहर ज़दह	लोग	हम	बल्कि	हमारी आँखें	
بُرُوجًا وَزَيَّنَّهَا لِلنَّظِيرِينَ ﴿١٦﴾ وَحَفِظْنَاهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ									
शैतान	हर	से	और हम ने हिफ़ाज़त की उस की	16	देखने वालों के लिए	और उसे जीनत दी	बुर्ज (जमा)		
رَّجِيمٍ ﴿١٧﴾ إِلَّا مَنْ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاتَّبَعَهُ شَهَابٌ مُبِينٌ ﴿١٨﴾									
18	चमकता हुआ	शोला	तो उस का पीछा करता है	सुनना	चोरी करे	जो	मगर	17	मर्दूद

वाज़ औकात काफ़िर आर्जू करंगे काश वह मुसलमान होते! (2) उन्हें छोड़ दो, वह खाएं और फाइदा उठा लें, और उम्मीद उन्हें गफूलत में डाले रखे, पस अनकरीब वह जान लेंगे। (3) और नहीं हलाक किया हम ने किसी बस्ती को, मगर उस के लिए एक लिखा हुआ वक़्त मुकर्रर था। (4) न कोई उम्मत सबक़त करती है अपने मुकर्ररा वक़्त से, और न वह पीछे रहते हैं। (5) और वह (काफ़िर) बोले ऐ वह शख्स जिस पर कुरआन उतारा गया है बेशक तू दीवाना है, (6) तू हमारे पास फरिश्तों को क्यों नहीं ले आता? अगर तू सच्चों में से है। (7) हम नाज़िल नहीं करते फरिश्ते मगर हक़ के साथ, और वह उस वक़्त मोहलत न दिए जाएंगे। (8) बेशक हम ही ने कुरआन नाज़िल किया और बेशक हम ही उस के निगहवान हैं। (9) और यकीनन हम ने तुम से पहले गिरोहों में (रसूल) भेजे, (10) और उन के पास कोई रसूल नहीं आया मगर वह उस से इस्तिहज़ा करते थे। (11) उसी तरह हम उसे डाल देते हैं मुज़्रिमों के दिलों में। (12) वह इस (कुरआन) पर ईमान नहीं लाएंगे, और यह पहलों की रस्म पड़ चुकी है। (13) और अगर हम उन पर आस्मान का कोई दरवाज़ा खोल दें, और वह उस में (दिन भर) चढ़ते रहें। (14) तो (यही) कहेंगे कि इस के सिवा नहीं कि हमारी आँखें बान्ध दी गई हैं (हमारी नज़र बन्दी कर दी गई है) बल्कि हम सिहर ज़दह हैं। (15) और यकीनन हम ने आस्मानों में बुर्ज बनाए और उसे देखने वालों के लिए जीनत दी, (16) और हम ने हर मर्दूद शैतान से उस की हिफ़ाज़त की, (17) मगर जो चोरी कर के (चोरी से) सुन ले, तो चमकता हुआ शोला उस का पीछा करता है। (18)

और हम ने ज़मीन को फैला दिया, और हम ने उस पर पहाड़ रखे, और उस में हर चीज़ मुनासिब उगाई। (19)

और हम ने तुम्हारे लिए इस में रोज़ी रोटी के सामाने बनाए (और उस के लिए भी) जिसे तुम रिज़्क देने वाले नहीं। (20)

और कोई चीज़ नहीं जिस के खज़ाने हमारे पास न हों, और हम नहीं उतारते मगर एक मुनासिब अन्दाज़े से। (21)

और हम ने हवाएं भेजी (पानी से) भरी हुई, फिर हम ने आस्मान से पानी उतारा, फिर वह हम ने तुम्हें पिलाया, और तुम उस के खज़ाने (जमा) करने वाले नहीं। (22)

और बेशक हम (ही) जिन्दगी देते हैं, और हम ही मारते हैं, और हम ही वारिस हैं। (23)

और तहकीक हमें मालूम है तुम में से आगे गुज़र जोने वाले,

और तहकीक हमें मालूम है पीछे रह जाने वाले। (24)

और बेशक तेरा रब (ही) उन्हें (रोज़े कियामत) जमा करेगा, बेशक वह हिम्मत वाला, इल्म वाला है। (25)

और तहकीक हम ने इन्सानों को पैदा किया एक खनकनाते हुए, सियाह सड़े हुए गारे से। (26)

और जिनों को उस से पहले हम ने वे धुएँ की आग से पैदा किया। (27)

और जब तेरे रब ने फ़रिश्तों से कहा बेशक मैं इन्सान को बनाने वाला हूँ, एक खनकनाते हुए सियाह सड़े हुए गारे से। (28)

फिर जब मैं उसे दुरुस्त कर लूँ, और उस में अपनी रूह फूंक दूँ तो तुम उस के लिए सिज्दे में गिर पड़ो। (29)

पस सिज्दा किया सब के सब फ़रिश्तों ने, (30)

इब्लीस के सिवा। उस ने (उस से) इन्कार किया कि वह सिज्दा करने वालों के साथ हो। (31)

अल्लाह ने फ़रमाया, ऐ इब्लीस! तुझे क्या हुआ? कि तू सिज्दा करने वालों के साथ न हुआ। (32)

उस ने कहा मैं (वह) नहीं हूँ कि सिज्दा करूँ इन्सान को, तू ने उस को खनकनाते हुए सियाह सड़े हुए गारे से पैदा किया है। (33)

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْبَتْنَا فِيهَا

उस में	और हम ने उगाई	पहाड़	उस में (पर)	और हम ने रखे	हम ने उस को फैला दिया	और ज़मीन
--------	---------------	-------	-------------	--------------	-----------------------	----------

مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُونٍ ﴿١٩﴾ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ وَمَنْ

और जो - जिस	सामाने मईशत	उस में	तुम्हारे लिए	और हम ने बनाए	19	मौजू	हर शै	से
-------------	-------------	--------	--------------	---------------	----	------	-------	----

لَسْتُمْ لَهُ بِرِزْقِينَ ﴿٢٠﴾ وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَنَا خَزَائِنُهُ وَمَا

और नहीं	उस के खज़ाने	हमारे पास	मगर	कोई चीज़	और नहीं	20	रिज़्क देने वाले	उस के लिए	तुम नहीं
---------	--------------	-----------	-----	----------	---------	----	------------------	-----------	----------

نُنزِّلُهُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ ﴿٢١﴾ وَأَرْسَلْنَا الرِّيحَ لَوَاقِحَ فَاَنْزَلْنَا

फिर हम ने उतारा	भरी हुई	हवाएं	और हम ने भेजी	21	मालूम - मुनासिब	अन्दाज़े से	मगर	हम उस को उतारते
-----------------	---------	-------	---------------	----	-----------------	-------------	-----	-----------------

مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَاسْقَيْنُكُمْوَهُ وَمَا أَنْتُمْ لَهُ بِخٰزِنِينَ ﴿٢٢﴾

22	खज़ाने करने वाले	उस के	तुम	और नहीं	फिर हम ने वह तुम्हें पिलाया	पानी	आस्मान	से
----	------------------	-------	-----	---------	-----------------------------	------	--------	----

وَأَنَّا لَنَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَنَحْنُ الْوٰرِثُونَ ﴿٢٣﴾ وَلَقَدْ عَلِمْنَا

और तहकीक हमें मालूम है	23	वारिस (जमा)	और हम	और हम मारते हैं	जिन्दगी देते हैं	अलवत्ता हम	और बेशक हम
------------------------	----	-------------	-------	-----------------	------------------	------------	------------

الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ ﴿٢٤﴾ وَإِنَّ

और बेशक	24	पीछे रह जाने वाले	और तहकीक हमें मालूम है	तुम में से	आगे गुज़रने वाले
---------	----	-------------------	------------------------	------------	------------------

رَبِّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٢٥﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا

और तहकीक हम ने पैदा किया	25	इल्म वाला	हिक्मत वाला	बेशक वह	उन्हें जमा करेगा	वह	तेरा रब
--------------------------	----	-----------	-------------	---------	------------------	----	---------

الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَآءٍ مَّسْنُونٍ ﴿٢٦﴾ وَالْجِبَانَ

और जिन (जमा)	26	सड़ा हुआ	सियाह गारे से	खनकनाता हुआ	से	इन्सान
--------------	----	----------	---------------	-------------	----	--------

خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُومِ ﴿٢٧﴾ وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ

तेरा रब	कहा	और जब	27	आग वे धुएँ की	से	उस से पहले	हम ने उसे पैदा किया
---------	-----	-------	----	---------------	----	------------	---------------------

لِلْمَلٰٓئِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَآءٍ مَّسْنُونٍ ﴿٢٨﴾

28	सड़ा हुआ	सियाह गारा	से	खनकनाता हुआ	से	इन्सान बनाने वाला	बेशक मैं	फ़रिश्तों को
----	----------	------------	----	-------------	----	-------------------	----------	--------------

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُّوحِي فَقَعُوا لَهُ سٰجِدِينَ ﴿٢٩﴾

29	सिज्दा करते हुए	उस के लिए	तो गिर पड़ो	अपनी रूह से	उस में	और फूंकू	मैं उसे दुरुस्त कर लूँ	फिर जब
----	-----------------	-----------	-------------	-------------	--------	----------	------------------------	--------

فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ﴿٣٠﴾ إِلَّا إِبٰٓلِيسَ ۖ أَبٰٓى أَنْ يَّكُونَ مَعَ

साथ	वह हो	उस ने इन्कार किया कि	इब्लीस	सिवाए	30	सब के सब	वह सब	फ़रिश्तों	पस सिज्दा किया
-----	-------	----------------------	--------	-------	----	----------	-------	-----------	----------------

السَّٰجِدِينَ ﴿٣١﴾ قَالَ يَآٰإِبٰٓلِيسُ مَا لَكَ ۖ لَآ تَكُونُ مَعَ السَّٰجِدِينَ ﴿٣٢﴾ قَالَ

उस ने कहा	32	सिज्दा करने वाले	साथ	कि तू न हुआ	तुझे क्या हुआ	ऐ इब्लीस	उस ने फ़रमाया	31	सिज्दा करने वाले
-----------	----	------------------	-----	-------------	---------------	----------	---------------	----	------------------

لَمْ أَكُنْ لَآسْجِدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَآءٍ مَّسْنُونٍ ﴿٣٣﴾

33	सड़ा हुआ	सियाह गारा	से	खनकनाता हुआ	से	तू ने उस को पैदा किया	इन्सान को	कि सिज्दा करूँ	मैं नहीं हूँ
----	----------	------------	----	-------------	----	-----------------------	-----------	----------------	--------------

قَالَ فَاحْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿٣٤﴾ وَإِنَّ عَلَيْنَا							
उस ने कहा	पस निकल जा	यहां से	वेशक तू	मर्दूद	34	और वेशक	तुझ पर
اللَّعْنَةَ إِلَى يَوْمِ الدِّينِ ﴿٣٥﴾ قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَى							
तक	लानत	तक	रोज़े इन्साफ़	35	उस ने कहा	ऐ मेरे रब	मुझे मोहलत दे
يَوْمٍ يُبْعَثُونَ ﴿٣٦﴾ قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ﴿٣٧﴾ إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ							
जिस दिन (मुर्दे) उठाए जाएंगे	36	उस ने कहा	वेशक तू	से	मोहलत दिए जाने वाले	37	तक दिन वक़्त
الْمَعْلُومِ ﴿٣٨﴾ قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ							
मालूम (सुकर्रर)	38	उस ने कहा	ऐ मेरे रब	जैसा कि	तू ने मुझे गुमराह किया	तो मैं ज़रूर आरास्ता करूंगा	उन के लिए
فِي الْأَرْضِ وَلَا أُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٣٩﴾ إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمْ							
ज़मीन में	और मैं ज़रूर गुमराह करूंगा उनको	सब	39	सिवाए	तेरे बन्दे	उन में से	
الْمُخْلِصِينَ ﴿٤٠﴾ قَالَ هَذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ﴿٤١﴾ إِنَّ							
मुखलिस (जमा)	40	उस ने फ़रमाया	यह	रास्ता	मुझ तक	सीधा	वेशक
عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَنٌ إِلَّا مَنْ اتَّبَعَكَ							
मेरे बन्दे	नहीं	तेरे लिए (तेरा)	उन पर	कोई ज़ोर	मगर	जो - जिस	तेरी पैरवी की
مِنَ الْغَافِلِينَ ﴿٤٢﴾ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٣﴾							
से	वहके हुए (गुमराह)	42	और वेशक	जहननम	उन के लिए वादा गाह	सब	43
لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِكُلِّ بَابٍ مِنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُومٌ ﴿٤٤﴾							
उस के लिए	सात	दरवाज़े	हर दरवाज़े के लिए	उन से	एक हिस्सा	एक हिस्सा	तकसीम शुदह
إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٤٥﴾ أُدْخِلُوها بِسَلَامٍ							
वेशक	परहेज़गार	में	वागात	और चश्मे	45	तुम उन में दाखिल हो जाओ	सलामती के साथ
أَمِينٍ ﴿٤٦﴾ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِّنْ غَلٍّٰ إِنْحَوَانًا عَلَىٰ							
वेखौफ़ ओ ख़तर	46	और हम ने खींच लिया	जो	में	उन के सीने	से	कीना
سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٤٧﴾ لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِنْهَا							
तख़्त (जमा)	आमने सामने	47	उन्हें न छुएगी	उस में	कोई तकलीफ़	और न	वह
بِمُخْرَجِينَ ﴿٤٨﴾ نَبِيٌّ عِبَادِي أُنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾ وَإِنَّ							
निकाले जाएंगे	48	ख़बर दे दो	मेरे बन्दों	कि वेशक	मैं	बख़शने वाला	निहायत मेहरवान
عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ﴿٥٠﴾ وَنَبِّئْهُمْ عَن ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ ﴿٥١﴾							
मेरा अज़ाब	वह (ही)	अज़ाब	दर्दनाक	50	और उन्हें ख़बर दो (सुना दो)	से - का	मेहमान
إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُونَ ﴿٥٢﴾							
जब	वह दाखिल हुए (आए)	उस पर (पास)	उसने कहा	तो उन्होंने ने कहा	सलाम	उस ने कहा	हम
जब	तुम से डरते हैं।	उस पर (पास)	उसने कहा	तो उन्होंने ने कहा	सलाम	उस ने कहा	हम

अल्लाह ने फ़रमाया पस यहां (जन्त) से निकल जा वेशक तू मर्दूद है। (34) और वेशक तुझ पर रोजे इन्साफ़ (कियामत) तक लानत है। (35) उस ने कहा ऐ मेरे रब! मुझे उस दिन तक मोहलत दे जिस दिन मुर्दे उठाए जाएंगे। (36) उस ने फ़रमाया वेशक तू मोहलत दिए जाने वालों में से है, (37) उस दिन तक जिस का वक़्त सुकर्रर है। (38) उस ने कहा ऐ मेरे रब! जैसा कि तू ने मुझे गुमराह किया तो मैं ज़रूर उन के लिए (गुनाह को) ज़मीन में आरास्ता करूंगा, और मैं ज़रूर उन सब को गुमराह करूंगा। (39) सिवाए उन में से जो तेरे मुखलिस बन्दे हैं। (40) उस ने फ़रमाया यह रास्ता सीधा मुझ तक (आता है)। (41) वेशक वह मेरे बन्दे हैं उन पर तेरा कोई ज़ोर नहीं, मगर गुमराहों में से जिस ने तेरी पैरवी की। (42) और वेशक उन सब के लिए जहननम वादागाह है। (43) उस के सात दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े के लिए उन का बांटा हुआ हिस्सा है। (44) वेशक परहेज़गार वागों और चश्मों में (होंगे)। (45) तुम उन में सलामती के साथ वेखौफ़ ओ ख़तर दाखिल हो जाओ। (46) और हम ने उन के सीनों से खींच लिए कीने, भाई भाई (बन कर) तख़्तों पर आमने सामने (बैठे होंगे)। (47) उस में उन्हें कोई तकलीफ़ न छुएगी, और न वह उस से निकाले जाएंगे। (48) मेरे बन्दों को ख़बर दे दो कि वेशक मैं बख़शने वाला, निहायत मेहरवान हूँ। (49) और यह कि मेरा ही अज़ाब दर्दनाक अज़ाब है। (50) और उन्हें इब्राहीम (अ) के मेहमानों का (हाल) सुना दो। (51) जब वह उस के पास आए तो उन्होंने ने सलाम कहा, उस ने कहा हम तुम से डरते हैं। (52)

उन्होंने ने कहा डरो नहीं, हम तुम्हें एक लड़के की खुशखबरी देते हैं इल्म वाले की। (53)

उस (इब्राहीम अ) ने कहा क्या तुम मुझे इस हाल में खुशखबरी देते हो कि मुझे बुढ़ापा पहुँच गया है? सो किस बात की खुशखबरी देते हो? (54)

वह बोले हम ने तुम्हें खुशखबरी दी है सच्चाई के साथ, आप मायूस होने वालों में से न हों। (55)

उस ने कहा अपने रब की रहमत से कौन मायूस होगा? गुमराहों के सिवा। (56)

उस ने कहा ऐ फ़रिश्तो! पस तुम्हारी मुहिम क्या है? (57)

वह बोले वेशक हम भेजे गए हैं मुजरिमों की एक कौम की तरफ, (58) सिवाए लूत (अ) के घर वालों के, अलबत्ता हम उन सब को बचा लेंगे, (59)

सिवाए उस की औरत के, हम ने फ़ैसला कर लिया है कि वह पीछे रह जाने वालों में से है। (60)

पस जब फ़रिश्ते लूत (अ) के घर वालों के पास आए, (61)

उस ने कहा वेशक तुम नाआशना लोग हो। (62)

वह बोले बल्कि हम तुम्हारे पास उस (अज़ाब) के साथ आए हैं जिस में वह शक करते थे। (63)

और हम तुम्हारे पास हक के साथ आए हैं और वेशक हम सच्चे हैं। (64) पस अपने घर वालों को रात के एक हिस्से में (कुछ रात रहे) ले

निकलें और खुद उन के पीछे पीछे चलें, और न तुम में से कोई पीछे मुड़ कर देखे, और चले जाओ जैसे तुम्हें हुक्म दिया गया है। (65)

और हम ने उस की तरफ उस बात का फ़ैसला भेज दिया कि सुबह होते उन लोगों की जड़ कट जाएगी। (66)

और शहर वाले खुशियां मनाते आए। (67)

उस (लूत अ) ने कहा यह मेरे मेहमान हैं, मुझे तुम रुस्वा न करो। (68)

और अल्लाह से डरो और मुझे ख़वार न करो। (69)

वह बोले क्या हम ने तुझे सारे ज़हान (की हिमायत से) मना नहीं किया? (70) उस ने कहा यह मेरी बेटियां हैं

(इन से निकाह कर लो) अगर तुम्हें करना है। (71)

(ऐ मुहम्मद स) तुम्हारी जान की कसम यह लोग वेशक अपने नशे में मदहोश थे। (72)

قَالُوا لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلْمٍ عَلِيمٍ ﴿٥٣﴾ قَالَ أَبَشْرْتُمُونِي

क्या तुम मुझे खुशखबरी देते हो	उस ने कहा	53	इल्म वाला	एक लड़का	वेशक हम तुम्हें खुशखबरी देते हैं	डरो नहीं	उन्होंने ने कहा
-------------------------------	-----------	----	-----------	----------	----------------------------------	----------	-----------------

عَلَىٰ أَنْ مَسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تَبَشِّرُونَ ﴿٥٤﴾ قَالُوا بَشْرُنَا

हम ने तुम्हें खुशखबरी दी	वह बोले	54	तुम खुशखबरी देते हो	सो किस बात	बुढ़ापा	मुझे पहुँच गया	कि पर - में
--------------------------	---------	----	---------------------	------------	---------	----------------	-------------

بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِنَ الْقَابِطِينَ ﴿٥٥﴾ قَالَ وَمَنْ يَقْنَطُ مِنْ

से	मायूस होगा	और कौन	उस ने कहा	55	मायूस होने वाले	से	आप न हों	सच्चाई के साथ
----	------------	--------	-----------	----	-----------------	----	----------	---------------

رَحْمَةِ رَبِّهِ إِلَّا الضَّالُّونَ ﴿٥٦﴾ قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا

ऐ	पस क्या है तुम्हारा काम (मुहिम)	उस ने कहा	56	गुमराह (जमा)	सिवाए	अपना रब	रहमत
---	---------------------------------	-----------	----	--------------	-------	---------	------

الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٧﴾ قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ﴿٥٨﴾ إِلَّا

सिवाए	58	मुजरिम (जमा)	एक कौम	तरफ	भेजे गए	हम वेशक	वह बोले	57	भेजे हुए (फ़रिश्तो)
-------	----	--------------	--------	-----	---------	---------	---------	----	---------------------

إِلَّا لُوطًا إِنَّا لَمُنَجُّوهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥٩﴾ إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَرْنَا لَهَا

से	वेशक वह	हम ने फ़ैसला कर लिया है	उस की औरत	सिवाए	59	सब	अलबत्ता हम उन्हें बचा लेंगे	हम	घर वाले लूत के
----	---------	-------------------------	-----------	-------	----	----	-----------------------------	----	----------------

الْغَيْرِينَ ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا جَاءَ آلَ لُوطٍ الْمُرْسَلُونَ ﴿٦١﴾ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ

लोग	वेशक तुम	उस ने कहा	61	भेजे हुए (फ़रिश्ते)	लूत (अ) के घर वाले	आए	पस जब	60	पीछे रह जाने वाले
-----	----------	-----------	----	---------------------	--------------------	----	-------	----	-------------------

مُنْكَرُونَ ﴿٦٢﴾ قَالُوا بَلْ جِنَّتْكَ بِمَا كَانُوا فِيهِ يَمْتَرُونَ ﴿٦٣﴾

63	शक करते	उस में	वह थे	उस के साथ जो	हम आए हैं तुम्हारे पास	बल्कि	वह बोले	62	ऊपरे (ना आशना)
----	---------	--------	-------	--------------	------------------------	-------	---------	----	----------------

وَأَتَيْنَكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿٦٤﴾ فَاسْرِ بِأهلك بِقِطْعٍ مِّنَ

से	एक हिस्सा	अपने घर वालों को	पस ले निकलें आप	64	अलबत्ता सच्चे	और वेशक हम	हक के साथ	और हम तुम्हारे पास आए हैं
----	-----------	------------------	-----------------	----	---------------	------------	-----------	---------------------------

الَّيْلِ وَاتَّبِعْ أَذْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ وَامْضُوا

और चले जाओ	कोई	तुम में से	पीछे मुड़ कर देखे	और न	उन के पीछे	और खुद चलें	रात
------------	-----	------------	-------------------	------	------------	-------------	-----

حَيْثُ تُمْرُونَ ﴿٦٥﴾ وَقَضَيْنَا إِلَيْهِ ذَلِكَ الْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَ هَؤُلَاءِ

यह लोग	जड़	कि	बात	उस	उस की तरफ	और हम ने फ़ैसला भेजा	65	तुम्हें हुक्म दिया गया	जैसे
--------	-----	----	-----	----	-----------	----------------------	----	------------------------	------

مَقْطُوعٌ مُّصْبِحِينَ ﴿٦٦﴾ وَجَاءَ أَهْلَ الْمَدِينَةِ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٦٧﴾

67	खुशियां मनाते	शहर वाले	और आए	66	सुबह होते	कटी हुई
----	---------------	----------	-------	----	-----------	---------

قَالَ إِنَّ هَؤُلَاءِ ضَيْفِي فَلَا تَفْضَحُونِ ﴿٦٨﴾ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْرُونِ

69	और मुझे ख़वार न करो	अल्लाह	और डरो	68	पस मुझे रुस्वा न करो तुम	मेरे मेहमान	यह लोग	कि	उस ने कहा
----	---------------------	--------	--------	----	--------------------------	-------------	--------	----	-----------

قَالُوا أَوْلَم نَنْهَكَ عَنِ الْعَلَمِينَ ﴿٧٠﴾ قَالَ هَؤُلَاءِ بَنَاتِي إِنْ

अगर	मेरी बेटियां	यह	उस ने कहा	70	सारे ज़हान	से	हम ने तुझे मना किया	क्या नहीं	वह बोले
-----	--------------	----	-----------	----	------------	----	---------------------	-----------	---------

كُنْتُمْ فَعَلِينَ ﴿٧١﴾ لَعَمْرُكَ إِنَّهُمْ لَفِي سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿٧٢﴾

72	मदहोश थे	अपने नशे	अलबत्ता में	वेशक वह	तुम्हारी जान की कसम	71	करने वाले (करना है)	तुम हो
----	----------	----------	-------------	---------	---------------------	----	---------------------	--------

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِينَ ﴿٧٣﴾ فَجَعَلْنَا عَلَيْهَا سَافِلَهَا						
उस के नीचे का हिस्सा	उस के ऊपर का हिस्सा	पस हम ने उसे कर दिया	73	सूरज निकलते वक़्त	चिंघाड़	पस उन्हें आ लिया
وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيلٍ ﴿٧٤﴾ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً						
निशानियां	उस	में	वेशक	74	संगे गिल (खिंगर)	से पत्थर उन पर और हम ने बरसाए
لَلْمُتَوَسِّمِينَ ﴿٧٥﴾ وَإِنَّهَا لِسَبِيلٍ مُّقِيمٍ ﴿٧٦﴾ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً						
निशानी	उस	में	वेशक	76	सीधा	रास्ते पर और वेशक वह गौर ओ फ़िक्र करने वालों के लिए
لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٧﴾ وَإِنْ كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ لَظَالِمِينَ ﴿٧٨﴾ فَانْتَقَمْنَا						
हम ने बदला लिया	78	ज़ालिम (जमा)	एयका (वन) वाले (कौमे शुऐव)	थे	और तहकीक	ईमान वालों के लिए
مِنْهُمْ ﴿٧٩﴾ وَإِنَّهُمَا لَبِإِمَامٍ مُّبِينٍ ﴿٨٠﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحَجَرِ						
उन से	और वेशक वह दोनों	रास्ते पर	खुले	79	और अलबत्ता झुटलाया	हिज़्र वाले
الْمُرْسَلِينَ ﴿٨٠﴾ وَاتَيْنَهُمُ الْآيَاتِنَا فَكَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٨١﴾						
81	रसूल (जमा)	80	और हम ने उन्हें दी	अपनी निशानियां	पस वह थे	उस से सुँह फेरने वाले
وَكَانُوا يَنْحِرُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا آمِنِينَ ﴿٨٢﴾						
82	और वह तराशते थे	से	पहाड़ (जमा)	घर	वेशीफ ओ खतर	81
فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِينَ ﴿٨٣﴾ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا						
जो	उन के	तो न काम आया	83	सुबह होते	चिंघाड़	पस उन्हें आ लिया
كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٤﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا						
और जो	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	पैदा किया हम ने	और नहीं	84	वह कमाया करते थे
بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَأْتِيَةٌ فَاصِّحِ الصَّفْحِ						
दरगुज़र करना	पस दरगुज़र करो	ज़रूर आने वाली	क़ियामत	और वेशक	हक के साथ	मगर उन के दरमियान
الْجَمِيلِ ﴿٨٥﴾ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلْقُ الْعَلِيمُ ﴿٨٦﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَاكَ						
हम ने तुम्हें दी	और तहकीक	86	जानने वाला	पैदा करने वाला	वह तुम्हारा रब	वेशक 85 अच्छा
سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنَ الْعَظِيمِ ﴿٨٧﴾ لَا تَمُدَّنَّ						
हरगिज़ न बढ़ाएं आप	87	अज़मत वाला	और कुरआन	बार बार दोहराई जाने वाली	से	सात
عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ						
और न ग़म खाएं	उन के	कई जोड़े	उस को	जो हम ने बरतने को दिया	तरफ़	अपनी आँखें
عَلَيْهِمْ وَأَخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٨﴾ وَقُلْ إِنِّي أَنَا						
मैं	वेशक मैं	और कह दें	88	मोमिनों के लिए	अपने बाजू	और झुका दें उन पर
النَّذِيرُ الْمُبِينُ ﴿٨٩﴾ كَمَا أَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِينَ ﴿٩٠﴾						
90	तक़सीम करने वाले	पर	हम ने नाज़िल किया	जैसे	89	डराने वाला अ़लानिया

पस उन्हें सूरज निकलते चिंघाड़ ने आ लिया। (73)

पस हम ने उस (बस्ती) का ऊपर का हिस्सा नीचे (उल्टा पुल्टा) कर दिया, और हम ने उन पर खिंगर के पत्थर बरसाए। (74)

वेशक उस में गौर ओ फ़िक्र करने वालों के लिए निशानियां हैं। (75)

और वेशक वह (बस्ती) सीधे रास्ते पर (वाके) है। (76)

वेशक उस में ईमान वालों के लिए निशानी है। (77)

और तहकीक कौमे शुऐव (अ) के लोग ज़ालिम थे। (78)

और हम ने उन से बदला लिया, और वह दोनों (बसतियां वाके हैं) एक खुले रास्ते पर। (79)

और अलबत्ता “हिज़्र” के रहने वालों ने रसूलों को झुटलाया। (80)

और हम ने उन्हें अपनी निशानियां दीं पस वह उन से सुँह फेरने वाले थे। (81)

और वह पहाड़ों से बेखौफ़ ओ खतर घर तराशते थे। (82)

पस उन्हें सुबह होते चिंघाड़ ने आ लिया। (83)

तो जो वह कमाया करते थे (उन का क्या धरा) उन के काम न आया। (84)

और हम ने आस्मानों और ज़मीन को और जो उन के दरमियान है नहीं पैदा किया मगर हक़ (हिक्मत) के साथ, और वेशक क़ियामत ज़रूर आने वाली है पस अच्छी तरह माफ़ करो। (85)

वेशक तुम्हारा रब ही पैदा करने वाला, जानने वाला है। (86)

और तहकीक हम ने तुम्हें (सूरह-ए-फ़ातिहा की) बार बार दोहराई जाने वाली सात (आयात) दीं और अज़मत वाला कुरआन। (87)

आप (स) हरगिज़ अपनी आँखें न बढ़ाएं (आँख उठा कर भी न देखें) (उन चीज़ों की) तरफ़ जो हम ने उन के कई जोड़ों (गिरोहों) को दीं, और उन पर ग़म न खाएं, और आप (स) अपने बाजू झुका दें मोमिनों के लिए। (88)

और कह दें वेशक मैं अ़लानिया डराने वाला हूँ। (89)

जैसे हम ने तक़सीम करने वालों (तफ़रिका परदाज़ों) पर अज़ाब नाज़िल किया। (90)

जिन लोगों ने कुरआन को टुकड़े टुकड़े कर डाला (कुछ को माना कुछ को न माना)। (91)

सो तेरे रब की कसम हम उन सब से ज़रूर पूछेंगे। (92)

उस की बावत जो वह करते थे। (93) पस जिस बात का आप (स) को

हुकम दिया गया है साफ़ साफ़ कह दें और मुश्रिकों से एराज़ करें (मुँह फेर लें)। (94)

वेशक मज़ाक़ उड़ाने वालों (के खिलाफ़) तुम्हारे लिए हम काफी हैं। (95)

जो लोग अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद बनाते हैं पस वह

अनकरीब जान लेंगे। (96)

और अलबत्ता हम जानते हैं कि वह जो कहते हैं उस से आप (स) का दिल तंग होता है, (97)

तो तस्वीह करें (पाकीज़गी बयान करें) अपने रब की हम्द के साथ, और सिज्दा करने वालों में से हों, (98)

और अपने रब की इबादत करते रहें यहाँ तक कि आप (स) के पास यकीनी बात (मौत) आ जाए। (99)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है

आपहुँचा अल्लाह का हुकम सो उस की जल्दी न करो, वह पाक है

और उस से बरतर जो वह (अल्लाह का) शरीक बनाते हैं। (1)

वह फ़रिश्ते अपने हुकम से वहि के साथ नाज़िल करता है अपने बन्दों में से जिस पर वह चाहता है कि तुम

डराओ कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, पस मुझ ही से डरो। (2)

उस ने पैदा किए आस्मान और ज़मीन हिक्मत के साथ, वह उस से बरतर है जो वह शरीक करते हैं। (3)

उस ने इन्सान को पैदा किया तुत्फ़ा से, फिर वह नागहां खुला झगड़ालू हो गया। (4)

और उस ने चौपाए पैदा किए तुम्हारे लिए, उन में गर्म सामान (गर्म कपड़े) और फ़ाइदे हैं, और उन में से (वाज़ को) तुम खाते हो। (5)

और तुम्हारे लिए उन में खूबसूरती और शान है जिस वक़्त शाम को चरा कर लाते हो, और जिस वक़्त सुबह को चराने ले जाते हो। (6)

الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ ﴿٩١﴾ فَوَرِّبَكَ لَنْ سَأَلْتَهُمْ

हम ज़रूर पूछेंगे उन से	सो तेरे रब की कसम	91	टुकड़े टुकड़े	कुरआन	उन्होंने ने कर दिया	वह लोग जो
------------------------	-------------------	----	---------------	-------	---------------------	-----------

أَجْمَعِينَ ﴿٩٢﴾ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾ فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ

तुम्हें हुकम दिया गया	जिस का	पस साफ़ साफ़ कह दें आप (स)	93	वह करते थे	उस की बावत जो	92	सब
-----------------------	--------	----------------------------	----	------------	---------------	----	----

وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ﴿٩٤﴾ إِنَّا كَفَيْنَاكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ ﴿٩٥﴾ الَّذِينَ

जो लोग	95	मज़ाक़ उड़ाने वाले	काफी है तुम्हारे लिए	वेशक हम	94	मुश्रिक (जमा)	से	और एराज़ करें
--------	----	--------------------	----------------------	---------	----	---------------	----	---------------

يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٩٦﴾ وَلَقَدْ نَعْلَمُ

हम जानते हैं	और अलबत्ता	96	वह जान लेंगे	पस अनकरीब	कोई दूसरा	माबूद	अल्लाह के साथ	बनाते हैं
--------------	------------	----	--------------	-----------	-----------	-------	---------------	-----------

أَنَّكَ يَصِيقُ صَدْرَكَ بِمَا يَقُولُونَ ﴿٩٧﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ

और हो	अपना रब	हम्द के साथ	तो तस्वीह करें	97	जो वह कहते हैं	उस से	तुम्हारा सीना (दिल)	तंग होता है	वेशक तुम
-------	---------	-------------	----------------	----	----------------	-------	---------------------	-------------	----------

مِّنَ السَّجِدِينَ ﴿٩٨﴾ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ ﴿٩٩﴾

99	यकीनी बात	आए आप (स) के पास	यहाँ तक कि	अपना रब	और इबादत करें	98	सिज्दा करने वाले	से
----	-----------	------------------	------------	---------	---------------	----	------------------	----

آيَاتُهَا ١٢٨ ﴿١٦﴾ سُورَةُ النَّحْلِ ﴿١٦﴾ ﴿١٦﴾ رُكُوعَاتُهَا ١٦

रुक़ात 16 (16) सूरातुन नहल शहद की मक्खी आयात 128

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

أَتَىٰ أَمْرُ اللَّهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ سُبْحٰنَهُ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١﴾ يُنَزِّلُ الْمَلَائِكَةَ بِالرُّوحِ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ

उस से जो	और बरतर	वह पाक है	सो उस की जल्दी न करो	आ पहुँचा अल्लाह का हुकम
----------	---------	-----------	----------------------	-------------------------

مِنْ عِبَادِهِ أَنْ أَنْذِرُوا أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاتَّقُونِ ﴿٢﴾ خَلَقَ

जिसे चाहता है	पर	अपने हुकम	से	वहि के साथ	फ़रिश्ते	वह नाज़िल करता है	1	वह शरीक बनाते हैं
---------------	----	-----------	----	------------	----------	-------------------	---	-------------------

السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ بِالْحَقِّ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٣﴾ خَلَقَ

उस ने पैदा किए	2	पस मुझ से डरो	मेरे सिवाए	कोई माबूद नहीं	कि वह	तुम डराओ	कि	अपने बन्दे से
----------------	---	---------------	------------	----------------	-------	----------	----	---------------

الْإِنْسَانَ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ﴿٤﴾ وَالْأَنْعَامَ

पैदा किया उस ने	3	वह शरीक करते हैं	उस से जो	बरतर	हक़ (हिक्मत) के साथ	और ज़मीन	आस्मान (जमा)
-----------------	---	------------------	----------	------	---------------------	----------	--------------

حَلَقَهَا لَكُمْ فِيهَا دِفْءٌ وَمَنْفَعٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٥﴾

और चौपाए	4	खुला	झगड़ालू	वह	फिर नागहां	तुत्फ़ा	से	इन्सान
----------	---	------	---------	----	------------	---------	----	--------

وَلَكُمْ فِيهَا جَمَالٌ حِينَ تُرِيحُونَ وَحِينَ تَسْرَحُونَ ﴿٦﴾

5	तुम खाते हो	उन में से	और फ़ाइदे (जमा)	गर्म सामान	उन में	तुम्हारे लिए	उस ने उन को पैदा किए
---	-------------	-----------	-----------------	------------	--------	--------------	----------------------

وَلَكُمْ فِيهَا جَمَالٌ حِينَ تُرِيحُونَ وَحِينَ تَسْرَحُونَ ﴿٦﴾

6	सुबह को चराने ले जाते हो	और जिस वक़्त	शाम को चरा कर लाते हो	जिस वक़्त	खूबसूरती - शान	उन में	और तुम्हारे लिए
---	--------------------------	--------------	-----------------------	-----------	----------------	--------	-----------------

وَتَحْمِلُ أَثْقَالَكُمْ إِلَىٰ بَلَدٍ لَّمْ تَكُونُوا بَلِغِيهِ إِلَّا بِشِقِّ							
हलकान कर के	बगैर	उन तक पहुँचने वाले	न थे तुम	शहर (जमा)	तरफ	तुम्हारे बोझ	और वह उठाते है
الْأَنْفُسِ إِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٧﴾ وَالْخَيْلِ وَالْبِغَالِ							
और खच्चर	और घोड़े	7	रहम करने वाला	इन्तिहाई शफीक	तुम्हारा रब	वेशक	जानें
وَالْحَمِيرِ لَتَرْكَبُوهَا وَزِينَةً وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨﴾							
8	तुम नहीं जानते	जो	और वह पैदा करता है	और ज़ीनत	ताकि तुम उन पर सवार हो	और गधे	
وَعَلَى اللَّهِ قَصْدُ السَّبِيلِ وَمِنْهَا جَائِرٌ وَلَوْ شَاءَ لَهَدَيْكُمْ							
तो वह तुम्हें हिदायत देता	और अगर वह चाहे	टेढ़ी	और उस से	राह	सीधी	और अल्लाह पर	
أَجْمَعِينَ ﴿٩﴾ هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لَكُمْ مِنْهُ							
उस से	तुम्हारे लिए	पानी	आस्मान	से	नाज़िल किया (बरसाया)	जिस ने	वही 9 सब
شَرَابٌ وَمِنْهُ شَجَرٌ فِيهِ تُسِيمُونَ ﴿١٠﴾ يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ							
उस से	तुम्हारे लिए	वह उगाता है	10	तुम चराते हो	उस में	दरख़्त	और उस से पीना
الزَّرْعِ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ							
हर	और से - के	और अंगूर	और खजूर	और जैतून	खेती		
الثَّمَرَاتِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١١﴾ وَسَخَّرَ							
और मुसख़र किया	11	गौर ओ फ़िक्र करते हैं	लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में	वेशक	फल (जमा)
لَكُمْ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ							
और सितारे	और चाँद	और सूरज	और दिन	रात	तुम्हारे लिए		
مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٢﴾							
12	वह अक़ल से काम लेते हैं	लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस	में	वेशक	उस के हुक़म से मुसख़र
وَمَا ذَرَأَ لَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ إِنَّ							
वेशक	उस के रंग	मुख़्तलिफ़	ज़मीन में	तुम्हारे लिए	पैदा किया	और जो	
فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَذَكَّرُونَ ﴿١٣﴾ وَهُوَ الَّذِي							
जो - जिस	और वही	13	वह सोचते है	लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में	
سَخَّرَ الْبَحْرَ لِيَأْكُلُوا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَتَسْتَخْرِجُوا							
और तुम निकालो	ताज़ा	गोशत	उस से	ताकि तुम खाओ	दर्या	मुसख़र किया	
مِنْهُ حَلِيَّةً تَلْبَسُونَهَا وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاحِرَ							
पानी चीरने वाली	कशती	और तुम देखते हो	तुम वह पहनते हो	ज़ेवर	उस से		
فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلِعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٤﴾							
14	शुक्र करो	और ताकि तुम	उस का फ़ज़ल	से	और ताकि तलाश करो	उस में	

और वह तुम्हारे बोझ उन शहरों तक ले जाते हैं जहाँ जानें हलकान किए बगैर तुम पहुँचने वाले न थे। वेशक तुम्हारा रब इन्तिहाई शफीक, निहायत रहम वाला है। (7)

और घोड़े और खच्चर और गधे ताकि तुम उन पर सवार हो और ज़ीनत के लिए (पैदा किए) और वह पैदा करता है जो तुम नहीं जानते। (8)

और सीधी राह अल्लाह तक पहुँचती है और उन में से (कोई) राह टेढ़ी है, और अगर वह चाहता तो तुम सब को हिदायत द देता। (9)

वही है जिस ने आस्मान से पानी बरसाया, उस से तुम्हारे लिए पीने को है, और उस से दरख़्त (सैराव होते) हैं और जिन में तुम (मवेशी) चराते हो, (10)

वह उस से तुम्हारे लिए उगाता है खेती, और जैतून, और खजूर, और अंगूर और हर किसम के फल, वेशक उस में गौर ओ फ़िक्र करने वालों के लिए निशानियां हैं। (11)

और उस ने तुम्हारे लिए मुसख़र किया रात और दिन को, और सूरज और चाँद को, और सितारे मुसख़र (काम में लगे हुए) हैं। उस के हुक़म से, वेशक उस में अक़ल से काम लेने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (12)

और तुम्हारे लिए ज़मीन में पैदा की मुख़्तलिफ़ (चीज़ें) रंग व रंग की, वेशक उस में सोचने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (13)

और वही है जिस ने दर्या को मुसख़र किया ताकि तुम उस से (मछलियों का) ताज़ा गोशत खाओ, और उस से ज़ेवर निकालो जो तुम पहनते हो, और तुम देखते हो उस में कशतियां पानी को चीर कर चलती हैं और ताकि तुम उस के फ़ज़ल से (रोज़ी) तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। (14)

और उस ने ज़मीन पर पहाड़ रखे कि तुम्हें ले कर (ज़मीन) झुक न पड़े, और दर्या और रास्ते (बनाए) ताकि तुम राह पाओ। (15) और अलामतें (बनाई) और वह सितारों से रास्ता पाते हैं। (16) क्या जो (अल्लाह) पैदा करता है उस जैसा है जो पैदा नहीं करता, पस क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (17) और अगर तुम अल्लाह की नेमतें शुमार करो तो उन्हें पूरा न गिन सकोगे, बेशक अल्लाह बख़शने वाला, निहायत मेहरबान है। (18) और अल्लाह जानता है जो तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो। (19) और वह जिन्हें पुकारते हैं अल्लाह के सिवा वह कुछ भी पैदा नहीं करते बल्कि वह खुद पैदा किए गए हैं। (20) मुर्दे हैं, ज़िन्दा नहीं, (बेजान हैं), और वह नहीं जानते वह कब उठाए जाएंगे। (21) तुम्हारा मावूद, मावूदे यकता है, पस जो लोग ईमान नहीं रखते आखिरत पर उन के दिल मुन्किर हैं, और वह मगरूर हैं। (22) यकीनी बात है अल्लाह जानता है जो वह छुपाते हैं और जो वह ज़ाहिर करते हैं। बेशक वह तकव्वुर करने वालों को पसन्द नहीं करता। (23) और जब उन से कहा जाए क्या नाज़िल किया तुम्हारे रब ने? तो वह कहते हैं पहले लोगों की कहानियां हैं। (24) अन्जामे कार वह अपने पूरे बोझ उठाएंगे क़ियामत के दिन, और कुछ उन के बोझ जिन्हें वह बग़ैर इल्म के गुमराह करते हैं, खूब सुन लो, बुरा है जो वह लादते हैं। (25) जो उन से पहले थे उन्होंने ने मक्कारी की पस उन की इमारत पर अल्लाह (का अज़ाब) बुन्यादों से आया, पस गिर पड़ी उन पर छत ऊपर से, और उन पर अज़ाब आया जहां से उन्हें ख़याल न था। (26)

وَأَلْقَى فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ وَأَنْهَارًا وَسُبُلًا							
और रास्ते	और नहरें - दर्या	तुम्हें ले कर	कि झुक न पड़े	पहाड़	ज़मीन में - पर	और डाले (रखे)	
لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٥﴾ وَعَلَّمْتُ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُونَ ﴿١٦﴾ أَفَمَنْ							
क्या - पस जो	16	रास्ता पाते हैं	वह	और सितारा	और अलामतें	15	राह पाओ ताकि तुम
يَخْلُقُ كَمَنْ لَا يَخْلُقُ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٧﴾ وَإِنْ تَعُدُّوا نِعْمَةَ اللَّهِ							
अल्लाह की नेमत	तुम शुमार करो	और अगर	17	क्या - पस तुम ग़ौर नहीं करते	पैदा नहीं करता	उस जैसा जो	पैदा करे
لَا تُحْصُوهَا إِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٨﴾ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ							
जो तुम छुपाते हो	जानता है	और अल्लाह	18	निहायत मेहरबान	अलबत्ता बख़शने वाला	बेशक अल्लाह	उस को पूरा न गिन सकोगे
وَمَا تُعْلِنُونَ ﴿١٩﴾ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ							
वह पैदा नहीं करते	अल्लाह	सिवाए		वह पुकारते हैं	और जिन्हें	19	तुम ज़ाहिर करते हो और जो
شَيْئًا وَهُمْ يُخْلُقُونَ ﴿٢٠﴾ أَمْوَاتٌ غَيْرُ أَحْيَاءٍ وَمَا يَشْعُرُونَ							
और वह नहीं जानते	ज़िन्दा	नहीं	मुर्दे	20	पैदा किए गए	और वह (खुद)	कुछ भी
أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿٢١﴾ إِلَهُكُمْ إِلَهٌ وَاحِدٌ فَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ							
ईमान नहीं रखते	पस जो लोग	एक (यकता)	मावूद	तुम्हारा मावूद	21	वह उठाए जाएंगे	कब
بِالْآخِرَةِ فُلُوبُهُمْ مُنْكَرَةٌ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ﴿٢٢﴾ لَا جَرَمَ أَنَّ							
कि	यकीनी बात	22	तकव्वुर करने वाले (मगरूर)	और वह	मुन्किर (इन्कार करने वाले)	उन के दिल	आखिरत पर
اللَّهُ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِينَ ﴿٢٣﴾							
23	तकव्वुर करने वाले	पसन्द नहीं करता	बेशक वह	वह ज़ाहिर करते हैं	और जो	वह छुपाते हैं	जो जानता है अल्लाह
وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ مَّاذَا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ قَالُوا آسَاطِيرُ							
कहानियां	वह कहते हैं	तुम्हारा रब	नाज़िल किया	क्या	उन से	कहा जाए	और जब
الْأُولَىٰ ﴿٢٤﴾ لِيَحْمِلُوا أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ							
क़ियामत के दिन	पूरे	अपने बोझ (गुनाह)	अन्जामे कार वह उठाएंगे	24	पहले लोग		
وَمِنْ أَوْزَارِ الَّذِينَ يُضِلُّونَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ إِلَّا سَاءَ							
बुरा	खूब सुन लो	इल्म के बग़ैर	वह गुमराह करते हैं	उन के जिन्हें	बोझ	और कुछ	
مَا يَزِرُونَ ﴿٢٥﴾ قَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَآتَىٰ							
पस आया	उन से पहले	वह लोग जो	तहक़ीक़ मक्कारी की	25	जो वह लादते हैं		
اللَّهُ بُنْيَانَهُمْ مِنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ							
से	छत	उन पर	पस गिर पड़ी	बुन्याद (जमा)	से	उन की इमारत	अल्लाह
فَوْقِهِمْ وَأَتَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾							
26	उन्हें ख़याल न था	जहां से	से	अज़ाब	और आया उन पर	उन के ऊपर	

۲  
۸

۲  
۹



ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يُحْزِبُهُمْ وَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ							फिर वह उन्हें कियामत के दिन	
वह जो कि	मेरे शरीक	कहां	और कहेगा	वह उन्हें रुस्वा करेगा	कियामत के दिन	फिर	रुस्वा करेगा, और वह कहेगा कहां हैं मेरे वह शरीक जिन के बारे में	
كُنْتُمْ تُشَاقِقُونَ فِيهِمْ ۖ قَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ إِنَّ الْخِزْيَ							तुम झगड़ते थे, इल्म वाले कहेंगे	
रुस्वाई	वेशक	इल्म (इल्म वाले)	दिए गए	वह लोग जो	कहेंगे	उन (के बारे) में	झगड़ते	तुम थे
الْيَوْمِ وَالسُّوءَ عَلَى الْكٰفِرِينَ ﴿٢٧﴾ الَّذِينَ تَتَوَفَّيهِمُ الْمَلَائِكَةُ							वह जिन की जान फरिश्ते (उस हाल में) निकालते हैं कि वह अपने ऊपर जुल्म कर रहे होते हैं, फिर	
फरिश्ते	उन की जान निकालते हैं	वह जो कि	27	काफिर (जमा)	पर	और बुराई	आज	वह इताअत का पैगाम डालेंगे कि हम कोई बुराई न करते थे, हां हां! अल्लाह जानने वाला है जो तुम करते थे। (27)
ظَالِمِيٓ أَنْفُسِهِمْ ۖ فَالْقُوا السَّلٰمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوٓءٍ بَلَىٰ إِنَّ							जुल्म करते हुए	
वेशक	हां हां	कोई बुराई	हम न करते थे	पैगामे इताअत	पस डालेंगे	अपने ऊपर	जुल्म करते हुए	सो तुम जहन्नम के दरवाजों में दाखिल हो, उस में हमेशा रहोगे, अलबत्ता तकबुर करने वालों का बुरा ठिकाना है। (28)
اللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٨﴾ فَادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ							अल्लाह	
जहन्नम	दरवाजे	सो तुम दाखिल हो	28	तुम करते थे	वह जो	जानने वाला	अल्लाह	सो तुम जहन्नम के दरवाजों में दाखिल हो, उस में हमेशा रहोगे, अलबत्ता तकबुर करने वालों का बुरा ठिकाना है। (29)
خٰلِدِينَ فِيهَا ۗ فَلَيْسَ مَثْوٰى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٢٩﴾ وَقِيلَ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا							हमेशा रहोगे	
उन लोगों से जिन्होंने परहेज़गारी की	और कहा गया	29	तकबुर करने वाले	ठिकाना	अलबत्ता बुरा	उस में	हमेशा रहोगे	और परहेज़गारों से कहा गया तुम्हारे रब ने क्या उतारा? वह बोले बहतरीन (कलाम), जिन लोगों ने भलाई की उन के लिए इस दुनिया में भलाई है और आखिरत का घर (सब से) बेहतर है, और क्या खूब है! परहेज़गारों का घर। (30)
مَا ذَا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۗ قَالُوا خَيْرًا ۗ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي							क्या	
में	भलाई की	उन के लिए जो लोग	बहतरीन	वह बोले	तुम्हारा रब	उतारा	क्या	हमेशगी के बागात, जिन में वह दाखिल होंगे, उन के नीचे नहरें बहती हैं, वहां जो वह चाहेंगे उन के लिए होगा, अल्लाह परहेज़गारों को ऐसी ही जज़ा देता है। (31)
هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۗ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ ۗ وَلَنِعَمَ دَارُ الْمُتَّقِينَ ﴿٣٠﴾							इस	
30	परहेज़गारों का घर	और क्या खूब	बेहतर	और आखिरत का घर	भलाई	दुनिया	इस	वह जिन की जान फरिश्ते (उस हाल में) निकाले हैं कि वह पाक होते हैं, वह (फरिश्ते) कहते हैं तुम पर सलामती हो। (32)
جَنَّتْ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُمْ فِيهَا							बागात	
वहां	उन के लिए	नहरें	उन के नीचे से	बहती है	वह उन में दाखिल होंगे	हमेशगी	बागात	अपने आमाल के बदले जन्नत में दाखिल हो। क्या वह सिर्फ (यह) इन्तिज़ार करते हैं कि उन के पास फरिश्ते आएँ, या तेरे रब का हुक्म आएँ, ऐसा ही उन लोगों ने किया जो उन से पहले थे, और अल्लाह ने उन पर जुल्म नहीं किया बल्कि वह अपनी जानों पर (खुद) जुल्म करते थे। (33)
مَا يَشَاءُونَ ۗ كَذٰلِكَ يَجْزِي اللَّهُ الْمُتَّقِينَ ﴿٣١﴾ الَّذِينَ تَتَوَفَّيهِمُ							जो वह चाहेंगे	
उन की जान निकालते हैं	वह जो कि	31	परहेज़गार (जमा)	अल्लाह	जज़ा देता है	ऐसी ही	जो वह चाहेंगे	पस उन्हें पहुँची उन के आमाल की बुराइयाँ, और उन्हें घेर लिया उस (अज़ाब) ने जिस का वह मज़ाक उड़ाते थे। (34)
الْمَلَائِكَةُ طَيِّبِينَ ۗ يَقُولُونَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ۗ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا							फरिश्ते	
उस के बदले जो	जन्नत	तुम दाखिल हो	सलामती तुम पर	वह कहते हैं	पाक होते हैं	फरिश्ते	अपने आमाल के बदले जन्नत में दाखिल हो। क्या वह सिर्फ (यह) इन्तिज़ार करते हैं कि उन के पास फरिश्ते आएँ, या तेरे रब का हुक्म आएँ, ऐसा ही उन लोगों ने किया जो उन से पहले थे, और अल्लाह ने उन पर जुल्म नहीं किया बल्कि वह अपनी जानों पर (खुद) जुल्म करते थे। (33)	
كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٢﴾ هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ							तुम करते थे (आमाल)	
या आएँ	फरिश्ते	उन के पास आएँ	यह कि	मगर (सिर्फ)	वह इन्तिज़ार करते हैं	क्या	32	पस उन्हें पहुँची उन के आमाल की बुराइयाँ, और उन्हें घेर लिया उस (अज़ाब) ने जिस का वह मज़ाक उड़ाते थे। (34)
أَمْرٌ رَبِّكَ ۗ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ وَمَا ظَلَمَهُمُ							हुक्म	
और नहीं जुल्म किया उन पर	उन से पहले	वह लोग जो	किया	ऐसा ही	तेरा रब	हुक्म	हुक्म	पस उन्हें पहुँची उन के आमाल की बुराइयाँ, और उन्हें घेर लिया उस (अज़ाब) ने जिस का वह मज़ाक उड़ाते थे। (34)
اللَّهُ وَلٰكِنْ كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٣٣﴾ فَاصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ							अल्लाह	
बुराइयाँ	पस उन्हें पहुँची	33	जुल्म करते	अपनी जानें	वह थे	और बल्कि	अल्लाह	पस उन्हें पहुँची उन के आमाल की बुराइयाँ, और उन्हें घेर लिया उस (अज़ाब) ने जिस का वह मज़ाक उड़ाते थे। (34)
مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٣٤﴾							जो उन्होंने ने किया (आमाल)	
34	मज़ाक उड़ाते	उस का	वह थे	जो	उन को	और घेर लिया	जो उन्होंने ने किया (आमाल)	पस उन्हें पहुँची उन के आमाल की बुराइयाँ, और उन्हें घेर लिया उस (अज़ाब) ने जिस का वह मज़ाक उड़ाते थे। (34)

और कहा जिन लोगों ने शिर्क किया (मुश्रिकों ने) अगर अल्लाह चाहता तो न हम परसतिश करते और न हमारे बाप दादा उस के सिवाए किसी शै की, और हम उस के हुक्म के सिवा कोई शै हराम न ठहराते, उसी तरह उन लोगों ने किया जो उन से पहले थे, पस क्या है रसूलों के ज़िम्मे? मगर साफ़ साफ़ पहुँचा देना। (35)

और तहकीक़ हम ने हर उम्मत में भेजा कोई न कोई रसूल कि अल्लाह की इबादत करो और सरकश से बचो, सो उन में से किसी को अल्लाह ने हिदायत दी, और उन में से बाज़ पर गुमराही साबित हो गई, पस ज़मीन में चलो फिरो, फिर देखो कैसा अन्जाम हुआ झूटलाने वालों का? (36)

अगर तुम उन की हिदायत के लिए ललचाओ तो बेशक अल्लाह हिदायत नहीं देता जिसे वह गुमराह करता है, और उन का कोई मददगार नहीं। (37)

और उन्होंने ने अल्लाह की कसम खाई अपनी सख़्त (पुर ज़ोर) कसम कि जो मर जाता है उसे अल्लाह (रोज़े कियामत) नहीं उठाएगा। क्यों नहीं? उस पर उस का वादा सच्चा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते, (38)

ताकि उन के लिए ज़ाहिर कर दे जिस में वह इख़तिलाफ़ करते हैं, और ताकि काफ़िर जान लें कि वह झूटे थे। (39)

जब हम किसी चीज़ का इरादा करें तो हमारा फ़रमाना इस के सिवा नहीं कि हम उस को कहते हैं, कि "हो जा" तो वह हो जाता है। (40)

और जिन लोगों ने अल्लाह के लिए हिज़त कि उस के बाद के उन पर जुल्म किया गया, हम उन्हें ज़रूर जगह देंगे दुनिया में अच्छी और बेशक आख़िरत का अजर बहुत बढ़ा है, काश वह (हिज़त से रह जाने वाले) जानते। (41)

जिन लोगों ने सब्र किया और वह अपने रव पर भरोसा करते हैं। (42)

وَقَالَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُونِهِ							
उस के सिवाए	हम परसतिश करते	न	चाहता अल्लाह	अगर	उन्होंने ने शिर्क किया	वह लोग जो	और कहा
مِنْ شَيْءٍ نَحْنُ وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَمْنَا مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ							
कोई शै	उस के (हुक्म के) सिवा	और न हराम ठहराते हम	हमारे बाप दादा	और न	हम	कोई - किसी शै	
كَذَلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ إِلَّا							
मगर	रसूल (जमा)	पर (ज़िम्मे)	पस क्या है	उन से पहले	वह लोग जो	किया	उसी तरह
الْبَلْغِ الْمُبِينِ ﴿٣٥﴾ وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنْ							
कि	रसूल	हर उम्मत	में	और तहकीक़ हम ने भेजा	35	साफ़ साफ़	पहुँचा देना
اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ فَمِنْهُمْ مَن هَدَى اللَّهُ							
अल्लाह	जिसे हिदायत दी	सो उन में से बाज़	तागूत (सरकश)	और बचो	अल्लाह	इबादत करो तुम	
وَمِنْهُمْ مَن حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلَالَةُ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا							
फिर देखो	ज़मीन में	पस चलो फिरो	गुमराही	उस पर	साबित हो गई	बाज़	और उन में से
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكْذِبِينَ ﴿٣٦﴾ إِنْ تَحْرَصْ عَلَىٰ هُدْيِهِمْ							
उन की हिदायत के लिए	तुम हिर्स करो (ललचाओ)	अगर	36	झूटलाने वाले	अन्जाम	हुआ	कैसा
فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ يُضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ﴿٣٧﴾							
37	मददगार	कोई	उन के लिए	और नहीं	वह गुमराह करता है	जिसे	हिदायत नहीं देता तो बेशक अल्लाह
وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَا يَبْعَثُ اللَّهُ مِنْ يَمُوتُ							
जो मर जाता है	अल्लाह	नहीं उठाएगा	अपनी कसम	अपनी सख़्त	अल्लाह की	और उन्होंने ने	कसम खाई
بَلَىٰ وَعَدَّا عَلَيْهِ حَقًّا وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٨﴾							
38	नहीं जानते	लोग	अक्सर	और लेकिन	सच्चा	उस पर	वादा क्यों नहीं
لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي يُخْتَلَفُونَ فِيهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا							
जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	और ताकि जान लें	उस में	इख़तिलाफ़ करते हैं	जो	उन के लिए	ताकि ज़ाहिर कर दे	
أَنَّهُمْ كَانُوا كَذِبِينَ ﴿٣٩﴾ إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَنْ نَقُولَ							
कि हम कहते हैं	जब हम उस का इरादा करें	किसी चीज़ को	हमारा फ़रमाना	उस के सिवा नहीं	39	झूटे थे	कि वह
لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٤٠﴾ وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ							
उस के बाद	अल्लाह के लिए	उन्होंने ने हिज़त कि	और वह लोग जो	40	तो वह हो जाता है	हो जा	उस को
مَا ظَلَمُوا لِنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۗ وَلَا جُزْءَ الْآخِرَةِ الْكَبِيرِ لَوْ							
काश बहुत बढ़ा	आख़िरत	और बेशक अजर	अच्छी	दुनिया में	ज़रूर हम उन्हें जगह देंगे	कि उन पर जुल्म किया गया	
كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾ الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٤٢﴾							
42	भरोसा करते हैं	और अपने रव पर	उन्होंने ने सब्र किया	वह लोग जो	41	वह जानते	

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُوْحِيْ اِلَيْهِمْ فَسَلُّوا اَهْلَ الدِّكْرِ							
याद रखने वाले	पस पूछो	उन की तरफ	हम वहि करते है	मर्दों के सिवा	तुम से पहले	हम ने भेजे	और नहीं
اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ <sup>43</sup> بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ وَاَنْزَلْنَا اِلَيْكَ							
तुम्हारी तरफ	और हम ने नाज़िल की	और किताबें	निशानियों के साथ	43	नहीं जानते	तुम हो	अगर
الدِّكْرِ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ <sup>44</sup>							
44	वह गौर ओ फ़िक्र करें	और ताकि वह	उन की तरफ	जो नाज़िल किया गया	लोगों के लिए	ताकि वाज़ेह कर दो	याददाशत (किताब)
اَفَاَمِنَ الَّذِيْنَ مَكَرُوا السَّيِّئَاتِ اَنْ يَّخْسِفَ اللّٰهُ بِهٖمُ الْاَرْضَ							
ज़मीन	उन को	अल्लाह	धंसादे	कि	बुरे	दाओ किए	जिन लोगों ने क्या बेखौफ हो गए है
اَوْ يَاتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ <sup>45</sup> اَوْ يَأْخُذْهُمْ							
उन्हें पकड़ ले	या	45	वह ख़बर नहीं रखते	उस जगह से	अज़ाब	उन पर आए	या
فِي تَقْلِبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ <sup>46</sup> اَوْ يَأْخُذْهُمْ عَلٰى تَخَوُّفٍ فَاِنَّ							
पस वेशक	डराना	पर (बाद)	उन्हें पकड़ ले	या	46	आजिज़ करने वाले	वह पस नहीं उन को चलते फिरते में
رَبِّكُمْ لَرَّءُوْفٌ رَّحِيْمٌ <sup>47</sup> اَوْلَمْ يَرَوْا اِلَى مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ							
जो चीज़	अल्लाह	जो पैदा किया	तरफ	क्या उन्होंने ने नहीं देखा	47	निहायत रहम करने वाला	इन्तिहाई शफ़ीक़ तुम्हारा रब
يَتَفَقَّهُوْا ظِلْمَهُ عَنِ الْيَمِيْنِ وَالشَّمَالِ سَجْدًا لِلّٰهِ وَهُمْ							
और वह	अल्लाह के लिए	सिज्दा करते हुए	और बाएं	दाएं	से	उस के साए	ढलते हैं
دٰخِرُوْنَ <sup>48</sup> وَاللّٰهُ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مِنْ							
से	ज़मीन में	और जो	आस्मानों	में	जो	और अल्लाह के लिए सिज्दा करता है	48
دٰبَّةٍ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ <sup>49</sup> يَخٰفُوْنَ رَبَّهُمْ مِنْ فَوْقِهِمْ							
उन के ऊपर	से	अपना रब	वह डरते हैं	49	तकबुर नहीं करते	और वह	और फ़रिश्ते जानदार
وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ <sup>50</sup> وَقَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْا الْهٰٓئِنِ اثْنِيْنَ							
दो	दो माबूद	तुम बनाओ	न	अल्लाह	और कहा	50	उन्हें हुकम दिया जाता है जो और वह (वही) करते हैं
اِنَّمَا هُوَ اِلٰهُ وَاَحَدٌ فَاَيَّٰى فَاَرْهَبُوْنَ <sup>51</sup> وَلَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ							
आस्मानों में	जो	और उसी के लिए	51	तुम मुझ से डरो	पस मुझ ही से	यकता	माबूद वह इस के सिवा नहीं
وَالْاَرْضِ وَلَهُ الدِّيْنُ وَاَصْبٰٓءُ اَفْغِيْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ <sup>52</sup> وَمَا بِكُمْ							
तुम्हारे पास	और जो	52	तुम डरते हो	तो क्या अल्लाह के सिवा	लाज़िम	इताज़त ओ इबादत	और उसी के लिए और ज़मीन
مِّنْ نّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضَّرُّ فَاِلَيْهِ تَجَرُّوْنَ <sup>53</sup>							
53	तुम रोते (चिल्लाते) हो	तो उस की तरफ	तक्लीफ	तुम्हें पहुँचती है	जब फिर	अल्लाह की तरफ से	कोई नेमत
ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضَّرَّ عَنْكُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ <sup>54</sup>							
54	वह शरीक करता है	अपने रब के साथ	तुम में से	जब (उस वक़्त) एक फ़रीक़	तुम से	सख़्ती	खोलदे (दूर कर देता है) जब फिर

और हम ने तुम से पहले भी मर्दों के सिवा (रसूल) नहीं भजे, हम वहि करते हैं उन की तरफ, याद रखने वालों से पूछो अगर तुम नहीं जानते (कि उन रसूलों को हम ने भेजा था)। (43) निशानियों और किताबों के साथ, और हम ने तुम्हारी तरफ किताब नाज़िल कि है ताकि लोगों के लिए वाज़ेह कर दो जो उन की तरफ नाज़िल किया गया है, ताकि वह गौर ओ फ़िक्र करें। (44) जिन लोगों ने बुरे दाओ किए क्या वह उस से बेखौफ हो गए है कि अल्लाह उन को ज़मीन में धंसा दे? या उन पर अज़ाब आजाए जहां से उन को खबर ही न हो, (45) या वह उन्हें पकड़ ले चलते फिरते, पस वह (अल्लाह) को आजिज़ करने वाले नहीं, (46) या उन्हें डराने के बाद पकड़ ले, पस वेशक तुम्हारा रब इन्तिहाई शफ़ीक़ निहायत रहम तरने वाला है। (47) क्या उन्होंने ने नहीं देखा? कि जो चीज़ अल्लाह ने पैदा की है, उस के साए ढलते हैं, दाएं से और बाएं से, अल्लाह के लिए सिज्दा करते हुए, और वह आजिज़ी करने वाले हैं। (48) और अल्लाह को सिज्दा करता है जो भी आस्मानों में और जो भी जानदारों में से ज़मीन में है और फ़रिश्ते भी, और वह तकबुर नहीं करते। (49) वह अपने रब से डरते हैं (जो) उन के ऊपर है, और वह वही करते हैं जो उन्हें हुकम दिया जाता है। (50) और अल्लाह ने कहा कि न तुम बनाओ दो माबूद। इस के सिवा नहीं कि वह माबूद यकता है, पस मुझ ही से डरो। (51) और उसी के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है और उसी के लिए इताज़त ओ इबादत लाज़िम है, तो क्या अल्लाह के सिवा (किसी और से) तुम डरते हो? (52) और तुम्हारे पास जो कोई नेमत है सो अल्लाह की तरफ से है, फिर जब तुम्हें तक्लीफ पहुँचती है तो उसी की तरफ तुम रोते चिल्लाते हो। (53) फिर वह जब तुम से सख़्ती दूर कर देता है तो तुम में से एक फ़रीक़ उस वक़्त अपने रब के साथ शरीक करने लगता है, (54)

ताकि वह उस की नाशुकी करें जो हम ने उन्हें दिया, तो तुम फ़ाइदा उठाओ, पस अ़नक़रीब तुम जान लोगे। (55)

और जो हम ने उन्हें दिया उस में से वह उन के लिए हिस्सा मकर्रर करते हैं, जिन (माबूदों) को वह नहीं जानते, अल्लाह की क़सम तुम से

उस (के बारे) में ज़रूर पूछा जाएगा जो तुम झूट बान्धते थे। (56)

और वह अल्लाह के लिए बेटियां ठहराते हैं, वह पाक है, और अपने लिए वह जो उन का दिल चाहता है। (57)

और जब उन में से किसी को लड़की की खुशख़बरी दी जाती है तो उस का चहरा सियाह पड़ जाता है और वह गुस्से से भर जाता है। (58)

लोगों से छुपता फिरता है उस "बुराई" की खुशख़बरी के सबब जो उसे दी गई (अब सोचता है) आया उस को रुस्वाई के साथ रखे या उस को मिट्टी में दफ़न कर दे, याद रखो!

बुरा है जो वह फ़ैसला करते हैं। (59)

जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उन का हाल बुरा है, और अल्लाह की शान बुलन्द है, और वह ग़ालिव हिक्मत वाला है। (60)

और अगर अल्लाह गिरिफ़्त करे लोगों की उन के जुल्म के सबब तो वह ज़मीन पर कोई चलने वाला न छोड़े, लेकिन वह उन्हें ढील देता है एक मुद्दे मुकर्ररा तक, फिर जब उन का वक़्त आगया, न वह एक घड़ी पीछे हटेंगे, और न आगे बढ़ेंगे। (61)

और वह अल्लाह के लिए ठहराते हैं जो अपने लिए न पसन्द करते हैं, और उन की ज़वानों झूट बयान करती हैं कि उन के लिए भलाई है, लाज़िमी बात है कि उन के लिए जहन्नम है, बेशक वह (जहन्नम में) आगे भेजे जाएंगे। (62)

अल्लाह की क़सम! तहकीक़ हम ने भेजे तुम से पहले उम्मतों की तरफ़ (रसूल), फिर शैतान ने उन के अ़मल उन्हें अच्छे कर दिखाए, पस आज वह उन का रफ़ीक़ है, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (63)

और हम ने तुम पर किताब नहीं उतारी मगर (सिर्फ़) इस लिए कि तुम वाज़ेह कर दो जिस में उन्होंने ने इख़तिलाफ़ किया, और हिदायत ओ रहमत उन के लिए जो ईमान लाए। (64)

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَهُمْ ۖ فَتَمَتَّعُوا ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾ وَيَجْعَلُونَ							
और वह मुकर्रर करते हैं	55	तुम जान लोगे	पस अ़नक़रीब	तो तुम फ़ाइदा उठा लो	हम ने उन्हें दिया	उस से जो	ताकि वह नाशुकी करें
لِمَا لَا يَعْلَمُونَ نَصِيبًا مِّمَّا رَزَقْنَاهُمْ ۗ تَاللّٰهِ لَتُسْأَلُنَّ عَمَّا							
उस से जो	तुम से ज़रूर पूछा जाएगा	अल्लाह की क़सम	हम ने उन्हें दिया	उस से जो	हिस्सा	वह नहीं जानते	उस के लिए जो
كُنْتُمْ تَفْتَرُونَ ﴿٥٦﴾ وَيَجْعَلُونَ لِلّٰهِ الْبَنَاتِ سُبْحٰنَهُ ۗ وَلَهُمْ مَا يَشْتَهُونَ ﴿٥٧﴾							
57	उन का दिल चाहता है	जो	और अपने लिए	वह पाक है	बेटियां	और वह बनाते (ठहराते) अल्लाह के लिए	56
وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهَهُ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ﴿٥٨﴾							
58	गुस्से से भर जाता है	और वह	सियाह	उस का चेहरा	हो जाता (पड़ जाता है)	लड़की की	उन में से किसी को
يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ۗ اَيْمَسِكُهُ عَلٰى هُوْنٍ اَمْ يَدُسُّهُ فِى التُّرَابِ ۗ اَلَا سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٥٩﴾ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ							
या	रुस्वाई के साथ	या उस को रखे	खुशख़बरी दी गई जिस की	जो	बुराई	से - सबब	कौम (लोग)
بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السُّوْءِ ۗ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ۗ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦٠﴾							
ईमान नहीं रखते	जो लोग	59	जो वह फ़ैसला करते हैं	बुरा है	याद रखो	मिट्टी में	दवादे (दफ़न करदे)
وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَابَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّوَخِّرُهُمْ اِلٰى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاخِرُوْنَ							
और लेकिन	चलने वाला	कोई	उस (ज़मीन) पर	न छोड़े वह	उन के जुल्म के सबब	लोग	अल्लाह
سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٦١﴾ وَيَجْعَلُونَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَتَصِفُّ							
और बयान करती हैं	वह अपने लिए नापसन्द करते हैं	जो	अल्लाह के लिए	और वह बनाते (ठहराते) हैं	61	और न आगे बढ़ेंगे	एक घड़ी
السُّنْتُهُمُ الْكٰذِبُ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ۗ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ							
जहन्नम	उन के लिए	कि	लाज़िमी बात	भलाई	उन के लिए	कि	झूट
وَاَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ ﴿٦٢﴾ تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَا اِلٰى اٰمِمٍ مِّنْ قَبْلِكَ							
तुम से पहले	उम्मतें	तरफ़	तहकीक़ हम ने भेजे	अल्लाह की क़सम	62	आगे भेजे जाएंगे	और बेशक वह
فَرِيْنٍ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالُهُمْ فَهٗوْ وَلِيُّهُمْ الْيَوْمَ وَلَهُمْ							
और उन के लिए	आज	उन का रफ़ीक़	पस वह	उन के आमाल	शैतान	उन के लिए	फिर अच्छा कर दिखाया
عَذَابٍ اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾ وَمَا اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي							
जो - जिस	उन के लिए	इस लिए कि तुम वाज़ेह कर दो	मगर	किताब	तुम पर	उतारी हम ने	और नहीं
اٰخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۗ وَهٰدٰى وَّرَحْمَةً لِّلْقَوْمِ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٦٤﴾							
64	वह ईमान लाए है	उन लोगों के लिए	और रहमत	और हिदायत	उस में	उन्होंने ने इख़तिलाफ़ किया	

ع ۱۳

وَاللَّهُ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ﴿٦٥﴾											
और अल्लाह	उतारा	से	आस्मान	पानी	फिर जिन्दा किया	उस से	जमीन	बाद	उस की मौत	वेशक	में
وَمِمَّا فِي بُطُونِهِ مِنْ بَيْنِ فَرْثٍ وَدَمٍ لَبْنَا خَالِصًا سَائِبًا لِلشَّرْبِينَ ﴿٦٦﴾											
उस से जो	में	उन के पेट (जमा)	से	दरमियान	गोबर	और खून	दूध	खालिस	खुशगवार	अलबत्ता इब्रत	हम पिलाते हैं तुम को
وَمِنْ ثَمَرَاتِ النَّخِيلِ وَالْأَعْنَابِ تَتَّخِذُونَ مِنْهُ سَكَرًا وَرِزْقًا حَسَنًا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٦٧﴾ وَأَوْحَى رَبُّكَ إِلَى النَّحْلِ أَنْ اتَّخِذِي مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا وَمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُونَ ﴿٦٨﴾											
और से जो	में	उन के पेट (जमा)	से	दरमियान	गोबर	और खून	दूध	खालिस	खुशगवार	अलबत्ता इब्रत	हम पिलाते हैं तुम को
और से	और से	फल (जमा)	खजूर	और अंगूर	तुम बनाते हो	उस से	शराब	और रिज्क			
ثُمَّ كُلِي مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ فَاسْلُكِي سُبُلَ رَبِّكِ ذُلَالًا يَخْرُجُ مِنْ بُطُونِهَا شَرَابٌ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِلنَّاسِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٦٩﴾ وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفَّاكُمْ وَمِنْكُمْ مَنْ يُرَدُّ إِلَى أَرْدَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ﴿٧٠﴾ وَاللَّهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلَى بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ فَمَا الَّذِينَ كُفِرُوا بِرَأْيِهِمْ عَلَى مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيهِ سَوَاءٌ ۗ فُضِّلُوا بِرَأْيِهِمْ رِزْقِهِمْ عَلَىٰ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيهِ سَوَاءٌ ۗ											
अच्छा	वेशक	में	उस	निशानी	लोगों के लिए	अकल रखते हैं	67	और इल्हाम किया	तुम्हारा रब	तरफ-को	
शहद की मक्खी	कि	तू बनाले	से - में	पहाड़ (जमा)	घर (जमा)	और से-में	दरख्त	और उस से जो	छतरियां बनाते हैं	68	
फिर	खा	से - के	हर किस्म के फल	फिर चल	रस्ते	अपना रब	नर्म ओ हमवार	निकलती है	से		
उन के पेट (जमा)	पिने की एक चीज़	मुखतलिफ	उस के रंग	उस में	शिफा	लोगों के लिए	वेशक	में	इस		
निशानियां	लोगों के लिए	सोचते हैं	69	और अल्लाह	पैदा किया तुम्हें	फिर	वह मौत देता है तुम्हें	और तुम में से बाज़	जो		
लौटाया (पहुँचाया) जाता है तरफ	नाकारा - नाकिस उम्र	ताकि	वह वे इल्म हो जाए	बाद	इल्म	कुछ	वेशक अल्लाह	जानने वाला			
कुदरत वाला	70	और अल्लाह	फज़ीलत दी	तुम में से बाज़	पर	बाज़	में	रिज्क	पस नहीं	वह लोग जो	
फज़ीलत दिए गए	लौटा देने वाले	अपना रिज्क	पर - को	जो मालिक हुए	उन के हाथ	पस वह	उस में	वरावर			
पस क्या नेमत से	अल्लाह	वह इन्कार करते हैं	71	और अल्लाह	बनाया	तुम्हारे लिए	से	तुम में से	बीवियां		
और बनाया (पैदा किया)	तुम्हारे लिए	से	तुम्हारी बीवियां	बेटे	और पोते	और तुम्हें अता की	से				
पाक चीज़	तो क्या बातिल को	वह मानते हैं	और अल्लाह की नेमत	वह	इन्कार करते हैं	72					

और अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा, फिर उस से ज़मीन को उस की मौत (बन्जर होने) के बाद जिन्दा किया, वेशक उस में उन लोगों के लिए निशानी है जो सुनते हैं। (65)

और वेशक तुम्हारे लिए चौपाए में (मुकामे) इब्रत है, हम तुम्हें पिलाते हैं दूध खालिस उस से जो गोबर और खून के दरमियान उन के पेट में है, पीने वालों के लिए खुशगवार। (66)

और खजूर और अंगूर के फलों से (रस) तुम उस से शराब बनाते हो, और अच्छा रिज्क (हासिल करते हो) वेशक उस में निशानी है उन लोगों के लिए जो अकल रखते हैं। (67)

और तुम्हारे रब ने शहद की मक्खी को इल्हाम किया कि तू पहाड़ों में घर बना ले, और दरख्तों में, और उस जगह जहाँ वह छतरियां बनाते हैं। (68)

फिर खा हर किस्म के फलों से, फिर अपने रब के नर्म ओ हमवार रसतों पर चल, उन के पेटों से पीने की एक चीज़ निकलती है (शहद) उस के रंग मुखतलिफ है, उस में लोगों के लिए शिफा है, वेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो सोचते हैं। (69)

और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया, फिर वह तुम्हें मौत देता है, और तुम में से बाज़ को नाकारा उम्र की तरफ पहुँचाया जाता है ताकि वह कुछ इल्म के बाद वेइल्म हो जाए, वेशक अल्लाह जानने वाला, कुदरत वाला है। (70)

और अल्लाह ने फज़ीलत दी तुम में से बाज़ को बाज़ पर रिज्क में, पस जिन लोगों को फज़ीलत दी गई वह अपना रिज्क लौटाने (देने वाले) नहीं उन्हें जिन के मालिक उन के हाथ हैं (ममलूकों को) कि वह उस में बराबर हो जाएं, पस क्या वह अल्लाह की नेमत का इन्कार करते हैं? (71)

और अल्लाह ने तुम में से तुम्हारे लिए तुम्हारी बीवियां बनाई, और तुम्हारी बीवियों से तुम्हारे लिए पैदा किए बेटे और पोते, और तुम्हें पाक चीज़ें अता कीं, तो क्या वह बातिल को मानते हैं? और अल्लाह की नेमत का वह इन्कार करते हैं। (72)

और अल्लाह के सिवा उस की परस्तिश करते हैं, जिन्हें इख्तियार नहीं उन के लिए रिज़्क का आस्मानों और ज़मीन से कुछ भी, और न वह कुदरत रखते हैं। (73)

पस तुम चस्यां न करो अल्लाह पर मिसालें, बेशक अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते। (74)

अल्लाह ने एक मिसाल बयान की (किसी की) मिल्क में आए हुए गुलाम की जो किसी शौ पर इख्तियार नहीं रखता, और (दूसरा) वह जिसे हम ने अच्छा रिज़्क दिया सो वह उस से पोशीदा और ज़ाहिर खर्च करता है, क्या वह (दोनों) बराबर है? तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं, बल्कि उन में से अक्सर नहीं जानते। (75)

और अल्लाह ने दो आदमियों की एक मिसाल बयान की उन में से एक गूंगा है, वह इख्तियार नहीं रखता किसी शौ पर, और वह अपने आका पर बोज़ है, वह जहां कहीं उसे भेजे वह कोई भलाई न लाए, क्या बराबर है यह और वह? जो अद्ल का हुक्म देता है, और वह सीधी राह पर है। (76)

और अल्लाह के लिए है आस्मानों और ज़मीन की पोशीदा बातें, और क़ियामत का आना सिर्फ़ ऐसे हैं जैसे आँख का झपकना, या वह उस से भी ज़ियादा करीब है, बेशक अल्लाह हर शौ पर कुदरत वाला है। (77)

और अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माओं के पेटों से निकाला तुम कुछ भी न जानते थे, और अल्लाह ने तुम्हारे बनाए कान, और आँखें, और दिल, ताकि तुम शुक्र अदा करो। (78)

क्या उन्होंने ने परिन्दों को नहीं देखा आस्मान की फ़िज़ा में हुक्म के पाबन्द, उन्हें (कोई) नहीं थामता सिवाए अल्लाह के, बेशक उस में ईमान लाने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (79)

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ								
से	रिज़्क	उन के लिए	इख्तियार नहीं	जो	अल्लाह	सिवाए	से	और परस्तिश करते हैं
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ شَيْئًا وَلَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٧٣﴾ فَلَا تَضْرِبُوا								
पस न चस्यां करो		73	और न वह कुदरत रखते हैं		कुछ	और ज़मीन	आस्मानों	
لِلَّهِ الْأَمْثَالُ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٧٤﴾ ضَرَبَ								
बयान किया	74	नहीं जानते		और तुम	जानता है	अल्लाह बेशक	मिसालें	अल्लाह के लिए
اللَّهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوكًا لَا يَقْدِرُ عَلَى شَيْءٍ وَمَنْ رَزَقْنَاهُ								
हम ने उसे रिज़्क दिया	और जो	किसी शौ	पर	वह इख्तियार नहीं रखता	मिल्क में आया हुआ	एक गुलाम	एक मिसाल	अल्लाह
مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَجَهْرًا هَلْ								
क्या	और ज़ाहिर	पोशीदा	उस से	खर्च करता है	सो वह	अच्छा	रिज़्क	अपनी तरफ़ से
يَسْتَوْنَ الْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾ وَضَرَبَ								
और बयान किया	75	नहीं जानते		उन में से अक्सर	बल्कि	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफ़	वह बराबर है
اللَّهُ مَثَلًا رَجُلَيْنِ أَحَدُهُمَا أَبْكَمٌ لَا يَقْدِرُ عَلَى شَيْءٍ وَهُوَ								
और वह	किसी शौ पर		वह इख्तियार नहीं रखता	गूंगा	उन में से एक	दो आदमी	एक मिसाल	अल्लाह
كُلٌّ عَلَىٰ مَوْلَاهُ أَيْنَمَا يُوَجِّهُهُ لَا يَأْتِ بِخَيْرٍ هَلْ يَسْتَوِي								
बराबर	क्या	कोई भलाई	वह न लाए	वह भेजे उस को	जहां कहीं	अपना आका	पर	बोज़
هُوَ وَمَنْ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَهُوَ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٧٦﴾								
76	सीधी	राह	पर	और वह	अद्ल के साथ	हुक्म देता है	और जो	वह - यह
وَاللَّهُ غَيْبِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا أَمْرُ السَّاعَةِ إِلَّا								
मगर (सिर्फ़)	काम (आना) क़ियामत		और नहीं	और ज़मीन	आस्मानों		और अल्लाह के लिए पोशीदा बातें	
كَلِمَحِ الْبَصْرِ أَوْ هُوَ أَقْرَبُ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٧٧﴾								
77	कुदरत वाला	हर शौ	पर	बेशक अल्लाह	उस से भी करीब	वह या	जैसे झपकना आँख	
وَاللَّهُ أَخْرَجَكُمْ مِّنْ بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ لَا تَعْلَمُونَ شَيْئًا								
कुछ भी	तुम न जानते थे		तुम्हारी माँएँ	पेट (जमा)	से	तुम्हें निकाला	और अल्लाह	
وَجَعَلَ لَكُمْ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٧٨﴾								
78	तुम शुक्र अदा करो	ताकि तुम	और दिल (जमा)	और आँखें	कान	तुम्हारे लिए	और उस ने बनाया	
أَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرَاتٍ فِي جَوْ السَّمَاءِ مَا يُمَسِّكُهُنَّ								
थामता उन्हें	नहीं	आस्मान की फ़िज़ा	में	हुक्म के पाबन्द	परिन्दा	तरफ़	क्या उन्होंने ने नहीं देखा	
إِلَّا اللَّهُ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٧٩﴾								
79	ईमान लाते हैं	लोगों के लिए	निशानियां	उस	में	बेशक अल्लाह	सिवाए	

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ بُيُوتِكُمْ سَكَنًا وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُودِ										
खालें	से	तुम्हारे लिए	और बनाया	सुकूनत (रहने) की जगह	तुम्हारे घरों	से	तुम्हारे लिए	बनाया	और अल्लाह	
الْأَنْعَامِ بُيُوتًا تَسْتَخِفُّونَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ إِقَامَتِكُمْ										
अपना कियाम		और दिन	अपने कूच के दिन		तुम हल्का पाते हो उन्हें	घर (डेरें)	चौपाए			
وَمِنْ أَصْوَابِهَا وَأَوْبَارِهَا وَأَشْعَارِهَا أَثَا وَمَتَاعًا										
और बरतने की चीज़ें	सामान	और उन के बाल		और उन की पशम	उन की ऊन	और से				
إِلَى حِينٍ ﴿٨٠﴾ وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِمَّا خَلَقَ ظِلَالًا وَجَعَلَ لَكُمْ										
तुम्हारे लिए	और बनाया	साए	उस ने पैदा किया	उस से जो	तुम्हारे लिए	बनाया	और अल्लाह	80	एक वक्रत (मुद्दत)	तक
مِّنَ الْجِبَالِ أَكْنَانًا وَجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيلَ تَقِيَكُمُ الْحَرَّ										
गर्मी	बचाते हैं तुम्हें	कुर्तें	तुम्हारे लिए	और बनाया	पनाह गाहें	पहाड़ों	से			
وَسَرَابِيلَ تَقِيَكُمُ بِأَسْكُمُ كَذَلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ										
तुम पर	अपनी नेमत	वह मुकम्मिल करता है	उसी तरह	तुम्हारी लड़ाई	बचाते हैं तुम्हें	और कुर्तें				
لَعَلَّكُمْ تُسَلِّمُونَ ﴿٨١﴾ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلْغُ										
पहुँचा देना	तुम पर	तो इस के सिवा नहीं	वह फिर जाएं	फिर अगर	81	फरमांवरदार बनो	ताकि तुम			
الْمُبِينِ ﴿٨٢﴾ يَعْرِفُونَ نِعْمَتَ اللَّهِ ثُمَّ يُنْكِرُونَهَا وَأَكْثَرُهُمُ										
और उन के अक्सर	मुन्किर हो जाते हैं उस के	फिर	अल्लाह	नेमत	वह पहचानते हैं	82	खोल कर (साफ साफ)			
الْكٰفِرُونَ ﴿٨٣﴾ وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ثُمَّ لَا يُؤَدُّنَ										
न इजाज़त दी जाएगी	फिर	एक गवाह	उम्मत	हर	से	हम उठाएंगे	और जिस दिन	83	काफिर (जमा) नाशुक्रें	
لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٨٤﴾ وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ										
वह लोग जो	देखेंगे	और जब	84	उज़र कुबूल किए जाएंगे	और न वह	उन्होंने ने कुफ़ क्या (काफिर)	वह लोग			
ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٨٥﴾										
85	मोहलत दी जाएगी	वह	और न	उन से	फिर न हल्का किया जाएगा	अज़ाब	उन्होंने ने जुल्म किया (ज़ालिम)			
وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ أَشْرَكُوا شُرَكَاءَهُمْ قَالُوا رَبَّنَا هَؤُلَاءِ										
यह हैं	ऐ हमारे रब	वह कहेंगे	अपने शरीक	उन्होंने ने शिर्क किया (मुशरिक)	वह लोग जो	देखेंगे	और जब			
شُرَكَائُنَا الَّذِينَ كُنَّا نَدْعُوا مِنْ دُونِكَ فَأَلْقُوا										
फिर वह डालेंगे	तेरे सिवा	हम पुकारते थे		वह जो कि	हमारे शरीक					
إِلَيْهِمُ الْقَوْلَ إِنَّكُمْ لَكٰذِبُونَ ﴿٨٦﴾ وَأَلْقُوا إِلَى اللَّهِ										
अल्लाह	तरफ (सामने)	और वह डालेंगे	86	अलबलता तुम झूटे	वेशक तुम	कौल	उन की तरफ			
يَوْمَئِذٍ السَّلَامِ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٨٧﴾										
87	इफतिरा करते (झूट घड़ते थे)		जो	उन से	और गुम हो जाएगा	आजिज़ी	उस दिन			

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए बनाया तुम्हारे घरों को रहने की जगह, और तुम्हारे लिए चौपाए की खालों से डेरें बनाए, जिन्हें तुम हल्का फुलका पाते हो अपने कूच के दिन और अपने कियाम के दिन, और उन की ऊन, और पशम, और उन के बालों से (बनाए) सामान और बरतने की चीज़ें एक मुद्दते मुक़ररा तक। (80)

और अल्लाह ने जो पैदा किया उस से तुम्हारे लिए साये बनाए, और तुम्हारे लिए बनाई पहाड़ों से पनाह गाहें, और उस ने तुम्हारे लिए कुर्तें बनाए जो तुम्हारे लिए गर्मी का बचाओ हैं और कुर्तें (जिरहें हैं) जो तुम्हारे लिए बचाओ हैं तुम्हारी लड़ाई में, उसी तरह वह तुम पर अपनी नेमत मुकम्मिल करता है ताकि तुम फरमांवरदार बनो। (81) फिर अगर वह फिर जाएं तो उस के सिवा नहीं कि तुम पर (तुम्हारा ज़िम्मा) सिर्फ खोल कर पहुँचा देना है। (82)

वह अल्लाह की नेमत पहचानते हैं, फिर उस के मुन्किर हो जाते हैं, और उन में से अक्सर नाशुक्रें हैं। (83) और जिस दिन हर उम्मत से हम एक गवाह उठाएंगे फिर न इजाज़त दी जाएगी काफिरों को और न उन से उज़र कुबूल किए जाएंगे। (84)

और (याद करो) जब ज़ालिम अज़ाब देखेंगे फिर न उन से (अज़ाब) हल्का किया जाएगा और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। (85) और (याद करो) जब मुशरिक अपने शरीकों को देखेंगे तो वह कहेंगे ऐ हमारे रब! यह हैं हमारे शरीक जिन्हें हम तेरे सिवा पुकारते थे, फिर वह (उन के शरीक) उन की तरफ डालेंगे कौल (जवाब देंगे कि) वेशक तुम झूटे हो। (86)

और वह उस दिन अल्लाह के सामने आजिज़ी (का पैगाम) डालेंगे और उन से गुम हो जाएगा (भूल जाएंगे) जो वह झूट घड़ते थे। (87)

और जिन लोगों ने कुफ़ किया और अल्लाह की राह से रोका हम उन के लिए अज़ाब पर अज़ाब बढ़ादेंगे, क्योंकि वह फ़साद करते थे। (88)

और जिस दिन हम उठाएंगे हर उम्मत में उन पर उन ही में से एक गवाह, और हम आप (स) को इन सब पर गवाह लाएंगे, और हम ने आप (स) पर कुरआन नाज़िल किया, हर शौ का मुफ़सल वयान, और हिदायत ओ रहमत, और खुशख़बरी मुसलमानों के लिए। (89)

वेशक अल्लाह अदल ओ एहसान का हुक्म देता है और रिशते दारों को (उन के हुक्क) देने का और मना करता है वेहयाई से और नाशाइस्ता कामों से और सरकशी से, तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम ध्यान करो। (90)

और जब तुम (पुख़्ता) अहद करलो तो अल्लाह का अहद पूरा करो, और कस्में पुख़्ता करने के बाद उन को न तोड़ो, और तहकीक़ तुम ने अपने ऊपर अल्लाह को ज़ामिन बनाया है, वेशक अल्लाह जानता है जो तुम करते हो। (91)

और तुम उस औरत की तरह न होजाना जिस ने अपना सूत मज़बूत करने (कातने) के बाद तुकड़े तुकड़े तोड़ डाला, तुम बनाते हो अपनी कसमों को अपने दरमियान दख़ल देने का बहाना कि एक गिरोह दूसरे गिरोह पर ग़ालिब आजाए, उस के सिवा नहीं कि अल्लाह तुम्हें आज़माता है, और वह रोज़े क़ियामत तुम पर ज़रूर ज़ाहिर करदेगा जिस में तुम इख़तिलाफ़ करते थे। (92)

और अगर अल्लाह चाहता तो अलबत्ता तुम्हें एक उम्मत बनादेता, लेकिन वह गुमराह करता है जिस को वह चाहता है, और हिदायत देता है जिस को वह चाहता है, और तुम से उस की वावत ज़रूर पूछा जाएगा जो तुम करते थे। (93)

الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ زِدْنَاهُمْ عَذَابًا						
अज़ाब	हम बढ़ादेंगे	अल्लाह की राह	से	और रोका	उन्होंने ने कुफ़ किया	वह लोग जो
فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يُفْسِدُونَ ﴿٨٨﴾ وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي						
में	हम उठाएंगे	और जिस दिन	88	वह फ़साद करते थे	क्योंकि	अज़ाब पर
كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِمْ مِنْ أَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا						
गवाह	आप (स) को	और हम लाएंगे	उन ही में से	उन पर	एक गवाह	हर उम्मत
عَلَى هَؤُلَاءِ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تَبَيَانًا لِكُلِّ شَيْءٍ						
हर शौ का	(मुफ़सल) वयान	किताब (कुरआन)	आप पर	और हम ने नाज़िल की	इन सब पर	
وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَى لِلْمُسْلِمِينَ ﴿٨٩﴾ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ						
हुक्म देता है	वेशक अल्लाह	89	मुसलमानों के लिए	और खुशख़बरी	और रहमत	और हिदायत
بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَايَ ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ						
से	और मना करता है	रिशते दार	और देना	और एहसान	अदल का	
الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٩٠﴾						
90	ध्यान करो	ताकि तुम	तुम्हें नसीहत करता है	और सरकशी	और नाशाइस्ता	वेहयाई
وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا عَاهَدْتُمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْأَيْمَانَ						
कस्में	और न तोड़ो	तुम अहद करो	जब	अल्लाह का अहद	और पूरा करो	
بَعْدَ تَوْكِيدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ عَلَيْكُمْ كَفِيلًا إِنَّ اللَّهَ						
वेशक अल्लाह	ज़ामिन	अपने ऊपर	अल्लाह	और तहकीक़ तुम ने बनाया	उन को पुख़्ता करना	बाद
يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٩١﴾ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَقَظَتْ غَزْلَهَا						
अपना सूत	उस ने तोड़ा	उस औरत की तरह	और तुम न हो जाओ	91	जो तुम करते हो	जानता है
مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ أَنْكَأَ تَتَّخِذُونَ أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ أَنْ						
कि	अपने दरमियान	दख़ल का बहाना	अपनी कस्में	तुम बनाते हो	तुकड़े तुकड़े (मज़बूती)	बाद
تَكُونُوا أُمَّةً هِيَ أَرْبَىٰ مِنْ أُمَّةٍ إِنَّمَا يَبْلُوكُمُ اللَّهُ بِهِ وَلِيَبَيِّنَنَّ						
और वह ज़रूर ज़ाहिर करेगा	उस से	अल्लाह	आज़माता है तुम्हें	उस के सिवा नहीं	दूसरा गिरोह	से
बड़ा हुआ (ग़ालिब)	वह	एक गिरोह	हो जाए			
لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٩٢﴾ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ						
अल्लाह चाहता	और अगर	92	इख़तिलाफ़ करते थे तुम	उस में	तुम थे	जो
रोज़े क़ियामत	तुम पर					
لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ						
जिसे वह चाहता है	गुमराह करता है	और लेकिन	एक उम्मत	तो अलबत्ता बना देता तुम्हें		
وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَلَسُّلْنًا عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾						
93	तुम करते थे	उस की वावत	और तुम से ज़रूर पूछा जाएगा	जिस को वह चाहता है	और हिदायत देता है	

۱۲  
ع  
۱۸



وَلَا تَتَّخِذُوا أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌ					
कोई कदम	कि फिसले	अपने दरमियान	दखल का बहाना	अपनी कस्में	और तुम न बनाओ
بَعْدَ ثُبُوتِهَا وَتَذُوقُوا السُّوَاءَ بِمَا صَدَدْتُمْ عَنِ سَبِيلِ اللَّهِ					
अल्लाह का रास्ता	से	रोका तुम ने	इस लिए कि	बुराई (बवाल)	और तुम चखो अपने जम जाने के बाद
وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٩٤﴾ وَلَا تَشْتَرُوا بِعَهْدِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا					
थोड़ा	मोल	अल्लाह के अहद के बदले	और तुम न लो	94	बड़ा अज़ाब और तुम्हारे लिए
إِنَّمَا عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٩٥﴾ مَا عِنْدَكُمْ					
जो तुम्हारे पास	95	तुम जानो	अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर वही अल्लाह के हाँ वेशक जो
يَنْفَعُ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ بَاقٍ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِينَ صَبَرُوا					
उन्होंने ने सबर किया	वह लोग जो	और हम ज़रूर देंगे	बाकी रहने वाला	अल्लाह के पास	और जो ख़तम हो जाता है
أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا					
कोई नेक	अमल किया	जो - जिस	96	वह करते थे	जो उस से बेहतर उन का अजर
مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً					
पाकीज़ा	ज़िन्दगी	तो हम उसे ज़रूर ज़िन्दगी देंगे	मोमिन	जबकि वह	औरत या मर्द हो
وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٧﴾ فَاِذَا					
पस जब	97	वह करते थे	जो	उस से बहुत बेहतर	उन का अजर और हम ज़रूर उन्हें देंगे
قَرَأَتِ الْقُرْآنَ فَأَسْتَعِذُّ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٩٨﴾					
98	मर्दूद	शैतान	से	अल्लाह की	तो पनाह लो कुरआन तुम पढ़ो
إِنَّهُ لَيْسَ لَهُ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ					
और अपने रब पर	ईमान लाए	वह लोग जो	पर	कोई ज़ोर	उस के लिए नहीं वेशक वह
يَتَوَكَّلُونَ ﴿٩٩﴾ إِنَّمَا سُلْطٰنُهُ عَلَى الَّذِينَ يَتَوَلَّوْنَهُ وَالَّذِينَ					
और वह लोग जो	उस को दोस्त बनाते हैं	वह लोग जो	पर	उस का ज़ोर	इस के सिवा नहीं 99 वह भरोसा करते हैं
هُمْ بِهِ مُشْرِكُونَ ﴿١٠٠﴾ وَإِذَا بَدَلْنَا آيَةً مَّكَانَ آيَةٍ وَاللَّهُ					
और अल्लाह	दूसरा हुकम	जगह	कोई हुकम	हम बदलते हैं	और जब 100 शरीक ठहराते हैं उस (अल्लाह) के साथ वह
أَعْلَمُ بِمَا يُنَزَّلُ قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مُفْتَرٍ بَلْ أَكْثَرُهُمْ					
उन में अक्सर	बल्कि	तुम घड़ लेते हो	तू	इस के सिवा नहीं	वह कहते हैं वह नाज़िल करता है उस को खूब जानता है
لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٠١﴾ قُلْ نَزَّلَهُ رُوحُ الْقُدُسِ مِنْ رَبِّكَ بِالْحَقِّ					
हक के साथ	तुम्हारा रब	से	रूहुल कुदुस (जिब्राईल अ)	इसे उतारा है	आप (स) कहें 101 इल्म नहीं रखते
لِيُثَبِّتَ الَّذِينَ آمَنُوا وَهُدًى وَبُشْرَىٰ لِّلْمُسْلِمِينَ ﴿١٠٢﴾					
102	मुसलमानों के लिए	और खुशखबरी	और हिदायत	ईमान लाए (मोमिन)	वह लोग जो ताकि साबित कदम करे

और अपनी कसमों को न बनाओ अपने दरमियान दखल का बहाना कि कोई कदम अपने जम जाने के बाद फिसल जाए और तुम उस के नतीजे में बवाल चखो कि तुम ने रोका अल्लाह के रास्ते से, और तुम्हारे लिए बड़ा अज़ाब है। (94) और तुम अल्लाह के अहद के बदले न लो थोड़ा मोल (माले दुनिया) वेशक जो अल्लाह के पास है वह (हमेशा) बाकी रहने वाला है। अगर तुम जानो तो वही तुम्हारे लिए बेहतर है। (95) जो तुम्हारे पास है वह ख़तम होजाता है और जो अल्लाह के पास है वह (हमेशा) बाकी रहने वाला है। और जिन लोगों ने सबर किया हम ज़रूर उन्हें उन का अजर देंगे उस से बहुत बेहतर जो वह (आमाल) करते थे। (96) जिस ने कोई नेक अमल किया वह मर्द हो या औरत, जब कि हो वह मोमिन, तो हम ज़रूर उसे (दुनिया में) पाकीज़ा ज़िन्दगी देंगे और (आखिरत) में उन का अगर ज़रूर उस से बेहतर देंगे, जो (आमाल) वह करते थे। (97) पस जब तुम कुरआन पढ़ो तो अल्लाह की पनाह लो शैतान मर्दूद से। (98) वेशक उस का कोई ज़ोर नहीं उन लोगों पर जो ईमान लाए और वह अपने रब पर भरोसा करते हैं। (99) इस के सिवा नहीं कि उस का ज़ोर उन लोगों पर है जो उस को दोस्त बनाते हैं और जो लोग अल्लाह के साथ शरीक ठहराते हैं। (100) और जब हम कोई हुकम किसी दूसरे हुकम की जगह बदलते हैं, और अल्लाह खूब जानता है जो वह नाज़िल करता है, वह (काफ़िर) कहते हैं इस के सिवा नहीं कि तुम (खुद) घड़ लेते हो, (नहीं) बल्कि उन में अक्सर इल्म नहीं रखते। (101) आप (स) कह दें कि उसे जिब्राइल (अ) अमीन ने तुम्हारे रब की तरफ़ से उतारा है हक के साथ ताकि मोमिनों को साबित कदम रखे, और मुसलमानों के लिए हिदायत ओ खुशखबरी है। (102)

और हम खूब जानते हैं कि वह कहते हैं कि इस के सिवा नहीं कि उसे एक आदमी सिखाता है, जिस की तरफ वह निसबत करते हैं उस की ज़बान अज़मी (ग़ैर अरबी) है, और यह वाज़ेह अरबी ज़बान है। (103)

वेशक जो लोग ईमान नहीं लाते अल्लाह की आयतों पर, अल्लाह उन्हें हिदायत नहीं देता, और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (104)

इस के सिवा नहीं कि वही लोग झूट बुहतान बान्धते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं रखते, और वही लोग झूटे हैं। (105)

जो अल्लाह का मुन्किर हुआ उस (अल्लाह) पर ईमान के बाद, सिवाए उस के जो मजबूर किया गया हो, जब कि उस का दिल ईमान पर मुत्मइन हो, बल्कि जो कुफ़ के लिए सीना कुशादा करे (मन मरज़ी से कुफ़ करे) तो उन पर अल्लाह का ग़ज़ब है, और उन के लिए बड़ा अज़ाब है। (106)

यह इस लिए है कि उन्होंने ने दुनिया की जिन्दगी को आख़िरत पर पसन्द किया, और यह कि अल्लाह हिदायत नहीं देता काफ़िर लोगों को। (107)

यही लोग हैं अल्लाह ने मुहर लगादी है जिन के दिलों पर, और उन के कानों पर, और उन की आँखों पर, और यही लोग गाफ़िल हैं। (108)

कुछ शक नहीं कि यही लोग आख़िरत में ख़सरा (नुक्सान) उठाने वाले हैं। (109)

फिर वेशक तुम्हारा रब उन लोगों के लिए जिन्होंने ने हिज़त की, उस के बाद कि वह सताए गए और फिर उन्होंने ने जिहाद किया, और सब्र किया, वेशक तुम्हारा रब उस के बाद बख़शने वाला निहायत मेहरबान है। (110)

जिस दिन हर शख्स अपनी (ही) तरफ़ से झगड़ा करता आएगा, और हर शख्स को पूरा दिया जाएगा जो उस ने किया और उन पर जुल्म न किया जाएगा। (111)

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّهُمْ يَقُولُونَ إِنَّمَا يُعَلِّمُهُ بَشَرٌ لِّسَانُ الَّذِي							
वह जो कि	ज़बान	एक आदमी	उस को सिखाता है	इस के सिवा नहीं	वह कहते हैं	कि वह	और हम खूब जानते हैं
يُلْحِدُونَ إِلَيْهِ أَعْجَمِيٌّ وَهَذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُّبِينٌ ﴿١٠٣﴾							
103	वाज़ेह	अरबी	ज़बान	और यह	अज़मी	उस की तरफ़	कजराही (निस्वत) करते हैं
إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ لَا يَهْدِيهِمُ اللَّهُ وَلَهُمْ							
और उन के लिए	अल्लाह	हिदायत नहीं देता	अल्लाह की आयतों पर	ईमान नहीं लाते	वेशक जो		
عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠٤﴾ إِنَّمَا يَفْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ							
जो ईमान नहीं लाते	वह लोग	झूट	बुहतान बान्धता है	इस के सिवा नहीं	104		दर्दनाक अज़ाब
بِآيَاتِ اللَّهِ وَأُولَئِكَ هُمُ الْكَاذِبُونَ ﴿١٠٥﴾ مَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِ							
बाद	अल्लाह का	मुन्किर हुआ	जो	105	झूटे	वह	और यही लोग
إِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ أُكْرِهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلَكِنْ							
और लेकिन (बल्कि)	ईमान पर	मुत्मइन	जब कि उस का दिल	मजबूर किया गया	जो	सिवाए	उस के ईमान
مَنْ شَرَحَ بِالْكَفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللَّهِ وَلَهُمْ							
और उन के लिए	अल्लाह का	ग़ज़ब	तो उन पर	सीना	कुफ़ के लिए	कुशादा करे	जो
عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠٦﴾ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ اسْتَحَبُّوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا							
दुनिया की जिन्दगी	उन्होंने ने पसन्द किया	इस लिए कि वह	यह	106			बड़ा अज़ाब
عَلَى الْآخِرَةِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿١٠٧﴾							
107	काफ़िर (जमा)	लोग	हिदायत नहीं देता	अल्लाह	और यह कि	आख़िरत	पर
أُولَئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ وَسَمِعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ							
और उन की आँख	और उन के कान	उन के दिल	पर	अल्लाह ने मुहर लगादी	वह जो कि	यही लोग	
وَأُولَئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴿١٠٨﴾ لَا جَرَمَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمْ							
वह	आख़िरत में	कि वह	कुछ शक नहीं	108	गाफ़िल (जमा)	वह	और यही लोग
الْخٰسِرُونَ ﴿١٠٩﴾ ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ هَاجَرُوا مِنَّا							
उस के बाद	उन्होंने ने हिज़त की	उन लोगों के लिए	तुम्हारा रब	वेशक	फिर	109	ख़सरा उठाने वाले
مَا فِتْنُوا ثُمَّ جَاهِدُوا وَصَبَرُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا							
उस के बाद	तुम्हारा रब	वेशक	उन्होंने ने सब्र किया	उन्होंने ने जिहाद किया	फिर	सताए गए	कि
لَعَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١١٠﴾ يَوْمَ تَأْتِي كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ							
से	झगड़ा करता	शख्स	हर	आएगा	जिस दिन	110	निहायत मेहरबान
نَفْسِهَا وَتُؤْفَىٰ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١١١﴾							
111	जुल्म न किए जाएंगे	और वह	उस ने किया	जो	शख्स	हर	और पूरा दिया जाएगा
							अपनी तरफ़

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ آمِنَةً مُطْمَئِنَّةً						
मुत्मइन	वेखौफ़	वह थी	एक बस्ती	एक मिसाल	और बयान की अल्लाह ने	
يَأْتِيهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِأَنْعَمِ						
नेमतों से	फिर उस ने नाशुकी की	हर जगह	से	बाफरागत	उस का रिज़ूक	उस के पास आता था
اللَّهِ فَآذَقَهَا اللَّهُ لِبَاسَ الْجُوعِ وَالْخَوْفِ بِمَا						
उस के बदले जो	और खौफ़	भूक	लिबास	अल्लाह	तो चखाया उस को	अल्लाह
كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿١١٢﴾ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوهُ						
सो उन्होंने ने उसे झुटलाया	उन में से	एक रसूल	और वेशक उन के पास आया	112	वह करते थे	
فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١١٣﴾ فَكُلُوا مِمَّا						
उस से जो	पस तुम खाओ	113	ज़ालिम (जमा)	और वह	अज़ाब	तो उन्हें आ पकड़ा
رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا وَاشْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ إِنَّ						
अगर	अल्लाह की नेमत	और शुक्र करो	पाक	हलाल	तुम्हें दिया अल्लाह ने	
كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿١١٤﴾ إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ						
सुर्दार	तुम पर	हराम किया	इस के सिवा नहीं	114	तुम इबादत करते हो	सिर्फ़ उस की तुम हो
وَالدَّمِ وَلَحْمِ الْخِنزِيرِ وَمَا أَهَلَ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ فَمَنْ						
पस जो	उस पर	अल्लाह के अलावा	पुकारा जाए	और जो	और खिनज़ीर का गोशत	और खून
أَصْطَرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١١٥﴾						
115	निहायत मेहरबान	वख़शने वाला	तो वेशक अल्लाह	और न हद से बढ़ने वाला	न सरकशी करने वाला	लाचार हुआ
وَلَا تَقُولُوا لِمَا تَصِفُ أَلْسِنَتِكُمُ الْكُذِبَ هَذَا						
यह	झूट	तुम्हारी ज़बानें	बयान करती है	वह जो	और तुम न कहो	
حَلَالٌ وَهَذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ الْكُذِبَ إِنَّ						
वेशक	झूट	अल्लाह	पर	कि बुहतान बान्धो	हराम	और यह हलाल
الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكُذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ﴿١١٦﴾						
116	फ़लाह न पाएंगे	झूट	अल्लाह	पर	बुहतान बान्धते हैं	वह लोग जो
مَتَاعٌ قَلِيلٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١١٧﴾ وَعَلَى						
और पर	117	दर्दनाक	अज़ाब	और उन के लिए	थोड़ा	फ़ाइदा
الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلَ						
इस से कब्ल	तुम पर (से)	जो हम ने बयान किया	हम ने हराम किया	जो लोग यहूदी हुए (यहूदी)		
وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٨﴾						
118	जुल्म करते	अपने ऊपर	वह थे	बल्कि	और नहीं हम ने जुल्म किया उन पर	

और अल्लाह ने एक बस्ती की मिसाल बयान की, वह मुत्मइन वेखौफ़ थी, हर जगह से उस के पास रिज़ूक बाफरागत आ जाता था, फिर उस ने नाशुकी की, अल्लाह की नेमतों की, तो अल्लाह ने उस के बदले जो वह करते थे उसको भूक और खौफ़ के लिबास का मज़ा चखाया (भूक और खौफ़ उनका लिबादा बन गया)। (112) और वेशक उन के पास उन ही में से एक रसूल आया, सो उन्होंने उसे झुटलाया, तो अज़ाब ने उन्हें आ पकड़ा और वह ज़ालिम थे। (113) पस जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से हलाल और पाक खाओ, और अल्लाह की नेमत का शुक्र करो, अगर तुम उस की इबादत करते हो। (114) उस के सिवा नहीं कि अल्लाह ने तुम पर हराम किया है सुर्दार और खून, और खिनज़ीर का गोशत और जिस पर अल्लाह के अलावा (किसी और) का नाम पुकारा जाए, पस जो लाचार हो जाए न सरकशी करने वाला हो, और न हद से बढ़ने वाला तो वेशक अल्लाह वख़शने वाला निहायत मेहरबान है। (115) और न कहो तुम वह जो तुम्हारी ज़बानें झूट बयान करती हैं कि यह हलाल है और यह हराम, कि तुम अल्लाह पर झूट बुहतान बान्धो, वेशक जो लोग अल्लाह पर झूट बुहतान बान्धते हैं वह फ़लाह (दो ज़हान में कामयाबी) न पाएंगे। (116) (उन के लिए) फ़ाइदा थोड़ा है, और उन के लिए अज़ाब दर्दनाक है। (117) और यहूदियों पर हम ने हराम किया था जो उस से कब्ल हम ने तुम से बयान किया है, और हम ने उन पर जुल्म नहीं किया, बल्कि वह अपने ऊपर जुल्म करते थे। (118)

फिर वेशक तुम्हारा रब उन लोगों के लिए जिन्होंने ने नादानी से बुरे अमल किए, फिर उस के बाद उन्होंने ने तौबा की और इसलाह कर ली, वेशक तुम्हारा रब उस के बाद बख्शने वाला, निहायत मेहरवान है। (119)

वेशक इब्राहीम (अ) इमाम थे, अल्लाह के फरमावरदार, यक रख (सब को छोड़ कर एक अल्लाह के हो रहने वाले) और वह मुश्रिकों में से न थे, (120)

उस की नेमतों के शुक्रगुज़ार, उस (अल्लाह ने) उन्हें चुन लिया, और उन की रहनुमाई की सीधी राह की तरफ। (121)

और हम ने उन्हें दुनिया में भलाई दी, और वेशक वह आखिरत में नेकोकारों में से है, (122)

फिर हम ने तुम्हारी तरफ वहि भेजी कि हर एक से जुदा हो रहने वाले (यक रख) इब्राहीम (अ) की पैरवी करो और वह मुश्रिकों में से न थे। (123)

इस के सिवा नहीं कि हफ़ता उन लोगों पर (अज़मत का दिन) मुकर्रर किया गया जिन्होंने ने उस में इख्तिलाफ़ किया था, और वेशक तुम्हारा रब अलबत्ता कियामत के दिन उन के दरमियान उस (बात) में फ़ैसला कर देगा जिस में वह इख्तिलाफ़ करते थे। (124)

तुम अपने रब के रास्ते की तरफ बुलाओ दानाई से, और अच्छी नसीहत से, और उन से ऐसे वहस करो जो सब से बेहतर हो, वेशक तुम्हारा रब उस को खूब जानने वाला है जो अल्लाह के रास्ते से गुमराह हुआ, और वह राह पाने वालों को खूब जानने वाला है। (125)

और अगर तुम तकलीफ़ दो तो ऐसी ही तकलीफ़ दो, जैसी तुम्हें तकलीफ़ दी गई थी, और अगर तुम सब्र करो तो यह सब्र करने वालों के लिए बेहतर है। (126)

और सब्र करो और तुम्हारा सब्र अल्लाह ही की मदद से है। और ग़म न खाओ उन पर, और वह जो फ़रेब करते हैं उस से तंगी में (दिल तंग) न हो। (127)

वेशक अल्लाह उन लोगो कें साथ है जिन्होंने ने परहेज़गारी की, और वह लोग जो नेकोकार हैं। (128)

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوا

उन्होंने ने तौबा की	फिर	नादानी से	बुरे	अमल किए	उन लोगों के लिए जो	तुम्हारा रब	वेशक	फिर
---------------------	-----	-----------	------	---------	--------------------	-------------	------	-----

مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ (119)

119	निहायत मेहरवान	बख्शने वाला	उस के बाद	तुम्हारा रब	वेशक	और उन्होंने ने इसलाह की	उस के बाद
-----	----------------	-------------	-----------	-------------	------	-------------------------	-----------

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِلَّهِ حَنِيفًا وَلَمْ يَكُ مِنَ

से	और न थे	यक रख	अल्लाह के	फरमावरदार	एक जमाअत (इमाम)	थे	इब्राहीम (अ)	वेशक
----	---------	-------	-----------	-----------	-----------------	----	--------------	------

الْمُشْرِكِينَ (120) شَاكِرًا لِأَنْعَمِهِ اجْتَبَاهُ وَهَدَاهُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ (121)

121	सीधी राह	तरफ	और उस की रहनुमाई की	उस ने उसे चुन लिया	उस की नेमतों के लिए	शुक्र गुज़ार	120	मुश्रिक (जमा)
-----	----------	-----	---------------------	--------------------	---------------------	--------------	-----	---------------

وَاتَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَآتَاهُ فِي الْآخِرَةِ لَمَنِ

अलबत्ता - से	आखिरत में	और वेशक वह	भलाई	दुनिया में	और उस को दी हम ने
--------------	-----------	------------	------	------------	-------------------

الضَّالِّحِينَ (122) ثُمَّ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنْ اتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا

यक रख	इब्राहीम (अ)	दीन	पैरवी करो तुम	कि	तुम्हारी तरफ	वहि भेजी हम ने	फिर	122	नेकोकार (जमा)
-------	--------------	-----	---------------	----	--------------	----------------	-----	-----	---------------

وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ (123) إِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِينَ

वह लोग जो	पर	हफ़ते का दिन	मुकर्रर किया गया	उस के सिवा नहीं	123	मुश्रिक (जमा)	से	और न थे वह
-----------	----	--------------	------------------	-----------------	-----	---------------	----	------------

اِخْتَلَفُوا فِيهِ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا

उस में जो	रोज़े कियामत	उन के दरमियान	अलबत्ता फ़ैसला करेगा	तुम्हारा रब	और वेशक	उस में	उन्होंने ने इख्तिलाफ़ किया
-----------	--------------	---------------	----------------------	-------------	---------	--------	----------------------------

كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ (124) أَدْعُ إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحُكْمَةِ

हिक्मत (दानाई) से	अपना रब	रास्ता	तरफ	तुम बुलाओ	124	इख्तिलाफ़ करते	उस में	वह थे
-------------------	---------	--------	-----	-----------	-----	----------------	--------	-------

وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِلَا تِي هِيَ أَحْسَنُ إِنَّ

वेशक	सब से बेहतर	वह	ऐसे जो	और वहस करो उन से	अच्छी	और नसीहत
------	-------------	----	--------	------------------	-------	----------

رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ (125)

125	राह पाने वालों को	खूब जानने वाला	और वह	उस का रास्ता	से	गुमराह हुआ	उस को जो	खूब जानने वाला	वह	तुम्हारा रब
-----	-------------------	----------------	-------	--------------	----	------------	----------	----------------	----	-------------

وَأَنْ عَاقِبْتُمْ فَعَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا عُوقِبْتُمْ بِهِ وَلَئِنْ

और अगर	उस से	जो तुम्हें तकलीफ़ दी गई	ऐसी ही	तो उन्हें तकलीफ़ दो	तुम तकलीफ़ दो	और अगर
--------	-------	-------------------------	--------	---------------------	---------------	--------

صَبْرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِلصَّابِرِينَ (126) وَأَصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ

अल्लाह की मदद से	मगर	तुम्हारा सब्र	और नहीं	और सब्र करो	126	सब्र करने वालों के लिए	बेहतर	तो वह	तुम सब्र करो
------------------	-----	---------------	---------	-------------	-----	------------------------	-------	-------	--------------

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِي ضَيْقٍ مِمَّا يَمْكُرُونَ (127)

127	वह फ़रेब करते हैं	उस से जो	तंगी	में	और न हो	उन पर	और ग़म न खाओ
-----	-------------------	----------	------	-----	---------	-------	--------------

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا وَالَّذِينَ هُمْ مُحْسِنُونَ (128)

128	नेकोकार (जमा)	वह	और वह लोग जो	उन्होंने ने परहेज़गारी की	वह लोग जो	साथ	वेशक अल्लाह
-----	---------------	----	--------------	---------------------------	-----------	-----	-------------

<p>آيَاتُهَا ۱۱۱ ﴿۱۷﴾ سُورَةُ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿۱۲﴾ زُكُوعَاتُهَا ۱۲</p>							
12 रक़आत		(17) सूरह बनी इस्राईल औलादे याक़ूब (अ)				111 आयात	
<p>بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ</p>							
<p>अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है</p>							
<p>سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَا الَّذِي بَرَكْنَا حَوْلَهُ لِنُرِيَهُ مِنَ الْحَرَامِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿۱﴾ وَآتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ إِلَّا تَتَّخِذُوا مِنْ دُونِي وَكَيْلًا ﴿۲﴾ ذُرِّيَّةً مِّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ إِنَّهُ كَانَ عَبْدًا شَكُورًا ﴿۳﴾ وَقَضَيْنَا إِلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ فِي الْكِتَابِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْأَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيرًا ﴿۴﴾ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ أُولَاهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَا أُولِي بَأْسٍ شَدِيدٍ فَجَاسُوا خِلَالَ الدِّيَارِ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُولًا ﴿۵﴾ ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَأَمْدَدْنَاكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَجَعَلْنَاكُمْ أَكْثَرَ نَفِيرًا ﴿۶﴾ إِنَّ أَحْسَنَكُمْ أَحْسَنُكُمْ لِأَنْفُسِكُمْ ۖ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا ﴿۷﴾ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ لِيَسُوءَ وُجُوهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَلِيُتَبِّرُوا مَا عَلَوْا تَتْبِيرًا ﴿۷﴾</p>							
पाक	वह जो	ले गया	अपने बन्दे को	रातों रात	से	मस्जिद	
हराम	तक	मस्जिदे अक़सा	जिस को	वरक़त दी हम ने	उस के इर्द गिर्द	ताकि दिखा दें हम उसको	से
अपनी निशानियां	वेशक वह	वह	सुनने वाला	देखने वाला	1	और हम ने दी	मूसा
और हम ने बनाया उसे	हिदायत	बनी इस्राईल के लिए	कि न ठहराओ तुम	मेरे सिवा	कारसाज़	2	
औलाद	जो - जिस	हम ने सवार किया	नूह (अ) के साथ	वेशक वह था	बन्दा	शुक्र गुज़ार	3
साफ़ कह दिया हम ने	तरफ़ - को	बनी इस्राईल	किताब	अलबत्ता तुम फ़साद करोगे ज़रूर	में	ज़मीन	
दो मरतबा	और तुम ज़रूर ज़ोर पकड़ोगे	बड़ा ज़ोर	4	पस जब आया	वादा	दो में से पहला	हम ने भेजे
तुम पर	अपने बन्दे	लड़ाई वाले	सख़्त	तुम पड़े	वह घुस	शहरों के अन्दर	
और था	एक वादा	पूरा होने वाला	5	फिर हम ने फेर दी	तुम्हारे लिए	बारी	उन पर
और हम ने तुम्हें मदद दी	मालों से	और बेटे	और हम ने तुम्हें कर दिया	ज़ियादा	जत्था (लशकर)	6	
अगर	तुम ने भलाई की	तुम ने भलाई की	अपनी जानों के लिए	और अगर	तुम ने बुराई की	तो उन के लिए	
जब फिर आया	दूसरा वादा	कि वह बिगाड़ दें	तुम्हारे चहरे	और वह घुस जाएं	7		
मस्जिद	जैसे	वह घुसे उस में	पहली बार	और बरबाद कर डालें	जहां ग़ल्बा पाएं वह	पूरी तरह बरबाद	

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है पाक है वह, जो अपने बन्दे को रातों रात ले गया मस्जिदे हराम (खाना क़अबा से) मस्जिदे अक़सा (बैतुल मुक़द्दस) तक जिस के इर्द गिर्द (अतराफ़) को हम ने बरक़त दी है, ताकि हम उसे अपनी निशानियां दिखा दें, वेशक वह सुनने वाला देखने वाला है। (1)

और हम ने मूसा (अ) को किताब दी, और उसे बनी इस्राईल के लिए हिदायत बनाया कि तुम मेरे सिवा (किसी को) कारसाज़ न ठहराओ। (2)

ऐ (उन लोगों कि) औलाद! जिन को हम ने नूह (अ) के साथ सवार किया, वेशक वह शुक्रगुज़ार बन्दा था। (3)

और हम ने बनी इस्राईल को किताब में साफ़ कह सुनाया, अलबत्ता तुम फ़साद करोगे ज़मीन में दो मरतबा और तुम ज़रूर ज़ोर पकड़ोगे (सरकशी करोगे)। (4)

पस जब दोनों में से पहले वादे (का वक़्त) आया तो हम ने तुम पर अपने सख़्त लड़ाई वाले बन्दे भेजे, वह शहरों के अन्दर घुस गए (फैल गए), और यह एक वादा था पूरा हो कर रहने वाला। (5)

फिर हम ने उन पर तुम्हारी बारी फेर दी (तुम्हें ग़ल्बा दिया) और मालों से और बेटों से हम ने तुम्हें मदद दी और हम ने तुम्हें बड़ा जत्था (लशकर) कर दिया। (6)

अगर तुम ने भलाई की तो अपनी जानों के लिए, और अगर तुम ने बुराई की तो उन (अपनी जानों) के लिए, फिर (याद करो) जब दूसरे वादे (का वक़्त) आया कि वह (दुश्मन) तुम्हारे चहरे बिगाड़ दें, और वह मस्जिदे (अक़सा) में घुस जाएं जैसे वह पहली बार घुसे थे, और यह कि जहां ग़ल्बा पाएं, पूरी तरह बरबाद कर डालें। (7)

उम्मीद है (वईद नहीं) कि तुम्हारा रब तुम पर रहम करे और अगर तुम फिर वही करोगे तो हम (भी) वही करेंगे और हम ने जहननम काफ़िरों के लिए कैद खाना बनाया है। (8)

वेशक यह कुरआन उस राह की रहनुमाई करता है जो सब से सीधी है। और उन मोमिनों को बशारत देता है जो अच्छे अमल करते हैं कि उन के लिए बड़ा अजर है। (9)

और यह कि जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं लाते, हम ने उन के लिए तैयार किया है अज़ाब दर्दनाक। (10) और इन्सान बुराई की दुआ करता है, जैसे वह भलाई की दुआ करता है, और इन्सान जल्द वाज़ है। (11)

और हम ने रात और दिन को दो निशानियां बनाया, फिर हम ने रात की निशानी को मिटा दिया (मान्द कर दिया) और हम ने दिन की निशानी को दिखाने वाली बनाया ताकि तुम अपने रब का फ़ज़ल (रोज़ी) तलाश करो, और ताकि बरसों की गिनती और हिसाब मालूम करो और हर चीज़ को हम ने उसे तफ़्सील के साथ बयान कर दिया है। (12)

और हम ने हर इन्सान की किस्मत उस की गर्दन में लटका दी, और हम उस के लिए निकालेंगे रोज़े कियामत एक किताब, वह उसे खुला हुआ पाएगा। (13)

अपना नामा-ए-आमाल पढ़ ले, आज तू खुद अपने ऊपर काफ़ी है हिसाब लेने वाला (मोहतसिब)। (14) जिस ने हिदायत पाई उस ने सिर्फ़ अपने लिए हिदायत पाई, और जो कोई गुमराह हुआ तो वह गुमराह हुआ सिर्फ़ अपने बुरे को, और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाता, और जब तक हम कोई रसूल न भेजें हम अज़ाब देने वाले नहीं। (15)

और जब हम ने किसी वस्ती को हलाक करना चाहा तो हम ने उस के खुश हाल लोगों को हुकम भेजा तो उन्होंने ने उस में नाफ़रमानी की फिर उन पर पूरी हो गई बात (हुकम साबित हो गया) फिर हम ने उन्हें बुरी तरह हलाक कर दिया। (16)

और हम ने नूह (अ) के बाद कितनी ही वस्तियां हलाक कर दीं और तेरा रब काफ़ी है अपने बन्दों के गुनाहों की खबर रखने वाला देखने वाला। (17)

عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَنْ يَرْحَمَكُمۡ ۖ وَإِنْ عُدتُّمْ عُدْنَا ۗ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ								
जहननम	और हम ने बनाया	हम वही करेंगे	तुम फिर (वही) करोगे	और अगर	वह तुम पर रहम करे	कि	तुम्हारा रब	उम्मीद है
لِّلْكَافِرِينَ حَصِيرًا ﴿٨﴾ إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ								
सब से सीधी	वह	उस के लिए जो	रहनुमाई करता है	यह कुरआन	वेशक	8	कैद खाना	काफ़िरों के लिए
وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا ﴿٩﴾								
9	बड़ा अजर	उन के लिए	कि	अच्छे	अमल करते हैं	वह लोग जो	मोमिन (जमा)	और बशारत देता है
وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ ۖ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٠﴾								
10	दर्दनाक	अज़ाब	उन के लिए	हम ने तैयार किया	आखिरत पर	ईमान नहीं लाते	जो लोग	और यह कि
وَيَدْعُ الْإِنسَانَ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ ۖ وَكَانَ الْإِنسَانُ عَجُولًا ﴿١١﴾								
11	जल्द वाज़	इन्सान	और है	भलाई की	उस की दुआ	बुराई की	इन्सान	और दुआ करता है
وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَاتٍ ۚ فَمَحَوْنَا آيَةَ اللَّيْلِ وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ								
दिन की निशानी	और हम ने बनाया	रात की निशानी	फिर हम ने मिटा दिया	दो निशानियां	और दिन	रात	और हम ने बनाया	
مُبْصِرَةً ۖ لِتَبْتَغُوا فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ ۚ وَلِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ								
बरस (जमा)	गिनती	और ताकि तुम मालूम करो	अपने रब से (का)	फ़ज़ल	ताकि तुम तलाश करो	दिखाने वाली		
وَالْحِسَابِ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ فَضَّلْنَاهُ تَفْصِيلًا ﴿١٢﴾ وَكُلَّ إِنسَانٍ أَلْمَنَهُ								
उसको लगा दी (लटका दी)	और हर इन्सान	12	तफ़्सील के साथ	हम ने बयान किया है	और हर चीज़	और हिसाब		
طَبْرَهُ فِي عُنُقِهِ ۖ وَنُخْرِجُ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كِتَابًا يَلْقَاهُ مَشْهُورًا ﴿١٣﴾								
13	खुला हुआ	और उसे पाएगा	एक किताब	रोज़े कियामत	उस के लिए	और हम निकालेंगे	उसकी गर्दन में	इस की किस्मत
إِقْرَأْ كِتَابَكَ ۖ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ﴿١٤﴾ مَن اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا								
तो सिर्फ़	हिदायत पाई	जिस	14	हिसाब लेने वाला	अपने ऊपर	आज	तू खुद	काफ़ी है
अपना किताब (नामा-ए-आमाल)	पढ़ ले							
يَهْتَدَىٰ لِنَفْسِهِ ۖ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ								
कोई उठाने वाला	और बोझ नहीं उठाता	अपने ऊपर (अपने बुरे को)	गुमराह हुआ	तो सिर्फ़	गुमराह हुआ	और जो	अपने लिए	उस ने हिदायत पाई
وَزْرَ أُخْرَىٰ ۚ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا ﴿١٥﴾ وَإِذَا أَرَدْنَا								
हम ने चाहा	और जब	15	कोई रसूल	हम (न) भेजे	जब तक	अज़ाब देने वाले	और हम नहीं	दूसरे का बोझ
أَن نُّهْلِكَ قَرْيَةً ۖ أَمَرْنَا مُتْرَفِيهَا فَفَسَقُوا فِيهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا								
उन पर	फिर पूरी हो गई	उस में	तो उन्होंने ने नाफ़रमानी की	इस के खुश हाल लोग	हम ने हुकम भेजा	कोई वस्ती	कि हम हलाक करें	
الْقَوْلِ ۖ فَدمَرْنَاهَا تَدْمِيرًا ﴿١٦﴾ وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُونِ مِن بَعْدِ								
बाद	वस्तियां	से	हम ने हलाक कर दी	और कितनी	16	पूरी तरह हलाक	फिर हम ने उन्हें हलाक किया	वात
نُوحٍ ۖ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿١٧﴾								
17	देखने वाला	खबर रखने वाला	अपने बन्दे	गुनाहों को	तेरा रब	और काफ़ी	नूह (अ)	

وقل لا يح

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعَاجِلَةَ عَجَلْنَا لَهُ فِيهَا مَا نَشَاءُ لِمَنْ نُرِيدُ ثُمَّ جَعَلْنَا										
हम ने बना दिया है	फिर	हम चाहें	जिस को	जितना हम चाहें	उस को इस (दुनिया) में	हम जल्दी दे देंगे	जल्दी	चाहता है	जो कोई	
لَهُ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَاهَا مَذْمُومًا مَذْحُورًا ﴿١٨﴾ وَمَنْ أَرَادَ الْآخِرَةَ وَسَعَىٰ لَهَا										
उस के लिए	और कोशिश की उस ने	आखिरत	चाहे	जो और	18	दूर किया हुआ (धकेला हुआ)	मज़्मत किया हुआ	वह दाखिल होगा इस में	जहन्नम	उस के लिए
سَعِيهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ كَانَ سَعِيهِمْ مَشْكُورًا ﴿١٩﴾ كَلَّا نُمَدُّ هَٰؤُلَاءِ										
इस की सी कोशिश	हम देते हैं	हर एक	19	कद्र की हुई (मकबूल)	उन की कोशिश	है - हुई	पस यही लोग	और (वशर्त यह कि) हो वह मोमिन	उस की सी कोशिश	
وَهَٰؤُلَاءِ مِنْ عَطَاءِ رَبِّكَ ۖ وَمَا كَانَ عَطَاءُ رَبِّكَ مَحْظُورًا ﴿٢٠﴾ أَنْظُرْ كَيْفَ										
किस तरह	देखो	20	रोकी जाने वाली	तेरा रब	बख्शिश	और नहीं है	तेरा रब	बख्शिश	से और उन को भी	
فَصَلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۖ وَلِلْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ دَرَجَاتٍ وَأَكْبَرُ تَفْضِيلًا ﴿٢١﴾										
हम ने फज़ीलत दी	उन के बाज़ (एक)	पर	बाज़ (दूसरा)	और अलबत्ता आखिरत	सब से बड़े दरजे	और सब से बरतर	और सब से बरतर	फज़ीलत में	21	
لَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُومًا مَّخْذُومًا ﴿٢٢﴾ وَقَضَىٰ رَبُّكَ										
तू न ठहरा	अल्लाह के साथ	कोई दूसरा माबूद	पस तू बैठ रहेगा	मज़्मत किया हुआ	वेबस हो कर	22	और हुक्म फरमा दिया	तेरा रब		
إِلَّا تَعْبُدُوا ۖ إِلَّا إِلَٰهَهُ وَيَالِ الْوَالِدِينَ إِحْسَانًا ۖ إِنَّمَا يُبَلِّغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ										
कि न इबादत करो	उस के सिवा	और माँ बाप से	हस्ने सुलूक	अगर वह पहुँच जाएं	तेरे सामने	बुढ़ापा				
أَحَدُهُمَا ۖ أَوْ كِلَيْهِمَا فَلَا تَقُلْ لَهُمَا أُفٍّ وَلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا										
उन में से एक	या	वह दोनों	तो न कह	उन्हें	उफ़	और न झिड़को उन्हें	और कहो	उन दोनों से	वात	
كَرِيمًا ﴿٢٣﴾ وَأَخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَبِّ ارْحَمْهُمَا										
अदब के साथ	23	और झुका दे	उन दोनों के लिए	बाजू	आजिज़ी	से	मेहरवानी	और कहो	ऐ मेरे रब	उन दोनों पर रहम फ़रमा
كَمَا رَبَّيْنِي صَغِيرًا ﴿٢٤﴾ رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا فِي نُفُوسِكُمْ ۖ إِنَّ تَكُونُوا صَالِحِينَ										
जैसे	उन्होंने ने मेरी पर्वरिश की	24	वचपन	तुम्हारा रब	खूब जानता है	जो	तुम्हारे दिलों में	अगर	तुम होगे	नेक (जमा)
فَاتَّهُ كَانَ لِلْأَوَابِينَ غَفُورًا ﴿٢٥﴾ وَآتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْمِسْكِينَ										
तो बेशक वह	है	रुज़ूअ करने वालों के लिए	बख्शाने वाला	25	और दो तुम	करावतदार	उस का हक़	और मिस्कीन	और	
وَابْنَ السَّبِيلِ ۖ وَلَا تُبْدِرْ تَبْدِيرًا ﴿٢٦﴾ إِنَّ الْمُبْدِرِينَ كَانُوا إِخْوَانَ										
और मुसाफ़िर	और न फुज़ूल ख़र्ची करो	अन्धा धुन्द	26	बेशक	फुज़ूल ख़र्च (जमा)	है	भाई (जमा)			
الشَّيْطَانِ ۖ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِرَبِّهِ كَفُورًا ﴿٢٧﴾ وَإِنَّمَا تَعْرِضَنَّ عَنْهُمْ ابْتِغَاءَ										
शैतान (जमा)	और है	शैतान	अपने रब का	27	नाशुक्का	और अगर	तू मुँह फेर ले	उन से	इन्तिज़ार में	
رَحْمَةٍ مِّنْ رَبِّكَ تَرْجُوهَا فَقُلْ لَهُمْ قَوْلًا مَّيْسُورًا ﴿٢٨﴾ وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ										
रहमत से	अपना रब	है	तू उस की उम्मीद रखता है	तो कह	उन से	नर्मी की बात	28	और न रख	अपना हाथ	
مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسِطِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا مَّحْسُورًا ﴿٢٩﴾										
बन्धा हुआ	तक-से	अपनी गर्दन	और न उसे खोल	पूरी तरह खोलना	फिर तू बैठा रह जाए	मलामत ज़दा	थका हुआ	29		

जो कोई जल्दी (दुनिया में) चाहता है, हम उस को जितना चाहे जल्दी (दुनिया में) दे देंगे, फिर हम ने उस के लिए जहन्नम बना दिया है, वह उस में दाखिल होगा मज़्मत किया हुआ धकेला हुआ। (18) और जो कोई आखिरत चाहे और उस के लिए उस की सी कोशिश करे, वशर्त यह कि वह मोमिन हो, पस यही लोग हैं जिन की कोशिश मकबूल हुई। (19) हम तेरे रब की बख्शिश से उन को भी और उन को भी हर एक को देते हैं और तेरे रब की बख्शिश (किसी पर) रोकी जाने वाली नहीं। (20) देखो! हम ने किस तरह उन के एक को दूसरे पर फज़ीलत दी और अलबत्ता आखिरत के दरजे सब से बड़े, और फज़ीलत में सब से बरतर है। (21) अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद न ठहरा पस तू बैठ रहेगा मज़्मत किया हुआ, वेबस हो कर। (22) और तेरे रब ने हुक्म फरमा दिया कि उस के सिवा किसी और की इबादत न करो, और माँ बाप से हस्ने सुलूक करो, और उन में से एक या वह दोनों तेरे सामने बुढ़ापे को पहुँच जाएं तो उन्हें न कहो उफ़ (भी) और उन्हें न झिड़को, और उन दोनों से अदब के साथ वात कहो (करो)। (23) और उन के लिए आजिज़ी के (साथ) बाजू झुका दो मेहरवानी से, और कहो ऐ मेरे रब! उन दोनों पर रहम फ़रमा जैसे उन्होंने ने वचपन में मेरी पर्वरिश की। (24) तुम्हारा रब खूब जानता है जो तुम्हारे दिलों में है, अगर तुम नेक होगे तो बेशक वह रुज़ूअ करने वालों को बख्शाने वाला है। (25) और दो तुम करावतदार को उस का हक़, और मिस्कीन और मुसाफ़िर को, और अन्धा धुन्द फुज़ूल ख़र्ची न करो। (26) बेशक फुज़ूल ख़र्च शैतानों के भाई है और शैतान अपने रब का नाशुक्का है। (27) और अगर तू अपने रब की रहमत (फराख़ दस्ती) के इन्तिज़ार में, जिस की तू उम्मीद रखता है, उन से मुँह फेर ले तो उन से तू कह दिया कर नर्मी की बात। (28) और अपना हाथ अपनी गर्दन तक बन्धा हुआ न रख (कनज़ूस न हो जा) और न उसे खोल पूरी तरह (विलकुल ही) कि फिर तू मलामत ज़दा थका हारा बैठा रह जाए। (29)

वेशक तेरा रब जिस का वह चाहता है रिज़्क फ़राख़ कर देता है और (जिस का चाहता है) तंग कर देता है, वेशक वह अपने बन्दों की ख़बर रखने वाला, देखने वाला है। (30)

और तुम अपनी औलाद को मुफ़लिसी के डर से क़त्ल न करो, हम ही उन्हें रिज़्क देते हैं और तुम को (भी), वेशक उन का क़त्ल बड़ा गुनाह है। (31)

और ज़िना के करीब न जाओ, वेशक यह बेहयाई है और बुरा रास्ता। (32)

और उस जान को क़त्ल न करो जिसे (क़त्ल करना) अल्लाह ने हराम किया है मगर हक़ के साथ, और जो मज़लूम मारा गया तो तहकीक़ हम ने उस के वारिस के लिए एक इख़्तियार (क़िसास) दिया है, पस हद से न बढ़े क़त्ल में,

वेशक वह मदद दिया गया है। (33) और यतीम के माल के पास न जाओ (तसर्हफ़) न करो) मगर इस

तरीके से जो सब से बेहतर हो, यहां तक कि वह (यतीम) अपनी जवानी को पहुँच जाए। और अ़हद को पूरा करो, वेशक अ़हद है

पुरसिश किया जाने वाला (ज़रूर पुरसिश होगी)। (34)

और जब तुम माप कर दो तो पैमाना पूरा करो, और वज़न करो सीधी तराजू के साथ, यह बेहतर है और सब से अच्छा है अन्जाम के ऐतिवार से। (35)

और उस के पीछे न पड़ जिस का तुझे इल्म नहीं, वेशक कान, और आँख, और दिल, उन में से हर एक पुरसिश किया जाने वाला है (हर एक की पुरसिश होगी)। (36)

और ज़मीन में इतराता हुआ न चल, वेशक तू ज़मीन को हरगिज़ न चीर डालेगा, और न पहाड़ की बुलन्दी को पहुँचेगा। (37)

यह तमाम बुराइयां तेरे रब के नज़्दीक नापसन्दीदा हैं। (38)

यह हिक्मत की (उन बातों) में से है जो तेरे रब ने तेरी तरफ़ वहि की है, और न बना अल्लाह के साथ कोई और माबूद कि फिर तु जहन्नम में डाल दिया जाए मलामत ज़दा, धकेला हुआ (रान्दा-ए-दरगाह)। (39)

क्या तुम्हें चुन लिया तुम्हारे रब ने बेटों के लिए? और अपने लिए फ़रिशतों को बेटियां बना लिया, वेशक तुम बड़ा बोल बोलते हो। (40)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ

अपने बन्दों से	है	वेशक वह	और तंग कर देता है	जिस की वह चाहता है	रोज़ी	फ़राख़ कर देता है	तेरा रब	वेशक
----------------	----	---------	-------------------	--------------------	-------	-------------------	---------	------

خَيْرًا بَصِيرًا (٣٠) وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ إِمْلَاقٍ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ

हम रिज़्क देते हैं उन्हें	हम	मुफ़लिसी	डर	अपनी औलाद	और न क़त्ल करो	30	देखने वाला	ख़बर रखने वाला
---------------------------	----	----------	----	-----------	----------------	----	------------	----------------

وَأَيَّاكُمْ إِنْ قَتَلْتُمْ إِنْ كَانَ خَطَاً كَبِيرًا (٣١) وَلَا تَقْرَبُوا الزَّوْجِيَّ إِنَّهُ كَانَ

है	वेशक यह	ज़िना	और न करीब जाओ	31	गुनाह बड़ा	है	उन का क़त्ल	वेशक	और तुम को
----	---------	-------	---------------	----	------------	----	-------------	------	-----------

فَاحْشَةً وَسَاءَ سَبِيلًا (٣٢) وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا

मगर	अल्लाह ने हराम किया	वह जो कि	जान	और न क़त्ल करो	32	रास्ता	और बुरा	बेहयाई
-----	---------------------	----------	-----	----------------	----	--------	---------	--------

بِالْحَقِّ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُومًا فَقَدْ جَعَلْنَا لَوْلِيهِ سُلْطَانًا فَلَا يُسْرِفُ

पस वह हद से न बढ़े	एक इख़्तियार	इस के वारिस के लिए	तो तहकीक़ हम ने कर दिया	मज़लूम	मारा गया	और जो	हक़ के साथ
--------------------	--------------	--------------------	-------------------------	--------	----------	-------	------------

فِي الْقَتْلِ إِنَّهُ كَانَ مَنْصُورًا (٣٣) وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي

इस तरीके से	मगर	यतीम का माल	और पास न जाओ	33	मदद दिया गया	है	वेशक वह	क़त्ल में
-------------	-----	-------------	--------------	----	--------------	----	---------	-----------

هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ وَأَوْفُوا بِالْعَهْدِ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ

है	अ़हद	वेशक	अ़हद को	और पूरा करो	अपनी जवानी	वह पहुँच जाए	यहां तक कि	सब से बेहतर	वह
----	------	------	---------	-------------	------------	--------------	------------	-------------	----

مَسْئُولًا (٣٤) وَأَوْفُوا الْكَيْلَ إِذَا كَلْتُمْ وَزِنُوا بِالْقِسْطِ الْمُسْتَقِيمِ

सीधी	तराजू के साथ	और वज़न करो	जब तुम माप कर दो	पैमाना	और पूरा करो	34	पुरसिश किया जाने वाला
------	--------------	-------------	------------------	--------	-------------	----	-----------------------

ذَلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا (٣٥) وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنَّ

वेशक	इल्म	उस का	तेरे लिए- तुझे	जिस का नहीं	और पीछे न पड़ तू	35	अन्जाम के ऐतिवार से	और सब से अच्छा	बेहतर	यह
------	------	-------	----------------	-------------	------------------	----	---------------------	----------------	-------	----

السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا (٣٦)

36	पुरसिश किया जाने वाला	इस से	है	यह	हर एक	और दिल	और आँख	कान
----	-----------------------	-------	----	----	-------	--------	--------	-----

وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا إِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ

पहाड़	और हरगिज़ न पहुँचेगा	ज़मीन	हरगिज़ न चीर डालेगा	वेशक तू	अकड़ कर (इतराता हुआ)	ज़मीन में	और न चल
-------	----------------------	-------	---------------------	---------	----------------------	-----------	---------

طُولًا (٣٧) كُلُّ ذَلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوهًا (٣٨) ذَلِكَ مِمَّا

उस से जो	यह	38	नापसन्दीदा	तेरा रब	नज़्दीक	उस की बुराई	है	यह	तमाम	37	बुलन्दी
----------	----	----	------------	---------	---------	-------------	----	----	------	----	---------

أَوْحَىٰ إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ

कोई और	माबूद	अल्लाह के साथ	बना	और न	हिक्मत से	तेरा रब	तेरी तरफ़	वहि की
--------	-------	---------------	-----	------	-----------	---------	-----------	--------

فَتُلْفَىٰ فِي جَهَنَّمَ مَلُومًا مَدْحُورًا (٣٩) أَفَأَصْفُكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِينَ

बेटों के लिए	तुम्हारा रब	क्या तुम्हें चुन लिया	39	धकेला हुआ	मलामत ज़दा	जहन्नम में	फिर तू डाल दिया जाए
--------------	-------------	-----------------------	----	-----------	------------	------------	---------------------

وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلَائِكَةِ إِنَاثًا إِنَّكُمْ لَتَقُولُونَ قَوْلًا عَظِيمًا (٤٠)

40	बड़ा बोल	अलबल्ला कहते हो (बोलते हो)	वेशक तुम	बेटियां	फ़रिशते	से - को	और बना लिया
----	----------	----------------------------	----------	---------	---------	---------	-------------



وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ لِيَذَكَّرُوا وَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا نُفُورًا ﴿٤١﴾ قُلْ									
कह दें आप (स)	41	नफ़रत	मगर	बढ़ती उन को	और नहीं	ताकि वह नसीहत पकड़ें	इस कुरआन	में	और अलबत्ता हम ने तरह तरह से बयान किया
لَوْ كَانَ مَعَهُ الْهَيْئَةُ كَمَا يَقُولُونَ إِذَا لَابَتَّغُوا إِلَىٰ ذِي الْعَرْشِ سَبِيلًا ﴿٤٢﴾									
42	कोई रास्ता	अर्श वाले	तरफ	वह ज़रूर ढूँढते	उस सूत में	वह कहते हैं	जैसे	और माबूद	उस के साथ अगर होते
سُبْحٰنَهُ وَتَعَالٰى عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا كَبِيرًا ﴿٤٣﴾ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمَوٰتُ السَّبْعُ									
सात (7)	आस्मान (जमा)	उस की	पाकीज़गी बयान करते हैं	43	बहुत बड़ा (बेनिहायत)	वरतर	वह कहते हैं	उस से जो	और वरतर वह पाक है
وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ وَإِنْ مِّنْ شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ وَلَكِن لَّا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ﴿٤٤﴾ وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ									
और लेकिन	उस की हम्द के साथ	पाकीज़गी बयान करती है	मगर	कोई चीज़	और नहीं	उन में	और जो	और ज़मीन	
لَّا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ﴿٤٤﴾ وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ									
कुरआन	तुम पढ़ते हो	और जब	44	बख़्शने वाला	वुर्दबार	है	बेशक वह	उन की तस्वीह	तुम नहीं समझते
جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُورًا ﴿٤٥﴾									
45	छुपा हुआ	एक पर्दा	आखिरत पर	ईमान नहीं लाते	वह लोग जो	और दरमियान	तुम्हारे दरमियान	हम कर देते हैं	
وَجَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا وَإِذَا									
और जब	गिरानी	उन के कान	और में	वह न समझें उसे	कि	पर्दे	उन के दिल	पर	और हम ने डाल दिए
ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْآنِ وَحْدَهُ وَلَوْ عَنَىٰ أَدْبَارِهِمْ نُفُورًا ﴿٤٦﴾ نَحْنُ									
हम	46	नफ़रत करते हुए	अपनी पीठ (जमा)	पर	वह भागते हैं	यकता	कुरआन में	अपना रब	तुम ज़िक्र करते हो
أَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُونَ بِهِ إِذْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُمْ نَجْوَىٰ إِذْ يَقُولُ									
जब कहते हैं	सरगोशी करते हैं	वह	और जब	तेरी तरफ	जब वह कान लगाते हैं	उस को	वह सुनते हैं	जिस गर्ज से	खुब जानते हैं
الظَّالِمُونَ إِنَّ تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا ﴿٤٧﴾ أَنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا									
कैसी उन्होंने ने चस्यां की	तुम देखो	47	सिहरजदा	एक आदमी	मगर	तुम पैरवी करते	नहीं	ज़ालिम (जमा)	
لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ﴿٤٨﴾ وَقَالُوا ءِذَا كُنَّا									
हम हो गए	क्या - जब	और वह कहते हैं	48	(सीधे) राह	पस वह इस्तिताअत नहीं पाते	सो वह गुमराह हो गए	मिसालें	तुम्हारे लिए	
عِظَامًا وَرُفَاتًا ءِإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ﴿٤٩﴾ قُلْ كُونُوا حِجَارَةً									
पत्थर	तुम हो जाओ	कह दें	49	नई	पैदाइश	फिर जी उठेंगे	क्या हम यकीनन	और रेज़ा रेज़ा	हड्डियां
أَوْ حَدِيدًا ﴿٥٠﴾ أَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِي صُدُورِكُمْ فَسَيَقُولُونَ مَن									
कौन	फिर अब कहेंगे	तुम्हारे सीने (खयाल)	में	बड़ी हो	उस से जो	और मख़लूक	या	50	लोहा
يُعِيدُنَا قُلِ الَّذِي فَطَرَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَسَيُنْغِضُونَ إِلَيْكَ									
तुम्हारी तरफ	तो वह हिलाएंगे (मटक़ाएंगे)	वार	पहली	तुम्हें पैदा किया	वह जिस ने	फ़रमा दें	हमे लौटाएगा		
رُءُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هُوَ قُلْ عَسَىٰ أَنْ يَكُونَ قَرِيبًا ﴿٥١﴾									
51	करीब	वह हो	कि	शायद	आप (स) फ़रमा दें	वह - यह	कब	और कहेंगे	अपने सर

और हम ने इस कुरआन में तरह तरह से बयान किया है ताकि वह नसीहत पकड़ें, और (इस से) उन्हें नहीं बढ़ती मगर नफ़रत। (41) आप (स) कह दें, अगर जैसे वह कहते हैं उस के साथ और माबूद होते तो उस सूत में वह अर्श वाले की तरफ़ ज़रूर ढूँढते कोई रास्ता। (42) वह उस से निहायत पाक है और वरतर जो वह कहते हैं। (43) उस की पाकीज़गी बयान करते हैं सातों आस्मान और ज़मीन, और जो उन में है, कोई चीज़ नहीं मगर (हर शौ) पाकीज़गी बयान करती है उस की हम्द के साथ, लेकिन तुम उन की तस्वीह नहीं समझते, बेशक वह वुर्दबार, बख़्शने वाला है। (44) और जब तुम कुरआन पढ़ते हो, हम तुम्हारे और उन के दरमियान जो आखिरत पर ईमान नहीं लाते कर देते (डाल देते) हैं एक छुपा हुआ (दबीज़) पर्दा। (45) और हम ने उन के दिलों पर पर्दे डाल दिए के वह इसे न समझें, और उन के कानों में गिरानी है और जब तुम कुरआन में अपने यकता रब का ज़िक्र करते हो तो वह पीठ फेर कर नफ़रत करते हुए भाग जाते हैं। (46) हम खूब जानते हैं कि वह उस को किस गर्ज से सुनते हैं जब वह तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं और जब वह सरगोशी करते हैं (यानी) जब कहते हैं ज़ालिम कि तुम पैरवी नहीं करते मगर एक सिहरजदा आदमी की। (47) तुम देखो! उन्होंने ने तुम पर कैसी मिसालें चस्यां की, सो वह गुमराह हुए, पस वह (सीधे) रास्ते की इस्तिताअत नहीं पाते। (48) और वह कहते हैं कि क्या जब हम हड्डियां और रेज़ा रेज़ा हो गए, क्या हम यकीनन फिर नई पैदाइश (अज़ सर नौ) जी उठेंगे? (49) कह दें तुम पत्थर या लोहा हो जाओ, (50) या कोई और मख़लूक जो तुम्हारे खयालों में उस से भी बड़ी हो। फिर अब कहेंगे हमें कौन लौटाएगा। आप (स) फ़रमा दें, वह जिस ने तुम्हें पैदा किया पहली बार, तो वह तुम्हारी तरफ़ अपने सर मटक़ाएंगे और कहेंगे यह कब होगा (कियामत कब आएगी)? आप (स) फ़रमा दें, शायद कि करीब ही हो। (51)

जिस दिन वह तुम्हें पुकारेगा तो तुम उस की तारीफ़ के साथ तामील करोगे (क़ब्रों से निकल आओगे) और तुम खयाल करोगे कि तुम (दुनिया में) रहे हो सिर्फ़ थोड़ी देर। (52)

और आप (स) मेरे बन्दों को फ़रमा दें कि (बात) वह कहें जो सब से अच्छी हो, बेशक़ शैतान उन के दरमियान फ़साद डाल देता है, बेशक़ शैतान

इन्सान का खुला दुश्मन है। (53) तुम्हारा रब तुम्हें खूब जानता है, अगर वह चाहे तो तुम पर रहम करे या अगर वह चाहे तो तुम्हें

अज़ाब दे, और हम ने तुम्हें उन पर दारोगा (बना कर) नहीं भेजा। (54)

और तुम्हारा रब खूब जानता है जो कोई आस्मानों में और ज़मीन में है, और तहकीक़ हम ने बाज़ नवियों को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी, और हम

ने दाऊद (अ) को ज़बूर दी। (55) आप (स) कह दें पुकारो उन्हें जिन को तुम उस के सिवा (माबूद) गुमान

करते हो, पस वह इख़्तियार नहीं रखते तुम से तकलीफ़ दूर करने का, और न (तकलीफ़) बदलने का। (56)

वह लोग जिन्हें यह पुकारते हैं वह (खुद) ढूँडते हैं अपने रब की तरफ़ वसीला कि उन में से कौन बहुत ज़ियादा करीब हो जाए, और उस की रहमत की उम्मीद रखते हैं,

और वह उस के अज़ाब से डरते हैं, बेशक़ तेरे रब का अज़ाब डर (ही) की बात है। (57)

और कोई (नाफ़रमान) बस्ती नहीं मगर हम उसे हलाक़ करने वाले हैं, क़ियामत के दिन से पहले, या उसे सख़्त अज़ाब देने वाले हैं, यह

किताब में है लिखा हुआ। (58) और हमें निशानियां भेजने से नहीं रोका मगर (इस बात ने) कि उन को अगलों ने झुटलाया, और हम ने समूद को ऊँटनी दी ज़री-ए-बसीरत ओ इब्रत, उन्होंने ने उस पर

जुल्म किया, और हम निशानियां नहीं भेजते मगर (सिर्फ़) डराने को। (59)

और जब हम ने तुम से कहा कि बेशक़ तुम्हारा रब लोगों को (अहाता) काबू किए हुए है, और हम ने जो नुमाइश तुम्हें दिखाई वह हम ने नहीं किया मगर लोगों की आजमाइश के लिए, और थोहर का दरख़्त जिस पर

कुरआन में लानत की गई है, और हम उन्हें डराने हैं तो उन्हें बढ़ती है सिर्फ़ सरकशी। (60)

يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِ وَتَظُنُّونَ إِن لَّبِئْتُمْ إِلَّا										
सिर्फ़	तुम रहे	कि	और तुम खयाल करोगे	उस की तारीफ़ के साथ	तो तुम जवाब दोगे (तामील करोगे)	वह पुकारेगा तुम्हें	जिस दिन			
قَلِيلًا ﴿٥٢﴾ وَقُلْ لِعِبَادِي يَقُولُوا الَّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنْزِعُ										
फ़साद डालता है	शैतान	बेशक	सब से अच्छी	वह	वह जो	वह कहें	मेरे बन्दों को	और फ़रमा दें	52	थोड़ी देर
بَيْنَهُمْ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِينًا ﴿٥٣﴾ رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِكُمْ										
तुम्हें	खूब जानता है	तुम्हारा रब	53	खुला	दुश्मन	इन्सान का	है	शैतान	बेशक	उन के दरमियान
إِن يَشَاءُ يَرْحَمَكُمُ أَوْ إِن يَشَاءُ يُعَذِّبِكُمْ وَمَا أَرْسَلْنَا عَلَيْكُمْ وَكِيلًا ﴿٥٤﴾										
54	दारोगा	उन पर	हम ने तुम्हें भेजा	और नहीं	तुम्हें अज़ाब दे	वह चाहे	अगर या	तुम पर रहम करे वह	वह चाहे	अगर
وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ										
बाज़	और तहकीक़ हम ने फ़ज़ीलत दी	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	में	जो कोई	खूब जानता है	और तुम्हारा रब			
النَّبِيِّنَ عَلَى بَعْضِ وَأَتَيْنَا دَاوُدَ زَبُورًا ﴿٥٥﴾ قُلْ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُمْ										
तुम गुमान करते हो	वह जिन को	पुकारो तुम	कह दें	55	ज़बूर	दाऊद (अ)	और हम ने दी	बाज़ पर	नबी (जमा)	
مِّنْ دُونِهِ فَلَا يَمْلِكُونَ كَشْفِ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيلًا ﴿٥٦﴾ أُولَئِكَ										
वह लोग	56	बदलना	और न	तुम से	तकलीफ़	दूर करना	पस वह इख़्तियार नहीं रखते	उस के सिवा		
الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ										
और वह उम्मीद रखते हैं	ज़ियादा करीब	उन से कौन	वसीला	अपना रब	तरफ़	ढूँडते हैं	वह पुकारते हैं	जिन्हें		
رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ عَذَابَهُ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا ﴿٥٧﴾ وَإِنَّ										
और नहीं	57	डर की बात	है	तेरा रब	अज़ाब	बेशक	उस का अज़ाब	और वह डरते हैं	उस की रहमत	
مِّنْ قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا										
अज़ाब	उसे अज़ाब देने वाले	या	क़ियामत का दिन	पहले	उसे हलाक़ करने वाले	हम	मगर	कोई बस्ती		
شَدِيدًا كَانَ ذَلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ﴿٥٨﴾ وَمَا مَنَعَنَا أَنْ نُرْسِلَ										
हम भेजें	कि	और नहीं हमें रोका	58	लिखा हुआ	किताब में	यह	है	सख़्त		
بِالْآيَةِ إِلَّا أَنْ كَذَّبَ بِهَا الْأُولُونَ وَآتَيْنَا ثَمُودَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً										
दिखाने को (ज़रीए बसीरत)	ऊँटनी	समूद	और हम ने दी	अगले लोग (जमा)	उन को	झुटलाया	यह कि	मगर	निशानियां	
فَظَلَمُوا بِهَا وَمَا نُرْسِلُ بِالْآيَةِ إِلَّا تَخْوِيفًا ﴿٥٩﴾ وَإِذْ قُلْنَا لَكَ إِنَّ رَبَّكَ										
तुम्हारा रब	बेशक	तुम से	हम ने कहा	और जब	59	डराने को	मगर	निशानियां	और हम नहीं भेजते	उन्होंने ने उस पर जुल्म किया
أَحَاطَ بِالنَّاسِ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِي آرَبْنِكَ إِلَّا فِتْنَةً لِلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ										
और (थोहर का) दरख़्त	लोगों के लिए	आज़माइश	मगर	हम ने तुम्हें दिखाई	वह जो कि	नुमाइश	और हम ने नहीं किया	लोगों को	अहाता किए हुए	
الْمَلْعُونَةَ فِي الْقُرْآنِ وَنَخَوْفُهُمْ فَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا طُغْيَانًا كَبِيرًا ﴿٦٠﴾										
60	बड़ी	सरकशी	मगर (सिर्फ़)	तो नहीं बढ़ती उन्हें	और हम डराने हैं उन्हें	कुरआन में	जिस पर लानत की गई			

٥٨

٦

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ قَالَ								
उस ने कहा	इब्लीस	सिवाए	तो उन्होंने ने सिज्दा किया	आदम (अ) को	तुम सिज्दा करो	फ़रिश्तों से	हम ने कहा	और जब
ءَأَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِينًا ﴿٦١﴾ قَالَ أَرَأَيْتَكَ هَذَا الَّذِي كَرَّمْتَ								
तू ने इज़्ज़त दी	वह जिसे	यह	भला तू देख	उस ने कहा	61	मिट्टी से	तू ने पैदा किया	उस को जिसे क्या मैं सिज्दा करूँ
عَلَىٰ لَيْنٍ أَخْرَجْنَاهُ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لِأَحْتَبِنَكَ ذُرِّيَّتَهُ إِلَّا								
सिवाए	उस की औलाद	जड़ से उखाड़ दूँगा ज़रूर	रोज़े कियामत तक	तू मुझे ढील दे	अलबत्ता अगर	मुझ पर		
قَلِيلًا ﴿٦٢﴾ قَالَ أَذْهَبَ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَإِنَّ جَهَنَّمَ جَزَاءُكُمْ								
तुम्हारी सज़ा	जहननम	तो वेशक	उन में से	तेरी पैरवी की	पस जिस	तू जा	उस ने फ़रमाया	62
جَزَاءً مَّوْفُورًا ﴿٦٣﴾ وَاسْتَفْزِرُ مَنْ اسْتَطَعَتْ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ								
अपनी आवाज़ से	उन में से	तेरा बस चले	जो - जिस	और फुसला ले	63	भरपूर	सज़ा	
وَاجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكِهِمْ فِي الْأَمْوَالِ								
माल (जमा)	में	और उन से साझा कर ले	और पयादे	अपने सवार	उन पर	और चढ़ा ला		
وَالْأَوْلَادِ وَعَدْتُمْ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ﴿٦٤﴾ إِنَّ عِبَادِي								
मेरे बन्दे	वेशक	64	धोका	मगर (सिर्फ)	शैतान	और नहीं उन से वादा करता	और वादे कर उन से	और औलाद
لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ وَكِيلًا ﴿٦٥﴾ رَبُّكُمْ الَّذِي								
वह जो कि	तुम्हारा रब	65	कारसाज़	तेरा रब	और काफी	जोर - ग़लबा	उन पर	तेरा नहीं
يُزْجِي لَكُمْ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِيَتَّبِعُوا مِنْ فَضْلِهِ إِنَّهُ كَانَ بِكُمْ								
तुम पर	है	वेशक वह	उस का फ़ज़ल	से	ताकि तुम तलाश करो	दर्या में	कशती	तुम्हारे लिए चलाता है
رَحِيمًا ﴿٦٦﴾ وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُونَ								
तुम पुकारते थे	जो	गुम हो जाते हैं	दर्या में	तकलीफ़	तुम्हें छूती (पहुँचती) है	और जब	66	निहायत मेहरवान
إِلَّا إِلَٰهَهُ فَلَمَّا نَجَّكُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ وَكَانَ الْإِنْسَانُ								
इन्सान	और है	तुम फिर जाते हो	खुशकी की तरफ़	वह तुम्हें बचा लाया	फिर जब	उस के सिवा		
كَفُورًا ﴿٦٧﴾ أَفَأَمِنْتُمْ أَنْ يَخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ أَوْ يُرْسِلَ								
वह भेजे	या	खुशकी की तरफ़	तुम्हें	धंसा दे	कि	सो क्या तुम निडर हो गए हो	67	बड़ा नाशुक्रा
عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ وَكِيلًا ﴿٦٨﴾ أَمْ أَمِنْتُمْ أَنْ								
कि	तुम बेफ़िक्र हो गए	या	68	कोई कारसाज़	अपने लिए	तुम न पाओ	फिर	पत्थर बरसाने वाली हवा तुम पर
يُعِيدَكُمْ فِيهِ تَارَةً أُخْرَىٰ فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّن								
से - का	सख्त झोंका	तुम पर	फिर भेज दे वह	दोबारा	उस में	वह तुम्हें ले जाए		
الرِّيحِ فَيُغْرِقَكُم بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهِ تَبِيعًا ﴿٦٩﴾								
69	पीछा करने वाला	उस पर	हम पर (हमारा)	अपने लिए	तुम न पाओ	फिर	तुम ने नाशुक्रा की बदले में	फिर तुम्हें ग़र्क़ कर दे हवा

और जब हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम (अ) को सिज्दा करो, तो इब्लीस के सिवा उन सब ने सिज्दा किया, उस ने कहा क्या मैं उसे सिज्दा करूँ? जिसे तू ने मिट्टी से पैदा किया। (61) उस ने कहा भला देख तो यह है वह जिसे तू ने मुझ पर इज़्ज़त दी, अलबत्ता अगर तू मुझे रोज़े कियामत तक ढील दे तो मैं चन्द एक के सिवा उस की औलाद को ज़रूर जड़ से उखाड़ दूँगा। (62) उस ने फ़रमाया तू जा, पस उन में से जिस ने तेरी पैरवी की तो वेशक जहननम तुम्हारी सज़ा है, सज़ा भी भरपूर। (63) और फुसला ले जिस पर तेरा बस चले उन में से अपनी आवाज़ से, और उन पर अपने सवार और पयादे चढ़ा ला, और उन से साझा कर ले माल और औलाद में, और उन से वादे कर, और उन से शैतान का वादा करना सिर्फ़ धोका है। (64) वेशक मेरे बन्दों पर तेरा कोई जोर नहीं, और तेरा रब काफी है कारसाज़। (65) तुम्हारा रब वह है जो कि तुम्हारे लिए दर्या में किशती चलाता है ताकि तुम उस का फ़ज़ल (रिज़्क) तलाश करो, वेशक वह तुम पर निहायत मेहरवान है। (66) ओर जब तुम्हें दर्या में तकलीफ़ पहुँचती है तो गुम हो जाते हैं (भूल जाते हो) जिन्हें उस के सिवा तुम पुकारते थे, फिर जब वह तुम्हें बचा लाया, खुशकी की तरफ़, तो तुम फिर जाते हो, और इन्सान बड़ा नाशुक्रा है। (67) सो क्या तुम निडर हो गए कि वह ज़मीन में धंसा दे तुम्हें खुशकी की तरफ़ (ले जा कर) या तुम पर पत्थर बरसाने वाली हवा भेजे, फिर तुम अपने लिए कोई कारसाज़ न पाओ। (68) या तुम बेफ़िक्र हो गए हो कि वह तुम्हें दोबारा उस (दर्या) में ले जाए, फिर तुम पर हवा का सख्त झोंका (तूफ़ान) भेज दे फिर तुम्हें नाशुक्रा के बदले में ग़र्क़ कर दे, फिर तुम अपने लिए उस पर हमारा कोई पीछा करने वाला न पाओ। (69)

और तहकीक हम ने औलादे आदम (अ) को इज़्जत बखशी, और हम ने उन्हें खुशकी और दर्या में सवारी दी, और हम ने उन्हें पाकीज़ा चीज़ों से रिज़्क दिया, और हम ने उन्हें अपनी बहुत सी मख्लूक पर बड़ाई दे कर फज़ीलत दी। (70)

जिस दिन हम तमाम लोगों को बुलाएंगे उन के पेशवाओं के साथ, पस जिस को उस की किताब (आमाल नामा) दाएं हाथ में दी गई तो वह लोग अपना आमाल नामा पढ़ेंगे और वह जुल्म न किए जाएंगे एक धागे के बराबर (भी)। (71)

और जो इस दुनिया में अन्धा रहा पस वह आखिरत में (भी) अन्धा (उठेगा) और रास्ते से भटका हुआ। (72)

और उस वहि से जो हम ने तुम्हारी तरफ की है करीब था कि वह तुम्हें उस से बिचला दें (फिसला दें) ताकि हम पर उस (वहि) के सिवा तुम झूट वान्धो और उस सूरत में अलवत्ता वह तुम्हें दोस्त बना लेते। (73)

और अगर हम तुम्हें साबित कदम न रखते तो अलवत्ता तुम उन की तरफ झुकने लगते कुछ थोड़ा सा। (74)

उस सूरत में हम तुम्हें जिन्दगी में दुगनी (सज़ा) चखाते और दुगनी मौत (के बाद), फिर तुम अपने लिए न पाते हमारे मुकाबले में कोई मददगार। (75)

और तहकीक करीब था कि वह तुम्हें सरज़मीने मक्का से फिसला ही दें ताकि वह तुम्हें यहां से निकाल दें और उस सूरत में वह तुम्हारे पीछे न ठहर पाते मगर थोड़ा (अर्सा)। (76)

आप (स) से पहले जो रसूल हम ने भेजे (यही) सुन्नत (चली आ रही) है और तुम हमारी सुन्नत में कोई तबदीली न पाओगे। (77)

सूरज ढलने से रात के अन्धेरे तक नमाज़ काइम करें, और सुबह का कुरआन, वेशक सुबह का कुरआन (पढ़ने में फ़िरिशते) हाज़िर होते हैं। (78)

और रात का कुछ हिस्सा कुरआन की तिलावत के साथ वेदार रहें, यह तुम्हारे लिए जाइद है, करीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें मुकामे महमूद में खड़ा कर दे। (79)

और आप (स) कहें ऐ मेरे रब! मुझे दाखिल कर सच्चा दाखिल करना, और मुझे निकाल सच्चा निकालना (अच्छी तरह), और अपनी तरफ से मेरे लिए अ़ता कर ग़ल्वा, मदद देने वाला। (80)

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَحَمَلْنَاهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنَاهُمْ مِّنَ

से	और हम ने उन्हें रिज़्क दिया	और दर्या	खुशकी में	दी	और हम ने उन्हें सवारी	औलादे आदम (अ)	हम ने इज़्जत बखशी	और तहकीक
----	-----------------------------	----------	-----------	----	-----------------------	---------------	-------------------	----------

الطَّيِّبِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى كَثِيرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيلًا (٧٠) يَوْمَ

जिस दिन	70	बड़ाई दे कर	हम ने पैदा किया (अपनी मख्लूक)	उस से जो	बहुत सी	पर	और हम ने उन्हें फज़ीलत दी	पाकीज़ा चीज़ें
---------	----	-------------	-------------------------------	----------	---------	----	---------------------------	----------------

نَادَعُوا كُلُّ آنَاسٍ بِإِمَامِهِمْ فَمَنْ أُوْتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَأُولَئِكَ

तो वह लोग	उस के दाएं हाथ में	उसकी किताब	दिया गया	पस जो	उन के पेशवाओं के साथ	तमाम लोग	हम बुलाएंगे
-----------	--------------------	------------	----------	-------	----------------------	----------	-------------

يَقْرَأُونَ كِتَابَهُمْ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا (٧١) وَمَنْ كَانَ فِي هَذِهِ

इस (दुनिया) में	और जो रहा	71	एक धागे बराबर	और न वह जुल्म किए जाएंगे	अपना आमाल नामा	पढ़ेंगे
-----------------	-----------	----	---------------	--------------------------	----------------	---------

أَعْمَىٰ فَهُوَ فِي الْآخِرَةِ أَعْمَىٰ وَأَضَلُّ سَبِيلًا (٧٢) وَإِنْ كَادُوا لَيَفْتِنُونَكَ

कि तुम्हें बिचला दें	वह करीब था	और तहकीक	72	रास्ता	और बहुत भटका हुआ	अन्धा	आखिरत में	पस वह	अन्धा
----------------------	------------	----------	----	--------	------------------	-------	-----------	-------	-------

عَنِ الَّذِينَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهُ وَإِذَا لَا تَأْخُذُوكَ

अलवत्ता वह तुम्हें बना लेते	और उस सूरत में	इस के सिवा	हम पर	ताकि तुम झूट वान्धो	तुम्हारी तरफ	हम ने वहि की	वह जो	से
-----------------------------	----------------	------------	-------	---------------------	--------------	--------------	-------	----

خَلِيلًا (٧٣) وَلَوْ لَا أَنْ تَبْتُلْنَا لَقَدْ كِدْتَ تَرْكَنُ إِلَيْهِمْ شَيْئًا قَلِيلًا (٧٤)

74	थोड़ा	कुछ	उनकी तरफ	अलवत्ता तुम झुकने लगते	हम तुम्हें साबित कदम रखते	यह कि	और अगर न	73	दोस्त
----	-------	-----	----------	------------------------	---------------------------	-------	----------	----	-------

إِذَا لَا دَأْفَنُكَ ضِعْفَ الْحَيَاةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ

अपने लिए	तुम ने पाते	फिर	मौत	और दुगनी	जिन्दगी	दुगनी	उस सूरत में हम तुम्हें चखाते
----------	-------------	-----	-----	----------	---------	-------	------------------------------

عَلَيْنَا نَصِيرًا (٧٥) وَإِنْ كَادُوا لَيَسْتَفْرِزُونَكَ مِنَ الْأَرْضِ لِيُخْرِجُوكَ

ताकि वह तुम्हें निकाल दें	ज़मीन (मक्का)	से	कि तुम्हें फिसला ही दें	करीब था	और तहकीक	75	कोई मददगार	हम पर (हमारे मुकाबले में)
---------------------------	---------------	----	-------------------------	---------	----------	----	------------	---------------------------

مِنْهَا وَإِذَا لَا يَلْبَثُونَ خِلْفَكَ إِلَّا قَلِيلًا (٧٦) سَنَةَ مِنْ قَدْ أَرْسَلْنَا

हम ने भेजा	जो	सुन्नत	76	थोड़ा	मगर	तुम्हारे पीछे	वह न ठहर पाते	और उस सूरत में	यहां से
------------	----	--------	----	-------	-----	---------------	---------------	----------------	---------

قَبْلَكَ مِنْ رُسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيلًا (٧٧) أَقِمِ الصَّلَاةَ لِدُلُوكِ

ढलने से	नमाज़	काइम करें आप (स)	77	कोई तबदीली	हमारी सुन्नत में	और तुम ने पाओगे	अपने रसूल (जमा)	से	आप से पहले
---------	-------	------------------	----	------------	------------------	-----------------	-----------------	----	------------

الشَّمْسِ إِلَىٰ غَسَقِ اللَّيْلِ وَقُرْآنَ الْفَجْرِ إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ

है	सुबह का कुरआन	वेशक	सुबह (फ़ज़र)	और कुरआन	रात	अन्धेरा	तक	सूरज
----	---------------	------	--------------	----------	-----	---------	----	------

مَشْهُودًا (٧٨) وَمِنَ اللَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهِ نَافِلَةً لَّكَ عَسَىٰ أَنْ يَبْعَثَكَ

कि तुम्हें खड़ा करे	करीब	तुम्हारे लिए	नफिल (जाइद)	इस (कुरआन) के साथ	सो वेदार रहें	रात	और कुछ हिस्सा	78	हाज़िर किया गया (फ़िरिशतों को)
---------------------	------	--------------	-------------	-------------------	---------------	-----	---------------	----	--------------------------------

رُبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُودًا (٧٩) وَقُلْ رَبِّ أَدْخِلْنِي مُدْخَلَ صِدْقٍ

सच्चा	दाखिल करना	मुझे दाखिल कर	ऐ मेरे रब	और कहें	79	मुकामे महमूद	तुम्हारा रब
-------	------------	---------------	-----------	---------	----	--------------	-------------

وَأَخْرِجْنِي مُخْرَجَ صِدْقٍ وَاجْعَلْ لِي مِنْ لَدُنْكَ سُلْطَانًا نَّصِيرًا (٨٠)

80	मदद देने वाला	ग़ल्वा	अपनी तरफ से	मेरे लिए	और अ़ता कर	सच्चा	निकालना	और मुझे निकाल
----	---------------	--------	-------------	----------	------------	-------	---------	---------------

وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَرَهَقَ الْبَاطِلُ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا (81)									
81	है ही मिटने वाला	बातिल	वेशक	बातिल	और नाबूद हो गया	आया हक	और कह दें आप (स)		
وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ وَلَا يَزِيدُ الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا (82)									
और नहीं ज़ियादा होता	मोमिनों के लिए	और रहमत	वह शिफा	जो	कुरआन	से	और हम नाज़िल करते हैं		
وَنَا بِجَانِبِهِ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يُتُوسًا (83)									
वह रूगर्दीन हो जाता है	इन्सान	पर - को	हम नेमत वरुशते है	और जब	82	घाटा	सिवाए	ज़ालिम (जमा)	
وَنَا بِجَانِبِهِ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يُتُوسًا (83)									
पर	काम करता है	कह दें हर एक	83	मायूस	वह हो जाता	बुराई	उसे पहुँचती है	और जब	और पहलू फेर लेता है
شَاكِلَتِهِ فَرَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ أَهْدَى سَبِيلًا (84)									
और आप (स) से पूछते हैं	84	रास्ता	ज़ियादा सहीह	कि वह कौन	खूब जानता है	सो तुम्हारा परवरदिगार	अपना तरीका		
عَنِ الرُّوحِ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا (85)									
इल्म से	तुम्हें दिया गया	और नहीं	मेरा रब	हुक्म से	रूह	कह दें	रूह	से - के बारे में	
وَلَكِن شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهِ عَلَيْنَا وَكِيلًا (86)									
तुम्हारी तरफ	हम ने वहि की	वह जो कि	तो अलबत्ता हम ले जाएं	हम चाहें	और अगर	85	थोड़ा सा	मगर	
كَانَ عَلَيْكَ كَبِيرًا (87)									
पर	और जिन	तमाम इन्सान	जमा हो जाएं	अगर	कह दें	87	बड़ा	तुम पर	है
لَبَعْضِ ظَهِيرًا (88)									
उन के वाज़	और अगरचे हो जाएं	इस के मानिंद	न ला सकेंगे	इस कुरआन	मानिंद	वह लाएं	कि		
كُلِّ مَثَلٍ فَايُّ أَكْثَرِ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا (89)									
तुझ पर	हम हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे	और वह बोले	89	नाशुक्रि	सिवाए	अक्सर लोग	पस कुबूल न किया	हर मिसाल	
حَتَّى تَفْجَرَنَا مِنَ الْأَرْضِ يَنْبُوعًا (90)									
से - का	एक बाग	तेरे लिए	या हो जाए	90	कोई चश्मा	ज़मीन से	हमारे लिए	तू रवां कर दे	यहां तक कि
نَّحِيلُ وَعَنْبٍ فَتُفَجَّرَ الْأَنْهَارُ خِلَلَهَا تَفْجِيرًا (91)									
आस्मान	तू गिरा दे	या	91	बहती हुई	उस के दरमियान	नहरें	पस तू रवां कर दे	और अंगूर	खजूर (जमा)
كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسْفًا أَوْ تَأْتِي بِلِلِّ وَالْمَلِكَةِ قَبِيلًا (92)									
92	रूबरू	और फ़रिशते	अल्लाह को	या तू ले आ	टुकड़े	हम पर	जैसा कि तू कहा करता है		

और कह दें हक आया और बातिल नाबूद हो गया, वेशक बातिल है ही मिटने वाला (नीस्त औ नाबूद होने वाला)। (81)

और हम कुरआन नाज़िल करते हैं जो मोमिनों के लिए शिफा और रहमत है, और ज़ालिमों के लिए ज़ियादा नहीं होता घाटे के सिवा। (82)

और जब हम इन्सान को नेमत वरुशते हैं वह रूगर्दीन हो जाता है, और पहलू फेर लेता है, और जब उसे बुराई पहुँचती है तो वह मायूस हो जाता है। (83)

कह दें हर एक अपने तरीके पर काम करता है, सो तुम्हारा परवरदिगार खूब जानता है कि कौन ज़ियादा सहीह रास्ते पर है? (84)

और वह आप (स) से रूह के मुतअल्लिक पूछते हैं, आप (स) कह दें रूह मेरे रब के हुक्म से है, और तुम्हें इल्म नहीं दिया गया मगर थोड़ा सा। (85)

और अगर हम चाहें तो अलबत्ता हम ले जाएं (सल्व कर लें) जो वहि हम ने तुम्हारी तरफ की है, फिर तुम उस के लिए अपने वास्ते न पाओ हमारे मुकाबले पर कोई मददगार। (86)

मगर तुम्हारे रब की रहमत से है (कि ऐसा नहीं होता), वेशक तुम पर उस का बड़ा फज़ल है। (87)

आप (स) कह दें अगर तमाम इन्सान और जिन (इस बात) पर जमा हो जाएं कि वह इस कुरआन के मानिंद ले जाएं तो वह इस के मानिंद न ला सकेंगे अगरचे उन के वाज़, वाज़ के लिए (वह एक दूसरे के) मददगार हो जाएं। (88)

और हम ने लोगों के लिए इस कुरआन में तरह तरह से बयान कर दी है हर मिसाल, पस अक्सर लोगों ने नाशुक्रि के सिवा कुबूल न किया। (89)

और वह बोले कि हम तुझ पर हरगिज़ ईमान न लाएंगे, यहां तक कि तू हमारे लिए ज़मीन से कोई चश्मा रवां कर दे। (90)

या तेरे लिए खजूरों और अंगूर का एक बाग हो, पस तू उस के दरमियान बहती नहरें रवां कर दे। (91)

या जैसे तू कहा करता है हम पर आस्मान के टुकड़े गिरा दे, या अल्लाह को और फ़रिशतों को रूबरू ले आ। (92)

ع 9

या तेरे लिए सोने का एक घर हो, या तू आस्मान में चढ़ जाए, और हम हरगिज़ तेरे चढ़ने को न मानेंगे जब तक तू हम पर एक किताब न उतारे जिसे हम पढ़ लें, आप (स) कह दें पाक है मेरा रब, मैं सिर्फ एक वशर हूँ (अल्लाह का) रसूल। (93)

और लोगों को (किसी बात ने) नहीं रोका कि वह ईमान लाएँ जब उन के पास हिदायत आ गई, मगर यह कि उन्होंने न कहा क्या अल्लाह ने एक वशर को रसूल (बना कर)

भेजा है? (94)

आप (स) कह दें, अगर होते ज़मीन में फ़रिश्ते चलते फिरते, इत्मीनान से रहते तो हम ज़रूर उन पर आस्मानों से फ़रिश्ते रसूल

(बना कर) उतारते। (95)

आप (स) कह दें मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह की गवाही काफी है, वेशक वह अपने बन्दों का ख़बर रखने वाला, देखने वाला है। (96)

और जिसे अल्लाह हिदायत दे पस वही हिदायत पाने वाला है, और जिसे वह गुमराह करे पस तू उन के लिए उस के सिवा हरगिज़ कोई मददगार न पाएगा, और हम क़ियामत के दिन उन्हें उन के

चहरों के बल अन्धे और गूंगे और वहरे उठाएंगे, उन का ठिकाना जहन्नम है, जब कभी जहन्नम की आग बुझने लगेगी हम उन के लिए और भड़का देंगे। (97)

यह उन की सज़ा है क्यों कि उन्होंने ने हमारी आयतों का इन्कार किया और उन्होंने ने कहा क्या जब हम हड्डियाँ और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे, क्या हम अज़ सरे नौ पैदा कर के ज़रूर उठाए जाएंगे? (98)

क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि अल्लाह जिस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया है इस पर कादिर है कि उन जैसे पैदा करे, और उस ने उन के लिए मुक़र्रर किया एक वक़्त, इस में कोई शक नहीं, ज़ालिमों ने नाशुक्री के सिवा क़ुबूल न किया। (99)

आप कह दें अगर तुम मालिक होते मेरे रब की रहमत के ख़ज़ानों के, तो तुम ख़र्च हो जाने के डर से ज़रूर बन्द रखते, और इन्सान बहुत तंग दिल है। (100)

أَوْ يَكُونُ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُحْرَفٍ أَوْ تَرْقَى فِي السَّمَاءِ وَلَنْ نُؤْمِنَ										
और हम हरगिज़ न मानेंगे	आस्मान में	तू चढ़ जाए	या	सोना	से - का	एक घर	तेरे लिए	हो	या	
لِرُقَيْبِكَ حَتَّى تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتَابًا نَقْرُؤُهُ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّي هَلْ كُنْتُ										
नहीं हूँ मैं	मेरा रब	पाक है	आप कह दें	हम पढ़ लें जिसे	एक किताब	हम पर	तू उतारे	यहाँ तक कि	तेरे चढ़ने को	
إِلَّا بَشَرًا رَّسُولًا ﴿٩٣﴾ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمْ										
उन के पास आ गई	जब	कि वह ईमान लाएँ	लोग (जमा)	रोका	और नहीं	93	रसूल	एक वशर	मगर-सिर्फ	
الْهُدَىٰ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَبَعَثَ اللَّهُ بَشَرًا رَّسُولًا ﴿٩٤﴾ قُلْ لَوْ كَانَ										
अगर होते	कह दें	94	रसूल	एक वशर	अल्लाह	क्या भेजा	उन्होंने ने कहा	यह कि	मगर	हिदायत
فِي الْأَرْضِ مَلَائِكَةً يَّمْشُونَ مُطْمَئِنِّينَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِم مِّنَ السَّمَاءِ										
आस्मान से	उन पर	हम ज़रूर उतारते	इत्मीनान से रहते	चलते फिरते	फ़रिश्ते	ज़मीन में				
مَلَكًا رَّسُولًا ﴿٩٥﴾ قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ إِنَّهُ كَانَ										
है	वेशक वह	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	गवाह	अल्लाह की	काफी है	कह दें	95	रसूल	फ़रिश्ता
بِعِبَادِهِ خَيْرًا بَصِيرًا ﴿٩٦﴾ وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ										
और जिसे	हिदायत पाने वाला	पस वही	अल्लाह	हिदायत दे	और जिसे	96	देखने वाला	ख़बर रखने वाला	अपने बन्दों का	
يُضِلُّ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ أَوْلِيَاءَ مِن دُونِهِ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ										
क़ियामत के दिन	और हम उठाएंगे उन्हें	उस के सिवा	मददगार	उन के लिए	पस तू हरगिज़ न पाएगा	गुमराह करे				
عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ عُمِيًّا وَبُكْمًا وَصُمًّا مَّاوَاهُمْ جَهَنَّمَ كُلَّمَا خَبَتْ										
बुझने लगेगी	जब कभी	जहन्नम	उन का ठिकाना	और वहरे	और गूंगे	अन्धे	उन के चहरे	पर - बल		
رِذْنُهُمْ سَعِيرًا ﴿٩٧﴾ ذَلِكَ جَزَاؤُهُمْ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا وَقَالُوا										
और उन्होंने ने कहा	हमारी आयतों का	उन्होंने ने इन्कार किया	क्यों कि वह	उन की सज़ा	यह	97	भड़काना	हम उन के लिए ज़ियादा कर देंगे		
ءِذَا كُنَّا عِظَامًا وَرُفَاتًا ءَأَنَّا لَمَبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ﴿٩٨﴾										
98	अज़ सरे नौ	पैदा कर के	ज़रूर उठाए जाएंगे	क्या हम	और रेज़ा रेज़ा	हड्डियाँ	हो जाएंगे हम	क्या जब		
أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ قَادِرٌ عَلَىٰ										
पर	कादिर	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	पैदा किया	जिस ने	अल्लाह	कि	उन्होंने ने देखा	क्या नहीं	
أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلًا لَا رَيْبَ فِيهِ فَبِأَيِّ الظَّالِمُونَ										
ज़ालिम (जमा)	तो क़ुबूल न किया	उस में	नहीं शक	एक वक़्त	उन के लिए	उस ने मुक़र्रर किया	उन जैसे	कि वह पैदा करे		
إِلَّا كُفُورًا ﴿٩٩﴾ قُلْ لَوْ أَنْتُمْ تَمْلِكُونَ خَزَائِنَ رَحْمَةِ رَبِّي إِذًا										
जब	मेरा रब	रहमत	ख़ज़ाने	मालिक होते	तुम	अगर	आप कह दें	99	नाशुक्री के सिवा	
لَأَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْإِنْفَاقِ وَكَانَ الْإِنْسَانُ قَثُورًا ﴿١٠٠﴾										
100	तंग दिल	इन्सान	और है	ख़र्च हो जाना	डर से	तुम ज़रूर बन्द रखते				

١٠

١٠

١١

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى تِسْعَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ فَسَأَلَ بَنِي إِسْرَائِيلَ إِذْ جَاءَهُمْ									
उन के पास आया	जब	वनी इस्राईल	पस पूछ तू	खुली निशानियां	नौ (9)	मूसा (अ)	और अलबत्ता हम ने दी		
فَقَالَ لَهُ فِرْعَوْنُ إِنِّي لَأَظُنُّكَ يُمُوسَى مَسْحُورًا ﴿١٠١﴾ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَا									
अलबत्ता तू ने जान लिया	उस ने कहा	101	जादू किया गया	ऐ मूसा	तुझ पर गुमान करता हूँ	वेशक मैं	फिरऔन	उस को	तो कहा
مَا أَنْزَلَ هَؤُلَاءِ إِلَّا رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ بِصَآئِرٍ وَإِنِّي لَأَظُنُّكَ									
तुझ पर गुमान करता हूँ	और वेशक मैं	वसीरत (जमा)	आस्मानों और ज़मीन का परवरदिगार	मगर	इस को	नहीं नाज़िल किया			
يُفِرْعَوْنُ مَثْبُورًا ﴿١٠٢﴾ فَآرَادَ أَنْ يَسْتَفِزَّهُمْ مِنَ الْأَرْضِ فَأَغْرَقْنَاهُ									
तो हम ने उसे गर्क कर दिया	ज़मीन से	उन्हें निकाल दे	कि	पस उस ने इरादा किया	102	हलाक शुदा	ऐ फिरऔन		
وَمَنْ مَعَهُ جَمِيعًا ﴿١٠٣﴾ وَقُلْنَا مِنْ بَعْدِهِ لِبَنِي إِسْرَائِيلَ اسْكُنُوا									
तुम रहो	वनी इस्राईल को	उस के बाद	और हम ने कहा	103	सब	उसके साथ	और जो		
الْأَرْضَ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيفًا ﴿١٠٤﴾ وَبِالْحَقِّ أَنْزَلْنَاهُ									
हम ने इसे नाज़िल किया	और हक के साथ	104	जमा कर के	तुम को	हम ले आएं	आखिरत का वादा	आएगा	फिर जब	ज़मीन (मुल्क)
وَبِالْحَقِّ نَزَّلْ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿١٠٥﴾ وَقُرْآنًا فَرَقْنَاهُ									
हम ने जुदा जुदा किया	और कुरआन	105	और डर सुनाने वाला	मगर खुशखबरी देने वाला	हम ने आप (स) को भेजा	और नहीं	नाज़िल हुआ	और सच्चाई के साथ	
لِتَقْرَأَهُ عَلَى النَّاسِ عَلَى مُكْثٍ وَنَزَلْنَاهُ تَنْزِيلًا ﴿١٠٦﴾ قُلْ آمِنُوا بِهِ أَوْ									
या	तुम इस पर ईमान लाओ	आप कह दें	106	आहिस्ता आहिस्ता	और हम ने उसे नाज़िल किया	ठहर ठहर कर	लोग	पर	ताकि तुम उसे पढ़ो
لَا تُؤْمِنُوا إِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهِ إِذَا يُتْلَى عَلَيْهِمْ									
उन के सामने	वह पढ़ा जाता है	जब	इस से क़व्ल	इल्म दिया गया	वह लोग जिन्हें	वेशक	तुम ईमान न लाओ		
يَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ سُجَّدًا ﴿١٠٧﴾ وَيَقُولُونَ سُبْحَانَ رَبِّنَا إِنْ كَانَ									
है	वेशक	हमारा रब	पाक है	और वह कहते हैं	107	सिज्दा करते हुए	ठोड़ियों के बल	वह गिर पड़ते हैं	
وَعَدُ رَبِّنَا لَمَفْعُولًا ﴿١٠٨﴾ وَيَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ يَبْكُونَ وَيَزِيدُهُمْ									
और उन में ज़ियादा करता है	रोते हुए	ठोड़ियों के बल	और वह गिर पड़ते हैं	108	ज़रूर पूरा हो कर रहने वाला	हमारा रब	वादा		
خُشُوعًا ﴿١٠٩﴾ قُلِ ادْعُوا اللَّهَ أَوَادْعُوا الرَّحْمَنَ أَيًّا مَا تَدْعُوا فَلَهُ									
सो उसी के लिए	तुम पुकारोगे	जो कुछ भी	रहमान	या तुम पुकारो	अल्लाह	तुम पुकारो	आप कह दें	109	आजिजी
الْأَسْمَاءَ الْحُسْنَىٰ وَلَا تَجْهَرُ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافُتُ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذَلِكَ									
उस के दरमियान	और दून्डो	उस में	और न विलकुल पस्त करो तुम	अपनी नमाज़ में	और न बुलन्द करो तुम	सब से अच्छे नाम			
سَبِيلًا ﴿١١٠﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ									
उस के लिए	और नहीं है	कोई औलाद	नहीं बनाई	वह जिस ने	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफें	और कह दें	110	रास्ता
شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ وَلِيٌّ مِّنَ الدُّنْيَا وَكَبِيرًا ﴿١١١﴾									
111	खूब बड़ाई	और उस की बड़ाई करो	नातवानी	से, कोई मददगार	उस का	और नहीं है	सलतनत में	कोई शरीक	

और हम ने मूसा (अ) को नौ (9) खुली निशानियां दी, पस वनी इस्राईल से पूछ, जब वह (मूसा अ) उन के पास आए तो फिरऔन ने उस को कहा वेशक मैं गुमान करता हूँ तुम पर जादू किया गया है (सिहर ज़दा हो)। (101) उस ने कहा, अलबत्ता तू जान चुका है कि इस को नाज़िल नहीं किया मगर आस्मानों और ज़मीन के परवरदिगार ने वसीरत (समझ बूझ की बातें), और ऐ फिरऔन! वेशक मैं तुझे गुमान करता हूँ हलाक शुदा (हलाक हुआ चाहता है)। (102) पस उस ने इरादा किया कि उन्हें सरज़मीने (मिस्त्र) से निकाल दे तो हम ने उसे और जो उस के साथ थे सब को गर्क कर दिया। (103) और हम ने कहा उस के बाद वनी इस्राईल को कि तुम उस मुल्क में रहो, फिर जब आखिरत का वादा आएगा हम तुम सब को ले आएंगे जमा कर के (समेट कर)। (104) और हम ने इसे (कुरआन को) हक के साथ नाज़िल किया और वह सच्चाई के साथ नाज़िल हुआ, और हम ने आप (स) को नहीं भेजा मगर खुश खबरी देने वाला और डर सुनाने वाला। (105) और कुरआन हम ने जुदा जुदा कर के (थोड़ा थोड़ा) नाज़िल किया ताकि तुम लोगों पर ठहर ठहर कर पढ़ो, और हम ने उसे आहिस्ता आहिस्ता (बतदरीज) नाज़िल किया। (106) आप (स) कह दें तुम उस पर ईमान लाओ या न लाओ, वेशक जिन्हें इस से क़व्ल इल्म दिया गया है, जब वह उन के सामने पढ़ा जाता है तो वह सिज्दा करते हुए ठोड़ियों के बल गिर पड़ते हैं। (107) और वह कहते हैं हमारा रब पाक है, वेशक हमारे रब का वादा ज़रूर पूरा हो कर रहने वाला है। (108) और वह रोते हुए ठोड़ियों के बल गिर पड़ते हैं और यह (कुरआन) उन में आजिजी और ज़ियादा करता है। (109) आप (स) कह दें तुम पुकारो अल्लाह (कह कर) या पुकारो रहमान (कह कर) जो कुछ भी पुकारोगे उसी के लिए हैं सब से अच्छे नाम, और न अपनी नमाज़ में (आवाज़ बहत) बुलन्द करो और न उस में विलकुल पस्त करो (बल्कि) उस के दरमियान का रास्ता दून्डो। (110) और आप (स) कह दें तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं, वह जिस ने कोई औलाद नहीं बनाई, और सलतनत में उस का कोई शरीक नहीं, और न कोई उस का मददगार है नातवानी के सबब, और खूब उस की बड़ाई (वयान) करो। (111)

وقف الازم

الْحُسْنَىٰ

۱۲

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जिस ने अपने बन्दे (मुहम्मद स) पर (यह) किताब नाज़िल की, और उस में कोई कजी न रखी। (1)

(बल्कि) ठीक सीधी (उतारी) ताकि डर सुनाए उस की तरफ से सख्त अज़ाब से, और मोमिनों को खुशख़बरी दे, जो अच्छे अमल करते हैं कि उन के लिए अच्छा अजर है, (2)

वह उस में हमेशा रहेंगे। (3) और वह उन लोगों को डराए जिन्होंने ने कहा अल्लाह ने बेटा बना लिया है। (4)

उस का न उन्हें कोई इल्म है और न उन के बाप दादा को था, बड़ी है बात (जो) उन के मुँह से निकलती है, वह नहीं कहते मगर झूट। (5)

तो शायद आप (स) उन के पीछे अपनी जान को हलाक करने वाले हैं, अगर वह ईमान न लाए इस बात पर, ग़म के मारे। (6)

जो कुछ ज़मीन में है, बेशक हम ने उसे उस के लिए ज़ीनत बनाया है ताकि हम उन्हें आज़माएं कि उन में कौन है अमल में बेहतर। (7)

और जो कुछ इस (ज़मीन) पर है बेशक हम उसे (नाबूद कर के) साफ़ चटयल मैदान करने वाले हैं। (8)

क्या तुम ने गुमान किया? कि कहफ़ (ग़ार) और रक़ीम वाले हमारी निशानियों में से अजीब थे। (9)

जब उन जवानों ने ग़ार में पनाह ली तो उन्होंने ने कहा, ऐ हमारे रब! हमें अपनी तरफ से रहमत दे, और हमारे काम में दुरुस्ती मुहैया कर। (10)

पस हम ने पर्दा डाला उन के कानों पर, उन्हें ग़ार में कई साल (सुलाया)। (11)

آيَاتُهَا ١١٠ \* (١٨) سُورَةُ الْكَهْفِ \* زُكُوعَاتُهَا ١٢

रुकुआत 12

(18) सूरतुल कहफ़ ग़ार

आयात 110

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَى عَبْدِهِ الْكِتَابَ وَلَمْ يَجْعَلْ

और न रखी	किताब (कुरआन)	अपने बन्दे पर	नाज़िल की	वह जिस ने	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफें
----------	---------------	---------------	-----------	-----------	---------------	--------------

لَهُ عِوَجًا ﴿١﴾ فِيمَا لِيُنذِرَ بَأْسًا شَدِيدًا مِّن لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ

और खुशख़बरी दे	उस की तरफ से	सख्त	अज़ाब	ताकि डर सुनाए	ठीक सीधी	1	कोई कजी	उस में
----------------	--------------	------	-------	---------------	----------	---	---------	--------

الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا حَسَنًا ﴿٢﴾

2	अच्छा अजर	कि उन के लिए	अच्छे	अमल करते हैं	वह जो	मोमिनों
---	-----------	--------------	-------	--------------	-------	---------

مَّا كَثِيرٍ فِيهِ أَبَدًا ﴿٣﴾ وَيُنذِرَ الَّذِينَ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ

अल्लाह ने बना लिया है	वह जिन लोगों ने कहा	और वह डराए	3	हमेशा	उस में	वह रहेंगे
-----------------------	---------------------	------------	---	-------	--------	-----------

وَلَدًا ﴿٤﴾ مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ وَلَا لِآبَائِهِمْ كَبُرَتْ كَلِمَةً

बात	बड़ी है	उन के पाप दादा	और न	कोई इल्म	उन को उस का	नहीं	4	बेटा
-----	---------	----------------	------	----------	-------------	------	---	------

تَخْرُجُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ إِنْ يَقُولُونَ إِلَّا كَذِبًا ﴿٥﴾ فَلَعَلَّكَ

तो शायद आप	5	झूट	मगर	वह कहते हैं	नहीं	उन के मुँह (जमा)	से	निकलती है
------------	---	-----	-----	-------------	------	------------------	----	-----------

بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلَى آثَارِهِمْ إِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوا بِهَذَا الْحَدِيثِ

बात	इस	वह ईमान न लाए	अगर	उन के पीछे	पर	अपनी जान	हलाक करने वाला
-----	----	---------------	-----	------------	----	----------	----------------

أَسْفًا ﴿٦﴾ إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لِّهَا لِنَبْلُوهُمْ أَيُّهُمْ

कौन उन में से	ताकि हम उन्हें आज़माएं	उसके लिए	ज़ीनत	ज़मीन पर	जो	हम ने बनाया	बेशक हम	6	ग़म के मारे
---------------	------------------------	----------	-------	----------	----	-------------	---------	---	-------------

أَحْسَنُ عَمَلًا ﴿٧﴾ وَإِنَّا لَجَعَلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا ﴿٨﴾

8	बंजर (चटयल)	साफ़ मैदान	जो उस पर	अलबत्ता करने वाले	और बेशक हम	7	अमल में	बेहतर
---	-------------	------------	----------	-------------------	------------	---	---------	-------

أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ كَانُوا مِنْ

से	वह थे	और रक़ीम	असहावे कहफ़ (ग़ार वाले)	कि	क्या तुम ने गुमान किया?
----	-------	----------	-------------------------	----	-------------------------

آيَاتِنَا عَجَبًا ﴿٩﴾ إِذْ أَوَى الْفِتْيَةَ إِلَى الْكَهْفِ فَنُفِثُوا رَبَّنَا

ऐ हमारे रब	तो उन्होंने ने कहा	ग़ार	तरफ - में	जवान (जमा)	पनाह ली	जब	9	हमारी निशानियां अजीब
------------	--------------------	------	-----------	------------	---------	----	---	----------------------

إِنَّا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ﴿١٠﴾

10	दुरुस्ती	हमारे काम में	हमारे लिए	और मुहैया कर	रहमत	अपनी तरफ से	हमें दे
----	----------	---------------	-----------	--------------	------	-------------	---------

فَضْرَبْنَا عَلَى آذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ﴿١١﴾

11	कई साल	ग़ार में	उन के कान (जमा)	पर	पस हम ने मारा (पर्दा डाला)
----	--------	----------	-----------------	----	----------------------------



ع ۱۲

ثُمَّ بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ أَيُّ الْحِزْبَيْنِ أَحْصَىٰ لِمَا لَبِئْتُوا أَمَدًا ﴿١٢﴾								
12	मुद्दत	कितनी देर रहे	हिसाब रखा	दोनों गिरोह	कौन-किस	ताकि हम देखें	हम ने उन्हें उठाया	फिर
نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُم بِالْحَقِّ إِنَّهُمْ فِتْنَةٌ آمَنُوا بِرَبِّهِمْ								
अपने रब पर	वह ईमान लाए	चन्द नौजवान	वेशक वह	ठीक ठीक	उनका हाल	तुझ से	बयान करते हैं	हम
وَزِدْنَاهُمْ هُدًى ﴿١٣﴾ وَرَبَطْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا فَقَالُوا								
तो उन्होंने ने कहा	वह खड़े हुए	जब	उन के दिल	पर	और हम ने गिरह लगादी	13	हिदायत	और हम ने और ज़ियादा दी उन्हें
رَبَّنَا رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَنْ نَدْعُوكَ مِنْ دُونِهَا لَقَدْ قُلْنَا								
अलबत्ता हम ने कही	कोई माबूद	उस के सिवा	हम पुकारेंगे	हरगिज़ न	आस्मानों और ज़मीन का परवरदिगार	हमारा रब		
إِذَا شَطَطًا ﴿١٤﴾ هَؤُلَاءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهَا إِلَهًا								
और माबूद	उस के सिवा	उन्होंने बना लिए	हमारी कौम	यह है	14	बेजा बात	उस वक़्त	
لَوْ لَا يَأْتُونَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطَنٍ بَيِّنٍ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ								
इफ़तिरा करे	उस से जो	बड़ा ज़ालिम	पस कौन	वाज़ेह	कोई दलील	उन पर	क्यों वह नहीं लाते	
عَلَىٰ اللَّهِ كَذِبًا ﴿١٥﴾ وَإِذْ اعْتَزَلْتُمُوهُمْ وَمَا يُعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ								
अल्लाह के सिवा	और जो वह पूजते हैं	तुम ने उन से किनारा कर लिया	और जब	15	झूट	अल्लाह	पर	
فَأَوْأَىٰ إِلَىٰ الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيَهَيِّئْ لَكُمْ								
तुम्हारे लिए	सुहैया करेगा	अपनी रहमत	से	तुम्हारा रब	फैला देगा तुम्हें	ग़ार	तरफ़-में	तो पनाह लो
مِنْ أَمْرِكُمْ مَرْفَقًا ﴿١٦﴾ وَتَرَىٰ الشَّمْسَ إِذَا طَلَعَتْ تَزُورُ عَنْ								
से	वच कर जाती है	वह निकलती है	जब	सूरज (धूप)	और तुम देखोगे	16	सहूलत	तुम्हारे काम से
كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَإِذَا غَرَبَتْ تَقَرَّبُ إِلَيْهِمْ ذَاتَ الشَّمَالِ								
वाएं तरफ़	उन से कतरा जाती है	वह ढल जाती है	और जब	दाएं तरफ़	उन का ग़ार			
وَهُمْ فِي فَجْوَةٍ مِنْهُ ذَلِكُمْ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ مَنْ يَهْدِ اللَّهُ								
हिदायत दे अल्लाह	जो - जिसे	अल्लाह की निशानियां	से	यह	उस (ग़ार) की	खुली जगह	में	और वह
فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ يُضِلِّ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ وَلِيًّا مُرْشِدًا ﴿١٧﴾								
17	सीधी राह दिखाने वाला	कोई रफ़ीक़	उस के लिए	पस तू हरगिज़ न पाएगा	वह गुमराह करे	और जो-जिस	पस वह हिदायत यापता	
وَتَحْسَبُهُمْ آيِقًا وَهُمْ رُقُودٌ وَنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِينِ								
दाएं तरफ़	और हम बदलवाते हैं उन्हें	सोए हुए	हालांकि वह	बेदार	और तू उन्हें समझे			
وَذَاتَ الشَّمَالِ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيدِ لَوِ اطَّلَعَتْ								
अगर तू झांकता	देहलीज़ पर	दोनों हाथ	फैलाए हुए	और उन का कुत्ता	और बाएं तरफ़			
عَلَيْهِمْ لَوَّيْتُمْ مِنْهُمْ فِرَارًا وَكَلِمَاتٍ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿١٨﴾								
18	दहशत में	उन से	और तू भर जाता	भागता हुआ	उन से	तो पीठ फेरता	उन पर	

फिर हम ने उन्हें उठाया ताकि हम देखें दोनों गिरोहों में से किस ने खूब याद रखा है कि वह कितनी मुद्दत (ग़ार में) रहे? (12) हम तुझ से ठीक ठीक उन का हाल बयान करते हैं, वह चन्द नौजवान थे, वह ईमान लाए अपने रब पर, और हम ने उन्हें हिदायत और ज़ियादा दी। (13) और हम ने उन के दिलों पर गिरह लगा दी (दिल पुख्ता कर दिए) जब वह खड़े हुए तो उन्होंने ने कहा हमारा रब परवरदिगार है आस्मानों का और ज़मीन का, हम उस के सिवाए हरगिज़ किसी को माबूद न पुकारेंगे (वरना) अलबत्ता उस वक़्त हम ने बेजा बात कही। (14) यह है हमारी कौम, उस ने उस के सिवा और माबूद बना लिए, वह उन पर कोई वाज़ेह दलील क्यों नहीं लाते? पस कौन है उस से बड़ा ज़ालिम जो अल्लाह पर झूट इफ़तिरा करे। (15) और जब तुम ने उन से और जिन को वह अल्लाह के सिवा पूजते हैं उन से किनारा कर लिया है तो ग़ार में पनाह लो, तुम्हारा रब तुम्हारे लिए अपनी रहमत फैलादेगा, और तुम्हारे काम में तुम्हारे लिए सहूलत सुहैया करेगा। (16) और तुम देखोगे जब धूप निकलती है, वह उन की ग़ार से दाएं तरफ़ वच कर जाती है, और जब वह ढलती है तो उन से बाएं तरफ़ को कतरा जाती है, और वह ग़ार की खुली जगह में है, यह अल्लाह की निशानियों में से है, जिसे हिदायत दे अल्लाह, सो वही हिदायत यापता है और जिसे वह गुमराह करे तो उस के लिए हरगिज़ कोई रफ़ीक़, सीधी राह दिखाने वाला न पाओगे। (17) और तू उन्हें बेदार समझे हालांकि वह सोए हुए हैं और हम उन्हें दाएं तरफ़ और बाएं तरफ़ (करवट) बदलवाते हैं, और उन का कुत्ता दोनों हाथ (पंजे) फैलाए हुए है देहलीज़ पर, अगर तू उन पर झांकता तो उन से पीठ फेर कर भागता, और उन से दहशत में भर जाता। (18)

ع ۱۲

और हम ने उसी तरह उन्हें उठाया ताकि वह आपस में एक दूसरे से सवाल करें, उन में से एक कहने वाले ने कहा तुम (यहां) कितनी देर रहे? उन्होंने ने कहा हम रहे एक दिन या एक दिन का कुछ हिस्सा, उन्होंने ने कहा तुम्हारा रब खूब जानता है तुम कितनी मुद्दत रहे हो? पस अपने में से एक को अपना यह रूपया दे कर भेजो शहर की तरफ, पस वह देखे कौन सा खाना पाकीज़ा तर है, तो वह उस से तुम्हारे लिए ले आए और नर्मी करे और किसी को तुम्हारी ख़बर न दे बैठे। (19)

वेशक अगर वह तुम्हारी ख़बर पालेंगे तो वह तुम्हें संगसार कर देंगे या तुम्हें लौटा लेंगे अपनी मिल्लत में, और उस सूरत में तुम हरगिज़ कभी फ़लाह न पाओगे। (20)

और उसी तरह हम ने (लोगों को) उन पर ख़बरदार किया ताकि वह जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है, और यह कि क़ियामत में कोई शक नहीं, (याद करो) जब वह उन के मामले में आपस में झगड़ते थे, तो उन्होंने ने कहा उन पर एक इमारत बनाओ, उन का रब उन्हें खूब जानता है। जो लोग उन के काम पर ग़ालिब थे उन्होंने ने कहा हम ज़रूर बनाएंगे उन पर एक मसजिद (इबादतग़ाह)। (21)

अब (कुछ) कहेंगे वह तीन है चौथा उन का कुत्ता है, और (कुछ) कहेंगे वह पाँच है और उन का छटा है (अटकल के तुक्के चला रहे हैं), कुछ कहेंगे वह सात है और आठवां उन का कुत्ता है, आप (स) कह दें मेरा रब खूब जानता है उन की तेदाद, उन्हें सिर्फ़ थोड़े जानते हैं, पस सरसरी बहस के सिवा उन के (बारे में) न झगड़ो, और न पूछो उन के बारे में उन में से किसी से। (22)

وَكَذَلِكَ بَعَثْنَاهُمْ لِيَتَسَاءَلُوا بَيْنَهُمْ ۗ قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ						
उन में से	एक कहने वाला	कहा	आपस में	ताकि वह एक दूसरे से सवाल करें	हम ने उन्हें उठाया	और उसी तरह
كَمْ لَبِثْتُمْ ۗ قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۗ قَالُوا رَبُّكُمْ						
तुम्हारा रब	उन्होंने ने कहा	एक दिन का कुछ हिस्सा	या	एक दिन	हम रहे	उन्होंने ने कहा
أَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ۗ فَابْعَثُوا أَحَدَكُم بِوَرِقِكُمْ هَذِهِ						
यह	अपना रूपया दे कर	अपने में से एक	पस भेजो तुम	जितनी मुद्दत तुम रहे	खूब जानता है	
إِلَى الْمَدِينَةِ فَلَیُنظَرُ أَيُّهَا أَرْكَىٰ طَعَامًا فَلْيَأْتِكُمْ بِرِزْقٍ						
खाना	तो वह तुम्हारे लिए ले आए	खाना	पाकीज़ा तर	कौन सा	पस वह देखे	शहर
مِّنْهُ وَلِيَسْلَطَ ۗ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ أَحَدًا ۗ (19)						
19	किसी को	तुम्हारी	और वह ख़बर न दे बैठे	और नर्मी करे	उस से	
إِنَّهُمْ إِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوكُمْ أَوْ يُعِيدُوكُمْ						
तुम्हें लौटा लेंगे	या	तुम्हें संगसार कर देंगे	तुम्हारी	अगर वह ख़बर पा लेंगे	वेशक वह	
فِي مَلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوا إِذَا أَبَدًا ۗ (20) وَكَذَلِكَ أَعْرَضْنَا						
हम ने ख़बरदार कर दिया	और उसी तरह	20	उस सूरत में कभी	और तुम हरगिज़ फ़लाह न पाओगे	अपनी मिल्लत में	
عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوا أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ						
कोई शक नहीं	क़ियामत	और यह कि	सच्चा	अल्लाह का वादा	कि	ताकि वह जान लें
فِيهَا ۗ إِذْ يَتَنَزَّعُونَ بَيْنَهُمْ أَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوا						
बनाओ	तो उन्होंने ने कहा	उन का मामला	आपस में	वह झगड़ते थे	जब	उस में
عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ۗ رَبُّهُمْ أَعْلَمُ بِهِمْ ۗ قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا						
वह लोग जो ग़ालिब थे	कहा	खूब जानता है उन्हें	उनका रब	एक इमारत	उन पर	
عَلَىٰ أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَسْجِدًا ۗ (21) سَيَقُولُونَ						
अब वह कहेंगे	21	एक मसजिद	उन पर	हम ज़रूर बनाएंगे	अपने काम पर	
ثَلَاثَةَ رَابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ۖ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ						
उन का कुत्ता	उन का छटा	पाँच	और वह कहेंगे	उन का कुत्ता	उन का चौथा	तीन
رَجْمًا بِالْغَيْبِ ۖ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ۗ قُلْ						
कह दें आप (स)	उन का कुत्ता	और उन का आठवां	सात	और कहेंगे वह	बिन देखे	बात फ़ैकना
رَبِّي أَعْلَمُ بِعَدَّتِهِمْ مَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا قَلِيلٌ ۗ فَلَا تَمَارِ فِيهِمْ						
उन में	पस न झगड़ो	थोड़े	मगर सिर्फ़	उन्हें नहीं जानते हैं	उन की गिनती (तेदाद)	खूब जानता है मेरा रब
إِلَّا مِرَاءً ظَاهِرًا ۗ وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِمْ مِّنْهُمْ أَحَدًا ۗ (22)						
22	किसी	उन में से	उनके (बारे में)	पूछ	और न ज़ाहिरी (सरसरी)	बहस सिवाए

نصف القرآن باعتبار عدد الحروف بان الشاء بعد الاء  
من النصف الاول واللام الثانية من النصف الاخير ١٢

ع  
١٥

وَلَا تَقُولَنَّ لِشَيْءٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذَلِكَ غَدًا ۚ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ									
चाहे	यह कि	मगर	23	कल	यह	करने वाला हूँ	कि मैं	किसी काम को	और हरगिज़ न कहना तुम
اللَّهُ ۗ وَادْكُرْ رَبَّكَ إِذَا نَسِيتَ وَقُلْ عَسَى أَنْ يَهْدِيَنِّي رَبِّي لِأَقْرَبٍ مِنْ هَذَا رَشَدًا ۚ (24) وَلَبِئْسُوا فِي كَهْفِهِمْ									
कि मुझे हिदायत दे	उम्मीद है	और कह		तू भूल जाए	जब	अपना रव	और तू याद कर	अल्लाह	
ثَلَاثَ مِائَةٍ سِنِينَ وَازْدَادُوا تِسْعًا ۚ (25) قُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوا ۗ									
अपना ग़ार	में	और वह रहे	24	भलाई	उस से	बहुत ज़ियादा करीब की	मेरा रव		
कितनी मुदत वह ठहरे	खूब जानता है	अल्लाह	25	नौ (9)	और उन के ऊपर	साल	तीन सौ (300)		
لَهُ غَيْبُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ أَبْصِرُ بِهِ وَأَسْمِعُ ۗ									
और क्या वह सुनता है	क्या वह देखता है	और ज़मीन		आस्मानों	ग़ैब	उसी को			
مَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا يُشْرِكُ فِي حُكْمِهِ أَحَدًا ۚ (26)									
26	किसी को	अपने हुक्म में		और वह शरीक नहीं करता	कोई मददगार	उस के सिवा	उन के लिए नहीं		
وَاتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ۗ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ ۗ									
उस की बातों को	नहीं कोई बदलने वाला	आप का रव		किताब	से	आप की तरफ़	जो वहि की गई	और आप पढ़ें	
وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ۚ (27) وَأَصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ									
साथ	अपना नफ़्स (अपना आप)	और रोके रखो	27	कोई पनाह गाह	उस के सिवा	और तुम हरगिज़ न पाओगे			
الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْعَدْوَةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ									
उस का चहरा (रज़ा)	वह चाहते हैं	और शाम		सुबह	अपना रव	वह लोग जो पुकारते हैं			
وَلَا تَعْدُ عَيْنُكَ عَنْهُمْ ۗ تُرِيدُ زِينَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۗ									
दुनिया	ज़िन्दगी	आराइश	तुम तलबगार हो जाओ	उन से	तुम्हारी आँखें	न दौड़ें (न फिरें)			
وَلَا تُطِعْ مَنْ أَغْفَلْنَا قَلْبَهُ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ وَكَانَ									
और है	अपनी खाहिश	और पीछे पड़ गया		अपना ज़िक्र	से	उस का दिल	हम ने ग़ाफ़िल कर दिया	जो - जिस और कहा न मानो	
أَمْرُهُ فُرُطًا ۚ (28) وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ ۗ فَمَنْ شَاءَ فَلْيُؤْمِنْ									
सो ईमान लाए	चाहे	पस जो	तुम्हारा रव	से	हक	और कह दें	28	हद से बढ़ा हुआ	
وَمَنْ شَاءَ فَلْيُكْفُرْ ۗ إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ نَارًا									
आग	ज़ालिमों के लिए	हम ने तैयार किया		बेशक हम	सो कुफ़र करे (न माने)	चाहे	और जो		
أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۗ وَإِنْ يَسْتَعِثُّوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ									
पानी से	वह दाद रसी किए जाएंगे	वह फ़र्याद करेंगे		और अगर	उस की कन्नातें	उन्हें	घेर लेंगी		
كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهَ ۗ بِئْسَ الشَّرَابُ ۗ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا ۚ (29)									
29	आराम गाह	और बुरी है		बुरा है पीना (मशरूब)	मुँह (जमा)	वह भून डालेगा	पिघले हुए ताँम्बे की मानिंद		

और हरगिज़ किसी काम को न कहना “कि मैं कल करने वाला हूँ” (कल कर दूँगा), (23) मगर “यह कि अल्लाह चाहे” (इनशा अल्लाह) और जब तू भूल जाए तो अपने रव को याद कर और कहो उम्मीद है कि मेरा रव मुझे हिदायत दे उस से ज़ियादा करीब की भलाई की। (24) और वह उस ग़ार में तीन सौ (300) साल रहे, और उन के ऊपर नौ (309 साल)। (25) आप (स) कह दें अल्लाह खूब जानता है वह कितनी मुदत ठहरे, उसी को है आस्मानों और ज़मीन का ग़ैब, क्या (खूब) वह देखता है और क्या (खूब) वह सुनता है! उन के लिए उस के सिवा कोई मददगार नहीं, वह अपने हुक्म में किसी को शरीक नहीं करता। (26) और आप (स) पढ़ें जो आप (स) की तरफ़ आप (स) के रव की किताब वहि की गई है, उस की बातों को कोई बदलने वाला नहीं, और तुम हरगिज़ न पाओगे उस के सिवा कोई पनाह गाह। (27) और अपने आप को उन लोगों के साथ रोके (लगाए) रखो जो अपने रव को पुकारते हैं सुबह और शाम, वह उस की रज़ा चाहते हैं, और तुम्हारी आँखें उन से न फिरें कि तुम दुनिया की ज़िन्दगी की आराइश के तलबगार हो जाओ, और उस का कहा न मानो जिस का दिल हम ने अपने ज़िक्र से ग़ाफ़िल कर दिया, और वह अपनी खाहिश के पीछे पड़ गया, और उस का काम हद से बढ़ा हुआ है। (28) और आप (स) कह दें हक़ तुम्हारे रव की तरफ़ से है, पस जो चाहे सो ईमान लाए और जो चाहे सो न माने, हम ने बेशक तैयार की है ज़ालिमों के लिए आग, उस की कन्नातें उन्हें घेर लेंगी, और अगर वह फ़र्याद करेंगे तो पिघले हुए ताँम्बे के मानिंद (खौलते) पानी से दाद रसी किए जाएंगे, वह (उन के) मुँह भून डालेगा, बुरा है उन का मशरूब और बुरी है (उन की) आराम गाह (जहननम)। (29)

﴿٢٨﴾

वेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अमल किए नेक, यकीनन हम उस का अजर ज़ाया नहीं करेंगे जिस ने अच्छा अमल किया। (30) यही लोग हैं उन के लिए हमेशगी के बागात है, बहती हैं उन के नीचे नहरें, उस में उन्हें सोने के कंगन पहनाए जाएंगे, और वह कपड़े पहनेंगे सब्ज़ बारीक रेशम के और दबीज़ रेशम के, उस में वह मसहरियों पर तकिया लगाए हुए होंगे, अच्छा बदला और खूब है आराम गाह। (31) और आप (स) उन के लिए दो आदमियों का हाल बयान करें, हम ने उन में से एक के लिए दो (2) बाग बनाए अंगूरों के, और हम ने उन्हें खजूरों के दरख्तों (की बाड़) से घेर लिया, और उन के दरमियान खेती रखी। (32) दोनों बाग अपने फल लाए, और उस (पैदावार) में कुछ कमी न करते थे, और हम ने उन दोनों के दरमियान में एक नहर जारी कर दी। (33) और उस के लिए (बहुत) फल था तो वह अपने साथी से बोला, मैं माल में तुझ से ज़ियादा तर हूँ, और आदमियों (जत्थे) के लिहाज़ से ज़ियादा वाइज़ज़त हूँ। (34) और वह अपने बाग में दाखिल हुआ (इस हाल में कि) वह अपनी जान पर जुल्म कर रहा था, वह बोला मैं गुमान नहीं करता कि यह कभी वरबाद होगा। (35) और मैं गुमान नहीं करता कि क्रियामत वरपा होने वाली है, और अगर मैं अपने रब की तरफ लौटाया गया तो मैं ज़रूर इस से बेहतर लौटने की जगह पाऊँगा। (36) उस के साथी ने उस से कहा और वह उस से बातें कर रहा था, क्या तू उस के साथ कुफ़ करता है? जिस ने तुझे मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, फिर उस ने तुझे बनाया (पूरा) मर्द। (37) लेकिन मैं (कहता हूँ) वही अल्लाह मेरा रब है, और मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं करता। (38)

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ﴿٣٠﴾ أُولَٰئِكَ لَهُمْ جَنَّاتٌ عَدْنٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ نِعْمَ الثَّوَابُ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٣١﴾ وَأَضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَحَفَفْنَاهُمَا بِنَخْلٍ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زُرْعًا ﴿٣٢﴾ كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ آتَتْهُمَا نَهْرٌ وَلَمْ يَكُن لَّهُمَا فِيهَا جَمْعٌ خَالِفًا وَلِكُلِّ وَادٍ مِّنْ دُونِهِمْ نَهْرٌ ﴿٣٣﴾ وَكَانَ لَهُ ثَمَرٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَنَا أَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَأَعَزُّ نَفَرًا ﴿٣٤﴾ وَدَخَلَ جَنَّتَهُ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ قَالَ مَا أَظُنُّ أَنْ تَبِيدَ هَذِهِ أَبَدًا ﴿٣٥﴾ وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِن رُّدِدْتُ إِلَىٰ رَبِّي لَأَجِدَنَّ خَيْرًا مِنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿٣٦﴾ قَالَ لَهُ صَاحِبُهُ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَكَفَرْتَ بِالَّذِي خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ سَوَّكَ رَجُلًا ﴿٣٧﴾ لَكِنَّا هُوَ اللَّهُ رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِرَبِّي أَحَدًا ﴿٣٨﴾									
जो - जिस	अजर	हम ज़ाया नहीं करेंगे	यकीनन हम	नेक	और उन्होंने ने अमल किए	जो लोग ईमान लाए	वेशक		
वहती हैं	हमेशगी	बागात	उन के लिए	यही लोग	30	अमल	अच्छा किया		
सोना	से	कंगन	से	उस में	पहनाए जाएंगे	नहरें	उन के नीचे		
तकिया लगाए हुए	और दबीज़ रेशम	बारीक रेशम	से - के	सब्ज़ रंग	कपड़े	और वह पहनेंगे			
और बयान करें आप (स)	31	आराम गाह	और खूब है	बदला	अच्छा	तख्तों (मसहरियों) पर	उस में		
अंगूर (जमा)	से - के	दो बाग	उन में एक के लिए	हम ने बनाए	दो आदमी	मिसाल (हाल)	उन के लिए		
दोनों बाग	32	खेती	उन के दरमियान	और बना दी (रखी)	खजूरों के दरख्त	और हम ने उन्हें घेर लिया			
33	एक नहर	दोनों के दरमियान	और हम ने जारी करदी	कुछ	उस से	और कम न करते थे	अपने फल लाए		
मैं ज़ियादा तर	उस से बातें करते हुए	और वह	अपने साथी से	तो वह बोला	फल	उस के लिए	और था		
और वह	अपना बाग	और वह दाखिल हुआ	34	आदमियों के लिहाज़ से	और ज़ियादा वाइज़ज़त	माल में	तुझ से		
35	कभी	यह	वरबाद होगा	कि	मैं गुमान नहीं करता	वह बोला	अपनी जान पर जुल्म कर रहा था		
मैं ज़रूर पाऊँगा	अपना रब	तरफ	मैं लौटाया गया	और अगर	काइम (वरपा)	क्रियामत	और मैं गुमान नहीं करता		
उस से बातें कर रहा था	और वह	उस का साथी	उस से	कहा	36	लौटने की जगह	इस से बेहतर		
फिर	नुत्फ़े से	फिर	मिट्टी से	तुझे पैदा किया	उस के साथ जिस ने	क्या तू कुफ़ करता है			
38	किसी को	अपने रब के साथ	और मैं शरीक नहीं करता	मेरा रब	वह अल्लाह	लेकिन मैं	37	मर्द	तुझे पूरा बनाया

وَلَوْ لَا إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتِكَ قُلْتَ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ									
अल्लाह की	मगर	नहीं कुव्वत	जो चाहे अल्लाह	तू ने कहा	अपना बाग	तू दाखिल हुआ	जब	और क्यों न	
إِنْ تَرِنِ أَنَا أَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَوَلَدًا ﴿٣٩﴾ فَعَسَى رَبِّي أَنْ									
कि	मेरा रब	तो करीब	39	और औलाद में	माल में	अपने से	कम तर	मुझे	अगर तू मुझे देखता है
يُؤْتِيَنِ حَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلْ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَاءِ									
आस्मान	से	आफत	उस पर	और भेजे	तेरा बाग	से	बेहतर	मुझे दे	
فَتُصْبِحُ صَعِيدًا زَلَقًا ﴿٤٠﴾ أَوْ يُصْبِحُ مَاءً غُورًا فَلَنْ تَسْتَطِيعَ									
फिर तू हरगिज़ न कर सके	खुश्क	उस का पानी	हो जाए	या	40	चटयल	मिट्टी का मैदान	फिर वह हो कर रह जाए	
لَهُ طَلَبًا ﴿٤١﴾ وَأَحِيطَ بِشَمْرِهِ فَاصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلَى									
पर	अपने हाथ	वह मलने लगा	पस वह रह गया	उस के फल	और घेर लिया गया	41	तलब (तलाश)	उस को	
مَا أَنْفَقَ فِيهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَى عُرُوشِهَا وَيَقُولُ بَلَيْتَنِي									
ऐ काश	और वह कहने लगा	अपनी छतरियां	पर	गिरा हुआ	और वह	उस में	जो उस ने खर्च किया		
لَمْ أَشْرِكْ بِرَبِّي أَحَدًا ﴿٤٢﴾ وَلَمْ تَكُنْ لَهُ فِئَةٌ يَنْصُرُونَهُ									
उस की मदद करती वह	कोई जमाअत	उस के लिए	और न होती	42	किसी को	अपने रब के साथ	मैं शरीक न करता		
مِّنْ دُونِ اللَّهِ وَمَا كَانَ مُنتَصِرًا ﴿٤٣﴾ هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ									
इख्तियार	यहां	43	बदला लेने के काबिल	वह था	और न	अल्लाह के सिवा	से		
لِلَّهِ الْحَقُّ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَخَيْرٌ عُقْبًا ﴿٤٤﴾ وَاصْرَبْ لَهُمْ									
उन के लिए	और बयान कर दें	44	बदला देने में	और बेहतर	सवाब देने में	बेहतर	वह	अल्लाह के लिए बरहक	
مَّثَلِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أَنْزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ									
आस्मान	से	हम ने उस को उतारा	जैसे पानी	दुनिया की ज़िन्दगी	मिसाल				
فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ هَشِيمًا تَذْرُوهُ									
उड़ती है उसको	चूरा चूरा	वह फिर हो गया	ज़मीन की नवातात (सब्ज़ा)	उस से - ज़रीए	पस मिल जुल गया				
الرِّيحُ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ﴿٤٥﴾ الْمَالُ									
माल	45	बड़ी कुदरत रखने वाला	हर शौ पर	अल्लाह	और है	हवा (जमा)			
وَالْبُنُونَ زِينَةُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَالْبَقِيَّةُ الصَّلْحَةُ خَيْرٌ									
बेहतर	नेकियां	और बाकी रहने वाली	दुनिया की ज़िन्दगी	ज़ीनत	और बेटे				
عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ أَمَلًا ﴿٤٦﴾ وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ									
पहाड़	हम चलाएंगे	और जिस दिन	46	आजू में	और बेहतर	सवाब में	तेरे रब के नज़्दीक		
وَتَرَى الْأَرْضَ بَارِزَةً وَحَشَرْنَاهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ﴿٤٧﴾									
47	किसी को	उन से	फिर न छोड़ेंगे हम	और हम उन्हें जमा कर लेंगे	खुली हुई (साफ़ मैदान)	ज़मीन	और तू देखेगा		

और क्यों न जब तू दाखिल हुआ अपने बाग में, तू ने कहा “माशा अल्लाह” (जो अल्लाह चाहे वही होता है) कोई कुव्वत नहीं मगर अल्लाह की (दी हुई) अगर तू मुझे अपने से कम तर देखता है माल में और औलाद में, (39) तो करीब है कि मेरा रब मुझे तेरे बाग से बेहतर दे और उस (तेरे बाग) पर आफत भेजे आस्मान से, फिर वह मिट्टी का चटयल मैदान हो कर रह जाए। (40) या उस का पानी खुश्क हो जाए, और तू हरगिज़ न कर सके उस को तलाश। (41) और उस के फल (अज़ाब में) घेर लिए गए और उस में जो उस ने खर्च किया था, वह उस पर अपना हाथ मलता रह गया और वह (बाग) अपनी छतरियों पर गिरा हुआ था और वह कहने लगा ऐ काश, मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक न करता। (42) और उस के लिए कोई जमाअत न हुई कि अल्लाह के सिवा उस की मदद करती, और वह बदला लेने के काबिल न था। (43) यहां इख्तियार अल्लाह बरहक के लिए है, वही बेहतर है सवाब देने में, और बेहतर है बदला देने में। (44) और आप (स) उन के लिए बयान करें दुनिया की मिसाल (वह ऐसे है) जैसे हम ने आस्मान से पानी उतारा, फिर उस के ज़रीए ज़मीन का सब्ज़ा मिल जुल गया (खूब घना उगा) फिर वह चूरा चूरा हो गया कि उस को हवाएं उड़ती हैं, और अल्लाह हर शौ पर बड़ी कुदरत रखने वाला है। (45) माल और बेटे दुनिया की ज़िन्दगी की ज़ीनत हैं, और बाकी रहने वाली नेकियां तेरे रब के नज़्दीक बेहतर हैं सवाब में, और बेहतर हैं आज़ू में। (46) और जिस दिन हम पहाड़ चलाएंगे, और तू ज़मीन को साफ़ मैदान देखेगा, और हम उन्हें जमा कर लेंगे, फिर हम उन में से किसी को न छोड़ेंगे। (47)

और वह तेरे रब के सामने सफ़ वस्ता पेश किए जाएंगे, (अख़िर) अलबत्ता तुम हमारे सामने आ गए जैसे हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था, जबकि तुम समझते थे कि हम तुम्हारे लिए हरगिज़ कोई वक़्त मौजूद न ठहराएंगे। (48) और रखी जाएगी किताब, जो उस में (लिखा होगा) सो तुम मुज़्रिमों को उस से डरते हुए देखोगे, और वह कहेंगे हाए हमारी शामते आमाल! कैसी है यह तहरीर! यह नहीं छोड़ती छोटी सी बात और न बड़ी बात मगर उसे क़लम बन्द किए हुए है, और वह पा लेंगे जो कुछ उन्होंने ने किया (अपने) सामने, और तुम्हारा रब किसी पर जुल्म नहीं करेगा। (49) और (याद करो) जब हम ने फ़रिश्तों से कहा तुम सिज़दा करो आदम (अ) को तो (उन) सब ने सिज़दा किया सिवाए इब्लीस के, वह (कौम) जिन से था, और वह अपने रब के हुकम से बाहर निकल गया, सो क्या तुम उस को और उस की औलाद को मेरे सिवाए दोस्त बनाते हो? और वह तुम्हारे दुश्मन हैं, बुरा है ज़ालिमों के लिए बदल। (50) मैं ने उन्हें न आस्मानों और ज़मीन के पैदा करने (के वक़्त) हाज़िर किया (बुलाया) और न खुद उन के पैदा करते (वक़्त), और मैं गुमराह करने वालों को (दस्त ओ) बाजू बनाने वाला नहीं हूँ। (51) और जिस दिन वह (अल्लाह) फ़रमाएगा कि बुलाओ मेरे शरीकों को जिन्हें तुम ने (माबूद) गुमान किया था, पस वह उन्हें पुकारेंगे तो वह जवाब न देंगे, और हम उन के दरमियान हलाकत की जगह बना देंगे। (52) और देखेंगे मुज़्रिम आग, तो वह समझ जाएंगे कि वह उस में गिरने वाले हैं, और वह उस से (बच निकलने की) कोई राह न पाएंगे। (53) और हम ने अलबत्ता इस कुरआन में लोगों के लिए फेर फेर कर हर किस्म की मिसालें बयान की हैं, और इन्सान हर शै से ज़ियादा झगड़ा लू है। (54)

وَعَرِّضُوا عَلَى رَبِّكَ صَفًّا لَقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا خَلَقْنَاكُمْ							
हम ने तुम्हें पैदा किया था	जैसे	अलबत्ता तुम हमारे सामने आ गए	सफ़ वस्ता	तेरा रब	पर - सामने	और वह पेश किए जाएंगे	
أَوَّلَ مَرَّةٍ بَلْ زَعَمْتُمْ أَلَّنْ نَجْعَلَ لَكُمْ مَوْعِدًا ٤٨) وَوَضِعَ							
और रखी जाएगी	48	कोई वक़्त मौजूद	तुम्हारे लिए	कि हम ठहराएंगे	हरगिज़ न	तुम समझते थे	बल्कि (जबकि) पहली बार
الْكِتَابِ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا فِيهِ							
उस में	उस से जो	डरते हुए	मुज़्रिम (जमा)	सो तुम देखोगे	किताब		
وَيَقُولُونَ يَوْمَلْتَنَا مَا هَذَا الْكِتَابِ لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً							
छोटी बात	यह नहीं छोड़ती	यह किताब (तहरीर)	कैसी है	हाए हमारी शामते आमाल	और वह कहेंगे		
وَلَا كَبِيرَةً إِلَّا أَحْضَاهَا وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا ٤٩)							
सामने	जो उन्होंने ने किया	और वह पालेंगे	वह उसे घेरे (क़लम बन्द किए) हुए	मगर	बड़ी बात	और न	
وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ أَحَدًا ٤٩) وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا							
तुम सिज़दा करो	फरिश्तों से	हम ने कहा	और जब	49	किसी पर	तुम्हारा तब	और जुल्म नहीं करेगा
لِأَدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ							
से	वह (बाहर) निकल गया	जिन	से	वह था	इब्लीस	सिवाए	तो उन्होंने ने सिज़दा किया आदम (अ) को
أَمْرِ رَبِّهِ أَفَتَتَّخِذُونَهُ وَذُرِّيَّتَهُ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِي وَهُمْ							
और वह	मेरे सिवाए	दोस्त (जमा)	और उस की औलाद	सो क्या तुम उस को बनाते हो	अपने रब का हुकम		
لَكُمْ عَدُوٌّ بِئْسَ لِلظَّالِمِينَ بَدَلًا ٥٠) مَا أَشْهَدْتُهُمْ خَلَقَ							
पैदा करना	हाज़िर किया मैं ने उन्हें	नहीं	50	बदल	ज़ालिमों के लिए	बुरा है	दुश्मन तुम्हारे लिए
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَا خَلَقَ أَنْفُسِهِمْ وَمَا كُنْتُمْ تُخِذُ							
बनाने वाला	और मैं नहीं	उन की जानें (खुद वह)	और न पैदा करना	और ज़मीन	आस्मानों		
الْمُضْلِينَ عَصَا ٥١) وَيَوْمَ يَقُولُ نَادُوا شُرَكَائِيَ الَّذِينَ							
और वह जिन्हें	मेरे शरीक (जमा)	बुलाओ	वह फ़रमाएगा	और जिस दिन	51	बाजू	गुमराह करने वाले
زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ							
उन के दरमियान	और हम बना देंगे	उन्हें	तो वह जवाब न देंगे	पस वह उन्हें पुकारेंगे	तुम ने गुमान किया		
مَوْبِقًا ٥٢) وَرَأَى الْمُجْرِمُونَ النَّارَ فَظَنُّوا أَنَّهُمْ مُوَاقِعُوهَا							
गिरने वाले हैं उस में	कि वह	तो वह समझ जाएंगे	आग	मुज़्रिम (जमा)	और देखेंगे	52	हलाकत की जगह
وَلَمْ يَجِدُوا عَنْهَا مَصْرَفًا ٥٣) وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ							
कुरआन	इस	में	हम ने फेर फेर कर बयान किया	और अलबत्ता	53	कोई राह	उस से और न वह पाएंगे
لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ٥٤)							
54	झगड़ा लू	हर शै से ज़ियादा	इन्सान	और है	हर (तरह की) मिसालें	से	लोगों के लिए

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ وَيَسْتَغْفِرُوا										
और वह बख्शिश मांगें	हिदायत	जब आ गई उन के पास	वह ईमान लाएं	कि	लोग	रोका	और नहीं			
رَبَّهُمْ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ أَوْ يَأْتِيَهُمْ										
आए उन के पास	या	पहलों की	रविश (मामला)	उन के पास आए	यह कि	सिवाए	अपना रब			
الْعَذَابِ قُبْلًا ﴿٥٥﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ										
खुशख़बरी देने वाले	मगर	रसूल (जमा)	और हम नहीं भेजते	55	सामने का	अज़ाब				
وَمُنذِرِينَ ۗ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا										
ताकि वह फुसला दें	नाहक (की बातों से)	कुफ़ किया (काफ़िर)	वह जिन्होंने	और झगड़ा करते हैं	और डर सुनाने वाले					
بِهِ الْحَقِّ وَاتَّخَذُوا آيَتِي وَمَا أُنذِرُوا هُزُوًا ﴿٥٦﴾ وَمَنْ										
और कौन	56	मज़ाक़	वह डराए गए	और जो - जिस	मेरी आयत	और उन्होंने ने बनाया	हक़	उस से		
أَظْلَمَ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ فَأَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ										
जो आगे भेजा	और वह भूल गया	उस से	तो उस ने मुँह फेर लिया	उस का रब	आयतों से	समझाया गया	उस से जो	बड़ा ज़ालिम		
يَدُهُ إِنَّا جَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي										
और में	वह उसे समझ सकें	कि	पर्दे	उन के दिलों	पर	वेशक हम ने डाल दिए	उस के दोनों हाथ			
أَذَانِهِمْ وَقُرْآنًا وَإِنْ تَدْعُهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ فَلَنْ يَهْتَدُوا										
पाएं हिदायत	तो वह हरगिज़ न	हिदायत	तरफ़	तुम उन्हें बुलाओ	और अगर	गिरानी	उन के कान			
إِذَا أَبَدًا ﴿٥٧﴾ وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا										
उस पर जो	उन का मुआख़ज़ा करे	अगर	रहमत वाला	बख़शने वाला	और तुम्हारा रब	57	कभी भी	जब भी		
كَسَبُوا لَعَجَلٌ لَهُمُ الْعَذَابُ بَلْ لَهُمْ مَوْعِدٌ لَّنْ يَجِدُوا										
वह हरगिज़ न पाएंगे	उन के लिए एक वक़्त मुक़र्रर	बल्कि	अज़ाब	उन के लिए	तो वह जल्द भेज दे	उन्होंने ने किया				
مِنْ دُونِهِ مَوْيلًا ﴿٥٨﴾ وَتِلْكَ الْقُرَىٰ أَهْلَكْنَاهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا										
और हम ने मुक़र्रर किया	उन्होंने ने जुल्म किया	जब	हम ने उन्हें हलाक कर दिया	वस्तियाँ	और यह (उन)	58	पनाह की जगह	उस से बरे		
لِمَهْلِكِهِمْ مَوْعِدًا ﴿٥٩﴾ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِفَتَاهُ لَا أَبْرَحُ حَتَّىٰ										
यहां तक कि	मैं न हटूँगा	अपने जवान (शागिर्द) से	मूसा (अ)	कहा	और जब	59	एक मुक़र्ररा वक़्त	उन की तवाही के लिए		
أَبْلُغَ مَجْمَعِ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِيَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ										
मिलने का मुक़ाम	वह दोनों पहुँचे	फिर जब	60	मुद्दते दराज़	या चलता रहूँगा	दो दर्याओं के	मिलने की जगह	मैं पहुँच जाऊँ		
بَيْنَهُمَا نَسِيًا حُوتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾ فَلَمَّا										
फिर जब	61	सुरंग की तरह	दर्या में	अपना रास्ता	तो उस ने बना लिया	अपनी मछली	वह भूल गए	दोनों के दरमियान		
جَاوَزَا قَالَ لِفَتَاهُ إِنِّي جَدَاءَنَا لَقَدْ لَقِينَا مِنْ سَفَرِنَا هَذَا نَصَبًا ﴿٦٢﴾										
62	तक्लीफ़	इस	अपना सफ़र	से	अलबत्ता हम ने पाई	हमारा सुबह का खाना	हमारे पास लाओ	अपने शागिर्द को	उस ने कहा	वह आगे चले

और लोगों को (किसी बात ने) नहीं रोका कि वह ईमान ले आएँ जब कि उन के पास हिदायत आ गई और वह अपने रब से बख्शिश मांगें, सिवाए इस के कि उन के पास पहलों की रविश आए या उन के पास आए सामने का अज़ाब। (55) और हम रसूल नहीं भेजते मगर खुशख़बरी देने वाले और डर सुनाने वाले, और झगड़ा करते हैं काफ़िर नाहक़ बातों के साथ, ताकि वह उस से हक़ (बात) को फुसला दें, और उन्होंने ने बनाया मेरी आयतों को और जिस से वह डराए गए एक मज़ाक़। (56) और उस से बड़ा ज़ालिम कौन जिसे उस के रब की आयतों से समझाया गया तो उस ने उस से मुँह फेर लिया, और भूल गया जो उस के दोनों हाथों ने (उस ने) आगे भेजा है, वेशक़ हम ने उन के दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि वह इस कुरआन को समझ सकें और उन के कानों में गिरानी है (बहरे है) और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो जब भी वह हरगिज़ हिदायत न पाएंगे कभी भी। (57) और तुम्हारा रब बख़शने वाला, रहमत वाला है। अगर उन के किए पर वह उन का मुआख़ज़ा करे तो वह जल्द भेज दे उन के लिए अज़ाब, बल्कि उन के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है और वह हरगिज़ उस के बरे पनाह की जगह न पाएंगे। (58) और उन वस्तियों को जब उन्होंने ने जुल्म किया हम ने हलाक कर दिया, और हम ने उन की तवाही के लिए एक वक़्त मुक़र्रर किया। (59) और (याद करो) जब मूसा (अ) ने अपने शागिर्द से कहा मैं हटूँगा नहीं (चलता रहूँगा) यहां तक कि पहुँच जाऊँ दो (2) दर्याओं के मिलने की जगह (संगम पर) या मैं मुद्दते दराज़ चलता रहूँगा। (60) फिर जब वह दोनों (दर्याओं) के संगम पर पहुँचे तो वह अपनी मछली भूल गए तो उस (मछली) ने अपना रास्ता बना लिया दर्या में सुरंग की तरह। (61) फिर जब वह आगे चले तो मूसा (अ) ने अपने शागिर्द को कहा हमारे लिए सुबह का खाना लाओ, अलबत्ता हम ने अपने इस सफ़र से बहुत (तक्लीफ़) थकान पाई है। (62)

ع ۲۰

उस ने कहा क्या आप ने देखा? जब हम पत्थर के पास ठहरे तो बेशक मैं मछली भूल गया और मुझे नहीं भुलाया मगर शैतान ने, कि मैं (आप से) उस का जिक्र करूँ, और उस ने बना लिया अपना रास्ता दर्या में अजीब तरह से। (63)

मूसा (अ) ने कहा यही है (वह मुक़ाम) जो हम चाहते थे, फिर वह दोनों लौटे अपने निशानाते क़दम पर देखते हुए। (64)

फिर उन्होंने हमारे बन्दों में से एक बन्दा (ख़िज़्र अ) को पाया, उसे हम ने अपने पास से रहमत दी, और हम ने उसे अपने पास से इल्म दिया। (65)

मूसा (अ) ने उस से कहा क्या मैं तुम्हारे साथ चलूँ? इस (बात) पर कि तुम मुझे सिखा दो इस भली राह में से जो तुम्हें सिखाई गई है। (66)

उस (ख़िज़्र अ) ने कहा बेशक तू मेरे साथ हरगिज़ सव्‌र न कर सकेगा। (67)

और तू उस पर कैसे सव्‌र कर सकेगा जिस का तू ने वाक़िफ़ियत से अहाता नहीं किया (जिस से तू वाक़िफ़ नहीं)। (68)

मूसा (अ) ने कहा अगर अल्लाह ने चाहा तो तुम जल्द मुझे पाओगे सव्‌र करने वाला, और मैं तुम्हारी किसी बात की नाफ़रमानी न करूँगा। (69)

ख़िज़्र (अ) ने कहा पस अगर तुझे मेरे साथ चलना है तो मुझ से न पूछना किसी चीज़ से मुतअल्लिक़, यहां तक कि मैं खुद तुझ से ज़िक्र करूँ। (70)

फिर वह दोनों चले यहां तक कि जब वह दोनों कशती में सवार हुए, उस (ख़िज़्र अ) ने उस में सुराख़ कर दिया, मूसा (अ) ने कहा तुम ने उस में सुराख़ कर दिया ताकि तुम उस के सवारों को गर्क कर दो, अलबत्ता तुम ने एक भारी (ख़तरे की) बात की है। (71)

ख़िज़्र (अ) ने कहा क्या मैं ने नहीं कहा था? कि तू मेरे साथ हरगिज़ सव्‌र न कर सकेगा। (72)

मूसा (अ) ने कहा आप उस पर मेरा मुआख़ज़ा न करें जो मैं भूल गया और मेरे मामले में मुझ पर मुशक़िल न डालें। (73)

फिर वह दोनों चले यहां तक कि वह एक लड़के को मिले तो उस (ख़िज़्र अ) ने उसे क़त्ल कर दिया। मूसा (अ) ने कहा क्या तुम ने एक पाक जान को जान (के बदले के) बग़ैर क़त्ल कर दिया, अलबत्ता तुम ने एक नापसन्दीदा काम किया। (74)

قَالَ أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ الْحُوتَ

मछली	भूल गया	तो बेशक मैं	पत्थर	तरफ-पास	हम ठहरे	जब	क्या आप ने देखा?	उस ने कहा
------	---------	-------------	-------	---------	---------	----	------------------	-----------

وَمَا أَنْسِينِي إِلَّا الشَّيْطَانُ أَنْ أذْكَرَهُ وَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ مَرْجًا

दर्या में	अपना रास्ता	और उस ने बना लिया	मैं उस का ज़िक्र करूँ	कि	शैतान	मगर	भुलाया मुझे	और नहीं
-----------	-------------	-------------------	-----------------------	----	-------	-----	-------------	---------

عَجَبًا ٦٣ قَالَ ذَلِكَ مَا كُنَّا نَبْغُ ۖ فَارْتَدَّا عَلَىٰ آثَارِهِمَا

अपने निशानाते (क़दम)	पर	फिर वह दोनों लौटे	हम चाहते थे	जो	यह	उस ने कहा	63	अजीब तरह
----------------------	----	-------------------	-------------	----	----	-----------	----	----------

فَصَصَا ٦٤ فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَا اتِّبَنَاهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا

अपने पास	से	रहमत	हम ने दी उसे	हमारे बन्दे	से	एक बन्दा	फिर दोनों ने पाया	64	देखते हुए
----------	----	------	--------------	-------------	----	----------	-------------------	----	-----------

وَعَلَّمْنَاهُ مِمَّا لَدُنَّا عِلْمًا ٦٥ قَالَ لَهُ مُوسَىٰ هَلْ أَتَّبِعُكَ عَلَىٰ

पर	मैं तुम्हारे साथ चलूँ	क्या	मूसा (अ)	उस को	कहा	65	इल्म	अपने पास से	और हम ने इल्म दिया उसे
----	-----------------------	------	----------	-------	-----	----	------	-------------	------------------------

أَنْ تَعَلِّمَنِي مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ٦٦ قَالَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ

हरगिज़ न कर सकेगा तू	बेशक तू	उस ने कहा	66	भली राह	तुम्हें सिखाया गया है	उस से जो	तुम सिखा दो मुझे	कि
----------------------	---------	-----------	----	---------	-----------------------	----------	------------------	----

مَعِيَ صَبْرًا ٦٧ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلَىٰ مَا لَمْ تُحِطْ بِهِ خُبْرًا ٦٨

68	वाक़िफ़ियत से	तू ने अहाता नहीं किया उसका	जो	उस पर	तू सव्‌र करेगा	और कैसे	67	सव्‌र	मेरे साथ
----	---------------	----------------------------	----	-------	----------------	---------	----	-------	----------

قَالَ سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ صَابِرًا وَلَا أَعْصِي لَكَ أَمْرًا ٦٩

69	किसी बात	तुम्हारे	मैं नाफ़रमानी करूँगा	और न	सव्‌र करने वाला	अगर चाहा अल्लाह ने	तुम मुझे पाओगे जल्द	उस ने कहा
----	----------	----------	----------------------	------	-----------------	--------------------	---------------------	-----------

قَالَ فَإِنِ اتَّبَعْتَنِي فَلَا تَسْأَلْنِي عَن شَيْءٍ حَتَّىٰ أُحْدِثَ

मैं बयान करूँ	यहां तक कि	किसी चीज़	से - के बारे में	तो मुझ से न पूछना	तुझे मेरे साथ चलना है	पस अगर	उस ने कहा
---------------	------------	-----------	------------------	-------------------	-----------------------	--------	-----------

لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ٧٠ فَانْطَلَقَا ۗ حَتَّىٰ إِذَا رَكَبَا فِي السَّفِينَةِ خَرَقَهَا ۗ

उस ने सुराख़ कर दिया उस में	कशती में	वह दोनों सवार हुए	जब	यहां तक कि	फिर वह दोनों चले	70	ज़िक्र	उस का	तुझ से
-----------------------------	----------	-------------------	----	------------	------------------	----	--------	-------	--------

قَالَ أَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ أَهْلَهَا لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا إِمْرًا ٧١

71	भारी	एक बात	अलबत्ता तू लाया (तू ने की)	उस के सवार	कि तुम गर्क कर दो	तुम ने उस में सुराख़ कर दिया	उस ने कहा
----	------	--------	----------------------------	------------	-------------------	------------------------------	-----------

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ٧٢ قَالَ

उस ने कहा	72	सव्‌र	मेरे साथ	हरगिज़ न कर सकेगा तू	बेशक तू	क्या मैं ने नहीं कहा	(ख़िज़्र अ) ने कहा
-----------	----	-------	----------	----------------------	---------	----------------------	--------------------

لَا تُؤَاخِذْنِي بِمَا نَسِيتُ وَلَا تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي عُسْرًا ٧٣

73	मुशक़िल	मेरा मामला	से	और मुझ पर न डालें	मैं भूल गया	उस पर जो	आप मेरा मुआख़ज़ा न करें
----	---------	------------	----	-------------------	-------------	----------	-------------------------

فَانْطَلَقَا ۗ حَتَّىٰ إِذَا لَقِيَا غُلَامًا فَقَتَلَهُ ۗ قَالَ أَقْتَلْت

क्या तुम ने क़त्ल कर दिया	उस ने कहा	तो उस ने उस को क़त्ल कर दिया	एक लड़का	वह मिले	जब	यहां तक कि	फिर वह दोनों चले
---------------------------	-----------	------------------------------	----------	---------	----	------------	------------------

نَفْسًا زَكِيَّةً بِغَيْرِ نَفْسٍ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا نُكْرًا ٧٤

74	नापसन्दीदा	एक काम	तुम आए (तुम ने किया)	अलबत्ता	जान	बग़ैर	पाक	एक जान
----	------------	--------	----------------------	---------	-----	-------	-----	--------



قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٥﴾									
75	सब्र	मेरे साथ	हरगिज़ न कर सकेगा	वेशक तू	तुझ से	मैं ने कहा	क्या नहीं	उस ने कहा	
قَالَ إِنْ سَأَلْتِكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلَا تُصَحِّبْنِي ۚ قَدْ بَلَغْتَ									
अलवत्ता तुम पहुँच गए	तो मुझे अपने साथ न रखना	इस के बाद	किसी चीज़ से	मैं तुम से पूछूँ	उस (मूसा अ) ने कहा अगर				
مِنْ لَدُنِّي عُدْرًا ﴿٧٦﴾ فَانْطَلَقَا ۗ حَتَّىٰ إِذَا آتَيْتَا أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطَعَمَا									
दोनों ने खाना मांगा	एक गावँ वालों के पास	जब वह दोनों आए	यहां तक कि	फिर वह दोनों चले	76	उज़र को	मेरी तरफ से		
أَهْلَهَا فَابْتَدَأُوا أَنْ يُضَيِّفُوهُمْ ۖ فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ									
वह चाहती थी	उस में (वहां) एक दीवार	फिर उन्होंने ने पाई (देखी)	वह उन की ज़ियाफत करें	तो उन्होंने ने इन्कार कर दिया कि	उस के बाशिन्दे				
أَنْ يَنْقُصَ فَأَقَامَهُ ۗ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا ﴿٧٧﴾ قَالَ									
उस ने कहा	77	उज़रत	उस पर	ले लते	अगर तुम चाहते	उस ने कहा	तो उस ने उसे सीधा कर दिया	कि वह गिर पड़े	
هَذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ ۗ سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَلَيْهِ									
उस पर	तुम न कर सके	जो	तावीर	अब तुम्हें बताएँ देता हूँ	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	जुदाई	यह	
صَبْرًا ﴿٧٨﴾ أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسْكِينٍ يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ									
दर्या में	वह काम करते थे	ग़रीब लोगों की	सो वह थी	कशती	रही	78	सब्र		
فَارْدَتْ أَنْ أَعْيَبَهَا وَكَانَ وَرَاءَهُمْ مَلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ									
हर कशती	वह पकड़ लेता	एक बादशाह	उन के आगे	और था	मैं उसे ऐवदार कर हूँ	कि	सो मैं ने चाहा		
غَضَبًا ﴿٧٩﴾ وَأَمَّا الْعُلَمَاءُ فَكَانَ أَبُوهُمُ الْمُؤْمِنِينَ فَخَشِينَا أَنْ يُرْهِقَهُمَا									
कि उन्हें फंसादे	सो हमें अन्देशा हुआ	दोनों मोमिन	उस के माँ बाप	तो थे	लड़का	और रहा	79	ज़बरदस्ती	
طُغْيَانًا وَكُفْرًا ﴿٨٠﴾ فَارْدْنَا أَنْ يُبَدِّلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكَاةً									
पाकीज़गी	उस से	बेहतर	उन का रब	कि बदला दे उन दोनों को	पस हम ने इरादा किया	80	और कुफ़ में	सरकशी में	
وَأَقْرَبَ رُحْمًا ﴿٨١﴾ وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَامَيْنِ يَتِيمَيْنِ									
दो यतीम	दो (2) बच्चों की	सो वह थी	दीवार	और रही	81	शफ़क़त	और ज़ियादा करीब		
فِي الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ كَنْزٌ لَهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا ۖ فَأَرَادَ									
सो चाहा कि	नेक	उन का बाप	और था	उन दोनों के लिए	खज़ाना	उस के नीचे	और था	शहर में - के	
رَبُّكَ أَنْ يَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۗ رَحْمَةً مِّنْ رَبِّكَ ۗ									
से तुम्हारा रब	मेहरबानी	अपना खज़ाना	और वह दोनों निकालें	अपनी जवानी	कि वह पहुँचें	तुम्हारा रब			
وَمَا فَعَلْتُهُ عَنْ أَمْرِي ۗ ذَلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ﴿٨٢﴾									
82	सब्र	उस पर	तुम न कर सके	जो	तावीर (हकीकत)	यह	अपना हुक़म (मरज़ी)	से	और यह मैं ने नहीं किया
وَيَسْأَلُونَكَ عَنْ ذِي الْقُرْنَيْنِ ۗ قُلْ سَأَتْلُوا عَلَيْكُمْ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٨٣﴾									
83	कुछ हाल	उस से - का	तुम पर - सामने	अभी पढ़ता हूँ	फ़रमा दें	जुलकरनैन	से (बावत)	और आप (स) पूछते हैं	

ख़िज़्र (अ) ने कहा कि क्या मैं ने तुझ से नहीं कहा था कि तू मेरे साथ हरगिज़ सब्र न कर सकेगा? (75) मूसा (अ) ने कहा अगर इस के बाद मैं तुम से किसी चीज़ से (मुतअल्लिक्) पूछूँ तो मुझे अपने साथ न रखना, अलवत्ता तुम मेरी तरफ से पहुँच गए हो (हदे) उज़र को। (76) फिर वह दोनों चले यहाँ तक कि एक गावँ वालों के पास आए, उन्होंने ने उस के बाशिन्दों से खाना मांगा तो उन्होंने ने इन्कार कर दिया उन की ज़ियाफत करने से, फिर उन्होंने ने वहाँ एक दीवार देखी जो गिरा चाहती थी तो ख़िज़्र (अ) ने उसे सीधा कर दिया, मूसा (अ) ने कहा अगर तम चाहते तो उस पर तम उज़रत ले लते। (77) उस ने कहा यह मेरे और तुम्हारे दरमियान जुदाई है! अब मैं तुम्हें तावीर (हकीकते हाल) बताएँ देता हूँ जिस पर तुम सब्र न कर सके। (78) रही कशती! सो वह चन्द ग़रीब लोगों की थी जो दर्या में काम (मेहनत मज़दूरी) करते थे और उन के आगे एक बादशाह था जो हर (अच्छी) कशती को ज़बरदस्ती पकड़ लेता (छीन लेता) था, सो मैं ने चाहा कि उसे ऐवदार कर दूँ। (79) और रहा लड़का! तो उस के माँ बाप दोनों मोमिन थे, सो हमें अन्देशा हुआ कि वह उन्हें सरकशी और कुफ़ में न फंसादे। (80) वस हम ने इरादा किया कि उन दोनों को उन का रब बदला दे (जो पाकीज़गी) में उस से बेहतर और शफ़क़त में बहुत ज़ियादा करीब हो। (81) और रही दीवार! सो वह थी शहर के दो (2) यतीम बच्चों की, और उस के नीचे उन दोनों के लिए खज़ाना है, और उन का बाप नेक था, सो तुम्हारे रब ने चाहा कि वह अपनी जवानी को पहुँचें तो वह दोनों तुम्हारे रब की रहमत से अपना खज़ाना निकालें, और यह मैं ने नहीं किया अपनी मरज़ी से, यह है (वह) हकीकत! जिस पर तुम सब्र न कर सके। (82) और वह आप (स) से पूछते हैं जुलकरनैन की बावत, फ़रमा दें, मैं तुम्हारे सामने अभी उस का कुछ हाल पढ़ता (बयान करता हूँ)। (83)

वेशक हम ने उस को ज़मीन में कुदरत दी और हम ने उसे हर शौ का सामान दिया था। (84)

सो वह एक सामान के पीछे पड़ा, (85)

यहां तक कि वह सूरज के गुरुब होने के मुकाम पर पहुँचा, उस ने उसे पाया (देखा) कि वह दलदल की नदी में डूब रहा है, और उस के नज़दीक उस ने एक कौम पाई, हम ने कहा ऐ जुलकरनैन! (तुझे इख्तियार है) चाहे तू सज़ा दे, चाहे उन से कोई भलाई इख्तियार करे। (86)

उस ने कहा, अच्छा! जिस ने जुल्म किया तो जल्द हम उसे सज़ा देंगे, फिर वह अपने रब की तरफ़ लौटाया जाएगा तो वह उसे सख्त अज़ाव देगा। (87)

और अच्छा! जो ईमान लाया और उस ने अमल किए नेक, तो उस के लिए बदला है भलाई, और अनकरीब हम उस के लिए अपने काम में आसानी (की बात) कहेंगे। (88)

फिर वह एक (और) सामान के पीछे पड़ा। (89)

यहां तक कि जब वह सूरज के तुलूअ होने के मुकाम पर पहुँचा तो उस को पाया (देखा) कि वह एक ऐसी कौम पर तुलूअ हो रहा है जिन के लिए हम ने उस (सूरज) के आगे नहीं बनाया था कोई पर्दा (ओट)। (90)

यह है (हकीकत) और जो कुछ उस के पास था उसकी खबर हमारे अहाता-ए-इल्म में है। (91)

फिर वह (एक और) सामान के पीछे पड़ा। (92)

याह तक कि जब वह पहुँचा दो पहाड़ों के दरमियान, उस ने उन दोनों के बीच में एक कौम पाई, वह लगते न थे कि कोई बात समझें। (93)

अन्हों ने कहा ऐ जुलकरनैन! वेशक याजूज और माजूज ज़मीन में फ़सादी है तो क्या हम तेरे लिए (जमा) कर दें कुछ माल? ता कि हमारे और उन के दरमियान एक दीवार बना दे। (94)

उस ने कहा जिस पर मुझे मेरे रब ने कुदरत दी वह बेहतर है, पस तुम मेरी मदद करो कुव्वते (बाजू) से, मैं तुम्हारे और उन के दरमियान एक आड़ बना दूँगा। (95)

मझे लोहे के तख्ते ला दो, यहां तक कि जब उस ने बराबर कर दिया दोनों पहाड़ों के दरमियान, उस ने कहा (अब) धोको, यहां तक कि जब (धोके कर) उसे आग कर दिया, उस ने कहा मेरे पास लाओ कि मैं उस पर पिघला हुआ तांबा डालूँ, (96)

إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ فِي الْأَرْضِ وَآتَيْنَاهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾ فَاتَّبَعِ									
सो वह पीछे पड़ा	84	सामान	हर शौ	से	और हम ने उसे दिया	ज़मीन में	उस को	वेशक हम ने कुदरत दी	
سَبَبًا ﴿٨٥﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِي عَيْنٍ									
चशमा-नदी	में	डूब रहा है	उस ने पाया उसे	सूरज	गुरुब होने का मुकाम	जब वह पहुँचा	यहां तक कि	85	एक सामान
حَمِيَّةٍ وَوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا قُلْنَا يَأْتِي الْقَرْنَيْنِ إِنَّمَا أَنْ									
यह कि	या-चाहे	ऐ जुलकरनैन	हम ने कहा	एक कौम	उस के नज़दीक	और उस ने पाया	दलदल		
تُعَذِّبُ وَإِنَّمَا أَنْ تَتَّخِذَ فِيهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾ قَالَ إِنَّمَا مَنْ ظَلَمَ									
जिस ने जुल्म किया	अच्छा	उस ने कहा	86	कोई भलाई	उन में-से	तू इख्तियार करे	यह कि	और या चाहे	तू सज़ा दे
فَسَوْفَ نُعَذِّبُهُ ثُمَّ يُرَدُّ إِلَىٰ رَبِّهِ فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا نُكْرًا ﴿٨٧﴾ وَإِنَّمَا مَنْ									
जो और अच्छा	87	बड़ा-सख्त	अज़ाव	तो वह उसे अज़ाव देगा	अपने रब की तरफ़	वह लौटाया जाएगा	फिर	हम उसे सज़ा देंगे	तो जल्द
أَمِنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُ جَزَاءُ الْحُسْنَىٰ وَسَنَقُولُ لَهُ مِنْ أَمْرِنَا									
अपना काम	सुतअख़िक	उस के लिए	और अनकरीब हम कहेंगे	भलाई	बदला	तो उस के लिए	नेक	और उस ने अमल किया	ईमान लाया
يُسْرًا ﴿٨٨﴾ ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ									
तुलूअ हो रहा है	उस ने उस को पाया	सूरज	तुलूअ होने का मुकाम	जब वह पहुँचा	यहां तक कि	89	एक सामान	वह पीछे पड़ा	फिर 88 आसानी
عَلَىٰ قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَهُمْ مِنْ دُونِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾ كَذَلِكَ وَقَدْ أَحَطْنَا									
और हमारे अहाते में है	यही	90	कोई पर्दा	उस के आगे	उन के लिए	हम ने नहीं बनाया	एक कौम पर		
بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾ ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ									
दो दीवारों (पहाड़)	दरमियान	जब वह पहुँचा	यहां तक कि	92	एक सामान	वह पीछे पड़ा	फिर 91	अज़ाव रूप खबर	जो कुछ उस के पास
وَجَدَ مِنْ دُونِهِمَا قَوْمًا لَّا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾ قَالُوا									
अन्हों ने कहा	93	कोई बात	वह समझें	नहीं लगते थे	एक कौम	दोनों के बीच	उस ने पाया		
يَأْتِي الْقَرْنَيْنِ إِنَّ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ فَهَلْ									
तो क्या	ज़मीन में	फ़साद करने वाले (फ़सादी)	और माजूज	याजूज	वेशक	ऐ जुलकरनैन			
نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰ أَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿٩٤﴾ قَالَ									
उस ने कहा	94	एक दीवार	और उन के दरमियान	हमारे दरमियान	कि तू बनादे	पर-ताकि	कुछ माल	तेरे लिए	हम कर दें
مَا مَكَّنِّي فِيهِ رَبِّي خَيْرٌ فَأَعِينُونِي بِقُوَّةٍ أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ									
और उन के दरमियान	तुम्हारे दरमियान	मैं बना दूँगा	कुव्वत से	पस तुम मेरी मदद करो	बेहतर	मेरा रब	उस में	जिस पर कुदरत दी मुझे	
رَدْمًا ﴿٩٥﴾ اتُّونِي زُبْرَ الْحَدِيدِ حَتَّىٰ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ									
उस ने कहा	दोनों पहाड़	दरमियान	उस ने बराबर कर दिया	जब	यहां तक कि	लोहे के तख्ते	मुझे ला दो तुम	95	मज़बूत आड़
انْفُخُوا حَتَّىٰ إِذَا جَعَلَهُ نَارًا قَالَ اتُّونِي أُفْرِغُ عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿٩٦﴾									
96	पिघला हुआ तांबा	उस पर	मैं डालूँ	ले आओ मेरे पास	उस ने कहा	आग	जब उसे कर दिया	याहां तक कि	धोको

فَمَا اسْطَاعُوا أَنْ يَظْهَرُوهُ وَمَا اسْتَطَاعُوا لَهُ نَقْبًا ﴿٩٧﴾ قَالَ							
उस ने कहा	97	नकब	उस में	और वह न लगा सकेंगे	उस पर चढ़ें	कि	फिर न कर सकेंगे
هَذَا رَحْمَةٌ مِّن رَّبِّي فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ رَبِّي جَعَلَهُ دُكَّاءً ۗ وَكَانَ							
और है	हमवार	उस को कर देगा	मेरा रब	वादा	आएगा	पस जब	मेरे रब से
وَعْدُ رَبِّي حَقًّا ﴿٩٨﴾ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمُوجُ فِي بَعْضٍ							
वाज़ (दूसरे) के अन्दर	रेला मारते	उस दिन	उन के वाज़	और हम छोड़ देंगे	98	सच्चा	मेरा रब
وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَمَعْنَهُمْ جَمْعًا ﴿٩٩﴾ وَعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكَافِرِينَ							
काफ़िरों के	उस दिन	जहन्नम	और हम सामने कर देंगे	99	सब को	फिर हम उन्हें जमा करेंगे	और फूँका जाएगा सूर
عَرَضًا ﴿١٠٠﴾ الَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِي غِطَاءٍ عَن ذِكْرِي وَكَانُوا							
और वह थे	मेरा ज़िक्र	से	पर्दे में	उन की आँखें	थी	वह जो कि	100
لَا يَسْتَطِيعُونَ سَمْعًا ﴿١٠١﴾ أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ يَتَّخِذُوا							
कि वह बना लेंगे	वह जिन्होंने ने कुफ़ किया	क्या गुमान करते हैं	101	सुनना	न ताक़त रखते		
عِبَادِي مِنْ دُونِي أَوْلِيَآءَ ۗ إِنَّا أَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِّلْكَافِرِينَ نَزْلًا ﴿١٠٢﴾							
102	ज़ियाफ़त	काफ़िरों के लिए	जहन्नम	हम ने तैयार किया	वेशक हम	कारसाज़	मेरे सिवा
فُلٌ هَلَلٌ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ﴿١٠٣﴾ الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ							
उन की कोशिश	वरवाद हो गई	वह लोग	103	आमाल के लिहाज़ से	बदतरीन घाटे में	हम तुम्हें बतलाएँ	क्या
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ﴿١٠٤﴾ أُولَٰئِكَ							
यही लोग	104	काम	अच्छे कर रहे हैं	कि वह	ख़याल करते हैं	और वह	दुनिया की ज़िन्दगी में
الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ فَحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيمُ							
पस हम काइम न करेंगे	उन के अ़मल (जमा)	पस अकारत गए	और उस की मुलाक़ात	अपना रब	आयतों का	जिन लोगों ने इन्कार किया	
لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَزَنَّا ﴿١٠٥﴾ ذَلِكَ جَزَاؤُهُمْ جَهَنَّمَ بِمَا كَفَرُوا							
उन्होंने ने कुफ़ किया	इस लिए कि	जहन्नम	उन का बदला	यह	105	कोई वज़न	उन के लिए
وَاتَّخَذُوا أَيَّتِي وَرُسُلِي هُزُوا ﴿١٠٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا							
जो लोग ईमान लाए	वेशक	106	हैंसी मज़ाक़	और मेरे रसूल	मेरी आयात	और ठहराया	
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ نُزْلًا ﴿١٠٧﴾ خَلِيدِينَ فِيهَا							
उस में	हमेशा रहेंगे	107	ज़ियाफ़त	फ़िरदौस के वागात	उन के लिए	है	और उन्होंने ने नेक अ़मल किए
لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿١٠٨﴾ فُلٌ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمَاتِ رَبِّي							
मेरा रब	वातों के लिए	रोशनाई	समन्दर	हो	अगर	फ़रमा दें	108
لِنَفِذِ الْبَحْرِ قَبْلَ أَنْ تَنْفَدَ كَلِمَاتُ رَبِّي وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهِ مَدَدًا ﴿١٠٩﴾							
109	मदद को	उस जैसा	हम ले आएँ	और अगरचे	मेरे रब की बातें	कि ख़त्म हो	तो ख़त्म हो जाए

फिर वह (याजूज माजूज) न उस पर चढ़ सकेंगे, और न उस पर नकब लगा सकेंगे। (97) उस ने कहा यह मेरे रब की (तरफ) से रहमत है, पस जब आएगा मेरे रब का वादा (मकररा वक़्त) वह उस को हमवार कर देगा और मेरे रब का वादा सच्चा है। (98) और हम छोड़ देंगे उन के वाज़ को उस दिन रेला मारते हुए एक दूसरे के अन्दर, और सूर फूँका जाएगा, फिर हम उन सब को जमा करेंगे। (99) और हम उस दिन जहन्नम सामने कर देंगे काफ़िरों के बिलकुल सामने। (100) और मेरे ज़िक्र से जिन की आँखें पर्दा-ए-(गफ़्लत) में थीं, वह सुनने की ताक़त न रखते थे (सुन न सकते थे)। (101) जिन लोगों ने कुफ़ किया, क्या वह गुमान करते हैं? कि वह मेरे बन्दों को बना लेंगे मेरे सिवा कारसाज़। वेशक हम ने तैयार किया जहन्नम को काफ़िरों की ज़ियाफ़त के लिए। (102) फरमा दें क्या हम तुम्हें बतलाएँ आमाल के लिहाज़ से बदतरीन घाटे में (कौन है!) (103) वह लोग जिन की वरवाद हो गई कोशिश दुनिया की ज़िन्दगी में, और वह ख़याल करते हैं कि वह अच्छे काम कर रहे हैं। (104) यही लोग हैं जन्होंने ने इन्कार किया अपने रब की आयतों का और उस की मुलाक़ात का, पस अकारत गए उन के अ़मल, पस क़ियामत के दिन उन के लिए कोई वज़न काइम न करेंगे (उन के अ़मल वे वज़न होंगे)। (105) यह उन का बदला है जहन्नम, इस लिए कि उन्होंने ने कुफ़ किया और मेरी आयतों को और मेरे रसूलों को हैंसी मज़ाक़ ठहराया। (106) वेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अ़मल किए उन के लिए ज़ियाफ़त है फ़िरदौस (बहिश्त) के वागात। (107) उन में हमेशा रहेंगे, वह वहां से जगह बदलना न चाहेंगे। (108) फरमा दें अगर समन्दर मेरे रब की बातें (लिखने के लिए) रोशनाई बन जाए तो समन्दर (का पानी) ख़तम हो जाएगा उस से पहले कि मेरे रब की बातें ख़तम हों अगरचे हम उस की मदद को उस जैसा (और समन्दर भी) ले आएँ। (109)

११  
१९  
२

आप (स) फ़रमा दें कि मैं तुम जैसा बशर हूँ (अलबत्ता) मेरी तरफ़ वहि की जाती है, तुम्हारा माबूद माबूदे वाहिद है, सो जो अपने रब की मुलाकात की उम्मीद रखता है उसे चाहिए कि वह अच्छे अमल करे और वह अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न करे। (110) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है काफ़-हा-या-ऐन-साद। (1) यह तज़क़िरा है तेरे रब की रहमत का, उस के बन्दे ज़क़रिया (अ) पर। (2) (याद करो) जब उस ने अपने रब को आहिस्ता से पुकारा। (3) उस ने कहा ऐ मेरे रब! वेशक (बुढ़ापे से) मेरी हड्डियाँ कमज़ोर हो गई हैं, और मेरा सर सफ़ेद वालों से शोले मारने लगा है (बिलकुल सफ़ेद हो गया) और मैं (कभी) तुझ से मांग कर ऐ मेरे रब महरूम नहीं रहा हूँ। (4) और अलबत्ता मैं अपने बाद अपने रिश्तेदारों से डरता हूँ, और मेरी वीवी बाँझ है, तू मुझे अ़ता फ़रमा अपने पास से एक वारिस। (5) वह वारिस हो मेरा और औलादे याकूब (अ) का, और ऐ मेरे रब! उसे पसंदीदा बना दे। (6) (इरशाद हुआ) ऐ ज़क़रिया (अ)! वेशक हम तुझे एक लड़के की बशारत देते हैं, उस का नाम यहया (अ) है। हम ने इस से क़ब्ल किसी को उस का हम नाम नहीं बनाया। (7) उस ने कहा, ऐ मेरे रब! मेरे लड़का कैसे होगा? जब कि मेरी वीवी बाँझ है, और मैं पहुँच गया हूँ बुढ़ापे की इन्तिहाई हद को। (8) उस ने कहा उसी तरह, तेरा रब फ़रमाता है, यह (अम्र) मुझ पर आसान है, और इस से क़ब्ल मैं ने तुझे पैदा किया, जब कि तू कुछ भी न था। (9) उस ने कहा ऐ मेरे रब! मेरे लिए कोई निशानी (मक़र्रर) कर दे, फ़रमाया तेरी निशानी (यह है) कि तू लोगों से बात न करेगा तीन रात (दिन) ठीक (होने के बावजूद)। (10) फिर वह मेहरावे (इबादत) से अपनी क़ौम के पास निकल कर (आया) तो उस ने उन की तरफ़ इशारा किया कि उसकी पाकीज़गी बयान करो सुबह ओ शाम। (11)

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَهُمُ إِلَهُ وَاحِدٌ فَمَنْ كَانَ											
हो	सो जो	वाहिद	माबूद	तुम्हारा माबूद	फ़क़त	मेरी तरफ़	वहि की जाती है	तुम जैसा	बशर	इस के सिवा नहीं कि मैं	फ़रमा दें
يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ﴿١١٠﴾											
110	किसी को	अपना रब	इबादत में	और वह शरीक न करे	अच्छे	अमल	तो उसे चाहिए कि वह अमल करे	अपना रब	मुलाकात	उम्मीद रखता है	
آيَاتُهَا ٩٨ ﴿١٩﴾ سُورَةُ مَرْيَمَ ﴿٦﴾ زُكُوعَاتُهَا ٦											
रुक़आत 6 (19) सूरह मरयम आयत 98											
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ											
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है											
كَلَيْعَصَ ﴿١﴾ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهُ زَكْرِیَّا ﴿٢﴾ اِذْ نَادَى رَبَّهُ											
अपना रब	उस ने पुकारा	जब	2	ज़क़रिया (अ)	अपना बन्दा	तेरा रब	रहमत	तज़क़िरा	1	काफ़ हा या ऐन साद	
نِدَاءً خَفِيًّا ﴿٣﴾ قَالَ رَبِّ إِنِّي وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّي وَاشْتَعَلَ الرَّأْسُ											
सर	और शोले मारने लगा	मेरी	हड्डियाँ	कमज़ोर हो गई	वेशक मैं	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	3	आहिस्ता से	पुकारना	
شَيْبًا وَلَمْ أَكُنْ بِدُعَائِكَ رَبِّ شَقِيًّا ﴿٤﴾ وَإِنِّي خِفْتُ الْمَوَالِيَ											
अपने रिश्तेदार	डरता हूँ	और अलबत्ता मैं	4	महरूम	ऐ मेरे रब	तुझ से मांग कर	और मैं नहीं रहा	सफ़ेद बाल			
مِنْ وَّرَائِي وَكَانَتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا فَهَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ وَلِيًّا ﴿٥﴾ يَرِثُنِي											
मेरा वारिस हो	5	एक वारिस	अपने पास से	तू मुझे अ़ता कर	बाँझ	मेरी वीवी	और है	अपने बाद			
وَيَرِثُ مِنْ آلِ يَعْقُوبَ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ﴿٦﴾ يُزَكِّرِيَا إِنَّا نُبَشِّرُكَ											
तुझे बशारत देते हैं	वेशक हम	ऐ ज़क़रिया (अ)	6	पसन्दीदा	ऐ मेरे रब	और उसे बनादे	औलादे याकूब (अ)	से-का	और वारिस हो		
بِغُلَامٍ إِسْمُهُ يَحْيَىٰ لَمْ نَجْعَلْ لَهُ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ﴿٧﴾ قَالَ رَبِّ إِنِّي											
कैसे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	7	कोई हम नाम	इस से क़ब्ल	उस का	नहीं बनाया हम ने	यहया	उस का नाम	एक लड़का	
يَكُونُ لِي غُلَامًا وَكَانَتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا وَقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ											
बुढ़ापे	से-की	और मैं पहुँच चुका हूँ	बाँझ	मेरी वीवी	जब कि वह है	मेरे लिए (मेरा) लड़का	होगा वह				
عِتِيًّا ﴿٨﴾ قَالَ كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَقَدْ خَلَقْتُكَ											
तुझे पैदा किया	और मैं ने	आसान	मुझ पर	वह (यह)	तेरा रब	फ़रमाया	उसी तरह	उस ने कहा	8	इन्तिहाई हद	
مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْئًا ﴿٩﴾ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِي آيَةً قَالَ											
फ़रमाया	कोई निशानी	मेरे लिए	कर दे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	9	कोई चीज़ (कुछ भी)	जब कि तू न था	क़ब्ल	इस से	
اَيْتُكَ إِلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلَاثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ﴿١٠﴾ فَخَرَجَ عَلَى قَوْمِهِ											
अपनी क़ौम	पास	फिर वह निकला	10	ठीक	रात	तीन	लोग (जमा)	तू न बात करेगा	तेरी निशानी		
مِنَ الْمُحَرَابِ فَأَوْحَىٰ إِلَيْهِمْ أَنْ سَبِّحُوا بُكْرَةً وَعَشِيًّا ﴿١١﴾											
11	और शाम	सुबह	कि उस की पाकीज़गी बयान करो	उन की तरफ़	तो उस ने इशारा किया	मेहराव	से				

١٢  
ع  
٣

يُحْيِي خُذِ الْكِتَابَ بِقُوَّةٍ ۗ وَآتَيْنَاهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۚ (۱۲) وَحَنَانًا									
और शफ़क़त	12	वचन से	नबूख़त - दानाई	और हम ने उसे दी	मज़बूती से	किताब	पकड़ो (थाम लो)	ऐ यहया (अ)	
مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكَاةً ۖ وَكَانَ تَقِيًّا ۚ (۱۳) وَبَرًّا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ									
और न था वह	अपने माँ वाप से	और अच्छा सुलूक करने वाला	13	परहेज़गार	और वह था	और पाकीज़गी	अपने पास से		
جَبَارًا عَصِيًّا ۚ (۱۴) وَسَلَّمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوتُ وَيَوْمَ									
और जिस दिन	वह फ़ौत होगा	और जिस दिन	वह पैदा हुआ	जिस दिन	उस पर	और सलाम	14	नाफ़रमान	गर्दन कश
يُبْعَثُ حَيًّا ۚ (۱۵) وَادْكُرْ فِي الْكِتَابِ مَرْيَمَ ۖ إِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ أَهْلِهَا									
अपने घर वालों से	जब वह यकसू हो गई	मरयम (अ)	किताब में	और ज़िक्र करो	15	ज़िन्दा हो कर	उठाया जाएगा		
مَكَانًا شَرْقِيًّا ۚ (۱۶) فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُونِهِمْ حِجَابًا ۗ فَأَرْسَلْنَا									
फिर हम ने भेजा	पर्दा	उन की तरफ़	से	फिर डाल लिया	16	मशरिफ़ी	मकान		
إِلَيْهَا رُوحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ۚ (۱۷) قَالَتْ إِنِّي أَعُوذُ									
पनाह में आती हूँ	वेशक मैं	वह बोली	17	ठीक	एक आदमी	उस के लिए	शक़ल बन गया	अपनी रूह (फ़रिश्ता)	उस की तरफ़
بِالرَّحْمَنِ مِنْكَ إِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ۚ (۱۸) قَالَ إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكِ ۖ									
तेरे रब का	भेजा हुआ	कि मैं	इस के सिवा नहीं	उस ने कहा	18	परहेज़गार	अगर तू है	तुझ से	अल्लाह की
لَاهِبٍ لَّكَ غُلَمًا زَكِيًّا ۚ (۱۹) قَالَتْ أَنَّى يَكُونُ لِي غُلَمٌ وَلَمْ									
जब कि नहीं	लड़का	मेरे	होगा	कैसे	वह बोली	19	पाकीज़ा	एक लड़का	ताकि अ़ता करूँ
يَمْسَسَنِي بَشَرٌ وَلَمْ أَكُ بَغِيًّا ۚ (۲۰) قَالَ كَذَلِكَ ۖ قَالَ رَبِّكِ									
तेरा रब	फ़रमाया	यूँही	उस ने कहा	20	बदकार	और मैं नहीं हूँ	किसी बशर ने	मुझे छुआ	
هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۖ وَلَنَجْعَلَنَّ آيَةً لِلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِنَّا ۚ وَكَانَ									
और है	अपनी तरफ़ से	और रहमत	लोगों के लिए	एक निशानी	और ताकि हम उसे बनाएँ	आसान	मुझ पर	वह-यह	
أَمْرًا مَّقْضِيًّا ۚ (۲۱) فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهِ مَكَانًا قَصِيًّا ۚ (۲۲)									
22	दूर	एक जगह	उसे ले कर	पस वह चली गई	फिर उसे हमल रह गया	21	तै शुदा	एक अम्र	
فَاجَاءَهَا الْمَخَاضُ إِلَى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۖ قَالَتْ يَلَيْتَنِي مِثُّ									
मर चुकी होती	अए काश मैं	वह बोली	खजूर का दरख़्त	जड़	तरफ़	दर्दज़ाह	फिर उसे ले आया		
قَبْلَ هَذَا وَكُنْتُ نَسِيًّا مِّنْسِيًّا ۚ (۲۳) فَنَادَاهَا مِنْ تَحْتِهَا									
उस के नीचे	से	पस उसे आवाज़ दी	23	भूली बिसरी	और मैं हो जाती	इस से कब्बल			
أَلَّا تَحْزَنِي قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ۚ (۲۴) وَهَزِيئَ									
और हिला	24	एक चश्मा	तेरे नीचे	तेरा रब	कर दिया है	कि न घबरा तू			
إِلَيْكَ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسْقِطُ عَلَيْكَ رَطْبًا جَنِيًّا ۚ (۲۵)									
25	खजूरें	ताज़ा ताज़ा	तुझ पर	झड़ पड़ेंगी	खजूर	तने को	अपनी तरफ़		

(इरशादे इलाही हुआ) ऐ यहया (अ)! किताब को मज़बूती से थाम लो, और हम ने उसे वचन (ही) से नबूख़त ओ दानाई देदी। (12) और अपने पास से शफ़क़त और पाकीज़गी (अ़ता की) और वह परहेज़गार था, (13) और वह अपने माँ वाप से अच्छा सुलूक करने वाला था, और न था गर्दन कश नाफ़रमान। (14) और सलाम (सलामती) हो उस पर जिस दिन वह पैदा हुआ, और जिस दिन वह फ़ौत होगा, और जिस दिन ज़िन्दा करके उठाया जाएगा। (15) और किताब (कुरआन) में मरयम (अ) का ज़िक्र (याद) करो, जब वह अपने घर वालों से अलग हो गई एक मशरिफ़ी मकान में। (16) फिर उस ने डाल लिया उन की तरफ़ से पर्दा, फिर हम ने उस की तरफ़ अपने फ़रिश्ते को भेजा, वह उस के लिए ठीक एक आदमी की शक़ल बन कर आया। (17) वह बोली वेशक मैं तुझ से अल्लाह की पनाह में आती हूँ, अगर तू परहेज़गार है (यहां से हट जा)। (18) उस ने कहा इस के सिवा नहीं कि मैं तेरे रब का भेजा हुआ हूँ ताकि तुझे एक पाकीज़ा लड़का अ़ता करूँ। (19) वह बोली मेरे लड़का कैसे होगा? जब कि न मुझे किसी बशर ने छुआ, और न मैं बदकार हूँ। (20) उस ने कहा उसी तरह (अल्लाह का फ़ैसला है), तेरे रब ने फ़रमाया कि यह मुझ पर आसान है, और ताकि हम उसे लोगों के लिए एक निशानी बनाएँ, और अपनी तरफ़ से रहमत, और यह है एक तै शुदा अम्र। (21) फिर उसे हमल रह गया, पस वह उसे ले कर एक दूर जगह चली गई। (22) फिर दर्द ज़ह उसे खजूर के दरख़्त की जड़ की तरफ़ ले आया, वह बोली, ए काश! मैं इस से कब्बल मर चुकी होती, और मैं हो जाती भूली बिसरी। (23) पस उसे उस के नीचे (वादी) से (फ़रिश्ते ने) आवाज़ दी: तू घबरा नहीं, तेरे रब ने तेरे नीचे एक चश्मा (जारी) कर दिया है। (24) और खजूर का तना अपनी तरफ़ हिला, तुझ पर ताज़ा खजूरें झड़ पड़ेंगी। (25)

وقف الآيات

الآيات

तू खा और पी और आँखें ठंडी कर, फिर अगर तू किसी आदमी को देखे तो कह दे कि मैं ने रहमान के लिए रोज़े की नज़र मानी है, पस आज हरगिज़ किसी आदमी से कलाम न करूँगी। (26)

फिर वह उसे उठा कर अपनी कौम के पास लाई, वह बोले ऐ मरयम (अ)! तू लाई है ग़ज़ब की शै। (27)

ऐ हारून (अ) की बहन! तेरा बाप बुरा आदमी न था और न तेरी माँ ही थी बदकार। (28)

तो मरयम ने उस (बच्चे) की तरफ़ इशारा किया, वह बोले: हम गहवारे (गोद) के बच्चे से कैसे बात करें? (29)

बच्चे ने कहा: बेशक मैं अल्लाह का बन्दा हूँ, उस ने मुझे किताब दी, (30)

और मुझे नबी बनाया, और जहाँ कहीं मैं हूँ मुझे बाबरकत बनाया है, और जब तक मैं ज़िन्दा रहूँ मुझे हुकम दिया है नमाज़ का और ज़कात का, (31)

और अपनी माँ से अच्छा सुलूक करने का, और उस ने मुझे नहीं बनाया सरकश, बदनसीब। (32)

और सलामती हो मुझ पर जिस दिन मैं पैदा हुआ, और जिस दिन मैं मरूँगा, और जिस दिन मैं ज़िन्दा करके उठाया जाऊँगा। (33)

यह है ईसा (अ) इवने मरयम (अ), सच्ची बात जिस में वह (लोग) शक करते हैं। (34)

अल्लाह के लिए (सज़ावार) नहीं है कि वह कोई बेटा बनाए, वह पाक है, जब वह किसी काम का फ़ैसला करता है तो उस के सिवा नहीं कि वह कहता है “हो जा” पस वह हो जाता है। (35)

और बेशक अल्लाह मेरा और तुम्हारा रब है, पस उस की इबादत करो, यह सीधा रास्ता है। (36)

(फिर अहले किताब के) फ़िरकों ने इख़तिलाफ़ किया बाहम, पस ख़राबी है काफ़िरों के लिए (क़ियामत के) बड़े दिन की हाज़िरी से, (37)

क्या कुछ सुनेंगे! और क्या कुछ देखेंगे! जिस दिन वह हमारे सामने आएंगे, लेकिन आज के दिन ज़ालिम खुली गुमराही में हैं। (38)

فَكَلِمِي وَاشْرَبِي وَقَرِّي عَيْنًا فَمَا تَرَيْنَ مِنَ الْبَشَرِ أَحَدًا ۙ							
कोई	आदमी	से	फिर अगर तू देखे	आँखें	और ठंडी कर	और पी	तू खा
فَقَوْلِي إِنِّي نَذَرْتُ لِلرَّحْمَنِ صَوْمًا فَلَنْ أُكَلِّمَ الْيَوْمَ إِنْسِيًّا ۖ							
26	किसी आदमी	आज	पस मैं हरगिज़ कलाम न करूँगी	रोज़ा	रहमान के लिए	कि मैं ने नज़र मानी है	तो कह दे
فَاتَتْ بِهِ قَوْمَهَا تَحْمِلُهُ ۗ قَالُوا يَمْرِيْمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْئًا فَرِيًّا ۗ							
27	बुरी (ग़ज़ब की)	शै	तू लाई है	ऐ मरयम	वह बोले	उसे उठाए हुए	फिर वह उसे ले कर आई
يَأُخْتِ هُرُونَ مَا كَانَ مِنْ أُمَّكَ سَوْءٌ وَمَا كَانَتْ مِنْكُمْ إِذْ كَانَ الْمَرْءُ لَكِنًا ۗ							
28	बदकार	तेरी माँ	और न थी	बुरा	आदमी	तेरा बाप	था न ऐ हारून (अ) की बहन
فَأَشَارَتْ إِلَيْهِ ۗ قَالُوا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ۗ							
29	बच्चा	गहवारे में	जो है	कैसे हम बात करें	वह बोले	उस की तरफ़	तो मरयम ने इशारा किया
قَالَ إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ ۖ آتَانِيَ الْكِتَابَ وَجَعَلَنِي نَبِيًّا ۖ وَجَعَلَنِي							
और मुझे बनाया है	30	नबी	और मुझे बनाया है	किताब	उस ने मुझे दी है	अल्लाह का बन्दा	बच्चे ने कहा बेशक मैं
مُبْرَكًا أَيِّنَ مَا كُنْتُ وَأَوْصَانِي بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ مَا دُمْتُ							
जब तक मैं रहूँ	और ज़कात का	नमाज़ का	और मुझे हुकम दिया है उस ने	मैं हूँ	जहाँ कहीं	वाबरकत	
حَيًّا ۖ وَبَرًّا بِوَالِدَتِي ۖ وَلَمْ يَجْعَلْنِي جَبَّارًا شَقِيًّا ۖ وَالسَّلَامُ							
और सलामती	32	बदनसीब	सरकश	और उस ने मुझे नहीं बनाया	और अच्छा सुलूक करने वाला अपनी माँ से	31	ज़िन्दा
عَلَى يَوْمٍ وُلِدْتُ وَيَوْمَ أَمُوتُ وَيَوْمَ أُبْعَثُ حَيًّا ۖ ذَلِكَ							
यह	33	ज़िन्दा हो कर	उठाया जाऊँगा	और जिस दिन	मैं मरूँगा	और जिस दिन	मैं पैदा हुआ जिस दिन मुझ पर
عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۖ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِي فِيهِ يَمْتَرُونَ ۖ مَا كَانَ لِلَّهِ							
नहीं है अल्लाह के लिए	34	वह शक करते हैं	वह जिस में	सच्ची	वात	इवने मरयम	ईसा (अ)
أَنْ يَتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ سُبْحٰنَهُ ۗ إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ							
वह कहता है	तो इस के सिवा नहीं	किसी काम	जब वह फ़ैसला करता है	वह पाक है	बेटा	कोई	वह बनाए कि
لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۗ هَذَا							
यह	पस उस की इबादत करो	और तुम्हारा रब	मेरा रब	अल्लाह	और बेशक	35	पस वह हो जाता है जो जा उस को
صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۖ فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ ۖ فَوِيلٌ							
पस ख़राबी	आपस में (बाहम)	फ़िर्कें	फिर इख़तिलाफ़ किया	36	सीधा	रास्ता	
لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ مَّشْهَدٍ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۖ (37) أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصُرْ							
और देखेंगे	क्या कुछ	सुनेंगे	37	बड़ा दिन	हाज़िरी	से	काफ़िरों के लिए
يَوْمَ يَأْتُونَنَا لَكِنِ الظَّالِمُونَ الْيَوْمَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۖ (38)							
38	खुली गुमराही	में	आज के दिन	ज़ालिम (जमा)	लेकिन	वह हमारे सामने आएंगे	जिस दिन

और वह	ग़फ़लत में है	लेकिन वह	काम	जब फैसला कर दिया जाएगा	हस्रत का दिन	और उन को डरावें आप (स)
وَأَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٩﴾ إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِنَّا نُرْجِعُهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٤٠﴾ وَأَذْكُرُ فِي الْكِتَابِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا ﴿٤١﴾ نَبِيًّا ﴿٤١﴾ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِي عَنْكَ شَيْئًا ﴿٤٢﴾ يَا أَبَتِ إِنِّي قَدْ جَاءَنِي مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ فَاتَّبِعْنِي أَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ﴿٤٣﴾ يَا أَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطَانَ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلرَّحْمَنِ عَصِيًّا ﴿٤٤﴾ يَا أَبَتِ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يَمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمَنِ فَتَكُونَ لِلشَّيْطَانِ وَلِيًّا ﴿٤٥﴾ قَالَ أَرَأَيْتَ إِنْ تَدْعُنِي إِلَىٰ عِبَادَةِ مَا تُدْعُوا تِلْكَ إِذْ عَصَيْتَ إِنِّي لَأَذِيدُكَ بِيَدِي الْمُرْسَلَةِ ﴿٤٦﴾ قَالَ سَلِّمْ عَلَيَّ ۖ سَأَسْتَغْفِرَ لَكَ رَبِّي إِنَّهُ كَانَ بِي حَفِيًّا ﴿٤٧﴾ وَأَعْتَزِلْكُمْ وَمَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ وَأَدْعُوا رَبِّي عَسَىٰ أَتَىٰ عَلَىٰ كِبَارِكُمْ ﴿٤٨﴾ أَلَا أَكُونُ بِدُعَاءِ رَبِّي شَقِيًّا ﴿٤٨﴾ فَلَمَّا اعْتَزَلْتَهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ وَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۖ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ﴿٤٩﴾ وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ﴿٥٠﴾ وَأَذْكُرُ فِي الْكِتَابِ مُوسَىٰ ۖ إِنَّهُ كَانَ مُخْلَصًا وَكَانَ رَسُولًا نَّبِيًّا ﴿٥١﴾						
और हमारी तरफ़	उस पर	और जो	ज़मीन	वारिस होंगे	वेशक हम	ईमान नहीं लाते
सच्चे	वेशक वह थे	इब्राहीम (अ)	किताब में	और याद करो	40	वह लौटाए जाएंगे
और न देखे	जो न सुने	तुम क्यों परसतिश करते हो	ऐ मेरे अब्बा	अपने वाप को	जब उस ने कहा	41 नबी
जो	वह इल्म	वेशक मेरे पास आया है	वेशक मैं	ऐ मेरे अब्बा	42	कुछ तुम्हारे और न काम आए
शैतान	परसतिश न कर	ऐ मेरे अब्बा	43	सीधा रास्ता	मैं तुम्हें दिखाऊँगा	तुम्हारे पास नहीं आया
कि	डरता हूँ	वेशक मैं	ऐ मेरे अब्बा	44	नाफ़रमान रहमान का	है शैतान वेशक
क्या रूगदाँ	उस ने कहा	45	साथी	शैतान का	फिर तू हो जाए	रहमान से-का अज़ाब तुझे आपकड़े
46	एक मुद्दत के लिए	और मुझे छोड़ दे	तो मैं तुझे संगसार कर दूँगा	तू वाज़ न आया	अगर ऐ इब्राहीम (अ)	मेरे माबूद (जमा)
47	मेहरबान	मुझ पर	है	वेशक वह अपना रब	तेरे लिए	मैं अभी वख़्शिश मांगूँगा तुझ पर सलाम
उम्मीद है	अपना रब	और मैं इबादत करूँगा	अल्लाह	सिवाए	तुम परसतिश करते हो	और किनारा कशी करता हूँ तुम से
वह परसतिश करते थे	और जो	वह किनारा कश होगा उन से	फिर जब	48	महरूम अपना रब	इबादत से कि न रहूँगा
49	नबी	हम ने बनाया	और सब को	और याकूब (अ)	इसहाक (अ)	उस को हम ने अता किया अल्लाह सिवाए
50	निहायत बुलन्द	सच्चा-जमील	ज़िक्र	उन का	और हम ने किया	अपनी रहमत से उन्हें और हम ने अता किया
51	नबी	रसूल	और था	वरगुज़ीदा था	वेशक वह मूसा (अ)	किताब में और याद करो

और हम ने उसे कोहे तूर की दाहिनी जानिव से पुकारा, और हम ने उसे राज बतलाने को नज़दीक बुलाया। (52)

और हम ने उसे अपनी रहमत से उस का भाई हारून (अ) अता किया। (53)

और किताब में इस्माईल (अ) को याद करो, बेशक वह वादे के सच्चे थे, और रसूल नबी थे। (54)

और वह अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देते थे, और वह अपने रब के हां पसंदीदा थे। (55)

और किताब में इदरीस (अ) को याद करो, बेशक वह सच्चे नबी थे। (56)

और हम ने उसे एक बुलन्द मुक़ाम पर उठा लिया। (57)

यह है नवियों में से वह जिन पर अल्लाह ने इन्ज़ाम किया औलादे आदम में से, और उन में से जिन्हें हम ने नूह (अ) के साथ (कशती में) सवार किया, और इब्राहीम (अ) और याकूब (अ) की औलाद में से, और उन में से जिन्हें हम ने हिदायत दी, और चुना, जब उन पर रहमान की आयतें पढ़ी जातीं वह ज़मीन पर गिर पड़ते सिज्दा करते और रोते हुए। (58)

फिर उन के बाद चन्द नाख़लफ़ जानशीन हुए, उन्होंने ने नमाज़ गंवादी, और खाहिशाते (नफ़सानी) की पैरवी की, पस अ़नक़रीब उन्हें गुमराही (की सज़ा) मिलेगी। (59)

मगर जिस ने तौबा की और ईमान लाया और नेक अ़मल किए, पस यही लोग हैं जो जन्नत में दाख़िल होंगे, और ज़री भर भी उन का नुक्सान न किया जाएगा, (60)

हमेशागी के वागात में जिन का वादा रहमान ने गाइबाना अपने बन्दों से किया, बेशक उस का वादा आने वाला है। (61)

और उस में सलाम के सिवा कोई बेहूदा बात न सुनेंगे, और उन के लिए उस में सुबह ओ शाम उन का रिज़्क है। (62)

यह वह जन्नत है जिस का हम अपने (उन) बन्दों को वारिस बनाएंगे जो परहेज़गार होंगे। (63)

وَنَادَيْنَاهُ مِنْ جَانِبِ الطُّورِ الْأَيْمَنِ وَقَرَّبْنَاهُ نَجِيًّا ٥٢							
52	राज बताने को	और उसे नज़दीक बुलाया	दाहिनी	कोहे तूर	जानिव	से	और हम ने उसे पुकारा
وَوَهَبْنَا لَهُ مِنْ رَحْمَتِنَا أَخَاهُ هَارُونَ نَبِيًّا ٥٣ وَادْكُرْ فِي الْكِتَابِ							
	किताब में	और याद करो	53	नबी	हारून (अ)	उस का भाई	अपनी रहमत से उसे और हम ने अता किया
إِسْمَاعِيلَ إِنَّهُ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُولًا نَبِيًّا ٥٤							
54	नबी	रसूल	और थे	वादे का सच्चा	थे	बेशक वह	इस्माईल (अ)
وَكَانَ يَأْمُرُ أَهْلَهُ بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهِ مَرْضِيًّا ٥٥							
55	पसन्दीदा	अपने रब के हां	और वह थे	और ज़कात	नमाज़ का	अपने घर वाले	और हुक्म देते थे
وَادْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِدْرِيْسَ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَبِيًّا ٥٦ وَرَفَعْنَاهُ							
	और हम ने उसे उठा लिया	56	नबी	सच्चे	थे	बेशक वह	इदरीस (अ) किताब में और याद करो
مَكَانًا عَلِيًّا ٥٧ أُولَئِكَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّنَ							
	नबी (जमा)	से	उन पर	अल्लाह ने इन्ज़ाम किया	वह जिन्हें	यह वह लोग	57 बुलन्द एक मुक़ाम
مِنْ ذُرِّيَّةِ آدَمَ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ وَمِنْ ذُرِّيَّةِ							
	औलाद	और से	नूह (अ)	साथ	सवार किया हम ने	और उन से जिन्हें	औलादे आदम से
إِبْرَاهِيمَ وَإِسْرَائِيلَ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ							
	उन पर	जब पढ़ी जाती	और हम ने चुना	हम ने हिदायत दी	और उन से जिन्हें	इब्राहीम (अ) और याकूब (अ)	
آيَاتِ الرَّحْمَنِ خَرُّوا سُجَّدًا وَبُكِيًّا ٥٨ فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ							
	चन्द जानशीन (ना ख़लफ़)	उन के बाद	फिर जानशीन हुए	58	और रोते हुए	सिज्दा करते हुए	वह गिर पड़ते रहमान की आयतें
أَضَاعُوا الصَّلَاةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهْوَاتِ فَسُوفَ يَلْقَوْنَ غِيًّا ٥٩							
59	गुमराही	उन्हें मिलेगी	पस अ़नक़रीब	खाहिशात	और पैरवी की	नमाज़	उन्होंने ने गंवादी
إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَئِكَ يَدْخُلُونَ							
	वह दाख़िल होंगे	पस यही लोग	नेक	और अ़मल किए	और ईमान लाया	तौबा की	जो-जिस मगर
الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ شَيْئًا ٦٠ جَنَّتِ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدَ							
	वादा किया	वह जो	हमेशागी के वागात	60	कुछ-ज़रा	और उन का न नुक्सान किया जाएगा	जन्नत
الرَّحْمَنُ عِبَادَهُ بِالْغَيْبِ إِنَّهُ كَانَ وَعْدُهُ مَأْتِيًّا ٦١ لَا يَسْمَعُونَ							
	वह न सुनेंगे	61	आने वाला	उस का वादा	है	बेशक वह	गाइबाना अपने बन्दे (जमा) रहमान
فِيهَا لَعْوًا إِلَّا سَلَامًا ٦٢ وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيهَا بُكْرَةً وَعَشِيًّا							
62	और शाम	सुबह	उस में	उन का रिज़्क	और उन के लिए	सिवा सलाम	बेहूदा उस में
تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُورِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ٦٣							
63	परहेज़गार	होंगे	जो	अपने बन्दे से-को	हम वारिस बनाएंगे	वह जो कि	जन्नत यह



وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ ۚ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا										
हमारे पीछे	और जो	जो हमारे हाथों में (आगे)	उस के लिए	तुम्हारा रब	हुकम से	मगर	हम उतरते	और नहीं		
وَمَا بَيْنَ ذَلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿٦٤﴾ رَبُّ السَّمَوَاتِ										
आस्मानों का रब	64	भूलने वाला	तुम्हारा रब	है	और नहीं	उस के दरमियान	और जो			
وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهِ هَلْ تَعْلَمُ										
तू जानता है	क्या	उस की इबादत पर	और साबित कदम रहो	पस उसी की इबादत करो	उन के दरमियान	और जो	और ज़मीन			
لَهُ سَمِيًّا ﴿٦٥﴾ وَيَقُولُ الْإِنْسَانُ إِذَا مَا مِثَّ لَسَوْفَ أُخْرَجَ حَيًّا ﴿٦٦﴾										
66	ज़िन्दा	मैं निकाला जाऊँगा	तो फिर	मैं मर गया	क्या जब	इन्सान	और कहता है	65	हम नाम कोई	उस का
أَوْلَىٰ يَذْكُرُ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا ﴿٦٧﴾										
67	कुछ भी	जब कि वह न था	इस से कब्ल	हम ने उसे पैदा किया	वेशक हम	इन्सान	याद करता	क्या नहीं		
فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيْطِينَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ										
जहन्नम	ईर्द गिर्द	हम उन्हें ज़रूर हाज़िर करलेंगे	फिर	शैतान (जमा)	हम उन्हें ज़रूर जमा करेंगे	सो तुम्हारे रब की कसम				
جِثِيًّا ﴿٦٨﴾ ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيعَةٍ أَيُّهُمْ أَشَدُّ عَلَى الرَّحْمَنِ										
अल्लाह रहमान से	बहुत ज़ियादा	जो उन में से	गिरोह	हर	से	ज़रूर खींच निकालेंगे	फिर	68	घुटनों के बल गिरे हुए	
عِتِيًّا ﴿٦٩﴾ ثُمَّ لَنَحْنُ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ هُمْ أَوْلَىٰ بِهَا صِلِيًّا ﴿٧٠﴾ وَإِنُّ										
और नहीं	70	दाखिल होना	ज़ियादा मुस्तहिक उस में	वह	उन से जो	खूब वाकिफ़	अलबत्ता	फिर	69	सरकशी करने वाला
مِّنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ﴿٧١﴾ ثُمَّ نُنَجِّي										
हम नजात देंगे	फिर	71	मुक़र्रर किया हुआ	लाज़िम	तुम्हारा रब	पर	है	यहां से गुज़रना होगा	मगर	तुम में से
الَّذِينَ اتَّقَوْا وَنَذَرُوا الظُّلْمِينَ فِيهَا جِثِيًّا ﴿٧٢﴾ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ										
उन पर	पढ़ी जाती है	और जब	72	घुटनों के बल गिरे हुए	उस में	ज़ालिम (जमा)	और हम छोड़ देंगे	वह जिन्होंने ने परहेज़गारी की		
أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا الَّذِينَ آمَنُوا أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ										
दोनों फ़रीक़	कौन सा	वह ईमान लाए	उन से जो	कुफ़ किया	वह जिन्होंने ने	कहते हैं	वाज़ेह	हमारी आयतें		
خَيْرٌ مَّقَامًا وَأَحْسَنُ نَدِيًّا ﴿٧٣﴾ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّن قَرْنٍ هُمْ										
वह	गिरोहों में से	उन से पहले	हम हलाक कर चुके	और कितने ही	73	मजलिस	और अच्छी	बेहतर मुक़ाम		
أَحْسَنُ أَثَا وَرَبِّيًّا ﴿٧٤﴾ قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلَالَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ										
उस को	तो ढील दे रहा है	गुमराही में	जो है	कह दीजिए	74	और नमूद	सामान	बहुत अच्छे		
الرَّحْمَنُ مَدًّا حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ إِمَّا الْعَذَابَ وَإِمَّا										
और ख़्वाह	अज़ाब	ख़्वाह	जिस का वादा किया जाता है	वह देखेंगे	जब	यहां तक कि	खूब ढील	रहमान		
السَّاعَةَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَأَضْعَفُ جُنْدًا ﴿٧٥﴾										
75	लशकर	और कमज़ोर तर	बदतर मुक़ाम	वह	कौन	पस अब वह जान लेंगे	कियामत			

और (फ़रिश्तों ने कहा) हम तुम्हारे रब के हुकम के बग़ैर नहीं उतरते, उसी के लिए है जो हमारे आगे, और जो हमारे पीछे है और जो उस के दरमियान है, और तुम्हारा रब भूलने वाला नहीं। (64)

वह रब है आस्मानों का और ज़मीन का, और जो उन के दरमियान है, पस तुम उसी की इबादत करो, और उस की इबादत पर साबित कदम रहो, क्या तू कोई उस का हम नाम जानता है? (65)

और (काफ़िर) इन्सान कहता है क्या जब मैं मर गया तो फिर मैं ज़िन्दा कर के (ज़मीन से) निकाला जाऊँगा! (66)

क्या इन्सान याद नहीं करता (क्या उसे याद नहीं) कि हम ने उसे इस से पहले पैदा किया जब कि वह कुछ भी न था। (67)

सो तुम्हारे रब की कसम हम उन्हें और शैतानों को ज़रूर जमा करेंगे, फिर हम उन्हें ज़रूर हाज़िर कर लेंगे जहन्नम के गिर्द घुटनों के बल गिरे हुए। (68)

फिर हर गिरोह में से हम उसे ज़रूर खींच निकालेंगे जो उन में अल्लाह रहमान से बहुत ज़ियादा सरकशी करने वाला था। (69)

फिर अलबत्ता हम उन से खूब वाकिफ़ हैं जो उस (जहन्नम) में दाखिल होने के ज़ियादा मुस्तहिक हैं। (70)

और तुम में से कोई नहीं मगर उसे (हर एक को) यहां से गुज़रना होगा। तुम्हारे रब का अपने ऊपर लाज़िम मुक़र्रर किया हुआ। (71)

फिर हम उन लोगों को नजात देंगे जिन्होंने ने परहेज़गारी की, और हम ज़ालिमों को उस में छोड़ देंगे घुटनों के बल गिरे हुए। (72)

और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयतें पढ़ी जाती हैं तो जिन्होंने ने कुफ़ किया वह ईमान लाने वालों से कहते हैं, दोनों फ़रीक़ में से किस का मुक़ाम (मरतबा) बेहतर और मजलिस अच्छी है? (73)

और इन से पहले हम कितने ही गिरोह हलाक कर चुके हैं, वह सामान और नमूद में (इन से) बहुत अच्छे थे। (74)

कह दीजिए जो गुमराही में है तो उस को अर-रहमान गुमराही में और खूब ढील दे रहा है यहां तक कि वह देख लेंगे, या अज़ाब या क़ियामत जिस का उन से वादा किया जाता है, पस वह तब जान लेंगे कौन है बदतर मुक़ाम (मरतबा) में? और कमज़ोर तर लशकर में। (75)

और जिन लोगों ने हिदायत हासिल की अल्लाह उन्हें और ज़ियादा हिदायत देता है, और तुम्हारे रब के नज़दीक बाकी रहने वाली नेकियां बेहतर हैं व-एतिबारे सवाब और बेहतर हैं व-एतिबारे अन्जाम। (76) पस क्या तू ने उस शख्स को देखा जिस ने हमारे हुक्मों का इन्कार किया? और कहा मैं ज़रूर माल और औलाद दिया जाऊंगा। (77) क्या वह ग़ैब पर मत्तला हो गया है? या उस ने अल्लाह रहमान से ले लिया है कोई अ़हद। (78) हरगिज़ नहीं! जो वह कहता है अब हम लिख लेंगे और उस को अ़ज़ाव लंबा बढ़ादेंगे। (79) और हम वारिस होंगे (ले लेंगे) जो वह कहता है और वह हमारे पास अकेला आएगा। (80) और उन्होंने ने अल्लाह के सिवा (औरों को) माबूद बना लिया है ताकि उन के लिए मोज़िबे इज़ज़त हों। (81) हरगिज़ नहीं, जल्द ही वह उन की बन्दगी से इन्कार करेंगे और उन के मुखालिफ़ हो जाएंगे। (82) क्या तुम ने नहीं देखा? बेशक हम ने शैतान भेजे हैं काफ़िरों पर, वह उन्हें खूब उकसाते रहते हैं। (83) सो तुम उन पर (नुजूले अ़ज़ाव की) जल्दी न करो, हम तो सिर्फ़ उन की गिनती पूरी कर रहे हैं (उन के दिन गिन रहे हैं)। (84) (याद करो) जिस दिन हम परहेज़गारों को अल्लाह रहमान की तरफ़ मेहमान बना कर जमा कर जाएंगे। (85) और हम गुनाहगारों को हांक कर ले जाएंगे जहनन्म की तरफ़ प्यासे। (86) वह शफ़ाअत का इख़्तियार नहीं रखते सिवाए उस के जिस ने अल्लाह रहमान से लिया हो इक्कार। (87) और वह कहते हैं अल्लाह रहमान ने बेटा बना लिया है, (88) तहकीक़ तुम (ज़वान पर) बुरी बात लाए हो। (89) क़रीब है (बईद नहीं) कि आस्मान उस से फट पड़े और ज़मीन टुकड़े टुकड़े हो जाए, और पहाड़ पारा पारा हो कर गिर पड़ें। (90) कि उन्होंने ने अल्लाह के लिए मन्सूब किया बेटा। (91) जब कि रहमान के शायान नहीं कि वह बेटा बनाए। (92) नहीं कोई जो आस्मानों में है और ज़मीन में है, मगर रहमान के (हुज़ूर) बन्दा हो कर आता है। (93) उस ने उन को घेर लिया है, और गिन कर उन का शुमार कर लिया है। (94) और उन में से हर एक क़ियामत के दिन उस के सामने अकेला आएगा। (95)

وَيَزِيدُ اللَّهُ الَّذِينَ اهْتَدَوْا هُدًى وَالْبَقِيَّةُ الصَّلِحَةُ							
नेकियां	और बाकी रहने वाली	हिदायत	हिदायत हासिल की	जिन लोगों ने	अल्लाह	और ज़ियादा देता है	
خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ مَّرَدًّا ﴿٧٦﴾ أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ							
इन्कार किया	वह जिस ने	पस क्या तू ने देखा	76	व एतिबारे अन्जाम	और बेहतर	व एतिबारे सवाब	तुम्हारे रब के नज़दीक
بِآيَاتِنَا وَقَالَ لَأُوتِيَنَّ مَالًا وَوَلَدًا ﴿٧٧﴾ أَطَّلَعَ الْغَيْبَ أَمْ اتَّخَذَ							
उस ने ले लिया है	या	ग़ैब	क्या वह मुत्तला हो गया है	77	और औलाद	माल	मैं ज़रूर दिया जाऊंगा और उस ने कहा
عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا ﴿٧٨﴾ كَلَّا سَنَكْتُبُ مَا يَقُولُ وَنَمُدُّ لَهُ							
उस को	और हम बढ़ा देंगे	वह जो कहता है	अब हम लिख लेंगे	हरगिज़ नहीं	78	कोई अ़हद	अल्लाह रहमान से
مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ﴿٧٩﴾ وَنَرِثُهُ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ﴿٨٠﴾ وَاتَّخَذُوا							
और उन्होंने ने बना लिया	80	अकेला	और वह हमारे पास आएगा	जो वह कहता है	और हम वारिस होंगे	79	और लंबा
مِنَ دُونِ اللَّهِ إِلَهَةً لِّيَكُونُوا لَهُمْ عِزًّا ﴿٨١﴾ كَلَّا سَيَكْفُرُونَ							
जल्द ही वह इन्कार करेंगे	हरगिज़ नहीं	81	मोज़िबे इज़ज़त	उन के लिए	ताकि वह हो	माबूद	अल्लाह के सिवा
بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ﴿٨٢﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّا أَرْسَلْنَا الشَّيْطِينَ							
शैतान (जमा)	बेशक हम ने भेजे	क्या तुम ने नहीं देखा	82	मुखालिफ़	उन के	और हो जाएंगे	उन की बन्दगी से
عَلَى الْكُفْرِينَ تُوَزُّهُمُ آزًّا ﴿٨٣﴾ فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ إِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿٨٤﴾							
84	गिनती	उन की	सिर्फ़ हम गिनती पूरी कर रहे हैं	उन पर	सो तुम जल्दी न करो	83	उकसाते हैं उन्हें खूब उकसाना
يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمَنِ وَفْدًا ﴿٨٥﴾ وَنَسُوقُ الْمُجْرِمِينَ							
गुनाहगार (जमा)	और हांक कर ले जाएंगे	85	मेहमान बना कर	रहमान की तरफ़	परहेज़गार (जमा)	हम जमा कर लेंगे	जिस दिन
إِلَىٰ جَهَنَّمَ وَرِدًّا ﴿٨٦﴾ لَا يَمْلِكُونَ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ							
रहमान के पास	जिस ने लिया हो	सिवाए	शफ़ाअत	वह इख़्तियार नहीं रखते	86	प्यासे	जहनन्म तरफ़
عَهْدًا ﴿٨٧﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا ﴿٨٨﴾ لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِدًّا ﴿٨٩﴾							
89	बुरी	एक बात	तहकीक़ तुम लाए हो	88	बेटा	रहमान बना लिया है	और वह कहते हैं
تَكَادُ السَّمُوتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْأَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ﴿٩٠﴾							
90	पारा पारा	पहाड़	और गिर पड़े	ज़मीन	और टुकड़े टुकड़े हो जाए	उस से	फट पड़े
أَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمَنِ وَلَدًا ﴿٩١﴾ وَمَا يَنْبَغِي لِلرَّحْمَنِ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا ﴿٩٢﴾							
92	बेटा	कि वह बनाए	रहमान के लिए	शायान	जब कि नहीं	91	बेटा
إِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا آتَى الرَّحْمَنِ عَبْدًا ﴿٩٣﴾							
93	बन्दा	रहमान	मगर आता है	और ज़मीन	आस्मानों में	जो	नहीं तमाम (कोई)
لَقَدْ أَحْصَاهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿٩٤﴾ وَكُلُّهُمْ آتِيهِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فَرْدًا ﴿٩٥﴾							
95	अकेला	आएगा उस के सामने क़ियामत के दिन	और उन में से हर एक	94	और उन का शुमार कर लिया है	गिन कर	उस ने उन को घेर लिया है

٥  
٨

وقف لانه  
وقف لانه

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَنُ						
रहमान	उन के लिए	पैदा कर देगा	नेक	और उन्होंने ने अमल किए	जो लोग ईमान लाए	वेशक
وَأُذًا ﴿٩٦﴾ فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِينَ وَتُنذِرَ بِهِ						
और डराएं उस से	परहेज़गारों	ताकि आप खुशखबरी दें उस से	आप की ज़बान में	हम ने इसे आसान कर दिया है	पस उस के सिवा नहीं	96 सुहब्वत
قَوْمًا لُّدًّا ﴿٩٧﴾ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هَلْ تُحِشُّ						
तुम देखते हो	क्या	गिरोह	से	उन से क़व्ल	हम ने हलाक कर दिए	97 झगड़ालू लोग
مِنْهُمْ مِّنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿٩٨﴾						
98	आहट	उन की	या तुम सुनते हो	कोई किसी को	उन से	
آيَاتَهَا ١٣٥ ﴿٢٠﴾ سُورَةُ طه ﴿٢٠﴾ رُكُوعَاتُهَا ٨						
		रुक़आत 8			(20) सूरह ता हा	
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ						
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
طه ﴿١﴾ مَا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لِتَشْقَى ﴿٢﴾ إِلَّا تَذَكُّرًا لِّمَنْ						
उस के लिए जो	याद दिहानी	मगर	2	ताकि तुम मुशक्कत में पड़ जाओ	कुरआन तुम पर	हम ने नाज़िल नहीं किया
1	ता हा					
يَخْشَى ﴿٣﴾ تَنْزِيلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْأَرْضَ وَالسَّمَوَاتِ الْعُلَى ﴿٤﴾						
4	डरता है	3	नाज़िल किया हुआ	से - जिस	बनाया	ज़मीन और आस्मान (जमा)
الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى ﴿٥﴾ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا						
और जो	आस्मानों में	उस के लिए जो	5	काइम	अर्श पर	रहमान
فِي الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرَى ﴿٦﴾ وَإِنْ تَجَهَّرَ بِالْقَوْلِ						
वात	तू पुकार कर कहे	और अगर	6	गीली मिट्टी	नीचे	और जो उन दोनों के दरमियान
और जो	ज़मीन में					
فَاتَّهُ يَعْلَمُ السِّرَّ وَأَخْفَى ﴿٧﴾ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ لَهُ الْأَسْمَاءُ						
सब नाम	उसी के लिए	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	अल्लाह	7	और निहायत पोशीदा
						भेद जानता है तो वेशक वह
الْحُسْنَى ﴿٨﴾ وَهَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَى ﴿٩﴾ إِذْ رَأَى نَارًا فَقَالَ						
तो कहा	आग	जब उस ने देखी	9	मूसा (अ)	कोई खबर	तुम्हारे पास आई
और क्या	8	अच्छे				
لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّي آتِيكُمْ مِنْهَا بِقَبَسٍ أَوْ						
या	चिंगारी	उस से	तुम्हारे पास लाऊँ	शायद मैं	आग	देखी है
वेशक मैं ने	तुम ठहरो	अपने घर वालों को				
أَجْدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ﴿١٠﴾ فَلَمَّا آتَاهَا نُودِيَ يَمْوَسَى ﴿١١﴾ إِنِّي أَنَا						
मैं	वेशक मैं	11	ऐ मूसा (अ)	आवाज़ आई	वह वहाँ आए	जब पस
						10 रास्ता आग पर - के मैं पाऊँ
رَبُّكَ فَاحْلَعْ نَعْلَيْكَ إِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٢﴾						
12	तुवा	पाक मैदान	वेशक तुम	अपनी जूतियाँ	सो उतार लो	तुम्हारा रब

वेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने किए अमल नेक उन के लिए पैदा कर देगा रहमान (दिलों में) सुहब्वत। (96)

पस उस के सिवा नहीं कि हम ने (कुरआन) को आप (स) की ज़बान में आसान कर दिया ताकि उस से आप (स) परहेज़गारों को खुशखबरी दें और झगड़ालू लोगों को उस से डराएं। (97)

और इन से क़व्ल हम ने हलाक कर दिए कितने ही गिरोह, क्या तम उन में से किसी को देखते हो? या उन की आहट सुनते हो? (98)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है ता-हा। (1)

हम ने कुरआन तम पर इस लिए नाज़िल नहीं किया कि तम मुशक्कत में पड़ जाओ। (2)

मगर उस के लिए नसीहत है जो डरता है। (3)

नाज़िल किया हुआ है (उस की तरफ से) जिस ने ज़मीन और ऊंचे आस्मान बनाए। (4)

रहमान अर्श पर काइम है। (5)

उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और जो उन दोनों के दरमियान है, और जो ज़मीन के नीचे है। (6)

और अगर तू पुकार कर कहे वात तो वेशक वह भेद जानता है और निहायत पोशीदा (वात को भी)। (7)

अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उसी के लिए है सब अच्छे नाम। (8)

और क्या तुम्हारे पास मूसा (अ) की खबर आई? (9)

जब उस ने आग देखी तो अपने घर वालों से कहा कि तम ठहरो, वेशक मैं ने देखी है आग, शायद मैं तुम्हारे पास उस से चिंगारी ले आऊँ, या आग पर रास्ते (का पता) पा लूँ। (10)

पस जब वह वहाँ आए, तो आवाज़ आई ऐ मूसा (अ)! (11)

वेशक मैं ही तुम्हारा रब हूँ, सो अपनी जूतियाँ उतार लो, वेशक तम तुवा के पाक वादी में हो। (12)

और मैं ने तुम्हें पसंद किया, पस जो वहि की जाए उस की तरफ कान लगा कर सुनो। (13)

वेशक मैं ही अल्लाह हूँ, मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, पस मेरी इबादत करो और काइम करो मेरी याद के लिए नमाज़, (14)

वेशक कियामत आने वाली है, मैं चाहता हूँ कि उसे पोशीदा रखूँ ताकि हर शख्स को बदला दिया जाए उस कोशिश का जो वह करे। (15)

पस तुझे उस से वह न रोक दे जो उस पर ईमान नहीं रखता और अपनी खाहिश के पीछे पड़ा हुआ है, फिर तू हलाक हो जाए। (16)

और ऐ मूसा (अ) यह तेरे दाहने हात में क्या है? (17)

उस ने कहा यह मेरा अ़सा है, मैं इस पर टेक लगाता हूँ, और इस से पत्ते झाड़ता हूँ अपनी बकरियों पर, और इस में मेरे और भी कई फाइदे हैं। (18)

उस ने फ़रमाया ऐ मूसा (अ)! इसे (ज़मीन पर) डाल दे। (19)

पस उस ने डाल दिया, तो नागाह वह दौड़ता हुआ सांप (बन गया)। (20)

(अल्लाह ने) फ़रमाया उसे पकड़ ले, और न डर, हम जल्द उसे उस की पहली हालत पर लौटा देंगे, (21)

अपना हाथ अपनी बग़ल में लगा ले, वह किसी ऐब के बग़र सफ़ेद (चमकता हुआ) निकलेगा, (यह) दूसरी निशानी है। (22)

ताकि हम तुझे दिखाएँ अपनी बड़ी निशानियों में से। (23)

तू फिरऔन की तरफ जा, वेशक वह सरशक हो गया है। (24)

मूसा (अ) ने कहा, ऐ मेरे रब! मेरे लिए कुशादा कर दे मेरा सीना। (25)

और मेरे लिए मेरा काम आसान कर दे। (26)

और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे। (27)

कि वह मेरी बात समझ लें। (28)

وَأَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوحَىٰ (١٣) إِنِّي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَهَ

नहीं कोई माबूद	अल्लाह	मैं	वेशक मैं	13	उस की तरफ जो वहि की जाए	पस कान लगा कर सुनो	तुम्हें पसन्द किया	और मैं
----------------	--------	-----	----------	----	-------------------------	--------------------	--------------------	--------

إِلَّا أَنَا فَأَعْبُدْنِي وَأَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي (١٤) إِنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ

आने वाली	कियामत	वेशक	14	मेरी याद के लिए	नमाज़	और काइम करो	पस मेरी इबादत करो	मेरे सिवा
----------	--------	------	----	-----------------	-------	-------------	-------------------	-----------

أَكَادُ أَحْفِيهَا لِتَجْزِي كُلِّ نَفْسٍ بِمَا تَسْعَىٰ (١٥) فَلَا يَصُدُّكَ عَنْهَا

उस से जो	पस तुझे रोक न दे	15	उस का जो वह कोशिश करे	शख्स	हर	ताकि बदला दिया जाए	मैं उसे पोशीदा रखूँ	मैं चाहता हूँ
----------	------------------	----	-----------------------	------	----	--------------------	---------------------	---------------

مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هُوَهُ فَتَرْدَىٰ (١٦) وَمَا تِلْكَ بِيَمِينِكَ يُمُوسَىٰ (١٧)

17	ऐ मूसा (अ)	तेरे दाहने हाथ में	यह	और क्या	16	फिर तू हलाक हो जाए	अपनी खाहिश पीछे पड़ा	उस पर	ईमान नहीं रखता	जो
----	------------	--------------------	----	---------	----	--------------------	----------------------	-------	----------------	----

قَالَ هِيَ عَصَىٰ أَتَوَكَّأُ عَلَيْهَا وَأَهُشُّ بِهَا عَلَىٰ غَمِي وَلِيَ فِيهَا

इस में	और मेरे लिए	अपनी बकरियाँ	पर	और मैं पत्ते झाड़ता हूँ इस से	इस पर	मैं टेक लगाता हूँ	मेरा अ़सा	यह	उस ने कहा
--------	-------------	--------------	----	-------------------------------	-------	-------------------	-----------	----	-----------

مَارِبٍ أُخْرَىٰ (١٨) قَالَ أَلْقَهَا يُمُوسَىٰ (١٩) فَالْقَهَا فَإِذَا هِيَ حَيَّةٌ

सांप	तो नागाह वह	पस उस ने डाल दिया	19	ऐ मूसा (अ)	उसे डाल दे	उस ने फ़रमाया	18	और भी	(ज़रूरतें) फाइदे
------	-------------	-------------------	----	------------	------------	---------------	----	-------	------------------

تَسْعَىٰ (٢٠) قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ سَنُعِيدُهَا سِيرَتَهَا الْأُولَىٰ (٢١)

21	पहली	उस की हालत	हम जल्द उसे लौटा देंगे	और न डर	उसे पकड़ ले	फ़रमाया	20	दौड़ता हुआ
----	------	------------	------------------------	---------	-------------	---------	----	------------

وَاضْمُمْ يَدَكَ إِلَىٰ جَنَاحِكَ تَخْرُجَ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ آيَةً

निशानी	ऐब	बग़ैर किसी	सफ़ेद	वह निकलेगा	अपनी बग़ल	तक-से	अपना हाथ	और (मिला) लगा
--------	----	------------	-------	------------	-----------	-------	----------	---------------

أُخْرَىٰ (٢٢) لِنُرِيكَ مِنْ آيَاتِنَا الْكُبْرَىٰ (٢٣) إِذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ

वेशक वह	फ़िरऔन	तरफ	तू जा	23	बड़ी	अपनी निशानियों से	ताकि हम तुझे दिखाएँ	22	दूसरी
---------	--------	-----	-------	----	------	-------------------	---------------------	----	-------

طَغَىٰ (٢٤) قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي (٢٥) وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي (٢٦) وَاحْلُلْ

और खोल दे	26	मेरा काम	और मेरे लिए आसान कर दे	25	मेरा सीना	मेरे लिए	कुशादा कर दे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	24	सरशक हो गया
-----------	----	----------	------------------------	----	-----------	----------	--------------	-----------	-----------	----	-------------

عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِي (٢٧) يَفْقَهُوا قَوْلِي (٢٨) وَاجْعَلْ لِّي وَزِيرًا مِّنْ

से	मेरा वज़ीर	मेरे लिए	और बना दे	28	मेरी बात	वह समझ लें	27	मेरी ज़बान	से-की	गिरह
----	------------	----------	-----------	----	----------	------------	----	------------	-------	------

أَهْلِي (٢٩) هُرُونًا أُخَىٰ (٣٠) اشْدُدْ بِهِ أَزْرِي (٣١) وَأَشْرِكُهُ فِي أَمْرِي (٣٢)

32	मेरे काम में	और शरीक कर दे	31	मेरी कुव्वत	मज़बूत कर उस से	30	मेरा भाई	हारून (अ)	29	खानदान
----	--------------	---------------	----	-------------	-----------------	----	----------	-----------	----	--------

كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيرًا (٣٣) وَنَذْكُرَكَ كَثِيرًا (٣٤) إِنَّكَ كُنْتَ

तू है	वेशक तू	34	कस्रत से	और तुझे याद करें	33	कस्रत से	हम तेरी तस्वीह करें	ताकि
-------	---------	----	----------	------------------	----	----------	---------------------	------

بِنَا بَصِيرًا (٣٥) قَالَ قَدْ أُوتِيتَ سُؤْلَكَ يُمُوسَىٰ (٣٦) وَلَقَدْ مَنَّا

और तहकीक हम ने एहसान किया	36	ऐ मूसा (अ)	जो तू ने मांगा	तहकीक तुझे दे दिया गया	अल्लाह ने फ़रमाया	35	हमें खूब देखता है
---------------------------	----	------------	----------------	------------------------	-------------------	----	-------------------

عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرَىٰ (٣٧) إِذْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّكَ مَا يُوحَىٰ (٣٨)

38	जो इल्हाम करना था	तेरी वालिदा	तरफ-को	हम ने इल्हाम किया	जब	37	और भी	एक बार	तुझ पर
----	-------------------	-------------	--------	-------------------	----	----	-------	--------	--------

<p>أَنْ أَقْذِفِيهِ فِي السَّابُوتِ فَأَقْذِفِيهِ فِي الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ</p>						
दर्या	फिर उसे डाल देगा	दर्या में	फिर उसे डाल दे	सन्दूक में	कि तू उसे डाल	
<p>بِالسَّاحِلِ يَأْخُذُهُ عَدُوٌّ لِّي وَعَدُوٌّ لَهُ وَالْقَيْثُ عَلَيْكَ مَحَبَّةٌ</p>						
मुहब्बत	तुझ पर	और मैं ने डाल दी	और उस का दुश्मन	मेरा दुश्मन	उसे ले लेगा	साहिल पर
<p>مِّنِّيَّ وَلِصَّنْعِ عَلَى عَيْنِي (39) إِذْ تَمْشِي أَحْتِكُ فَتَقُولُ</p>						
तो वह कह रही थी	तरी बहन	जा रही थी	जब	39 मेरी आँखों पर (मेरे सामने)	ताकि तू पर्वरिश पाए	अपनी तरफ से
<p>هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ مَنْ يَكْفُلُهُ فَرَجَعْنَا إِلَىٰ أُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا</p>						
उस की आँख	ताकि ठंडी हो	तेरी माँ	तरफ	पस हम ने तुझे लौटा दिया	उस की पर्वरिश करे	जो पर क्या मैं तुम्हें बताऊँ
<p>وَلَا تَحْزَنْهُ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنَاكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنَّاكَ</p>						
और तुझे आजमाया	ग़म से	तो हम ने तुझे नजात दी	एक शख्स	और तू ने कत्ल कर दिया	और वह ग़म न करे	
<p>فُتُونًا فَلَبِثْتَ سِنِينَ فِي أَهْلِ مَدْيَنَ ثُمَّ جِئْتَ عَلَىٰ قَدَرٍ</p>						
वक़ते मुक़र्रर पर	तू आया	फिर	मदयन वाले	में	कई साल	कई आज़माइशों
<p>يُمُوسَىٰ (40) وَاصْطَنَعْتَنِي لِنَفْسِي (41) إِذْ هَبْتَ أَنْتَ وَأَخُوكَ بِآيَتِي</p>						
मेरी निशानियों के साथ	और तेरा भाई	तू	तू जा	41 खास अपने लिए	और हम ने तुझे बनाया	40 ऐ मूसा (अ)
<p>وَلَا تَنِيَا فِي ذِكْرِي (42) إِذْ هَبَّا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ (43) فَقَوْلًا لَهُ</p>						
उस को	तुम कहो	43 सरकश हो गया	वेशक वह	फिरऔन	तरफ-पास	तुम दोनों जाओ
<p>قَوْلًا لِّيْنَا لَعَلَّهُ يَتَذَكَّرُ أَوْ يَحْشَىٰ (44) قَالَا رَبَّنَا إِنَّا نَخَافُ</p>						
वेशक हम डरते हैं	ऐ हमारे रब	दोनों बोले	44	वह डर जाए	या	नसीहत पकड़ ले
<p>أَنْ يَفْرُطَ عَلَيْنَا أَوْ أَنْ يَطْغَىٰ (45) قَالَ لَا تَخَافَا إِنِّي مَعَكُمْ أَسْمَعُ</p>						
मैं सुनता हूँ	तुम्हारे साथ हूँ	वेशक मैं	तुम डरो नहीं	उस ने फरमाया	45	वह हद स बढ़े
<p>وَأَرَىٰ (46) فَاتِيَهُ فَقَوْلًا إِنَّا رَسُولُ رَبِّكَ فَأَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ</p>						
बनी इस्राईल	हमारे साथ	पस भेज दे	तेरा रब	वेशक हम दोनों भेजे हुए	और तुम कहो	पस जाओ उस के पास
<p>وَلَا تُعَذِّبْهُمْ قَدْ جِئْنَاكَ بِآيَةٍ مِّنْ رَبِّكَ وَالسَّلَامُ</p>						
और सलाम	तेरा रब	से	निशानी के साथ	हम तेरे पास आए हैं	और उन्हें अज़ाब न दे	
<p>عَلَىٰ مَنْ اتَّبَعَ الْهُدَىٰ (47) إِنَّا قَدْ أُوحِيَ إِلَيْنَا أَنَّ الْعَذَابَ عَلَىٰ</p>						
पर	अज़ाब	कि	हमारी तरफ	वहि की गई	वेशक	47
<p>مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ (48) قَالَ فَمَنْ رَبُّكُمْ يُمُوسَىٰ (49) قَالَ رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَىٰ</p>						
अता की	जिस ने	हमारा रब	उस ने कहा	49	ऐ मूसा (अ)	तुम्हारा रब
<p>كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهُ ثُمَّ هَدَىٰ (50) قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُونِ الْأُولَىٰ (51)</p>						
51	पहली	जमाअतें	हाल	फिर कया	उस ने कहा	50

कि तू उसे सन्दूक में डाल, फिर सन्दूक दर्या में डाल दे, फिर डाल देगा दर्या उसे साहिल पर, मेरा और उस का दुश्मन उस को ले लेगा (दर्या से निकाल लेगा) और मैं ने डाल दी तुझे पर मुहब्बत अपनी तरफ से (मख़लूक तुझे से मुहब्बत करे) ताकि तू पर्वरिश पाए मेरे सामने। (39) और (याद कर) जब तेरी बहन जा रही थी तो (आले फिरऔन से) कह रही थी कि क्या मैं तुम्हें (उस का पता) बताऊँ जो इस की पर्वरिश करे? पस हम ने तुझे तेरी माँ की तरफ लौटा दिया, ताकि उस की आँखें ठंडी हों, और वह ग़म न करे, और तू ने एक शख्स को कत्ल कर दिया तो हम ने तुझे नजात दी ग़म से, और तुझे कई आज़माइशों से आजमाया, फिर कई साल मदयन वालों में ठहरा रहा, फिर तू आया वक़ते मुक़र्रर पर ऐ मूसा (अ) (मुताबिक़ तक्दीरे इलाही)। (40) और मैं ने तुझे खास अपने लिए बनाया। (41) तुम और तुम्हारा भाई दोनों जाओ मेरी निशानियों के साथ, और सुस्ती न करना मेरी याद में। (42) तुम दोनों फिरऔन के पास जाओ, वेशक वह सरकश हो गया है। (43) तुम उस को नर्म बात कहो शायद वह नसीहत पकड़ ले या डर जाए। (44) वह बोले, ऐ हमारे रब! वेशक हम डरते हैं कि (कहीं) वह हम पर ज़ियादती (न) करे या हद से (न) बढ़े। (45) उस ने फरमाया तुम डरो नहीं, वेशक मैं तुम्हारे साथ हूँ, मैं सुनता और देखता हूँ। (46) पस उस के पास जाओ और कहो वेशक हम दोनों भेजे हुए हैं तेरे रब के, पस बनी इस्राईल को हमारे साथ भेज दे और उन्हें अज़ाब न दे, हम तेरे पास तेरे रब की निशानी के साथ आए हैं, और सलाम हो उस पर जिस ने हिदायत की पैरवी की। (47) वेशक हमारी तरफ वहि की गई है कि अज़ाब है उस पर जिस ने झुटलाया और मुंह फेरा। (48) उस ने कहा ऐ मूसा (अ)! पस तुम्हारा रब कौन है? (49) मूसा (अ) ने कहा हमारा रब वह है जिस ने हर चीज़ को उस की शकल ओ सूरत अता की फिर उस की रहनुमाई की। (50) उस ने कहा फिर पहली जमाअतों का क्या हाल है? (51)

मूसा (अ) ने कहा उस का इल्म मेरे रब के पास किताब में है, मेरा रब न गलती करता है, और न भूलता है। (52)

वह जिस ने ज़मीन को तुम्हारे लिए बिछौना बनाया, और तुम्हारे लिए चलाई उस में राहें, और आस्मान से पानी उतारा, फिर हम ने उस से सबज़ी की सुख्तलिफ़ अक्साम निकाली। (53)

तुम खाओ और अपने मवेशी चराओ, बेशक उस में अक्ल वालों के लिए निशानियां हैं। (54)

उस (ज़मीन) से हम ने तुम्हें पैदा किया और उसी में हम तुम्हें लौटा देंगे, और उसी से हम तुम्हें दूसरी बार निकालेंगे। (55)

और हम ने उसे (फ़िरज़ौन) को अपनी तमाम निशानियां दिखाई तो उस ने झुटलाया और इन्कार किया। (56)

उस ने कहा ऐ मूसा (अ)! क्या तू हमारे पास आया है कि तू हमें अपने जादू के ज़रीए हमारी ज़मीन (मुल्क से) निकाल दे। (57)

पस हम तेरे मुकाबल ज़रूर लाएंगे उस जैसा एक जादू, पस हमारे और अपने दरमियान एक वक़्त मुक़र्रर कर ले कि न हम उस के खिलाफ़ करें और न तू, एक हमवार मैदान (में मुकाबला होगा)। (58)

मूसा (अ) ने कहा तुम्हारा वादा मेले का दिन है और यह कि लोग दिन चढ़े जमा किए जाएं। (59)

फिर लौट गया फ़िरज़ौन, सो उस ने अपना दाओ (जादू का सामान) जमा किया, फिर आया। (60)

मूसा (अ) ने उन से कहा तुम पर ख़राबी हो, अल्लाह पर न घड़ो झूट कि वह तुम्हें अज़ाब से हलाक करदे, और जिस ने झूट बान्धा वह नामुराद हुआ। (61)

तो वह बाहम अपने काम में झगड़ने लगे और उन्होंने ने छुप कर मशवरा किया। (62)

वह कहने लगे तहकीक़ यह दोनों जादूगर हैं, यह चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारी सर ज़मीन से निकाल दें अपने जादू के ज़रीए, और तुम्हारा अच्छा तरीका ले जाएं (नावूद कर दें)। (63)

लिहाज़ा अपने दाओ इकट्ठे कर लो, फिर सफ़ बान्ध कर आओ, और तहकीक़ कामयाब होगा वही जो आज ग़ालिब रहा। (64)

वह बोले ऐ मूसा (अ)! या तो (पहले अपना दाओ) डाल या हम पहले डालें। (65)

قَالَ عَلِمَهَا عِنْدَ رَبِّي فِي كِتَابٍ لَا يَضِلُّ رَبِّي وَلَا يَنْسَى (٥٢)

52	और न वह भूलता है	मेरा रब	वह न गलती करता है	किताब में	मेरा रब	पास	उस का इल्म	उस ने कहा
----	------------------	---------	-------------------	-----------	---------	-----	------------	-----------

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَسَلَكَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا

राहें	उस में	तुम्हारे लिए	और चलाई	बिछौना	ज़मीन	तुम्हारे लिए	बनाया	वह जिस ने
-------	--------	--------------	---------	--------	-------	--------------	-------	-----------

وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ شَتَّى (٥٣)

53	सुख्तलिफ़	सब्ज़ी	से	जोड़े (अक्साम)	उस से	फिर हम ने निकाले	पानी	आस्मान	से	और उतारा
----	-----------	--------	----	----------------	-------	------------------	------	--------	----	----------

كُلُوا وَارْعَوْا أَنْعَامَكُمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِأُولِي النُّهَى (٥٤) مِنْهَا

उस से	54	अक्ल वालों के लिए	निशानियां	उस में	बेशक	अपने मवेशी	और चराओ	तुम खाओ
-------	----	-------------------	-----------	--------	------	------------	---------	---------

خَلَقْنَاهُمْ وَفِيهَا نُعِيدُهُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُهُمْ تَارَةً أُخْرَى (٥٥) وَلَقَدْ آرَيْنَاهُ

और हम ने उसे दिखाई	55	दूसरी बार	हम निकालेंगे तुम्हें	और उस से	हम लौटा देंगे तुम्हें	और उस में	हम ने तुम्हें पैदा किया
--------------------	----	-----------	----------------------	----------	-----------------------	-----------	-------------------------

آيَاتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَأَبَى (٥٦) قَالَ أَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ أَرْضِنَا

हमारी ज़मीन से	कि तू निकाल दे हमें	क्या तू आया हमारे पास	उस ने कहा	56	तो उस ने झुटलाया और इन्कार किया	तमाम	अपनी निशानियां
----------------	---------------------	-----------------------	-----------	----	---------------------------------	------	----------------

بِسِحْرِكَ يَمْؤُسَى (٥٧) فَلَنَأْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهِ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ

और अपने दरमियान	हमारे दरमियान	पस मुक़र्रर कर	उस जैसा	एक जादू	पस ज़रूर हम तेरे मुकाबल लाएंगे	57	ऐ मूसा (अ)	अपने जादू के ज़रीए
-----------------	---------------	----------------	---------	---------	--------------------------------	----	------------	--------------------

مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهُ نَحْنُ وَلَا أَنْتَ مَكَانًا سُوًى (٥٨) قَالَ مَوْعِدُكُمْ

तुम्हारा वादा	उस ने कहा	58	एक हमवार मैदान	तू	और न	हम	हम उस के खिलाफ़ न करें	एक वादा (वक़्त)
---------------	-----------	----	----------------	----	------	----	------------------------	-----------------

يَوْمَ الزَّيْنَةِ وَأَنْ يُحَشِّرَ النَّاسَ صُحًى (٥٩) فَتَوَلَّى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ

उस ने जमा किया	फिरज़ौन	फिर लौट गया	59	दिन चढ़े	लोग	जमा किए जाएं	और यह कि	ज़ीनत (मेले) का दिन
----------------	---------	-------------	----	----------	-----	--------------	----------	---------------------

كَيْدَهُ ثُمَّ أَتَى (٦٠) قَالَ لَهُمْ مُوسَى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوا عَلَيَّ اللَّهُ كَذِبًا

झूट	अल्लाह पर	न घड़ो	खराबी तुम पर	मूसा (अ)	उन से	उस ने कहा	60	फिर वह आया	अपना दाओ
-----	-----------	--------	--------------	----------	-------	-----------	----	------------	----------

فَيُسْحِتْكُمْ بِعَذَابٍ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرَى (٦١) فَتَنَازَعُوا أَمْرَهُمْ

अपने काम में	तो वह झगड़ने लगे	61	जिस ने झूट बान्धा	और वह नामुराद हुआ	अज़ाब से	कि वह हलाक करदे तुम्हें
--------------	------------------	----	-------------------	-------------------	----------	-------------------------

بَيْنَهُمْ وَأَسْرَوْا النَّجْوَى (٦٢) قَالُوا إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ يُرِيدُنَا

यह चाहते हैं	अलवत्ता जादूगर	यह दोनों	तहकीक़	वह कहने लगे	62	मशवरा	और उन्होंने ने छुप कर किया	बाहम
--------------	----------------	----------	--------	-------------	----	-------	----------------------------	------

أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيقَتِكُمُ الْمُثْلَى (٦٣)

63	अच्छा	तुम्हारा तरीका	और वह लेजाएं	अपने जादू के ज़रीए	तुम्हारी सर ज़मीन	से	कि तुम्हें निकाल दें
----	-------	----------------	--------------	--------------------	-------------------	----	----------------------

فَاجْمِعُوا كَيْدَكُمْ ثُمَّ اتُّوْا صَفًّا وَقَدْ أَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلَى (٦٤)

64	ग़ालिब रहा	जो	आज	और तहकीक़ कामयाब होगा	सफ़ बान्ध कर	फिर तुम आओ	अपने दाओ	लिहाज़ा इकट्ठे कर लो तुम
----	------------	----	----	-----------------------	--------------	------------	----------	--------------------------

قَالُوا يَمْؤُسَى إِمَّا أَنْ تُلْقَى وَإِمَّا أَنْ تَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَلْقَى (٦٥)

65	डालें	जो	पहले	यह कि हम हों	और या	यह कि तू डाले	या तो	ऐ मूसा (अ)	वह बोले
----	-------	----	------	--------------	-------	---------------	-------	------------	---------

قَالَ بَلْ أَلْقَوَا فَاذًا حِبَالَهُمْ وَعَصِيئُهُمْ يُخَيِّلُ إِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ										
उन का जादू	से	उस के	खयाल में आई	और उन की लाठियां	उन की रससियां	तो नागहां	तुम डालो	बल्कि	उस ने कहा	
أَنَّهَا تَسْعَى ۖ فَارْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُوسَى ۖ قُلْنَا لَا تَخَفْ										
तुम डरो नहीं	हम ने कहा	67	मूसा (अ)	कुछ खौफ	अपने दिल में	तो पाया (महसूस किया)	66	दौड़ रही है	कि वह	
إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلَى ۖ وَأَلْقِ مَا فِي يَمِينِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوا ۗ إِنَّمَا										
वेशक	जा उन्होंने ने बनाया	वह निगल जाएगा	तुम्हारे दाएं हाथ में	जो	और डालो	68	गालिव	तुम ही	वेशक तुम	
صَنَعُوا كَيْدَ سِحْرٍ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَى ۖ فَالْقَى السَّحْرَةَ										
जादूगर	पस डाल दिए गए	69	वह आए	जहां (कहीं)	जादूगर	और कामयाब नहीं होगा	जादूगर	फरेव	उन्होंने ने बनाया	
سُجَّدًا قَالُوا أَمَّا بَرَبٌ هُرُونٌ وَمُوسَى ۖ قَالَ أَمْنْتُمْ لَهُ قَبْلَ										
पहले	उस पर	तुम ईमान लाए	उस ने कहा	70	और मूसा (अ)	हारून (अ)	रब पर	हम ईमान लाए	वह बोले	सिज्दे में
أَنْ أَدَانَ لَكُمْ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۖ فَلَا قَطْعَانَ										
पस मैं ज़रूर काटूंगा	जादू	तुम्हें सिखाया	वह जिस ने	तुम्हारा बड़ा	वेशक वह	तुम्हें	कि मैं इजाज़त दूँ			
أَيْدِيكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ خِلَافٍ وَلَا وَصَلْبَتَكُمْ فِي جُذُوعِ النَّخْلِ										
खजूर के तने	में-पर	और मैं तुम्हें ज़रूर सूली दूँगा	दूसरी तरफ से	और तुम्हारे पाऊँ	तुम्हारे हाथ					
وَلَتَعْلَمَنَّ أَيُّنَا أَشَدُّ عَذَابًا وَأَبْقَى ۖ قَالُوا لَنْ نُؤْتِرَكَ عَلَى										
पर	हम हरगिज़ तुझे तरजीह न देंगे	उन्होंने ने कहा	71	और ता देर रहने वाला	अज़ाब में	ज़ियादा सख्त	हम में कौन	और तुम खूब जान लोगे		
مَا جَاءَنَا مِنَ الْبَيْتِ وَالَّذِي فَطَرْنَا فَاقْضِ مَا أَنْتَ قَاضٍ										
करने वाला	तू	जो	पस तू कर गुज़र	और वह जिस ने हमें पैदा किया	वाज़ेह दलाइल से	जो हमारे पास आए				
إِنَّمَا تَقْضِي هَذِهِ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۖ إِنَّا آمَنَّا بِرَبِّنَا لِنَغْفِرَ لَنَا										
कि वह बख़्शदे हमें	अपने रब पर	वेशक हम ईमान लाए	72	दुनिया की ज़िन्दगी	इस	तू करे गा	उस के सिवा नहीं			
خَطِينًا وَمَا أَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ۖ وَاللَّهُ خَيْرٌ وَأَبْقَى ۖ										
73	बेहतर और हमेशा बाकी रहने वाला	और अल्लाह	जादू	से	उस पर	तू ने हमें मजबूर किया	और जो	हमारी ख़ताएं		
إِنَّهُ مِنْ يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ جَهَنَّمَ لَا يَمُوتُ فِيهَا										
उस में	न वह मरेगा	जहन्नम	उस के लिए	तो वेशक	मुज़रिम बन कर	अपने रब के सामने	जो आया	वेशक वह		
وَلَا يَحْيَى ۖ وَمَنْ يَأْتِهِ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصَّالِحَاتِ فَأُولَٰئِكَ										
पस यही लोग	अच्छे	उस ने अमल किए	मोमिन बन कर	उस के पास आया	और जो	74	और न जिएगा			
لَهُمُ الدَّرَجَاتُ الْعُلَى ۖ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا										
उन के नीचे	जारी हैं	हमेशा रहने वाले	बागात	75	बुलन्द	दरजे	उन के लिए			
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ وَذَٰلِكَ جَزَاؤُا مَنْ تَزَكَّى ۖ										
76	जो पाक हुआ	जज़ा है	और यह	उस में	हमेशा रहेंगे	नहरें				

उस ने कहा (नहीं) बल्कि तुम डालो, तो नागहां उन की रससियां और उन की लाठियां उस (मूसा अ) के खयाल में आई (ऐसे नमूदार हुईं) उन के जादू से कि गोया वह दौड़ रही है। (66)

तो मूसा (अ) ने अपने दिल में कुछ खौफ महसूस किया। (67) हम ने कहा तुम डरो नहीं, वेशक तुम ही गालिव रहोगे। (68)

और जो तुम्हारे दाएं हाथ में है डालो वह निगल जाएगा जो कुछ उन्होंने ने बनाया है, वेशक (जो कुछ) उन्होंने ने बनाया है वह जादूगर का फरेव है, और जादूगर किसी शान से आए वह कामयाब नहीं होता। (69)

पस जादूगर सिज्दे में डाल दिए गए (गिर पड़े) वह बोले हम हारून (अ) और मूसा (अ) के रब पर ईमान लाए। (70)

फिरऔन ने कहा तुम उस पर ईमान ले आए (इस से) पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ, वेशक वह (मूसा अ) तुम्हारा बड़ा है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया है, पस मैं ज़रूर काट डालूंगा तुम्हारे हाथ पाऊँ

(जानिव) खिलाफ से (एक तरफ का हाथ दूसरी तरफ का पाऊँ) और मैं ज़रूर तुम्हें खजूर के तनों पर सूली दूँगा, और तुम खूब जान लोगे कि हम दोनों में से किस का अज़ाब ज़ियादा सख्त और देर पा है। (71)

उन्होंने ने कहा हम तुझे हरगिज़ तरजीह न देंगे उन वाज़ेह दलाइल से जो हमारे पास आए हैं और उस पर जिस ने हमें पैदा किया है, पस तू कर गुज़र जो तू करने वाला है, उस के सिवा नहीं कि तू (सिर्फ) इस दुनिया की ज़िन्दगी में करेगा। (72)

वेशक हम अपने रब पर ईमान लाए कि वह हमारी ख़ताएं बख़्शदे और उस पर जो तू ने हमें जादू के लिए मजबूर किया, और अल्लाह बेहतर है और हमेशा बाकी रहने वाला है। (73)

वेशक वह, जो अपने रब के सामने आया मुज़रिम बन कर तो वेशक उस के लिए जहन्नम है, न वह उस में मरेगा और न जिएगा। (74)

और जो उस के पास मोमिन बन कर आया और उस ने अच्छे अमल किए, पस यही लोग हैं जिन के लिए दरजे बुलन्द हैं। (75)

हमेशा रहने वाले बागात, जारी हैं उन के नीचे नहरें, उन में हमेशा रहेंगे, और यह जज़ा है (उस की) जो पाक हुआ। (76)

और तहकीक हम ने वहि की मूसा (अ) को कि रातों रात मेरे बन्दों को (निकाल) ले जा, उन के लिए दर्या में (असा मार कर) खशक रास्ता बना लेना, न तुझे पकड़ने का खौफ होगा और न (गर्क होने का) डर होगा। (77)

फिर फिरऔन ने अपने लशकर के साथ उन का पीछा किया तो उन्हें दर्या (की मौजों) ने ढांप लिया, जैसा कि ढांप लिया (विलकुल गर्क कर दिया)। (78)

और फिरऔन ने अपनी कौम को गुमराह किया और हिदायत न दी। (79)

ऐ बनी इस्राईल (औलादे याकूब)! तहकीक हम ने तुम्हारे दुश्मन से तुम्हें नजात दी और कोहे तूर के दाएं जानिब तुम से (तौरत अता करने का) वादा किया और हम ने तुम पर उतारा “मन्न” और “सलवा”। (80)

जो हम ने तुम्हें दिया उस में से पाकीज़ा चीज़े खाओ, और उस में सरकशी न करो कि तुम पर उतरे मेरा ग़ज़ब, और जिस पर मेरा ग़ज़ब उतरा वह नीस्त ओ नाबूद हुआ। (81)

और वेशक मैं बड़ा बख़्शने वाला हूँ उस को जिस ने तौबा की, और वह ईमान लाया और उस ने अमल किया नेक, फिर हिदायत पर रहा। (82)

और ऐ मूसा (अ)! और क्या चीज़ तुझे अपनी कौम से जल्द लाई (क्यों जल्दी की)? (83)

उस ने कहा वह मेरे पीछे (आ ही रहे) हैं, मैं ने तेरी तरफ़ (आने में) जल्दी की ताकि तू राज़ी हो। (84)

उस ने कहा पस हम ने तहकीक तेरी कौम को आज़माइश में डाला, और उन्हें सामरी ने गुमराह किया। (85)

पस मूसा (अ) अपनी कौम की तरफ़ लौटे, गुस्से में भरे हुए, अफ़सोस करते हुए, कहा ऐ मेरी कौम! क्या तुम से तुम्हारे रब ने अच्छा वादा नहीं किया था? क्या तवील हो गई तुम पर (मेरी जुदाई की) मुदत? या तुम ने चाहा कि तुम पर तुम्हारे रब का ग़ज़ब उतरे? फिर तुम ने खिलाफ़ किया मेरे वादे के (वादा खिलाफ़ी की)। (86)

وَلَقَدْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنِ اسْرِ بِعِبَادِي فَاصْرِبْ								
पस बना लेना	मेरे बन्दे	कि रातों रात लेजा	मूसा (अ)	तरफ-को	और तहकीक हम ने वहि की			
لَهُمْ طَرِيقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا لَا تَخَفُ دَرَكًا وَلَا نَخْشَىٰ (٧٧)								
77	और न डर	पकड़ना	खौफ होगा	न	खशक	दर्या में	रास्ता	उन के लिए
فَاتَّبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُودِهِ فَعَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ (٧٨)								
78	जैसा कि उन को ढांप लिया	दर्या से	उन्हें ढांप लिया	अपने लशकर के साथ	फिरऔन	फिर उन का पीछा किया		
وَأَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهُ وَمَا هَدَىٰ (٧٩) يَبْنِي إِسْرَائِيلَ قَدْ								
तहकीक	ऐ बनी इस्राईल	79	और न हिदायत दी	अपनी कौम	फिरऔन	और गुमराह किया		
أَنْجَيْنُكُمْ مِّنْ عَذَابِكُمْ وَوَعَدْنَكُمْ جَانِبَ الطُّورِ الْأَيْمَنِ								
दाएं	कोहे तूर	जानिब	और हम ने तुम से वादा किया	तुम्हारा दुश्मन	से	हम ने तुम्हें नजात दी		
وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّٰ وَالسَّلْوَىٰ (٨٠) كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ								
पाकीज़ा चीज़ें	से	तुम खाओ	80	और सलवा	मन्न	तुम पर	और हम ने उतारा	
مَا رَزَقْنٰكُمْ وَلَا تَطْعَمُوا فِيهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِي وَمَنْ								
और जो	मेरा ग़ज़ब	तुम पर	कि उतरेगा	उस में	और न सरकशी करो	जो हम ने तुम्हें दिया		
يَحِلُّ عَلَيْهِ غَضَبِي فَقَدْ هَوَىٰ (٨١) وَإِنِّي لَغَفَّارٌ لِّمَنْ								
उस को जो	बड़ा बख़्शने वाला	और वेशक मैं	81	तो वह गिरा (नीस्त ओ नाबूद हुआ)	मेरा ग़ज़ब	उस पर	उतरा	
تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدَىٰ (٨٢) وَمَا أَعْجَلَكَ								
तुझे जल्द लाई	और क्या (चीज़)	82	हिदायत पर रहा	फिर	नेक	और उस ने अमल किया	और वह ईमान लाया	तौबा की
عَنْ قَوْمِكَ يَمُوسَىٰ (٨٣) قَالَ هُمْ أَوْلَاءُ عَلَىٰ أَثَرِي								
मेरे पीछे	यह है	वह	उस ने कहा	83	ऐ मूसा (अ)	अपनी कौम से		
وَعَجِلْتُ إِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضَىٰ (٨٤) قَالَ فَإِنَّا قَدْ فَتَنَّا								
आज़माइश में डाला	तहकीक	पस हम ने	उस ने कहा	84	ताकि तू राज़ी हो	ऐ मेरे रब	तेरी तरफ़	और मैं ने जल्दी की
قَوْمَكَ مِنْ بَعْدِكَ وَأَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ (٨٥) فَرَجَعَ								
पस लौटा	85	सामरी	और उन्हें गुमराह किया	तेरे वादे		तेरी कौम		
مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا قَالَ يَقَوْمِ أَلَمْ يَعِدْكُمْ								
क्या तुम से वादा नहीं किया था	ऐ मेरी कौम	उस ने कहा	अफ़सोस करता	गुस्से में भरा हुआ	अपनी कौम की तरफ़	मूसा (अ)		
رُبُّكُمْ وَعَدًّا حَسَنًا أَفَطَانَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ أَمْ أَرَدْتُمْ								
या तुम ने चाहा	मुदत	तुम पर	क्या तवील हो गई	अच्छा वादा		तुम्हारा रब		
أَنْ يَّحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَخْلَفْتُمْ مَّوْعِدِي (٨٦)								
86	मेरा वादा	फिर तुम ने खिलाफ़ किया	तुम्हारा रब	से-का	ग़ज़ब	तुम पर	कि उतरे	



قَالُوا مَا أَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلَكِنَا وَلَكِنَّا حَمَلْنَا أُوزَارًا مِّنْ							
से-का	बोझ	हम पर लादा गया	और लेकिन (बल्कि)	अपने इख्तियार से	तुम्हारा वादा	हम ने खिलाफ नहीं किया	वह बोले
زِينَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنَاهَا فَكَذَلِكَ أَلْقَى السَّامِرِيُّ ﴿٨٧﴾ فَأَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا							
एक बछड़ा	उन के लिए	फिर उस ने निकाला	87	सामरी	डाला	फिर उसी तरह	तो हम ने उसे डाल दिया
كَيْسًا لَهُ خُورًا فَقَالُوا هَذَا إِلَهُكُمْ وَإِلَهُ مُوسَىٰ ۗ فَنَسِيَ ﴿٨٨﴾							
88	फिर वह भूल गया	मूसा (अ)	और माबूद	तुम्हारा माबूद	यह	फिर उन्होंने ने कहा	गाय की आवाज़
أَفَلَا يَرَوْنَ إِلَّا يَرْجِعُ إِلَيْهِمْ قَوْلًا ۖ وَلَا يَمْلِكُ لَهُمْ صَرًّا وَلَا نَفْعًا ﴿٨٩﴾							
89	और न नफा	तुक्सान	उन के	और इख्तियार नहीं रखता	वात (जवाब)	उन की तरफ	कि वह नहीं फेरता
وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هُرُونُ مِن قَبْلُ يَقَوْمِ إِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهِ وَإِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمَنُ فَاتَّبِعُونِي وَأَطِيعُوا أَمْرِي ﴿٩٠﴾ قَالُوا لَنْ نَبْرَحَ							
और बेशक	इस से	तुम आजमाए गए	इस के सिवा नहीं	ऐ मेरी कौम	उस से पहले	हारून (अ)	उन से
عَلَيْهِ عَكْفِينَ حَتَّىٰ يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوسَىٰ ﴿٩١﴾ قَالَ يَهُرُونَ							
हम हरगिज़ जुदा न होंगे	उन्होंने ने कहा	90	मेरी बात	और इताअत करो (मानो)	सो मेरी पैरवी करो	रहमान है	तुम्हारा रव
مَا مَنَعَكَ إِذْ رَأَيْتَهُمْ ضَلُّوا ﴿٩٢﴾ إِلَّا تَتَّبِعَنِ أَفَعَصَيْتَ أَمْرِي ﴿٩٣﴾							
93	मेरा यह हुकम	तो क्या तू ने नाफरमानी की	कि तू न मेरी पैरवी करे	92	वह गुमराह हो गए	तू ने देखा उन्हें	जब
قَالَ يَبْنَؤُمْ لَا تَأْخُذْ بِلِحْيَتِي وَلَا بِرَأْسِي ۗ إِنِّي خَشِيتُ							
डरा	बेशक मैं	और न सर से	मुझे दाढ़ी से	न पकड़ें	ऐ मेरे माँ जाए	उस ने कहा	
أَنْ تَقُولَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِي ﴿٩٤﴾ قَالَ							
उस ने कहा	94	मेरी बात	और न खयाल रखा	बनी इस्राईल	दरमियान	तू ने तफ़्फ़ीक़ा डाल दिया	कि तुम कहोगे
فَمَا خَطْبُكَ يَا سَامِرِيُّ ﴿٩٥﴾ قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوا بِهِ							
उस को	उन्होंने ने न देखा	वह जो कि	मैं ने देखा	वह बोला	95	ऐ सामरी	तेरा हाल
فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ أَثَرِ الرَّسُولِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذَلِكَ سَوَّلَتْ							
फुसलाया	और इसी तरह	तो मैं ने वह डालदी	रसूल का नक़शे कदम	से	एक मुट्ठी	पस मैं ने मुट्ठी भर ली	
لِي نَفْسِي ﴿٩٦﴾ قَالَ فَادْهَبْ فَإِنَّ لَكَ فِي الْحَيَاةِ أَنْ تَقُولَ لَا							
न	तू कहे	कि	ज़िन्दगी में	बेशक तेरे लिए	पस तू जा	उस ने कहा	96
مِيسَاسٍ ۚ وَإِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهُ ۚ وَانظُرْ إِلَىٰ إِلَهِكَ الَّذِي							
वह जिस	अपने माबूद	तरफ	और देख	हरगिज़ तुझ से खिलाफ न होगा	एक वक़्त मुक़र्रर	तेरे लिए	और बेशक
ظَلَّتْ عَلَيْهِ عَاكِفًا لَّنَحْرِقَتْهُ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهُ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ﴿٩٧﴾							
97	उड़ा कर	दर्या में	फिर अलबत्ता उसे बिखेर देंगे	हम उसे अलबत्ता जलाएंगे	जमा हुआ	उस पर	तू रहता था

वह बोले हम ने अपने इख्तियार से तुम्हारे वादे के खिलाफ नहीं किया, बल्कि हम पर बोझ लादा गया कौम के ज़ेवर का, तो हम ने उसे (आग में) डाल दिया, फिर उसी तरह सामरी ने डाला। (87) फिर उस ने उन के लिए एक बछड़ा निकाला (बनाया), एक मूर्ति जिस में गाय की आवाज़ निकलती थी, फिर उन्होंने ने कहा यह तुम्हारा माबूद है, और मूसा (अ) का माबूद है, वह (मूसा अ) तो भूल गया है। (88) भला क्या वह नहीं देखते? कि वह (बछड़ा) उन की तरफ़ वात नहीं फेरता (उन को जवाब नहीं देता) न उन के तुक्सान का इख्तियार रखता है और न नफा का। (89) और तहकीक़ उन से हारून (अ) ने उस से पहले कहा था कि ऐ मेरी कौम! इस के सिवा नहीं कि तुम इस से आजमाए गए हो और बेशक तुम्हारा रव रहमान है, सो मेरी पैरवी करो और मेरी बात मानो। (90) उन्होंने ने कहा हम हरगिज़ उस से जुदा न होंगे जमे हुए (बैठे रहेंगे) यहां तक कि मूसा (अ) हमारी तरफ लौटे। (91) उस (मूसा अ) ने कहा ऐ हारून (अ)! तुझे किस चीज़ ने रोका जब तू ने देखा कि वह गुमराह हो गए हैं। (92) कि तू न मेरी पैरवी करे? तो क्या तू ने नाफरमानी की मेरे हुकम की? (93) उस ने कहा ऐ मेरे माँ जाए! मुझे दाढ़ी से और न सर (के बालों) से पकड़ें, बेशक मैं डरा कि तुम कहोगे कि तू ने फोट डाल दिया बनी इस्राईल के दरमियान, और मेरी बात का खयाल न रखा। (94) (फिर मूसा अ ने सामरी से) कहा ऐ सामरी! तेरा क्या हाल है? (95) वह बोला मैं ने वह देखा जिस को उन्होंने ने नहीं देखा, पस मैं ने रसूल के नक़शे कदम से एक मुट्ठी भर ली तो मैं ने वह (बछड़े के कालिव में) डाल दी और इसी तरह मेरे नफ़्स ने मुझे फुसलाया। (96) मूसा (अ) ने कहा पस तू जा, बेशक तेरे लिए ज़िन्दगी में (यह सज़ा) है कि तू कहता फिर: न छूना मुझे, और बेशक तेरे लिए एक वक़्त मुक़र्रर है, हरगिज़ तुझ से खिलाफ़ न होगा (न टलेगा), और अपने माबूद की तरफ़ देख जिस पर तू (बैठा) रहता था जमा हुआ, हम उसे अलबत्ता जला देंगे फिर इस (की राख) उड़ा कर दर्या में ज़रूर बिखेर देंगे। (97)

१३

इस के सिवा नहीं कि तुम्हारा माबूद अल्लाह है, वह जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, उस का इल्म हर शौ पर मुहीत है। (98) उसी तरह हम तुम से (वह) अहवाल बयान करते हैं जो गुज़र चुके, और तहकीक हम ने तुम्हें अपने पास से किताबे नसीहत (कुरआन) दिया। (99) जिस ने उस से मुँह फेरा वह बेशक लादेगा कियामत के दिन भारी बोझ। (100) वह उस में हमेशा रहेंगे, और बुरा है उन के लिए कियामत के दिन का बोझ। (101) जिस दिन सूर में फूंक मारी जाएगी, और हम मुज्रीमों को इकटठा करंगे उस दिन (उन की) आँखें नीली (बे नूर होंगी)। (102) आपस में आहिस्ता आहिस्ता कहेंगे तुम (दुनिया में) सिर्फ दस दिन रहे हो। (103) वह जो कहते हैं हम खूब जानते हैं जब उन का सब से अच्छी राह वाला (होशमन्द) कहेगा तुम सिर्फ एक दिन रहे हो। (104) और वह आप (स) से पहाड़ों के बारे में दर्याफ्त करते हैं, तो आप (स) कह दें मेरा रब उन्हें उड़ा कर बिखेर देगा। (105) फिर उसे (ज़मीन को) एक हमवार मैदान कर छोड़ेगा। (106) और तू न देखेगा उस में कोई कजी (नाहमवारी) और न कोई बुलन्दी। (107) उस दिन सब पीछे चलेंगे एक पुकारने वाले के, उस के लिए कोई कजी न होगी और अल्लाह के सामने आवाज़ें पस्त हों जाएंगी, वस तू सिर्फ पस्त आवाज़ सुनेगा। (108) उस दिन कोई शफ़ाअत नफ़ा न देगी मगर जिस को अल्लाह इजाज़त दे, और उस की बात पसंद करे। (109) वह जानता है जो कुछ उन के आगे और उन के पीछे है, और वह (अपने इल्म में) उस का अहाता नहीं कर सकते। (110) और चेहरे झुक जाएंगे “हैय ओ क्यूम” (ज़िन्दा काइम) के सामने, और नामुराद हुआ वह जिस ने जुल्म का बोझ उठाया। (111) और जो कोई नेकी करे, बशर्त यह कि वह मोमिन हो तो न उसे किसी जुल्म का ख़ौफ़ होगा और न किसी नुक़सान का। (112) और उसी तरह हम ने उस पर कुरआन नाज़िल किया अरबी में और हम ने उस में तरह तरह से डरावे बयान किए ताकि वह परहेज़गार हो जाए या वह उन के लिए कोई नसीहत पैदा कर दे। (113)

إِنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا (٩٨)										
98	इल्म	हर शौ	वसीअ (मुहीत है)	उस के सिवा	कोई माबूद	नहीं	वह जो	अल्लाह	तुम्हारा माबूद	इस के सिवा नहीं
كَذَلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ مَا قَدْ سَبَقَ وَقَدْ آتَيْنَكَ مِنْ لَدُنَّا										
अपने पास से	और तहकीक हम ने तुम्हें दिया	गुज़र चुका	जो	खबरें अहवाल	से	तुझ पर - से	हम बयान करते हैं	इसी तरह		
ذِكْرًا (٩٩) مَنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وِزْرًا (١٠٠) خُلِدِينَ										
वह हमेशा रहेंगे	100 (भारी) बोझ	कियामत के दिन	लादेगा	तो बेशक वह	उस से	मुँह फेरा	जिस	99	(किताबे) नसीहत	
فِيهِ وَسَاءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ حِمْلًا (١٠١) يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ وَنَحْشُرُ										
और हम इकटठा करेंगे	सूर में	फूंक मारी जाएगी	जिस दिन	101	बोझ	कियामत के दिन	उन के लिए	और बुरा है	उस में	
الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا (١٠٢) يَتَخَفَتُونَ بَيْنَهُمْ إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا										
मगर (सिर्फ)	तुम रहे	नहीं	आपस में	आहिस्ता आहिस्ता कहेंगे	102	नीली आँखें	उस दिन	मुज्रीमों को		
عَشْرًا (١٠٣) نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً إِنْ										
नहीं	राह	सब से अच्छी	जब कहेगा	वह कहते हैं	वह जो	खूब जानते हैं	हम	103	दस दिन	
لَبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا (١٠٤) وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا (١٠٥)										
105	उड़ा कर	मेरा रब	उन्हें बिखेर देगा	तो कह दें	पहाड़ के बारे में	और वह आप से दर्याफ्त करेंगे	104	एक दिन	मगर रहे तुम	
فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا (١٠٦) لَا تَرَى فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا (١٠٧) يَوْمَئِذٍ										
उस दिन	107	कोई बुलन्दी	और न	कोई कजी	उस में	न देखेगा तू	106	एक हमवार	मैदान	फिर उसे छोड़ देगा
يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهُ وَخَشَعَتِ الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمَنِ										
रहमान के लिए (सामने)	आवाज़ें	और पस्त होजाएंगी	उस के लिए	नहीं कोई कजी	एक पुकारने वाला	वह सब पीछे चलेंगे				
فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا (١٠٨) يَوْمَئِذٍ لَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ										
इजाज़त दे उस को	जिस	मगर	कोई शफ़ाअत	न नफ़ा देगी	उस दिन	108	आहिस्ता आवाज़	मगर (सिर्फ)	वस तू न सुनेगा	
الرَّحْمَنُ وَرَضِيَ لَهُ قَوْلًا (١٠٩) يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ										
उन के पीछे	और जो	उन के हाथों के दरमियान (आगे)	जो	वह जानता है	109	बात	उस की	और पसन्द करे	रहमान	
وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا (١١٠) وَعَنْتِ الْأُجُودُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ										
“क्यूम”	सामने “हैय”	चेहरे	झुक जाएंगे	110	इल्म के अन्दर	उस का	और वह अहाता नहीं कर सकते			
وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا (١١١) وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ										
मोमिन	और वह	नेकी	से - कोई	करे	और जो	111	जुल्म	बोझ उठाया	जो - जिस	और नामुराद हुआ
فَلَا يَخْفُ ظُلْمًا وَلَا هَضْمًا (١١٢) وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا										
अरबी	कुरआन	हम ने उस पर नाज़िल किया	और उसी तरह	112	और न किसी नुक़सान का	किसी जुल्म का	तो न उसे ख़ौफ़ होगा			
وَصَرَفْنَا فِيهِ مِنَ الْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ أَوْ يُحَدِّثُ لَهُمْ ذِكْرًا (١١٣)										
113	कोई नसीहत	उन के लिए	या वह पैदा करदे	परहेज़गार हो जाएं	ताकि वह	डरावे	से	और हम ने तरह तरह से बयान किए उस में		

فَتَعَلَى اللَّهِ الْمَلِكُ الْحَقُّ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْآنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ							
कि	इस से कब्ल	कुरआन में	जल्दी करो	और न	सच्चा	बादशाह	सो बुलन्द ओ बरतर है अल्लाह
يُقْضَىٰ إِلَيْكَ وَحْيُهُ وَقُلْ رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا ﴿١١٤﴾ وَلَقَدْ عَاهَدْنَا							
और हम ने हुक्म भेजा	114	इल्म	ज़ियादा दे मुझे	ऐ मेरे रब	और कहिए	उस की वहि	तुम्हारी तरफ़
إِلَىٰ آدَمَ مِنْ قَبْلُ فَتَنَسَىٰ وَلَمْ نَجِدْ لَهُ عَزْمًا ﴿١١٥﴾ وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ							
फ़रिशतों को	और (याद करो) जब हम ने कहा	115	पुख़्ता इरादा	उस में	और हम ने न पाया	तो वह भूल गया	आदम की तरफ़
اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ﴿١١٦﴾ فَقُلْنَا يَا آدَمُ إِنَّ هَذَا							
वेशक यह	ऐ आदम (अ)	पस हम ने कहा	116	उस ने इन्कार किया	इब्लिस	सिवाए	तो सब ने सिज्दा किया
عَدُوٌّ لَكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكَ مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقَىٰ ﴿١١٧﴾ إِنَّ							
वेशक	117	फिर तुम मुसीबत में पड़ जाओ	जन्नत से	न निकलवा दे	सो तुम्हें	और तुम्हारी बीबी का	तुम्हारा दुश्मन
لَكَ إِلَّا تَجُوعٌ فِيهَا وَلَا تَعْرِىٰ ﴿١١٨﴾ وَأَنَّكَ لَا تَظْمَأُ فِيهَا وَلَا تَصْحَىٰ ﴿١١٩﴾							
119	और न धूप में रहोगे	इस में	प्यासे रहोगे	न	और यह कि तुम	118	नंगे और न इस में
فَوَسْوَسَ إِلَيْهِ الشَّيْطَانُ قَالَ يَا آدَمُ هَلْ أَدُلُّكَ عَلَىٰ شَجَرَةٍ							
दरख़्त	पर	मैं तेरी रहनुमाई करूँ	क्या	ऐ आदम (अ)	उस ने कहा	शैतान	उस की तरफ़ (दिल में)
الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْئِىٰ ﴿١٢٠﴾ فَأَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتَ لَهُمَا سَوَاتِلُهُمَا							
उन की शर्मगाहें	उन पर	तो ज़ाहिर होगई	उस से	पस दोनों ने खया	120	न पुरानी हो (जवाल पज़ीर न हो)	और बादशाहत
وَطَفِقَا يَخْصِفْنَ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ وَعَصَىٰ آدَمُ رَبَّهُ							
अपना रब	आदम (अ)	और नाफ़रमानी की	जन्नत के पत्ते	से	अपने ऊपर	और वह दोनों लगे जोड़ने (ढांपने)	
فَعَاوَىٰ ﴿١٢١﴾ ثُمَّ اجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدَىٰ ﴿١٢٢﴾ قَالَ اهْبِطَا							
तुम दोनों उतर जाओ	फ़रमाया	122	और उसे राह दिखाई	उस पर	तबज्जुह फ़रमाई	उस का रब	उस को चुन लिया
مِنْهَا جَمِيعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ فَمَا يَأْتِيَنَّكُمْ مِّنِّي هُدًىٰ							
हिदायत	मेरी तरफ़ से	तुम्हारे पास आए	पस अगर	दुश्मन	बाज़ के	तुम में से बाज़	सब यहाँ से
فَمَنْ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقَىٰ ﴿١٢٣﴾ وَمَنْ أَعْرَضَ							
मुँह मोड़ा	और जिस	123	बदबख़्त होगा	और न	तो न वह गुमराह होगा	मेरी हिदायत	पैरवी की
عَنْ ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً ضَنْكًا وَنَحْشُرُهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ							
क़ियामत के दिन	और हम उसे उठाएंगे	तंग	गुज़रान	उस के लिए	तो	मेरे ज़िक्र-नसीहत	से
أَعْمَىٰ ﴿١٢٤﴾ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِي أَعْمَىٰ وَقَدْ كُنْتُ بَصِيرًا ﴿١٢٥﴾							
125	बीना-देखता	और मैं तो था	अन्धा	तू ने मुझे क्यों उठाया	ऐ मेरे रब	वह कहेगा	124
قَالَ كَذَلِكَ أَتَتْكَ آيَاتُنَا فَنَسِيْتَهَا وَكَذَلِكَ الْيَوْمَ تُنْسَىٰ ﴿١٢٦﴾							
126	हम तुझे भुला देंगे	आज	और इसी तरह	तो तू ने उन्हें भुला दिया	हमारी आयात	तेरे पास आई	इसी तरह वह फ़रमाएगा

सो अल्लाह बुलन्द ओ बरतर है सच्चा बादशाह, और तुम कुरआन (पढ़ने) में जल्दी न करो, इस से कब्ल के तुम्हारी तरफ़ पूरी की जाए उस की वहि, और कहिए ऐ मेरे रब! मुझे और ज़ियादा इल्म दे। (114) और हम ने उस से कब्ल आदम (अ) की तरफ़ हुक्म भेजा तो वह भूल गया और हम ने उस में पुख़्ता इरादा न पाया। (115) और याद करो जब हम ने फ़रिशतों से कहा तुम आदम (अ) को सिज्दा करो तो सब ने सिज्दा किया सिवाए इब्लिस के, उस ने इन्कार किया। (116) पस हम ने कहा ऐ आदम (अ)! वेशक यह तुम्हारा और तुम्हारी बीबी का दुश्मन है। सो तुम्हें निकलवा न दे जन्नत से, फिर तुम तकलीफ़ में पड़ जाओ। (117) वेशक तुम्हारे लिए (जन्नत में) यह है कि इस में न भूके रहो, न नंगे। (118) और यह कि तुम न प्यासे रहोगे और न धूप में तपोगे। (119) फिर शैतान ने उस के दिल में वस्वसा डाला, उस ने कहा ऐ आदम (अ)! क्या मैं तेरी रहनुमाई करूँ हमेशगी के दरख़्त पर? और वह बादशाहत जो जवाल पज़ीर न हो? (120) पस उन दोनों ने उसे खा लिया तो उन पर उन की शर्मगाहें ज़ाहिर हो गईं, और अपने (जिस्म के) ऊपर जन्नत के पत्तों से ढांपने लगे, और आदम (अ) ने अपने रब की नाफ़रमानी की तो वह बहक गया। (121) फिर उस को चुन लिया उस के रब ने, फिर उस पर (रहमत से) तबज्जुह फ़रमाई (तौबा कुबूल की) और उसे राह दिखाई। (122) फ़रमाया तुम दोनों यहाँ से उतर जाओ, तुम्हारी (औलाद में से) बाज़ बाज़ के दुश्मन होंगे, पस अगर (जब भी) मेरी तरफ़ से तुम्हारे पास मेरी हिदायत आए तो जिस ने मेरी हिदायत की पैरवी की वह न गुमराह होगा और न बदबख़्त होगा। (123) और जिस ने मेरे ज़िक्र (नसीहत) से मुँह मोड़ा तो वेशक उस की मईशत (गुज़रान) तंग होगी और हम उसे उठाएंगे क़ियामत के दिन अन्धा। (124) वह कहेगा, ऐ मेरे रब! तू ने मुझे अन्धा क्यों उठाया? मैं तो (दुनिया में) बीना (देखता) था। (125) वह फ़रमाएगा इसी तरह तेरे पास हमारी आयात आई तो तू ने उन्हें भुलाया, और इसी तरह आज हम तुझे भुला देंगे। (126)

और इसी तरह हम (उस को) बदला देते हैं जो हद से निकल जाए और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाए, और अलबत्ता आखिरत का अज़ाब शदीद तरीन है और ज़ियादा देर तक रहने वाला है। (127) क्या (उस हकीकत ने भी) उन्हें हिदायत न दी कि उन से क़व्ल हम ने कितनी ही जमाअतें हलाक कर दी, वह चलते फिरते हैं उन के मसाकिन में, अलबत्ता बेशक उस में अक़ल वालों के लिए निशानियां हैं। (128) और अगर तुम्हारे रब की (तरफ़) से एक बात (तै) न हो चुकी होती और मीज़ाद मुकर्रर (न होती) तो अज़ाब ज़रूर (नाज़िल) हो जाता। (129) पस वह जो कहते हैं उस पर सब्द करें, तारीफ़ के साथ अपने रब की तस्वीह करें, (पाकीज़गी) बयान करें तुलूअ-ए-आफ़ताब से पहले, और गुरुवे आफ़ताब से पहले, और कुछ रात की घड़ियों में, पस उस की तस्वीह करें, और किनारे दिन के (दोपहर जुहर के वक़्त) ताकि तुम खुश हो जाओ। (130) और अपनी आँखें (उन चीज़ों की) तरफ़ न फैलाना जो हम ने बरतने को दी है उन के जोड़ों को, दुनिया की ज़िन्दगी की आराइश ओ ज़ेबाइश (बना कर) ताकि हम उस में उन्हें आज़माएँ, और तेरे रब का अतिया बेहतर है और सब से ज़ियादा तादेर रहने वाला है। (131) और तुम अपने घर वालों को नमाज़ का हुक़म दो, और उस पर काइम रहो, हम तुझ से नहीं मांगते रिज़्क (बल्कि) हम तुझे रिज़्क देते हैं और अनज़ाम (बख़ैर) अहले तक्वा के लिए है। (132) और वह कहते हैं हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं लाए अपने रब की तरफ़ से, क्या उन के पास (वह) वाज़ेह निशानी नहीं आई जो पहले सहीफ़ों में है। (133) और अगर हम उन्हें हलाक कर देते (रसूलों के) आने से क़व्ल किसी अज़ाब से तो वह कहते ऐ हमारे रब! तू ने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यों न भेजा? तो हम इस से क़व्ल कि ज़लील और रुस्वा हों हम तेरे अहकाम की पैरवी करते। (134) आप (स) कह दें, सब मुन्तज़िर है, पस तुम (अभी) इन्तिज़ार करो, सो अनक़रीब तुम जान लोगे, कौन है सीधे रास्ते वाले और कौन है जिस ने हिदायत पाई। (135)

وَكذَلِكَ نَجْزِي مَنْ أَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْ بِآيَاتِ رَبِّهِ وَلَعَذَابُ							
और अलबत्ता अज़ाब	अपना रब	आयतों पर	और न ईमान लाए	हद से निकल जाए	जो	हम बदला देते हैं	और इसी तरह
الْآخِرَةِ أَشَدُّ وَأَبْقَى (127) أَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ							
उन से क़व्ल	हम ने हलाक कर दी	कितनी ही	उन्हें	क्या हिदायत न दी	127	और ज़ियादा देर तक रहने वाला है	आखिरत शदीद तरीन
مِنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسْكِنِهِمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِأُولِي النُّهَى (128)							
128	अक़ल वालों के लिए	अलबत्ता निशानियां हैं	उस	में	बेशक	उन के मसाकिन में	वह चलते फिरते हैं
وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَأَجَلٌ مُّسَمًّى (129)							
129	मुकर्रर	और मीज़ाद	अज़ाब	तो ज़रूर आजाता	तुम्हारा रब	से	हो चुकी
فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ							
तुलूअ आफ़ताब	पहले	अपना रब	तारीफ़ के साथ	और तस्वीह करें	जो वह कहते हैं	पर	पस सब्द करें
وَقَبْلَ غُرُوبِهَا وَمِنْ آنَايِ اللَّيْلِ فَسَبِّحْ وَأَطْرَافِ النَّهَارِ							
दिन	और किनारे	पस तस्वीह करें	रात की घड़ियां	और कुछ	उस के गुरुब	और पहले	
لَعَلَّكَ تَرْضَى (130) وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا							
जोड़ें	उस से	जो हम ने बरतने को दिया	तरफ़	अपनी आँखें	और न फैलाना	130	खुश हो जाओ
مِنْهُمْ زَهْرَةَ الدُّنْيَا لِنَفْسِنَهُمْ فِيهِ وَرِزْقُ رَبِّكَ							
तेरा रब	और अतिया	उस में	ताकि हम उन्हें आज़माएँ	दुनिया की ज़िन्दगी	आराइश	उन से-के	
خَيْرٌ وَأَبْقَى (131) وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا							
उस पर	और काइम रहो	नमाज़ का	अपने घर वाले	और हुक़म दो तुम	131	और तादेर रहने वाला	बेहतर
لَا نَسْأَلُكَ رِزْقًا نَحْنُ نَرِزُقُكَ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوَى (132) وَقَالُوا							
और वह कहते हैं	132	अहले तक्वा के लिए	और अनज़ाम	तुझे रिज़्क देते हैं	हम	रिज़्क	हम तुझ से नहीं मांगते
لَوْلَا يَأْتِينَا بِآيَةٍ مِنْ رَبِّهِ أَوَلَمْ تَأْتِهِم بَيِّنَةٌ مَا فِي الصُّحُفِ							
सहीफ़े	में	जो	वाज़ेह निशानी	उन के पास नहीं आई	क्या	अपना रब	से
الْأُولَى (133) وَلَوْ أَنَّا أَهْلَكْنَاهُمْ بِعَذَابٍ مِّن قَبْلِهِ لَقَالُوا							
तो वह कहते	इस से क़व्ल	किसी अज़ाब से	उन्हें हलाक कर देते	हम	और अगर	133	पहले
رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ آيَاتِكَ مِنْ قَبْلِ							
इस से क़व्ल	तेरे अहकाम	तो हम पैरवी करते	कोई रसूल	हमारी तरफ़	क्यों तू ने न भेजा	ऐ हमारे रब	
أَنْ نَّذِلَّ وَنَخْزَى (134) فَلْ كُلُّ مُتَرَبِّصٍ فَتَرَبِّصُوا							
पस तुम इन्तिज़ार करो	मुन्तज़िर है	सब	कह दें	134	और हम रुस्वा हों	कि हम ज़लील हों	
فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ أَصْحَابِ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدَى (135)							
135	उस ने हिदायत पाई	और कौन	सीधा	रास्ता	वाले	कौन	सो अनक़रीब तुम जान लोगे

ع 11

ع 12

آيَاتُهَا 112 ﴿ (21) سُورَةُ الْأَنْبِيَاءِ ﴾ رُكُوعَاتُهَا 7									
رुकुआत 7					(21) सूरतुल अम्बिया रसूल (जमा)			आयात 112	
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ									
गफ़लत में		और वह		उन का हिसाब		लोगों के लिए		क़रीब आ गया	
مُعْرَضُونَ ﴿ ١ ﴾ مَا يَأْتِيهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّن رَّبِّهِمْ مُّحَدِّثٍ إِلَّا اسْتَمَعُوهُ									
वह उसे सुनते हैं		मगर		नई		उन के रब से		कोई नसीहत	
और वह लोग जिन्होंने ने जुल्म किया (ज़ालिम)		सरगोशी		और चुपके चुपके बात की		उन के दिल		गफ़लत में हैं	
وَهُمْ يَلْعَبُونَ ﴿ ٢ ﴾ لَاهِيَةً قُلُوبُهُمْ وَأَسْرُوا النَّجْوَى الَّذِينَ ظَلَمُوا									
और वह		खेलते हैं (खेलते हुए)		2		गफ़लत में हैं		उन के दिल	
आओगे? जबकि तुम देखते हो। (3)		आप (स) ने फ़रमाया मेरा रब		जानता है हर बात जो आस्मानों में और ज़मीन में (होती है) और वह सुनने वाला जानने वाला है। (4)		वल्कि उन्होंने ने कहा (यह) परेशान ख़्वाब है, वल्कि उस ने घड़ लिया है, पस वह हमारे पास कोई निशानी लाए जैसे पहले (नबी निशानियां दे कर) भेजे गए थे। (5)		उन से क़ब्ल कोई बस्ती जिस को हम ने हलाक किया (निशानियां देख कर भी) ईमान नहीं लाई, तो क्या यह ईमान ले आएंगे? (6)	
هَلْ هَذَا إِلَّا بَشْرٌ مِّثْلُكُمْ أَفَتَأْتُونَ السَّحْرَ وَأَنْتُمْ تُبْصِرُونَ ﴿ ٣ ﴾									
क्या		यह		मगर		एक बशर		तुम ही जैसा	
3		देखते हो		और (जबकि) तुम		जादू		क्या पस तुम आओगे	
قُلْ رَبِّي يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿ ٤ ﴾									
आप ने फ़रमाया		मेरा रब		जानता है		बात		आस्मानों में	
4		जानने वाला		सुनने वाला		और वह		और ज़मीन	
بَلْ قَالُوا أَضْغَاتٌ أَحْلَامٍ بَلِ افْتَرَاهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ فَلْيَأْتِنَا									
वल्कि		उन्होंने ने कहा		परेशान		ख़्वाब		वल्कि	
पस वह हमारे पास ले आए		एक शायर		वल्कि वह		उस ने घड़ लिया		उस ने	
بَيِّتٍ كَمَا أُرْسِلَ الْأَوْلُونَ ﴿ ٥ ﴾ مَا آمَنْتَ قَبْلَهُمْ مِّن قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا									
कोई निशानी		जैसे		भेजे गए		पहले		5	
हम ने उसे हलाक किया		कोई बस्ती		उन से क़ब्ल		न ईमान लाई		न ईमान लाई	
أَفَهُمْ يُؤْمِنُونَ ﴿ ٦ ﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوحِي إِلَيْهِمْ									
और क्या वह (यह)		ईमान लाएंगे		6		और नहीं		भेजे हम ने	
उन की तरफ़		हम वहि भेजते थे		मर्द		मगर		तुम से पहले	
فَسَلُّوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿ ٧ ﴾ وَمَا جَعَلْنَاهُمْ									
पस पूछ लो		याद रखने वाले		अगर		तुम हो		तुम नहीं जानते	
और हम ने नहीं बनाए उन के		7		और हम ने नहीं बनाए उन के		7		तुम नहीं जानते	
جَسَدًا لَا يَأْكُلُونَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوا خَالِدِينَ ﴿ ٨ ﴾ ثُمَّ صَدَقْنَاهُمْ									
ऐसे जिस्म		न खाते हों		खाना		और वह न थे		हमेशा रहने वाले	
हम ने सच्चा कर दिया उन से		फिर		8		हमेशा रहने वाले		हमेशा रहने वाले	
الْوَعْدَ فَانْجَيْنَاهُمْ وَمَنْ نَشَاءُ وَأَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِينَ ﴿ ٩ ﴾ لَقَدْ أَنْزَلْنَا									
वाद		पस हम ने बचा लिया उन्हें		और जिस को हम ने चाहा		और हम ने हलाक कर दिया		हद से बढ़ने वाले	
तहकीक हम ने नाज़िल की		9		हद से बढ़ने वाले		और हम ने हलाक कर दिया		और जिस को हम ने चाहा	
إِلَيْكُمْ كِتَابًا فِيهِ ذِكْرُكُمْ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿ ١٠ ﴾ وَكَمْ قَصَمْنَا									
तुम्हारी तरफ़		एक किताब		उस में		तुम्हारा ज़िक्र		तो क्या तुम समझते नहीं	
और हम ने कितनी हलाक कर दी		10		और हम ने कितनी हलाक कर दी		10		तो क्या तुम समझते नहीं	
مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَأَنْشَأْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا آخَرِينَ ﴿ ١١ ﴾									
से		बस्तियां		वह थीं		ज़ालिम		और पैदा किए हम ने	
11		दूसरे		गिरोह - लोग		उन के बाद		और पैदा किए हम ने	

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है लोगों के लिए उन के हिसाब (का वक़्त) क़रीब आ गया, और वह गफ़लत में (उस से) मुँह फेर रहे हैं। (1) उन के पास उन के रब (की तरफ़) से कोई नई नसीहत नहीं आती मगर वह उसे खेलते हुए (बे परवाह हो कर) सुनते हैं। (2) उन के दिल गफ़लत में हैं और ज़ालिमों ने चुपके चुपके सरगोशी की कि यह (सुहम्मद रसूलुल्लाह) क्या है! मगर एक बशर तुम ही जैसे, क्या (फिर भी) तुम जादू के पास आओगे? जबकि तुम देखते हो। (3) आप (स) ने फ़रमाया मेरा रब जानता है हर बात जो आस्मानों में और ज़मीन में (होती है) और वह सुनने वाला जानने वाला है। (4) वल्कि उन्होंने ने कहा (यह) परेशान ख़्वाब है, वल्कि उस ने घड़ लिया है, पस वह हमारे पास कोई निशानी लाए जैसे पहले (नबी निशानियां दे कर) भेजे गए थे। (5) उन से क़ब्ल कोई बस्ती जिस को हम ने हलाक किया (निशानियां देख कर भी) ईमान नहीं लाई, तो क्या यह ईमान ले आएंगे? (6) और हम ने (रसूल) नहीं भेजे तुम से पहले मगर मर्द, हम उन की तरफ़ वहि भेजते थे, पस याद रखने वालों से पूछ लो अगर तुम नहीं जानते। (7) और हम ने उन के ऐसे जिस्म नहीं बनाए कि वह खाना न खाते हों, और वह न थे हमेशा रहने वाले। (8) फिर हम ने उन से अपना वादा सच्चा कर दिया, पस हम ने उन्हें बचा लिया और जिस को हम ने चाहा, और हम ने हद से बढ़ने वालों को हलाक कर दिया। (9) तहकीक हम ने तुम्हारी तरफ़ एक किताब नाज़िल की जिस में तुम्हारा ज़िक्र है, तो क्या तुम समझते नहीं? (10) और हम ने हलाक कर दी कितनी ही बस्तियां, कि वह ज़ालिम थीं, और हम ने उन के बाद दूसरे गिरोह (और लोग) पैदा किए। (11)

फिर जब उन्होंने ने हमारे अज़ाब की आहट पाई तो उस वक़्त उस से भागने लगे। (12)

तुम मत भागो और लौट जाओ उसी तरफ़ जहाँ तुम्हें आसाइश दी गई थी और अपने घरों की तरफ़, ताकि तुम्हारी पूछ गछ हो। (13)

वह कहने लगे हाए हमारी शामत! बेशक हम ज़ालिम थे। (14)

पस (बराबर) उन की यह पुकार रही, यहाँ तक कि हम ने उन्हें कटी हुई खेती और बुझी हुई आग (की तरह ढेर) कर दिया। (15)

और हम ने नहीं पैदा किया आस्मान को और ज़मीन को और जो उन के दरमियान में है खेलते हुए (बेकार)। (16)

अगर हम कोई खिलौना बनाना चाहते तो हम उस को अपने पास से बना लेते, अगर हम करने वाले होते (अगर हमें यह करना होता)। (17)

बल्कि हम फेंक मारते हैं, हक़ को वातिल पर, पस वह उस का भेजा (कचुम्बर) निकाल देता है तो वह उसी वक़्त नाबूद हो जाता है, और तुम्हारे लिए उस (बात) से खराबी है जो तुम बनाते हो। (18)

और उसी के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में है और जो उस के पास है वह सरकशी नहीं करते उस की इबादत से और न वह थकते हैं। (19)

और रात दिन तस्वीह (उस की पाकीज़गी) बयान करते हैं सुस्ती नहीं करते। (20)

क्या उन्होंने ने ज़मीन से कोई और माबूद बना लिए हैं कि वह उन्हें (मरने के बाद) दोबारा उठा कर खड़ा करेंगे। (21)

अगर उन दोनों (आस्मान ओ ज़मीन) में और माबूद होते अल्लाह के सिवा तो अलबत्ता (ज़मीन ओ आस्मान) दरहम बरहम हो जाते, पस अर्श अज़ीम का रब अल्लाह उस से पाक है जो वह बयान करते हैं। (22)

वह उस से पूछताछ नहीं कर सकते उस के (बारे में) जो वह करता है बल्कि वह पूछताछ किए जाएंगे। (23)

क्या उन्होंने ने उस के सिवा और माबूद बनाए हैं? फ़रमा दें, पेश करो अपनी दलील, यह किताब है जो मेरे साथ है, और किताब जो मुझ से पहले नाज़िल हुई है, अलबत्ता उन में अक़सर नहीं जानते हक़ को, पस वह रूग़र्दानी करते हैं। (24)

فَلَمَّا أَحْسَبُوا بِأَسْنَاءِ إِذَا هُمْ مِنْهَا يَرْكُضُونَ ﴿١٢﴾ لَا تَرْكُضُوا

तुम मत भागो	12	भागने लगे	उस से	उस वक़्त वह	हमारा अज़ाब	उन्होंने ने आहट पाई	फिर जब
-------------	----	-----------	-------	-------------	-------------	---------------------	--------

وَارْجِعُوا إِلَىٰ مَا أُتْرِفْتُمْ فِيهِ وَمَسْكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْأَلُونَ ﴿١٣﴾

13	तुम्हारी पूछ गछ हो	ताकि तुम	और अपने घर (जमा)	उस में	तुम आसाइश दिए गए	जो	तरफ़	और लौट जाओ
----	--------------------	----------	------------------	--------	------------------	----	------	------------

قَالُوا يَوْمَئِذٍ إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿١٤﴾ فَمَا زَالَتْ تِلْكَ دَعْوَاهُمْ حَتَّىٰ

यहाँ तक कि	उन की पुकार	यह	पस रही	14	ज़ालिम	हम बेशक थे	हाए हमारी शामत	वह कहने लगे
------------	-------------	----	--------	----	--------	------------	----------------	-------------

جَعَلْنَاهُمْ حَصِيدًا خُمِدِينَ ﴿١٥﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ

और ज़मीन	आस्मान (जमा)	और हम ने नहीं पैदा किया	15	बुझी हुई आग	कटी हुई खेती	हम ने उन्हें कर दिया
----------	--------------	-------------------------	----	-------------	--------------	----------------------

وَمَا بَيْنَهُمَا لِعَيْنٍ ﴿١٦﴾ لَوْ أَرَدْنَا أَنْ نَتَّخِذَ لَهُوَ لَا تَخَذُنَهُ

तो हम उस को बना लेते	कोई खिलौना	हम बनाएं	कि	अगर हम चाहते	16	खेलते हुए	उन के दरमियान	और जो
----------------------	------------	----------	----	--------------	----	-----------	---------------	-------

مِنْ لَدُنَّا ۗ إِنَّ كُنَّا فَعَلِينَ ﴿١٧﴾ بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَىٰ الْبَاطِلِ

वातिल	पर	हक़ को	हम फेंक मारते हैं	बल्कि	17	करने वाले	अगर हम होते	अपने पास से
-------	----	--------	-------------------	-------	----	-----------	-------------	-------------

فَيَدْمَغُهُ فَإِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۗ وَلَكُمْ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُونَ ﴿١٨﴾

18	तुम बनाते हो	उस से जो	खराबी	और तुम्हारे लिए	नाबूद हो जाता है	वह	तो उस वक़्त	पस वह उस का भेजा निकाल देता है
----	--------------	----------	-------	-----------------	------------------	----	-------------	--------------------------------

وَلَهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَمَنْ عِنْدَهُ لَا يَسْتَكْبِرُونَ

वह तकच्चुर (सरकशी) नहीं करते	उस के पास	और जो	और ज़मीन में	आस्मानों में	जो	और उसी के लिए
------------------------------	-----------	-------	--------------	--------------	----	---------------

عَنْ عِبَادَتِهِ وَلَا يَسْتَحْسِرُونَ ﴿١٩﴾ يُسَبِّحُونَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ

और दिन	रात	वह तस्वीह करते हैं	19	और न वह थकते हैं	उस की इबादत	से
--------	-----	--------------------	----	------------------	-------------	----

لَا يَفْتُرُونَ ﴿٢٠﴾ أَمْ اتَّخَذُوا إِلَهًا مِّنَ الْأَرْضِ هُمْ يُنشِرُونَ ﴿٢١﴾

21	उन्हें उठा खड़ा करेंगे	वह	ज़मीन से	कोई माबूद	उन्होंने ने बना लिया	क्या	20	वह सुस्ती नहीं करते
----	------------------------	----	----------	-----------	----------------------	------	----	---------------------

لَوْ كَانَ فِيهِمَا آلِهَةٌ إِلَّا اللَّهُ لَفَسَدَتَا ۗ فَسُبْحَانَ اللَّهِ

अल्लाह	पस पाक है	अलबत्ता दोनों दरहम बरहम हो जाते	अल्लाह	सिवाए	माबूद	उन दोनों में	अगर होते
--------	-----------	---------------------------------	--------	-------	-------	--------------	----------

رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٢٢﴾ لَا يُسْأَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ

और (बल्कि) वह	वह करता है	उस से जो	उस से वाज़ पुर्स नहीं करते	22	वह बयान करते हैं	उस से जो	अर्श	रब
---------------	------------	----------	----------------------------	----	------------------	----------	------	----

يُسْأَلُونَ ﴿٢٣﴾ أَمْ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ قُلْ هَاتُوا

लाओ (पेश करो)	फ़रमा दें	और माबूद	अल्लाह के सिवा	उन्होंने ने बना लिए हैं	क्या	23	वाज़ पुर्स किए जाएंगे
---------------	-----------	----------	----------------	-------------------------	------	----	-----------------------

بُرْهَانَكُمْ ۗ هَذَا ذِكْرٌ مِّنْ مَّعِيَ وَذِكْرٌ مِّنْ قَبْلِي ۗ

जो मुझ से पहले	और किताब	मेरे साथ	जो	यह किताब	अपनी दलील
----------------	----------	----------	----	----------	-----------

بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۗ الْحَقُّ فَهُمْ مُّعْرِضُونَ ﴿٢٤﴾

24	रूग़र्दानी करते हैं	पस वह	हक़	नहीं जानते	उन में अक़सर	बल्कि (अलबत्ता)
----	---------------------	-------	-----	------------	--------------	-----------------

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ						
कि वेशक वह	उस की तरफ	हम ने वहि भेजी	मगर	कोई रसूल	आप से पहले	और नहीं भेजा हम ने
لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ ﴿٢٥﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا						
एक बेटा	अल्लाह	बना लिया	और उन्होंने ने कहा	25	पस मेरी इबादत करो	मेरे सिवा नहीं कोई माबूद
سُبْحَنَهُ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ ﴿٢٦﴾ لَا يَسْبِقُونَهُ بِالْقَوْلِ وَهُمْ						
और वह	बात में	वह उस से सबक़त नहीं करते	26	मुअज़्ज़ज़	वन्दे	बल्कि वह पाक है
بِأَمْرِهِ يَعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ						
और जो उन के पीछे	उन के हाथों में (सामने)	जो	वह जानता है	27	अमल करते	उस के हुक़म पर
وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنْ ارْتَضَىٰ وَهُمْ مِنْ خَشْيَتِهِ مُشْفِقُونَ ﴿٢٨﴾						
28	डरते रहते हैं	उस के ख़ौफ़ से	और वह	उस की रज़ा हो	जिस के लिए	मगर और वह सिफ़ारिश नहीं करते
وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ إِنِّي إِلَهٌُ مِّنْ دُونِهِ فَذَلِكَ نَجْزِيهِ جَهَنَّمَ						
जहन्नम	हम उसे सज़ा देंगे	पस वह शख्स	उस के सिवा	माबूद	वेशक मैं	उन में से कहे और जो
كَذَلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿٢٩﴾ أَوَلَمْ يَرِ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ						
कि	उन्होंने ने कुफ़ किया	वह लोग जो	क्या नहीं देखा	29	ज़ालिम (जमा)	हम सज़ा देते हैं इसी तरह
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنَاهُمَا وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاءِ						
पानी से	और हम ने किया	पस हम ने दोनों को खोल दिया	वन्द	दोनों थे	और ज़मीन	आस्मान (जमा)
كُلِّ شَيْءٍ حَيٍّ أَفَلَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٠﴾ وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِي						
पहाड़	ज़मीन में	और हम ने बनाए	30	क्या पस वह ईमान नहीं लाते हैं	ज़िन्दा	हर शौ
أَنْ تَمِيدَ بِهِمْ وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٣١﴾						
31	राह पाएं	ताकि वह	रास्ते	कुशादा	उस में	और हम ने बनाए कि झुक न पड़े उन के साथ
وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَفًّا مَّحْفُوظًا وَهُمْ عَنْ آيَاتِهَا مُعْرَضُونَ ﴿٣٢﴾						
32	रूगर्दानी करते हैं	उस की निशानियां	से	और वह	महफूज़	एक छत आस्मान और हम ने बनाए
وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلُّ						
सब	और चाँद	और सूरज	और दिन	रात	पैदा किया	जिस ने और वह
فِي فَلِكِ يَسْبَحُونَ ﴿٣٣﴾ وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّن قَبْلِكَ الْخُلْدَ						
हमेशा रहना	आप (स) से कब्ल	किसी बशर के लिए	और हम ने नहीं किया	33	तैर रहे हैं	दाइरा (मदार) में
أَفَإِن مِّمَّن فَهُمُ الْخَالِدُونَ ﴿٣٤﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ						
चखना	हर जी	34	हमेशा रहेंगे	पस वह	आप इन्तिकाल कर गए	क्या पस अगर
الْمَوْتِ وَنَبَلُّوكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً وَإِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ﴿٣٥﴾						
35	तुम लौट कर आओगे	और हमारी ही तरफ	आज़माइश	और भलाई	बुराई से	और हम तुम्हें मुव्तला करेंगे मौत

और तुम से पहले हम ने कोई रसूल नहीं भेजा मगर हम ने वहि भेजी उस की तरफ कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, पस मेरी इबादत करो। (25) उन (मुश्रिकों) ने कहा कि अल्लाह ने एक बेटा बना लिया है, वह उस (तोहमत) से पाक है, बल्कि मुअज़्ज़ज़ वन्दे है। (26) वह बात में उस से सबक़त नहीं करते और वह उस के हुक़म पर अमल करते हैं। (27) वह जानता है जो उन के सामने और उन के पीछे है, और वह सिफ़ारिश नहीं करते, मगर जिस के लिए उस की रज़ा हो, और वह उस के ख़ौफ़ से डरते रहते हैं। (28) और उन में से जो कोई यह कहे कि वेशक उस के सिवा मैं माबूद हूँ, पस उस शख्स को हम सज़ाए जहन्नम देंगे, इसी तरह हम ज़ालिमों को सज़ा देते हैं। (29) क्या काफ़िरों ने नहीं देखा? कि आस्मान और ज़मीन दोनों मिले हुए थे, पस हम ने दोनों को खोल दिया, और हम ने पानी से हर शौ को ज़िन्दा किया, तो क्या (फिर भी) वह ईमान नहीं लाते? (30) और हम ने ज़मीन में पहाड़ बनाए ताकि वह उन (लोगों) के साथ झुक न पड़े, और हम ने उस में कुशादा रास्ते बनाए ताकि वह राह पाएं। (31) और हम ने बनाया आस्मान एक महफूज़ छत और वह उस की निशानियों से रूगर्दानी करते हैं। (32) और वही है जिस ने पैदा किया रात और दिन को, और सूरज और चाँद को, सब (अपने अपने) मदार में तैर रहे हैं। (33) और हम ने आप (स) से पहले किसी बशर के लिए हमेशा रहना नहीं (तजवीज़) किया, पस अगर आप (स) इन्तिकाल कर गए तो क्या वह हमेशा रहेंगे? (34) हर जी (मुतनफ़्फ़िस) को मौत (का ज़ाइक़ा) चखना है, और हम तुम्हें बुराई और भलाई से आजमाइश में मुव्तला करेंगे, और हमारी तरफ ही तुम लौट कर आओगे। (35)

ع ۲

और जब काफ़िर तुम्हें देखते हैं तो तुम्हें सिर्फ़ एक हँसी मज़ाक़ ठहराते हैं, कि क्या यह है? वह जो तुम्हारे माबूदों को (बुराई से) याद करता है, और वह अल्लाह के ज़िक्र से मुन्किर है। (36)

इन्सान को पैदा किया गया है जल्द बाज़, अनकरीब मैं तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता हूँ, सो तुम जल्दी न करो। (37)

और वह कहते हैं कि यह वादाए (अज़ाब) कब (आएगा)? अगर तुम सच्चे हो। (38)

काश काफ़िर उस घड़ी को जान लेते जब वह न रोक सकेंगे (दोज़ख़ की) आग को अपने चेहरों से, और न अपनी पीठों से, और न वह मदद किए जाएंगे। (39)

बल्कि (क़ियामत) उन पर अचानक आएगी तो वह उन्हें हैरान (बद हवास) कर देगी, पस उन्हें उसे लौटाने की सकत न होगी और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। (40)

और अलबत्ता मज़ाक़ उड़ाई गई आप (स) से पहले रसूलों की, पस उन में से जिन्होंने मज़ाक़ उड़ाया उन्हें उस (अज़ाब ने) आ घेरा जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (41)

फ़रमा दें, रहमान (के अज़ाब) से रात और दिन तुम्हारी कौन निगहबानी करता है? बल्कि वह अपने रब की याद से रूगर्दानी करते हैं। (42)

क्या हमारे सिवा उन के कुछ और माबूद हैं? जो उन्हें (मसाइब से) बचाते हैं, वह सकत नहीं रखते अपनी मदद की (भी) और न वह हम से (बचाने के लिए) साथी पाएंगे। (43)

बल्कि हम ने उन को उन के बाप दादा को साज़ ओ सामान दिया यहाँतक कि उन की उम्र दराज़ हो गई। पस क्या वह नहीं देखते कि हम ज़मीन को उस के किनारों से घटाते (मुन्किरों पर तंग करते) आ रहे हैं, फिर क्या वह ग़ालिब आने वाले हैं। (44)

आप (स) फ़रमा दें इस के सिवा नहीं कि मैं तुम्हें वहि से डराता हूँ, और बहरे पुकार नहीं सुनते जब भी उन्हें डराया जाए। (45)

وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا أَهَذَا								
क्या यह है	एक हँसी मज़ाक़	मगर (सिर्फ़)	ठहराते तुम्हें	नहीं	वह जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	तुम्हें देखते हैं	और जब	
الَّذِي يَذُكُرُ الْهَتَكُمْ وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمَنِ هُمْ كَفِرُونَ ﴿٣٦﴾								
36	मुन्किर (जमा)	वह	रहमान (अल्लाह)	ज़िक्र से	और वह	तुम्हारे माबूद	याद करता है	वह जो
خُلِقَ الْإِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ سَأُورِيكُمْ آيَاتِي فَلَا تَسْتَعْجِلُونِ ﴿٣٧﴾								
37	तुम जल्दी न करो	अपनी निशानियां	अनकरीब मैं दिखाता हूँ तुम्हें	जल्दी (जल्द बाज़)	से	इन्सान	पैदा किया गया	
وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٨﴾ لَوْ يَعْلَمُ								
काश वह जान लेते	38	सच्चे	तुम हो	अगर	वादा	यह	कब	और वह कहते हैं
الَّذِينَ كَفَرُوا حِينَ لَا يَكْفُونُ عَنْ وُجُوهِهِمُ النَّارَ وَلَا								
और न	आग	अपने चेहरे	से	वह न रोक सकेंगे	वह घड़ी	जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)		
عَنْ ظُهُورِهِمْ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٣٩﴾ بَلْ تَأْتِيهِمْ بَغْتَةً								
अचानक	आएगी उन पर	बल्कि	39	मदद किए जाएंगे	और न वह	उन की पीठ (जमा)	से	
فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٤٠﴾								
40	मोहलत दी जाएगी	और न उन्हें	उस को लौटाना	पस न उन्हें सकत होगी	तो हैरान कर देगी उन्हें			
وَلَقَدْ اسْتَهْزَأَ بِرَسُولٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا								
मज़ाक़ उड़ाया	उन को जिन्होंने ने	आ घेरा (पकड़ लिया)	आप (स) से पहले	रसूलों की	और अलबत्ता मज़ाक़ उड़ाई गई			
مِنْهُمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٤١﴾ قُلْ مَنْ يَكْلُؤُكُمْ بِاللَّيْلِ								
रात में	तुम्हारी निगहबानी करता है	कौन	फ़रमा दें	41	मज़ाक़ उड़ाते थे	उस के साथ (का)	थे	जो उन में से
وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمَنِ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُعْرِضُونَ ﴿٤٢﴾								
42	रूगर्दानी करते हैं	अपना रब	याद से	बल्कि वह	रहमान से	और दिन		
أَمْ لَهُمُ الْهَتَاةُ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُونِنَا لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَ								
मदद	वह सकत नहीं रखते	हमारे सिवा	उन्हें बचाते हैं	कुछ माबूद	उन के लिए	क्या		
أَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُونَ ﴿٤٣﴾ بَلْ مَتَّعْنَا هَؤُلَاءِ								
उन को	हम ने साज़ ओ सामान दिया	बल्कि	43	वह साथी पाएंगे	हम से	और न वह	अपने आप	
وَأَبَاءَهُمْ حَتَّى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّا نَأْتِي								
कि हम आ रहे हैं	क्या पस वह नहीं देखते	उम्र	उन पर-की	दराज़ हो गई	यहाँ तक कि	और उन के बाप दादा को		
الْأَرْضَ نَنْقُضُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا أَفَهُمُ الْغَالِبُونَ ﴿٤٤﴾ قُلْ إِنَّمَا								
इस के सिवा नहीं कि	फ़रमा दें	44	ग़ालिब आने वाले	क्या फिर वह	उस के किनारे (जमा)	से	उस को घटाते हुए	ज़मीन
أَنْذَرُكُمْ بِالْوَحْيِ وَلَا يَسْمَعُ الصَّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا مَا يُنذَرُونَ ﴿٤٥﴾								
45	उन्हें डराया जाए	भी	जब	पुकार	बहरे	और नहीं सुनते हैं	वहि से	मैं तुम्हें डराता हूँ

٤٢  
٣



وَلَمَّا مَسَّتْهُمُ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ يُوَيْلَنَا						
हाए हमारी शामत	वह ज़रूर कहेंगे	तेरा रब	अज़ाब से	एक लपट	उन्हें छुए	और अगर
إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٤٦﴾ وَنَضَعُ الْمَوَازِينَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ						
क़ियामत	दिन	इंसाफ़	तराजू-मीज़ान	और हम रखेंगे (काइम करेंगे)	46	ज़ालिम (जमा) वेशक हम थे
فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَإِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ						
एक दाना	वज़न बराबर	होगा	और अगर	कुछ भी	किसी शख्स पर	तो न जुल्म किया जाएगा
مِّنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا وَكَفَىٰ بِنَا حَسِيبِينَ ﴿٤٧﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا						
और अलबत्ता हम ने अ़ता की	47	हिसाब लेने वाले	हम	और काफी	हम उसे ले आएंगे	राई से - का
مُوسَىٰ وَهَارُونَ الْفُرْقَانَ وَضِيَاءَ وَذَكَرًا لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٤٨﴾						
48	परहेज़गारों के लिए	और नसीहत	और रोशनी	फ़र्क़ करने वाली (किताब)	और हारून (अ)	मूसा (अ)
الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ						
क़ियामत	से	और वह	बग़ैर देखे	अपना रब	वह डरते हैं	जो लोग
مُشْفِقُونَ ﴿٤٩﴾ وَهَذَا ذِكْرٌ مُّبْرَكٌ أَنْزَلْنَاهُ أَفَأَنْتُمْ لَهُ						
इस के	तो क्या तुम	हम ने इसे नाज़िल किया	बाबरकत	नसीहत	और यह	49
مُنْكَرُونَ ﴿٥٠﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا إِبْرَاهِيمَ رُشْدَهُ مِن قَبْلُ						
उस से क़व्ल	हिदायत यावी (फहमे सलीम)	इब्राहीम (अ)	और तहकीक अलबत्ता हम ने दी	50	मुन्किर (जमा)	
وَكُنَّا بِهِ عَلِيمِينَ ﴿٥١﴾ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا هَذِهِ التَّمَاثِيلُ						
मूर्तियाँ	क्या है यह	और अपनी क़ौम	अपने बाप से	जब उस ने कहा	51	जानने वाले
الَّتِي أَنْتُمْ لَهَا عَكْفُونَ ﴿٥٢﴾ قَالُوا وَجَدْنَا آبَاءَنَا لَهَا						
उन के लिए	अपने बाप दादा को	हम ने पाया	वह बोले	52	जमे बैठे हो	उन के लिए
عَبِيدِينَ ﴿٥٣﴾ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ فِي ضَلَالٍ						
गुमराही में	और तुम्हारे बाप दादा	तुम	तहकीक तुम रहे	उस ने कहा	53	पूजा करने वाले
مُبِينٍ ﴿٥٤﴾ قَالُوا أَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ أَمْ أَنْتَ مِنَ اللَّعِينِينَ ﴿٥٥﴾						
55	खेलने वाले (दिल लगी करने वाले)	से	तुम	या	हक़ को	क्या तुम लाए हो हमारे पास
قَالَ بَلْ رَبُّكُمْ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الَّذِي						
वह जिस ने	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	रब (मालिक)	तुम्हारा रब	बल्कि	उस ने कहा
فَطَرَهُنَّ ۗ وَأَنَا عَلَىٰ ذَلِكُمْ مِنَ الشَّاهِدِينَ ﴿٥٦﴾						
56	गवाह (जमा)	से	इस बात पर	और मैं	उन्हें पैदा किया	
وَتَاللَّهِ لَأَكِيدَنَّ أَصْنَامَكُمْ بَعْدَ أَنْ تُوَلُّوا مُدْبِرِينَ ﴿٥٧﴾						
57	पीठ फेर कर	तुम जाओगे	कि	बाद	तुम्हारे बुत (जमा)	अलबत्ता मैं ज़रूर चाल चलूंगा

और अगर उन्हें तेरे रब के अज़ाब की एक लपट छुए तो वह ज़रूर कहेंगे हाए हमारी शामत! हम

ज़ालिम थे। (46)

और हम क़ियामत के दिन मीज़ाने अदल काइम करेंगे तो किसी शख्स पर कुछ भी जुल्म न किया जाएगा। और अगर (कोई अ़मल) राई के एक दाने के बराबर भी होगा तो हम उसे ले आएंगे, और काफी है हम हिसाब लेने वाले। (47)

और हम ने मूसा (अ) और हारून (अ) को (हक़ ओ वातिल में) फ़र्क़ करने वाली (किताब) और रोशनी अ़ता की, और परहेज़गारों के लिए नसीहत। (48)

जो लोग अपने रब से बग़ैर देखे डरते हैं और वह क़ियामत से ख़ौफ़ खाते हैं। (49)

और यह बाबरकत नसीहत है (जो) हम ने नाज़िल की है तो क्या तुम उस के मुन्किर हो? (50)

और तहकीक अलबत्ता हम ने उस से क़व्ल इब्राहीम (अ) को फहम सलिम दी थी और हम उस के जानने वाले थे। (51)

जब उस ने कहा अपने बाप से और अपनी क़ौम से, क्या है यह मूर्तियाँ? जिन के लिए तुम जमे बैठे हो। (52)

वह बोले हम ने पाया अपने बाप दादा को उन की पूजा करते। (53)

उस (इब्राहीम अ) ने कहा तहकीक तुम और तुम्हारे बाप दादा सरीह गुमराही में रहे। (54)

वह बोले क्या तुम हमारे पास हक़ लाए हो? या दिल लगी करने वालों में से हो। (55)

उस ने कहा बल्कि तुम्हारा रब मालिक है आस्मानों और ज़मीन का, वह जिस ने उन्हें पैदा किया और उस बात पर मैं गवाहों में से (गवाह) हूँ। (56)

और अल्लाह की क़सम! अलबत्ता मैं तुम्हारे बुतों से ज़रूर चाल चलूंगा, उस के बाद जबकि तुम पीठ फेर कर चले जाओगे। (57)

पस उस ने उन के एक बड़े के सिवा सब को रेज़ा रेज़ा कर डाला, ताकि वह उस की तरफ़ रुजूअ करें। (58)

58	रुजूअ करें	उस की तरफ़	ताकि वह	उन का	एक बड़ा	सिवाए	रेज़ा रेज़ा	उस ने उन्हें कर डाला
----	------------	------------	---------	-------	---------	-------	-------------	----------------------

कहने लगे कौन है जिस ने हमारे माबूदों के साथ यह किया? बेशक वह तो ज़ालिमों में से है। (59)

59	ज़ालिम (जमा)	से	बेशक वह	यह हमारे माबूदों के साथ	किया	कौन - किस	कहने लगे
----	--------------	----	---------	-------------------------	------	-----------	----------

बोले हम ने सुना है कि एक जवान इन (बुतों) के बारे में बातें करता है, उस को इब्राहीम (अ) कहा जाता है। (60)

60	इब्राहीम (अ)	उस को	कहा जाता है	वह उन के बारे में बातें करता है	एक जवान	हम ने सुना है	वह बोले
----	--------------	-------	-------------	---------------------------------	---------	---------------	---------

बोले तो उसे लोगों की आँखों के सामने ले आओ ताकि वह देखें। (61)

61	वह देखें	ताकि वह	लोग	आँखें	सामने	उसे	तुम ले आओ
----	----------	---------	-----	-------	-------	-----	-----------

उन्होंने ने कहा कि ऐ इब्राहीम (अ)! क्या यह तू ने हमारे माबूदों के साथ किया है? (62)

62	उस ने कहा	बल्कि	उस ने किया है	ऐ इब्राहीम (अ)	हमारे माबूदों के साथ	यह	तू ने किया	क्या तू	उन्होंने ने कहा
----	-----------	-------	---------------	----------------	----------------------	----	------------	---------	-----------------

अगर वह बोलते हैं। (63)

63	पस वह लौटे (सोच में पड़ गए)	वह बोलते हैं	अगर	तो उन से पूछ लो	यह	उन का बड़ा
----	-----------------------------	--------------	-----	-----------------	----	------------

पस वह सोच में पड़ गए अपने दिलों में, फिर उन्होंने ने कहा बेशक तुम ही ज़ालिम हो (नाहक पर हो)। (64)

64	फिर वह औन्धे किए गए	ज़ालिम (जमा)	तुम ही	बेशक तुम	फिर उन्होंने ने कहा	अपने दिल
----	---------------------	--------------	--------	----------	---------------------	----------

फिर वह अपने सरो पर औन्धे किए गए (उन की मत पलट गयी), तू खूब जानता है कि यह नहीं बोलते। (65)

65	क्या फिर तुम परसतिश करते हो	उस ने कहा	बोलते हैं	यह	नहीं	तू खूब जानता है	अपने सरो पर
----	-----------------------------	-----------	-----------	----	------	-----------------	-------------

जो न तुम्हें कुछ नफ़ा पहुँचा सकें और न नुक़सान पहुँचा सकें। (66)

66	तुफ	और न नुक़सान पहुँचा सकें तुम्हें	कुछ	न तुम्हें नफ़ा पहुँचा सकें	जा	अल्लाह के सिवा
----	-----	----------------------------------	-----	----------------------------	----	----------------

तुफ़ है तुम पर! और (उन) बुतों पर जिन की तुम अल्लाह के सिवा परसतिश करते हो? क्या तुम फिर भी नहीं समझते? (67)

67	फिर तुम नहीं समझते	क्या	अल्लाह के सिवा	परसतिश करते हो तुम	और उस पर जिसे	तुम पर
----	--------------------	------	----------------	--------------------	---------------	--------

वह कहने लगे उसे जला डालो और अपने माबूदों की मदद करो अगर तुम्हें कुछ करना है। (68)

68	तुम हो करने वाले (कुछ करना है)	अगर	अपने माबूदों	और तुम मदद करो	तुम इसे जला डालो	वह कहने लगे
----	--------------------------------	-----	--------------	----------------	------------------	-------------

हम ने हुक्म दिया, ऐ आग! तू इब्राहीम (अ) पर ठंडी हो जा और सलामती। (69)

69	और उन्होंने ने इरादा किया	इब्राहीम (अ)	पर	और सलामती	ठंडी	ऐ आग तू हो जा	हम ने हुक्म दिया
----	---------------------------	--------------	----	-----------	------	---------------	------------------

और उन्होंने ने उस के साथ फ़रेब का इरादा किया तो हम ने उन्हें कर दिया इन्तिहाई ज़ियांकार। (70)

70	और लूत (अ)	और हम ने उसे बचा लिया	70	बहुत ख़सारा पाने वाले (ज़ियांकार)	तो हम ने उन्हें कर दिया	फ़रेब	उस के साथ
----	------------	-----------------------	----	-----------------------------------	-------------------------	-------	-----------

और हम ने उसे और लूत (अ) को उस सर ज़मीन की तरफ़ (भेज कर) बचा लिया, जिस में हम ने जहानों के लिए वरकत रखी। (71)

71	उस को	और हम ने अ़ता किया	71	जहानों के लिए	उस में	वह जिस में हम ने वरकत रखी	सर ज़मीन	तरफ़
----	-------	--------------------	----	---------------	--------	---------------------------	----------	------

और उस को अ़ता किया इसहाक़ (अ) (बेटा), और याकूब (अ) पोता, और हम ने उन सब को नेकोकार बनाया। (72)

72	सालेह (नेकोकार)	हम ने बनाया	और सब	पोता	और याकूब (अ)	इसहाक़ (अ)
----	-----------------	-------------	-------	------	--------------	------------

وَجَعَلْنَاهُمْ آيَةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرَاتِ						
नेक काम करना	उन की तरफ़	और हम ने वहि भेजी	हमारे हुकम से	वह हिदायत देते थे	(जमा) इमाम (पेशवा)	और हम ने उन्हें बनाया
وَاقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَكَانُوا لَنَا عَبِيدِينَ ﴿٧٣﴾						
73	इबादत करने वाले	हमारे ही	और वह थे	ज़कात	और अदा करना	नमाज़ और काइम करना
وَلَوْطًا آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِي						
जो	बस्ती से	और हम ने उसे बचा लिया	और इल्म	हुकम	हम ने उसे दिया	और लूत (अ)
كَانَتْ تَعْمَلُ الْخَبِيثَ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمَ سَوْءٍ فَسَقِينَ ﴿٧٤﴾						
74	बदकार	बुरे लोग	थे	बेशक वह	गन्दे काम	करती थी
وَادْخَلْنَاهُ فِي رَحْمَتِنَا إِنَّهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٧٥﴾ وَنُوحًا						
और नूह (अ)	75	(जमा) सालेह (नेकोकार)	से	बेशक वह	अपनी रहमत में	और हम ने दाखिल किया उसे
إِذْ نَادَى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ						
बेचैनी	से	और उस के लोग	फिर हम ने उसे नजात दी	उस की	तो हम ने कुबूल कर ली	उस से पहले जब पुकारा
الْعَظِيمِ ﴿٧٦﴾ وَنَصَرْنَاهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا						
हमारी आयतों को	झुटलाया	जिन्होंने ने	लोग	से - पर	और हम ने उस को मदद दी	76 बड़ी
إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمَ سَوْءٍ فَأَعْرِفْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٧٧﴾ وَدَاوُدَ						
और दाऊद (अ)	77	सब	हम ने गर्क कर दिया उन्हें	बुरे	लोग	वह थे बेशक वह
وَسُلَيْمَانَ إِذْ يَحْكُمُ فِي الْحَرْثِ إِذْ نَفِثَتْ فِيهِ						
उस में	रात में चर गई	जब	खेती के बारे में	फैसला कर रहे थे	जब	और सुलेमान (अ)
غَنَمِ الْقَوْمِ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شَاهِدِينَ ﴿٧٨﴾ فَفَهَّمْنَاهَا سُلَيْمَانَ						
सुलेमान (अ)	पस हम ने उस को फहम दी	78	मौजूद	उनके फैसले (के वक़्त)	और हम थे	एक कौम की बकरियां
وَكُلًّا آتَيْنَا حُكْمًا وَعِلْمًا وَسَخَّرْنَا مَعَ دَاوُدَ الْجِبَالَ						
पहाड़ (जमा)	दाऊद (अ)	साथ - का	और हम ने मुसख़्खर कर दिया	और इल्म	हुकम	हम ने दिया और हर एक
يُسَبِّحُنَ وَالطَّيْرُ وَكُنَّا فَعَلِينَ ﴿٧٩﴾ وَعَلَّمْنَاهُ صَنْعَةَ						
सन्‌अत (कारीगरी)	और हम ने उसे सिखाई	79	करने वाले	और हम थे	और परिन्दे	वह तस्वीह करते थे
لَبُوسٍ لَكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِنْ بَأْسِكُمْ فَهَلْ أَنْتُمْ						
तुम	पस क्या	तुम्हारी लड़ाई	से	ताकि वह तुम्हें बचाए	तुम्हारे लिए	एक लिबास
شَاكِرُونَ ﴿٨٠﴾ وَلِسُلَيْمَانَ الرِّيحَ عَاصِفَةً تَجْرِي بِأَمْرِهِ						
उस के हुकम से	चलती	तेज़ चलने वाली	हवा	और सुलेमान (अ) के लिए	80	शुक्र करने वाले
إِلَى الْأَرْضِ الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عَالِمِينَ ﴿٨١﴾						
81	जानने वाले	हर शौ	और हम है	उस में	जिस को हम ने बरकत दी है	सरज़मीन तरफ़

और हम ने उन्हें पेशवा बनाया, वह हमारे हुकम से हिदायत देते थे और हम ने उन की तरफ़ वहि भेजी नेक काम करने की, और नमाज़ काइम करने, और ज़कात अदा करने की, और वह हमारी ही इबादत करने वाले थे। (73)

और हम ने लूत (अ) को हुकम दिया (हिक्मत ओ नबुद्धत) और इल्म (दिया) और हम ने उसे उस बस्ती से बचा लिया जो गन्दे काम करती थी, बेशक वह थे बुरे और बदकार लोग। (74)

और हम ने उसे अपनी रहमत में दाखिल किया, बेशक वह नेकोकारों में से है। (75)

और (याद करो) जब उस से क़व्ल नूह (अ) ने पुकारा तो हम ने उस की दुआ कुबूल कर ली, फिर हम ने उसे और उस के लोगों को नजात दी बड़ी बेचैनी (सख़्ती) से। (76)

और हम ने उस को मदद दी उन लोगों पर जिन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया, बेशक वह बुरे लोग थे, फिर हम ने उन सब को गर्क कर दिया। (77)

और (याद करो) जब दाऊद (अ) और सुलेमान (अ) एक खेती के बारे में फैसला कर रहे थे जब उस में रात के वक़्त एक कौम की बकरियां चर गई, और हम उन के फैसले के वक़्त मौजूद थे। (78)

पस हम ने सुलेमान (अ) को (सहीह फैसले की) फहम दी और हर एक को हम ने हुकम (हिक्मत ओ नबुद्धत) और इल्म दिया, और हम ने पहाड़ों को दाऊद (अ) के साथ मुसख़्खर कर दिया, वह तस्वीह करते थे और परिन्दे (भी) मुसख़्खर किए और करने वाले हम थे। (79)

और हम ने उसे तुम्हारे लिए एक लिबास (बनाने) की कारीगरी सिखाई ताकि वह तुम्हें तुम्हारी लड़ाई से बचाए, पस क्या तुम शुक्र करने वाले हो? (80)

और हम ने तेज़ चलने वाली हवा सुलेमान (अ) के लिए (मुसख़्खर की) वह उस के हुकम से उस सरज़मीन में (शाम) की तरफ़ चलती, जिस में हम ने बरकत दी, और हम हर शौ को जानने वाले हैं। (81)

और शैतानों में से (मुसख़र किए) जो गोता लगाते थे उस के लिए, और उस के सिवा और काम (भी) करते थे, और हम उन को संभालते थे। (82)

और अय्यूब (अ) को (याद करो) जब उस ने अपने रब को पुकारा कि मुझे तकलीफ़ पहुँची है और तू रहम करने वालों में सब से बड़ा रहम करने वाला है। (83)

तो हम ने कुबूल कर ली उस की (दुआ), पस उसे जो तकलीफ़ थी हम ने खोल दी (दूर कर दी) और हम ने उसे उस के घर वाले दिए, और उन के साथ उन जैसे (और भी) रहमत फ़रमा कर अपने पास से, और इबादत करने वालों के लिए नसीहत। (84)

और इस्माईल (अ), और इदरीस (अ), और जुलक़िफ़ल (अ), यह सब सव्र करने वालों में से थे। (85)

और हम ने उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल किया, वेशक वह नेकोकारों में से थे। (86)

और (याद करो) जब मछली वाले (यूनस अ अपनी क़ौम से) गुस्से में भर कर चल दिए, पस उस ने गुमान किया कि हम हरगिज़ उस पर तंगी (गिरफ़्त) न करेंगे (जब मछली निगल गई) तो उस ने अन्धेरो में पुकारा कि

(ऐ अल्लाह) तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू पाक है, वेशक मैं ज़ालिमों (कूसूरवारों) में से था। (87)

फिर हम ने उस की (दुआ) कुबूल कर ली और हम ने उसे ग़म से नजात दी, और इस तरह हम मोमिनों को नजात दिया करते हैं। (88)

और (याद करो) जब ज़करिया (अ) ने अपने रब को पुकारा ऐ मेरे रब! मुझे अकेला (लावारिस) न छोड़ और तू (सब से) बेहतर वारिस है। (89)

फिर हम ने उस की (दुआ) कुबूल कर ली और हम ने उसे अ़ता किया यहिया (अ) और हम ने उस के लिए उस की वीवी को दुरुस्त (औलाद के काबिल) कर दिया वेशक वह सब नेक कामों में जल्दी करते थे, वह हमें उम्मीद ओ ख़ौफ़ से पुकारते थे। और वह हमारे सामने आजिज़ी करने वाले थे। (90)

وَمِنَ الشَّيْطَانِ مَنْ يَغْوُضُونَ لَهُ وَيَعْمَلُونَ عَمَلًا

काम	और करते थे	उस के लिए	जो गोता लगाते थे	शैतान (जमा)	और से
-----	------------	-----------	------------------	-------------	-------

دُونَ ذَلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حَفِظِينَ ﴿٨٢﴾ وَأَيُّوبَ إِذْ نَادَىٰ

जब उस ने पुकारा	और अय्यूब (अ)	82	संभालने वाले	उन के लिए	और हम थे	उस के सिवा
-----------------	---------------	----	--------------	-----------	----------	------------

رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ ﴿٨٣﴾

83	रहम करने वाले	सब से बड़ा रहम करनेवाला	और तू	तकलीफ़	मुझे पहुँची है	कि मैं	अपना रब
----	---------------	-------------------------	-------	--------	----------------	--------	---------

فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَكَشَفْنَا مَا بِهِ مِنْ ضُرٍّ ۚ وَآتَيْنَاهُ أَهْلَهُ

उस के घर वाले	और हम ने दिए उसे	तकलीफ़	उस को	जो	पस हम ने खोल दी	उस की	तो हम ने कुबूल कर ली
---------------	------------------	--------	-------	----	-----------------	-------	----------------------

وَمِثْلَهُمْ مَعَهُمْ رَحْمَةً ۖ مِّنْ عِنْدِنَا ۖ وَذِكْرَىٰ لِلْعَبِيدِينَ ﴿٨٤﴾

84	इबादत करने वालों के लिए	और नसीहत	अपने पास	से	रहमत फ़रमा कर	उन के साथ	और उन जैसे
----	-------------------------	----------	----------	----	---------------	-----------	------------

وَأِسْمَاعِيلَ وَإِدْرِيسَ وَذَا الْكِفْلِ ۗ كُلٌّ مِّنَ الصَّابِرِينَ ﴿٨٥﴾

85	सव्र करने वाले	से	यह सब	और जुल क़िफ़ल	और इदरीस (अ)	और इस्माईल (अ)
----	----------------	----	-------	---------------	--------------	----------------

وَأَدْخَلْنَاهُمْ فِي رَحْمَتِنَا ۖ إِنَّهُمْ مِّنَ الصَّالِحِينَ ﴿٨٦﴾

86	नेकोकार (जमा)	से	वेशक वह	अपनी रहमत में	और हम ने दाख़िल किया उन्हें
----	---------------	----	---------	---------------	-----------------------------

وَذَا النُّونِ إِذْ ذَهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ أَنْ لَّنْ نَقْدِرَ عَلَيْهِ

उस पर	कि हम हरगिज़ तंगी न करेंगे	पस गुमान किया उस ने	गुस्से में भर कर	चला गया	जब	और जुन नून (मछली वाला)
-------	----------------------------	---------------------	------------------	---------	----	------------------------

فَنَادَىٰ فِي الظُّلُمَاتِ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ ۗ

तू पाक है	तेरे सिवा	कोई माबूद	कि नहीं	अन्धेरो में	तो उस ने पुकारा
-----------	-----------	-----------	---------	-------------	-----------------

إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٨٧﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ ۖ وَنَجَّيْنَاهُ

और हम ने उसे नजात दी	उस की	फिर हम ने कुबूल कर ली	87	ज़ालिम (जमा)	से	मैं था	वेशक मैं
----------------------	-------	-----------------------	----	--------------	----	--------	----------

مِنَ الْغَمِّ ۗ وَكَذَلِكَ نُجِي الْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٨﴾ وَزَكَرِيَّا

और ज़करिया (अ)	88	मोमिन (जमा)	हम नजात देते हैं	और इसी तरह	ग़म से
----------------	----	-------------	------------------	------------	--------

إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ رَبِّ لَا تَذَرْنِي فَرْدًا ۖ وَأَنْتَ

और तू	अकेला	न छोड़ मुझे	ऐ मेरे रब	अपना रब	जब उस ने पुकारा
-------	-------	-------------	-----------	---------	-----------------

خَيْرُ الْوَارِثِينَ ﴿٨٩﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ ۖ وَوَهَبْنَا لَهُ يَحْيَىٰ وَأَصْلَحْنَا

और हम ने दुरुस्त कर दिया	यहिया (अ)	उसे	और हम ने अ़ता किया	उस की	फिर हम ने कुबूल कर ली	89	वारिस (जमा)	बेहतर
--------------------------	-----------	-----	--------------------	-------	-----------------------	----	-------------	-------

لَهُ زَوْجَهُ ۗ إِنَّهُمْ كَانُوا يُسْرِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ

नेक काम (जमा)	में	वह जल्दी करते थे	वेशक वह सब	उस की वीवी	उस के लिए
---------------	-----	------------------	------------	------------	-----------

وَيَدْعُونَنَا رَغَبًا وَرَهَبًا ۗ وَكَانُوا لَنَا خَشِعِينَ ﴿٩٠﴾

90	आजिज़ी करने वाले	हमारे लिए (सामने)	और वह थे	और ख़ौफ़	उम्मीद	और वह हमें पुकारते थे
----	------------------	-------------------	----------	----------	--------	-----------------------

وَأَلْتِي أَحْصَنْتُ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهَا مِنْ رُوحِنَا						
अपनी रूह	उस में	फिर हम ने फूंक दी	अपनी शर्मगाह (इपफ़त की)	उस ने हिफ़ाज़त की	और (औरत) जो	
وَجَعَلْنَهَا وَابْنَهَا آيَةً لِلْعَالَمِينَ ﴿٩١﴾ إِنَّ هَذِهِ أُمَّتُكُمْ						
तुम्हारी उम्मत	यह है	वेशक	91	जहानों के लिए	निशानी	और उस का बेटा
أُمَّةً وَاحِدَةً ۗ وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُونِ ﴿٩٢﴾ وَتَقَطَّعُوا أَمْرَهُمْ						
अपना काम (दीन)	और टुकड़े टुकड़े कर लिया उन्होंने ने	92	पस मेरी इबादत करो	तुम्हारा रब	और मैं	एक (यकता) उम्मत
بَيْنَهُمْ ۗ كُلُّ إِلَيْنَا رَجْعُونَ ﴿٩٣﴾ فَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ						
नेक काम	कुछ	करे	पस जो	93	रुजूअ करने वाले	हमारी तरफ़
وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهِ ۗ وَإِنَّا لَهُ كَاتِبُونَ ﴿٩٤﴾						
94	लिख लेने वाले	उस के	और वेशक हम	उस की कोशिश	तो नाक़दी (अकारत) नहीं	ईमान वाला
وَحَرْمٌ عَلَىٰ قَرِيْبَةٍ أَهْلَكْنَاهَا أَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿٩٥﴾ حَتَّىٰ إِذَا						
जब	यहां तक कि	95	लौट कर नहीं आएंगे	कि वह	जिसे हम ने हलाक कर दिया	बस्ती पर
فَتَحَتْ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَنْسِلُونَ ﴿٩٦﴾						
96	फिसलते (दौड़ते) आएंगे	बुलन्दी (टीले)	हर	से	और वह	और माजूज
وَأَقْرَبَ الْوَعْدِ الْحَقُّ إِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ أَبْصَارُ						
आँखें	ऊपर लगी (फटी) रह जाएंगी	वह	तो अचानक	सच्चा	वादा	और करीब आजाएगा
الَّذِينَ كَفَرُوا ۗ يُؤِيلْنَا قَدْ كُنَّا فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَذَا بَلْ كُنَّا						
बल्कि हम थे	इस से	ग़फ़लत में	तहकीक़ हम थे	हाए हमारी शामत	जिन्होंने ने कुफ़र किया (काफ़िर)	
ظَالِمِينَ ﴿٩٧﴾ إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ						
अल्लाह के सिवा	से	तुम परसतिश करते हो	और जो	वेशक तुम	97	ज़ालिम (जमा)
حَصْبُ جَهَنَّمَ ۗ أَنْتُمْ لَهَا وَرِدُونَ ﴿٩٨﴾ لَوْ كَانَ هَؤُلَاءِ						
यह	अगर होते	98	दाख़िल होने वाले	तुम उस में	जहनन्म	इंधन
إِلَهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ۗ وَكُلٌّ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٩٩﴾ لَهُمْ فِيهَا						
वहां	उनके लिए	99	सदा रहेंगे	उस में	और सब	उस में दाख़िल न होते
زَفِيرٌ ۗ وَهُمْ فِيهَا لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠٠﴾ إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ						
पहले ठहर चुकी	जो लोग	वेशक	100	(कुछ) न सुन सकेंगे	उस में	और वह
لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنَىٰ ۗ أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ﴿١٠١﴾ لَا يَسْمَعُونَ						
वह न सुनेंगे	101	दूर रखे जाएंगे	उस से	वह लोग	भलाई	हमारी (तरफ़) से
حَسِيْسَهَا ۗ وَهُمْ فِي مَا شَتَّهَتْ أَنْفُسُهُمْ خَالِدُونَ ﴿١٠٢﴾						
102	वह हमेशा रहेंगे	उन के दिल	जो चाहेंगे	में	और वह	उस की आहट

(और याद करो मरयम अ को) जिस ने अपनी इपफ़त की हिफ़ाज़त की, फिर हम ने उस में अपनी रूह फूंक दी, और हम ने उसे और उस के बेटे को जहानों के लिए निशानी बनाया। (91) वेशक यह है तुम्हारी उम्मत (मिल्लत) यकता उम्मत, और मैं तुम्हारा रब हूँ, पस मेरी इबादत करो। (92) और उन्होंने ने अपना काम (दीन) बाहम टुकड़े टुकड़े कर लिया, सब हमारी तरफ़ रुजूअ करने वाले (लौटने वाले) हैं। (93) पस जो कोई नेक काम करे और वह ईमान वाला हो तो अकारत नहीं (जाएगी) उस की कोशिश, और वेशक हम उस के लिख लेने वाले हैं। (94) उस बस्ती पर (दुनिया में लौट कर आना) हराम है, जिसे हम ने हलाक कर दिया कि वह लौट कर नहीं आएंगे। (95) यहां तक कि जब याजूज ओ माजूज खोल दिए जाएंगे, और वह हर टीले से दौड़ते आएंगे। (96) और सच्चा वादा करीब आजाएगा तो अचानक मुन्क़िरों की आँखें फटी की फटी रह जाएंगी, हाए हमारी शामत! तहकीक़ हम इस से ग़फ़लत में थे, बल्कि हम ज़ालिम थे। (97) वेशक तुम और वह जिन की तुम परसतिश करते हो अल्लाह के सिवा, जहनन्म का इंधन हैं, तुम उस में दाख़िल होने वाले हो। (98) अगर यह माबूद होते तो उस में दाख़िल न होते, और वह सब उस में सदा रहेंगे। (99) उन के लिए वहां चीख़ ओ पुकार है, और वह उस में कुछ न सुन सकेंगे। (100) वेशक जिन लोगों के लिए हमारी तरफ़ से पहले (ही) भलाई ठहर चुकी वह लोग उस से दूर रखे जाएंगे। (101) वह न सुनेंगे उस की आहट (भी) और उन के दिल जो चाहेंगे वह उस (आराम ओ राहत) में हमेशा रहेंगे। (102)

उन्हें गमगीन न करेगी बड़ी घबराहट, और फ़रिश्ते उन्हें लेने आएंगे, यह है (वह) दिन जिस का तुम से वादा किया गया था। (103) जिस दिन हम आस्मान लपेट देंगे, जैसे तहरीर के कागज़ का तूमार लपेटा जाता है, जैसे हम ने पहली बार पैदाइश की थी हम उसे फिर लौटा देंगे, यह वादा हम पर (हमारे ज़िम्मे) है, बेशक हम पूरा करने वाले हैं। (104) और तहकीक़ हम ने ज़बूर में नसीहत के वाद लिखा कि ज़मीन के वारिस हमारे नेक बन्दे होंगे। (105) बेशक इस में इबादत गुज़ार लोगों के लिए (बशारत) एक बड़ी ख़बर है। (106) और हम ने नहीं भेजा आप (स) को मगर तमाम जहानों के लिए रहमत। (107) आप (स) फ़रमा दें इस के सिवा नहीं कि मेरी तरफ़ वहि की गई है कि बस तुम्हारा माबूद माबूद यकता है, पस क्या तुम हुक्म बरदार हो? (108) फिर अगर वह रूगर्दानी करें तो कह दो कि मैं ने तुम्हें ख़बरदार कर दिया है बराबरी पर (यकसां तौर से) और मैं नहीं जानता जो तुम से वादा किया गया है वह क़रीब है या दूर? (109) बेशक वह जानता है पुकार कर कही हुई वात को (भी) और वह (भी) जानता है जो तुम छुपाते हो। (110) और मैं नहीं जानता शायद (अज़ाब में ताख़ीर) तुम्हारे लिए आज़माइश हो और एक मुद्दत तक फ़ाइदा पहुँचाना हो। (111) नबी (स) ने कहा ऐ मेरे रब! तू हक़ के साथ फ़ैसला फ़रमा, और हमारा रब निहायत मेहरवान है, उस से मदद तलब की जाती है (उन बातों) पर जो तुम बयान करते (बनाते) हो। (112) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है ऐ लोगो! अपने रब से डरो, बेशक क़ियामत का ज़लज़ला बड़ी भारी चीज़ है। (1)

لَا يَحْزَنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّهُمُ الْمَلَائِكَةُ هَذَا يَوْمُكُمْ									
तुम्हारा दिन	यह है	फ़रिश्ते	और लेने आएंगे उन्हें	बड़ी	घबराहट	गमगीन न करेगी उन्हें			
الَّذِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿١٠٣﴾ يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ									
तूमार	जैसे लपेटा जाता है	आस्मान	हम लपेट लेंगे	जिस दिन	103	तुम थे वादा किए गए (वादा किया गया था)	वह जो		
لِلْكُتُبِ كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ وَعَدَّا عَلَيْنا إِنَّا كُنَّا									
बेशक हम है	हम पर	वादा	हम उसे लौटा देंगे	पैदाइश	पहली	जैसे हम ने इबतदा की	तहरीर का कागज़		
فُعَلِينَ ﴿١٠٤﴾ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِنْ بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ									
कि	नसीहत के वाद	ज़बूर में	और तहकीक़ हम ने लिखा	104	(पूरा) करने वाले				
الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ﴿١٠٥﴾ إِنَّ فِي هَذَا لَبَلَاغًا									
एक बड़ी ख़बर	इस में	बेशक	105	नेक (जमा)	मेरे बन्दे	उस के वारिस	ज़मीन		
لِقَوْمٍ عَابِدِينَ ﴿١٠٦﴾ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ ﴿١٠٧﴾									
107	तमाम जहानों के लिए	रहमत	मगर	हम ने भेजा आप (स) को	और नहीं	106	इबादत गुज़ार (जमा) लोगों के लिए		
قُلْ إِنَّمَا يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ وَاحِدٌ فَهَلْ أَنْتُمْ									
तुम	पस क्या	वाहिद	माबूद	तुम्हारा माबूद	कि बस	मेरी तरफ़	वहि की गई	इस के सिवा नहीं	फ़रमा दें
مُسْلِمُونَ ﴿١٠٨﴾ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ آذَنْتُكُمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ وَإِنْ أَدْرَىٰ									
जानता मैं	और नहीं	बराबरी पर	मैं ने तुम्हें ख़बरदार कर दिया	तो कह दो	वह रूगर्दानी करें	फिर अगर	108	हुक्म बरदार (जमा)	
أَقْرَبَ أَمْ بَعِيدٌ مَّا تُوعَدُونَ ﴿١٠٩﴾ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ									
से कही गयी बात	बुलंद आवाज़	वह जानता है	बेशक वह	109	जो तुम से वादा किया गया	या दूर	क्या क़रीब?		
وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ ﴿١١٠﴾ وَإِنْ أَدْرَىٰ لَعَلَّهُ فِتْنَةٌ لَّكُمْ									
तुम्हारे लिए	आज़माइश	शायद वह	और मैं नहीं जानता	110	जो तुम छुपाते हो	और जानता है			
وَمَسَاءً إِلَىٰ حِينٍ ﴿١١١﴾ قُلْ رَبِّ احْكُم بِالْحَقِّ وَرَبُّنَا									
और हमारा रब	हक़ के साथ	तू फ़ैसला फ़रमा	ऐ मेरे रब	उस (नबी) ने कहा	111	एक मुद्दत तक	और फ़ाइदा पहुँचाना		
الرَّحْمَنِ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ﴿١١٢﴾									
112	जो तुम बयान करते हो	पर	जिस से मदद तलब की जाती है		निहायत मेहरवान				
آيَاتُهَا ٧٨ ﴿٢٢﴾ سُورَةُ الْحَجِّ ﴿٢٢﴾ رُكُوعَاتُهَا ١٠									
रुकुआत 10 (22) सूरतुल हज आयत 78									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ ﴿١﴾									
1	बड़ी भारी	चीज़	क़ियामत	ज़लज़ला	बेशक	अपना रब	डरो	ऐ लोगो!	

تَقْوَىٰ

يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّا أَرْضَعَتْ					
वह दूध पिलाती है	जिस को	हर दूध पिलाने वाली	भूल जाएगी	तुम देखोगे उसे	जिस दिन
وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكَرَىٰ					
नशे में	लोग	और तू देखेगा	अपना हम्ल	हर हमल वाली (हामिला)	और गिरा देगी
وَمَا هُمْ بِسُكَرَىٰ وَلَكِنَّ عَذَابَ اللَّهِ شَدِيدٌ ﴿٢﴾ وَمِنَ النَّاسِ					
और कुछ लोग जो	2	सख्त	अल्लाह का अज़ाब	और लेकिन	नशे में और हालांकि नहीं
مَنْ يُجَادِلْ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَيَتَّبِعْ كُلَّ شَيْطَانٍ					
हर शैतान	और पैरवी करते हैं	वे जाने बूझे	अल्लाह के (वारे) में	झगड़ा करते हैं	जो
مَّرِيدٍ ﴿٣﴾ كُتِبَ عَلَيْهِ أَنَّهُ مَنْ تَوَلَّاهُ فَإِنَّهُ يُضِلُّهُ					
उसे गुमराह करेगा	तो वह बेशक	जो दोस्ती करेगा उस से	कि वह	उस पर (उस की) निस्वत लिख दिया गया	3 सरकश
وَيَهْدِيهِ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ ﴿٤﴾ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنْتُمْ					
अगर तुम हो	ऐ लोगो!	4	दोज़ख	अज़ाब	तरफ और राह दिखाएगा उसे
فِي رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَإِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِّن تُرَابٍ ثُمَّ					
फिर	मिट्टी से	हम ने पैदा किया तुम्हें	तो बेशक हम	जी उठना	से शक में
مِّن نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِّنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِّنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَغَيْرِ مُّخَلَّقَةٍ					
और बग़ैर सूरत बनी	सूरत बनी हुई	गोशत की बोटी से	फिर	जमे हुए खून से	फिर नुतफ़े से
لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ وَنُقِرُّ فِي الْأَرْحَامِ مَا نَشَاءُ إِلَىٰ					
तक	जो हम चाहें	रहमों में	और हम ठहराते हैं	तुम्हारे लिए	ताकि हम ज़ाहिर कर दें
أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوا أَشُدَّكُمْ					
अपनी जवानी	ताकि तुम पहुँचो	फिर	बच्चा	हम निकालते हैं तुम्हें	फिर एक मुदते मुकर्ररा
وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَقَّىٰ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ إِلَىٰ أَرْدَلِ الْعُمْرِ					
निकम्मी उम्र	तक	पहुँचता है	कोई	और तुम में से	फौत हो जाता है कोई और तुम में से
لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْئًا وَتَرَى الْأَرْضَ					
ज़मीन	और तू देखता है	कुछ	इल्म (जानना)	वाद	ताकि वह न जाने
هَامِدَةً فَإِذَا أَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ					
और उभर आई	वह तरोताज़ा हो गई	पानी	उस पर	हम ने उतारा	फिर जब खुशक पड़ी हुई
وَأُنْبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ ﴿٥﴾ ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ					
अल्लाह	इस लिए कि	यह	5	रौनकदार	हर जोड़ा से और उगा लाई
هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّهُ يُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَأَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٦﴾					
6	कुदरत रखने वाला	हर शै	पर	और यह कि वह मुर्दा	ज़िन्दा करता है और यह कि वह वही बरहक

जिस दिन तुम उसे देखोगे, भूल जाएगी हर दूध पिलाने वाली जिस (बच्चे) को दूध पिलाती है, और हर हामिला अपना हम्ल गिरा देगी, और तू लोगों को देखेगा (जैसे वह) नशे में हों हालांकि वह नशे में न होंगे, लेकिन अल्लाह का अज़ाब सख्त है। (2)

और कुछ लोग हैं जो अल्लाह के वारे में वे जाने बूझे झगड़ा करते हैं, और वह हर सरकश शैतान की पैरवी करते हैं। (3)

उस की निसवत लिख दिया गया कि जो उस से दोस्ती करेगा तो वह बेशक उसे गुमराह कर देगा, और उसे दोज़ख के अज़ाब की तरफ राह दिखाएगा। (4)

ऐ लोगो! अगर तुम (क़ियामत के दिन) जी उठने से शक में हो तो (सोचो) हम ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर नुतफ़े से, फिर जमे हुए खून से, फिर गोशत की बोटी से, सूरत बनी हुई और बग़ैर सूरत बनी (अधूरी) ताकि हम तुम्हारे लिए (अपनी कुदरत) ज़ाहिर कर दें और हम (माँओं के) रहमों में से जो चाहें एक मुदत तक ठहराते हैं, फिर हम तुम्हें निकालते हैं बच्चे

(की सूरत में) ताकि फिर तुम अपनी जवानी को पहुँचो, और तुम में कोई (उम्रे तवई से क़ब्ल) फौत हो जाता है, और तुम में से कोई पहुँचता है निकम्मी उम्र तक, ताकि वह जानने के बाद कुछ न जाने (नासमझ हो जाए)। और तू ज़मीन को देखता है खुशक पड़ी हुई, फिर जब हम ने उस पर पानी उतारा तो वह तरोताज़ा हो गई, और उभर आई, और वह उगा लाई हर (क़िस्म) का जोड़ा रौनकदार (नबातात का)। (5)

यह इस लिए है कि अल्लाह ही बरहक है, और यह कि वह मुर्दा को ज़िन्दा करता है, और यह कि वह हर शै पर कुदरत रखने वाला है। (6)

और यह कि कियामत आने वाली है, इस में कोई शक नहीं, और यह कि अल्लाह उठाएगा जो कब्रों में हैं। (7)

और लोगों में कोई (ऐसा भी है) जो अल्लाह के बारे में झगड़ता है बग़ैर किसी इल्म के, और बग़ैर किसी दलील के, और बग़ैर किसी किताबे रोशन के। (8)

(तकबुर से) अपनी गर्दन मोड़े हुए ताकि अल्लाह के रास्ते से गुमराह करे, उस के लिए दुनिया में रसवाई है और हम उसे रोज़े कियामत जलती आग का अज़ाब चखाएंगे। (9)

यह उस सबब से जो तेरे हाथों ने (आगे) भेजा (तेरे आमाल) और यह कि अल्लाह अपने बन्दों पर जुल्म करने वाला नहीं। (10)

और लोगों में (कोई ऐसा भी है) जो एक किनारे पर अल्लाह की बन्दगी करता है, फिर अगर उसे भलाई पहुँच गई तो उस (इबादत) से इतमिनान पा लिया, और उसे अगर कोई आजमाइश पहुँची तो वह अपने मुँह के बल पलट गया, दुनिया और आखिरत के घाटे में रहा, यही है खुला घाटा। (11)

वह अल्लाह के सिवा पुकारता है (उस को) जो न उसे नुक़सान पहुँचा सके और न उसे नफ़ा पहुँचा सके, यही है इन्तिहा दरजे की गुमराही। (12)

वह पुकारता है, उस को जिस का ज़रर उस के नफ़ा से ज़ियादा करीब है, बेशक बुरा है (यह) दोस्त और बुरा है (यह) रफ़ीक़। (13)

जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने दुरुस्त अमल किए बेशक अल्लाह उन्हें उन बागात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे बहती हैं नहरें, बेशक अल्लाह जो चाहता है करता है। (14)

जो शख़्स गुमान करता है कि अल्लाह उस (रसूल स) की हरगिज़ मदद न करेगा दुनिया और आखिरत में, तो उसे चाहिए के एक रस्सी आस्मान की तरफ़ ताने, फिर उसे (आस्मान को) काट डाले, फिर देखे

क्या उस की यह तदवीर उस चीज़ को दूर कर देती है जो उसे गुस्सा दिला रही है। (15)

وَأَنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ لَا رَيْبَ فِيهَا وَأَنَّ اللَّهَ يَبْعَثُ مَنْ

जो	उठाएगा	अल्लाह	और यह कि	उस में	नहीं शक	आने वाली	घड़ी (कियामत)	और यह कि
----	--------	--------	----------	--------	---------	----------	---------------	----------

فِي الْقُبُورِ ۝ (7) وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ

बग़ैर किसी इल्म	अल्लाह (के बारे) में	झगड़ता है	जो	और लोगों में से	7	कब्रों में
-----------------	----------------------	-----------	----	-----------------	---	------------

وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُّنبِئٍ ۝ (8) ثَانِي عِظْفِهِ لِيُضِلَّ عَنْ

से	ताकि गुमराह करे	अपनी गर्दन मोड़े हुए	8	रोशन	और बग़ैर किसी किताब	और बग़ैर किसी दलील
----	-----------------	----------------------	---	------	---------------------	--------------------

سَبِيلِ اللَّهِ لَهُ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَنُذِيقُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

रोज़े कियामत	और हम उसे चखाएंगे	रसवाई	दुनिया में	उस के लिए	अल्लाह	रास्ता
--------------	-------------------	-------	------------	-----------	--------	--------

عَذَابِ الْحَرِيقِ ۝ (9) ذَلِكَ بِمَا قَدَّمْتَ يَدَكَ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ

नहीं	और यह कि अल्लाह	तेरे हाथ	आगे भेजा	यह उस सबब जो	9	जलती आग	अज़ाब
------	-----------------	----------	----------	--------------	---	---------	-------

بِظُلَامٍ لِّلْعَبِيدِ ۝ (10) وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللَّهَ عَلَىٰ حَرْفٍ

एक किनारा	पर	अल्लाह	बन्दगी करता है	जो	लोग	और से	10	अपने बन्दों पर	जुल्म करने वाला
-----------	----	--------	----------------	----	-----	-------	----	----------------	-----------------

فَإِنْ أَصَابَهُ خَيْرٌ اطْمَأَنَّ بِهِ وَإِنْ أَصَابَتْهُ فِتْنَةٌ انْقَلَبَ عَلَىٰ

पर-बल	तो पलट गया	कोई आजमाइश	उसे पहुँची	और अगर	उस से	तो इतमिनान पा लिया	भलाई	उसे पहुँच गई	फिर अगर
-------	------------	------------	------------	--------	-------	--------------------	------	--------------	---------

وَجْهِهِ ۝ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةَ ۚ ذَلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ۝ (11)

11	खुला	वह घाटा	यह है	और आखिरत	दुनिया में घाटा	अपना मुँह
----	------	---------	-------	----------	-----------------	-----------

يَدْعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَمَا لَا يَضُرُّهُمْ ۚ وَاللَّهُ يَدْعُوا

वह	यह है	न उसे नफ़ा पहुँचाए	और जो	न उसे नुक़सान पहुँचाए	जो	अल्लाह के सिवा	से	पुकारता है वह
----	-------	--------------------	-------	-----------------------	----	----------------	----	---------------

الضَّلَالِ الْبَعِيدِ ۝ (12) يَدْعُوا لِمَنْ ضَرُّهُ أَقْرَبُ مِنْ نَفْعِهِ ۚ

उस के नफ़ा से	ज़ियादा करीब	उस का ज़रर	उस को जो	वह पुकारता है	12	दूर-इन्तिहा दर्जा	गुमराही
---------------	--------------	------------	----------	---------------	----	-------------------	---------

لَيْسَ الْمَوْلَىٰ وَلَيْسَ الْعَشِيرُ ۝ (13) إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا

वह जो लोग ईमान लाए	दाख़िल करेगा	बेशक अल्लाह	13	रफ़ीक़	और बेशक बुरा	दोस्त	बेशक बुरा
--------------------	--------------	-------------	----	--------	--------------	-------	-----------

وَعَمَلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ

नहरें	उन के नीचे	बहती है	बागात	और उन्होंने ने दुरुस्त अमल किए
-------	------------	---------	-------	--------------------------------

إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ۝ (14) مَنْ كَانَ يَظُنُّ أَنْ لَنْ يَنْصُرَهُ

हरगिज़ उस की मदद न करेगा	कि	गुमान करता है	जो	14	जो वह चाहता है	करता है	बेशक अल्लाह
--------------------------	----	---------------	----	----	----------------	---------	-------------

اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ إِلَى السَّمَاءِ

आस्मान की तरफ़	एक रस्सी	तो उसे चाहिए कि ताने	और आखिरत	दुनिया में	अल्लाह
----------------	----------	----------------------	----------	------------	--------

ثُمَّ لِيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدَهُ مَا يَغِيظُ ۝ (15)

15	जो गुस्सा दिला रही है	उस की तदवीर	दूर कर देती है	क्या	फिर देखे	उसे काट डाले	फिर
----	-----------------------	-------------	----------------	------	----------	--------------	-----



وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ وَأَنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يُرِيدُ ﴿١٦﴾							
16	वह चाहता है	जिस को	हिदायत देता है	और यह कि अल्लाह	रोशन	आयतें	हम ने इस को नाज़िल किया और इसी तरह
إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِغِينَ وَالنَّصْرِي							
और नसारा (मसीही)	और साबी (सितारा परस्त)	यहूदी हुए	और जो	जो लोग ईमान लाए	वेशक		
وَالْمَجُوسَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا إِنَّ اللَّهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ							
रोज़े कियामत	उन के दरमियान	फ़ैसला कर देगा	वेशक अल्लाह	और वह जिन्होंने ने शिर्क किया (मुश्रिक)	और आतिश परस्त		
إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١٧﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ مَن							
जो	सिज्दा करता है उस के लिए	कि अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा?	17	मुत्तला	हर शौ	पर वेशक अल्लाह
فِي السَّمَوَاتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ							
और सितारे	और चाँद	और सूरज	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में		
وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالْدَّوَابُّ وَكَثِيرٌ مِّنَ النَّاسِ وَكَثِيرٌ حَقَّ							
साबित हो गया	और बहुत से	इन्सान (जमा)	से	और बहुत	और चौपाए	और दरख्त	और पहाड़
عَلَيْهِ الْعَذَابُ وَمَن يُهِنِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن مُّكْرِمٍ إِنَّ اللَّهَ							
वेशक अल्लाह	कोई इज़ज़त देने वाला	तो नहीं उस के लिए	ज़लील करे अल्लाह	और जिसे	अज़ाब	उस पर	
يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ﴿١٨﴾ هَذِهِ خَصْمِنِ اِخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ							
अपने रब (के बारे) में	वह झगड़े	दो फ़रीक	यह दो	18	जो वह चाहता है	करता है	
فَالَّذِينَ كَفَرُوا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّن تَارٍ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ							
ऊपर	डाला जाएगा	आग के	कपड़े	उन के लिए	काटे गए	कुफ़ किया	पस वह जिन्होंने ने
رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمِ ﴿١٩﴾ يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ							
20	और जिल्द (खालें)	उन के पेटों में	जो	उस से	पिघल जाएगा	19	खीलता हुआ पानी उन के सर (जमा)
وَلَهُمْ مَّقَامِعٌ مِّن حَدِيدٍ ﴿٢١﴾ كَلَّمَا أَرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا							
कि वह निकलें	वह इरादा करेंगे	जब भी	21	लोहे के	गुर्ज़	और उन के लिए	
مِنْهَا مِنْ غَمٍّ أَعِيدُوا فِيهَا وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿٢٢﴾							
22	जलने का अज़ाब	और चखो	उस में	लौटा दिए जाएंगे	ग़म से (ग़म के मारे)	उस से	
إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ							
वागात	नेक	और उन्होंने ने अ़मल किए	जो लोग ईमान लाए	दाखिल करेगा	वेशक अल्लाह		
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ							
कंगन	वह पहनाए जाएंगे उस में	नहरें	उन के नीचे	वहती हैं			
مِّن ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٢٣﴾							
23	रेशम	उस में	और उन का लिबास	और मोती	सोने के		

और इसी तरह हम ने इस (कुरआन) को उतारा, रोशन आयतें और यह कि अल्लाह जिस को चाहता है हिदायत देता है। (16) वेशक जो लोग ईमान लाए, और जो यहूदी हुए, और सितारा परस्त, और नसारा, और आतिश परस्त, और मुश्रिक, वेशक अल्लाह फ़ैसला कर देगा रोज़े कियामत उन के दरमियान, वेशक अल्लाह हर चीज़ पर मुत्तला है। (17) क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह के लिए सिज्दा करता है जो (भी) आस्मानों में और जो (भी) ज़मीन में है, और सूरज और चाँद और सितारे और पहाड़, और दरख्त, और चौपाए और बहुत से इन्सान (भी), और बहुत से हैं कि साबित हो गया है उन पर अज़ाब, और जिसे अल्लाह ज़लील करे उस के लिए कोई इज़ज़त देने वाला नहीं, और वेशक अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (18) यह दो फ़रीक अपने रब के बारे में झगड़े, पस जिन्होंने ने कुफ़ किया, उन के लिए आग के कपड़े काटे जा चुकें हैं, उन के सरों के ऊपर खीलता हुआ पानी डाला जाएगा। (19) उस से पिघल जाएगा जो उन के पेटों में है और (उन की) खालें (भी) (20) और उन के लिए लोहे के गुर्ज़ हैं। (21) जब भी वह ग़म के मारे उस से निकलने का इरादा करेंगे उसी में लौटा दिए जाएंगे और (कहा जाएगा) जलने का अज़ाब चखो। (22) जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अ़मल किए, वेशक अल्लाह उन्हें वागात में दाखिल करेगा जिन के नीचे वहती है नहरें, उस में उन्हें सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे, और उस में उन का लिबास रेशम (का होगा)। (23)

और उन्हें हिदायत की गई पाकीज़ा वात की तरफ़ और हिदायत की गई तारीफ़ों के लाइक (अल्लाह) के रास्ते की तरफ़। (24)

वेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया, और वह रोकते हैं अल्लाह के रास्ते से और बैतुल्लाह से जिसे हम ने मुक़र्रर किया है सब लोगों के लिए, उस में रहने वाले और परदेसी बराबर हैं (हुकूक में) और जो उस में जुल्म से गुमराही का इरादा करेगा हम उसे दर्दनाक अज़ाब (का मज़ा) चखाएंगे। (25)

और (याद करो) जब हम ने इब्राहीम (अ) के लिए ख़ाने क़अबा की जगह ठीक कर दी, (हम ने हुक़म दिया) कि मेरे साथ किसी को शरीक न करना, और मेरा घर पाक रखना तवाफ़ करने वालों के लिए और क़ियाम करने वालों और रुकूअ़ ओ सिज्दा करने वालों के लिए। (26)

और लोगों में हज का एलान कर दो कि वह तेरे पास पैदल और दुबली ऊँटनियों पर आएँ, वह आती है हर दूर दराज़ रास्ते से। (27)

ताकि वह फ़ाइदे देखें जो यहां उन के लिये रखे गए हैं, और वह अल्लाह का नाम लें मुक़र्ररा दिनों में (जुबह करते वक़्त) उन मवेशियों (जानवरों) पर जो हम ने उन्हें दिए हैं, पस उन में से तुम (खुद भी) खाओ और वदहाल मोहताज को (भी) खिलाओ। (28)

फिर चाहिए कि अपना मैल कुचैल दूर करें, और अपनी नज़रें (मन्तें) पूरी करें, और क़दीम घर (बैतुल्लाह) का तवाफ़ करें। (29)

यह (है हुक़म) और जो अल्लाह की हुक़मतों की ताज़ीम करे, पस वह (ताज़ीम) उसके रब के नज़्दीक

उस के लिए बेहतर है, और तुम्हारे लिए मवेशी हलाल करार दिए गए उन के सिवा जो तुम पर पढ़ दिए (सुना दिए गए) पस तुम बचो (किनारा कश रहो) वुतों की गन्दगी से। और बचो झूटी वात से। (30)

وَهُدُّوْا اِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۗ وَهُدُوْا اِلَى صِرَاطٍ							
राह	तरफ़	और उन्हें हिदायत की गई	वात	से-की	पाकीज़ा	तरफ़	और उन्हें हिदायत की गई
الْحَمِيْدِ ﴿٢٤﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَيَصُدُّوْنَ عَن سَبِيْلِ اللّٰهِ							
अल्लाह का रास्ता	से	और वह रोकते हैं	जिन लोगों ने कुफ़ किया	वेशक	24	तारीफ़ों का लाइक	
وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِيْ جَعَلْنٰهُ لِلنَّاسِ سَوَآءٍ الْعَاكِفِ							
रहने वाला	बराबर	लोगों के लिए	हम ने मुक़र्रर किया	वह जिसे	मस्जिदे हराम (बैतुल्लाह)		
فِيْهِ وَالْبَادِ ۗ وَمَنْ يُّرِدْ فِيْهِ بِالْحَادِ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ							
से	हम उसे चखाएंगे	जुल्म से	गुमराही का	उस में	इरादा करे	और जो	और परदेसी उस में
عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٥﴾ وَاذْ بَاوْنَا لِابْرٰهِيْمَ مَكَانَ الْبَيْتِ اَنْ							
कि	ख़ाने क़अबा की जगह	इब्राहीम के लिए	हम ने ठीक कर दी	और जब	25	दर्दनाक	अज़ाब
لَّا تُشْرِكْ بِىْ شَيْئًا وَطَهَّرْ بَيْتِيْ لِلطَّآفِيْنَ وَالْقَائِمِيْنَ							
और क़ियाम करने वाले	तवाफ़ करने वालों के लिए	मेरा घर	और पाक रखना	किसी शै	मेरे साथ	न शरीक करना	
وَالرُّكْعِ السُّجُوْدِ ﴿٢٦﴾ وَاذْنُ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا							
पैदल	वह तेरे पास आएँ	हज का	लोगों में	और एलान कर दो	26	सिज्दा करने वाले	और रुकूअ़ करने वाले
وَعَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّآتِيْنَ مِنْ كُلِّ فِجٍّ عَمِيْقٍ ﴿٢٧﴾ لِّيَشْهَدُوْا							
ताकि वह देखें	27	दूर दराज़	हर रास्ता	से	वह आती है	हर दुबली ऊँटनी	और पर
مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِيْ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمَةٍ							
जाने पहचाने (मुक़र्ररा) दिन	में	अल्लाह का नाम	वह याद करें (करलें)	अपने	फ़ाइदे		
عَلٰى مَا رَزَقْنٰهُمْ مِّنْ بَهِيمَةِ الْاَنْعَامِ فَكُلُوْا مِنْهَا							
उस से	पस तुम खाओ	मवेशी	चौपाए	से	हम ने उन्हें दिया	जो	पर
وَاَطْعَمُوْا الْبَايْسَ الْفَقِيْرَ ﴿٢٨﴾ ثُمَّ لِيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ							
अपना मैल कुचैल	चाहिए कि दूर करें	फिर	28	मोहताज	वदहाल	और खिलाओ	
وَلْيُوفُوْا نُدُوْرَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوْا بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٢٩﴾							
29	क़दीम घर	और तवाफ़ करें	अपनी नज़रें	और पूरी करें			
ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُعْظَمْ حُرْمَتِ اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لّٰهُ عِنْدَ رَبِّهِ ۗ							
उसके रब के नज़्दीक	उसके लिए	बेहतर	पस वह	शज़ाइरे अल्लाह (अल्लाह की निशानियां)	ताज़ीम करे	और जो	यह
وَاَحَلَّتْ لَكُمْ الْاَنْعَامَ اِلَّا مَا يُثِيْ عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوْا							
पस तुम बचो	तुम पर-तुम को	जो पढ़ दिए गए	सिवाए	मवेशी	तुम्हारे लिए	और हलाल करार दिए गए	
الرَّجْسِ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ﴿٣٠﴾							
30	झूटी	वात	और बचो	वुत (जमा)	से	गन्दगी	

ع १०

حَنَفَاءَ لِلَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَكَأَنَّمَا							
तो गोया	अल्लाह का	शरीक करेगा	और जो	उस के साथ	शरीक करने वाले	न	अल्लाह के लिए एक रख हो कर
خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ فَتَخَطَفَهُ الطَّيْرُ أَوْ تَهَوَّى بِهِ الرِّيحُ فِي							
में	हवा	उस को	फेंक देती है	या	परिन्दे	पस उसे उचक ले जाते हैं	आस्मान से वह गिरा
مَكَانٍ سَحِيْقٍ ﴿٣١﴾ ذَلِكَ وَمَنْ يُعْظَمِ شَعَائِرَ اللَّهِ فَإِنَّهَا مِنْ							
से	तो बेशक यह	शआइरे अल्लाह	ताज़ीम करेगा	और जो	यह	31	दूर दराज़ किसी जगह
تَقْوَى الْقُلُوبِ ﴿٣٢﴾ لَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ							
फिर	एक मुदते मुक़र्रर	तक	नफ़ा (फ़ाइदे)	उस में	तुम्हारे लिए	32	(जमा) कल्व (दिल) परहेज़गारी
مَجَلَّهَا إِلَىٰ الْبَيْتِ الْعَتِيقِ ﴿٣٣﴾ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا							
कुरबानी	हम ने मुक़र्रर की	और हर उम्मत के लिए	33	बैते क़दीम (बैतुल्लाह)	तक	उन के पहुँचने का मुक़ाम	
لِيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُمْ مِنْ بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ							
मवेशी	चौपाए	से	जो हम ने दिए उन्हें	पर	अल्लाह का नाम	ताकि वह लें	
فَالَهُكُمْ إِلَهُ وَاحِدٌ فَلَهُ أَسْلِمُوا وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِينَ ﴿٣٤﴾							
34	आजिज़ी से गर्दन झुकाने वाले	और खुशख़बरी दें	फ़रमाबरदार हो जाओ	पस उस के	माबूदे यकता	पस तुम्हारा माबूद	
الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَالصَّابِرِينَ عَلَىٰ							
पर	और सब्र करने वाले	उन के दिल	डर जाते हैं	अल्लाह का नाम लिया जाए	जब	वह जो	
مَا أَصَابَهُمْ وَالْمُقِيمِي الصَّلَاةِ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٣٥﴾							
35	वह खर्च करते हैं	हम ने उन्हें दिया	और उस से जो	नमाज़	और काइम करने वाले	जो उन्हें पहुँचे	
وَالْبُدْنَ جَعَلْنَاهَا لَكُمْ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ لَكُمْ فِيهَا حَيْرٌ							
भलाई	उस में	तुम्हारे लिए	शआइरे अल्लाह	से	तुम्हारे लिए	हम ने मुक़र्रर किए	और कुरबानी के ऊँट
فَاذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا صَوَافٍ فَإِذَا وَجَبَتْ جُنُوبُهَا							
उन के पहलू	गिर जाएं	फिर जब	क़तार बान्ध कर	उन पर	अल्लाह का नाम	पस लो तुम	
فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطِعُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ كَذَلِكَ سَخَّرْنَاهَا							
हम ने उन्हें मुसख़्ख़र किया	इसी तरह	और सवाल करने वाले	सवाल न करने वाले	और खिलाओ	उन से	तो खाओ	
لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٣٦﴾ لَنْ يَنَالَ اللَّهُ لُحُومُهَا وَلَا							
और न	उन का गोशत	हरगिज़ नहीं पहुँचता अल्लाह को	36	शुक्र करो	ताकि तुम	तुम्हारे लिए	
دِمَائُهَا وَلَكِنْ يَنَالُهُ التَّفْؤَىٰ مِنْكُمْ كَذَلِكَ سَخَّرَهَا							
हम ने उन्हें मुसख़्ख़र किया	इसी तरह	तुम से	तक्वा	उस को पहुँचता	और लेकिन (बल्कि)	उन का खून	
لَكُمْ لِيُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَيْتُمْ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٧﴾							
37	नेकी करने वाले	और खुशख़बरी दें	जो उस ने हिदायत दी तुम्हें	पर	अल्लाह	ताकि तुम बड़ाई से याद करो	तुम्हारे लिए

(सब को छोड़ कर) अल्लाह के लिए एक रख हो कर, (किसी को) न शरीक करने वाले उस के साथ, और जो कोई अल्लाह का शरीक करेगा तो गोया वह आस्मान से गिरा, फिर उसे परिन्दे उचक ले जाते हैं या फेंक देती है उस को हवा किसी दूर दराज़ की जगह में। (31)

यह (है हुक्म) और जो शआइरे अल्लाह (अल्लाह की निशानियाँ) की ताज़ीम करेगा तो बेशक यह दिलों की परहेज़गारी से है। (32) तुम्हारे लिए उन (मवेशियों) में एक मुदते मुक़र्रर तक फ़ाइदे (हासिल करना जाइज़) है, फिर उन के पहुँचने का मुक़ाम बैते क़दीम (बैतुल्लाह) के पास है। (33)

और हम ने हर उम्मत के लिए कुरबानी मुक़र्रर की ताकि वह अल्लाह का नाम लें (जुवह करते वक़्त) उन मवेशियों चौपायों पर जो हम ने उन्हें दिए हैं, पस तुम्हारा माबूद, माबूदे यकता है, पस उस के फ़रमाबरदार हो जाओ, और (ऐ मुहम्मद स) आजिज़ी से गर्दन झुकाने वालों को खुशख़बरी दें। (34)

वह (जिन की कैफ़ियत यह है कि) जब अल्लाह का नाम लिया जाए तो उन के दिल डर जाते हैं, और वह सब्र करने वाले उस पर जो उन्हें पहुँचे, और नमाज़ काइम करने वाले, और जो हम ने उन्हें दिया उस में से वह खर्च करते हैं। (35)

और कुरबानी के ऊँट हम ने तुम्हारे लिए शआइरे अल्लाह (अल्लाह की निशानियाँ) मुक़र्रर किए, तुम्हारे लिए उन में भलाई है, पस अल्लाह का नाम लो (जुवह करते वक़्त) उन पर क़तार बान्ध कर, फिर जब उन के पहलू (ज़मीन पर) गिर जाएं (जुवह हो जाएं) तो उन में से (खुद भी) खाओ और खिलाओ, सवाल न करने वालों को और सवाल करने वालों को, इसी तरह हम ने उन्हें तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र (ज़ेरे फ़रमान) किया है ताकि तुम शुक्र करो (एहसान मानो)। (36)

अल्लाह को हरगिज़ नहीं पहुँचता उन का गोशत और न उन का खून, बल्कि उस को पहुँचता है तक्वा (तुम्हारे दिलों की परहेज़गारी), उसी तरह हम ने उन्हें तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र (ज़ेरे फ़रमान) किया ताकि तुम अल्लाह को बड़ाई से याद करो उस पर जो उस ने तुम्हें हिदायत दी, और नेकी करने वालों को खुशख़बरी दें। (37)

वेशक अल्लाह दूर करता है मोमिनों से (दुश्मनों के जरूर), वेशक अल्लाह किसी भी दगावाज़ (खाइन) नाशुक्रे को पसंद नहीं करता। (38) इज़्ने (जिहाद) दिया गया उन लोगों को जिन से (काफिर) लड़ते हैं, क्योंकि उन पर जुल्म किया गया, और अल्लाह वेशक उन की मदद पर ज़रूर कुदतर रखता है। (39) जो लोग निकाले गए अपने शहरों से नाहक, सिर्फ (इस बिना पर) कि वह कहते हैं हमारा रब अल्लाह है, और अगर अल्लाह दफ़अ न करता लोगों को एक दूसरे से, तो सोमए (राहिवों के खिलवत खाने) और (नसारा के) गिरजे, और (यहूद के) इबादत खाने और (मुसलमानों की) मसजिदें ढा दी जाती जिन में अल्लाह का नाम बकसूरत लिया जाता है, और अलवत्ता अल्लाह ज़रूर उस की मदद करेगा जो उस की मदद करता है, वेशक अल्लाह तवाना, ग़ालिव है। (40) वह लोग कि अगर हम उन्हें मुल्क में दस्तरस (इख़्तियार) दें तो मनाज़ काइम करें और ज़कात अदा करें और नेक कामों का हुक्म दें और बुराई से रोकें, और तमाम कामों का अनुजाम अल्लाह ही के लिए है। (41) और अगर यह तुम्हें झुटलाए तो इन से क़व्ल झुटलाया नूह (अ) की कौम ने, और आद और समूद ने, (42) और इब्राहीम (अ) की कौम ने, और कौमे लूत (अ), (43) और मदनन वालों ने, और मूसा (अ) को (भी) झुटलाया गया, पस मैं ने काफिरों को ढील दी, फिर मैं ने उन्हें पकड़ लिया, तो कैसा हुआ मेरे इन्कार (का अनुजाम)! (44) सो कितनी ही बस्तियां हैं जिन्हें हम ने हलाक किया और वह ज़ालिम थी, तो वह (अब) अपनी छतों पर गिरी पड़ी है, और (कितने ही) कुएं बेकार पड़े हैं, और बहुत से गचकारी के (पुख़्ता) महल (वीरान पड़े हैं)। (45) पस क्या वह ज़मीन पर चलते फिरते नहीं जो उन के दिल (ऐसे) हो जाते कि उन से समझने लगते, या उन के कान (ऐसे हो जाते कि) उन से सुनने लगते, क्यों कि आँखें दरहकीकत अन्धी नहीं हुआ करती, बल्कि दिल जो सीनों में है अन्धे हो जाया करते हैं। (46)

<p>إِنَّ اللَّهَ يُدْفِعُ عَنِ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ</p>							
किसी- तमाम	पसंद नहीं करता	वेशक अल्लाह	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	से	बचाव करता है	वेशक अल्लाह	
<p>خَوَّانٍ كَفُورٍ ﴿٣٨﴾ أُوذِنَ لِلَّذِينَ يُقْتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظَلَمُوا وَإِنَّ اللَّهَ</p>							
और वेशक अल्लाह	उन पर जुल्म किया गया	क्योंकि वह	जिन से लड़ते हैं	उन लोगों को	इज़्ने दिया गया	38	नाशुक्रा दगावाज़
<p>عَلَىٰ نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ ﴿٣٩﴾ الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ</p>							
नाहक	अपने घर (जमा) शहरों	से	निकाले गए	जो लोग	39	ज़रूर कुदतर रखता है	उन की मदद पर
<p>إِلَّا أَنْ يَقُولُوا رَبُّنَا اللَّهُ وَلَوْ لَا دَفَعُ اللَّهُ النَّاسَ بَعْضَهُمْ</p>							
उन के वाज़ (एक को)	लोग	अल्लाह	दफ़अ करता	और अगर न	हमारा रब अल्लाह	वह कहते हैं	मगर (सिर्फ) यह कि
<p>بِبَعْضٍ لَّهَدَمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَصَلَوَاتٌ وَمَسَاجِدُ يُذَكَّرُ</p>							
ज़िक्र किया हाता है (लिया जाता है)	और मसजिदें	और इबादत खाने	और गिरजे	सोमए	तो ढा दिए जाते	वाज़ से (दूसरे)	
<p>فِيهَا اسْمُ اللَّهِ كَثِيرًا وَلَيَنْصُرَنَّ اللَّهُ مَنْ يَنْصُرُهُ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ</p>							
ताक़्त वाला (तवाना)	वेशक अल्लाह	उस की मदद करता है	जो	और अलवत्ता ज़रूर मदद करेगा अल्लाह	बहुत- बकसूरत	अल्लाह	नाम उन में
<p>عَزِيزٌ ﴿٤٠﴾ الَّذِينَ إِنْ مَكَّنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ أَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوْا</p>							
और अदा करें	मनाज़	वह काइम करें	ज़मीन (मुल्क) में	हम दस्तरस दें उन्हें	अगर	वह लोग जो	40 ग़ालिव
<p>الزَّكَاةَ وَأَمَرُوا بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ وَاللَّهُ عَاقِبَةُ</p>							
और अल्लाह के लिए अनुजाम कार	बुराई से	और वह रोकें	नेक कामों का	और हुक्म दें	ज़कात		
<p>الْأُمُورِ ﴿٤١﴾ وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ</p>							
और आद	नूह की कौम	इन से क़व्ल	तो झुटलाया	तुम्हें झुटलाए	और अगर	41	तमाम काम
<p>وَتَمُودٌ ﴿٤٢﴾ وَقَوْمُ إِبْرَاهِيمَ وَقَوْمُ لُوطٍ ﴿٤٣﴾ وَأَصْحَابُ مَدْيَنَ وَكُذِّبَ</p>							
और झुटलाया गया	और मदनन वाले	43	और कौमे लूत (अ)	और इब्राहीम (अ) की कौम	42	और समूद	
<p>مُوسَىٰ فَأَمَلَيْتُ لِلْكَافِرِينَ ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٤٤﴾</p>							
44	मेरा इन्कार	हुआ	तो कैसा	मैं ने उन्हें पकड़ लिया	फिर	काफिरों को	पस मैं ने ढील दी मूसा (अ)
<p>فَكَأَيُّنَ مِنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا</p>							
अपनी छतें	पर	गिरी पड़ी	कि वह- यह	ज़ालिम	और यह (वह)	हम ने हलाक किया उन्हें	वस्तियां तो कितनी
<p>وَبُئِرَ مَعْظَلَةٌ وَقَصْرٍ مَشِيدٍ ﴿٤٥﴾ أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَتَكُونُ</p>							
जो हो जाते	ज़मीन में	पस क्या वह चलते फिरते नहीं	45	गचकारी के	और बहुत महल	बेकार	और कुएं
<p>لَهُمْ قُلُوبٌ يَّعْقِلُونَ بِهَا أَوْ آذَانٌ يَّسْمَعُونَ بِهَا فَإِنَّهَا</p>							
क्यों कि दरहकीकत	उन से	सुनने लगते	या कान (जमा)	उन से	वह समझने लगते	दिल	उन के
<p>لَا تَعْمَى الْأَبْصَارُ وَلَكِنْ تَعْمَى الْقُلُوبُ الَّتِي فِي الصُّدُورِ ﴿٤٦﴾</p>							
46	सीनों में	वह जो	दिल (जमा)	अन्धे हो जाते हैं	और लेकिन (बल्कि)	आँखें	अन्धी नहीं होती

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ وَعْدَهُ وَإِنَّ يَوْمًا							
एक दिन	और वेशक	अपना वादा	अल्लाह	ख़िलाफ़ करेगा	और हरगिज़ नहीं	अज़ाब	और वह तुम से जल्दी मांगते हैं
عِنْدَ رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ ﴿٤٧﴾ وَكَأَيِّنْ مِنْ قَرْيَةٍ							
वसतियां	और कितनी ही	47	तुम गिनते हो	उस से जो	हज़ार साल के मानिंद	तुम्हारे रब के हां	
أَمَلَيْتُمْ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ أَخَذْتُهَا وَاللَّيِّ الْمَصِيرُ ﴿٤٨﴾ قُلْ							
फरमा दें	48	लौट कर आना	और मेरी तरफ़	मैं ने पकड़ा उन्हें	फिर	ज़ालिम	और वह उन को मैं ने ढील दी
يَأْتِيهَا النَّاسُ إِنَّمَا أَنَا لَكُمْ نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٤٩﴾ فَالَّذِينَ آمَنُوا							
पस जो लोग ईमान लाए	49	डराने वाला आशकारा	तुम्हारे लिए	मैं	इस के सिवा नहीं	ऐ लोगो!	
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٥٠﴾ وَالَّذِينَ سَعَوْا							
जिन लोगों ने कोशिश की	50	बाइज़्ज़त	और रिज़्क	बख्शिश	उन के लिए	अच्छे	और उन्होंने ने अमल किए
فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿٥١﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا							
और नहीं भेजा हम ने	51	दोज़ख़ वाले	वही हैं	आजिज़ करने (हराने)	हमारी आयात	में	
مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ وَلَا نَبِيٍّ إِلَّا إِذَا تَمَنَّى أَلْقَى الشَّيْطَانُ							
शैतान	डाला	उस ने आर्जू की	जब	मगर	नबी	और न	से - कोई तुम से पहले
فِي أُمْنِيَّتِهِ فَيَنْسَخُ اللَّهُ مَا يُلْقِي الشَّيْطَانُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللَّهُ							
अल्लाह मज़बूत कर देता है	फिर	शैतान	जो डालता है	अल्लाह	पस मिटा देता है	उस की आर्जू में	
آيَتِهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٢﴾ لِيَجْعَلَ مَا يُلْقِي الشَّيْطَانُ							
शैतान	जो डाला	ताकि बनाए वह	52	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	अपनी आयात
فِتْنَةً لِلَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ وَالْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ ط							
उन के दिल	और सख़्त	मरज़	उन के दिलों में	उन लोगों के लिए	एक आज़माइश		
وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَفِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ﴿٥٣﴾ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ							
वह लोग जिन्हें	और ताकि जान लें	53	दूर - बड़ी	अलवत्ता सख़्त ज़िद में	ज़ालिम (जमा)	और वेशक	
أُوتُوا الْعِلْمَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَيُؤْمِنُوا بِهِ فَتُخْبِتَ لَهُ							
उस के लिए	तो झुक जाएं	उस पर	तो वह ईमान ले आए	तुम्हारे रब से	हक़	कि यह	इल्म दिया गया
قُلُوبُهُمْ ط وَإِنَّ اللَّهَ لَهَادٍ الَّذِينَ آمَنُوا إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٥٤﴾							
54	सीधा	रास्ता	तरफ़	वह लोग जो ईमान लाए	हिदायत देने वाला	और वेशक अल्लाह	उन के दिल
وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي مِرْيَةٍ مِنْهُ حَتَّى تَأْتِيَهُمْ							
आए उन पर	यहां तक कि	उस से	शक	में	जिन लोगों ने कुफ़ किया	और हमेशा रहेंगे	
السَّاعَةَ بَغْتَةً أَوْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ يَوْمَ عَقِيمٍ ﴿٥٥﴾							
55	मनहूस दिन	अज़ाब	या आ जाए उन पर	अचानक	क़ियामत		

और तुम से अज़ाब जल्दी मांगते हैं, और हरगिज़ न अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ करेगा, और वेशक तुम्हारे रब के हां एक दिन हज़ार साल के मानिंद है उस से जो तुम गिनते हो (तुम्हारे हिसाब में)। (47) और कितनी ही वसतियां हैं, मैं ने उन को ढील दी और वह ज़ालिम थीं, फिर मैं ने उन्हें पकड़ा, और मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है। (48) फरमा दें, ऐ लोगो! इस के सिवा नहीं कि मैं तुम्हारे लिए आशकारा डराने वाला हूँ। (49) पस जो लोग ईमान लाए, और उन्होंने ने अच्छे अमल किए, उन के लिए बख्शिश और बाइज़्ज़त रिज़्क है। (50) और जिन लोगों ने कोशिश की (अपने ज़अम में) हमारी आयात को हराने में, वही हैं दोज़ख़ वाले। (51) और हम ने तुम से पहले नहीं भेजा कोई रसूल और न नबी, मगर जब उस ने आर्जू की तो शैतान ने उस की आर्जू में (वसवसा) डाला, पस शैतान जो डालता है अल्लाह मिटा देता है, फिर अल्लाह अपनी आयात को मज़बूत कर देता है, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (52) ताकि (उस वसवसे को) जो शैतान ने डाला उन लोगों के लिए आज़माइश बना दे जिन के दिलों में मरज़ है और उन के दिल सख़्त हैं, और वेशक ज़ालिम अलवत्ता सख़्त ज़िद में हैं। (53) और ताकि जान लें वह लोग जिन्हें इल्म दिया गया है कि यह तुम्हारे रब (की तरफ़ से) हक़ है तो उस पर ईमान ले आएँ और उस के लिए झुक जाएँ उन के दिल, और वेशक अल्लाह उन लोगों को सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत देने वाला है जो ईमान लाए। (54) और वह हमेशा रहेंगे उस से शक में जिन लोगों ने कुफ़ किया, यहां तक कि उन पर अचानक क़ियामत आ जाए, या उन पर आ जाए मनहूस दिन का अज़ाब। (55)

उस दिन वादशाही अल्लाह के लिए है, वह उन के दरमियान फैसला करेगा, पस जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए वह नेमतों के बागात में होंगे। (56) और जिन लोगों ने कुफ़ किया और हमारी आयात को झुटलाया उन्हीं के लिए है ज़िल्लत का अज़ाब। (57) और जिन लोगों ने अल्लाह के रास्ते में हिज्रत की, फिर मारे गए (शहीद हो गए) या मर गए, अल्लाह अलबत्ता उन्हें ज़रूर अच्छा रिज़्क देगा, और अल्लाह वेशक सब से बेहतर रिज़्क देने वाला। (58) वह अलबत्ता उन्हें ज़रूर ऐसे मुक़ाम में दाख़िल करेगा जिसे वह पसंद फ़रमाएंगे, और अल्लाह वेशक इल्म वाला, हिल्म वाला है। (59) यह (तो हुआ), और जस ने दुश्मन को (उसी क़द्र) सताया जैसे उसे सताया गया था, फिर उस पर ज़ियादती की गई तो अल्लाह ज़रूर उस की मदद करेगा, वेशक अल्लाह अलबत्ता माफ़ करने वाला, बख़शने वाला है। (60) यह इस लिए है कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है, और दिन को दाख़िल करता है रात में, और यह कि अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। (61) यह इस लिए है कि अल्लाह ही हक़ है, और यह कि जिसे वह उस के सिवा पुकारते हैं वह वातिल है, और यह कि अल्लाह ही बुलन्द मरतबा, बड़ा है। (62) क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह ने आस्मानों से पानी उतारा तो ज़मीन सरसब्ज़ हो गई, वेशक अल्लाह निहायत मेहरबान ख़बर रखने वाला है। (63) उसी के लिए है जो आस्मानों में है, और जो कुछ ज़मीन में है, और वेशक अल्लाह वही बेनियाज़, तमाम ख़ुबियों वाला है। (64)

الْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فَالَّذِينَ آمَنُوا						
पस जो लोग ईमान लाए	उन के दरमियान	फैसला करेगा	अल्लाह के लिए	उस दिन	वादशाही	
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٥٦﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا						
और जिन लोगों ने कुफ़ किया	56	नेमतों के बागात	में	अच्छे	और उन्हीं ने अमल किए	
وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِينَ						
और जिन लोगों ने	57	अज़ाबे ज़िल्लत	उन के लिए	पस वही लोग	हमारी आयात को	और झुटलाया
هَاجَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ قُتِلُوا أَوْ مَاتُوا لَيَرْزُقَنَّهُمُ						
अलबत्ता वह उन्हें रिज़्क देगा	वह मर गए	या	मारे गए	फिर	अल्लाह का रास्ता	में
اللَّهُ رِزْقًا حَسَنًا وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿٥٨﴾						
58	रिज़्क देने वाला	सब से बेहतर	अलबत्ता वह	और वेशक अल्लाह	अच्छा	रिज़्क अल्लाह
لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَرْضَوْنَهُ وَإِنَّ اللَّهَ لَعَلِيمٌ						
अलबत्ता इल्म वाला	और वेशक अल्लाह	वह उसे पसंद करेंगे	ऐसे मुक़ाम में	वह अलबत्ता उन्हें ज़रूर दाख़िल करेगा		
حَلِيمٌ ﴿٥٩﴾ ذَلِكَ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوقِبَ بِهِ						
उस से	उसे सताया गया	जैसे	सताया	और जो-जिस	यह	59
ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لِيَنْصُرَنَّهُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ لَعَفُؤٌ غَفُورٌ ﴿٦٠﴾						
60	बख़शने वाला	अलबत्ता माफ़ करने वाला	वेशक अल्लाह	अल्लाह	ज़रूर मदद करेगा उस की	ज़ियादती की गई उस पर
ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ يُوَلِّجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوَلِّجُ النَّهَارَ						
दिन	और दाख़िल करता है	दिन में	रात	दाख़िल करता है	इस लिए कि अल्लाह	यह
فِي اللَّيْلِ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿٦١﴾ ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ						
इस लिए कि अल्लाह	यह	61	देखने वाला	सुनने वाला	और यह कि अल्लाह	रात में
هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ هُوَ الْبَاطِلُ وَأَنَّ						
और यह कि	वातिल	वह	उस के सिवा	वह पुकारते हैं	जो-जिसे	और यह कि वही हक़
اللَّهُ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ﴿٦٢﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ						
उतारा	कि अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा	62	बड़ा	बुलन्द मरतबा	वह अल्लाह
مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَتُصْبِحُ الْأَرْضُ مُخْضَرَّةً إِنَّ						
वेशक	सरसब्ज़	ज़मीन	तो हो गई	पानी	आस्मान	से
اللَّهُ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ﴿٦٣﴾ لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا						
और जो कुछ	आस्मानों में	जो कुछ	उसी के लिए	63	ख़बर रखने वाला	निहायत मेहरबान
فِي الْأَرْضِ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٦٤﴾						
64	तमाम ख़ुबियों वाला	बेनियाज़	अलबत्ता वही	और वेशक अल्लाह	ज़मीन में	

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي الْأَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِي							
चलती है	और कशती	ज़मीन में	जो	तुम्हारे लिए	मुसख़र किया	कि अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा
فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ وَيُمْسِكُ السَّمَاءَ أَنْ تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ							
ज़मीन पर	कि वह गिर पड़े	आस्मान	और वह रोके हुए है	उस के हुकम से	दर्या में		
إِلَّا بِإِذْنِهِ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿٦٥﴾ وَهُوَ الَّذِي							
जिस ने	और वही	65	निहायत मेहरबान	बड़ा शफ़क़त करने वाला	लोगों पर	वेशक अल्लाह	उस के हुकम से मगर
أَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ ﴿٦٦﴾							
66	बड़ा नाशुक्रा	इन्सान	वेशक	तुम्हें ज़िन्दा करेगा	फिर	मारेगा तुम्हें	फिर
لِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوهُ فَلَا يُنَازِعَنَّكَ							
सो चाहिए कि तुम से न झगड़ा करें	उस पर बन्दगी करते हैं	वह	एक तरीके इबादत	हम ने मुक़रर किया	हर उम्मत के लिए		
فِي الْأَمْرِ وَاذْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ إِنَّكَ لَعَلَىٰ هُدًى مُّسْتَقِيمٌ ﴿٦٧﴾							
67	सीधी	राह	पर	वेशक तुम	अपने रब की तरफ़	और बुलाओ	उस मामले में
وَإِنْ جَادَلُوكَ فَقُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٦٨﴾ اللَّهُ							
अल्लाह	68	जो तुम करते हो	खूब जानता है	अल्लाह	तो आप कह दें	वह तुम से झगड़ें	और अगर
يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٦٩﴾							
69	इख़तिलाफ़ करते	उस में	तुम थे	जिस में	रोज़े कियामत	तुम्हारे दरमियान	फैसला करेगा
أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّ ذَلِكَ فِي كِتَابٍ							
किताब में	यह	वेशक	और ज़मीन	आस्मानों में	जो	जानता है	कि अल्लाह
إِنَّ ذَلِكَ عَلَىٰ اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٧٠﴾ وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا							
जो	अल्लाह के सिवा	और वह बन्दगी करते हैं	70	आसान	अल्लाह पर	यह	वेशक
لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهِ عِلْمٌ وَمَا لِلظَّالِمِينَ							
ज़ालिमों के लिए	और नहीं	कोई इल्म	उस का	उन के लिए (उन्हें)	नहीं	और जो-जिस	कोई सनद
مِنْ نَّصِيرٍ ﴿٧١﴾ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ تَعْرِفُ فِي							
में-पर	तुम पहचानोगे	वाज़ेह	हमारी आयात	उन पर	पढ़ी जाती है	और जब	71
وَجُوهَ الَّذِينَ كَفَرُوا الْمُنْكَرُ يَكَادُونَ يَسْطُونَ بِالَّذِينَ							
उन पर जो	वह हमला कर दें	क़रीब है	नाखुशी	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	चेहरे		
يَتْلُونَ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا فَلْأَفْأَنَسِكُمْ بِشَرِّ مَنِ ذَلِكُمْ							
इस	से	बदतर	क्या मैं तुम्हें बतला दूँ?	फरमा दें	हमारी आयात	उन पर	पढ़ते हैं
النَّارِ وَعَدَهَا اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٧٢﴾							
72	ठिकाना	और बुरा	जिन लोगों ने कुफ़ किया	अल्लाह	जिस का वादा किया	दोज़ख़	ठिकाना। (72)

क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए मुसख़र किया जो कुछ ज़मीन में है, और कशती उस के हुकम से दर्या में चलती है, और वह आस्मानों को रोके हुए है कि वह ज़मीन पर न गिर पड़े मगर उस के हुकम से, वेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा शफ़क़त करने वाला निहायत मेहरबान है। (65) और वही है जिस ने तुम्हें ज़िन्दा किया, फिर तुम्हें मारेगा, फिर तुम्हें ज़िन्दा करेगा, वेशक इन्सान बड़ा नाशुक्रा है। (66) हम ने हर उम्मत के लिए एक तरीके इबादत मुक़रर किया है, वह उस पर (उसी के मुताबिक) बन्दगी करते हैं, सो चाहिए कि इस मामले में न झगड़ें, और अपने रब की तरफ़ बुलाओ, वेशक तुम हो सीधी राह पर। (67) और अगर वह तुम से झगड़ें तो आप (स) कह दें अल्लाह खूब जानता है जो तुम करते हो। (68) अल्लाह रोज़े कियामत तुम्हारे दरमियान उस बात का फैसला करेगा जिस में तुम इख़तिलाफ़ करते थे। (69) क्या तुझे मालूम नहीं? कि अल्लाह जानता है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, वेशक यह किताब में है, वेशक यह अल्लाह पर आसान है। (70) वह अल्लाह के सिवा (उस की) बन्दगी करते हैं जिस की उस ने कोई सनद नहीं उतारी, और उस का (खुद) उन्हें कोई इल्म नहीं, और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं। (71) और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयात पढ़ी जाती है, तो तुम काफ़िरों के चेहरों पर नाखुशी के (आसार) पहचान लोगे, क़रीब है कि वह उन पर हमला कर दें जो उन पर हमारी आयतें पढ़ते हैं, फरमा दें, क्या मैं तुम्हें बतलाऊँ जो इस से बदतर है, दोज़ख़, जिस का अल्लाह ने काफ़िरों से वादा किया, और बुरा है (वह) ठिकाना। (72)

ऐ लोगो! एक मिसाल बयान की जाती है, पस उस को (कान खोल कर) सुनो, बेशक जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो वह हरगिज़ एक मक्खी (भी) न पैदा कर सकेंगे अगरचे उस के लिए वह सब जमा हो जाएं, और अगर मक्खी उन से कुछ छीन ले तो वह उस से न छुड़ा सकेंगे, (कितना) बोदा है चाहने वाला और जिस को चाहा (वह भी)। (73)

उन्होंने अल्लाह की कद्र न जानी (जैसे) उस की कद्र करने का हक था, बेशक अल्लाह कुव्वत वाला ग़ालिब है। (74)

अल्लाह फ़रिश्तों में से और आदमियों में से पैग़ाम पहुँचाने वाले चुन लेता है, बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। (75)

वह जानता है जो उन के आगे और जो उन के पीछे है, और अल्लाह (ही) की तरफ़ सारे कामों की वाज़ग़शत है। (76)

ऐ ईमान वालो! तुम रुकूअ करो, और सिज्दा करो, और इबादत करो अपने रब की, और अच्छे काम करो ताकि तुम दो ज़हान में कामयाबी पाओ। (77)

और (अल्लाह की राह में) कोशिश करो (जैसे) कोशिश करने का हक़ है। उस ने तुम्हें चुना, और उस ने तुम पर दीन में कोई तंगी नहीं डाली, तुम्हारे बाप इब्राहीम (अ) का दीन, उस ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है, इस से क़ब्ल (भी) और इस (कुरआन) में भी, ताकि रसूल (अक़्रम स) तुम्हारे निगरान ओ गवाह हों और तुम निगरान ओ गवाह हो लोगों पर, पस नमाज़ काइम करो, और ज़कात अदा करो, और अल्लाह (की रस्सी) को मज़बूती से थाम लो, वह तुम्हारा कारसाज़ है, सो क्या ही अच्छा है कारसाज़, और (क्या ही) अच्छा है मददगार! (78)

يَا أَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاستَمِعُوا لَهُ إِنَّ الَّذِينَ						
बेशक वह जिन्हें	उस को	पस तुम सुनो	एक मिसाल	बयान की जाती है	ऐ लोगो!	
تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَنْ يَخْلُقُوا ذَبَابًا وَلَوْ						
अगरचे	एक मक्खी	पैदा कर सकेंगे	हरगिज़ न	अल्लाह के सिवा	तुम पुकारते हो	
اجْتَمَعُوا لَهُ وَإِنْ يَسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَا يَسْتَنْقِذُوهُ						
न छुड़ा सकेंगे उसे	कुछ	मक्खी	उन से छीन ले	और अगर	उस के लिए	वह जमा हो जाएं
مِنْهُ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوبُ ﴿٧٣﴾ مَا قَدَرُوا اللَّهَ						
अल्लाह	न कद्र जानी उन्होंने ने	73	और जिस को चाहा	चाहने वाला	कमज़ोर (बोदा है)	उस से
حَقَّ قَدْرُهُ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٧٤﴾ اللَّهُ يَصْطَفِي						
चुन लेता है	अल्लाह	74	ग़ालिब	कुव्वत वाला	बेशक अल्लाह	उस के कद्र करने का हक़
مِنَ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا وَمِنَ النَّاسِ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿٧٥﴾						
75	देखने वाला	सुनने वाला	बेशक अल्लाह	और आदमियों में से	पैग़ाम पहुँचाने वाले	फ़रिश्तों में से
يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ						
लौटना (वाज़ग़शत)	अल्लाह और तरफ़	और जो उन के पीछे		उन के हाथों के दरमियान (आगे)	जो	वह जानता है
الْأُمُورِ ﴿٧٦﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ارْكَعُوا وَاسْجُدُوا						
और सिज्दा करो	तुम रुकूअ करो	वह लोग जो ईमान लाए		ऐ	76	सारे काम
وَاعْبُدُوا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٧٧﴾						
77	फ़लाह (दो ज़हान में कामयाबी) पाओ	ताकि तुम	अच्छे काम	और करो	अपना रब	और इबादत करो
وَجَاهِدُوا فِي اللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِ هُوَ اجْتَبَاكُمْ وَمَا						
और न	उस ने तुम्हें चुना	वह-उस	उस की कोशिश करना	हक़	अल्लाह (की राह) में	और कोशिश करो
جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّينِ مِنْ حَرَجٍ مِثْلَ أَبِيكُمْ						
तुम्हारे बाप	दीन	कोई तंगी	दीन में	तुम पर	डाली	
إِبْرَاهِيمَ هُوَ سَمُّكُمُ الْمُسْلِمِينَ مِنْ قَبْلُ وَفِي هَذَا						
और इस में	इस से क़ब्ल	मुस्लिम (जमा)	तुम्हारा नाम रखा	वह-उस	इब्राहीम (अ)	
لِيَكُونَ الرَّسُولُ شَهِيدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُونُوا شُهَدَاءَ						
गवाह-निगरान	और तुम हो	तुम पर	तुम्हारा गवाह (निगरान)	रसूल (स)	ताकि हो	
عَلَى النَّاسِ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاعْتَصِمُوا						
और मज़बूती से थाम लो	ज़कात	और अदा करो	नमाज़	पस काइम करो	लोगों पर	
بِاللَّهِ هُوَ مَوْلَاكُمْ فَنِعْمَ الْمَوْلَى وَنِعْمَ النَّصِيرُ ﴿٧٨﴾						
78	मददगार	और अच्छा है	मौला	सो अच्छा है	तुम्हारा मौला (कारसाज़)	वह अल्लाह को

عند الشافعي

١٠  
١٢



آيَاتُهَا 118 ﴿ (23) سُورَةُ الْمُؤْمِنُونَ ﴾ رُكُوعَاتُهَا 6									
रुकुआत 6			(23) सूरतुल मोमिनुन				आयात 118		
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ ﴿1﴾ الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ									
अपनी नमाज़ों में		वह जो		1		मोमिन (जमा)		फ़लाह पाई (कामयाब हुए)	
خَشَعُونَ ﴿2﴾ وَالَّذِينَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُونَ ﴿3﴾ وَالَّذِينَ									
और जो		3		मुँह फेरने वाले		लगू (बेहूदा बातों) से		वह	
और जो		2		खुशुअ (आजिज़ी) करने वाले		और जो		4	
هُمْ لِلزَّكَاةِ فَاعِلُونَ ﴿4﴾ وَالَّذِينَ هُمْ لِأُزْوَاجِهِمْ حَافِظُونَ ﴿5﴾									
5		हिफाज़त करने वाले		अपनी शर्मगाहों की		वह		और जो	
إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿6﴾									
6		कोई मलामत नहीं		पस बेशक वह		उन के दाएँ हाथ		जो मालिक हुए	
فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ﴿7﴾ وَالَّذِينَ هُمْ									
वह		और जो		7		हद से बढ़ने वाले		वह	
لِأَمْنِهِمْ وَعَعَدِهِمْ رِعُونَ ﴿8﴾ وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿9﴾									
9		हिफाज़त करने वाले		अपनी नमाज़ों		पर-की		वह	
أُولَٰئِكَ هُمُ الْوَارِثُونَ ﴿10﴾ الَّذِينَ يَرِثُونَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيهَا									
उस में		वह		जन्नत		वारिस होंगे		जो	
خَالِدُونَ ﴿11﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ سُلَالَةٍ مِّنْ طِينٍ ﴿12﴾									
12		मिट्टी से		खुलासा (चुनी हुई)		से		इन्सान	
ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نُطْفَةً فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ ﴿13﴾ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً									
जमा हुआ खून		नुत्फा		हम ने बनाया		फिर		13	
فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظْمًا فَكَسَوْنَا الْعِظْمَ									
हड्डियाँ		फिर हम ने पहनाया		हड्डियाँ		बोटी		फिर हम ने बनाया	
لَحْمًا ثُمَّ أَنشأناه خَلْقًا آخَرَ فَتَبَرَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ ﴿14﴾									
14		पैदा करने वाला		बेहतरीन		अल्लाह		पस बरकत वाला	
ثُمَّ إِنَّكُمْ بَعْدَ ذَلِكَ لَمَيِّتُونَ ﴿15﴾ ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تُبْعَثُونَ ﴿16﴾									
16		उठाए जाओगे		रोज़े कियामत		बेशक तुम		फिर	
وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَائِقٍ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غَافِلِينَ ﴿17﴾									
17		गाफ़िल		खलक (पैदाइश)		से		और हम नहीं	

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है (दो जहान में) कामयाब हुए वह मोमिन। (1) जो अपनी नमाज़ों में आजिज़ी करने वाले हैं। (2) और वह जो बेहूदा बातों से मुँह फेरने वाले हैं। (3) और वह जो ज़कात अदा करने वाले हैं। (4) और वह जो अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करने वाले हैं। (5) मगर अपनी वीवियों से या जिन के मालिक हुए उन के दाएँ हाथ (कनीज़ों) से, बेशक उन पर कोई मलामत नहीं। (6) पस जो उन के सिवा चाहे तो वही हैं हद से बढ़ने वाले। (7) और (कामयाब हैं वह मोमिन) वह जो अपनी अमानतों और अपने अहद का पास रखते हैं। (8) और वह जो अपनी नमाज़ों की हिफाज़त करने वाले हैं। (9) यही लोग हैं जो वारिस होंगे। (10) (जन्नत) फ़िरदौस के, वह उस में हमेशा रहेंगे। (11) और अलबत्ता हम ने इन्सान को चुनी हुई मिट्टी से पैदा किया। (12) फिर हम ने उसे मज़बूत जगह में नुत्फा ठहराया। (13) फिर हम ने नुत्फे को जमा हुआ खून बनाया, फिर हम ने बनाया जमे हुए खून (लोथड़े) को बोटी, फिर हम ने बोटी से हड्डियाँ बनाई, फिर हम ने हड्डियों को गोशत पहनाया, फिर हम ने उसे नई सूरत में उठा कर खड़ा किया, पस अल्लाह बाबरकत है बेहतरीन पैदा करने वाला। (14) फिर बेशक उस के बाद तुम ज़रूर मरने वाले हो। (15) फिर बेशक तुम रोज़े कियामत उठाए जाओगे। (16) और तहकीक हम ने तुम्हारे ऊपर बनाए सात रास्ते और हम पैदाइश से गाफ़िल नहीं। (17)

और हम ने आस्मानों से पानी उतारा एक अन्दाज़े के साथ, फिर उस को हम ने ज़मीन में ठहराया, और बेशक हम उस को ले जाने पर (भी) कादिर हैं। (18)

पस हम ने पैदा किए उस से तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों के बागात, तुम्हारे लिए उन में बहुत से मेवे हैं, और उस से तुम खाते हो। (19)

और दरख्त (ज़ैतून) जो तूरे सीना से निकलता है, वह उगता है तेल और सालन लिए हुए खाने वालों के लिए। (20)

और बेशक तुम्हारे लिए चौपायों में मुकामे इब्रत है, हम तुम्हें उन से पिलाते हैं (दूध) जो उन के पेटों में है, और तुम्हारे लिए उन में (और) बहुत से फाइदे हैं, और उन में से (बाज़ को) तुम खाते हो। (21)

और उन पर और कशती पर सवार किए जाते हो। (22)

और अलबत्ता हम ने नूह (अ) को उस की कौम की तरफ़ भेजा, पस उस ने कहा: ऐ मेरी कौम! अल्लाह की इवादात करो, उस के सिवा तुम्हारे लिए कोई माबूद नहीं, तो क्या तुम डरते नहीं? (23)

तो उस की कौम के जिन सरदारों ने कुफ़ किया, बोले यह (कुछ भी) नहीं मगर तुम जैसा एक बशर है, वह चाहता है कि तुम पर बड़ा बन बैठे, और अगर अल्लाह चाहता तो उतारता फ़रिश्ते, हम ने अपने पहले बाप दादा से यह (कभी) नहीं सुना। (24)

वह (कुछ भी) नहीं मगर एक आदमी है जिस को जुनून हो गया है, सो तुम उस का एक मुद्दत तक इन्तिज़ार करो। (25)

उस ने कहा ऐ मेरे रब! मेरी मदद फ़रमा उस पर कि उन्होंने ने मुझे झुटलाया। (26)

तो हम ने वही भेजी उस की तरफ़ कि हमारी आँखों के सामने हमारे हुकम से कशती बनाओ, फिर जब हमारा हुकम आए और तन्नूर उबलने लगे, तो उस (कशती) में हर किस्म के जोड़ों में से दो (एक नर एक मादा) रख लो और अपने घर वाले (भी सवार कर लो) उस के सिवा (जिस के गर्क होने पर) हुकम हो चुका है उन में से, और मुझ से उन के बारे में बात न करना जिन्होंने ने जुल्म किया है, बेशक वह गर्क किए जाने वाले हैं। (27)

وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَسْكَنَتْهُ فِي الْأَرْضِ ۗ وَإِنَّا عَلَىٰ									
पर	और बेशक हम	ज़मीन में	हम ने उसे ठहराया	अन्दाज़े के साथ	पानी	आस्मानों से	और हम ने उतारा		
ذَهَابٍ بِهِ لَقَدْ رُؤِنَ ﴿١٨﴾ فَأَنْشَأْنَا لَكُمْ بِهِ جَنَّتٍ مِّنْ نَّحِيلٍ									
खजूर (जमा)	से-के	बागात	उस से	तुम्हारे लिए	पस हम ने पैदा किए	18	अलबत्ता कादिर	उस का	ले जाना
وَأَعْنَابٍ لَّكُمْ فِيهَا فَوَاكِهُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿١٩﴾ وَشَجَرَةً									
और दरख्त	19	तुम खाते हो	और उस से	बहुत	मेवे	उस में	तुम्हारे लिए	और अंगूर (जमा)	
تَخْرُجُ مِنْ طُورِ سَيْنَاءَ تَنْبُتُ بِالذَّهْنِ ۗ وَصَبْغٍ لِلَّالِكِينَ ﴿٢٠﴾									
20	खाने वालों के लिए	और सालन	तेल के साथ-लिए	उगता है	तूरे सीना	से	निकलता है		
وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۗ نُسْقِيكُمْ مِمَّا فِي بُطُونِهَا وَلَكُمْ فِيهَا									
उन में	और तुम्हारे लिए	उन के पेटों में	उस से जो	हम तुम्हें पिलाते हैं	इब्रत-गौर का मुकाम	चौपायों में	तुम्हारे लिए	और बेशक	
مَنَافِعُ ۗ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٢١﴾ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ﴿٢٢﴾									
22	सवार किए जाते हो	और कशती पर	और उन पर	21	तुम खाते हो	और उन से	बहुत	फाइदे	
وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ									
तुम्हारे लिए नहीं	तुम अल्लाह की इवादात करो	ऐ मेरी कौम	पस उस ने कहा	उस की कौम की तरफ़	नूह (अ)	और अलबत्ता हम ने भेजा			
مِّنْ إِلَهِ غَيْرِهِ ۗ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٢٣﴾ فَقَالَ الْمَلَأُوا الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ									
उस की कौम	से-के	जिन्होंने ने कुफ़ किया	सरदार	तो वह बोले	23	क्या तो तुम डरते नहीं?	उस के सिवा	कोई माबूद	
مَا هَذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۗ يُرِيدُ أَنْ يَتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ ۗ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ									
अल्लाह चाहता	और अगर	तुम पर	कि बड़ा बन बैठे वह	वह चाहता है	तुम जैसा	एक बशर	मगर	यह नहीं	
لَأَنْزَلَ مَلَائِكَةً ۗ مَا سَمِعْنَا بِهَذَا فِي آبَائِنَا الْأُولِينَ ﴿٢٤﴾ إِنَّ هُوَ									
नहीं वह-यह	24	पहले	अपने बाप दादा से	यह	नहीं सुना हम ने	फरिश्ते	तो उतारता		
إِلَّا رَجُلًا بِهِ جِنَّةٌ فْتَرَبَّصُوا بِهِ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٢٥﴾ قَالَ رَبِّ انصُرْنِي									
मेरी मदद फ़रमा	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	25	एक मुद्दत तक	उस का	सो तुम इन्तिज़ार करो	जुनून	जिस को	एक आदमी मगर
بِمَا كَذَّبُونَ ﴿٢٦﴾ فَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ أَنْ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا									
हमारी आँखों के सामने	कशती	तुम बनाओ	कि	उस की तरफ़	तो हम ने वहि भेजी	26	उन्होंने ने मुझे झुटलाया	उस पर	
وَوَحَيْنَا فَإِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ فَاسْلُكْ فِيهَا مِنْ كُلِّ									
हर (किस्म) से	उस में	तो चला ले (रख ले)	और तन्नूर उबलने लगे	हमारा हुकम	आजाए	फिर जब	और हमारा हुकम		
زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ									
हुकम	उस पर	पहले हो चुका	जो-जिस	सिवा	और अपने घर वाले	दो	जोड़ा		
مِّنْهُمْ ۗ وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۗ إِنَّهُمْ مُّغْرَقُونَ ﴿٢٧﴾									
27	गर्क किए जाने वाले	बेशक वह	वह जिन्होंने ने जुल्म किया	में-वारे में	और न करना मुझ से बात	उन में से			

وَالْقُرْآنِ

۱۲۲

فَإِذَا اسْتَوَيْتَ أَنْتَ وَمَنْ مَعَكَ عَلَى الْفُلِكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ										
तमाम तारीफें अल्लाह के लिए	तो कहना	कशती	पर	तेरे साथ (साथी)	और जो	तुम	बैठ जाओ	फिर जब		
الَّذِي نَجَّيْنَا مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٢٨﴾ وَقُلْ رَبِّ انزِلْنِي مُنْزَلًا مُّبْرَكًا										
सुवारक	मन्ज़िल	मुझे उतार	ऐ मेरे रब	और कहो	28	ज़ालिम (जमा)	कौम	से	हमें नजात दी	वह जिस ने
وَأَنْتَ خَيْرُ الْمُنزِلِينَ ﴿٢٩﴾ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّمُبْتَلِينَ ﴿٣٠﴾										
30	आज़माइश करने वाले	और बेशक हम हैं	अलबत्ता निशानियां	उस में	बेशक	29	उतारने वाले	बेहतरीन	और तू	
ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ﴿٣١﴾ فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا										
रसूल (जमा)	उन के दरमियान	फिर भेजे हम ने	31	दूसरा	गिरोह	उन के बाद	हम ने पैदा किया	फिर		
مِنْهُمْ أَنْ اَعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٣٢﴾ وَقَالَ										
और कहा	32	क्या फिर तुम डरते नहीं?	उस के सिवा	कोई माबूद नहीं तुम्हारे लिए	तुम अल्लाह की इबादत करो	कि	उन में से			
الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِلِقَاءِ الْآخِرَةِ وَأَتْرَفْنَاهُمْ										
और हम ने उन्हें ऐश दिया	आखिरत	हाज़िरी को	और झुटलाया	वह जिन्होंने कुफ़ किया	उस की कौम के	सरदारों				
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا مَا هَذَا إِلَّا بَشْرٌ مِثْلُكُمْ يَأْكُلُ مِمَّا تَأْكُلُونَ مِنْهُ										
उस से	तुम खाते हो	उस से जो	वह खाता है	तुम्हीं जैसा	एक बशर	मगर	यह नहीं	दुनिया की ज़िन्दगी	में	
وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُونَ ﴿٣٣﴾ وَلَئِنْ أَطَعْتُمْ بَشْرًا مِثْلَكُمْ إِنَّكُمْ إِذَا										
उस वक़्त	बेशक तुम	अपने जैसा	एक बशर	तुम ने इताअत की	और अगर	33	तुम पीते हो	उस से जो	और पीता है	
لَخَسِرُونَ ﴿٣٤﴾ أَيْعِدْكُمْ أَنْتُمْ إِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَعِظَامًا أَنْتُمْ										
तो तुम	और हड्डियां	मिट्टी	और तुम हो गए	मर गए	जब	कि तुम	क्या वह वादा देता है तुम्हें	34	घाटे में रहोगे	
مُخْرَجُونَ ﴿٣٥﴾ هِيَ هَاتِ هَيْهَاتَ لِمَا تُوعَدُونَ ﴿٣٦﴾ إِنَّ هِيَ إِلَّا										
मगर	नहीं	36	तुम्हें वादा दिया जाता है	वह जो	बईद है	बईद है	35	निकाले जाओगे		
حَيَاتِنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ﴿٣٧﴾ إِنَّ هُوَ										
वह	नहीं	37	फिर उठाए जाने वाले	हम	और नहीं	और हम जीते हैं	और हम मरते हैं	दुनिया	हमारी ज़िन्दगी	
إِلَّا رَجُلٌ اِفْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا وَمَا نَحْنُ لَهُ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٣٨﴾ قَالَ										
उस ने अर्ज़ किया	38	ईमान लाने वाले	उस पर	हम	और नहीं	झूट	अल्लाह पर	उस ने झूट वान्धा	एक आदमी	मगर
رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونَ ﴿٣٩﴾ قَالَ عَمَّا قَلِيلٍ لِيُصْبِحُنَّ نَدِيمِينَ ﴿٤٠﴾										
40	पछताने वाले	वह ज़रूर रह जाएंगे	बहुत जल्द	उस ने फ़रमाया	39	उन्होंने ने मुझे झुटलाया	उस पर जो	मेरी मदद फ़रमा	मेरे रब	
فَاخَذَتْهُمْ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنَاهُمْ غُثَاءً فَبُعْدًا لِلْقَوْمِ										
कौम के लिए	दूरी (मार)	ख़स ओ खाशाक	सो हम ने उन्हें कर दिया	(वादाए) हक़ के मुताबिक़	चिंघाड़	पस उन्हें आ पकड़ा				
الظَّالِمِينَ ﴿٤١﴾ ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرُونًا آخَرِينَ ﴿٤٢﴾										
42	दूसरी - और उम्मतें	उन के बाद	हम ने पैदा की	फिर	41	ज़ालिम (जमा)				

फिर तुम जब बैठ जाओ कशती पर तुम और तेरे साथी, तो कहना तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं वह जिस ने हमें नजात दी ज़ालिमों की कौम से। (28) और कहो ऐ मेरे रब! मुझे सुवारक मन्ज़िल (जगह) पर उतार, और तू बेहतरीन उतारने वाला है। (29) बेशक उस में अलबत्ता निशानियां हैं, और बेशक हम आज़माइश करने वाले हैं। (30) फिर हम ने उन के बाद पैदा किया दूसरी पीढ़ी। (31) फिर हम ने उन के दरमियान उन्हीं में से रसूल भेजे कि तुम अल्लाह की इबादत करो, तुम्हारे लिए उस के सिवा कोई माबूद नहीं, फिर क्या तुम डरते नहीं? (32) और उस की कौम के उन सरदारों ने कहा जिन्होंने कुफ़ किया और आखिरत की हाज़िरी को झुटलाया, और हम ने उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में ऐश दिया था, यह नहीं है मगर तुम्हीं जैसा एक बशर है, वह उसी में से खाता है जो तुम खाते हो, और उसी में से पीता है जो तुम पीते हो। (33) और अगर तुम ने अपने जैसे एक बशर की इताअत की, तो बेशक तुम उस वक़्त घाटे में रहोगे। (34) क्या वह तुम्हें वादा देता है कि जब तुम मर गए और तुम मिट्टी और हड्डियां हो गए तो तुम (फिर) निकाले जाओगे। (35) बईद है बईद है, वह जो तुम्हें वादा दिया जाता है। (36) (और कुछ) नहीं मगर यही हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है, हम मरते हैं और जीते हैं, और हम नहीं हैं फिर उठाए जाने वाले। (37) वह (कुछ) नहीं मगर एक आदमी है, उस ने अल्लाह पर झूट वान्धा है और हम नहीं हैं उस पर ईमान लाने वाले। (38) उस ने अर्ज़ किया ऐ मेरे रब! तू उस पर मेरी मदद फ़रमा कि उन्हीं ने मुझे झुटलाया। (39) उस ने फ़रमाया वह बहुत जल्द ज़रूर पछताते रह जाएंगे। (40) पस उन्हें चिंघाड़ ने वादाए हक़ के मुताबिक़ आ पकड़ा, सो हम ने उन्हें ख़स ओ खाशाक की तरह कर दिया, पस मार हो ज़ालिमों की कौम के लिए। (41) फिर हम ने उन के बाद और उम्मतें पैदा कीं। (42)

ع. ۲

कोई उम्मत अपनी (मुकर्रर) मीझाद से न सबकत करती है और न पीछे रह जाती है। (43)

फिर हम ने भेजे रसूल पै दर पै, जब भी किसी उम्मत में उस का रसूल आया उन्होंने ने उसे झुटलाया, तो हम (हलाक करने के लिए) पीछे लिए उन में से एक को दूसरे के, और हम ने उन्हें अफसाने (भूली विसरी बातें) बनाया, सो (अल्लाह की) मार उन लोगों के लिए जो ईमान नहीं लाए। (44)

फिर हम ने भेजा मूसा (अ) और उन के भाई हारून (अ) को अपनी निशानियों और खुले दलाइल के साथ। (45)

फिरऔन और उस के सरदारों की तरफ तो उन्होंने ने तकबुर किया और वह सरकश लोग थे। (46)

पस उन्होंने ने कहा क्या हम अपने जैसे (उन) दो आदमियों पर ईमान ले आएँ? और उन की कौम (के लोग) हमारी खिदमत करने वाले। (47)

पस उन्होंने ने दोनों को झुटलाया तो वह हलाक होने वालों में से हो गए। (48) और तहकीक हम ने मूसा (अ) को दी किताब ताकि वह लोग हिदायत पा लें। (49)

और हम ने मरयम (अ) के बेटे (इसा अ) और उस की माँ को एक निशानी बनाया और हम ने उन्हें ठिकाना दिया एक बुलन्द टीले पर जो ठहरने का मुकाम और जारी पानी की (शादाब) जगह थी। (50)

ऐ रसूलो! तुम पाक चीजों में से खाओ और अमल करो नेक, वेशक जो तुम करते हो मैं उसे जानने वाला हूँ (जानता हूँ)। (51)

और वेशक यह तुम्हारी उम्मत एक उम्मतते वाहिदा है, और मैं तुम्हारा रब हूँ, पस मुझ से डरो। (52)

फिर उन्होंने ने आपस में अपना काम टुकड़े टुकड़े काट लिया, (फिर) हर गिरोह वाले उस पर जो उन के पास है खुश हैं। (53)

पस उन्हें उन की गफ़लत में एक मुद्दे मुकर्ररा तक छोड़ दे। (54) क्या वह गुमान करते हैं? कि हम जो कुछ उन की मदद कर रहे हैं माल और औलाद के साथ। (55)

हम उन के लिए भलाई में जल्दी कर रहे हैं, (नहीं) बल्कि वह समझ नहीं रखते। (56)

वेशक जो लोग अपने रब के डर से सहमे हुए हैं। (57) और जो लोग अपने रब की आयतों पर ईमान रखते हैं। (58)

مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ﴿٤٣﴾ ثُمَّ أَرْسَلْنَا								
हम ने भेजे	फिर	43	पीछे रह जाती है	और न	अपनी मीझाद	कोई उम्मत	सबकत करती है	नहीं
رُّسُلَنَا تَمْرًا كُلَّمَا جَاءَ أُمَّةٌ رَّسُولَهَا كَذَّبُوهُ فَاتَّبَعْنَا بَعْضُهُمْ								
उन में से एक	तो हम पीछे लाए	उन्होंने ने उसे झुटलाया	उस का रसूल	किसी उम्मत में	आया	जब भी	पै दर पै	रसूल (जमा)
بَعْضًا وَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ فَبَعَدًا لِقَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٤٤﴾								
44	जो ईमान नहीं लाए	लोगों के लिए	सो दूरी (मार)	अफसाने	और उन्हें बना दिया हम ने	दूसरे		
ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَأَخَاهُ هَارُونَ بِآيَاتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ﴿٤٥﴾								
45	खुले	और दलाइल	साथ (हमारी) अपनी निशानियाँ	हारून (अ)	और उन का भाई	मूसा (अ)	हम ने भेजा	फिर
إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا عَالِينَ ﴿٤٦﴾ فَقَالُوا								
पस उन्होंने ने कहा	46	सरकश	लोग	और वह थे	तो उन्होंने ने तकबुर किया	और उस के सरदार	फिरऔन	तरफ
أَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عِبَادُونَ ﴿٤٧﴾ فَكَذَّبُوهُمَا								
पस उन्होंने ने झुटलाया दोनों को	47	बन्दगी (खिदमत) करने वाले	हमारी	और उनकी कौम	अपने जैसे	दो (2) आदमियों पर	क्या हम ईमान ले आएँ	
فَكَانُوا مِنَ الْمُهْلَكِينَ ﴿٤٨﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ الْكِتَابَ لَعَلَّهُمْ								
ताकि वह लोग	किताब	मूसा (अ)	और तहकीक हम ने दी	48	हलाक होने वाले	से	तो वह हो गए	
يَهْتَدُونَ ﴿٤٩﴾ وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ آيَةً وَآوَيْنَاهُمَا إِلَىٰ								
तरफ (पर)	और हम ने उन्हें ठिकाना दिया	एक निशानी	और उस की माँ	मरयम का बेटा (इसा अ)	और हम ने बनाया	49	हिदायत पा लें	
رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَمَعِينٍ ﴿٥٠﴾ يَا أَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُّوَا مِنَ الطَّيِّبَاتِ								
पाकीज़ा चीज़ें	से	खाओ	रसूल (जमा)	ऐ	50	और बहता हुआ पानी	ठहरने का मुकाम	एक बुलन्द टीला
وَأَعْمَلُوا صَالِحًا إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٥١﴾ وَإِنَّ هَذِهِ أُمَّتُكُمْ								
तुम्हारी उम्मत	यह	और वेशक	51	जानने वाला	तुम करते हो	उसे जो	वेशक मैं	नेक और अमल करो
أُمَّةٍ وَاحِدَةٍ وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُونِ ﴿٥٢﴾ فَتَقَطَّعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا								
टुकड़े टुकड़े	आपस में	अपना काम	फिर उन्होंने ने काट लिया	52	पस मुझ से डरो	तुम्हारा रब	और मैं	एक उम्मत, उम्मतते वाहिदा
كُلٌّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ﴿٥٣﴾ فَذَرَهُمْ فِي غَمْرَتِهِمْ حَتَّىٰ								
तक	उन की गफ़लत में	पस छोड़ दे उन्हें	53	खुश	उन के पास	उस पर जो	हर गिरोह	
حِينَ ﴿٥٤﴾ أَيَحْسَبُونَ أَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهِ مِنْ مَّالٍ وَبَنِينَ نُسَارِعُ								
हम जल्दी कर रहे हैं	55	और औलाद	माल से	उस के साथ	हम मदद कर रहे हैं उन की	कि जो कुछ	क्या वह गुमान करते हैं	54 एक मुद्दे मुकर्रर
لَهُمْ فِي الْخَيْرِ بَلْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٥٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ هُمْ مِنْ خَشِيَةِ								
डर	से	वह जो लोग	वेशक	56	वह शऊर (समझ) नहीं रखते	बल्कि	भलाई में	उन के लिए
رَبِّهِمْ مُشْفِقُونَ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٨﴾								
58	ईमान रखते हैं	अपना रब	आयतों पर	वह	और जो लोग	57	डरने वाले (सहमे हुए)	अपना रब

۲  
ع  
۳

وَالَّذِينَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾ وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوْا							
जो वह देते हैं	देते हैं	और जो लोग	59	शरीक नहीं करते	अपने रब के साथ	वह	और जो लोग
وَقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَجِعُونَ ﴿٦٠﴾ أُولَٰئِكَ يُسْرِعُونَ							
जल्दी करते हैं	यही लोग	60	लौटने वाले	अपना रब	तरफ	कि वह	डरते हैं और उन के दिल
فِي الْخَيْرَاتِ وَهُمْ لَهَا سَابِقُونَ ﴿٦١﴾ وَلَا تَكْلِفْ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا							
उस की ताकत के मुताबिक	मगर	किसी को	और हम तक्लीफ नहीं देते	61	सबकत ले जाने वाले हैं	उन की तरफ	और वह भलाइयों में
وَلَدَيْنَا كِتَابٌ يَنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٢﴾ بَلْ قُلُوبُهُمْ							
उन के दिल	बल्कि	62	जुल्म न किए जाएंगे (जुल्म न होगा)	और वह (उन)	ठीक ठीक	वह बतलाता है	एक किताब (रजिस्टर) और हमारे पास
فِي غَمْرَةٍ مِّنْ هَذَا وَلَهُمْ أَعْمَالٌ مِّنْ دُونِ ذَلِكَ هُمْ لَهَا عَمَلُونَ ﴿٦٣﴾							
63	करते रहते हैं	वह उन्हें	उस	अलावा	आमाल (जमा)	और उन के	उस से गफलत
حَتَّىٰ إِذَا أَخَذْنَا مُتْرَفِيهِمْ بِالْعَذَابِ إِذَا هُمْ يَجْعَرُونَ ﴿٦٤﴾ لَا تَجْرُوا							
तुम फर्याद न करो	64	फर्याद करने लगे	उस वक़्त वह	अज़ाब में	उन के खुशहाल लोग	हम ने पकड़ा	यहां तक कि जब
الْيَوْمَ ۗ إِنَّكُمْ مِنَّا لَا تُنصَرُونَ ﴿٦٥﴾ قَدْ كَانَتْ آيَتِي تُبْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ							
तो तुम थे	तुम पर	पढ़ी जाती थी	मेरी आयतें	अलबत्ता तुम्हें	65	तुम मदद न दिए जाओगे	हम से बेशक तुम आज
عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ تَنْكِبُونَ ﴿٦٦﴾ مُسْتَكْبِرِينَ ۖ بِهِ سِمِرًا تَهَجُرُونَ ﴿٦٧﴾							
67	बेहूदा बकवास करते हुए	अफ़साना गोई करते हुए	उस के साथ	तकबुर करते हुए	66	फिर जाते	अपनी एड़ियों के बल
أَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ أَمْ جَاءَهُمْ مَا لَمْ يَأْتِ آبَاءَهُمُ الْأَوَّلِينَ ﴿٦٨﴾							
68	पहले	उन के बाप दादा	नहीं आया	जो	उन के पास आया	या कलाम	पस क्या उन्होंने ने गौर नहीं किया
أَمْ لَمْ يَعْرِفُوا رَسُولَهُمْ فَهُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ﴿٦٩﴾ أَمْ يَقُولُونَ بِهِ جِنَّةٌ							
दीवानगी	उस को	वह कहते हैं	या	69	मुन्किर है	उस के तो वह	अपने रसूल उन्होंने ने नहीं पहचाना या
بَلْ جَاءَهُم بِالْحَقِّ وَكَثُرُهُمْ لِلْحَقِّ كَرهُونَ ﴿٧٠﴾ وَلَوْ اتَّبَعَ الْحَقُّ أَهْوَاءَهُمْ							
उन की खाहिशात	हक (अल्लाह)	पैरवी करता	और अगर	70	नफ़रत रखने वाले	हक से और उन में से अक्सर	साथ हक वात वह आया उन के पास बल्कि
لَفَسَدَتِ السَّمَوَاتُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ ۗ بَلْ أَتَيْنَهُم بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ							
फिर वह	उन की नसीहत	हम लाए हैं उन के पास	उन के दरमियान	और जो	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	अलबत्ता दरहम वरहम हो जाता
عَنْ ذِكْرِهِمْ مُعْرِضُونَ ﴿٧١﴾ أَمْ تَسْأَلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَجَ رَبِّكَ خَيْرٌ ۗ							
बेहतर	तुम्हारा रब	तो अजर	अजर	क्या तुम उन से मांगते हो	71	रूगर्दानी करने वाले हैं	अपनी नसीहत से
وَهُوَ خَيْرٌ الرَّزْقَيْنِ ﴿٧٢﴾ وَإِنَّكَ لَتَدْعُوهُمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٧٣﴾							
73	सीधा रास्ता	तरफ	उन्हें बुलाते हो	और बेशक तुम	72	बेहतरिन रोज़ी दहिन्दा है	और वह
وَإِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنُكَيْبُونَ ﴿٧٤﴾							
74	अलबत्ता हटे हुए हैं	राहे हक	से	आखिरत पर	ईमान नहीं लाते	जो लोग	और बेशक

और जो लोग अपने रब के साथ शरीक नहीं करते। (59) और जो लोग देते हैं जो कुछ वह देते हैं और उन के दिल डरते हैं कि वह अपने रब की तरफ लौटने वाले हैं। (60) यही लोग भलाइयों में जल्दी करते हैं और वह उन की तरफ सबकत ले जाने वाले हैं। (61) और हम किसी को तक्लीफ नहीं देते मगर उस की ताकत के मुताबिक, और हमारे पास (आमाल का) एक रजिस्टर है जो ठीक ठीक बतलाता है और उन पर जुल्म न होगा। (62) बल्कि उन के दिल इस (हकीकत) से गफलत में हैं और उन के (बुरे) आमाल उस के आलावा जो वह करते रहते हैं। (63) यहां तक कि जब हम ने उन के खुशहाल लोगों को पकड़ा अज़ाब में, तो उस वक़्त वह फर्याद करने लगे। (64) आज फर्याद न करो तुम, हमारी (तरफ) से मदद न दिए जाओगे (मुतलक मदद न पाओगे)। (65) अलबत्ता तुम पर मेरी आयतें पढ़ी जाती थी तो तुम अपनी एड़ियों के बल (उलटे) फिर जाते थे। (66) तकबुर करते हुए, उस के साथ अफ़साना गोई और बेहूदा बकवास करते हुए। (67) पस क्या उन्होंने ने (इस) कलामे (हक) पर गौर नहीं किया? या उन के पास वह आया जो नहीं आया था उन के पहले बाप दादा (बड़ों) के पास। (68) या उन्होंने ने अपने रसूल को नहीं पहचाना तो इस लिए उस के मुन्किर हैं। (69) या वह कहते हैं उस को दीवानगी है? बल्कि वह उन के पास हक वात के साथ आया है और उन में से अक्सर हक वात से नफ़रत रखने वाले हैं। (70) और अगर अल्लाह त़ाला उन की खाहिशात की पैरवी करता तो अलबत्ता ज़मीन ओ आस्मान और जो कुछ उन के दरमियान है दरहम वरहम हो जाते, बल्कि हम उन के पास उन की नसीहत लाए हैं फिर वह अपनी नसीहत (की वात से) रूगर्दानी कर रहे हैं। (71) क्या तुम उन से अजर मांगते हो? तो तुम्हारे रब का अजर बेहतर है, और वह बेहतर रोज़ी दहिन्दा है। (72) और बेशक तुम उन्हें बुलाते हो राहे रास्त की तरफ। (73) और जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं लाते, बेशक वह राहे हक से हटे हुए हैं। (74)

और अगर हम उन पर रहम करें, और जो उन पर तकलीफ़ है वह दूर कर दें तो वह अपनी सरकशी पर अड़े रहें, भटकते फिरे। (75)

और अलबत्ता हम ने उन्हें अज़ाब में पकड़ा, फिर न उन्होंने ने आजिज़ी की, और न वह

गिड़गिड़ाए। (76)

यहां तक कि जब हम ने उन पर सख्त अज़ाब के दरवाज़े खोल दिए तो उस वक़्त वह उस में मायूस हो गए। (77)

और वही है जिस ने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए, तुम बहुत ही कम शुक्र करते हो। (78)

और वही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में फैलाया, और उसी की तरफ़ तुम जमा हो कर जाओगे। (79)

और वही है जो ज़िन्दा करता है और मारता है, और उसी के लिए है रात और दिन का आना जाना,

पस क्या तुम समझते नहीं? (80) बल्कि उन्होंने ने (वही) कहा जैसे (उन से) पहले (काफ़िर) कहते थे। (81)

वह बोले, क्या जब हम मर गए, और हम मिट्टी और हड्डियाँ हो गए, क्या हम फिर (दोबारा) उठाए जाएंगे? (82)

अलबत्ता हम से वादा किया गया और इस से कब्ल हमारे बाप दादा से यह (वादा किया गया), यह तो सिर्फ़ पहले लोगो की कहानियाँ हैं। (83)

आप (स) फ़रमा दें किस के लिए है ज़मीन और जो कुछ उस में है? अगर तुम जानते हो। (84)

वह ज़रूर कहेंगे अल्लाह के लिए है, आप (स) फ़रमा दें पस क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (85)

आप (स) फ़रमा दें कौन है सात आस्मानों का रब और अर्श अज़ीम का रब? (86)

वह ज़रूर कहेंगे (यह सब) अल्लाह का है, आप (स) फ़रमा दें पस क्या तुम नहीं डरते? (87)

आप (स) फ़रमा दें किस के हाथ में है हर चीज़ का इख़्तियार? और वह पनाह देता है और उस के खिलाफ़ (कोई) पनाह नहीं दिया जाता अगर तुम जानते हो। (88)

वह ज़रूर कहेंगे (हर इख़्तियार) अल्लाह के लिए, आप (स) फ़रमा दें फिर तुम कहां से जादू में फँस गए हो। (89)

وَلَوْ رَحِمْنَاهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُوا فِي طَعْيَانِهِمْ

अपनी सरकशी	में-पर	अड़े रहें	जो तकलीफ़	जो उन पर	और हम दूर कर दें	हम उन पर रहम करें	और अगर
------------	--------	-----------	-----------	----------	------------------	-------------------	--------

يَعْمَهُونَ ﴿٧٥﴾ وَلَقَدْ أَخَذْنَاهُم بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوا لِرَبِّهِمْ

अपने रब के सामने	फिर उन्होंने ने आजिज़ी न की	अज़ाब में	और अलबत्ता हम ने उन्हें पकड़ा	75	भटकते रहे
------------------	-----------------------------	-----------	-------------------------------	----	-----------

وَمَا يَتَضَرَّعُونَ ﴿٧٦﴾ حَتَّىٰ إِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِم بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيدٍ

सख्त	अज़ाब वाला	दरवाज़ा	उन पर	हम ने खोल दिया	जब	यहां तक कि	76	और वह न गिड़गिड़ाए
------	------------	---------	-------	----------------	----	------------	----	--------------------

إِذَا هُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ﴿٧٧﴾ وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ

और आँखें	कान	बनाए तुम्हारे लिए	जिस ने	और वह	77	मायूस हुए	उस में	तो उस वक़्त वह
----------	-----	-------------------	--------	-------	----	-----------	--------	----------------

وَالْأَفْئِدَةَ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿٧٨﴾ وَهُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ

फैलाया तुम्हें	वही जिस ने	और वह	78	जो तुम शुक्र करते हो	बहुत ही कम	और दिल (जमा)
----------------	------------	-------	----	----------------------	------------	--------------

فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٧٩﴾ وَهُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ

और मारता है	ज़िन्दा करता है	वही जो	और वह	79	तुम जमा हो कर जाओगे	और उस की तरफ़	ज़मीन में
-------------	-----------------	--------	-------	----	---------------------	---------------	-----------

وَلَهُ اٰخِثَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٨٠﴾ بَلْ قَالُوا

बल्कि उन्होंने ने कहा	80	क्या पस तुम समझते नहीं?	और दिन	रात	आना जाना	और उसी के लिए
-----------------------	----	-------------------------	--------	-----	----------	---------------

مِثْلَ مَا قَالَ الْأَوَّلُونَ ﴿٨١﴾ قَالُوا إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا

और हम हो गए मिट्टी	हम मर गए	क्या जब	वह बोले	81	पहलों ने	जो कहा	जैसे
--------------------	----------	---------	---------	----	----------	--------	------

وَعِظَامًا ءَأِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ﴿٨٢﴾ لَقَدْ وَعَدْنَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا هَذَا

यह	और हमारे बाप दादा	हम	अलबत्ता हम से वादा किया गया	82	फिर उठाए जाएंगे	क्या हम	और हड्डियाँ
----	-------------------	----	-----------------------------	----	-----------------	---------	-------------

مِنْ قَبْلُ إِنْ هَذَا إِلَّا آسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٨٣﴾ قُلْ لِّمَنِ الْأَرْضُ

ज़मीन	किस के लिए	फ़रमा दें	83	पहले लोग	कहानियाँ	मगर (सिर्फ़)	यह नहीं	इस से कब्ल
-------	------------	-----------	----	----------	----------	--------------	---------	------------

وَمَنْ فِيهَا إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٤﴾ سَيَقُولُونَ لِلّٰهِ قُلْ

फ़रमा दें	जल्दी (ज़रूर) वह कहेंगे अल्लाह के लिए	84	तुम जानते हो	अगर	उस में	और जो
-----------	---------------------------------------	----	--------------	-----	--------	-------

أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٨٥﴾ قُلْ مَن رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ

और रब	सात	आस्मान (जमा)	रब	कौन	फ़रमा दें	85	क्या पस तुम ग़ौर नहीं करते?
-------	-----	--------------	----	-----	-----------	----	-----------------------------

الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿٨٦﴾ سَيَقُولُونَ لِلّٰهِ قُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٨٧﴾ قُلْ مَنْ

कौन	फ़रमा दें	87	क्या पस तुम नहीं डरते?	फ़रमा दें	जल्दी (ज़रूर) वह कहेंगे अल्लाह का	86	अर्श अज़ीम
-----	-----------	----	------------------------	-----------	-----------------------------------	----	------------

بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ يُجِيرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِنْ

अगर	उस के खिलाफ़	और पनाह नहीं दिया जाता	पनाह देता है	और वह	हर चीज़	बादशाहत (इख़्तियार)	उस के हाथ में
-----	--------------	------------------------	--------------	-------	---------	---------------------	---------------

كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٨﴾ سَيَقُولُونَ لِلّٰهِ قُلْ فَأَنَّى تُسْحَرُونَ ﴿٨٩﴾

89	तुम जादू में फँस गए हो	फिर कहां से	फ़रमा दें	जल्दी कहेंगे अल्लाह के लिए	88	तुम जानते हो
----	------------------------	-------------	-----------	----------------------------	----	--------------

بَلْ أَتَيْنُهُمْ بِالْحَقِّ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٩٠﴾ مَا اتَّخَذَ اللَّهُ						
नहीं अपनाया अल्लाह	90	अलबवता झूटे है	और बेशक वह	सच्ची बात	हम लाए हैं उन के पास	बल्कि
مِنْ وَّلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُ مِنْ إِلَهٍ إِذَا لَدَّهَبَ كُلُّ إِلَهٍ بِمَا خَلَقَ						
जो उस ने पैदा किया	माबूद	हर	ले जाता	उस सूरत में	कोई और माबूद	उस के साथ और नहीं है किसी को बेटा
وَلَعَلَّا بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ سُبْحَنَ اللَّهُ عَمَّا يُصِفُونَ ﴿٩١﴾						
91	वह बयान करते हैं	उस से जो	पाक है अल्लाह	दूसरे पर	उन का एक	और चढ़ाई करता
عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعَلَّىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٩٢﴾ قُلْ رَبِّ						
ऐ मेरे रब	फरमा दें	92	वह शरीक समझते हैं	उस से जो	पस बरतर	और आशकारा जानने वाला पोशीदा
إِنَّمَا تُرِيدُنِي مَا يُوعَدُونَ ﴿٩٣﴾ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِي فِي						
में	पस तू मुझे न करना	ऐ मेरे रब	93	जो उन से वादा किया जाता है	अगर तू मुझे दिखा दे	
الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٩٤﴾ وَإِنَّا عَلَىٰ أَنْ نُرِيكَ مَا نَعُدُّهُمْ لَقَادِرُونَ ﴿٩٥﴾						
95	अलबवता कादिर है	जो हम वादा कर रहे हैं उन से	कि हम तुम्हें दिखा दें	पर	और बेशक हम	94 ज़ालिम लोग
إِذْفَعُ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ السَّيِّئَةِ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يُصِفُونَ ﴿٩٦﴾						
96	वह बयान करते हैं	उस को जो	खूब जानते हैं	हम	बुराई	सब से अच्छी भलाई वह उस से जो दफ़अ करो
وَقُلْ رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيْطَانِ ﴿٩٧﴾ وَأَعُوذُ بِكَ						
तेरी	और मैं पनाह चाहता हूँ	97	शैतान (जमा)	वस्वसे से	से	तेरी मैं पनाह चाहता हूँ ऐ मेरे रब और आप (स) फरमा दें
رَبِّ أَنْ يَحْضُرُونَ ﴿٩٨﴾ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ						
ऐ मेरे रब	कहता है	मौत	उन में किसी को	जब आए	यहां तक कि	98 कि वह आए मेरे पास ऐ मेरे रब
ارْجِعُونِ ﴿٩٩﴾ لَعَلِّي أَعْمَلُ صَالِحًا فِيمَا تَرَكْتُ كَلَّا إِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ						
वह	एक बात	यह तो	हरगिज़ नहीं	मैं छोड़ आया हूँ	उस में	कोई अच्छा काम काम कर लूँ शायद मैं मुझे वापस भेज दे 99
قَائِلُهَا وَمِنْ وَرَائِهِمْ بَرْزَخٌ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿١٠٠﴾ فَإِذَا نُفِخَ						
फूँका जाएगा	फिर जब	100	वह उठाए जाएंगे	उस दिन तक	एक बरज़ख़	और उन के आगे कह रहा है
فِي الصُّورِ فَلَا أَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَاءَلُونَ ﴿١٠١﴾						
101	और न वह एक दूसरे को पूछेंगे	उस दिन	उन के दरमियान	तो न रिश्ते	सूर में	
فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٠٢﴾ وَمَنْ خَفَّتْ						
हल्का हुआ	और जो	102	फ़लाह पाने वाले	वह	पस वह लोग	उस का तोल (पल्ला) भारी हुई पस-जो-जिस
مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ						
जहनन्म में	अपनी जानें	ख़सारे में डाला	वह जिन्होंने	तो वही लोग	उस का तोल (पल्ला)	
خَالِدُونَ ﴿١٠٣﴾ تَلْفَحُ وُجُوهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَالْحِوْنِ ﴿١٠٤﴾						
104	तेवरी चढ़ाए हुए	उस में	और वह	आग	उन के चेहरे झुलस देगी	103 हमेशा रहेंगे 104

बल्कि हम उन के पास लाए हैं सच्ची बात, और बेशक वह झूटे है। (90) अल्लाह ने किसी को (अपना) बेटा नहीं बनाया, और नहीं है उस के साथ कोई और माबूद, उस सूरत में हर माबूद ले जाता जो उस ने पैदा किया होता, और उन में से एक दूसरे पर चढ़ाई करता, पाक है अल्लाह उन (बातों) से जो वह बयान करते हैं। (91) वह जानने वाला है पोशीदा और आशकारा, पस बरतर है (वह हर) उस से जिस को वह शरीक समझते हैं। (92) आप (स) सफ़रमा दें ऐ मेरे रब! जो उन से वादा किया जाता है अगर तू मुझे दिखा दे। (93) ऐ मेरे रब! पस तू मुझे ज़ालिम लोगो में (शामिल) न करना। (94) और बेशक हम उस पर कादिर हैं कि हम उन से जो वादा कर रहे हैं तुम्हें दिखा दें। (95) सब से अच्छी भलाई से बुराई को दफ़अ करो, हम खूब जानते हैं जो वह बयान करते हैं। (96) और आप (स) फरमा दें, ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ शैतानों के वस्वसों से। (97) और ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ कि वह मेरे पास आए। (98) (वह ग़फ़लत में रहते हैं) यहां तक कि जब उन में किसी को मौत आए तो कहता है ऐ मेरे रब! मुझे (फिर दुनिया में) वापस भेज दे। (99) शायद मैं उस में कोई अच्छा काम कर लूँ जो छोड़ आया हूँ, हरगिज़ नहीं, यह तो एक बात है जो वह कह रहा है, और उन के आगे एक बरज़ख़ (आड़) है उस दिन (क़ियामत) तक कि वह उठाए जाए। (100) फिर जब सूर फूँका जाएगा तो न रिश्ते रहेंगे उस दिन उन के दरमियान, और न कोई एक दूसरे को पूछेगा। (101) पस जिस (के आमाल) का पल्ला भारी हुआ पस वही लोग फ़लाह (नजात) पाने वाले होंगे। (102) और जिस (के आमाल) का पल्ला हल्का हुआ तो वही लोग हैं जिन्होंने अपनी जानों को ख़सारे में डाला, वह जहनन्म में हमेशा रहेंगे। (103) आग उन के चेहरे झुलस देगी और वह उस में तेवरी चढ़ाए हुए होंगे। (104)

क्या मेरी आयतें तुम पर न पढ़ी जाती (सुनाई जाती) थीं? पस तुम उन्हें झुटलाते थे। (105)

वह कहेंगे ऐ हमारे रब! हम पर हमारी बदबख्ती गालिव आ गई, और हम रास्ते से भटके हुए लोग थे। (106)

ऐ हमारे रब! हमें इस से निकाल ले, फिर अगर हम ने दोबारा (वही) किया तो बेशक हम ज़ालिम होंगे। (107)

वह फ़रमाएगा फिटकारे हुए उस में पड़े रहो और मुझ से कलाम न करो। (108)

बेशक हमारे बन्दों का एक गिरोह था, वह कहते थे ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए, सो हमें बख़्शदे, और हम पर रहम फ़रमा, और तू बेहतरीन रहम करने वाला है। (109)

पस तुम ने उन्हें बना लिया मज़ाक, यहां तक कि उन्होंने ने तुम्हें मेरी याद भुला दी और तुम उन से हँसी किया करते थे। (110)

बेशक मैं ने आज उन्हें जज़ा दी उस के बदले कि उन्होंने ने सब्र किया, बेशक वही मुराद को पहुँचने वाले हैं। (111)

(अल्लाह तआला) फ़रमाएगा तुम कितनी मुदत रहे दुनिया में सालों के हिसाब से? (112)

वह कहेंगे कि हम एक दिन या एक दिन का कुछ हिस्सा रहे, पस पूछ लें शुमार करने वालों से। (113)

फ़रमाएगा तुम सिर्फ़ थोड़ा अर्सा रहे, काश कि तुम (यह हकीकत दुनिया में) जानते होते। (114)

क्या तुम खयाल करते हो कि हम ने तुम्हें बेकार पैदा किया? और यह कि तुम हमारी तरफ़ नहीं लौटाए जाओगे? (115)

पस बुलन्द तर है अल्लाह हकीकी वादशाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, इज़्ज़त वाला अर्श का मालिक। (116)

और जो कोई पुकारे अल्लाह के साथ कोई और माबूद, उस के पास उस के लिए कोई सनद नहीं, सो उस का हिसाब उस के रब के पास है, बेशक कामयाबी नहीं पाएंगे काफ़िर। (117)

और आप (स) कहें, ऐ मेरे रब! बख़्शदे और रहम फ़रमा, और तू बेहतरीन रहम करने वाला है। (118)

أَلَمْ تَكُنْ آيَتِي تُلَىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ۝۱۰۵ قَالَوَا									
वह कहेंगे	105	तुम झुटलाते थे	उन्हें	पस तुम थे	तुम पर	पढ़ी जाती	मेरी आयतें	क्या न थी	
رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَالِّينَ ۝۱۰۶ رَبَّنَا									
ऐ हमारे रब	106	रास्ते से भटके हुए	लोग	और हम थे	हमारी बद बख्ती	हम पर	गालिव आ गई	ऐ हमारे रब	
أَخْرَجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ ۝۱۰۷ قَالَ أَحْسُوا فِيهَا									
उस में		फिटकारे हुए पड़े रहो	फ़रमाएगा	107	ज़ालिम (जमा)	तो बेशक हम	दोबारा किया	फिर अगर	हमें इस से निकाल ले
وَلَا تُكَلِّمُونَ ۝۱۰۸ إِنَّهُ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْ عِبَادِي يَقُولُونَ									
वह कहते थे		हमारे बन्दों का	एक गिरोह	था	बेशक वह	108	और कलाम न करो	मुझ से	
رَبَّنَا أَمِنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّحِيمِينَ ۝۱۰۹									
109	रहम करने वाले	बेहतरीन	और तू	और हम पर रहम फ़रमा	सो हमें बख़्शदे	हम ईमान लाए	ऐ हमारे रब		
فَاتَّخَذْتُمُوهُمْ سَخِرِيًّا حَتَّىٰ أَنْسَوْكُمْ ذِكْرِي وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ									
उन से	और तुम थे	मेरी याद	उन्होंने ने भुला दिया तुम्हें	यहां तक कि	मज़ाक	पस तुम ने उन्हें बना लिया			
تَضَحَّكُونَ ۝۱۱۰ إِنِّي جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوا أَلَمْ يَكُنْ لَهُم									
वही	बेशक वह	उन्होंने ने सब्र किया	उस के बदले	आज	मैं ने जज़ा दी उन्हें	बेशक मैं	110	हँसी किया करते	
الْقَائِرُونَ ۝۱۱۱ قُلْ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدَ سِنِينَ ۝۱۱۲									
112	साल (जमा)	शुमार (हिसाब)	ज़मीन (दुनिया) में	कितनी मुदत रहे तुम	फ़रमाएगा	111	मुराद को पहुँचने वाले		
قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسَلِّ الْعَادِّينَ ۝۱۱۳									
113	शुमार करने वाले	पस पूछ लें	एक दिन का कुछ हिस्सा	या	एक दिन	हम रहे	वह कहेंगे		
قُلْ إِنْ لَّبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا لَّوْ أَنْتُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝۱۱۴									
114	जानते होते	तुम	काश	थोड़ा (अर्सा)	मगर (सिर्फ़)	नहीं तुम रहे	फ़रमाएगा		
أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّ مَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنْتُمْ عَلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ۝۱۱۵									
115	नहीं लौटाए जाओगे	हमारी तरफ़	और यह कि तुम	(अब्स) बेकार	हम ने तुम्हें पैदा किया	कि	क्या तुम खयाल करते हो		
فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ									
मालिक	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	हकीकी	वादशाह	अल्लाह	पस बुलन्द तर			
الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ۝۱۱۶ وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ									
नहीं कोई सनद	कोई और माबूद	अल्लाह के साथ	और जो पुकारे	116	इज़्ज़त वाला अर्श				
لَهُ بِهِ فَاِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ۝۱۱۷									
117	काफ़िर (जमा)	फ़लाह (कामयाबी) नहीं पाएंगे	बेशक वह	उस के रब के पास	उसका हिसाब	सो, तहकीक	उस के लिए	उस के पास	
وَقُلْ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّحِيمِينَ ۝۱۱۸									
118	बेहतरीन रहम करने वाला है	और तू	और रहम फ़रमा	बख़्शदे	ऐ मेरे रब	और आप (स) कहें			



آيَاتُهَا ٦٤ ﴿٢٤﴾ سُورَةُ النُّورِ ﴿٢٤﴾ زُكُوعَاتُهَا ٩						
रुकुआत 9		(24) सूरतुन नूर रोशनी			आयात 64	
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ						
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
سُورَةٌ أَنْزَلْنَاهَا وَفَرَضْنَاهَا وَأَنْزَلْنَا فِيهَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لَّعَلَّكُمْ						
ताकि तुम	वाज़ेह आयतें	उस में	और हम ने नाज़िल की	और लाज़िम किया उस को	जो हम ने नाज़िल की	एक सूरत
تَذَكَّرُونَ ﴿١﴾ الزَّانِيَةُ وَالزَّانِي فَاجْلِدُوا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا						
उन दोनो में से	हर एक को	तो तुम कोड़े मारो	और वदकार मर्द	वदकार औरत	1	तुम याद रखो
مِائَةَ جَلْدَةٍ وَلَا تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا رَأْفَةٌ فِي دِينِ اللَّهِ إِنْ						
अगर	अल्लाह का हुक्म	में	मेहरवानी (तरस)	उन पर	और न पकड़ो (न खाओ)	कोड़े सौ (100)
كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَلَيْشَهِدَ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ						
एक जमाअत	उन की सज़ा	और चाहिए कि मौजूद हो	और यौमे आखिरत	अल्लाह पर	तुम ईमान रखते हो	
مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢﴾ الزَّانِي لَا يَنْكِحُ إِلَّا زَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً						
या मुश्रिका	वदकार औरत	सिवा	निकाह नहीं करता	वदकार मर्द	2	मोमिनीन से- कि
وَالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحَهَا إِلَّا زَانٍ أَوْ مُشْرِكٌ وَحَرِّمَ ذَلِكَ عَلَى						
पर	यह	और हराम किया गया	या शिर्क करने वाला मर्द	सिवा वदकार मर्द	निकाह नहीं करती	और वदकार (औरत)
الْمُؤْمِنِينَ ﴿٣﴾ وَالَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوا						
फिर वह न लाएं	पाक दामन औरतें	तुहमत लगाएं	और जो लोग	3	मोमिनीन	
بِأَرْبَعَةٍ شُهَدَاءَ فَاجْلِدُوهُمْ ثَمَنِينَ جَلْدَةً وَلَا تَقْبَلُوا لَهُمْ						
उन की	और तुम न कबूल करो	कोड़े	अस्सी (80)	तो तुम उन्हें कोड़े मारो	गवाह	चार (4)
شَهَادَةَ أَبَدًا ﴿٤﴾ وَأُولَئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٤﴾ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا						
जिन लोगो ने तौबा कर ली	मगर	4	नाफरमान	वह	यही लोग	कभी गवाही
مِّنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا ﴿٥﴾ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥﴾ وَالَّذِينَ						
और जो लोग	5	निहायत मेहरवान	बख़शने वाला	तो बेशक अल्लाह	और उन्होंने ने इस्लाह कर ली	उस के बाद
يَرْمُونَ أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ شُهَدَاءُ إِلَّا أَنفُسُهُمْ						
उनकी जानें (खुद)	सिवा	गवाह	उन के	और न हों	अपनी बीवियां	तुहमत लगाएं
فَشَهَادَةُ أَحَدِهِمْ أَرْبَعُ شَهَدَاتٍ بِاللَّهِ إِنَّهُ لَمِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٦﴾						
6	सच बोलने वाले	कि वह बेशक से	अल्लाह की क़सम	गवाहियां	चार (4)	उन में से एक पस गवाही
وَالْخَامِسَةُ أَنَّ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كَانَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٧﴾						
7	झूट बोलने वाले	से	अगर है वह	उस पर	अल्लाह की लानत	यह कि और पाँचवीं

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है यह एक सूरत है जो हम ने नाज़िल की, और इस (के अहकाम) को फर्ज़ किया, और हम ने इस में वाज़ेह आयतें नाज़िल की, ताकि तुम याद रखो (ध्यान दो)। (1) वदकार औरत और वदकार मर्द दोनों में से हर एक को सौ (100) कोड़े मारो, और उन पर न खाओ तरस अल्लाह का हुक्म (चलाने) में, अगर तुम अल्लाह पर और यौमे आखिरत पर ईमान रखते हो, और चाहिए कि उन की सज़ा (के वक़्त) मौजूद हो मुसलमानों की एक जमाअत। (2) वदकार मर्द वदकार औरत या मुश्रिका के सिवा निकाह नहीं करता, और वदकार औरत (भी) वदकार या शिर्क करने वाले मर्द के सिवा (किसी से) निकाह नहीं करती, और यह (ऐसा निकाह) मोमिनीन पर हराम किया गया है। (3) और जो लोग तुहमत लगाएं पाक दामन औरतों पर, फिर वह (उस पर) चार (4) गवाह न लाएं तो तुम उन्हें अस्सी (80) कोड़े मारो और तुम कबूल न करो कभी उन की गवाही, यही नाफरमान लोग हैं। (4) मगर जिन लोगो न उस के बाद तौबा कर ली और उन्होंने ने इस्लाह कर ली, तो बेशक अल्लाह बख़शने वाला निहायत मेहरवान है। (5) और जो लोग अपनी बीवियों पर तुहमत लगाएं, और खुद उन के सिवा उन के गवाह न हों, तो उन में से हर एक की गवाही यह है कि अल्लाह की क़सम के साथ चार वार गवाही दें कि वह सच बोलने वालों में से है (सच्चा है)। (6) और पाँचवी वार यह कि उस पर अल्लाह की लानत हो अगर वह झूट बोलने वालों में से है (झूटा है)। (7)

और उस औरत से टल जाएगी सज़ा अगर वह चार बार अल्लाह की कसम के साथ गवाही दे कि वह (मर्द) अलवत्ता झूटों में से है (झूटा है)। (8) और पाँचवी बार यह कि उस औरत (मुझ) पर अल्लाह का ग़ज़ब हो अगर वह सच्चों में से है (सच्चा है)। (9) और अगर तुम पर न होता अल्लाह का फ़ज़ल और उसकी रहमत (तो यह मुश्किल हल न होती) और यह कि अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला, हकमत वाला है। (10) वेशक जो लोग बड़ा बुहतान लाए, तुम (ही) में से एक जमाअत है, तुम उसे अपने लिए बुरा गुमान न करो बल्कि वह तुम्हारे लिए बेहतर है, उन में से हर आदमी के लिए जितना उस ने किया (उतना) गुनाह है, और जिस ने उस का बड़ा (तूफ़ान) उठाया उस के लिए बड़ा अज़ाब है। (11) जब तुम ने वह (बुहतान) सुना तो क्यों न गुमान किया मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों ने अपनों के बारे में (गुमान) नेक, और उन्होंने (क्यों न) कहा? यह सरीह बुहतान है। (12) वह क्यों न लाए उस पर चार गवाह, पस जब वह गवाह न लाए तो अल्लाह के नज़्दीक वही झूटे है। (13) और अगर तुम पर दुनिया और आख़िरत में अल्लाह का फ़ज़ल और उस की रहमत न होती तो जिस (शुर्ल में) तुम पड़े थे तुम पर ज़रूर पड़ता बड़ा अज़ाब। (14) जब तुम (एक दूसरे से सुन कर) उसे अपनी ज़बान पर लाते थे, और तुम अपने मुँह से कहते थे जिस का तुम्हें कोई इल्म न था, और तुम उसे हलकी बात गुमान करते थे, हालांकि वह अल्लाह के नज़्दीक बहुत बड़ी बात थी। (15) जब तुम ने वह सुना क्यों न कहा? कि हमारे लिए (ज़ेबा) नहीं है कि हम ऐसी बात कहें, (ऐ अल्लाह) तू पाक है, यह बड़ा बुहतान है। (16) अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है, (मुबादा) तुम ऐसा काम फिर कभी करो, अगर तुम ईमान वाले हो। (17) और अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम (साफ़ साफ़) बयान करता है, और अल्लाह बड़ा जानने वाला, हिक्मत वाला है। (18)

وَيَذَرُوهَا عَنْهَا الْعَذَابَ أَنْ تَشْهَدَ أَرْبَعَ شَهَدَاتٍ بِاللَّهِ إِنَّهُ								
कि वह	अल्लाह की कसम	चार बार गवाही	गवाही दे	अगर	सज़ा	उस औरत से	और टल जाएगी	
لَمَنْ الْكٰذِبِينَ ﴿٨﴾ وَالْخَامِسَةَ أَنَّ غَضَبَ اللَّهِ عَلَيْهَا إِنْ كَانَ								
वह है	अगर	उस पर	अल्लाह का ग़ज़ब	यह कि	और पाँचवी बार	8	झूटे लोग अलवत्ता-से	
مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿٩﴾ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ								
और यह कि अल्लाह	और उस की रहमत	तुम पर	अल्लाह का फ़ज़ल	और अगर न	9	सच्चे लोग	से	
تَوَّابٌ حَكِيمٌ ﴿١٠﴾ إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا بِالإفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ								
तुम में से	एक जमाअत	बड़ा बुहतान लाए	वेशक जो लोग	10	हिक्मत वाला	तौबा कुबूल करने वाला		
لَا تَحْسَبُوهُ شَرًّا لَّكُمْ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ مَا اكْتَسَبَ								
जो उस ने कमाया (किया)	उन में से	हर एक आदमी के लिए	बेहतर है तुम्हारे लिए	बल्कि वह	अपने लिए	बुरा	तुम उसे गुमान न करो	
مِنَ الإِثْمِ وَالَّذِي تَوَلَّى كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١١﴾ لَوْ لَا								
क्यों न	11	बड़ा	अज़ाब	उस के लिए	उन में से	बड़ा उस का	उठाया और वह जिस गुनाह से	
إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بِأَنفُسِهِمْ خَيْرًا وَقَالُوا								
और उन्होंने ने कहा	नेक	अपनों के बारे में	और मोमिन औरतों	मोमिन मर्दों	गुमान किया	तुम ने वह सुना	जब	
هَذَا إِفْكٌ مُّبِينٌ ﴿١٢﴾ لَوْ لَا جَاءُوا عَلَيْهِ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَإِذْ لَمْ يَأْتُوا								
वह न लाए	पस जब	गवाह	चार (4)	उस पर	वह लाए	क्यों न	12	तुमायान बुहतान यह
بِالشُّهَدَاءِ فَأُولَئِكَ عِنْدَ اللَّهِ هُمُ الْكٰذِبُونَ ﴿١٣﴾ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ								
अल्लाह का फ़ज़ल	और अगर न	13	वही झूटे	अल्लाह के नज़्दीक	तो वही लोग	गवाह		
عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِي مَا أَفَضْتُمْ فِيهِ								
उस में	तुम पड़े	उस में जो	ज़रूर तुम पर पड़ता	और आख़िरत	दुनिया में	और उस की रहमत	तुम पर	
عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٤﴾ إِذْ تَلَقَّوْنَهُ بِالسِّنْتِكُمْ وَتَقُولُونَ بِأَفْوَاهِكُمْ								
अपने मुँह से	और तुम कहते थे	अपनी ज़बानों पर	जब तुम लाते थे उसे	14	बड़ा	अज़ाब		
مَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ وَتَحْسَبُونَهُ هَيِّنًا وَهُوَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمٌ ﴿١٥﴾								
15	बहुत बड़ी (बात)	अल्लाह के नज़्दीक	हालांकि वह	हलकी बात	और तुम उसे गुमान करते थे	कोई इल्म	उस का तुम्हें जो नहीं	
وَلَوْ لَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ قُلْتُمْ مَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَتَكَلَّمَ بِهَذَا سُبْحٰنَكَ								
तू पाक है	ऐसी बात	कि हम कहें	हमारे लिए	नहीं है	तुम ने कहा	तुम ने वह सुना	जब और क्यों न	
هَذَا بُهْتَانٌ عَظِيمٌ ﴿١٦﴾ يَعِظُكُمُ اللَّهُ أَنْ تَعُودُوا لِمِثْلِهِ أَبَدًا								
कभी भी	ऐसा काम	तुम फिर करो	कि	तुम्हें नसीहत करता है अल्लाह	16	बड़ा	बुहतान यह	
إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٧﴾ وَيُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٨﴾								
18	हिक्मत वाला	बड़ा जानने वाला	और अल्लाह	आयतें (अहकाम)	तुम्हारे लिए	और बयान करता है अल्लाह	17	ईमान वाले अगर तुम हो

ع ٤

إِنَّ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ								
उन के लिए	ईमान लाए (मोमिन)	में जो	बेहयाई	फैले	कि	पसंद करते हैं	जो लोग	वेशक
عَذَابٌ أَلِيمٌ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ (19)								
19	तुम नहीं जानते	और तुम	जानता है	और अल्लाह	और आखिरत में	दुनिया में	दर्दनाक	अज़ाब
وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ رءُوفٌ رَحِيمٌ (20)								
20	निहायत मेहरबान	शफ़क़त करने वाला	और यह कि अल्लाह	और उस की रहमत	तुम पर	अल्लाह का फ़ज़ल	और अगर न	
يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا خُطُوتِ الشَّيْطَانِ وَمَنْ يَتَّبِعْ خُطُوتِ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ								
कदम (जमा)	पैरवी करता है	और जो	शैतान	कदम (जमा)	तुम न पैरवी करो	वह लोग जो ईमान लाए (मोमिनो)	ऐ	
وَرَحْمَتُهُ مَا زَكَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ أَبَدًا وَلَكِنَّ اللَّهَ يُزَكِّي مَنْ يَشَاءُ								
तुम पर	अल्लाह का फ़ज़ल	और अगर न	और बुरी बात	बेहयाई का	हुक़्म देता है	तो बेशक वह	शैतान	
जिसे वह चाहता है	पाक करता है	और लेकिन अल्लाह	कभी भी	कोई आदमी	तुम से	न पाक होता	और उस की रहमत	
وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ (21) وَلَا يَأْتَلِ أُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ								
और वसूत वाले	तुम में से	फ़ज़ीलत वाले	और कसम न खाएं	21	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	
أَنْ يُؤْتُوا أَوْلِيَ الْقُرْبَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ								
अल्लाह की राह में	और हिज़्रत करने वाले	और मिस्कीनों	करावत दार	कि (न) दें				
وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا أَلَا تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ								
बख़्शने वाला	और अल्लाह	तुम्हें	अल्लाह बख़्शदे	कि	क्या तुम नहीं चाहते	और वह दरगुज़र करें	और चाहिए कि वह माफ़ कर दें	
رَحِيمٌ (22) إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْغَافِلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ لُعِنُوا								
लानत है उन पर	मोमिन औरतें	भोली भाली अनजान	पाक दामन (जमा)	जो लोग तुहमत लगाते हैं	वेशक	22	निहायत मेहरबान	
فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ (23) يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ								
उन पर (ख़िलाफ़)	गवाही देंगे	दिन	23	बड़ा	अज़ाब	और उन के लिए	दुनिया में	
أَلْسِنَتُهُمْ وَأَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (24) يَوْمَ يَدْعَاكُمْ أُولُوكُمْ								
पूरा देगा उन्हें	उस दिन	24	वह करते थे	उस की जो	और उन के पैर	और उन के हाथ	उन की ज़बानें	
اللَّهُ دِينَهُمُ الْحَقُّ وَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ (25) الْخَبِيثَاتِ								
नापाक (गन्दी) औरतें	25	ज़ाहिर करने वाला	बरहक़	वही	कि अल्लाह	और वह जान लेंगे	सच (ठीक ठीक)	उन का बदला अल्लाह
لِلْخَبِيثِينَ وَالْخَبِيثُونَ لِلْخَبِيثَاتِ وَالطَّيِّبَاتِ وَالطَّيِّبُونَ								
और पाक मर्द (जमा)	पाक मर्दों के लिए	और पाक औरतें	गन्दी औरतों के लिए	और गन्दी मर्द	गन्दी मर्दों के लिए			
لِلطَّيِّبَاتِ أُولَئِكَ مُبَرَّءُونَ مِمَّا يَقُولُونَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ (26)								
26	इज़ज़त की	और रोज़ी	मराफ़िरत	उन के लिए	वह कहते हैं	उस से जो	पाक दामन है	यह लोग
पाक औरतों के लिए								

वेशक जो लोग पसंद करते हैं कि मोमिनो में बेहयाई फैले उन के लिए दुनिया और आखिरत में दर्दनाक अज़ाब है, और अल्लाह जानता है जो तुम नहीं जानते। (19)

और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़ल और रहमत न होती (तो किया कुछ न हो जाता) और यह कि अल्लाह शफ़क़त करने वाला, निहायत मेहरबान है। (20)

ऐ मोमिनो! तुम शैतान के कदमों की पैरवी न करो, और जो शैतान के कदमों की पैरवी करता है तो वह (शैतान) हुक़्म देता है बेहयाई का और बुरी बात का, और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़ल और उस की रहमत न होती तो तुम में से कोई आदमी कभी भी न पाक होता, और लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है पाक करता है, और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (21)

और कसम न खाएं तुम में से फ़ज़ीलत वाले और (माल में) वसूत वाले कि वह करावतदारों को, मिस्कीनों को, और अल्लाह की राह में हिज़्रत करने वालों को न देंगे। और चाहिए कि वह माफ़ कर दें, और दरगुज़र करें, क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें बख़्शदे? और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (22)

वेशक जो लोग पाक दामन, अनजान मोमिन औरतों पर तुहमत लगाते हैं उन पर दुनिया और आखिरत में लानत है, और उन के लिए बड़ा अज़ाब है। (23)

जिस दिन उन की ज़बानें और उन के हाथ और उन के पाऊँ उन के ख़िलाफ़ गवाही देंगे उस की जो वह करते थे। (24)

उस दिन अल्लाह उन्हें उन का बदला ठीक ठीक पूरा देगा, और वह जान लेंगे कि अल्लाह ही बरहक़ है (हक़ को) ज़ाहिर करने वाला। (25)

गन्दी औरतें गन्दी मर्दों के लिए हैं, और गन्दी मर्द गन्दी औरतों के लिए हैं, और पाक औरतें पाक मर्दों के लिए हैं, और पाक मर्द पाक औरतों के लिए हैं, यह लोग उस से बरी हैं जो वह कहते हैं, उन के लिए मराफ़िरत और इज़ज़त की रोज़ी है। (26)

ऐ मोमिनो! तुम अपने घरों के सिवा (दूसरे) घरों में दाखिल न हो, यहां तक कि तुम इजाज़त ले लो, और उन के रहने वालों को सलाम कर लो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है, ताकि तुम नसीहत पकड़ो। (27)

फिर अगर उस (घर) में तुम किसी को न पाओ तो उस में दाखिल न हो यहां तक कि तुम्हें इजाज़त दी जाए, और अगर तुम्हें कहा जाए कि लौट जाओ तो तुम लौट जाया करो, यही तुम्हारे लिए ज़ियादा पाकीज़ा है, और जो तुम करते हो अल्लाह जानने वाला है। (28)

तुम पर (इस में) कोई गुनाह नहीं अगर तुम उन घरों में दाखिल हो जिन में किसी की सुकूनत (रिहाइश) नहीं, जिस में तुम्हारी कोई चीज़ हो और अल्लाह (खूब) जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। (29)

आप (स) फ़रमा दें मोमिन मर्दों को कि वह अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करें, यह उन के लिए ज़ियादा सुथरा है, बेशक अल्लाह उस से वाख़बर है जो वह करते हैं। (30)

और आप (स) फ़रमा दें मोमिन औरतों को कि वह नीची रखें अपनी निगाहें और अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करें और अपनी ज़ीनत (के मुक़ामात) को ज़ाहिर न करें मगर जो उस में से ज़ाहिर हुआ (जिस का ज़ाहिर होना नागुज़ीर है) और वह अपनी ओढ़नियां अपने गिरेवानों पर डाले रहें और अपनी ज़ीनत (के मुक़ाम) ज़ाहिर न करें सिवाए अपने ख़ावन्दों पर, या अपने बाप, या अपने खुसर, या अपने बेटों, या अपने शौहर के बेटों, या अपने भाइयों या अपने भतीजों पर, अपने भान्जों, या अपनी मुसलमान औरतों, या अपनी कनीज़ों, या वह ख़िदमतगार मर्द जो (औरतों से) गरज़ न रखने वाले हों, या वह लड़के जो अभी वाकिफ़ नहीं औरतों के पर्दे (मामलात से), और वह अपने पाऊँ (ज़मीन पर) न मारें कि वह जो अपनी ज़ीनत छुपाए हुए हैं पहचान ली जाए, अल्लाह के आगे तौबा करो तुम सब ऐ ईमान वाले! ताकि तुम दो ज़हान की कामयाबी पाओ। (31)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتَّى تَسْتَأْذِنُوا										
तुम इजाज़त ले लो	यहां तक कि	अपने घरों के सिवा	घर (जमा)	तुम न दाखिल हो	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ				
وَتَسَلِّمُوا عَلَىٰ أَهْلِهَا ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۚ فَإِنْ										
फिर अगर	27	तुम नसीहत पकड़ो	ताकि तुम	तुम्हारे लिए	बेहतर है	यह	उन के (रहने) वाले	पर-को	और तुम सलाम कर लो	
لَمْ تَجِدُوا فِيهَا أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتَّىٰ يُؤْذَنَ لَكُمْ ۖ وَإِنْ قِيلَ										
तुम्हें कहा जाए	और अगर	तुम्हें	इजाज़त दी जाए	यहां तक कि	तो तुम न दाखिल हो उस में	किसी को	उस में	तुम न पाओ		
لَكُمْ ارجِعُوا فَارجِعُوا هُوَ اَرْكَى لَكُمْ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ۗ لَيْسَ										
नहीं	28	जानने वाला	तुम करते हो	वह जो	और अल्लाह	तुम्हारे लिए	ज़ियादा पाकीज़ा	यही	तो तुम लौट जाया करो	तुम लौट जाओ
عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ مَسْكُونَةٍ فِيهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ										
जानता है	और अल्लाह	तुम्हारी	कोई चीज़	जिन में	ग़ैर आबाद	उन घरों में	तुम दाखिल हो	अगर	कोई गुनाह	तुम पर
مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ۚ فُلٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ يُغْضُوا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا										
और वह हिफाज़त करें	अपनी निगाहें	से	वह नीची रखें	मोमिन मर्दों को	आप फ़रमा दें	29	तुम छुपाते हो	और जो	जो तुम ज़ाहिर करते हो	
فُرُوجَهُمْ ۗ ذَٰلِكَ اَرْكَى لَهُمْ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ۚ وَقُلْ										
और फ़रमा दें	30	वह करते हैं	उस से जो	वाख़बर है	बेशक अल्लाह	उन के लिए	ज़ियादा सुथरा	यह	अपनी शर्मगाहें	
لِّلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ وَلَا يُبْدِينَ										
और वह ज़ाहिर न करें	अपनी शर्मगाहें	और वह हिफाज़त करें	अपनी निगाहें	से	वह नीची रखें	मोमिन औरतों को				
زَيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَىٰ جُيُوبِهِنَّ ۗ										
अपने सीने (गिरेवानों)	पर	अपनी ओढ़नियां	और डाले रहें	उस में से ज़ाहिर हुआ	जो	मगर	अपनी ज़ीनत			
وَلَا يُبْدِينَ زَيْنَتَهُنَّ اِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ اَوْ اَبَائِهِنَّ اَوْ اَبَاءَ بُعُولَتِهِنَّ اَوْ										
या	अपने शौहरों के बाप (खुसर)	या	बाप (जमा)	या	अपने ख़ावन्दों पर	सिवाए	अपनी ज़ीनत	और वह ज़ाहिर न करें		
اَبْنَائِهِنَّ اَوْ اَبْنَاءَ بُعُولَتِهِنَّ اَوْ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِي اِخْوَانِهِنَّ اَوْ										
या	अपने भाई के बेटे (भतीजे)	या	अपने भाई	या	अपने शौहरों के बेटे	या	अपने बेटे			
بَنِي اِخْوَتِهِنَّ اَوْ نِسَائِهِنَّ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ اَوْ اَلتَّبَعِينَ										
या खिदमतगार मर्द	उन के दाएँ हाथ (कनीज़ें)	या जिन के मालिक हुए	या अपनी (मुसलमान) औरतें	अपनी बहनों के बेटे (भान्जे)						
غَيْرِ اُولَى الْاِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ اَوْ الطِّفْلِ الَّذِيْنَ لَمْ يَظْهَرُوْا عَلٰى										
पर	वह वाकिफ़ नहीं हुए	वह जो कि	या लड़के	मर्द	से	न गरज़ रखने वाले				
عَوْرَتِ النِّسَاءِ ۗ وَلَا يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ ۗ مِنْ										
से	जो छुपाए हुए है	कि वह जान (पहचान) लिया जाए	अपने पाऊँ	और वह न मारें	औरतों के पर्दे					
زَيْنَتَهُنَّ ۗ وَتُوبُوا اِلَى اللّٰهِ جَمِيعًا اِنَّهُ الْمُوْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۚ ۝۳۱										
31	फ़लाह (दो ज़हान की कामयाबी) पाओ	ताकि तुम	ऐ ईमान वाले	सब	अल्लाह की तरफ़	और तुम तौबा करो	अपनी ज़ीनत			

وَأَنْكِحُوا الْأَيَامَىٰ مِنْكُمْ وَالصَّالِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَائِكُمْ <sup>ط</sup>						
और अपनी कनीज़ों	अपने गुलाम	से	और नेक	अपने में से (अपनी)	वेवा औरतें	और तुम निकाह करो
إِنْ يَكُونُوا فُقَرَاءَ يُعْهِمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ <sup>ط</sup> وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ <sup>(३२)</sup>						
32	इल्म वाला	वसूत वाला	और अल्लाह	अपने फ़ज़ल से	अल्लाह	उन्हें ग़नी कर देगा
وَلَيْسَتَعْفِيفِ الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّىٰ يُعْهِمُهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ <sup>ط</sup>						
अपने फ़ज़ल से	अल्लाह	उन्हें ग़नी कर दे	यहां तक कि	निकाह	नहीं पाते	वह लोग जो और चाहिए कि बचे रहें
وَالَّذِينَ يَبْتَغُونَ الْكِتَابَ مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوهُمْ						
तो तुम उन से मकातिबत (आज़ादी की तहरीर) कर लो	तुम्हारे दाएं हाथ (गुलाम)	मालिक हों	उन में से जो	मकातिबत	चाहते हों	और जो लोग
إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا <sup>ط</sup> وَأَتَوْهُمْ مِنْ مَالِ اللَّهِ الَّذِي آتَاكُمْ <sup>ط</sup>						
जो उस ने तुम्हें दिया	अल्लाह का माल	से	और तुम उनको दो	बेहतरी	उन में	अगर तुम जानो (पाओ)
وَلَا تُكْرَهُوا فَتْيَتِكُمْ عَلَىٰ الْبِغَاءِ إِنْ أَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِيَبْتِغُوا عَرَضَ						
सामान	ताकि तुम हासिल कर लो	पाक दामन रहना	अगर वह चाहें	बदकारी पर	अपनी कनीज़ों	और तुम न मजबूर करो
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا <sup>ط</sup> وَمَنْ يُكْرِهَنَّ فَإِنَّ اللَّهَ مِنْ بَعْدِ إِكْرَاهِهِنَّ غَفُورٌ						
बख़्शने वाला	उन की मजबूरी	बाद	तो बेशक अल्लाह	उन्हें मजबूर करेगा	और जो	दुनिया ज़िन्दगी
رَحِيمٌ <sup>(३३)</sup> وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ آيَاتٍ مُبَيِّنَاتٍ وَمَثَلًا لِّلَّذِينَ						
वह लोग जो	से	और मिसालें	वाज़ेह	अहकाम	तुम्हारी तरफ़	हम ने नाज़िल किए
خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ <sup>(३४)</sup> اللَّهُ نُورُ السَّمَوَاتِ						
आस्मानों	नूर	अल्लाह	34	परहेज़गारों के लिए	और नसीहत	तुम से पहले गुज़रे
وَالْأَرْضِ <sup>ط</sup> مَثَلُ نُورِهِ كَمِشْكُوهٍ فِيهَا مِصْبَاحٌ <sup>ط</sup> الْمِصْبَاحُ						
चिराग	एक चिराग	उस में	जैसे एक ताक	उस का नूर	मिसाल	और ज़मीन
فِي زُجَاجَةٍ <sup>ط</sup> الزُّجَاجَةُ كَأَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُوقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ						
दरख़्त	से	रोशन किया जाता है	एक सितारा चमकदार	गोया वह	वह शीशा	एक शीशे में
مُبْرَكَةٍ <sup>ط</sup> زَيْتُونَةٍ لَا شَرْقِيَّةٍ وَلَا غَرْبِيَّةٍ <sup>ط</sup> يَكَادُ زَيْتُهَا يُضِيءُ وَلَوْ						
ख़्वाह	रोशन हो जाए	उस का तेल	करीब है	और न मग़रिब का	न मशरिफ़ का	ज़ैतून सुवारक
لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ <sup>ط</sup> نُورٌ عَلَىٰ نُورٍ <sup>ط</sup> يَهْدِي اللَّهُ لِنُورِهِ مَنْ يَشَاءُ <sup>ط</sup>						
वह जिस को चाहता है	अपने नूर की तरफ़	रहनुमाई करता है अल्लाह	रोशनी पर रोशनी	आग	उसे न छुए	
وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ <sup>ط</sup> وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ <sup>(३५)</sup> فِي بُيُوتِ أَدْنَىٰ						
हुम्म दिया	उन घरों में	35	जानने वाला	हर शै को	और अल्लाह	लोगों के लिए
اللَّهُ أَنْ تَرْفَعَ وَيُذَكِّرَ <sup>ط</sup> فِيهَا اسْمُهُ <sup>ط</sup> يُسَبِّحُ لَهُ <sup>ط</sup> فِيهَا بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ <sup>(३६)</sup>						
36	और शाम	सुबह	उन में	उस की तसबीह करते हैं	उस का नाम	उन में और लिया जाए
कि बुलन्द किया जाए अल्लाह						

और तुम निकाह करो अपनी वेवा औरतों का और अपने नेक गुलामों और अपनी कनीज़ों का, अगर वह तंग दस्त हों तो अल्लाह उन्हें ग़नी कर देगा अपने फ़ज़ल से, और अल्लाह वसूत वाला, इल्म वाला है। (32) और चाहिए कि बचे रहें (पाक दामन रहें) वह जो कि निकाह (मक़दूर) नहीं पाते यहां तक कि अल्लाह उन्हें अपने फ़ज़ल से ग़नी कर दे, और तुम्हारे गुलाम जो मकातिबत (कुछ ले दे कर आज़ादी की तहरीर) चाहते हों तो उन से मकातिबत कर लो अगर तुम उन में बेहतरी पाओ, और उस माल में से उन को दो जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है, और अपनी कनीज़ों को बदकारी पर मजबूर न करो अगर वह पाक दामन रहना चाहें (महज़ इस लिए कि) तुम दुनिया की ज़िन्दगी का सामान हासिल कर लो, और जो उन्हें मजबूर करेगा तो अल्लाह उन (बेचारियों) के मजबूर किए जाने के बाद बख़्शने वाला, निहायत मेहरवान है। (33) और तहकीक हम ने तुम्हारी तरफ़ नाज़िल किए वाज़े अहकाम, और उन लोगों की मिसालें जो तुम से पहले गुज़रे हैं और नसीहत परहेज़गारों के लिए। (34) अल्लाह नूर है ज़मीन और आस्मान का, उस के नूर की मिसाल (ऐसी है) जैसे एक ताक हो, उस में एक चिराग हो, चिराग एक शीशे की (क़न्दील में) हो, वह शीशा गोया एक चमकदार सितारा है, वह रोशन किया जाता है ज़ैतून के एक मुबारक दरख़्त से जो न शरकी है न गरबी, करीब है कि उस का तेल रोशन हो जाए चाहे उसे आग न छुए, नूर पर नूर (सरासर रोशनी), अल्लाह जिस को चाहता है अपने नूर की तरफ़ रहनुमाई करता है, और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है, और अल्लाह हर शै का जानने वाला। (35) (यह रोशनी है) उन घरों में (जिन की निस्वत) अल्लाह ने हुम्म दिया है कि उन्हें बुलन्द किया जाए और उन में उस का नाम लिया जाए, वह उन में सुबह शाम उस की तसबीह करते हैं। (36)

वह लोग (जिन्हें) ग़ाफ़िल नहीं करती कोई तिजारत, न ख़रीद ओ फ़रोख़्त अल्लाह की याद से, नमाज़ काइम रखने और ज़कात अदा करने से, वह उस दिन से डरते हैं जिस में उलट जाएंगे दिल और आँखें। (37) ताकि अल्लाह उन के आमाल की बेहतर से बेहतर जज़ा दे, और उन्हें अपने फ़ज़ल से ज़ियादा दे, और अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब रिज़्क देता है। (38) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के आमाल सुराब (चमकते रेत के धोके) की तरह हैं चटियल मैदान में, प्यासा उसे पानी गुमान करता है, यहां तक कि जब वह वहां आता है तो उसे कुछ भी नहीं पाता, और उस ने अल्लाह को अपने पास पाया तो अल्लाह ने उस का हिसाब पूरा कर दिया, और अल्लाह तेज़ हिसाब करने वाला है। (39) (या उन के आमाल ऐसे हैं) जैसे गहरे दर्या में अन्धेरे, जिन्हें ढांप लेती है मौज, उस के ऊपर दूसरी मौज, उस के ऊपर बादल, अन्धेरे हैं एक पर दूसरा, जब वह अपना हाथ निकाले तो तबक्को नहीं कि उसे देख सके, और जिस के लिए अल्लाह नूर न बनाए उस के लिए कोई नूर नहीं। (40) क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता है जो (भी) आस्मानों और ज़मीन में है, और पर फैलाए हुए परिन्दे (भी) हर एक ने जान ली है अपनी दुआ़ा और अपनी तस्वीह, और अल्लाह जानता है जो वह करते हैं। (41) और अल्लाह (ही) की बादशाहत है आस्मानों की और ज़मीन की, और अल्लाह (ही) की तरफ़ लौट कर जाना है। (42) क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह बादल चलाता है, फिर उन्हें आपस में मिलाता है, फिर वह उन्हें तह व तह कर देता है, फिर तू देखे उन के दरमियान से वारिश निकलती है, और वह आस्मानों (में जो ओलों के) पहाड़ हैं उन से उतारता है ओले। फिर वह जिस पर चाहे डाल देता है, और जिस से चाहे वह उसे फेर देता है, करीब है कि उस की विजली की चमक आँखों (की बीनाई) ले जाए। (43)

رَجَالٌ لَا تُلْهِهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَإِقَامِ الصَّلَاةِ							
नमाज़	और काइम रखना	अल्लाह की याद	से	और न ख़रीद ओ फ़रोख़्त	तिजारत	उन्हें ग़ाफ़िल नहीं करती	वह लोग
وَإِيْتَاءِ الزَّكَاةِ يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيهِ الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ (37)							
37	और आँखें	दिल (जमा)	उस में	उलट जाएंगे	उस दिन से	और डरते हैं	ज़कात और अदा करना
لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَيَزِيدَهُمْ مِنْ فَضْلِهِ وَاللَّهُ يَرْزُقُ							
रिज़्क देता है	और अल्लाह	अपने फ़ज़ल से	और वह उन्हें ज़ियादा दे	जो उन्होंने ने किया (आमाल)	बेहतर से बेहतर	ताकि उन्हें जज़ा दे अल्लाह	
مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ (38) وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ							
सुराब की तरह	उन के अमल	और जिन लोगों ने कुफ़्र किया	38	बेहिसाब	जिसे चाहता है		
بِقَيْعَةٍ يَحْسَبُهُ الظَّمَانُ مَاءً حَتَّى إِذَا جَاءَهُ لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا							
कुछ भी	उस को नहीं पाता	जब वह वहां आता है	यहां तक कि	पानी	प्यासा	गुमान करता है	चटियल मैदान में
وَوَجَدَ اللَّهُ عِنْدَهُ فَوْقَهُ حِسَابَهُ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ (39)							
39	तेज़ हिसाब करने वाला	और अल्लाह	उस का हिसाब	तो उस (अल्लाह) ने उसे पूरा कर दिया	अपने पास	अल्लाह	और उस ने पाया
أَوْ كَظُلْمٍ فِي بَحْرِ لُجِّي يَعْشُهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهِ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهِ							
उस के ऊपर से	एक (दूसरी) मौज	उस के ऊपर से	मौज	उसे ढांप लेती है	गहरा पानी	दर्या में	या जैसे अन्धेरे
سَحَابٌ ظُلْمَتْ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ إِذَا أَخْرَجَ يَدَهُ لَمْ يَكِدْ							
तबक्को नहीं	अपना हाथ	वह निकाले	जब	वाज़ (दूसरे) के ऊपर	उस के वाज़ (एक)	अन्धेरे	बादल
يُرَبِّهَا وَمَنْ لَمْ يَجْعَلِ اللَّهُ لَهُ نُورًا فَمَا لَهُ مِنْ نُّورٍ (40) أَلَمْ تَرَ							
क्या तू ने नहीं देखा	40	कोई नूर	तो नहीं उस के लिए	नूर	उस के लिए	न बनाए (न दे) अल्लाह	और जिसे तू उसे देख सके
أَنَّ اللَّهَ يُسَبِّحُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالطَّيْرُ طَبَّطٌ كُلٌّ							
हर एक	पर फैलाए हुए	और परिन्दे	और ज़मीन	आस्मानों में	जो	उस की	पाकीज़गी बयान करता है कि अल्लाह
قَدْ عِلِمَ صَلَاتَهُ وَتَسْبِيحَهُ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ (41) وَاللَّهُ مُلْكٌ							
और अल्लाह के लिए बादशाहत	41	वह करते हैं	वह जो जानता है	और अल्लाह	अपनी तस्वीह	अपनी दुआ़ा	जान ली
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ الْمَصِيرُ (42) أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُزْجِي سَحَابًا ثُمَّ							
फिर	बादल (जमा)	चलाता है	कि अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा	42	लौट कर जाना	और अल्लाह की तरफ़ और ज़मीन आस्मानों
يُؤَلِّفُ بَيْنَهُ ثُمَّ يَجْعَلُهُ رُكَّامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ وَيُنَزِّلُ							
और वह उतारता है	उस के दरमियान से	निकलती है	वारिश	फिर तू देखे	तह व तह	वह उस को करता है	फिर आपस में मिलाता है वह
مِنَ السَّمَاءِ مِنْ جِبَالٍ فِيهَا مِنْ بَرَدٍ فَيُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ							
जिस पर चाहे	उसे	फिर वह डाल देता है	ओले	से	उस में	पहाड़	से आस्मानों से
وَيَصْرِفُهُ عَنِ مَنْ يَشَاءُ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهِ يَذْهَبُ بِالْأَبْصَارِ (43)							
43	आँखों को	ले जाए	उस की विजली	चमक करीब है	जिस से चाहे	से	और उसे फेर देता है

५  
११

يُقَلِّبُ اللَّهُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ﴿٤٤﴾						
वदलता है अल्लाह	रात	और दिन	वेशक	इस में	इव्रत है	आँखों वाले (अक़ल मन्द)
44						
وَاللَّهُ خَلَقَ كُلَّ دَابَّةٍ مِّن مَّاءٍ فَمِنْهُمْ مَّن يَمْشِي عَلَىٰ بَطْنِهِ وَمِنْهُمْ						
और अल्लाह	पैदा किया	हर जानदार	पानी से	पस उन में से	कोई चलता है	अपने पेट पर
और उन में से						
مَّن يَمْشِي عَلَىٰ رِجْلَيْنِ وَمِنْهُمْ مَّن يَمْشِي عَلَىٰ أَرْبَعٍ يَخْلُقُ اللَّهُ						
और उन में से	दो पाऊँ पर	कोई चलता है	चार पर	अल्लाह पैदा करता है		
مَا يَشَاءُ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤٥﴾ لَقَدْ أَنْزَلْنَا آيَاتٍ مُّبِينَاتٍ						
जो वह चाहता है	वेशक अल्लाह	पर	हर शै	कुदरत रखने वाला	45	तहकीक हम ने नाज़िल की
वाज़ेह	आयतें					
وَاللَّهُ يَهْدِي مَن يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٤٦﴾ وَيَقُولُونَ آمَنَّا						
और अल्लाह	हिदायत देता है	जिसे वह चाहता है	तरफ़	रास्ता	सीधा	46
हम ईमान लाए	और वह कहते हैं					
بِاللَّهِ وَبِالرَّسُولِ وَأَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ فَرِيقٌ مِّنْهُمْ مِّن بَعْدِ ذَلِكَ						
अल्लाह पर	और रसूल पर	और हम ने हुकम माना	फिर	फिर गया	एक फ़रीक	उस में से
उस के बाद						
وَمَا أُولَٰئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾ وَإِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ						
और वह नहीं	ईमान वाले	47	और जब	वह बुलाए जाते हैं	अल्लाह की तरफ़	और उस का रसूल
لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُونَ ﴿٤٨﴾ وَإِنْ يَكُنْ لَهُمُ الْحَقُّ						
ताकि वह फ़ैसला कर दे	उन के दरमियान	नागहां	एक फ़रिक्	उन में से	मुँह फेर लेता है	48
हक	उन के लिए	हो	और अगर	या	कोई रोग	वह शक में पड़े हैं
يَأْتُوا إِلَيْهِ مُدْعَبِينَ ﴿٤٩﴾ أَفِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ أَمْ ارْتَابُوا أَمْ						
वह आते हैं उस की तरफ़	गर्दन झुकाए	49	क्या उन के दिलों में	या	कोई रोग	वह शक में पड़े हैं
يَخَافُونَ أَنْ يَحِيفَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُولَهُ ۗ بَلْ أُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٥٠﴾						
वह डरते हैं	कि	जुल्म करेगा अल्लाह	उन पर	और उस का रसूल	वह	वही
50	ज़ालिम (जमा)					
إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ						
इस के सिवा नहीं है	बात	मोमिन (जमा)	जब	वह बुलाए जाते हैं	अल्लाह की तरफ़	और उस का रसूल
ताकि वह फ़ैसला कर दें						
بَيْنَهُمْ أَنْ يَقُولُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۗ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٥١﴾ وَمَنْ						
उन के दरमियान	कि-तो	वह कहते हैं	हम ने सुना	और हम ने इताज़त की	वही	फ़लाह पाने वाले
और जो	51					
يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَخْشِ اللَّهَ وَيَتَّقِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿٥٢﴾						
इताज़त करे अल्लाह की	और उस का रसूल	और डरे	अल्लाह	और परहेज़गारी करे	पस वह	वही
52	कामयाब होने वाले					
وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنِ أَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ۗ قُلْ						
और उन्होंने ने कसमें खाई	अल्लाह की	और ज़ोरदार कसमें	अलबत्ता अगर	आप हुकम दें उन्हें	तो वह ज़रूर निकल खड़े होंगे	फ़रमा दें
फ़रमा दें						
لَا تُقْسِمُوا طَاعَةً مَّعْرُوفَةً ۗ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٥٣﴾						
तुम कसमें न खाओ	इताज़त	पसदीदा	वेशक अल्लाह	ख़बर रखता है	वह जो	तुम करते हो
53						

अल्लाह रात और दिन को बदलता है, वेशक उस में इव्रत है अक़ल मन्दों के लिए। (44)

और अल्लाह ने हर जानदार पानी से पैदा किया, पस उन में से कोई अपने पेट पर चलता है, और उन में से कोई दो पाऊँ पर चलता है, और उन में से कोई चार (पाऊँ) पर चलता है। अल्लाह पैदा करता है जो वह चाहता है, वेशक अल्लाह हर शै पर कुदरत रखने वाला है। (45)

तहकीक हम ने वाज़ेह आयतें नाज़िल की, और अल्लाह जिसे चाहता है सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत देता है। (46)

और वह कहते हैं कि हम अल्लाह और रसूल पर ईमान लाए और हम ने हुकम माना, फिर उस के बाद उस में से एक फ़रीक फिर गया, और वह ईमान वाले नहीं। (47)

और जब वह बुलाए जाते हैं अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ ताकि वह उन के दरमियान फ़ैसला कर दे तो नागहां उन में से एक फ़रीक मुँह फेर लेता है। (48)

और अगर उन के लिए हक (पहुँचता) हो तो वह उस की तरफ़ गर्दन झुकाए (खुशी से) चले आते हैं। (49)

क्या उन के दिलों में कोई रोग है, या वह शक में पड़े हैं, या वह डरते हैं कि अल्लाह और उस का रसूल उन पर जुल्म करेंगे, (नहीं) बल्कि वही ज़ालिम हैं। (50)

मोमिनों की बात इस के सिवा नहीं कि जब वह अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ बुलाए जाते हैं ताकि वह उन के दरमियान फ़ैसला कर दें, तो वह कहते हैं हम ने सुना और हम ने इताज़त की और वही है फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) पाने वाले। (51)

और जो कोई अल्लाह और उस के रसूल की इताज़त करे और अल्लाह से डरे, और परहेज़गारी करे, पस वही लोग कामयाब होने वाले हैं। (52)

और उन्होंने ने अल्लाह की ज़ोरदार कसमें खाई कि अगर आप (स) उन्हें हुकम दें तो वह ज़रूर (जिहाद) के लिए निकल खड़े होंगे, आप (स) फ़रमा दें तुम कसमें न खाओ, पसदीदा इताज़त (मतलूब है), वेशक अल्लाह उस की ख़बर रखता है वह जो तुम करते हो। (53)

आप (स) फ़रमा दें तुम अल्लाह की और रसूल की इताअत करो, फिर आगर तुम फिर गए तो इस के सिवा नहीं कि रसूल पर उसी कदर है जो उस के जिम्मे किया गया है और तुम पर (लाज़िम है) जो तुम्हारे जिम्मे डाला गया है, अगर तुम उस की इताअत करोगे तो हिदायत पा लोगे, और रसूल पर सिर्फ़ साफ़ साफ़ पहुँचा देना है। (54)

अल्लाह ने उन लोगों से वादा किया है जो तुम में से ईमान लाए और उन्होंने ने नेक काम किए कि उन्हें ज़रूर ख़िलाफ़त (सलतनत) देगा ज़मीन में, जैसे उन के पहलों को ख़िलाफ़त दी, और उन के लिए उन के दीन को ज़रूर कुव्वत (इसतेहकाम) देगा, जो उस ने उन के लिए पसंद किया, और उन के लिए ख़ौफ़ के बाद ज़रूर अमन से बदल देगा, वह मेरी इबादत करेंगे, मेरा शरीक न करेंगे किसी शै को, और जिस ने उस के बाद नाशुकी की, पस वही लोग नाफ़रमान है। (55)

और तुम नमाज़ काइम करो और ज़कात अदा करो, और रसूल की इताअत करो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (56)

हरगिज़ गुमान न करना कि काफ़िर ज़मीन में आजिज़ करने वाले हैं, और उन का ठिकाना दोज़ख़ है, और (वह) अलवत्ता बुरा ठिकाना है। (57)

ऐ ईमान वालो! चाहिए कि तुम्हारे गुलाम (तुम्हारे पास आने की) तुम से इजाज़त लें, और वह जो नहीं पहुँचे तुम में से (हदे) शऊर को, तीन वक़्त (यानी) नमाज़े फ़ज़्र से पहले और जब तुम अपने कपड़े उतार कर रख देते हो दोपहर को, और नमाज़े इशा के बाद, तुम्हारे लिए (यह) तीन पर्दे (के औकात) हैं, नहीं तुम पर और न उन पर कोई गुनाह उन के अलावा (औकात में), तुम में से वाज़, वाज़ के पास फिरा करते हैं, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम वाज़ेह करता है, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (58)

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْهِ								
उस पर	तो इस के सिवा नहीं	फिर अगर तुम फिर गए	रसूल की	और इताअत करो	तुम इताअत करो अल्लाह की	फरमा दें		
مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ۖ وَإِنْ تُطِيعُوهُ تَهْتَدُوا ۗ وَمَا عَلَى								
पर	और नहीं	तुम हिदायत पा लोगे	तुम इताअत करोगे	और अगर	जो बोझ डाला गया तुम पर (ज़िम्मे)	और तुम पर	जो बोझ डाला गया (ज़िम्मे)	
الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلُغُ الْمُبِينُ ﴿٥٤﴾ وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا								
और काम किए	तुम में से	उन लोगो से जो ईमान लाए	अल्लाह ने वादा किया	54	साफ़ साफ़	पहुँचा देना	मगर-सिर्फ़	रसूल
الصَّلِحَتِ لِيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ ۗ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ								
वह लोग जो	उस ने ख़िलाफ़त दी	जैसे	ज़मीन में	वह ज़रूर उन्हें ख़िलाफ़त देगा	नेक			
مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ وَلِيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَىٰ لَهُمْ وَلِيُبَدِّلَنَّهُمْ								
और अलवत्ता बदल देगा उन के लिए	उन के लिए	उस ने पसंद किया	जो	उन का दीन	उन के लिए	और ज़रूर कुव्वत देगा	उन से पहले	
مِّنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا ۗ يَعْبُدُونَنِي لَا يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا ۗ وَمَنْ								
और जिस	कोई शै	मेरा	वह शरीक न करेंगे	वह मेरी इबादत करेंगे	अमन	उन का ख़ौफ़	वाद	
كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٥٥﴾ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ								
नमाज़	और तुम काइम करो	55	नाफ़रमान (जमा)	पस वही लोग	उस के बाद	नाशुकी की		
وَاتُوا الزَّكَاةَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٥٦﴾ لَا تَحْسَبَنَّ								
हरगिज़ गुमान न करें	56	रहम किया जाए	ताकि तुम पर	रसूल	और इताअत करो	ज़कात	और अदा करो तुम	
الَّذِينَ كَفَرُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۗ وَمَأْوَهُمُ النَّارُ وَلَبِئْسَ								
और अलवत्ता बुरा	दोज़ख़	उन का ठिकाना	ज़मीन में	आजिज़ करने वाले हैं	वह जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)			
الْمَصِيرُ ﴿٥٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِيَسْتَأْذِنَكُمْ الَّذِينَ مَلَكَتْ								
मालिक हुए	वह जो कि	चाहिए कि इजाज़त लें तुम से	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाली)	ऐ	57	ठिकाना		
أَيْمَانَكُمْ وَالَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ۖ								
बार-वक़्त	तीन	तुम में से	एहतिलाम-शऊर	नहीं पहुँचे	और वह लोग जो	तुम्हारे दाएँ हाथ (गुलाम)		
مِّن قَبْلِ صَلَاةِ الْفَجْرِ وَحِينَ تَضَعُونَ ثِيَابَكُمْ مِّنَ الظَّهْرِ								
दोपहर	से-को	अपने कपड़े	उतार कर रख देते हो	और जब	नमाज़े फ़ज़्र	पहले		
وَمِنْ بَعْدِ صَلَاةِ الْعِشَاءِ ۗ ثَلَاثُ عَوْرَاتٍ لَّكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ								
नहीं तुम पर	तुम्हारे लिए	पर्दा	तीन	नमाज़े इशा	और बाद			
وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ بَعْدَهُنَّ طَوْفُؤْنَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلَىٰ								
पर-पास	तुम में से वाज़ (एक)	तुम्हारे पास	फ़रा करने वाले	उन के बाद-अलावा	कोई गुनाह	और न उन पर		
بَعْضٍ ۗ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٨﴾								
58	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	अहकाम	तुम्हारे लिए	वाज़ेह करता है अल्लाह	इसी तरह	वाज़ (दूसरे)



وَإِذَا بَلَغَ الْأَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَأْذِنُوا كَمَا						
जैसे	पस चाहिए कि वह इजाज़त लें	(हदे) शऊर को	तुम में से	बच्चे	पहुँचें	और जब
اسْتَأْذَنَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ						
तुम्हारे लिए	अल्लाह वाज़ेह करता है	इसी तरह	उन से पहले	वह जो	इजाज़त लेते थे	
آيَتِهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِمْ حَكِيمٌ ﴿٥٩﴾ وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ الَّتِي						
वह जो	औरतों में से	और खाना नशीन बूढ़ी	59	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अपने अल्लाह अहकाम
لَا يَرْجُونَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ أَنْ يَضَعْنَ						
कि वह उतार रखें	कोई गुनाह	उन पर	तो नहीं	निकाह	आरजू नहीं रखती है	
ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجَاتٍ بِزِينَةٍ وَأَنْ يَسْتَعْفِفْنَ						
वह बचें	और अगर	ज़ीनत को	न ज़ाहिर करते हुए	अपने कपड़े		
خَيْرٌ لَّهُنَّ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٦٠﴾ لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَى						
नाबीना पर	नहीं	60	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	उन के लिए वेहतर
حَرْجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرْجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرْجٌ						
कोई गुनाह	बीमार पर	और न	कोई गुनाह	लंगड़े पर	और न	कोई गुनाह
وَلَا عَلَى أَنْفُسِكُمْ أَنْ تَأْكُلُوا مِنْ بُيُوتِكُمْ						
अपने घरों से	कि तुम खाओ	खुद तुम पर	और न			
أَوْ بُيُوتِ آبَائِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أُمَّهَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ إِخْوَانِكُمْ						
या अपने भाइयों के घरों से	या अपनी माँओं के घरों से	या अपने बापों के घरों से				
أَوْ بُيُوتِ أَخْوَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَعْمَامِكُمْ أَوْ بُيُوتِ عَمَّاتِكُمْ						
या अपनी फूफियों के घरों से	या अपने ताए चचाओं के घरों से	या अपनी बहनों के घरों से				
أَوْ بُيُوتِ أَخْوَالِكُمْ أَوْ بُيُوتِ خَلَاتِكُمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ						
जिस (घर) की तुम्हारे कब्ज़े में हों	या	या अपनी खालाओं के घरों से	या अपने खालू, मामूओं के घरों से			
مَفَاتِحَهُ أَوْ صَدِيقِكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ						
कि	कोई गुनाह	तुम पर	नहीं	या अपने दोस्त (के घर से)	उस की कुन्जियां	
تَأْكُلُوا جَمِيعًا أَوْ أَشْتَاتًا فَإِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوتًا						
तुम दाखिल हो घरों में	फिर जब	जुदा जुदा	या	साथ साथ	तुम खाओ	
فَسَلِّمُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ مُبْرَكَةٌ						
बाबरकत	अल्लाह के हां	से	दुआए ख़ैर	अपने लोगों को	तो सलाम करो	
طَيِّبَةٌ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٦١﴾						
61	समझो	ताकि तुम	अहकाम	तुम्हारे लिए	अल्लाह वाज़ेह करता है	इसी तरह पाकीज़ा

और जब तुम में से बच्चे पहुँचें हदे शऊर को, पस चाहिए कि वह इजाज़त लें जैसे उन से पहले इजाज़त लेते थे, इसी तरह अल्लाह वाज़ेह करता है तुम्हारे लिए अपने अहकाम, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (59) और जो खाना नशीन बूढ़ी औरतें निकाह की आरजू नहीं रखती, तो उन पर कोई गुनाह नहीं कि वह अपने (ज़ाइद) कपड़े उतार रखें, ज़ीनत (सिंघार) ज़ाहिर न करते हुए, और अगर वह (उस से भी) बचें तो उन के लिए वेहतर है, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (60) कोई गुनाह नहीं नाबीना पर, और न लंगड़े पर कोई गुनाह है, और न बीमार पर कोई गुनाह है, न खुद तुम पर कि तुम खाओ अपने घरों से, या अपने बापों के घरों से, या अपनी माँओं के घरों से, या अपने भाइयों के घरों से, या अपनी बहनों के घरों से, या अपने ताए चचाओं के घरों से, या अपनी फुफियों के घरों से, या अपने खालू, मामूओं के घरों से, या अपनी खालाओं के घरों से, या जिस घर की कुन्जियां तुम्हारे कबज़े में हों, या अपने दोस्त के घर से, तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम इकट्ठे मिल कर खाओ, या जुदा जुदा, फिर जब तुम घरों में दाखिल हो तो अपने लोगों को सलाम करो, दुआए ख़ैर अल्लाह के हां से, बाबरकत, पाकीज़ा, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम वाज़ेह करता है ताकि तुम समझो। (61)

इस के सिवा नहीं कि मोमिन वह हैं जिन्होंने ने अल्लाह और उस के रसूल (स) पर यकीन किया और जब वह किसी इज्तिमाई काम में उस (रसूल) के साथ होते हैं तो चले नहीं जाते जब तक वह उस से इजाज़त न ले लें, वेशक जो लोग आप (स) से इजाज़त मांगते हैं यही लोग हैं जो अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाए हैं, पस जब वह आप (स) से अपने किसी काम के लिए इजाज़त मांगें तो इजाज़त दे दें जिस को उन में से आप चाहें, और उन के लिए अल्लाह से बख्शिश मांगें, वेशक अल्लाह बख्शाने वाला निहायत मेहरबान है। (62)

तुम न बना लो अपने दरमियान रसूल को बुलाना जैसे तुम एक दूसरे को बुलाते हो, तहकीक अल्लाह जानता है उन लोगों को जो तुम में से नज़र बचा कर चुपके से खिसक जाते हैं, पस चाहिए कि वह डरें जो उस के हुक्म के खिलाफ करते हैं कि उन पर कोई आफ़त पहुँचे या उन को दर्दनाक अज़ाब पहुँचे। (63)

याद रखो! वेशक अल्लाह के लिए है जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है, तहकीक वह जानता है जिस (हाल) पर तुम हो, और उस दिन को जब उस की तरफ़ वह लौटाए जाएंगे, फिर वह उन्हें बताएगा जो कुछ उन्होंने ने किया, और अल्लाह हर शै को जानने वाला है। (64)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है बड़ी बरकत वाला है वह जिस ने अपने बन्दे पर “फुरकान” (अच्छे बुरे में फ़र्क और फ़ैसला करने वाली किताब) को नाज़िल किया ताकि वह सारे ज़हानों के लिए डराने वाला हो। (1)

वह जिस के लिए बादशाहत है आस्मानों और ज़मीन की, और उस ने कोई बेटा नहीं बनाया और उस का कोई शरीक नहीं सलतनत में, और उस ने हर शै को पैदा किया, फिर उस का एक (मुनासिब) अन्दाज़ा किया। (2)

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُوا								
वह होते हैं	और जब	और उस के रसूल पर	अल्लाह पर	जो ईमान लाए (यकीन किया)	मोमिन (जमा)	इस के सिवा नहीं		
مَعَهُ عَلَىٰ أَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوا حَتَّىٰ يَسْتَأْذِنُوهُ ۗ إِنَّ								
वेशक	वह उस से इजाज़त लें	जब तक	वह नहीं जाते	सब मिल कर करने का काम	पर-में	उस के साथ		
الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۗ								
और उस के रसूल पर	अल्लाह पर	ईमान लाते हैं	वह जो	यही लोग	इजाज़त मांगते हैं आप (स) से	जो लोग		
فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأَذَنْ لِمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ								
उन में से	आप चाहें	जिस को	तो इजाज़त दे दें	अपने काम	किसी के लिए	वह तुम से इजाज़त मांगें	पस जब	
وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ اللَّهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٦٢﴾ لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ								
बुलाना	तुम न बना लो	62	निहायत मेहरबान	बख्शने वाला	वेशक अल्लाह	उन के लिए अल्लाह (से)	और बख्शिश मांगें	
الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ۗ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ								
जो लोग	अल्लाह	तहकीक जानता है	बाज़ (दूसरे) को	अपने बाज़ (एक)	जैसे बुलाना	अपने दरमियान	रसूल को	
يَتَسَلَّلُونَ مِنْكُمْ لِوَاذًا ۗ فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ								
उस के हुक्म से	खिलाफ करते हैं	जो लोग	पस चाहिए कि वह डरें	नज़र बचा कर	तुम में से	चुपके से खिसक जाते हैं		
أَنْ تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾ أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا								
जो	याद रखो! वेशक अल्लाह के लिए	63	दर्दनाक	अज़ाब	या पहुँचे उन को	कोई आफ़त	पहुँचे उन पर कि	
فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ قَدْ يَعْلَمُ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ وَيَوْمَ								
और जिस दिन	उस पर	तुम	जो-जिस	तहकीक वह जानता है	और ज़मीन	आस्मानों में		
يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ فَيَنْبِئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٤﴾								
64	जानने वाला	हर शै को	और अल्लाह	उन्होंने ने किया	जो-जिस	फिर वह उन्हें बताएगा	उस की तरफ़	वह लौटाए जाएंगे
آيَاتُهَا ٧٧ ﴿٢٥﴾ سُورَةُ الْفُرْقَانِ ﴿٢٥﴾ رُكُوعَاتُهَا ٦								
(25) सूरतुल फुरकान कसौटी								
आयत 77								
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ								
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है								
تَبٰرَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَىٰ عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرًا ﴿١﴾								
1	डराने वाला	सारे ज़हानों के लिए	ताकि वह हो	अपने बन्दे पर	नाज़िल किया फ़र्क करने वाली किताब (कुरआन)	वह जो-जिस	बड़ी बरकत वाला	
إِلَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا ۗ وَلَمْ يَكُنْ								
और नहीं है	कोई बेटा	और उस ने नहीं बनाया	और ज़मीन	आस्मानों	बादशाहत	वह जिस के लिए		
لَّهُ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَرَهُ تَقْدِيْرًا ﴿٢﴾								
2	एक अन्दाज़ा	फिर उस का अन्दाज़ा ठहराया	हर शै	और उस ने पैदा किया	सलतनत में	कोई शरीक	उस का	

9  
ع  
15

وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ الْهَيْهَةِ لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ						
पैदा किए गए हैं	बल्कि वह	कुछ	वह नहीं पैदा करते	माबूद	उस के अलावा	और उन्होंने ने बना लिए
وَلَا يَمْلِكُونَ لِأَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا وَلَا يَمْلِكُونَ مَوْتًا						
किसी मौत का	और न वह इख्तियार रखते हैं	और न किसी नफा का	किसी नुकसान का	अपने लिए	और वह इख्तियार नहीं रखते	
وَلَا حَيَوَةَ وَلَا نُشُورًا ﴿٣﴾ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ هَذَا إِلَّا						
मगर-सिर्फ	नहीं यह	वह लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	और कहा	3	और न फिर उठने का	और न किसी ज़िन्दगी का
إِفْكٌ إِفْتَرَبَهُ وَأَعَانَهُ عَلَيْهِ قَوْمٌ آخَرُونَ فَقَدْ جَاءُوا						
तहकीक वह आगए	दूसरे लोग (जमा)	उस पर	उस की मदद की	उस ने उसे घड़ लिया है	बहुतान-मन घड़त	
ظُلْمًا وَزُورًا ﴿٤﴾ وَقَالُوا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلَى						
पस वह पढ़ी जाती है	उस ने उन्हें लिख लिया है	पहले लोग	कहानियाँ	और उन्होंने ने कहा	4	और झूट जुल्म
عَلَيْهِ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٥﴾ قُلْ أَنْزَلَهُ الَّذِي يَعْلَمُ السِّرَّ						
राज़	जानता है	वह जो	उस को नाज़िल किया है	फ़रमा दें	5	और शाम सुबह उस पर
فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٦﴾ وَقَالُوا						
और उन्होंने ने कहा	6	निहायत मेहरवान	बख़शने वाला	वेशक वह है	और ज़मीन	आस्मानों में
مَالِ هَذَا الرَّسُولِ يَأْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِي فِي الْأَسْوَاقِ						
बाज़ार (जमा)	में	चलता (फिरता) है	खाना	वह खाता है	यह रसूल	कैसा है
لَوْلَا أَنْزَلَ إِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُونُ مَعَهُ نَذِيرًا ﴿٧﴾ أَوْ يُلْقَى						
या डाला (उतारा) जाता	7	डराने वाला	उस के साथ	कि होता वह	कोई फ़रिश्ता	उस के उतारा गया क्यों न
إِلَيْهِ كَنْزٌ أَوْ تَكُونُ لَهُ جَنَّةٌ يَأْكُلُ مِنْهَا وَقَالَ الظَّالِمُونَ						
ज़ालिम (जमा)	और कहा	उस से	वह खाता	उस के लिए कोई बाग़	या होता	कोई खज़ाना उस की तरफ
إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَسْحُورًا ﴿٨﴾ أَنْظِرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ						
तुम्हारे लिए	उन्होंने ने बयान की	कैसी	देखो	8	जादू का मारा हुआ	एक आदमी मगर-सिर्फ नहीं तुम पैरवी करते
الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ﴿٩﴾ تَبَرَكَ الَّذِي						
वह जो	बड़ी बरकत वाला	9	रास्ता (सीधा)	लिहाज़ा न पा सकते हैं	सो वह बहक गए	मिसालें (बातें)
إِنْ شَاءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِمَّنْ ذَلِكَ جَنَّتِ تَجْرِي						
बहती है	बागात	उस से	बेहतर	तुम्हारे लिए	वह बना दे	अगर चाहे
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَيَجْعَلُ لَكَ فُضُورًا ﴿١٠﴾ بَلْ كَذَّبُوا						
उन्होंने ने झुटलाया	बल्कि	10	महल (जमा)	तुम्हारे लिए	और बना दे	नहरें जिन के नीचे
بِالسَّاعَةِ وَأَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ﴿١١﴾						
11	दोज़ख	क़ियामत को	उस के लिए जिस ने झुटलाया	और हम ने तैयार किया	क़ियामत को	

और उन्होंने ने उस के अलावा अपना लिए हैं और माबूद, वह कुछ नहीं पैदा करते बल्कि वह (खुद) पैदा किए गए हैं, और वह अपने लिए इख्तियार नहीं रखते किसी नुकसान का, और न किसी नफा का, और न वह इख्तियार रखते हैं किसी मौत का और न किसी ज़िन्दगी का, और न फिर (जी) उठने का। (3) और काफ़िरों ने कहा यह (कुछ भी) नहीं, सिर्फ़ बहुतान है, उस (नबी स) ने इसे घड़ लिया है और इस पर दूसरे लोगों ने उस की मदद की है, तहकीक वह आगए (उतर आए) है जुल्म और झूट पर। (4) और उन्होंने ने कहा कि यह पहले लोगों की कहानियाँ हैं, उस ने उन्हें लिख लिया है, पस वह उस पर पढ़ी जाती है (सुनाई जाती है) सुबह और शाम। (5) आप (स) फ़रमा दें इस को नाज़िल किया है उस ने जो आस्मानों और ज़मीन के राज़ जानता है, वेशक वह बख़शने वाला निहायत मेहरवान है। (6) और उन्होंने ने कहा कैसा है यह रसूल! (जो) खाना खाता है, और चलता फिरता है बाज़ारों में, उस के साथ कोई फ़रिश्ता क्यों न उतारा गया कि वह उस के साथ डराने वाला होता। (7) या उस की तरफ़ उतारा जाता कोई खज़ाना, या उस के लिए कोई बाग़ होता कि वह उस से खाता, और ज़ालिमों ने कहा तुम पैरवी करते हो सिर्फ़ जादू के मारे हुए आदमी की। (8) ऐ नबी (स)! देखो तो उन्होंने ने तुम्हारे लिए कैसी बातें बयान की हैं, सो वह बहक गए हैं, लिहाज़ा वह कोई रास्ता नहीं पा सकते। (9) बड़ी बरकत वाला है वह, अगर वह (अल्लाह) चाहे तो तुम्हारे लिए उस से बेहतर बना दे, (ऐसे) बागात जिन के नीचे नहरें बहती हों, और तुम्हारे लिए महल बना दे। (10) बल्कि उन्होंने ने झुटलाया क़ियामत को, और जिस ने क़ियामत को झुटलाया हम ने उस के लिए दोज़ख़ तैयार किया है। (11)

जब वह (दोज़ख) उन्हें देखेगी दूर जगह से, वह उसे जोश मारता, चिंघाड़ता सुनेंगे। (12)

और जब वह उस (दोज़ख) की किसी तंग जगह में डाले जाएंगे (बाहम ज़नजीरो से) जकड़े हुए, तो वह वहां मौत को पुकारेंगे। (13)

(कहा जाएगा) आज एक मौत को न पुकारो, बल्कि तुम पुकारो बहुत सी मौतों को। (14)

आप (स) फ़रमा दें क्या यह बेहतर है या हमेशगी के बाग, जिन का वादा परहेज़गारों से किया गया है, वह उन के लिए जज़ा और लौट कर जाने की जगह है। (15)

उस में उन के लिए जो वह चाहेंगे (मौजूद होगा), हमेशा रहेंगे, यह एक वादा है तेरे रब के ज़िम्मे वाजिबुल अदा। (16)

और जिस दिन वह उन्हें जमा करेगा और जिन की वह परसतिश करते हैं अल्लाह के सिवा, तो वह कहेगा क्या तुम ने मेरे इन बन्दों को गुमराह किया? या वह खुद रास्ते से भटक गए? (17)

वह कहेंगे तू पाक है, हमारे लिए सज़ावार न था कि हम बनाते तेरे सिवा औरों को मददगार, लेकिन तू ने इन्हें और इन के वाप दादा को आसूदगी दी यहां तक कि वह तेरी याद भूल गए, और वह थे हलाक होने वाले लोग। (18)

पस उन्हीं (तुम्हारे माबूद) ने तुम्हारी बात झुटला दी, पस अब न तुम (अज़ाब) फेर सकते हो और न अपनी मदद कर सकते हो, और जो तुम में से जुल्म करेगा, हम उसे बड़ा अज़ाब चखाएंगे। (19)

और हम ने तुम से पहले रसूल नहीं भेजे मगर यकीनन वह खाते थे खाना, और बाज़ारों में चलते फिरते थे, और हम ने तुम में से बाज़ को बनाया दूसरों के लिए आजमाइश, क्या तुम सब्र करोगे? और तुम्हारा रब देखने वाला है। (20)

إِذَا رَأَتْهُمْ مِّن مَّكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظًا وَزَفِيرًا ۗ (۱۲)									
12	और चिंघाड़ती	जोश मारती	उसे	वह सुनेंगे	दूर	जगह	से	वह देखेगी उन्हें	जब
وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِينَ دَعَوْا هُنَالِكَ									
वहां	वह पुकारेंगे	जकड़े हुए	तंग	किसी जगह	उस से-की	वह डाले जाएंगे	और जब		
تُبُورًا ۗ (۱۳) لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ تُبُورًا وَاحِدًا وَادْعُوا تُبُورًا									
मौतें	बल्कि पुकारो	एक	मौत को	आज	तुम न पुकारो	13	मौत		
كَثِيرًا ۗ (۱۴) قُلْ أَذِلَّكَ خَيْرٌ أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي وُعِدَ									
वादा किया गया	जो-जिस	हमेशगी के बाग	या	बेहतर	क्या यह	फ़रमा दें	14	बहुत सी	
الْمُتَّقُونَ ۗ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاءً وَمَصِيرًا ۗ (۱۵) لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ									
जो वह चाहेंगे	उस में	उन के लिए	15	लौट कर जाने की जगह	जज़ा (बदला)	उन के लिए	वह है	परहेज़गार (जमा)	
لِخَالِدِينَ ۗ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْئُولًا ۗ (۱۶) وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ									
वह उन्हें जमा करेगा	और जिस दिन	16	ज़िम्मेदाराना	एक वादा	तुम्हारे रब के ज़िम्मे	है	हमेशा रहेंगे		
وَمَا يَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ فَيَقُولُ ءَأَنزَلْنَاهُمْ									
तुम ने गुमराह किया	क्या तुम	तो वह कहेगा	अल्लाह के सिवा	से	वह परसतिश करते हैं	और जिन्हें			
عِبَادِي هَؤُلَاءِ أَمْ هُم ضَلُّوا السَّبِيلَ ۗ (۱۷) قَالُوا سُبْحٰنَكَ									
तू पाक है	वह कहेंगे	17	रास्ता	भटक गए	या वह	यह है-उन	मेरे बन्दे		
مَا كَانَ يَبْغِي لَنَا أَن نَّتَّخِذَ مِن دُونِكَ مِن أَوْلِيَاءَ									
मददगार	कोई	तेरे सिवा	हम बनाएं	कि	हमारे लिए	सज़ावार-लाइक	न था		
وَلَكِن مَّتَّعْتَهُمْ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ نَسُوا الذِّكْرَ وَكَانُوا									
और वह थे	याद	वह भूल गए	यहां तक कि	और उन के वाप दादा	तू ने आसूदगी दी उन्हें	और लेकिन			
قَوْمًا بُورًا ۗ (۱۸) فَقَدْ كَذَّبُوكُمْ بِمَا تَقُولُونَ ۗ فَمَا تَسْتَطِيعُونَ صَرْفًا									
फेरना	पस अब तुम नहीं कर सकते हो	वह जो तुम कहते थे (तुम्हारी बात)	पस उन्हीं ने तुम्हें झुटला दिया	18	हलाक होने वाले लोग				
وَلَا نَصْرًا ۗ وَمَنْ يَظْلِم مِّنكُمْ نُدِقْهُ عَذَابًا كَبِيرًا ۗ (۱۹)									
19	बड़ा	अज़ाब	हम चखाएंगे उसे	तुम में से	वह जुल्म करेगा	और जो	और न मदद करना		
وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا إِنَّهُمْ لَيَأْكُلُونَ									
अलबत्ता खाते थे	वह यकीनन	मगर	रसूल (जमा)	से	तुम से पहले	भेजे हम ने	और नहीं		
الطَّعَامَ وَيَمْشُونَ فِي الْأَسْوَاقِ ۗ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ									
तुम में से बाज़ को (किसी को)	और हम ने किया (बनाया)	बाज़ारों में	और चलते फिरते थे	खाना					
لِبَعْضٍ فِتْنَةً ۗ أَتَصْبِرُونَ ۗ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيرًا ۗ (۲۰)									
20	देखने वाला	तुम्हारा रब	और है	क्या तुम सब्र करोगे	आज़माइश	बाज़ (दूसरों के लिए)			

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْنَا						
हम पर	उतारे गए	क्यों न	हम से मिलना	वह उम्मीद नहीं रखते	वह लोग जो	और कहा
الْمَلَكُتُ أَوْ نَرَى رَبَّنَا لَقَدْ اسْتَكْبَرُوا فِي أَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْا						
और उन्होंने ने सरकशी की	अपने दिलों में	तहकीक उन्होंने ने तकव्वुर किया	अपना रब	या हम देख लेते	फरिश्ते	
عَتَوْا كَبِيرًا (٢١) يَوْمَ يَرُونَ الْمَلَكَةَ لَا بُشْرَى يَوْمَئِذٍ لِلْمُجْرِمِينَ						
मुजरिमों के लिए	उस दिन	नहीं खुशखबरी	फरिश्ते	वह देखेंगे	जिस दिन	21 बड़ी सरकशी
وَيَقُولُونَ حَجْرًا مَّحْجُورًا (٢٢) وَقَدِمْنَا إِلَى مَا عَمَلُوا مِنْ عَمَلٍ						
कोई काम	जो उन्होंने ने किए	तरफ	और हम आए (मुतवज्जुह होंगे)	22	रोकी हुई	कोई आइ हो
فَجَعَلْنَاهُ هَبَاءً مَّنْثُورًا (٢٣) أَصْحَابُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا						
ठिकाना	बहुत अच्छा	उस दिन	जन्नत वाले	23	बिखरा हुआ (परागन्दा)	गुबार तो हम करदेंगे उन्हें
وَأَحْسَنُ مَقِيلًا (٢٤) وَيَوْمَ تَشْقُقُ السَّمَاءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلَكَةُ						
फरिश्ते	और उतारे जाएंगे	बादल से	आस्मान	फट जाएगा	और जिस दिन	24 आराम गाह और बेहतरीन
تَنْزِيلًا (٢٥) أَلْمَلِكُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ لِلرَّحْمَنِ وَكَانَ يَوْمًا						
वह दिन	और है- होगा	रहमान के लिए	सच्ची	उस दिन	बादशाहत	25 बकस्रत उतरना
عَلَى الْكُفْرَيْنِ عَسِيرًا (٢٦) وَيَوْمَ يَعِضُ الظَّالِمُ عَلَى يَدَيْهِ يَقُولُ						
वह कहेगा	अपने हाथों को	ज़ालिम	काट खाएगा	और जिस दिन	26	सख्त काफ़िरों पर
يَلَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا (٢٧) يُؤْيَلْتِي لَيْتَنِي						
काश मैं	हाए मेरी शामत	27	रास्ता	रसूल के साथ	पकड़ लेता	ऐ काश! मैं
لَمْ أَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيلًا (٢٨) لَقَدْ أَضَلَّنِي عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءَنِي						
मेरे पास पहुँच गई	उस के बाद जब	नसीहत से	अलबत्ता उस ने मुझे बहकाया	28	दोस्त	फ़लां को न बनाता
وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِلْإِنْسَانِ خَذُولًا (٢٩) وَقَالَ الرَّسُولُ يَرَبِّ إِنَّ						
वेशक	ऐ मेरे रब	रसूल (स)	और कहेगा	29	खुला छोड़ जाने वाला	इन्सान को शैतान और है
قَوْمِي اتَّخَذُوا هَذَا الْقُرْآنَ مَهْجُورًا (٣٠) وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ						
हर नबी के लिए	हम ने बनाए	और इसी तरह	30	मतरूक (छोड़ने के काबिल)	इस कुरआन को	ठहरा लिया उन्होंने ने मेरी कौम
عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِينَ وَكَفَى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَنَصِيرًا (٣١)						
31	और मददगार	हिदायत करने वाला	तुम्हारा रब	और काफ़ी है	गुनाहगारों (मुजरिमीन)	से दुश्मन
وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ جُمْلَةً وَاحِدَةً						
एक ही बार	कुरआन	उस पर	नाज़िल किया गया	क्यों न	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	और कहा
كَذَلِكَ لِنُثَبِّتَ بِهِ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنَاهُ تَرْتِيلًا (٣٢)						
32	ठहर ठहर कर	और हम ने उस को पढ़ा	तुम्हारा दिल	उस से	ताकि हम कच्ची करें	इसी तरह ठहर ठहर कर। (32)

और जो लोग हम से मिलने की उम्मीद नहीं रखते, उन्होंने ने कहा कि हम पर फ़रिश्ते क्यों न उतारे गए? या हम अपने रब को देख लेते, तहकीक उन्होंने ने अपने दिलों में (अपने आप को) बड़ा समझा, और बड़ी सरकशी की। (21)

जिस दिन वह देखेंगे फ़रिश्तों को उस दिन मुजरिमों के लिए कोई खुशखबरी नहीं होगी और वह कहेंगे कोई आइ (पनाह) हो, रोकी हुई। (22)

और हम मुतवज्जुह होंगे उन के किए हुए कामों की तरफ तो हम उन्हें परागन्दा गुबार की तरह करदेंगे। (23)

उस दिन जन्नत वाले बहुत अच्छे ठिकाने में और बेहतरीन आराम गाह में होंगे। (24)

और जिस दिन बादल से आस्मान फट जाएगा और फ़रिश्ते उतारे जाएंगे बकस्रत। (25)

उस दिन सच्ची बादशाही रहमान (अल्लाह) के लिए है, और वह दिन काफ़िरों पर सख्त होगा। (26)

और जिस दिन ज़ालिम अपने हाथों को काट खाएगा और कहेगा ऐ काश! मैं ने रसूल के साथ रास्ता पकड़ लिया होता। (27)

हाए मेरी शामत! काश मैं फ़लां को दोस्त न बनाता। (28)

अलबत्ता उस ने मुझे ज़िक्र के मामले में बहकाया, उस के बाद जब कि वह मेरे पास पहुँच गई, और

शैतान इन्सान को (ऐन वक़्त पर) तनहा छोड़ जाने वाला है। (29)

और रसूल (स) फ़रमाएगा ऐ मेरे रब! वेशक मेरी कौम ने इस कुरआन को छोड़ने के काबिल ठहरा लिया

(मतरूक कर रखा)। (30)

और इसी तरह हम ने हर नबी के लिए दुश्मन बनाए गुनाहगारों में से। और तुम्हारा रब काफ़ी है हिदायत करने वाला और मददगार। (31)

और काफ़िरों ने कहा क्यों न उस पर कुरआन एक ही बार नाज़िल किया गया? इसी तरह (हम ने

वतद्रीज नाज़िल किया) ताकि उस से तुम्हारा दिल मज़बूत करें और हम ने उस को पढ़ कर (सुनाया)

ठहर ठहर कर। (32)

और वह तुम्हारे पास कोई बात नहीं लाते, मगर हम तुम्हें ठीक जवाब और बहतरीन वज़ाहत पहुँचा देते हैं। (33)

जो लोग अपने चेहरों के बल जहननुम की तरफ जमा किए जाएंगे, वही लोग हैं बदतरीन मुक़ाम में और बहुत बहके हुए रास्ते से। (34)

और अलबत्ता हम ने मूसा (अ) को किताब दी और उस के साथ उस के भाई हारून (अ) को मुझाविन बनाया। (35)

पस हम ने कहा तुम दोनों उस कौम की तरफ जाओ जिन्होंने ने हमारी आयतों को झुटलाया तो हम ने उन्हें बुरी तरह हलाक कर के तबाह कर दिया। (36)

और कौम नूह (अ) ने जब रसूलों को झुटलाया तो हम ने उन्हें गर्क कर दिया, और हम ने उन्हें लोगों के लिए एक निशानी (इब्रत) बनाया, और हम ने ज़ालिमों के लिए तैयार किया है एक दर्दनाक अज़ाब। (37)

और अ़ाद और समूद और कुएं वाले और उन के दरमियान बहुत सी नसलें। (38)

और हम ने हर एक के लिए मिसालें वयान की (मगर उन्होंने ने नसीहत न पकड़ी) और हर एक को तबाह कर के मिटा दिया। (39)

तहकीक वह आए उस (कौम लूत अ की) बस्ती पर जिन पर (पत्थरों की) बुरी बारिश बरसाई गई, तो क्या वह उसे देखते नहीं रहते? बल्कि वह (दोबारा) जी उठने की उम्मीद नहीं रखते। (40)

और जब वह तुम्हें देखते हैं तो वह तुम्हारा सिर्फ ठट्ठा उड़ाते हैं (कहते हैं) क्या यह है वह जिसे अल्लाह ने रसूल (बना कर) भेजा? (41)

करीब था कि वह हमें हमारे माबूदों से बहका देता, अगर हम उस पर जमे न रहते, और वह जल्द जान लेंगे, जब वह अज़ाब देखेंगे, कौन है राहे (रास्त) से बदतरीन गुमराह! (42)

क्या तुम ने उसे देखा? जिस ने अपनी खाहिश को अपना माबूद बना लिया है, तो क्या तुम उस पर निगहवान हो जाओगे? (43)

क्या तुम समझते हो कि उन में से अक़सर सुनते या अक़ल से काम लेते हैं? वह नहीं हैं मगर चौपायों जैसे, बल्कि राहे (रास्त) से बदतरीन गुमराह हैं। (44)

وَلَا يَأْتُونَكَ بِمَثَلٍ إِلَّا جِئْنَاكَ بِالْحَقِّ وَأَحْسَنَ تَفْسِيرًا ﴿٣٣﴾ الَّذِينَ

जो लोग	33	वज़ाहत	और बहतरीन	ठीक (जवाब)	हम पहुँचा देते हैं तुम्हें	मगर	कोई बात	और वह नहीं लाते तुम्हारे पास
--------	----	--------	-----------	------------	----------------------------	-----	---------	------------------------------

يُحْشَرُونَ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ إِلَىٰ جِهَتِهِمْ ۚ أُولَٰئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَأَضَلُّ

और बहुत बहके हुए	मुक़ाम	बदतरीन	वही लोग	जहननुम की तरफ	अपने सुँह	पर-बल	जमा किए जाएंगे
------------------	--------	--------	---------	---------------	-----------	-------	----------------

سَبِيلًا ﴿٣٤﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ الْكِتَابَ وَجَعَلْنَا مَعَٰهَ أَخَاهُ هَارُونَ

हारून (अ)	उस का भाई	उस के साथ	और हम ने बनाया	किताब	मूसा (अ)	और अलबत्ता हम ने दी	34	रास्ते से
-----------	-----------	-----------	----------------	-------	----------	---------------------	----	-----------

وَزَيْرًا ﴿٣٥﴾ فَقُلْنَا اذْهَبَا إِلَىٰ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِنَا فَدَمْرْنَهُمْ

तो हम ने तबाह कर दिया उन्हें	हमारी आयतें	जिन्होंने ने झुटलाया	कौम की तरफ	तुम दोनों जाओ	पस हम ने कहा	35	बज़ीर (मुझाविन)
------------------------------	-------------	----------------------	------------	---------------	--------------	----	-----------------

تَدْمِيرًا ﴿٣٦﴾ وَقَوْمِ نُوحٍ لَّمَّا كَذَبُوا الرُّسُلَ أَغْرَقْنَاهُمْ وَجَعَلْنَاهُمْ لِلنَّاسِ

लोगों के लिए	और हम ने बनाया उन्हें	हम ने गर्क कर दिया उन्हें	रसूल (जमा)	जब उन्होंने ने झुटलाया	और कौम नूह (अ)	36	बुरी तरह हलाक
--------------	-----------------------	---------------------------	------------	------------------------	----------------	----	---------------

آيَةً ۖ وَاعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٣٧﴾ وَعَادًا وَثَمُودًا

और समूद	और अ़ाद	37	दर्दनाक	एक अज़ाब	ज़ालिमों के लिए	और तैयार किया हम ने	एक निशानी
---------	---------	----	---------	----------	-----------------	---------------------	-----------

وَأَصْحَابِ الرَّسِّ وَقُرُونًا بَيْنَ ذَٰلِكَ كَثِيرًا ﴿٣٨﴾ وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ

उस को	हम ने वयान की	और हर एक को	38	बहुत सी	उन के दरमियान	और नसलें	और कुएं वाले
-------	---------------	-------------	----	---------	---------------	----------	--------------

الْأَمْثَالَ ۖ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيرًا ﴿٣٩﴾ وَلَقَدْ آتَوْا عَلَىٰ الْقَرْيَةِ الَّتِي أَمْطَرْنَا

बरसाई गई	वह जिस पर	बस्ती	पर	और तहकीक वह आए	39	तबाह कर के	हम ने मिटा दिया	और हर एक को	मिसालें
----------	-----------	-------	----	----------------	----	------------	-----------------	-------------	---------

مَطَرَ السَّوْءِ أَفَلَمْ يَكُونُوا يَرُونَهَا بَلْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ

वह उम्मीद नहीं रखते	बल्कि	उस को देखते	तो क्या वह न थे	बुरी बारिश
---------------------	-------	-------------	-----------------	------------

نُشُورًا ﴿٤٠﴾ وَإِذَا رَأَوْكَ إِن يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا ۚ أَهَٰذَا

क्या यह	तमसख़र (ठट्ठा)	मगर (सिर्फ)	वह बनाते तुम्हें	नहीं	देखते हैं तुम्हें वह	और जब	40	जी उठना
---------	----------------	-------------	------------------	------	----------------------	-------	----	---------

الَّذِي بَعَثَ اللَّهُ رَسُولًا ﴿٤١﴾ إِن كَادَ لَيُضِلَّنَا عَنِ الْهَيْتَا لَوْلَا

अगर न	हमारे माबूदों से	कि वह हमें बहका देता	करीब था	41	रसूल	भेजा अल्लाह ने	वह जिसे
-------	------------------	----------------------	---------	----	------	----------------	---------

أَنَّ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۖ وَسَوْفَ يَعْلَمُونَ حِينَ يَرُونَ الْعَذَابَ

अज़ाब	वह देखेंगे	जिस वक़्त	वह जान लेंगे	और जल्द	उस पर	हम जमे रहते
-------	------------	-----------	--------------	---------	-------	-------------

مَنْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٤٢﴾ أَرَأَيْتَ مَنْ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ ۚ أَفَأَنْتَ

तो क्या तु	अपनी खाहिश	अपना माबूद	जिस ने बनाया	क्या तुम ने देखा?	42	रास्ते से	कौन बदतरीन गुमराह
------------	------------	------------	--------------	-------------------	----	-----------	-------------------

تَكُونُ عَلَيْهِ وَكَيْلًا ﴿٤٣﴾ أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُونَ

सुनते हैं	उन के अक़सर	कि	क्या तुम समझते हो?	43	निगहवान	उस पर	हो जाएगा
-----------	-------------	----	--------------------	----	---------	-------	----------

أَوْ يَعْقِلُونَ ۚ إِن هُمْ إِلَّا كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٤٤﴾

44	राह से	बदतरीन गुमराह	बल्कि वह	चौपायों जैसे	मगर	नहीं वह	या अक़ल से काम लेते हैं
----	--------	---------------	----------	--------------	-----	---------	-------------------------

أَلَمْ تَرَ إِلَىٰ رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلَهُ سَاكِنًا ثُمَّ								
फिर	साकिन	तो उसे बनादेता	और अगर वह चाहता	दराज़ किया साया	कैसे	अपना रब	तरफ़	क्या तुम ने नहीं देखा
جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيلًا ﴿٤٥﴾ ثُمَّ قَبَضْنَاهُ إِلَيْنَا قَبْضًا يَسِيرًا ﴿٤٦﴾								
46	आहिस्ता आहिस्ता	खींचना	अपनी तरफ़	हम ने समेटा उस को	फिर 45	एक दलील	उस पर	सूरज हम ने बनाया
وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِبَاسًا وَالنَّوْمَ سُبَاتًا وَجَعَلَ								
और बनाया	राहत	और नीन्द	पर्दा	रात	तुम्हारे लिए	जिस ने बनाया	और वह	
النَّهَارَ نُشُورًا ﴿٤٧﴾ وَهُوَ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ بُشْرًا بَيْنَ								
आगे	खुशख़बरी	भेजी हवाएं	जिस ने	और वही	47	उठने का वक़्त	दिन	
يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۖ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً طَهُورًا ﴿٤٨﴾ لِنُحْيِيَ بِهِ								
ताकि हम ज़िन्दा कर दें उस से	48	पानी पाक	आस्मान से	और हम ने उतारा	अपनी रहमत			
بَلَدَةً مَّيْتًا وَنُسْقِيهِ مِمَّا خَلَقْنَا أَنْعَامًا وَأَنَاسِي كَثِيرًا ﴿٤٩﴾								
49	बहुत से	और आदमी	चौपाए	हम ने पैदा किया	उस से जो	और हम पिलाएं उसे	शहर मुर्दा	
وَلَقَدْ صَرَّفْنَاهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوا ۚ فَأَبَىٰ أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ﴿٥٠﴾								
50	नाशुक्री	मगर	अक़्सर लोग	पस कुबूल न किया	ताकि वह नसीहत पकड़ें	उन के दरमियान	और तहकीक हम ने उसे तकसीम किया	
وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ نَذِيرًا ﴿٥١﴾ فَلَا تُطِعِ الكُفْرِينَ								
काफ़िरों	पस न कहा मानें आप (स)	51	एक डराने वाला	हर बस्ती	में	तो हम भेज देते	हम चाहते	और अगर
وَجَاهِدْهُمْ بِهِ جِهَادًا كَبِيرًا ﴿٥٢﴾ وَهُوَ الَّذِي مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هَذَا								
यह	दो दर्या	मिलाया	जिस ने	और वही	52	बड़ा जिहाद	इस के साथ	और जिहाद करें उन से
عَذْبٌ فُرَاتٌ وَهَذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ ۚ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَحِجْرًا								
और आड़	एक पर्दा	उन दोनों के दरमियान	और उस ने बनाया	तलख़ वदमज़ा	और यह	खुशगवार	शीरी	
مَّحْجُورًا ﴿٥٣﴾ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَاءِ بَشَرًا فَجَعَلَهُ نَسَبًا								
नसब	फिर बनाए उस के	बशर	पानी से	पैदा किया	जिस ने	और वही	53	मज़बूत आड़
وَصِهْرًا ۚ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيرًا ﴿٥٤﴾ وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ								
अल्लाह के सिवा	और वह बन्दगी करते हैं	54	कुदरत वाला	तेरा रब	और है	और सुस्वाल		
مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۚ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلَىٰ رَبِّهِ								
अपना रब	पर-खिलाफ़	काफ़िर	और है	और न उन का नुक़सान कर सके	न नफ़ा पहुँचाए	जो		
ظَهِيرًا ﴿٥٥﴾ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿٥٦﴾ قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ								
नहीं मांगता तुम से	फ़रमा दें	56	और डराने वाला	मगर खुशख़बरी देने वाला	भेजा हम ने आप को	और नहीं	55	पुशत पनाही करने वाला
عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِلَّا مَنْ شَاءَ أَنْ يَتَّخِذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿٥٧﴾								
57	रास्ता	अपने रब तक	कि इख़्तियार करले	जो चाहे	मगर	अजर	कोई	इस पर

क्या तुम ने अपने रब की (कुदरत) की तरफ़ नहीं देखा, उस ने कैसे साए को दराज़ किया? और अगर वह चाहता तो उसे साकिन बना देता, फिर हम ने सूरज को उस पर एक दलील (रहनुमा) बनाया। (45) फिर हम ने उस (साए) को समेटा अपनी तरफ़ आहिस्ता आहिस्ता खींच कर। (46) और वही है जिस ने तुम्हारे लिए रात को पर्दा, और नीन्द को राहत बनाया, और दिन को उठ (खड़े होने) का वक़्त बनाया। (47) और वही है जिस ने अपनी रहमत के आगे हवाएं खुशख़बरी (सुनाती हुई) भेजी, और हम ने आस्मान से पानी उतारा। (48) ताकि उस में से मुर्दा शहर को ज़िन्दा कर दें। और हम उस से पिलाएं (उन्हें) जो हम ने पैदा किए हैं, बहुत से चौपाए और आदमी। (49) और तहकीक हम ने उसे उन के दरमियान तकसीम किया ताकि वह नसीहत पकड़ें, पस अक़्सर लोगों ने कुबूल न किया मगर नाशुक्री को। (50) और अगर हम चाहते तो हर बस्ती में एक डराने वाला भेज देते। (51) पस आप (स) काफ़िरों का कहा न मानें और इस (हुक्मे इलाही) के साथ उन से बड़ा जिहाद करें। (52) और वही है जिस ने दो दर्याओं को मिलाया (मिला कर चलाया) यह (इस तरफ़ का पानी) खुशगवार शीरी है और यह (दूसरा) तलख़ वदमज़ा है, और उस ने उन दोनों के दरमियान (एक ग़ैर महसूस) पर्दा और मज़बूत आड़ बनाई। (53) और वही है जिस ने पैदा किया पानी से बशर, फिर बनाए उस के नसब (नसबी रिश्ते) और सुस्वाल, और तेरा रब कुदरत वाला है। (54) और वह बन्दगी करते हैं अल्लाह के सिवा उस की जो उन्हें नफ़ा न पहुँचाए, और न उन का नुक़सान कर सके, और काफ़िर अपने रब के खिलाफ़ पुशत पनाही करने वाला है। (55) और हम ने आप (स) को नहीं भेजा मगर (सिर्फ़) खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला। (56) आप (स) फ़रमा दें: मैं इस पर तुम से नहीं मांगता कोई अजर, मगर जो शख़्स चाहे अपने रब तक रास्ता इख़्तियार कर ले। (57)

और उस हमेशा रहने वाले पर भरोसा करो जिसे मौत नहीं, और उस की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान कर, और काफी है वह अपने बन्दों के गुनाहों की ख़बर रखने वाला। (58)

वह जिस ने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को, और जो उन के दरमियान है, छः दिन में, फिर अर्श पर काइम हुआ, रहम करने वाला, उस के मुतअज़ज़िक किसी बाख़बर से पूछो। (59)

और जब उन से कहा जाए कि तुम रहमान को सिज्दा करो तो वह कहते हैं क्या है रहमान? क्या तू जिसे सिज्दा करने को कहे हम उसे सिज्दा करें? उस (बात) ने उन का विदकना और बढ़ा दिया। (60)

बड़ी बरकत वाला है वह जिस ने बुर्ज बनाए और उस में बनाया सूरज और रोशन चाँद। (61)

और वही है जिस ने रात दिन को एक दूसरे के पीछे आने वाला बनाया, यह उस के (समझने) के लिए है जो चाहे कि नसीहत पकड़े या शुक्र गुज़ार बनना चाहे। (62)

और रहमान के बन्दे वह हैं जो ज़मीन पर नरम चाल चलते हैं, और जब जाहिल उन से बात करते हैं तो वह बस (सलाम) कहते हैं। (63)

और वह अपने रब के लिए रात काटते हैं (रात भर लगे रहते हैं) सिज्दा करते और क़ियाम करते। (64)

और वह कहते हैं ऐ हमारे रब! हम से जहनन्म का अज़ाब फेर दे, बेशक उस का अज़ाब लाज़िम हो जाने वाला है (जुदा न होने वाला है)। (65)

बेशक वह बुरी है ठहरने की जगह और बुरा मुक़ाम है। (66)

और वह लोग कि जब वह खर्च करते हैं तो न फुज़ूल खर्ची करते हैं, और न तंगी करते हैं (उन की रविश) उस के दरमियान एतदाल की है। (67)

और वह जो अल्लाह के साथ नहीं पुकारते दूसरा (कोई और) माबूद, और उस जान को क़तल नहीं करते जिसे (क़तल करना) अल्लाह ने हाराम किया है, मगर जहाँ हक़ हो, और वह ज़िना नहीं करते, और जो यह करेगा वह बड़ी सज़ा से दोचार होगा। (68)

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهِ وَكَفَى بِهِ

और काफी है वह	उस की तारीफ़ के साथ	और पाकीज़गी बयान कर	जिसे मौत नहीं	हमेशा ज़िन्दा रहने वाले पर	और भरोसा कर
---------------	---------------------	---------------------	---------------	----------------------------	-------------

بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَيْرًا (٥٨) الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ

और ज़मीन	आस्मान (जमा)	पैदा किया	वह जिस ने	58	ख़बर रखने वाला	अपने बन्दों की	गुनाहों से
----------	--------------	-----------	-----------	----	----------------	----------------	------------

وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ الرَّحْمَنُ فَسَأَلْ

तो पूछो	जो रहम करने वाला	अर्श पर	फिर काइम हुआ	छः (6) दिन	में	और जो उन दोनों के दरमियान
---------	------------------	---------	--------------	------------	-----	---------------------------

بِهِ خَيْرًا (٥٩) وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَنِ قَالُوا وَمَا الرَّحْمَنُ

और क्या है रहमान	वह कहते हैं	रहमान को	तुम सिज्दा करो	उन से	कहा जाए	और जब	59	किसी बाख़बर	उस के मुतअज़ज़िक
------------------	-------------	----------	----------------	-------	---------	-------	----	-------------	------------------

أَنسُجِدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُورًا (٦٠) تَبَرَكَ الَّذِي جَعَلَ

बनाए	वह जिस ने	बड़ी बरकत वाला है	60	विदकना	उस ने बढ़ा दिया उन का	जिसे तू सिज्दा करने को कहे	क्या हम सिज्दा करें
------	-----------	-------------------	----	--------	-----------------------	----------------------------	---------------------

فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَجَعَلَ فِيهَا سِرْجًا وَقَمَرًا مُنِيرًا (٦١)

61	रोशन	और चाँद	चिराग (सूरज)	उस में	और बनाया	बुर्ज (जमा)	आस्मानों में
----	------	---------	--------------	--------	----------	-------------	--------------

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَن أَرَادَ أَن يَذَّكَّرَ

कि वह नसीहत पकड़े	उस के लिए जो चाहे	एक दूसरे के पीछे आने वाला	और दिन	रात	जिस ने बनाया	और वही
-------------------	-------------------	---------------------------	--------	-----	--------------	--------

أَوْ أَرَادَ شُكُورًا (٦٢) وَعِبَادُ الرَّحْمَنِ الَّذِينَ يَمْشُونَ عَلَى الْأَرْضِ

ज़मीन पर	चलते हैं	वह कि	और रहमान के बन्दे	62	शुक्र गुज़ार बनना	या चाहे
----------	----------	-------	-------------------	----	-------------------	---------

هُونًا وَإِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا (٦٣) وَالَّذِينَ يَبِيتُونَ

रात काटते हैं	और वह जो	63	सलाम	कहते हैं वह	जाहिल (जमा)	उन से बात करते हैं	और जब	नरम चाल
---------------	----------	----	------	-------------	-------------	--------------------	-------	---------

لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا (٦٤) وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا

हम से	फेर दे	ऐ हमारे रब	कहते हैं	और वह जो	64	और क़ियाम करते	सिज्दा करते	अपने रब के लिए
-------	--------	------------	----------	----------	----	----------------	-------------	----------------

عَذَابِ جَهَنَّمَ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا (٦٥) إِنَّهَا سَاءَتْ

बुरी	बेशक वह	65	लाज़िम हो जाने वाला है	उस का अज़ाब	बेशक	जहनन्म का अज़ाब
------	---------	----	------------------------	-------------	------	-----------------

مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا (٦٦) وَالَّذِينَ إِذَا أَنْفَقُوا لَمْ يُسْرِفُوا وَلَمْ

और न	न फुज़ूल खर्ची करते हैं	जब वह खर्च करते हैं	और वह लोग जो	66	और (बुरा) मुक़ाम	ठहरने की जगह
------	-------------------------	---------------------	--------------	----	------------------	--------------

يَقْسُرُوا وَكَانَ بَيْنَ ذَلِكَ قَوَامًا (٦٧) وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ

नहीं पुकारते	और वह जो	67	एतदाल	उस के दरमियान	और है	तंगी करते हैं
--------------	----------	----	-------	---------------	-------	---------------

مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ

हाराम किया अल्लाह ने	जिसे	जान	और वह क़तल नहीं करते	दूसरा	कोई माबूद	अल्लाह के साथ
----------------------	------	-----	----------------------	-------	-----------	---------------

إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ يَلْقَ أَثَامًا (٦٨)

68	वह दो चार होगा बड़ी सज़ा	यह	करेगा	और जो	और वह ज़िना नहीं करते	मगर जहाँ हक़ हो
----	--------------------------	----	-------	-------	-----------------------	-----------------

عند المتقين ١٢

السجدة ٧



يُضَعَفُ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَيَحْلُدُ فِيهِ مُهَانًا ۖ إِلَّا								
सिवाए	69	खार हो कर	उस में	और वह हमेशा रहेगा	रोज़े कियामत	अज़ाब	उस के लिए	दोचन्द कर दिया जाएगा
مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولَئِكَ يُبَدِّلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ								
उन की बुराइयां	अल्लाह बदल देगा	पस यह लोग	नेक अमल	और अमल किए उस ने	और वह ईमान लाया	जिस ने तौबा की		
حَسَنَاتٍ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۖ (70) وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا								
नेक	और अमल किए	और जिस ने तौबा की	70	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	और है अल्लाह	भलाइयों से	
فَإِنَّهُ يَتُوبُ إِلَى اللَّهِ مَتَابًا ۖ (71) وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الرُّورَ								
झूट	गवाही नहीं देते	और वह लोग जो	71	रुजूअ करने का मुक़ाम	अल्लाह की तरफ़	रुजूअ करता है	तो वेशक वह	
وَإِذَا مَرُّوا بِاللَّغْوِ مَرًّا كِرَامًا ۖ (72) وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ								
उन के रब के अहकाम से	जब उन्हें नसीहत की जाती है	और वह लोग जो	72	बुजुरगाना	गुज़रते हैं	बेहूदा से	वह गुज़रें	और जब
لَمْ يَخْرُوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَعَعْمِيَانَا ۖ (73) وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا								
ऐ हमारे रब अ़ता फ़रमा हमें	कहते हैं वह	और वह लोग जो	73	और अँधों की तरह	बहरों की तरह	उन पर	नहीं गिर पड़ते	
مِنْ أَرْوَاحِنَا وَذُرِّيَّتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ۖ (74)								
74	इमाम (पेश्वा)	परहेज़गारों का	और बना दे हमें	ठंडक आँखों की	और हमारी औलाद	हमारी वीवियां	से	
أُولَئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا ۖ (75)								
75	और सलाम	दुआए ख़ैर	और पेश्वाई किए जाएंगे उस में	उन के सबर की बदौलत	वाला खाने	इऩ्शाम दिए जाएंगे	यह लोग	
خَلِيدِينَ فِيهَا ۖ حَسَنَتْ مُسْتَقْرَرًا وَمُقَامًا ۖ (76) قُلْ مَا يَعْبَأُ بِكُمْ								
तुम्हारी	परवाह नहीं रखता	फ़रमा दें	76	और मस्कन	आरामगाह	अच्छी है	उस में	वह हमेशा रहेंगे
رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ ۖ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَامًا ۖ (77)								
77	लाज़मी	होगी	पस अनकरीब	झुटलाया तुम ने	अगर न पुकारो तुम	मेरा रब		
<b>آيَاتُهَا ٢٢٧ ❀ سُورَةُ الشُّعَرَاءِ ❀ رُكُوعَاتُهَا ١١</b>								
(26) سُورَةُ الشُّعَرَاءِ शायर (जमा)								
227 आयात								
<b>بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ</b>								
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है								
طَسَمَ ۖ (1) تِلْكَ آيَةُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ۖ (2) لَعَلَّكَ بَاخِعٌ								
हलाक कर लोगे	शायद तुम	2	रोशन किताब	आयतें	यह	1	ता सीन मीम	
نَّفْسِكَ إِلَّا يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۖ (3) إِنْ نَشَأْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ								
उन पर	हम उतार दें	अगर हम चाहें	3	ईमान लाते	कि वह नहीं	अपने तई		
مِنَ السَّمَاءِ آيَةً فَظَلَّتْ أَعْنَاقُهُمْ لَهَا خَاضِعِينَ ۖ (4)								
4	पस्त	उस के आगे	उन की गर्दन	तो हो जाएं	कोई निशानी	आस्मान से		

रोज़े कियामत उस के लिए अज़ाब दोचन्द कर दिया जाएगा, और वह उस में हमेशा रहेगा, खार हो कर। (69) सिवाए उस के जिस ने तौबा की, और वह ईमान लाया, और उस ने नेक अमल किए, पस अल्लाह उन लोगों की बुराइयां बदल देगा भलाइयों से, और अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (70) और जिस ने तौबा की और नेक अमल किए तो वेशक वह रुजूअ करता है अल्लाह की तरफ़ (जैसे) रुजूअ करने का मुक़ाम (हक) है। (71) और वह लोग जो झूट की गवाही नहीं देते और जब बेहूदा चीज़ों के पास से गुज़रें तो गुज़रते हैं बुजुरगाना (सन्जीदगी के अन्दाज़ से)। (72) और वह लोग कि जब उन्हें उन के रब के अहकाम से नसीहत की जाती है तो वह उन पर नहीं गिर पड़ते बहरों और अँधों की तरह। (73) और वह लोग जो वह कहते हैं ऐ हमारे रब! हमें हमारी वीवियों और हमारी औलाद से आँखों की ठंडक अ़ता फ़रमा, और हमें बनादे परहेज़गारों का पेश्वा। (74) उन लोगों को उन के सबर की बदौलत (जन्त के) वाला खाने इऩ्शाम दिए जाएंगे और वह उस में दुआए ख़ैर और सलाम से पेश्वाई किए जाएंगे। (75) वह उस में हमेशा रहेंगे, (क्या ही) अच्छी है आरामगाह और अच्छा मस्कन। (76) आप (स) फ़रमा दें अगर तुम उस को न पुकारो, तो मेरा रब तुम्हारी परवाह नहीं रखता, अब कि तुम ने झुटलाया, पस अनकरीब (उस की सज़ा) लाज़मी होगी। (77) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है ता-सीन-मीम। (1) यह रोशन किताब की आयतें हैं। (2) शायद आप (स) (उन के ग़म में) अपने तई हलाक कर लेंगे कि वह ईमान नहीं लाते। (3) अगर हम चाहें तो उन पर आस्मान से कोई निशानी उतार दें, तो उस के आगे उन की गर्दन पस्त हो जाएं। (4)

ع ١٤

٥

और उन के पास रहमान की तरफ से कोई नई नसीहत नहीं आती मगर वह उस से रूगर्दान हो जाते हैं। (5) पस बेशक उन्होंने ने झुटलाया तो जल्द उन के पास उस की खबरें आएंगी (हकीकत मालूम हो जाएगी) जिस का वह मज़ाक उड़ाते हैं। (6) क्या उन्होंने ने ज़मीन की तरफ नहीं देखा? कि हम ने उस में किस कद्र उम्दा उम्दा हर किस्म की चीज़ें जोड़ा जोड़ा उगाई है। (7) बेशक उस में अलबत्ता निशानी है, और उन में अक्सर नहीं है ईमान लाने वाले। (8) और बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता ग़ालिब है, निहायत मेहरबान। (9) और (याद करो) जब तुम्हारे रब ने मूसा (अ) को फ़रमाया कि ज़ालिम लोगों के पास जाओ। (10) (यानी) कौमे फ़िरअौन के पास, क्या वह मुझ से नहीं डरते? (11) उस ने कहा ऐ मेरे रब! बेशक मैं डरता हूँ (मुझे अन्देश है) कि वह मुझे झुटलाएंगे। (12) और मेरा दिल तंग होता है, और मेरी ज़बान (खुब) नहीं चलती, पस हारून (अ) की तरफ पैग़ाम भेज। (13) और उन का मुझे पर एक इल्ज़ाम (भी) है, पस मुझे डर है कि वह मुझे क़तल न कर दें। (14) फ़रमाया हरगिज़ नहीं, तुम दोनों हमारी निशानियों के साथ जाओ, बेशक हम तुम्हारे साथ हैं सुनने वाले। (15) पस तुम दोनों फ़िरअौन के पास जाओ तो उसे कहो कि बेशक हम तमाम ज़हानों के रब के रसूल हैं। (16) कि तू भेज दे हमारे साथ बनी इस्राईल को। (17) फ़िरअौन ने कहा क्या हम ने तुझे बचपन में नहीं पाला? और तू हमारे दरमियान रहा अपनी उम्र के कई बरस। (18) और तू ने वह काम किया जो तू ने किया (एक क़वती का क़तल हो गया) और तू नाशुक्रों में से है। (19) मूसा (अ) ने कहा मैं ने वह किया था जब मैं राह से बेख़बरों में से था। (20) जब मैं तुम से डरा तो मैं तुम से भाग गया, पस मेरे रब ने मुझे हुक्म अ़ता किया (नबूख़वत दी) और मुझे रसूलों में से बनाया। (21) और यह नेमत जिस का तू मुझ पर एहसान रखता है? कि तू ने बनी इस्राईल को गुलाम बनाया। (22) फ़िरअौन ने कहा, और क्या है सारे ज़हान का रब! (23)

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمَنِ مُحَدَّثٍ إِلَّا كَانُوا عَنْهُ							
उस से	हो जाते है वह	मगर	नई	रहमान	(तरफ) से	कोई नसीहत	और नहीं आती उन के पास
مُعْرِضِينَ ﴿٥﴾ فَقَدْ كَذَّبُوا فَسَيَاتِيهِمْ أَنْبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ							
उस का	जो वह थे	खबरें	तो जल्द आएंगी उन के पास	पस बेशक उन्होंने ने झुटलाया	5	रूगर्दान	
يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٦﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الْأَرْضِ كَمَا أَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ							
हर किस्म	उस में	उगाई हम ने	किस कद्र	ज़मीन की तरफ	क्या उन्होंने ने नहीं देखा?	6	मज़ाक उड़ाते
زَوْجٍ كَرِيمٍ ﴿٧﴾ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿٨﴾							
8	ईमान लाने वाले	उन में अक्सर	और नहीं है	अलबत्ता निशानी	उस में	बेशक	7 उम्दा जोड़ा जोड़ा
وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٩﴾ وَإِذْ نَادَى رَبُّكَ مُوسَىٰ أَنْ ائْتِ							
कि तू जा	मूसा (अ)	तुम्हारा रब	पुकारा (फ़रमाया)	और जब	9	रहम करने वाला	ग़ालिब अलबत्ता वह तुम्हारा रब और बेशक
الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿١٠﴾ قَوْمٌ فِرْعَوْنُ إِلَّا يَتَّقُونَ ﴿١١﴾ قَالَ رَبِّ							
ऐ मेरे रब	उस ने कहा	11	क्या वह मुझ से नहीं डरते	कौमे फ़िरअौन	10	ज़ालिम लोग	
إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ﴿١٢﴾ وَيَصِيقُ صَدْرِي وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِي							
मेरी ज़बान	और नहीं चलती	मेरा सीना (दिल)	और तंग होता है	12	वह मुझे झुटलाएंगे	कि	बेशक मैं डरता हूँ
فَارْسِلْ إِلَىٰ هَارُونَ ﴿١٣﴾ وَلَهُمْ عَلَىٰ ذُنُوبِهِمْ فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ﴿١٤﴾							
14	कि वह मुझे क़तल (न) कर दें	पस मैं डरता हूँ	एक इल्ज़ाम	मुझ पर	और उनका	13	हारून तरफ पस पैग़ाम भेज
قَالَ كَلَّا فَاذْهَبَا بِآيَاتِنَا إِنَّا مَعَكُمْ مُّسْتَمِعُونَ ﴿١٥﴾ فَآتِيَا فِرْعَوْنَ							
फ़िरअौन	पस तुम दोनों जाओ	15	सुनने वाले	तुम्हारे साथ	बेशक हम	पस तुम दोनों जाओ हमारी निशानियों के साथ	हरगिज़ नहीं फ़रमाया
فَقُولَا إِنَّا رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾ أَنْ أَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٧﴾							
17	बनी इस्राईल	हमारे साथ	तू भेज दे	कि	16	तमाम ज़हानों का रब	बेशक हम रसूल तो उसे कहो
قَالَ أَلَمْ نُرَبِّكَ فِينَا وَلِيدًا وَلَبِثْتَ فِينَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِينَ ﴿١٨﴾							
18	कई बरस	अपनी उम्र के	हमारे दरमियान	और तू रहा	बचपन में	अपने दरमियान	क्या हम ने तुझे नहीं पाला फ़िरअौन ने कहा
وَفَعَلْتَ فَعَلْتِكَ الَّتِي فَعَلْتَ وَأَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِينَ ﴿١٩﴾ قَالَ فَعَلْتُهَا							
मैं ने वह किया था	मूसा (अ) ने कहा	19	नाशुक्रों	से	और तू	जो तू ने किया	अपना (वह) काम और तू ने किया
إِذَا وَأَنَا مِنَ الصّٰلِحِينَ ﴿٢٠﴾ فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِي							
पस अ़ता किया मुझे	जब मैं डरा तुम से	तुम से	तो मैं भाग गया	20	राह से बेख़बर (जमा)	से	और मैं जब
رَبِّي حُكْمًا وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٢١﴾ وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ							
तू उस का एहसान रखता है मुझ पर	नेमत	और यह	21	रसूल (जमा)	से	और मुझे बनाया	हुक्म मेरा रब
أَنْ عَبَدتَّ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٢٢﴾ قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٣﴾							
23	सारे ज़हान	रब	और क्या है	फ़िरअौन ने कहा	22	बनी इस्राईल	कि तू ने गुलाम बनाया

<p>قَالَ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِنَّ كُنْتُمْ مُؤَقِنِينَ ﴿٢٤﴾</p>											
24	यकीन करने वाले	तुम हो	अगर	और जो उन के दरमियान	और ज़मीन	रब है आस्मानों का	उस ने कहा				
<p>قَالَ لِمَنْ حَوْلَهُ أَلَا تَسْتَمِعُونَ ﴿٢٥﴾ قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمْ</p>											
	तुम्हारे बाप दादा	और रब	तुम्हारा रब	(मूसा अ) ने कहा	25	क्या तुम सुनते नहीं	उस के इर्द गिर्द	उन्हें जो	उस से कहा		
<p>الْأُولَئِينَ ﴿٢٦﴾ قَالَ إِنَّ رَسُولَكُمْ الَّذِي أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ لَمَجْنُونٌ ﴿٢٧﴾</p>											
27	अलबत्ता दीवाना	तुम्हारी तरफ़	भेजा गया	वह जो	तुम्हारा रसूल	वेशक	फ़िरऔन बोला	26	पहले		
<p>قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِنَّ كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٢٨﴾</p>											
28	तुम समझते हो	अगर	उन दोनों के दरमियान	और जो	और मग़रिब	मशरिफ़	रब	मूसा (अ) ने कहा			
<p>قَالَ لَنْ اتَّخَذَتِ الْهَاءُ غَيْرِي لِأَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُونِينَ ﴿٢٩﴾</p>											
29	कैदी (जमा)	से	तो मैं ज़रूर करदूंगा तुझे	मेरे सिवा	कोई माबूद	तू ने बनाया	अलबत्ता अगर	वह बोला			
<p>قَالَ أَوْلُو جِئْتِكَ بِشَيْءٍ مُّبِينٍ ﴿٣٠﴾ قَالَ فَاتِّبِعْهُ إِنَّ كُنْتَ مِنْ</p>											
	से	अगर तू है	तू ले आ उसे	वह बोला	30	वाज़ेह	एक शै (मोज़िज़ा)	अगरचे में लाऊँ तेरे पास	(मूसा अ) ने कहा		
<p>الصَّادِقِينَ ﴿٣١﴾ فَالْقَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ﴿٣٢﴾ وَنَزَعَ يَدَهُ</p>											
	अपना हाथ	और उस ने खींचा (निकाला)	32	खुला (नुमाया)	अज़दहा	तो अचानक वह	अपना असा	पस मूसा (अ) ने डाला	31	सच्चे	
<p>فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنُّظُرِينَ ﴿٣٣﴾ قَالَ لِلْمَلَأِ حَوْلَهُ إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ</p>											
	जादूगर	वेशक यह	अपने गिर्द	सरदारों से	फ़िरऔन ने कहा	33	देखने वालों के लिए	चमकता हुआ	तो यकायक वह		
<p>عَلَيْمٌ ﴿٣٤﴾ يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ﴿٣٥﴾</p>											
35	तो क्या तुम हुकम (मशवरा) देते हो	अपने जादू से	तुम्हारी सर ज़मीन	से	तुम्हें निकाल दे	कि	यह चाहता है	34	दाना, माहिर		
<p>قَالُوا أَرْجَاهُ وَأَخَاهُ وَأُبْعَثْ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ﴿٣٦﴾ يَأْتُوكَ</p>											
	ले आएँ तेरे पास	36	इकटठा करने वाले (नकीब)	शहरों	में	और भेज	और उस के भाई को	मोहलत दे उसे	वह बोले		
<p>بِكُلِّ سَحَابٍ عَلَيْهِ ﴿٣٧﴾ فَجَمَعَ السَّحْرَةَ لِمَيِّقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ﴿٣٨﴾</p>											
38	जाने पहचाने (मुअय्यन)	एक दिन	मुकर्ररा वक़्त पर	जादूगर	पस जमा किए गए	37	माहिर	तमाम बड़े जादूगर			
<p>وَقِيلَ لِلنَّاسِ هَلْ أَنْتُمْ مُجْتَمِعُونَ ﴿٣٩﴾ لَعَلْنَا نَتَّبِعُ السَّحْرَةَ إِنْ</p>											
अगर	जादूगर (जमा)	पैरवी करें	ताकि हम	39	जमा होने वाले हो (जमा होंगे)	तुम	क्या	लोगों से	और कहा गया		
<p>كَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ﴿٤٠﴾ فَلَمَّا جَاءَ السَّحْرَةَ قَالُوا لِفِرْعَوْنَ أَيْنَ لَنَا</p>											
	क्या यकीनन हमारे लिए	फ़िरऔन से	उन्होंने ने कहा	जादूगर	आएँ	पस जब	40	ग़ालिब (जमा)	हैं वह		
<p>لَأَجْرًا إِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ﴿٤١﴾ قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ إِذَا لَّمِنَ</p>											
	अलबत्ता - से	उस वक़्त	और वेशक तुम	हां	उस ने कहा	41	ग़ालिब (जमा)	हम	हम हुए	अगर	कुछ इन्ज़ाम
<p>الْمُقَرَّبِينَ ﴿٤٢﴾ قَالَ لَهُمْ مُوسَى الْقُوا مَا أَنْتُمْ مُلْقُونَ ﴿٤٣﴾</p>											
43	डालने वाले	तुम	जो	तुम डालो	मूसा (अ)	उन से	कहा	42	मुकर्रवीन		

मूसा (अ) ने कहा: रब है आस्मानों का और ज़मीन का, और जो उन के दरमियान है, अगर तुम यकीन करने वाले हो। (24)

उस ने अपने इर्द गिर्द वालों से कहा, क्या तुम सुनते नहीं! (25) मूसा (अ) ने कहा: रब है तुम्हारा और रब है तुम्हारे पहले बाप दादा का। (26)

फ़िरऔन बोला, वेशक तुम्हारा रसूल जो तुम्हारी तरफ़ भेजा गया है अलबत्ता दीवाना है। (27)

मूसा (अ) ने कहा: रब है मशरिफ़ का और मग़रिब का, और जो उन दोनों के दरमियान है, अगर तुम समझते हो। (28)

वह बोला, अलबत्ता अगर तू ने कोई और माबूद बनाया मेरे सिवा, तो मैं ज़रूर तुझे कैद करदूंगा। (29)

मूसा (अ) ने कहा अगरचे मैं तेरे पास एक वाज़ेह मोज़िज़ा लाऊँ? (30)

वह बोला तू उसे ले आ अगर तू सच्चों में से है (सच्चा है)। (31)

पस मूसा (अ) ने अपना असा डाला तो वह अचानक नुमाया अज़दहा बन गया। (32)

और उस ने अपना हाथ (गरेवान से) निकाला तो नागाह वह देखने वालों के लिए चमकता दिखाई देने लगा। (33)

फ़िरऔन ने अपने इर्द गिर्द के सरदारों से कहा वेशक यह माहिर जादूगर है। (34)

वह चाहता है कि तुम्हें अपने जादू (के जोर) से तुम्हारी सर ज़मीन से निकाल दे तो तुम क्या मशवरा देते हो? (35)

वह बोले उसे और उस के भाई को मोहलत दे, और शहरों में नकीब भेज। (36)

कि तेरे पास तमाम बड़े माहिर जादूगर ले आएँ। (37)

पस जादूगर जमा हो गए, एक मुअय्यन दिन, वक़्त मुकर्ररा पर। (38)

और लोगों से कहा गया क्या तुम जमा होंगे? (39) ताकि हम पैरवी करें जादूगरों की,

अगर वह ग़ालिब हैं। (40)

जब जादूगर आए तो उन्होंने ने फ़िरऔन से कहा क्या हमारे लिए यकीनी तौर पर कुछ इन्ज़ाम होगा? अगर हम ग़ालिब आए। (41)

उस ने कहा हाँ! तुम उस वक़्त वेशक (मेरे) मुकर्रवीन में से होंगे। (42)

कहा मूसा (अ) ने उन से (अपना दाओ) डालो जो तुम डालने वाले हो। (43)

पस उन्होंने ने अपनी रससियां और लाठियां डालीं, और वह बोले कि वेशक फिरऔन के इक्वाल से हम ही गालिब आने वाले हैं। (44)

पस मूसा (अ) ने अपना अ़सा डाला तो वह नागाह निगलने लगा जो उन्होंने ने ढकोसला बनाया था। (45) पस जादूगर सिज्दा करते हुए गिर पड़े। (46)

वह बोले कि हम ईमान लाए सारे जहानों के रब पर। (47) (जो) रब है मूसा (अ) का और हारून (अ) का। (48)

फिरऔन ने कहा तुम उस पर (इस से) पहले ईमान ले आए कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ, वेशक वह अलबत्ता तुम्हारा बड़ा है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया, पस तुम जल्द जान लोगे, मैं ज़रूर तुम्हारे हाथ पाऊँ काट डालूँगा, दूसरी तरफ़ के (एक तरफ़ का हाथ दूसरी तरफ़ का पाऊँ) और मैं ज़रूर तुम सब को सूली दूँगा। (49)

वह बोले कुछ हर्ज नहीं वेशक हम अपने रब की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं। (50)

हम उम्मीद रखते हैं कि हमारा रब हमारी ख़ताएं बख़्शदेगा, कि हम पहले ईमान लाने वाले हैं। (51) और हम ने मूसा (अ) की तरफ़ वहि की कि रातों रात मेरे बन्दों को ले कर निकल, वेशक तुम पीछा किए जाओगे (तुम्हारा तज़ाक़ुब होगा)। (52)

पस भेजा फिरऔन ने शहरों में नक़ीब। (53)

वेशक यह लोग एक थोड़ी (छोटी सी) जमाअत है। (54)

और वह वेशक हमें गुस्से में लाने वाले (गुस्सा दिला रहे हैं)। (55) और वेशक हम एक जमाअत है मुसल्लह, मोहतात। (56)

(इरशादे इलाही): पस हम ने उन्हें बागात और चशमों से निकाला। (57) और ख़ज़ानों और उम्दा ठिकानों से। (58)

इसी तरह हम ने उन का वारिस बनाया बनी इस्राईल को। (59)

पस उन्होंने ने सूरज निकलते (सुबह सवेरे) उन का पीछा किया। (60)

पस जब दोनों जमाअतों ने एक दूसरे को देखा तो मूसा (अ) के साथी कहने लगे, यकीनन हम पकड़ लिए गए। (61)

मूसा (अ) ने कहा, हरिग़ज़ नहीं, वेशक मेरा रब मेरे साथ है, वह मुझे जल्द (बच निकलने की) राह दिखाएगा। (62)

पस हम ने मूसा (अ) की तरफ़ वहि भेजी कि तू अपना अ़सा दर्या पर मार (उन्होंने ने मारा) तो दर्या फट गया, पस हर हिस्सा बड़े बड़े पहाड़ की तरह हो गया। (63)

और हम ने उस जगह दूसरों (फिरऔनियों) को करीब कर दिया। (64)

فَالْقَوْمُ جِبَالُهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ إِنَّا لَنَحْنُ

वेशक अलबत्ता हम	फिरऔन	इक्वाल से	और बोले वह	और अपनी लाठियां	अपनी रससियां	पस उन्होंने ने डाले
-----------------	-------	-----------	------------	-----------------	--------------	---------------------

الْغَلْبُونَ ﴿٤٤﴾ فَأَلْقَى مُوسَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿٤٥﴾

45	जो उन्होंने ने ढकोसला बनाया	निगलने लगा	तो यकायक वह	अपना अ़सा	मूसा (अ)	पस डाला	44	गालिब आने वाले
----	-----------------------------	------------	-------------	-----------	----------	---------	----	----------------

فَأَلْقَى السَّحْرَةَ سَجْدِينَ ﴿٤٦﴾ قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٧﴾ رَبِّ مُوسَى

मूसा (अ)	रब	47	सारे जहानों के रब पर	हम ईमान लाए	वह बोले	46	सिज्दा करते हुए	पस डाल दिए गए (गिर पड़े) जादूगर
----------	----	----	----------------------	-------------	---------	----	-----------------	---------------------------------

وَهُرُونَ ﴿٤٨﴾ قَالَ آمَنْتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي

जिस ने	अलबत्ता बड़ा है तुम्हारा	वेशक वह	तुम्हें	इजाज़त दूँ	कि मैं	पहले	तुम ईमान लाए उस पर	(फिरऔन) ने कहा	48	और हारून (अ)
--------	--------------------------	---------	---------	------------	--------	------	--------------------	----------------	----	--------------

عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُونَ لَهُ لَأَقْطِعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ

और तुम्हारे पैर	तुम्हारे हाथ	अलबत्ता मैं ज़रूर काट डालूँगा	तुम जान लोगे	पस जल्द	जादू	सिखाया तुम्हें
-----------------	--------------	-------------------------------	--------------	---------	------	----------------

مِّنْ خِلَافٍ وَلَاوَصَلْبِنَّاكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٩﴾ قَالُوا لَا ضَيْرُ إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا

अपने रब की तरफ़	वेशक हम	कुछ नुक़सान (हर्ज) नहीं	वह बोले	49	सब को	और ज़रूर तुम्हें सूली दूँगा	एक दूसरे के खिलाफ़ का	से-कि
-----------------	---------	-------------------------	---------	----	-------	-----------------------------	-----------------------	-------

مُنْقَلِبُونَ ﴿٥٠﴾ إِنَّا نَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطِيئَاتِنَا أَنْ كُنَّا أَوَّلَ

पहले	कि हम है	हमारी ख़ताएं	हमारा रब	हमें	बख़्शदे	कि	वेशक हम उम्मीद रखते हैं	50	लौट कर जाने वाले हैं
------	----------	--------------	----------	------	---------	----	-------------------------	----	----------------------

الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥١﴾ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي إِنَّكُمْ مُّتَّبِعُونَ ﴿٥٢﴾

52	पीछा किए जाओगे	वेशक तुम	मेरे बन्दों को	कि तू रातों रात ले निकल	मूसा (अ)	तरफ़	और हम ने वहि की	51	ईमान लाने वाले
----	----------------	----------	----------------	-------------------------	----------	------	-----------------	----	----------------

فَأَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ﴿٥٣﴾ إِنَّ هَؤُلَاءِ لَشِرْذِمَةٌ

एक जमाअत	यह लोग है	वेशक	53	इकटठा करने वाले (नक़ीब)	शहरों में	फिरऔन	पस भेजा
----------	-----------	------	----	-------------------------	-----------	-------	---------

قَلِيلُونَ ﴿٥٤﴾ وَإِنَّهُمْ لَنَا لَغَائِظُونَ ﴿٥٥﴾ وَإِنَّا لَجَمِيعٌ حَدِرُونَ ﴿٥٦﴾

56	मुसल्लह - मोहतात	एक जमाअत	और वेशक हम	55	गुस्से में लाने वाले	हमें	और वेशक वह	54	थोड़ी सी
----	------------------	----------	------------	----	----------------------	------	------------	----	----------

فَأَخْرَجْنَاهُمْ مِّنْ جَنَّتِ وَعُيُونٍ ﴿٥٧﴾ وَكُنُوزٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ﴿٥٨﴾ كَذَلِكَ

उसी तरह	58	उम्दा	और ठिकाने	और ख़ज़ाने	57	और चशमे	बागात	से	पस हम ने उन्हें निकाला
---------	----	-------	-----------	------------	----	---------	-------	----	------------------------

وَأَوْرَثْنَاهَا بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٥٩﴾ فَاتَّبَعُوهُمْ مُّشْرِقِينَ ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا تَرَاءَ

देखा एक दूसरे को	पस जब	60	सूरज निकलते	पस उन्होंने ने पीछा किया उन का	59	बनी इस्राईल	और हम ने वारिस बनाया उन का
------------------	-------	----	-------------	--------------------------------	----	-------------	----------------------------

الْجَمْعَيْنِ قَالَ اصْحَبْ مُوسَىٰ إِنَّا لَمُدْرِكُونَ ﴿٦١﴾ قَالَ كَلَّا إِنَّ مَعِيَ

मेरे साथ	वेशक	उस ने कहा हरिग़ज़ नहीं	61	पकड़ लिए गए	यकीनन हम	मूसा (अ) के साथी	कहा (कहने लगे)	दोनों जमाअतें
----------	------	------------------------	----	-------------	----------	------------------	----------------	---------------

رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿٦٢﴾ فَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْبَحْرَ

दर्या	अपना अ़सा	तू मार	कि	मूसा (अ)	तरफ़	पस हम ने वहि भेजी	62	वह जल्द मुझे राह दिखाएगा	मेरा रब
-------	-----------	--------	----	----------	------	-------------------	----	--------------------------	---------

فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فَرَقٍ كَالطُّودِ الْعَظِيمِ ﴿٦٣﴾ وَأَرْزَلْنَا تَمَّ الْآخِرِينَ ﴿٦٤﴾

64	दूसरों को	उस जगह	फिर हम ने करीब कर दिया	63	बड़े	पहाड़ की तरह	हर हिस्सा	पस हो गया	तो वह फट गया
----	-----------	--------	------------------------	----	------	--------------	-----------	-----------	--------------

وَأَنْجَيْنَا مُوسَى وَمَنْ مَعَهُ أَجْمَعِينَ ﴿٦٥﴾ ثُمَّ أَعْرَفْنَا الْأَخْرِينَ ﴿٦٦﴾												
66	दूसरों को	हम ने गर्क कर दिया	फिर	65	सब	उस के साथ	और जो	मूसा (अ)	और हम ने बचा लिया			
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٦٧﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ												
67	तुम्हारा रब	और बेशक	ईमान लाने वाले	उन से अकसर	थे	और न	अलबत्ता निशानी	उस में	बेशक			
لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٦٨﴾ وَاتُّلُ عَلَيْهِمْ نَبَأُ إِبْرَاهِيمَ ﴿٦٩﴾ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ												
69	अपने बाप को	उस ने कहा	जब	69	इब्राहीम (अ)	खबर-वाक़िआ	उन पर-उन्हें	और आप पढ़ें	68	निहायत मेहरवान	ग़ालिब	अलबत्ता वह
وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُدُونَ ﴿٧٠﴾ قَالُوا نَعْبُدُ أَصْنَامًا فَنَنْظِلُ لَهَا عَكْفِينَ ﴿٧١﴾												
71	जमे हुए	पस हम बैठे रहते हैं उन के पास	बुतों की	हम परसतिश करते हैं	उन्होंने कहा	70	तुम परसतिश करते हो	क्या-किस	और अपनी कौम			
قَالَ هَلْ يَسْمَعُونَكُمْ إِذْ تَدْعُونَ ﴿٧٢﴾ أَوْ يَنْفَعُونَكُمْ أَوْ يَضُرُّونَ ﴿٧٣﴾												
73	या वह नुकसान पहुँचाते हैं	या वह नफा पहुँचाते हैं तुम्हें	72	तुम पुकारते हो	जब	वह सुनते हैं तुम्हारी	क्या	उस ने कहा				
قَالُوا بَلْ وَجَدْنَا آبَاءَنَا كَذَلِكَ يَفْعَلُونَ ﴿٧٤﴾ قَالَ أَفَرَأَيْتُمْ مَا												
74	किस	क्या पस तुम ने देखा	इब्राहीम (अ) ने कहा	74	वह करते	इसी तरह	अपने बाप दादा	हम ने पाया	बल्कि	वह बोले		
كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ ﴿٧٥﴾ أَنْتُمْ وَأَبَاؤُكُمْ الْأَقْدَمُونَ ﴿٧٦﴾ فَاتَّهُمْ عَدُوٌّ لِي												
75	मेरे दुश्मन	तो बेशक वह	76	पहले	और तुम्हारे बाप दादा	तुम	75	तुम परसतिश करते हो				
إِلَّا رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿٧٧﴾ الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِ ﴿٧٨﴾ وَالَّذِي هُوَ												
77	वह	और वह जो	78	मुझे राह दिखाता है	पस वह	मुझे पैदा किया	वह जिस ने	77	सारे जहानों का रब	मगर		
يُطْعِمُنِي وَيَسْقِينِ ﴿٧٩﴾ وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ ﴿٨٠﴾ وَالَّذِي												
79	और वह जो	80	मुझे शिफा देता है	तो वह	मैं बीमार होता हूँ	और जब	79	और मुझे पिलाता है	मुझे खिलाता है			
يُمِيتُنِي ثُمَّ يُحْيِينِ ﴿٨١﴾ وَالَّذِي أَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لِي خَطِيئَتِي												
81	मेरी खताएं	कि मुझे बख़्श देगा	मैं उम्मीद रखता हूँ	और वह जिस से	81	मुझे ज़िन्दा करेगा	फिर	मौत देगा				
يَوْمَ الدِّينِ ﴿٨٢﴾ رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا وَالْحَقْنَ بِالصَّالِحِينَ ﴿٨٣﴾												
83	नेक बन्दों के साथ	और मुझे मिलादे	हुकम-हिक्मत	मुझे अता कर	ऐ मेरे रब	82	बदले के दिन					
وَأَجْعَلْ لِي لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْأَخْرِينَ ﴿٨٤﴾ وَأَجْعَلْنِي مِنْ وَرَثَةِ												
84	वारिसों में से	और तू मुझे बना दे	84	वाद में आने वालों में	अच्छा-ख़ैर	मेरे लिए-मेरा ज़िक्र	और कर					
جَنَّةِ النَّعِيمِ ﴿٨٥﴾ وَاعْفِرْ لِأَبِي إِنَّهُ كَانَ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٨٦﴾												
86	गुमराह (जमा)	से	वह है	बेशक वह	मेरे बाप को	और बख़्शदे	85	नेमतों वाली	जन्नत			
وَلَا تُخْزِنِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ ﴿٨٧﴾ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَلَا بَنُونَ ﴿٨٨﴾												
88	बेटे	और न	माल	न काम आएगा	जिस दिन	87	जिस दिन सब उठाए जाएंगे	और मुझे रूस्वा न करना				
إِلَّا مَنْ آتَى اللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ﴿٨٩﴾ وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٩٠﴾												
90	परहेज़गारों के लिए	जन्नत	और नज़दीक कर दी जाएगी	89	पाक	दिल	अल्लाह के पास आया	जो	मगर			

और हम ने मूसा (अ) को और जो उन के साथ थे सब को बचा लिया। (65) फिर हम ने दूसरों को गर्क कर दिया। (66) बेशक उस में अलबत्ता एक निशानी है, और उन में से अकसर ईमान लाने वाले न थे। (67) और बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता ग़ालिब, निहायत मेहरवान है। (68) और आप (स) उन्हें इब्राहीम (अ) का वाक़िआ पढ़ कर (सुनाएं)। (69) जब उन्होंने ने कहा अपने बाप और अपनी कौम को, तुम किस की परसतिश करते हो? (70) उन्होंने ने कहा बुतों की परसतिश करते हैं, पस हम उन के पास जमे बैठे रहते हैं। (71) उस ने कहा क्या वह तुम्हारी सुनते हैं जब तुम पुकारते हो? (72) या वह तुम्हें नफा पहुँचाते हैं? या नुकसान पहुँचा सकते हैं? (73) वह बोले (नहीं तो)। बल्कि हम ने अपने बाप दादा को इसी तरह करते पाया है। (74) इब्राहीम (अ) ने कहा: पस क्या तुम ने देखा (गौर भी किया) कि तुम किस की परसतिश करते हो? (75) और तुम्हारे पहले बाप दादा? (76) तो बेशक वह मेरे दुश्मन है सिवाए सारे जहानों के रब के। (77) वह जिस ने मुझे पैदा किया, पस वही मुझे राह दिखाता है। (78) और वही जो मुझे खिलाता है और वही मुझे पिलाता है। (79) और जब मैं बीमार होता हूँ तो वह मुझे शिफा देता है। (80) और वह जो मुझे मौत (से हमकिनार) करेगा, फिर मुझे ज़िन्दा करेगा। (81) और वह जिस से मैं उम्मीद रखता हूँ कि मुझे बदले के दिन मेरी खताएं बख़्श देगा। (82) ऐ मेरे रब! मुझे हुकम और हिक्मत अता फ़रमा, और मुझे नेक बन्दों के साथ मिला दे। (83) और मेरा ज़िक्र ख़ैर (जारी) रख वाद में आने वालों में। (84) और मुझे नेमतों वाली जन्नत के वारिसों में से बना दे। (85) और मेरे बाप को बख़्शदे, बेशक वह गुमराहों में से है। (86) और मुझे उस दिन रूस्वा न करना जब सब उठाए जाएंगे। (87) जिस दिन न काम आएगा माल और न बेटे। (88) मगर जो अल्लाह के पास सलीम (बे ऐव) दिल ले कर आया। (89) और जन्नत परहेज़गारों के नज़दीक कर दी जाएगी। (90)

وقف الهمع ٨

और दोज़ख़ ज़ाहिर कर दी जाएगी गुमराहों के लिए। (91)

और उन्हें कहा जाएगा कहां है वह जिन की तुम परसतिश करते थे। (92)

अल्लाह के सिवा क्या वह तुम्हारी मदद कर सकते हैं? या (खुद)

वदला ले सकते हैं? (93)

पस वह और गुमराह उस (जहनन्म) में औन्धे मुँह डाले जाएंगे। (94)

और इबलीस के लशकर सब के सब। (95)

वह कहेंगे जब कि वह जहनन्म में (वाहम) झगड़ते होंगे। (96)

अल्लाह की कसम! वेशक हम खुली गुमराही में थे। (97)

जब हम तुम्हें सारे जहानों के रब के साथ बराबर ठहराते थे। (98)

और हमें सिर्फ़ मुज्रिमों ने गुमराह किया। (99)

पस हमारा कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं। (100)

और न कोई ग़म ख़ार दोस्त है। (101)

पस काश हमारे लिए दोबारा (दुनिया में) लौटना होता तो हम मोमिनों में से होते। (102)

वेशक उस में अलवत्ता एक निशानी है, और नहीं है उन में अक्सर ईमान लाने वाले। (103)

और वेशक तुम्हारा रब ग़ालिव है, निहायत मेहरवान। (104)

नूह (अ) की कौम ने झुटलाया रसूलों को। (105)

(याद करो) जब उन के भाई नूह (अ) ने उन से कहा तुम डरते नहीं? (106)

वेशक मैं तुम्हारे लिए रसूल हूँ अमानतदार। (107)

पस अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो। (108)

मैं इस पर तुम से नहीं मांगता कोई अजर, मेरा अजर तो सिर्फ़ (अल्लाह) रब्बुल आलमीन पर है। (109)

पस अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो। (110)

वह बोले क्या हम तुझ पर ईमान ले आए? जब कि तेरी पैरवी रज़ीलों ने की है। (111)

नूह (अ) ने कहा मुझे क्या इल्म वह क्या (काम काज) करते थे। (112)

उन का हिसाब सिर्फ़ मेरे रब पर है, अगर तुम समझो। (113)

और मैं मोमिनों को (अपने पास से) दूर करने वाला नहीं। (114)

मैं तो सिर्फ़ साफ़ साफ़ तौर पर डराने वाला हूँ। (115)

बोले ऐ नूह (अ)! अगर तुम बाज़ न आए तो ज़रूर संगसार कर दिए जाओगे। (116)

नूह (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! वेशक मेरी कौम ने मुझे झुटलाया। (117)

وَبَرَزَتِ الْجَحِيمِ لِلْعَوِينِ ﴿٩١﴾ وَقِيلَ لَهُمْ أَيْنَمَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ ﴿٩٢﴾										
92	तुम परसतिश करते थे	कहां है वह जो	उन्हें	और कहा जाएगा	91	गुमराहों के लिए	दोज़ख़	और ज़ाहिर कर दी जाएगी		
مَنْ دُونِ اللَّهِ هَلْ يَنْصُرُونَكُمْ أَوْ يَنْتَصِرُونَ ﴿٩٣﴾ فَكَبِكُوا فِيهَا										
	पस औन्धे मुँह डाले जाएंगे उस में	93	या वदला ले सकते हैं	वह तुम्हारी मदद कर सकते हैं	क्या	अल्लाह के सिवा				
هُمْ وَالْعَاوَنَ ﴿٩٤﴾ وَجُنُودَ إِبْلِيسَ أَجْمَعُونَ ﴿٩٥﴾ قَالُوا وَهُمْ فِيهَا										
	उस (जहनन्म) में	और वह	वह कहेंगे	95	सब के सब	इबलीस	और लशकर (जमा)	94	और गुमराह	वह
يَخْتَصِمُونَ ﴿٩٦﴾ تَاللَّهِ إِنَّ كُنَّا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٩٧﴾ إِذْ نُسَوِّكُمْ										
	हम बराबर ठहराते थे तुम्हें	जब	97	खुली	गुमराही	अलवत्ता में	वेशक हम थे	कसम अल्लाह की	96	झगड़ते होंगे
بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٩٨﴾ وَمَا أَضَلَّنَا إِلَّا الْمُجْرِمُونَ ﴿٩٩﴾ فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِينَ ﴿١٠٠﴾										
100	सिफ़ारिश करने वाले	कोई	पस नहीं हमारे लिए	99	मुज्रिम (जमा)	मगर (सिर्फ़)	और नहीं गुमराह किया हमें	98	सारे जहानों के रब के साथ	
وَلَا صَدِيقٍ حَمِيمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٢﴾										
102	मोमिन (जमा)	से	तो हम होते	लौटना	कि हमारे लिए	पस काश	101	ग़म ख़ार	कोई दोस्त	और न
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٠٣﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ										
	तुम्हारा रब	और वेशक	103	ईमान लाने वाले	उन के अक्सर	और नहीं है	अलवत्ता एक निशानी	उस में	वेशक	
لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٤﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٠٥﴾ إِذْ قَالَ لَهُمْ										
	उन से	जब कहा	105	रसूलों को	नूह (अ) की कौम	झुटलाया	104	निहायत मेहरवान	ग़ालिव	अलवत्ता वह
أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَّا تَتَّقُونَ ﴿١٠٦﴾ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٠٧﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ										
	पस डरो अल्लाह से	107	रसूल अमानत दार	तुम्हारे लिए	वेशक मैं	106	तुम डरते	क्या नहीं	नूह (अ)	उन के भाई
وَأَطِيعُوا أَوْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجَرِيَ إِلَّا عَلَىٰ										
	पर	मगर (सिर्फ़)	मेरा अजर	नहीं	अजर	कोई	इस पर	और मैं नहीं मांगता तुम से	108	और मेरी इताअत करो
رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٠٩﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ﴿١١٠﴾ قَالُوا أَنْتُمْ لَكُمْ وَاتَّبَعَكَ										
	जब कि तेरी पैरवी की	तुझ पर	क्या हम ईमान ले आए	वह बोले	110	और मेरी इताअत करो	पस डरो अल्लाह से	109	सारे जहां का पालने वाला	
الْأَزْدُلُونَ ﴿١١١﴾ قَالَ وَمَا عَلِمِي بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٢﴾ إِنْ حِسَابُهُمْ										
	उन का हिसाब	नहीं	112	वह करते थे	उस की जो	और मुझे क्या इल्म	कहा (नूह अ) ने	111	रज़ीलों ने	
إِلَّا عَلَىٰ رَبِّي لَوْ تَشْعُرُونَ ﴿١١٣﴾ وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ إِنْ أَنَا										
	नहीं मैं	114	मोमिन (जमा)	हांकने वाला (दूर करने वाला)	मैं	और नहीं	113	तुम समझो	अगर मेरे रब पर	मगर (सिर्फ़)
إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿١١٥﴾ قَالُوا لَسِن لَمْ تَنْتِهِ يَنْوُحْ لَتَكُونَنَّ										
	तो ज़रूर होंगे	ऐ नूह (अ)	तुम बाज़ न आए	अगर	बोले वह	115	साफ़ तौर पर	डराने वाला	मगर-सिर्फ़	
مِنَ الْمَرْجُومِينَ ﴿١١٦﴾ قَالَ رَبِّ إِنْ قَوْمِي كَذَّبُونِ ﴿١١٧﴾										
	मुझे झुटलाया	मेरी कौम	वेशक	ऐ मेरे रब	(नूह अ ने) कहा	116	संगसार किए जाने वाले	से	117	

فَاتْفَحْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَنَجِّنِي وَمَنْ مَعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ (١١٨)	118	ईमान वाले	से	मेरे साथी	और जो	और नजात दे मुझे	एक खुला फ़ैसला	और उन के दरमियान	मेरे दरमियान	पस फ़ैसला कर दे
فَأَنْجِنُهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلِكِ الْمَشْحُونِ (١١٩) ثُمَّ أَعْرَفْنَا بَعْدُ	119	उस के बाद	गर्क कर दिया हम ने	फिर	भरी हुई	कशती में	उस के साथ	और जो	तो हम ने नजात दी उसे	
الْبَاقِينَ (١٢٠) إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ (١٢١)	120	वाकियों को	वेशक	उस में	अलबत्ता निशानी	और न थे	उन के अक्सर	ईमान लाने वाले	वेशक उस में एक निशानी है, और उन के अक्सर न थे ईमान लाने वाले। (121)	
وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ (١٢٢) كَذَّبَتْ عَادُ الْمُرْسَلِينَ (١٢٣)	122	और वेशक	तुम्हारा खब ग़ालिब है, निहायत मेहरबान। (122)	और वेशक	तुम्हारा खब	अलबत्ता वह	ग़ालिब	निहायत मेहरबान	रसूल (जमा)	
إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ هُودٌ أَلَا تَتَّقُونَ (١٢٤) إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ (١٢٥)	124	जब कहा	उन से	उन के भाई	हूद (अ)	डरते नहीं	क्या तुम डरते नहीं	वेशक मैं तुम्हारे लिए	रसूल अमानतदार	
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا (١٢٦) وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ	126	सो तुम डरो	और मेरी इताअत करो	और मैं नहीं मांगता तुम से	उस पर	कोई अजर नहीं	मेरा अजर	नहीं	सो तुम डरो अल्लाह से	
إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ (١٢٧) أَتَبْنُونَ بِكُلِّ رِيعٍ آيَةً تَعْبَثُونَ (١٢٨)	127	मगर (सिर्फ)	पर	सारे जहाँ का पालने वाला	127	क्या तुम तामीर करते हो	हर बुलन्दी पर	एक निशानी	खेलने को (बिला ज़रूरत)	
وَتَتَّخِذُونَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُونَ (١٢٩) وَإِذَا بَطِشْتُمْ بَطِشْتُمْ	129	और तुम बनाते हो	मज़बूत शानदार महल	शायद तुम	तुम हमेशा रहोगे	और जब	तुम गिरिफ्त करते हो	तुम गिरिफ्त करते हो	गिरिफ्त करते हो तुम	
جَبَّارِينَ (١٣٠) فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا (١٣١) وَاتَّقُوا الَّذِي أَمَدَّكُمْ	130	जाबिर बन कर	पस डरो अल्लाह से	और मेरी इताअत करो	131	और डरो	वह जिस ने	मदद की तुम्हारी	मदद की तुम्हारी	
بِمَا تَعْلَمُونَ (١٣٢) أَمَدَّكُمْ بِأَنْعَامٍ وَبَيْنَ (١٣٣) وَجَنَّتِ وَعُيُونٍ (١٣٤)	132	उस से जो तुम जानते हो	132	तुम्हारी मदद की	मवेशियों से	और बेटों	133	और बागात	और चश्मे	
إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ (١٣٥) قَالُوا سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَوَعَضْتَ	135	वेशक मैं डरता हूँ	तुम पर	अज़ाब	एक बड़ा दिन	135	वह बोले	बराबर	हम पर	
أَمْ لَمْ تَكُنْ مِنَ الْوَاعِظِينَ (١٣٦) إِنْ هَذَا إِلَّا خُلُقُ الْأَوَّلِينَ (١٣٧) وَمَا	136	या न हो तुम	से	नसीहत करने वाले	136	नहीं है	मगर	आदत	अगले लोग	
نَحْنُ بِمُعَذِّبِينَ (١٣٨) فَكَذَّبُوهُ فَأَهْلَكْنَاهُمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً	138	हम	अज़ाब दिए जाने वालों में से	138	पस उन्होंने ने झुटलाया उसे	तो हम ने हलाक कर दिया उन्हें	वेशक	उस में	अलबत्ता निशानी	
وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ (١٣٩) وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ (١٤٠)	139	और नहीं थे	और अक्सर	ईमान लाने वाले	139	और वेशक	तुम्हारा खब	अलबत्ता वह	निहायत मेहरबान	
كَذَّبَتْ ثَمُودُ الْمُرْسَلِينَ (١٤١) إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ صَالِحٌ أَلَا تَتَّقُونَ (١٤٢)	141	झुटलाया	समूद	रसूल (जमा)	141	जब कहा	उन से	उन के भाई	क्या तुम डरते नहीं	

वेशक मैं तुम्हारे लिए अमानतदार  
रसूल हूँ। (143)

सो तुम अल्लाह से डरो, और मेरी  
इताअत करो। (144)

और मैं तुम से इस पर कोई अजर  
नहीं मांगता, मेरा अजर तो सिर्फ  
अल्लाह रब्बुल आलमीन पर है। (145)

क्या तुम यहाँ की चीज़ों (नेमतों) में  
वेफ़िक़र छोड़ दिए जाओगे? (146)

वागात और चशमों में। (147)

और खेतियों और नख़िलस्तानों में  
जिन के खोशे रस भरे हैं। (148)

और तुम खुश हो कर पहाड़ों से  
घर तराशते हो। (149)

सो अल्लाह से डरो और मेरी  
इताअत करो। (150)

और तुम हद से बढ़ जाने वालों का  
कहा न मानो। (151)

वह जो फ़साद करते हैं ज़मीन में,  
और इसलाह नहीं करते। (152)

उन्होंने कहा इस के सिवा नहीं कि  
तुम सिहरज़दा लोगों में से हो। (153)

तुम नहीं मगर (सिर्फ़) हम जैसे एक  
वशर हो, पस अगर तुम सच्चे  
लोगों में से हो (सच्चे हो) तो कोई  
निशानी ले आओ। (154)

सालेह (अ) ने फ़रमाया यह ऊँटनी है,  
एक मुअय्यन दिन उस के पानी पीने  
की बारी है और (एक दिन) तुम्हारे  
लिए पानी पीने की बारी है। (155)

और उसे बुराई से हाथ न लगाना  
वरना तुम्हें आ पकड़ेगा एक बड़े  
दिन का अज़ाब। (156)

फिर उन्होंने ने उस की कूचे काट दी  
पस पशेमान रह गए। (157)

फिर उन्हें अज़ाब ने आ पकड़ा, वेशक  
उस (वाके) में अलबत्ता निशानी (बड़ी  
इब्रत) है और उन के अक़सर ईमान  
लाने वाले नहीं। (158)

और वेशक तुम्हारा रब अलबत्ता  
गालिव निहायत मेहरबान है। (159)

कौमै लूत (अ) ने रसूलों को  
झुटलाया। (160)

(याद करो) जब उन के भाई  
लूत (अ) ने उन से कहा क्या तुम  
डरते नहीं? (161)

वेशक मैं तुम्हारे लिए अमानतदार  
रसूल हूँ। (162)

पस तुम अल्लाह से डरो, और मेरी  
इताअत करो। (163)

और मैं तुम से नहीं मांगता इस पर कोई  
अजर, मेरा अजर तो सिर्फ़ (अल्लाह)  
रब्बुल आलमीन पर है। (164)

क्या तुम मर्दों के पास (बद फ़ेली) के लिए  
आते हो? दुनिया ज़हानों में से। (165)

और तुम छोड़ देते हो (उन्हें) जो  
तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए तुम्हारी  
बीवियां पैदा की हैं, (नहीं) बल्कि तुम  
हद से बढ़ने वाले लोग हो। (166)

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٤٣﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا عَنِّي ﴿١٤٤﴾ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ

इस पर	और मैं नहीं मांगता तुम से	144	और मेरी इताअत करो	सो तुम डरो अल्लाह से	143	रसूल अमानतदार	तुम्हारे लिए	वेशक मैं
-------	---------------------------	-----	-------------------	----------------------	-----	---------------	--------------	----------

مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٤٥﴾ أَتَشْرِكُونَ فِي مَا هُنَّآ

जो यहाँ है	में	क्या छोड़ दिए जाओगे तुम?	145	सारे जहाँ का पालने वाला	पर	मगर	मेरा अजर	नहीं	कोई अजर
------------	-----	--------------------------	-----	-------------------------	----	-----	----------	------	---------

أَمِينِينَ ﴿١٤٦﴾ فِي جَنَّتٍ وَعُيُونٍ ﴿١٤٧﴾ وَزُرُوعٍ وَنَحْلٍ طَلَعَهَا هَٰضِمٌ ﴿١٤٨﴾

148	नर्म ओ नाजूक	उन के खोशे	और खजूरे	और खेतियां	147	और चशमे	वागात में	146	वेफ़िक़र
-----	--------------	------------	----------	------------	-----	---------	-----------	-----	----------

وَتَنَحُّونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا فَرِهِينَ ﴿١٤٩﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا عَنِّي ﴿١٥٠﴾

150	और मेरी इताअत करो	सो डरो अल्लाह से	149	खुश हो कर	घर	पहाड़ों से	और तुम तराशते हो
-----	-------------------	------------------	-----	-----------	----	------------	------------------

وَلَا تُطِيعُوا أَمْرَ الْمُسْرِفِينَ ﴿١٥١﴾ الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ

ज़मीन	में	फ़साद करते हैं	जो लोग	151	हद से बढ़ जाने वाले	हुक़म	और न कहा मानो
-------	-----	----------------	--------	-----	---------------------	-------	---------------

وَلَا يُصْلِحُونَ ﴿١٥٢﴾ قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ﴿١٥٣﴾ مَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ

मगर (सिर्फ़) एक वशर	तुम नहीं	153	सिहरज़दा लोग	से	तुम	इस के सिवा नहीं	उन्होंने ने कहा	152	और इसलाह नहीं करते
---------------------	----------	-----	--------------	----	-----	-----------------	-----------------	-----	--------------------

مِثْلَنَا ۖ فَاتِّبَايَةَ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّٰدِقِينَ ﴿١٥٤﴾ قَالَ هَذِهِ نَاقَةٌ لِّهَآ

उस के लिए	ऊँटनी	यह	उस ने कहा	154	सच्चे लोग से	तू	अगर	कोई निशानी	पस लाओ	हम जैसा
-----------	-------	----	-----------	-----	--------------	----	-----	------------	--------	---------

شَرِبٌ وَلَكُمْ شَرِبٌ يَوْمَ مَعْلُومٍ ﴿١٥٥﴾ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ

सो (वरना) तुम्हें आ पकड़ेगा	बुराई से	और उसे हाथ न लगाना	155	दिन मालूम	एक बारी	और तुम्हारे लिए	पानी पीने की बारी
-----------------------------	----------	--------------------	-----	-----------	---------	-----------------	-------------------

عَذَابٌ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٥٦﴾ فَعَقَرُوهَا فَاصْبَحُوا نَدِيمِينَ ﴿١٥٧﴾ فَأَخَذَهُم

फिर उन्हें आ पकड़ा	157	पशेमान	पस रह गए	फिर उन्होंने ने कूचे काट दी उस की	156	एक बड़ा दिन	अज़ाब
--------------------	-----	--------	----------	-----------------------------------	-----	-------------	-------

الْعَذَابُ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٥٨﴾

158	ईमान लाने वाले	उन के अक़सर	है	और नहीं	अलबत्ता निशानी	उस में	वेशक	अज़ाब
-----	----------------	-------------	----	---------	----------------	--------	------	-------

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٥٩﴾ كَذَّبَتْ قَوْمٌ لُّوطَ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٦٠﴾

160	रसूलों को	कौमै लूत (अ)	झुटलाया	159	निहायत मेहरबान	गालिव	अलबत्ता वह	तुम्हारा रब	और वेशक
-----	-----------	--------------	---------	-----	----------------	-------	------------	-------------	---------

إِذْ قَالَ لَهُمُ أَخُوهُمْ لُوطُ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٦١﴾ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٦٢﴾

162	रसूल अमानतदार	तुम्हारे लिए	वेशक मैं	161	क्या तुम डरते नहीं	लूत (अ)	उन के भाई	उन से	कहा	जब
-----	---------------	--------------	----------	-----	--------------------	---------	-----------	-------	-----	----

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا عَنِّي ﴿١٦٣﴾ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ

मेरा अजर	नहीं	कोई अजर	इस पर	और मैं नहीं मांगता तुम से	163	और मेरी इताअत करो	पस तुम डरो अल्लाह से
----------	------	---------	-------	---------------------------	-----	-------------------	----------------------

إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٤﴾ أَتَأْتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٥﴾

165	तमाम ज़हानों	से	मर्दों के पास	क्या तुम आते हो	164	सारे जहाँ का पालने वाला	पर	मगर-सिर्फ़
-----	--------------	----	---------------	-----------------	-----	-------------------------	----	------------

وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ أَرْوَاحِكُمْ ۖ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ عَادُونَ ﴿١٦٦﴾

166	हद से बढ़ने वाले	लोग	तुम	बल्कि	तुम्हारी बीवियां	से	तुम्हारा रब	तुम्हारे लिए	जो उस ने पैदा किया	और तुम छोड़ते हो
-----	------------------	-----	-----	-------	------------------	----	-------------	--------------	--------------------	------------------



قَالُوا لَسِن لَمْ تَنْتَه يَلُوظ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِينَ ١٦٧ قَالَ اِنِّي									
वेशक मैं	उस ने कहा	167	मुखरिज (बाहर निकाले जाने वाले)	से	अलवत्ता तुम ज़रूर होगे	ऐ लूत (अ)	तुम बाज़ न आए	अगर	बोले वह
لِعَمَلِكُمْ مِنَ الْقَالِينَ ١٦٨ رَبِّ نَجِّنِي وَاهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ ١٦٩ فَنَجَّيْنَاهُ									
तो हम ने नजात दी उसे	169	वह करते हैं	उस से जो	और मेरे घर वालों	मुझे नजात दे	ऐ मेरे रब	168	नफ़रत करने वाले	से तुम्हारे अमल से
وَاهْلَهُ أَجْمَعِينَ ١٧٠ إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَيْرِينَ ١٧١ ثُمَّ دَمَرْنَا الْأَخْرِينَ ١٧٢									
172	दूसरे	फिर हम ने हलाक कर दिया	171	पीछे रह जाने वालों में	एक बुढ़िया	सिवाए	170	सब	और उस के घर वाले
وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطْرًا فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنذِرِينَ ١٧٣ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً									
अलवत्ता एक निशानी	उस में	वेशक	173	डराए गए	वारिश	पस बुरी	एक वारिश	उन पर	और हम ने वारिश बरसाई
وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ١٧٤ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ١٧٥									
175	निहायत मेहरबान	ग़ालिब	अलवत्ता वह	तुम्हारा रब	और वेशक	174	ईमान लाने वाले	उन के अक्सर	थे और न
كَذَّبَ أَصْحَابُ لَيْكَةِ الْمُرْسَلِينَ ١٧٦ إِذْ قَالَ لَهُمُ شُعَيْبُ									
शुऐब (अ)	उन्हें	जब कहा	176	रसूल (जमा)	एयका (बन) वाले	झुटलाया			
إِلَّا تَتَّقُونَ ١٧٧ اِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ١٧٨ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ١٧٩									
179	और मेरी इताअत करो	सो डरो तुम अल्लाह से	178	रसूल अमानतदार	तुम्हारे लिए	वेशक मैं	177	क्या तुम डरते नहीं	
وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِي إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ١٨٠									
180	सारे जहाँ का पालने वाला	पर	मगर-सिर्फ	मेरा अजर नहीं	कोई अजर	इस पर	और मैं नहीं मांगता तुम से		
أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُخْسِرِينَ ١٨١ وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ									
तराजू से	और वज़न करो	181	नुक्सान देने वाले	से	और न हो तुम	माप	तुम पूरा करो		
الْمُسْتَقِيمِ ١٨٢ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْتُوا فِي الْأَرْضِ									
ज़मीन में	और न फिरो	उन की चीज़ें	लोग	और न घटाओ	182	ठीक सीधी			
مُفْسِدِينَ ١٨٣ وَاتَّقُوا الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْجِبَلَةَ الْأُولِينَ ١٨٤									
184	पहली	और मख्लूक	पैदा किया तुम्हें	वह जिस ने	और डरो	183	फ़साद मचाते हुए		
قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ١٨٥ وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا									
हम जैसा	एक बशर	मगर-सिर्फ	और नहीं तू	185	सिहरजदा (जमा)	से	तू	इस के सिवा नहीं	वह बोले (कहने लगे)
وَإِنْ نَطْنُكَ لَمِنَ الْكٰذِبِينَ ١٨٦ فَاسْقِطْ عَلَيْنَا كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ									
आस्मान	से-का	एक टुकड़ा	हम पर	सो तू गिरा	186	झूटे	अलवत्ता-से	और अलवत्ता हम गुमान करते हैं तुझे	
إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ١٨٧ قَالَ رَبِّيٰٓ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ١٨٨ فَكَذَّبُوهُ									
तो उन्होंने ने झुटलाया उसे	188	तुम करते हो	जो कुछ	खूब जानता है	मेरा रब	कहा	187	सच्चे	से अगर तू है
فَآخَذَهُمْ عَذَابٌ يَوْمِ الظُّلَّةِ إِنَّهُ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ١٨٩									
189	बड़ा (सख्त) दिन	अज़ाब	था	वेशक वह	साइवान वाला दिन	अज़ाब	पस पकड़ा उन्हें		

वह बोले ऐ लूत (अ)! अगर तुम बाज़ न आए तो ज़रूर (बस्ती से) निकाल दिए जाओगे। (167) उस ने कहा वेशक मैं तुम्हारे फेले (बद) से नफ़रत करने वालों में से हूँ। (168) ऐ मेरे रब! मुझे और मेरे घर वालों को उस (के बवाल) से नजात दे जो वह करते हैं। (169) तो हम ने उसे नजात दी और उस के सब घर वालों को। (170) सिवाए एक बुढ़िया जो रह गई पीछे रह जाने वालों में। (171) फिर हम ने दूसरों को हलाक कर दिया। (172) और हम ने उन पर (पत्थरों की) वारिश बरसाई। पस किया ही बुरी वारिश (उन पर जिन्हें अज़ाब से) डराया गया। (173) वेशक उस में एक निशानी है और न उन के अक्सर ईमान लाने वाले थे। (174) और वेशक तुम्हारा रब अलवत्ता ग़ालिब, निहायत मेहरबान है। (175) झुटलाया एयका (बन) वालों ने रसूलों को। (176) (याद करो) जब शुऐब (अ) ने उन से कहा क्या तुम डरते नहीं? (177) वेशक मैं तुम्हारे लिए रसूल हूँ अमानतदार। (178) सो अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो। (179) और मैं तुम से इस पर कोई अजर नहीं मांगता, मेरा अजर तो सिर्फ (अल्लाह) रब्बुल आलमीन पर है। (180) तुम माप पूरा करो, और नुक्सान देने वालों में से न हो। (181) और वज़न करो ठीक सीधी तराजू से। (182) और लोगों को उन की चीज़ें घटा कर न दो, और ज़मीन में न फिरो फ़साद मचाते हुए। (183) और डरो उस (ज़ाते पाक) से जिस ने तुम्हें पैदा किया और पहली मख्लूक को। (184) कहने लगे इस के सिवा नहीं कि तू सिहरजदा लोगों में से है। (185) और तू सिर्फ हम जैसा एक बशर है, और अलवत्ता हम तुझे झूटों में से गुमान करते हैं। (186) सो तू हम पर आस्मान का एक टुकड़ा गिरा दे अगर तू सच्चों में से है (सच्चा है)। (187) शुऐब (अ) ने फ़रमाया, मेरा रब खूब जानता है जो कुछ तुम करते हो। (188) तो उन्होंने ने उसे झुटलाया, पस उन्हें (आग के) साइवान वाले दिन अज़ाब ने आ पकड़ा। वेशक वह बड़े सख्त दिन का अज़ाब था। (189)

वेशक उस में निशानी है, और उन के अक्सर ईमान लाने वाले न थे। (190) और वेशक तेरा रब गालिव है, निहायत मेहरवान। (191)

और वेशक यह (कुरआन) सारे जहानों के रब का उतारा हुआ है। (192) उस को ले कर उतरा है जिब्रील अमीन (अ)। (193)

तुम्हारे दिल पर, ताकि तुम डर सुनाने वालों में से हो। (194) रोशन वाज़ेह अरबी ज़बान में। (195) और वेशक यह (इस का ज़िक्र) पहले पैग़म्बरों के सहीफों में है। (196) क्या यह उन के लिए एक निशानी नहीं? कि इसे जानते हैं

उलमाए बनी इस्राईल। (197) और अगर हम इसे किसी ग़ैर अरबी (ज़बान दान) पर नाज़िल करते। (198) फिर वह इसे उन के सामने पढ़ता (फिर भी) वह इस पर ईमान लाने वाले न होते (ईमान न लाते)। (199) इसी तरह हम ने मुज़्रिमों के दिलों में इन्कार दाख़िल कर दिया है। (200) वह उस पर ईमान न लाएंगे यहां तक कि वह दर्दनाक अज़ाब (न) देख लें। (201)

तो वह उन पर अचानक आजाएगा और उन्हें ख़बर भी न होगी। (202) फिर वह कहेंगे क्या हमें मोहलत दी जाएगी। (203)

पस क्या वह हमारे अज़ाब को जल्दी चाहते हैं? (204) क्या तुम ने देखा (ज़रा देखो)? अगर हम उन्हें बरसों फ़ाइदा पहुँचाए। (205) फिर उन पर पहुँचे जिस की उन्हें वईद की जाती थी। (206)

जिस से वह फ़ाइदा उठाते थे उन के क्या काम आएगा? (207) और हम ने किसी बस्ती को हलाक नहीं किया, मगर उस के लिए डराने वाले। (208)

नसीहत के लिए (पहले भेजे) और हम जुल्म करने वाले न थे। (209) और इस (कुरआन) को शैतान ले कर नहीं उतरे। (210)

और उन को सज़ावार नहीं (वह उस के काबिल नहीं) और न वह (ऐसा) कर सकते हैं। (211) वेशक वह सुनने (के मुक़ाम) से दूर कर दिए गए हैं। (212)

पस अल्लाह के साथ किसी और को माबूद न पुकारो कि सुबतिलाए अज़ाब लोगों में से हो जाओ। (213) और तुम अपने करीब तरीन रिश्तेदारों को डराओ। (214)

और उस के लिए अपने बाजू झुकाओ जिस ने तुम्हारी पैरवी की मोमिनों में से। (215)

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٩٠﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ

तेरा रब	और वेशक	190	ईमान लाने वाले	उन के अक्सर	और न थे	अलबत्ता निशानी	उस में	वेशक
---------	---------	-----	----------------	-------------	---------	----------------	--------	------

لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٩١﴾ وَإِنَّهُ لَتَنْزِيلُ رَبِّ الْعَلَمِينَ ﴿١٩٢﴾ نَزَلَ بِهِ

इस के साथ (ले कर) उतरा	192	सारे जहानों का रब	अलबत्ता उतारा हुआ	और वेशक यह	191	निहायत मेहरवान	गालिव	वह
------------------------	-----	-------------------	-------------------	------------	-----	----------------	-------	----

الرُّوحِ الْأَمِينِ ﴿١٩٣﴾ عَلَى قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنذِرِينَ ﴿١٩٤﴾ بِلِسَانٍ

ज़बान में	194	डर सुनाने वालों में से	ताकि तुम हो	तुम्हारे दिल	पर	193	जिब्रील अमीन (अ)
-----------	-----	------------------------	-------------	--------------	----	-----	------------------

عَرَبِيٍّ مُبِينٍ ﴿١٩٥﴾ وَإِنَّهُ لَفِي زُبُرِ الْأَوَّلِينَ ﴿١٩٦﴾ أَوْلَمْ يَكُنْ لَهُمْ آيَةٌ

एक निशानी	उन के लिए	क्या नहीं है	196	पहले (पैग़म्बर)	सहीफें में	और वेशक यह	195	रोशन (वाज़ेह)	अरबी
-----------	-----------	--------------	-----	-----------------	------------	------------	-----	---------------	------

أَنْ يَعْلَمَهُ عُلَمَاءُ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٩٧﴾ وَلَوْ نَزَّلْنَاهُ عَلَى بَعْضِ الْأَعْجَمِينَ ﴿١٩٨﴾

198	अजमी (ग़ैर अरबी)	किसी पर	हम नाज़िल करते इसे	और अगर	197	बनी इस्राईल	उलमा	कि जानते हैं इस को
-----	------------------	---------	--------------------	--------	-----	-------------	------	--------------------

فَقَرَأَهُ عَلَيْهِمْ مَا كَانُوا بِهِ مُؤْمِنِينَ ﴿١٩٩﴾ كَذَلِكَ سَلَكْنَاهُ فِي قُلُوبِ

यह चलाया है (इन्कार दाख़िल कर दिया है) दिलों में	इसी तरह	199	ईमान लाने वाले	इस पर	वह होते	न	उन के सामने	फिर वह पढ़ता इसे
--	---------	-----	----------------	-------	---------	---	-------------	------------------

الْمُجْرِمِينَ ﴿٢٠٠﴾ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ حَتَّى يَرَوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٢٠١﴾ فَيَأْتِيَهُمْ

तो वह आजाएगा उन पर	201	दर्दनाक अज़ाब	वह देख लेंगे	यहां तक कि	इस पर	वह ईमान न लाएंगे	200	मुज़्रिमीन
--------------------	-----	---------------	--------------	------------	-------	------------------	-----	------------

بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٠٢﴾ فَيَقُولُوا هَلْ نَحْنُ مُنظَرُونَ ﴿٢٠٣﴾

203	मोहलत दी जाएगी	हम-हमें	क्या	फिर वह कहेंगे	202	ख़बर (भी) न होगी	और उन्हें	अचानक
-----	----------------	---------	------	---------------	-----	------------------	-----------	-------

أَفِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿٢٠٤﴾ أَفَرَأَيْتَ إِنْ مَتَّعْنَاهُمْ سِنِينَ ﴿٢٠٥﴾ ثُمَّ

फिर	205	कई बरसों	हम उन्हें फ़ाइदा पहुँचाए	अगर	क्या तुम ने देखा?	204	वह जल्दी चाहते हैं	क्या पस हमारे अज़ाब को
-----	-----	----------	--------------------------	-----	-------------------	-----	--------------------	------------------------

جَاءَهُمْ مَا كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿٢٠٦﴾ مَا أَغْنَى عَنْهُمْ مَا كَانُوا يُمْتَعُونَ ﴿٢٠٧﴾

207	वह फ़ाइदा उठाते थे	जो (जिस से)	उन के	क्या काम आएगा?	206	उन्हें वईद की जाती थी	जो	पहुँचे उन पर
-----	--------------------	-------------	-------	----------------	-----	-----------------------	----	--------------

وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنذِرُونَ ﴿٢٠٨﴾ ذِكْرَىٰ وَمَا كُنَّا

और न थे हम	नसीहत के लिए	208	डराने वाले	उस के लिए	मगर	किसी बस्ती को	और नहीं हलाक किया हम ने
------------	--------------	-----	------------	-----------	-----	---------------	-------------------------

ظَلْمِينَ ﴿٢٠٩﴾ وَمَا تَنْزَلَتْ بِهِ الشَّيْطَانُ ﴿٢١٠﴾ وَمَا يَنْبَغِي لَهُمْ

उन को	और सज़ा वार नहीं	210	शैतान (जमा)	इसे ले कर	और नहीं उतरे	209	जुल्म करने वाले
-------	------------------	-----	-------------	-----------	--------------	-----	-----------------

وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٢١١﴾ إِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْرُؤُونَ ﴿٢١٢﴾ فَلَا تَدْعُ

पस न पुकारो	212	दूर कर दिए गए हैं	सुनना	से	वेशक वह	211	और न वह कर सकते हैं
-------------	-----	-------------------	-------	----	---------	-----	---------------------

مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتَكُونَ مِنَ الْمُعَذَّبِينَ ﴿٢١٣﴾ وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ

अपने रिश्तेदार	और तुम डराओ	213	सुबतिलाए अज़ाब	से	कि हो जाओ	कोई दूसरा माबूद	अल्लाह के साथ
----------------	-------------	-----	----------------	----	-----------	-----------------	---------------

الْأَقْرَبِينَ ﴿٢١٤﴾ وَاحْفَظْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢١٥﴾

215	मोमिनीन	से	तुम्हारी पैरवी की	उस के लिए जिस ने	अपना बाजू	और झुकाओ	214	करीब तरीन
-----	---------	----	-------------------	------------------	-----------	----------	-----	-----------

فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢١٦﴾ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيزِ										
ग़ालिब	पर	और भरोसा करो	216	तुम करते हो	उस से जो	वेशक मैं बेज़ार हूँ	तो कह दे	वह तुम्हारी नाफरमानी करें	फिर अगर	
الرَّحِيمِ ﴿٢١٧﴾ الَّذِي يَزِيحُ جِبْنَ تَقْوَمُ ﴿٢١٨﴾ وَتَقَلَّبَكَ فِي السَّجْدَيْنِ ﴿٢١٩﴾										
219	सिज्दा करने वाले (नमाज़ी)	में	और तुम्हारा फिरना	218	तुम खड़े होते हो	जब	तुम्हें देखता है	वह जो	217	निहायत मेहरबान
إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٢٢٠﴾ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَنْ نَزَّلَ الشَّيْطَانُ ﴿٢٢١﴾										
221	शैतान (जमा)	उतरते हैं	किस पर	मैं तुम्हें बताऊँ	क्या	220	जानने वाला	सुनने वाला	वही	वेशक वह
تَنْزَلُ عَلَىٰ كُلِّ آفَاكٍ أَثِيمٍ ﴿٢٢٢﴾ يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْثُرُهُمْ كَذِبُونَ ﴿٢٢٣﴾										
223	झूटे	और उन में अक्सर	सुनी सुनाई बात	डाल दिए हैं	222	गुनाहगार	बुहतान लगाने वाला	हर	पर	वह उतरते हैं
وَالشُّعْرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ﴿٢٢٤﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ										
हर वादी में		कि वह	क्या तुम ने नहीं देखा	224	गुमराह लोग	उन की पैरवी करते हैं	और शायर (जमा)			
يَهيمُونَ ﴿٢٢٥﴾ وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ﴿٢٢٦﴾ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا										
ईमान लाए	जो लोग	मगर	226	वह करते नहीं	जो	वह कहते हैं	और यह कि वह	225	सरगर्दा फिरते हैं	
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا وَانْتَصَرُوا مِنْ بَعْدِ										
उस के बाद		और उन्होंने ने बदला लिया	वकसूरत	और अल्लाह को याद किया		अच्छे	और उन्होंने ने अमल किए			
مَا ظَلَمُوا ۗ وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ ﴿٢٢٧﴾										
227	वह उलटते हैं (उन्हें लौट कर जाना है)	लौटने की जगह (करवट)	किस	जुल्म किया	वह लोग जिन्होंने	और अनकरीब जान लेंगे	कि उन पर जुल्म हुआ			
آيَاتُهَا ٩٣ ﴿٢٧﴾ سُورَةُ النَّملِ ﴿٢٧﴾ ﴿٢٧﴾ زُكُوعَاتُهَا ٧										
रुकुआत 7		(27) सूरतुन नमल चीटीयों				आयात 93				
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ										
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है										
طَسَّ تِلْكَ آيَةُ الْقُرْآنِ وَكِتَابٍ مُبِينٍ ﴿١﴾ هُدًى										
हिदायत	1	रोशन, वाज़ेह	और किताब	कुरआन	आयतें	यह	ताा सीन			
وَبُشْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٢﴾ الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ										
ज़कात	और अदा करते हैं	नमाज़	काइम रखते हैं	जो लोग	2	मोमिनों के लिए	और खुशख़बरी			
وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ﴿٣﴾ إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ										
आखिरत पर	ईमान नहीं लाते	जो लोग	वेशक	3	यकीन रखते हैं	वह	आखिरत पर	और वह		
زَيْنًا لَهُمْ أَعْمَالُهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُونَ ﴿٤﴾ أُولَئِكَ الَّذِينَ										
वह लोग जो	यही लोग	4	भटकते फिरते हैं	पस वह	उन के अमल	आरास्ता कर दिखाए हम ने उन के लिए				
لَهُمْ سُوءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْآخِسُونَ ﴿٥﴾										
5	सब से बढ़ कर खसारा उठाने वाले	वह	आखिरत में	और वह	अज़ाब	बुरा	उन के लिए			

फिर अगर तुम्हारी नाफरमानी करें तो कह दें जो तुम करते हो वेशक मैं उस से बेज़ार हूँ! (216)

और तुम भरोसा करो ग़ालिब, निहायत मेहरबान पर। (217)

जो तुम्हें देखता है जब तुम (नमाज़ में) खड़े होते हो। (218)

और नमाज़ियों में तुम्हारा फिरना (भी देखता है)। (219)

वेशक वही सुनने वाला जानने वाला है। (220)

क्या मैं तुम्हें बताऊँ किस पर शैतान उतरते हैं? (221)

वह उतरते हैं बुहतान लगाने वाले, गुनाहगार पर। (222)

(शैतान) सुनी सुनाई बात (उन के कान में) डाल देते हैं और उन में अक्सर झूटे हैं। (223)

और (रहे) शायर उन की पैरवी गुमराह लोग करते हैं। (224)

क्या तुम ने नहीं देखा? कि वह हर वादी में सरगर्दा फिरते हैं। (225)

और यह कि वह कहते हैं जो वह करते नहीं। (226)

सिवाए उन के जो ईमान लाए, और उन्होंने ने अच्छे अमल किए, और अल्लाह को याद किया वकसूरत, और उन्होंने ने उस के बाद बदला लिया कि उन पर जुल्म हुआ, और जिन लोगों ने जुल्म किया वह अनकरीब जान लेंगे कि किस करवट उन्हें लौट कर जाना है। (227)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है तासीन - यह आयतें हैं कुरआन और रोशन वाज़ेह किताब की। (1)

हिदायत और खुशख़बरी मोमिनों के लिए। (2)

जो लोग नमाज़ काइम रखते हैं, और ज़कात अदा करते हैं, और आखिरत पर यकीन रखते हैं। (3)

वेशक जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं लाते हम ने उन के अमल उन के लिए आरास्ता कर दिखाए हैं, पस वह भटकते फिरते हैं। (4)

यही है वह लोग जिन के लिए बुरा अज़ाब है, और वह आखिरत में सब से बढ़ कर खसारा उठाने वाले हैं। (5)

और वेशक तुम्हें कुरआन हिक्मत वाले इल्म वाले की तरफ से दिया जाता है। (6)

(याद करो) जब मूसा (अ) ने अपने घर वालों से कहा वेशक मैं ने देखी है एक आग, मैं अभी तुम्हारे पास उस की कोई खबर लाता हूँ या आग का अंगारा तुम्हारे पास लाता हूँ ताकि तुम सेंको। (7)

पस जब वह आग के पास आया (अल्लाह तआला की तरफ से) निदा दी गई कि वरकत दिया गया जो आग में (जलवा अफरोज़ है) जो उस के आस पास है (मूसा अ) और पाक है अल्लाह सारे जहानों का परवरदिगार। (8)

ऐ मूसा (अ) हकीकत यह है कि मैं ही अल्लाह ग़ालिव हिक्मत वाला हूँ। (9) और तू अपना असा (नीचे) डाल दे पस जब उस ने उसे लहराता हुआ देखा गोया वह सांप है तो (मूसा अ) पीठ फेर कर लौट गया और उस ने मुड़ कर न देखा, (इरशाद हुआ) ऐ मूसा (अ)! तू खौफ न खा, वेशक मेरे पास रसूल खौफ नहीं खाते। (10)

मगर जिस ने जुल्म किया, फिर उस ने बुराई के बाद उसे भलाई से बदल डाला तो वेशक मैं बरकतने वाला, निहायत मेहरबान हूँ। (11) और अपना हाथ अपने गरेवान में डाल वह किसी ऐब के बगैर सफ़ेद रोशन (हो कर) निकलेगा, नौ (9) निशानियाँ में से (यह दो मोजिजे ले कर) फिरऔन और उस की कौम की तरफ (जा), वेशक वह नाफरमान कौम है। (12)

फिर जब उन के पास आई हमारी निशानियाँ आँखे खोलने वाली, वह बोले यह खुला जादू है। (13)

हालाकि उन के दिलों को उस का यकीन था, उन्होंने ने उस का इन्कार किया जुल्म और तकब्बुर से। तो देखो! फ़साद करने वालों का कैसा अन्जाम हुआ? (14)

और तहकीक हम ने दिया दाऊद (अ) और सुलेमान (अ) को इल्म, और उन्होंने ने कहा तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, वह जिस ने हमें फ़ज़ीलत दी अक्सर अपने मोमिन बन्दों पर। (15)

और सुलेमान (अ), दाऊद (अ) का वारिस हुआ, और उस ने कहा ऐ लोगो! मुझे सिखाई गई है परिन्दों की बोली, और हमें हर चीज़ (नेमत) से दी गई है, वेशक यह खुला फ़ज़ल है। (16)

وَإِنَّكَ لَتَلْقَى الْقُرْآنَ مِنْ لَدُنْ حَكِيمٍ عَلِيمٍ ﴿٦﴾ إِذْ قَالَ مُوسَى

मूसा (अ)	कहा	जब	6	इल्म वाला	हिक्मत वाला	नज़्दीक (जानिव) से	कुरआन	दिया जाता है	और वेशक तुम
----------	-----	----	---	-----------	-------------	--------------------	-------	--------------	-------------

لِأَهْلِيهِ إِنِّي آنَسْتُ نَارًا سَاتِيكُمْ مِنْهَا بِخَبْرٍ أَوْ آتِيكُمْ بِشَهَابٍ قَبَسٍ

अंगारा	शोला	या लाता हूँ तुम्हारे पास	कोई खबर	उस की	मैं अभी लाता हूँ	एक आग	मैं ने देखी है	वेशक मैं	अपने घर वालों से
--------	------	--------------------------	---------	-------	------------------	-------	----------------	----------	------------------

لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ﴿٧﴾ فَلَمَّا جَاءَهَا نُودِيَ أَنْ بُورِكَ مَنْ فِي النَّارِ

आग में	जो	कि वरकत दिया गया	आवाज़ दी गई	उस (आग) के पास आया	पस जब	7	तुम सेंको	ताकि तुम
--------	----	------------------	-------------	--------------------	-------	---	-----------	----------

وَمَنْ حَوْلَهَا وَسُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٨﴾ يَمْوَسَىٰ إِنَّهُ أَنَا اللَّهُ

मैं अल्लाह	हकीकत यह	ऐ मूसा (अ)	8	परवरदिगार सारे जहानों का	और पाक है अल्लाह	उस के आस पास	और जो
------------	----------	------------	---	--------------------------	------------------	--------------	-------

الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٩﴾ وَأَلْقِ عَصَاكَ فَلَمَّا رَآهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَانٌّ

सांप	गोया कि वह	लहराता हुआ	उसे देखा	पस जब उस ने	अपना असा	और तू डाल	9	हिक्मत वाला	ग़ालिव
------	------------	------------	----------	-------------	----------	-----------	---	-------------	--------

وَأَنِّي مُدْبِرٌ وَلَمْ يُعَقِّبْ يَمْوَسَىٰ لَا تَخَفْ إِنِّي لَا يَخَافُ لَدَىٰ

मेरे पास	खौफ नहीं खाते	वेशक मैं	तू खौफ न खा	ऐ मूसा (अ)	और मुड़ कर न देखा	वह लौट गया पीठ फेर कर
----------	---------------	----------	-------------	------------	-------------------	-----------------------

الْمُرْسَلُونَ ﴿١٠﴾ إِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًا بَعْدَ سُوءٍ فَإِنِّي

तो वेशक मैं	बुराई	बाद	भलाई	फिर उस ने बदल डाला	जुल्म किया	जो-जिस मगर	10	रसूल (जमा)
-------------	-------	-----	------	--------------------	------------	------------	----	------------

عَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١١﴾ وَأَدْخِلْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضًا مِمَّنْ

से-के	सफ़ेद-रोशन	वह निकलेगा	अपने गरेवान में	अपना हाथ	और दाखिल कर (डाल)	11	निहायत मेहरबान	बरकतने वाला
-------	------------	------------	-----------------	----------	-------------------	----	----------------	-------------

غَيْرِ سُوءٍ فِي تِسْعِ آيَاتٍ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهِ إِنَّهُمْ كَانُوا

है	वेशक वह	और उस की कौम	फिरऔन	तरफ	नौ (9) निशानियाँ	में	किसी ऐब के बगैर
----	---------	--------------	-------	-----	------------------	-----	-----------------

قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿١٢﴾ فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ آيَاتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوا هَذَا

यह	वह बोले	आँखें खोलने वाली	हमारी निशानियाँ	आई उन के पास	फिर जब	12	नाफरमान	कौम
----	---------	------------------	-----------------	--------------	--------	----	---------	-----

سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿١٣﴾ وَجَحَدُوا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَا أَنفُسُهُمْ ظُلْمًا وَعُلُوًّا

और तकब्बुर से	जुल्म से	उन के दिल	हालाकि उस का यकीन था	उस का	और उन्होंने ने इन्कार किया	13	जादू खुला
---------------	----------	-----------	----------------------	-------	----------------------------	----	-----------

فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٤﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ

दाऊद (अ)	और तहकीक दिया हम ने	14	फ़साद करने वाले	अन्जाम	हुआ	कैसा	तो देखो
----------	---------------------	----	-----------------	--------	-----	------	---------

وَسُلَيْمَانَ عِلْمًا وَقَالَا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي فَضَّلَنَا عَلَىٰ كَثِيرٍ مِّنْ عِبَادِهِ

अपने बन्दे	से	अक्सर	पर	फ़ज़ीलत दी हमें	वह जिस ने	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	और उन्होंने ने कहा	बड़ा इल्म	और सुलेमान (अ)
------------	----	-------	----	-----------------	-----------	-----------------------------	--------------------	-----------	----------------

الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٥﴾ وَوَرِثَ سُلَيْمَانُ دَاوُدَ وَقَالَ يَا أَيُّهَا النَّاسُ عِلْمْنَا

हमें सिखाई गई	ऐ लोगो	और उस ने कहा	दाऊद (अ)	सुलेमान (अ)	और वारिस हुआ	15	मोमिनीन
---------------	--------	--------------	----------	-------------	--------------	----	---------

مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَأَوْتَيْنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ إِن هَذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِينُ ﴿١٦﴾

16	खुला	फ़ज़ल	अलबत्ता वही	यह वेशक	हर चीज़ से	से	और हमें दी गई	परिन्दे (जमा)	बोली
----	------	-------	-------------	---------	------------	----	---------------	---------------	------

النَّبِيَّةِ

۱۱

وَحُشِرَ لِسُلَيْمَانَ جُنُودُهُ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوزَعُونَ (۱۷)									
17	तरतीब में रखे जाते थे	पस वह	और परिन्दे	और इन्सान	जिन्न	से	उस का लशकर	सुलेमान (अ) के लिए	और जमा किया गया
حَتَّىٰ إِذَا أَتَوْا عَلَىٰ وَادِ التَّمَلِّ ۖ قَالَتْ نَمْلَةٌ يَا أَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوا									
तुम दाखिल हो	ऐ चींटियों	एक चींटी	कहा	चींटियों का मैदान	पर	आए	जब वह	यहां तक कि	
مَسْكِنِكُمْ ۚ لَا يُحِطُّنَكُمْ سُلَيْمٰنٌ وَجُنُودُهُ ۗ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ (۱۸)									
18	न जानते हों (उन्हें मालूम न हो)	और वह	और उस का लशकर	सुलेमान (अ)	न रौन्द डाले तुम्हें	अपने घरों (बिलों) में			
فَتَبَسَّ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ									
कि मैं शुक्र अदा करूँ	मुझे तौफीक दे	ऐ मेरे रब	और कहा	उस की बात	से	हँसते हुए	तो वह मुसकुराया		
نِعْمَتِكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا									
मैं नेक काम करूँ	और यह कि	मेरे माँ बाप	और पर	मुझे पर	तू ने इन्शाम फ़रमाई	वह जो	तेरी नेमत		
تَرْضَاهُ ۗ وَأَدْخِلْنِي بِرَحْمَتِكَ فِي عِبَادِكَ الصَّالِحِينَ (۱۹) وَتَفَقَّدَ									
और उस ने खबर ली (जाइज़ा लिया)	19	नेक (जमा)	अपने बन्दे	में	अपनी रहमत से	और मुझे दाखिल फ़रमा	तू वह पसंद करे		
الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَا أَرَى الْهُدَىٰ ۗ أَمْ كَانَ مِنَ الْغَائِبِينَ (۲۰)									
20	गाइब हाने वाले	से	क्या वह है	हुद हुद	मैं नहीं देखता	क्या है	तो उस ने कहा	परिन्दे	
لَأَعَذِّبَنَّهُ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ أَوْ لَأَذْبَحَنَّهُ ۖ أَوْ لَيَأْتِيَنِي بِسُلْطٰنٍ									
सनद (कोई बजह)	या उसे ज़रूर लानी चाहिए	या उसे जुबह कर डालूँगा	सख्त	सज़ा	अलबत्ता मैं ज़रूर उसे सज़ा दूँगा				
مُّبِينٍ (۲۱) فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيدٍ فَقَالَ أَحَطَّتْ بِمَا لَمْ تَحِطْ بِهِ									
तुम को मालूम नहीं वह	वह जो	मैं ने मालूम किया है	फिर कहा	थोड़ी सी	सो उस ने देर की	21	बाज़ेह (माकूल)		
وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَإٍ بِنَبَإٍ يَقِينٍ (۲۲) إِنِّي وَجَدْتُ امْرَأَةً تَمْلِكُهُمْ									
वह बादशाहत करती है उन पर	एक औरत	पाया (देखा)	वेशक मैं ने	22	यकीनी	एक ख़बर	सबा	से	और मैं तुम्हारे पास लाया हूँ
وَأُوتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ۖ وَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ (۲۳) وَجَدْتُهَا وَقَوْمَهَا									
और उस की कौम	मैं ने पाया है उसे	23	बड़ा	एक तख्त	और उस के लिए	हर शै	और दी गई है		
يَسْجُدُونَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ أَعْمَالَهُمْ									
उन के आमाल	शैतान	उन्हें	और आरास्ता कर दिखाए है	अल्लाह के सिवा	सूरज को	वह सिज्दा करते हैं			
فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُونَ (۲۴) إِلَّا يَسْجُدُوا لِلَّهِ									
वह सिज्दा करते अल्लाह को	कि नहीं	24	राह नहीं पाते	सो वह	रास्ते से	पस रोक दिया उन्हें			
الَّذِي يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُحْفُونَ									
जो तुम छुपाते हो	और जानता है	और ज़मीन	आस्मानों में	छुपी हुई	निकालता है	वह जो			
وَمَا تُعْلِنُونَ (۲۵) اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ (۲۶)									
26	अर्श अज़ीम	रब	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	अल्लाह	25	तुम ज़ाहिर करते हो	और जो	

और सुलेमान (अ) के लिए उस का लशकर जिन्नों, इन्सानों और परीन्दों का जमा किया गया, पस वह तरतीब में रखे जाते थे। (17) यहां तक कि वह चींटियों के मैदान में आए, एक चींटी ने कहा, ऐ चींटियों! तुम अपने बिलों में दाखिल हो जाओ, (कहीं) सुलेमान (अ) और उस का लशकर तुम्हें रौन्द न डाले और उन्हें ख़बर भी न हो। (18) तो वह हँसते हुए मुसकुराया उस की बात से, और कहा ऐ मेरे रब! मुझे तौफीक दे कि मैं तेरी नेमत का शुक्र अदा करूँ जो तू ने मुझे पर इन्शाम फ़रमाई है, और मेरे माँ बाप पर, और यह कि मैं नेक काम करूँ जो तू पसंद करे और अपनी रहमत से मुझे अपने नेक बन्दों में दाखिल फ़रमा ले। (19) और उस ने परिन्दों का जाइज़ा लिया तो कहा क्या (बात) है मैं हुद हुद को नहीं देखता, क्या वह गाइब हो जाने वालों में से है? (20) अलबत्ता मैं उसे ज़रूर सख्त सज़ा दूँगा या उसे जुबह कर डालूँगा, या उसे ज़रूर कोई माकूल बजह मेरे पास लानी (पेश करनी) चाहिए। (21) सो उस (हुद हुद) ने थोड़ी सी देर की, फिर कहा मैं ने मालूम किया है वह जो तुम को मालूम नहीं, और मैं तुम्हारे पास सबा से एक यकीनी ख़बर लाया हूँ। (22) वेशक मैं ने एक औरत को देखा है, वह उन पर बादशाहत करती है, और (उसे) हर शै दी गई है, और उस के लिए एक बड़ा तख्त है। (23) मैं ने उसे और उस की कौम को अल्लाह के सिवा (अल्लाह को छोड़ कर) सूरज को सिज्दा करते पाया है, और शैतान ने उन्हें आरास्ता कर दिखाया है उन के अमल, पस उन्हें (सिधे) रास्ते से रोक दिया है सो वह राह नहीं पाते। (24) और अल्लाह को (क्यों) सिज्दा नहीं करते? वह जो आस्मानों में और ज़मीन में छुपी हुई (चीज़ों को) निकालता है, और जानता है जो तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो। (25) अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अर्श अज़ीम का मालिक है। (26)

सुलेमान (अ) ने कहा, हम अभी देख लेंगे क्या तू ने सच कहा है? या तू झूटों में से है (झूटा है)? (27)

मेरा यह खत ले जा, पस यह उन की तरफ डाल दे, फिर उन से लौट आ, फिर देख वह क्या जवाब देते हैं! (28)

वह औरत कहने लगी, ऐ सरदारो! वेशक मेरी तरफ एक वा वक्अत खत डाला गया है। (29)

वेशक वह सुलेमान (अ) (की तरफ) से है और वेशक वह (यूँ है) "अल्लाह के नाम से जो रहम करने वाला निहायत मेहरवान है"। (30)

यह कि मुझे पर (मेरे मुकाबले में) सरकशी न करो, और मेरे पास आओ फरमांवरदार हो कर। (31)

वह बोली, ऐ सरदारो! मेरे मामले में मुझे राए दो, मैं किसी मामले में फ़ैसला करने वाली नहीं (फ़ैसला नहीं करती)

जब तक तुम मौजूद (न) हो। (32) वह बोले हम कुव्वत वाले, बड़े लड़ने वाले हैं, और फ़ैसला तेरे इख्तियार में है, तू देख ले तुझे क्या हुक्म करना है। (33)

वह बोली, वेशक जब बादशाह किसी बस्ती में दाखिल होते हैं तो उसे तवाह कर देते हैं, और वहां के मुअज़ज़िज़ीन को ज़लील कर दिया करते हैं, और वह उड़ी तरह करते हैं। (34)

और वेशक मैं उन की तरफ एक तोहफा भेजने वाली हूँ, फिर देखती हूँ क्या जवाब ले कर लौटते है कासिद। (35)

पस जब सुलेमान (अ) के पास कासिद आया तो उस ने कहा कि तुम माल से मेरी मदद करते हो?

पस जो अल्लाह ने मुझे दिया है वह बेहतर है उस से जो उस ने तुम्हें दिया है, बल्कि तुम अपने तोहफे से खुश होते हो। (36)

तू उन की तरफ लौट जा, सो हम उन पर ज़रूर लाएंगे ऐसा लशकर जिस (के मुकाबले) की उन्हें ताकत न होगी, और हम ज़रूर उन्हें वहां से ज़लील कर के निकाल देंगे। और वह खार होंगे। (37)

सुलेमान (अ) ने कहा ऐ सरदारो! तुम में कौन उस का तख्त मेरे पास लाएगा? इस से कब्ल कि वह मेरे पास फरमांवरदार हो कर आए। (38)

कहा जिन्नात में से एक कबी हैकल ने, वेशक मैं उस को आप के पास इस से कब्ल ले आऊंगा कि आप अपनी जगह से खड़े हों, मैं वेशक उस पर अलबत्ता कुव्वत वाला, अमानतदार हूँ। (39)

قَالَ سَنَنْظُرُ أَصَدَقْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِينَ ﴿٢٧﴾ اِذْهَبْ بِكِتٰبِي

मेरा खत	ले जा	27	झूटे	से	तू है	या	क्या तू ने सच कहा	उस (सुलेमान अ) ने कहा अभी हम देख लेंगे
---------	-------	----	------	----	-------	----	-------------------	--

هٰذَا فٰلِقِهٖ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فٰنظُرْ مَاذَا يَرْجِعُونَ ﴿٢٨﴾ قٰلَتْ

वह कहने लगी	28	वह जवाब देते है	क्या	फिर देख	उन से	फिर लौट आ	उन की तरफ	पस उसे डाल दे	यह
-------------	----	-----------------	------	---------	-------	-----------	-----------	---------------	----

يٰٓاَيُّهَا الْمَلُوٓا۟ اِنِّىۡ اُلْقِىۡ اِلَيْكَ كِتٰبٌ كَرِيْمٌ ﴿٢٩﴾ اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ

और वेशक वह	सुलेमान (अ)	से	वेशक वह	29	वा वक्अत	खत	मेरी तरफ	डाला गया	वेशक मेरी तरफ	ऐ सरदारो!
------------	-------------	----	---------	----	----------	----	----------	----------	---------------	-----------

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٣٠﴾ اِلَّا تَعْلَمُوۡا عَلٰى وَاَتُوۡنِىۡ مُسْلِمِيۡنَ ﴿٣١﴾

31	फरमांवरदार हो कर	और मेरे पास आओ	मुझे पर	यह कि तुम सरकशी न करो	30	रहम करने वाला	निहायत मेहरवान	नाम से अल्लाह के
----	------------------	----------------	---------	-----------------------	----	---------------	----------------	------------------

قٰلَتْ يٰٓاَيُّهَا الْمَلُوٓا۟ اَفْتُوۡنِىۡ فِىۡ اَمْرِىۡۤ مَا كُنْتُ قٰطِعَةً اَمْرًا

किसी मामला	फ़ैसला करने वाली	मैं नहीं हूँ	मेरे मामले में	मुझे राए दो	ऐ सरदारो!	वह बोली
------------	------------------	--------------	----------------	-------------	-----------	---------

حَتّٰى تَشْهَدُوۡنَ ﴿٣٢﴾ قٰلُوۡا نَحْنُ اَوْلٰٓؤُا۟ فُوۡةٌ وَّاَوْلٰٓؤُا۟ بَاسٍ شَدِيۡدٌ

और बड़े लड़ने वाले	कुव्वत वाले	हम	वह बोले	32	तुम मौजूद हो	जब तक
--------------------	-------------	----	---------	----	--------------	-------

وَالْاَمْرُ اِلَيْكَ فٰنظُرِىۡ مَاذَا تَأْمُرِيۡنَ ﴿٣٣﴾ قٰلَتْ اِنَّ الْمَلُوۡكَ

बादशाह (जमा)	वेशक	वह बोली	33	तुझे हुक्म करना है	क्या	तू देख ले	और फ़ैसला तेरी तरफ (तेरे इख्तियार में)
--------------	------	---------	----	--------------------	------	-----------	--

اِذَا دَخَلُوۡا قَرْيَةً اَفْسَدُوۡهَا وَّجَعَلُوۡا اَعْرٰةَ اَهْلِهَا اِذْلَةً

ज़लील	वहां के	मुअज़ज़िज़ीन	और कर दिया करते है	उसे तवाह कर देते है	कोई बस्ती	जब दाखिल होते है
-------	---------	--------------	--------------------	---------------------	-----------	------------------

وَكَذٰلِكَ يَفْعَلُوۡنَ ﴿٣٤﴾ وَاِنِّىۡ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنْظُرُهٗا بِمَ يَرْجِعُ

क्या (जवाब) ले कर लौटते है	फिर देखती हूँ	एक तोहफा	उन की तरफ	भेजने वाली	और वेशक मैं	34	वह करते है	और उसी तरह
----------------------------	---------------	----------	-----------	------------	-------------	----	------------	------------

الْمُرْسَلُوۡنَ ﴿٣٥﴾ فَلَمّٰ جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالِ اْتَمِدُّوۡنِ بِمَالٍ فَمَآ

पस जो	माल से	क्या तुम मेरी मदद करते हो	उस ने कहा	सुलेमान (अ)	आया	पस जब	35	कासिद
-------	--------	---------------------------	-----------	-------------	-----	-------	----	-------

اَتَسْنِ اللّٰهُ خَيْرٌ مِّمّٰ اَتَكُمۡۤ اَبَلْ اَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوۡنَ ﴿٣٦﴾ اِرْجِعْ

तू लौट जा	36	खुश होते हो	अपने तोहफे से	तुम	बल्कि	उस ने तुम्हें दिया	उस से जो	बेहतर	मुझे दिया अल्लाह ने
-----------	----	-------------	---------------	-----	-------	--------------------	----------	-------	---------------------

اِلَيْهِمْ فَلَنَاتِيَنَّهٗمۡ بِجُنُوۡدٍ لَّا قَبْلَ لَهٗمۡ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمۡ مِّنْهَا

वहां से	और ज़रूर निकाल देंगे उन्हें	उस की	उन को	न ताकत होगी	ऐसा लशकर	हम ज़रूर लाएंगे उन पर	उन की तरफ
---------	-----------------------------	-------	-------	-------------	----------	-----------------------	-----------

اِذْلَةً وَّهُمۡ صٰغِرُوۡنَ ﴿٣٧﴾ قَالِ يٰٓاَيُّهَا الْمَلُوٓا۟ اَيُّكُمْ يٰٓاتِيۡنِىۡ بِعَرَشِهَا

उस का तख्त	मेरे पास लाएगा	तुम में से कौन	उस (सुलेमान अ) ने कहा ऐ सरदारो!	37	खार होंगे	और वह	ज़लील कर के
------------	----------------	----------------	---------------------------------	----	-----------	-------	-------------

قَبْلَ اَنْ يٰٓاتُوۡنِىۡ مُسْلِمِيۡنَ ﴿٣٨﴾ قَالِ عَفَرِيۡتُۭ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اَتِيۡكَ

मैं आप के पास ले आऊंगा	जिन्नात से	एक कबी हैकल	कहा	38	फरमांवरदार हो कर	वह आए मेरे पास	कि	इस से कब्ल
------------------------	------------	-------------	-----	----	------------------	----------------	----	------------

بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوۡمَ مِنْ مَّقَامِكَۭ وَاِنِّىۡ عَلَيۡهِ لَقَوِيۭۡٓ اٰمِيۡنٌ ﴿٣٩﴾

39	अमानतदार	अलबत्ता कुव्वत वाला	उस पर	और वेशक मैं	अपनी जगह से	कि आप खड़े हों	इस से कब्ल	उस को
----	----------	---------------------	-------	-------------	-------------	----------------	------------	-------

٢  
١٤

قَالَ الَّذِي عِنْدَهُ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتَابِ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ							
कब्ल	मैं उस को तुम्हारे पास ले आऊंगा	मैं	किताब	से - का	इल्म	उस के पास	उस ने जो कहा
أَنْ يَّرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفَكَ فَلَمَّا رَأَاهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهُ قَالَ							
उस ने कहा	अपने पास	रखा हुआ	पस जब सुलेमान (अ) ने उसे देखा	तुम्हारी निगाह (पलक झपकें)	तुम्हारी तरफ	कि फिर आए	
هَذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّي لِيَبْلُوَنِي ؕ أَشْكُرُ أَمْ أَكْفُرُ وَمَنْ							
और जिस	या नाशुकी करता हूँ	आया मैं शुक्र करता हूँ	ताकि मुझे आजमाए	मेरे रब का फ़ज़ल	से	यह	
شَكَرَ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ رَبِّي غَنِيٌّ							
वेनियाज़	मेरा रब	तो बेशक	नाशुकी की	और जिस	अपनी ज़ात के लिए	शुक्र करता है	तो पस वह शुक्र किया
كَرِيمٌ ﴿٤٠﴾ قَالَ نَكِّرُوا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرِ أَتَهْتَدِي أَمْ تَكُونُ							
या होती है	आया वह राह पाती (समझ जाती) है	हम देखें	उस का तख़्त	उस के लिए	शकल बदल दो	उस ने कहा	40 करम करने वाला
مِنَ الَّذِينَ لَا يَهْتَدُونَ ﴿٤١﴾ فَلَمَّا جَاءَتْ قِيلَ أَهَكَذَا							
क्या ऐसा ही है	कहा गया	वह आई	पस जब	41	राह नहीं पाते	जो लोग	से
عَرْشِكَ قَالَتْ كَأَنَّهُ هُوَ وَأَوْتَيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا							
इस से कब्ल	इल्म	और हमें दिया गया	वही	गोया कि यह	वह बोली	तेरा तख़्त	
وَكُنَّا مُسْلِمِينَ ﴿٤٢﴾ وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَعْبُدُ مِنْ دُونِ اللَّهِ							
अल्लाह के सिवा	वह परसतिश करती थी	जो	और उस ने उस को रोका	42	मुसलमान - फ़रमांबरदार	और हम हैं	
إِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كَافِرِينَ ﴿٤٣﴾ قِيلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ							
महल	तू दाखिल हो	उस से	कहा गया	43	काफ़िरों	क़ौम से	थी बेशक वह
فَلَمَّا رَأَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَكَشَفَتْ عَنْ سَاقِهَا قَالَ إِنَّهُ							
वेशक यह	उस ने कहा	अपनी पिंडलियाँ	से	और खोल दी	गहरा पानी	उसे समझा	उस ने उस को देखा पस जब
صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيرَ قَالَتْ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي							
अपनी जान	वेशक मैं ने जुल्म किया	ऐ मेरे रब	वह बोली	शीशो (जमा)	से	जुड़ा हुआ	महल
وَأَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمَانَ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٤﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ							
तरफ	और तहकीक हम ने भेजा	44	तमाम जहानों का रब	अल्लाह के लिए	सुलेमान (अ)	साथ	और मैं ईमान लाई
ثَمُودَ أَخَاهُمْ ضَلِحًا أَنْ اعْبُدُوا اللَّهَ فَإِذَا هُمْ فَرِيقَانِ							
दो फ़रीक हो गए	वह	पस नागहां	अल्लाह की इबादत करो	कि	सालेह (अ)	उन के भाई	समूद
يَخْتَصِمُونَ ﴿٤٥﴾ قَالَ يَقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُونَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ							
पहले	बुराई के लिए	तुम जल्दी करते हो	क्यों	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	45	वाहम झगड़ने लगे
الْحَسَنَةِ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٤٦﴾							
46	तुम पर रहम किया जाए	ताकि तुम	तुम बख़्शिश मांगते अल्लाह से	क्यों नहीं	भलाई		

उस शख्स ने कहा जिस के पास किताब (इलाही) का इल्म था, मैं उस को तुम्हारे पास उस से कब्ल ले आऊंगा कि तुम्हारी आँख पलक झपके, पस जब सुलेमान (अ) ने (अचानक) उसे अपने पास रखा हुआ देखा तो उस ने कहा यह मेरे रब के फ़ज़ल से है, ताकि वह मुझे आजमाए आया मैं शुक्र करता हूँ या नाशुकी करता हूँ? और जिस ने शुक्र किया तो पस वह अपनी ज़ात के लिए शुक्र करता है, और जिस ने नाशुकी की तो बेशक मेरा रब वेनियाज़, करम करने वाला है। (40)

उस ने कहा उस (मलिका के इमतिहान के लिए) उस के तख़्त की शकल बदल दो, हम देखें कि आया वह समझ जाती है या उन लोगों में से होती है जो नहीं समझते। (41)

पस जब वह आई (उस से) कहा गया क्या तेरा तख़्त ऐसा ही है? वह बोली गोया कि यह वही है और हमें इस से पहले ही इल्म दिया गया (इल्म हो गया था) और हम हैं मुसलमान (फ़रमांबरदार)। (42)

और उस को (ईमान लाने से) रोक रखा था उन माबूदों ने जिन की वह अल्लाह के सिवा परसतिश करती थी, क्योंकि वह काफ़िरों की क़ौम से थी। (43)

उस से कहा गया कि महल में दाखिल हो, जब उस (मलिका) ने उस (के फ़र्श) को देखा तो उसे गहरा पानी समझा और (पाएँ उठा कर) अपनी पिंडलियाँ खोल दी, उस (सुलेमान अ) ने कहा बेशक यह शीशों से जुड़ा हुआ महल है, वह बोली ऐ मेरे रब! बेशक मैं ने अपनी जान पर जुल्म किया, और (अब) मैं सुलेमान (अ) के साथ (सुलेमान अ के तरीके पर) तमाम जहानों के रब अल्लाह पर ईमान लाई। (44)

और तहकीक हम ने (क़ौम) समूद की तरफ उन के भाई सालेह (अ) को भेजा कि अल्लाह की इबादत करो, पस नागहां वह दो फ़रीक हो गए वाहम झगड़ने लगे। (45)

उस ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! तुम भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी करते हो? क्यों नहीं तुम अल्लाह से बख़्शिश मांगते, ताकि तुम पर रहम किया जाए। (46)

वह बोले हम ने तुझ से और तेरे साथियों से बुरा शगुन लिया है, उस ने कहा तुम्हारी बदशगुनी अल्लाह के पास (अल्लाह की तरफ से) है बल्कि तुम एक कौम हो (जो) आजमाए जाते हो। (47) और शहर में थे नौ (9) शख्स वह मुल्क में फसाद करते थे, और इसलाह न करते थे। (48) वह कहने लगे तुम बाहम अल्लाह की कसम खाओ अलवत्ता हम ज़रूर उस पर और उस के घर वालों पर शबखून मारेंगे और फिर उस के वारिसों को कह देंगे, हम उस के घर वालों की हलाकत के वक्त मौजूद न थे, और बेशक हम अलवत्ता सच्चे हैं। (49) और उन्होंने ने एक मक्का किया और हम ने (भी) एक खुफिया तदवीर की और वह न जानते थे (बेखबर) थे। (50) पस देखो उन के मक्का का अन्जाम कैसा हुआ! कि हम ने उन्हें और उन की कौम सब को हलाक कर डाला। (51) अब यह उन के घर हैं, गिरे पड़े, उन के जुल्म के सबब, बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानी है जो जानते हैं। (52) और हम ने उन लोगों को नजात दी जो ईमान लाए और वह परहेज़गारी करते थे। (53) और (याद करो) जब लूत (अ) ने अपनी कौम से कहा क्या तुम बेहयाई पर उतर आए हो? और तुम देखते हो। (54) क्या तुम औरतों को छोड़ कर मर्दों के पास शहवत रानी के लिए आते हो? बल्कि तुम लोग जहालत करते हो। (55) पस उस की कौम का जवाब सिर्फ यह था कि लूत (अ) के साथियों को निकाल दो अपने शहर से, बेशक यह लोग पाकीज़गी पसंद करते हैं। (56) सो हम ने उसे बचा लिया और उस के घर वालों को सिवाए उस की बीबी के, उसे हम ने पीछे रह जाने वालों में से ठहरा दिया था। (57) और हम ने उन पर एक वारिश बरसाई, सो क्या ही बुरी वारिश थी डराए गए लोगों पर। (58) आप (स) फरमा दें तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं और उस के बन्दों पर सलाम हो जिन्हें उस ने चुन लिया, क्या अल्लाह बेहतर है या वह जिन्हें वह शरीक ठहराते हैं? (59)

قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَعَكَ قَالَطَّيْرُكُمْ عِنْدَ اللَّهِ بَلْ								
बल्कि	अल्लाह के पास	तुम्हारी बदशगुनी	उस ने कहा	तेरे साथ (साथी)	और वह जो	तुझ से	बुरा शगुन	वह बोले
أَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُونَ ﴿٤٧﴾ وَكَانَ فِي الْمَدِينَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُفْسِدُونَ								
वह फसाद करते थे	शख्स	नौ (9)	शहर में	और थे	47	आजमाए जाते हो	एक कौम	तुम
فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ﴿٤٨﴾ قَالُوا تَقَاسَمُوا بِاللَّهِ لَنُبَيِّتَنَّهُ								
अलवत्ता हम ज़रूर शबखून मारेंगे उस पर	अल्लाह की	तुम बाहम कसम खाओ	वह कहने लगे	48	और इसलाह नहीं करते थे	ज़मीन (मुल्क) में		
وَأَهْلَهُ ثُمَّ لَنَقُولَنَّ لِوَلِيِّهِ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ أَهْلِهِ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿٤٩﴾								
49	अलवत्ता सच्चे हैं	और बेशक हम	उस के घर वाले	हलाकत के वक्त	हम मौजूद न थे	उस के वारिसों से	फिर ज़रूर हम कह देंगे	और उस के घर वाले
وَمَكْرُؤًا مَكْرًا وَمَكْرُؤًا مَكْرًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٥٠﴾ فَأَنْظُرْ كَيْفَ								
कैसा	पस देखो	50	न जानते थे	और वह	एक तदवीर	और हम ने खुफिया तदवीर की	एक तदवीर	और उन्होंने ने मक्का किया
كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ أَنَا دَمَرْنَاهُمْ وَقَوْمَهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥١﴾ فَتِلْكَ								
अब यह	51	सब को	और उन की कौम	हम ने तबाह कर दिया उन्हें	कि हम	उन का मक्का	अन्जाम	हुआ
بُيُوتُهُمْ خَاوِيَةً بِمَا ظَلَمُوا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٥٢﴾								
52	लोगों के लिए जो जानते हैं	अलवत्ता निशानी	उस में	बेशक	उन के जुल्म के सबब	गिरे पड़े	उन के घर	
وَأَنْجَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٥٣﴾ وَلَوْطًا إِذْ قَالَ								
जब उस ने कहा	और लूत (अ)	53	और वह परहेज़गारी करते थे	वह ईमान लाए	वह लोग जो	और हम ने नजात दी		
لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ وَأَنْتُمْ تُبْصِرُونَ ﴿٥٤﴾ أَيِّنْكُمْ								
क्या तुम	54	देखते हो	और तुम	बेहयाई	क्या तुम आगए	अपनी कौम से		
لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُونِ النِّسَاءِ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ								
लोग	तुम	बल्कि	औरतों के सिवा (औरतों को छोड़ कर)	शहवत रानी के लिए?	मर्दों के पास	आते हो		
تَجْهَلُونَ ﴿٥٥﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَخْرِجُوْنَا								
निकाल दो	उन्होंने ने कहा	मगर-सिर्फ यह कि	उस की कौम	जवाब	था	पस न	55	जहालत करते हो
إِلَ لُّوطٍ مِّنْ قَرَبَتِكُمْ إِنَّهُمْ أَنَاسٌ يَّتَطَهَّرُونَ ﴿٥٦﴾ فَانْجَيْنَاهُ								
सो हम ने उसे बचा लिया	56	पाकीज़गी पसंद करते हैं	लोग	बेशक वह	अपना शहर	से	लूत (अ) के साथी	
وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَرْنَاهَا مِنَ الْغَيْرِينَ ﴿٥٧﴾ وَأَمْطَرْنَا								
और हम ने बरसाई	57	पीछे रह जाने वाले	से	हम ने उसे ठहरा दिया था	उस की बीबी	सिवाए	और उस के घर वाले	
عَلَيْهِمْ مَّطَرًا فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِينَ ﴿٥٨﴾ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسَلَامٌ								
और सलाम	तमाम तारीफें अल्लाह के लिए	फरमा दें	58	डराए गए	वारिश	सो क्या ही बुरा	एक वारिश	उन पर
عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِينَ اصْطَفَىٰ ؕ وَاللَّهُ خَيْرٌ أَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾								
59	वह शरीक ठहराते हैं	या जो	बेहतर	क्या अल्लाह	चुन लिया	वह जिन्हें	उस के बन्दों पर	



أَمَّنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِنَ						
से	तुम्हारे लिए	और उतारा	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा किया	भला कौन?
السَّمَاءِ مَاءً ۖ فَانْتَبْنَا بِهِ خَدَائِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ مَا كَانَ						
न था	वा रौनक	बागात	उस से	पस उगाए हम ने	पानी	आस्मान
لَكُمْ أَنْ تَنْبِتُوا شَجَرَهَا ۗ ءَالَهُ مَعَ اللَّهِ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَعْدِلُونَ ﴿٦٠﴾						
60	कज रबी करते है	लोग	वह	बल्कि	अल्लाह के साथ	क्या कोई माबूद उन के दरख्त कि तुम उगाओ तुम्हारे लिए
أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خِلَلَهَا أَنْهْرًا وَجَعَلَ						
और (पैदा) किए	नदी नाले	उस के दरमियान	और (जारी) किया	करारगाह	ज़मीन	बनाया भला कौन-किस
لَهَا رَوَاسِي ۖ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۗ ءَالَهُ مَعَ اللَّهِ						
अल्लाह के साथ	क्या कोई माबूद	आइ (हदे फ़ासिल)	दो दर्या	दरमियान	और बनाया	पहाड़ (जमा) उस के लिए
بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦١﴾ أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَّرَّ إِذَا دَعَاهُ						
वह उसे पुकारता है	जब	बेकरार	कुबूल करता है	भला कौन	61	नहीं जानते उन के अकसर बल्कि
وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَاءَ الْأَرْضِ ۗ ءَالَهُ مَعَ اللَّهِ						
अल्लाह के साथ	क्या कोई माबूद	ज़मीन	नाइव (जमा)	और तुम्हें बनाता है	बुराई	और दूर करता है
فَلِيلاً مَا تَذَكَّرُونَ ﴿٦٢﴾ أَمَّنْ يَهْدِيكُمْ فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ						
खुशकी	अन्धे में	तुम्हें राह दिखाता है	भला कौन	62	नसीहत पकड़ते है	जो थोड़े
وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُرْسِلُ الرِّيْحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۗ						
उस की रहमत	पहले	खुशखबरी देने वाली	हवाएं	चलाता है	और कौन	और समुन्दर
ءَالَهُ مَعَ اللَّهِ تَعَالَى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٣﴾ أَمَّنْ يَبْدَأُ الْخَلْقَ						
पहली बार पैदा करता है मख्लूक	भला कौन	63	यह शरीक ठहराते है	उस से जो	वरतर है अल्लाह	अल्लाह के साथ क्या कोई माबूद
ثُمَّ يُعِيدُهُ وَمَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۗ						
और ज़मीन	आस्मान से	तुम्हें रिज़क देता है	और कौन	फिर वह उसे दोबारा (ज़िन्दा) करेगा		
ءَالَهُ مَعَ اللَّهِ ۗ فَلْهَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٦٤﴾						
64	सच्चे	तुम हो	अगर	अपनी दलील	ले आओ तुम	फ़रमा दें अल्लाह के साथ क्या कोई माबूद
قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ						
गैब	और ज़मीन	आस्मानों में	जो	नहीं जानता	फरमा दें	
إِلَّا اللَّهُ ۗ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿٦٥﴾ بَلِ ادْرَكَ عِلْمُهُمْ						
उन का इल्म	बल्कि थक कर रह गया	65	वह उठाए जाएंगे	कब	और वह नहीं जानते	सिवाए अल्लाह के
فِي الْآخِرَةِ ۗ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِّنْهَا ۗ بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُونَ ﴿٦٦﴾						
66	अन्धे	उस से	वह	बल्कि	उस से	शक में बल्कि वह आखिरत (के बारे) में

भला कौन है? जिस ने आस्मान को और ज़मीन को पैदा किया, और तुम्हारे लिए आस्मान से पानी उतारा, फिर हम ने उस से वा रौनक बाग उगाए, तुम्हारे लिए (मुमकिन) न था कि तुम उन के दरख्त उगा सको, क्या अल्लाह के साथ कोई (और) माबूद है? बल्कि वह लोग कज रबी करते है। (60) भला कौन है? जिस ने ज़मीन को करारगाह बनाया, और उस के दरमियान नदी नाले (जारी किए) और उस के लिए पहाड़ बनाए, और दो दर्याओं के दरमियान हदे फ़ासिल बनाई, क्या अल्लाह के साथ कोई (और) माबूद है? बल्कि उन के अकसर नहीं जानते। (61) भला कौन है? जो बेकरार (की दुआ) कुबूल करता है जब वह उसे पुकारता है, और बुराई दूर करता है, और तुम्हें ज़मीन में नाइव बनाता है, क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? थोड़े है जो नसीहत पकड़ते है। (62) भला कौन है जो खुशकी (जंगल) और समुन्दर के अन्धे में तुम्हें राह दिखाता है? और कौन है जो उस की रहमत (वारिश) से पहले खुशखबरी देने वाली हवाएं चलाता है? क्या अल्लाह के साथ कोई (और) माबूद है? अल्लाह वरतर है उस से जो यह शरीक ठहराते है? (63) भला कौन है जो मख्लूक को पहली बार पैदा करता है? फिर वह उसे दोबारा ज़िन्दा करेगा, और कौन है जो तुम्हें रिज़क देता है? आस्मान और ज़मीन से, क्या अल्लाह के साथ कोई (और) माबूद है? आप (स) फ़रमा दें कि ले आओ अपनी दलील अगर तुम सच्चे हो। (64) आप (स) फ़रमा दें, जो (भी) आस्मानों और ज़मीन में है, अल्लाह के सिवा गैब (की बातें) नहीं जानता, और वह नहीं जानते कि वह कब (जी) उठाए जाएंगे? बल्कि आखिरत के बारे में उन का इल्म थक कर रह गया है। (65) (कुछ भी नहीं) बल्कि वह उस से शक में है, बल्कि वह उस से अन्धे है। (66)

और काफ़िरों ने कहा क्या जब हम और हमारे बाप दादा मिट्टी हों जाएंगे क्या हम (कब्रों से) निकाले जाएंगे? (67)

तहकीक़ यही वादा हम से और हमारे बाप दादा से इस से कबल किया गया था, यह सिर्फ़ अगलों की कहावियां हैं। (68)

आप (स) फ़रमा दें ज़मीन में चलो फ़िरो, फिर देखो कैसा अन्जाम हुआ मुज़्रिमों का! (69)

और आप (स) ग़म न खाएं, और आप (स) दिल तंग न हों, उस से जो वह मक्क़ ओ फ़रेब करते हैं। (70)

और वह कहते हैं यह वादा कब पूरा होगा? अगर तुम सच्चे हो। (71)

आप (स) फ़रमा दें शायद उस (अज़ाब) का कुछ तुम्हारे लिए करीब आगया हो जिस की तुम जल्दी करते हो। (72)

और बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता लोगों पर फ़ज़ल वाला है, लेकिन उन के अक्सर शुक्र नहीं करते। (73)

और बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो उन के दिलों में छुपी हुई है और जो वह ज़ाहिर करते हैं। (74)

और कुछ गाइब (पोशीदा) नहीं ज़मीन ओ आस्मान में मगर वह किताबे रोशन में (लिखी हुई) है। (75)

बेशक यह कुरआन बनी इस्राईल पर (बनी इस्राईल के सामने) अक्सर वह बातें बयान करता है जिस में वह इख़तिलाफ़ करते हैं। (76)

और बेशक यह (कुरआन) अलबत्ता ईमान लाने वालों के लिए हिदायत और रहमत है। (77)

बेशक तुम्हारा रब अपने हुक्म से उन के दरमियान फ़ैसला करता है, और वह ग़ालिब, इल्म वाला है। (78)

पस अल्लाह पर भरोसा करो, बेशक तुम वाज़ेह हक़ पर हो। (79)

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِذَا كُنَّا تُرَابًا وَآبَاؤُنَا آبِنَا							
क्या हम	और हमारे बाप दादा	मिट्टी	हम हों जाएंगे	क्या जब	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	और कहा	
لَمُخْرَجُونَ ﴿٦٧﴾ لَقَدْ وَعَدْنَا هَذَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا							
और हमारे बाप दादा	हम	यह-यही	तहकीक़ वादा किया गया हम से	67	निकाले जाएंगे अलबत्ता		
مِنْ قَبْلُ إِنَّ هَذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٦٨﴾ قُلْ سِيرُوا							
चलो फ़िरो तुम	फ़रमा दें	68	अगले	कहानियां	मगर-सिर्फ़	यह नहीं	इस से कबल
فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٦٩﴾							
69	मुज़्रिम (जमा)	अन्जाम	हुआ	कैसा	फिर देखो	ज़मीन में	
وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِي صَيْقِلٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ﴿٧٠﴾							
70	वह मक्क़ करते हैं	उस से जो	तंगी में	और आप (स) न हों	उन पर	और तुम ग़म न खाओ	
وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٧١﴾ قُلْ							
फ़रमा दें	71	सच्चे	तुम हो	अगर	वादा	यह कब	और वह कहते हैं
عَسَى أَنْ يَكُونَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِي تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٧٢﴾							
72	तुम जल्दी करते हो	वह जो-जिस	कुछ	तुम्हारे लिए	करीब	हो गया हो	कि शायद
وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ							
उन के अक्सर	और लेकिन	लोगों पर	अलबत्ता फ़ज़ल वाला	तुम्हारा रब	और बेशक		
لَا يَشْكُرُونَ ﴿٧٣﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا							
और जो	उन के दिल	जो छुपी हुई है	ख़ूब जानता है	तुम्हारा रब	और बेशक	73	शुक्र नहीं करते
يُعْلِنُونَ ﴿٧٤﴾ وَمَا مِنْ غَائِبَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي							
में	मगर	और ज़मीन	आस्मानों में	गाइब	कुछ	और नहीं	74
كِتَابٍ مُبِينٍ ﴿٧٥﴾ إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَقْضَىٰ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ							
बनी इस्राईल पर	बयान करता है	कुरआन	यह	बेशक	75	किताबे रोशन	
أَكْثَرَ الَّذِي هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٧٦﴾ وَإِنَّهُ							
और बेशक यह	76	इख़तिलाफ़ करते हैं	उस में	वह	वह जो	अक्सर	
لَهُدًى وَرَحْمَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٧﴾ إِنَّ رَبَّكَ							
तुम्हारा रब	बेशक	77	ईमान वालों के लिए	और रहमत	अलबत्ता हिदायत		
يَقْضِيٰ بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ﴿٧٨﴾							
78	इल्म वाला	ग़ालिब	और वह	अपने हुक्म से	उन के दरमियान	फ़ैसला करता है	
فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِينِ ﴿٧٩﴾							
79	वाज़ेह हक़	पर	बेशक तुम	अल्लाह पर	पस भरोसा करो		

إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ						
पुकार	बहरों को	और तुम नहीं सुना सकते	मुर्दा को	तुम नहीं सुना सकते	वेशक तुम	
إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ﴿۸۰﴾ وَمَا أَنْتَ بِهَادِي الْعُمَىٰ عَنْ ضَلَّاتِهِمْ						
उन की गुमराही	से	अन्धों को	हिदायत देने वाले	और तुम नहीं	80	पीठ फेर कर जब वह मुड़ जाएं
إِنْ تُسْمِعُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ مُسْلِمُونَ ﴿۸۱﴾						
81	फरमांबरदार	पस वह	हमारी आयतों पर	ईमान लाता है	जो	मगर-सिर्फ तुम सुनाते नहीं
وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً مِّنَ الْأَرْضِ						
ज़मीन से	एक जानवर	उन के लिए	हम निकालेंगे	उन पर	वाकें (पूरा) हो जाएगा वादा (अज़ाब)	और जब
تُكَلِّمُهُم أَنَّ النَّاسَ كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ ﴿۸۲﴾						
82	यकीन न करते	हमारी आयात पर	थे	क्यों कि लोग	वह उन से बातें करेगा	
وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ يُكَذِّبُ						
झुटलाते थे	से जो	एक गिरोह	हर उम्मत	से	हम जमा करेंगे	और जिस दिन
بِآيَاتِنَا فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿۸۳﴾ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوا قَالَ أَكَذَّبْتُم						
क्या तुम ने झुटलाया	फरमाएगा	जब वह आजाएं	यहां तक	83	उन की जमाअत बन्दी की जाएगी	फिर वह हमारी आयतों को
بِآيَاتِي وَلَمْ تُحِيطُوا بِهَا عِلْمًا أَمَا ذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿۸۴﴾						
84	तुम करते थे	या क्या	इल्म के	उन को	हालाकि अहाता में नहीं लाए थे	मेरी आयात को
وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوا فَهُمْ لَا يَنْطِقُونَ ﴿۸۵﴾						
85	न बोल सकेंगे वह	पस वह	इस लिए कि उन्होंने ने जुल्म किया	उन पर	वादा (अज़ाब)	और वाकें (पूरा) हो गया
أَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا اللَّيْلَ لَيْسَكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا						
देखने को	और दिन	उस में	कि आराम हासिल करें	रात	हम ने बनाया	कि हम क्या वह नहीं देखते
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿۸۶﴾ وَيَوْمَ يُنْفَخُ						
फूंक मारी जाएगी	और जिस दिन	86	ईमान रखते हैं	उन लोगों के लिए	अलबलता निशानियां	उस में वेशक
فِي الصُّورِ فَفَزِعَ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ						
ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	तो घबरा जाएगा	सूर में	
إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ وَكُلٌّ أَتَوْهُ دُخْرِينَ ﴿۸۷﴾ وَتَرَى الْجِبَالَ						
पहाड़ (जमा)	और तू देखता है	87	आजिज़ हो कर	उस के आगे आएंगे	और सब	अल्लाह चाहे जिसे सिवा
تَحْسِبُهَا جَامِدَةً وَهِيَ تَمُرٌّ مَرَّ السَّحَابِ صُنِعَ اللَّهُ						
अल्लाह की कारीगरी	वादलों की तरह चलना	चलेंगे	और वह	जमा हुआ	तो खयाल करता है उन्हें	
الَّذِي أَتَقَنَ كُلَّ شَيْءٍ إِنَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَفْعَلُونَ ﴿۸۸﴾						
88	तुम करते हो	उस से जो	वाखबर	वेशक वह	हर शौ	खूबी से बनाया वह जिस ने वाखबर है जो तुम करते हो। (88)

वेशक तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते, न बहरों को (अपनी) पुकार सुना सकते हो (खुसूसन) जब वह पीठ फेर कर मुड़ जाएं। (80) और तुम अन्धों को उन की गुमराही से हिदायत देने वाले नहीं। तुम सिर्फ (उस को) सुना सकते हो जो ईमान लाता है हमारी आयतों पर, पस वह फरमांबरदार है। (81) और जब उन पर वादा-ए-अज़ाब पूरा हो जाएगा तो हम उन के लिए निकालेंगे ज़मीन से एक जानवर, वह उन से बातें करेगा क्यों कि लोग हमारी आयतों पर यकीन न करते थे। (82) और जिस दिन हम हर उम्मत में से एक गिरोह जमा करेंगे उन में से जो हमारी आयतों को झुटलाते थे, फिर उन की जमाअत बन्दी की जाएगी। (83) यहां तक कि जब वह आजाएंगे (अल्लाह तआला) फरमाएगा क्या तुम ने मेरी आयतों को झुटलाया था हालांकि तुम उन को (अपने) अहाता-ए-इल्म में भी नहीं लाए थे (या वतलाओ) तुम क्या करते थे? (84) और उन पर वादा-ए-अज़ाब पूरा हो गया, इस लिए कि उन्होंने ने जुल्म किया था, पस वह बोल न सकेंगे। (85) क्या वह नहीं देखते कि हम ने रात को इस लिए बनाया कि वह उस में आराम हासिल करें और दिन देखने को (रोशन बनाया) वेशक उस में अलबलता उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ईमान रखते हैं। (86) और जिस दिन सूर में फूंक मारी जाएगी तो घबरा जाएगा जो भी आस्मानों में है और जो ज़मीन में है, सिवाए उस के जिसे अल्लाह चाहे और वह सब उस के आगे आजिज़ हो कर आएंगे। (87) और तू पहाड़ों को देखता है तो उन्हें (अपनी जगह) जमा हुआ खयाल करता है, और वह (कियामत के दिन) वादलों की तरह चलेंगे (उड़ते फिरेंगे), अल्लाह की कारीगरी है जिस ने हर शौ को खूबी से बनाया है वेशक वह उस से वाखबर है जो तुम करते हो। (88)

जो आया किसी नेकी के साथ तो उस के लिए (उस का अजर) उस से बेहतर है और वह उस दिन घबराहट से महफूज़ होंगे। (89) और जो बुराई के साथ आया तो वह औन्धे मुंह आग में डाले जाएंगे, तुम सिर्फ (वही) बदला दिए जाओगे (बदला पाओगे) जो तुम करते थे। (90)

(आप स फ़रमा दें) इस के सिवा नहीं कि मुझे हुक्म दिया गया है कि इस शहर (मक्का) के रब की इबादत करूँ जिसे उस ने मोहतरम बनाया है, और उसी के लिए है हर शौ, और मुझे हुक्म दिया गया कि मैं मुसलमानों (फ़रमांबरदारों) में से रहूँ। (91)

और यह कि मैं कुरआन की तिलावत करूँ (सुना दूँ), पस इस के सिवा नहीं कि जो हिदायत पाता है, वह अपनी ज़ात के लिए हिदायत पाता है और जो गुमराह हुआ तो आप (स) फ़रमा दें कि इस के सिवा नहीं कि मैं तो डराने वाला हूँ। (92)

और आप (स) फ़रमा दें तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, वह तुम्हें जल्द दिखादेगा अपनी निशानियाँ, पस तुम जल्द उन्हें पहचान लोगे, और तुम्हारा रब उस से बेखबर नहीं जो तुम करते हो। (93)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है ता-सीम-मीम। (1)

यह वाज़ेह किताब (कुरआन) की आयतें हैं। (2)

हम तुम पर पढ़ते हैं (तुम्हें सुनाते हैं) कुछ अहवाले मूसा (अ) और फ़िरज़ौन का ठीक ठीक, उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। (3)

वेशक फ़िरज़ौन मुल्क में सरकशी कर रहा था, और उस ने कर दिया था उस के लोगों को अलग अलग गिरोह, उन में से एक गिरोह (वनी इस्राईल) को कमज़ोर कर रखा था उन के बेटों को जुबह करता, और ज़िन्दा छोड़ देता था उन की औरतों (बेटियों) को, वेशक वह मुफ़सिदों में से (फ़सादी) था। (4)

और हम चाहते थे कि उन लोगों पर एहसान करें जो मुल्क में कमज़ोर कर दिए गए थे, और हम उन्हें पेशवा बनाएं, और हम उन्हें (मुल्क का) वारिस बनाएं। (5)

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِّنْهَا ۖ وَهُمْ مِّنْ فَرْعٍ يُّؤْمِدُ							
जो आया	किसी नेकी के साथ	तो उस के लिए	बेहतर	उस से	और वह	घबराहट से	उस दिन
۸۹) وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ هَلْ							
महफूज़ होंगे	89	और जो	आया	बुराई के साथ	औन्धे डाले जाएंगे	उन के मुंह	आग में
تُجْرَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۖ (۹۰) إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ رَبَّ هَذِهِ							
बदला दिए जाओगे	मगर-सिर्फ	जो	तुम करते थे	90	इसके सिवा मुझे हुक्म नहीं दिया गया	कि	इबादत करूँ
الْبَلَدِ الَّذِي حَرَّمَهَا وَلَهُ كُلُّ شَيْءٍ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ							
शहर	वह जिसे	उस ने मोहतरम बनाया	और उसी के लिए	हर शौ	और मुझे हुक्म दिया गया	कि	मैं रहूँ
الْمُسْلِمِينَ ۖ (۹۱) وَأَنْ أَتْلُوا الْقُرْآنَ ۖ فَمَنْ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۖ							
मुसलिमीन - फ़रमांबरदारों	91	और यह कि	मैं तिलावत करूँ कुरआन	पस जो	हिदायत पाई	तो इस के सिवा नहीं	वह हिदायत पाता है
وَمَنْ ضَلَّ فَضَلَّ فَإِنَّمَا أَنَا مِنَ الْمُنذِرِينَ ۖ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ							
और जो	गुमराह हुआ	तो	इस के सिवा नहीं	मैं	डराने वालों में से (डराने वाला हूँ)	92	और फ़रमा दें
سَيْرِكُمْ آيَاتِهِ فَتَعْرِفُونَهَا ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۖ (۹۳)							
वह जल्द दिखादेगा तुम्हें	अपनी निशानियाँ	पस तुम पहचान लोगे उन्हें	पस तुम	और नहीं	तुम्हारा रब	उस से जो	तुम करते हो
آيَاتُهَا ۘ (۲۸) سُورَةُ الْقَصَصِ ﴿۲۸﴾ رُكُوعَاتُهَا ۙ							
88 आयत (28) सूरतुल कसस किस्से 9 रूक़आत							
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है							
طَسَمَ ﴿۱﴾ تِلْكَ آيَةُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ﴿۲﴾ نَتْلُو عَلَيْكَ مِنْ نَّبَاِ							
ता सीम मीम	1	यह	आयतें	वाज़ेह किताब	2	हम पढ़ते हैं	तुम पर
مُوسَىٰ وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿۳﴾ إِنَّ فِرْعَوْنَ							
मूसा (अ)	और फ़िरज़ौन	ठीक ठीक	उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं	3	वेशक	फ़िरज़ौन	
عَالًا فِي الْأَرْضِ وَجَعَلَ أَهْلَهَا شِيَعًا يَسْتَضِعُّ طَائِفَةً							
सरकशी कर रहा था	ज़मीन (मुल्क) में	और उस ने कर दिया	उस के वाशिन्दे	अलग अलग गिरोह	कमज़ोर कर रखा था	एक गिरोह	
مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ أَبْنَاءَهُمْ وَيَسْتَحْيِ نِسَاءَهُمْ ۗ إِنَّهُ كَانَ مِنَ							
उन में से	जुबह करता था	उन के बेटों को	और ज़िन्दा छोड़ देता था	उन की औरतों को	वेशक वह	था	से
الْمُفْسِدِينَ ﴿۴﴾ وَنُرِيدُ أَنْ نَمُنَّ عَلَى الَّذِينَ اسْتَضَعُّوا							
मुफ़सिद (जमा)	4	और हम चाहते थे	कि	हम एहसान करें	उन लोगों पर जो	कमज़ोर कर दिए गए थे	
فِي الْأَرْضِ وَنَجْعَلُهُمْ أَبْنَاءَ وَنَجْعَلُهُمُ الْوَرَثِينَ ﴿۵﴾							
ज़मीन (मुल्क) में	और हम बनाएं उन्हें	पेशवा (जमा)	और हम बनाएं उन्हें	5	वारिस (जमा)		

۲

وَأَمَّا لَكُمْ فِي الْأَرْضِ فَلْيَعْلَمُوا أَنَّكُمْ كَانُوا لِلدَّارِ الْآخِرَةِ حَرَامًا بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ						
और उन के लशकर	और हामान	फिरऔन	और हम दिखा दें	जमीन (मुल्क) में	उन्हें	और हम कुदरत (हुकूमत) दें
مِنْهُمْ مَا كَانُوا يَحْذَرُونَ ﴿٦﴾ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّ مُوسَىٰ						
मूसा की माँ	तरफ-को	और हम ने इल्हाम किया	6	वह डरते थे	जिस चीज़	उन से
أَنْ أَرْضِعِيهِ ۖ فَإِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَأَلْقِيهِ فِي الْيَمِّ وَلَا تَخَافِي						
और न डर	दर्या में	तो डालदे उसे	तू उस पर डरे	फिर जब	कि तू दूध पिलाती रह उसे	
وَلَا تَحْزَنِي ۚ إِنَّا زَادُوهُ إِيَّاكَ وَجَاعَلُوهُ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٧﴾						
7	रसूलों	से	और उसे बना देंगे	तेरी तरफ	उसे लौटा देंगे	बेशक हम और न गम खा
فَالْتَقَطَهُ الْفِرْعَوْنُ لِيَكُونَ لَّهُمْ عَدُوًّا وَحَزَنًا ۗ إِنَّ						
बेशक	और गम का वाइस	दुश्मन	उन के लिए	ताकि वह हो	फिरऔन के घर वाले	फिर उठा लिया उसे
الْفِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا كَانُوا خَطِيئِينَ ﴿٨﴾ وَقَالَتْ						
और कहा	8	खताकार (जमा)	थे	और उन के लशकर	और हामान	फिरऔन
أُمْرَاتُ الْفِرْعَوْنَ قُرَّتْ عَيْنٌ لِّيَ وَلَكَ ۗ لَا تَقْتُلُوهُ ۗ						
तू कत्ल न कर इसे	और तेरे लिए	मेरी आँखों के लिए	ठंडक	फिरऔन	बीबी	
عَسَىٰ أَنْ يَنْفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٩﴾						
9	(हकीकते हाल) नहीं जानते थे	और वह	बेटा	हम बना लें इसे	या	कि नफा पहुँचाए हमें शायद
وَأَصْبَحَ فُؤَادُ أُمِّ مُوسَىٰ فَرِغًا ۗ إِن كَادَتْ لَتُبْدِي بِهِ						
उस को	कि ज़ाहिर कर देती	तहकीक करीब था	सवर से खाली (बेकरार)	मूसा (अ) की माँ	दिल	और हो गया
لَوْلَا أَنْ رَّبَطْنَا عَلَىٰ قَلْبِهَا لِتَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠﴾						
10	यकीन करने वाले	से	कि वह रहे	उस के दिल पर	कि गिरह लगाते हम	अगर न होता
وَقَالَتْ لِأُخْتِهِ قُصِّيهُ فَبَصُرَتْ بِهِ عَنْ جُنْبٍ وَهُمْ						
और वह	दूर से	उस को	फिर देखती रह	उस के पीछे जा	उस की बहन को	और उस (मूसा अ की बालिदा) ने कहा
لَا يَشْعُرُونَ ﴿١١﴾ وَحَرَمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ فَقَالَتْ						
वह (मूसा की बहन) बोली	पहले से	दूध पिलाने वाली औरतें (दाइयाँ)	उस से	और हम ने रोक रखा	11	(हकीकते हाल) न जानते थे
هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ أَهْلِ بَيْتٍ يَكْفُلُونَهُ لَكُمْ وَهُمْ لَهُ						
उस के लिए	और वह	तुम्हारे लिए	वह उस की पर्वरिश करें	एक घर वाले	क्या मैं बतलाऊँ तुम्हें	
نُصْحُونَ ﴿١٢﴾ فَرَدَدْنَاهُ إِلَىٰ أُمِّهِ كَىٰ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ						
और वह गमगीन न हो	उस की आँख	ताकि ठंडी रहे	उसकी माँ की तरफ	तो हम ने लौटा दिया उस को	12	खैर खाह
وَلِتَعْلَمَ أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَكِنَّ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٣﴾						
13	वह नहीं जानते	उन में से बेशतर	और लेकिन	सच्चा	अल्लाह का वादा	कि और ताकि जान ले

और हम उन्हें हुकूमत दें मुल्क में। और हम फिरऔन और हामान और उन के लशकर को उन (कमज़ोरों के हाथों) दिखा दें जिस चीज़ से वह डरते थे। (6)

और हम ने मूसा (अ) की माँ को इल्हाम किया कि वह उस को दूध पिलाती रह, फिर जब उस पर (उस के बारे में) डरे तो उसे दर्या में डाल दे, और न डर और न गम खा, बेशक हम उसे तेरी तरफ लौटा देंगे, और उसे बना देंगे रसूलों में से। (7)

फिर फिरऔन के घर वालों ने उसे उठा लिया ताकि (आखिर कार) वह उन के लिए दुश्मन और गम का वाइस हो, बेशक फिरऔन और हामान और उन के लशकर खताकार थे। (8)

और कहा फिरऔन की बीबी ने, यह आँखों की ठंडक है मेरे लिए और तेरे लिए, इसे कत्ल न कर, शायद हमें नफा पहुँचाए या हम इसे बेटा बनालें, और वह हकीकते हाल नहीं जानते थे। (9)

और मूसा (अ) की माँ का दिल बेकरार हो गया, तहकीक करीब था कि वह उस को ज़ाहिर कर देती अगर हम ने उस के दिल पर गिरह न लगाई होती कि वह यकीन करने वालों में से रहे। (10)

और मूसा (अ) की बालिदा ने उस की बहन को कहा कि उस के पीछे जा, फिर उसे दूर से देखती रह, और वह हकीकते हाल न जानते थे। (11)

और हम ने पहले से उस से दाइयों को रोक रखा था, तो मूसा (अ) की बहन बोली, क्या मैं तुम्हें एक घर वाले बतलाऊँ जो तुम्हारे लिए उस की पर्वरिश करें और वह उस के खैर खाह हों। (12)

तो हम ने उस को उस की माँ की तरफ लौटा दिया, ताकि ठंडी रहें उस की आँख, और वह गमगीन न हो, और ताकि जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है, और लेकिन उन के बेशतर नहीं जानते। (13)

और जब (मूसा अ) अपनी जवानी को पहुँचा और पूरी तरह तवाना हो गया तो हम ने उसे हिक्मत और इल्म अता किया, और हम नेकी करने वालों को इसी तरह बदला दिया करते हैं। (14)

और वह शहर में दाखिल हुआ जब कि उस के लोग गुफ़लत में थे तो उस ने दो आदमियों को बाहम लड़ते हुए पाया, एक उस की विरादरी से था और दूसरा उस के दुश्मनों में से था, तो जो उस की विरादरी से था उस ने उस (के मुकाबले) पर जो उस के दुश्मनों में से था मूसा (अ) से मदद मांगी तो मूसा (अ) ने उस को एक मुक्का मारा फिर उस का काम तमाम कर दिया, उस (मूसा अ) ने कहा यह काम शैतान (की हरकत) से हुआ, बेशक वह दुश्मन है खुला बहकाने वाला। (15)

उस ने अरज़ की ऐ मेरे रब! मैं ने अपनी जान पर जुल्म किया, पस मुझे बख़शदे, तो उस ने उसे बख़श दिया, बेशक वही बख़शने वाला, निहायत मेहरबान। (16)

उस ने कहा, ऐ मेरे रब! जैसा कि तू ने मुझ पर इन्आम किया है तो मैं हरगिज़ न होंगा (कभी) मुज्रिमों का मददगार। (17)

पस शहर में उस की सुबह हुई डरते हुए इन्तिज़ार करते हुए (कि देखें अब किया होता है) तो नागहों वही जिस ने कल उस से मदद मांगी थी (देखा कि) वह फिर उस से फ़र्याद कर रहा है। मूसा (अ) ने उस को कहा बेशक तू गुमराह है खुला। (18)

फिर जब उस ने चाहा कि उस पर हाथ डाले जो उन दोनों का दुश्मन था, तो उस ने कहा ऐ मूसा (अ)! क्या तू चाहता है कि तू मुझे कत्ल कर दे जैसे तू ने कल एक आदमी को कत्ल किया था, तू सिर्फ़ (यही) चाहता है कि तू इस सरज़मीन में ज़बरदस्ती करता फिरे और तू नहीं चाहता कि मुसलिहीन (इस्लाह करने वालों) में से हो। (19)

और एक आदमी शहर के परले सिरे से दौड़ता हुआ आया, उस ने कहा, ऐ मूसा (अ)! बेशक सरदार तेरे बारे में मश्वरा कर रहे हैं ताकि तुझे कत्ल कर डालें, पस तू (यहां से) निकल जा, बेशक मैं तेरे ख़ैर ख़्वाहों में से हूँ। (20)

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَاسْتَوَىٰ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَكَذٰلِكَ

और इसी तरह	और इल्म	हिक्मत	हम ने अता किया उसे	और पूरा (तवाना) हो गया	वह पहुँचा अपनी जवानी	और जब
------------	---------	--------	--------------------	------------------------	----------------------	-------

نَجَزَى الْمُحْسِنِينَ ﴿١٤﴾ وَدَخَلَ الْمَدِينَةَ عَلَىٰ حِينٍ غَفْلَةٍ

गुफ़लत	वक़्त पर	शहर	और वह दाखिल हुआ	14	नेकी करने वाले	हम बदला दिया करते हैं
--------	----------	-----	-----------------	----	----------------	-----------------------

مِّنْ أَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلَانِ هٰذَا مِنْ شِيعَتِهِ وَهٰذَا

और वह (दूसरा)	उस की विरादरी	से	यह (एक)	वह बाहम लड़ते हुए	दो आदमी	उस में	तो उस ने पाया	उस के लोग
---------------	---------------	----	---------	-------------------	---------	--------	---------------	-----------

مِّنْ عَدُوِّهِ فَاسْتَعَاثَهُ الَّذِي مِنْ شِيعَتِهِ عَلَى الَّذِي مِنْ عَدُوِّهِ

उस के दुश्मन से	वह जो	उस पर	उस की विरादरी से	वह जो	तो उस ने उस (मूसा) से मदद मांगी	उस के दुश्मन का	से
-----------------	-------	-------	------------------	-------	---------------------------------	-----------------	----

فَوَكَرَهُ مُوسَىٰ فَقَضَىٰ عَلَيْهِ قَالَ هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ

शैतान का काम (हरकत)	से	यह	उस ने कहा	उस का	फिर काम तमाम कर दिया	मूसा (अ)	तो एक मुक्का मारा उस को
---------------------	----	----	-----------	-------	----------------------	----------	-------------------------

إِنَّهُ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِينٌ ﴿١٥﴾ قَالَ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي

पस बख़शदे मुझे	अपनी जान	मैं ने जुल्म किया	बेशक मैं	ऐ मेरे रब	उस ने अरज़ की	15	सरीह (खुला)	बहकाने वाला	दुश्मन	बेशक वह
----------------	----------	-------------------	----------	-----------	---------------	----	-------------	-------------	--------	---------

فَغْفَرَ لَهُ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿١٦﴾ قَالَ رَبِّ بِمَا أَنْعَمْتَ عَلَيَّ

मुझ पर	तू ने इन्आम किया	ऐ मेरे रब जैसा कि	उस ने कहा	16	निहायत मेहरबान	बख़शने वाला	वही	बेशक	तो उस ने बख़श दिया उस को
--------	------------------	-------------------	-----------	----	----------------	-------------	-----	------	--------------------------

فَلَنْ أَكُونَ ظَهِيرًا لِلْمُجْرِمِينَ ﴿١٧﴾ فَاصْبَحَ فِي الْمَدِينَةِ خَائِفًا

डरता हुआ	शहर में	पस सुबह हुई उस की	17	मुज्रिमों का	मददगार	तो मैं हरगिज़ न होंगा
----------	---------	-------------------	----	--------------	--------	-----------------------

يَتَرَقَّبُ فَإِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهُ بِالْأَمْسِ يَسْتَصْرِحُهُ قَالَ

कहा	वह (फिर) उस से फ़र्याद कर रहा है	कल	उस ने मदद मांगी थी उस से	तो यकायक वह जिस	इन्तिज़ार करता हुआ
-----	----------------------------------	----	--------------------------	-----------------	--------------------

لَهُ مُوسَىٰ إِنَّكَ لَعَوِيٌّ مُّبِينٌ ﴿١٨﴾ فَلَمَّا أَنْ أَرَادَ أَنْ يَبْطِشَ

हाथ डाले	कि	उस ने चाहा	कि	फिर जब	18	खुला	अलबत्ता गुमराह	बेशक तू	मूसा (अ)	उस को
----------	----	------------	----	--------	----	------	----------------	---------	----------	-------

بِالَّذِي هُوَ عَدُوٌّ لَهُمَا قَالَ يُمُوسَىٰ أَتُرِيدُ أَنْ تَقْتُلَنِي

तू कत्ल करदे मुझे	कि	क्या तू चाहता है	ऐ मूसा (अ)	उस ने कहा	उन दोनों का दुश्मन	वह	उस पर जो
-------------------	----	------------------	------------	-----------	--------------------	----	----------

كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا بِالْأَمْسِ إِنْ تُرِيدُ إِلَّا أَنْ تَكُونَ جَبَّارًا

ज़बरदस्ती करता	कि तू हो	मगर-सिर्फ़	तू चाहता	नहीं	कल	एक आदमी	जैसे कत्ल किया तू ने
----------------	----------	------------	----------	------	----	---------	----------------------

فِي الْأَرْضِ وَمَا تُرِيدُ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْمُصْلِحِينَ ﴿١٩﴾ وَجَاءَ

और आया	19	सुधार करने वाले	से	तू हो	कि	और तू नहीं चाहता	सरज़मीन में
--------	----	-----------------	----	-------	----	------------------	-------------

رَجُلٌ مِّنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ يَسْعَىٰ قَالَ يُمُوسَىٰ إِنَّ الْمَلَآءَ

सरदार	बेशक	ऐ मूसा (अ)	उस ने कहा	दौड़ता हुआ	शहर का दूर सिरा	से	एक आदमी
-------	------	------------	-----------	------------	-----------------	----	---------

يَأْتِمُرُونَ بِكَ لِيَقْتُلُوكَ فَاخْرُجْ إِنِّي لَكَ مِنَ النَّاصِحِينَ ﴿٢٠﴾

20	सलाहकार (जमा)	से	तेरे लिए	बेशक मैं	पस तू निकल जा	ताकि कत्ल करडालें तुझे	तेरे बारे में	वह मश्वरा कर रहे हैं
----	---------------	----	----------	----------	---------------	------------------------	---------------	----------------------

فَخَرَجَ مِنْهَا خَائِفًا يَتَرَقَّبُ قَالَ رَبِّ نَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ (۲۱)									
21	ज़ालिमों की क़ौम	से	मुझे बचाले	उस ने कहा (दुआ की) ऐ मेरे परवरदिगार	इन्तिज़ार करते हुए	डरते हुए	वहाँ से	पस वह निकला	
وَلَمَّا تَوَجَّهَ تَلْقَاءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسَى رَبِّي أَنْ يَهْدِيَنِي سَوَاءَ السَّبِيلِ (۲۲)									
	कि मुझे दिखाए	मेरा रब	उम्मीद है	कहा	मदयन	तरफ़	उस ने रख किया	और जब	
النَّاسِ يَسْقُونَهُ وَوَجَدَ مِنْ دُونِهِمْ امْرَأَتَيْنِ تَذُودَانِ (۲۳)									
से - का	एक गिरोह	उस पर	उस ने पाया	मदयन	पानी	वह आया	और जब	22	सीधा रास्ता
قَالَ مَا خَطْبُكُمَا قَالَتَا لَا نَسْقِي حَتَّى يُصَدِرَ الرِّعَاءُ وَأَبُونَا شَيْخٌ كَبِيرٌ (۲۴)									
और हमारे अब्बा	चरवाहे	वापस ले जाएं	जब तक कि	हम पानी नहीं पिलाती	वह दोनों बोली	तुम्हारा क्या हाल है	उस ने कहा		
لَمَّا أَنْزَلَتْ إِلَيْنَا مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ (۲۵)									
वेशक मैं	ऐ मेरे रब	फिर अरज़ किया	साए की तरफ़	फिर वह फिर आया	उन के लिए	तो उस ने पानी पिलाया	23	बहुत बूढ़े	
فَلَمَّا جَاءَهُ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ قَالَ لَا تَخَفْ نَجَوْتُ مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ (۲۶)									
चलती हुई	उन दोनों में से एक	फिर उस के पास आई	24	मोहताज	कोई भलाई (नेमत)	मेरी तरफ़	तू उतारे	उस का जो	
إِحْدَى ابْنَتَيَّ هَاتَيْنِ عَلَيَّ أَنْ تَأْجُرَنِي ثَمَنِي حَبِجٍّ فَإِنْ أَتَمَّمْتُ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ وَمَا أُرِيدُ أَنْ أَمْسُقَ عَلَيْكَ سَتَجِدُنِي إِذَا جِئْتَنِي مِنْ أَدْنَىٰ أَوْ مَكَانٍ غَيْرِ هَذَا مِنْهَا وَلَا أَتُكَلِّمُ الْمُنَافِقِينَ (۲۷)									
हमारे लिए	जो तू ने पानी पिलाया	सिला	ताकि तुझे दें वह	तुझे बुलाते हैं	मेरे वालिद	वेशक वह बोली	शर्म से		
إِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّالِحِينَ (۲۸)									
निकाह करदूँ तुझ से	कि	वेशक मैं चाहता हूँ	(बाप) ने कहा	26	अमानत दार	ताक़तवर	तुम मुलाज़िम रखो	जो - जिसे	
तम पूरे करो	फिर अगर	आठ (8) साल (जमा)	तुम मेरी मुलाज़िमत करो	कि	(इस शर्त) पर	यह दो (2)	अपनी दो बेटियाँ	एक	
فَلَمَّا جَاءَهُ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ قَالَ لَا تَخَفْ نَجَوْتُ مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ (۲۹)									
अनक़रीब तुम पाओगे मुझे	तुम पर	कि मैं मशक़क़त डालूँ	चाहता मैं	और नहीं	तो तुम्हारी तरफ़ से	दस (10)			
मुदत दोनों में	जो	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	यह	उस ने कहा	27	नेक (खुश मामला) लोगों में से	इनशा अल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा)	
فَقَضَيْتُ فَلَآ عُدْوَانَ عَلَيَّ وَاللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكِيلٌ (۳۰)									
28	गवाह	जो हम कह रहे हैं	पर	और अल्लाह	मुझ पर	कोई जब्र (सुतालवा) नहीं	मैं पूरी करूँ		

पस वह निकला वहाँ से डरते हुए और इन्तिज़ार करते हुए (कि देखें क्या होता है), उस ने दुआ की कि ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे ज़ालिमों की क़ौम से बचाले। (21)

और जब उस ने मदयन की तरफ़ रख किया तो कहा उम्मीद है मेरा रब मुझे सीधा रास्ता दिखाएगा। (22)

और जब वह मदयन के पानी (के कुँए) पर आया तो उस ने लोगों के एक गिरोह को पानी पिलाते हुए पाया, और उस ने देखा दो औरतें उन से अ़लाहिदा (अपनी बकरियाँ) रोके हुए (खड़ी) हैं, उस ने कहा तुम्हारा क्या हाल है? वह बोली हम पानी नहीं पिलाती जब तक चरवाहे (अपने जानवरों को पानी पिला कर) वापस न ले जाएं और हमारे अब्बा बूढ़े हैं। (23)

तो उस ने उन की (बकरियों को) पानी पिलाया। फिर साए की तरफ़ फिर आया, फिर अरज़ किया ऐ मेरे परवरदिगार! वेशक जो नेमत तू मेरी तरफ़ उतारे मैं उस का मोहताज हूँ। (24)

फिर उन दोनों में से एक उस के पास आई शर्म से चलती हुई, वह बोली, वेशक मेरे वालिद तुम्हें बुला रहे हैं कि तुम्हें उस का सिला दें जो तू ने हमारे लिए (बकरियों को) पानी पिलाया है, पस जब मूसा (अ) उस (बाप) के पास आया और उस से अहवाल बयान किया तो उस ने कहा डरो नहीं, तुम ज़ालिमों की क़ौम से बच आए हो। (25)

उन में से एक बोली, ऐ मेरे बाप इसे मुलाज़िम रख लें, वेशक वेहतरीन मुलाज़िम जिसे तुम रखो (वही हो सकता है) जो ताक़तवर अमानत दार हो। (26)

(बाप) ने कहा मैं चाहता हूँ कि तुम से अपनी इन दो बेटियों में से एक का निकाह इस शर्त पर कर दूँ कि तुम आठ (8) साल मेरी मुलाज़िमत करो, अगर दस (10) साल पूरे करलो तो (वह) तुम्हारी तरफ़ से (नेकी) हो गी, मैं नहीं चाहता कि मैं तुम पर मशक़क़त डालूँ, अगर अल्लाह ने चाहा तो अनक़रीब तुम मुझे खुश मामला लोगों में से पाओगे। (27)

मूसा (अ) ने कहा यह मेरे दरमियान और तुम्हारे दरमियान (अ़हद) है, मैं दोनों में से जो मुदत पूरी करूँ मुझ पर कोई सुतालवा नहीं, और अल्लाह गवाह है उस पर जो हम कह रहे हैं। (28)

फिर जब मूसा (अ) ने अपनी मुद्दत पूरी कर दी तो अपनी घर वाली (बीबी) को साथ ले कर चला, उस ने देखी कोहे तूर की तरफ से एक आग, उस ने अपने घर वालों से कहा तुम ठहरो, बेशक मैं ने आग देखी है, शायद मैं उस से तुम्हारे लिए (रास्ते की) कोई खबर या आग की चिंगारी लाऊँ ताकि तुम आग तापो। (29)

फिर जब वह उस के पास आया तो निदा (आवाज़) दी गई दाएं मैदान के किनारे से, बरकत वाली जगह में, एक दरख्त (के दरमियान) से, कि ऐ मूसा (अ)! बेशक मैं अल्लाह हूँ, तमाम जहानों का परवरदिगार। (30)

और यह कि तू अपना असा (ज़मीन पर) डाल, फिर जब उस ने उसे देखा लहराते हुए, गोया कि वह सांप है, वह पीठ फेर कर लौटा, और पीछे मुड़ कर भी न देखा, (अल्लाह ने फरमाया) ऐ मूसा (अ)! आगे आ और डर नहीं, बेशक तू अमन पाने वालों में से है। (31)

तू अपना हाथ अपने गरेवान में डाल, वह सफ़ेद रोशन हो कर निकलेगा, किसी ऐव के वग़ैर, फिर अपना बाजू ख़ौफ़ (दूर होने की गरज़) से अपनी तरफ़ मिला लेना (सुकेड़ लेना), पस (असा और यदे वैज़ा) दोनों दलीलें हैं तेरे रब की तरफ़ से फिरज़ीन और उस के सरदारों की तरफ़, बेशक वह एक नाफ़रमान गिरोह है। (32)

उस ने कहा ऐ मेरे रब! बेशक मैं ने उन में से एक शख़्स को मार डाला, सो मैं डरता हूँ कि वह मुझे क़त्ल कर देंगे। (33)

और मेरे भाई हारून (अ) ज़वान (के एतिवार से) मुझ से ज़ियादा फ़सीह है, सो उसे मेरे साथ मददगार (बना कर) भेज दे कि वह मेरी तसदीक़ करे, बेशक मैं डरता हूँ कि वह मुझे झुटलाएंगे। (34)

(अल्लाह ने) फ़रमाया हम अभी तेरे भाई से तेरे बाजू को मज़बूत कर देंगे और तुम दोनों के लिए अता करेंगे ग़ल्वा, पस वह हमारी निशानियों के सबब तुम दानों तक न पहुँच सकेंगे, तुम दोनों और जिस ने तुम्हारी पैरवी की ग़ालिब रहोगे। (35)

فَلَمَّا قَضَىٰ مُوسَىٰ الْأَجَلَ وَسَارَ بِأَهْلِهِ آنَسَ مِنْ جَانِبِ								
तरफ़	से	उस ने देखी	साथ अपने घर वाली	और चला वह	मुद्दत	मूसा (अ)	पूरी कर दी	फिर जब
الطُّورِ نَارًا ۖ قَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّي								
शायद मैं	आग	बेशक मैं ने देखी	तुम ठहरो	अपने घर वालों से	उस ने कहा	एक आग	कोहे तूर	
اتِيكُمْ مِنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ جَذْوَةٍ مِنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ﴿٢٩﴾								
29	आग तापो	ताकि तुम	आग से	या चिंगारी	कोई खबर	उस से	मैं लाऊँ तुम्हारे लिए	
فَلَمَّا آتَاهَا نُودَىٰ مِنْ شَاطِئِ الْأَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ								
जगह में	दायां	मैदान	किनारे से	निदा दी गई	वह आया उस के पास	फिर जब		
الْمُبْرَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ أَنْ يُمُوسَىٰ إِنِّي أَنَا اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٣٠﴾								
30	जहानों का परवरदिगार	अल्लाह	बेशक मैं	ऐ मूसा (अ)	कि	एक दरख्त से	बरकत वाली	
وَأَنْ أَلْقِ عَصَاكَ فَلَمَّا رَآهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَانٌّ وَلَّىٰ								
वह लौटा	सांप	गोया कि वह	लहराते हुए	फिर जब उस ने उसे देखा	अपना असा	डालो	और यह कि	
مُذْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ يُمُوسَىٰ أَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ إِنَّكَ مِنْ								
से	बेशक तू	और डर नहीं	आगे आ	ऐ मूसा (अ)	और पीछे मुड़ कर न देखा	पीठ फेर कर		
الْأَمِينِ ﴿٣١﴾ أَسْلُكَ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجُ بَيْضَاءَ مِنْ								
से-के	रोशन सफ़ेद	वह निकलेगा	अपने गरेवान	अपना हाथ	तू डाल ले	31	अमन पाने वाले	
غَيْرِ سَوَاءٍ وَأَضْمُمُ إِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذَنبَكَ بُرْهَانِنِ								
दो (2) दलीलें	पस यह दोनों	ख़ौफ़ से	अपना बाजू	अपनी तरफ़	और मिला लेना	वग़ैर किसी ऐव		
مِنْ رَبِّكَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَسِقِينَ ﴿٣٢﴾								
32	नाफ़रमान	एक गिरोह	है	बेशक वह	और उसके सरदार (जमा)	फिरज़ीन	तरफ़	तेरे रब (की तरफ़) से
قَالَ رَبِّ إِنِّي قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ﴿٣٣﴾								
33	कि वह मुझे क़त्ल कर देंगे	सो मैं डरता हूँ	एक शख़्स	उन (में) से	बेशक मैं ने मार डाला है	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	
وَأَخِي هَارُونُ هُوَ أَفْصَحُ مِنِّي لِسَانًا فَأَرْسَلْهُ مَعِيَ رِدْءًا								
मेरे साथ मददगार	सो भेजदे उसे	ज़वान	मुझ से	ज़ियादा फ़सीह	वह	हारून (अ)	और मेरा भाई	
يُصَدِّقُنِي ۖ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ﴿٣٤﴾ قَالَ سَنَشُدُّ								
हम अभी मज़बूत कर देंगे	फ़रमाया	34	वह झुटलाएंगे मुझे	कि	बेशक मैं डरता हूँ	वह तसदीक़ करे मेरी		
عَضُدَكَ بِأَخِيكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا يَصِلُونَ								
पस वह न पहुँचेंगे	ग़ल्वा	तुम्हारे लिए	और हम अता करेंगे	तेरे भाई से	तेरा बाजू			
إِلَيْكُمَا ۖ بِآيٰتِنَا ۖ أَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعُكُمَا الْغٰلِبُونَ ﴿٣٥﴾								
35	ग़ालिब रहोगे	पैरवी करे तुम्हारी	और जो	तुम दोनों	हमारी निशानियों के सबब	तुम तक		



فَلَمَّا جَاءَهُمْ مُوسَى بِآيَاتِنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَذَا إِلَّا سِحْرٌ							
एक जादू	मगर	नहीं है यह	वह बोले	खुली - वाज़ेह	हमारी निशानियों के साथ	मूसा (अ)	आया उन के पास फिर जब
مُفْتَرَىٰ وَمَا سَمِعْنَا بِهَذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ﴿٣٦﴾ وَقَالَ							
और कहा	36	अपने अगले बाप दादा	में	यह - ऐसी बात	और नहीं सुनी है हम ने	इफ़्तिरा किया हुआ	
مُوسَى رَبِّي أَعْلَمُ بِمَنْ جَاءَ بِالْهُدَىٰ مِنْ عِنْدِهِ وَمَنْ تَكُونُ							
होगा - है	और जिस	उस के पास से	हिदायत	लाया	उस को जो	खूब जानता है	मेरा रब मूसा (अ)
لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظُّلْمُونَ ﴿٣٧﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ							
फिरऔन	और कहा	37	ज़ालिम (जमा)	नहीं फ़लाह पाएंगे	वेशक वह	आख़िरत का अच्छा घर	उस के लिए
يَأَيُّهَا الْمَلَأُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرِي فَأَوْقِدْ لِي							
पस आग जला मेरे लिए	अपने सिवा	माबूद	कोई	तुम्हारे लिए	नहीं जानता मैं	ऐ सरदारो	
يَهَامُنُ عَلَى الطِّينِ فَاجْعَلْ لِي صَرْحًا لَعَلِّي أَطَّلِعُ إِلَى							
तरफ़	मैं झाँकूँ	ताकि मैं	एक बुलन्द महल	फिर मेरे लिए बना (तैयार कर)	मिट्टी पर	ऐ हामान	
إِلَهٍ مُوسَىٰ وَإِنِّي لَأَظُنُّهُ مِنَ الْكٰذِبِينَ ﴿٣٨﴾ وَاسْتَكْبَرَ							
और मगरूर हो गया	38	झूटे	से	अलबत्ता समझता हूँ उसे	और वेशक मैं	मूसा (अ)	माबूद
هُوَ وَجُنُودُهُ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوا أَنَّهُم إِلَىٰ							
हमारी तरफ़	कि वह	और वह समझ बैठे	नाहक	ज़मीन (दुनिया) में	और उस का लशकर	वह	
لَا يُرْجَعُونَ ﴿٣٩﴾ فَأَخَذْنَاهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ							
दर्या में	फिर हम ने फेंक दिया उन्हें	और उस का लशकर	तो हम ने पकड़ा उसे	39	नहीं लौटाए जाएंगे		
فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِينَ ﴿٤٠﴾ وَجَعَلْنَاهُمْ آيَةً							
सरदार	और हम ने बनाया उन्हें	40	ज़ालिम (जमा)	अन्जाम	हुआ	कैसा	सो देखो
يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنصَرُونَ ﴿٤١﴾							
41	वह मदद न दिए जाएंगे	और रोज़े कियामत	जहन्नम की तरफ़	वह बुलाते हैं			
وَاتَّبَعْنَاهُمْ فِي هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ هُمْ							
वह	और रोज़े कियामत	लानत	इस दुनिया	में	और हम ने लगादी उन के पीछे		
مِّنَ الْمُقْبُوحِينَ ﴿٤٢﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتٰبَ							
किताब (तौरत)	मूसा (अ)	और तहकीक हम ने अ़ता की	42	बदहाल लोग (जमा)	से		
مِّنْ بَعْدِ مَا أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ الْأُولَىٰ بَصَائِرَ							
(जमा) बसीरत	पहली	उम्मते	कि हलाक की हम ने	उस के बाद			
لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٤٣﴾							
43	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	और रहमत	और हिदायत	लोगों के लिए		

फिर जब मूसा (अ) हमारी वाज़ेह निशानियों के साथ उन के पास आया तो वह बोले यह कुछ भी नहीं मगर एक इफ़्तिरा किया हुआ (घड़ा हुआ) जादू है, और हम ने ऐसी बात अपने अगले बाप दादा से नहीं सुनी है। (36)

और मूसा (अ) ने कहा मेरा रब उस को खूब जानता है जो उस के पास से हिदायत लाया है, और जिस के लिए आख़िरत का अच्छा घर (जन्नत) है, वेशक ज़ालिम (कभी) फ़लाह (कामयाबी) नहीं पाएंगे। (37)

और फिरऔन ने कहा, ऐ सरदारो, मैं नहीं जानता तुम्हारे लिए अपने सिवा कोई माबूद, पस ऐ हामान! मेरे लिए मिट्टी (की ईंटों) पर आग जला, फिर (उन पुख़्ता ईंटों से) मेरे लिए तैयार कर एक बुलन्द महल, ताकि मैं (वहां से) मूसा (अ) के माबूद को झाँकूँ, और मैं तो उसे झूटों में से समझता हूँ। (38)

और वह और उस का लशकर दुनिया में नाहक मगरूर हो गए और वह समझ बैठे कि वह हमारी तरफ़ नहीं लौटाए जाएंगे। (39)

तो हम ने उसे और उस के लशकर को पकड़ा और उन्हें दर्या में फेंक दिया, सो देखो कैसा ज़ालिमों का अन्जाम हुआ? (40)

और हम ने उन्हें सरदार बनाया जो जहन्नम की तरफ़ बुलाते रहे, और रोज़े कियामत वह न मदद दिए जाएंगे (उन की मदद न होगी)। (41)

और हम ने इस दुनिया में उन के पीछे लानत लगा दी और रोज़े कियामत वह बदहाल लोगों में से होंगे। (42)

और तहकीक हम ने मूसा (अ) को तौरत अ़ता की उस के बाद कि हम ने पहली उम्मते हलाक की, लोगों के लिए बसीरत (आँखें खोलने वाली) और हिदायत ओ रहमत, ताकि वह नसीहत पकड़ें। (43)

और आप (स) (कोहे तूर के) मग़रिबी जानिव न थे जब हम ने मूसा (अ) की तरफ़ वहि भेजी और आप (स) (उस वाके के) देखने वालों में से न थे। (44)

और लेकिन हम ने बहुत सी उम्मत्तें पैदा कीं, फिर तबील हो गई उन की मुदत, और आप (स) अहले मद्यन में रहने वाले न थे कि उन पर हमारे अहकाम पढ़ते (उन्हें हमारे अहकाम सुनाते) लेकिन हम थे रसूल बनाकर भेजने वाले। (45)

और आप (स) तूर के किनारे न थे जब हम ने पुकारा, और लेकिन रहमत आप (स) के रब से (कि नुबुव्वत अता हुई) ताकि आप (स) इस क़ौम को डर सुनाएं जिस के पास आप (स) से पहले कोई डराने वाला नहीं आया, ताकि वह नसीहत पकड़ें। (46)

और एसा न हो कि उन्हें उन के आमाल के सबव कोई मुसीबत पहुँचे तो वह कहते: ऐ हमारे रब! तू ने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यों न भेजा! पस हम तेरे अहकाम की पैरवी करते और हम होते ईमान लाने वालों में से। (47)

फिर जब उन के पास हमारी तरफ़ से हक़ आगया, कहने लगे कि क्यों न (सुहम्मद (स) को) दिया गया जैसा मूसा (अ) को दिया गया था, क्या उन्होंने ने उस का इन्कार नहीं किया? जो उस से क़ब्ल मूसा (अ) को दिया गया, उन्होंने ने कहा वह दोनों जादू है, वह दोनों एक दूसरे के पुशत पनाह है, और उन्होंने ने कहा बेशक हम हर एक का इन्कार करने वाले हैं। (48)

आप (स) फ़रमा दें तुम अल्लाह के पास से कोई किताब लाओ जो इन दोनों (कुरआन और तौरत) से ज़ियादा हिदायत बख़्शने वाली हो कि मैं उस की पैरवी करूँ, अगर तुम सच्चे हो। (49)

फिर अगर वह आप (स) की बात कुबूल न करें तो जान लें कि वह सिर्फ़ अपनी खाहिशात की पैरवी करते हैं, और उस से ज़ियादा कौन गुमराह है जिस ने अपनी खाहिश की पैरवी की, अल्लाह की हिदायत के बग़ैर, बेशक अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (50)

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْعَرَبِيِّ إِذْ قَضَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ الْأَمْرَ							
हुक़म (वहि)	मूसा (अ) की तरफ़	हम ने भेजा	जब	मग़रिबी जानिव	और आप (स) न थे		
وَمَا كُنْتَ مِنَ الشَّاهِدِينَ ﴿٤٤﴾ وَلَكِنَّا أَنْشَأْنَا قُرُونًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ							
उनकी, उन पर	तबील हो गई	बहुत सी उम्मत्तें	हम ने पैदा की	और लेकिन हम ने	44	देखने वाले	से और आप (स) न थे
الْعُمُرُ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًّا فِي أَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوا عَلَيْهِمُ آيَاتِنَا							
हमारी आयात	उन पर	तुम पढ़ते	अहले मद्यन	में	रहने वाले	और आप (स) न थे	मुदत
وَلَكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ﴿٤٥﴾ وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّورِ إِذْ نَادَيْنَا							
जब हम ने पुकारा	तूर	किनारा	और आप (स) न थे	45	रसूल बनाकर भेजने वाले	हम थे	और लेकिन हम
وَلَكِن رَّحْمَةً مِّن رَّبِّكَ لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أَتَهُم مِّن نَّذِيرٍ							
डराने वाला	कोई	नहीं आया उन के पास	वह क़ौम	ताकि डर सुनाओ	अपने रब से	रहमत	और लेकिन
مِّن قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٤٦﴾ وَلَوْ لَا أَن تُصِيبَهُم							
कि पहुँचे उन्हें	और एसा न हो	46	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	आप (स) से पहले		
مُصِيبَةً بِمَا قَدَّمْتَ أَيْدِيَهُمْ فَيَقُولُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ							
भेजा तू ने	क्यों न	ऐ हमारे रब	तो वह कहते	उन के हाथ (उन के आमाल)	उस के सबव जो भेजा	कोई मुसीबत	
إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ آيَاتِكَ وَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾ فَلَمَّا							
फिर जब	47	ईमान लाने वाले	से	और हम होते	तेरे अहकाम	पस पैरवी करते हम	कोई रसूल हमारी तरफ़
جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا لَوْلَا أُوتِيَ مِثْلَ							
जैसा	क्यों न दिया गया	कहने लगे	हमारी तरफ़ से	हक़	आया उन के पास		
مَا أُوتِيَ مُوسَىٰ ۖ أَوْلَم يَكْفُرُوا بِمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ مِنْ قَبْلُ ۗ							
इस से क़ब्ल	मूसा (अ)	उस का जो दिया गया	इन्कार किया उन्होंने ने	क्या नहीं	मूसा (अ)	जो दिया गया	
قَالُوا سِحْرِن تَظَاهَرًا ۗ وَقَالُوا إِنَّا بِكُلِّ كَفْرٍ لَّوْنٌ ﴿٤٨﴾							
48	इन्कार करने वाले	हर एक का	हम बेशक	और उन्होंने ने कहा	एक दूसरे के पुशत पनाह	वह दोनों जादू	उन्होंने ने कहा
قُلْ فَاتُوا بِكِتَابٍ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ هُوَ أَهْدَىٰ مِنْهُمَا أَتَّبِعُهُ							
मैं पैरवी करूँ उस की	इन दोनो से	ज़ियादा हिदायत	वह	अल्लाह के पास	से	कोई किताब लाओ	पस फ़रमा दें
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٩﴾ فَإِنْ لَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكَ فَاعْلَمْ أَنَّمَا							
कि सिर्फ़	तो जान लो	तुम्हारे लिए (तुम्हारी बात)	वह कुबूल न करें	फिर अगर	49	सच्चे (जमा)	अगर तुम हो
يَتَّبِعُونَ أَهْوَاءَهُمْ ۗ وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوَاهُ بِغَيْرِ هُدًى							
हिदायत के बग़ैर	अपनी खाहिश	उस से जिस ने पैरवी की	ज़ियादा गुमराह	और कौन	अपनी खाहिशात	वह पैरवी करते हैं	
مِّنَ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٥٠﴾							
50	ज़ालिम लोग (जमा)	हिदायत नहीं देता	बेशक अल्लाह	अल्लाह से (मिन जानिव अल्लाह)			

وَالَّذِينَ

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥١﴾ الَّذِينَ							
वह लोग जो	51	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	(अपना) कलाम	उन के लिए	और अलबत्ता हम ने	मुसलसल भेजा
اتَيْنَهُمُ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِهِ هُمْ بِهِ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾ وَإِذَا يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ							
पढ़ा जाता है उन पर (सामने)	और जब	52	ईमान लाते हैं	वह इस (कुरआन) पर	इस से कब्ल	जिन्हें हम ने किताब दी	
قَالُوا آمَنَّا بِهِ إِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهِ مُسْلِمِينَ ﴿٥٣﴾							
53	फरमांबरदार	इस के पहले ही	वेशक हम थे	हमारे रब (की तरफ) से	हक	वेशक यह	हम ईमान लाए इस पर कहते हैं
أُولَٰئِكَ يُؤْتَوْنَ أَجْرَهُمْ مَرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوا وَيَدْرَءُونَ							
और वह दूर करते हैं	इस लिए कि उन्हीं ने सब्र किया	दोहरा	उन का अजर	दिया जाएगा उन्हीं	यही लोग		
بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةِ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٥٤﴾ وَإِذَا سَمِعُوا							
वह सुनते हैं	और जब	54	वह खर्च करते हैं	हम ने दिया उन्हीं	और उस से जो	बुराई को	भलाई से
اللَّغْوِ أَعْرَضُوا عَنْهُ وَقَالُوا لَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ							
तुम्हारे अमल (जमा)	और तुम्हारे लिए	हमारे लिए हमारे अमल	और कहते हैं	उस से	वह किनारा करते हैं	बेहूदा बात	
سَلَامٌ عَلَيْكُمْ لَا نَبَغِي الْجَاهِلِينَ ﴿٥٥﴾ إِنَّكَ لَا تَهْدِي							
हिदायत नहीं दे सकते	वेशक तुम	55	जाहिल (जमा)	हम नहीं चाहते	तुम पर	सलाम	
مَنْ أَحَبَّتْ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۗ وَهُوَ أَعْلَمُ							
खूब जानता है	और वह	जिस को वह चाहता है	हिदायत देता है	और लेकिन (बल्कि) अल्लाह	जिस को चाहो		
بِالْمُهْتَدِينَ ﴿٥٦﴾ وَقَالُوا إِن تَتَّبِعِ الْهُدَىٰ مَعَكَ نُتَخَطَّفُ							
हम उचक लिए जाएंगे	तुम्हारे साथ	हिदायत	अगर हम पैरवी करें	और वह कहते हैं	56	हिदायत पाने वालों को	
مِنْ أَرْضِنَا ۖ أَوْلَمْ نَمَكِّنْ لَهُمْ حَرَمًا آمِنًا يُجَبَىٰ إِلَيْهِ تَمَرْتُ							
फल	उस की तरफ	खिंचे चले आते हैं	हुर्मत वाला मुकामे अमन	उन्हीं	दिया ठिकाना हम ने	क्या नहीं	अपनी सरजमीन से
كُلِّ شَيْءٍ رَّزَقًا مِّن لَّدُنَّا وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٧﴾							
57	नहीं जानते	उन में अक्सर	और लेकिन	हमारी तरफ से	बतौर रिज्क	हर शै (किस्म)	
وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ بَطَرَتْ مَعِيشَتَهَا فَتِلْكَ مَسْكِنُهُمْ							
उन के मस्कन	सो, यह	अपनी मईशत	इतराती	बस्तियां	हलाक कर दी हम ने	और कितनी	
لَمْ تُسْكَنْ مِّنْ بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيلًا ۚ وَكُنَّا نَحْنُ الْوَارِثِينَ ﴿٥٨﴾							
58	वारिस (जमा)	हम	और हुए हम	कलील मगर	उन के बाद	न आबाद हुए	
وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ حَتَّىٰ يَبْعَثَ فِي أُمِّهَا رَسُولًا يَتْلُوا							
वह पढ़े	कोई रसूल	उस की बड़ी बस्ती में	भेज दे	जब तक	बस्तियां	हलाक करने वाला	तुम्हारा रब
عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرَىٰ إِلَّا وَأَهْلُهَا ظَلِمُونَ ﴿٥٩﴾							
59	ज़ालिम (जमा)	उन के रहने वाले	मगर (जब तक)	बस्तियां	हलाक करने वाले	और हम नहीं	हमारी आयात उन पर

और अलबत्ता हम ने मुसलसल भेजा उन के लिए अपना कलाम, ताकि वह नसीहत पकड़ें। (51) जिन लोगों को हम ने उस से कब्ल किताब दी वह इस कुरआन पर ईमान लाते हैं। (52) और जब उन के सामने (कुरआन) पढ़ा जाता है तो वह कहते हैं हम इस पर ईमान लाए, वेशक यह हक है हमारे रब की तरफ से, वेशक हम थे पहले से फरमांबरदार। (53) यही लोग हैं जिन्हें उन का अजर दोहरा दिया जाएगा इस लिए कि उन्हीं ने सब्र किया और वह भलाई से बुराई को दूर करते हैं और जो हम ने उन्हीं दिया वह उस में से खर्च करते हैं। (54) और जब वह बेहूदा बात सुनते हैं तो उस से किनारा करते हैं, और कहते हैं कि हमारे लिए हमारे अमल तुम्हारे लिए तुम्हारे अमल, तुम पर सलाम हो, हम जाहिलों से (उलझना) नहीं चाहते। (55) वेशक तुम जिस को चाहो हिदायत नहीं दे सकते, बल्कि अल्लाह जिस को चाहता है हिदायत देता है, और हिदायत पाने वालों को वह खूब जानता है। (56) और वह कहते हैं अगर हम तुम्हारे साथ हिदायत की पैरवी करें तो हम अपनी सरजमीन से उचक लिए जाएंगे। क्या हम ने उन्हीं हुर्मत वाले मुकामे अमन में ठिकाना नहीं दिया, उस की तरफ खिंचे चले आते हैं फल हर किस्म के, हमारी तरफ से बतौर रिज्क, लेकिन उन में अक्सर नहीं जानते। (57) और कितनी (ही) बस्तियां हम ने हलाक कर दी जो अपनी आमदनी और गुज़र बसर पर इतराती थीं, सो यह हैं उन के मस्कन, न आबाद हुए उन के बाद मगर कम, और हम ही हुए वारिस। (58) और तुम्हारा रब नहीं है बस्तियों को हलाक करने वाला, जब तक उस की बड़ी बस्ती में कोई रसूल न भेज दे, वह उन पर हमारी आयात पढ़े, और हम बस्तियों को हलाक करने वाले नहीं जब तक उन के रहने वाले ज़ालिम (न) हों। (59)

और तुम्हें जो कोई चीज़ दी गई है सो वह (सिर्फ) दुनिया की ज़िन्दगी का सामान और उस की ज़ीनत है, और जो अल्लाह के पास है वह बेहतर है और तादेर बाकी रहने वाला है, सो क्या तुम समझते नहीं? (60)

सो जिस से हम ने अच्छा वादा किया फिर वह उस को पाने वाला है, क्या वह उस शख्स की तरह है जिसे हम ने दुनिया की ज़िन्दगी के सामान दिया, फिर वह रोज़े

क़ियामत (गिरफ़तार हो कर) हाज़िर किए जाने वालों में से हुआ। (61)

और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा, कहेगा कहां है? मेरे शरीक जिन्हें तुम (मेरा शरीक) गुमान करते थे। (62)

(फिर) कहेंगे वह जिन पर हुक्मे अज़ाब साबित हो गया कि ऐ

हमारे रब! यह है वह जिन्हें हम ने वहकाया, हम ने उन्हें (वैसे ही) वहकाया जैसे हम (खुद) वहके थे। हम तेरी तरफ़ (तेरे हुज़ूर सब से) बेज़ारी करते हैं, वह हमारी बन्दगी न करते थे। (63)

और कहा जाएगा तुम अपने शरीकों को पुकारो, सो वह उन्हें पुकारेंगे, तो वह उन्हें जवाब न देंगे, और वह अज़ाब देखेंगे, काश वह हिदायत याफ़ता होते। (64)

और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा तो फ़रमाएगा तुम ने पैग़म्बरों को क्या जवाब दिया था? (65)

पस उन को कोई बात न सूझेगी उस दिन, पस वह आपस में (भी) सवाल न कर सकेंगे। (66)

सो जिस ने तौबा की और वह ईमान लाया और उस ने अच्छे अमल किए, तो उम्मीद है कि वह कामयाबी पाने वालों में से हो। (67)

और तुम्हारा रब पैदा करता है जो वह चाहता है और (जो) वह पसंद करता है, नहीं है उन के लिए (उन का कोई) इख़्तियार, अल्लाह उस से पाक है और बरतर है उस से जो वह शरीक करते हैं। (68)

और तुम्हारा रब जानता है जो उन के सीनों में छुपा है, और जो ज़ाहिर करते हैं। (69)

और वही है अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उसी के लिए हैं तमाम तारीफ़ें दुनिया में और आख़िरत में, और उसी के लिए है फ़रमांरवाई, और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (70)

وَمَا أُوتِيتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَزِينَتُهَا وَمَا

और जो	और उस की ज़ीनत	दुनियां	ज़िन्दगी	सो सामान	कोई चीज़	और जो दी गई तुम्हें
-------	----------------	---------	----------	----------	----------	---------------------

عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٦٠﴾ أَفَمَنْ وَعَدْنَاهُ

हम ने वादा किया उस से	सो क्या जो	60	सो क्या तुम समझते नहीं?	बाकी रहने वाला - तादेर	बेहतर	अल्लाह के पास
-----------------------	------------	----	-------------------------	------------------------	-------	---------------

وَعَدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيهِ كَمَنْ مَتَّعْنَاهُ مَتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ

वह	फिर	दुनिया की ज़िन्दगी	सामान	हम ने दिया उसे	उस की तरह जिसे	पाने वाला उस को	फिर वह	वादा अच्छा
----	-----	--------------------	-------	----------------	----------------	-----------------	--------	------------

يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنَ الْمُحْضَرِينَ ﴿٦١﴾ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ

कहां	पस कहेगा वह	वह पुकारेगा उन्हें	और जिस दिन	61	हाज़िर किए जाने वाले	से	रोज़े क़ियामत
------	-------------	--------------------	------------	----	----------------------	----	---------------

شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٦٢﴾ قَالَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ

उन पर	साबित हो गया	वह जो	कहेंगे	62	तुम गुमान करते थे	वह जिन्हें	मेरे शरीक
-------	--------------	-------	--------	----	-------------------	------------	-----------

الْقَوْلِ رَبَّنَا هَؤُلَاءِ الَّذِينَ أَغْوَيْنَا كَمَا غَوَيْنَا تَبَرَّأْنَا

हम बेज़ारी करते हैं	हम वहके	जैसे	हम ने वहकाया उन्हें	हम ने वहकाया	वह जिन्हें	यह है	ऐ हमारे रब	हुक्मे (अज़ाब)
---------------------	---------	------	---------------------	--------------	------------	-------	------------	----------------

إِلَيْكَ مَا كَانُوا إِيَّانَا يَعْبُدُونَ ﴿٦٣﴾ وَقِيلَ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ

अपने शरीकों को	तुम पुकारो	और कहा जाएगा	63	बन्दगी करते	सिर्फ़ हमारी	वह न थे	तेरी तरफ़ (सामने)
----------------	------------	--------------	----	-------------	--------------	---------	-------------------

فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَرَأُوا الْعَذَابَ لَوْ أَنََّّهُمْ

काश वह	अज़ाब	और वह देखेंगे	उन्हें	तो वह जवाब न देंगे	सो वह उन्हें पुकारेंगे
--------	-------	---------------	--------	--------------------	------------------------

كَانُوا يَهْتَدُونَ ﴿٦٤﴾ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ

तुम ने जवाब दिया	क्या	तो फ़रमाएगा	वह पुकारेगा उन्हें	और जिस दिन	64	वह हिदायत याफ़ता होते
------------------	------	-------------	--------------------	------------	----	-----------------------

الْمُرْسَلِينَ ﴿٦٥﴾ فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْأَنْبَاءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ

पस वह	उस दिन	खबरें (वातें)	उन को	पस न सूझेगी	65	पैग़म्बर (जमा)
-------	--------	---------------	-------	-------------	----	----------------

لَا يَتَسَاءَلُونَ ﴿٦٦﴾ فَأَمَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسَىٰ

तो उम्मीद है	और उस ने अमल किए अच्छे	और वह ईमान लाया	जिस ने तौबा की	सो - लेकिन	66	आपस में सवाल न करेंगे
--------------	------------------------	-----------------	----------------	------------	----	-----------------------

أَنْ يَكُونَ مِنَ الْمُفْلِحِينَ ﴿٦٧﴾ وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ

और वह पसंद करता है	जो वह चाहता है	पैदा करता है	और तुम्हारा रब	67	कामयाबी पाने वाले	से	कि वह हो
--------------------	----------------	--------------	----------------	----	-------------------	----	----------

مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ سُبْحَانَ اللَّهِ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٨﴾ وَرَبُّكَ يَعْلَمُ

जानता है	और तुम्हारा रब	68	उस से जो वह शरीक करते हैं	और बरतर	अल्लाह पाक है	इख़्तियार	उन के लिए	नहीं है
----------	----------------	----	---------------------------	---------	---------------	-----------	-----------	---------

مَا تَكُنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٦٩﴾ وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ

उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	और वही अल्लाह	69	वह ज़ाहिर करते हैं	और जो	उन के सीने	छुपा है	जो
------------	----------------	---------------	----	--------------------	-------	------------	---------	----

لَهُ الْحَمْدُ فِي الْأُولَىٰ وَالْآخِرَةِ وَلَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٧٠﴾

70	तुम लौट कर जाओगे	और उसी की तरफ़	और उसी के लिए फ़रमां रवाई	और आख़िरत	दुनिया में	उसी के लिए तमाम तारीफ़ें
----	------------------	----------------	---------------------------	-----------	------------	--------------------------

ع. 9

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّيْلَ سَرْمَدًا إِلَى							
तक	हमेशा	रात	तुम पर	कर दे (रखे) अल्लाह	अगर	भला तुम देखो तो	फरमा दे
يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِضِيَاءٍ أَمْ لَا تَسْمَعُونَ (71)							
71	तो क्या तुम सुनते नहीं?	रोशनी	ले आए तुम्हारे पास	अल्लाह के सिवा	माबूद	कौन	रोज़े क़ियामत
قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَى							
तक	हमेशा	दिन	तुम पर	बनाए (रखे) अल्लाह	अगर	भला तुम देखो तो	फरमा दे
يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُونَ فِيهِ							
उस में	तुम आराम करो	रात	ले आए तुम्हारे लिए	अल्लाह के सिवा	माबूद	कौन	रोज़े क़ियामत
أَمْ لَا تُبْصِرُونَ (72) وَمِنْ رَحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا							
ताकि तुम आराम करो	और दिन	रात	उस ने तुम्हारे लिए बनाया	और अपनी रहमत से	72	तो क्या तुम्हें सूझता नहीं?	
فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ (73) وَيَوْمَ							
और जिस दिन	73	तुम शुक्र करो	और ताकि तुम	उस का फ़ल (रोज़ी)	और ताकि तुम तलाश करो	उस में	
يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَآئِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ (74)							
74	तुम गुमान करते थे	वह जो	मेरे शरीक	कहाँ?	तो वह कहेगा	वह पुकारेगा उन्हें	
وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا فَقُلْنَا هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ							
अपनी दलील	तुम लाओ (पेश करो)	फिर हम कहेंगे	एक गवाह	हर उम्मत	से	और हम निकाल कर लाएंगे	
فَعَلِمُوا أَنَّ الْحَقَّ لِلَّهِ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ (75)							
75	जो वह घड़ते थे	उन से	और गुम हो जाएंगी	सच्ची बात अल्लाह की	कि	सो वह जान लेंगे	
إِنَّ قَارُونَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوسَى فَبَغَى عَلَيْهِمْ وَآتَيْنَاهُ							
और हम ने दिए थे उस को	उन पर	सो उस ने ज़ियादती की	मूसा (अ) की कौम	से	था	कारून	वेशक
مِنَ الْكُنُوزِ مَا إِنَّ مَفَاتِحَهُ لَتَنُوءَ بِالْعُصْبَةِ أُولَى الْقُوَّةِ							
ज़ोर आवर	एक जमाअत पर	भारी होती	उस की कुन्जियां	इतने कि	खज़ानों से		
إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ (76)							
76	खुश होने (इतराने) वाले	पसंद नहीं करता	वेशक अल्लाह	न खुश हो (न इतरा)	उस की कौम	उस को	जब कहा
وَابْتَغِ فِيمَا آتَاكَ اللَّهُ الدَّارَ الْآخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيبَكَ							
अपना हिस्सा	और न भूल तू	आखिरत का घर	तुझे दिया अल्लाह ने	उस से जो	और तलब कर		
مِنَ الدُّنْيَا وَأَحْسِنْ كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ							
और न चाह	तेरी तरफ़ (साथ)	अल्लाह ने एहसान किया	जैसे	और नेकी कर	दुनिया	से	
الْفُسَادَ فِي الْأَرْضِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ (77)							
77	फ़साद करने वाले	पसंद नहीं करता	वेशक अल्लाह	ज़मीन में	फ़साद		

आप (स) फ़रमा दें भला देखो तो अगर अल्लाह रोज़े क़ियामत तक के लिए तुम पर हमेशा रात रखे तो अल्लाह के सिवा और कौन माबूद है? जो तुम्हारे लिए (दिन की) रोशनी ले आए, तो क्या तुम सुनते नहीं? (71)

आप (स) फ़रमा दें भला तुम देखो तो अगर अल्लाह तुम पर रखे रोज़े क़ियामत तक के लिए हमेशा दिन तो अल्लाह के सिवा और कौन माबूद है जो तुम्हारे लिए रात ले आए? कि तुम उस में आराम करो, तो क्या तुम्हें सूझता नहीं? (72) और उस ने अपनी रहमत से तुम्हारे लिए रात और दिन को बनाया ताकि उस (रात) में आराम करो और (दिन में) रोज़ी तलाश करो, और ताकि तुम (अल्लाह का) शुक्र करो। (73)

और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा तो वह कहेगा कहाँ है वह? जिन को तुम मेरा शरीक गुमान करते थे। (74)

और हम हर उम्मत में से एक गवाह निकाल कर लाएंगे, फिर हम कहेंगे अपनी दलील पेश करो, सो वह जान लेंगे कि सच्ची बात अल्लाह की है, और गुम हो जाएंगी (वह सब बातें) जो वह घड़ते थे। (75)

वेशक कारून था मूसा (अ) की कौम से, सो उस ने उन पर ज़ियादती की, और हम ने उस को इतने खज़ाने दिए थे कि उस की कुन्जियां एक ज़ोर आवर जमाअत पर (भी) भारी होती थीं, जब उस को उस की कौम ने कहा, इतरा नहीं वेशक अल्लाह पसंद नहीं करता इतराने वालों को। (76) और जो तुझे अल्लाह ने दिया है उस से आखिरत का घर तलब कर (आखिरत की फ़िक्र कर) और अपना हिस्सा न भूल दुनिया से, और नेकी कर जैसे तेरे साथ अल्लाह ने नेकी की है, और तू फ़साद न चाह ज़मीन में, वेशक अल्लाह फ़साद करने वालों को पसंद नहीं करता। (77)

कहने लगा यह तो एक इल्म की वजह से मुझे दिया गया है जो मेरे पास है, क्या वह नहीं जानता? कि उस से कब्ल अल्लाह ने कितनी जमाअतों को हलाक कर दिया है, जो उस से ज़ियादा सख्त थीं कुव्वत में, और ज़ियादा थीं जमियत में, उन के गुनाहों की वाबत सवाल न किया जाएगा मुजरिमों से। (78) फिर वह (कारून) अपनी कौम के सामने ज़ेव ओ ज़ीनत के साथ निकला तो उन लोगों ने कहा जो तालिब थे दुनिया की ज़िन्दगी के, जो कारून को दिया गया है, ऐ काश ऐसा हमारे पास (भी) होता, बेशक वह बड़ा नसीब वाला है। (79) और जिन लोगों को इल्म दिया गया था उन्होंने ने कहा अफ़सोस है तुम पर! अल्लाह का सवाव (अजर) बेहतर है उस के लिए जो ईमान लाया और उस ने अच्छा अमल किया और वह सब् करन वालों के सिवा (किसी को) नसीब नहीं होता। (80) फिर हम ने उस को और उस के घर को ज़मीन में धंसा दिया, सो उस के लिए कोई जमाअत न हुई जो अल्लाह के सिवा (अल्लाह से बचाने में) उस की मदद करती और न वह (खुद) हुआ बदला लेने वालों में से। (81) और कल तक जो लोग उस के मुक़ाम की तमन्ना करते थे, सुबह के वक़्त कहने लगे हाए शामत! अपने बन्दो में से अल्लाह जिस के लिए चाहे रिज़्क फ़राख़ कर देता है और (जिस के लिए चाहे) तंग कर देता है, अगर अल्लाह हम पर एहसान न करता तो अलबत्ता हमें (भी) धंसा देता, हाए शामत! काफ़िर फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) नहीं पाते। (82) यह आख़िरत का घर है, हम उन लोगों के लिए तैयार करते हैं जो नहीं चाहते ज़मीन (मुल्क) में बड़ाई और न फ़साद, और नेक अन्जाम परहेज़गारों के लिए है। (83) जो नेकी के साथ आया उस के लिए उस से बेहतर (सिला) है और जो बुराई के साथ आया, तो उन लोगों को जिन्होंने ने बुरे अमल किए उस के सिवा बदला न मिलेगा जो वह करते थे। (84)

قَالَ إِنَّمَا أُوتِيْتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ عِنْدِي ۗ أَوَلَمْ يَعْلَم أَنَّ اللَّهَ							
कहने लगा	यह तो	मुझे दिया गया है	एक इल्म की वजह से	मेरे पास	क्या नहीं	वह जानता	कि अल्लाह
قَدْ أَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُونِ مَنْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَآكْثَرُ							
हलाक कर दिया है	विला शुवाह	उस से कब्ल	से (कितनी)	जमाअतें	जो	वह ज़ियादा सख्त	उस से कुव्वत में
جَمْعًا ۗ وَلَا يُسْأَلُ عَنْ ذُنُوبِهِمُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٧٨﴾ فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ							
जमियत	और न सवाल किया जाएगा	से (बाबत)	उन के गुनाह	मुजरिम (जमा)	78	फिर वह निकला	पर (सामने) अपनी कौम
فِي زِينَتِهِ ۗ قَالَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا يَا لَيْتَ لَنَا مِثْلَ							
में (साथ)	अपनी ज़ेव ओ ज़ीनत	कहा	वह लोग जो	चाहते थे (तालिब थे)	दुनिया की ज़िन्दगी	ऐ काश	हमारे पास होता ऐसा
مَا أُوتِيَ قَارُونُ ۗ إِنَّهُ لَذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ﴿٧٩﴾ وَقَالَ الَّذِينَ							
जो दिया गया	कारून	बेशक वह	नसीब वाला	बड़ा	79	और कहा	वह लोग जिन्हें
أُوتُوا الْعِلْمَ وَيَلَكُمْ ثَوَابُ اللَّهِ خَيْرٌ لِّمَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا							
दिया गया था इल्म	अफ़सोस तुम पर	अल्लाह का सवाव	बेहतर	उस के लिए जो	ईमान लाया	और उस ने अमल किया	अच्छा
وَلَا يُلْقِيهَا إِلَّا الصَّابِرُونَ ﴿٨٠﴾ فَخَسَفْنَا بِهِ وَبِدَارِهِ الْأَرْضَ							
और वह नसीब नहीं होता	सिवाए	सब्र करने वाले	80	फिर हम ने धंसा दिया	उस को	और उस के घर को	ज़मीन
فَمَا كَانَ لَهُ مِنْ فِئَةٍ يَنْصُرُونَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۗ وَمَا كَانَ مِنْ							
सो न हुई	उस के लिए	कोई जमाअत	मदद करती उस की	अल्लाह के सिवा	और न हुआ वह	से	से
الْمُنْتَصِرِينَ ﴿٨١﴾ وَأَصْبَحَ الَّذِينَ تَمَّتْ مِنْهُمُ الْمَكَانَةُ بِالْأَمْسِ يَقُولُونَ							
बदला लेने वाले	81	और सुबह के वक़्त	जो लोग	तमन्ना करते थे	उस का मुक़ाम	कल	कहने लगे
وَيَكَانَ اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ							
हाए शामत	अल्लाह	फ़राख़ कर देता है	रिज़्क	जिस के लिए चाहे	से	अपने बन्दे	और तंग कर देता है
لَوْلَا أَنْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ۗ وَيَكَاتَهُ لَا يَفْلِحُ							
अगर न	यह कि	एहसान करता अल्लाह	हम पर	अलबत्ता हमें धंसा देता	हाए शामत	फ़लाह नहीं पाते	
الْكُفْرُونَ ﴿٨٢﴾ تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ							
काफ़िर (जमा)	82	यह	आख़िरत का घर	हम करते हैं उसे	उन लोगों के लिए जो		
لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ وَلَا فِسَادًا ۗ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٨٣﴾							
वह नहीं चाहते	बड़ाई	ज़मीन में	और न फ़साद	और अन्जाम (नेक)	परहेज़गारों के लिए	83	
مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِنْهَا ۗ وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ							
जो आया	नेकी के साथ	तो उस के लिए	उस से बेहतर	और जो	आया	बुराई के साथ	
فَلَا يُجْزَى الَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٨٤﴾							
तो बदला न मिलेगा	उन लोगों को जिन्होंने ने	उन्होंने ने बुरे काम किए	मगर-सिवा	जो	वह करते थे	84	

إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَادُّكَ إِلَى مَعَادٍ ط							
सब से अच्छी लौटने की जगह	ज़रूर फेर लाएगा तुम्हें	कुरआन	तुम पर	लाज़िम किया	वह (अल्लाह) जिस ने	वेशक	
فُلْ زَيْتِي أَعْلَمُ مَنْ جَاءَ بِالْهُدَىٰ وَمَنْ هُوَ فِي مَعَادٍ							
में	और वह कौन	हिदायत के साथ	आया	कौन	खूब जानता है	मेरा रब	फरमादे
صَلِّ مُبِينٍ ﴿٨٥﴾ وَمَا كُنْتَ تَرْجُوا أَنْ يُلْقَىٰ إِلَيْكَ الْكِتَابُ إِلَّا رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا لِّلْكَافِرِينَ ﴿٨٦﴾							
किताब	तुम्हारी तरफ	कि उतारी जाएगी	उम्मीद रखते	और तुम न थे	85	खुली गुमराही	
إِلَّا رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا لِّلْكَافِرِينَ ﴿٨٦﴾							
86	काफ़िरों के लिए	मददगार	सो तुम हरगिज़ न होना	तुम्हारा रब	से	रहमत	मगर
وَلَا يَصُدُّكَ عَنْ آيَاتِ اللَّهِ بَعْدَ إِذْ أُنزِلَتْ إِلَيْكَ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٨٧﴾ وَلَا تَدْعُ							
तुम्हारी तरफ	नाज़िल किए गए	जबकि	वाद	अल्लाह के अहकाम	से	और वह तुम्हें हरगिज़ न रोके	
وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٨٧﴾ وَلَا تَدْعُ							
और न पुकारो तुम	87	मुशरिकीन	से	और तुम हरगिज़ न होना	अपने रब की तरफ	और आप बुलाएं	
مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا							
सिवा	फना होने वाली	हर चीज़	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	दूसरा	कोई माबूद	अल्लाह के सिवा
وَجْهَهُ لَهٗ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٨﴾							
88	तुम लौट कर जाओगे	और उस की तरफ	हुकम	उसी के लिए- का	उस की ज़ात		
آيَاتِهَا ٦٩ ﴿٢٩﴾ سُورَةُ الْعَنْكَبُوتِ ﴿٧﴾ زُكُوعَاتِهَا ٧							
रकुआत 7				सूरतुल अन्कबूत (29) मकड़ी		आयात 69	
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
الْم ﴿١﴾ أَحْسِبَ النَّاسَ أَنْ يُشْرِكُوا أَنْ يَقُولُوا آمَنَّا وَهُمْ							
और वह	हम ईमान लाए	उन्होंने ने कह दिया	कि	कि वह छोड़ दिए जाएंगे	लोग	क्या गुमान किया है	1 अलिफ लाम मीम
لَا يُفْتَنُونَ ﴿٢﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ							
तो ज़रूर मालूम करलेगा अल्लाह	उन से पहले	वह लोग जो	और अलबत्ता हम ने आजमाया	2	वह न आजमाए जाएंगे		
الَّذِينَ صَدَقُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِينَ ﴿٣﴾ أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ							
वह लोग जो	क्या गुमान किया है	3	झूटे	और वह ज़रूर मालूम करलेगा	सच्चे हैं	वह लोग जो	
يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ أَنْ يَسْبِقُونَا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٤﴾ مَنْ							
जो	4	जो वह फ़ैसला कर रहे हैं	बुरा है	वह हम से बाहर बच निकलेंगे	कि	बुरे काम करते हैं	
كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ اللَّهِ فَإِنَّ أَجَلَ اللَّهِ لَآتٍ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٥﴾							
5	जानने वाला	सुनने वाला	और वह	ज़रूर आने वाला	अल्लाह का वादा	तो वेशक अल्लाह से मुलाक़ात की	वह उम्मीद रखता है

वेशक जिस अल्लाह ने तुम पर कुरआन (पर अमल और तबलीग) को लाज़िम किया है वह तुम्हें ज़रूर सब से अच्छी लौटने की जगह फेर लाएगा, आप (स) फरमा दें मेरा रब खूब जानता है कि कौन हिदायत के साथ आया और कौन खुली गुमराही में है। (85) और तुम न थे उम्मीद रखते कि तुम्हारी तरफ़ किताब उतारी जाएगी, मगर तुम्हारे रब की रहमत से (नुजूल हुआ), सो तुम हरगिज़ हरगिज़ न होना काफ़िरों के लिए मददगार। (86) और वह तुम्हें हरगिज़ अल्लाह के अहकाम से न रोके, उस के बाद जबकि नाज़िल किए गए तुम्हारी तरफ़, और आप (स) अपने रब की तरफ़ बुलाएं, और हरगिज़ मुशरिकों में से न होना। (87) और अल्लाह के साथ न पुकारो कोई दूसरा माबूद, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उस की ज़ात के सिवा हर चीज़ फना होने वाली है, उसी का हुकम है और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (88) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है अलिफ-लाम-मीम। (1) क्या लोगों ने गुमान कर लिया है कि वह (इतने पर) छोड़ दिए जाएंगे कि उन्होंने ने कह दिया कि हम ईमान ले आए हैं, और वह न आजमाए जाएंगे। (2) और अलबत्ता हम ने उन से पहले लोगों को आजमाया, तो अल्लाह ज़रूर मालूम कर लेगा उन लोगों को जो सच्चे हैं, और ज़रूर मालूम कर लेगा झूठों को। (3) जो लोग बुरे काम करते हैं क्या उन्होंने ने गुमान किया है कि वह हम से बाहर बच निकलेंगे? बुरा है जो वह फ़ैसला (खयाल) कर रहे हैं। (4) जो कोई अल्लाह से मुलाक़ात (मिलने) की उम्मीद रखता है तो वेशक अल्लाह का वादा ज़रूर आने वाला है और वह सुनने वाला, जानने वाला। (5)

وقف الازم

ع ١٢

और जो कोई कोशिश करता है तो सिर्फ अपनी ज़ात के लिए कोशिश करता है। वेशक अल्लाह अलबत्ता जहान वालों से बेनियाज़ है। (6)

और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए अलबत्ता हम ज़रूर उन से उन की बुराइयां दूर कर देंगे, और हम ज़रूर उन्हें (उन के आमाल की) ज़ियादा बेहतर जज़ा देंगे जो वह करते थे। (7)

और हम ने इन्सान को माँ बाप से हुस्ने सुलूक का हुक्म दिया है, और अगर वह तुझ से कोशिश करें (ज़ोर डालें) कि तू (किसी को) मेरा शरीक ठहराए जिस का तुझे कोई इल्म नहीं, तो उन का कहा न मान, तुम्हें मेरी तरफ लौट कर आना है, तो मैं तुम्हें ज़रूर बतलाऊँगा वह जो तुम करते थे। (8)

और जो लोग ईमान लाए, और उन्होंने ने अच्छे अमल किए, हम उन्हें ज़रूर नेक बन्दों में दाखिल करेंगे। (9)

और कुछ लोग कहते हैं, हम अल्लाह पर ईमान लाए, फिर जब अल्लाह की राह में सताए गए तो उन्होंने ने लोगों के सताने को बना लिया (समझ लिया) जैसे अल्लाह का अज़ाब हो, और अगर तुम्हारे रब की तरफ से कोई मदद आए तो (उस वक़्त) वह ज़रूर कहते हैं वेशक हम तुम्हारे साथ हैं, क्या अल्लाह खूब जानने वाला नहीं जो दुनिया जहान वालों के दिल में है। (10)

और अल्लाह ज़रूर मालूम करेगा उन लोगों को जो ईमान लाए और ज़रूर मालूम करेगा मुनाफ़िकों को। (11)

और काफ़िरों ने ईमान लाने वालों को कहा: तुम हमारी राह चलो, और हम तुम्हारे गुनाह उठा लेंगे, हालांकि वह उन के गुनाह उठाने वाले नहीं कुछ भी, वेशक वह झूठे हैं। (12)

और वह अलबत्ता ज़रूर अपने बोझ उठायेंगे और बहुत से बोझ अपने बोझ के साथ, और क़ियामत के दिन अलबत्ता उन से ज़रूर उस (के वारे में) बाज़ पुर्स होगी जो वह झूट घड़ते थे। (13)

وَمَنْ جَهَدَ فَإِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهِ إِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ عَنِ

से	अलबत्ता बेनियाज़	वेशक अल्लाह	अपनी ज़ात के लिए	कोशिश करता है वह	तो सिर्फ	कोशिश करता है	और जो
----	------------------	-------------	------------------	------------------	----------	---------------	-------

الْعَالَمِينَ ﴿٦﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُكَفِّرَنَّ

अलबत्ता हम ज़रूर दूर कर देंगे	और उन्होंने ने अच्छे अमल किए	ईमान लाए	और जो लोग	6	जहान वाले
-------------------------------	------------------------------	----------	-----------	---	-----------

عَنْهُمْ سَيَّاتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَحْسَنَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٧﴾

7	वह करते थे	वह जो	ज़ियादा बेहतर	और हम ज़रूर जज़ा देंगे उन्हें	उन की बुराइयां	उन से
---	------------	-------	---------------	-------------------------------	----------------	-------

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا وَإِنْ جَاهَدَاكَ

तुझ से कोशिश करें	और अगर	हुस्ने सुलूक का	माँ बाप से	इन्सान	और हम ने हुक्म दिया
-------------------	--------	-----------------	------------	--------	---------------------

لِتُشْرِكَ بِى مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا

तो कहा न मान उन का	उस का कोई इल्म	तुझे	जिस का नहीं	कि तू शरीक ठहराए मेरा
--------------------	----------------	------	-------------	-----------------------

إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ فَأُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٨﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا

वह ईमान लाए	और जो लोग	8	तुम करते थे	वह जो	तो मैं ज़रूर बतलाऊँगा तुम्हें	मेरी तरफ तुम्हें लौट कर आना
-------------	-----------	---	-------------	-------	-------------------------------	-----------------------------

وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصَّالِحِينَ ﴿٩﴾ وَمِنَ

और से- कुछ	9	नेक बन्दों में	हम उन्हें ज़रूर दाखिल करेंगे	अच्छे	और उन्होंने ने अमल किए
------------	---	----------------	------------------------------	-------	------------------------

النَّاسِ مَنْ يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ فَإِذَا أُوذِيَ فِي اللَّهِ جَعَلَ

बना लिया	अल्लाह की (राह) में	सताए गए	फिर जब	अल्लाह पर	हम ईमान लाए	जो कहते हैं	लोग
----------	---------------------	---------	--------	-----------	-------------	-------------	-----

فِتْنَةً النَّاسِ كَعَذَابِ اللَّهِ وَلَئِنْ جَاءَ نَصْرٌ مِّن رَّبِّكَ

तुम्हारे रब से	कोई मदद	आए	और अगर	जैसे अज़ाब अल्लाह का	लोग	सताना
----------------	---------	----	--------	----------------------	-----	-------

لَيَقُولَنَّ إِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ أَوْلَىٰ آللَّهُ بِأَعْلَمَ بِمَا فِي صُدُورِ

सीनों (दिल) में	वह जो	खूब जानने वाला	क्या नहीं है अल्लाह	तुम्हारे साथ	वेशक हम थे	तो वह ज़रूर कहते हैं
-----------------	-------	----------------	---------------------	--------------	------------	----------------------

الْعَالَمِينَ ﴿١٠﴾ وَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيَعْلَمَنَّ

और अलबत्ता ज़रूर मालूम करेगा	ईमान लाए	वह लोग जो	और अलबत्ता ज़रूर मालूम करेगा अल्लाह	10	जहान वाले
------------------------------	----------	-----------	-------------------------------------	----	-----------

الْمُنَافِقِينَ ﴿١١﴾ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا اتَّبِعُوا

तुम चलो	उन लोगों को जो ईमान लाए	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	और कहा	11	मुनाफ़िक (जमा)
---------	-------------------------	---------------------------------	--------	----	----------------

سَبِيلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطِيئَتَكُمْ وَمَا هُمْ بِحَمِلِينَ مِنْ خَطِيئَتِهِمْ

उन के गुनाह	से	उठाने वाले	हालांकि वह नहीं	तुम्हारे गुनाह	और हम उठा लेंगे	हमारी राह
-------------	----	------------	-----------------	----------------	-----------------	-----------

مِّن شَيْءٍ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١٢﴾ وَلَيَحْمِلُنَّ أَثْقَالَهُمْ وَأَثْقَالًا مَّعَ

साथ	और बहुत से बोझ	अपने बोझ	और वह अलबत्ता ज़रूर उठायेंगे	12	अलबत्ता झूटे	वेशक वह	कुछ
-----	----------------	----------	------------------------------	----	--------------	---------	-----

أَثْقَالِهِمْ وَلَيَسْئَلَنَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَمَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿١٣﴾

13	वह झूट घड़ते थे	उस से जो	क़ियामत के दिन	और अलबत्ता उन से ज़रूर बाज़ पुर्स होगी	अपने बोझ
----	-----------------	----------	----------------	--	----------



وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَلَبِثَ فِيهِمْ أَلْفَ سَنَةٍ						
हज़ार साल	उन में	तो वह रहे	उस की कौम की तरफ़	नूह (अ) को	और बेशक हम ने भेजा	
إِلَّا خَمْسِينَ عَامًا فَأَخَذَهُمُ الطُّوفَانُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١٤﴾						
14	ज़ालिम थे	और वह	तूफान	फिर उन्हें आ पकड़ा	साल	पचास मगर कम
فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَصْحَابَ السَّفِينَةِ وَجَعَلْنَاهَا آيَةً لِلْعَالَمِينَ ﴿١٥﴾						
15	जहान वालों के लिए	एक निशानी	और उसे बनाया	और कश्ती वालों को	फिर हम ने उसे बचा लिया	
وَأَبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ ذَلِكُمْ						
यह	और उस से डरो	तुम इबादत करो अल्लाह की	अपनी कौम को	जब उस ने कहा	और इब्राहीम (अ)	
خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٦﴾ إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِنْ						
से	तुम परस्तिश करते हो	इस के सिवा नहीं	16	तुम जानते हो	अगर	बेहतर तुम्हारे लिए
دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا وَتَخْلُقُونَ إِفْكًا إِنَّ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ						
परस्तिश करते हो	वह जिन की तुम	वेशक	झूट	और तुम घड़ते हो	बुतों की	अल्लाह के सिवा
مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوا						
पस तुम तलाश करो	रिज़क के	तुम्हारे लिए	वह मालिक नहीं		अल्लाह के सिवा	
عِنْدَ اللَّهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا لَهُ إِلَيْهِ						
उस की तरफ़	उस का	और शुक्र करो	और उस की इबादत करो	रिज़क	अल्लाह के पास	
تُرْجَعُونَ ﴿١٧﴾ وَإِنْ تَكْذِبُوا فَقَدْ كَذَّبَ أُمَمٌ						
बहुत सी उम्मतें	तो झुटला चुकी हैं	तुम झुटलाओगे	और अगर	17	तुम्हें लौट कर जाना है	
مِّنْ قَبْلِكُمْ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلْغُ الْمُبِينُ ﴿١٨﴾						
18	साफ़ तौर पर	पहुँचा देना	मगर	रसूल	पर (ज़िम्मे)	और नहीं तुम से पहली
أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ						
फिर दोबारा पैदा करेगा उस को	पैदाइश	इबतिदा करता है अल्लाह	कैसे	देखा उन्होंने ने	क्या नहीं	
إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿١٩﴾ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ						
ज़मीन में	चलो फिरो	फ़रमा दें	19	आसान	अल्लाह पर	यह वेशक
فَانظُرُوا كَيْفَ بَدَأَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللَّهُ يُنشِئُ						
उठाएगा	अल्लाह	फिर	पैदाइश	कैसे इबतिदा की	फिर देखो तुम	
النَّشَأَ الْأَخْرَجَةَ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٠﴾						
20	कुदरत रखने वाला	हर शै	पर	वेशक अल्लाह	आख़री (दूसरी)	उठान
يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَشَاءُ ۗ وَإِلَيْهِ تُقْلَبُونَ ﴿٢١﴾						
21	तुम लौटाए जाओगे	और उसी की तरफ़	जिस पर चाहे	और रहम फ़रमाता है	जिस को चाहे	वह अज़ाब देता है

वेशक हम ने नूह (अ) को उस की कौम की तरफ़ भेजा, तो वह उन में पचास साल कम हज़ार बरस रहे, फिर उन्हें (कौम नूह अ को) तूफान ने आ पकड़ा, और वह ज़ालिम थे। (14)

फिर हम ने उसे और कश्ती वालों को बचा लिया और उस (कश्ती) को जहान वालों के लिए एक निशानी बनाया। (15)

और याद करो जब इब्राहीम (अ) ने अपनी कौम को कहा तुम अल्लाह की इबादत करो और उस से डरो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो। (16)

इस के सिवा नहीं कि तुम परस्तिश करते हो अल्लाह के सिवा बुतों की, और तुम झूट घड़ते हो, वेशक अल्लाह के सिवा तुम जिन की परस्तिश करते हो वह तुम्हारे लिए रिज़क के मालिक नहीं, पस तुम अल्लाह के पास (से) रिज़क तलाश करो, और तुम उस की इबादत करो और उस का शुक्र करो, और उसी की तरफ़ तुम को लौट कर जाना है। (17)

और अगर तुम झुटलाओगे तो झुटला चुकी हैं बहुत सी उम्मतें तुम से पहली (भी), और रसूल (स) के ज़िम्मे नहीं मगर साफ़ तौर पर पहुँचा देना। (18)

क्या उन्होंने ने नहीं देखा कैसे अल्लाह पैदाइश की इबतिदा करता है! फिर दोबारा उस को पैदा करेगा, वेशक अल्लाह पर यह आसान है। (19)

आप (स) फ़रमा दें (दुनिया में) चलो फिरो, फिर देखो उस ने कैसे पैदाइश की इबतिदा की फिर अल्लाह उठाएगा दूसरी उठान (दूसरी बार), वेशक अल्लाह हर शै पर कुदरत रखने वाला है। (20)

वह जिस को चाहे अज़ाब देता है और जिस पर चाहे रहम फ़रमाता है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (21)

और तुम ज़मीन में आजिज़ करने वाले नहीं और न आस्मान में, और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई हिमायती है और न कोई मददगार। (22)

और जिन लोगों ने अल्लाह की निशानियों का और उस की मुलाकात का इन्कार किया यही लोग मेरी रहमत से नाउम्मीद हुए, और यही हैं जिन के लिए अज़ाब है दर्दनाक। (23)

सो उस की क़ौम का जवाब इस के सिवा न था कि उसे क़त्ल कर डालो या उस को जला दो, सो अल्लाह ने उस को आग से बचा लिया। बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ईमान रखते हैं। (24)

और इब्राहीम (अ) ने कहा: बेशक तुम ने अल्लाह के सिवा बुतों को दुनिया की ज़िन्दगी में आपस की दोस्ती (की वजह) बना लिए हो, फिर क़ियामत के दिन तुम में से एक दूसरे का मुक़ालिफ़ हो जाएगा और तुम में से एक दूसरे पर लानत (मलामत) करेगा, और तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है, और तुम्हारे लिए कोई मददगार नहीं। (25)

पस उस पर लूत (अ) ईमान लाया और उस ने कहा बेशक मैं अपने रब की तरफ़ हिज़्रत करने वाला (वतन छोड़ने वाला हूँ), बेशक वही ग़ालिब हिक्मत वाला है। (26)

और हम ने उस (इब्राहीम अ) को अ़ता फ़रमाए इसहाक़ (अ) और याक़ूब (अ) और हम ने उस की औलाद में नुबुव्वत और किताब रखी, और हम ने उस को उस का अजर दिया दुनिया में और बेशक वह आख़िरत में अलबत्ता नेकोकारों में से है। (27)

और (हम ने भेजा) लूत (अ) को, याद करो जब उस ने कहा अपनी क़ौम को, बेशक तुम वेहयाई का (ऐसा काम) करते हो जो तुम से पहले जहान वालों में से किसी ने नहीं किया। (28)

وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَمَا						
और नहीं	आस्मान में	और न	ज़मीन में	आजिज़ करने वाले	और न हो तुम	
لَكُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٢٢﴾ وَالَّذِينَ						
और वह लोग जिन्होंने ने	22	कोई मददगार	और न	कोई हिमायती	अल्लाह के सिवा	तुम्हारे लिए
كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَلِقَايَةِ أُولَئِكَ يَسْأَلُونَ مِنْ رَحْمَتِي						
मेरी रहमत से	वह नाउम्मीद हुए	यही है	और उस की मुलाकात	अल्लाह की निशानियों का	इन्कार किया	
وَأُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٣﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ						
उस की क़ौम	जवाब	सो न था	23	दर्दनाक	अज़ाब	उन के लिए और यही है
إِلَّا أَنْ قَالُوا اقْتُلُوهُ أَوْ حَرِّقُوهُ فَأَنْجَاهُ اللَّهُ مِنَ النَّارِ						
आग से	सो बचा लिया उस को अल्लाह	जला दो उस को	या	क़त्ल करो उस को	उन्होंने ने कहा	सिवाए यह कि
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٢٤﴾ وَقَالَ إِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ						
तुम ने बना लिए	और (इब्राहीम अ) ने कहा इस के सिवा नहीं	24	जो ईमान रखते हैं	उन लोगों के लिए	निशानियां हैं	इस में बेशक
مِّنْ دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا						
दुनिया की ज़िन्दगी में	अपने दरमियान (आपस में)	दोस्ती	बुत (जमा)	अल्लाह के सिवा		
ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُم بِبَعْضٍ						
वाज़ (दूसरे) का	तुम में से वाज़ (एक)	काफ़िर (मुक़ालिफ़) हो जाएगा	क़ियामत के दिन	फिर		
وَيَلْعَنُ بَعْضُكُم بَعْضًا وَمَأْوَاكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ						
और नहीं तुम्हारे लिए	जहन्नम	और तुम्हारा ठिकाना	वाज़ (दूसरे) का	तुम में से वाज़ (एक)	और लानत करेगा	
مِّنْ نَّصِيرِينَ ﴿٢٥﴾ فَاَمَّنْ لَهُ لُوطٌ وَقَالَ إِنِّي مُهَاجِرٌ						
हिज़्रत करने वाला	बेशक मैं	और उस ने कहा	लूत (अ)	उस पर	पस ईमान लाया	25 कोई मददगार
إِلَىٰ رَبِّي إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٦﴾ وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ						
इसहाक़ (अ)	उस को	और हम ने अ़ता फ़रमाए	26	हिक्मत वाला	ज़बरदस्त ग़ालिब	वह बेशक वह अपने रब की तरफ़
وَيَعْقُوبَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ						
और किताब	नुबुव्वत	उस की औलाद में	और हम ने रखी	और याक़ूब (अ)		
وَأَتَيْنَاهُ أَجْرَهُ فِي الدُّنْيَا وَإِنَّا فِي الْآخِرَةِ						
आख़िरत में	और बेशक वह	दुनिया में	उस का अजर	और हम ने दिया उस को		
لَمِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٢٧﴾ وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ						
तुम करते हो	बेशक तुम	अपनी क़ौम को	(याद करो) जब उस ने कहा	और लूत (अ)	27	अलबत्ता नेकोकारों में से
الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِّنَ الْعَالَمِينَ ﴿٢٨﴾						
28	जहान वाले	से	किसी ने	उस को	नहीं पहले किया तुम से	वेहयाई

ع ۱۲

وقف لانه

أَيُّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُونَ السَّبِيلَ وَتَأْتُونَ						
और तुम करते हो	राह	और मारते हो	मर्द (जमा)	अलवत्ता तुम करते हो	क्या तुम वाकई	
فِي نَادِيكُمْ الْمُنْكَرُ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا						
उन्होंने ने कहा	कि	सिवाए	उस की कौम का जवाब	सो न था	नाशाइस्ता हरकात	अपनी महफिलों में
أَتَيْنَا بِعَذَابِ اللَّهِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٢٩﴾ قَالَ رَبِّ						
ऐ मेरे रब	कहा	29	सच्चे लोग	से	अगर तू है	अल्लाह का अज़ाब ले आ हम पर
انصُرْنِي عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِينَ ﴿٣٠﴾ وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا						
हमारे भेजे हुए (फरिश्ते)	आए	और जब	30	मुफ्सिद (जमा)	कौम-लोग	मेरी मदद फरमा
إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَى قَالُوا إِنَّا مُهْلِكُوا أَهْلَ هَذِهِ الْقَرْيَةِ						
उस बस्ती	लोग	हलाक करने वाले	वेशक हम	उन्होंने ने कहा	खुशखबरी ले कर	इब्राहीम (अ)
إِنَّ أَهْلَهَا كَانُوا ظَالِمِينَ ﴿٣١﴾ قَالَ إِنَّ فِيهَا						
वेशक उस में	इब्राहीम (अ) ने कहा	31	ज़ालिम (बड़े शरीर) हैं	उस के लोग	वेशक	
لُوطًا قَالُوا نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَنْ فِيهَا لَنَنْجِيَنَّهُ وَأَهْلَهُ						
और उस के घर वाले	अलवत्ता हम बचा लेंगे उस को	उस को जो उस में	खूब जानते हैं	हम	वह बोले	लूत (अ)
إِلَّا امْرَأَتَهُ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ﴿٣٢﴾ وَلَمَّا أَنْ جَاءَتْ						
आए	कि	और जब	32	पीछे रह जाने वाले	से	उस की बीवी सिवा
رُسُلَنَا لُوطًا سَيِّئًا بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالُوا						
और वह बोले	दिल में	उन से	और तंग हुआ	उन से	परेशान हुआ	लूत (अ) के पास हमारे फरिश्ते
لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ إِنَّا مُنْجِيُكَ وَأَهْلِكَ إِلَّا						
सिवा	और तेरे घर वाले	वेशक हम बचाने वाले हैं तुझे	और न ग़म खाओ	डरो नहीं तुम		
امْرَأَتِكَ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ﴿٣٣﴾ إِنَّا مُنْزِلُونَ عَلَى أَهْلِ						
लोग	पर	नाज़िल करने वाले	वेशक हम	33	पीछे रह जाने वाले	से वह है तेरी बीवी
هَذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٣٤﴾						
34	वह बदकारी करते थे	इस वजह से कि	आस्मान से	अज़ाब	इस बस्ती	
وَلَقَدْ تَرَكْنَا مِنْهَا آيَةً بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٣٥﴾ وَإِلَىٰ مَدْيَنَ						
और मद्यन की तरफ	35	वह अक्ल रखते हैं	लोगों के लिए	कुछ वाज़ेह निशानी	उस से	और अलवत्ता हम ने छोड़ा
أَحَاهُمْ شُعَيْبًا فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَارْجُوا						
और उम्मीद वार रहो	तुम इबादत करो अल्लाह की	ऐ मेरी कौम	पस उस ने कहा	शुऐब (अ) को	उन का भाई	
الْيَوْمَ الْآخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٣٦﴾						
36	फ़साद करते हुए (मचाते)	ज़मीन में	और न फिरो	आखिरत का दिन		

क्या तुम वाकई मर्दों से (फेले बद) करते हो, और राह मारते (डाके डालते) हो, और तुम अपनी महफिलों में करते हो नाशायस्ता हरकात, सो उस की कौम का जवाब इस के सिवा न था कि उन्होंने ने कहा हम पर अल्लाह का अज़ाब ले आ, अगर तू है सच्चे लोगों में से। (29)

लूत (अ) ने कहा ऐ मेरे रब! मुफ्सिद लोगों पर मेरी मदद फरमा। (30) और जब आए हमारे फरिश्ते इब्राहीम (अ) के पास खुशखबरी ले कर, उन्होंने ने कहा वेशक हम उस बस्ती के लोगों को हलाक करने वाले हैं, वेशक उस (बस्ती) के लोग बड़े शरीर हैं। (31)

इब्राहीम (अ) ने कहा वेशक उस (बस्ती) में लूत (अ) (भी है), वह (फरिश्ते) बोले हम खूब जानते हैं उस को जो उस (बस्ती) में हैं, अलवत्ता हम उस को और उस के घर वालों को ज़रूर बचा लेंगे सिवाए उस की बीवी, वह पीछे रह जाने वालों में से है। (32)

और जब हमारे फरिश्ते लूत (अ) के पास आए वह उन (के आने) से परेशान हुआ, उन की वजह से दिल तंग हुआ, और वह बोले डरो नहीं और ग़म न खाओ, वेशक हम तुझे और तेरे घर वालों को बचाने वाले हैं सिवाए तेरी बीवी के, वह पीछे रह जाने वालों में से है। (33)

वेशक हम इस बस्ती के लोगों पर आस्मान से अज़ाब नाज़िल करने वाले हैं, इस वजह से कि वह बदकारी करते थे। (34)

और अलवत्ता हम ने उस (बस्ती) से कुछ वाज़ेह निशान उन लोगों के लिए छोड़े (बाकी रखे) जो अक्ल रखते हैं। (35)

और मद्यन (वालों) की तरफ उन के भाई शुऐब (अ) को भेजा पस उस ने कहा ऐ मेरी कौम! तुम अल्लाह की इबादत करो और आखिरत के दिन के उम्मीद वार रहो, और ज़मीन में फ़साद मचाते न फिरो। (36)

फिर उन्होंने ने उस को झुटलाया तो उन को आ पकड़ा ज़लज़ले ने, पस वह सुबह को अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। (37)

और (हम ने हलाक किया) आद और समूद को, और तहकीक तुम पर उन के रहने के मुकामात वाज़ेह हो गए हैं, और शैतान ने उन के आमाल उन के लिए (उन्हें) भले कर दिखाए फिर उस ने उन्हें राहे (हक) से रोक दिया, हालांकि वह समझ बूझ वाले थे। (38) और (हम ने हलाक किया) कारून और फिरज़ौन, और हामान को, और उन के पास मूसा (अ) खुली निशानियों के साथ आए तो उन्होंने ने तकव्वुर किया मुल्क में और वह बच कर भाग निकलने वाले न थे। (39)

पस हम ने हर एक को उस के गुनाह पर पकड़ा तो उन में से (बाज़ वह है) जिन पर हम ने पत्थरों की बारिश भेजी, और उन में से बाज़ को चिंघाड़ ने आ पकड़ा, और उन में से बाज़ को हम ने ज़मीन में धंसा दिया, और उन में से बाज़ को हम ने गर्क कर दिया, और अल्लाह (ऐसा) नहीं कि उन पर जुल्म करता बल्कि वह खुद अपनी जानों पर जुल्म करते थे। (40)

उन लोगों की मिसाल जिन्होंने ने बनाए अल्लाह के सिवा मददगार, मकड़ी की मानिंद है, उस ने एक घर बनाया, और घरों में सब से कमज़ोर (बोदा) घर मकड़ी का है, काश वह जानते होते। (41) वेशक अल्लाह जानता है जो वह पुकारते हैं उस के सिवा जिस चीज़ को भी, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला। (42)

और यह मिसालें हम बयान करते हैं, लोगों के लिए, और उन्हें नहीं समझते जानने वालों के सिवा। (43) और अल्लाह ने आस्मान और ज़मीन को पैदा किया हक के साथ, वेशक उस में ईमान वालों के लिए निशानी है। (44)

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ								
अपने घर में	पस वह सुबह को हो गए	ज़लज़ला	तो आ पकड़ा उन्हें	फिर उन्होंने ने झुटलाया उस को				
جَثِمِينَ ﴿٣٧﴾ وَعَادًا وَثَمُودًا وَقَدْ تَبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسْكِنِهِمْ								
उन के रहने के मुकामात	तुम पर	वाज़ेह हो गए हैं	और तहकीक	और समूद	और आद	37	औन्धे पड़े हुए	
وَرَيَيْنَ لَهُمُ الشَّيْطَانَ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ								
राह	से	फिर रोक दिया उन्हें	उन के आमाल	शैतान	उन के लिए	और भले कर दिखाए		
وَكَانُوا مُسْتَبْصِرِينَ ﴿٣٨﴾ وَقَارُونَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ								
और अलवत्ता आए उन के पास	और हामान	और फिरज़ौन	और कारून	38	समझ बूझ वाले	हालांकि वह थे		
مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانُوا								
और वह न थे	ज़मीन (मुल्क) में	तो उन्होंने ने तकव्वुर किया	खुली निशानियों के साथ	मूसा (अ)				
سَبِقِينَ ﴿٣٩﴾ فَكَلَّا أَخَذْنَا بِذُنْبِهِ فَمِنْهُمْ مَّنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ								
उस पर	हम ने भेजी	जो	तो उन में से	उस के गुनाह पर	हम ने पकड़ा	पस हर एक	39	बच कर भाग निकलने वाले
حَاصِبًا وَمِنْهُمْ مَّنْ أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا								
हम ने धंसा दिया	जो	और उन में से	चिंघाड़	उस को पकड़ा	जो (बाज़)	और उन में से	पत्थरों की बारिश	
بِهِ الْأَرْضَ وَمِنْهُمْ مَّنْ أَعْرَفْنَا وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُظْلِمَهُمْ								
जुल्म करता उन पर	अल्लाह	और नहीं है	जो हम ने गर्क कर दिया	और उन में से	ज़मीन में	उस को		
وَلَكِنْ كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٤٠﴾ مَثَلُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا								
बनाए	वह लोग जिन्होंने ने	मिसाल	40	जुल्म करते	खुद अपनी जानों पर	वह थे	और लेकिन (बल्कि)	
مِّنْ دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ كَمَثَلِ الْعَنكَبُوتِ اتَّخَذَتْ بَيْتًا								
एक घर	उस ने बनाया	मकड़ी	मानिंद	मददगार	अल्लाह के सिवा			
وَإِنَّ أَوْهَنَ الْبُيُوتِ لَبَيْتُ الْعَنكَبُوتِ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾								
41	जानते	काश होते वह	मकड़ी का	घर है	घरों में	सब से कमज़ोर	और वेशक	
إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ وَهُوَ								
और वह	कोई चीज़	उस के सिवा	से	जो वह पुकारते हैं	जानता है	वेशक अल्लाह		
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٤٢﴾ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ								
लोगों के लिए	हम बयान करते हैं	मिसालें	और यह	42	हिक्मत वाला	ग़ालिब ज़बरदस्त		
وَمَا يَعْقِلُهَا إِلَّا الْعَالِمُونَ ﴿٤٣﴾ خَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ								
आस्मान (जमा)	पैदा किए अल्लाह ने	43	जानने वाले	सिवा	और नहीं समझते उन्हें			
وَالْأَرْضِ بِالْحَقِّ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٤﴾								
44	ईमान वालों के लिए	अलवत्ता निशानी	उस में	वेशक	हक के साथ	और ज़मीन		

أَتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ						
नमाज़	और काइम करें	किताब से	आप (स) की तरफ	वहि की गई	जो	आप (स) पढ़ें
إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَى عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَلَذِكْرُ اللَّهِ أَكْبَرُ						
सब से बड़ी बात	और अलबत्ता अल्लाह की याद	और बुराई	बेहयाई	से	रोकती है	नमाज़ वेशक
وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُونَ ﴿٤٥﴾ وَلَا تُجَادِلُوا أَهْلَ الْكِتَابِ						
अहले किताब	और तुम न झगड़ो	45	जो तुम करते हो	जानता है	और अल्लाह	
إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ وَقَوْلُوا						
और तुम कहो	उन (में) से	जिन लोगों ने जुल्म किया	सिवाए	वह बेहतर	मगर उस तरीके से जो	
أَمَّا بِالَّذِي أُنزِلَ إِلَيْنَا وَأُنزِلَ إِلَيْكُمْ وَالْهَذَا وَالْهُكْمُ وَاحِدٌ						
एक	और तुम्हारा माबूद	और हमारा माबूद	तुम्हारी तरफ	और नाज़िल किया गया	हमारी तरफ	नाज़िल किया गया
وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿٤٦﴾ وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ فَالَّذِينَ						
पस जिन लोगों को	किताब	हम ने नाज़िल की तुम्हारी तरफ	और उसी तरह	46	फरमाबरदार (जमा)	उस के और हम
اتَّبَعُوا الْكِتَابَ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَمِنْ هَؤُلَاءِ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ						
उस पर	बाज़ ईमान लाते हैं	और इन अहले मक्का से	उस पर	वह ईमान लाते हैं	किताब	हम ने दी उन्हें
وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا الْكَافِرُونَ ﴿٤٧﴾ وَمَا كُنْتَ تَتْلُوا مِنْ قَبْلِهِ						
इस से क्वल	आप (स) पढ़ते थे	और न	47	काफिर (जमा)	मगर (सिर्फ)	हमारी आयतों का और वह नहीं इन्कार करते
مِنْ كِتَابٍ وَلَا تَخْطئه بِيَمِينِكَ إِذَا لَأَزْتَابِ الْمُبْطِلُونَ ﴿٤٨﴾						
48	हक नाशानास	आलबत्ता शक करते	उस (सूरत) में	अपने दाए हाथ से	और न उसे लिखते थे	कोई किताब
بَلْ هُوَ آيَةٌ بَيِّنَةٌ فِي صُدُورِ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَمَا يَجْحَدُ						
और नहीं इन्कार करते	इल्म दिया गया	वह लोग जिन्हें	सीनों में	वाज़ेह आयतें	वल्कि वह	
بِآيَاتِنَا إِلَّا الظَّالِمُونَ ﴿٤٩﴾ وَقَالُوا لَوْلَا أَنْزَلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ						
आप (स) फ़रमा दें	उस के रब से	निशानियां	उस पर	नाज़िल की गई	क्यों न और वह बोले	49
إِنَّمَا الْآيَاتُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٥٠﴾ أَوْلَمْ يَكْفِهِمْ أَنَّا أَنْزَلْنَا						
कि हम ने नाज़िल की	क्या उन के लिए काफी नहीं	50	साफ़ साफ़	डराने वाला	और इस के सिवा नहीं कि मैं	अल्लाह के पास निशानियां
عَلَيْكَ الْكِتَابَ يُتلى عَلَيْهِمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَرَحْمَةً وَذِكْرَى لِقَوْمٍ						
उन लोगों के लिए	और नसीहत	अलबत्ता रहमत है	उस में	वेशक	उन पर	पढ़ी जाती है किताब आप (स) पर
يُؤْمِنُونَ ﴿٥١﴾ قُلْ كَفَى بِاللَّهِ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ شَهِيدًا يَعْلَمُ مَا فِي السَّمُوتِ						
आस्मानों में	जो	वह जानता है	गवाह	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	आप (स) फ़रमा दें कि काफी है अल्लाह
51	वह ईमान लाते हैं					
وَالْأَرْضِ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوا بِاللَّهِ أُولَئِكَ هُمُ الْخَسِرُونَ ﴿٥٢﴾						
52	वह घाटा पाने वाले	वही है	अल्लाह के	और वह मुन्करि हुए	वातिल पर	ईमान लाए और जो लोग और ज़मीन में

और वह आप (स) से अज़ाब की जल्दी करते हैं, और अगर मीआद न होती मुकर्रर, तो उन पर अज़ाब आ चुका होता, और वह उन पर ज़रूर अचानक आएगा और उन्हें ख़बर (भी) न होगी। (53)

और वह आप (स) से अज़ाब की जल्दी करते हैं, और बेशक जहन्नम काफ़िरों को घेरे हुए है। (54)

जिस दिन उन्हें ढांप लेगा अज़ाब, उन के ऊपर से और उन के पाऊँ के नीचे से, और (अल्लाह तआला) कहेगा (उस का मज़ा) चखों जो तुम करते थे। (55)

ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए हो! बेशक मेरी ज़मीन वसीअ है, पस तुम मेरी ही इबादत करो। (56)

हर शख्स को मौत (का मज़ा) चखना है, फिर तुम हमारी तरफ लौटाए जाओगे। (57)

और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए, हम ज़रूर उन्हें जगह देंगे जन्नत के वाला खानों में, उस के नीचे नहरें जारी हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे, क्या ही अच्छा अजर है काम करने वालों का। (58)

जिन लोगों ने सब्र किया, और वह अपने रब पर भरोसा करते हैं। (59)

और बहुत से जानवर हैं (जो) नहीं उठाए (फिरते) अपनी रोज़ी, अल्लाह उन्हें रोज़ी देता है और तुम्हें भी, और वह सुनने वाला, जानने वाला है। (60)

और अलबत्ता अगर तुम उन से पूछो किस ने ज़मीन और आस्मानों को बनाया? और सूरज और चाँद को काम में लगाया? तो वह ज़रूर कहेंगे “अल्लाह”, फिर वह कहां उलटे फिरे जाते हैं? (61)

अल्लाह अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहे रोज़ी फ़राख़ करता है और (जिस के लिए चाहे) उस के लिए तंग कर देता है, बेशक अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (62)

और अलबत्ता अगर तुम उन से पूछो: किस ने आस्मान से पानी उतारा? फिर उस से ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िन्दा कर दिया, वह ज़रूर कहेंगे “अल्लाह”, आप (स) फ़रमा दें तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, लेकिन उन में अक्सर लोग अक़्ल से काम नहीं लेते। (63)

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَوْ لآ أَجَلٌ مُّسَمًّى لَجَاءَهُمُ الْعَذَابُ

अज़ाब	तो आ चुका होता उन पर	मुकर्रर	मीआद	और अगर न	अज़ाब की	और वह आप (स) से जल्दी करते हैं
-------	----------------------	---------	------	----------	----------	--------------------------------

وَلَيَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٥٣﴾ يَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ

अज़ाब की	आप (स) से जल्दी करते हैं	53	उन्हें खबर न होगी	और वह	अचानक	और ज़रूर उन पर आएगा
----------	--------------------------	----	-------------------	-------	-------	---------------------

وَأَنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿٥٤﴾ يَوْمَ يَعْشَهُمُ الْعَذَابُ

अज़ाब	उन्हें ढांप लेगा	(जिस) दिन	54	काफ़िरों को	अलबत्ता घेरे हुए	और जहन्नम	और बेशक
-------	------------------	-----------	----	-------------	------------------	-----------	---------

مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ وَيَقُولُ ذُوقُوا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٥﴾

55	तुम करते थे	जो	चखो तुम	और वह कहेगा	उन के पाऊँ	और नीचे से	उन के ऊपर से
----	-------------	----	---------	-------------	------------	------------	--------------

يُعِبَادِي الَّذِينَ آمَنُوا إِن أَرْضِي وَاسِعَةٌ فَإِيَّاي فَاعْبُدُونِ ﴿٥٦﴾

56	पस तुम इबादत करो	पस मेरी ही	वसीअ	मेरी ज़मीन	बेशक	जो ईमान लाए	ऐ मेरे बन्दो
----	------------------	------------	------	------------	------	-------------	--------------

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا

और जो लोग ईमान लाए	57	तुम लौटाए जाओगे	फिर हमारी तरफ	मौत	चखना	हर शख्स
--------------------	----	-----------------	---------------	-----	------	---------

وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِي

जारी है	वाला खाने	जन्नत	से-के	हम ज़रूर उन्हें जगह देंगे	नेक	और उन्होंने ने अमल किए
---------	-----------	-------	-------	---------------------------	-----	------------------------

مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا نِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ﴿٥٨﴾

58	काम करने वाले	(क्या ही) अच्छा अजर है	उस में	वह हमेशा रहेंगे	नहरें	उस के नीचे से
----	---------------	------------------------	--------	-----------------	-------	---------------

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٥٩﴾ وَكَأَيِّن مِّن دَابَّةٍ لَّا تَحْمِلُ

नहीं उठाते	जानवर जो	और बहुत से	59	वह भरोसा करते हैं	और वह अपने रब पर	जिन लोगों ने सब्र किया
------------	----------	------------	----	-------------------	------------------	------------------------

رِزْقَهَا ۗ اللَّهُ يَرْزُقُهَا وَإِيَّاكُمْ ۗ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦٠﴾ وَلَئِن

और अलबत्ता अगर	60	जानने वाला	सुनने वाला	और वह	और तुम्हें भी	उन्हें रोज़ी देता है	अल्लाह	अपनी रोज़ी
----------------	----	------------	------------	-------	---------------	----------------------	--------	------------

سَأَلْتَهُم مَّن خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ

और चाँद	सूरज	और काम में लगाया	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	किस ने बनाया	तुम पूछो उन से
---------	------	------------------	----------	--------------	--------------	----------------

لَيَقُولَنَّ اللَّهُ ۖ فَاَتَىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٦١﴾ اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ

जिस के लिए वह चाहता है	रोज़ी	फ़राख़ करता है	अल्लाह	61	वह उलटे फिरे जाते हैं	फिर कहां	अल्लाह	वह ज़रूर कहेंगे
------------------------	-------	----------------	--------	----	-----------------------	----------	--------	-----------------

مِن عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٢﴾ وَلَئِن

और अलबत्ता अगर	62	जानने वाला	हर चीज़ का	बेशक अल्लाह	उस के लिए	और तंग कर देता है	अपने बन्दों में से
----------------	----	------------	------------	-------------	-----------	-------------------	--------------------

سَأَلْتَهُم مَّن نَّزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ مِّن بَعْدِ

बाद	ज़मीन	उस से	फिर ज़िन्दा कर दिया	पानी	आस्मान से	उतारा	किस ने	तुम उन से पूछो
-----	-------	-------	---------------------	------	-----------	-------	--------	----------------

مَوْتِهَا لَيَقُولَنَّ اللَّهُ ۗ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۗ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٦٣﴾

63	वह अक़्ल से काम नहीं लेते	उन में अक्सर लोग	लेकिन	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	आप (स) कह दें	अल्लाह	अलबत्ता वह कहेंगे	उस का मरना
----	---------------------------	------------------	-------	-----------------------------	---------------	--------	-------------------	------------

وقف الهم

وَمَا هَذِهِ الْحَيَوةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَهُوَ وَلَعِبٌ وَإِنَّ الدَّارَ الْآخِرَةَ						
आखिरत का घर	और वेशक	और कूद	सिवाए खेल	दुनिया की ज़िन्दगी	यह	और नहीं
لِهِيَ الْحَيَوةِ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٦٤﴾ فَإِذَا رَكَبُوا فِي الْفُلْكِ						
कश्ती में	वह सवार होते हैं	फिर जब	64	वह जानते होते	काश	ज़िन्दगी अलबत्ता वही
دَعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ إِذَا هُمْ						
नागहां (फौरन) वह	खुशकी की तरफ	वह उन्हें नजात देता है	फिर जब	उस के लिए एतिक़ाद	ख़ालिस रख कर	अल्लाह को पुकारते हैं
يُشْرِكُونَ ﴿٦٥﴾ لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَهُمْ وَلِيَتَمَتَّعُوا فَسَوْفَ						
पस अनक़रीब वह	और ताकि वह फाइदा उठाएँ	हम ने उन्हें दिया	वह जो	ताकि नाशुकी करें	65	शिरक करने लगतें हैं
يَعْلَمُونَ ﴿٦٦﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا آمِنًا وَيَتَخَطَّفُ النَّاسُ						
लोग	जबकि उचक लिए जाते हैं	हरम (सरज़मीने मक्का) को अमन की जगह	कि हम ने बनाया	क्या उन्होंने ने नहीं देखा	66	जान लेंगे वह
مِنْ حَوْلِهِمْ أَفِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَةِ اللَّهِ يَكْفُرُونَ ﴿٦٧﴾						
67	नाशुकी करते हैं	और अल्लाह की नेमत की	ईमान लाते हैं	क्या पस वातिल पर	उस के ईर्द गिर्द	से
وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ						
या झुटलाया उस ने	झूट	अल्लाह पर	बान्धा	उस से जिस ने	बड़ा ज़ालिम	और कौन
بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُ الْيَسْ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ ﴿٦٨﴾						
68	काफ़िरों के लिए	ठिकाना	जहन्नम में	क्या नहीं	वह आया उस के पास	जब हक को
وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا وَإِنَّ اللَّهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٦٩﴾						
69	अलबत्ता साथ है नेकोकारों के	और वेशक अल्लाह	अपने रास्ते (जमा)	हम ज़रूर उन्हें हिदायत देंगे	हमारी (राह) में	और जिन लोगों ने कोशिश की
آيَاتُهَا ٦٠ ﴿٣٠﴾ سُورَةُ الرُّومِ ﴿٣٠﴾ رُكُوعَاتُهَا ٦						
रुक़आत 6		(30) सूरतुर रोम			आयात 60	
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ						
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
الْمَ ﴿١﴾ غُلِبَتِ الرُّومُ ﴿٢﴾ فِي أَدْنَى الْأَرْضِ وَهُمْ مِّنْ بَعْدِ						
वाद	और वह	करीब की ज़मीन	में	2	रोमी	मग़लूब हो गए
1	अलिफ़ लाम मीम	रोमी क़रीब की सरज़मीन में मग़लूब हो गए। (2)				
غَلِبَهُمْ سَيَغْلِبُونَ ﴿٣﴾ فِي بَضْعِ سِنِينَ ۗ اللَّهُ الْأَمْرُ						
अल्लाह ही के लिए हुक्म	चन्द साल (जमा)	में	3	अनक़रीब वह ग़ालिब होंगे	अपने मग़लूब होने	और वह अपने मग़लूब होने के बाद अनक़रीब चन्द सालों में ग़ालिब होंगे। (3)
مِنْ قَبْلُ وَمِنْ بَعْدُ ۗ وَيَوْمَئِذٍ يَفْرَحُ الْمُؤْمِنُونَ ﴿٤﴾						
4	अहले ईमान	खुश होंगे	और उस दिन	और बाद	पहले	पहले भी और पीछे भी अल्लाह ही का हुक्म है, और उस दिन अहले ईमान अल्लाह की मदद से खुश होंगे। (4)
بِنَصْرِ اللَّهِ ۗ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَاءُ ۗ وَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٥﴾						
5	निहायत मेहरवान	ग़ालिब	और वह	जिस को चाहता है	वह मदद देता है	अल्लाह की मदद से वह जिस को चाहता है मदद देता है, और वह ग़ालिब निहायत मेहरवान है। (5)

और यह दुनिया की ज़िन्दगी खेल कूद के सिवा कुछ नहीं, और वेशक आखिरत का घर ही (असल) ज़िन्दगी है, काश वह जानते होते। (64)

फिर जब वह कश्ती में सवार होते हैं तो वह अल्लाह को पुकारते हैं ख़ालिस उसी पर एतिक़ाद रखते हुए, फिर जब वह उन्हें खुशकी की तरफ नजात देता (बचा लाता) है तो वह फौरन शिरक करने लगते हैं। (65)

ताकि उस की नाशुकी करें जो हम ने उन्हें दिया है, और ताकि वह फाइदा उठाएँ, पस अनक़रीब वह जान लेंगे। (66)

क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि हम ने सरज़मीने मक्का को अमन की जगह बनाया, जब कि उस के ईर्द गिर्द से लोग उचक लिए जाते हैं, पस क्या वह वातिल पर ईमान लाते हैं और अल्लाह की नेमत की नाशुकी करते हैं। (67)

और उस से बड़ा ज़ालिम कौन है? जिस ने अल्लाह पर झूट बान्धा, या जब हक उस के पास आया उस ने उसे झुटलाया, क्या जहन्नम में काफ़िरों के लिए ठिकाना नहीं? (68)

और जिन लोगों ने हमारी राह में कोशिश की, हम ज़रूर उन्हें हिदायत देंगे अपने रास्तों की, और वेशक अल्लाह नेकोकारों के साथ है। (69)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है अलिफ़-लाम-मीम। (1)

रोमी क़रीब की सरज़मीन में मग़लूब हो गए। (2)

और वह अपने मग़लूब होने के बाद अनक़रीब चन्द सालों में ग़ालिब होंगे। (3)

पहले भी और पीछे भी अल्लाह ही का हुक्म है, और उस दिन अहले ईमान अल्लाह की मदद से खुश होंगे। (4)

वह जिस को चाहता है मदद देता है, और वह ग़ालिब निहायत मेहरवान है। (5)

ع ٣

(यह) अल्लाह का वादा है, अल्लाह अपने वादे के खिलाफ नहीं करता, और लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। (6)

वह दुनिया की ज़िन्दगी के (सिर्फ) ज़ाहिर को जानते हैं, और वह आखिरत से गाफ़िल हैं। (7)

क्या वह अपने दिल में ग़ौर नहीं करते? अल्लाह ने नहीं पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को, और जो कुछ उन दोनों के दरमियान है मगर दुरुस्त तदवीर के साथ, और एक मुक़र्रर मीज़ाद के लिए, और वेशक लोगों में से अक्सर अपने रब की मुलाक़ात के मुनिकर हैं। (8)

क्या उन्होंने ने ज़मीन (दुनिया) में सैर नहीं की? वह देखते कि कैसा अन्जाम हुआ उन लोगों का जो उन से पहले थे, वह कुव्वत में उन से बहुत ज़ियादा थे, और उन्होंने ने ज़मीन को बोया जोता, और उस को आबाद किया उस से ज़ियादा (जिस क़द्र) इन्होंने आबाद किया है, और उन के पास उन के रसूल रोशन दलाइल के साथ आए, पस अल्लाह (ऐसा) न था कि वह उन पर जुल्म करता और लेकिन वह अपनी जानों पर जुल्म करते थे। (9)

फिर जिन लोगों ने बुरे काम किए उन का अन्जाम बुरा हुआ कि उन्होंने ने अल्लाह की आयतों को झुटलाया और वह उन का मज़ाक़ उड़ाते थे। (10)

अल्लाह पहली बार खलक़्त को पैदा करता है फिर वह उसे दोबारा पैदा करेगा, फिर तुम उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे। (11)

और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी मुज़रिम नाउम्मीद हो कर रह जाएंगे। (12)

और उन के शरीकों में से कोई उन के सिफ़ारशी न होंगे, और वह अपने शरीकों के मुनिकर हो जाएंगे। (13)

और जिस दिन क़ियामत काइम होगी उस दिन (लोग) मुतफ़र्रिक़ (तित्तर बित्तर) हो जाएंगे। (14)

पस जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए सो वह बाग़े (जन्नत) में आओ भगत किए जाएंगे। (15)

وَعَدَ اللَّهُ لَا يُخْلِفُ اللَّهُ وَعَدَهُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ

अक्सर लोग	और लेकिन	अपना वादा	खिलाफ नहीं करता अल्लाह	अल्लाह का वादा है
-----------	----------	-----------	------------------------	-------------------

لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦﴾ يَعْلَمُونَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ عَنِ

से	और वह	दुनिया की ज़िन्दगी	से	ज़ाहिर को	वह जानते हैं	6	नहीं जानते
----	-------	--------------------	----	-----------	--------------	---	------------

الْآخِرَةِ هُمْ غَفْلُونَ ﴿٧﴾ أَوْلَمْ يَتَفَكَّرُوا فِي أَنفُسِهِمْ مَا خَلَقَ اللَّهُ

पैदा किया अल्लाह	नहीं	अपने जी (दिल) में	वह ग़ौर करते	क्या नहीं	7	गाफ़िल है	वह	आखिरत
------------------	------	-------------------	--------------	-----------	---	-----------	----	-------

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَمًّى

और एक मुक़र्रर मीज़ाद	दुरुस्त तदवीर के साथ	मगर	उन दोनों के दरमियान	और जो	और ज़मीन	आस्मानों
-----------------------	----------------------	-----	---------------------	-------	----------	----------

وَأَنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَائِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُونَ ﴿٨﴾ أَوْلَمْ يَسِيرُوا

उन्होंने ने सैर की	क्या नहीं	8	मुनिकर हैं	अपना रब	मुलाक़ात से	लोगों से	अक्सर	और वेशक
--------------------	-----------	---	------------	---------	-------------	----------	-------	---------

فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ

उन से पहले	वह लोग जो	अन्जाम	कैसा हुआ	जो वह देखते	ज़मीन में
------------	-----------	--------	----------	-------------	-----------

كَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَأَثَارُوا الْأَرْضِ وَعَمَرُوهَا أَكْثَرَ

ज़ियादा	और उन्होंने ने उस को आबाद किया	ज़मीन	और उन्होंने ने बोया जोता	ताक़त (में)	इन से	बहुत ज़ियादा	वह थे
---------	--------------------------------	-------	--------------------------	-------------	-------	--------------	-------

مِمَّا عَمَرُوهَا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ

कि उन पर जुल्म करता	अल्लाह	पस न था	रोशन दलाइल के साथ	उन के रसूल	और उन के पास आए	इन्होंने ने उसे आबाद किया	उस से जो
---------------------	--------	---------	-------------------	------------	-----------------	---------------------------	----------

وَلَكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٩﴾ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ

जिन लोगों ने	अन्जाम	हुआ	फिर	9	जुल्म करते	अपनी जानें	वह थे	और लेकिन
--------------	--------	-----	-----	---	------------	------------	-------	----------

أَسَاءُوا السُّوْآى أَن كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَكَانُوا بِهَا يَسْتَهْزِءُونَ ﴿١٠﴾

10	उस से मज़ाक़ करते	और थे वह	अल्लाह की आयतों को	कि उन्होंने ने झुटलाया	बुरा	बुरे काम किए
----	-------------------	----------	--------------------	------------------------	------	--------------

اللَّهُ يَبَدُّوا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿١١﴾ وَيَوْمَ

और जिस दिन	11	तुम लौटाए जाओगे	फिर उस की तरफ़	फिर वह उसे दोबारा (पैदा) करेगा	खलक़्त	अल्लाह पहली बार पैदा करता है
------------	----	-----------------	----------------	--------------------------------	--------	------------------------------

تَقُومُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُونَ ﴿١٢﴾ وَلَمْ يَكُن لَّهُمْ

उन के लिए	और न होंगे	12	मुज़रिम (जमा)	नाउम्मीद रह जाएंगे	बरपा होगी क़ियामत
-----------	------------	----	---------------	--------------------	-------------------

مِّن شُرَكَآئِهِمْ شَفَعُوا وَكَانُوا بِشُرَكَآئِهِمْ كٰفِرِينَ ﴿١٣﴾

13	मुनिकर	अपने शरीकों के	और वह हो जाएंगे	कोई सिफ़ारशी	उन के शरीकों में से
----	--------	----------------	-----------------	--------------	---------------------

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُؤْمِدُ يُتَفَرَّقُونَ ﴿١٤﴾ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا

पस जो लोग ईमान लाए	14	मुतफ़र्रिक़ हो जाएंगे	उस दिन	काइम होगी क़ियामत	और जिस दिन
--------------------	----	-----------------------	--------	-------------------	------------

وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَهُمْ فِي رَوْضَةٍ يُحْبَرُونَ ﴿١٥﴾

15	ख़ुशहाल (आओ भगत) किए जाएंगे	बाग़ में	सो वह	नेक	और उन्होंने ने अमल किए
----	-----------------------------	----------	-------	-----	------------------------



وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَاءِ الْآخِرَةِ						
आखिरत	और मुलाकात को	हमारी आयतों को	और झुटलाया	कुफ्र किया	और जिन लोगों ने	
فَأُولَئِكَ فِي الْعَذَابِ مُخَصَّرُونَ ﴿١٦﴾ فَسُبْحَانَ اللَّهِ حِينَ تُمْسُونَ وَحِينَ تُصْبِحُونَ ﴿١٧﴾ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَعَشِيًّا وَحِينَ تُظْهِرُونَ ﴿١٨﴾ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَمِيتِ وَيُخْرِجُ الْمَمِيتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَكَذَلِكَ تُخْرَجُونَ ﴿١٩﴾ وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ إِذَا أَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُونَ ﴿٢٠﴾ وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا لِتَسْكُنُوا إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَوَدَّةً وَرَحْمَةً إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٢١﴾ وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافُ أَلْسِنَتِكُمْ وَالْوَأْنِكُمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْعَالَمِينَ ﴿٢٢﴾ وَمِنْ آيَاتِهِ مَنَامُكُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَاؤُكُمْ مِنْ فَضْلِهِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ﴿٢٣﴾ وَمِنْ آيَاتِهِ يُرِيكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنزِلُ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَيُحْيِي بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٢٤﴾						
जब	अल्लाह	पस पाकीज़गी (बयान करो)	16	हाज़िर (गिरफ्तार) किए जाएंगे	अज़ाब में	पस यही लोग
तुम शाम करो (शाम के वक़्त)						
और जब	तुम सुबह करो (सुबह के वक़्त)	17	और उस के लिए	तुम शाम करो (शाम के वक़्त)	और जब	तुम शाम करो (शाम के वक़्त)
जिन्दा	वह निकालता है	18	तुम जुहर करते हो (जुहर के वक़्त)	और जब	और वाद ज़वाल (तीसरे पहर)	और ज़मीन
वाद	ज़मीन	और वह जिन्दा करता है	जिन्दा से	मुर्दा	और निकालता है वह	मुर्दा से
से	उस ने पैदा किया तुम्हें	कि	और उस की निशानियों से	19	तुम निकाले जाओगे	और उसी तरह
उस ने पैदा किया	कि	और उस की निशानियों से	20	फैले हुए	आदमी	नागहां तुम
और उस ने किया	उन की तरफ (पास)	ताकि तुम सुकून हासिल करो	जोड़े	तुम्हारी जिनस से	तुम्हारे लिए	
21	वह गौर ओ फ़िक्र करते हैं	उन लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में	वेशक और मेहरबानी	मुहब्बत
तुम्हारी ज़वानें	और सुख़तलिफ़ होना	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	उस ने पैदा किया	और उस की निशानियों से	
और उस की निशानियों से	22	आलिमों (दानिशमन्दों) के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में	वेशक	और तुम्हारे रंग
वेशक	उस के फ़ज़ल से	और तुम्हारा तलाश करना	और दिन	रात में	तुम्हारा सोना	
विजली	वह दिखाता है तुम्हें	और उस की निशानियों से	23	वह सुनते हैं	उन लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां
ज़मीन	फिर जिन्दा करता है उस से	पानी	आस्मान से	और वह नाज़िल करता है	और उम्मीद के लिए	ख़ौफ़
24	अक़ल से काम लेते हैं	उन लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	इस में	वेशक	उस के मरने के बाद

और जिन लोगों ने कुफ्र किया, और झुटलाया हमारी आयतों को, और मुलाकात को आखिरत की, पस यही लोग अज़ाब में गिरफ्तार किए जाएंगे। (16)

पस तुम अल्लाह की पाकीज़गी बयान करो शाम के वक़्त और सुबह के वक़्त। (17)

और उसी के लिए है तमाम तारीफ़ें आस्मानों में और ज़मीन में, और तीसरे पहर और जुहर के वक़्त। (18)

वह मुर्दा से जिन्दा को निकालता है, और जिन्दा से मुर्दा को निकालता है, और वह जिन्दा करता है ज़मीन को उस के मरने के बाद, और उसी तरह तुम (क़ब्रों से) निकाले जाओगे। (19)

और उस की निशानियों में से है कि उस ने तुम्हें पैदा किया मिट्टी से, फिर नागहां तुम आदमी (जा बजा) फैले हुए। (20)

और उस की निशानियों में से है कि उस ने तुम्हारे लिए पैदा किए तुम्हारी जिनस से जोड़े (बीवियां) ताकि तुम उन के पास सुकून हासिल करो, और उस ने तुम्हारे दरमियान मुहब्बत और रहमत (पैदा) की, बेशक उस में अलबत्ता उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो गौर ओ फ़िक्र करते हैं। (21)

और उस की निशानियों में से है आस्मानों और ज़मीन का पैदा करना और तुम्हारी ज़वानों और तुम्हारे रंगों का सुख़तलिफ़ होना, बेशक उस में दानिशमन्दों के लिए निशानियां हैं। (22)

और उस की निशानियों में से है तुम्हारा सोना रात में और दिन (के वक़्त), और तुम्हारा तलाश करना उस के फ़ज़ल से (रोज़ी), बेशक उस में निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं। (23)

और उस की निशानियों में से है कि वह तुम्हें विजली दिखाता है ख़ौफ़ और उम्मीद के लिए, और वह नाज़िल करता है आस्मान से पानी, फिर उस से ज़मीन को उस के मरने के बाद जिन्दा करता है, बेशक उस में निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो अक़ल से काम लेते हैं। (24)

ع 5

और उस की निशानियों में से है कि उस के हुक्म से ज़मीन और आस्मान काइम है। फिर जब वह एक निदा दे कर तुम्हें ज़मीन से बुलाएगा तो तुम यकवारगी निकल आओगे। (25)

और उस के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में है, सब उसी के फ़रमांबरदार है। (26)

और वही है जो पहली बार ख़लक़्त को पैदा करता है, फिर उस को दोबारा पैदा करेगा, और यह उस पर बहुत आसान है, और उसी की है बुलन्द तर शान आस्मानों में और ज़मीन में, और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (27)

उस ने तुम्हारे लिए तुम्हारे हाल से एक मिसाल बयान की, क्या तुम्हारे लिए है (उन में) से जिन के तुम मालिक हो (तुम्हारे गुलामों में से) उस रिज़्क में कोई शरीक? जो हम ने तुम्हें दिया ताकि तुम सब आपस में बराबर हो जाओ, क्या तुम उन से उस तरह डरते हो जैसे अपनों से डरते हो, उसी तरह हम अक़ल वालों के लिए खोल कर निशानियां बयान करते हैं। (28)

बल्कि पैरवी की ज़ालिमों ने बेजाने अपनी खाहिशात की, तो जिसे अल्लाह गुमराह करे (उसे) कौन हिदायत देगा? और नहीं है उन के लिए कोई मददगार। (29)

पस तुम (अल्लाह) के दीन के लिए (सब से कट कर) यक रूख़ हो कर अपना चेहरा सीधा रखो, अल्लाह की उस फ़ित्तरत पर जिस पर उस ने लोगों को पैदा किया, उस की ख़लक़ (बनाई हुई फ़ित्तरत) में कोई तबदीली नहीं, यह सीधा दीन है, और लेकिन अक़्सर लोग जानते नहीं। (30)

सब उस की तरफ़ रूजूअ करने वाले (रहो) और तुम उसी से डरो, और तुम काइम रखो नमाज़, और तुम शिर्क करने वालों में से न हो। (31)

उन में से जिन्होंने अपना दीन तुकड़े तुकड़े कर लिया, फ़िर्कें फ़िर्कें हो गए। सब के सब ग़िरोह उस पर खुश है जो उन के पास है। (32)

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ تَقُومَ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ بِأَمْرِهِ ثُمَّ إِذَا دَعَاكُمْ							
जब वह तुम्हें बुलाएगा	फिर	उस के हुक्म से	और ज़मीन	आस्मान	काइम है	कि	और उस की निशानियों से
دَعْوَةً مِّنَ الْأَرْضِ إِذَا أَنْتُمْ تَخْرُجُونَ ﴿٢٥﴾ وَلَهُ مَن							
जो	और उस के लिए	25	निकल आओगे	यकवारगी तुम	ज़मीन से	एक निदा	
فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ كُلُّ لَهَا قَنَاطُونَ ﴿٢٦﴾ وَهُوَ الَّذِي يَبْدُؤُا							
पहली बार पैदा करता है	और वही है जो	26	फ़रमांबरदार	सब उसी के लिए	और ज़मीन में	आस्मानों में	
الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ وَلَهُ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ							
बुलन्द तर	शान	और उसी के लिए	उस पर	बहुत आसान	और वह (यह)	फिर उस को दोबारा पैदा करेगा	ख़लक़्त
فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٧﴾ صَرَبَ لَكُمْ							
तुम्हारे लिए	उस ने बयान की	27	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	और ज़मीन	आस्मानों में
مَثَلًا مِّنْ أَنْفُسِكُمْ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ							
तुम्हारे दाएं हाथ (गुलाम)	जो मालिक हुए	से	क्या तुम्हारे लिए	तुम्हारी जानें (हाल)	से	एक मिसाल	
مِّنْ شُرَكَآءَ فِي مَا رَزَقْنَاكُمْ فَأَنْتُمْ فِيهِ سَوَاءٌ تَخَافُونَهُمْ							
(क्या) तुम उन से डरते हो	बराबर	उस में	सो (ताकि) तुम	जो हम ने तुम्हें रिज़्क दिया	में	कोई शरीक	
كَخِيفَتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ كَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٢٨﴾							
28	अक़ल वालों के लिए	निशानियां	हम खोल कर बयान करते हैं	उसी तरह	अपनी जानें (अपनों से)	जैसे तुम डरते हो	
بَلِ اتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَهْوَاءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ فَمَنْ يَهْدِي							
तो कौन हिदायत देगा	इल्म के बग़ैर (बेजाने)	अपनी खाहिशात	जिन लोगों ने जुल्म किया (ज़ालिम)	पैरवी की	बल्कि		
مَنْ أَضَلَّ اللَّهُ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نَّصِيرِينَ ﴿٢٩﴾ فَأَقِمْ وَجْهَكَ							
अपना चेहरा	पस सीधा रखो तुम	29	मददगार	कोई	उन के लिए	और नहीं	गुमराह करे अल्लाह
لِلدِّينِ حَنِيفًا فِطْرَتَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا							
उस पर	लोगों को पैदा किया उस ने	जो (जिस)	फ़ित्तरत अल्लाह की	यक रूख़ हो कर	दीन के लिए		
لَا تَبْدِيلَ لَخَلْقِ اللَّهِ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَكِنَّ							
और लेकिन	दीन सीधा	यह	अल्लाह की ख़लक़ में	तबदीली नहीं			
أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٠﴾ مُبَيِّنِينَ إِلَيْهِ وَاتَّقُوهُ وَأَقِيمُوا							
और काइम रखो तुम	और तुम डरो उस से	उस की तरफ़	रूजूअ करने वाले	30	वह जानते नहीं	अक़्सर लोग	
الصَّلَاةَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٣١﴾ مِنَ الَّذِينَ فَرَّقُوا							
टुकड़े टुकड़े कर लिया	जिन्होंने ने	(उन में) से	31	शिर्क करने वाले	से	और न हो तुम	नमाज़
دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيعًا كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ﴿٣٢﴾							
32	खुश है	उन के पास	उस पर	सब ग़िरोह	फ़िर्कें फ़िर्कें	और हो गए	अपना दीन

٢٨  
٢٩  
٣٠  
٣١  
٣٢

وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ مُنِيبِينَ إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا								
और जब	उस की तरफ	रुजूअ करते हैं	अपने रब को	वह पुकारते हैं	कोई तकलीफ	पहुँचती है लोगों को	और जब	
أَذَاهُمْ مِنْهُ رَحْمَةً إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ﴿٣٣﴾ لِيَكْفُرُوا								
कि नाशुकी करें	33	शरीक करने लगते हैं	अपने रब के साथ	उन में से	एक गिरोह	नागहां	रहमत अपनी तरफ से	वह उन को चखा देता है
بِمَا آتَيْنَهُمْ ۖ فَتَمَتَّعُوا ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾ أَمْ أَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا								
कोई सनद	उन पर	क्या हम ने नाज़िल की	34	तुम जान लोगे	फिर अनकरीब	सो फाइदा उठा लो तुम	उस की जो हम ने दिया	
فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوا بِهِ يُشْرِكُونَ ﴿٣٥﴾ وَإِذَا أَدْفَنَّا النَّاسَ رَحْمَةً								
रहमत	लोग	हम चखाएं	और जब	35	शरीक करते हैं	उस के साथ	हैं	वह जो कि वह बतलाती है
فَرِحُوا بِهَا ۖ وَإِنْ تُصِيبُهُمْ سَيِّئَةٌ مِمَّا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ إِذَا هُمْ يَقْنَطُونَ ﴿٣٦﴾								
36	मायूस हो जाते हैं	नागहां वह	उन के हाथ	आगे भेजा	उस के सबब जो	कोई बुराई	पहुँचे उन्हें	और अगर तो वह खुश हों उस से
أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۗ إِنَّ								
वेशक	और तंग करता है	वह चाहता है	जिस के लिए	रिज़क	कुशादा करता है	कि अल्लाह	क्या उन्होंने ने नहीं देखा	
فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٣٧﴾ فَاتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ								
उस का हक	करावत दार	पस दो तुम	37	उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं	अलबत्ता निशानियां	इस में		
وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ ۗ ذٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يُرِيدُونَ								
वह चाहते हैं	उन लोगों के लिए जो	बेहतर	यह	और मुसाफिर	और मिसकीन			
وَجَهَ اللَّهُ وَأَوْلِيكَ هُمْ الْمُمْلِحُونَ ﴿٣٨﴾ وَمَا آتَيْتُمْ مِنْ رَبِّا لَّيْرُبُوا								
ताकि बढ़े	सूद	से	तुम दो	और जो	38	फलाह पाने वाले	वह और वही लोग	अल्लाह की रज़ा
فِي أَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوا عِنْدَ اللَّهِ ۗ وَمَا آتَيْتُمْ مِنْ زَكٰوَةٍ								
ज़कात	से	और जो तुम दो	अल्लाह के हां	तो नहीं बढ़ता	लोग (जमा)	माल (जमा)	में	
تُرِيدُونَ وَجَهَ اللَّهُ فَأَوْلِيكَ هُمْ الْمُضْعِفُونَ ﴿٣٩﴾ اللَّهُ الَّذِي								
अल्लाह है जिस ने	39	चन्द दर चन्द करने वाले	वह	तो वही लोग	अल्लाह की रज़ा	चाहते हुए		
خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۗ هَلْ مِنْ								
से	क्या	वह तुम्हें ज़िन्दा करेगा	फिर	फिर वह तुम्हें मौत देता है	फिर उस ने तुम्हें रिज़क दिया	पैदा किया तुम्हें		
شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِنْ شَيْءٍ ۗ سُبْحٰنَهُ وَتَعٰلَىٰ عَمَّا								
उस से जो	और बरतर	वह पाक है	कुछ भी	इन (कामों) में से	करे	जो	तुम्हारे शरीक (जमा)	
يُشْرِكُونَ ﴿٤٠﴾ ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ								
कमाया	उस से जो	और दर्या (तरी)	खुशकी में	फ़साद	ज़ाहिर हो गया	40	वह शरीक ठहराते हैं	
أَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيقَهُمْ بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٤١﴾								
41	वाज़ आ जाएं वह	शायद वह	उन्होंने ने किया (आमाल)	वाज़	ताकि वह उन्हें (मज़ा) चखाए	लोगों के हाथ		

और जब लोगों को कोई तकलीफ पहुँचती है तो अपने रब को पुकारते हैं उस की तरफ रुजूअ करते हुए, फिर जब वह उन्हें अपनी तरफ से रहमत (का मज़ा) चखा देता है तो नागहां एक गिरोह (के लोग) उन में से अपने रब के साथ शरीक करने लगते हैं। (33) कि वह उसकी नाशुकी करें जो हम ने उन्हें दिया, सो तुम (चन्द रोज़) फाइदा उठा लो, फिर अनकरीब (तुम उसका अनज़ाम) जान लोगे। (34) क्या हम ने उन पर कोई सनद नाज़िल की? कि वह बतलाती है जो उस के साथ यह शरीक करते हैं। (35) और जब हम चखाएं लोगों को (रहमत का मज़ा) तो उस से खुश हों, और अगर उन्हें उस के सबब कोई बुराई पहुँचे जो उन के हाथों ने आगे भेजा (उन के आमाल से) तो वह नागहां मायूस हो जाते हैं। (36) क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि अल्लाह जिस के लिए चाहता है रिज़क कुशादा करता है (और जिस के लिए चाहता है) तंग करता है, वेशक जो लोग ईमान रखते हैं उन के लिए इस में निशानियां हैं। (37) पस तुम करावतदारों को उस का हक दो और मोहताज और मुसाफिर को, यह उन के लिए बेहतर है जो अल्लाह की रज़ा चाहते हैं, और वही लोग फलाह (दो जहानों की कामयाबी) पाने वाले हैं। (38) और जो तुम सूद दो कि लोगों के माल बढ़ें (इज़ाफा हो) तो (यह) अल्लाह के हां नहीं बढ़ता और जो तुम अल्लाह की रज़ा चाहते हुए ज़कात देते हो तो यही लोग हैं (अपना माल और अजर) चन्द दर चन्द करने वाले। (39) अल्लाह ही है जिस ने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम्हें रिज़क दिया, फिर वह तुम्हें मौत देता है फिर वह तुम्हें ज़िन्दा करेगा, क्या तुम्हारे शरीकों में से (कोई है) जो उन कामों में से कुछ भी करे? वह पाक है और बरतर उस से जो वह शरीक ठहराते हैं। (40) फ़साद खुशकी और तरी में ज़ाहिर हो गया (फ़ैल गया) उस से जो कमाया लोगों के हाथों ने (उन के आमाल के सबब) ताकि वह उन के वाज़ आमाल का मज़ा उन्हें चखाए, शायद वह वाज़ आ जाएं। (41)

आप (स) फ़रमा दें तुम ज़मीन में चलो फिरो, फिर तुम देखो उन का अनजाम कैसा हुआ जो पहले थे, उन के अक्सर शिर्क करने वाले थे। (42)

पस अपना चेहरा दिने रास्त की तरफ़ सीधा रखो इस से क़ब्ल कि वह दिन आ जाए जिस को टलना नहीं अल्लाह (की तरफ) से, उस दिन (सब) जुदा जुदा हो जाएंगे। (43)

जिस ने कुफ़ किया तो उस पर पड़ेगा उस के कुफ़ (का ववाल), और जिस ने अच्छे अ़मल किए तो वह अपने लिए सामान कर रहे हैं। (44)

ताकि (अल्लाह) अपने फ़ज़ल से उन लोगों को जज़ा दे जो ईमान लाए, और उन्होंने ने अच्छे अ़मल किए, वेशक अल्लाह काफ़िरों को पसंद नहीं करता। (45)

और उस की निशानियों में से है कि वह भेजता है हवाएं खुशख़बरी देने वाली, और ताकि वह तुम्हें अपनी रहमत का मज़ा चखाए, और ताकि कशतियां उस के हुक्म से चलें, और ताकि तुम तलाश करो उस का फ़ज़ल (रिज़्क) और ताकि तुम शुक्र करो। (46)

और तहकीक़ हम ने आप (स) से पहले बहुत से रसूल भेजे उन की कौमों की तरफ़, पस वह उन के पास खुली निशानियों के साथ आए, फिर हम ने मुजरिमों से इन्तिका़म लिया और हमारे ज़िम्मे है मोमिनो की मदद करना। (47)

अल्लाह (ही है) जो हवाएं भेजता है, तो वह बादल उभारती है, फिर वह फैलाता है बादल, आस्मान में जैसे वह चाहता है और वह उस (बादल) को टुकड़े टुकड़े कर देता है, फिर तू देखे कि उस के दरमियान से मीनह निकलता है, फिर वह अपने बन्दों में से जिसे चाहे वह पहुँचा देता है, तो वह अचानक खुशियां मनाने लगते हैं। (48)

अगरचे उस से क़ब्ल कि (बारिश) उन पर नाज़िल हो वह पहले ही से मायूस हो रहे थे। (49)

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ

आप (स) फ़रमा दें	तुम चलो फिरो	में	ज़मीन	फिर तुम देखो	कैसा	हुआ	अनजाम	उन का जो
------------------	--------------	-----	-------	--------------	------	-----	-------	----------

مِنْ قَبْلُ كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُشْرِكِينَ ﴿٤٢﴾ فَأَقِمْ وَجْهَكَ

पहले (थे)	थे	उन के अक्सर	शिर्क करने वाले	42	पस सीधा रखो	अपना चेहरा
-----------	----	-------------	-----------------	----	-------------	------------

لِلَّذِينَ الْأَقِيمِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ يَوْمَئِذٍ

दिने रास्त के लिए (तरफ)	इस से क़ब्ल	कि	आ जाए	वह दिन	टलना नहीं	उस के लिए (जिस को)	अल्लाह से	उस दिन
-------------------------	-------------	----	-------	--------	-----------	--------------------	-----------	--------

يَصْدَعُونَ ﴿٤٣﴾ مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا

जुदा जुदा हो जाएंगे	43	जिस ने कुफ़ किया	तो उसी पर	उस का कुफ़	और जिस ने किए	अच्छे अ़मल
---------------------	----	------------------	-----------	------------	---------------	------------

فَلَا تَنْفَسُهُمْ يَمْهَدُونَ ﴿٤٤﴾ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

तो वह अपने लिए	सामान कर रहे हैं	44	ताकि जज़ा दे वह	उन लोगों को जो ईमान लाए	और उन्होंने ने अच्छे अ़मल किए
----------------	------------------	----	-----------------	-------------------------	-------------------------------

مِنْ فَضْلِهِ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ﴿٤٥﴾ وَمِنْ آيَاتِهِ

से	अपना फ़ज़ल	वेशक वह	पसंद नहीं करता	काफ़िर (जमा)	45	और उस की निशानियों से
----	------------	---------	----------------	--------------	----	-----------------------

أَنْ يُرْسِلَ الرِّيحَ مُبَشِّرَاتٍ وَلِيُذِيقَكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَلِتَجْرِيَ

कि वह भेजता है	हवाएं	खुशख़बरी देने वाली	और ताकि वह तुम्हें चखाए	से (का) अपनी रहमत	और ताकि चलें
----------------	-------	--------------------	-------------------------	-------------------	--------------

الْفُلُكُ بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلِعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٤٦﴾

कशतियां	उस के हुक्म से	और ताकि तुम तलाश करो	से	उस का फ़ज़ल	और ताकि तुम	तुम शुक्र करो	46
---------	----------------	----------------------	----	-------------	-------------	---------------	----

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمْ

और तहकीक़ हम ने भेजे	आप (स) से पहले	बहुत से रसूल	तरफ़	उन की कौमों	पस वह उन के पास आए
----------------------	----------------	--------------	------	-------------	--------------------

بِالْبَيِّنَاتِ فَاذْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِينَ أَجْرَمُوا وَكَانَ حَقًّا

खुली निशानियों के साथ	फिर हम ने इन्तिका़म लिया	से	वह जिन्होंने ने जुर्म किया (मुजरिम)	और है	हक़ (ज़िम्मे)
-----------------------	--------------------------	----	-------------------------------------	-------	---------------

عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾ اللَّهُ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيحَ

हम पर (हमारा)	मदद	मोमिनीन	47	अल्लाह	जो भेजता है	हवाएं
---------------	-----	---------	----	--------	-------------	-------

فَتَشِيرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهُ فِي السَّمَاءِ كَيْفَ يَشَاءُ وَيَجْعَلُهُ

तो वह उभारती है	बादल	फिर वह (बादल) फैलाता है	आस्मान में	जैसे	वह चाहता है	और वह उसे कर देता है
-----------------	------	-------------------------	------------	------	-------------	----------------------

كَيْفَ يَشَاءُ فَإِذَا أَصَابَ بِهِ

टुकड़े टुकड़े	फिर तू देखे	वारिश की वूद	निकलती है	उस के दरमियान से	फिर जब	वह उसे पहुँचा देता है
---------------	-------------	--------------	-----------	------------------	--------	-----------------------

مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادَةٍ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٤٨﴾ وَإِنْ كَانُوا

जिसे वह चाहता है	से	अपने बन्दों	अचानक वह	खुशियां मनाने लगते हैं	48	और अगरचे	थे
------------------	----	-------------	----------	------------------------	----	----------	----

مِنْ قَبْلِ أَنْ يُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ مِنْ قَبْلِهِ لَمُبْلِسِينَ ﴿٤٩﴾

उस से क़ब्ल	कि वह नाज़िल हो	उन पर	पहले (ही) से	अलवत्ता मायूस (जमा)	49
-------------	-----------------	-------	--------------	---------------------	----

فَانظُرْ إِلَىٰ آثَرِ رَحْمَتِ اللَّهِ كَيْفَ يُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۗ						
उस के मरने के बाद	ज़मीन	वह कैसे ज़िन्दा करता है	अल्लाह की रहमत	आसार	तरफ़	पस देख तो
إِنَّ ذَٰلِكَ لَمُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٥٠﴾						
और अगर	50	कुदरत रखने वाला	हर शै	पर	और वह	मुर्दे
अलबत्ता ज़िन्दा करने वाला	वही	वेशक				
أَرْسَلْنَا رِيحًا فَرَأَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوا مِنْ بَعْدِهِ يَكْفُرُونَ ﴿٥١﴾						
पस वेशक आप (स)	51	नाशुक्री करने वाले	उस के बाद	ज़रूर हो जाएं	ज़र्द शुदा	फिर वह उसे देखें
हवा	हम भेजें					
لَا تَسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تَسْمِعُ الضَّمَمِ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ﴿٥٢﴾						
52	पीठ दे कर	जब वह फिर जाएं	आवाज़	वहरों	सुना सकते	और नहीं
मुर्दाँ	नहीं सुना सकते					
وَمَا أَنْتَ بِهَادٍ الْعُمَىٰ عَنْ ضَلَّتِهِمْ ۗ إِنَّ تَسْمِعَ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ						
जो ईमान लाता है	मगर	आप नहीं सुना सकते	उस की गुमराही से	अन्धा	हिदायत देने वाले	और आप (स) नहीं
بِآيَاتِنَا فَهُمْ مُسْلِمُونَ ﴿٥٣﴾						
कमज़ोरी	से (में)	वह जिस ने तुम्हें पैदा किया	अल्लाह	53	फरमांवरदार (जमा)	पस वह
हमारी आयतों पर						
ثُمَّ جَعَلْنَا مِنْ بَعْدِ ضَعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلْنَا مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ ضَعْفًا وَشَيْبَةً يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۗ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ ﴿٥٤﴾						
कुव्वत	बाद	फिर उस ने कर दिया	कुव्वत	कमज़ोरी	बाद	उस ने बनाया-दी
फिर						
وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُونَ مَا لَبِثُوا غَيْرَ سَاعَةٍ ۗ						
एक घड़ी से ज़ियादा	वह नहीं रहे	मुज़रिम (जमा)	कसम खाएंगे	क़ियामत	क़ाइम होगी	और जिस दिन
كَذَٰلِكَ كَانُوا يُؤْفَكُونَ ﴿٥٥﴾						
इल्म दिया गया	वह लोग जिन्हें	और कहा-कहेंगे	55	औन्धे जाते	वह थे	उसी तरह
وَالْإِيمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَىٰ يَوْمِ الْبَعْثِ فَهَٰذَا						
पस यह है	जी उठने का दिन	तक	में (मुताबिक) नविशताएँ इलाही	यकीनन तुम रहे हो	और ईमान	
يَوْمَ الْبَعْثِ وَلَكِنَّكُمْ كُنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٥٦﴾						
नफ़ा न देगी	पस उस दिन	56	न जानते थे	तुम	और लेकिन	जी उठने का दिन
الَّذِينَ ظَلَمُوا مَعَذَرْتَهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٥٧﴾						
और तहकीक़ हम ने बयान की	57	राज़ी करना चाहा जाएगा	और न वह	उन की माज़िरत	जिन्होंने ने जुल्म किया	वह लोग जो
لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۗ وَلَسِنُ جِئْتَهُمْ بِآيَةٍ						
तुम लाओ उन के पास कोई निशानी	और अगर	मिसालें	हर किस्म	इस कुरआन	में	लोगों के लिए
لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ أَنُتُمْ إِلَّا مُبْطِلُونَ ﴿٥٨﴾						
58	झूट बनाते हो	मगर (सिर्फ)	तुम नहीं हो	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	तो ज़रूर कहेंगे	

पस तू आसार (निशानियों) की तरफ़ देख अल्लाह की रहमत के, वह कैसे ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िन्दा करता है! वेशक वही मुर्दाँ को ज़िन्दा करने वाला है, और वह हर शै पर कुदरत रखने वाला है। (50)

और अगर हम हवा भेजें, फिर वह उसे ज़र्द शुदा देखें तो वह ज़रूर हो जाएं उस के बाद नाशुक्री करने वाले। (51)

पस वेशक आप (स) न मुर्दाँ को सुना सकते हैं और न वहरों को आवाज़ सुना सकते हैं, जब वह पीठ दे कर फिर जाएं। (52)

आप (स) नहीं अँधे को उस की गुमराही से हिदायत देने वाले, नहीं सुना सकते मगर (सिर्फ़ उसे) जो हमारी आयतों पर ईमान लाता है, पस वही फरमांवरदार है। (53)

अल्लाह ही है वह जिस ने तुम्हें कमज़ोरी से पैदा किया, फिर कमज़ोरी के बाद कुव्वत, फिर कुव्वत के बाद कमज़ोरी और बुद्धापा दिया, वह जो चाहता है पैदा करता है, और वह इल्म वाला कुदरत वाला है। (54)

और जिस दिन क़ियामत काइम होगी कसम खाएंगे मुज़रिम कि वह एक घड़ी से ज़ियादा नहीं रहे, इसी तरह वह औन्धे जाते थे। (55)

और वह कहेंगे जिन्हें इल्म और ईमान दिया गया: यकीनन तुम किताबे ईलाही के मुताबिक़ जी उठने के दिन तक रहे हो, पस यह है जी उठने का दिन, लेकिन तुम न जानते थे। (56)

पस उस दिन नफ़ा न देगी उन लोगों को उन की माज़िरत (उज़र ख़ाही) जिन्होंने ने जुल्म किया, और न उन से (अल्लाह को) राज़ी करना चाहा जाएगा। (57)

और तहकीक़ हम ने बयान की लोगों के लिए इस कुरआन में हर किस्म की मिसालें, और अगर तुम उन के पास कोई निशानी लाओ तो काफ़िर ज़रूर कहेंगे, तुम सिर्फ़ झूट बनाते हो। (58)

इसी तरह अल्लाह उन के दिलों पर मुहर लगा देता है जो समझ नहीं रखते। (59)

आप (स) सब्र करें, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है और जो लोग यकीन नहीं रखते वह किसी तौर आप को सुबुक (बरदाशत न करने वाला-ओछा) न कर दें। (60)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है अलिफ-लाम-मीम। (1)

यह आयतें हैं पुर हिक्मत किताब की। (2)

हिदायत और रहमत हैं नेकोकारों के लिए। (3)

जो लोग नमाज़ काइम करते हैं, और ज़कात अदा करते हैं, और वह आखिरत पर यकीन रखते हैं। (4)

यही लोग अपने रब (की तरफ) से हिदायत पर हैं और यही लोग फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) पाने वाले हैं। (5)

और लोगों में से कोई ऐसा (बद नसीब भी) है जो ख़रीदता है बेहूदा बातें ताकि वह बेसमझे अल्लाह के रास्ते से गुमराह कर दे, और वह उसे हँसी मज़ाक ठहराते हैं, यही लोग हैं जिन के लिए ज़िल्लत वाला अज़ाब है। (6)

और जब उस पर हमारी आयतें पढ़ी (सुनाई) जाती हैं तो तकबुर करते हुए मुँह मोड़ लेता है गोया उस ने उसे सुना ही नहीं, गोया उस के कानों में गिरानी (बहरापन) है, पस उसे दर्दनाक अज़ाब की खुशख़बरी दो। (7)

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हें ने अच्छे अमल किए, उन के लिए नेमतों के बागात हैं। (8)

उन में वह हमेशा रहेंगे, अल्लाह का वादा सच्चा है, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (9)

उस ने सुतून के वग़ैर आस्मानों को पैदा किया, तुम उन्हें देखते हो, और उस ने डाले ज़मीन में पहाड़ कि तुम्हारे साथ झुक न जाए, और उस ने उस में हर किस्म के जानवर फैलाए, और हम ने उतारा आस्मान से पानी, फिर हम ने उस में उगाए हर किस्म के उमदा जोड़े। (10)

كذالك يَطْبَعُ اللهُ عَلَى قُلُوبِ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٩﴾

59	समझ नहीं रखते	जो लोग	दिल (जमा)	पर	अल्लाह मुहर लगा देता है	उसी तरह
----	---------------	--------	-----------	----	-------------------------	---------

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللهِ حَقٌّ وَلَا يَسْتَخِفُّكَ الَّذِينَ لَا يُوقِنُونَ ﴿٦٠﴾

60	यकीन नहीं रखते	जो लोग	और वह हरगिज़ हलका न पाएँ आप को	सच्चा	अल्लाह का वादा	बेशक	पस आप सब्र करें
----	----------------	--------	--------------------------------	-------	----------------	------	-----------------

آيَاتُهَا ٣٤ ﴿٣١﴾ سُورَةُ لُقْمَانَ ﴿٤﴾ زُكُورَاتُهَا ٤

रुक़आत 4

(31) सूरह लुकमान

आयात 34

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

الْم ﴿١﴾ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ﴿٢﴾ هُدًى وَرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِينَ ﴿٣﴾

3	नेकोकारों के लिए	और रहमत	हिदायत	2	पुर हिक्मत किताब	आयतें	यह	1	अलिफ लाम मीम
---	------------------	---------	--------	---	------------------	-------	----	---	--------------

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ

आखिरत पर	और वह	ज़कात	और अदा करते हैं	नमाज़	काइम करते हैं	जो लोग
----------	-------	-------	-----------------	-------	---------------	--------

هُمْ يُوقِنُونَ ﴿٤﴾ أُولَئِكَ عَلَى هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٥﴾

5	फ़लाह पाने वाले	वह	और यही लोग	अपने रब से	हिदायत	पर	यही लोग	4	वह यकीन रखते हैं
---	-----------------	----	------------	------------	--------	----	---------	---	------------------

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَشْتَرِي لَهْوَ الْحَدِيثِ لِيُضِلَّ عَن سَبِيلِ اللهِ

अल्लाह का रास्ता	से	ताकि वह गुमराह करे	खेल की (बेहूदा) बातें	ख़रीदता है	जो	लोग	और से
------------------	----	--------------------	-----------------------	------------	----	-----	-------

بِغَيْرِ عِلْمٍ وَيَتَّخِذَهَا هُزُوًا أُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٦﴾

6	ज़िल्लत वाला अज़ाब	उन के लिए	यही लोग	हँसी मज़ाक	और वह उसे ठहराते हैं	वे समझे
---	--------------------	-----------	---------	------------	----------------------	---------

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا وَئِي مُسْتَكْبِرًا كَانُوا لَمْ يَسْمَعُهَا كَانُوا

गोया	उस ने उसे सुना नहीं	गोया	तकबुर करते हुए	वह मुँह मोड़ लेता है	हमारी आयतें	पढ़ी जाती है उस पर	और जब
------	---------------------	------	----------------	----------------------	-------------	--------------------	-------

فِي أذُنَيْهِ وَقَرَأَ فَبَشَّرَهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٧﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا

और उन्होंने ने अमल किए	ईमान लाए	बेशक जो लोग	7	दर्दनाक	अज़ाब की	पस उसे खुशख़बरी दो	गिरानी	उस के कानों में
------------------------	----------	-------------	---	---------	----------	--------------------	--------	-----------------

الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتُ النَّعِيمِ ﴿٨﴾ خَالِدِينَ فِيهَا وَعَدَّ اللهُ حَقًّا

सच्चा	अल्लाह का वादा	उस में	हमेशा रहेंगे	8	नेमतों के बागात	उन के लिए	अच्छे
-------	----------------	--------	--------------	---	-----------------	-----------	-------

وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٩﴾ خَلَقَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَالْقَىٰ

और उस ने डाले	तुम उन्हें देखते हो	वग़ैर सुतून	आस्मान (जमा)	उस ने पैदा किया	9	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह
---------------	---------------------	-------------	--------------	-----------------	---	-------------	--------	-------

فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيًا أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيهَا مِن كُلِّ دَابَّةٍ

जानवर	हर किस्म	उस में	और फैलाए	झुक (न) जाए तुम्हारे साथ	कि	पहाड़ (जमा)	ज़मीन में
-------	----------	--------	----------	--------------------------	----	-------------	-----------

وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ﴿١٠﴾

10	उमदा	जोड़े	हर किस्म	उस में	फिर हम ने उगाए	पानी	आस्मान से	और हम ने उतारा
----	------	-------	----------	--------	----------------	------	-----------	----------------

هَذَا خَلْقُ اللَّهِ فَأَرُونِي مَاذَا خَلَقَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ بَلِ							
बल्कि	उस के सिवा	वह जो	पैदा किया	क्या	पस तुम मुझे दिखाओ	खलकत (बनाया हुआ) अल्लाह का	यह
الظَّالِمُونَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿١١﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا لُقْمَانَ الْحِكْمَةَ أَنْ اشْكُرْ							
तुम शुक्र करो	कि	हिक्मत	लुकमान	और अलबत्ता हम ने दी	11	खुली गुमराही	में जालिम (जमा)
لِلَّهِ وَمَنْ يَشْكُرْ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ							
बेनियाज़	तो बेशक अल्लाह	और जिस ने नाशुकी की	अपने लिए	वह शुक्र करता है	तो इस के सिवा नहीं (सिर्फ)	शुक्र करता है	और अल्लाह का जो
حَمِيدٌ ﴿١٢﴾ وَإِذْ قَالَ لُقْمَانُ لِابْنِهِ وَهُوَ يَعِظُهُ يَا بُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللَّهِ							
अल्लाह के साथ	तू न शरीक ठहरा	ऐ मेरे बेटे	उसे नसीहत कर रहा था	और वह	अपने बेटे को	लुकमान	कहा और जब 12 तारीफों के साथ
إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ ﴿١٣﴾ وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حَمَلَتْهُ							
उसे पेट में रखा	उस के माँ बाप के बारे में	इन्सान	और हम ने ताकीद कर दी	13	अलबत्ता जुल्मे अज़ीम	बेशक शिर्क	
أُمُّهُ وَهَنَّا عَلَىٰ وَهْنٍ وَفِضْلُهُ فِي عَامَيْنِ أَنْ اشْكُرْ لِي وَلِوَالِدَيْكَ							
और अपने माँ बाप का	कि तू मेरा शुक्र कर	दो साल में	और उस का दूध छुड़ाना	पर कमज़ोरी	कमज़ोरी	उस की माँ	
إِلَى الْمَصِيرِ ﴿١٤﴾ وَإِنْ جَاهَدَكَ عَلَىٰ أَنْ تُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ							
तुझे	जिस का नहीं	मेरा	कि तू शरीक ठहराए	पर (की)	वह तेरे साथ कोशिश करें	और अगर 14	लौट कर आना मेरी तरफ
بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبُهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا وَاتَّبِعْ							
और तू पैरवी कर	अच्छे तरीके से	दुनिया में	और उन के साथ बसर कर	तू उन दोनों का कहा न मान	कोई इल्म	उस का	
سَبِيلَ مَنْ أَنَابَ إِلَيَّ ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا							
जो कुछ	सो मैं तुम्हें आगाह करूँगा	तुम्हें लौट कर आना है	मेरी तरफ	फिर मेरी तरफ	रुजूअ करे	जो	रासता
كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٥﴾ يُبْنَىٰ إِنَّهَا إِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ							
राई	से (के)	वज़न (बराबर) दाना	अगर हो	बेशक वह	ऐ मेरे बेटे 15	तुम करते थे	
فَتَكُنْ فِي صَخْرَةٍ أَوْ فِي السَّمَوَاتِ أَوْ فِي الْأَرْضِ يَأْتِ بِهَا							
ले आएगा उसे	ज़मीन में	या	आस्मानों में	या	सख्त पत्थर	में	फिर वह हो
اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ﴿١٦﴾ يُبْنَىٰ أَقِمِ الصَّلَاةَ وَأْمُرْ							
और हुक्म दे	काइम कर नमाज़	ऐ मेरे बेटे	16	खबरदार	बारीक वीन	बेशक अल्लाह	अल्लाह
بِالْمَعْرُوفِ وَإِنَّهُ عَنِ الْمُنْكَرِ وَأَصْبِرْ عَلَىٰ مَا أَصَابَكَ							
जो तुझ पर पहुँचे	पर	और सब्द कर	बुरी बात	से	और रोक तू	अच्छे काम	
إِنَّ ذَلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ﴿١٧﴾ وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ							
लोगों से	अपना रूख़सार	और तू टेढ़ा न कर	17	बड़ी हिम्मत के काम	से	बेशक यह	
وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرْحًا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ﴿١٨﴾							
18	खुद पसंद	इतराने वाले	हर किसी	पसंद नहीं करता	बेशक अल्लाह	इतराता	ज़मीन में और न चल तू

यह अल्लाह का बनाया हुआ है, पस तुम मुझे दिखाओ क्या पैदा किया उन्होंने ने जो उस के सिवा है, बल्कि जालिम खुली गुमराही में है। (11) और अलबत्ता हम ने दी लुकमान को हिक्मत, (और फ़रमाया) कि तुम अल्लाह का शुक्र करो, और जो शुक्र करता है तो वह सिर्फ अपने (ही भले के) लिए करता है, और जिस ने नाशुकी की तो बेशक अल्लाह बेनियाज़, तारीफों के साथ है। (12) और (याद करो) जब लुकमान ने अपने बेटे को कहा और वह उसे नसीहत कर रहा था, ऐ मेरे बेटे! तू अल्लाह के साथ शरीक न ठहरा, बेशक शिर्क एक जुल्मे अज़ीम है। (13)

और हम ने इन्सान को ताकीद की उस के माँ बाप के बारे में (हुस्ने सुलूक की) उस की माँ ने कमज़ोरी पर कमज़ोरी (झेलते हुए) उसे पेट में रखा, और दो साल में उस का दूध छुड़ाया, कि मेरा शुक्र कर और अपने माँ बाप का, मेरी तरफ (ही) लौट कर आना है। (14) और अगर वह दोनों तेरे साथ कोशिश करें कि तू मेरा शरीक ठहराए, जिस का तुझे कोई इल्म (सनद) नहीं तो उन का कहा न मान, और दुनिया (के मामलात) में उन के साथ अच्छे तरीके से बसर कर, और उस के रास्ते की पैरवी कर जो रुजूअ करे मेरी तरफ, फिर तुम्हें मेरी तरफ ही लौट कर आना है, सो मैं तुम्हें आगाह करूँगा जो कुछ तुम करते थे। (15)

ऐ मेरे बेटे! अगर (कोई चीज़) एक राई के दाने के बराबर (भी) हो, फिर वह किसी सख्त पत्थर (चटान) में (पोशीदा) हो, या आस्मानों में, या ज़मीन में (पोशीदा) हो,

अल्लाह उसे ले आएगा (हाज़िर कर देगा), बेशक अल्लाह बारीक वीन, वाख़बर है। (16)

ऐ मेरे बेटे! नमाज़ काइम कर, और अच्छे कामों का हुक्म दे, और तू बुरी बातों से रोक और तुझ पर जो (उफ़ताद) पहुँचे उस पर सब्द कर, बेशक यह बड़ी हिम्मत के कामों में से है। (17)

और तू लोगों से (बात करते हुए) अपना रूख़सार न टेढ़ा कर, और ज़मीन में इतराता हुआ न चल, बेशक अल्लाह पसंद नहीं करता किसी इतराने वाले, खुद पसंद को। (18)

और अपनी रफ्तार में मियाना रवी (इख्तियार) कर, और अपनी आवाज़ को पस्त रख, बेशक आवाज़ों में सब से नापसंदीदा आवाज़ गधे की है। (19)

क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए मुसख़्खर किया है जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ ज़मीन में है, और उस ने तुम्हें अपनी ज़ाहिर और पोशीदा नेमतें भरपूर दीं, और लोगों में बाज़ (ऐसे हैं) जो अल्लाह के वारे में झगड़ते हैं वग़ैर इल्म, वग़ैर हिदायत और वग़ैर रोशन किताब के। (20)

और जब उन से कहा जाए, जो अल्लाह ने नाज़िल किया है तुम उस की पैरवी करो तो वह कहते हैं बल्कि हम उस की पैरवी करेंगे जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया है, क्या (उस सूरत में भी कि) अगर शैतान उन को दोज़ख़ के अज़ाब की तरफ़ बुलाता हो? (21)

और जो झुका दे चेहरा (सरे तसलीम ख़म कर दे) अल्लाह की तरफ़, और वह नेकोकार हो, तो बेशक उस ने मज़बूत हल्का (दस्त आवेज़) थाम लिया, और अल्लाह की तरफ़ (ही) तमाम कामों की इन्तिहा है। (22)

और जो कुफ़ करे तो उस का कुफ़ आप (स) को ग़मगीन न कर दे, उन्हें हमारी तरफ़ (ही) लौटना है, फिर हम उन्हें ज़रूर जतलाएंगे जो वह करते थे, बेशक अल्लाह दिलों के भेद जानने वाला है। (23)

हम उन्हें थोड़ा (चन्द रोज़ा) फ़ाइदग देंगे, फिर उन्हें खींच लाएंगे सख़्त अज़ाब की तरफ़। (24)

और अगर तुम उन से पूछो: किस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया? तो वह यकीनन कहेंगे

“अल्लाह”। आप (स) फ़रमा दें तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, बल्कि उन के अक्सर नहीं जानते। (25)

अल्लाह ही के लिए है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है, बेशक अल्लाह बेनियाज़, तारीफ़ों के क़ाबिल। (26)

और अगर यह हो कि ज़मीन में जो भी दरख़्त है क़लम बन जाएं और समन्दर उस की सियाही (बन जाएं) और उस के बाद सात समन्दर

(और हों) तो भी अल्लाह की बातें ख़तम न हों, बेशक अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (27)

وَاقْصِدْ فِي مَشْيِكَ وَاعْصُصْ مِنْ صَوْتِكَ إِنَّ أَنْكَرَ الْأَصْوَاتِ

आवाज़ें	सब से नापसंदीदा	बेशक	अपनी आवाज़ को	और पस्त कर	अपनी रफ्तार में	और मियाना रवी कर
---------	-----------------	------	---------------	------------	-----------------	------------------

لصَوْتِ الْحَمِيرِ (١٩) أَلَمْ تَرَوْا أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا

और जो कुछ	आस्मानों में	जो कुछ	तुम्हारे लिए	मुसख़्खर किया	कि अल्लाह	क्या तुम ने नहीं देखा	19	गधा	आवाज़
-----------	--------------	--------	--------------	---------------	-----------	-----------------------	----	-----	-------

فِي الْأَرْضِ وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهُ ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً وَمِنَ النَّاسِ

लोग	और बाज़	और पोशीदा	ज़ाहिर	अपनी नेमतें	तुम पर (तुम्हें)	और भरपूर दें	ज़मीन में
-----	---------	-----------	--------	-------------	------------------	--------------	-----------

مَنْ يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُنِيرٍ (٢٠)

20	और वग़ैर किताबों रोशन	और वग़ैर हिदायत	इल्म	वग़ैर	अल्लाह (के वारे में)	झगड़ता है	जो
----	-----------------------	-----------------	------	-------	----------------------	-----------	----

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا

जो हम ने पाया	बल्कि हम पैरवी करेंगे	वह कहते हैं	नाज़िल किया अल्लाह	जो	तुम पैरवी करो	उन से	कहा जाए	और जब
---------------	-----------------------	-------------	--------------------	----	---------------	-------	---------	-------

عَلَيْهِ آبَاءَنَا أَوْلَوْ كَانِ الشَّيْطَانُ يَدْعُوهُمْ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ (٢١)

21	दोज़ख़	अज़ाब	तरफ़	उन को बुलाता	शैतान	हो	क्या अगर	अपने बाप दादा	उस पर
----	--------	-------	------	--------------	-------	----	----------	---------------	-------

وَمَنْ يُسَلِّمْ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ

तो बेशक उस ने थामा	नेकोकार	और वह	अल्लाह की तरफ़	अपना चेहरा	झुका दे	और जो
--------------------	---------	-------	----------------	------------	---------	-------

بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ وَإِلَى اللَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ (٢٢) وَمَنْ كَفَرَ

और जो कुफ़ करे	22	तमाम काम (जमा)	इन्तिहा	और अल्लाह की तरफ़	हल्का मज़बूत
----------------	----	----------------	---------	-------------------	--------------

فَلَا يَحْزَنكَ كُفْرُهُ إِيَّا نَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا إِنَّ اللَّهَ

बेशक अल्लाह	वह करते थे	फिर हम उन्हें ज़रूर जतलाएंगे जो वह जो	उन का लौटना	हमारी तरफ़	उस का कुफ़	तो आप (स) को ग़मगीन न कर दे
-------------	------------	---------------------------------------	-------------	------------	------------	-----------------------------

عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ (٢٣) نُمَتِّعُهُمْ قَلِيلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ إِلَىٰ

तरफ़	फिर हम उन्हें खींच लाएंगे	थोड़ा	हम उन्हें फ़ाइदा देंगे	23	सीनों (दिलों) के भेद	जानने वाला
------	---------------------------	-------	------------------------	----	----------------------	------------

عَذَابٍ غَلِيظٍ (٢٤) وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ

और ज़मीन	आस्मानों (को)	किस ने पैदा किया	तुम उन से पूछो	और अगर	24	सख़्त	अज़ाब
----------	---------------	------------------	----------------	--------	----	-------	-------

لَيَقُولَنَّ اللَّهُ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ (٢٥) اللَّهُ مَا

अल्लाह के लिए जो कुछ	25	जानते नहीं	बल्कि उन के अक्सर	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	फ़रमा दें	तो वह यकीनन कहेंगे “अल्लाह”
----------------------	----	------------	-------------------	-----------------------------	-----------	-----------------------------

فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ (٢٦) وَلَوْ أَنَّمَا

यह हो कि जो	और अगर	26	तारीफ़ों के क़ाबिल	बेनियाज़	वह	बेशक अल्लाह	और ज़मीन	आस्मानों में
-------------	--------	----	--------------------	----------	----	-------------	----------	--------------

فِي الْأَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ أَقْلَامٌ وَالْبَحْرُ يَمُدُّهُ مِنْ بَعْدِهِ

उस के बाद	उस की सियाही	और समन्दर	क़लम	दरख़्त	से-कोई	ज़मीन	में
-----------	--------------	-----------	------	--------	--------	-------	-----

سَبْعَةُ أَبْحُرٍ مَّا نَفَدَتْ كَلِمَتُ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ (٢٧)

27	हिक्मत वाला	ग़ालिब	बेशक अल्लाह	अल्लाह की बातें	तो भी ख़तम न हों	समन्दर (जमा)	सात
----	-------------	--------	-------------	-----------------	------------------	--------------	-----

٢٨  
١١



مَا خَلَقَكُمْ وَلَا بَعَثَكُمْ إِلَّا كَنَفْسٍ وَاحِدَةً إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ (28)							
28	देखने वाला	सुनने वाला	वेशक अल्लाह	जैसे एक शख्स	मगर	और नहीं तुम्हारा जी उठाना	नहीं तुम सब का पैदा करना
أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ							
रात में	दिन	और दाखिल करता है	दिन में	रात	दाखिल करता है	कि अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा
وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى وَأَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ (29)							
और यह कि अल्लाह	मुकर्ररा	मुद्दत	तरफ	चलता रहेगा	हर एक	और चाँद	सूरज और उस ने मुसख़र किया
بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ (29) ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ							
वह परसतिश करते हैं	जो-जिस	और यह कि	वही वरहक	इस लिए कि अल्लाह	यह	29	खबरदार उस से जो कुछ तुम करते हो
مِنْ دُونِهِ الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ (30) أَلَمْ تَرَ أَنَّ							
कि	क्या तू ने नहीं देखा	30	बड़ाई वाला	बुलन्द मरतवा	वही	और यह कि अल्लाह	बातिल उस के सिवा
الْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللَّهِ لِيُرِيَكُمْ مِنْ آيَاتِهِ إِنَّ							
वेशक	उस की निशानियाँ	ताकि वह तुम्हें दिखा दे	अल्लाह की नेमतों के साथ	दर्या में	चलती है	कशती	
فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ (31) وَإِذَا غَشِيَهُمْ مَوَّجٌ كَالظَّلِيلِ							
साइवानों की तरह	मौज	उन पर छा जाती है	और जब	31	बड़े शुक गुज़ार	बड़े सबर वाले	वास्ते हर अलबत्ता निशानियाँ उस में
دَعَوْا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ							
खुशकी की तरफ	उस ने उन्हें बचा लिया	फिर जब	उस के लिए दिन (इबादत)	खालिस कर के	वह अल्लाह को पुकारते हैं		
فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُورٍ (32)							
32	नाशुक्रा	अहद शिकन	हर	सिवाए	हमारी आयतों का	और इन्कार नहीं करता	मियाणा रो तो उन में कोई
يَأَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ وَأَخْشَوْا يَوْمًا لَا يَجْزِي وَالِدٌ							
कोई बाप	न काम आएगा	वह दिन	और खौफ करो	अपना परवरदिगार	तुम डरो	लोगों	ऐ
عَنْ وَّوَالِدِهِ وَلَا مَوْلُودٌ هُوَ جَازٍ عَنِ وَالِدِهِ شَيْئًا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ							
अल्लाह का वादा	वेशक	कुछ	से (के) बाप	काम आएगा	वह	और न कोई बेटा	से-के अपने बेटे
حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُم بِاللَّهِ							
अल्लाह से	और तुम्हें हरगिज़ धोका न दे	दुनिया की ज़िन्दगी	सो तुम्हें हरगिज़ धोके में न डाले	सच्चा			
الْغُرُورُ (33) إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ							
वारिश	और वह नाज़िल करता है	क़ियामत का इल्म	उस के पास	वेशक अल्लाह	33	धोका देने वाला	
وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا							
कल	वह करेगा	क्या	कोई शख्स	जानता	और नहीं	(हामिला के) रहम में	जो और वह जानता है
وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ (34)							
34	खबरदार	इल्म वाला	वेशक अल्लाह	वह मरेगा	ज़मीन	किस	कोई शख्स और नहीं जानता

नहीं है तुम सब का पैदा करना और नहीं है तुम्हारा जी उठाना मगर जैसे एक शख्स (का पैदा करना), वेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। (28) क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह दाखिल करता है रात को दिन में, और दिन को दाखिल करता है रात में, और उस ने सूरज और चाँद को मुसख़र किया, हर एक चलता रहेगा मुद्दते मुकर्ररा (रोज़े क़ियामत) तक। और यह कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उस से खबरदार है। (29) यह इस लिए है कि अल्लाह ही वरहक है और यह कि वह उस के सिवा जिस की परसतिश करते हैं सब बातिल हैं, और यह कि अल्लाह ही बुलन्द मरतवा, बड़ाई वाला है। (30) क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह की नेमतों के साथ कशती दर्या में चलती है ताकि वह तुम्हें उस की निशानियाँ दिखा दे, वेशक उस में हर बड़े सबर करने वाले, शुक गुज़ार के लिए निशानियाँ हैं। (31) और जब मौज उन पर साइवानों की तरह छा जाती है तो वह अल्लाह को पुकारते हैं खालिस कर के उसी के लिए इबादत, फिर जब उस ने उन्हें खुशकी की तरफ बचा लिया तो उन में कोई मियाणा रो रहता है। और हमारी आयतों का इन्कार नहीं करता सिवाए हर अहद शिकन नाशुक्रे के। (32) ऐ लोगो! तुम अपने परवरदिगार से डरो, और उस दिन का खौफ करो (जिस दिन) न काम आएगा कोई बाप अपने बेटे के, और न कोई बेटा अपने बाप के कुछ काम आएगा, वेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, सो तुम्हें दुनिया की ज़िन्दगी हरगिज़ धोके में न डाल दे, और धोका देने वाला (शैतान) तुम्हें अल्लाह से हरगिज़ धोका न दे। (33) वेशक अल्लाह ही के पास है क़ियामत का इल्म, वही वारिश नाज़िल करता है, और वह जानता है जो हामिला के रहम में है, और नहीं जानता कोई शख्स के वह कल क्या करेगा, और कोई शख्स नहीं जानता कि वह किस ज़मीन में मरेगा, वेशक अल्लाह इल्म वाला, खबरदार है। (34)

۳۱

۳۲

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है अलिफ-लाम-मीम। (1)

इस में कोई शक नहीं कि इस किताब (कुरआन) का नाज़िल करना तमाम ज़हानों के परवरदिगार की तरफ से है। (2) क्या वह कहते हैं कि यह उस ने घड़ लिया है? (नहीं) बल्कि यह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से हक है ताकि तुम उस कौम को डराओ जिस के पास कोई डराने वाला नहीं आया तुम से पहले, ताकि वह हिदायत पा लें। (3)

अल्लाह (ही है) जिस ने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को और जो उन के दरमियान है छः (6) दिन में, फिर उस ने अर्श पर करार किया, तुम्हारे लिए उस के सिवा नहीं कोई मददगार, और न सिफारिश करने वाला, सो क्या तुम गौर नहीं करते? (4)

वह हर काम की तदवीर करता है आस्मान से ज़मीन तक, फिर (वह काम) उस की तरफ रुजू करेगा एक दिन में, जिस की मिकदार एक हज़ार साल है उस (हिसाब) से जो तुम शुमार करते हो। (5)

वह पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला, ग़ालिब, मेहरबान। (6) वह जिस ने हर शै बहुत खूब बनाई जो उस ने पैदा की और इन्सान की पैदाइश की इवतिदा मिट्टी से की। (7)

फिर उस की नस्ल को बेक़द्र पानी के खुलासे से बनाया। (8) फिर उस ने उस के आज़ा को ठीक किया, और उस में फूँकी अपनी (तरफ से) अपनी रूह, और तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए, तुम बहुत कम हो जो शुक्र करते हो। (9)

और उन्होंने ने कहा: क्या जब हम ज़मीन में गुम हो जाएंगे तो क्या नई पैदाइश में (आएंगे)? बल्कि वह अपने रब की मुलकात से मुन्किर है। (10)

آيَاتُهَا ٣٠ ﴿٣٢﴾ سُورَةُ السَّجْدَةِ ﴿٣٠﴾ رُكُوعَاتُهَا ٣

रुक़ात 3

(32) सूरतुस सजदा

आयात 30

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الْم ﴿١﴾ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٢﴾

2	परवरदिगार तमाम ज़हानों का	से	इस में	कोई शक नहीं	किताब	नाज़िल करना	1	अलिफ लाम मीम
---	---------------------------	----	--------	-------------	-------	-------------	---	--------------

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ لِتُنذِرَ قَوْمًا

उस कौम को	ताकि तुम डराओ	तुम्हारा रब	से	हक	यह	बल्कि	यह उस ने घड़ लिया है	वह कहते हैं	क्या
-----------	---------------	-------------	----	----	----	-------	----------------------	-------------	------

مَا أَنَّهُمْ مِنْ نَذِيرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٣﴾ اللَّهُ

अल्लाह	3	हिदायत पालें	ताकि वह	तुम से पहले	से	डराने वाला	कोई	उन के पास नहीं आया
--------	---	--------------	---------	-------------	----	------------	-----	--------------------

الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ

दिन	छः (6)	में	उन के दरमियान	और जो	और ज़मीन	आस्मानों को	पैदा किया	वह जिस ने
-----	--------	-----	---------------	-------	----------	-------------	-----------	-----------

ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ مَا لَكُمْ مِّنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا شَفِيعٍ

और न सिफारिश करने वाला	मददगार	से-कोई	उस के सिवा	तुम्हारे लिए नहीं	अर्श पर	उस ने करार किया	फिर
------------------------	--------	--------	------------	-------------------	---------	-----------------	-----

أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٤﴾ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُمَّ

फिर	ज़मीन तक	आस्मान	से	तमाम काम	वह तदवीर करता है	4	सो क्या तुम गौर नहीं करते
-----	----------	--------	----	----------	------------------	---	---------------------------

يَعْرُجُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ أَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ ﴿٥﴾

5	तुम शुमार करते हो	उस से जो	एक हज़ार साल	उस की मिकदार	है	एक दिन में	उस की तरफ	(उस का रिपोर्ट) चढ़ता है
---	-------------------	----------	--------------	--------------	----	------------	-----------	--------------------------

ذَلِكَ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ﴿٦﴾ الَّذِي أَحْسَنَ

बहुत खूब बनाई	वह जिस ने	6	मेहरबान	ग़ालिब	और ज़ाहिर	जानने वाला पोशीदा	वह
---------------	-----------	---	---------	--------	-----------	-------------------	----

كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهُ وَبَدَأَ خَلْقَ الْإِنْسَانِ مِنْ طِينٍ ﴿٧﴾ ثُمَّ جَعَلَ

बनाया	फिर	7	मिट्टी	से	इन्सान	पैदाइश और इवतिदा की	जो उस ने पैदा की	हर शै
-------	-----	---	--------	----	--------	---------------------	------------------	-------

نَسْلَهُ مِنْ سُلَالَةٍ مِّنْ مَّاءٍ مَّهِينٍ ﴿٨﴾ ثُمَّ سَوَّاهُ وَنَفَخَ فِيهِ مِنْ

से	उस में	और फूँकी	फिर उस (के आज़ा) को ठीक किया	8	हकीर (बेक़द्र) पानी	से	खुलासे से	उस की नस्ल
----	--------	----------	------------------------------	---	---------------------	----	-----------	------------

رُوحِهِ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ قَلِيلًا مَّا

जो	बहुत कम	और दिल (जमा)	और आँखें	कान	तुम्हारे लिए	और बनाए	अपनी रूह
----	---------	--------------	----------	-----	--------------	---------	----------

تَشْكُرُونَ ﴿٩﴾ وَقَالُوا ءِذَا ضَلَلْنَا فِي الْأَرْضِ أَإِنَّا لَفِي

तो - में	क्या हम	ज़मीन में	हम गुम हो जाएंगे	क्या जब	और उन्होंने ने कहा	9	तुम शुक्र करते हो
----------	---------	-----------	------------------	---------	--------------------	---	-------------------

خَلْقٍ جَدِيدٍ بَلْ هُمْ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ كَفِرُونَ ﴿١٠﴾

10	मुन्किर (जमा)	अपना रब	मुलाकात से	वह	बल्कि	नई पैदाइश
----	---------------	---------	------------	----	-------	-----------

قُلْ يَتَوَفَّكُم مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِي وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ							
तुम अपने रब की तरफ	फिर	तुम पर	वह जो कि मुक़र्रर किया गया है	मौत का फ़रिश्ता	तुम्हारी रूह कब्ज़ करता है	फरमा दें	
تُرْجَعُونَ ﴿١١﴾ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الْمُجْرِمُونَ نَاكِسُوا رُءُوسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ							
अपने रब के सामने	अपने सर	झुकाए होंगे	सुज़रिम (जमा)	जब	तुम देखो	और अगर	11 लौटाए जाओगे
رَبَّنَا أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ ﴿١٢﴾							
12	यकीन करने वाले	वेशक हम	अच्छे अमल	हम करेंगे	पस हमें लौटा दे	और हम ने सुन लिया	हम न देख लिया
وَلَوْ شِئْنَا لَآتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدًىٰ وَلَكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّي							
मेरी तरफ से	वात	साबित हो चुकी है	और लेकिन	उस की हिदायत	हर शख्स	हम ज़रूर देते	हम चाहते और अगर
لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١٣﴾ فَذُوقُوا بِمَا							
वह जो	पस चखो तुम	13	इकटठे	और इन्सान	जिन्नो	से	अलबत्ता मैं ज़रूर भर दूंगा जहननम
نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا إِنَّا نَسِينَاكُمْ وَذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا							
उस का बदला जो	हमेशा का अज़ाब	और चखो तुम	वेशक हम ने तुम्हें भुला दिया	इस	अपने दिन	मुलाकात	तुम ने भुला दिया था
كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾ إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِهَا							
वह	याद दिलाई जाती है	जब	वह जो	हमारी आयतों पर	ईमान लाते हैं	इस के सिवा नहीं	14 तुम करते थे
خَرُّوا سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿١٥﴾ تَتَجَافَىٰ							
अलग रहते हैं	15	तकब्बुर नहीं करते	और वह	अपना रब	तारीफ के साथ	और पाकीज़गी बयान करते हैं	गिर पड़ते हैं सिजदे में
جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا وَمِمَّا							
और उस से जो	और उम्मीद	डर	अपना रब	वह पुकारते हैं	खाबगाहों (विस्तरों)	से	उन के पहलू
رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ﴿١٦﴾ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُمْ مِّن							
से	उन के लिए	छुपा रखा गया	जो	कोई शख्स	सो नहीं जानता	16	वह खर्च करते हैं हम ने उन्हें दिया
قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٧﴾ أَفَمَن كَانَ مُؤْمِنًا كَمَن كَانَ							
हो	उस के मानिन्द जो	मोमिन	हो	तो क्या जो	17 जो वह करते थे	उस का जज़ा	आँखों की ठंडक
فَاسْقَا لَا يَسْتَوُونَ ﴿١٨﴾ أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ							
तो उन के लिए	अच्छे	और उन्होंने ने अमल किए	जो लोग ईमान लाए	रहे	18	वह बराबर नहीं होते	फ़ासिक (नाफ़रमान)
جَنَّاتٍ الْمَأْوَىٰ نُزُلًا بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾ وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا							
नाफ़रमानी की	वह जिन्होंने ने	और रहे	19	वह करते थे	उस के (सिले में) जो	मेहमानी	बागात रहने के
فَمَا أُولَٰئِكَ النَّارُ كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا							
उस में	लौटा दिए जाएंगे	उस से	कि वह निकलें	वह इरादा करेंगे	जब भी	जहननम	तो उन का ठिकाना
وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّذِي كُنتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٢٠﴾							
20	झुटलाते	उस को	तुम थे	वह जो	दोज़ख का अज़ाब	तुम चखो	उन्हें और कहा जाएगा

आप (स) फ़रमा दें, मौत का फ़रिश्ता तुम्हारी रूह कब्ज़ करता है, जो तुम पर मुक़र्रर किया गया है, फिर तुम अपने रब की तरफ लौटाए जाओगे। (11)

और अगर तुम देखो जब सुज़रिम अपने रब के सामने अपने सर झुकाए होंगे (और कह रहे होंगे) ए हमारे रब! (अब) हम ने देख लिया और सुन लिया, पस हमें लौटा दे कि हम अच्छे अमल करेंगे, वेशक हम यकीन करने वाले हैं। (12) और अगर हम चाहते तो ज़रूर हर शख्स को उस की हिदायत दे देते लेकिन (यह) वात साबित हो चुकी है मेरी तरफ से कि मैं अलबत्ता जहननम को ज़रूर भर दूंगा, इकटठे जिन्नो और इन्सानो से। (13)

पस तुम उस का (मज़ा) चखो जो तुम ने भुला दिया था अपने इस दिन की मुलाकात (हाज़िरी) को, हम ने (भी) तुम्हें भुला दिया, और चखो हमेशा का अज़ाब उस के बदले जो तुम करते थे। (14)

इस के सिवा नहीं कि हमारी आयतों पर वह लोग ईमान लाते हैं कि जब वह उन्हें याद दिलाई जाती है तो सिजदे में गिर पड़ते हैं अपने रब की तारीफ के साथ पाकीज़गी बयान करते हैं और वह तकब्बुर नहीं करते। (15)

उन के पहलू विस्तरों से अलग रहते हैं, और वह अपने रब को पुकारते हैं डर और उम्मीद से और जो हम ने उन्हें दिया है उस में से वह खर्च करते हैं। (16)

सो कोई शख्स नहीं जानता जो छुपा रखा गया है उन के लिए आँखों की ठंडक से, उस की जज़ा है जो वह करते थे। (17)

तो क्या जो मोमिन हो वह उस के बराबर है जो नाफ़रमान हो? (फ़रमा दें) वह बराबर नहीं होते। (18)

रहे वह लोग जो ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए तो उन के लिए रहने के बागात हैं, उस के बदले में जो वह करते थे। (19)

और रहे वह जिन्होंने ने नाफ़रमानी की तो उन का ठिकाना जहननम है, वह जब भी उस से निकलने का इरादा करेंगे वह उस में लौटा दिए (ढकेल दिए) जाएंगे, और उन्हें कहा जाएगा दोज़ख का अज़ाब चखो, वह जिस को तुम झुटलाते थे। (20)

और अलबत्ता हम उन्हें ज़रूर चखाएंगे कुछ अज़ाब नज़्दीक (दुनिया) का, (आखिरत के) बड़े अज़ाब से पहले, शायद वह लौट आए। (21)

और उस से बड़ कर ज़ालिम कौन है? जिसे उस के रब की आयात से नसीहत की गई, फिर उस ने उन से मुँह फेर लिया, बेशक हम मुज़्ज़रीमों से इन्तिकाम (बदला) लेने वाले हैं। (22)

और तहक़क़ि हम ने मूसा (अ) को तौरैत अता की तो तुम उस के मिलने के बारे में शक में न रहो, और हम ने उसे बना दिया हिदायत बनी इस्राईल के लिए। (23)

और हम ने उन में से पेशवा बनाए, वह हमारे हुकम से रहनुमाई करते थे, जब उन्होंने ने सव्वर किया और वह हमारी आयतों पर यकीन करते थे। (24)

बेशक तुम्हारा रब क्रियामत के दिन उन के दरमियान फ़ैसला करेगा जिस (बात) में वह इख़्तिलाफ़ करते थे। (25)

क्या उन के लिए (यह हकीकत) मोज़िबे हिदायत न हुई कि हम ने उन से क़व्व कितनी (ही) उम्मतें हलाक की, वह उन के रहने की जगहों में चलते (फिरते) हैं, बेशक उस में निशानियां हैं तो क्या वह सुनते नहीं? (26)

क्या उन्होंने ने नहीं देखा? कि हम ख़श्क़ ज़मीन की तरफ़ पानी चलाते (रवां करते) हैं, फिर उस से हम खेती निकालते हैं, उस से उन के मवेशी खाते हैं, और वह खुद भी, तो क्या वह देखते नहीं? (27)

और वह कहते हैं यह फ़ैसला कब होगा अगर तुम सच्चे हो। (28) आप (स) फ़रमा दें, फ़ैसले के दिन काफ़िरों को उन का ईमान (लाना) नफ़ा न देगा, और न वह मोहलत दिए जाएंगे। (29)

पस तुम उन से मुँह फेर लो और तुम इन्तिज़ार करो, बेशक वह भी मुन्तज़िर हैं। (30)

وَلَنُذِيقَنَّهُمْ مِنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢١﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ							
अज़ाब	सिवाए (पहले)	नज़्दीक	अज़ाब	कुछ	और अलबत्ता हम उन्हें ज़रूर चखाएंगे		
उसे नसीहत की गई	उस से जो	बड़ा ज़ालिम	और कौन	21	लौट आए	शायद वह	बड़ा
بَايَتْ رَبَّهُ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنتَقِمُونَ ﴿٢٢﴾							
22	इन्तिकाम लेने वाले	मुज़्ज़रिम (जमा)	से	बेशक हम	उस से	उस ने मुँह फेर लिया	उस के रब की आयात से
وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُنْ فِي مِرْيَةٍ							
शक में		तो तुम न रहो		किताब (तौरैत)	मूसा (अ)	और तहक़ीक़ हम ने दी	
مِّن لِّقَابِهِ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٢٣﴾							
23	बनी इस्राईल के लिए			हिदायत	और हम ने बनाया उसे	उस का मिलना	से - मुतअल्लिक
وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ أُمَّةً يَهْتَدُونَ بِأَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوا							
उन्होंने ने सव्वर किया	जब	हमारे हुकम से	वह रहनुमाई करते	इमाम (पेशवा)	उन से	और हम ने बनाया	
وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يُوقِنُونَ ﴿٢٤﴾ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ							
उन के दरमियान	फ़ैसला करेगा	वह	तुम्हारा रब	बेशक	24	यकीन करते	हमारी आयतों पर और वह थे
يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٢٥﴾ أَوْلِمَّ يَهْدِ لَهُمْ							
उन के लिए	क्या हिदायत न हुई	25	इख़्तिलाफ़ करते	उस में	वह थे	उस में	क्रियामत के दिन
كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسْكِنِهِمْ							
उन के घर (जमा)	में	वह चलते हैं	उम्मतें	से	उन से क़व्व	हम ने कितनी हलाक की	
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّأَفَلَا يَسْمَعُونَ ﴿٢٦﴾ أَوْلِمَّ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ							
कि हम चलाते हैं	क्या उन्होंने ने नहीं देखा	26	तो क्या वह सुनते नहीं	अलबत्ता निशानियां	उस में	बेशक	
الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا تَأْكُلُ مِنْهُ							
उस से	खाते हैं	फिर हम निकालते हैं उस से खेती		ख़श्क़	ज़मीन	तरफ़	पानी
أَنْعَامُهُمْ وَأَنْفُسُهُمْ أَفَلَا يُبْصِرُونَ ﴿٢٧﴾ وَيَقُولُونَ مَتَى							
कब	और वह कहते हैं	27	देखते नहीं वह	तो क्या	और वह खुद	उन के मवेशी	
هَذَا الْفَتْحُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٨﴾ قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ							
नफ़ा न देगा	फ़तह (फ़ैसले) के दिन	फ़रमा दें	28	सच्चे	तुम हो	अगर	फ़तह (फ़ैसला) यह
الَّذِينَ كَفَرُوا إِيْمَانَهُمْ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٢٩﴾ فَأَعْرِضْ							
पस मुँह फेर लो	29	मोहलत दिए जाएंगे	वह	और न	उन का ईमान	जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	
عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ إِنَّهُمْ مُنْتَظَرُونَ ﴿٣٠﴾							
30	मुन्तज़िर हैं		बेशक वह	और तुम इन्तिज़ार करो	उन से		

٢  
١٥

٢  
١٦

٢  
١٧

<b>آيَاتُهَا ۷۳ ❁ سُورَةُ الْأَحْزَابِ ❁ رُكُوعَاتُهَا ۹</b>							
रुकुआत 9		(33) सुरतुल अहज़ाब लशकर			आयात 73		
<b>بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ</b>							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
<b>يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللَّهَ وَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ</b>							
और मुनाफ़िकों	काफ़िरों	और कहा न मानें	अल्लाह से डरते रहें	ऐ नबी (स)			
<b>إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۱</b>							
आप के रब (की तरफ) से	आप की तरफ	जो वहि किया जाता है	और पैरवी करें आप	1	हिक्मत वाला	जानने वाला	है
<b>إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۲</b>							
और काफ़ी है अल्लाह	अल्लाह पर	और भरोसा रखें आप (स)	2	ख़बरदार	तुम करते हो	उस से जो	है
<b>وَكَيْلًا ۳</b>							
और नहीं बनाया	उस के सीने में	दो दिल	किसी आदमी के लिए	नहीं बनाए अल्लाह ने	3	कार साज़	
<b>أَزْوَاجِكُمْ الَّتِي تظهَرُونَ مِنْهُنَّ أُمَّهَاتِكُمْ وَمَا جَعَلْ أَدْعِيَاءَكُمْ</b>							
तुम्हारे मुँह बोले बेटे	और नहीं बनाया	तुम्हारी माएं	उन से- उन्हें	तुम माँ कह बैठते हो	वह जिन्हें	तुम्हारी बीवियां	
<b>أَبْنَاءَكُمْ ذَلِكُمْ قَوْلِكُمْ بِأَفْوَاهِكُمْ وَاللَّهُ يَقُولُ الْحَقَّ وَهُوَ</b>							
और वह	हक	फरमाता है	और अल्लाह	अपने मुँह (जमा)	तुम्हारा कहना	यह तुम	तुम्हारे बेटे
<b>يَهْدِي السَّبِيلَ ۴</b>							
अल्लाह के नज़्दीक	ज़ियादा इंसाफ़	यह	उनके बापों की तरफ	उन्हें पुकारो	4	रास्ता	हिदायत देता है
<b>فَإِنْ لَمْ تَعْلَمُوا آبَاءَهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ وَمَوَالِيكُمْ</b>							
और तुम्हारे रफ़ीक	दीन में (दीनी)	तो वह तुम्हारे भाई	उन के बापों को	तुम न जानते हो	फिर अगर		
<b>وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيمَا أَخْطَأْتُمْ بِهِ وَلَكِنْ مَا تَعَمَّدَتْ قُلُوبُكُمْ</b>							
अपने दिल	जो इरादे से	और लेकिन	उस से	उस में जो तुम से भूल चूक हो चुकी	कोई गुनाह	तुम पर	और नहीं
<b>وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۵</b>							
से	मोमिनों के	ज़ियादा (हकदार)	नबी (स)	5	मेहरवान	बख़्शने वाला	और है
<b>أَنْفُسِهِمْ وَأَزْوَاجَهُمْ وَأُمَّهَاتِهِمْ وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَى</b>							
नज़्दीक तर	उन में से बाज़	और कराबतदार	उन की माएं	और उस की बीवियां	उन की जानें		
<b>بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ إِلَّا أَنْ</b>							
मगर यह कि	और मुहाजिरों	मोमिनों	से	अल्लाह की किताब	में	बाज़ (दूसरों) से	
<b>تَفَعَّلُوا إِلَىٰ أَوْلِيَّكُمْ مَعْرُوفًا كَانَ ذَلِكُمْ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ۶</b>							
6	लिखा हुआ	किताब में	यह	है	हुस्ने सुलूक	अपने दोस्त (जमा)	तरफ (साथ) तुम करो

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है ऐ नबी (स)! अल्लाह से डरते रहें, और काफ़िरों और मुनाफ़िकों का कहा न मानें, बेशक अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (1) और पैरवी करें जो वहि किया जाता है आप (स) को आप (स) के रब की तरफ से, बेशक अल्लाह उस से वा ख़बर है जो तुम करते हो। (2) और आप (स) अल्लाह पर भरोसा रखें, अल्लाह काफ़ी है कार साज़। (3) अल्लाह ने नहीं बनाए किसी आदमी के लिए उस के सीने में दो दिल, और तुम्हारी उन बीवियों को जिन्हें तुम माँ कह बैठते हो नहीं बनाया तुम्हारी माएं, और तुम्हारे मुँह बोले (ले पालकों को) (सच मुच) तुम्हारे बेटे नहीं बनाया, यह (सिर्फ) तुम्हारे मुँह से कहने (की बात है) और अल्लाह हक़ फरमाता है, और वह रास्ते की हिदायत देता है। (4) उन्हें उन ही के बापों की तरफ (मनसूब कर के) पुकारो, यह अल्लाह के नज़्दीक ज़ियादा (क़रीने) इंसाफ़ है, फिर अगर तुम उन के बापों को न जानते हो तो वह तुम्हारे दीनी भाई हैं, और वह तुम्हारे रफ़ीक हैं, और तुम पर नहीं उस में कोई गुनाह जो तुम से भूल चूक हो चुकी, लेकिन (हां) जो अपने दिल के इरादे से करो, और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरवान है। (5) नबी (स) मोमिनों के लिए उन के अपने नफ़्स से ज़ियादा हकदार है और आप (नबी स) की बीवियां उन (मोमिनों) की माएं हैं, और कराबतदार अल्लाह की किताब में बाज़ (आम) मुसलमानों और मुहाजिरों की वनिस्वत एक दूसरे से ज़ियादा नज़्दीक (फ़ाइक) हैं मगर यह कि तुम करो अपने दोस्तों के साथ हुस्ने सुलूक, यह (अल्लाह की) किताब में लिखा हुआ है। (6)

और (याद करो) जब हम ने लिया नबियों से उन का अहद, और तुम से (भी लिया) और वह नूह (अ) से और इब्राहीम (अ) से और मूसा (अ) और मरयम (अ) के बेटे ईसा (अ) से, और हम ने उन से पुख्ता अहद लिया। (7)

ताकि वह (उन) सच्चों से उन की सच्चाई (के बारे में) सवाल करे, और उस ने काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब तैयार किया है। (8) ऐ ईमान वालो! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत (उस का एहसान) याद करो जब तुम पर बहुत से लशकर चढ़ आए तो हम ने उन पर आन्धी भेजी और (ऐसे) लशकर जिन्हें तुम ने न देखा, और अल्लाह उसे देखने वाला है जो तुम करते हो। (9)

जब वह तुम पर (चढ़) आए तुम्हारे ऊपर (की तरफ) से और तुम्हारे नीचे (की तरफ) से, और जब आँखें चुन्धिया गई, और दिल गलों में (कलेजे मुँह को) आने लगे और तुम अल्लाह के बारे में (तरह तरह के) गुमान कर रहे थे। (10)

यहां (इस मौके पर) मोमिन आज़माए गए और वह शदीद हिलाए (झिन्झोड़े) गए। (11)

और जब कहने लगे मुनाफ़िक और वह जिन के दिलों में रोग है: हम से अल्लाह और उस के रसूल (स) ने जो वादा किया वह सिर्फ़ धोका था। (12)

और जब एक गिरोह ने कहा उन में से, ऐ मदीने वालों! तुम्हारे लिए कोई जगह (ठिकाना) नहीं, लिहाज़ा तुम लौट चलो, और उन में से एक गिरोह इजाज़त मांगता था नबी (स) से, वह कहते थे कि हमारे घर वेशक ग़ैर महफूज़ है, हालांकि वह ग़ैर महफूज़ नहीं है, वह तो सिर्फ़ फ़िरार चाहते हैं। (13)

और अगर (दुश्मन) उन पर मदीने के अतराफ़ से दाख़िल हो जाएं (आ घुसें) फिर उन से फ़साद चाहा जाए (कहा जाए) तो वह उसे ज़रूर देंगे (मनज़ूर कर लेंगे) और घरों में सिर्फ़ थोड़ी सी देर लगाएंगे। (14)

हालांकि वह इस से पहले अल्लाह से अहद कर चुके थे कि वह पीठ न फेरेंगे, और अल्लाह से किया हुआ अहद पूछा जाने वाला है। (15)

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ مِيثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ							
और	और	और	उन का अहद	नबियों	से	हम ने लिया	और जब
इब्राहीम (अ)	नूह (अ) से	तुम से					
وَمُوسَى وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَأَخَذْنَا مِنْهُم مِّيثَاقًا عَلِيمًا							
7	पुख्ता	अहद	उन से	और हम ने लिया	और मरयम के बेटे ईसा (अ)	और	मूसा (अ)
لَيَسْئَلِ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ صِدْقِهِمْ وَأَعَدَّ لِلْكَافِرِيْنَ عَذَابًا أَلِيمًا							
8	दर्दनाक	अज़ाब	काफ़िरों के लिए	और उस ने तैयार किया	उन की सच्चाई	से	सच्चे
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُوْدٌ							
लशकर (जमा)	जब तुम पर (चढ़) आए	अपने ऊपर	अल्लाह की नेमत	याद करो	ईमान वालो	ऐ	
فَارْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا وَّجُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا وَاَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ							
तुम करते हो	उसे जो	अल्लाह और है	तुम ने उन्हें न देखा	और लशकर	आँधी	उन पर	हम ने भेजी
بَصِيْرًا اِذْ جَآءَوكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَاِذْ							
और जब	तुम्हारे	और नीचे से	तुम्हारे ऊपर	से	वह तुम पर आए	जब	9 देखने वाला
رَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ							
अल्लाह के बारे में	और तुम गुमान करते थे	गले	दिल (जमा)	और पहुँच गए	कज हुई (चुन्धिया गई) आँखें		
الظُّنُوْنَۙ اِنَّ هٰذَا لَبَشٰرٌ لِّمُؤْمِنِيْنَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَشَدِيْدٌ							
11	शदीद	हिलाया जाना	और वह हिलाए गए	मोमिन (जमा)	आज़माए गए	यहां	10 बहुत से गुमान
وَإِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا							
जो हम से वादा किया	रोग	दिलों में	और वह जिन के	मुनाफ़िक (जमा)	कहने लगे	और जब	
اللّٰهُ وَرَسُوْلَهُ اِلَّا غُرُوْرًا وَاِذْ قَالَتْ طٰٓئِفَةٌ مِّنْهُمْ يٰۤاَهْلَ يَثْرِبَ							
ऐ यसरिब (मदीने) वालो	उन में से	एक गिरोह	कहा	और जब	12 धोका देना	मगर (सिर्फ)	अल्लाह और उस का रसूल
لَا مَقَامَ لَكُمْ فَاَرْجِعُوْا وَيَسْتَاْذِنُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ							
नबी से	उन में से	एक गिरोह	और इजाज़त मांगता था	लिहाज़ा तुम लौट चलो	तुम्हारे लिए	कोई जगह नहीं	
يَقُوْلُوْنَ اِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ وَّمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ اِنْ يُرِيْدُوْنَ اِلَّا							
मगर (सिर्फ)	वह नहीं चाहते	ग़ैर महफूज़	हालांकि वह नहीं	ग़ैर महफूज़	हमारे घर	वेशक	वह कहते थे
فِرَارًا وَاِنَّ لَكُمْ فِيْهَا لَآيٰتٍ لِّمَنْ اَعْيَنَ وَاِنَّ اللّٰهَ لَشَدِيْدٌ							
फ़साद	उन से चाहा जाए	फिर	उस (मदीने) के अतराफ	से	उन पर	दाख़िल हो जाए	और अगर
لَا تَوَّهٰٓهَا وَمَا تَلَبّٰثُوْا بِهَا اِلَّا يَسِيْرًا وَاِنَّ اللّٰهَ لَشَدِيْدٌ							
अल्लाह	हालांकि वह अहद कर चुके थे	14	थोड़ी सी	मगर (सिर्फ)	उस में	और न देर लगाएंगे	तो वह ज़रूर उसे देंगे
مِّنْ قَبْلُ لَا يُؤَلُّوْنَ الْاَدْبَارَ وَاَنَّ اللّٰهَ مَسْئُوْلًا							
15	पूछा जाने वाला	अल्लाह का अहद	और है	पीठ	फेरेंगे	न	इस से पहले

ع ١٤

ع ١٠ عند المتكلمين ١٢

قُلْ لَنْ يَنْفَعَكُمْ الْفِرَارُ إِنْ فَرَرْتُمْ مِنَ الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ وَإِذَا								
और उस सूरत में	कत्ल	या	मौत से	तुम भागे	अगर	फिरार	तुम्हें हरगिज़ नफ़ा न देगा	फरमा दें
لَا تَمْتَعُونَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٦﴾ قُلْ مَنْ ذَا الَّذِي يَعْصِمُكُمْ مِنَ اللَّهِ إِنْ								
अगर	अल्लाह से	वह जो तुम्हें बचाए	कौन जो	फरमा दें	16	थोड़ा	मगर (सिर्फ)	न फ़ाइदा दिए जाओगे
أَرَادَ بِكُمْ سُوءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ								
अल्लाह के सिवा	अपने लिए	और वह न पाएंगे	मेहरबानी	चाहे तुम से	या	बुराई	वह चाहे तुम से	
وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿١٧﴾ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الْمُعَوِّقِينَ مِنْكُمْ وَالْقَائِلِينَ								
और कहने वाले	तुम में से	रोकने वाले	अल्लाह	खूब जानता है	17	और न मददगार	कोई दोस्त	
لِأَخْوَانِهِمْ هَلُمَّ إِلَيْنَا وَلَا يَأْتُونَ الْبَأْسَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٨﴾ أَشِحَّةً								
बुखल करते हुए	18	बहुत कम	मगर	लड़ाई	और नहीं आते	हमारी तरफ़	आजाओ	अपने भाइयों से
عَلَيْكُمْ ۖ فَإِذَا جَاءَ الْخَوْفُ رَأَيْتَهُمْ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ تَدُورُ								
घूम रही है	तुम्हारी तरफ़	वह देखने लगते हैं	तुम देखोगे उन्हें	खौफ़	फिर जब आए	तुम्हारे सुतअल्लिक		
أَعْيُنُهُمْ كَالَّذِي يُغْشَىٰ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۖ فَإِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ								
खौफ़	चला जाए	फिर जब	मौत से	उस पर	ग़शी आती है	उस शख्स की तरह	उन की आँखें	
سَلَفُوكُمْ بِالْسِّنَةِ حِدَادٍ أَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ۗ أُولَٰئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا								
नहीं ईमान लाए	यह लोग	माल पर	बखीली (लालच) करते हुए	तेज़	ज़वानों से	तुम्हें ताने देने लगे		
فَاحْبِطْ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ ۖ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿١٩﴾ يَحْسَبُونَ								
वह गुमान करते हैं	19	आसान	अल्लाह पर	यह	और है	उन के अमल	तो अकारत कर दिए अल्लाह ने	
الْأَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوا ۖ وَإِنْ يَأْتِ الْأَحْزَابَ يَوَدُّوْا لَوْ أَنَّهُمْ								
कि काश वह	वह तमन्ना करें	लशकर	और अगर आए	नहीं गए हैं	लशकर (जमा)			
بَادُونَ فِي الْأَعْرَابِ يَسْأَلُونَ عَنْ أَنْبَائِكُمْ ۖ وَلَوْ كَانُوا فِيكُمْ								
तुम्हारे दरमियान	हों	और अगर	तुम्हारी ख़बरें	से	पूछते रहते	देहातियों में	बाहर निकले हुए होते	
مَا قُتِلُوا إِلَّا قَلِيلًا ﴿٢٠﴾ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ								
अच्छा बेहतरीन	मिसाल (नमूना)	अल्लाह का रसूल (स)	में	तुम्हारे लिए	अलबत्ता है यकीनन	20	बहुत कम	मगर
لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهَ كَثِيرًا ﴿٢١﴾ وَلَمَّا								
और जब	21	कसूरत से	और अल्लाह को याद करता है	और रोज़े आख़िरत	अल्लाह	उम्मीद रखता है	उस के लिए जो	
رَأَى الْمُؤْمِنُونَ الْأَحْزَابَ ۖ قَالُوا هَٰذَا مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ								
और उस का रसूल (स)	अल्लाह	जो हम को वादा दिया	यह है	वह कहने लगे	लशकरों को	मोमिनों ने देखा		
وَصَدَقَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۖ وَمَا زَادَهُمْ إِلَّا إِيمَانًا وَتَسْلِيمًا ﴿٢٢﴾								
22	और फ़रमांबरदारी	ईमान	मगर	उन का ज़ियादा किया	और न	और उस का रसूल	अल्लाह	और सच कहा था

आप (स) फ़रमा दें: फिरार तुम्हें हरगिज़ नफ़ा न देगा अगर तुम मौत या कत्ल से भागे, और उस सूरत में तुम सिर्फ़ थोड़ा (चन्द दिन) फ़ाइदा दिए जाओगे। (16) आप (स) फ़रमा दें: वह कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचा सकता? अगर वह तुम से बुराई (करना) चाहे या तुम पर मेहरबानी करना चाहे और वह अपने लिए अल्लाह के सिवा कोई दोस्त न पाएंगे और न मददगार। (17) अल्लाह खूब जानता है तुम में से (दूसरों को जिहाद से) रोकने वालों को, और अपने भाइयों से यह कहने वालों को कि हमारी तरफ़ आजाओ, और वह लड़ाई में नहीं आते मगर बहुत कम। (18) तुम्हारा साथ देने में बखीली करते हैं, फिर जब खौफ़ आए तो तुम उन्हें देखोगे कि वह तुम्हारी तरफ़ (यूँ) देखने लगते हैं (जैसे) उन की आँखें घूम रही हैं उस शख्स की तरह जिस पर मौत की ग़शी (तारी) हो, फिर जब खौफ़ चला जाए तो तुम्हें ताने देने लगे तेज़ ज़वानों से, माल पर बखीली करते हुए, यह लोग ईमान नहीं लाए, तो अल्लाह ने अकारत कर दिए उन के अमल, और अल्लाह पर यह आसान है। (19) वह गुमान करते हैं कि (काफ़िरों के) लशकर (अभी) नहीं गए हैं, और अगर लशकर (दोबारा) आए तो वह तमन्ना करें कि काश वह देहात में बाहर निकले होते (सेहरा नशीन होते) तुम्हारी ख़बरें पूछते रहते और अगर तुम्हारे दरमियान हों तो जंग न करें मगर बहुत कम। (20) यकीनन तुम्हारे लिए है अल्लाह के रसूल (स) में एक बेहतरीन नमूना, (हर) उस शख्स के लिए जो अल्लाह और रोज़े आख़िरत पर उम्मीद रखता है, और अल्लाह को बकसूरत याद करता है। (21) और जब मोमिनों ने लशकरों को देखा तो वह कहने लगे: यह है जिस का हमें अल्लाह और उस के रसूल ने वादा दिया था, और अल्लाह और उस के रसूल (स) ने सच कहा था, और (उस सूरत हाल ने) उन में ज़ियादा न किया मगर ईमान और फ़रमांबरदारी (का ज़िबा)। (22)

मोमिनों में कुछ ऐसे आदमी हैं कि उन्होंने ने अल्लाह से जो अहद किया था वह सच कर दिखाया, सो उन में से (कुछ हैं) जो अपनी नज़र पूरी कर चुके, और उन में (कुछ हैं) जो इन्तिज़ार में हैं, और उन्होंने ने कुछ भी तबदीली नहीं की। (23)

(यह इस लिए हुआ) कि अल्लाह जज़ा दे सच्चे लोगों को उन की सच्चाई की, और अगर वह चाहे तो मुनाफ़िकों को अज़ाब दे या वह उन की तौबा कुबूल कर ले, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है। (24)

और अल्लाह ने काफ़िरों को लौटा दिया उन के (अपने) गुस्से में भरे हुए, उन्होंने ने कोई भलाई न पाई, और जंग (के मामले में) मोमिनों के लिए अल्लाह काफ़ी है, और अल्लाह है तवाना और ग़ालिब। (25)

और अहले किताब में से जिन्होंने ने उन की मदद की थी, उस ने उन्हें उन के किलों से उतार दिया, और उन के दिलों में रुझब डाल दिया, एक गिरोह को तुम क़तल करते हो और एक गिरोह को कैद करते हो। (26)

और तुम्हें वारिस बना दिया उन की ज़मीन का, और उन के घरों का, और उन के मालों का, और उस ज़मीन का जहां तुम ने क़दम नहीं रखा था, और अल्लाह है हर शौ पर कुदरत रखने वाला। (27)

ऐ नबी (स)! आप (स) अपनी वीवियों से फ़रमा दें, अगर तुम दुनिया की ज़िन्दगी और उस की ज़ीनत चाहती हो तो आओ, मैं तुम्हें कुछ देदूँ और रखसत कर दूँ अच्छी तरह रखसत। (28)

और अगर तुम अल्लाह और उस का रसूल (स) और आख़िरत का घर चाहती हो तो बेशक अल्लाह ने तुम में से नेकी करने वालियों के लिए अजरे अज़ीम तैयार कर रखा है। (29)

ऐ नबी (स) की वीवियो! जो कोई तुम में से खुली बेहदगी की मुर्तक़िब हो तो उस के लिए अज़ाब दो चन्द बढ़ा दिया जाएगा, और यह अल्लाह पर आसान है। (30)

مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللَّهَ عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ									
सो उन में से	उस पर	उन्होंने ने अहद किया अल्लाह से	जो	उन्होंने ने सच कर दिखाया	ऐसे आदमी	मोमिन (जमा)	से (में)		
مَنْ قَضَىٰ نَحْبَهُ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْتَظِرُ وَمَا بَدَّلُوا تَبْدِيلًا ﴿٢٣﴾ لِيَجْزِيَ									
ताकि जज़ा दे	23	कुछ भी तबदीली	और उन्होंने ने तबदीली नहीं की	इन्तिज़ार में है	जो	और उन में से	नज़र अपनी	पूरा कर चुका	जो
اللَّهُ الصّٰدِقِينَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبُ الْمُنٰفِقِينَ اِنْ شَاءَ اَوْ									
या	अगर वह चाहे	मुनाफ़िकों	और वह अज़ाब दे	उन की सच्चाई की	सच्चे लोग	अल्लाह			
يَتُوبَ عَلَيْهِمْ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رّٰحِيْمًا ﴿٢٤﴾ وَرَدَّ اللّٰهُ									
और लौटा दिया अल्लाह ने	24	मेहरबान	बख़्शने वाला	है	बेशक अल्लाह	वह उन की तौबा कुबूल कर ले			
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِعَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا حَيْرًا وَّكَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ									
जंग	मोमिनीन	और काफ़ी है अल्लाह	कोई भलाई	उन्होंने ने न पाई	उन के गुस्से में भरे हुए	वह जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)			
وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ﴿٢٥﴾ وَاَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ									
अहले किताब	से	जिन्होंने ने उन की मदद की	उन लोगों को	और उतार दिया	25	ग़ालिब	तवाना	अल्लाह	और है
مِّنْ صَيّٰصِيْهِمْ وَقَذَفَ فِى قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيْقًا									
एक गिरोह	रुझब	उन के दिल	में	और डाल दिया	उन के किल्ए	से			
تَقْتُلُوْنَ وَتَأْسِرُوْنَ فَرِيْقًا ﴿٢٦﴾ وَاوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَّدِيَارَهُمْ									
और उन के घर (जमा)	उन की ज़मीन	और तुम्हें वारिस बना दिया	26	एक गिरोह	और तुम कैद करते हो	तुम क़तल करते हो			
وَاَمْوَالَهُمْ وَاَرْضًا لَّمْ تَطُّوْهَا وَّكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿٢٧﴾									
27	कुदरत रखने वाला	हर शौ	पर	अल्लाह	और है	तुम ने वहां क़दम नहीं रखा	और वह ज़मीन	और उन के माल (जमा)	
يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُمْ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا									
दुनिया	ज़िन्दगी	चाहती हो	तुम हो	अगर	अपनी वीवियों से	फ़रमा दें	ऐ नबी (स)		
وَزِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمْتِعْكُنَّ وَاَسْرِحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿٢٨﴾									
28	अच्छी	रुखसत करना	और तुम्हें रुखसत कर दूँ	मैं तुम्हें कुछ देदूँ	तो आओ	और उस की ज़ीनत			
وَاِنْ كُنْتُمْ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَّرَسُوْلَهٗ وَاَلْدَارَ الْاٰخِرَةَ									
और आख़िरत का घर		और उस का रसूल		चाहती हो अल्लाह		तुम	और अगर		
فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِمُحْسِنٰتٍ مِّنْكُمْ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٢٩﴾									
29	अजरे अज़ीम	तुम में से	नेकी करने वालियों के लिए	तैयार किया है	पस बेशक अल्लाह				
يُنِسْآءَ النَّبِيِّ مِّنْ يَّآتٍ مِّنْكُمْ بِفَاحِشَةٍ مُّبِيْنَةٍ يُضَعَفُ									
बढ़ाया जाएगा	खुली	बेहदगी के साथ	तुम में से	लाए (मुर्तक़िब हो)	जो कोई	ऐ नबी की वीवियो			
لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ وَّكَانَ ذٰلِكَ عَلٰى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿٣٠﴾									
30	आसान	अल्लाह पर	यह	और है	दो चन्द	अज़ाब	उस के लिए		

٢  
ع  
١٩



<p>وَمَنْ يَفُوتْ مِنْكُمْ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَتَعْمَلْ صَالِحًا</p>						
और जो	इताअत करे	तुम में से	अल्लाह और उस के रसूल (स) की	और अमल करे	नेक	
<p>نُؤْتِيهَا أَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ وَأَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيمًا (31)</p>						
हम देंगे उस को	उस का अजर	दोहरा	और हम ने तैयार किया	उस के लिए	इज्जत का रिज्क	31
<p>يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ لَسْتَنْ كَاۤحِدٍ مِّنَ النِّسَاءِ اِنْ اَتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَحْضَعْنَ</p>						
ऐ नबी (स) की वीवियों!	तुम नहीं हो	किसी एक की तरह	औरतों में से	अगर	तुम परहेजगारी करो	तो मुलाइमत न करो
<p>بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِي فِي قَلْبِهِ مَرَضٌ وَقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوفًا (32)</p>						
गुफ्तगू में	कि लालच करे	वह जो	उस के दिल में	रोग (खोट)	और बात करो तुम	अच्छी (माकूल) बात
<p>وَقَرْنَ فِي بُيُوتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَىٰ</p>						
और करार पकड़ो	अपने घरों में	और बनाव सिंगार का इजहार करती न फिरो	बनाव सिंगार	(जमाना-ए) जाहिलियत	अगला	
<p>وَأَقِمْنَ الصَّلَاةَ وَآتِينَ الزَّكَاةَ وَأَطِعْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ</p>						
और काइम करो	नमाज	और देती रहो	जकात	और इताअत करो	अल्लाह और उस का रसूल	
<p>إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ</p>						
इस के सिवा नहीं	अल्लाह चाहता है	कि दूर फरमा दे	तुम से	आलूदगी	ऐ अहले बैत	
<p>وَيُطَهِّرَكُم تَطْهِيرًا (33) وَأَذْكُرْنَ مَا يُتْلَىٰ فِي بُيُوتِكُنَّ</p>						
और तुम्हें पाक और साफ रखे	खूब पाक	33	और तुम याद रखो	जो पढ़ा जाता है	में	तुम्हारे घर (जमा)
<p>مِّنْ آيَاتِ اللَّهِ وَالْحِكْمَةِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ لَطِيفًا خَبِيرًا (34)</p>						
से	अल्लाह की आयतें	और हिक्मत	वेशक अल्लाह	है	वारीक वीन	वाखबर
<p>إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ</p>						
वेशक	मुसलमान मर्द	और मुसलमान औरतें	और मोमिन मर्द	और मोमिन औरतें	और मोमिन औरतें	
<p>وَالْقَنَاتِينَ وَالْقَنَاتِ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ وَالصَّابِرِينَ</p>						
और फरमांबरदार मर्द	और फरमांबरदार औरतें	और रास्तगो मर्द	और रास्तगो औरतें	और रास्तगो औरतें	और रास्तगो औरतें	और सबर करने वाले मर्द
<p>وَالصَّابِرَاتِ وَالصَّابِرِينَ وَالصَّامِتِ وَالصَّامِتَاتِ وَالْحَفِظِينَ</p>						
और सबर करने वाली औरतें	और आजिजी करने वाले मर्द	और आजिजी करने वाली औरतें	और रोजा रखने वाले मर्द	और रोजा रखने वाली औरतें	और रोजा रखने वाली औरतें	और हिफाजत करने वाले मर्द
<p>فُرُوجَهُمْ وَالْحَفِظَاتِ وَالذَّاكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا</p>						
अपनी शर्मगाहें	और हिफाजत करने वाली औरतें	और याद करने वाले	अल्लाह	वकसूरत		
<p>وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا (35)</p>						
और याद करने वाली औरतें	अल्लाह ने तैयार किया	उन के लिए	वख्शिश	और अजरे अज़ीम		35

और तुम में से जो अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअत करे और नेक अमल करे हम उसे उस का दोहरा अजर देंगे और हम ने उस के लिए इज्जत का रिज्क तैयार किया है। (31)

ऐ नबी (स) की वीवियों! औरतों में से तुम किसी एक की तरह (आम) नहीं हो, अगर तुम परहेजगारी इख्तियार करो तो गुफ्तगू में मुलाइमत न करो कि जिस के दिल में खोट है वह लालच (खयाले फासिद) करे और तुम बात करो माकूल बात। (32)

और अपने घरों में करार पकड़ो, और अगले जमाना-ए-जाहिलियत के बनाव सिंगार का इजहार करती न फिरो, और नमाज काइम करो, और जकात देती रहो, और अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअत करो, वेशक अल्लाह चाहता है कि वह तुम से आलूदगी दूर फरमा दे ऐ अहले बैत! और तुम्हें खूब (हर तरह से) पाक और साफ रखे। (33)

और तुम याद रखो जो तुम्हारे घरों में अल्लाह की आयतें और हिक्मत (दानाई की बातें) पढ़ी जाती हैं, वेशक अल्लाह वारीक वीन, वाखबर है। (34)

वेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें, और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें, और फरमांबरदार मर्द और फरमांबरदार औरतें, और रास्तगो मर्द और रास्तगो औरतें, और सबर करने वाले मर्द और सबर करने वाली औरतें, और आजिजी करने वाले मर्द और आजिजी करने वाली औरतें, और सदका (खैरात) करने वाले मर्द और सदका (खैरात) करने वाली औरतें, और रोजा रखने वाले मर्द और रोजा रखने वाली औरतें, और हिफाजत करने वाले मर्द अपनी शर्मगाहों की, और हिफाजत करने वाली औरतें, और अल्लाह को बकसूरत याद करने वाले मर्द और (अल्लाह को) याद करने वाली औरतें, अल्लाह ने उन (सब) के लिए तैयार की है वख्शिश और अजरे अज़ीम। (35)

और (गुनजाइश) नहीं है किसी मोमिन मर्द और न किसी मोमिन औरत के लिए कि जब फ़ैसला कर दें अल्लाह और उस के रसूल (स) किसी मामले का, कि उन के लिए उस मामले में कोई इख़्तियार बाकी हो, और जो नाफ़रमानी करेगा, अल्लाह और उस के रसूल (स) की तो अलबत्ता वह सरीह गुमराही में जा पड़ा। (36) और याद करो जब आप (स) उस शख्स [ज़ैद ७ बिन हारिसा] को फ़रमाते थे जिस पर अल्लाह ने इन्ज़ाम किया और आप (स) ने भी उस पर इन्ज़ाम किया कि अपनी वीवी [ज़ैनब ७] को अपने पास रोके रख और अल्लाह से डर, और आप (स) छुपाते थे अपने दिल में वह (बात) जिसे अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था और आप (स) लोगों (के तअन) से डरते थे और अल्लाह ज़ियादा हक़दार है कि तुम उस से डरो, फिर जब ज़ैद ने उस [ज़ैनब] से अपनी हाजत पूरी कर ली तो हम ने उसे आप (स) के निकाह में दे दिया, ताकि मोमिनों पर कोई तंगी न रहे अपने ले पालकों की वीवियों (से निकाह करने में) जब वह उन से अपनी हाजत पूरी कर लें (तलाक़ दे दें) और अल्लाह का हुक़म (पूरा हो कर) रहने वाला है। (37) नबी पर उस काम में कोई हरज (तंगी) नहीं है जो अल्लाह ने उस के लिए मुक़र्रर किया, अल्लाह का (यही) दस्तूर (रहा है) उन में जो पहले गुज़रे हैं और अल्लाह का हुक़म (सहीह) अन्दाज़े से मुक़र्रर किया हुआ है। (38) वह जो अल्लाह के पैग़ामात पहुँचाते हैं और वह उस से डरते हैं और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते, और अल्लाह काफ़ी है हिसाब लेने वाला। (39) मुहम्मद (स) तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं, लेकिन वह अल्लाह के रसूल और (सब) नवियों पर सुहर (आख़री नबी) हैं और अल्लाह हर शौ का जानने वाला है। (40) ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह को याद करो बक़्सरत। (41) और सुबह और शाम उस की पाकीज़गी बयान करो। (42) वही है जो तुम पर रहमत भेजता है और उस के फ़रिशते (भी) ताकि वह तुम्हें अँधेरों से नूर की तरफ़ निकाल लाए, और अल्लाह मोमिनों पर मेहरबान है। (43)

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَلَا مُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَمْرًا						
किसी काम का	अल्लाह और उस का रसूल	फ़ैसला कर दें	जब	और न किसी मोमिन औरत के लिए	किसी मोमिन मर्द के लिए	और नहीं है
أَنْ يَكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ						
अल्लाह और उस का रसूल	नाफ़रमानी करेगा	और जो	उन के काम में	कोई इख़्तियार	उन के लिए	कि (बाकी) हो
فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا مُّبِينًا ﴿٣٦﴾ وَإِذْ تَقُولُ لِلَّذِي أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ						
उस पर	अल्लाह ने इन्ज़ाम किया	उस शख्स को	और (याद करो) जब आप (स) फ़रमाते थे	36	सरीह	गुमराही तो अलबत्ता वह गुमराही में जा पड़ा
وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِ أَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللَّهَ وَتُخْفِي فِي نَفْسِكَ						
अपने दिल में	और आप (स) छुपाते थे	और डर अल्लाह से	अपनी वीवी	अपने पास	रोके रख	उस पर और आप (स) ने इन्ज़ाम किया
مَا اللَّهُ مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ وَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَاهُ فَلَمَّا						
फिर जब	तुम उस से डरो	कि	ज़ियादा हक़दार	और अल्लाह	लोग	और आप (स) डरते थे उस को ज़ाहिर करने वाला जो अल्लाह
قَضَى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنَاكَ لِلْأُمَّمِينَاتِ لَمْ يَكُن لَّهُنَّ الْكِبْرَاءُ						
मोमिनों	पर	न रहे	ताकि	हम ने उसे तुम्हारे निकाह में दे दिया	अपनी हाजत	उस से ज़ैद पूरी कर ली
حَرَجٌ فِي أَزْوَاجِ أَدْعِيَائِهِمْ إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا وَكَانَ						
और है	अपनी हाजत	उन से	पूरी कर चुकें	जब वह	अपने ले पालक	वीवियों में कोई तंगी
أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ﴿٣٧﴾ مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا فَرَضَ اللَّهُ لَهُ						
उस के लिए	मुक़र्रर किया अल्लाह ने	उस में जो	कोई हरज	नबी पर	नहीं है	37 हो कर रहने वाला अल्लाह का हुक़म
سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ قَدَرًا مَّقْدُورًا ﴿٣٨﴾						
38	अन्दाज़े से	मुक़र्रर किया हुआ	अल्लाह का हुक़म	और है	पहले	गुज़रे वह जो में अल्लाह का दस्तूर
الَّذِينَ يُبَلِّغُونَ رِسَالَاتِ اللَّهِ وَيَخْشَوْنَهُ وَلَا يَخْشَوْنَ أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ						
अल्लाह के सिवा	किसी से	वह नहीं डरते	और उस से डरते हैं	अल्लाह के पैग़ामात	पहुँचाते हैं	वह जो
وَكَفَى بِاللَّهِ حَسِيبًا ﴿٣٩﴾ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ						
तुम्हारे मर्दों में से	किसी के	बाप	मुहम्मद (स)	नहीं है	39	हिसाब लेने वाला अल्लाह और काफ़ी है
وَلَكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ						
हर शौ का	अल्लाह और है	नवियों	और सुहर	अल्लाह के रसूल	और लेकिन	
عَلِيمًا ﴿٤٠﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا ﴿٤١﴾						
41	बक़्सरत	याद	अल्लाह	याद करो तुम	ईमान वालो	ऐ 40 जानने वाला
وَسَبِّحْهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٤٢﴾ هُوَ الَّذِي يُصَلِّي عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ						
और उस के फ़रिशते	तुम पर	भेजता है	वही जो	42	और शाम	सुबह और पाकीज़गी बयान करो उस की
لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ﴿٤٣﴾						
43	मेहरबान	मोमिनों पर	और है	नूर की तरफ़	अन्धेरों	से ताकि वह तुम्हें निकाले

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ سَلَامٌ ۗ وَآعَدَ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيمًا (44)								
44	बड़ा अच्छा	अजर	उन के लिए	और तैयार किया उस ने	सलाम	वह मिलेंगे उस को	जिस दिन	उन की दुआ
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا (45) وَدَاعِيًا								
और बुलाने वाला	45	और डर सुनाने वाला	और खुश खबरी देने वाला	गवाही देने वाला	बेशक हम ने आप (स) को भेजा	ऐ नबी (स)		
إِلَى اللَّهِ بِإِذْنِهِ وَسِرَاجًا مُنِيرًا (46) وَبَشِيرَ الْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّ لَهُمْ								
उन के लिए	यह कि	मोमिनों (जमा)	और खुशखबरी दें	46	रोशन	और चिराग	उस के हुकम से	अल्लाह की तरफ
مِّنَ اللَّهِ فَضْلًا كَبِيرًا (47) وَلَا تَطْعِ الْكُفْرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ وَدَعِ أَذْيَهُمْ								
उन का ईजा देना	और परवान करें	और मुनाफिक (जमा)	काफिर (जमा)	और कहा न मानें	47	बड़ा	फ़ज़ल	अल्लाह (की तरफ) से
وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا (48) يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا								
जब	ईमान वालो	ऐ	48	कारसाज़	अल्लाह	और काफ़ी	अल्लाह पर	और भरोसा करें
نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمْسُوهُنَّ								
तुम उन्हें हाथ लगाओ	कि	पहले	तुम उन्हें तलाक़ दो	फिर	मोमिन औरतों	तुम निकाह करो		
فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُونَهَا فَمَتَّعُوهُنَّ								
पस तुम उन्हें कुछ मताज़ दो	कि पूरी कराओ तुम उस से	कोई इद्दत	उन पर	तो नहीं तुम्हारे लिए				
وَسَرَّحُوهُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا (49) يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَحْلَلْنَا								
हम ने हलाल की	ऐ नबी (स)!	49	अच्छी तरह	रखसत	और उन्हें रखसत कर दो			
لَكَ أَزْوَاجَكَ الَّتِي آتَيْتَ أُجُورَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ								
तुम्हारा दायां हाथ	मालिक हुआ	और जो	उन का मेहर	तुम ने दे दिया	वह जो कि	तुम्हारी बीवियां	तुम्हारे लिए	
مِمَّا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَيْكَ وَبَنَاتِ عَمَّتِكَ وَبَنَاتِ عَمَّتِكَ								
और तुम्हारी फुफियों की बेटियां	और तुम्हारे चचाओं की बेटियां	तुम्हारे	अल्लाह ने हाथ लगा दीं	उन से जो				
وَبَنَاتِ خَالِكَ وَبَنَاتِ خَالَتِكَ الَّتِي هَاجَرْنَ مَعَكَ وَامْرَأَةً								
और औरत	तुम्हारे साथ	उन्होंने ने हिज़्रत की	वह जिन्होंने ने	और तुम्हारी खालाओं की बेटियां	और तुम्हारे मामूओं की बेटियां			
مُؤْمِنَةً إِنْ وَهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ إِنْ أَرَادَ النَّبِيُّ أَنْ								
कि	चाहे नबी (स)	अगर	नबी (स) के लिए	अपने आप को	वह बख़्शदे (नज़र कर दे)	अगर	मोमिना	
يَسْتَنْكِحَهَا خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ قَدْ عَلِمْنَا								
अलबत्ता हमें मालूम है	मोमिनों	अलावा	तुम्हारे लिए	खास	उसे निकाह में लेले			
مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِي أَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ								
मालिक हुए उन के दाहिने हाथ (कनीज़)	और जो	उन की औरतें	में	उन पर	जो हम ने फ़र्ज़ किया			
لَكَيْلَا يَكُونَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا (50)								
50	मेहरबान	बख़्शने वाला	अल्लाह और है	कोई तंगी	तुम पर	ताकि न रहे		

उन का इसतिक़वाल जिस दिन वह उस को मिलेंगे “सलाम” से होगा, और उस ने उन के लिए बड़ा अच्छा अजर तैयार किया है। (44) ऐ नबी (स)! बेशक हम ने आप (स) को भेजा है गवाही देने वाला और खुशखबरी देने वाला और डर सुनाने वाला। (45) और उस के हुकम से अल्लाह की तरफ बुलाने वाला, और रोशन चिराग। (46) और आप (स) मोमिनों को यह खुशखबरी दें कि उन के लिए अल्लाह की तरफ से बड़ा फ़ज़ल है। (47) और आप (स) कहा न मानें काफ़िरों और मुनाफ़िकों का, और आप (स) उन के ईजा देने का खयाल न करें और अल्लाह पर भरोसा करें। और काफ़ी है अल्लाह कारसाज़। (48) ऐ ईमान वालो! जब तुम मोमिन औरतों से निकाह करो, फिर तुम उन्हें उस से पहले तलाक़ दे दो कि तुम उन्हें हाथ लगाओ तो उन पर तुम्हारा (कोई हक) नहीं कि उन की इद्दत पूरी कराओ, पस उन्हें कुछ सामान दे दो और रखसत कर दो अच्छी तरह रखसत। (49) ऐ नबी (स)! हम ने तुम्हारे लिए हलाल की तुम्हारी वह बीवियां जिन को तुम ने उन का मेहर दे दिया, और तुम्हारी कनीज़ें उन में से जो अल्लाह ने (ग़नीमत में से) तुम्हारे हाथ लगा दीं और तुम्हारे चचाओं की बेटियां, और तुम्हारी फुफियों की बेटियां, और तुम्हारे मामूओं की बेटियां, और तुम्हारी खालाओं की बेटियां, वह जिन्होंने तुम्हारे साथ हिज़्रत की, और वह मोमिन औरत जो अपने आप को नबी (स) की नज़र कर दे, अगर नबी (स) उसे निकाह में लेना चाहे, यह अ़ाम मोमिनों के अ़लावा खास तुम्हारे लिए है, अलबत्ता हमें मालूम है जो हम ने उन की औरतों और कनीज़ों (के बारे) में उन पर फ़र्ज़ किया है, ताकि तुम पर कोई तंगी न रहे, और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है। (50)

आप (स) जिस को चाहें दूर रखें उन में से, और जिसे चाहें अपने पास रखें, और उन में से जिस को आप (स) ने दूर कर दिया था आप (फिर) तलब करें तो कोई तंगी (हरज) नहीं आप (स) पर, यह ज़ियादा करीब है कि (उस से) उन की आँखें ठंडी रहें और वह आजुर्दा न हों, और वह सब की सब उस पर राज़ी रहें जो आप उन्हें दें, और अल्लाह जानता है जो तुम्हारे दिलों में है, और अल्लाह जानने वाला बुर्दवार है। (51)

हलाल नहीं आप (स) के लिए इस के बाद (और) औरतें, और न यह कि आप (स) उन से और औरतें बदल लें अगरचे आप (स) को अच्छा लगे उन का हुस्न, सिवाए आप (स) की कनीज़, और अल्लाह हर शै पर निगहवान है। (52) ऐ ईमान वालो! तुम नबी (स) के घरों में दाखिल न हो, सिवाए इस के कि तुम्हें इजाज़त दी जाए खाने के लिए, उस के पकने की राह न तको, लेकिन जब तुम्हें बुलाया जाए तो तुम दाखिल हो, फिर जब तुम खाना खालो तो तुम मुन्तशिर हो जाया करो, और बातों के लिए जी लगा कर न बैठे रहो। बेशक तुम्हारी यह बात नबी (स) को ईज़ा देती है, पस वह तुम से शर्माते हैं, और अल्लाह हक़ बात (फरमाने) से नहीं शर्माता, और जब तुम उन (नबी (स) की वीवियों) से कोई शै मांगो तो उन से पर्दे के पीछे से मांगो, यह बात तुम्हारे और उन के दिलों के लिए ज़ियादा पाकीज़गी का ज़रीआ है, और तुम्हारे लिए जाइज़ नहीं कि तुम अल्लाह के रसूल (स) को ईज़ा दो, और न यह (जाइज़ है) कि उन के बाद कभी भी उन की वीवियों से तुम निकाह करो, बेशक तुम्हारी यह बात अल्लाह के नज़्दीक बड़ा (गुनाह) है। (53) अगर तुम कोई बात ज़ाहिर करो या उसे छुपाओ तो बेशक अल्लाह हर शै का जानने वाला है। (54)

تُرْجَىٰ مَنْ تَشَاءُ مِنْهُمْ وَتُؤَيِّ إِلَيْكَ مَنْ تَشَاءُ ۗ وَمَنْ ابْتَغَيْتَ							
आप (स) तलब करें	और जिस को	जिसे आप (स) चाहें	अपने पास	और पास रखें	उन में से	जिस को आप (स) चाहें	दूर रखें
مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ذَلِكَ أَدْنَىٰ أَنْ تَقَرَّ أَعْيُنُهُنَّ							
उन की आँखें	कि ठंडी रहें	यह ज़ियादा करीब है	आप (स) पर	तो कोई तंगी नहीं	दूर कर दिया था आप ने	उन में से जो	
وَلَا يَحْزَنَ وَيَرْضَيْنَ بِمَا آتَيْتَهُنَّ كُلَّهُنَّ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا							
जो जानता है	और अल्लाह	वह सब की सब	उस पर जो आप (स) ने उन्हें दी	और वह राज़ी रहें	और वह आजुर्दा न हों		
فِي قُلُوبِكُمْ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَلِيمًا ﴿٥١﴾ لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَاءُ							
औरतें	आप के लिए	हलाल नहीं	51	बुर्दवार	जानने वाला	अल्लाह और है	तुम्हारे दिलों में
مِنْ بَعْدُ وَلَا أَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ أَزْوَاجٍ وَلَوْ أَعْجَبَكَ							
आप (स) को अच्छा लगे	अगरचे	औरतें	से (और)	उन से	यह कि बदल लें	और न	उस के बाद
حُسْنُهُنَّ إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ							
हर शै	पर	अल्लाह और है	जिस का मालिक हो तुम्हारा हाथ (कनीज़)			सिवाए	उन का हुस्न
رَّقِيبًا ﴿٥٢﴾ يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ							
नबी (स)	घर (जमा)	तुम दाखिल न हो	ईमान वालो	ऐ	52	निगहवान	
إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَىٰ طَعَامٍ غَيْرٍ نَظِيرِينَ إِنَّهُ وَلَكِنْ إِذَا							
जब	और लेकिन	उस का पकना	न राह तको	खाना	तरफ (लिए)	तुम्हारे लिए	इजाज़त दी जाए
دُعَيْتُمْ فَادْخُلُوا فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوا وَلَا مُسْتَأْنِسِينَ							
और न जी लगा कर बैठे रहो	तो तुम मुन्तशिर हो जाया करो	तुम खालो	फिर जब	तो तुम दाखिल हो	तुम्हें बुलाया जाए		
لِحَدِيثٍ ۗ إِنَّ ذَلِكُمْ كَانَ يُؤْذَى النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيِي مِنْكُمْ							
तुम से	पस वह शर्माते हैं	नबी (स)	ईज़ा देती है	यह तुम्हारी बात	बेशक	बातों के लिए	
وَاللَّهُ لَا يَسْتَحْيِي مِنَ الْحَقِّ ۗ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا							
कोई शै	तुम उन से मांगो	और जब	हक़ (बात) से	नहीं शर्माता	और अल्लाह		
فَسَأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ ذَلِكُمْ أَطْهَرُ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ ۗ							
और उन के दिल	तुम्हारे दिलों के लिए	ज़ियादा पाकीज़गी	तुम्हारी यह बात	पर्दे के पीछे से	तो उन से मांगो		
وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ وَلَا أَنْ تُنْكِحُوا أَزْوَاجَهُ							
उस की वीवियों	यह कि तुम निकाह करो	और न	अल्लाह का रसूल (स)	कि तुम ईज़ा दो	तुम्हारे लिए	और (जाइज़) नहीं	
﴿٥٣﴾ مِنْ بَعْدِهِ أَبَدًا ۗ إِنَّ ذَلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمًا							
53	बड़ा	अल्लाह के नज़्दीक	है	तुम्हारी यह बात	बेशक	कभी	उन के बाद
﴿٥٤﴾ إِنْ تُبَدُّوا شَيْئًا أَوْ تَخْفَوْهُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا							
54	जानने वाला	हर शै	है	तो बेशक अल्लाह	या उसे छुपाओ	कोई बात	अगर तुम ज़ाहिर करो

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِي آبَائِهِنَّ وَلَا أَبْنَائِهِنَّ وَلَا إِخْوَانِهِنَّ						
और न अपने भाई	अपने बेटों	और न	अपने बाप	में	औरतों पर	गुनाह नहीं
وَلَا أَبْنَاءَ إِخْوَانِهِنَّ وَلَا أَبْنَاءَ أَخَوَاتِهِنَّ وَلَا نِسَائِهِنَّ وَلَا						
और न	अपनी औरतें	और न	अपनी बहनों के बेटे	और न	अपने भाइयों के बेटे	और न
مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ ۚ وَاتَّقِينَ اللَّهَ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ						
पर	है	वेशक अल्लाह	अल्लाह	और डरती रहो	जिस के मालिक हुए उन के हाथ (कनीजें)	
كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ﴿٥٥﴾ إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا						
ऐ	नबी (स) पर	दरूद भेजते हैं	और उस के फ़रिश्ते	वेशक अल्लाह	55	गवाह (मौजूद) हर शै
الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ﴿٥٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ						
जो लोग	वेशक	56	खूब सलाम	और सलाम भेजो	उस पर	दरूद भेजो ईमान वालो
يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ						
और तैयार किया उस ने	और आख़िरत	दुनिया में	उन पर लानत की अल्लाह ने	अल्लाह और उस का रसूल (स)	ईज़ा देते हैं	
لَهُمْ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿٥٧﴾ وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ						
और मोमिन औरतें	मोमिन मर्द (जमा)	ईज़ा देते हैं	और जो लोग	57	रुस्वा करने वाला अज़ाब	उन के लिए
بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوا فَقَدْ احْتَمَلُوا بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ﴿٥٨﴾						
58	सरीह	और गुनाह	बुहतान	अलबत्ता उन्होंने ने उठाया	कि उन्होंने ने कमाया (किया)	बग़ैर
يَأْتِيهَا النَّبِيُّ قُلٌّ لِّأَزْوَاجِكَ وَبَنَاتِكَ وَنِسَاءِ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ						
डाल लिया करें	मोमिनो	और औरतों को	और बेटियों को	अपनी वीवियों को	फरमा दें	ऐ नबी (स)
عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيبِهِنَّ ۗ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَنْ يُعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ ۗ						
तो उन्हें न सताया जाए	उन की पहचान हो जाए	कि	करीब तर	यह	अपनी चादरें	से अपने ऊपर
وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٥٩﴾ لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ الْمُنَافِقُونَ						
मुनाफ़िक (जमा)	बाज़ न आए	अगर	59	मेहरबान	बख़शने वाला	और अल्लाह है
وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ وَالْمُرْجِفُونَ فِي الْمَدِينَةِ						
मदीना	में	और झूठी अफ़वाहें उड़ाने वाले	रोग	उन के दिलों में	और वह जो	
لَنُغْرِبَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُونَكَ فِيهَا إِلَّا قَلِيلًا ﴿٦٠﴾ مَلْعُونِينَ ۗ						
फिटकारे हुए	60	चन्द दिन	सिवाए	इस (शहर) में	तुम्हारे हमसाया न रहेंगे वह	फिर उन के हम ज़रूर तुम्हें पीछे लगा देंगे
أَيْنَمَا تُقِفُوا أُحِدُوا وَقُتِلُوا تَقْتِيلًا ﴿٦١﴾ سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ						
उन लोगों में जो	अल्लाह का दस्तूर	61	बुरी तरह मारा जाना	और मारे जाएंगे	पकड़े जाएंगे	वह पाए जाएंगे जहां कहीं
خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۗ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ﴿٦٢﴾						
62	कोई तबदीली	अल्लाह के दस्तूर में	और तुम हरगिज़ न पाओगे	इन से पहले	गुज़रे	

औरतों पर गुनाह नहीं (पर्दा न करने में) अपने बाप, और न अपने बेटों, और न अपने भाइयों, और न अपने भाइयों के बेटों, और न अपनी बहनों के बेटों, और न अपनी औरतों से, और न अपनी कनीजों से, (ऐ औरतो) तुम अल्लाह से डरती रहो, वेशक अल्लाह हर शै पर गवाह (मौजूद) है। (55) वेशक अल्लाह और उस के फ़रिश्ते नबी (स) पर दरूद भेजते हैं, ऐ ईमान वालो! तुम भी उस पर दरूद भेजो और खूब सलाम भेजो। (56) वेशक जो लोग अल्लाह को और उस के रसूल (स) को ईज़ा देते हैं अल्लाह ने उन पर दुनिया और आख़िरत में लानत की (अपनी रहमत से महरूम कर दिया) और उनके लिए रुस्वा करने वाला अज़ाब तैयार किया। (57) और जो लोग मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को ईज़ा देते हैं, बग़ैर उस के कि उन्होंने ने कुछ किया हो तो अलबत्ता उन्होंने ने उठाया (अपने सर लिया) बुहतान और सरीह गुनाह। (58) ऐ नबी (स)! आप (स) अपनी वीवियों और अपनी बेटियों को, और मोमिनो की औरतों को फरमा दें कि वह अपने ऊपर अपनी चादरें डाल लिया करें (घूँघट निकाल लिया करें) यह (उस से) करीब तर है कि उन की पहचान हो जाए, तो उन्हें न सताया जाए, और अल्लाह बख़शने वाला, निहायत मेहरबान है। (59) अगर बाज़ न आए मुनाफ़िक और वह लोग जिन के दिलों में रोग है, और मदीने में झूठी अफ़वाहें उड़ाने वाले, तो हम ज़रूर तुम्हें उन के पीछे लगा देंगे, फिर वह इस शहर (मदीना) में चन्द दिन के सिवा तुम्हारे हमसाया (पास) न रहेंगे। (60) फिटकारे हुए, वह जहाँ कहीं पाए जाएंगे पकड़े जाएंगे, और बुरी तरह मारे जाएंगे। (61) अल्लाह का (यही) दस्तूर रहा है, उन लोगों में जो गुज़रे हैं इन से पहले, और तुम अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई तबदीली न पाओगे। (62)

ع ۴

۱۲ صفحہ ۱۲

الح ۱۲

आप (स) से लोग क़ियामत के बारे में सवाल करते हैं। आप (स) फ़रमा दें इस के सिवा नहीं कि उस का इल्म अल्लाह के पास है, और तुम्हें क्या ख़बर! शायद क़ियामत करीब (ही) हो। (63)

वेशक अल्लाह ने काफ़िरों पर लानत की, और उन के लिए (जहनून की) भड़कती हुई आग तैयार की है। (64)

वह उस में हमेशा हमेशा रहेंगे, वह न कोई दोस्त पाएंगे, और न मददगार। (65)

जिस दिन उन के चेहरे आग में उलट पुलट किए जाएंगे, वह कहेंगे ऐ काश! हम ने इताज़त की होती अल्लाह की, और इताज़त की होती रसूल (स) की। (66)

और वह कहेंगे, ऐ हमारे रब! वेशक हम ने इताज़त की अपने सरदारों की और अपने बड़ों की, तो उन्होंने ने हमें रास्ते से भटक़ाया। (67)

ऐ हमारे रब! उन्हें दुगना अज़ाब दे और उन पर बड़ी लानत कर। (68)

ऐ ईमान वालो! उन लोगों की तरह न होना जिन्होंने ने मूसा (अ) को (इल्ज़ाम लगा कर) सताया तो बरी कर दिया उस को अल्लाह ने उस से जो उन्होंने ने कहा (इल्ज़ाम लगाया), और वह (मूसा अ) अल्लाह के नज़्दीक बाआबरू थे। (69)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सधी बात कहो। (70)

वह तुम्हारे लिए तुम्हारे अमल संवार देगा, और तुम्हारे गुनाह व़ख़श देगा, और जिस ने अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताज़त की तो वह बड़ी मुराद को पहुँचा। (71)

वेशक हम ने अपनी अमानत (ज़िम्मेदारी को) पेश किया आस्मानों और ज़मीन और पहाड़ों पर, तो उन्होंने ने उस के उठाने से इन्कार किया, और वह उस से डर गए, और इन्सान ने उसे उठा लिया, वेशक वह ज़ालिम, बड़ा नादान था। (72)

ताकि अल्लाह अज़ाब दे मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों को, और मुशर्रिक मर्दों और मुशर्रिक औरतों को, और अल्लाह तौबा कुबूल करे मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों की, वेशक अल्लाह व़ख़शने वाला मेहरवान है। (73)

يَسْأَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ۗ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ وَمَا

और क्या	अल्लाह के पास	उस का इल्म	इस के सिवा नहीं	फ़रमा दें	क़ियामत	से (सुतअख़िक्)	लोग	आप से सवाल करते हैं
---------	---------------	------------	-----------------	-----------	---------	----------------	-----	---------------------

يُذَرِّبُكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُونُ قَرِيبًا ﴿٦٣﴾ إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكٰفِرِينَ

काफ़िरों पर	लानत की	वेशक अल्लाह	63	करीब	हो	क़ियामत	शायद	तुम्हें ख़बर
-------------	---------	-------------	----	------	----	---------	------	--------------

وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا ﴿٦٤﴾ خٰلِدِينَ فِيهَا اَبَدًا ۗ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا

और न	कोई दोस्त	वह न पाएंगे	हमेशा	उस में	हमाशा रहेंगे	64	भड़कती हुई आग	उन के लिए	और तैयार किया उस ने
------	-----------	-------------	-------	--------	--------------	----	---------------	-----------	---------------------

نَصِيرًا ﴿٦٥﴾ يَوْمَ تَقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يٰلَيْتَنَا اَطَعْنَا

हम ने इताज़त की होती	ऐ काश हम	वह कहेंगे	आग में	उन के चेहरे	उलट पुलट किए जाएंगे	जिस दिन	65	कोई मददगार
----------------------	----------	-----------	--------	-------------	---------------------	---------	----	------------

اللَّهِ وَاَطَعْنَا الرَّسُوْلًا ﴿٦٦﴾ وَقَالُوْا رَبَّنَا اِنَّا اَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرٰءَنَا

और अपने बड़ों	अपने सरदार	हम ने इताज़त की	वेशक हम	ऐ हमारे रब	और वह कहेंगे	66	और इताज़त की होती रसूल	अल्लाह
---------------	------------	-----------------	---------	------------	--------------	----	------------------------	--------

فَاَصْلٰوْنَا السَّبِيْلًا ﴿٦٧﴾ رَبَّنَا اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَدَابِ وَالْعَنَهُمْ

और लानत कर उन पर	अज़ाब	दुगना	दे उन्हें	ऐ हमारे रब	67	रास्ता	तो उन्होंने ने भटक़ाया हमें
------------------	-------	-------	-----------	------------	----	--------	-----------------------------

لَعْنَا كَبِيْرًا ﴿٦٨﴾ يٰٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذُوْا

उन्होंने ने सताया	उन लोगों की तरह	तुम न होना	ईमान वालो	ऐ	68	बड़ी लानत
-------------------	-----------------	------------	-----------	---	----	-----------

مُوْسٰى فَبَرّٰهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا وَكَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا ﴿٦٩﴾

69	बाआबरू	अल्लाह के नज़्दीक	और वह थे	उन्होंने ने कहा	उस से जो	अल्लाह	तो बरी कर दिया उस को	मूसा (अ)
----	--------	-------------------	----------	-----------------	----------	--------	----------------------	----------

يٰٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ﴿٧٠﴾ يُصْلِحْ

वह संवार देगा	70	सीधी	बात	और कहो	अल्लाह से डरो	ईमान वालो	ऐ
---------------	----	------	-----	--------	---------------	-----------	---

لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۗ وَمَنْ يُطِْعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهُ

और उस का रसूल	अल्लाह की इताज़त की	और जो-जिस	तुम्हारे लिए तुम्हारे गुनाह	और व़ख़श देगा	तुम्हारे अमल (जमा)	तुम्हारे लिए
---------------	---------------------	-----------	-----------------------------	---------------	--------------------	--------------

فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٧١﴾ اِنَّا عَرَضْنَا الْاٰمَانَةَ عَلٰى السَّمٰوٰتِ

आस्मान (जमा)	पर	अमानत	हम ने पेश किया	वेशक हम	71	बड़ी मुराद	तो वह मुराद को पहुँचा
--------------	----	-------	----------------	---------	----	------------	-----------------------

وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَابِيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا

उस से	और वह डर गए	कि वह उसे उठाएं	तो उन्होंने ने इन्कार किया	और पहाड़	और ज़मीन
-------	-------------	-----------------	----------------------------	----------	----------

وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ۗ اِنَّهٗ كَانَ ظٰلُوْمًا جَهُوْلًا ﴿٧٢﴾ لِّيُعَذَّبَ اللّٰهَ

ताकि अल्लाह अज़ाब दे	72	बड़ा नादान	ज़ालिम	था	वेशक वह	इन्सान ने	और उसे उठा लिया
----------------------	----	------------	--------	----	---------	-----------	-----------------

الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ وَيَثُوْبَ

और तौबा कुबूल करे	और मुशर्रिक औरतों	और मुशर्रिक मर्दों	और मुनाफ़िक़ औरतों	मुनाफ़िक़ मर्दों
-------------------	-------------------	--------------------	--------------------	------------------

اللّٰهُ عَلٰى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٣﴾

73	मेहरवान	व़ख़शने वाला	अल्लाह और हे	और मोमिन औरतों	मोमिन मर्दों	पर-की	अल्लाह
----	---------	--------------	--------------	----------------	--------------	-------	--------

<p>آيَاتُهَا ٥٤ ﴿٣٤﴾ سُورَةُ سَبَا ﴿٣٤﴾ ﴿٣٤﴾ زُكُورَاتُهَا ٦</p>							
रुकुआत 6		(34) सूरतुस सबा			आयात 54		
<p>بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ</p>							
<p>अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है</p>							
<p>الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَلَهُ</p>							
और उसी के लिए	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	वह जिस के लिए	तमाम तारीफें अल्लाह के लिए	
<p>الْحَمْدُ فِي الْأَخِرَةِ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ﴿١﴾ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ</p>							
जो दाखिल होता है	वह जानता है	1	खबर रखने वाला	हिक्मत वाला	और वह	आखिरत में	हर तारीफ
<p>فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ</p>							
चढ़ता है	और जो	आस्मान से	नाज़िल होता है	और जो	उस से	निकलता है	और जो ज़मीन में
<p>فِيهَا وَهُوَ الرَّحِيمُ الْغَفُورُ ﴿٢﴾ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا</p>							
हम पर नहीं आएगी	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	और कहा (कहते हैं)	2	बख़शने वाला	मेहरवान	और वह	उस में
<p>السَّاعَةَ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَأْتِيَنَّكُمْ عِلْمُ الْغَيْبِ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ</p>							
उस से	पोशीदा नहीं	ग़ैब	जानने वाला	अलबत्ता तुम पर ज़रूर आएगी	कसम मेरे रब की	हाँ	फ़रमा दें क़ियामत
<p>مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغَرُ مِنْ ذَلِكَ</p>							
उस से	छोटा	और न	ज़मीन में	और न	आस्मानों में	एक ज़र्र के बराबर	
<p>وَلَا أَكْبَرُ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٣﴾ لَيَجْزِيَنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا</p>							
और उन्होंने ने अमल किए	उन लोगों को जो ईमान लाए	ताकि जज़ा दे	3	रोशन किताब	में	मगर बड़ा	और न
<p>الصَّالِحَاتِ أُولَئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٤﴾ وَالَّذِينَ</p>							
और वह लोग जो	4	और इज़्ज़त की रोज़ी	बख़्शिश	उन के लिए	यही लोग	नेक	
<p>سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ أُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رَّجْرِ أَلِيمٍ ﴿٥﴾</p>							
5	सख़्त दर्दनाक	से	अज़ाब	उन के लिए	यही लोग	हराने के लिए	हमारी आयतों में उन्हीं ने कोशिश की
<p>وَيَرَى الَّذِينَ أُوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِي أُنزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ</p>							
तुम्हारे रब की तरफ़ से	तुम्हारी तरफ़	नाज़िल किया गया	वह जो कि	इल्म	दिया गया	वह लोग जिन्हें	और वह देखते हैं
<p>هُوَ الْحَقُّ وَيَهْدِي إِلَى صِرَاطِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ﴿٦﴾</p>							
6	सज़ावारे तारीफ	ग़ालिव	रास्ता	तरफ़	और वह रहनुमाई करता है	वह हक	
<p>وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ يُنْبِئُكُمْ</p>							
वह खबर देता है तुम्हें	ऐसा आदमी	पर	हम बतलाएँ तुम्हें	क्या	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	और कहा (कहते हैं)	
<p>إِذَا مُرِّقْتُمْ كُلَّ مُمَرِّقٍ إِنَّكُمْ لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿٧﴾</p>							
7	ज़िन्दगी नई	अलबत्ता में	बेशक तुम	पूरी तरह रेज़ा रेज़ा	तुम रेज़ा रेज़ा हो जाओगे	जब	

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं, उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों और जो कुछ ज़मीन में है, और उसी के लिए हर तारीफ है आखिरत में, और वह हिक्मत वाला, ख़बर रखने वाला। (1) वह जानता है जो ज़मीन में दाखिल होता है (मसलन पानी) और जो उस से निकलता है, और जो आस्मान से नाज़िल होता है, और जो उस में चढ़ता है, और वह मेहरवान है बख़शने वाला। (2) और कहते हैं काफ़िर कि हम पर क़ियामत नहीं आएगी, आप (स) फरमा दें हाँ! मेरे रब की कसम! अलबत्ता वह तुम पर ज़रूर आएगी, और वह ग़ैब का जानने वाला है। उस से एक ज़र्र के बराबर भी पोशीदा नहीं आस्मानों में और न ज़मीन में, और न छोटा उस से और न बड़ा मगर (सब कुछ) रोशन किताब में है। (3) ताकि वह उन लोगों को जज़ा दे जो ईमान लाए और उन्हीं ने अमल किए नेक, यही लोग हैं जिन के लिए बख़्शिश और इज़्ज़त की रोज़ी है। (4) और जिन लोगों ने हमारी आयतों में कोशिश की हराने के लिए, उन ही लोगों के लिए सख़्त दर्दनाक अज़ाब है। (5) और जिन्हें इल्म दिया गया वह देखते (जानते) हैं कि जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से नाज़िल किया गया है वह हक है, और (अल्लाह) ग़ालिव, सज़ावारे तारीफ के रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करता है। (6) और काफ़िर कहते हैं क्या हम तुम्हें बताएँ ऐसा आदमी जो तुम्हें खबर देता है कि जब तुम पूरी तरह रेज़ा रेज़ा हो जाओगे, तो बेशक तुम नई ज़िन्दगी में (आओगे)। (7)

उस ने अल्लाह पर झूट बान्धा है या उसे जुनून (है), (नहीं) बल्कि जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते, वह अज़ाब और दूर की (शदीद) गुमराही में है। (8)

क्या उन्होंने ने नहीं देखा? उस की तरफ जो उन के आगे और जो उन के पीछे है, यानी आस्मान और ज़मीन, अगर हम चाहें तो हम उन्हें ज़मीन में धंसा दें या उन पर आस्मान का टुकड़ा गिरा दें, वेशक उस में निशानी है हर रज़ूअ करने वाले बन्दे के लिए। (9)

और तहकीक हम ने दाऊद (अ) को अपनी तरफ से फ़ज़ल अता किया। ऐ पहाड़ो! उस के साथ तस्वीह करो और परिन्दो (तुम भी)। और हम ने उस के लिए लोहे को नर्म कर दिया। (10)

कि चौड़े ज़िरहें बनाओ, और कड़ियों को जोड़ने में अन्दाज़ा रखो, और अच्छे अमल करो, तुम जो कुछ करते हो वेशक मैं उस को देख रहा हूँ। (11)

और सुलेमान (अ) के लिए हवा (को मुसख़्बर) किया और उस की सुबह की मन्ज़िल एक माह (की राह होती) और शाम की मन्ज़िल एक माह (की राह) और हम ने उस के लिए तांबे का चश्मा बहाया, और जिन्नात में से (बाज़) उसके सामने काम करते थे उस के रब के हुक्म से। और उन में से जो हमारे हुक्म से कज़ी करेगा हम उसे दोज़ख के अज़ाब का मज़ा चखाएंगे। (12)

वह (जिन्नात) बनाते उस के लिए जो वह (सुलेमान अ) चाहते, क़िल्ए, और तस्वीरें, और हौज़ जैसे लगन, एक जगह जमी हुई देंगे, ऐ खानदाने दाऊद (अ)! तुम शुक्र बजा ला कर अमल करो, और मेरे बन्दों में शुक्रगुज़ार थोड़े है। (13)

फिर जब हम ने उस की मौत का हुक्म जारी किया, उन्हें (जिन्नों को) उस की मौत का पता न दिया मगर घुन की तरह कीड़े (दीमक) ने, वह उस का असा खाता था, फिर जब वह गिर पड़ा तो जिन्नों पर हकीकत खुली कि अगर वह ग़ैब जानते होते तो वह न रहते ज़िल्लत के अज़ाब में। (14)

أَفْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَمْ بِهِ جِنَّةٌ بَلِ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ								
ईमान नहीं रखते	वह लोग जो	बल्कि	जुनून	उसे	या	झूट	अल्लाह पर	उस ने बान्धा
بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلَالِ الْبَعِيدِ ﴿٨﴾ أَفَلَمْ يَرَوْا إِلَى مَا								
जो	तरफ	क्या उन्होंने ने नहीं देखा?	8	दूर	और गुमराही	अज़ाब में	आखिरत पर	
بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّ نَسْأَ								
अगर हम चाहें	और ज़मीन	आस्मान से	उन के पीछे	और जो	उन के आगे			
نَخِيفُ بِهِمُ الْأَرْضِ أَوْ نُسْقِطُ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَاءِ إِنَّ								
वेशक	आस्मान से	टुकड़ा	उन पर	या गिरा दें	ज़मीन	उन्हें धंसा दें हम		
فِي ذَلِكَ لَآيَةٌ لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ﴿٩﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ مِنَّا فَضْلًا								
फ़ज़ल	अपनी तरफ से	दाऊद (अ)	और तहकीक हम ने दिया	9	रज़ूअ करने वाला	बन्दा	लिए - हर	अलबत्ता निशानी
يُجِبَالٍ أَوْبَىٰ مَعَهُ وَالطَّيْرِ ۖ وَآلَنَّا لَهُ الْحَدِيدَ ﴿١٠﴾ إِنِ اعْمَلْ								
बनाओ	कि	10	लोहा	उस के लिए	और हम ने नर्म कर दिया	और परिन्दो	उस के साथ	तस्वीह करो
سَبِغْتَ وَقَدَّرْ فِي السَّرْدِ وَاعْمَلُوا صَالِحًا إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ								
तुम जो कुछ करते हो उस को	वेशक	अच्छे	और अमल करो	(कड़ियों के) जोड़ने में	और अन्दाज़ा रखो	कुशादह ज़िरहें		
بَصِيرٌ ﴿١١﴾ وَلِسَلِيمَانَ الرَّيْحَ غُدُوها شَهْرٌ وَرَوَاحُهَا شَهْرٌ								
एक माह	और शाम की मन्ज़िल	एक माह	उस की सुबह की मन्ज़िल	हवा	और सुलेमान (अ) के लिए	11	देख रहा हूँ	
وَأَسَلْنَا لَهُ عَيْنَ الْقِطْرِ ۖ وَمِنَ الْجِنِّ مَن يَّعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِإِذْنِ								
इज़न (हुक्म) से	उस के सामने	वह काम करते	जिन्न	और से	तांबे का चश्मा	और हम ने बहाया उस के लिए		
رَبِّهِ ۖ وَمَن يَّزِعْ مِنْهُمُ عَن أَمْرِنَا نُذِقْهُ مِّنْ عَذَابِ السَّعِيرِ ﴿١٢﴾								
12	आग (दोज़ख)	अज़ाब	से - का	हम उस को चखाएंगे	हमारे हुक्म से	उन में से	कज़ी करेगा	और जो
يَعْمَلُونَ لَهُ مَا يَشَاءُ مِنْ مَّحَارِبٍ وَتَمَائِيلٍ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ								
हौज़ जैसे	और लगन	और तस्वीरें	बड़ी इमारतें (क़िल्ए)	से	जो वह चाहते	उस के लिए	वह बनाते	
وَقُدُورٍ رُّسَيْتٍ ۖ اَعْمَلُوا اِلَ دَاوُدَ شُكْرًا ۖ وَقَلِيلٌ مِّنْ عِبَادِي								
मेरे बन्दे	से	और थोड़े	शुक्र बजा ला कर	ऐ खानदाने दाऊद	तुम अमल करो	एक जगह जमी हुई	और देंगे	
السَّكُورُ ﴿١٣﴾ فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَىٰ مَوْتِهِ								
उस की मौत का	उन्हें पता न दिया	मौत	उस पर	हुक्म जारी किया	फिर जब हम ने	13	शुक्र गुज़ार	
إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ مِنسَاتَهُ ۖ فَلَمَّا خَرَ تَبَيَّنَتِ الْجِنَّ								
जिन्न	हकीकत खुली	वह गिर पड़ा	फिर जब	उस का असा	वह खाता था	घुन का कीड़ा	मगर	
أَن لَّو كَانُوا يَعْلَمُونَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوا فِي الْعَذَابِ الْمُهِينِ ﴿١٤﴾								
14	ज़िल्लत	अज़ाब	में	वह न रहते	ग़ैब	वह जानते होते	अगर	



لَقَدْ كَانَ لِسَبَا فِي مَسْكِنِهِمْ آيَةٌ جَنَّتِ عَنْ يَمِينٍ وَشَمَالٍ							
और बाएं	दाएं से	दो बाग	एक निशानी	उन की आबादी	में	(कौम) सबा के लिए	अलबत्ता थी
كُلُوا مِنْ رِزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوا لَهُ بَلَدَةٌ طَيِّبَةٌ وَرَبُّ							
और रब	पाकीज़ा	शहर	उस का	और शुक्र अदा करो	अपने रब का रिज़्क	से	तुम खाओ
غَفُورٌ ﴿١٥﴾ فَأَعْرَضُوا فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَبَدَّلْنَاهُمْ							
और हम ने उन्हें बदल दिए	सैलाव बन्द से (रुका हुआ)	उन पर	तो हम ने भेजा	फिर उन्होंने ने मुँह मोड़ लिया	15	बख़्शने वाला	
بِحَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَى أُكُلٍ حَمِيٍّ وَأَثَلٍ وَمَشْيٍ مِّنْ سِدْرٍ							
वेरियां	और कुछ	और झाड़	बदमज़ा	मेवा	वाले	दो बाग	उन के दो बागों के बदले
قَلِيلٍ ﴿١٦﴾ ذَلِكَ جَزَيْنَهُمْ بِمَا كَفَرُوا وَهَلْ نُجِزِي إِلَّا الْكَافِرَ ﴿١٧﴾							
17	नाशुक्रा	मगर-सिर्फ	हम सज़ा देते	और नहीं	उन्होंने ने नाशुक्रा की	उस के सबब जो	हम ने उन को सज़ा दी
وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا قُرَى ظَاهِرَةً							
एक दूसरे से मुत्तसिल	बस्तियां	उस में	हम ने बरकत दी	वह जिन्हें	बस्तियां	और दरमियान	उन के दरमियान और हम ने (आबाद) कर दिए
وَقَدَرْنَا فِيهَا السَّيْرَ سِيرُوا فِيهَا لَيَالِيًّ وَأَيَّامًا مَّيِّنًا ﴿١٨﴾							
18	अमन से (बेखौफ़ ओ ख़तर)	और दिन (जमा)	रातों	उन में	तुम चलो (फिरो)	उन में आमद ओ रफ़्त	और हम ने मुक़र्रर कर दिया
فَقَالُوا رَبَّنَا بَعْدَ بَيْنِ أَسْفَارِنَا وَظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنَاهُمْ							
तो हम ने बना दिया उन्हें	अपनी जानों पर	और उन्होंने ने जुल्म किया	हमारे सफ़रों के दरमियान	दूरी पैदा कर दे	ऐ हमारे रब	वह कहने लगे	
أَحَادِيثَ وَمَزَّقْنَاهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ							
निशानियां	उस में	वेशक	पूरी तरह परागन्दा	और हम ने उन्हें परागन्दा कर दिया		अफ़साने	
لِكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ﴿١٩﴾ وَلَقَدْ صَدَقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ ظَنَّهُ فَاتَّبَعُوهُ							
पस उन्होंने ने उस की पैरवी की	अपना गुमान	इब्लिस	उन पर	सच कर दिखाया	और अलबत्ता	19	शुक्र गुज़ार हर सबर करने वाले
إِلَّا فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٠﴾ وَمَا كَانَ لَهُ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ							
कोई ग़ल्वा	उन पर	उसे (इब्लिस को)	और न था	20	मोमिनीन	से-का	एक गिरोह सिवाए
إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُؤْمِنُ بِالْآخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنهَا فِي شَكٍّ							
शक में	उस से	वह	उस से जो	आख़िरत पर	जो ईमान रखता है	ताकि हम मालूम कर लें	मगर
وَرَبُّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ﴿٢١﴾ قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُمْ							
गुमान करते हो	उन को जिन्हें	पुकारो	फ़रमा दें	21	निगहवान	हर शौ	पर और तेरा रब
مِّنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا							
और न	आस्मानों में	एक ज़र्रे के बराबर	वह मालिक नहीं है	अल्लाह के सिवा			
فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهَا مِن شَرِكٍ وَمَا لَهُ مِنْهُمْ مِّن ظَهِيرٍ ﴿٢٢﴾							
22	कोई मददगार	उन में से	और नहीं उस (अल्लाह) का	उन (आस्मान और ज़मीन) में कोई साझा	उन का	और नहीं	ज़मीन में

अलबत्ता कौम सबा के लिए उन की आबादी में निशानी थी, दो बाग दाएं और बाएं, (हम ने कह दिया कि) तुम अपने परवरदिगार के रिज़्क से खाओ और उस का शुक्र अदा करो, शहर है पाकीज़ा और परवरदिगार है बख़्शने वाला। (15) फिर उन्होंने ने मुँह मोड़ लिया तो हम ने उन पर (बन्द तोड़ कर) जोर का सैलाव भेजा और उन दो बागों के बदले (दूसरे) दो बाग दिए बदमज़ा मेवा वाले और कुछ झाड़, और थोड़ी सी वेरियां। (16) यह हम ने उन्हें सज़ा दी इस लिए कि उन्होंने ने नाशुक्रा की और हम सिर्फ़ नाशुक्रा को सज़ा देते हैं। (17) और हम ने आबाद कर दी उन के दरमियान और (शाम) की उन बस्तियों के दरमियान जिन्हें हम ने बरकत दी है, एक दूसरे से लगी बस्तियां, और हम ने उन में सफ़र के पड़ाव मुक़र्रर कर दीं, तुम उन में चलो फिरो, रात और दिन बेखौफ़ ओ ख़तर। (18) वह कहने लगे ऐ हमारे परवरदिगार! हमारे सफ़रों के दरमियान दूरी पैदा कर दे, और उन्होंने ने अपनी जानों पर जुल्म किया तो हम ने उन्हें बना दिया अफ़साने, और हम ने उन्हें पूरी पूरी तरह परागन्दा कर दिया, वेशक उस में हर बड़े सबर करने वाले शुक्र गुज़ार के लिए निशानियां हैं। (19) और अलबत्ता इब्लिस ने उन पर अपना गुमान सच कर दिखाया, पस उन्होंने ने उस की पैरवी की सिवाए एक गिरोह मोमिनों के। (20) और इब्लिस को उन पर कोई ग़ल्वा न था मगर (हम चाहते थे कि) मालूम कर लें जो आख़िरत पर ईमान रखता है उस से (जुदा कर के) जो उस (के बारे में) शक में है, और तेरा रब हर शौ पर निगहवान है। (21) आप (स) फ़रमा दें, उन्हें पुकारो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा (माबूद) गुमान करते हो, वह (तो) एक ज़र्रा बराबर चीज़ के भी मालिक नहीं (इख़्तियार नहीं रखते) आस्मानों में और न ज़मीन में और न उन (आस्मान और ज़मीन) में उन का कोई साझा है और न उन में से कोई (अल्लाह का) मददगार है। (22)

२  
८

और शफ़ाअत (सिफ़ारिश) नफ़ा नहीं देती उस के पास सिवाए उस के जिसे वह इजाज़त देदे, यहां तक कि जब उन के दिलों से (घबराहट) दूर कर दी जाती है तो कहते हैं क्या कहा है तुम्हारे रब ने, वह (सिफ़ारिश) कहते हैं कि हक़ (फ़रमाया है), और वह बुलन्द मरतबा वुजुर्ग कद्र है। (23)

आप (स) फ़रमा दें कौन तुम्हें रोज़ी देता है आस्मानों से और ज़मीन से, फ़रमा दें "अल्लाह"। बेशक हम या तुम (दोनों में से एक) अलबत्ता हिदायत पर है या खुली गुमराही में है। (24)

आप (स) फ़रमा दें (अगर हम मुज़रिम हैं तो) तुम से उस गुनाह की वावत न पूछा जाएगा जो हम ने किया और न हम से उस वावत पूछा जाएगा जो तुम करते हो। (25)

फ़रमा दें हम सब को जमा करेगा हमारा रब, फिर हमारे दरमियान ठीक ठीक फ़ैसला करेगा, और वह फ़ैसला करने वाला, जानने वाला है। (26)

आप (स) फ़रमा दें मुझे दिखाओ जिन्हें तुम ने साथ मिलाया है उस के साथ शरीक (ठहरा कर), हरगिज़ नहीं बल्कि अल्लाह ही ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (27)

और हम ने आप (स) को भेजा है तमाम नुए-इन्सानी के लिए खुशख़बरी देने वाला, और डर सुनाने वाला, लेकिन अक़्सर लोग नहीं जानते। (28)

और वह कहते हैं यह वादाए क़ियामत कब (आएगा) अगर तुम सच्चे हो। (29)

आप (स) फ़रमा दें तुम्हारे लिए वादे का एक दिन (तय) है, उस से न तुम एक घड़ी पीछे हट सकते हो, और न तुम आगे बढ़ सकते हो। (30)

और काफ़िर कहते हैं: हम हरगिज़ इस कुरआन पर ईमान न लाएंगे, और न उन (किताबों) पर जो इस से पहले थीं, और काश! तुम दखो, जब यह ज़ालिम अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे, रद करेगा उन में से एक दूसरे की बात, कमज़ोर लोग बड़े लोगों से कहेंगे अगर तुम न होते तो हम ज़रूर ईमान लाने वाले होते। (31)

और बड़े लोग कमज़ोर लोगों से कहेंगे, क्या हम ने तुम्हें हिदायत से रोका? जब कि वह तुम्हारे पास आई (नहीं), बल्कि तुम (खुद) मुज़रिम थे। (32)

وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهُ إِلَّا لِمَنْ أَذِنَ لَهُ حَتَّىٰ إِذَا فُزِعَ								
दूर कर दी जाती है	जब	यहां तक	उस को	जिसे वह इजाज़त दे	सिवाए	उस के पास	शफ़ाअत	और नफ़ा नहीं देती
عَنْ قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ قَالُوا الْحَقُّ وَهُوَ الْعَلِيُّ								
बुलन्द मरतबा	और वह	हक़	वह कहते हैं	तुम्हारे रब ने	फ़रमाया	क्या	कहते हैं	उन के दिलों से
الْكَبِيرُ ﴿٢٣﴾ قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَوتِ وَالْأَرْضِ قُلِ اللّٰهُ								
फ़रमा दें अल्लाह	और ज़मीन	आस्मानों से	तुम को रिज़्क देता है	कौन	फ़रमा दें	23	वुजुर्ग कद्र	
وَأِنَّا أَوْ إِيَّاكُمْ لَعَلِي هُدًىٰ أَوْ فِي ضَلالٍ مُّبِينٍ ﴿٢٤﴾ قُلْ لَا تُسْأَلُونَ								
तुम से न पूछा जाएगा	फ़रमा दें	24	खुली	गुमराही में	या	अलबत्ता हिदायत पर	तुम ही	या और बेशक हम
عَمَّا أَجْرَمْنَا وَلَا نُسْأَلُ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢٥﴾ قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ								
फिर	हमारा रब	हम सब को	वह जमा करेगा	फ़रमा दें आप (स)	25	जो तुम करते हो	उसकी वावत	और न हम से पूछा जाएगा जो हम ने गुनाह किया उसकी वावत
يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَهُوَ الْفَتّٰحُ الْعَلِيمُ ﴿٢٦﴾ قُلْ أَرُونِي الَّذِينَ أَلْحَقْتُم								
तुम ने साथ मिला दिया है	वह जिन्हें	मुझे दिखाओ	फ़रमा दें	26	जानने वाला	फ़ैसला करने वाला	और वह ठीक ठीक	हमारे दरमियान फ़ैसला करेगा
بِهِ شُرَكَاءَ كَلَّا بَلْ هُوَ اللّٰهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٧﴾ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ								
आप (स) को हम ने भेजा	और नहीं	27	हिक्मत वाला	ग़ालिब	वह अल्लाह	बल्कि	हरगिज़ नहीं शरीक	उस के साथ
إِلَّا كَافَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٨﴾								
28	नहीं जानते	अक़्सर लोग	और लेकिन	और डर सुनाने वाला	खुशख़बरी देने वाला	मगर तमाम लोगों (नुए-इन्सानी) के लिए		
وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٩﴾ قُلْ لَكُمْ مِيعَادُ يَوْمٍ								
एक दिन	वादा	तुम्हारे लिए	फ़रमा दें	29	सच्चे	तुम हो	अगर यह वादा (क़ियामत)	कब और वह कहते हैं
لَّا تَسْتَأْخِرُونَ عَنْهُ سَاعَةً وَلَا تَسْتَقْدِمُونَ ﴿٣٠﴾ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا								
जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	और कहते हैं	30	तुम आगे बढ़ सकते हो	और न	एक घड़ी	उस से	न तुम पीछे हट सकते हो	
لَنْ نُؤْمِنَ بِهَذَا الْقُرْآنِ وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَلَوْ تَرَىٰ								
और काश तुम देखो	इस से पहले	उस पर जो	और न	इस कुरआन पर	हम हरगिज़ ईमान न लाएंगे			
إِذِ الظّٰلِمُونَ مَوْفُوفُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ								
दूसरे	तरफ़	उन में से एक	लौटाएगा (रद करेगा)	अपने रब के सामने	खड़े किए जाएंगे	ज़ालिम (जमा)	जब	
الْقَوْلِ يَقُولُ الَّذِينَ اسْتَضَعَفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لَوْلَا أَنْتُمْ								
अगर न तुम होते	तकबुर करते थे (बड़े लोग)	उन लोगों को जो	जो कमज़ोर किए गए	कहेंगे	बात			
لَكِنَّا مُؤْمِنِينَ ﴿٣١﴾ قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لِلَّذِينَ اسْتَضَعَفُوا أَنَحْنُ								
क्या हम	उन से जो कमज़ोर किए गए	जो लोग तकबुर करते थे (बड़े लोग)	कहेंगे	31	ईमान लाने वाले	ज़रूर हम होते		
صَدَدْنَكُمْ عَنِ الْهُدَىٰ بَعْدَ إِذْ جَاءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾								
32	मुज़रिम (जमा)	तुम थे	बल्कि	जब आ गई तुम्हारे पास	उस के वाद	हिदायत	से	हम ने रोका तुम्हें

وَقَالَ الَّذِينَ اسْتُضِعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا بَلْ مَكْرُ الْيَلِ وَالنَّهَارِ						
रात और दिन	चाल	बल्कि	उन लोगों से जो तकब्वुर करते थे (बड़े)	कमज़ोर किए गए	वह लोग जो	और कहेंगे
إِذْ تَأْمُرُونَنَا أَنْ نَكْفُرَ بِاللَّهِ وَنَجْعَلَ لَهُ أَنْدَادًا وَأَسْرُوا						
और वह छुपाएंगे	शरीक (जमा)	उस के लिए	और हम ठहराएं	अल्लाह का	कि हम इन्कार करें	जब तुम हुकम देते थे हमें
النَّدَامَةَ لَمَّا رَأُوا الْعَذَابَ وَجَعَلْنَا الْأَعْلَالِ فِي أَعْنَاقِ						
गर्दनों में	तौक	और हम डालेंगे	अज़ाब	जब वह देखेंगे	शर्मिन्दगी	
الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٣٣﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ						
किसी वस्ती में	और हम ने नहीं भेजा	33	वह करते थे	जो मगर	वह सज़ा न दिए जाएंगे	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)
مِّنْ تَذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ﴿٣٤﴾						
34	मुन्किर है	उस के	तुम जो दे कर भेजे गए हो	वेशक हम	उस के खुशहाल लोग	कहा मगर कोई डराने वाला
وَقَالُوا نَحْنُ أَكْثَرُ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ﴿٣٥﴾						
35	अज़ाब दिए जाने वाले	हम	और नहीं	और औलाद में	माल में	ज़ियादा हम और उन्होंने ने कहा
قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ						
अक़्सर लोग	और लेकिन	और तंग कर देता है	जिस के लिए वह चाहता है	रिज़क	वसीअ़ फ़रमाता है	मेरा रब वेशक फ़रमा दें
لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٦﴾ وَمَا أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ بِالَّتِي تُقَرَّبُكُمْ						
तुम्हें नज़्दीक करदे	वह जो कि	तुम्हारी औलाद	और न	तुम्हारे माल	और नहीं	36 नहीं जानते
عِنْدَنَا زُلْفَىٰ إِلَّا مَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ						
उन के लिए	यही लोग	और उस ने अच्छे अ़मल किए	ईमान लाया	जो मगर	दर्जा	हमारे नज़्दीक
جَزَاءُ الضَّعْفِ بِمَا عَمِلُوا وَهُمْ فِي الْغُرُفَاتِ آمِنُونَ ﴿٣٧﴾						
37	अमन से होंगे	बालाख़ानों में	और वह	उस के बदले जो उन्होंने ने किया	दुगनी	जज़ा
وَالَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ أُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ						
अज़ाब में	यही लोग	अज़िज़ करने (हराने) वाले	हमारी आयतों में	कोशिश करते हैं	और जो लोग	
مُحْضَرُونَ ﴿٣٨﴾ قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ						
जिस के लिए वह चाहता है	रिज़क	वसीअ़ फ़रमाता है	मेरा रब वेशक	फ़रमा दें	38	हाज़िर किए जाएंगे
مِّنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَهُوَ						
तो वह	कोई शै	तुम खर्च करोगे	और जो	उस के लिए	और तंग कर देता है	अपने बन्दों में से
يُخْلِفُهُ وَهُوَ خَيْرُ الرَّزْقِينَ ﴿٣٩﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا						
सब	वह जमा करेगा उन को	और जिस दिन	39	रिज़क देने वाला	बेहतरीन	और वह उस का इवज़ देगा
ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَائِكَةِ أَهْلَاءِ إِيَّاكُمْ كَانُوا يَعْبُدُونَ ﴿٤٠﴾						
40	परस्तिश करते थे	तुम्हारी ही	क्या यह लोग	फ़रिश्तों को	फिर फ़रमाएगा	

और कहेंगे कमज़ोर लोग बड़ों को: (नहीं) बल्कि (हमें) रोक रखा था तुम्हारी) दिन रात की चालों ने, जब तुम हमें हुकम देते थे कि हम अल्लाह का इन्कार करें और हम उस के लिए शरीक ठहराएं, और जब वह अज़ाब देखेंगे तो शर्मिन्दगी छुपाएंगे, और हम तौक डालेंगे काफ़िरों की गर्दनों में, और वह (उसी की) सज़ा पाएंगे जो वह करते थे। (33)

और हम ने नहीं भेजा किसी वस्ती में कोई डराने वाला मगर उस के खुशहाल लोगों ने कहा: जो (हिदायत) दे कर तुम भेजे गए हो, हम उस के मुन्किर हैं। (34)

और उन्होंने ने कहा कि हम माल और औलाद में ज़ियादा (बढ़ कर) हैं, और हम अज़ाब दिए जाने वाले नहीं (हमें अज़ाब न होगा)। (35)

आप (स) फ़रमा दें वेशक मेरा रब जिस के लिए चाहता है रिज़क वसीअ़ फ़रमाता है (और जिस के लिए चाहे) वह तंग कर देता है, लेकिन अक़्सर लोग नहीं जानते। (36)

और नहीं तुम्हारे माल और औलाद (ऐसे कि) जो तुम्हें दर्जा में हमारे नज़्दीक कर दें, मगर जो ईमान लाया और उस ने अच्छे अ़मल किए तो उन ही लोगों के लिए दुगनी जज़ा है उस के बदले जो उन्होंने ने किया, और वह बालाख़ानों में अमन से होंगे। (37)

और जो लोग हमारी आयतों को हराने की कोशिश करते हैं, यही लोग अज़ाब में हाज़िर किए जाएंगे। (38)

आप (स) फ़रमा दें मेरा रब अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहता है रिज़क वसीअ़ फ़रमाता है (और जिस के लिए चाहे) तंग कर देता है, और कोई शै तुम खर्च करोगे तो वह तुम को उस का इवज़ देगा, और वह बेहतरीन रिज़क देने वाला है। (39)

और जिस दिन वह जमा करेगा, उन सब को, फिर फ़रिश्तों से फ़रमाएगा, क्या यह लोग तुम्हारी ही परस्तिश करते थे? (40)

ع 10

वह कहेंगे, तू पाक है, तू हमारा कारसाज़ है न कि वह, बल्कि वह जिन्नों की परस्तिश करते थे, उन में से अक्सर उन पर एतिकाद रखते थे। (41)

सो आज तुम में से कोई एक दूसरे के न नफ़ा का इख्तियार रखता है और न नुक़सान का, और हम उन लोगों को कहेंगे जिन्होंने ने जुल्म (शिक) किया: तुम जहन्नम के अज़ाब (का मज़ा) चखो जिस को तुम झुटलाते थे। (42)

और जब उन पर पढ़ी जाती है हमारी वाज़ेह आयात तो वह कहते हैं: यह तो सिर्फ़ (तुम जैसा) आदमी है, चाहता है कि तुम्हें उन से रोके जिन की परस्तिश तुम्हारे बाप दादा करते थे, और वह कहते हैं यह (कुरआन) नहीं है मगर घड़ा हुआ झूट, और काफ़िरों ने हक़ के बारे में कहा जब वह उन के पास आया कि यह नहीं मगर खुला जादू। (43)

और हम ने उन्हें (मुशर्रिकीने अरब को) किताबें नहीं दी कि वह उन्हें पढ़ते हों और न आप (स) से पहले उन की तरफ़ कोई डराने वाला भेजा। (44)

और जो उन से पहले थे उन्होंने ने झुटलाया, और यह (मुशर्रिकीने अरब) उस के दसवें हिस्से को (भी) न पहुँचे जो हम ने उन्हें दिया था, सो उन्होंने ने मेरे रसूलों को झुटलाया तो कैसा हुआ मेरा अज़ाब। (45)

फ़रमा दें: मैं तुम्हें सिर्फ़ नसीहत करता हूँ एक बात की कि तुम अल्लाह के वास्ते खड़े हो जाओ दो, दो और अकेले अकेले, फिर तुम ग़ौर करो कि तुम्हारे साथी को क्या जुनून है, वह (स) तो सिर्फ़ सख़्त अज़ाब आने से पहले तुम्हें डराने वाले हैं। (46)

आप (स) फ़रमा दें: मैं ने तुम से जो मांगा हो कोई अजर तो वह तुम्हारा है, मेरा अजर तो सिर्फ़ अल्लाह के ज़िम्मे है, और वह हर शै की इत्तिलाज़ रखने वाला (गवाह) है। (47)

आप (स) फ़रमा दें, बेशक मेरा रब ऊपर से हक़ उतारता है, और सब ग़ैब की बातों का जानने वाला है। (48)

قَالُوا سُبْحَانَكَ أَنْتَ وَلِيْنَا مِنْ دُونِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوا يَعْبُدُونَ

वह परस्तिश करते थे	बल्कि	उन के सिवाए (न कि वह)	हमारा कारसाज़	तू	तू पाक है	वह कहेंगे
--------------------	-------	-----------------------	---------------	----	-----------	-----------

الْجِنَّ ۚ أَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُؤْمِنُونَ ﴿٤١﴾ فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ

तुम में से बाज़ (एक)	इख्तियार नहीं रखता	सो आज	41	एतिकाद रखते थे	उन पर	इन में से अक्सर	जिन्न (जमा)
----------------------	--------------------	-------	----	----------------	-------	-----------------	-------------

لِبَعْضٍ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا ۚ وَتَقُولُ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ

आग (जहन्नम) का अज़ाब	तुम चखो	जिन्होंने ने जुल्म किया	उन लोगों को	और हम कहेंगे	और न नुक़सान का	नफ़ा का	बाज़ (दूसरे) के लिए
----------------------	---------	-------------------------	-------------	--------------	-----------------	---------	---------------------

الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿٤٢﴾ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا

हमारी आयात	उन पर	पढ़ी जाती है	और जब	42	तुम झुटलाते थे	उस को	तुम थे	वह जिस
------------	-------	--------------	-------	----	----------------	-------	--------	--------

بَيَّنْتُمْ قَالُوا مَا هَذَا إِلَّا رَجُلٌ يُرِيدُ أَنْ يَصُدَّكُمْ عَمَّا

उस से जिस	कि रोके तुम्हें	वह चाहता है	एक आदमी	मगर सिर्फ़	नहीं है यह	वह कहते हैं	वाज़ेह
-----------	-----------------	-------------	---------	------------	------------	-------------	--------

كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤَكُمْ ۚ وَقَالُوا مَا هَذَا إِلَّا إِفْكٌ مُّفْتَرٍ ۚ وَقَالَ

और कहा	झूट घड़ा हुआ	मगर	नहीं यह	और वह कहते हैं	तुम्हारे बाप दादा	परस्तिश करते थे
--------	--------------	-----	---------	----------------	-------------------	-----------------

الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ ۚ إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٤٣﴾

43	जादू खुला	मगर	यह नहीं	जब वह आया उन के पास	हक़ के बारे में	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)
----	-----------	-----	---------	---------------------	-----------------	---------------------------------

وَمَا آتَيْنَهُمْ مِنْ كُتُبٍ يَدْرُسُونَهَا وَمَا أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ

आप (स) से पहले	उन की तरफ़	भेजा हम ने	और न	कि उन्हें पढ़ें	किताबें	दी हम ने उन्हें	और न
----------------	------------	------------	------	-----------------	---------	-----------------	------

مِنْ نَّذِيرٍ ﴿٤٤﴾ وَكَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ وَمَا بَلَّغُوا مِعْشَارَ

दसवां हिस्सा	और यह न पहुँचे	इन से पहले	उन्होंने ने जो	और झुटलाया	44	कोई डराने वाला
--------------	----------------	------------	----------------	------------	----	----------------

مَا آتَيْنَهُمْ فَكَذَّبُوا رُسُلِي ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٤٥﴾ قُلْ

फ़रमा दें	45	मेरा अज़ाब	हुआ	तो कैसा	मेरे रसूलों को	सो उन्होंने ने झुटलाया	जो हम ने उन्हें दिया
-----------	----	------------	-----	---------	----------------	------------------------	----------------------

إِنَّمَا أَعْظَمُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۚ أَنْ تَقُومُوا لِلَّهِ مِثْلَىٰ وَفَرَادَىٰ

और अकेले अकेले	दो, दो	तुम खड़े हो जाओ अल्लाह के वास्ते	कि	एक बात की	मैं सिर्फ़ नसीहत करता हूँ तुम्हें
----------------	--------	----------------------------------	----	-----------	-----------------------------------

ثُمَّ تَتَفَكَّرُوا ۚ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِنْ جِنَّةٍ ۚ إِنَّ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ لَّكُمْ

तुम्हें	डराने वाले	मगर-सिर्फ़	वह नहीं	कोई जुनून	क्या तुम्हारे साथी को	फिर तुम ग़ौर करो
---------	------------	------------	---------	-----------	-----------------------	------------------

بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ﴿٤٦﴾ قُلْ مَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ

कोई अजर	जो मैं ने मांगा हो तुम से	फ़रमा दें	46	सख़्त अज़ाब	आगे (आने से पहले)
---------	---------------------------	-----------	----	-------------	-------------------

فَهُوَ لَكُمْ ۚ إِنَّ أَجْرِي إِلَّا عَلَى اللَّهِ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ

हर शै	पर-की	और वह	अल्लाह के ज़िम्मे	मगर-सिर्फ़	मेरा अजर	नहीं	तुम्हारा है	तो वह
-------	-------	-------	-------------------	------------	----------	------	-------------	-------

شَهِيدٌ ﴿٤٧﴾ قُلْ إِنَّ رَبِّي يَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَٰمِ الْغُيُوبِ ﴿٤٨﴾

48	सब ग़ैबों का जानने वाला	हक़ को	डालता (ऊपर से उतारता है)	मेरा रब	बेशक	फ़रमा दें	47	इत्तिलाज़ रखने वाला
----	-------------------------	--------	--------------------------	---------	------	-----------	----	---------------------

<p>قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبَدِّلُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ ﴿٤٩﴾ قُلْ إِنْ</p>							
अगर	फरमा दें	49	और न लौटाएगा	वातिल	और न पैदा करेगा	हक आ गया	फरमा दें
<p>صَلَّلتْ فَإِنَّمَا أَضِلُّ عَلَى نَفْسِي وَإِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوحِي</p>							
वह वहि करता है	तो उस की बदौलत	मैं हिदायत पर हूँ	और अगर	अपनी जान पर (अपने नुकसान को)	मैं बहका हूँ	तो इस के सिवा नहीं	मैं बहका हूँ
<p>إِلَى رَبِّي إِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ ﴿٥٠﴾ وَلَوْ تَرَى إِذْ فَرَغُوا فَلَا فَوْتَ</p>							
और न बच सकेंगे	वह घबराएंगे	जब	ऐ काश तुम देखो	50	करीब	सुनने वाला	वेशक वह मेरा रब मेरी तरफ
<p>وَأُخَذُوا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيبٍ ﴿٥١﴾ وَقَالُوا آمَنَّا بِهِ وَإِنَّا لَلْهَمُّ التَّنَافُسُ</p>							
पकड़ना (हाथ आना)	उन के लिए	और कहाँ	उस पर	हम ईमान लाए	और वह कहेंगे	51	करीब जगह (पास) से और पकड़ लिए जाएंगे
<p>مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ﴿٥٢﴾ وَقَدْ كَفَرُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ وَيَقْذِفُونَ</p>							
और वह फेंकते हैं	इस से कब्ल	उस से	और तहकीक उन्होंने ने कुफ़ किया	52	दूर (दारुलजज़ा)	जगह	से
<p>بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ﴿٥٣﴾ وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ</p>							
जो वह चाहते थे	और दरमियान	उन के दरमियान	और आड़ कर दी गई	53	दूर जगह	से	बिन देखे
<p>كَمَا فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِمْ مِنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُرِيبٍ ﴿٥٤﴾</p>							
54	तरददुद में डालने वाले	शक	में	वह थे	वेशक वह	इस से कब्ल	उन के हम जिन्सों के साथ किया गया जैसे
<p>آيَاتُهَا ٤٥ ﴿٣٥﴾ سُورَةُ فَاطِرٍ ﴿٥﴾ رُكُوعَاتُهَا ٥</p>							
<p>(35) सूरह फ़ातिर पैदा करने वाला आयात 45</p>							
<p>بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ</p>							
<p>अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है</p>							
<p>الْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ جَاعِلِ الْمَلَكَةِ رُسُلًا</p>							
पैगम्बर	फरिश्ते	बनाने वाला	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा करने वाला	तमाम तारीफें अल्लाह के लिए	
<p>أُولَىٰ أَجْنِحَةٍ مَّثْنَىٰ وَثُلُثٌ وَرُبْعٌ يَزِيدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَاءُ ۗ إِنَّ اللَّهَ</p>							
वेशक अल्लाह	जो वह चाहे	पैदाइश में	ज़ियादा कर देता है	और चार चार	और तीन तीन	दो दो	परों वाले
<p>عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١﴾ مَا يَفْتَحُ اللَّهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ</p>							
तो बन्द करने वाला नहीं	रहमत से	लोगों के लिए	खोल दे अल्लाह	जो	1	कुदरत रखने वाला	हर शै पर
<p>لَهَا ۗ وَمَا يُمْسِكُ ۚ فَلَا يُرْسِلُ لَهُ مِنْ بَعْدِهِ ۗ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢﴾</p>							
2	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	उस के बाद	उस का	तो कोई भेजने वाला नहीं	और जो वह बन्द कर दे उस का
<p>يَأْتِيهَا النَّاسُ ادَّكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ ۗ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللَّهِ</p>							
अल्लाह के सिवा	कोई पैदा करने वाला	क्या	अपने ऊपर	अल्लाह की नेमत	तुम याद करो	ऐ लोगो	
<p>يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۗ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۗ فَإِنِّي تُوفِّكُونَ ﴿٣﴾</p>							
3	उलटे फिरे जाते हो तुम	तो कहाँ	उस के सिवा	कोई माबूद नहीं	और ज़मीन	आस्मान से	वह तुम्हें रिज़ूक देता है

आप (स) फ़रमा दें: हक आ गया और न (कोई नई चीज़) दिखाएगा वातिल और न लौटाएगा (कोई पुरानी चीज़)। (49)

आप (स) फ़रमा दें अगर मैं बहका हूँ तो इस के सिवा नहीं कि अपने नुकसान को बहका हूँ, और अगर मैं हिदायत पर हूँ तो उस की बदौलत हूँ कि मेरा रब मेरी तरफ़ वहि करता है, वेशक वह सुनने वाला, करीब है। (50)

ऐ काश! तुम देखो, जब वह घबराएंगे तो (भाग कर) न बच सकेंगे, और पास ही से पकड़ लिए जाएंगे। (51)

और कहेंगे कि हम उस (नबी स) पर ईमान ले आए और कहाँ (मुमकिन) है उन के लिए दूर जगह (दारुलजज़ा) से (ईमान का) हाथ आना। (52)

और तहकीक उन्होंने ने इस से कब्ल उस से कुफ़ किया, और वह फेंकते हैं बिन देखे दूर जगह से (अटकल पचचू बातें करते हैं)। (53)

जो वह चाहते थे, उस के और उन के दरमियान आड़ डाल दी गई, जैसे उन के हम जिन्सों के साथ इस से कब्ल किया गया, वेशक वह तरददुद में डालने वाले शक में थे। (54)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जो आस्मानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है, फ़रिश्तों को पैग़ाम बर बनाने वाला, परों वाले दो दो, और तीन तीन, और चार चार, पैदाइश में जो चाहे वह ज़ियादा कर देता है, वेशक अल्लाह हर शै पर कुदरत रखने वाला है। (1)

अल्लाह लोगों के लिए जो रहमत खोल दे तो (कोई) उस का बन्द करने वाला नहीं, और जो वह बन्द कर दे तो उस के बाद कोई उस का भेजने वाला नहीं, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (2)

ऐ लोगो! तुम याद करो अपने ऊपर अल्लाह की नेमत, क्या अल्लाह के सिवा कोई पैदा करने वाला है? वह तुम्हें आस्मान से रिज़ूक देता है और ज़मीन से, उस के सिवा कोई माबूद नहीं तो कहाँ तुम उलटे फिरे जाते हो? (3)

6  
12

और अगर वह तुझे झुटलाए तो तहकीक झुटलाए गए हैं तुम से पहले भी रसूल, और तमाम कामों की वाज़गशत (लौटना) अल्लाह की तरफ है। (4)

ऐ लोगो! वेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, पस दुनिया की ज़िन्दगी हरगिज़ तुम्हें धोके में न डाल दे, और धोके वाज़ (शैतान) तुम्हें अल्लाह से हरगिज़ धोके में न डाल दे। (5)

वेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है पस तुम उसे दुश्मन (ही) समझो, वह तो अपने गिरोह को बुलाता है ताकि वह जहननम वालों से हों। (6) जिन लोगों ने कुफ़ किया उन लोगों के लिए सख़्त अज़ाब है, और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए उन के लिए वख़्शिश और बड़ा अजर है। (7)

सो क्या जिस के लिए उस का बुरा अमल आरास्ता क्या गया, फिर उस ने उस को अच्छा देखा (समझा)

(क्या वह नेकोकारों जैसा हो सकता है) पस वेशक जिस को अल्लाह चाहता है गुमराह ठहराता है और जिस को चाहता है हिदायत देता है, पस तुम्हारी जान न जाती रहे उन पर हसरत कर के, वेशक जो वह करते हैं अल्लाह उसे जानता है। (8)

और अल्लाह (ही है) जिस ने भेजा हवाओं को, फिर वह बादलों को उठाती हैं, फिर हम उस (बादल) को मुर्दा शहर की तरफ ले गए, फिर हम ने उस से ज़मीन को उस के मरने (बंजर हो जाने) के बाद ज़िन्दा किया, इसी तरह (मुर्दों को रोज़े हशर) जी उठना है। (9)

जो कोई इज़ज़त चाहता है तो तमाम तर इज़ज़त अल्लाह के लिए है। उस की तरफ चढ़ता है पाकीज़ा कलाम, और अच्छे अमल उस को बुलन्द करता है, और जो लोग बुरी तदवीरें करते हैं, उन के लिए सख़्त अज़ाब है, और उन लोगों की तदवीर अकारत जाएगी। (10)

और अल्लाह (ही) ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, फिर तुम्हें जोड़े जोड़े बनाया, और न कोई औरत हामिला होती है, और न वह जनती है, मगर उस के इल्म में है, और कोई बड़ी उम्र वाला उम्र नहीं पाता, और न किसी की उम्र से कमी की जाती है मगर (यह सब) किताब में लिखा हुआ है। यह वेशक अल्लाह पर आसान है। (11)

وَأَنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّن قَبْلِكَ وَاللَّهُ يُرْجِعُ

लौटना	और अल्लाह की तरफ़	तुम से पहले	रसूल (जमा)	तो तहकीक झुटलाए गए	वह तुझे झुटलाए	और अगर
-------	-------------------	-------------	------------	--------------------	----------------	--------

الْأُمُورُ ﴿٤﴾ يَأْتِيهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ

पस हरगिज़ तुम्हें धोके में न डाल दे	सच्चा	अल्लाह का वादा	वेशक	ऐ लोगो	4	तमाम काम
-------------------------------------	-------	----------------	------	--------	---	----------

الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّتْكُمْ بِاللَّهِ الْعُرُورُ إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ

दुश्मन	तुम्हारे लिए	वेशक शैतान	5	धोके वाज़	अल्लाह से	और तुम्हें धोके में न डाल दे	दुनिया की ज़िन्दगी
--------	--------------	------------	---	-----------	-----------	------------------------------	--------------------

فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا إِنَّمَا يَدْعُوا حِزْبَهُ لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ ﴿٦﴾

6	जहननम वाले	से	ताकि वह हों	अपने गिरोह को	वह तो बुलाता है	दुश्मन	पस उसे समझो
---	------------	----	-------------	---------------	-----------------	--------	-------------

الَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ

उन के लिए	अच्छे	और उन्होंने ने अमल किए	और जो लोग ईमान लाए	सख़्त अज़ाब	उन के लिए	जिन लोगों ने कुफ़ किया
-----------	-------	------------------------	--------------------	-------------	-----------	------------------------

مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٧﴾ أَفَمَنْ زِينَ لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ فَرَاهُ حَسَنًا

अच्छा	फिर उस ने देखा उसे	उस का बुरा अमल	उस के लिए	आरास्ता किया गया	सो क्या जिस	7	बड़ा	और अजर	वख़्शिश
-------	--------------------	----------------	-----------	------------------	-------------	---	------	--------	---------

فَإِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي مَن يَشَاءُ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ

तुम्हारी जान	पस न जाती रहे	जिस को वह चाहता है	और हिदायत देता है	जिस को वह चाहता है	गुमराह ठहराता है	पस वेशक अल्लाह
--------------	---------------	--------------------	-------------------	--------------------	------------------	----------------

عَلَيْهِمْ حَسْرَتٌ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ﴿٨﴾ وَاللَّهُ الَّذِي أَرْسَلَ

भेजा	वह जिस ने	और अल्लाह	8	वह करते हैं	उसे जो	जानने वाला	वेशक अल्लाह	हसरत कर के	उन पर
------	-----------	-----------	---	-------------	--------	------------	-------------	------------	-------

الرِّيحَ فَثَبِيرٌ سَحَابًا فَسَقْنَهُ إِلَى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَحْيَيْنَا بِهِ الْأَرْضَ

ज़मीन	उस से	फिर हम ने ज़िन्दा किया	मुर्दा शहर	तरफ़	फिर हम उसे ले गए	बादल	फिर वह उठाती है	हवाएं
-------	-------	------------------------	------------	------	------------------	------	-----------------	-------

بَعْدَ مَوْتِهَا كَذَلِكَ النُّشُورُ ﴿٩﴾ مَن كَانَ يَرِيدُ الْعِزَّةَ فَلِلَّهِ الْعِزَّةُ

तो अल्लाह के लिए इज़ज़त	इज़ज़त	चाहता है	जो कोई	9	जी उठना	इसी तरह	उस के मरने के बाद
-------------------------	--------	----------	--------	---	---------	---------	-------------------

جَمِيعًا إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ

वह उस को बुलन्द करता है	अच्छा	और अमल	पाकीज़ा कलाम	चढ़ता है	उस की तरफ़	तमाम तर
-------------------------	-------	--------	--------------	----------	------------	---------

وَالَّذِينَ يَمْكُرُونَ السَّيِّئَاتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَمَكْرُ أُولَئِكَ

उन लोगों	और तदवीर	अज़ाब सख़्त	उन के लिए	बुरी	तदवीरें करते हैं	और जो लोग
----------	----------	-------------	-----------	------	------------------	-----------

هُوَ يُبْزَرُ ﴿١٠﴾ وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ مِّن تَرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ

फिर उस ने तुम्हें बनाया	नुत्फ़े से	फिर	मिट्टी से	उस ने पैदा किया तुम्हें	और अल्लाह	10	वह अकारत जाएगी
-------------------------	------------	-----	-----------	-------------------------	-----------	----	----------------

أَزْوَاجًا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنثَى وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ وَمَا يُعَمَّرُ

उम्र पाता	और नहीं	उस के इल्म में है	मगर	और न वह जनती है	कोई औरत	हामिला होती है	और न	जोड़े जोड़े
-----------	---------	-------------------	-----	-----------------	---------	----------------	------	-------------

مِّن مَّعْمَرٍ وَلَا يُنْقِصُ مِنْ عُمُرِهِ إِلَّا فِي كِتَابٍ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿١١﴾

11	आसान	अल्लाह पर	यह वेशक	किताब में	मगर	उस की उम्र से	और न कमी की जाती है	कोई बड़ी उम्र वाला
----	------	-----------	---------	-----------	-----	---------------	---------------------	--------------------

وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرَيْنِ ۗ هَذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَائِغٌ شَرَابُهُ						
आसान उस का पीना	शीरी प्यास बुझाने वाला	यह	दोनों दर्या	और बराबर नहीं		
وَهَذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ ۗ وَمِنْ كُلِّ تَاكُلُونَ لَحْمًا طَرِيًّا وَتَسْتَخْرِجُونَ						
और तुम निकालते हो	ताज़ा	गोश्त	तुम खाते हो	और हर एक से	शोर तलख	और यह
حَلِيَّةً تَلْبَسُونَهَا ۗ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيهِ مَوَاحِرَ لَتَبْتَغُوا						
ताकि तुम तलाश करो	चीरती है पानी को	उस में	कश्तियां	और तू देखता है	जिस को पहनते हो तुम	ज़ेवर
مِنْ فَضْلِهِ ۗ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٢﴾ يُؤَلِّجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤَلِّجُ النَّهَارَ						
और दाखिल करता है दिन को	दिन में	वह दाखिल करता है रात	12	तुम शुक्र करो	और ताकि तुम	उस के फज़ल से (रोज़ी)
فِي اللَّيْلِ ۗ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۗ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ						
मुकर्ररा	एक वक़्त	हर एक चलता है	और चाँद	सूरज	और उस ने मुसख़र किया	रात में
ذِكْرُكُمْ ۗ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۗ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ						
उस के सिवा	तुम पुकारते हो	और जिन को	उस के लिए बादशाहत	तुम्हारा परवरदिगार	यही है अल्लाह	
مَا يَمْلِكُونَ مِنْ قِطْمِيرٍ ﴿١٣﴾ إِنَّ تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا دُعَاءَكُمْ ۖ وَلَوْ						
और अगर	तुम्हारी पुकार (दुआ)	वह नहीं सुनेंगे	तुम उन को पुकारो	अगर 13	खज़ूर की घुटली का छिलका	वह मालिक नहीं
سَمِعُوا مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ ۗ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُونَ بِشِرْكِكُمْ ۗ						
तुम्हारे शिर्क करने का	वह इन्कार करेंगे	और रोज़े कियामत	तुम्हारी	वह हाजत पूरी न कर सकेंगे	वह सुन लें	
وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيرٍ ﴿١٤﴾ يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ						
मोहताज	तुम	ऐ लोगो!	14	खबर देने वाला	मानिंद	और तुझ को खबर न देगा
إِلَى اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿١٥﴾ إِنْ يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ						
तुम्हें ले जाए	अगर वह चाहे	15	सज़ावारे हम्द	वेनियाज़	वह	और अल्लाह के अल्लाह के
وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿١٦﴾ وَمَا ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ﴿١٧﴾						
17	दुशवार	अल्लाह पर	यह	और नहीं 16	नई खलकत	और ले आए वह
وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۗ وَإِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ إِلَىٰ حِمْلِهَا						
तरफ़ (लिए) अपना बोझ	कोई बोझ से लदा हुआ	बुलाए	और अगर	बोझ दूसरे का	कोई उठाने वाला	और नहीं उठाएगा
لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ ۖ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۗ إِنَّمَا تُنذِرُ						
आप (स) डराते हैं	इस के सिवा नहीं (सिर्फ)	कराबतदार	अगरचे हों	कुछ	उस से	न उठाएगा वह
الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ						
नमाज़	और काइम रखते हैं	बिन देखे	अपना रब	डरते हैं	वह लोग जो	
وَمَنْ تَزَكَّىٰ فَإِنَّمَا يَتَزَكَّىٰ لِنَفْسِهِ ۗ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ﴿١٨﴾						
18	लौट कर जाना	और अल्लाह की तरफ़	खुद अपने लिए	वह पाक साफ़ होता है	तो सिर्फ़	पाक होता है और जो

और दोनों दर्या बराबर नहीं, यह (एक) शीरी है प्यास बुझाने वाला, उस का पीना भी आसान, और यह (दूसरा) शोर तलख है, और हर एक से तुम ताज़ा गोश्त खाते हो, और (उन में से) तुम ज़ेवर (मोती) निकालते हो जिस को तुम पहनते हो, और तू उस में कश्तियां देखता है कि पानी को चीरती (हुई चलती है) ताकि तुम उस के फज़ल से रोज़ी तलाश करो, और ताकि तुम शुक्र करो। (12)

और रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में दाखिल करता है, और उस ने सूरज चाँद को मुसख़र किया, हर एक मुकर्ररा वक़्त तक चलता है, यही तुम्हारा परवरदिगार है, उसी के लिए बादशाहत, और जिन को तुम उस के सिवा पुकारते हो, वह खज़ूर की घुटली के छिलके (के भी) मालिक नहीं। (13)

और तुम उनको पुकारो तो वह नहीं सुनेंगे तुम्हारी पुकार, और अगर वह सुन भी लें तो तुम्हारी हाजत पूरी न कर सकेंगे, और वह रोज़े कियामत तुम्हारे शिर्क करने का इन्कार करेंगे, और तुझ को खबर देने वाले (अल्लाह) की मानिंद कोई खबर न देगा। (14)

ऐ लोगो! तुम अल्लाह के मोहताज हो, और अल्लाह ही वेनियाज़ सज़ावारे हम्द ओ सना है। (15)

अगर वह चाहे तो (सब को) ले जाए (नावूद कर दे) और नई खलकत ले आए। (16)

और यह नहीं है अल्लाह पर (कुछ) दुशवार। (17)

और कोई उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा, और अगर कोई बोझ से लदा हुआ (गुनाहगार किसी को) अपना बोझ (उठाने) के लिए बुलाए तो वह उस से कुछ न उठाएगा, अगरचे उस का कराबतदार हो, आप (स) तो सिर्फ़ उनको डरा सकते हैं जो अपने रब से डरते हैं बिन देखे, और नमाज़ काइम रखते हैं, और जो पाक होता है वह सिर्फ़ अपने लिए पाक साफ़ होता है, और अल्लाह की तरफ़ ही लौट कर जाना है। (18)

ع ١٢

और बराबर नहीं अन्धा और आँखों वाला। (19)

और न अन्धेरे और न नूर (रोशनी), (बराबर है)। (20)

और न साया और न झुलसती हवा। (21)

और बराबर नहीं ज़िन्दे (ज़ालिम) और न मुर्दे (जाहिल), बेशक

अल्लाह जिस को चाहता है सुना देता है, और तुम (उनको) सुनाने वाले नहीं जो क़ब्रों में है। (22)

बल्कि तुम सिर्फ़ डराने वाले हो। (23)

बेशक हम ने आप (स) को हक़ के साथ भेजा, खुशख़बरी देने वाला

और डर सुनाने वाला, और कोई उम्मत नहीं जिस में कोई डराने वाला न गुज़रा हो। (24)

और अगर वह तुम्हें झुटलाएँ तो तहकीक़ उन के अगले लोगों ने भी झुटलाया, उन के पास उन के रसूल आए रोशन दलाइल

(निशानात) और सहीफ़ों और रोशन किताबों के साथ। (25)

फिर जिन लोगों ने कुफ़ किया मैं ने उन्हें पकड़ा, फिर कैसा हुआ मेरा अज़ाब? (26)

क्या तू ने नहीं देखा? बेशक अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा, फिर हम ने उस से फल निकाले, उन के रंग मुख़तलिफ़ हैं, और पहाड़ों में क़त्आत (घाटियाँ) हैं सफ़ेद और सुर्ख़, उन के रंग मुख़तलिफ़ हैं, और (कुछ) गहरे सियाह रंग के। (27)

और उसी तरह लोगों में, और जानवरों और चौपायों में, उन के रंग मुख़तलिफ़ हैं, इस के सिवा नहीं कि अल्लाह से उस के इल्म वाले बन्दे (ही) डरते हैं, बेशक अल्लाह ग़ालिब, बख़शने वाला है। (28)

बेशक जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और नमाज़ काइम रखते हैं और जो हम ने उन्हें दिया उस में से ख़र्च करते हैं पोशीदा और ज़ाहिर, वह ऐसी तिजारत के उम्मीदवार हैं (जिस में) हरगिज़ घाटा नहीं। (29)

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ﴿١٩﴾ وَلَا الظُّلُمَاتُ وَلَا النُّورُ ﴿٢٠﴾						
20	ओर न रोशनी	ओर न अन्धेरे	19	ओर आँखों वाला	अन्धा	ओर बराबर नहीं
وَلَا الظُّلُّ وَلَا الْحُرُورُ ﴿٢١﴾ وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ وَلَا الْأَمْوَاتُ						
मुर्दे	ओर न	ज़िन्दे	ओर नहीं बराबर	21	ओर न झुलसती हवा	ओर न साया
إِنَّ اللَّهَ يُسْمِعُ مَن يَشَاءُ وَمَا أَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّن فِي الْقُبُورِ ﴿٢٢﴾ إِنَّ أَنْتَ إِلَّا نَذِيرٌ ﴿٢٣﴾ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَإِن مِّنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ ﴿٢٤﴾						
जो	सुनाने वाले	ओर तुम नहीं	जिस को वह चाहता है	सुना देता है	बेशक अल्लाह	
हक़ के साथ	हम ने आप (स) को भेजा	बेशक हम	23	डराने वाले	मगर-सिर्फ़	तुम नहीं
24	डराने वाला	उस में	मगर गुज़रा	कोई उम्मत	ओर नहीं	ओर डर सुनाने वाला
وَأَنْ يُكذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ أَخَذْتُ الَّذِينَ كَفَرُوا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٢٦﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ ثَمَرَاتٍ مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهَا وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌ بَيْضٌ وَحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهَا وَغَرَابِيبُ سُودٌ ﴿٢٧﴾ وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَابِّ وَأَلْأَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ كَذَلِكَ إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ غَفُورٌ ﴿٢٨﴾ رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً يَرْجُونَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُورَ ﴿٢٩﴾						
आए उन के पास	इन से अगले	वह लोग जो	तो तहकीक़ झुटलाया	वह तुम्हें झुटलाएँ	ओर अगर	
फिर	25	रोशन	ओर किताबों के साथ	ओर सहीफ़ों के साथ	रोशन दलाइल के साथ	उन के रसूल
बेशक अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा	26	मेरा अज़ाब	हुआ	फिर कैसा	वह जिन्होंने ने कुफ़ किया मैं ने पकड़ा
मुख़तलिफ़	फल (जमा)	उस से	फिर हम ने निकाले	पानी	आस्मान से	उतारा
मुख़तलिफ़	ओर सुर्ख़	क़त्आत सफ़ेद	ओर पहाड़ों से-में	उन के रंग		
ओर जानवर (जमा)	ओर लोगों से-में	27	सियाह	गहरे रंग	उन के रंग	
अल्लाह	डरते हैं	इस के सिवा नहीं	उसी तरह	उन के रंग	मुख़तलिफ़	ओर चौपाए
वह लोग जो	बेशक	28	बख़शने वाला	ग़ालिब	बेशक अल्लाह	इल्म वाले
उस से जो	ओर वह ख़र्च करते हैं	नमाज़	ओर काइम रखते हैं	अल्लाह की किताब	जो पढ़ते हैं	
29	हरगिज़ घाटा नहीं	ऐसी तिजारत	वह उम्मीद रखते हैं	ओर खुले तौर पर	पोशीदा	हम ने उन्हें दिया



لِيُوقَفِيَهُمْ أَجُورَهُمْ وَيَزِيدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهِ إِنَّهُ غَفُورٌ						
वखशने वाला	वेशक वह	अपने फज़ल से	और वह उन्हें ज़ियादा दे	उन के अजर	ताकि वह पूरे पूरे दे दे	
شُكُورٌ ﴿٣٠﴾ وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا						
तसदीक करने वाली	हक़	वह	किताब से	तुम्हारी तरफ़	हम ने वहि भेजी है	और वह जो
हम ने वारिस बनाया	फिर	31	देखने वाला	अलवत्ता वाख़बर	अपने बन्दों से	वेशक अल्लाह
لَمَّا بَيْنَ يَدَيْهِ إِنَّ اللَّهَ بِعِبَادِهِ لَخَبِيرٌ بَصِيرٌ ﴿٣١﴾ ثُمَّ أَوْرَثْنَا						
अपनी जान पर	जुल्म करने वाला	पस उन से (कोई)	अपने बन्दे	से-को	हम ने चुना	वह जिन्हें
यह	हुक़म से अल्लाह के	नेकियों में	सबक़त ले जाने वाला	और उन से (कोई)	वीच का रास्ता चलने वाला	और उन से (कोई)
هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ﴿٣٢﴾ جَنَّتْ عَدْنٌ يَدْخُلُونَهَا يُحَلَّوْنَ						
वह ज़ेवर पहनाए जाएंगे	वह उन में दाख़िल होंगे	वागात हमेशगी के	32	फज़ल वड़ा	वह (यही)	
فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٣٣﴾						
33	रेशम	उस में	और उन का लिबास	और मोती	सोना	से
وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزْنَ إِنَّ رَبَّنَا						
हमारा रब	वेशक	ग़म	हम से	दूर कर दिया	वह जिस ने	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए
अपना फज़ल	से	हमेशा रहने का घर	हमें उतारा	वह जिस	34	क़द्र दान
لَعَفُورٌ شُكُورٌ ﴿٣٤﴾ إِلَّذِي أَحَلَّنَا دَارَ الْمَقَامَةِ مِنْ فَضْلِهِ						
क़ुफ़ किया	और वह जिन लोगों ने	35	थकावट	उस में	और न हमें छुएगी	कोई तकलीफ़
और न हल्का किया जाएगा	कि वह मर जाएं	उन पर	न क़ज़ा आएगी	जहन्नम की आग	उन के लिए	
لَهُمْ نَارٌ جَهَنَّمَ لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ فَيَمُوتُوا وَلَا يُخَفَّفُ						
और वह	36	हर नाशुक़े	हम सज़ा देते हैं	इसी तरह	उस का अज़ाब	से-कुछ
वर अक़्स	नेक	हम अमल करें	हमें निकाल ले	ऐ हमारे परवरदिगार	उस (दोज़ख़) में	चिल्लाएंगे
जो-जिस	उस में	कि नसीहत पकड़ लेता वह	क्या हम ने तुम्हें उम्र न दी थी	हम करते थे	उस के जो	
تَذَكَّرَ وَجَاءَكُمْ النَّذِيرُ فَذُوقُوا فَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ نَّصِيرٍ ﴿٣٧﴾						
37	कोई मददगार	ज़ालिमों के लिए	पस नहीं	सो चख़ो तुम	डराने वाला	और आया तुम्हारे पास

ताकि अल्लाह उन्हें उन के अजर (ओ सवाब) पूरे पूरे दे, और उन्हें (और) ज़ियादा दे अपने फज़ल से, वेशक वह वखशने वाला, क़द्रदान है। (30)

और वह जो हम ने तुम्हारी तरफ़ किताब भेजी है, वह हक़ है, उस की तसदीक करने वाली जो उन के पास है, वेशक अल्लाह अपने बन्दों से वाख़बर है, देखने वाला। (31)

फिर हम ने अपने चुने हुए बन्दों को किताब का वारिस बनाया, पस उन में से कोई अपनी जान पर जुल्म करने वाला है, और उन में से कोई वीच की रास है, और उन में से कोई अल्लाह के हुक़म से नेकियों में सबक़त ले जाने वाला है, यही है वड़ा फज़ल। (32)

हमेशगी के वागात हैं जिन में वह दाख़िल होंगे, वह उन में कंगनों के ज़ेवर पहनाए जाएंगे, सोने और मोती के, और उन में उन का लिबास रेशम का होगा। (33)

और वह कहेंगे तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिस ने हम से ग़म दूर कर दिया, वेशक हमारा रब वखशने वाला, क़द्रदान है। (34)

वह जिस ने हमें हमेशा रहने के घर में उतारा अपने फज़ल से, न इस में हमें कोई तकलीफ़ छुएगी, और न हमें इस में कोई थकावट छुएगी। (35)

और जिन लोगों ने क़ुफ़ किया उन के लिए जहन्नम की आग है, न उन पर क़ज़ा आएगी कि वह मर जाएं, और न उन से हल्का किया जाएगा दोज़ख़ का कुछ अज़ाब, इसी तरह हर नाशुक़े को अज़ाब देते हैं। (36)

और वह दोज़ख़ के अन्दर चिल्लाए जाएंगे, ऐ हमारे परवरदिगार! हमें (यहां से) निकाल ले कि हम नेक अमल करें, उस के वरअक़्स जो हम करते थे, क्या हम ने तुम्हें (इतनी) उम्र न दी थी कि नसीहत पकड़ लेता उस में जिसे नसीहत पकड़नी होती, और तुम्हारे पास डराने वाला (भी) आया, सो तुम (अब इन्कार का मज़ा) चख़ो, ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं। (37)

वेशक अल्लाह आस्मानों और ज़मीन की पोशीदा बातें जानने वाला है, वेशक वह उन के सीनों के भेदों से बाख़बर है। (38)

वही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में जानशीन बनाया, सो जिस ने कुफ़ किया तो उसी पर है उस के कुफ़ (का ववाल) और काफ़िरों को उन के रब के नज़दीक उन का कुफ़ सिवाए ग़ज़ब के कुछ नहीं बढ़ाता, और काफ़िरों को नहीं बढ़ाता उन का कुफ़ सिवाए ख़सारे के। (39) आप (स) फ़रमा दें क्या तुम ने अपने शरीकों को देखा जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, तुम मुझे दिखाओ कि उन्होंने ने ज़मीन से क्या पैदा किया है? या आस्मानों (के बनाने में) उन का क्या साझा है? या हम ने उन्हें कोई किताब दी है कि वह उस की सनद पर हों (सनद रखते हों), बल्कि ज़ालिम एक दूसरे से वादे नहीं करते सिवाए धोके के। (40)

वेशक अल्लाह ने थाम रखा है आस्मानों को और ज़मीन को कि वह टल (न) जाएं, और अगर वह टल जाएं तो उन्हें उस के बाद कोई भी नहीं थामेगा, वेशक वह (अल्लाह) हिलम वाला, बख़शने वाला है। (41)

और उन्होंने (मुशर्रीकीने मक्कह) ने अल्लाह की बड़ी सख़्त कस्में खाई कि अगर उन के पास कोई डराने वाला आए तो वह ज़रूर ज़ियादा हिदायत पाने वाले होंगे (दुनिया की) हर एक उम्मत से (बढ़ कर), फिर जब उन के पास एक नज़ीर आया तो उन में बिदकने के सिवा (और कुछ) ज़ियादा न हुआ। (42)

दुनिया में अपने आप को बड़ा समझने के सबब और बुरी चाल (के सबब), और बुरी चाल (का ववाल) सिर्फ़ उस के करने वाले पर पड़ता है, तो क्या वह सिर्फ़ पहलों के दस्तूर का इतिज़ार कर रहे हैं! सो तुम अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई तबदीली न पाओगे, और तुम अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई तग़य्युर न पाओगे। (43)

إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ غَيْبِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ عَلِيمٌ							
बाख़बर	वेशक वह	और ज़मीन	आस्मानों की पोशीदा बातें	जानने वाला	वेशक अल्लाह		
بَدَاتِ الصُّدُورِ (38) هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلْفَ فِي الْأَرْضِ فَمَنْ كَفَرَ							
सो जिस ने कुफ़ किया	ज़मीन में	जानशीन	तुम्हें बनाया	जिस ने	वही	38	सीनों (दिलों) के भेदों से
فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ إِلَّا							
सिवाए	उन का रब	नज़दीक	उन का कुफ़	काफ़िर (जमा)	और नहीं बढ़ाता	उस का कुफ़	तो उसी पर
مَقْتًا وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ إِلَّا خَسَارًا (39) قُلْ أَرَأَيْتُمْ							
किया तुम ने देखा	फ़रमा दें	39	ख़सारा	सिवाए	उन का कुफ़	काफ़िर (जमा)	और नहीं बढ़ाता नाराज़ी (ग़ज़ब)
شُرَكَاءَكُمُ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا							
उन्होंने ने पैदा किया	क्या	तुम मुझे दिखाओ	अल्लाह के सिवा	तुम पुकारते हो	वह जिन्हें	अपने शरीक	
مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمَوَاتِ أَمْ اتَّيْنَهُمْ كِتَابًا							
कोई किताब	हम ने दी उन्हें	या	आस्मानों में	साझा	उन के लिए	या	ज़मीन से
فَهُمْ عَلَىٰ بَيِّنَاتٍ مِّنْهُ بَلْ إِنْ يَعِدُ الظَّالِمُونَ بَعْضُهُمْ							
उन के बाज़ (एक)	ज़ालिम (जमा)	वादे करते	नहीं	बल्कि	उस से-की	दलील (सनद) पर	पस (कि) वह
بَعْضًا إِلَّا غُرُورًا (40) إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ							
और ज़मीन	आस्मान (जमा)	थाम रखा है	वेशक अल्लाह	40	धोका	सिवाए	बाज़ (दूसरे) से
أَنْ تَزُولَا وَلَئِنْ زَالَتَا إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِّنْ بَعْدِهِ							
उस के बाद	कोई भी	थामेगा उन्हें	न	टल जाएं	और अगर वह	टल जाएं वह	कि
إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا (41) وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ							
अपनी सख़्त कस्में	अल्लाह की	और उन्होंने ने कसम खाई	41	बख़शने वाला	हिलम वाला	है	वेशक वह
لَئِنْ جَاءَهُمْ نَذِيرٌ لَّيَكُونُنَّ أَهْدَىٰ مِنْ إِحْدَى الْأُمَمِ							
उम्मत (जमा)	हर एक से	ज़ियादा हिदायत पाने वाले	अलबत्ता वह ज़रूर होंगे	कोई डराने वाला	उन के पास आए	अगर	
فَلَمَّا جَاءَهُمْ نَذِيرٌ مَّا زَادَهُمْ إِلَّا نُفُورًا (42) اسْتَكْبَارًا							
अपने को बड़ा समझने के सबब	42	बिदकना	मगर-सिवाए	न उन (में) ज़ियादा हुआ	एक नज़ीर	उन के पास आया	फिर जब
فِي الْأَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ وَلَا يَحِيقُ الْمَكْرُ السَّيِّئِ إِلَّا							
सिर्फ़	बुरी	चाल	और नहीं उठता (उलटा पड़ता)	बुरी	और चाल	ज़मीन (दुनिया) में	
بِأَهْلِهِ فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا سُنَّتَ الْأَوَّلِينَ فَلَنْ تَجِدَ							
सो तुम हरगिज़ न पाओगे	पहले	दस्तूर	मगर सिर्फ़	वह इन्तिज़ार कर रहे हैं	तो क्या	उस के करने वाले पर	
لِسُنَّتِ اللَّهِ تَبْدِيلًا وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَحْوِيلًا (43)							
43	कोई तग़य्युर	अल्लाह के दस्तूर में	और तुम हरगिज़ न पाओगे	कोई तबदीली	अल्लाह के दस्तूर में		

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ						
अकिवत (अन्जाम)	हुआ	कैसा	सो वह देखते	ज़मीन (दुनिया) में	क्या वह चले फिरे नहीं	
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكُنْتُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَمَا						
और नहीं	कुव्वत में	उन से	बहुत ज़ियादा	और वह थे	उन से पहले	उन लोगों का जो
كَانَ اللَّهُ لِيُعْجِزَهُ مِنْ شَيْءٍ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ						
ज़मीन में	और न	आस्मानों में	कोई शै	कि उसे आजिज़ कर दे	अल्लाह	है
إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ﴿٤٤﴾ وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ						
लोग	अल्लाह पकड़ करे	और अगर	44	बड़ी कुदरत वाला	इल्म वाला	है
بِمَا كَسَبُوا مَا تَرَكَ عَلَى ظَهْرِهَا مِنْ دَابَّةٍ وَلَكِنْ						
और लेकिन	कोई चलने फिरने वाला	उस की पुश्त	पर	वह न छोड़े	उन के आमाल के सबब	
يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّىٰ فَإِذَا جَاءَ أَجْلُهُمْ						
उन की अजल	आ जाएगी	फिर जब	एक मद्दते मुअय्यन	तक	वह उन्हें ढील देता है	
فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِعِبَادِهِ بَصِيرًا ﴿٤٥﴾						
	45	देखने वाला	अपने बन्दों को	है	तो बेशक अल्लाह	
آيَاتُهَا ٨٣ ﴿٣٦﴾ سُورَةُ يَسٍ ﴿٥٠﴾ رُكُوعَاتُهَا ٥						
रुकूआत 5		(36) सूरह या सीन			आयात 83	
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ						
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
يَسٍ ﴿١﴾ وَالْقُرْآنِ الْحَكِيمِ ﴿٢﴾ إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٣﴾ عَلَىٰ صِرَاطٍ						
रास्ता	पर	3	रसूलों में से	बेशक आप (स)	2	वाहिक्मत
1	या सीन	कसम है कुरआन	वाहिक्मत	2	बेशक आप (स)	3
مُسْتَقِيمٍ ﴿٤﴾ تَنْزِيلِ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ﴿٥﴾ لَتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أُنذِرَ						
नहीं डराए गए	वह कौम	ताकि आप (स) डराएं	5	मेहरवान	ग़ालिब	नाज़िल किया
4	सीधा	नाज़िल किया	ग़ालिब	मेहरवान	5	ताकि आप (स) डराएं
أَبَاؤُهُمْ فَهُمْ غَافِلُونَ ﴿٦﴾ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَىٰ أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ						
पस वह	उन में से अक्सर	पर	वात	तहकीक साबित हो गई	6	ग़ाफ़िल (जमा)
7	पस वह	ग़ाफ़िल (जमा)	6	तहकीक साबित हो गई	पर	उन में से अक्सर
لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٧﴾ إِنَّا جَعَلْنَا فِي آعْنَاقِهِمْ أَغْلَالًا فَهِيَ إِلَىٰ						
तक	फिर वह	तौक	उन की गरदन	में	बेशक हम ने किए (डाले)	7
الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُونَ ﴿٨﴾ وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ						
उन के आगे	से	और हम ने कर दी	8	सर ऊँचा किए (सर उलल रहे हैं)	तो वह	ठोड़ियाँ
سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ﴿٩﴾						
9	देखते नहीं	पस वह	फिर हम ने उन्हें ढाँप दिया	एक दीवार	और उन के पीछे	एक दीवार

क्या वह दुनिया में चले फिरे नहीं कि वह देखते कि उन से पहले लोगों का अन्जाम कैसा हुआ!

और वह कुव्वत में उन से बहुत ज़ियादा थे, और अल्लाह (ऐसा) नहीं कि कोई शै आस्मानों में उस को आजिज़ कर दे और न ज़मीन में (कोई शै उसे हरा सकती है), बेशक वह इल्म वाला, कुदरत वाला है। (44)

और अगर अल्लाह लोगों को उन के आमाल के सबब पकड़े तो वह न छोड़े कोई चलने फिरने वाला उस की पुश्त (रए ज़मीन) पर, लेकिन वह उन्हें एक मद्दते मुअय्यन तक ढील देता है, फिर जब आ जाएगी उन की अजल तो बेशक अल्लाह अपने बन्दों को देखने वाला है (उन के आमाल का बदला ज़रूर मिलेगा)। (45)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है या सीन। (1)

कसम है वाहिक्मत कुरआन की। (2)

बेशक आप (स) रसूलों में से हैं। (3)

सीधे रास्ते पर हैं। (4)

नाज़िल किया हुआ ग़ालिब, मेहरवान का। (5)

ताकि आप (स) उस कौम को डराएं जिस के बाप दादा नहीं डराए गए, पस वह ग़ाफ़िल हैं। (6)

तहकीक उन में से अक्सर पर (अल्लाह की) बात साबित हो चुकी है, पस वह ईमान न लाएंगे। (7)

बेशक हम ने उन की गर्दनों में डाले हैं तौक, फिर वह ठोड़ी तक (अड़ गए हैं) तो उन के सर उलल रहे हैं। (8)

और हम ने कर दी उन के आगे एक दीवार और उन के पीछे एक दीवार, फिर हम ने उन्हें ढाँप दिया, पस वह देखते नहीं। (9)

और बराबर है उन के लिए खाह तुम उन्हें डराओ या न डराओ, वह ईमान न लाएंगे। (10)

इस के सिवा नहीं कि तुम (उस को) डराते हो जो किताबे नसीहत की पैरवी करे। और बिन देखे अल्लाह से डरे, पस आप (स) उसे बख्शिश और अच्छे अजर की खुशखबरी दें। (11)

वेशक हम मुर्दा को ज़िन्दा करते हैं, और हम लिखते हैं उन के अमल जो उन्होंने ने आगे भेजे और जो उन्होंने ने पीछे (आसार) छोड़े। और हर शौ को हम ने किताबे रोशन में शुमार कर रखा है। (12)

और आप (स) उन के लिए बस्ती वालों का किस्सा बयान करें, जब उन के पास रसूल आए। (13)

जब हम ने उन की तरफ़ दो (रसूल) भेजे तो उन्होंने ने उन्हें झुटलाया, फिर हम ने तीसरे से तक़वियत दी, पस उन्होंने ने कहा: वेशक हम तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं। (14)

वह बोले: तुम महज़ हम जैसे आदमी हो, और नहीं उतारा रहमान (अल्लाह) ने कुछ भी, तुम महज़ झूट बोलते हो। (15)

उन्होंने ने कहा: हमारा परवरदिगार जानता है, वेशक हम तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं। (16)

और हम पर (हमारे ज़िम्मे) नहीं मगर (सिर्फ़) साफ़ साफ़ पहुँचा देना। (17)

वह कहने लगे: हम ने वेशक मनुहूस पाया तुम्हें, अगर तुम बाज़ न आए तो हम तुम्हें ज़रूर संगसार कर देंगे और तुम्हें हम से दर्दनाक अज़ाब ज़रूर पहुँचेगा। (18)

उन्होंने ने कहा: तुम्हारी नहूसत तुम्हारे साथ है क्या तुम (इस को नहूसत समझते हो) कि तुम समझाए गए हो, बल्कि तुम हद से बढ़ने वाले लोग हो। (19)

और शहर के परले सिरे से एक आदमी दौड़ता हुआ आया, उस ने कहा: ऐ मेरी क़ौम! तुम रसूलों की पैरवी करो। (20)

तुम उन की पैरवी करो जो तुम से कोई अजर नहीं मांगते और वह हिदायत याफ़ता है। (21)

وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنْذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠﴾

10	वह ईमान न लाएंगे	तुम उन्हें न डराओ	या	खाह तुम उन्हें डराओ	उन पर-उन के लिए	और बराबर
----	------------------	-------------------	----	---------------------	-----------------	----------

إِنَّمَا تُنذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمَنَ بِالْغَيْبِ ۗ

बिन देखे	रहमान (अल्लाह)	और डरे	किताबे नसीहत	पैरवी करे	जो	तुम डराते हो	इस के सिवा नहीं
----------	----------------	--------	--------------	-----------	----	--------------	-----------------

فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَأَجْرٍ كَرِيمٍ ﴿١١﴾ إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي الْمَوْتَىٰ

मुर्दे	ज़िन्दा करते हैं	वेशक हम	11	अच्छा	और अजर	बख्शिश की	पस उसे खुशखबरी दें
--------	------------------	---------	----	-------	--------	-----------	--------------------

وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ ۗ وَكُلُّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي

में	हम ने उसे शुमार कर रखा है	और हर शौ	और उन के असर (निशानात)	जो उन्होंने ने आगे भेजा (अमल)	और हम लिखते हैं
-----	---------------------------	----------	------------------------	-------------------------------	-----------------

إِمَامٍ مُّبِينٍ ﴿١٢﴾ وَاصْرَبْ لَهُمْ مَثَلًا اصْحَابَ الْقَرْيَةِ إِذْ

जब	बस्ती वाले	मिसाल (किस्सा)	उन के लिए	और बयान करें आप (स)	12	किताबे रोशन
----	------------	----------------	-----------	---------------------	----	-------------

جَاءَهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿١٣﴾ إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا

तो उन्होंने ने झुटलाया उन्हें	दो (2)	उन की तरफ़	हम ने भेजे	जब	13	रसूल (जमा)	उन के पास आए
-------------------------------	--------	------------	------------	----	----	------------	--------------

فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوا إِنَّا إِلَيْكُمْ مُّرْسَلُونَ ﴿١٤﴾ قَالُوا

वह बोले	14	भेजे गए	तुम्हारी तरफ़	वेशक हम	पस उन्होंने ने कहा	तीसरे से	फिर हम ने तक़वियत दी
---------	----	---------	---------------	---------	--------------------	----------	----------------------

مَا أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَمَا أَنْزَلَ الرَّحْمَنُ مِنْ شَيْءٍ

कुछ	रहमान (अल्लाह)	उतारा	और नहीं	हम जैसे	आदमी	मगर-महज़	तुम नहीं हो
-----	----------------	-------	---------	---------	------	----------	-------------

إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَكْذِبُونَ ﴿١٥﴾ قَالُوا رَبُّنَا يَعْلَمُ إِنَّا إِلَيْكُمْ

तुम्हारी तरफ़	वेशक हम	जानता है	हमारा परवरदिगार	उन्होंने ने कहा	15	झूट बोलते हो	मगर-महज़	तुम	नहीं
---------------	---------	----------	-----------------	-----------------	----	--------------	----------	-----	------

لَمُرْسَلُونَ ﴿١٦﴾ وَمَا عَلَيْنَا إِلَّا الْبَلْغُ الْمُبِينُ ﴿١٧﴾ قَالُوا

वह कहने लगे	17	साफ़ साफ़	पहुँचा देना	मगर	हम पर	और नहीं	16	अलबत्ता भेजे गए
-------------	----	-----------	-------------	-----	-------	---------	----	-----------------

إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ لَئِن لَّمْ تَنْتَهُوا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُمْ

और ज़रूर पहुँचेगा तुम्हें	ज़रूर हम संगसार कर देंगे तुम्हें	तुम बाज़ न आए	अगर	तुम्हें	हम ने मनुहूस पाया
---------------------------	----------------------------------	---------------	-----	---------	-------------------

مِنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٨﴾ قَالُوا طَائِرُكُمْ مَعَكُمْ أَإِن

क्या	तुम्हारे साथ	तुम्हारी नहूसत	उन्होंने ने कहा	18	दर्दनाक	अज़ाब	हम से
------	--------------	----------------	-----------------	----	---------	-------	-------

ذُكِّرْتُمْ ۗ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ﴿١٩﴾ وَجَاءَ مِنْ أَقْصَا

परला सिरा	से	और आया	19	हद से बढ़ने वाले	लोग	तुम	बल्कि	तुम समझाए गए
-----------	----	--------	----	------------------	-----	-----	-------	--------------

الْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَسْعَىٰ قَالَ يَاقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِينَ ﴿٢٠﴾

20	रसूलों की	तुम पैरवी करो	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	दौड़ता हुआ	एक आदमी	शहर
----	-----------	---------------	-------------	-----------	------------	---------	-----

اتَّبِعُوا مَنْ لَا يَسْأَلُكُمْ أَجْرًا وَهُمْ مُّهْتَدُونَ ﴿٢١﴾

21	हिदायत याफ़ता	और वह	कोई अजर	तुम से नहीं मांगते	जो	तुम पैरवी करो
----	---------------	-------	---------	--------------------	----	---------------

<p>وَمَا لِي لَا أَعْبُدُ الَّذِي فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿۲۲﴾</p>							
22	तुम लौट कर जाओगे	और उसी की तरफ	पैदा किया मुझे	वह जिस ने	मैं न इबादत करूँ	मुझे	और क्या हुआ
<p>ءَاتَّخِذْ مِنْ دُونِهِ إِلَهًا إِنْ يُرِدْنِ الرَّحْمَنُ بِضُرٍّ لَا تُغْنِ عَنِّي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا وَلَا يُنْقِذُونِ ﴿۲۳﴾</p>							
23	न काम आए मेरे	कोई नुकसान	रहमान-अल्लाह	वह चाहे	अगर	ऐसे माबूद	उस के सिवा क्या मैं बना लूँ
<p>فَمَا تَعْلَمُونَ ﴿۲۶﴾ بِمَا غَفَرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ ﴿۲۷﴾</p>							
24	वेशक मैं	खुली	अलवत्ता गुमराही में	उस वक़्त	वेशक मैं	23	और न छुड़ा सकें वह मुझे
<p>وَمَا أَنْزَلْنَا عَلَىٰ قَوْمِهِ مِنْ دُونِ الْبُرْجَانِ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَا لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنكُمْ يَوْمَ الْقِيَامِ ﴿۲۸﴾</p>							
24	मेरी कौम	ऐ काश	उस ने कहा	जन्नत	तू दाखिल हो जा	इरशाद हुआ	25
<p>يَعْلَمُونَ ﴿۲۶﴾ بِمَا غَفَرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ ﴿۲۷﴾</p>							
26	वह जानती	वह बात जिस की वजह से उस ने बख़्श दिया मुझे	मेरा रब	और उस ने किया मुझे	से	नवाज़े हुए लोग	27
<p>وَمَا أَنْزَلْنَا عَلَىٰ قَوْمِهِ مِنْ دُونِ الْبُرْجَانِ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَا لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنكُمْ يَوْمَ الْقِيَامِ ﴿۲۸﴾</p>							
28	और नहीं उतारा हम ने	पर	उस की कौम	उस के बाद	कोई लशकर	से	आस्मान
<p>إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ خُمُودٌ ﴿۲۹﴾</p>							
29	न थी	मगर	चिंघाड़	एक	पस अचानक	वह	बुझ कर रह गए
<p>عَلَىٰ الْعِبَادِ مَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿۳۰﴾</p>							
30	बन्दों पर	नहीं आया उन के पास	कोई रसूल	मगर	वह थे	उस से	हँसी उड़ाते
<p>كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنَ الْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿۳۱﴾</p>							
31	कितनी	हलाक की हम ने	उन से कब्ल	नसलों से	कि वह	उन की तरफ	लौट कर नहीं आएंगे वह
<p>كُلُّ لَّمَّا جَمِيعٌ لَدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿۳۲﴾</p>							
32	सब	मगर	सब के सब	हमारे रूबरू	हाज़िर किए जाएंगे	32	एक निशानी
<p>أَحْيَيْنَاهَا وَأَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَأْكُلُونَ ﴿۳۳﴾</p>							
33	हम ने ज़िन्दा किया उसे	और निकाला हम ने	उस से	अनाज	पस उस से	वह खाते हैं	33
<p>مِنْ نَخِيلٍ وَأَعْنَابٍ وَفَجْرْنَا فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ ﴿۳۴﴾</p>							
34	से-के	खजूर	और अंगूर	और जारी किए हम ने	उस में	से	चश्मे
<p>مِنْ ثَمَرِهِ وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿۳۵﴾</p>							
35	उस के फलों से	और नहीं	बनाया उसे	उन के हाथों	तो क्या वह शुक्र न करेंगे	35	पाक
<p>الْأَزْوَاجِ كُلَّهَا مِمَّا تُنْبِتُ الْأَرْضُ وَمِنْ أَنفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ﴿۳۶﴾</p>							
36	जोड़े	हर चीज़	उस से जो	उगाती है	ज़मीन	और उन की जानों से	और उस से जो
<p>وَآيَةٌ لَهُمُ اللَّيْلُ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَإِذَا هُمْ مُظْلِمُونَ ﴿۳۷﴾</p>							
37	और एक निशानी	उन के लिए	रात	हम खींचते हैं	उस से	दिन	तो अचानक वह

और सूरज अपने मुकर्ररा रास्ते पर चलता रहता है, यह अल्लाह गालिब और दाना का निजाम (मुकर्रर करदह) है। (38)

और चाँद के लिए हम ने मनज़िलें मुकर्रर की यहाँ तक कि वह खजूर की पुरानी शाख की तरह हो जाता है (पहली का बारीक सा चाँद)। (39)

न सूरज की मजाल कि चाँद को जा पकड़े और न रात की (मजाल) कि पहले आ सके दिन से, और सब अपने दाइरे में गर्दिश करते हैं। (40)

और उन के लिए एक निशानी है कि हम ने उन की औलाद को सवार किया भरी हुई कश्ती में। (41)

और हम ने उन के लिए उस कश्ती जैसी (और चीज़ें) पैदा की जिन पर वह सवार होते हैं। (42)

और अगर हम चाहें तो हम उन्हें गर्क कर दें तो न (कोई) उन के लिए फ़र्याद रस (हो) और न वह छुड़ाए जाएंगे। (43)

मगर हमारी रहमत से (कि पार लगते हैं) और एक वक़ते मुअय्यन तक फ़ाइदा उठाते हैं। (44)

और जब उन से कहा जाए कि तुम डरो उस से जो तुम्हारे सामने है और जो तुम्हारे पीछे है, शायद तुम पर रहम किया जाए (तो सुन कर नहीं देते)। (45)

और उन के पास उन के रब की निशानियों में से कोई निशानी नहीं आती मगर वह उस से रूगर्दानी करते हैं। (46)

और जब उन से कहा जाए कि जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से खर्च करो तो काफ़िर कहते हैं मोमिनों से कि क्या हम उसे खिलाएँ? जिसे अगर अल्लाह चाहता तो उसे खाने को देता, तुम सिर्फ़ खुली गुमराही में हो। (47)

और वह (काफ़िर) कहते हैं कि कब (पूरा होगा) यह वादाएँ (कियामत)? अगर तुम सच्चे हो। (48)

वह इन्तिज़ार नहीं करते हैं मगर एक चिंघाड़ (सूर की तुन्द आवाज़) की, जो उन्हें आ पकड़ेगी और वह वाहम झगड़ रहे होंगे। (49)

फिर न वह वसीयत कर सकेंगे और न अपने घर वालों की तरफ़ लौट सकेंगे। (50)

और (दोबारा) फूँका जाएगा सूर में तो वह यकायक क़ब्रों से अपने रब की तरफ़ दौड़ेंगे। (51)

वह कहेंगे हाय हम पर! हमें किस ने उठा दिया? हमारी क़ब्रों से, यह है वह जो अल्लाह रहमान ने वादा किया था, और रसूलों ने सच कहा था। (52)

وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَهَا ۗ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿٣٨﴾ وَالْقَمَرَ									
और चाँद	38	जानने वाला (दाना)	गालिब	निजाम	यह	अपने	ठिकाने (मुकर्ररा रास्ते)	चलता रहता है	और सूरज
فَدَرَّزْنَهُ مَنَازِلَ حَتَّىٰ عَادَ كَالْعُرْجُونِ الْقَدِيمِ ﴿٣٩﴾ لَا الشَّمْسُ يَنْبَغِي									
लाइक (मजाल)	सूरज	न	39	पुरानी	खजूर की शाख की तरह	हो जाता है	यहाँ तक कि	मनज़िलें	हम ने मुकर्रर की उस को
لَهَا أَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا اللَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۗ وَكُلٌّ فِي فَلَكٍ									
दाइरे में	और सब	दिन		पहले आ सके	रात	और न	चाँद	जा पकड़े वह	उस के लिए
يَسْبَحُونَ ﴿٤٠﴾ وَإِيَّاهُمْ لَأَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلِكِ الْمَشْحُونِ ﴿٤١﴾									
41	भरी हुई	कश्ती में	उन की औलाद	हम ने सवार किया	कि हम	उन के लिए	और एक निशानी	40	तैरते (गर्दिश करते) हैं
وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِنْ مِثْلِهِ مَا يَرْكَبُونَ ﴿٤٢﴾ وَإِنْ نَشَأْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيخَ									
तो न फ़र्याद रस	हम गर्क कर दें उन्हें	हम चाहें	और अगर	42	वह सवार होते हैं	जो - जिस	उस (कश्ती) जैसी	उन के लिए	और हम ने पैदा किया
لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُونَ ﴿٤٣﴾ إِلَّا رَحْمَةً مِنَّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ﴿٤٤﴾ وَإِذَا									
और जब	44	एक वक़ते मुअय्यन तक	और फ़ाइदा देना	हमारी तरफ़ से	रहमत	मगर	43	छुड़ाए जाएँ	उन के लिए
قِيلَ لَهُمْ اتَّقُوا مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٤٥﴾ وَمَا									
और नहीं	45	तुम पर रहम किया जाए	शायद तुम	तुम्हारे पीछे	और जो	तुम्हारे सामने	जो	तुम डरो	कहा जाए
تَأْتِيهِمْ مِّنْ آيَةٍ مِّنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٤٦﴾ وَإِذَا									
और जब	46	रूगर्दानी करते	उस से	वह है	मगर	उन का रब	निशानियों में से	कोई निशानी	उन के पास
قِيلَ لَهُمْ أَنْفِقُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ ۗ قَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا									
उन लोगों से जो ईमान लाए (मोमिन)		जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	कहते हैं	तुम्हें दिया अल्लाह ने	उस से जो	खर्च करो तुम	उन से	कहा जाए	
أَنْتُمْ مِّنْ لَّا يَشَاءُ اللَّهُ أَنْ يَرْزُقَهُمْ إِنْ لَمْ يُنْفِقُوا ۗ قَالُوا نَفِيقُ ۗ وَإِن لَّمْ يَنْفِقُوا لَمَا يَنْزُرُونَ									
वह इन्तिज़ार नहीं कर रहे हैं	48	सच्चे	तुम हो	अगर	यह वादा	कब	और वह कहते हैं		
إِلَّا صِيحَةٌ وَاحِدَةٌ ۚ تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُونَ ﴿٤٩﴾ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ									
फिर न कर सकेंगे	49	वाहम झगड़ रहे होंगे	और वह	वह उन्हें आ पकड़ेगी	एक	चिंघाड़	मगर		
تَوْصِيَةً وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ﴿٥٠﴾ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ۖ فَإِذَا هُم									
तो यकायक वह	सूर में	और फूँका जाएगा	50	वह लौट सकेंगे	अपने घर वाले	तरफ़	और न	वसीयत करना	
مِّنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَنْسِلُونَ ﴿٥١﴾ قَالُوا يُؤْتِنَا مَنْ بَعَثْنَا									
किस ने उठा दिया हमें	ऐ वाए हम पर	वह कहेंगे	51	दौड़ेंगे	अपने रब की तरफ़	क़ब्रों	से		
مِّنْ مَّرْقَدِنَا ۗ هَٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمَنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٢﴾									
52	रसूलों	और सच कहा था	रहमान - अल्लाह	जो वादा किया	यह	हमारी क़ब्रों	से		

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿٥٣﴾										
53	हाज़िर किए जाएंगे	हमारे सामने	सब	वह	पस यकायक	एक	चिंघाड़	मगर	होगी	न
فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَلَا تُجْرُونَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٤﴾ إِنَّ										
वेशक 54	करते थे	जो तुम	मगर-वस	और न तुम बदला पाओगे	कुछ	किसी शख्स	न जुल्म किया जाएगा	पस आज		
أَصْحَابِ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغْلٍ فَكِهِونَ ﴿٥٥﴾ هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلِّ										
सायों में	और उन की बीवियां	वह	55	वातें (मजे करने में)	एक शुरल में	आज	अहले जन्नत			
عَلَى الْأَرْبَابِ مُتَكُونَ ﴿٥٦﴾ لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَلَهُمْ مَا يَدْعُونَ ﴿٥٧﴾										
57	जो वह चाहेंगे	और उन के लिए	मेवा	उस में	उन के लिए	56	तकिया लगाए हुए	तख्तों पर		
سَلَامٌ قَوْلًا مِّن رَّبِّ رَحِيمٍ ﴿٥٨﴾ وَامْتَأَزُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ ﴿٥٩﴾										
59	सुज़्रिमो (जमा)	ऐ	आज	और अलग हो जाओ तुम	58	मेहरबान परवरदिगार	से	फरमाया जाएगा	सलाम	
أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يٰبَنِي آدَمَ أَنْ لَا تَعْبُدُوا الشَّيْطَانَ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ										
दुश्मन	तुम्हारा	वेशक वह	शैतान	परसतिश न करना	ऐ औलादे आदम	तुम्हारी तरफ	क्या मैं ने हुकम नहीं भेजा था			
مُّبِينٌ ﴿٦٠﴾ وَإِنْ أَعْبُدُونِي هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٦١﴾ وَلَقَدْ أَضَلَّ										
और तहकीक गुमराह कर दिया	61	सीधा	रास्ता	यही	और यह कि तुम मेरी इबादत करना	60	खुला			
مِّنْكُمْ جِبَلًا كَثِيرًا أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ ﴿٦٢﴾ هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي										
वह जिस का	जहननम	यह है	62	सो क्या तुम अक्ल से काम नहीं लेते?	बहुत सी	मख्लूक	तुम में से			
كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٦٣﴾ إِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٦٤﴾ الْيَوْمَ										
आज	64	तुम कुफ़ करते थे	उस के बदले जो	आज	उस में दाखिल हो जाओ	63	तुम से वादा किया गया था			
نَحْنُ عَلَىٰ أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا										
वह थे	उस की जो	उन के पाऊँ	और गवाही देंगे	उन के हाथ	और हम से बोलेंगे	उन के मुँह	पर	हम मुहर लगा देंगे		
يَكْسِبُونَ ﴿٦٥﴾ وَلَوْ نَشَاءُ لَطَمَسْنَا عَلَىٰ أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَأَنَّى										
तो कहां	रास्ता	फिर वह सबकत करें	उन की आँखें	पर	तो मिटा दें (मिलयामेट कर दें)	और अगर हम चाहें	65	कमाते (करते थे)		
يُبْصِرُونَ ﴿٦٦﴾ وَلَوْ نَشَاءُ لَمَسَخْنَاهُمْ عَلَىٰ مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوا										
फिर न कर सकें	उन की जगहें	पर-में	हम मसख़ कर दें उन्हें	और अगर हम चाहें	66	वह देख सकेंगे				
مُضِيًّا وَلَا يَرْجِعُونَ ﴿٦٧﴾ وَمَنْ نُعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ										
खलकत (पैदाइश) में	औन्धा कर देते हैं	हम उम्र दराज़ कर देते हैं	और जिस	67	और न वह लौटें	चलना				
أَفَلَا يَعْقِلُونَ ﴿٦٨﴾ وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ										
नसीहत	मगर	वह (यह)	उस के लिए	और नहीं शायान	शोर	और हम ने नहीं सिखाया उस को	68	तो क्या वह समझते नहीं?		
وَقُرْآنٌ مُّبِينٌ ﴿٦٩﴾ لِيُنذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٧٠﴾										
70	काफिर (जमा)	पर	बात (हुज्जत)	और सावित हो जाए	ज़िन्दा	हो	जो	ताकि (आप स) डराए	69	और कुरआन वाज़ेह

(यह) न होगी मगर एक चिंघाड़, पस यकायक वह सब हमारे सामने हाज़िर किए जाएंगे। (53)

पस आज जुल्म न किया जाएगा किसी शख्स पर कुछ (भी) और जो तुम करते थे पस उसी का बदला पाओगे। (54) वेशक आज अहले जन्नत एक शुरल में खुश होते होंगे। (55)

वह और उन की बीवियां सायों में तख्तों पर तकिया लगाए हुए (बैठे) होंगे। (56)

उन के लिए उस (जन्नत) में हर किस्म का मेवा और उन के लिए जो वह चाहेंगे (मौजूद होगा)। (57) मेहरबान परवरदिगार की तरफ से सलाम फरमाया जाएगा। (58)

और ऐ सुज़्रिमो! तुम आज अलग हो जाओ। (59)

क्या मैं ने तुम्हारी तरफ हुकम नहीं भेजा था ऐ औलादे आदम! कि तुम परसतिश न करना शैतान की, वेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (60)

और यह कि तुम मेरी इबादत करना, यही सीधा रास्ता है। (61) और उस ने तुम में से बहुत लोगों को गुमराह कर दिया, सो किया तुम अक्ल से काम नहीं लेते थे? (62)

यह है वह जहननम जिस का तुम से वादा किया गया था। (63)

तुम जो कुफ़ करते थे उस के बदले आज इस में दाखिल हो जाओ। (64)

आज हम उन के मुँह पर मुहर लगा देंगे, और हम से उन के हाथ बोलेंगे और उन के पाऊँ गवाही देंगे जो वह करते थे। (65)

और अगर हम चाहें तो उन की आँखें मिलयामेट कर दें, फिर वह रास्ते की तरफ सबकत करें (दौड़ें) तो कहां देख सकेंगे? (66)

और अगर हम चाहें तो उन्हें उन की जगहों पर मसख़ कर दें, फिर वह न चल सकेंगे और न लौट सकेंगे। (67)

और हम जिस की उम्र दराज़ करते हैं उसे पैदाइश में औन्धा कर देते हैं तो क्या वह समझते नहीं? (68)

और हम ने उस (आप स) को शोर नहीं सिखाया और यह आप (स) के शायान नहीं है, यह नहीं मगर (किताबे) नसीहत और वाज़ेह कुरआन। (69)

ताकि आप (स) (उस को) डराए जो ज़िन्दा हो और काफ़िरों पर हुज्जत सावित हो जाए। (70)

या क्या वह नहीं देखते कि हम ने जो (चीज़ें) अपनी कूदरत से बनाई, उन से उन के लिए पैदा किए चौपाए, पस वह उन के मालिक हैं। (71)

और हम ने उन (चौपायों) को उन के बस में कर दिया, पस उन में से (बाज़) उन की सवारी हैं और उन में से बाज़ को वह खाते हैं। (72)

और उन में उन के लिए (बहुत से) फाइदे और पीने की चीज़ें हैं, क्या फिर वह शुक्र नहीं करते? (73)

और उन्होंने ने बना लिए अल्लाह के सिवा और मावूद (इस ख्याले वातिल से कि) शायद वह मदद किए जाएंगे। (74)

वह उन की मदद नहीं कर सकते और वह उन के लिए (मुज़रिम) लशकर (की शकल में) हाज़िर किए जाएंगे। (75)

पस आप (स) को उनकी बात मगमूम न करे। वेशक हम जानते हैं जो वह छुपाते हैं और जो वह ज़ाहिर करते हैं। (76)

क्या इन्सान ने नहीं देखा कि हम ने उस को तुत्फे से पैदा किया? और फिर नागहां वह हुआ झगड़ालू खुला। (77) और उस ने हमारे लिए एक मिसाल बयान की और अपनी पैदाइश को भूल गया, कहने लगा कौन हड्डियों को ज़िन्दा करेगा? जब कि वह गल गई होंगी। (78)

आप (स) फ़रमा दें: उसे वह ज़िन्दा करेगा जिस ने उसे पहली बार पैदा किया, और वह हर तरह से पैदा करना जानता है। (79)

जिस ने तुम्हारे लिए सब्ज़ दरख़त से आग पैदा की, पस अब तुम उस (आग) से सुलगाते हो। (80)

वह जिस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया, क्या वह इस पर कादिर नहीं कि उन जैसों को पैदा करे, हॉ (क्यों नहीं)! वह बड़ा पैदा करने वाला दाना है। (81)

उस का काम उस के सिवा नहीं कि वह किसी शै का इरादा करता है तो वह उस को कहता है "हो जा" तो वह हो जाती है। (82)

सो पाक है वह (ज़ाते वाहिद) जिस के हाथ में हर शै की वादशाहत है, और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (83)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है क़सम है परा जमा कर सफ़ बान्धने वाले (फ़रिशतों) की। (1)

फिर झिड़क कर डांटने वालों की। (2) फिर कुरआन तिलावत करने वालों की। (3)

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِمَّا عَمِلَتْ أَيْدِينَا أَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مَالِكُونَ ﴿٧١﴾

71	मालिक है	उन के	पस वह	चौपाए	बनाया अपने हाथों (कूदरत) से	उस से जो	उन के लिए	हम ने पैदा किया	या क्या वह नहीं देखते?
----	----------	-------	-------	-------	-----------------------------	----------	-----------	-----------------	------------------------

وَدَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ ﴿٧٢﴾ وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعُ

फाइदे	उन में	और उन के लिए	72	वह खाते हैं	और उन से	उन की सवारी	पस उन से	उन के लिए	और हम ने फरमावरदार किया उन्हें
-------	--------	--------------	----	-------------	----------	-------------	----------	-----------	--------------------------------

وَمَشَارِبٌ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿٧٣﴾ وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لَّعَلَّهُمْ

शायद वह	और मावूद	अल्लाह के सिवा	और उन्होंने ने बना लिए	73	क्या फिर वह शुक्र नहीं करते?	और पीने की चीज़ें
---------	----------	----------------	------------------------	----	------------------------------	-------------------

يُنصِرُونَ ﴿٧٤﴾ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحَضَّرُونَ ﴿٧٥﴾

75	हाज़िर किए जाएंगे	लशकर	उन के लिए	और वह	उन की मदद	वह नहीं कर सकते	74	मदद किए जाएं
----	-------------------	------	-----------	-------	-----------	-----------------	----	--------------

فَلَا يَحْزُنكَ قَوْلُهُمْ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٦﴾ أَوَلَمْ يَرَ الْإِنْسَانُ

इन्सान	क्या नहीं देखा	76	वह ज़ाहिर करते हैं	और जो	जो वह छुपाते हैं	वेशक हम जानते हैं	उन की बात	पस आप (स) को मगमूम न करे
--------	----------------	----	--------------------	-------	------------------	-------------------	-----------	--------------------------

أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ﴿٧٧﴾ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا

एक मिसाल	हमारे लिए	और उस ने बयान की	77	खुला	झगड़ालू	वह	फिर नागहां	तुत्फे से	कि हम ने पैदा किया उस को
----------	-----------	------------------	----	------	---------	----	------------	-----------	--------------------------

وَنَسِيَ خَلْقَهُ قَالَ مَنْ يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ﴿٧٨﴾ قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي

वह जिस ने	उसे ज़िन्दा करेगा	फ़रमा दें	78	गल गई	जब कि वह	हड्डियां	कौन ज़िन्दा करेगा	कहने लगा	अपनी पैदाइश	और भूल गया
-----------	-------------------	-----------	----	-------	----------	----------	-------------------	----------	-------------	------------

أَنْشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ﴿٧٩﴾ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ مِنْ

से	तुम्हारे लिए	पैदा किया	जिस ने	79	जानने वाला	पैदा करना	हर तरह	और वह	पहली बार	उसे पैदा किया
----	--------------	-----------	--------	----	------------	-----------	--------	-------	----------	---------------

الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَا أَنْتُمْ مِنْهُ تُوقَدُونَ ﴿٨٠﴾ أَوَلَيْسَ الَّذِي

वह जिस ने	क्या नहीं	80	सुलगाते हो	उस से	तुम	पस अब	आग	सब्ज़	दरख़त
-----------	-----------	----	------------	-------	-----	-------	----	-------	-------

خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ بِقَدِيرٍ عَلِيٍّ أَلَمْ يَخْلُقْ مِثْلَهُمْ بَلَىٰ وَهُوَ

और वह	हॉ	उन जैसा	वह पैदा करे	कि	पर	कादिर	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा किया
-------	----	---------	-------------	----	----	-------	----------	----------	-----------

الْخَلْقِ الْعَلِيمِ ﴿٨١﴾ إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٨٢﴾

82	तो वह हो जाती है	हो जा	उस को	वह कहता है	कि	वह इरादा करे किसी शै का	जब	उस का काम	इस के सिवा नहीं	81	दाना	बड़ा पैदा करने वाला
----	------------------	-------	-------	------------	----	-------------------------	----	-----------	-----------------	----	------	---------------------

فَسُبْحٰنَ الَّذِي بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٣﴾

83	तुम लौट कर जाओगे	और उसी की तरफ़	हर शै	वादशाहत	उस के हाथ में	वह जिस	सो पाक है
----	------------------	----------------	-------	---------	---------------	--------	-----------

آيَاتِهَا ۱۸۲ ﴿۳۷﴾ سُورَةُ الصَّفٰتِ ﴿۳۷﴾ رُكُوعَاتِهَا ۵

(37) सूरतुस साफ़ात सफ़ बांधने वाले आयात 182

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

وَالصَّفٰتِ صَفًّا ﴿١﴾ فَالزُّجْرِتِ زَجْرًا ﴿٢﴾ فَالتَّلِيٰتِ ذِكْرًا ﴿٣﴾

3	ज़िक्र (कुरआन)	फिर तिलावत करने वाले	2	झिड़क कर	फिर डांटने वाले	1	परा जमा कर	क़सम सफ़ बान्धने वाले
---	----------------	----------------------	---	----------	-----------------	---	------------	-----------------------

وقف الراح

وقف غفران ۱۲

۵۲

المنزل ۱



<p>إِنَّ إِلَهُكُمْ لَوَاحِدٌ ٤ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ</p>										
और रब	और जो उन के दरमियान	और ज़मीन	आस्मानों	रब	4	अलबत्ता एक	तुम्हारा माबूद	वेशक		
<p>الْمَشَارِقِ ٥ إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِزِينَةِ الْكَوَكِبِ ٦ وَحِفْظًا</p>										
और महफूज़ किया	6	सितारे	ज़ीनत से	आस्माने दुनिया	वेशक हम ने मुज़ैयन किया	5	मशरिफ़ों			
<p>مَنْ كُلِّ شَيْطَانٍ مَّارِدٍ ٧ لَا يَسْمَعُونَ إِلَى الْمَلَأِ الْأَعْلَى وَيُقَدِّفُونَ</p>										
और मारे जाते है	मलाए आला	तरफ़	कान नहीं लगा सकते	7	सरकश	हर शैतान	से			
<p>مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ٨ دُحُورًا وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ٩ إِلَّا مَنْ خَطِفَ</p>										
ले भागा	जो	सिवाए	9	अज़ावे दाइमी	और उन के लिए	भगाने को	8	हर तरफ़	से	
<p>الْخَطِيفَةَ فَاتَّبَعَهُ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ١٠ فَاسْتَفْتِهِمْ أَهْمَ أَشَدُّ خَلْقًا أَمْ</p>										
या	ज़ियादा मुशक्किल पैदा करना	क्या उन	पस उन से पूछें	10	एक अंगारा दहकता हुआ	तो उस के पीछे लगा	उचक कर			
<p>مَنْ خَلَقْنَا إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِنْ طِينٍ لَّازِبٍ ١١ بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُونَ ١٢</p>										
12	और वह मज़ाक़ उड़ाते है	आप (स) ने तअज़्जुब किया	बल्कि	11	मिट्टी चिपकती हुई	से	वेशक हम ने पैदा किया उन्हें	हम ने पैदा किया	जो	
<p>وَإِذَا ذُكِّرُوا لَا يَذْكُرُونَ ١٣ وَإِذَا رَأَوْا آيَةً يَسْتَسْخِرُونَ ١٤ وَقَالُوا إِن</p>										
नहीं	और उन्होंने ने कहा	14	वह हँसी में उड़ा देते है	वह देखते है कोई निशानी	और जब	13	वह नसीहत कुबूल नहीं करते	नसीहत की जाए	और जब	
<p>هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ١٥ إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا إِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ١٦</p>										
16	फिर उठाए जाएंगे	क्या हम	और हड्डियाँ	मिट्टी	और हम हो गए	हम मर गए	क्या जब	15	जादू खुला मगर-सिर्फ़ यह	
<p>أَوْ آبَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ١٧ قُلْ نَعَمْ وَأَنْتُمْ دَخِرُونَ ١٨ فإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ</p>										
ललकार	पस इस के सिवा नहीं वह	18	ज़लील ओ ख़ार	और तुम	हाँ	फ़रमा दें	17	हमारे बाप दादा पहले	क्या	
<p>وَاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنْظُرُونَ ١٩ وَقَالُوا يُؤَيَّلْنَا هَذَا يَوْمَ الدِّينِ ٢٠ هَذَا</p>										
यह	20	बदले का दिन	यह	हाए हमारी ख़राबी	और वह कहेंगे	19	देखने लगेंगे	वह	पस नागहां	एक
<p>يَوْمَ الْفَصْلِ الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ٢١ أَحْسَرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا ٢</p>										
वह जिन्होंने ने जुल्म किया (ज़ालिम)	तुम जमा करो	21	झुटलाते	उस को	तुम थे	वह जिस	फ़ैसले का दिन			
<p>وَأَرْوَاهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ٢٢ مِنْ دُونِ اللَّهِ فَاهْدُوهُمْ إِلَى صِرَاطِ</p>										
रास्ता	तरफ़	पस तुम उन को दिखाओ	अल्लाह के सिवा	22	वह परसतिश करते थे	और जिस	और उन के जोड़े (साथी)			
<p>الْجَحِيمِ ٢٣ وَقَفَّوهُمْ إِيَّاهُمْ مَسْئُولُونَ ٢٤ مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُونَ ٢٥</p>										
25	तुम एक दूसरे की मदद नहीं करते	क्या हुआ तुम्हें	24	उन से पुर्सिश होगी	वेशक वह	और ठहराओ उन को	23	जहनन्म		
<p>بَلْ هُمْ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ ٢٦ وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ٢٧</p>										
27	बाहम सवाल करते हुए	वाज़ पर दूसरे की तरफ़	उन में से वाज़ (एक)	और रख करेगा	26	सर झुकाए फ़रमांबरदार	आज	बल्कि वह		
<p>قَالُوا إِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ ٢٨ قَالُوا بَلْ لَمْ تَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ٢٩</p>										
29	ईमान लाने वाले	तुम न थे	बल्कि	वह कहेंगे	28	दाएं तरफ़ से	तुम हम पर आए थे	वेशक तुम	वह कहेंगे	

(4) वेशक तुम्हारा माबूद एक ही है। (4) परवरदिगार है आस्मानों का और ज़मीन का और जो उन दोनों के दरमियान है, और परवरदिगार है मशरिफ़ों (सुकामाते तुलुअ) का। (5) वेशक हम ने मुज़ैयन किया आस्माने दुनिया को सितारों की ज़ीनत से। (6) और हर सरकश शैतान से महफूज़ किया। (7) और मलाए आला (ऊपर की मजलिस) की तरफ़ कान नहीं लगा सकते, हर तरफ़ से (अंगारे) मारे जाते है। (8) भगाने को और उन के लिए दाइमी अज़ाब है। (9) सिवाए उस के जो उचक कर ले भागा तो उस के पीछे एक दहकता हुआ अंगारा लगा। (10) पस आप (स) उन से पूछें: क्या उन का पैदा करना ज़ियादा मुशक्किल है या जो (मखलूक) हम ने पैदा की? वेशक हम ने उन्हें चिपकती हुई मिट्टी (गारे) से पैदा किया। (11) बल्कि आप ने (उन की हालत पर) तअज़्जुब किया और वह मज़ाक़ उड़ाते है। (12) और जब उन्हें नसीहत की जाए तो वह नसीहत कुबूल नहीं करते। (13) और जब कोई निशानी देखते है तो वह हँसी में उड़ा देते है। (14) और उन्होंने ने कहा यह तो सिर्फ़ खुला जादू है। (15) क्या जब हम मर गए और हम मिट्टी और हड्डियाँ हो गए? क्या हम फिर उठाए जाएंगे? (16) क्या हमारे पहले बाप दादा (भी)? (17) आप (स) फ़रमा दें हाँ! और तुम ज़लील ओ ख़ार होगे। (18) पस इस के सिवा नहीं कि वह एक ललकार होगी, पस नागहां वह देखने लगेंगे। (19) और वह कहेंगे, हाए हमारी ख़राबी! यह बदले का दिन है। (20) यह फ़ैसले का दिन है, वह जिस को तुम झुटलाते थे। (21) तुम जमा करो ज़ालिमों और उन के साथियों को और जिस की वह परसतिश करते थे। (22) अल्लाह के सिवाए। पस तुम उन को जहनन्म का रास्ता दिखाओ। (23) और उन को ठहराओ, वेशक उन से पुर्सिश होगी। (24) तुम्हें क्या हुआ? तुम एक दूसरे की मदद नहीं करते। (25) बल्कि वह आज सर झुकाए फ़रमांबरदार (अपने आप को पकड़वाते) है। (26) और उन में से एक दूसरे की तरफ़ बाहम सवाल करते हुए रख करेगा। (27) वह कहेंगे वेशक तुम हम पर दाएं तरफ़ से (वड़े ज़ोर से) आते थे। (28) वह कहेंगे (नहीं) बल्कि तुम ईमान लाने वाले न थे। (29)

١  
٥

١  
٥

और हमारा तुम पर कोई ज़ोर न था, बल्कि तुम एक सरकश कौम थे। (30) पस हम पर हमारे रव की बात साबित हो गई, बेशक हम अलबत्ता (मज़ा) चखने वाले हैं। (31) पस हम ने तुम्हें वहकाया, बेशक हम (खुद) गुमराह थे। (32) पस बेशक वह उस दिन अज़ाब में (भी) शरीक रहेंगे। (33) बेशक हम इसी तरह करते हैं मुज़्रिमों के साथ। (34) बेशक जब उन से कहा जाता था कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं (तो) वह तकच्चुर करते थे। (35) और वह कहते हैं: क्या हम अपने माबूदों को छोड़ दें? एक शायर दीवाने की खातिर। (36) बल्कि वह (स) हक के साथ आए हैं और वह (स) तसदीक करते हैं रसूलों की। (37) बेशक तुम दर्दनाक अज़ाब ज़रूर चखने वाले हो। (38) और तुम्हें बदला न दिया जाएगा मगर (उस के मुताबिक) जो तुम करते थे। (39) (हाँ) मगर अल्लाह के खास किए हुए (चुने हुए) बन्दे। (40) उन के लिए रिज़क़ मालूम (मुकर्रर) है। (41) (यानी) मेवे, और वह एज़ाज़ वाले होंगे। (42) नेमत के बारात में। (43) तख़्तों पर आमने सामने। (44) दौरा होगा उन के आगे बहते हुए (साफ़) मशरूब के जाम का। (45) सफ़ेद रंग का, पीने वालों के लिए लज़ज़त (देने वाला)। (46) न उस में दर्दसर होगा और न वह उस से बहकी बहकी बातें करेंगे। (47) और उन के पास होंगी नीची निगाहों वालियां, बड़ी बड़ी आँखों वालियां। (48) गोया वह अंडे हैं पोशीदा रखे हुए। (49) फिर उन में से एक दूसरे की तरफ़ बाहम सवाल करते हुए रख करेगा। (50) उन में से एक कहने वाला कहेगा: बेशक (दुनिया में) मेरा एक हमनशीन था। (51) वह कहा करता था क्या तू (क़ियामत को) सच मानने वालों में से है? (52) क्या जब हम मर गए और हम हो गए मिट्टी और हड्डियां, क्या हमें बदला दिया जाएगा? (53) वह कहेगा क्या तुम झाँकने वाले हो (दोज़ख़ी को झाँक कर देख सकते हो?) (54) तो वह झाँकेगा तो उसे देखेगा दोज़ख़ के दरमियान में। (55) वह कहेगा अल्लाह की क़सम! क़रीब था कि तू मुझे हलाक कर डाले। (56)

وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطٰنٍ ۚ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ ﴿۳۰﴾ فَحَقَّ عَلَيْنَا											
हम पर	पस साबित हो गई	30	सरकश	एक कौम	तुम थे	बल्कि	कोई ज़ोर	तुम पर	हमारा	था	और न
قَوْلُ رَبِّنَا ۗ اِنَّا لَذٰلِقُوْنَ ﴿۳۱﴾ فَاَعْوَبْنٰكُمْ اِنَّا كُنَّا غٰوِيْنَ ﴿۳۲﴾ فَاِنَّهُمْ											
पस बेशक वह	32	गुमराह	बेशक हम थे	पस हम ने वहकाया तुम्हें	31	अलबत्ता चखने वाले	बेशक हम	हमारा रव	वात		
يَوْمِيْذٍ فِى الْعَذٰبِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿۳۳﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿۳۴﴾											
34	मुज़्रिमों के साथ		करते हैं	इसी तरह	बेशक हम	33	मुश्तरिक (शरीक)	अज़ाब में	उस दिन		
اِنَّهُمْ كَانُوْۤا اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۳۵﴾ وَيَقُوْلُوْنَ											
और वह कहते हैं	35	वह तकच्चुर करते थे	अल्लाह के सिवा	नहीं कोई माबूद	उन को	कहा जाता	जब	वह थे	बेशक वह		
اِنَّا لَتٰرِكُوْۤا اِلٰهِنَا لِشٰعِرٍ مَّجْنُوْنٍ ﴿۳۶﴾ بَلْ جَآءَ بِالْحَقِّ وَصَدَقَ											
और तसदीक की	हक के साथ	वह आए	बल्कि	36	दीवाना	एक शायर की खातिर	अपने माबूद	छोड़ देने वाले	क्या हम		
الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۳۷﴾ اِنَّكُمْ لَذٰلِقُو الْعَذٰبِ الْاَلِيْمِ ﴿۳۸﴾ وَمَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا											
मगर जो	और तुम्हें बदला न दिया जाएगा	38	दर्दनाक	अज़ाब	ज़रूर चखने वाले	बेशक तुम	37	रसूलों की			
كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۳۹﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلِصِيْنَ ﴿۴۰﴾ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ											
उन के लिए	यही लोग	40	खास किए हुए	अल्लाह के बन्दे	मगर	39	तुम करते थे				
رِزْقٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿۴۱﴾ فَوَاكِهَ ۚ وَهُمْ مُكْرَمُوْنَ ﴿۴۲﴾ فِى جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿۴۳﴾ عٰلٰى											
पर	43	नेमत के बारात	में	42	एज़ाज़ वाले होंगे	और वह	41	रिज़क़ मालूम			
سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿۴۴﴾ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكٰوِسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ﴿۴۵﴾ بِيْضَآءٍ لَّدٰى											
लज़ज़त	सफ़ेद	45	बहता हुआ शराब	से-का	जाम	उन पर-उन के आगे	दौरा होगा	44	तख़्त आमने सामने (जमा)		
لِّلشَّرِبِيْنَ ﴿۴۶﴾ لَا فِىْهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُوْنَ ﴿۴۷﴾ وَعِنْدَهُمْ											
और उन के पास	47	बहकी बातें करेंगे	उस से	और न वह	ख़राबी (दर्द सर)	न उस में	46	पीने वालों के लिए			
فَصِرْتِ الطَّرْفِ عِيْنٌ ﴿۴۸﴾ كَاْتِهِنَّ بِيْضٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿۴۹﴾ فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ											
उन में से बाज़ (एक)	पस रख करेगा	49	पोशीदा रखे हुए	अंडे	गोया वह	48	बड़ी आँखों वालियां	नीची निगाहों वालियां			
عٰلٰى بَعْضٍ يَّتَسَاۤءَلُوْنَ ﴿۵۰﴾ قَالَ قٰبِلٌ مِّنْهُمْ اِنِّىْ كَانَ لِىْ قَرِيْنٌ ﴿۵۱﴾											
51	एक हमनशीन	मेरा	था	बेशक मैं	उन में से	एक कहने वाला	कहेगा	50	बाहम सवाल करते हुए	बाज़ पर (दूसरे की तरफ़)	
يَقُوْلُ ءَآتَكَ لِمَنِ الْمُصَدِّقِيْنَ ﴿۵۲﴾ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا											
और हड्डियां	मिट्टी	और हो गए	हम मर गए	क्या जब	52	सच्चे जानने वाले	से	क्या तू	वह कहता था		
ءَاِنَّا لَمَدِيْنُوْنَ ﴿۵۳﴾ قَالَ هَلْ اَنْتُمْ مُّطْلِعُوْنَ ﴿۵۴﴾ فَاَطَّلَعَ											
तो वह झाँकेगा	54	झाँकने वाले हो	तुम	क्या	वह कहने लगा	53	अलबत्ता बदला दिए जाएंगे	क्या हम			
فَرَاَهُ فِى سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ﴿۵۵﴾ قَالَ تَاللّٰهِ اِنْ كِدَتْ لَتُرْدِيْنَ ﴿۵۶﴾											
56	कि तू मुझे हलाक कर डाले	तो करीब था	अल्लाह की क़सम	वह कहेगा	55	दोज़ख़	दरमियान में	तो उसे देखेगा			

<p>وَلَوْ لَا نِعْمَةٌ رَبِّي لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِينَ (٥٧) أَمَا نَحْنُ</p>							
क्या पस नहीं हम	57	हाज़िर किए जाने वाले	से	तो मैं ज़रूर होता	मेरा रब	नेमत और अगर न	
<p>بِمَيِّتِينَ (٥٨) إِلَّا مَوْتَتَنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ (٥٩) إِنَّ</p>							
वेशक	59	अज़ाब दिए जाने वालों में से	हम	और नहीं	पहली	हमारी मौत सिवाए 58 मरने वालों में से	
<p>هَذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ (٦٠) لِمِثْلِ هَذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَمَلُونَ (٦١) أذْكَ</p>							
क्या यह	61	अमल करने वाले	पस चाहिए ज़रूर अमल करें	इस जैसी (नेमत) के लिए	60	कामयाबी अज़ीम अलबत्ता वह यह	
<p>خَيْرٌ نُزْلًا أَمْ شَجَرَةُ الزَّقْوَمِ (٦٢) إِنَّا جَعَلْنَاهَا فِتْنَةً لِلظَّالِمِينَ (٦٣)</p>							
63	ज़ालिमों के लिए	एक अज़माइश	हम ने उस को बनाया	वेशक हम	62	थोहर का दरख्त या ज़ियाफत बेहतर	
<p>إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِي أَصْلِ الْجَحِيمِ (٦٤) طَلَعَهَا كَأَنَّهُ رُءُوسُ</p>							
सर (जमा)	गोया कि वह	उस का खोशा	64	जहन्नम	जड़ में	वह एक दरख्त है	
<p>الشَّيْطَانِ (٦٥) فَإِنَّهُمْ لَا كَلُونَ مِنْهَا فَمَالُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ (٦٦)</p>							
66	पेट (जमा)	उस से	सो भरने वाले	उस से	खाने वाले हैं	65	पस वेशक वह शैतानों
<p>ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيمٍ (٦٧) ثُمَّ إِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَإِلَىٰ</p>							
अलबत्ता तरफ़	उन की वापसी	वेशक फिर	67	खौलता हुआ पानी	से	मिला मिला कर उस पर उन के लिए	
<p>الْجَحِيمِ (٦٨) إِنَّهُمْ أَلْفَوْا آبَاءَهُمْ ضَالِّينَ (٦٩) فَهُمْ عَلَىٰ آثِرِهِمْ</p>							
उन के नक़शे क़दम पर	सो वह	69	गुमराह (जमा)	अपने बाप दादा	उन्होंने पाया	वेशक वह 68	
<p>يُهْرَعُونَ (٧٠) وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأُولِينَ (٧١)</p>							
71	अगलों में से अक्सर	उन से पहले	और तहकीक़ गुमराह हुए	70	दौड़ते जाते थे		
<p>وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِمْ مُّنْذِرِينَ (٧٢) فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ</p>							
अन्जाम	हुआ	कैसा	सो देखें	72	डराने वाले	उन में और तहकीक़ हम ने भेजे	
<p>الْمُنْذِرِينَ (٧٣) إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلِصِينَ (٧٤) وَلَقَدْ نَادَيْنَا نُوحَ</p>							
नूह (अ)	और तहकीक़ हमें पुकारा	74	खास किए हुए	अल्लाह के बन्दे	मगर	73	
<p>فَلَنِعْمَ الْمُجِيبُونَ (٧٥) وَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ (٧٦)</p>							
76	बड़ी	मुसीबत	से	और उस के घर वाले	और हम ने नजात दी उसे	75	
<p>وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهُ هُمُ الْبَاقِينَ (٧٧) وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ (٧٨)</p>							
78	बाद में आने वाले	में	उस पर-उस का	और हम ने छोड़ा	77	बाकी रहने वाली वह उस की औलाद और हम ने किया	
<p>سَلَّمَ عَلَىٰ نُوحٍ فِي الْعِلْمِينَ (٧٩) إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ (٨٠)</p>							
80	नेकोकारों	हम जज़ा देते हैं	इसी तरह	वेशक हम	79	सारे जहानों में नूह (अ) पर सलाम हो	
<p>إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ (٨١) ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخِرِينَ (٨٢)</p>							
82	दूसरे	हम ने गर्क कर दिया	फिर	81	मोमिन (जमा)	हमारे बन्दे से वेशक वह	

और अगर मेरे रब की नेमत न होती तो मैं ज़रूर (अज़ाब के लिए) हाज़िर किए जाने वालों में से होता। (57) तो क्या अब हम मरने वाले नहीं हैं? (58) सिवाए हमारी पहली मौत (जिस से हम दो चार हो चुके) और न हम अज़ाब दिए जाने वालों में से होंगे? (59) वेशक यही है अज़ीम कामयाबी। (60) पस इस जैसी नेमत के लिए चाहिए कि ज़रूर अमल करें अमल करने वाले। (61) क्या यह बेहतर ज़ियाफत है या थोहर का दरख्त? (62) वेशक हम ने उस को एक फ़ितना बनाया है ज़ालिमों के लिए। (63) वेशक वह एक दरख्त है जहन्नम की जड़ (गहराई) में निकलता है। (64) उस का खोशा, गोया कि वह शैतानों के सर (साँपों के फन) है। (65) वेशक वह उस से खाएंगे, सो उस से पेट भरेंगे। (66) फिर वेशक उस (खाने) पर उन के लिए खौलता हुआ पानी (पीप) मिला मिला कर (दिया जाएगा)। (67) फिर उन की वापसी जहन्नम की तरफ़ होगी। (68) वेशक उन्होंने ने अपने बाप दादा को गुमराह पाया था। (69) सो वह उन के नक़शे क़दम पर दौड़ते जाते थे। (70) और तहकीक़ उन से पहले गुमराह हुए थे (उन के अगलों में से अक्सर)। (71) तहकीक़ हम ने उन में डराने वाले (रसूल) भेजे थे। (72) सो आप (स) देखें कैसा हुआ उन का अन्जाम जिन्हें डराया गया था? (73) मगर अल्लाह के खास किए हुए बन्दे (बन्दगाने खास का अन्जाम कितना अच्छा हुआ)। (74) और तहकीक़ नूह (अ) ने हमें पुकारा, सो हम खूब दुःखा कुबूल करने वाले हैं। (75) और हम ने उसे और उस के घर वालों को बड़ी मुसीबत से नजात दी। (76) और हम ने किया उस की औलाद को बाकी रहने वाली। (77) और हम ने उस का (ज़िक्रे ख़ैर) बाद में आने वालों में छोड़ा। (78) नूह (अ) पर सलाम हो सारे जहानों में। (79) वेशक हम इसी तरह नेकोकारों को जज़ा देते हैं। (80) वेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे। (81) फिर हम ने दूसरों को गर्क कर दिया। (82)

और बेशक इब्राहीम (अ) उसी के तरीके पर चलने वालों में से थे। (83) जब वह अपने रब के पास आए साफ़ दिल के साथ। (84) (याद करो) जब उस ने अपने बाप और अपनी कौम से कहा: तुम किस (वाहियात) चीज़ की परसतिश करते हो? (85) क्या तुम अल्लाह के सिवा झूट मूट के मावूद चाहते हो? (86) सो तमाम जहानों के परवरदिगार के बारे में तुम्हारा क्या गुमान है? (87) फिर उस ने सितारों को एक नज़र देखा। (88) तो उस ने कहा बेशक मैं बीमार हूँ। (89) पस वह लोग पीठ फेर कर उस से फिर गए। (90) फिर वह उन के मावूदों में छुप कर घुस गया, फिर वह (बतौर तमसख़र) कहने लगा: क्या तुम नहीं खाते? (91) क्या हुआ तुम्हें? तमू बोलते नहीं? (92) फिर वह पूरी कुव्वत से मारता हुआ उन पर जा पड़ा। (93) फिर वह (बुत परस्त) सुतवज्जुह हुए उसकी तरफ़ दौड़ते हुए (आए)। (94) उस ने फ़रमाया क्या तुम (उनकी) परसतिश करते हो? जो तुम खुद तराशते हो। (95) हालांकि अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया, और जो तुम करते (बनाते) हो। (96) उन्होंने ने (एक दूसरे को) कहा: उस के लिए एक इमारत (आतिश ख़ाना) बनाओ, फिर उसे आग में डाल दो। (97) फिर उन्होंने ने उस पर दाओ करना चाहा तो हम ने उन्हें ज़ेर कर दिया। (98) और इब्राहीम (अ) ने कहा: मैं अपने रब की तरफ़ जाने वाला हूँ, अनक़रीब वह मुझे राह दिखाएगा। (99) ऐ मेरे रब! मुझे अ़ता फ़रमा (नेक औलाद) सालेहीन में से। (100) पस हम ने उसे एक बुर्दवार लड़के की वशारत दी। (101) फिर जब वह उस के साथ दौड़ने (की उम्र को) पहुँचा तो इब्राहीम (अ) ने कहा कि ऐ मेरे बेटे! बेशक मैं ख़्वाब में देखता हूँ कि मैं तुझे जुवह कर रहा हूँ। अब तू देख कि तेरी क्या राए है? उस ने कहा ऐ मेरे अब्बाजान! आप को जो हुक्म किया जाता है वह करें, आप मुझे जल्द ही पाएंगे ईशाअल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा) सव्र करने वालों में से। (102) पस जब दोनों ने हुक्मे इलाही को मान लिया, बाप ने बेटे को पेशानी के बल लिटाया। (103) और हम ने उस को पुकारा कि ऐ इब्राहीम (अ)! (104) तहकीक़ तू ने ख़्वाब को सच कर दिखाया, बेशक हम नेकोकारों को इसी तरह जज़ा दिया करते हैं। (105) बेशक यह खुली आज़माइश (बड़ा इम्तिहान था)। (106) और हम ने एक बड़ा ज़बीहा (कुरबानी को) उस का फ़िदया दिया। (107)

وَإِنَّ مِنْ شَيْعَتِهِ لِابْرَهِيمَ ﴿٨٣﴾ إِذْ جَاءَ رَبَّهُ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ﴿٨٤﴾											
84	साफ़	दिल के साथ	अपना रब	जब वह आया	83	अलबत्ता इब्राहीम (अ)	उस के तरीके पर चलने वाले	से	और बेशक		
إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَاذَا تَعْبُدُونَ ﴿٨٥﴾ أَيْفَاكِ الْهَيْهَةَ دُونَ اللَّهِ											
	अल्लाह के सिवा	मावूद	क्या झूट मूट के	85	तुम परसतिश करते हो	किस चीज़	और अपनी कौम	अपने बाप को	जब उस ने कहा		
تُرِيدُونَ ﴿٨٦﴾ فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٨٧﴾ فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُومِ ﴿٨٨﴾											
88	सितारे	में-को	एक नज़र	फिर उस ने देखा	87	तमाम जहानों	रब के बारे में	तुम्हारा गुमान	86	तुम चाहते हो	
فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ ﴿٨٩﴾ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ ﴿٩٠﴾ فَرَاغَ إِلَى الْهَيْهَمِ											
	उन के मावूदों	तरफ़-में	फिर पोशीदा घुस गया	90	पीठ फेर कर	उस से	पस वह फिर गए	89	बीमार हूँ	बेशक मैं	तो उस ने कहा
فَقَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ﴿٩١﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُونَ ﴿٩٢﴾ فَرَاغَ عَلَيْهِمِ											
	उन पर	फिर जा पड़ा वह	92	तुम बोलते नहीं	क्या हुआ तुम्हें?	91	क्या तुम नहीं खाते	फिर कहने लगा			
ضَرْبًا بِالْيَمِينِ ﴿٩٣﴾ فَأَقْبَلُوا إِلَيْهِ يَزْفُونَ ﴿٩٤﴾ قَالَ اتَّعْبُدُونَ											
	क्या तुम परसतिश करते हो	उस ने फ़रमाया	94	दौड़ते हुए	उस की तरफ़	फिर वह सुतवज्जुह हुए	93	अपने दाएं हाथ (कुदरत) से	मारता हुआ		
مَا تَنْحِتُونَ ﴿٩٥﴾ وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾ قَالُوا ابْنُوا لَهُ بُيُوتًا											
	एक इमारत	उस के लिए बनाओ	उन्होंने ने कहा	96	तुम करते हो	और जो	उस ने पैदा किया तुम्हें	हालांकि अल्लाह	95	जो तुम तराशते हो	
فَالْقُوَّةَ فِي الْجَحِيمِ ﴿٩٧﴾ فَارَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَسْفَلِينَ ﴿٩٨﴾											
98	नीचा	तो हम ने कर दिया उन्हें	दाओ	उस पर	फिर उन्होंने ने चाहा	97	आग में	फिर डाल दो उसे			
وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿٩٩﴾ رَبِّ هَبْ لِي مِنْ											
	से	मुझे अ़ता फ़रमा	ऐ मेरे रब	99	अनक़रीब वह मुझे राह दिखाएगा	अपने रब की तरफ़	जाने वाला हूँ	बेशक मैं	और उस (इब्राहीम) ने कहा		
الضَّلِحِينَ ﴿١٠٠﴾ فَبَشَّرْنَاهُ بِغُلَامٍ حَلِيمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ											
	दौड़ने	उस के साथ	वह पहुँचा	101	बुर्दवार	एक लड़का	पस वशारत दी हम ने उसे	100	नेक सालेह (जमा)		
قَالَ يُبْنِيٰ إِنِّيٰ أَرَىٰ فِي الْمَنَامِ أَنِّيٰ أَذْبَحُكَ فَانظُرْ مَاذَا تَرَىٰ											
	तेरी राए	क्या	अब तू देख	तुझे जुवह कर रहा हूँ	कि मैं	ख़्वाब में	बेशक मैं देखता हूँ	ऐ मेरे बेटे	उस ने कहा		
قَالَ يَا بَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ سَتَجِدُنِيٰ إِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنْ											
	से	अल्लाह ने चाहा	अगर	आप जल्द ही मुझे पाएंगे	जो हुक्म आप को किया जाता है	आप करें	ऐ मेरे अब्बा जान	उस ने कहा			
الضَّرِيرِينَ ﴿١٠٢﴾ فَلَمَّا أَسْلَمَا وَتَلَّهُ لِلْجَبِينِ ﴿١٠٣﴾ وَنَادَيْنَاهُ أَنْ يَا اِبْرَهَيْمُ ﴿١٠٤﴾											
104	ऐ इब्राहीम (अ)	कि	और हम ने उस को पुकारा	103	पेशानी के बल	(बाप ने बेटे को) लिटाया	दोनों ने हुक्मे (इलाही) मान लिया	पस जब	102	सव्र करने वाले	
قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَا إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١٠٥﴾ إِنَّ هَذَا											
	बेशक यह	105	नेकोकारों	हम जज़ा दिया करते हैं	बेशक हम इसी तरह	ख़्वाब	तहकीक़ तू ने सच कर दिखाया				
لَهُوَ الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ﴿١٠٦﴾ وَفَدَيْنَاهُ بِذَبْحٍ عَظِيمٍ ﴿١٠٧﴾											
107	बड़ा	एक ज़बीहा	और हम ने उस का फ़िदया दिया	106	खुली	आज़माइश	अलबत्ता वह				

وَتَرْكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۝١٠٨ سَلَّمَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ۝١٠٩ كَذَلِكَ								
इसी तरह	109	इब्राहीम (अ)	पर	सलाम	108	बाद में आने वालों में	उस पर (उस का ज़िक्र खैर)	और हम ने बाकी रखा
نَجْرَى الْمُحْسِنِينَ ۝١١٠ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝١١١ وَبَشَّرْنَاهُ								
और हम ने उसे बशारत दी	111	मोमिनीन	हमारे बन्दे	से	वेशक वह	110	नेकोकारों	हम जज़ा दिया करते हैं
بِاسْحَاقَ نَبِيًّا مِّنَ الصَّالِحِينَ ۝١١٢ وَبَرْكْنَا عَلَيْهِ وَعَلَىٰ إِسْحَاقَ								
इसहाक (अ)	और पर	उस पर-उस को	और हम ने बरकत नाज़िल की	112	सालेहीन	से	एक नबी	इसहाक (अ) की
وَمِنْ ذُرِّيَّتَيْهَا مُحْسِنٌ وَظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ مُبِينٌ ۝١١٣ وَلَقَدْ مَنَّآ								
और हम ने एहसान किया	और तहकीक अलबत्ता	113	सरीह	अपनी जान पर	और जुल्म करने वाला	नेकोकार	उन दोनों की औलाद	और से-में
عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۝١١٤ وَنَجَّيْنَاهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكُرْبِ الْعَظِيمِ ۝١١٥								
115	बड़ा	ग़म	से	और उन की क़ौम	और उन दोनों को नजात दी	114	और हारून (अ)	मूसा (अ) पर
وَنَصَّرْنَاهُمْ فَكَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ۝١١٦ وَآتَيْنَاهُمَا الْكِتَابَ الْمُسْتَبِينَ ۝١١٧								
117	वाज़ेह	किताब	और हम ने उन दोनों को दी	116	ग़ालिब (जमा)	वही तो वह रहे	और हम ने मदद की उन की	
وَهَدَيْنَاهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۝١١٨ وَتَرْكْنَا عَلَيْهِمَا								
उन दोनों पर (उन का ज़िक्र खैर)	और हम ने बाकी रखा	118	सीधा	रास्ता	और हम ने उन दोनों को हिदायत दी			
فِي الْآخِرِينَ ۝١١٩ سَلَّمَ عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۝١٢٠ إِنَّا كَذَلِكَ نَجْرَى								
हम जज़ा देते हैं	वेशक हम इसी तरह	120	और हारून (अ)	मूसा (अ) पर	सलाम	119	बाद में आने वालों में	
الْمُحْسِنِينَ ۝١٢١ إِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝١٢٢ وَإِنَّ الْيَاسَ								
इलयास (अ)	और वेशक	122	मोमिनीन	हमारे बन्दे	से	वेशक वह दोनों	121	नेकोकारों
لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝١٢٣ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَلَا تَتَّقُونَ ۝١٢٤ أَتَدْعُونَ								
क्या तुम पुकारते हो	124	क्या तुम नहीं डरते	अपनी क़ौम को	जब उस ने कहा	123	रसूलों	अलबत्ता-से	
بَعْلًا وَتَذَرُونَ أَحْسَنَ الْخَلْقِينَ ۝١٢٥ اللَّهُ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ								
तुम्हारे बाप दादा	और रब	तुम्हारा रब	अल्लाह	125	पैदा करने वाला (जमा)	सब से बेहतर	और तुम छोड़ देते हो	बअ़ल
الْأَوَّلِينَ ۝١٢٦ فَكَذَّبُوهُ فَإِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ۝١٢٧ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ								
अल्लाह के बन्दे	सिवाए	127	वह ज़रूर हाज़िर किए जाएंगे	तो वेशक वह	पस उन्होंने ने झुटलाया	126	पहले	
الْمُخْلِصِينَ ۝١٢٨ وَتَرْكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۝١٢٩ سَلَّمَ عَلَىٰ								
पर	सलाम	129	बाद में आने वालों में	और हम ने बाकी रखा उस पर (उस का ज़िक्र खैर)	128	मुख़लिस (जमा)		
إِلَىٰ يَاسِينَ ۝١٣٠ إِنَّا كَذَلِكَ نَجْرَى الْمُحْسِنِينَ ۝١٣١ إِنَّهُ مِنْ								
से	वेशक वह	131	नेकोकारों	जज़ा दिया करते हैं	वेशक हम इसी तरह	130	इलयासीन (इलयास अ)	
عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝١٣٢ وَإِنَّ لُوطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝١٣٣								
133	रसूल (जमा)	अलबत्ता-से	लूत (अ)	और वेशक	132	मोमिनीन	हमारे बन्दे	

और हम ने उसका ज़िक्र खैर बाद में आने वालों में बाकी रखा। (108) सलाम हो इब्राहीम (अ) पर। (109) इसी तरह हम नेकोकारों को जज़ा दिया करते हैं। (110) वेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से था। (111) और हम ने उसे बशारत दी इसहाक (अ) की (कि वह) एक नबी सालेहीन में से होगा। (112) और हम ने उस पर बरकत नाज़िल की और इसहाक (अ) पर, और उन दोनों की औलाद में नेकोकार (भी हैं) और अपनी जान पर सरीह जुल्म करने वाले (भी)। (113) और तहकीक हम ने मूसा (अ) और हारून (अ) पर एहसान किया। (114) और हम ने उन दोनों को और उन की क़ौम को बड़े ग़म (फ़िराज़ीन के मज़ालिम) से नजात दी। (115) और हम ने उन की मदद की, तो वही ग़ालिब रहे। (116) और हम ने उन दोनों को वाज़ेह किताब दी। (117) और उन दोनों को सीधे रास्ते की हिदायत दी। (118) और हम ने उन दोनों का ज़िक्र खैर बाद में आने वालों में बाकी रखा। (119) सलाम हो मूसा (अ) और हारून (अ) पर। (120) वेशक हम इसी तरह नेकोकारों को जज़ा देते हैं। (121) वेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे। (122) और वेशक इलयास (अ) रसूलों में से थे। (123) (याद करो) जब उस ने अपनी क़ौम से कहा क्या तुम (अल्लाह से) नहीं डरते? (124) क्या तुम बअ़ल (बुत) को पुकारते हो? और तुम सब से बेहतर पैदा करने वाले को छोड़ते हो। (125) (यानी) अल्लाह को (जो) तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे पहले बाप दादा का (भी) रब है। (126) पस उन्होंने ने उसे झुटलाया तो वेशक वह ज़रूर हाज़िर किए जाएंगे (पकड़े जाएंगे)। (127) अल्लाह के मुख़लिस (खास बन्दों) के सिवा। (128) और हम ने उस का ज़िक्र खैर बाकी रखा बाद में आने वालों में। (129) सलाम हो इलयास (अ) पर। (130) वेशक हम इसी तरह नेकोकारों को जज़ा दिया करते हैं। (131) वेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे। (132) और वेशक लूत (अ) रसूलों में से थे। (133)

(याद करो) जब हम ने नजात दी उसे ओर उस के सब घर वालों को। (134)

पीछे रह जाने वालों में से एक बुढ़िया के सिवा। (135)

फिर हम ने और सब को हलाक किया। (136)

और बेशक तुम सुबह होते और रात में उन पर (उन की बसतियों से) गुज़रते हो। (137)

तो क्या तुम अक्ल से काम नहीं लेते? (138)

और बेशक यूनस (अ) अलबत्ता रसूलों में से थे। (139)

जब वह भाग कर भरी हुई कश्ती (के पास) गए। (140)

तो उन्होंने ने कुरआ डाला, सो वह (कश्ती से) धकेले गए। (141)

फिर उन्हें मछली ने निगल लिया और वह (अपने आप को) मलामत कर रहे थे। (142)

फिर अगर वह तस्वीह करने वालों में से न होते। (143)

तो वह उस के पेट में कियामत के दिन तक रहते। (144)

फिर हम ने उन्हें चटयल मैदान में फेंक दिया और वह वीमार थे। (145)

और हम ने उगाया उस पर एक वेलदार दरख्त। (146)

और हम ने उसे एक लाख या उस से ज़ियादा लोगों की तरफ़ भेजा। (147)

सो वह लोग ईमान लाए और हम ने उन्हें एक मुद्दत तक के लिए फाइदा उठाने दिया। (148)

पस आप (स) उन से पूछें क्या तेरे रब के लिए बेटियां हैं और उन के लिए बेटे? (149)

क्या हम ने फ़रिशतों को औरत ज़ात पैदा किया है? और वह देख रहे थे? (150)

याद रखो, बेशक वह अपनी बुहतान तराज़ी से कहते हैं। (151)

(कि) अल्लाह साहिबे औलाद है, और वह बेशक झूटे हैं। (152)

क्या उस ने बेटियों को बेटों पर पसंद किया? (153)

तुम्हें क्या हो गया है? तुम कैसा फ़सला करते हो? (154)

तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (155)

क्या तुम्हारे पास कोई खुली सनद है? (156)

तो अपनी वह किताब ले आओ अगर तुम सच्चे हो। (157)

और उन्होंने ने उस के और जिन्नात के दरमियान एक रिश्ता ठहराया, और तहकीक़ जान लिया जिन्नात ने के बेशक वह (अज़ाब में) हाज़िर (गिरफ़तार) किए जाएंगे। (158)

अल्लाह उस से पाक है जो वह बयान करते हैं। (159)

सिवाए अल्लाह के चुने हुए बन्दे। (160)

إِذْ نَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ﴿١٣٤﴾ إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ ﴿١٣٥﴾ ثُمَّ										
फिर	135	पीछे रह जाने वाले	में	एक बुढ़िया	सिवाए	134	सब	और उस के घर वाले	हम ने उसे नजात दी	जब
دَمَّرْنَا الْآخَرِينَ ﴿١٣٦﴾ وَإِنَّكُمْ لَتَمُرُّونَ عَلَيْهِمْ مُصْبِحِينَ ﴿١٣٧﴾ وَبِاللَّيْلِ										
और रात में	137	सुबह करते हुए (सुबह होते)	उन पर	अलबत्ता गुज़रते हो	और	136	औरों को	हम ने हलाक किया		
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٣٨﴾ وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٣٩﴾ إِذْ أَبَقَ إِلَى										
तरफ़	भाग गए वह	जब	139	रसूलों	अलबत्ता-से	यूनस (अ)	और	138	तो क्या तुम अक्ल से काम नहीं लेते	
الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ﴿١٤٠﴾ فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ ﴿١٤١﴾										
141	धकेले गए	से	सो वह हुआ	तो कुरआ डाला	140	भरी हुई	कश्ती			
فَالْتَمَمَهُ الْحُوتُ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿١٤٢﴾ فَلَوْلَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ ﴿١٤٣﴾										
143	तस्वीह करने वाले	से	होता	यह कि वह	फिर अगर न	142	मलामत करने वाला	और	मछली	फिर उसे निगल लिया
لَلْبَثِّ فِي بَطْنِهِ إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿١٤٤﴾ فَنَبَذْنَاهُ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ										
और वह	चटयल मैदान में	फिर हम ने उसे फेंक दिया	144	दोबारा जी उठने के दिन (रोज़े हशर)	तक	उस के पेट में	अलबत्ता रहता			
سَقِيمٌ ﴿١٤٥﴾ وَأَنْبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّقْطِينٍ ﴿١٤٦﴾ وَأَرْسَلْنَاهُ إِلَى										
तरफ़	और हम ने भेजा उस को	146	वेलदार	से	दरख्त	उस पर	और हम ने उगाया	145	वीमार	
مِائَةِ أَلْفٍ أَوْ يَزِيدُونَ ﴿١٤٧﴾ فَاَمْنُوا فَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ﴿١٤٨﴾										
148	एक मुद्दत तक	तो हम ने उन्हें फाइदा उठाने दिया	सो वह ईमान लाए	147	उस से ज़ियादा	या	एक लाख			
فَاسْتَفْتَيْهِمَ الرِّبَّكَ الْبَنَاتِ وَلَهُمُ الْبَنُونَ ﴿١٤٩﴾ أَمْ خَلَقْنَا الْمَلَائِكَةَ										
फ़रिशते	हम ने पैदा किया	क्या	149	बेटे	और उन के लिए	बेटियां	क्या तेरे रब के लिए	पस पूछें उन से		
إِنثًا وَهُمْ شَاهِدُونَ ﴿١٥٠﴾ أَلَا إِنَّهُمْ مِّنْ أَفْكَهِمْ لَيَقُولُونَ ﴿١٥١﴾										
151	अलबत्ता कहते हैं	अपनी बुहतान तराज़ी	से	बेशक वह	याद रखो	150	देख रहे थे	और वह	औरत	
وَلَدَ اللَّهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١٥٢﴾ أَصْطَفَىٰ الْبَنَاتِ عَلَىٰ الْبَنِينَ ﴿١٥٣﴾										
153	बेटों पर	बेटियां	क्या उस ने पसंद किया	152	झूटे	और	बेशक वह	अल्लाह साहिबे औलाद		
مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿١٥٤﴾ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٥٥﴾ أَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ										
कोई सनद	तुम्हारे पास	क्या	155	तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते?	154	तुम फ़ैसला करते हो	कैसा	तुम्हें क्या हो गया		
مُّبِينٌ ﴿١٥٦﴾ فَاتُّوا بِكِتَابِكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٥٧﴾ وَجَعَلُوا بَيْنَهُ										
उस के दरमियान	और उन्होंने ने ठहराया	157	सच्चे	तुम हो	अगर	अपनी किताब	तो ले आओ	156	खुली	
وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا وَلَقَدْ عَلِمْتِ الْجِنَّةُ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ﴿١٥٨﴾										
158	हाज़िर किए जाएंगे	बेशक वह	जिन्नात	और तहकीक़ जान लिया	एक रिश्ता	जिन्नात	और दरमियान			
سُبْحٰنَ اللَّهِ عَمَّا يُصِفُونَ ﴿١٥٩﴾ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿١٦٠﴾										
160	खास किए हुए (चुने हुए)	अल्लाह के बन्दे	मगर	159	वह बयान करते हैं	उस से जो	पाक है अल्लाह			

فَاتِكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ (161) مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفِتْنِينَ (162) إِلَّا مَنْ هُوَ									
जो-वह	सिवाए	162	उस के खिलाफ बहकाने वाले	नहीं हो तुम	161	तुम परस्तिश करते हो	और जो तो बेशक तुम		
صَالِ الْجَحِيمِ (163) وَمَا مِنَّا إِلَّا لَهُ مَقَامٌ مَّعْلُومٌ (164) وَإِنَّا لَنَحْنُ									
अलबत्ता हम	और बेशक हम	164	एक मुअय्यन दर्जा	मगर उस के लिए	हम में से	और नहीं	163	जहनन्म	जाने वाला
الصَّافُونَ (165) وَإِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُونَ (166) وَإِنْ كَانُوا لَيَقُولُونَ (167)									
167	कहा करते	वह थे	और बेशक	166	तस्वीह करने वाले	अलबत्ता हम	और बेशक हम	165	सफ बस्ता होने वाले
لَوْ أَنْ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِنَ الْأُولِينَ (168) لَكُنَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلِصِينَ (169)									
169	खास किए (मुंतखिब)	अल्लाह के बन्दे	ज़रूर हम होते	168	पहले लोग	से	कोई नसीहत हमारे पास	अगर होती	
فَكَفَرُوا بِهِ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ (170) وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا									
अपने बन्दों के लिए	हमारा वादा	और पहले सादिर हो चुका है	170	वह जान लेंगे	तो अन्करीब	उस का	फिर उन्होंने ने इन्कार किया		
الْمُرْسَلِينَ (171) إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُورُونَ (172) وَإِنَّ جُنَدَنَا لَهُمُ									
अलबत्ता वही	हमारा लशकर	और बेशक	172	फतहमन्द	अलबत्ता वही	बेशक वह	171	रसूलों	
الْغَلْبُونَ (173) فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ (174) وَأَبْصَرُهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ (175)									
175	वह देख लेंगे	पस अन्करीब	और उन्हें देखते रहें	174	एक वक़्त तक	तक	उन से पस एराज़ करें	173	ग़ालिब (जमा)
أَفِعْدَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ (176) فَإِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ									
सुबह	तो बुरी	उन के मैदान में	वह नाज़िल होगा	तो जब	176	वह जल्दी कर रहे हैं	तो क्या हमारे अज़ाब के लिए		
الْمُنْدَرِينَ (177) وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ (178) وَأَبْصُرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ (179)									
179	वह देख लेंगे	पस अन्करीब	और देखते रहें	178	एक मुद्दत तक	उन से	और एराज़ करें	177	जिन को डराया जा चुका है
سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ (180) وَسَلَامٌ عَلَىٰ									
पर	और सलाम	180	वह बयान करते हैं	उस से जो	इज़ज़त वाला रब	तुम्हारा रब	पाक है		
الْمُرْسَلِينَ (181) وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ (182)									
182	तमाम जहानों का रब			और तमाम तारीफें अल्लाह के लिए		181	रसूलों		
آيَاتُهَا ٨٨ ❁ (38) سُورَةُ ص ❁ زُكُوعَاتُهَا ٥									
5 रुक़ात 5 (38) सूरह साद आयात 88									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
ص وَالْقُرْآنِ ذِي الذِّكْرِ (1) بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي عِزَّةٍ وَشِقَاقٍ (2)									
2	और मुख़ालिफ़त	घमंड में	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	बल्कि	1	नसीहत देने वाला	कुरआन की क़सम	साद	
كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قَرْنٍ فَنَادَوا وَّلَاتٍ حِينَ مَنَاصٍ (3)									
3	छुटकारा	वक़्त	और न था	तो वह फ़र्याद करने लगे	उम्मतें	उन से क़ब्ज़	हम ने हलाक कर दी	कितनी ही	

तो बेशक तुम और वह जिन की तुम परस्तिश करते हो। (161) तुम नहीं बहका सकते उस (अल्लाह) के खिलाफ़ (किसी को)। (162) उस के सिवा जो जहनन्म में जाने वाला है। (163) और (फ़रिशतों ने कहा) हम में से कोई भी ऐसा नहीं जिस का एक मुअय्यन दर्जा न हो। (164) और बेशक हम ही सफ़ बस्ता रहने वाले हैं। (165) और बेशक हम ही तस्वीह करने वाले हैं। (166) और बेशक वह (कुफ़ारे मक्का) कहा करते थे। (167) अगर हमारे पास होती पहले लोगों की कोई (किताबे) नसीहत। (168) तो हम ज़रूर अल्लाह के मुंतखिब बन्दों में से होते। (169) फिर उन्होंने ने उस का इन्कार किया तो वह अन्करीब (उस का अन्जाम) जान लेंगे। (170) और हमारा वादा अपने बन्दों (यानी) रसूलों के लिए पहले (ही) सादिर हो चुका है। (171) बेशक वही फ़तह मन्द होंगे। (172) और बेशक अलबत्ता हमारा लशकर ही ग़ालिब रहेगा। (173) पस आप (स) एक वक़्त तक (थोड़ा अर्सा) उन से एराज़ करें। (174) और उन्हें देखते रहें, पस अन्करीब वह (अपना अन्जाम) देख लेंगे। (175) तो क्या वह हमारे अज़ाब के लिए जल्दी कर रहे हैं? (176) तो जब वह उन के मैदान में नाज़िल होगा तो उन की सुबह बुरी होगी जिन्हें डराया जा चुका है। (177) और आप (स) एक मुद्दत तक (थोड़ा अर्सा) उन से एराज़ करें। (178) और देखते रहें, पस अन्करीब वह (अपना अन्जाम) देख लेंगे। (179) पाक है तुम्हारा रब इज़ज़त वाला रब, उस से जो वह बयान करते हैं। (180) और सलाम हो रसूलों पर। (181) और तमाम तारीफें अल्लाह के लिए जो तमाम जहानों का रब है। (182) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है साद। नसीहत देने वाले कुरआन की क़सम! (1) (आप की दावत वर हक़ है) बल्कि जिन लोगों ने कुफ़ किया वह घमंड और मुख़ालिफ़त में हैं। (2) कितनी ही उम्मतें उन से क़ब्ज़ हम ने हलाक कर दी तो वह फ़र्याद करने लगे और (अब) छुटकारे का वक़्त न था। (3)

और उन्होंने ने तअज़जुब किया कि उन के पास उन में से एक डराने वाला आया, और काफ़िरों ने कहा: यह जादूगर है, झूटा है। (4) क्या उस ने सारे माबूदों को बना दिया है एक माबूद, बेशक यह तो एक बड़ी अजीब बात है। (5) और उन के कई सरदार यह कहते हुए चल पड़े कि चलो और अपने माबूदों पर जमे रहो, बेशक यह सोची समझी स्कीम है। (6) हम ने पिछले मज़हब में ऐसी (बात) नहीं सुनी, यह तो महज़ मन घड़त है। (7) क्या हम में से उसी परे अल्लाह का कलाम नाज़िल क्या गया? (हाँ) बल्कि वह शक में है मेरी नसीहत से, बल्कि (अभी) उन्होंने ने मेरा अज़ाब नहीं चखा। (8) क्या तुम्हारे रब की रहमत के खज़ाने उन के पास हैं? जो ग़ालिब, बहुत अता करने वाला है। (9) क्या उन के लिए है बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की और जो उन के दरमियान है? तो वह (आस्मानों पर) चढ़ जाएँ रससियां तान कर। (10) शिकस्त खूर्दा गिरोहों में से यह भी एक लशकर है। (11) उन से पहले झुटलाया कौमे नूह (अ) ने और अ़ाद और मीखों वाले फ़िरअ़ीन ने। (12) और समूद और कौमे लूत, और अयका वालों ने, गिरोह वह थे। (13) उन सब ने रसूलों को झुटलाया, पस (उन पर) अज़ाब आ पड़ा। (14) और इन्तिज़ार नहीं करते यह लोग मगर एक चिंघाड़ का, जिस में कोई ढील (गुन्जाइश) न होगी। (15) और उन्होंने ने (मज़ाक़ के तौर पर) कहा कि ऐ हमारे रब: हमें जल्दी दे हमारा हिस्सा रोज़े हिसाब से पहले। (16) जो वह कहते हैं उस पर आप (स) सब्र करें, और याद करें हमारे बन्दे दाऊद (अ) कुव्वत वाले को, बेशक वह खूब रज़ूअ करने वाला था। (17) बेशक हम ने पहाड़ उस के साथ मुसख़्खर कर दिए थे, वह सुबह ओ शाम तस्वीह करते थे। (18)

وَعَجِبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ وَقَالَ الْكُفِرُونَ هَذَا سِحْرٌ							
यह जादूगर	काफ़िर (जमा)	और कहा	उन में से	एक डराने वाला	उन के पास आया	कि	और उन्होंने ने तअज़जुब किया
كَذَابٌ ۚ أَجَعَلَ الْآلِهَةَ إِلَهًا وَاحِدًا ۗ إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ۝٥							
5	बड़ी अजीब	एक शौ (बात)	बेशक यह	एक	माबूद	सारे माबूदों	क्या उस ने बना दिया
وَإِن طَلَقَ الْمَلَأُ مِنْهُمْ أَنِ امْشُوا وَاصْبِرُوا عَلَىٰ آلِهَتِكُمْ ۗ إِنَّ هَذَا							
बेशक यह	अपने माबूदों पर	और जमे रहो	चलो	कि	उन के	सरदार	और चल पड़े
لَشَيْءٍ يُرَادُ ۖ مَا سَمِعْنَا بِهَذَا فِي الْمِلَّةِ الْآخِرَةِ ۗ إِنَّ هَذَا إِلَّا							
मगर-महज़	यह	नहीं	पिछला	मज़हब	में	ऐसी	हम ने नहीं सुना
कोई शौ (बात)	इरादा की हुई (मतलब की)	6	हम ने नहीं सुना	मगर-महज़	यह	नहीं	पिछला
أَحْتِلَاقٌ ۗ ۝٧ ءَأَنْزَلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْ بَيْنِنَا ۗ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ							
शक में	वह	बल्कि	हम में से	ज़िक्र (कलाम)	उस पर	क्या नाज़िल किया गया	7
مِّنْ ذِكْرِي ۗ بَلْ لَمَّا يَدُوْفُوا عَدَابِ ۚ ۝٨ أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنٌ							
खज़ाने	उन के पास	क्या	8	मेरा अज़ाब	चखा उन्होंने ने	नहीं	बल्कि
رَحْمَةٍ رَبِّكَ الْعَزِيزِ الْوَهَّابِ ۖ ۝٩ أَمْ لَهُمْ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ							
और ज़मीन	बादशाहत आस्मानों	क्या उन के लिए	9	बहुत अता करने वाला	ग़ालिब	तुम्हारे रब की रहमत	
وَمَا بَيْنَهُمَا ۗ فَلَيَرْتَقُوا فِي الْأَسْبَابِ ۚ ۝١٠ جُنْدٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُومٌ							
शिकस्त खूर्दा	यहां	जो	एक लशकर	10	रससियों में (रससियां तान कर)	तो वह चढ़ जाएँ	और जो उन दोनों के दरमियान
مِّنَ الْأَحْزَابِ ۚ ۝١١ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَادِ ۚ ۝١٢							
12	कीलों वाला	और फ़िरअ़ीन	और अ़ाद	कौमे नूह	उन से पहले	झुटलाया	11
وَتَمُودُ وَقَوْمُ لُوطٍ وَأَصْحَابُ لَيْكَةِ ۗ أُولَٰئِكَ الْأَحْزَابُ ۚ ۝١٣ إِنَّ							
नहीं	13	गिरोह	वह थे	और अयका वाले	और कौमे लूत	और समूद	
كُلٌّ إِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ۚ ۝١٤ وَمَا يَنْظُرُ هَؤُلَاءِ							
यह लोग	और इन्तिज़ार नहीं करते	14	अज़ाब	पस आ पड़ा	रसूलों	झुटलाया	मगर सब
إِلَّا صِيْحَةً وَاحِدَةً مَّا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ۚ ۝١٥ وَقَالُوا رَبَّنَا							
ऐ हमारे रब	और उन्होंने ने कहा	15	ढील	कोई	जिस के लिए नहीं	एक	चिंघाड़
عَجِّلْ لَنَا قِطْنَآ قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ۚ ۝١٦ إصْبِرْ عَلَىٰ							
उस पर	आप (स) सब्र करें	16	रोज़े हिसाब	पहले	हमारा हिस्सा	हमें	जल्दी दे
مَا يَقُولُونَ وَأَذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوُدَ ذَا الْأَيْدِ ۗ إِنَّهُ أَوَّابٌ ۚ ۝١٧							
17	खूब रज़ूअ करने वाला	बेशक वह	कुव्वत वाला	दाऊद (अ)	हमारे बन्दे	और याद करें	जो वह कहते हैं
إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْإشْرَاقِ ۚ ۝١٨							
18	और सुबह के वक़्त	शाम के वक़्त	वह तस्वीह करते थे	उस के साथ	पहाड़	बेशक हम ने मुसख़्खर कर दिए	



وَالطَّيْرَ مَحْشُورَةً كُلُّ لَهَ أَوَابٍ ۱۹ وَشَدَدْنَا مُلْكَهُ وَاتَيْنَهُ الْحِكْمَةَ									
और परिन्दे	इकटठे किए हुए	सब उस की तरफ़	रुजूअ करने वाले	19	और हम ने उस की	उस की वादशाहत	और हम ने उस को दी	हिक्मत	
وَفَصَلَ الْخِطَابِ ۲۰ وَهَلْ أَتَكَ نَبُؤُا الْخِصْمِ إِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابِ ۲۱									
और फ़ैसला कुन	खिताब	20	और क्या	आप के पास आई (पहुँची)	खबर झगड़ने वाले	जब	वह दीवार फांद कर आए	मेहराब	21
إِذْ دَخَلُوا عَلَىٰ دَاوُدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوا لَا تَخَفْ خَصْمِنُ بَغِي									
जब वह दाखिल हुए	पर-पास	दाऊद (अ)	तो वह घबराया	उन से	उन्होंने ने कहा	हम दो झगड़ने वाले	हम दो झगड़ने वाले	ज्यादती की	
بَعْضُنَا عَلَىٰ بَعْضٍ فَاحْكُم بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَا إِلَىٰ									
हम में से एक	दूसरे पर	तो आप फ़ैसला कर दें	हमारे दरमियान	हक के साथ	हक के साथ	और ज़ियादती (वेइन्साफी न) करें	और हमारी रहनुमाई करें	तरफ़	
سَوَاءِ الصِّرَاطِ ۲۲ إِنَّ هَذَا أَخِي لَهُ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ نَعَجَةً وَّلِي									
सीधा	रास्ता	22	वेशक यह	मेरा भाई	उस के पास	निचानवे (99)	दुबियां	और मेरे पास	
نَعَجَةٌ وَاحِدَةٌ فَقَالَ أَكْفَلْنِيهَا وَعَزَّنِي فِي الْخِطَابِ ۲۳ قَالَ									
दुंबी	एक	पस उस ने कहा	वह मेरे हवाले कर दे	और उस ने मुझे दबाया	गुफ़्तगू में	23	(दाऊद अ ने) कहा		
لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعَجَتِكَ إِلَىٰ نِعَاجِهِ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْخُلَطَاءِ									
यकीनन उस ने जुल्म किया	मांगने से	तेरी दुंबी	तरफ-साथ	अपनी दुबियां	और वेशक	से	भागीदार		
لِيَبْغِيَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ									
ज़ियादती किया करते हैं	उन में से वाज़	पर	वाज़	सिवाए	जो ईमान लाए	और उन्होंने ने अमल किए दुरुस्त			
وَقَلِيلٌ مَّا هُمْ وَظَنَّ دَاوُدُ أَنَّمَا فَتَتَهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهُ وَخَرَّ رَاكِعًا									
और बहुत कम	वह-ऐसे	और ख़याल किया	दाऊद (अ)	कि कुछ	हम ने उसे आज़माया है	तो उस ने मग्फ़िरत तलब की	अपना रब	और गिर गया	झुक कर
وَأَنَابَ ۲۴ فَغَفَرْنَا لَهُ ذَلِكَ وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ									
और उस ने रुजूअ किया	24	पस हम ने वदश दी	उस की	यह	और वेशक	उस के लिए	हमारे पास	अलवत्ता कुर्व	और अच्छा
مَابٍ ۲۵ يَدَاوُدُ إِنَّا جَعَلْنَاكَ خَلِيفَةً فِي الْأَرْضِ فَاحْكُم									
ठिकाना	25	ऐ दाऊद (अ)	वेशक हम ने	हम ने तुझे बनाया	नाइव	ज़मीन में	सो तू फ़ैसला कर		
بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوَىٰ فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ									
लोगों के दरमियान	हक के साथ	और न पैरवी कर	खाहिश	कि वह तुझे भटका दे	से	अल्लाह का रास्ता			
إِنَّ الَّذِينَ يَضِلُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا نَسُوا									
वेशक	जो लोग	भटकते हैं	से	अल्लाह का रास्ता	उन के लिए	अज़ाब	शदीद	उस पर कि	उन्होंने ने भुला दिया
يَوْمَ الْحِسَابِ ۲۶ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا									
रोज़े हिसाब	26	और नही पैदा किया हम ने	आस्मान	और ज़मीन	और जो	उन के दरमियान	वातिल		
ذَلِكَ ظَنُّ الَّذِينَ كَفَرُوا فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنَ النَّارِ ۲۷									
यह	गुमान	जिन लोगों ने कुफ़ किया	पस खराबी है	उन के लिए जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	से	आग			

और इकटठे किए हुए परिन्दे (भी उस के मुसख़्खर थे) सब उस की तरफ़ रुजूअ करने वाले थे। (19) और हम ने उस की वादशाहत मज़बूत की और उस को हिक्मत दी और फ़ैसला कुन खिताब। (20) और क्या आप (स) के पास झगड़ने वालों (अहले मुक़द्दमा) की खबर पहुँची? जब वह दीवार फांद कर मेहराब में आ गए। (21) जब वह दाखिल हुए दाऊद (अ) के पास तो वह उन से घबराए। उन लोगों ने कहा: डरो नहीं, हम दो झगड़ने वाले (अहले मुक़द्दमा) हैं, हम में से एक ने दूसरे पर ज़ियादती की है तो आप हमारे दरमियान फ़ैसला कर दें हक के साथ, और वेइन्साफी न करें, और सीधे रास्ते की तरफ़ हमारी रहनुमाई करें। (22) वेशक मेरे इस भाई के पास निचानवे (99) दुबियां हैं और मेरे पास (सिर्फ़) एक दुंबी है, पस उस ने कहा कि वह (भी) मेरे हवाले कर दे, और उस ने मुझे गुफ़्तगू में दबाया है। (23) दाऊद (अ) ने कहा: सचमुच उस ने तेरी दुंबी मांग कर जुल्म किया है (कि) अपनी दुंबियों के साथ मिलाए, और वेशक अक्सर साथी एक दूसरे पर ज़ियादती किया करते हैं सिवाए उन के जो ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए और (ऐसे लोग) बहुत कम हैं, और दाऊद (अ) ने ख़याल किया कि हम ने कुछ उसे आज़माया है तो उस ने अपने रब से मग्फ़िरत तलब की, और झुक कर (सिजदे में) गिर गया। (24) पस हम ने वदश दी उस की यह (लगज़िश), और वेशक उस के लिए हमारे पास कुर्व और अच्छा ठिकाना है। (25) ऐ दाऊद (अ)! वेशक हम ने तुझे बनाया ज़मीन (मुल्क) में नाइव, सो तू लोगों के दरमियान हक (इंसाफ़) के साथ फ़ैसला कर और (अपनी) ख़ाहिश की पैरवी न कर कि वह तुझे भटका दे अल्लाह के रास्ते से, वेशक जो लोग अल्लाह के रास्ते से भटकते हैं उन के लिए शदीद अज़ाब है इस लिए कि उन्होंने ने रोज़े हिसाब को भुला दिया। (26) और हम ने आस्मान और ज़मीन और जो उन के दरमियान है वातिल (बेकार ख़ाली अज़ हिक्मत) नहीं पैदा किया, यह गुमान है (उन लोगों का) जिन्होंने ने कुफ़ किया, पस खराबी है काफ़िरों के लिए आग से। (27)

क्या हम कर देंगे? उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए उन लोगों की तरह जो ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं? क्या हम परहेज़गारों को कर देंगे फ़ाजिरों (बदकिरदारों) की तरह? (28)

हम ने आप की तरफ़ एक मुबारक किताब नाज़िल की ताकि वह उस की आयात पर ग़ौर करें, और ताकि अक़ल वाले नसीहत पकड़ें। (29)

और हम ने दाऊद (अ) को सुलेमान (अ) अता किया, बहुत अच्छा बन्दा, वेशक वह (अल्लाह की तरफ़)

रुजूअ करने वाला था। (30)

(वह वक़्त याद करो) जब शाम के वक़्त उस के सामने पेश किए गए

असील, उम्दा घोड़े। (31)

तो उस ने कहा: वेशक मैं ने अपने रब की याद की वजह से माल की मुहब्बत को दोस्त रखा, यहां तक कि (घोड़े)

छुप गए (दूरी के) परदे में। (32)

उन (घोड़ों) को मेरे सामने फेर लाओ, फिर वह उन की पिंडलियों और गर्दनों पर हाथ फेरने लगा। (33)

और अलबत्ता हम ने सुलेमान (अ) की आजमाइश की और हम ने उस के तख़्त पर एक धड़ डाला, फिर उस ने (अल्लाह की तरफ़) रुजूअ किया। (34)

उस ने कहा ऐ मेरे रब! तू मुझे बख़्श दे और मुझे ऐसी सलतनत अता फ़रमा दे जो मेरे बाद किसी को सज़ावार (मयस्सर) न हो, वेशक तू ही अता करने वाला है। (35)

फिर हम ने मुसख़्ख़र कर दिया उस के लिए हवा को, जहां वह पहुँचना चाहता, वह उस के हुक़म से नर्म नर्म चलती। (36)

और तमाम जिन्नात (तावे कर दिए) इमारत बनाने वाले और गोता मारने वाले। (37)

और दूसरे ज़नजीरों में जकड़े हुए। (38)

यह हमारा अतिया है, अब तू एहसान कर या रख छोड़ हिसाब के बग़ैर (तुम से कुछ हिसाब न होगा)। (39)

और वेशक उस के लिए हमारे पास अलबत्ता कुर्व और अच्छा ठिकाना है। (40)

और आप (स) याद करें हमारे बन्दे अय्यूब (अ) को जब उस ने अपने रब को पुकारा कि मुझे शैतान ने ईज़ा और दुख पहुँचाया है। (41)

(हम ने फ़रमाया) ज़मीन पर मार अपना पाऊँ, यह (लो) गुस्ल के लिए ठंडा और पीने के लिए (शीरी पानी)। (42)

और हम ने उस के अहले ख़ाना और उन के साथ उन जैसे (और भी) अता किए (यह) हमारी तरफ़ से रहमत और अक़ल वालों के लिए नसीहत। (43)

<p>أَمْ نَجْعَلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَالْمُفْسِدِينَ فِي الْأَرْضِ</p>									
ज़मीन में	उन की तरह जो फ़साद फैलाते हैं	अच्छे	और उन्होंने ने अमल किए	जो लोग ईमान लाए	क्या हम कर देंगे				
<p>أَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِينَ كَالْفُجَّارِ (28) كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ مُبَارَكٌ</p>									
मुबारक	आप (स) की तरफ़	हम ने उसे नाज़िल किया	एक किताब	28	बदकिरदारों की तरह	परहेज़गारों	हम कर देंगे	क्या	
<p>لِيَذَّبُرُوا أَيَّتِهِ وَلِيَتَذَكَّرَ أُولُوا الْأَلْبَابِ (29) وَوَهَبْنَا لِدَاوُدَ سُلَيْمَانَ</p>									
सुलेमान (अ)	दाऊद (अ) को	और हम ने अता किया	29	अक़ल वाले	और ताकि नसीहत पकड़ें	उस की आयात	ताकि वह ग़ौर करें		
<p>نِعْمَ الْعَبْدُ إِنَّهُ أَوَّابٌ (30) إِذْ عَرَضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصُّفِينُ</p>									
असील घोड़े	शाम के वक़्त	उस पर-सामने	पेश किए गए	जब	30	रुजूअ करने वाला	वेशक वह	बहुत अच्छा बन्दा	
<p>الْحِيَادُ (31) فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّي حَتَّى</p>									
यहां तक कि	अपने रब की याद	से	माल की मुहब्बत	मैं ने दोस्त रखा	वेशक मैं	तो उस ने कहा	31	उम्दा	
<p>تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ (32) رُدُّوَهَا عَلَيَّ فَطَفِقَ مَسْحًا بِالسُّوقِ</p>									
पिंडलियों पर	हाथ फेरना	फिर शुरु किया	मेरे सामने	फेर लाओ उन्हें	32	पर्दे में	छुप गए		
<p>وَالْأَعْنَاقِ (33) وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَانَ وَأَلْقَيْنَا عَلَى كُرْسِيِّهِ جَسَدًا</p>									
एक धड़	उस के तख़्त पर	और हम ने डाला	सुलेमान	और अलबत्ता हम ने आजमाइश की	33	और गर्दनों			
<p>ثُمَّ أَنَابَ (34) قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مَلَكًا لَا يَبْغِي لِأَحَدٍ</p>									
किसी को	न सज़ा वार हो	ऐसी सलतनत	और अता फ़रमा दे मुझे	मुझे बख़्शदे तू	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	34	फिर उस ने रुजूअ किया	
<p>مِّنْ بَعْدِي إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ (35) فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيحَ تَجْرِي بِأَمْرِهِ</p>									
उस के हुक़म से	वह चलती थी	हवा	फिर हम ने मुसख़्ख़र कर दिया उस के लिए	35	अता फ़रमाने वाला	तू	वेशक तू	मेरे बाद	
<p>رُحَاءَ حَيْثُ أَصَابَ (36) وَالشَّيْطِينَ كُلَّ بِنَاءٍ وَعَوَاصٍ (37) وَآخِرِينَ</p>									
और दूसरे	37	और गोता मारने वाले	इमारत बनाने वाले	तमाम	और देव (जिन्नात)	36	वह पहुँचना चाहता	जहां	नर्मी से
<p>مُقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ (38) هَذَا عَطَاؤُنَا فَامْنُنْ أَوْ أَمْسِكْ بِغَيْرِ</p>									
बग़ैर	रोक रख	या	अब तू एहसान कर	हमारा अतिया	यह	38	ज़नजीरों में	जकड़े हुए	
<p>حِسَابٍ (39) وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَّآبٍ (40) وَادْكُرْ عَبْدَنَا</p>									
हमारा बन्दा	और आप (स) याद करें	40	ठिकाना	और अच्छा	अलबत्ता कुर्व	हमारे पास	और वेशक उस के लिए	39	हिसाब
<p>أَيُّوبُ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الشَّيْطَانُ بِنُصْبٍ وَعَذَابٍ (41)</p>									
41	और दुख	ईज़ा	शैतान	मुझे पहुँचाया	वेशक मैं	अपना रब	जब उस ने पुकारा	अय्यूब (अ)	
<p>أَرْكُضْ بِرَجْلِكَ هَذَا مِغْتَسَلٌ بَارِدٌ وَشَرَابٌ (42) وَوَهَبْنَا لَهُ</p>									
उस को	और हम ने अता किया	42	और पीने के लिए	ठंडा	गुस्ल के लिए	यह	अपना पाऊँ	(ज़मीन पर) मार	
<p>أَهْلَهُ وَمِثْلَهُم مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِنَّا وَذِكْرَىٰ لِأُولَى الْأَلْبَابِ (43)</p>									
43	अक़ल वालों के लिए	और नसीहत	हमारी (तरफ़) से	रहमत	उन के साथ	और उन जैसे	उस के अहले ख़ाना		

٢  
١٢

٥  
١٢

وَأُخَذَ بِيَدِكَ ضِعْفًا فَاصْرَبْ بِهِ وَلَا تَحْنُتْ إِنَّا وَجَدْنَاهُ صَابِرًا ۗ								
साविर	हम ने उसे पाया	वेशक हम	और कसम न तोड़	और उस से मार उस को	झाड़ू	अपने हाथ में	और तू ले	
نِعْمَ الْعَبْدُ إِنَّهُ أَوَّابٌ ﴿٤٤﴾ وَأَذْكَرُ عَبْدَنَا إِبْرَاهِيمَ وَأَسْحَقَ وَيَعْقُوبَ								
और याकूब (अ)	और इसहाक (अ)	इब्राहीम (अ)	हमारे बन्दों	और याद करें	44	वेशक वह (अल्लाह की तरफ) रूजूअ करने वाला	अच्छा बन्दा	
أُولَى الْأَيْدِي وَالْأَبْصَارِ ﴿٤٥﴾ إِنَّا أَخْلَصْنَهُمْ بِخَالِصَةِ ذِكْرَى الْوَدَّارِ ﴿٤٦﴾								
46	घर (आखिरत का)	याद	खास सिफत	हम ने उन्हें मुमताज़ किया	वेशक हम	45	और आँखों वाले हाथों वाले	
وَأَنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنِ الْأَخْيَارِ ﴿٤٧﴾ وَأَذْكَرُ إِسْمَاعِيلَ								
इस्माईल (अ)	और याद करें	47	सब से अच्छे	चुने हुए	अलबत्ता - से	हमारे नज़दीक	और वेशक वह	
وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ وَكُلٌّ مِّنَ الْأَخْيَارِ ﴿٤٨﴾ هَذَا ذِكْرٌ وَإِنَّ								
और वेशक	यह एक नसीहत	48	सब से अच्छे लोग	से	और यह तमाम	और जुलक़िफ़ल (अ)	और अलयसज़ (अ)	
لِلْمُتَّقِينَ لِحَسَنِ مَّابٍ ﴿٤٩﴾ جَنَّتِ عَدْنٌ مَّفْتَحَةً لَهُمُ الْأَبْوَابِ ﴿٥٠﴾								
50	दरवाज़े	उन के लिए	खुले हुए	हमेशा रहने के	वागात	49	ठिकाना अलबत्ता अच्छा परहेज़गारों के लिए	
مُتَّكِينَ فِيهَا يَدْعُونَ فِيهَا بِفَاكِهِةٍ كَثِيرَةٍ وَشَرَابٍ ﴿٥١﴾								
51	और शराब (मशरूबात)	बहुत से	मेवे	उन में	मंगवाएंगे	उन में	तकिया लगाए हुए वह	
وَعِنْدَهُمْ قُصِرَتُ الظَّرْفِ اَتْرَابِ ﴿٥٢﴾ هَذَا مَا تُوعَدُونَ								
वादा किया जाता है तुम से	जो - जिस	यह	52	हम उम्र	निगाह	नीचे रखने वालीयां	और उन के पास	
لِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٥٣﴾ إِنَّ هَذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهُ مِنْ نَفَادٍ ﴿٥٤﴾ هَذَا وَإِنَّ								
और वेशक	यह	54	ख़तम होना	उसके लिए - उस को नहीं	यकीनन हमारा रिज़ूक	यह वेशक	53	रोज़े हिसाब के लिए
لِلطَّغِينِ لَشَرِّ مَّابٍ ﴿٥٥﴾ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٥٦﴾ هَذَا								
यह	56	विछोना	सो बुरा	वह उस में दाखिल होंगे	जहन्नम	55	ठिकाना अलबत्ता बुरा सरकशों के लिए	
فَلْيَذُوقُوهُ حَمِيمٌ وَغَسَّاقٌ ﴿٥٧﴾ وَأَخْرَجْنَا مِنْ شَكْلَةٍ أَزْوَاجٍ ﴿٥٨﴾ هَذَا								
यह	58	कई किसमें	उस की शकल की	और उस के अलावा	57	और पीप	खौलता हुआ पानी पस उस को चखो तुम	
فَوَجَّ مُفْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۚ لَا مَرْحَبًا بِهِمْ ۚ إِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ ﴿٥٩﴾ قَالُوا								
वह कहेंगे	59	दाखिल होने वाले जहन्नम में	वेशक वह	उन्हें	न हो कोई फराखी	तुम्हारे साथ	घुस रहे हैं एक जमाअत	
بَلْ أَنْتُمْ ۚ لَا مَرْحَبًا بِكُمْ ۚ أَنْتُمْ قَدَّمْتُمُوهُ لَنَا ۚ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٦٠﴾								
60	ठिकाना	सो बुरा	हमारे लिए	तुम ही यह आगे लाए	वेशक तुम	तुम्हें	कोई मरहवा न हो बल्कि तुम	
قَالُوا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هَذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِي النَّارِ ﴿٦١﴾								
61	जहन्नम में	दो चंद	अज़ाव	तू ज़ियादा कर दे	यह	हमारे लिए	जो आगे लाया ऐ हमारे रब वह कहेंगे	
وَقَالُوا مَا لَنَا لَا نَرَى رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ الْأَشْرَارِ ﴿٦٢﴾								
62	अशरार (बहुत बुरे)	से	हम शुमार करते थे उन्हें	वह लोग	हम नहीं देखते	क्या हुआ हमें	और वह कहेंगे	

और अपने हाथ में झाड़ू ले और तू उस से (अपनी बीबी को) मार, और कसम न तोड़, वेशक हम ने उसे साविर पाया (और) अच्छा बन्दा, वेशक अल्लाह की तरफ रूजूअ करने वाला। (44)

और आप (स) हमारे बन्दों इब्राहीम (अ) और इसहाक (अ) और याकूब (अ) को याद करें जो हाथों वाले और आँखों वाले (इल्म ओ अक़ल की कुव्वतों वाले) थे। (45)

हम ने उन्हें एक खास सिफत से मुमताज़ किया (और वह है) याद आखिरत के घर की। (46)

और वेशक वह हमारे नज़दीक चुने हुए सब से अच्छे लोगों में से थे। (47)

और आप (स) याद करें इस्माईल (अ) और अलयसज़ (अ) और जुलक़िफ़ल (अ) को, और यह तमाम ही सब से अच्छे लोगों में से थे। (48)

यह एक नसीहत है, और परहेज़गारों के लिए अलबत्ता अच्छा ठिकाना है। (49)

हमेशा रहने के वागात, जिन के दरवाज़े उन के लिए खुले होंगे। (50)

उन में तकिया लगाए हुए होंगे, और उन में मंगवाएंगे मेवे बहुत से और मशरूबात। (51)

और उन के पास नीची निगाह रखने वाली (वा हया) हम उम्र (औरतें) होंगी। (52)

यह है जिस का तुम से वादा किया जाता है रोज़े हिसाब के लिए। (53)

वेशक यह हमारा रिज़ूक है, उस को (कभी) ख़तम होना नहीं। (54)

यह है (जज़ा।) और वेशक सरकशों के लिए अलबत्ता बुरा ठिकाना है। (55)

(यानी) जहन्नम, जिस में वह दाखिल होंगे, सो बुरा है फ़र्श (उन की आरामगाह)। (56)

यह खौलता हुआ पानी और पीप है, पस तुम उस को चखो। (57)

और उस के अलावा उस की शकल की कई किसमें होंगी। (58)

यह एक जमाअत है जो तुम्हारे साथ (जहन्नम में) दाखिल हो रही है, उन्हें कोई फराखी न हो, वेशक वह जहन्नम में दाखिल होने वाले हैं। (59)

वह कहेंगे: बल्कि तुम्हें कोई फराखी न हो, वेशक तुम ही हमारे लिए यह (मुसीबत) आगे लाए हो, सो बुरा है ठिकाना। (60)

वह कहेंगे, ऐ हमारे रब! जो हमारे लिए यह (मुसीबत) आगे लाया है तू जहन्नम में (उस के लिए) अज़ाव दो चन्द कर दे। (61)

और वह कहेंगे हमें क्या हुआ? हम (दोज़ख में) उन लोगों को नहीं देखते जिन्हें हम बुरे लोगों में शुमार करते थे। (62)

क्या हम ने उन्हें ठठे में पकड़ा था? या कज हो गई है उन से (हमारी) आँखें? (63) बेशक अहले दोज़ख़ का वाहम यह झगड़ना विलकुल सच है। (64) आप (स) फ़रमा दें: इस के सिवा नहीं कि मैं डराने वाला हूँ और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह यकता ज़बरदस्त है। (65) परवरदिगार है आस्मानों का और ज़मीन का और जो उन दोनों के दरमियान है, ग़ालिब, बड़ा बख़शने वाला। (66) आप फ़रमा दें यह एक बड़ी ख़बर है। (67) तुम उस से बेपरवाह हो। (68) मुझे कुछ ख़बर न थी आलमे वाला (बुलन्द कद्र फ़रिश्तों) की जब वह वाहम झगड़ते थे। (69) मेरी तरफ़ इस के सिवा वहि नहीं की जाती कि मैं साफ़ साफ़ डराने वाला हूँ। (70) (याद करो) जब तुम्हारे रब ने कहा फ़रिश्तों को कि मैं मिट्टी से एक वशर पैदा करने वाला हूँ। (71) फिर जब मैं उसे दुरुस्त कर दूँ और उस में अपनी रूह से फूँक दूँ तो तुम गिर पड़ो उस के आगे सिज्दा करते हुए। (72) पस सब फ़रिश्तों ने इकट्ठे सिज्दा किया। (73) सिवाए इब्लीस के, उस ने तकबुर किया और वह हो गया काफ़िरों में से। (74) (अल्लाह ने) फ़रमाया ऐ इब्लीस! उस को सिज्दा करने से तुझे किस ने मना किया (रोका) जिसे मैं ने अपने हाथों से पैदा किया? क्या तू ने तकबुर किया (अपने को बड़ा समझा) या तू बुलन्द दरजे वालों में से है? (75) उस ने कहा: मैं उस से बेहतर हूँ, तू ने मुझे आग से पैदा किया और उसे पैदा किया मिट्टी से। (76) (अल्लाह तआला ने) फ़रमाया: पस यहाँ से निकल जा क्योंकि तू रांदा-ए-दरगाह है। (77) और बेशक तुझ पर मेरी लानत रहेगी रोज़े कियामत तक। (78) उस ने कहा ऐ मेरे रब! मुझे उस दिन तक मोहलत दे जिस दिन (मुर्दे) उठाए जाएंगे। (79) (अल्लाह ने) फ़रमाया: पस तू मोहलत दिए जाने वालों में से है। (80) उस दिन तक जिस का वक़्त मुझे मालूम है। (81) उस ने कहा मुझे तेरी इज़ज़त की कसम! मैं उन सब को ज़रूर गुमराह करूँगा। (82)

اتَّخَذْنَهُمْ سِحْرِيًّا أَمْ زَاغَتْ عَنْهُمْ الْأَبْصَارُ (٦٣) إِنَّ ذَلِكَ لَحَقٌّ									
विलकुल सच	बेशक यह	63	आँखें	उन से	कज हो गई है	या	ठठे में	क्या हम ने उन्हें पकड़ा था	
تَخَاصُمُ أَهْلِ النَّارِ (٦٤) قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُنذِرٌ وَمَا مِنْ إِلَهٍ إِلَّا اللَّهُ									
अल्लाह के सिवा	कोई माबूद	और नहीं	डराने वाला	कि मैं	इस के सिवा नहीं	फ़रमा दें	64	अहले दोज़ख़	वाहम झगड़ना
الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ (٦٥) رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ									
ग़ालिब	उन दोनों के दरमियान	और जो	और ज़मीन	आस्मानों	रब	65	ज़बरदस्त	वाहद (यकता)	
الْغَفَّارُ (٦٦) قُلْ هُوَ نَبَأٌ عَظِيمٌ (٦٧) أَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ (٦٨)									
68	सुँह फेरने वाले (बेपरवाह हो)	उस से	तुम	67	एक ख़बर बड़ी	वह-यह	फ़रमा दें	66	बड़ा बख़शने वाला
مَا كَانَ لِي مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَأِ الْأَعْلَىٰ إِذْ يَخْتَصِمُونَ (٦٩) إِنْ يُؤْحَىٰ									
नहीं वहि की जाती	69	वह वाहम झगड़ते थे	जब	आलमे वाला की	कुछ ख़बर	मेरे पास (मुझे)	न था		
إِلَيَّ إِلَّا أَنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ (٧٠) إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلِكَةِ إِنِّي									
कि मैं	फ़रिश्तों को	तुम्हारा रब	जब कहा	70	साफ़ साफ़	मैं डराने वाला	यह कि	सिवाए	मेरी तरफ़
خَالِقٌ بَشَرًا مِّن طِينٍ (٧١) فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُّوحِي									
अपनी रूह	से	उस में	और मैं फूँकूँ	मैं दुरुस्त कर दूँ उसे	फिर जब	71	मिट्टी से	एक वशर	पैदा करने वाला
فَفَعَّلُوا لَهٗ سَجِدِينَ (٧٢) فَسَجَدَ الْمَلَكَةُ كُلُّهُمْ أٰجْمَعُونَ إِلَّا									
सिवाए	73	इकट्ठे	सब	फ़रिश्ते	पस सिज्दा किया	72	सिज्दा करते हुए	उस के लिए (आगे)	तो तुम गिर पड़ो
إِبْلِيسَ اسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِينَ (٧٤) قَالَ يَا بٰلِيسَ مَا مَنَعَكَ									
किस ने मना किया तुझे	ऐ इब्लीस	उस ने फ़रमाया	74	काफ़िरों	से	और वह हो गया	उस ने तकबुर किया	इब्लीस	
أَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِإِيْدِي اسْتَكْبَرْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ									
से	या तू है	क्या तू ने तकबुर किया	अपने हाथों से	मैं ने पैदा किया	उस को जिसे	कि तू सिज्दा करे			
الْعٰلِينَ (٧٥) قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِي مِنْ نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ									
और तू ने पैदा किया उसे	आग से	तू ने पैदा किया मुझे	उस से	बेहतर	मैं	उस ने कहा	75	बुलन्द दरजे वाले	
مِّن طِينٍ (٧٦) قَالَ فَآخْرِجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَٰجِمٌ وَإِنَّ عَلَيْكَ									
तुझ पर	और बेशक	77	रांदा-ए-दरगाह	क्योंकि तू	यहाँ से	पस निकल जा	उस ने फ़रमाया	76	मिट्टी से
لَعْنَتِي إِلَى يَوْمِ الدِّينِ (٧٨) قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَى									
तक	पस तू मुझे मोहलत दे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	78	रोज़े कियामत	तक	मेरी लानत		
يَوْمٍ يُبْعَثُونَ (٧٩) قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ (٨٠) إِلَى يَوْمِ									
दिन	तक	80	मोहलत दिए जाने वाले	से	पस बेशक तू	उस ने फ़रमाया	79	जिस दिन उठाए जाएंगे	
الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ (٨١) قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ (٨٢)									
82	सब	मैं ज़रूर उन्हें गुमराह करूँगा	सो तेरी इज़ज़त की कसम	उस ने कहा	81	वक़्त मुझय्यन			

۲۳

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمْ الْمُخْلِصِينَ (83) قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقُّ أَقُولُ (84)							
84	मैं कहता हूँ	और सच	यह हक (सच)	उस ने फरमाया	83	मुख़लिस (जमा)	उन में से सिवाए तेरे बन्दे
لَأَمَلَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمَمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ (85) قُلْ							
फरमा दें	85	सब	उन से	तेरे पीछे चलें	और उन से जो	तुझ से	जहन्नम मैं ज़रूर भर दूँगा
مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ (86) إِنَّ							
नहीं	86	बनावट करने वालों से	मैं	और नहीं	कोई अजर	इस पर	मैं मांगता तुम से नहीं
هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ (87) وَلِتَعْلَمَنَّ نَبَاهُ بَعْدَ حِينٍ (88)							
88	एक वक़्त	बाद	उस का हाल	और तुम ज़रूर जान लोगे	87	तमाम जहानों के लिए	नसीहत यह मगर
آيَاتُهَا ٧٥ ﴿ ٣٩ ﴾ سُورَةُ الزُّمَرِ ﴿ ٨ ﴾ زُكُوعَاتُهَا ٨							
8 रक़ूआत				(39) सूरतुज़ जुमर टोलियों, गिरोह		आयात 75	
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ (1) إِنَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ							
तुम्हारी तरफ़	वेशक हम ने नाज़िल की	1	हिक्मत वाला	ग़ालिब	अल्लाह की तरफ़ से	यह किताब	नाज़िल किया जाना
الْكِتَابِ بِالْحَقِّ فَأَعْبُدِ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ (2) أَلَا لِلَّهِ الدِّينُ							
अल्लाह के लिए	याद रखो	2	दीन	उसी के लिए	ख़ालिस कर के	पस अल्लाह की इबादत करो	हक के साथ यह किताब
الْخَالِصُ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ مَا نَعْبُدُهُمْ							
नहीं इबादत करते हम उन की	दोस्त	उस के सिवा	बनाते हैं	और जो लोग	ख़ालिस		
إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَىٰ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِي مَا هُمْ فِيهِ							
उस में	वह	जिस में	उन के दरमियान	फ़ैसला कर देगा	वेशक अल्लाह	कुर्व का दर्जा	अल्लाह का मगर इस लिए कि वह मुक़र्रब बना दें हमें
يَخْتَلِفُونَ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ كَذِبٌ كَفَّارٌ (3) لَوْ أَرَادَ اللَّهُ							
चाहता अल्लाह	अगर	3	नाशुक्रा	झूटा	जो हो	हिदायत नहीं देता	वेशक अल्लाह वह इख़तिलाफ़ करते हैं
أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا لَأَصْطَفَىٰ مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ لَسُبْحَنَهُ							
वह पाक है	जिसे वह चाहता	वह पैदा करता है (मख़लूक)	उस से जो	अलबत्ता वह चुन लेता	औलाद	कि बनाए	
هُوَ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ (4) خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ بِالْحَقِّ							
हक (दुरुस्त तदवीर के) साथ	और ज़मीन	आस्मानों	उस ने पैदा किया	4	ज़बरदस्त	वाहद (यकता)	वही अल्लाह
يُكَوِّرُ اللَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ							
सूरज	और उस ने मुसख़्खर किया	रात पर	और दिन को लपेटता है	दिन पर	रात	वह लपेटता है	
وَالْقَمَرَ كُلًّا يَجْرِئُ لِاجْلِ مُسَمًّى (5) أَلَا هُوَ الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ							
5	बख़शने वाला	वह ग़ालिब	याद रखो	मुक़र्ररा	एक मुद्दत	हर एक चलता है	और चाँद

उन में से तेरे मुख़लिस (खास) बन्दों के सिवा। (83)

(अल्लाह ने) फरमाया: यह सच है और मैं सच ही कहता हूँ। (84)

मैं ज़रूर जहन्नम भर दूँगा तुझ से और उन सब से जो तेरे पीछे चलें। (85)

आप (स) फरमा दें: मैं तुम से इस (तबलीग़े कुरआन) पर कोई अजर नहीं मांगता, और नहीं हूँ मैं बनावट करने वालों में से। (86)

यह (कुरआन) नहीं है मगर तमाम जहानों के लिए नसीहत। (87)

और उस का हाल तुम एक वक़्त के बाद (जल्द ही) ज़रूर जान लोगे। (88)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है इस किताब का नाज़िल किया जाना अल्लाह ग़लिब, हिक्मत वाले की तरफ़ से है। (1)

वेशक हम ने तुम्हारी तरफ़ यह किताब हक के साथ नाज़िल की है, पस तुम अल्लाह की इबादत करो दीन उसी के लिए ख़ालिस कर के। (2)

याद रखो! दीन ख़ालिस अल्लाह ही के लिए है, और जो लोग उस के सिवा दोस्त बनाते हैं (वह कहते हैं) हम सिर्फ़ इस लिए उन की इबादत करते हैं कि वह कुर्व के दरजे में हमें अल्लाह का मुक़र्रब बना दें, वेशक अल्लाह उन के दरमियान उस (अमर) में फ़ैसला फरमा देगा जिस में वह इख़तिलाफ़ करते हैं, वेशक अल्लाह किसी झूटे, नाशुक्रे को हिदायत नहीं देता। (3)

अगर अल्लाह चाहता कि बनाले (किसी को अपनी) औलाद तो वह अपनी मख़लूक में से जिस को चाहता चुन लेता, वह पाक है, वही है अल्लाह यकता, ज़बरदस्त। (4)

उस ने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को दुरुस्त तदवीर के साथ, वह रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है और उस ने मुसख़्खर किया सूरज और चाँद को, हर एक, एक मुद्दते मुक़र्ररा तक चलता है, याद रखो, वह ग़ालिब, बख़शने वाला है। (5)

उस ने तुम्हें नफ़से वाहिद (आदम) से पैदा किया, फिर उस ने उस से उस का जोड़ा बनाया, और तुम्हारे लिए चौपायों में से आठ जोड़े भेजे, वह तुम्हें पैदा करता है तुम्हारी माँओं के पेटों में, तीन तारीकियों के अन्दर एक कैफ़ियत के बाद दूसरी कैफ़ियत में, यह है तुम्हारा अल्लाह, तुम्हारा परवरदिगार, उसी के लिए है वादशाहत, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, तुम कहां फिरे जाते हो? (6) अगर तुम नाशुक्री करोगे तो वेशक अल्लाह तुम से बेनियाज़ है, और वह पसंद नहीं करता अपने बन्दों के लिए नाशुक्री, और अगर तुम शुक्र करोगे तो वह तुम्हारे लिए उसे पसंद करता है, और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाता, फिर तुम्हें अपने रब की तरफ लौटना है, फिर वह तुम्हें जतला देगा जो तुम करते थे। वेशक वह दिलों की पोशीदा बातों को (भी) जानने वाला है। (7) और जब इन्सान को कोई सख्ती पहुँचे तो वह अपने रब की तरफ रुजूअ कर के उसे पुकारता है, फिर जब वह उसे अपनी तरफ से नेमत दे तो वह भूल जाता है जिस के लिए वह उस से क़व्ल (अल्लाह को) पुकारता था, और वह अल्लाह के लिए शरीक बनालेता है ताकि उस के रास्ते से गुमराह करे, आप (स) फ़रमा दें: तू फ़ाइदा उठाले अपने कुफ़ से थोड़ा, वेशक तू दोज़ख वालों में से है। (8) (क्या यह नाशुक्का बेहतर है) या वह? जो रात की घड़ियों में इबादत करने वाला सिज़्दा करने वाला हो कर और क़्याम करने वाला, (और) वह आख़िरत से डरता है और अपने रब की रहमत से उम्मीद रखता है। आप (स) फ़रमा दें: क्या बराबर है वह जो इल्म रखते हैं और वह जो इल्म नहीं रखते? इस के सिवा नहीं कि अक़ल वाले ही नसीहत कुबूल करते हैं। (9) आप (स) फ़रमा दें, ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए हो! तुम अपने रब से डरो, जिन लोगों ने इस दुनिया में अच्छे काम किए उन के लिए भलाई है, और अल्लाह की ज़मीन वसीअ है, इस के सिवा नहीं कि सब्र करने वालों को उन का अजर बेहिसाव पूरा पूरा दिया जाएगा। (10)

خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَأَنْزَلَ لَكُمْ							
तुम्हारे लिए	और उस ने भेजे	उस का जोड़ा	उस से	फिर उस ने बनाया	नफ़से वाहिद	से	उस ने पैदा किया तुम्हें
مِّنَ الْأَنْعَامِ ثَمَنِيَةَ أَزْوَاجٍ يَخْلُقْكُمْ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ خَلْقًا							
एक कैफ़ियत	तुम्हारी माएं	पेटों में	वह पैदा करता है तुम्हें	जोड़े	आठ (8)	चौपायों से	
مِّنْ بَعْدِ خَلْقٍ فِي ظُلْمَتٍ ثَلَاثٍ ذِكْرُكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ لَا إِلَهَ							
नहीं कोई माबूद	वादशाहत	उस के लिए	तुम्हारा परवरदिगार	यह तुम्हारा अल्लाह	तीन (3)	तारीकियों में	दूसरी कैफ़ियत के बाद
إِلَّا هُوَ فَآتَىٰ تُصْرُقُونَ ﴿٦﴾ إِنَّ تَكْفُرًا فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنكُمْ							
तुम से	बेनियाज़	तो वेशक अल्लाह	अगर तुम नाशुक्री करोगे	6	तुम फिरे जाते हो	तो कहां	उस के सिवा
وَلَا يَرْضَىٰ لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ وَإِنْ تَشْكُرُوا يَرْضَهُ لَكُمْ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ							
कोई बोझ उठाने वाला बोझ	और नहीं उठाता	वह उसे पसंद करता है तुम्हारे लिए	तुम शुक्र करोगे	और अगर	नाशुक्री	अपने बन्दों के लिए	और वह पसंद नहीं करता
أُخْرَىٰ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ مَرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ إِنَّهُ							
वेशक वह	तुम करते थे	वह जो	फिर वह जतला देगा तुम्हें	लौटना है तुम्हें	अपना रब	तरफ	फिर दूसरे का
عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٧﴾ وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهُ							
वह पुकारता है अपना रब	कोई सख्ती	इन्सान	लगे-पहुँचे	और जब	7	सीनों (दिलों) की पोशीदा बातें	जानने वाला
مُنِيبًا إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا حَوَّلَهُ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوًا إِلَيْهِ							
उस की तरफ-लिए	वह पुकारता था	जो	वह भूल जाता है	अपनी तरफ से	नेमत	वह उसे दे	फिर जब उस की तरफ रुजूअ कर के
مِّنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ أَنْدَادًا لِّيُضِلَّ عَن سَبِيلِهِ قُلْ تَمَتَّعْ							
फ़ाइदा उठा ले	फ़रमा दें	उस के रास्ते से	ताकि गुमराह करे	शरीक (जमा)	और वह बना लेता है अल्लाह के लिए	उस से क़व्ल	
بِكُفْرِكَ قَلِيلًا إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ﴿٨﴾ أَمَّنْ هُوَ قَانِثٌ							
इबादत करने वाला	वह	या जो	8	आग (दोज़ख) वाले	से	वेशक तू	थोड़ा अपने कुफ़ से
إِنَاءَ اللَّيْلِ سَاجِدًا وَقَائِمًا يَحْذَرُ الْأَخْرَةَ وَيَرْجُوا رَحْمَةَ رَبِّهِ							
अपना रब	रहमत	और उम्मीद रखता है	आख़िरत	वह डरता है	और क़्याम करने वाला	सिज़्दा करने वाला	घड़ियों में रात की
قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ إِنَّمَا							
इस के सिवा नहीं	जो इल्म नहीं रखते	और वह लोग	वह इल्म रखते हैं	वह लोग जो	बराबर है	क्या	फ़रमा दें
يَتَذَكَّرُ أُولُوا الْأَلْبَابِ ﴿٩﴾ قُلْ يُعْبَادِ الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا							
तुम डरो	ईमान लाए	जो	ऐ मेरे बन्दो	फ़रमा दें	9	अक़ल वाले	नसीहत कुबूल करते हैं
رَبِّكُمْ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَأَرْضُ اللَّهِ							
और अल्लाह की ज़मीन	भलाई	इस दुनिया	में	अच्छे काम किए	उन के लिए जिन्होंने	अपना रब	
وَاسِعَةٌ إِنَّمَا يُوَفَّى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿١٠﴾							
10	बेहिसाव	उन का अजर	सब्र करने वाले	पूरा बदला दिया जाएगा	इस के सिवा नहीं	वसीअ	

قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ (۱۱) وَأُمِرْتُ لِأَنْ									
उस का	और मुझे हुकम दिया गया	11	दीन	उसी के लिए	ख़ालिस कर के	मैं अल्लाह की इबादत करूँ	कि	वेशक मुझे हुकम दिया गया	फरमा दें
أَكُونَ أَوَّلَ الْمُسْلِمِينَ (۱۲) قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ									
अज्ञाव	अपना रव	मैं नाफरमानी करूँ	अगर	वेशक मैं डरता हूँ	फरमा दें	12	फरमावरदार-मुसलिम (जमा)	पहला	कि मैं हूँ
يَوْمٍ عَظِيمٍ (۱۳) قُلْ اللَّهُ أَعْبُدُ مُخْلِصًا لَهُ دِينِي (۱۴) فَاعْبُدُوا									
परसतिश करो	14	अपना दीन	उसी के लिए	ख़ालिस कर के	मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ	फरमा दें	13	एक बड़ा दिन	
مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُونِهِ قُلْ إِنَّ الْخَاسِرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ									
अपने आप को	घाटे में डाला	वह जिन्होंने	ने	घाटा पाने वाले	वेशक	फरमा दें	उस के सिवाए	जिस की तुम चाहो	
وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَلَا ذَلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ (۱۵) لَهُمْ									
उन के लिए	15	सरीह	घाटा	वह	यह	खूब याद रखो	रोज़े क़ियामत	और अपने घर वाले	
مِّنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِن تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ذَلِكَ يُخَوِّفُ اللَّهَ بِهِ									
उस से	डराता है अल्लाह	यह	सायबान (चादरें)	और उन के नीचे से	आग के	सायबान	उन के ऊपर से		
عِبَادَهُ يُعْبَدُونَ فَاتَّقُونَ (۱۶) وَالَّذِينَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوتَ أَنْ									
कि	सरकश (शैतान)	बचते रहे	और जो लोग	16	पस मुझ से डरो	ऐ मेरे बन्दो	अपने बन्दो		
يَعْبُدُوهَا وَأَنَابُوا إِلَى اللَّهِ لَهُمُ الْبُشْرَى فَبَشِّرْ عِبَادَ (۱۷) الَّذِينَ									
वह जो	17	मेरे बन्दों	सो खुशख़बरी दें	खुशख़बरी	उन के लिए	अल्लाह की तरफ	और उन्होंने ने रुजूअ किया	उस की परसतिश करें	
يَسْتَمِعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ أُولَئِكَ الَّذِينَ هَدَاهُمُ اللَّهُ									
उन्हें हिदायत दी अल्लाह ने	वह जिन्हें	वही लोग	उस की अच्छी बातें	फिर पैरवी करते हैं	बात	सुनते हैं			
وَأُولَئِكَ هُمُ أَوْلُوا الْأَلْبَابِ (۱۸) أَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ									
अज्ञाव	हुकम-वईद	उस पर	साबित हो गया	क्या तो-जो-जिस	18	अक़ल वाले	वह	और यही लोग	
أَفَأَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِي النَّارِ (۱۹) لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ									
वाला खाने	उन के लिए	अपना रव	जो लोग डरे	लेकिन	19	आग में	जो	बचा लोगे	क्या पस तुम
مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَةٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَعَدَّ اللَّهُ لَا يُخْلِفُ									
ख़िलाफ़ नहीं करता	अल्लाह का वादा	नहरें	उन के नीचे	जारी है	वने बनाए	वाला खाने	उन के ऊपर से		
اللَّهُ الْمِعَادَ (۲۰) أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ يَنَابِيعَ									
चश्मे	फिर चलाया उस को	पानी	आस्मान से	उतारा	कि अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा	20	वादा	अल्लाह
فِي الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهَيِّجُ فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا									
ज़र्द	फिर तू देखे उसे	फिर वह खुशक हो जाती है	उस के रंग	मुख्तलिफ़	खेती	उस से	वह निकालता है	फिर	ज़मीन में
ثُمَّ يَجْعَلُهُ حُطَامًا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَذِكْرَى لِأُولِي الْأَلْبَابِ (۲۱)									
21	अक़ल वालों के लिए	अलबत्ता नसीहत	इस में	वेशक	चूरा चूरा	फिर वह कर देता है उसे			

आप (स) फ़रमा दें कि मुझे हुकम दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूँ ख़ालिस कर के उसी के लिए दीन। (11)

और मुझे हुकम दिया गया है कि सब से पहले मैं खुद मुसलिम बनूँ। (12)

आप (स) फ़रमा दें, वेशक मैं डरता हूँ कि अगर मैं नाफरमानी करूँ अपने परवरदिगार की, एक बड़े दिन के अज्ञाव से। (13)

आप (स) फ़रमा दें: मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ उसी के लिए अपना दीन ख़ालिस कर के। (14)

पस तुम जिस की चाहो परसतिश करो अल्लाह के सिवा, आप (स) फ़रमा दें: वेशक वह घाटा पाने वाले हैं जिन्होंने ने अपने आप को और अपने घर वालों को घाटे में डाला रोज़े क़ियामत, खूब याद रखो! यही है सरीह घाटा। (15)

उन के लिए उन के ऊपर से आग के साएवान होंगे और उन के नीचे से भी (आग की) चादरें। यह है जिस से अल्लाह अपने बन्दों को डराता है। ऐ मेरे बन्दो! मुझ ही से डरो। (16)

और जो लोग ताग़ूत से बचते रहे कि उस की परसतिश करें, और उन्होंने ने अल्लाह की तरफ़ रुजूअ किया, उन के लिए खुशख़बरी है। सो आप (स) मेरे बन्दों को खुशख़बरी दें। (17)

जो (पूरी तवज़ूह से) बात सुनते हैं फिर उस की अच्छी अच्छी बातों की पैरवी करते हैं, यही वह लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी, और यही लोग हैं अक़ल वाले। (18)

तो क्या जिस पर अज्ञाव की वईद साबित हो गई, पस क्या तुम उसे बचा लोगे जो आग में (गिर गया)? (19)

लेकिन जो लोग डरे अपने रव से, उन के लिए वाला खाने हैं, उन के ऊपर बने बनाए वाला खाने हैं, उन के नीचे नहरें जारी हैं, अल्लाह का वादा है, अल्लाह वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता। (20)

क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा, फिर उसे चश्मे (बना कर) ज़मीन में चलाया, फिर वह उस से मुख्तलिफ़ रंगों की खेती निकालता है, फिर वह खुशक हो जाती है, फिर तू उसे ज़र्द देखता है, फिर वह उसे चूरा चूरा कर देता है, वेशक इस में अलबत्ता नसीहत है अक़ल वालों के लिए। (21)

पस क्या जिस का सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया तो वह अपने रब की तरफ से नूर पर है (क्या वह और संगदिल बराबर हैं) सो ख़राबी है उन के लिए जिन के दिल अल्लाह के ज़िक्र से ज़ियादा सख्त हो गए, यही लोग गुमराही में हैं खुली। (22)

अल्लाह ने बेहतरीन कलाम नाज़िल किया, एक किताब जिस के मज़ामीन मिलते जुलते, बार बार दोहराए गए हैं, उस से बाल (रोंगटे) खड़े हो जाते हैं उन लोगों की जिल्दों पर जो अपने रब से डरते हैं, फिर उन की जिल्दें और उन के दिल नर्म हो जाते हैं अल्लाह की याद की तरफ (रागिब होते हैं), यह है अल्लाह की हिदायत, उस से अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है, और जिसे अल्लाह गुमराह करे उस के लिए कोई हिदायत देने वाला नहीं। (23)

पस क्या जो शख्स क़ियामत के दिन अपने चेहरे को बुरे अज़ाब से बचाता है (अहले जन्नत के बराबर हो सकता है?) और ज़ालिमों को कहा जाएगा तुम (उस का मज़ा) चखो जो तुम करते थे। (24) जो लोग उन से पहले थे उन्होंने ने झुटलाया तो उन पर अज़ाब आगया जहां से उन्हें खयाल (भी) न था। (25)

पस अल्लाह ने उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में रुस्वाई (का मज़ा) चखाया, और अलवत्ता आख़िरत का अज़ाब बहुत ही बड़ा है, काश वह जानते होते। (26) और तहकीक हम ने इस कुरआन में लोगों के लिए वयान की हर किस्म की मिसाल ताकि वह नसीहत पकड़ें। (27) कुरआन अरबी (ज़बान में), किसी (भी) कज़ी के बग़ैर ताकि वह परहेज़गारी इख़्तियार करें। (28)

अल्लाह ने एक मिसाल वयान की है, एक आदमी (गुलाम) है, उस में कई (आका) शरीक हैं जो आपस में ज़िददी (झगड़ालू) हैं और एक आदमी एक आदमी का (गुलाम) है, क्या दोनों की हालत बराबर है? तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं बल्कि उन में से अक़्सर इल्म नहीं रखते। (29) बेशक तुम मरने (इन्तिक़ाल करने) वाले हो, और वह (भी) मरने वाले हैं। (30)

फिर बेशक तुम क़ियामत के दिन अपने रब के पास झगड़ोगे। (31)

<p>أَفَمَنْ شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِإِسْلَامٍ فَهُوَ عَلَى نُورٍ مِّن رَّبِّهِ فَوَيْلٌ</p>								
सो ख़राबी	अपने रब की तरफ से	नूर	पर	तो वह	इस्लाम के लिए	उस का सीना	अल्लाह ने खोल दिया	क्या - पस जिस
<p>لِّلْقَسِيَةِ قُلُوبُهُمْ مِّن ذِكْرِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٢٢﴾ اللَّهُ</p>								
अल्लाह	22	खुली	गुमराही	में	यही लोग	अल्लाह की याद	से	उन के दिल - उन के लिए - सख्त
<p>نَزَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُودٌ</p>								
जिल्दें	उस से	बाल खड़े हो जाते हैं	दोहराई गई	मिलती जुलती (आयात वाली)	एक किताब	बेहतरीन कलाम		नाज़िल किया
<p>الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِينُ جُلُودُهُمْ وَقُلُوبُهُمْ إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ</p>								
अल्लाह की याद	तरफ	और उन के दिल	उन की जिल्दें	नर्म हो जाती है	फिर	अपना रब	वह डरते हैं	जो लोग
<p>ذٰلِكَ هُدَىٰ ٱللَّهِ يَهْدِي ٱللَّهُ مَن يَشَآءُ ۗ وَمَن يُضَلِلِ ٱللَّهُ</p>								
गुमराह करता है अल्लाह	और जो - जिस	जिसे वह चाहता है	हिदायत देता है उस से	अल्लाह की हिदायत	यह			
<p>فَمَا لَهُ مِن هَادٍ ﴿٢٣﴾ أَفَمَن يَتَّقِي بِوَجْهِهِ سُوءَ الْعَذَابِ</p>								
बुरा अज़ाब	अपने चेहरे से	बचाता है	क्या पस जो	23	कोई हिदायत देने वाला	उस के लिए	तो नहीं	
<p>يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ وَقِيلَ لِلظَّٰلِمِينَ ذُوقُوا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٢٤﴾ كَذَّبَ</p>								
झुटलाया	24	तुम कमाते (करते) थे	जो	तुम चखो	ज़ालिमों को	और कहा जाएगा	क़ियामत के दिन	
<p>الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَآتَهُمُ الْعَذَابُ مِن حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٥﴾</p>								
25	उन्हें खयाल न था	जहां से	अज़ाब	तो उन पर आ गया	इन से पहले	जो लोग		
<p>فَآذَقَهُمُ ٱللَّهُ ٱلْخِزْيَ فِي ٱلْحَيٰوةِ ٱلدُّنْيَا ۗ وَلَعَذَابُ ٱلْآخِرَةِ</p>								
आख़िरत	और अलवत्ता अज़ाब	दुनिया	ज़िन्दगी	में	रुस्वाई	पस चखाया उन्हें अल्लाह ने		
<p>أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾ وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي</p>								
में	लोगों के लिए	और तहकीक हम ने वयान की	26	वह जानते होते	काश	बहुत ही बड़ा		
<p>هٰذَا ٱلْقُرْآنِ مِن كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٧﴾ قُرْآنًا عَرَبِيًّا</p>								
अरबी	कुरआन	27	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	मिसाल	हर किस्म की	इस कुरआन	
<p>عَرَبِيٍّ ذِي عَوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٢٨﴾ ضَرَبَ ٱللَّهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيهِ</p>								
उस में	एक आदमी	एक मिसाल	वयान की अल्लाह ने	28	परहेज़गारी इख़्तियार करें	ताकि वह	किसी कज़ी के बग़ैर	
<p>شُرَكَآءٍ مُّتَشَاكِسُونَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ هَلْ يَسْتَوِينَ مَثَلًا</p>								
मिसाल (हालत)	दोनों की बराबर है	क्या	एक आदमी के लिए	सालिम (ख़ालिस)	और एक आदमी	आपस में ज़िददी		कई शरीक
<p>ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ ۗ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٩﴾ إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُمْ</p>								
और बेशक वह	मरने वाले	बेशक तुम	29	इल्म नहीं रखते	उन में अक़्सर	बल्कि	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	
<p>مَيِّتُونَ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ ﴿٣١﴾</p>								
31	तुम झगड़ोगे	अपना रब	पास	क़ियामत के दिन	बेशक तुम	फिर	30	मरने वाले

وقف لآدم

٣٠  
١٢



فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ						
सच्चाई को	और उस ने झूटलाया	अल्लाह पर	झूट बान्धा	से-जिस	बड़ा ज़ालिम	पस कौन
إِذْ جَاءَهُ الْيَسُ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ (32) وَالَّذِي جَاءَ						
आया	और जो शख्स	32	काफ़िरों के लिए	ठिकाना	जहनन्म में	क्या नहीं
بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ أُولَئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ (33) لَهُمْ						
उन के लिए	33	मुत्तकी (जमा)	वह	यही लोग	उस को	और उस ने उस की तसदीक की
مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ذَلِكَ جَزَا الْمُحْسِنِينَ (34) لِيُكَفِّرَ اللَّهُ						
ताकि दूर कर दे अल्लाह	34	नेकोकारों (जमा)	जज़ा	यह	उन का रब	हाँ-पास
عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ						
बेहतरीन (आमाल)	उन का अजर	और उन्हें जज़ा दे	उन्होंने ने किए (आमाल)	वह जो	बुराई	उन से
الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ (35) أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ وَيُخَوِّفُونَكَ						
और वह ख़ौफ़ दिलाते हैं आप को	अपने बन्दे को	काफी	अल्लाह	क्या नहीं	35	वह करते थे
بِالَّذِينَ مِنْ دُونِهِ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ (36)						
36	कोई हिदायत देने वाला	तो नहीं उस के लिए	गुमराह कर दे अल्लाह	और जिस	उस के सिवा	उन से जो
وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُضِلٍّ أَلَيْسَ اللَّهُ بِعَزِيزٍ						
ग़ालिब	क्या नहीं अल्लाह	गुमराह करने वाला	कोई	उस के लिए	तो नहीं	अल्लाह हिदायत दे
ذِي انْتِقَامٍ (37) وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ						
आस्मानों	पैदा किया	कौन-किस	तुम पूछो उन से	और अगर	37	बदला लेने वाला
وَالْأَرْضِ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ قُلْ أفرءَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ						
जिन को तुम पुकारते हो	क्या पस देखा तुम ने	फरमा दें	अल्लाह	तो वह ज़रूर कहेंगे	और ज़मीन	
مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ أَرَادْنِي اللَّهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كَاشِفَاتُ						
दूर करने वाले हैं	वह सब	क्या	कोई ज़र्र	चाहे मेरे लिए अल्लाह	अगर	अल्लाह के सिवा से
ضُرِّهِ أَوْ أَرَادْنِي بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكَتُ رَحْمَتِهِ قُلْ						
फरमा दें	उस की रहमत	रोकने वाले हैं	वह सब	क्या	कोई रहमत	वह चाहे मेरे लिए
حَسْبِيَ اللَّهُ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ (38) قُلْ يَقَوْمِ						
ऐ मेरी कौम	फरमा दें	38	भरोसा करने वाले	भरोसा करते हैं	उस पर	काफी है मेरे लिए अल्लाह
اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ (39)						
39	तुम जान लोगे	पस अ़नक़रीब	काम करता हूँ	वेशक मैं	अपनी जगह	पर
مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ (40)						
40	दाइमी	अज़ाब	उस पर	और उतर आता है	रुस्वा कर दे उस को	अज़ाब

पस उस से बड़ा ज़ालिम और कौन? जिस ने अल्लाह पर झूट बान्धा, और सच्चाई को झूटलाया जब वह उस के पास आई, क्या काफ़िरों का ठिकाना जहनन्म में नहीं? (32)

और जो शख्स सच्चाई के साथ आया और उस ने उस की तसदीक की, यही लोग मुत्तकी (परहेज़गार) हैं। (33)

उन के लिए है उन के रब के हां जो (भी) वह चाहेंगे, यह जज़ा है नेकोकारों की। (34)

ताकि अल्लाह उन से उन के आमाल की बुराई दूर करदे और उन्हें नेक कामों का अजर दे उन के बेहतरीन अमल के लिहाज़ से जो वह करते थे। (35)

क्या अल्लाह अपने बन्दे को काफ़ी नहीं? और वह आप (स) को डराते हैं उन (झूटे माबूदों) से जो उस के सिवा हैं, और जिस को अल्लाह गुमराह करदे तो उस को कोई हिदायत देने वाला नहीं। (36)

और जिस को अल्लाह हिदायत दे तो उस को कोई गुमराह करने वाला नहीं, क्या अल्लाह ग़ालिब, बदला देने वाला नहीं? (37)

और अगर आप (स) उन से पूछें कि आस्मानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया? तो वह ज़रूर कहेंगे "अल्लाह ने", आप (स) फ़रमा दें: पस क्या तुम ने देखा जिन को

पुकारते हो अल्लाह के सिवा, अगर अल्लाह मेरे लिए कोई ज़र्र चाहे तो क्या वह सब उस का ज़र्र दूर कर सकती हैं? या वह मेरे लिए कोई रहमत चाहे तो क्या वह सब उस की रहमत रोक सकती हैं?

आप (स) फ़रमा दें मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है, भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं। (38)

आप (स) फ़रमा दें, ऐ मेरी कौम! तुम अपनी जगह काम किए जाओ, वेशक मैं (अपना) काम करता हूँ, पस अ़नक़रीब तुम जान लोगे। (39)

कौन है जिस पर आता है अज़ाब जो उसे रुस्वा कर दे और (कौन है) जिस पर दाइमी अज़ाब उतरता है? (40)

वेशक हम ने आप (स) पर लोगों (की हिदायत) के लिए किताब नाज़िल की हक़ के साथ, पस जिस ने हिदायत पाई तो अपनी ज़ात के लिए, और जो गुमराह हुआ तो इस के सिवा नहीं कि वह अपने लिए गुमराह होता है, और आप (स) नहीं उन पर निगहवान (ज़िम्मेदार)। (41)

अल्लाह रूह को उस की मौत के वक़्त कब्ज़ करता है, और जो न मरे अपनी नीद में, जिस की मौत का फ़ैसला किया तो उस को (नीद की सूरत में ही) रोक लेता है और दूसरी (रूहों को) छोड़ देता है एक मुक़र्ररा वक़्त तक, वेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं। (42)

क्या उन्होंने न अल्लाह के सिवा बना लिए हैं शफ़ाअत (सिफ़ारिश) करने वाले? आप (स) फ़रमा दें: (इस सूरत में भी) कि वह कुछ भी इख़्तियार न रखते हों और न समझ रखते हों? (43)

आप (स) फ़रमा दें: अल्लाह ही के (इख़्तियार में) है तमाम शफ़ाअत, उसी के लिए है आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत, फिर उस की तरफ़ तुम लौटोगे। (44)

और जब ज़िक्र किया जाता है अल्लाह वाहिद का, तो जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उन के दिल मुतनफ़्फ़िर हो जाते हैं, और जब उन का ज़िक्र किया जाता है जो उस के सिवा हैं (यानी औरों का) तो फ़ौरन खुश हो जाते हैं। (45)

आप (स) फ़रमा दें: ऐ अल्लाह! पैदा करने वाले आस्मानों और ज़मीन के, जानने वाले पोशीदा और ज़ाहिर के, तू अपने बन्दों के दरमियान (इस अमर में) फ़ैसला करेगा जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते थे। (46)

और अगर जिन लोगों ने जुल्म किया, जो कुछ ज़मीन में है सब का सब और उस के साथ उतना ही (और भी) उन के पास हो तो वह बदले में दे दें रोज़े क़ियामत बुरे अज़ाब से (बचने के लिए), और अल्लाह की तरफ़ से उन पर ज़ाहिर हो जाएगा जिस का वह गुमान (भी) न करते थे। (47)

إِنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ فَمَنِ اهْتَدَىٰ						
हिदायत पाई	पस जिस	हक़ के साथ	लोगों के लिए	किताब	आप (स) पर	वेशक हम ने नाज़िल की
فَلِنَفْسِهِ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ						
उन पर	आप (स)	और नहीं	अपने लिए	वह गुमराह होता है	तो इस के सिवा नहीं हुआ	तो अपनी ज़ात के लिए
بِوَكِيلٍ ﴿٤١﴾ اللَّهُ يَتَوَفَّى الْأَنْفُسَ حِينَ مَوْتِهَا وَالَّتِي						
और जो	उस की मौत	वक़्त	(जमा) जान - रूह	कब्ज़ करता है	अल्लाह	41 निगहवान
لَمْ تَمُتْ فِي مَنَامِهَا فَيُمْسِكُ الَّتِي قَضَىٰ عَلَيْهَا الْمَوْتَ						
मौत	उस पर	फ़ैसला किया उस ने	वह जिस	तो रोक लेता है	अपनी नीद में	न मरे
وَيُرْسِلُ الْأُخْرَىٰ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ						
लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में	वेशक	मुक़र्ररा	एक वक़्त तक	दूसरों को वह छोड़ देता है
يَتَفَكَّرُونَ ﴿٤٢﴾ أَمْ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ شُفَعَاءَ قُلْ						
फ़रमा दें	शफ़ाअत करने वाले	अल्लाह के सिवा	उन्होंने न बना लिया	क्या	42	ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं
أَوْلَوْ كَانُوا لَا يَمْلِكُونَ شَيْئًا وَلَا يَعْقِلُونَ ﴿٤٣﴾ قُلْ لِلَّهِ						
फ़रमा दें अल्लाह के लिए	43	और न वह समझ रखते हों	कुछ	वह न इख़्तियार रखते हों	क्या अगर	
الشَّفَاعَةَ جَمِيعًا لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ثُمَّ إِلَيْهِ						
उस की तरफ़	फिर	और ज़मीन	आस्मानों	बादशाहत	उसी के लिए	तमाम शफ़ाअत
تُرْجَعُونَ ﴿٤٤﴾ وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ الَّذِينَ						
वह लोग जो	दिल	सुतनफ़्फ़िर हो जाते हैं	एक - वाहिद	ज़िक्र किया जाता है अल्लाह	और जब	44 तुम लौटोगे
لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ إِذَا هُمْ						
वह	तो फ़ौरन	उस के सिवा	उन का जो	ज़िक्र किया जाता है	और जब	आख़िरत पर ईमान नहीं रखते
يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٤٥﴾ قُلِ اللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ عَلِمَ						
और जानने वाला	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा करने वाला	ऐ अल्लाह	फ़रमा दें	45 खुश हो जाते हैं
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِي مَا كَانُوا						
वह थे	उस में जो	अपने बन्दों	दरमियान	तू फ़ैसला करेगा	तू	और ज़ाहिर पोशीदा
فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٤٦﴾ وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا فِي الْأَرْضِ						
और जो कुछ ज़मीन में	जुल्म किया	उन के लिए जिन्होंने ने	हो	और अगर	46	इख़्तिलाफ़ करते उस में
جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ مِنْ سُوءِ الْعَذَابِ						
अज़ाब	बुरे	से	उस को	बदले में दें वह	उस के साथ	और इतना ही सब का सब
يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَبَدَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مَا لَمْ يَكُونُوا يَحْتَسِبُونَ ﴿٤٧﴾						
47	गुमान करते	न थे वह	जो	अल्लाह (की तरफ़) से	और ज़ाहिर हो जाएगा उन पर	रोज़े क़ियामत

٢٤

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ							
उस का	वह थे	जो	उन को	और घेर लेगा	जो वह करते थे	बुरे काम	और ज़ाहिर हो जाएंगे उन पर
يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٤٨﴾ فَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ إِذَا							
जब फिर	कोई तकलीफ वह हमें पुकारता है	इन्सान	पहुँचती है	फिर जब	48	मज़ाक उड़ाते	
حَوْلُنْهُ نِعْمَةً مِّنَّا قَالَ إِنَّمَا أُوتِيْتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ							
एक आजमाइश	बल्कि यह	इल्म	पर	मुझे दी गई है	यह तो	वह कहता है	अपनी तरफ से
وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٩﴾ قَدْ قَالَهَا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ							
इन से पहले	से	जो लोग	यकीनन यही कहा था	49	जानते नहीं	उन में अक्सर	और लेकिन
فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٥٠﴾ فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ							
बुराइयां	पस उन्हें पहुँचें	50	वह करते थे	जो	उन से	तो वह न दूर किया	
مَا كَسَبُوا وَالَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ هَؤُلَاءِ سَيُصِيبُهُمْ سَيِّئَاتُ							
बुराइयां	जल्द पहुँचेंगी इन्हें	इन में से	और जिन लोगों ने जुल्म किया	जो उन्होंने ने कमाई			
مَا كَسَبُوا وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٥١﴾ أَوَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ							
फराख करता है	कि अल्लाह	क्या यह नहीं जानते	51	आजिज़ करने वाले	और यह नहीं	जो इन्होंने ने कमाया	
الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ							
उन लोगों के लिए	निशानियां	इस में	वेशक	और तंग कर देता है	वह चाहता है	जिस के लिए	रिज़क
يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾ قُلْ يُعْبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ							
अपनी जानें	पर	ज़ियादती की	वह जिन्होंने ने	ऐ मेरे बन्दो	फ़रमा दें	52	वह ईमान लाए
لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَحْمَةِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا							
सब	गुनाह (जमा)	बख़्श देता है	वेशक अल्लाह	अल्लाह की रहमत	से	मायूस न हो तुम	
إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٥٣﴾ وَأَنِيبُوا إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَأَسْلَمُوا لَهُ							
और फ़रमांवरदार हो जाओ उस के	अपना रब	तरफ	और रुजूअ करो	53	मेहरबान	बख़्शने वाला	वही वेशक वह
مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنصِرُونَ ﴿٥٤﴾ وَاتَّبِعُوا أَحْسَنَ							
सब से बेहतर	और पैरवी करो	54	तुम मदद न किए जाओगे	फिर	अज़ाब	तुम पर आए	कि इस से कब्ल
مَا أُنزِلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ							
अज़ाब	कि तुम पर आए	इस से कब्ल	तुम्हारा रब	से	तुम्हारी तरफ	जो नाज़िल की गई	
بِعْتَةٍ وَأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ﴿٥٥﴾ أَنْ تَقُولَ نَفْسٌ يُحَسِّرُنِي عَلَىٰ							
उस पर	हाए अफ़सोस	कोई शख्स	कि कहे	55	तुम को शऊर (ख़बर) न हो	और तुम	अचानक
مَا فَرَّطْتُ فِي جَنْبِ اللَّهِ وَإِنْ كُنْتُ لَمِنَ السَّخِرِينَ ﴿٥٦﴾							
56	हँसी उड़ाने वाले	अलबत्ता - से	और यह कि मैं	अल्लाह की जनाब	में	जो मैं ने कोताही की	

और उन पर बुरे काम ज़ाहिर हो जाएंगे जो वह करते थे और वह (अज़ाब) उन को घेर लेगा जिस का वह मज़ाक उड़ाते थे। (48) फिर जब इन्सान को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वह हमें पुकारता है, फिर जब हम उस को अपनी तरफ से कोई नेमत अता करते हैं तो वह कहता है कि यह तो मुझे दिया गया है (मेरे) इल्म (की बिना) पर, (नहीं) बल्कि यह एक आजमाइश है, लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। (49) यकीनन यह उन लोगों ने (भी) कहा था जो इन से पहले थे, तो जो वह करते थे उस ने उन से (अज़ाब को) दूर न किया। (50) पस उन्हें पहुँचें (उन पर आ पड़ें) बुराइयां जो उन्होंने ने कमाई थी, और इन में से जिन लोगों ने जुल्म किया जल्द इन्हें पहुँचेंगी (इन पर आ पड़ेंगी) बुराइयां जो इन्होंने ने कमाई है, और यह नहीं है (अल्लाह को) आजिज़ करने वाले। (51) किया यह नहीं जानते कि अल्लाह जिस के लिए चाहता है रिज़क फ़राख कर देता है (और वह जिस के लिए चाहता है) तंग कर देता है, वेशक इस में उन लोगों के लिए शिानियां हैं जो ईमान लाए। (52) आप (स) फ़रमा दें, ऐ मेरे बन्दो! जिन्होंने ने ज़ियादती की है अपनी जानों पर, तुम अल्लाह की रहमत से मायूस न हो, वेशक अल्लाह सब गुनाह बख़्श देता है, वेशक वही बख़्शने वाला, मेहरबान है। (53) और तुम अपने रब की तरफ रुजूअ करो, और उस के फ़रमांवरदार हो जाओ इस से कब्ल कि तम पर अज़ाब आ जाए, फिर तुम मदद न किए जाओगे। (54) और पैरवी करो सब से बेहतर (किताब की) जो तुम्हारी तरफ नाज़िल की गई है तुम्हारे रब की तरफ से, इस से कब्ल कि तुम पर अचानक अज़ाब आ जाए और तुम्हें ख़बर भी न हो। (55) कि कोई शख्स कहे, हाए अफ़सोस उस पर जो मैं ने अल्लाह के हक़ में कोताही की और यह कि मैं हँसी उड़ाने वालों में से रहा। (56)

या यह कहे कि अगर अल्लाह मुझे हिदायत देता तो मैं ज़रूर परहेज़गारों में से होता। (57)

या जब वह अज़ाब देखे तो कहे: काश! अगर मेरे लिए दोबारा (दुनिया में जाना हो) तो मैं नेकोकारों में से हो जाऊँ। (58)

(अल्लाह फरमाएगा) हाँ! तहकीक़ तेरे पास मेरी आयात आई, तू ने उन्हें झुटलाया, और तू ने तकब्बुर किया, और तू काफ़िरों में से था। (59)

और क़ियामत के दिन तुम देखोगे जिन लोगों ने अल्लाह पर झूट बोला, उन के चेहरे सियाह होंगे, क्या तकब्बुर करने वालों का ठिकाना जहन्नम में नहीं? (60)

और जिन लोगों ने परहेज़गारी की, अल्लाह उन्हें उन को कामयाबी के साथ नजात देगा, न उन्हें कोई बुराई छुएगी, न वह ग़मगीन होंगे। (61)

अल्लाह हर शै का पैदा करने वाला है, और वह हर शै पर निगहबान है। (62)

उसी के पास है आस्मानों और ज़मीन की कुंजियां, और जो लोग अल्लाह की आयात से मुन्किर हुए वही ख़सारा पाने वाले हैं। (63)

आप (स) फ़रमा दें कि ऐ जाहिलो! क्या तुम मुझे कहते हो कि मैं अल्लाह के सिवा (किसी और) की परसतिश करूँ। (64)

और यकीनन आप (स) की तरफ़ और आप (स) से पहलों की तरफ़ वहि भेजी गई है, अगर तुम ने शिक़ किया तो तुम्हारे अमल बिलकुल अकारत जाएंगे और तुम ज़रूर ख़सारा पाने वालों (ज़यां कारों) में से होंगे। (65)

बल्कि तुम अल्लाह ही की इबादत करो, और शुक्र गुज़ारों में से हो। (66)

और उन्होंने ने अल्लाह की क़द्र शनासी न की जैसा कि उस की क़द्र शनासी का हक़ था, और तमाम ज़मीन रोज़े क़ियामत उस की मुट्ठी में होगी, और तमाम आस्मान उस के दाएं हाथ में लिपटे होंगे, और वह उस से पाक और बरतर है जो वह शरीक करते हैं। (67)

أَوْ تَقُولَ لَوْ أَنَّ اللَّهَ هَدَانِي لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِينَ (٥٧) أَوْ									
या	57	परहेज़गार (जमा)	से	मैं ज़रूर होता	मुझे हिदायत देता	यह कि अल्लाह	अगर	वह कहे	या
تَقُولَ حِينَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ أَنَّ لِي كَرَّةً فَأَكُونَ مِنَ									
से	तो मैं हो जाऊँ	दोबारा	मेरे लिए	काश अगर	अज़ाब	देखे	जब	वह कहे	
الْمُحْسِنِينَ (٥٨) بَلَىٰ قَدْ جَاءَتْكَ آيَاتِي فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ									
और तू ने तकब्बुर किया	उन्हें	तू ने झुटलाया	मेरी आयात	तहकीक़ तेरे पास आई	हाँ	58	नेकोकार (जमा)		
وَكُنْتَ مِنَ الْكَافِرِينَ (٥٩) وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ تَرَى الَّذِينَ كَذَبُوا									
जिन लोगों ने झूट बोला	तुम देखोगे	और क़ियामत के दिन	59	काफ़िरों	से	और तू था			
عَلَى اللَّهِ وَجُوهُهُمْ مُسْوَدَّةٌ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى									
ठिकाना	जहन्नम	में	क्या नहीं	सियाह	उन के चेहरे	अल्लाह पर			
لِلْمُتَكَبِّرِينَ (٦٠) وَيُنَجِّي اللَّهُ الَّذِينَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ									
उन की कामयाबी के साथ	वह जिन्होंने ने परहेज़गारी की	और नजात देगा अल्लाह	60	तकब्बुर करने वाले					
لَا يَمَسُّهُمُ السُّوءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ (٦١) اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ									
हर शै	पैदा करने वाला	अल्लाह	61	ग़मगीन होंगे	और न वह	बुराई	न छुएगी उन्हें		
وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ (٦٢) لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ									
और ज़मीन	आस्मानों	उस के पास कुंजियां	62	निगहबान	चीज़	हर	पर	और वह	
وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ (٦٣) قُلْ									
फ़रमा दें	ख़सारा पाने वाले	वह	वही लोग	अल्लाह की आयात के	मुन्किर हुए	और जो लोग			
أَفَعَيَّرَ اللَّهُ تَأْمُرُوْنَىٰ أَعْبُدُ أَيُّهَا الْجَاهِلُونَ (٦٤) وَلَقَدْ أُوحِيَ									
और यकीनन वहि भेजी गई है	64	जाहिलो	ऐ	मैं परसतिश करूँ	तुम मुझे कहते हो	तो क्या अल्लाह के सिवा			
إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ									
तू ने शिक़ किया	अलबत्ता अगर	आप (स) से पहले	वह जो कि	और तरफ़	आप (स) की तरफ़				
لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخٰسِرِينَ (٦٥) بَلِ اللَّهُ									
बल्कि अल्लाह	65	ख़सारा पाने वाले	से	और तू होगा ज़रूर	तेरे अमल	अलबत्ता अकारत जाएंगे			
فَاعْبُدْ وَكُنْ مِنَ الشَّاكِرِينَ (٦٦) وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ									
हक़	और उन्होंने ने क़द्र शनासी न की अल्लाह की	66	शुक्र गुज़ारो	से	और हो	पस इबादत करो			
قَدْرَهُ ۗ وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمٰوٰتُ									
और तमाम आस्मान	रोज़े क़ियामत	उस की मुट्ठी	तमाम	और ज़मीन	उस की क़द्र शनासी				
مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِينِهِ ۗ سُبْحٰنَهُ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُونَ (٦٧)									
67	वह शिक़ करते हैं	उस से जो	और बरतर	वह पाक है	उस के दाएं हाथ में	लिपटे हुए			

١  
٢  
٣

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ						
ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	तो बेहोश हो जाएगा	सूर में	और फूंक दी जाएगी
إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَى فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ ﴿٦٨﴾						
68	देखने लगेंगे	खड़े	वह	तो फौरन	दोबारा	फूंक मारी जाएगी उस में फिर चाहे अल्लाह सिवाए जिसे
وَأَشْرَقَتِ الْأَرْضُ بِنُورِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتَابُ وَجِيءَ بِالنَّبِيِّينَ						
नबी (जमा)	और लाए जाएंगे	किताब	और रख दी जाएगी	अपने रब के नूर से	ज़मीन	और चमक उठेगी
وَالشُّهَدَاءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٩﴾ وَوَقَّيْتُ						
और पूरा पूरा दिया जाएगा	69	जुल्म न किया जाएगा	और वह (उन पर)	हक के साथ	उन के दरमियान	और फ़ैसला किया जाएगा (जमा)
كُلِّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٧٠﴾ وَسِيقَ						
और हाँके जाएंगे	70	जो कुछ वह करते हैं	खूब जानता है	और वह	जो उस ने किया (उस के आमाल)	हर शख्स
الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ زُمَرًا حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا فَتَحَتْ						
खोल दिए जाएंगे	वह आएंगे वहां	यहां तक कि जब	गिरोह दर गिरोह	जहनन्म	तरफ़	कुफ़ किया (काफ़िर) वह जिन्होंने ने
أَبْوَابَهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ						
तु में से	रसूल (जमा)	क्या नहीं आए थे तुम्हारे पास	उस के मुहाफ़िज़	उन से	और कहेंगे	उस के दरवाज़े
يَتْلُونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِ رَبِّكُم وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ						
तुम्हारा दिन	मुलाकात	और तुम्हें डराते थे	तुम्हारे रब की आयतें (अहकाम)	तुम पर	वह पढ़ते थे	
هَذَا قَالُوا بَلَىٰ وَلَكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٧١﴾						
71	काफ़िरों	पर	अज़ाब	हुक्म	पूरा हो गया	और लेकिन हाँ वह कहेंगे यह
قِيلَ ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَلِدِينَ فِيهَا فَبِئْسَ مَثْوَىٰ						
ठिकाना	सो बुरा है	उस में	हमेशा रहने को	जहनन्म	दरवाज़े	तुम दाख़िल हो कहा जाएगा
الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٧٢﴾ وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا						
गिरोह दर गिरोह	जन्नत की तरफ़	अपना रब	वह डरे	वह लोग जो	ले जाया जाएगा	72 तकब्युर करने वाले
حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا						
उस के मुहाफ़िज़	उन से	और कहेंगे	उस के दरवाज़े	और खोल दिए जाएंगे	वह वहां आएंगे	जब यहां तक कि
سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طَبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَلِدِينَ ﴿٧٣﴾ وَقَالُوا						
और वह कहेंगे	73	हमेशा रहने को	सो इस में दाख़िल हो	तुम अच्छे रहे	तुम पर	सलाम
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقْنَا وَعَدَّهُ وَأَوْثَقْنَا الْأَرْضِ						
ज़मीन	और हमें वारिस बनाया	अपना वादा	हम से सच्चा किया	वह जिस ने	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	
نَتَّبَعُوا مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاءُ فَنِعْمَ أَجْرُ الْعَمَلِينَ ﴿٧٤﴾						
74	अमल करने वाले	अजर	सो किया ही अच्छा	हम चाहें	जहां	जन्नत से - में हम मुक़ाम करलें

और सूर में फूंक मारी जाएगी तो (हर कोई) जो आस्मानों और ज़मीन में है बेहोश हो जाएगा, सिवाए उस के जिसे अल्लाह चाहे, फिर उस में फूंक मारी जाएगी दोबारा, तो वह फ़ौरन खड़े हो कर (इधर उधर) देखने लगेंगे। (68)

और ज़मीन अपने रब के नूर से चमक उठेगी और (आमाल की) किताब (खोल कर) रख दी जाएगी और नबी और गवाह लाए जाएंगे, और उन के दरमियान हक के साथ (ठीक ठीक) फ़ैसला किया जाएगा और उन पर जुल्म न किया जाएगा। (69)

और हर शख्स को उस के आमाल का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा, और वह खूब जानता है जो कुछ वह करते हैं। (70)

और काफ़िर हाँके जाएंगे गिरोह दर गिरोह जहनन्म की तरफ, यहां तक कि जब वह वहां आएंगे तो उस के दरवाज़े खोल दिए जाएंगे और उन से कहेंगे उस के मुहाफ़िज़ (दारोगा) क्या तुम्हारे पास तुम में से रसूल नहीं आए थे? जो तुम पर तुम्हारे रब के अहकाम पढ़ते थे, और तुम्हें डराते थे इस दिन की मुलाकात से! वह कहेंगे “हाँ” लेकिन काफ़िरों पर अज़ाब का हुक्म पूरा हो गया। (71)

कहा जाएगा तुम जहनन्म के दरवाज़ों में दाख़िल हो, इस में हमेशा रहने को, सो बुरा है तकब्युर करने वालों का ठिकाना। (72)

और जो लोग अपने रब से डरे उन्हें जन्नत की तरफ गिरोह दर गिरोह ले जाया जाएगा, यहां तक कि जब वह वहां आएंगे और खोल दिए जाएंगे उस के दरवाज़े, और उन से उस के मुहाफ़िज़ (दारोगा) कहेंगे कि तुम पर सलाम हो, तुम अच्छे रहे, सो इस में हमेशा रहने को दाख़िल हो। (73)

और वह कहेंगे तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, जिस ने अपना वादा सच्चा किया और हमें ज़मीन का वारिस बनाया कि हम मुक़ाम कर लें जन्नत में जहां हम चाहें, सो किया ही अच्छा है अमल करने वालों का अजर। (74)

ع ۴

और तुम देखोगे फरिश्तों को हलका बान्धे अर्श के गिर्द, अपने रब की तारीफ के साथ पाकीज़गी बयान करते हुए, उन के दरमियान हक के साथ (ठीक ठीक) फैसला कर दिया जाएगा और कहा जाएगा तमाम तारीफें सारे जहानों के परवरदिगार अल्लाह के लिए हैं। (75)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है हा-मीम। (1)

इस कुरआन का उतारा जाना अल्लाह ग़ालिब, हर चीज़ के जानने वाले (की तरफ़) से है। (2)

गुनाहों को बख़्शने वाला, तौबा कुबूल करने वाला, शदीद अज़ाब वाला, बड़े फ़ज़ल वाला, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। (3)

नहीं झगड़ते अल्लाह की आयात में, मगर वह लोग जिन्होंने कुफ़ किया, सो तुम्हें धोके में न डाल दे उन की चलत फिरत दुनिया के मुल्कों में। (4)

उन से क़व्ल नूह (अ) की कौम और उन के बाद (दूसरे) गिरोहों ने झुटलाया, और हर उम्मत ने अपने रसूलों के वारे में इरादा बान्धा कि वह उसे पकड़ लें, और नाहक झगड़ा करें ताकि उस से हक को दबा दें, तो मैं ने उन्हें पकड़ लिया, सो (देखो) कैसा हुआ मेरा अज़ाब। (5)

और इसी तरह तुम्हारे रब की बात काफ़िरों पर साबित हो गई कि वह दोज़ख़ वाले हैं। (6)

जो फरिश्ते अर्श को उठाए हुए हैं और जो उस के इर्द गिर्द हैं वह तारीफ के साथ पाकीज़गी बयान करते हैं अपने रब की, और वह उस पर ईमान लाते हैं, और ईमान लाने वालों के लिए मग़फ़िरत मांगते हैं कि ऐ हमारे रब! हर शै को समो लिया है (तेरी) रहमत और इल्म ने, सो तू उन लोगों को बख़्श दे जिन्होंने तौबा की, और तेरे रास्ते की पैरवी की, और तू उन्हें जहन्नम के अज़ाब से बचा ले। (7)

وَتَرَى الْمَلَائِكَةَ حَافِينَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۗ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَقِيلَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٧٥﴾									
तारीफ के साथ	पाकीज़गी बयान करते हुए	अर्श के गिर्द	से	हलका बान्धे	फरिश्ते	और तुम देखोगे			
75	परवरदिगार सारे जहानों का	तमाम तारीफें अल्लाह के लिए	और कहा जाएगा	हक के साथ	उन के दरमियान	और फैसला कर दिया जाएगा	अपना रब		
آيَاتُهَا ٨٥ ﴿٤٠﴾ سُورَةُ الْمُؤْمِنِ ﴿٩﴾ رُكُوعَاتُهَا ٩									
(40) सूरतुल मोमिन आयात 85									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है									
حَمَّ ﴿١﴾ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿٢﴾ غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّلُوفِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۗ إِلَيْهِ الْمَصِيرُ ﴿٣﴾ مَا يُجَادِلُ فِي آيَاتِ اللَّهِ إِلَّا الَّذِينَ كَفَرُوا ۗ فَلَا يَغْرُرُكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي الْبِلَادِ ﴿٤﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ ۖ وَالْأَحْزَابِ مِنْ بَعْدِهِمْ ۗ وَهَمَّتْ كُلُّ أُمَّةٍ بِرَسُولِهِمْ لِيَأْخُذُوهُ وَجَادَلُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ فَأَخَذْتُهُمْ ۗ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٥﴾ وَكَذَلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ﴿٦﴾ الَّذِينَ يَحْمِلُونَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ آمَنُوا ۗ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَحْمَةً وَعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ تَابُوا وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿٧﴾									
गुनाह (जमा)	बख़्शने वाला	2	हर चीज़ का जानने वाला	ग़ालिब	अल्लाह से	किताब (कुरआन)	उतारा जाना	1	हा-मीम
उस के सिवा	नहीं कोई माबूद		बड़े फ़ज़ल वाला	शदीद अज़ाब वाला	तौबा	और कुबूल करने वाला			
वह लोग जिन्होंने कुफ़ किया	मगर		अल्लाह की आयात	में	वह नहीं झगड़ते	3	लौट कर जाना	उसी की तरफ़	
नूह (अ) की कौम	इन से क़व्ल		झुटलाया	4	शहरों में	उन का चलना फिरना	सो तुम्हें धोके में न डाल दे		
अपने रसूल के मुतअल्लिक	हर उम्मत		और इरादा बान्धा		उन के बाद	और गिरोह (जमा)			
तो मैं ने उन्हें पकड़ लिया	हक		उस से	ताकि नाचीज़ कर दें, दबा दें	नाहक	और झगड़ा करें	कि वह उसे पकड़ लें		
पर	तुम्हारे रब की		बात	साबित हो गई	और इसी तरह	5	मेरा अज़ाब हुआ	सो कैसा	
अर्श	उठाए हुए हैं		वह जो (फरिश्ते)	6	दोज़ख़ वाले	कि वह	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)		
और मग़फ़िरत मांगते हैं	उस पर		और ईमान लाते हैं	अपना रब	तारीफ के साथ	वह पाकीज़गी बयान करते हैं	और जो उस के इर्द गिर्द		
सो तू बख़्श दे	और इल्म		रहमत	हर शै	समो लिया है	ऐ हमारे रब	वह ईमान लाए	उन के लिए जो	
7	जहन्नम		अज़ाब	और तू उन्हें बचाले	तेरा रास्ता	और उन्होंने ने पैरवी की	वह लोग जिन्होंने ने तौबा की		

٨  
ع  
٥

وقف النبي ﷺ  
١٢

رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّاتٍ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدْتَهُمْ وَمَنْ صَلَحَ						
सालेह है	और जो	तू ने उन से वादा किया	वह जिन का	हमेशगी के बाग़ात	और उन्हें दाख़िल करना	ऐ हमारे रब
مِّنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ						
ग़ालिब	तू ही	वेशक तू	और उन की औलाद	और उन की वीवियां	उन के बाप दादा	से
الْحَكِيمُ ﴿٨﴾ وَقِهِمُ السَّيِّئَاتِ وَمَنْ تَقِ السَّيِّئَاتِ يَوْمَئِذٍ						
उस दिन	बुराइयों	बचा	और जो	बुराइयों	और तू उन्हें बचाले	8 हिक्मत वाला
فَقَدْ رَحِمْتَهُ ۗ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا						
जिन लोगों ने कुफ़ किया	वेशक	9	अज़ीम	कामयाबी	(यही) वह	और यह तो यकीनन तू ने उस पर रहम किया
يُنَادُونَ لِمَلَأْتِ اللَّهُ أَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ						
अपने तई	तुम्हारा बेज़ार होना	से	बहुत बड़ा	अलबत्ता अल्लाह का बेज़ार होना	वह पुकारे जाएंगे	
إِذْ تُدْعَوْنَ إِلَى الْإِيمَانِ فَتَكْفُرُونَ ﴿١٠﴾ قَالُوا رَبَّنَا آمَنَّا						
तू ने हमें मुर्दा रखा	ऐ हमारे रब	वह कहेंगे	10	तो तुम कुफ़ करते थे	ईमान की तरफ़	तुम बुलाए जाते थे जब
أَثْنَيْنِ وَأَحْيَيْنَا ائْتَيْنِ فَأَعْتَرَفْنَا بِذُنُوبِنَا فَهَلْ إِلَى						
तरफ़	तो क्या	अपने गुनाहों का	पस हम ने एतिराफ़ कर लिया	दो बार	और ज़िन्दगी बख़शी हमें तू ने	दो बार
خُرُوجٍ مِّنْ سَبِيلٍ ﴿١١﴾ ذَلِكَ بِأَنَّهُ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ وَحْدَهُ						
वाहिद	पुकारा जाता अल्लाह	इस लिए कि जब	यह तुम (पर)	11	सबील	से-कोई निकलना
كَفَرْتُمْ ۗ وَإِنْ يُشْرِكْ بِهِ تُؤْمِنُوا ۗ فَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ﴿١٢﴾						
12	बड़ा	बुलन्द	पस हुक्म अल्लाह के लिए	तुम मान लेते	उस का शरीक किया जाता	और अगर तुम कुफ़ करते
هُوَ الَّذِي يُرِيكُم آيَاتِهِ وَيُنَزِّلْ لَكُمْ مِّنَ السَّمَاءِ رِزْقًا ۗ						
रिज़्क	आस्मानों से	तुम्हारे लिए	और उतारता है	अपनी निशानियां	तुम्हें दिखाता है	जो कि वह
وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا مَنْ يُنِيبُ ﴿١٣﴾ فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ						
उस के लिए	ख़ालिस करते हुए	पस पुकारो अल्लाह	13	रुजूअ करता है	सिवाए जो	और नहीं नसीहत कुबूल करता
الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ﴿١٤﴾ رَفِيعِ الدَّرَجَاتِ ذُو الْعَرْشِ						
अर्श का मालिक	दरजे	बुलन्द	14	काफ़िर (जमा)	बुरा मानें	अगरचे इबादत
يُلْقَى الرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ لِيُنذِرَ						
ताकि वह डराए	अपने बन्दों (में) से	वह चाहता है	जिस पर	अपने हुक्म से	वह डालता है रूह	
يَوْمَ التَّلَاقِ ﴿١٥﴾ يَوْمَ هُمْ بَارِزُونَ لَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ						
अल्लाह पर	न पोशीदा होंगी	ज़ाहिर होंगे	वह	जिस दिन	15	मुलाकात (कियामत) का दिन
مِنْهُمْ شَيْءٌ ۗ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۗ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿١٦﴾						
16	ज़बरदस्त कहर वाला	वाहिद	अल्लाह के लिए	आज	वादशाहत	किस के लिए कोई शै उन से-की

ऐ हमारे रब! और उन्हें हमेशगी के बाग़ात में दाख़िल फ़रमा, वह जिन का तू ने उन से वादा किया है और (उन को भी) जो सालेह है उन के बाप दादा में से और उन की वीवियों और उन की औलाद में से, वेशक तू ही ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (8)

और उन्हें बुराइयों से बचाले और जो उस दिन बुराइयों से बचा, तो यकीनन तू ने उस पर रहम किया और यही अज़ीम कामयाबी है। (9)

वेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया वह पुकारे जाएंगे (उन्हें पुकार कर कहा जाएगा) कि अल्लाह का बेज़ार होना तुम्हारे अपने तई बेज़ार होने से बहुत बड़ा है, जब तुम ईमान की तरफ़ बुलाए जाते थे तो तुम कुफ़ करते थे। (10)

वह कहेंगे ऐ हमारे रब! तू ने हमें मुर्दा रखा दो बार, और हमें ज़िन्दगी बख़शी दो बार, पस हम ने अपने गुनाहों का एतिराफ़ कर लिया, तो क्या (अब यहां से) निकलने की कोई सबील है? (11)

कहा जाएगा यह तुम पर इस लिए (है) कि जब अल्लाह वाहिद को पुकारा जाता तो तुम कुफ़ करते और अगर (किसी को) उस का शरीक किया जाता तो तुम मान लेते, पस हुक्म अल्लाह के लिए है जो बुलन्द, बड़ा है। (12)

वह जो तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है, और तुम्हारे लिए आस्मान से रिज़्क उतारता है, और नसीहत कुबूल नहीं करता सिवाए जो (अल्लाह की तरफ़) रुजूअ करता है। (13)

पस तुम अल्लाह को पुकारो, उसी के लिए इबादत ख़ालिस करते हुए, अगरचे काफ़िर बुरा मानें। (14)

बुलन्द दरजों वाला, अर्श का मालिक, वह अपने हुक्म से रूह (वाहि) डालता है (भेजता है) जिस पर अपने बन्दों में से चाहता है ताकि वह कियामत के दिन से डराए। (15)

जिस दिन वह ज़ाहिर होंगे, न पोशीदा होंगी अल्लाह पर उन की कोई शै, (निदा होगी) आज किस के लिए है वादशाहत? (एलान होगा) “अल्लाह के लिए” जो वाहिद, ज़बरदस्त कहर वाला है। (16)

ع ١

आज हर शख्स को उस के आमाल का बदला दिया जाएगा, आज कोई जुल्म न होगा, वेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (17) और उन्हें करीब आने वाले रोज़े क़ियामत से डराएँ, जब दिल ग़म से भरे ग़लों के नज़्दीक (कलेजे मुँह को) आ रहे होंगे। ज़ालिमों के लिए नहीं कोई दोस्त, न कोई सिफ़ारिश करने वाला, जिस की बात मानी जाए। (18) वह जानता है आँखों की ख़यानत और जो वह सीनों में छुपाते है। (19) और अल्लाह हक़ के साथ फ़ैसला करता है, और जो लोग उस के सिवा पुकारते हैं वह कुछ भी फ़ैसले नहीं करते, वेशक अल्लाह ही सुनने वाला, देखने वाला है। (20) क्या वह ज़मीन में चले फिरे नहीं? तो वह देखते कैसा अन्जाम हुआ उन लोगों का जो उन से पहले थे, वह कुव्वत में उन से बहुत ज़ियादा सख़्त थे, और ज़मीन में आसार (निशानियों के एतबार से भी), तो अल्लाह ने उन्हें गुनाहों के सबब पकड़ा, और उन के लिए नहीं है कोई अल्लाह से वचाने वाला। (21) इस लिए कि उन के पास उन के रसूल खुली निशानियाँ ले कर आते थे, तो उन्होंने ने कुफ़ किया, पस उन्हें अल्लाह ने पकड़ा, वेशक वह क़्वी, सख़्त अज़ाब देने वाला है। (22) और तहकीक हम ने मूसा (अ) को भेजा अपनी निशानियों और रोशन सनद के साथ। (23) फिरऔन और हामान और कारून की तरफ़ तो उन्होंने ने कहा (मूसा अ तो) जादूगर, बड़ा झूटा है। (24) फिर जब वह उन के पास हमारी तरफ़ से हक़ के साथ आए, तो उन्होंने ने कहा: उन के बेटों को क़त्ल कर डालो जो उस के साथ ईमान लाए, और उन की बेटियों को ज़िन्दा रहने दो, और काफ़िरों का दाओ गुमराही के सिवा (कुछ) नहीं। (25)

الْيَوْمَ تُجْزَى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ إِنَّ اللَّهَ							
वेशक अल्लाह	आज	नहीं जुल्म	वह जो उस ने कमाया (आमाल)	हर शख्स	बदला दिया जाएगा	आज	
سَرِيعُ الْحِسَابِ (١٧) وَأَنْذَرَهُمْ يَوْمَ الْأَرْفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ							
जब दिल (जमा)	करीब आने वाला रोज़ (क़ियामत)	और आप (स) उन्हें डराएँ	17	हिसाब लेने वाला	तेज़		
لَدَى الْحَنَاجِرِ كَاطْمِينٌ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ							
और न कोई सिफ़ारिश करने वाला	दोस्त	से-कोई	नहीं ज़ालिमों के लिए	ग़म से भरे हुए	ग़लों के नज़्दीक		
يُطَاعُ (١٨) يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ (١٩)							
19	सीने (जमा)	छुपाते है	और जो कुछ	आँखों	ख़यानत	वह जानता है	18 जिस की बात मानी जाए
وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ							
उस के सिवा	पुकारते है	और जो लोग	हक़ के साथ	फ़ैसला करता है	और अल्लाह		
لَا يَقْضُونَ بَشَيْءٍ إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ (٢٠) أَوْ لَمْ							
क्या नहीं	20	देखने वाला	सुनने वाला	वही	वेशक अल्लाह	कुछ भी	नहीं फ़ैसले करते
يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ							
उन लोगों का जो	अन्जाम	हुआ	कैसा	तो वह देखते	ज़मीन में	वह चले फिरे	
كَانُوا مِنْ قَبْلِهِمْ كَانُوا هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَآثَارًا							
और आसार	कुव्वत	इन से	ज़ियादा सख़्त	वह	वह थे	इन से पहले	थे
فِي الْأَرْضِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنَ اللَّهِ							
अल्लाह से	उन के लिए	है	और नहीं	उन के गुनाहों के सबब	तो उन्हें पकड़ा अल्लाह	ज़मीन में	
مِنْ وَّاقٍ (٢١) ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ							
खुली निशानियों के साथ	उन के रसूल	उन के पास आते थे	इस लिए कि वह	यह	21	वचाने वाला	से-कोई
فَكَفَرُوا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ إِنَّهُ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ (٢٢)							
22	सख़्त अज़ाब वाला	क़्वी	वेशक वह	पस पकड़ा उन्हें अल्लाह	तो उन्होंने ने कुफ़ किया		
وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَى بِآيَاتِنَا وَسُلْطَنٍ مُبِينٍ (٢٣) إِلَى فِرْعَوْنَ							
फ़िरऔन की तरफ़	23	रोशन	और सनद	अपनी निशानियों के साथ	मूसा (अ)	और तहकीक हम ने भेजा	
وَهَامَانَ وَقَارُونَ فَقَالُوا سَحِرٌ كَذَّابٌ (٢٤) فَلَمَّا جَاءَهُمْ							
वह आए उन के पास	फिर जब	24	बड़ा झूटा	जादूगर	तो उन्होंने ने कहा	और कारून	और हामान
بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا اقْتُلُوا أَبْنَاءَ الَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ							
उस के साथ	ईमान लाए	वह जो	उन के बेटे	तुम क़त्ल करो	उन्होंने ने कहा	हमारे पास (तरफ़) से	हक़ के साथ
وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ وَمَا كَيْدُ الْكٰفِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ (٢٥)							
25	गुमराही में	सिवाए	काफ़िरों	और नहीं दाओ	उन की औरतें (बेटियाँ)	और ज़िन्दा रहने दो	

ع



وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذُرُونِي أَقْتُلْ مُوسَى وَلْيَدْعُ رَبَّهُ ۗ						
अपना रब	और उसे पुकारने दो	मूसा (अ)	मैं कत्ल करूँ	मुझे छोड़ दो	फ़िरऔन	और कहा
إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُبَدِّلَ دِينَكُمْ أَوْ أَنْ يُظْهِرَ فِي الْأَرْضِ						
ज़मीन में	यह कि ज़ाहिर कर दे (फैला दे)	या	तुम्हारा दीन	कि वह बदल दे	वेशक मैं डरता हूँ	
الْفَسَادَ ۗ (26) وَقَالَ مُوسَى إِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ						
और तुम्हारे रब से-की	अपने रब से-की	पनाह ले ली	वेशक मैं	मूसा (अ)	और कहा	26 फ़साद
مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ۗ (27) وَقَالَ رَجُلٌ						
एक मर्द	और कहा	27	रोज़े हिसाब पर	(जो) ईमान नहीं रखता	मगरूर	हर से
مُّؤْمِنٌ ۗ مِّنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ إِيمَانَهُ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا						
एक आदमी	क्या तुम कत्ल करते हो	अपना ईमान	वह छुपाए हुए था	फ़िरऔन के लोग	से	मोमिन
أَنْ يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ مِنْ رَبِّكُمْ ۗ						
तुम्हारे रब की तरफ़ से	खुली निशानियों के साथ	और वह तुम्हारे पास आया है	मेरा रब अल्लाह	कि वह कहता है		
وَإِنْ يَكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ ۗ وَإِنْ يَكُ صَادِقًا يُصِيبْكُمْ						
तुम्हें पहुँचेगा	सच्चा	और अगर है वह	उस का झूट	तो उस पर	झूटा	वह है और अगर
بَعْضُ الَّذِي يَعِدُكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ						
हद से गुज़रने वाला	जो हो	हिदायत नहीं देता	वेशक अल्लाह	तुम से वादा करता है	वह जो	कुछ
كَذَابٌ ۗ (28) يَقَوْمِ لَكُمْ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظَهَرِينَ فِي الْأَرْضِ						
ज़मीन में	ग़ालिब	आज	वादशाहत	तुम्हारे लिए	ऐ मेरी कौम	28 सख्त झूटा
فَمَنْ يَنْصُرُنَا مِنْ بَأْسِ اللَّهِ إِنْ جَاءَنَا ۗ قَالَ فِرْعَوْنُ						
फ़िरऔन	कहा	अगर वह आ जाए हम पर	अल्लाह का अज़ाब	से	हमारी मदद करेगा	तो कौन
مَا أُرِيكُمْ إِلَّا مَا أَرَىٰ وَمَا أَهْدِيكُمْ إِلَّا سَبِيلَ الرَّشَادِ ۗ (29)						
29	भलाई	राह	मगर	और राह नहीं दिखाता तुम्हें	जो मैं देखता हूँ	मैं दिखाता (राए देता) तुम्हें मगर नहीं
وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَوْمَ يَقَوْمِ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ مِثْلَ						
मानिंद	तुम पर	मैं डरता हूँ	ऐ मेरी कौम	ईमान ले आया	वह शख्स जो	और कहा
يَوْمِ الْأَحْزَابِ ۗ (30) مِثْلَ دَابِّ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ						
और समूद	और अ़ाद	कौम नूह	हाल	जैसे	30	(साबिका) गिरोहों का दिन
وَالَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۗ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ۗ (31)						
31	अपने बन्दों के लिए	कोई जुल्म	चाहता	अल्लाह	और नहीं	उन के बाद और जो लोग
وَيَقَوْمِ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ۗ (32)						
32	दिन चीख़ ओ पुकार	तुम पर	मैं डरता हूँ	और ऐ मेरी कौम		

और फ़िरऔन ने कहा: मुझे छोड़ दो कि मैं मूसा (अ) को कत्ल कर दूँ और उसे अपने रब को पुकारने दो, वेशक मैं डरता हूँ कि वह बदल देगा तुम्हारा दीन या ज़मीन में फ़साद फैलाएगा। (26)

और मूसा (अ) ने कहा, वेशक मैं ने पनाह ले ली है अपने और तुम्हारे रब की, हर मगरूर से जो रोज़े हिसाब पर ईमान नहीं रखता। (27)

और कहा फ़िरऔन के लोगों में से एक मोमिन मर्द ने (जो) अपना ईमान छुपाए हुए था, क्या तुम एक आदमी को (महज़ इस बात पर) कत्ल करते हो कि वह कहता है “मेरा रब अल्लाह है” और वह तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से खुली निशानियों के साथ आया है और अगर वह झूटा है तो उस के झूट (का बवाल) उसी पर होगा, और अगर वह सच्चा है तो वह जो तुम से वादा कर रहा है उस का कुछ (अज़ाब) तुम पर (ज़रूर) पहुँचेगा, वेशक अल्लाह (उसे) हिदायत नहीं देता जो हद से गुज़रने वाला, सख्त झूटा। (28)

ऐ मेरी कौम आज वादशाहत तुम्हारी है, तुम ग़ालिब हो ज़मीन में, अगर अल्लाह का अज़ाब हम पर आ जाए तो उस से बचाने के लिए कौन हमारी मदद करेगा? फ़िरऔन ने कहा, मैं तुम्हें राए नहीं देता मगर जो मैं देखता हूँ, और मैं तुम्हें राह नहीं दिखाता मगर भलाई की राह। (29)

और उस शख्स ने कहा जो ईमान ले आया था, ऐ मेरी कौम! मैं तुम पर साबिका गिरोहों के दिन के मानिंद (अज़ाब नाज़िल होने से) डरता हूँ, (30)

जैसे हाल हुआ कौम नूह और अ़ाद और समूद का और जो उन के बाद (हुए) और अल्लाह नहीं चाहता अपने बन्दों के लिए कोई जुल्म। (31)

और ऐ मेरी कौम! मैं तुम पर चीख़ ओ पुकार के दिन से डरता हूँ। (32)

ع ٨

जिस दिन तुम भागोगे पीठ फेर कर, तुम्हारे लिए अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा, और जिस को अल्लाह गुमराह करदे उस के लिए कोई नहीं हिदायत देने वाला। (33) और तहकीक तुम्हारे पास इस से कब्ल यूसुफ़ (अ) वाज़ेह दलाइल के साथ आए, सो तुम हमेशा शक में रहे उस (के बारे में) जिस के साथ वह तुम्हारे पास आए, यहां तक कि जब वह फौत हो गए तो तुम ने कहा: उस के बाद अल्लाह हरगिज़ कोई रसूल न भेजेगा, इसी तरह अल्लाह (उसे) गुमराह करता है जो हद से गुज़रने वाला, शक में रहने वाला हो। (34) जो लोग अल्लाह की आयतों (के बारे में) झगड़ते हैं किसी दलील के वगैर जो उन के पास हो (उन की यह कज बहसी) सख्त ना पसंद है अल्लाह के नज़्दीक और उन के नज़्दीक जो ईमान लाए, इसी तरह अल्लाह हर मगरूर, सरकश के दिल पर मुहर लगा देता है। (35) और फिरऔन ने कहा ऐ हामान! मेरे लिए बुलन्द इमारत बना, शायद कि मैं पहुँच जाऊँ। (36) आस्मानों के रास्ते, पस मैं मूसा (अ) के माबूद को झाँक लूँ, और बेशक मैं उसे झूटा गुमान करता हूँ, और उसी तरह फिरऔन को उस के बुरे अमल आरास्ता दिखाए गए और वह रोक दिया गया सीधे रास्ते से, और फिरऔन की तदवीर सिर्फ़ तवाही ही थी। (37) और जो शख्स ईमान ले आया था, उस ने कहा कि ऐ मेरी कौम! तुम मेरी पैरवी करो, मैं तुम्हें भलाई का रास्ता दिखाऊँगा। (38) ऐ मेरी कौम! इस के सिवा नहीं कि यह दुनिया की ज़िन्दगी थोड़ा सा फाइदा है, और आखिरत बेशक हमेशा रहने का घर है। (39) जिस शख्स ने बुरा अमल किया उसे उस जैसा बदला दिया जाएगा, और जिस ने अच्छा अमल किया, वह खाह मर्द हो या औरत, वशर्त यह कि वह मोमिन हो, तो यही लोग दाखिल होंगे जन्नत में, उस में उन्हें वे हिसाब रिज़क़ दिया जाएगा। (40)

يَوْمَ تُؤْلَوْنَ مُدْبِرِينَ ۖ مَا لَكُمْ مِّنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ ۖ وَمَنْ يُضْلِلِ								
गुमराह कर दे	और जिस को	बचाने वाला	कोई	अल्लाह से	नहीं तुम्हारे लिए	पीठ फेर कर	तुम फिर जाओगे (भागोगे)	जिस दिन
اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۖ (٣٣) وَلَقَدْ جَاءَكُمْ يُوسُفُ مِنْ قَبْلِ								
इस से कब्ल	यूसुफ़ (अ)	और तहकीक आए तुम्हारे पास	33	कोई हिदायत देने वाला	तो नहीं उस के लिए	अल्लाह		
بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا زِلْتُمْ فِي شَكٍّ مِّمَّا جَاءَكُمْ بِهِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ								
तुम ने कहा	वह फौत हो गए	जब	यहां तक	आए तुम्हारे पास जिस के साथ	शक में उस से	सो तुम हमेशा रहे	(वाज़ेह) दलाइल के साथ	
لَنْ يَبْعَثَ اللَّهُ مِنْ بَعْدِهِ رَسُولًا ۚ كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَنْ هُوَ								
जो वह	गुमराह करता है अल्लाह	इसी तरह	कोई रसूल	उस के बाद	हरगिज़ न भेजेगा अल्लाह			
مُسْرِفٌ مُّرْتَابٍ ۖ (٣٤) الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَنٍ								
वगैर किसी दलील	अल्लाह की आयतों	में	झगड़ा करते हैं	जो लोग	34	शक में रहने वाला	हद से गुज़रने वाला	
أَتَهُمْ ۗ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ الَّذِينَ آمَنُوا ۗ كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ								
मुहर लगा देता है अल्लाह	इसी तरह	ईमान लाए	उन लोगों के जो	और नज़्दीक	अल्लाह के नज़्दीक	सख्त ना पसंद	आई उन के पास	
عَلَىٰ كُلِّ قَلْبٍ مُّتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ۖ (٣٥) وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَهْمُنُ ابْنُ								
बना दे तो	ऐ हामान	फिरऔन	और कहा	35	सरकश	मगरूर	हर दिल	पर
لِي صِرْحًا لَّعَلِّي أَبْلُغُ الْأَسْبَابَ ۖ (٣٦) أَسْبَابَ السَّمَوَاتِ فَاتَّلِعَ								
पस झाँक लूँ	आस्मानों	रास्ते	36	रास्ते	पहुँच जाऊँ	शायद कि मैं	एक (बुलन्द) महल	मेरे लिए
إِلَىٰ إِلَهٍ مُّوسَىٰ وَإِنِّي لَأَظُنُّهُ كَاذِبًا ۖ وَكَذَلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ								
फिरऔन को	आरास्ता दिखाए गए	और उसी तरह	झूटा	उसे अलबत्ता गुमान करता हूँ	और बेशक मैं	मूसा (अ) का माबूद	तरफ़, को	
سُوءَ عَمَلِهِ وَضَدَّ عَنِ السَّبِيلِ ۖ وَمَا كِيدُ فِرْعَوْنَ إِلَّا فِي تَبَابٍ ۖ (٣٧)								
37	मगर (सिर्फ़) तवाही में	फिरऔन	और नहीं तदवीर	सीधा रास्ता	से	और वह रोक दिया गया	उस के बुरे अमल	
وَقَالَ الَّذِينَ آمَنَ يَقَوْمِ اتَّبِعُونِ أَهْدِكُمْ سَبِيلَ الرَّشَادِ ۖ (٣٨)								
38	भलाई	रास्ता	मैं तुम्हें राह दिखाऊँगा	तुम मेरी पैरवी करो	ऐ मेरी कौम	वह जो ईमान ले आया था	और कहा	
يَقَوْمِ إِنَّمَا هَذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ۚ وَإِنَّ الْآخِرَةَ هِيَ								
वह	आखिरत	और बेशक	(थोड़ा) फाइदा	दुनिया की ज़िन्दगी	यह	इस के सिवा नहीं	ऐ मेरी कौम	
دَارُ الْقَرَارِ ۖ (٣٩) مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزَىٰ إِلَّا مِثْلَهَا ۖ وَمَنْ								
और जो-जिस	उसी जैसा	मगर	उसे बदला न दिया जाएगा	बुरा	अमल किया	जो-जिस	39	(हमेशा) रहने का घर
عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ								
तो यही लोग	और (वशर्त यह कि) वह मोमिन	या औरत	मर्द	से	अच्छा	अमल किया		
يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُونَ فِيهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ۖ (٤٠)								
40	वे हिसाब	उस में	वह रिज़क़ दिए जाएंगे	जन्नत	दाखिल होंगे			

٢٤

وَيَقُومُ مَا لِيّ أَدْعُوكُمْ إِلَى النَّجْوَةِ وَتَدْعُونَنِي إِلَى النَّارِ (٤١)	आग (जहन्नम)	तरफ़	और बुलाते हो तुम मुझे	नजात	तरफ़	मैं बुलाता हूँ तुम्हें	क्या हुआ मुझे	और ऐ मेरी कौम
	41							
تَدْعُونَنِي لِأَكْفُرَ بِاللَّهِ وَأَشْرِكَ بِهِ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ	कोई इल्म	उस का	मुझे	नहीं	जो	उस के साथ	और मैं शरीक ठहराऊँ	अल्लाह का
وَأَنَا أَدْعُوكُمْ إِلَى الْعَزِيزِ الْعَفَّارِ (٤٢) لَا جَرَمَ أَنَّمَا تَدْعُونَنِي	तम बुलाते हो मुझे	यह कि	कोई शक नहीं	42	बख़शने वाला	ग़ालिब	तरफ़	बुलाता हूँ तुम्हें और मैं
إِلَيْهِ لَيْسَ لَهُ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْآخِرَةِ وَأَنْ مَرَدَّنَا	फिर जाना है हमें	और यह कि	आखिरत में	और न	दुनिया में	बुलाना	नहीं उस के लिए	उस की तरफ़
إِلَى اللَّهِ وَأَنَّ الْمُسْرِفِينَ هُمْ أَصْحَابُ النَّارِ (٤٣) فَسَتَذْكُرُونَ	सो तुम जल्द याद करोगे	43	आग वाले (जहन्नमी)	वह-वही	हद से बढ़ने वाले	और यह कि	अल्लाह की तरफ़	
مَا أَقُولُ لَكُمْ وَأَفْوِضُ أَمْرِي إِلَى اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بَصِيرٌ	देखने वाला	वेशक अल्लाह	अल्लाह को	अपना काम	और मैं सौपता हूँ	तुम्हें	जो मैं कहता हूँ	
بِالْعِبَادِ (٤٤) فَوَقَّعَهُ اللَّهُ سَيِّئَاتٍ مَا مَكَرُوا وَحَاقَ	और घेर लिया	दाओ जो वह करते थे	बुराइयां	सो उसे बचा लिया अल्लाह ने	44	बन्दों को		
بِالْفِرْعَوْنَ سُوءِ الْعَذَابِ (٤٥) النَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا	उस पर	वह हाज़िर किए जाते हैं	आग	45	बुरा अज़ाब	फिरऔन वालों को		
غُدُوًّا وَعَشِيًّا وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا	दाखिल करो तुम	क़ियामत	काइम होगी	और जिस दिन	और शाम	सुबह		
الْفِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ (٤٦) وَإِذْ يَتَحَاجُّونَ فِي النَّارِ	आग (जहन्नम) में	वह वाहम झगड़ेंगे	और जब	46	अज़ाब	शदीद तरीन	फिरऔन वाले	
فَيَقُولُ الضُّعْفَاءُ لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ	तुम्हारे	वेशक हम थे	वह बड़े बनते थे	उन लोगों को जो	कमज़ोर	तो कहेंगे		
تَبَعًا فَهَلْ أَنْتُمْ مُّغْنُونَ عَنَّا نَصِيبًا مِّنَ النَّارِ (٤٧)	47	आग	से-का	कुछ हिस्सा	हम से	दूर कर दोगे	तुम	तो क्या तावे
قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُلٌّ فِيهَا إِنَّ اللَّهَ قَدِ حَكَمَ	फैसला कर चुका है	वेशक अल्लाह	इस में	सब	वेशक हम	बड़े बनते थे	वह लोग जो	कहेंगे
بَيْنَ الْعِبَادِ (٤٨) وَقَالَ الَّذِينَ فِي النَّارِ لِخَازِنَةِ جَهَنَّمَ	जहन्नम	निगहवान दारोगा (जमा) को	आग में	वह लोग जो	और कहेंगे	48	बन्दों के दरमियान	
ادْعُوا رَبَّكُمْ يَخْفَفُ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ (٤٩)	49	से-का अज़ाब	एक दिन	हम से	हल्का कर दे	अपने रब से	तुम दुआ करो	

और ऐ मेरी कौम! यह क्या बात है कि मैं तुम्हें नजात की तरफ़ बुलाता हूँ और तुम मुझे जहन्नम की तरफ़ बुलाते हो। (41) तुम मुझे बुलाते हो कि मैं अल्लाह का इन्कार करूँ और उस के साथ उसे शरीक ठहराऊँ जिस का मुझे कोई इल्म नहीं और मैं तुम्हें ग़ालिब बख़शने वाले (अल्लाह) की तरफ़ बुलाता हूँ। (42) कोई शक नहीं कि तुम मुझे जिस की तरफ़ बुलाते हो उस का दुनिया में और आखिरत में (कुछ भी) नहीं और यह कि हमें फिर जाना है अल्लाह की तरफ़, और यह कि हद से बढ़ जाने वाले ही जहन्नमी हैं। (43) सो तुम जल्दी याद करोगे जो मैं तुम्हें कहता हूँ और मैं अपना काम (मामला) अल्लाह को सौपता हूँ, वेशक अल्लाह बन्दों को देखने वाला है। (44) सो अल्लाह ने उसे बचा लिया (उन) वुरे दाओ से जो वह करते थे, और फिरऔन वालों को वुरे अज़ाब ने घेर लिया। (45) (जहन्नम की) आग जिस पर वह सुबह ओ शाम पेश किए जाते हैं, और जिस दिन क़ियामत काइम होगी (हुकम होगा कि) तुम दाखिल करो फिरऔन वालों को शदीद तरीन अज़ाब में। (46) और जब वह जहन्नम में वाहम झगड़ेंगे तो कहेंगे कमज़ोर उन लोगों को जो बड़े बनते थे: वेशक हम (दुनिया में) तुम्हारे मातहत थे तो क्या (अब) तुम दूर कर दोगे हम से आग का कुछ हिस्सा? (47) वह लोग जो बड़े बनते थे कहेंगे: वेशक हम सब इस में हैं, वेशक अल्लाह बन्दों के दरमियान फैसला कर चुका है। (48) और वह लोग जो आग में होंगे वह कहेंगे दारोगों (जहन्नम के निगहवान फ़रिशतों) को: अपने रब से दुआ करो, एक दिन का अज़ाब हम से हल्का कर दे। (49)

वह कहेंगे, क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल खुली निशानियों के साथ नहीं आए थे? वह कहेंगे हाँ! वह कहेंगे तो तुम पुकारो, और न होगी काफ़िरों की पुकार मगर बेसूद। (50)

वेशक हम ज़रूर मदद करते हैं अपने रसूलों की और उन लोगों की जो ईमान लाए दुनिया की ज़िन्दगी में और (उस दिन भी) जिस दिन गवाही देने वाले खड़े होंगे। (51)

जिस दिन ज़ालिमों को नफ़ा न देगी उन की उज़्र खाही, और उन के लिए लानत (अल्लाह की रहमत से दूरी) है और उन के लिए बुरा घर है। (52)

और तहकीक़ हम ने मूसा (अ) को हिदायत (तौरेत) दी और हम ने बनी इस्राईल को तौरेत का वारिस बनाया। (53)

(जो) अक्ल मन्दों के लिए हिदायत और नसीहत है। (54)

पस आप (स) सव्र करें, वेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, और अपने कुसूरों के लिए मग़फ़िरत तलब करें, और अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करें शाम और सुबह। (55)

वेशक जो लोग अल्लाह की आयात में झगड़ते हैं वग़ैर किसी सनद के, जो उन के पास आई हो, उन के दिलों में तकबुर (बड़ाई की हवस) के सिवा कुछ नहीं, जिस तक वह कभी पहुँचने वाले नहीं। पस आप अल्लाह की पनाह चाहें, वेशक वही सुनने वाला देखने वाला है। (56)

यकीनन आस्मानों का और ज़मीन का पैदा करना लोगों के पैदा करने से बहुत बड़ा है, लेकिन अक्सर लोग समझते नहीं। (57)

और बराबर नहीं नाबीना और बीना, और (न) वह जो ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अ़मल किए, और न वह जो बदकार हैं। बहुत कम तुम ग़ौर ओ फ़िक्र करते हो। (58)

قَالُوا أَوْ لَمْ تَكُ تَأْتِيكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا بَلَىٰ							
हाँ	वह कहेंगे	निशानियों के साथ	तुम्हारे रसूल	तुम्हारे पास आते	क्या नहीं थे	वह कहेंगे	
قَالُوا فَادْعُوا وَمَا دُعَاؤُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ (٥٠)							
50	गुमराही में (बेसूद)	मगर	काफ़िर (जमा)	पुकार	और न	तो तुम पुकारो	वह कहेंगे
إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا							
दुनिया	ज़िन्दगी	में	ईमान लाए	और जो लोग	अपने रसूल (जमा)	ज़रूर मदद करते हैं	वेशक हम
وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ (٥١) يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظَّالِمِينَ							
ज़ालिम (जमा)	नफ़ा न देगी	जिस दिन	51	गवाही देने वाले	खड़े होंगे	और जिस दिन	
مَعَذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ (٥٢) وَلَقَدْ آتَيْنَا							
और तहकीक़ हम ने दी	52	बुरा घर (ठिकाना)	और उन के लिए	लानत	और उन के लिए	उन की उज़्र खाही	
مُوسَىٰ الْهُدَىٰ وَأَوْرَثْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ (٥٣)							
53	किताब (तौरेत)	बनी इस्राईल	और हम ने वारिस बनाया	हिदायत	मूसा (अ)		
هُدَىٰ وَذِكْرَىٰ لِأُولَى الْأَلْبَابِ (٥٤) فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ							
अल्लाह का वादा	वेशक	पस आप (स) सव्र करें	54	अक्ल मन्दों के लिए	और नसीहत	हिदायत	
حَقٌّ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ							
अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ	और पाकीज़गी बयान करें	अपने गुनाहों के लिए	और मग़फ़िरत तलब करें	सच्चा			
بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ (٥٥) إِنَّ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ							
अल्लाह की आयात	में	झगड़ते हैं	वह लोग जो	वेशक	55	और सुबह	शाम
بِغَيْرِ سُلْطَانٍ أَتَاهُمْ إِلَّا فِي ضَدُّورِهِمْ إِلَّا كِبْرٌ							
तकबुर	सिवाए	उन के सीने (दिल)	में	नहीं	उन के पास आई हो	किसी सनद	वग़ैर
مَّا هُمْ بِبَالِغِيهِ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ							
वही सुनने वाला	वेशक वह	अल्लाह की	पस आप (स) पनाह चाहें	उस तक पहुँचने वाले	नहीं वह		
الْبَصِيرُ (٥٦) لَخَلْقِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ							
से	बहुत बड़ा	और ज़मीन	आस्मानों	यकीनन पैदा करना	56	देखने वाला	
خَلْقِ النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ (٥٧)							
57	जानते (समझते) नहीं	अक्सर लोग	और लेकिन	लोगों को पैदा करना			
وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ وَالَّذِينَ آمَنُوا							
और जो लोग ईमान लाए	और बीना	नाबीना	और बराबर नहीं				
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَلَا الْمُسِيءُ قَلِيلًا مَّا تَتَذَكَّرُونَ (٥٨)							
58	जो तुम ग़ौर ओ फ़िक्र करते हो	बहुत कम	और न बदकार	और उन्होंने ने अच्छे अ़मल किए			

٥  
١٠

إِنَّ السَّاعَةَ لَأْتِيَةٌ لَا رَيْبَ فِيهَا وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٥٩﴾ وَقَالَ رَبُّكُمْ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ						
लोग	अक्सर	और लेकिन	इस में	नहीं शक	ज़रूर आने वाली	क़ियामत
तुम्हारी	मैं कुबूल करूँगा	तुम दुआ करो मुझ से	तुम्हारे रब ने	और कहा	59	ईमान नहीं लाते
إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دُخْرَيْنَ ﴿٦٠﴾ اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ الَّيْلَ لَتَسْكُنُوا فِيهِ						
जहन्नम	अनक़रीब वह दाख़िल होंगे	मेरी इबादत	से	तकबुर करते हैं	जो लोग	वेशक
उस में	ताकि तुम सुकून हासिल करो	रात	तुम्हारे लिए	बनाई	वह जिस ने	अल्लाह 60 ख़ार हो कर
وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٦١﴾ ذِكْرُكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَآئِنِ تُؤْفَكُونَ كَذَلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِينَ كَانُوا بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ﴿٦٢﴾						
लोगों पर	फ़ज़ल वाला	वेशक अल्लाह	दिखाने को	और दिन		
पैदा करने वाला	तुम्हारा रब	अल्लाह	यह है	61	शुक्र नहीं करते	अक्सर लोग और लेकिन
इसी तरह	62	उलटे फिर जाते हो	तो कहां तुम	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	हर शै
अल्लाह	63	वह इन्कार करते हैं	अल्लाह की आयात से-का	थे	वह लोग जो	उलटे फिर जाते हैं
और तुम्हें सूरत दी	छत	और आस्मान	करारगाह	ज़मीन	तुम्हारे लिए	बनाया वह जिस ने
यह है	पाकीज़ा चीज़ें	से	और तुम्हें रिज़ूक दिया	तुम्हें सूरत दी	तो बहुत ही हसीन	
वही	64	परवरदिगार सारे जहानों का	सो बरकत वाला है अल्लाह	अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार		
उस के लिए दीन	ख़ालिस कर के	पस तुम पुकारो उसे	सिवाए उस के	नहीं कोई माबूद	ज़िन्दा रहने वाला	
कि परसूतिश करूँ मैं	मुझे मना कर दिया गया है	वेशक मैं	आप (स) फ़रमा दें	65	परवरदिगार सारे जहानों का	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए
खुली निशानियां	वह मेरे पास आ गई	जब	अल्लाह के सिवा	तुम पूजा करते हो	वह जिन की	
66	परवरदिगार के लिए तमाम जहानों का	कि मैं अपनी गर्दन झुका दूँ	और मुझे हुक़्म दिया गया	मेरे रब से		

वेशक क़ियामत ज़रूर आने वाली है, इस में कोई शक नहीं, लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (59) और तुम्हारे रब ने कहा: तुम मुझ से दुआ करो, मैं तुम्हारी (दुआ) कुबूल करूँगा, वेशक जो लोग मेरी इबादत से तकबुर (सरताबी) करते हैं अनक़रीब ख़ार हो कर वह जहन्नम में दाख़िल होंगे। (60) अल्लाह वह है जिस ने बनाई तुम्हारे लिए रात ताकि तुम उस में सुकून हासिल करो और दिन दिखाने को (रोशन बनाया), वेशक अल्लाह फ़ज़ल वाला है लोगों पर और लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। (61) यह है अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार, हर शै का पैदा करने वाला, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, तो तुम कहां उलटे फिर जाते हो? (62) इसी तरह वह लोग उलटे फिर जाते हैं जो अल्लाह की आयात का इन्कार करते हैं। (63) अल्लाह, जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को करारगाह बनाया और आस्मान को छत (बनाया) और तुम्हें सूरत दी तो बहुत ही हसीन सूरत दी, और तुम्हें पाकीज़ा चीज़ों से रिज़ूक दिया, यह है अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार, सो बरकत वाला है अल्लाह, सारे जहां का परवरदिगार। (64) वही ज़िन्दा रहने वाला है, नहीं कोई माबूद उस के सिवा, पस तुम उसी को पुकारो उस के लिए दीन ख़ालिस करके, तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, सारे जहान का परवरदिगार। (65) आप (स) फ़रमा दें: वेशक मुझे मना कर दिया गया है कि मैं उन की परसूतिश करूँ जिन की तुम अल्लाह के सिवा पूजा करते हो, जब मेरे पास आ गईं मेरे रब (की तरफ़) से खुली निशानियां, और मुझे हुक़्म दिया गया है कि तमाम जहानों के परवरदिगार के लिए अपनी गर्दन झुका दूँ, (66)

٦  
ع  
١١

वह जिस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फे से, फिर लोथड़े से, फिर वह तुम्हें निकालता है (माँ के पेट से) वच्चा सा, फिर (तुम्हें बाकी रखता है) ताकि तुम अपनी जवानी को पहुँचो, फिर (ज़िन्दा रखता है) ताकि तुम बूढ़े हो जाओ और तुम में से (कोई है) जो फौत हो जाता है उस से क़ब्ल, और ताकि तुम सब (अपने अपने) वक्ते मुक़र्ररा को पहुँचो और ताकि तुम समझो। (67)

वही है जो ज़िन्दगी अ़ता करता है और मारता है, फिर जब वह किसी अमर का फ़ैसला करता है तो उस के सिवा नहीं कि वह उस को कहता है “हो जा” सो वह हो जाता है। (68) क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो अल्लाह की आयात में झगड़ते हैं? वह कहां फिरे जाते (भटकते) हैं? (69) जिन लोगों ने किताब को झुटलाया और उसे जिस के साथ हम ने अपने रसूलों को भेजा, पस वह जल्द जान लेंगे। (70)

जब उन की गर्दनों में तौक़ और ज़नज़ीरें होंगी, वह घसीटे जाएंगे। (71) खौलते हुए पानी में, फिर वह आग (जहन्नम) में झोंक दिए जाएंगे। (72)

फिर कहा जाएगा उन को, कहां है वह जिन को तुम अल्लाह के सिवा शरीक करते थे? (73) वह कहेंगे वह तो हम से गुम हो गए (कहीं नज़र नहीं आते) बल्कि हम तो इस से क़ब्ल किसी चीज़ को पुकारते ही न थे, इसी तरह अल्लाह काफ़िरों को गुमराह करता है। (74) यह उस का बदला है जो तुम ज़मीन में नाहक़ खुश होते (फिरते) थे, और बदला है उस का जिस पर तुम इतराते थे। (75)

तुम जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, हमेशा उस में रहने को, सो बड़ा बनने वालों का बुरा है ठिकाना। (76) पस आप (स) सव्र करें, वेशक़ अल्लाह का वादा सच्चा है, पस अगर हम आप को उस (अज़ाब) का कुछ हिस्सा दिखा दें जो हम उन से वादा करते हैं या (उस से क़ब्ल) हम आप को वफ़ात दे दें (बहर सूरत) वह हमारी ही तरफ़ लौटाए जाएंगे। (77)

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ							
लोथड़े से	फिर	नुत्फे से	फिर	मिट्टी से	पैदा किया तुम्हें	वह जिस ने	
ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوا أَشْدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُونُوا شُيُوخًا							
बूढ़े	ताकि तुम हो जाओ	फिर	अपनी जवानी	ताकि तुम पहुँचो	फिर	वच्चा सा	तुम्हें निकालता है वह
وَمِنْكُمْ مَنْ يُتَوَفَّى مِنْ قَبْلٍ وَلِتَبْلُغُوا أَجَلًا مُّسَمًّى وَلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ							
और ताकि तुम	वक्ते मुक़र्ररा	और ताकि तुम पहुँचो	उस से क़ब्ल	जो फौत हो जाता है	और तुम में से		
تَعْقِلُونَ ﴿٦٧﴾ هُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ فَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا							
तो इस के सिवा नहीं	किसी अमर	वह फ़ैसला करता है	फिर जब	और मारता है	ज़िन्दगी अ़ता करता है	वही है जो	67
يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٦٨﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي							
में	झगड़ते हैं	जो लोग	तरफ़	क्या नहीं देखा तुम ने	68	सो वह हो जाता है	हो जा
آيَاتِ اللَّهِ أَنِّي يُصْرَفُونَ ﴿٦٩﴾ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِالْكِتَابِ وَبِمَا							
और उस को जो	किताब को	झुटलाया	जिन लोगों ने	69	फिरे जाते हैं	कहां	अल्लाह की आयात
أَرْسَلْنَا بِهِ رُسُلَنَا فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٧٠﴾ إِذِ الْأَغْلَالُ							
तौक़ (जमा)	जब	70	वह जान लेंगे	पस जल्द	अपने रसूल	उस के साथ	हम ने भेजा
فِي أَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلْسِلُ يُسْحَبُونَ ﴿٧١﴾ فِي الْحَمِيمِ ثُمَّ							
फिर	खौलते हुए पानी में	71	वह घसीटे जाएंगे	और ज़नज़ीरें	उन की गर्दनों में		
فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ ﴿٧٢﴾ ثُمَّ قِيلَ لَهُمْ آيِنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُونَ ﴿٧٣﴾							
73	शरीक करते	जिन को तुम थे	कहां	उन को	कहा जाएगा	72	वह झोंक दिए जाएंगे
مِنْ دُونِ اللَّهِ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا بَلْ لَمْ نَكُنْ نَدْعُوا							
पुकारते थे हम		नहीं	बल्कि	हम से	वह गुम हो गए	वह कहेंगे	अल्लाह के सिवा
مِنْ قَبْلُ شَيْئًا كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ الْكَافِرِينَ ﴿٧٤﴾ ذَلِكُمْ بِمَا							
उस का बदला जो	यह	74	काफ़िरों	गुमराह करता है अल्लाह	इसी तरह	कोई चीज़	इस से क़ब्ल
كُنْتُمْ تَفْرَحُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُونَ ﴿٧٥﴾							
75	इतराते	तुम थे	और बदला उस का जो	नाहक़	ज़मीन में	तुम खुश होते थे	
أُدْخِلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا فَبِئْسَ مَثْوَىٰ							
ठिकाना	सो बुरा	उस में	हमेशा रहने को	जहन्नम	दरवाज़े	तुम दाख़िल हो जाओ	
الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٧٦﴾ فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَمَا نُرِيدُكَ							
हम आप (स) को दिखा दें	पस अगर	सच्चा	अल्लाह का वादा	वेशक़	आप सव्र करें	76	तकबुर करने (बड़ा बनने) वालों का
بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَالْيَنَّا يُرْجَعُونَ ﴿٧٧﴾							
77	वह लौटाए जाएंगे	पस हमारी तरफ़	हम आप (स) को वफ़ात दे दें	या	हम उन से वादा करते हैं	वह जो	वाज़ (कुछ हिस्सा)

ع ١٢  
عند التّائخرين ١٣  
معاينة ١٣

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّن قَصَصْنَا عَلَيْكَ							
आप (स) पर - से	हम ने हाल बयान किया	जो - जिन	उन में से	आप (स) से पहले	बहुत से रसूल	और तहकीक हम ने भेजे	
وَمِنْهُمْ مَّن لَّمْ نَقْضْ عَلَيْكَ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ يَأْتِيَ							
वह जाए	कि	किसी रसूल के लिए	और न था	आप (स) पर - से	हम ने हाल नहीं बयान किया	जो - जिन	और उन में से
بَيِّتٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ فَإِذَا جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ							
और घाटे में रह गए	हक के साथ	फैसला कर दिया गया	अल्लाह का हुकम	आ गया	सो जब	अल्लाह के हुकम से	मगर - बगैर कोई निशानी
هُنَالِكَ الْمُبْطِلُونَ ﴿٧٨﴾ اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ الْأَنْعَامَ							
चौपाए	तुम्हारे लिए	बनाए	वह जिस ने	अल्लाह	78	अहले वातिल	उस वक़्त
لِتَرْكَبُوا مِنْهَا وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٧٩﴾ وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ							
बहुत से फाइदे	उन में	और तुम्हारे लिए	79	तुम खाते हो	और उन से	उन से	ताकि तुम सवार हो
وَلِتَبْلُغُوا عَلَيْهَا حَاجَةً فِي صُدُورِكُمْ وَعَلَيْهَا							
और उन पर	तुम्हारे सीनों (दिलों में)	हाजत	उन पर	और ताकि तुम पहुँचो			
وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ﴿٨٠﴾ وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ ۗ فَآيَ آيَاتِ اللَّهِ تُنْكِرُونَ ﴿٨١﴾							
81	तुम इन्कार करोगे	अल्लाह की निशानियों का	तो किन किन	अपनी निशानियां	और वह दिखाता है तुम्हें	80	लदे फिरते हो और कशतियों पर
أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ							
अन्जाम	हुआ	कैसा	तो वह देखते	ज़मीन में	पस क्या वह चले फिरे नहीं		
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ كَانُوا أَكْثَرَ مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً							
कृव्वत	और बहुत ज़ियादा	इन से	बहुत ज़ियादा	वह थे	इन से क़व्व	उन लोगों का जो	
وَأَنَارًا فِي الْأَرْضِ فَمَا أَعْنَى عَنْهُمْ مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٢﴾							
82	वह कमाते (करते) थे	जो	उन के	वह काम आया	सो न	ज़मीन में	और आसार
فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَرِحُوا بِمَا عِنْدَهُمْ مِنَ الْعِلْمِ							
इल्म से	उन के पास	खुश हुए (इतराने लगे) उस पर जो	खुली निशानियों के साथ	उन के रसूल	उन के पास आए	फिर जब	
وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٨٣﴾ فَلَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا							
हमारा अज़ाब	उन्होंने ने देखा	फिर जब	83	मज़ाक उड़ाते	उस का	थे जो वह	उन्हें और घेर लिया
قَالُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهِ مُشْرِكِينَ ﴿٨٤﴾							
84	शरीक करते	उस के साथ	हम थे	वह जिस	और हम मुन्किर हुए	वह वाहिद	अल्लाह पर हम ईमान लाए वह कहने लगे
فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا سُنَّتَ اللَّهُ							
अल्लाह का दस्तूर	हमारा अज़ाब	जब उन्होंने ने देख लिया	उन का ईमान	उन को नफ़ा देता	तो न हुआ		
الَّتِي قَدْ خَلَتْ فِي عِبَادِهِ ۗ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكَافِرُونَ ﴿٨٥﴾							
85	काफिर (जमा)	उस वक़्त	और घाटे में रह गए	उस के बन्दों में	गुज़र चुका है	वह जो	

और तहकीक हम ने आप (स) से पहले बहुत से रसूल भेजे, उन में से (कुछ हैं) जिन का हाल हम ने आप से बयान किया और उन में से (कुछ हैं) जिन का हाल हम ने आप से बयान नहीं किया, और किसी रसूल के लिए (मक़दूर) न था कि वह कोई निशानी अल्लाह के हुकम के बगैर ले आए, सो जब अल्लाह का हुकम आ गया, हक के साथ फैसला कर दिया गया, और अहले वातिल उस वक़्त घाटे में रह गए। (78) अल्लाह (ही) है जिस ने तुम्हारे लिए चौपाए बनाए। ताकि तुम सवार हो उन में से (बाज़ पर), और उन में से (बाज़) तुम खाते हो, (79) और तुम्हारे लिए उन में बहुत से फाइदे हैं और ताकि तुम उन पर (सवार हो कर) अपने दिलों की मुराद (मन्ज़िले मकसूद) को पहुँचो और उन पर और कशतियों पर तुम लदे फिरते हो। (80) और वह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है, तुम अल्लाह की किन किन निशानियों का इन्कार करोगे? (81) पस क्या वह ज़मीन में चले फिरे नहीं? तो वह देखते कि कैसा हुआ अन्जाम उन लोगों का जो उन से क़व्व थे, वह तादाद और कृव्वत में इन से बहुत ज़ियादा थे, और वह ज़मीन में (इन से बड़ चढ़ कर) आसार (छोड़ गए) सो जो वह करते थे उन के (कुछ) काम न आया। (82) फिर जब उन के पास उन के रसूल खुली निशानियों के साथ आए तो वह उस इल्म पर इतराने लगे जो उन के पास था और उन्हें उस (अज़ाब) ने घेर लिया जिस का वह मज़ाक उड़ाते थे। (83) फिर जब उन्होंने ने हमारा अज़ाब देखा तो वह कहने लगे हम अल्लाह वाहिद पर ईमान लाए और हम उस के मुन्किर हुए जिस को हम उस के साथ शरीक करते थे। (84) तो (उस वक़्त ऐसा) न हुआ कि उन का ईमान उन को नफ़ा देता जब उन्होंने ने हमारा अज़ाब देख लिया, अल्लाह का दस्तूर है जो उस के बन्दों में गुज़र चुका (होता चला आया है) और उस वक़्त काफिर घाटे में रह गए। (85)

ع 13

ع 13

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है हा-मीम। (1)

(यह कलाम) नाज़िल किया हुआ है निहायत मेहरवान रहम करने वाले (अल्लाह की तरफ) से। (2)

यह एक किताब है जिस की आयतें वाज़ेह कर दी गई हैं, कुरआन अरबी ज़बान में उन लोगों के लिए जो जानते हैं। (3)

खुशखबरी देने वाला, डर सुनाने वाला, सो उन में से अकसर ने मुँह फेर लिया, पस वह सुनते नहीं। (4)

और उन्होंने ने कहा कि हमारे दिल पर्दों में हैं उस (बात) से जिस की तरफ़ तुम हमें बुलाते हो, और हमारे कानों में गिरानी है, और हमारे और तुम्हारे दरमियान एक पर्दा है, सो तुम अपना काम करो, वेशक हम अपना काम करते हैं। (5)

आप (स) फ़रमा दें, इस के सिवा नहीं कि मैं तुम जैसा एक बशर हूँ, मेरी तरफ़ वहि की जाती है कि तुम्हारा माबूद, माबूदे यकता है, पस सीधे रहो उस के हुज़ूर और उस से मग़फ़िरत मांगो, और ख़राबी है मुश्रिकों के लिए। (6)

वह जो ज़कात नहीं देते और वह आख़िरत के मुन्किर हैं। (7)

वेशक जो लोग ईमान लाए, और उन्होंने ने अच्छे अमल किए, उन के लिए अजर है न ख़तम होने वाला। (8)

आप (स) फ़रमा दें क्या तुम उस का इन्कार करते हो जिस ने ज़मीन को दो (2) दिनों में पैदा किया और तुम उस के शरीक ठहराते हो, यही है सारे ज़हानों का रब। (9)

और उस ने उस (ज़मीन) में बनाए उस के ऊपर पहाड़, और उस में बरकत रखी, और उस में चार (4) दिनों में उन की ख़ुराकें मुक़र्रर की, यकसां तमाम सवाल करने वालों के लिए। (10)

फिर उस ने आस्मान की तरफ़ तबज़ुह फ़रमाई, और वह एक धुआं था, तो उस ने उस से और ज़मीन से कहा तुम दोनों आओ खुशी से या नाखुशी से, उन दोनों ने कहा, हम दोनों खुशी से हाज़िर हैं। (11)

آيَاتُهَا ٥ \* (٤١) سُورَةُ حَمِ السَّجْدَةِ \* رُكُوعَاتُهَا ٦

रुक़ात 6

(41) सूरह हा-मीम सजदा

आयात 54

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

حَمِ (١) تَنْزِيلٌ مِّنَ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ (٢) كِتَابٌ فُصِّلَتْ آيَاتُهُ قُرْآنًا

कुरआन	जुदा जुदा (वाज़ेह) कर दी गई उस की आयतें	एक किताब	2	रहम करने वाला	निहायत मेहरवान	से	नाज़िल किया हुआ	1	हा-मीम
-------	---	----------	---	---------------	----------------	----	-----------------	---	--------

عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ (٣) بَشِيرًا وَنَذِيرًا فَأَعْرَضَ أَكْثَرُهُمْ فَهُمْ

पस वह	उन में से अकसर	सो मुँह फेर लिया	और डर सुनाने वाला	खुशखबरी देने वाला	3	वह जानते हैं	उन लोगों के लिए	अरबी (ज़बान) में
-------	----------------	------------------	-------------------	-------------------	---	--------------	-----------------	------------------

لَا يَسْمَعُونَ (٤) وَقَالُوا قُلُوبُنَا فِي أَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُونَا إِلَيْهِ

उस की तरफ	तुम बुलाते हो हमें	उस से जो	पर्दों में	हमारे दिल	और उन्होंने ने कहा	4	वह सुनते नहीं
-----------	--------------------	----------	------------	-----------	--------------------	---	---------------

وَفِي أَذَانِنَا وَقُرْ وَمِنْ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَأَعْمَلْنَا عَمَلُونَ (٥)

5	काम करते हैं	वेशक हम	सो तुम काम करो	एक पर्दा	और तुम्हारे दरमियान	और हमारे दरमियान	बोझ-गिरानी	और हमारे कानों में
---	--------------	---------	----------------	----------	---------------------	------------------	------------	--------------------

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَهُمُ إِلَهٌ وَاحِدٌ

यकता	माबूद	तुम्हारा माबूद	यह कि	मेरी तरफ़	वहि की जाती है	तुम जैसा	कि मैं एक बशर	इस के सिवा नहीं	फ़रमा दें
------	-------	----------------	-------	-----------	----------------	----------	---------------	-----------------	-----------

فَاسْتَقِيمُوا إِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوهُ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِينَ (٦) الَّذِينَ

वह जो	6	मुश्रिकों के लिए	और ख़राबी	उस से मग़फ़िरत मांगो	उस की तरफ़ (उस के हुज़ूर)	पस सीधे रहो
-------	---	------------------	-----------	----------------------	---------------------------	-------------

لَا يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَفِرُونَ (٧) إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا

ईमान लाए	जो लोग	वेशक	7	मुन्किर हैं	वह	आख़िरत का	और वह	ज़कात	नहीं देते
----------	--------	------	---	-------------	----	-----------	-------	-------	-----------

وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ (٨) قُلْ أَيْنَمَا

क्या तुम	फ़रमा दें	8	ख़तम न होने वाला	अजर	उन के लिए	और उन्होंने ने अमल किए अच्छे
----------	-----------	---	------------------	-----	-----------	------------------------------

لَتَكْفُرُونَ بِالَّذِي خَلَقَ الْأَرْضَ فِي يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُونَ لَهُ

उस के	और तुम ठहराते हो	दो (2) दिनों में	ज़मीन	पैदा किया	उस का जिस ने	इन्कार करते हो
-------	------------------	------------------	-------	-----------	--------------	----------------

أَنْدَادًا ذَلِكَ رَبُّ الْعَالَمِينَ (٩) وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا

उस के ऊपर	पहाड़ (जमा)	उस में	और उस ने बनाए	9	सारे ज़हानों का रब	वह	शरीक (जमा)
-----------	-------------	--------	---------------	---	--------------------	----	------------

وَبَرَكَ فِيهَا وَقَدَّرَ فِيهَا أَقْوَاتَهَا فِي أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ سَوَاءً

यकसां	चार (4) दिन (जमा)	में	उन की ख़ुराकें	उस में	और मुक़र्रर की	उस में	और बरकत रखी
-------	-------------------	-----	----------------	--------	----------------	--------	-------------

لِّلسَّابِغِينَ (١٠) ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ

तो उस ने कहा	एक धुआं	और वह	आस्मान की तरफ़	फिर उस ने तबज़ुह फ़रमाई	10	तमाम सवाल करने वालों के लिए
--------------	---------	-------	----------------	-------------------------	----	-----------------------------

لَهَا وَلِلْأَرْضِ آتِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا قَالَتَا أَتَيْنَا طَائِعِينَ (١١)

11	खुशी से	हम दोनों आए (हाज़िर हैं)	उन दोनों ने कहा	नाखुशी से	या	खुशी से	तुम दोनों आओ	और ज़मीन से	उस से
----	---------	--------------------------	-----------------	-----------	----	---------	--------------	-------------	-------



فَقَضَيْنَ سَبْعَ سَمَوَاتٍ فِي يَوْمَيْنِ وَأَوْحَىٰ فِي كُلِّ سَمَاءٍ أَمْرَهَا						
उस का काम	हर आस्मान	में	और वहि कर दी	दो (2) दिनों में	सात आस्मान	फिर उस ने बनाए
وَرَزَيْنَا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ ۗ وَحِفْظًا ۗ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ						
ग़ालिब	अन्दाज़ा (फैसला)	यह	और हिफ़ाज़त के लिए	चिरागों (सितारों) से	दुनिया	आस्मान
الْعَلِيمِ ﴿١٢﴾ فَإِنِ اعْرَضُوا فَعَلْنَا مُدَّعِيَةً مِّثْلَ صِعْقَةِ						
चिंघाड़	जैसी	एक चिंघाड़	मैं डराता हूँ तुम्हें	तो फ़रमा दें	वह मुँह मोड़ लें	फिर अग्र
عَادٍ وَثَمُودَ ﴿١٣﴾ إِذْ جَاءَتْهُمْ الرُّسُلُ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ						
और उन के पीछे से	उन के आगे से	रसूल	जब आए उन के पास	13	आद और समूद	
أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۗ قَالُوا لَوْ شَاءَ رَبُّنَا لَأَنْزَلَ مَلَائِكَةً						
फ़रिश्ते	तो ज़रूर उतारता	हमारा रब	अगर चाहता	उन्होंने ने जवाब दिया	सिवाए अल्लाह	कि तुम न इबादत करो
فَإِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ﴿١٤﴾ فَأَمَّا عَادُ فَاسْتَكْبَرُوا						
तो वह तकबुर (ग़रूर) करने लगे	आद	फिर जो	14	मुन्किर है	उस के साथ	तुम भेजे गए हो
فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوا مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ۗ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ						
कि अल्लाह	वह देखते	क्या नहीं	कुव्वत	हम से	ज़ियादा	और वह कहने लगे
الَّذِي خَلَقَهُمْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۗ وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ﴿١٥﴾						
15	इन्कार करते	हमारी आयतों का	और वह थे	कुव्वत	उन से	वह ज़ियादा
فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِي أَيَّامٍ نَحْسَاتٍ لِنُذِقَهُمْ						
ताकि हम चखाएँ उन्हें	नहूसत	दिनों में	तुन्द ओ तेज़	हवा	उन पर	पस हम ने भेजी
عَذَابِ الْخِزْيِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۗ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَخْزَىٰ وَهُمْ						
और वह	ज़ियादा रुस्वा करने वाला	आखिरत	और अलबत्ता अज़ाब	दुनिया की ज़िन्दगी	में	रुस्वाई
لَا يُنصَرُونَ ﴿١٦﴾ وَأَمَّا ثَمُودُ فَهَدَيْنَاهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمَىٰ عَلَى الْهُدَىٰ						
हिदायत पर	अन्धा रहना	तो उन्होंने ने पसंद किया	सो हम ने रास्ता दिखाया उन्हें	समूद	और रहे	16
فَآخَذْتَهُمْ صِعْقَةً أَلْعَذَابِ الْهُونِ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٧﴾						
17	वह कमाते (करते थे)	उस की सज़ा में जो	ज़िल्लत	अज़ाब	चिंघाड़	तो उन्हें आ पकड़ा
وَنَجَّيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿١٨﴾ وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَاءُ اللَّهِ						
अल्लाह के दुश्मन	जमा किए जाएंगे	और जिस दिन	18	और वह परहेज़गारी करते थे	ईमान लाए	वह लोग जो
إِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿١٩﴾ حَتَّىٰ إِذَا مَا جَاءُوهَا شَهِدَ						
गवाही देंगे	वह आएंगे उस के पास	जब	यहां तक कि	19	गिरोह गिरोह किए जाएंगे	तो वह
عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَأَبْصَارُهُمْ وَجُلُودُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٠﴾						
20	जो वह करते थे	उस पर	और उन की जिल्दें (गोश्त पोस्त)	और उन की आँखें	उन के कान	उन पर

फिर उस ने दो दिनों में सात आस्मान बनाए और हर आस्मान में उस के काम की वहि कर दी, और हम ने आस्माने दुनिया को सितारों से ज़ीनत दी और खूब महफूज़ कर दिया, यह ग़ालिब, इल्म वाले (अल्लाह का) फैसला है। (12)

फिर अगर वह मुँह मोड़ लें तो आप (स) फ़रमा दें कि मैं तुम्हें डराता हूँ एक चिंघाड़ से, जैसी चिंघाड़ आद ओ समूद (पर अज़ाब आया था)। (13)

जब उन के पास रसूल आए, उन के आगे से और उन के पीछे से कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, तो उन्होंने ने जवाब दिया कि अगर हमारा रब चाहता तो ज़रूर फ़रिश्ते उतारता, पस तुम जिस (पैग़ाम) के साथ भेजे गए हो, हम वेशक उस के मुन्किर हैं। (14)

फिर जो आद थे वह मुल्क में ग़रूर करने लगे नाहक, और वह कहने लगे कि हम से ज़ियादा कुव्वत में कौन है? क्या वह नहीं देखते कि अल्लाह जिस ने उन्हें पैदा किया, वह कुव्वत में उन से बहुत ज़ियादा है, और वह हमारी आयतों का इन्कार करते थे। (15)

पस हम ने भेजी उन पर नहूसत के दिनों में तुन्द ओ तेज़ हवा, ताकि हम उन्हें रुस्वाई का अज़ाब चखाएँ दुनिया की ज़िन्दगी में, और अलबत्ता आखिरत का अज़ाब ज़ियादा रुस्वा करने वाला है, और न वह मदद किए जाएंगे। (16)

और रहे समूद, सो हम ने उन्हें रास्ता दिखाया तो उन्होंने ने हिदायत (के मुकाबले) पर अन्धा रहना पसंद किया, तो उन्हें चिंघाड़ ने आ पकड़ा (यानी) ज़िल्लत के अज़ाब ने, उस की सज़ा में जो वह करते थे। (17)

और हम ने उन लोगों को बचा लिया जो ईमान लाए, और वह परहेज़गारी करते थे। (18)

और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन जहन्नम की तरफ़ जमा किए (हांके) जाएंगे तो वह गिरोह दर गिरोह (तक़सीम) कर दिए जाएंगे। (19)

यहां तक कि जब वह उस के पास आएंगे तो उन पर उन के कान, और उन की आँखें, और उन के गोश्त पोस्त गवाही देंगे उस पर जो वह करते थे। (20)

और वह अपने गोशत पोस्त से कहेंगे, तुम ने हमारे खिलाफ गवाही क्यों दी? वह जवाब देंगे:

हमें उस अल्लाह ने गोयाई दी जिस ने हर शै को गोया कर दिया है, और उसी ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। (21)

और जो तुम छुपाते थे (तुम ने समझा) कि तुम्हारे खिलाफ गवाही न देंगे तुम्हारे कान और न तुम्हारी आँखें और न तुम्हारे गोशत पोस्त, बल्कि तुम ने गुमान कर लिया था कि अल्लाह उस से (उस के बारे में) बहुत कुछ नहीं जानता जो तुम करते हो। (22)

तुम्हारे उस गुमान (खयाले वातिल) ने जो तुम ने अपने रब के बारे में किया था तुम्हें हलाक किया, सो तुम हो गए खसारा पाने वालों में से। (23)

फिर अगर वह सब्र करें तो (भी) जहन्नम उन के लिए ठिकाना है, और अगर वह (अब) माफी चाहें तो वह माफी कुबूल किए जाने वालों में से न होंगे। (24)

और हम ने उन के कुछ हमनशीन मुकर्रर किए, तो उन्होंने ने उन के लिए आरास्ता कर दिखाया जो उन के आगे और जो उन के पीछे था और उन पर (अज़ाब की वईद का) कौल पूरा हो गया जैसे उन उम्मतों में जो गुज़र चुकी है उन से क़बल जिन्नात और इन्सानों की, वेशक वह खसारा पाने वाले थे। (25)

और उन लोगों ने कहा जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िरों ने) कि तुम इस कुरआन को सुनो ही मत, और अगर (सुनाने लगे) तो इस में गुल मचाओ, शायद कि तुम ग़ालिब आ जाओ। (26)

पस हम काफ़िरों को ज़रूर सख़्त अज़ाब चखाएंगे, और अलवत्ता हम उन के बदतरीन आमाल का उन्हें ज़रूर बदला देंगे। (27)

यह है अल्लाह के दुश्मनों का बदला जहन्नम, और उन के लिए है उस में हमेशगी का घर, उस का बदला जो वह हमारी आयतों का इन्कार करते थे। (28)

وَقَالُوا لَجُلُودِهِمْ لِمَ شَهِدْتُمْ عَلَيْنَا قَالُوا أَنْطَقَنَا اللَّهُ						
हमें गोयाई दी अल्लाह ने	वह जवाब देंगे	हम पर (हमारे खिलाफ)	तुम ने गवाही दी	क्यों	अपनी जिल्दों (गोशत पोस्त) से	और वह कहेंगे
الَّذِي أَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَاللَّهِ						
और उसी की तरफ	पहली बार	तुम्हें पैदा किया	और वह-उस	हर शै	गोया अता फरमाया	वह जिस ने
تُرْجَعُونَ ﴿٢١﴾ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُونَ أَنْ يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ						
तुम पर (तुम्हारे खिलाफ)	कि गवाही देंगे	तुम छुपाते थे	और जो	21	तुम लौटाए जाओगे	
سَمْعَكُمْ وَلَا أَبْصَارَكُمْ وَلَا جُلُودَكُمْ وَلَكِنْ ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللَّهَ						
कि अल्लाह	तुम ने गुमान कर लिया था	और लेकिन (बल्कि)	और न तुम्हारी जिल्दें (गोशत पोस्त)	और न तुम्हारी आँखें	तुम्हारे कान	
لَا يَعْلَمُ كَثِيرًا مِمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢٢﴾ وَذَلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِي						
वह जो	तुम्हारा गुमान	और उस	22	तुम करते हो	जो	बहुत कुछ नहीं जानता
ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ أَرْدَكُمْ فَاصْبَحْتُمْ مِنَ الْخَسِرِينَ ﴿٢٣﴾ فَإِنَّ						
फिर अगर	23	खसारा पाने वाले	से	सो तुम हो गए	हलाक किया तुम्हें	अपने रब के मुतअल्लिक
يَصْبِرُوا فَاَلْبَنَاءُ مَثْوَى لَهُمْ وَإِنْ يَسْتَعْتَبُوا فَمَا هُمْ مِنَ						
से	तो न वह	वह माफी चाहें	और अगर	उन के लिए	ठिकाना	तो जहन्नम वह सब्र करें
الْمُعْتَبِينَ ﴿٢٤﴾ وَقَيِّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ فَزَيَّنُوا لَهُمْ مَا						
जो	तो उन्होंने ने आरास्ता कर दिखाया उन के लिए	कुछ हमनशीन	उन के लिए	और हम ने मुकर्रर किए	24	माफी कुबूल किए जाने वाले
بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ						
उन उम्मतों में	कौल	उन पर	और पूरा हो गया	और जो उन के पीछे	उन के आगे	
قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ إِنَّهُمْ						
वेशक वह	और इन्सान	जिन्नात में से-की	उन से क़बल	जो गुज़र चुकी		
كَانُوا خَسِرِينَ ﴿٢٥﴾ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَسْمَعُوا لِهَذَا الْقُرْآنِ						
इस कुरआन को	तुम मत सुनो	उन्होंने ने कुफ़ किया	उन लोगों ने जो	और कहा	25	खसारा पाने वाले थे
وَالْعَوَّا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَعْلَبُونَ ﴿٢٦﴾ فَلَنُذِيقَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا						
उन लोगों को जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	पस हम ज़रूर चखाएंगे	26	तुम ग़ालिब आ जाओ	शायद कि तुम	उस में	और गुल मचाओ
عَذَابًا شَدِيدًا وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي						
वह जो	बदतरीन	और हम उन्हें ज़रूर बदला देंगे	सख़्त अज़ाब			
كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾ ذَلِكَ جَزَاءُ أَعْدَاءِ اللَّهِ النَّارُ لَهُمْ فِيهَا						
उस में	उन के लिए	जहन्नम	अल्लाह के दुश्मन (जमा)	बदला	यह	27
دَارُ الْخُلْدِ جَزَاءُ بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ﴿٢٨﴾						
28	इन्कार करते	हमारी आयतों का	वह थे	उस का जो	बदला	हमेशगी का घर

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرِنَا الَّذِينَ أَصَلْنَا مِنَ الْجِنِّ						
जिन्नात में से	जिन्होंने ने गुमराह किया हमें	उन्हें	हमें दिखा दे	ऐ हमारे रब	वह लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	और कहेंगे
وَالْإِنْسِ نَجْعَلُهُمَا تَحْتَ أَفْدَامِنَا لِيَكُونَا مِنَ الْأَسْفَلِينَ ﴿٢٩﴾						
29	इन्तिहाई ज़लील (जमा)	से	ताकि वह हों	अपने पाऊँ	तले	हम उन दोनों को डालें और इन्सानों
إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي						
उन पर	उतरते हैं	वह साबित कदम रहे	फिर	हमारा रब अल्लाह	उन्होंने ने कहा	वह जिन्होंने ने बेशक
كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٣٠﴾ نَحْنُ أَوْلِيَائِكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ						
और आखिरत में	दुनिया	ज़िन्दगी में	तुम्हारे रफ़ीक़	हम	30	तुम्हें वादा दिया जाता है
وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهَى أَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدْعُونَ ﴿٣١﴾ نُزُلًا مِّنْ						
से	ज़ियाफ़त	31	तुम मांगोगे	जो उस में	और तुम्हारे लिए	तुम्हारे दिल
غُفُورٍ رَّحِيمٍ ﴿٣٢﴾ وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ						
और अमल करे	अल्लाह की तरफ़	बुलाए	उस से जो	वात	बेहतर	और किस
صَالِحًا وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٣﴾ وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ						
नेकी	और बराबर नहीं होती	33	मुसलमानों	से	बेशक मैं	और वह कहे
وَلَا السَّيِّئَةُ إِذْفَعُ بِالتِّي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الذُّي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ						
और उस के दरमियान	आप के दरमियान	वह जो शख्स	तो यकायक	बेहतर	वह	उस से जो दूर कर दें आप (स)
عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ ﴿٣٤﴾ وَمَا يُلْقَاهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَمَا						
और नहीं	सब्र किया	वह जिन्होंने ने	मगर	और नहीं मिलती यह	34	करावती (जिगरी) दोस्त गोया कि वह अ़दावत
يُلْقَاهَا إِلَّا ذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ﴿٣٥﴾ وَإِنَّمَا يَنْزِعَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْعٌ						
कोई वस्वसा	शैतान	से	तुम्हें वस्वसा आए	और अगर	35	बड़े नसीब वाले मगर मिलती यह
فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٦﴾ وَمِنَ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ						
और दिन	रात	उस की निशानियां	और से	36	जानने वाला	सुनने वाला वही बेशक वह अल्लाह की तो पनाह चाहें
وَالشَّمْسِ وَالْقَمَرِ لَا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ						
और तुम सिज्दा करो अल्लाह को	चाँद को	और न	सूरज को	तुम न सिज्दा करो	और चाँद	और सूरज
الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِن كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿٣٧﴾ فَإِنِ اسْتَكْبَرُوا فَالَّذِينَ						
सो वह जो	तकब्युर करें	पस अगर वह	37	इबादत करते	सिर्फ़ उस की	तुम हो अगर पैदा किया उन्हें वह जिस ने
عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُونَ لَهُ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿٣٨﴾						
38	नहीं उकताते	और वह	और दिन	रात	उस की	वह तस्वीह करते हैं आप के रब के नज़्दीक

और काफ़िर कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हमें दिखा दे जिन्होंने ने हमें गुमराह किया था जिन्नात में से और इन्सानों में से कि हम उन को अपने पाऊँ तले (रौन्द) डालें ताकि वह इन्तिहाई ज़लीलों में से हों। (29) बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है, फिर उस पर साबित कदम रहे, उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं कि न तुम ख़ौफ़ खाओ और न तुम गुमगीन हो, और तमु उस जन्नत पर खुश हो जाओ जिस का तुम्हें वादा दिया जाता है। (30) हम तुम्हारे रफ़ीक़ हैं ज़िन्दगी में दुनिया की और आखिरत में (भी), और तुम्हारे लिए उस में (मौजूद है) जो तुम्हारे दिल चाहें, और तुम्हारे लिए उस में (मौजूद है) जो तुम मांगोगे। (31) (यह) ज़ियाफ़त है बख़शने वाले, रहीम (अल्लाह) की तरफ़ से। (32) और उस से बेहतर किस का कौल? जो बुलाए अल्लाह की तरफ़ और अच्छे अमल करे और कहे: बेशक मैं मुसलमानों में से हूँ। (33) और बराबर नहीं होती नेकी और बुराई, आप (स) (बुराई को) इस (अन्दाज़ से) दूर करें जो बेहतर हो तो यकायक वह शख्स कि आप के दरमियान और उस के दरमियान अ़दावत थी (ऐसे हो जाएगा कि) गोया वह जिगरी दोस्त है। (34) और यह (सिपत) नहीं मिलती मगर उन्हें जिन्होंने ने सब्र किया और यह नहीं मिलती मगर बड़े नसीब वालों को। (35) और अगर तुम्हें शैतान की तरफ़ से आए कोई वस्वसा तो अल्लाह की पनाह चाहें, बेशक वह सुनने वाला, जानने वाला है। (36) और उस की निशानियों में से हैं रात और दिन, और सूरज और चाँद, तुम न सूरज को सिज्दा करो न चाँद को, और तुम अल्लाह को सिज्दा करो, वह जिस ने उन (सब) को पैदा किया अगर तुम सिर्फ़ उस की इबादत करते हो। (37) पस अगर वह तकब्युर करें (तो उस से क्या फ़र्क़ पड़ता है), सो वह (फ़रिश्ते) जो आप के रब के नज़्दीक हैं वह रात दिन उस की तस्वीह करते हैं, और वह उकताते नहीं। (38)

और उस की निशानियों में से है कि तू ज़मीन को सुनसान देखता है, फिर जब हम ने उस पर पानी उतारा तो वह लहलहाने लगती है और फूलती है, बेशक वह जिस ने उस को ज़िन्दा किया, अलबत्ता वह मर्दाँ को ज़िन्दा करने वाला है, बेशक वह हर शौ पर कुदरत रखने वाला है। (39)

बेशक जो लोग हमारी आयात में कज रवी करते हैं वह हम पर (हम से) पोशीदा नहीं, तो क्या जो शख्स आग में डाला जाए बेहतर है या जो रोज़े क़ियामत अमान के साथ आए? तुम जो चाहो करो, बेशक तुम जो कुछ करते हो वह देखने वाला है। (40)

बेशक जिन लोगों ने कुरआन का इन्कार किया जब वह उन के पास आया (वह अपना अनज़ाम देख लेंगे), बेशक यह ज़बरदस्त किताब है। (41) उस के पास नहीं आता वातिल उस के सामने से और न उस के पीछे से, नाज़िल किया गया हिक्मत वाले, सज़ावारे हम्द (अल्लाह की तरफ) से। (42)

आप (स) को उस के सिवा नहीं कहा जाता जो आप (स) से पहले रसूलों को कहा जा चुका है, बेशक आप (स) का रब बड़ी मग्फ़िरत वाला, और दर्दनाक सज़ा देने वाला है। (43)

और अगर हम कुरआन को अज़मी ज़वान का बनाते तो वह कहते: उस की आयतें क्यों न साफ़ साफ़ बयान की गई? क्या किताब अज़मी और रसूल अरबी? आप (स) फ़रमा दें: जो ईमान लाए यह उन लोगों के लिए हिदायत और शिफ़ा है, और जो लोग ईमान नहीं लाते उन के कानों में गिरानी है और यह उन के लिए आंखों पर पट्टी, (गोया) यह लोग पुकारे जाते हैं किसी दूर जगह से। (44)

और तहकीक़ हम ने मूसा (अ) को किताब दी तो उस में इख़तिलाफ़ किया गया और अगर न आप (स) के रब की तरफ़ से एक बात पहले ठहर चुकी होती तो उन के दरमियान फ़ैसला हो चुका होता, और बेशक वह ज़रूर उस से तरद्दुद में डालने वाले शक में हैं। (45)

जिस ने अच्छे अमल किए तो अपनी ज़ात के लिए (किए) और जिस ने बुराई की उस का बवाल उसी पर होगा, और आप (स) का रब अपने बन्दों पर मुत्लक़ जुल्म करने वाला नहीं। (46)

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ تَرَى الْأَرْضَ خَاشِعَةً فَإِذَا أَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ								
पानी	उस पर	हम ने उतारा	फिर जब	दबी हुई (सुनसान)	ज़मीन	तू देखता है	कि तू	और उस की निशानियों में से
اهْتَزَّتْ وَرَبَّتْ إِنَّ الَّذِي أَحْيَاهَا لَمُحْيِ الْمَوْتِ إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ								
हर शौ पर	बेशक वह	अलबत्ता ज़िन्दा करने वाला मुर्दाँ को	उस को ज़िन्दा किया	वह जिस ने	बेशक	और फूलती है	वह लहलहाने लगती है	
قَدِيرٌ ﴿٣٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي آيَاتِنَا لَا يَحْفُونَ عَلَيْنَا								
हम पर	वह पोशीदा नहीं	हमारी आयात में	कज रवी करते हैं	जो लोग	बेशक	39	कुदरत रखने वाला	
أَفَمَنْ يُلْقَىٰ فِي النَّارِ خَيْرٌ أَمْ مَنْ يَأْتِي آمِنًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ اعْمَلُوا								
तुम करो	रोज़े क़ियामत	अमान के साथ	आए	या जो	बेहतर	आग में	डाला जाए	तो क्या जो
مَا شِئْتُمْ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٤٠﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالذِّكْرِ لَمَّا								
जब	ज़िक्र (कुरआन) का	वह जिन्होंने ने इन्कार किया	बेशक	40	देखने वाला	जो तुम करते हो	बेशक वह	जो तुम चाहो
جَاءَهُمْ وَإِنَّهُ لَكِتَابٌ عَزِيزٌ ﴿٤١﴾ لَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ								
उस के सामने से	वातिल	उस के पास नहीं आता	41	ज़बरदस्त	अलबत्ता किताब है	और बेशक यह	वह आया उन के पास	
وَلَا مِنْ خَلْفِهِ تَنْزِيلٌ مِّنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ﴿٤٢﴾ مَا يُقَالُ لَكَ إِلَّا								
सिवाए	आप को	नहीं कहा जाता	42	सज़ावारे हम्द	हिक्मत वाले	से	नाज़िल किया गया	और न उस के पीछे से
مَا قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ إِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ وَذُو عِقَابٍ								
और सज़ा देने वाला	बड़ी मग्फ़िरत वाला	आप (स) का रब	बेशक	आप (स) से कब्ल	रसूलों को	जो कहा जा चुका है		
الِيمِ ﴿٤٣﴾ وَلَوْ جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا أَعْجَمِيًّا لَقَالُوا لَوْلَا فُصِّلَتْ آيَاتُهُ								
उस की आयतें	साफ़ बयान की गईं	क्यों न	तो वह कहते	अज़मी (ज़वान का)	कुरआन (को)	और अगर हम बनाते उसे	43	दर्दनाक
وَاعْجَمِيٍّ وَعَرَبِيٍّ قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا هُدًى وَشِفَاءٌ								
और शिफ़ा	हिदायत	ईमान लाए	उन लोगों के लिए जो	वह-यह	फ़रमा दें	और अरबी (रसूल)	क्या अज़मी (किताब)	
وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِي آذَانِهِمْ وَقْرٌ وَهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى أُولَٰئِكَ								
यह लोग	अन्धापन	उन पर	और वह-यह	गिरानी	उन के कानों में	ईमान नहीं लाए	और जो लोग	
يُنَادُونَ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ﴿٤٤﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ								
किताब	मूसा (अ)	और तहकीक़ हम ने दी	44	दूर	किसी जगह	से	पुकारे जाते हैं	
فَاخْتَلَفَ فِيهِ وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَقُضِيَ								
तो फ़ैसला हो चुका होता	आप (स) के रब की तरफ़ से	पहले ठहर चुकी	एक बात	और अगर न होती	उस में	तो इख़तिलाफ़ किया गया		
بَيْنَهُمْ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٍ ﴿٤٥﴾ مَن عَمِلْ صَالِحًا								
अच्छे	अमल किए	जो-जिस	45	तरद्दुद में डालने वाले शक में	उस से	ज़रूर शक में	और बेशक वह	उन के दरमियान
فَلِنَفْسِهِ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلِيَهَا وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿٤٦﴾								
46	अपने बन्दों पर	मुत्लक़ जुल्म करने वाला	आप (स) का रब	और नहीं	तो उस पर (उस का बवाल)	बुराई की	और जिस	तो अपनी ज़ात के लिए

١٢  
١٩  
٥  
١١

إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ ثَمَرَاتٍ مِّنْ						
से	फल (जमा)	कोई	और नहीं निकलता	क़ियामत का इल्म	उस की तरफ लौटाया (हवाले किया) जाता है	
أَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ وَيَوْمَ						
और जिस दिन	उस के इल्म में	मगर	और न वह बच्चा जनती है	कोई औरत	और नहीं حامिला होती है	उस के गिलाफों (गाभों)
يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَائِي قَالُوا أَدْنٰكَ مَا مِنَّا مِنْ شَهِيدٍ ﴿٤٧﴾						
47	कोई शाहिद	नहीं हम से	इत्तिलाअ दे दी हम ने तुझे	वह कहेंगे	मेरे शरीक	कहाँ वह पुकारेगा उन्हें
وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوا يَدْعُونَ مِن قَبْلُ وَظَنُّوا مَا لَهُم						
नहीं उन के लिए	और उन्होंने ने समझ लिया	उस से कब्ल	जो वह पुकारते थे	उन से	और खोया गया	
مِّن مَّحِيصٍ ﴿٤٨﴾ لَا يَسْئَمُ الْإِنْسَانُ مِنْ دُعَاءِ الْخَيْرِ وَإِن مَّسَّهُ الشَّرُّ						
बुराई	उसे लग जाए	और अगर	भलाई मांगने	से	इन्सान	नहीं थकता 48 कोई बचाओ (ख़लासी)
فَيُؤَسِّسُ فَنُوطٍ ﴿٤٩﴾ وَلَٰكِن آدَقْنَاهُ رَحْمَةً مِنَّا مِنْ بَعْدِ ضَرَّاءَ						
किसी तकलीफ	के बाद	अपनी तरफ से	रहमत	हम चखाएं उसे	और अलबत्ता अगर	49 नाउम्मीद तो मायूस हो जाता है
مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ هَذَا لِي وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَٰكِن						
और अलबत्ता अगर	काइम होने वाली	क़ियामत	और मैं खयाल नहीं करता	यह मेरे लिए	तो वह ज़रूर कहेगा	जो उस को पहुँची
رُجِعْتُ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّ لِي عِنْدَهُ لَلْحُسْنَىٰ فَلَنُنَبِّئَنَّ						
पस हम ज़रूर आगाह कर देंगे	अलबत्ता भलाई	उस के पास	मेरे लिए	वेशक	अपने रब की तरफ	मुझे लौटाया गया
الَّذِينَ كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا وَنُذِيقْنَهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٠﴾ وَإِذَا						
और जब	50	सख्त	एक अज़ाब	से	और अलबत्ता हम ज़रूर चखाएंगे उन्हें	उस से जो उन्होंने ने किया (आमाल)
أَنعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَنَا بِجَانِبِهِ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ						
बुराई	आ लगे उसे	और जब	अपना पहलू	और बदल लेता है	वह मुँह मोड़ लेता है	इन्सान पर हम इन्आम करते हैं
فَذُو دُعَاءٍ عَرِيضٍ ﴿٥١﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ						
अल्लाह के पास	से	अगर हो	क्या तुम ने देखा	आप (स) फ़रमा दें	51 (लम्बी) चौड़ी	तो दुआओं वाला
ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهِ مِنْ أَضَلِّ مِمَّنْ هُوَ فِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ﴿٥٢﴾						
52	दूर दराज़	ज़िद	में	वह	उस से जो	बड़ा गुमराह कौन तुम ने कुफ़ किया उस से फिर
سُرِّيهِمْ آيَاتِنَا فِي الْأَفَاقِ وَفِي أَنفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ						
कि यह	उन के लिए	ज़ाहिर हो जाए	यहां तक	और उन की ज़ात में	अतराफे अ़ालम में	हम जल्द दिखा देंगे उन्हें अपनी आयात
الْحَقُّ أَوْلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٥٣﴾ أَلَا إِنَّهُمْ						
खूब याद रखो वेशक वह	53	शाहिद	हर शै	पर-का	कि वह	आप के रब के लिए क्या काफी नहीं हक
فِي مَرِيَةٍ مِّن لِّقَاءِ رَبِّهِمْ أَلَا إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطٌ ﴿٥٤﴾						
54	अहाता किए हुए	हर शै पर-का	याद रखो वेशक वह	अपना रब	मुलाक़ात से	शक में

क़ियामत का इल्म उसी के हवाले किया जाता है, और कोई फल अपने गाभों से नहीं निकलता और कोई औरत (मादा) हामिला नहीं होती और वह बच्चा नहीं जनती मगर (यह सब) उस के इल्म में होता है। और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा: कहाँ है मेरे शरीक? वह कहेंगे: हम ने तुझे इत्तिलाअ दे दी कि हम में से कोई (उस का) शाहिद (गवाह) नहीं! (47) और खोया गया उन से जिसे वह (अल्लाह के सिवा) पुकारते थे उस से कब्ल, और उन्होंने ने समझ लिया कि (अब) उन के लिए कोई ख़लासी नहीं! (48) इन्सान भलाई मांगने से नहीं थकता, और अगर उसे कोई बुराई लग जाए तो वह नाउम्मीद हो कर मायूस हो जाता है। (49) और अलबत्ता अगर उसे कोई तकलीफ़ पहुँचने के बाद हम अपनी तरफ से अपनी रहमत का मज़ा चखाएं तो वह ज़रूर कहेगा: यह मेरे लिए है, और मैं खयाल नहीं करता कि क़ियामत काइम होने वाली है, और अगर मुझे अपने रब की तरफ लौटाया गया तो वेशक उस के पास मेरे लिए अलबत्ता भलाई होगी, पस हम काफ़िरों को उन के आमाल से ज़रूर आगाह करेंगे, और अलबत्ता हम उन्हें ज़रूर चखाएंगे एक अज़ाब सख्त। (50) और जब हम इन्सान पर इन्आम करते हैं तो वह मुँह मोड़ लेता है, और अपना पहलू बदल लेता है, और जब उसे (ज़रा) बुराई लगे तो लम्बी चौड़ी दुआओं वाला (बन जाता है)। (51) आप (स) फ़रमा दें: क्या तुम ने देखा (यह तो बतलाओ) अगर (यह कुरआन) अल्लाह के पास से हो, फिर तुम ने उस से कुफ़ किया तो उस से बड़ा गुमराह कौन जो मुख़ालिफ़त में दूर तक निकल गया हो? (52) हम जल्द अपनी आयात उन्हें अतराफे अ़ालम में और (खुद) उन की ज़ात में दिखा देंगे यहाँ तक कि उन पर ज़ाहिर हो जाएगा कि यह (कुरआन) हक़ है, क्या आप (स) के रब के लिए काफ़ी नहीं कि वह हर शै का शाहिद है। (53) खूब याद रखो! वेशक वह अपने रब की मुलाक़ात (रूबरू हाज़री) से शक में हैं, याद रखो! वेशक वह हर शै का अहाता किए हुए है। (54)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है हा-मीम। (1)

अयन-सीन-काफ़। (2)

इसी तरह आप (स) की तरफ़ और आप (स) के पहलों की तरफ़ वहि फ़रमाता है अल्लाह ग़ालिव हिक्मत वाला। (3)

उसी के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में, और वह बुलन्द, अज़मत वाला है। (4)

क़रीब है कि आस्मान उन के ऊपर से फट पड़ें। और फ़रिश्ते अपने रब की तारीफ़ के साथ तस्वीह करते हैं और उन के लिए मग़फ़िरत तलब करते हैं जो ज़मीन में हैं, याद रखो! वेशक़ अल्लाह ही बख़्शने वाला रहम करने वाला (5)

और जो लोग ठहराते हैं अल्लाह के सिवा (दूसरों को) रफ़ीक़, अल्लाह उन्हें देख रहा है, आप (स) उन पर ज़िम्मेदार नहीं। (6)

और उसी तरह हम ने आप (स) की तरफ़ वहि किया कुरआन अरबी ज़बान में ताकि आप (स) डराएँ अहले मक्का को और उन्हें जो उस के इर्द गिर्द हैं, और आप (स) डराएँ जमा होने के दिन से, कोई शक़ नहीं उस में, एक फ़रीक़ जन्मत में होगा और एक फ़रीक़ दोज़ख़ में। (7)

और अगर अल्लाह चाहता तो ज़रूर उन्हें एक उम्मत बना देता और लेकिन वह जिसे चाहता है अपनी रहमत में दाख़िल करता है, और ज़ालिमों के लिए न कोई कारसाज़ है और न मददगार। (8)

क्या उन्होंने ने अल्लाह के सिवा कारसाज़ ठहरा लिए हैं? पस अल्लाह ही कारसाज़ है, वही मर्दों को ज़िन्दा करता है, और वही हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है। (9)

और जिस बात में तुम इख़तिलाफ़ करते हो उस का फ़ैसला अल्लाह के पास है, वही है अल्लाह मेरा रब, उस पर मैं ने भरोसा किया, और उसी की तरफ़ मैं रज़ूअ करता हूँ। (10)

آيَاتُهَا ٥٣ ﴿٤٢﴾ سُورَةُ الشُّورَى ﴿٤٢﴾ زُكُوعَاتُهَا ٥									
रुक़आत 5					(42) सूरतुश शूरा सलाह औ मश्वरा			आयात 53	
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
حَمَّ ١ عَسَقَ ٢ كَذَلِكَ يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ									
आप (स) से पहले	वह जो	और तरफ़	आप (स) की तरफ़	वहि फ़रमाता है	इसी तरह	2	अयन-सीन-काफ़	1	हा-मीम
اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ٣ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَهُوَ									
और वह	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	उसी के लिए	3	हिक्मत वाला	ग़ालिव	अल्लाह
الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ٤ تَكَادُ السَّمَوَاتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلَائِكَةُ									
और फ़रिश्ते	उन के ऊपर से	फट पड़ें	आस्मानों (जमा)	क़रीब है	4	अज़मत वाला	बुलन्द		
يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا إِنْ اللَّهُ									
वेशक़ अल्लाह	याद रखो	ज़मीन में	उस के लिए जो	और वह मग़फ़िरत तलब करते हैं	अपने रब की तारीफ़ के साथ	तस्वीह करते हैं			
هُوَ الْعَفُورُ الرَّحِيمُ ٥ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ اللَّهُ									
अल्लाह	रफ़ीक़	उस के सिवा	ठहराते हैं	और जो लोग	5	मेहरवान	बख़्शने वाला	वह-वही	
حَفِيزٌ عَلَيْهِمْ ٦ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ٦ وَكَذَلِكَ أَوْحَيْنَا									
हम ने वहि किया	और उसी तरह	6	ज़िम्मेदार	उन पर	और आप (स) नहीं	निग़रान उन पर (उन्हें देख रहा है)			
إِلَيْكَ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِنُنذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا وَنُنذِرَ									
और आप (स) डराएँ	उस के इर्द गिर्द	और जो	बस्तियों का मरकज़ (अहले मक्का)	ताकि आप (स) डराएँ	अरबी ज़बान	कुरआन	आप (स) की तरफ़		
يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيهِ فَرِيقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيقٌ فِي السَّعِيرِ ٧									
7	दोज़ख़ में	और एक फ़रीक़	जन्नत में	एक फ़रीक़	उस में	नहीं शक़	जमा होने का दिन		
وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ									
जिसे चाहता है	वह दाख़िल करता है	और लेकिन	एक उम्मत	ज़रूर बना देता उन्हें	चाहता अल्लाह	और अगर			
فِي رَحْمَتِهِ وَالظَّالِمُونَ مَا لَهُمْ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ٨ أَمْ اتَّخَذُوا									
उन्होंने ने ठहरा लिए	क्या	8	और न मददगार	कारसाज़	कोई	नहीं उन के लिए	और ज़ालिम (जमा)	अपनी रहमत में	
مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ ٩ فَاللَّهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَهُوَ									
और वह	मुर्दाँ	जिन्दा करता है	और वही	वही कारसाज़	पस अल्लाह	कारसाज़ (जमा)	उस के सिवा		
عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ٩ وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهُ									
तो उस का फ़ैसला	किसी चीज़	उस में	इख़तिलाफ़ करते हो तुम	और जो-जिस	9	कुदरत रखने वाला	चीज़	हर	पर
إِلَى اللَّهِ ذَلِكُمْ اللَّهُ رَبِّي عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ١٠ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ١٠									
10	मैं रज़ूअ करता हूँ	और उस की तरफ़	भरोसा किया मैं ने	उस पर	मेरा रब	वही है अल्लाह	तरफ़-पास अल्लाह		

فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا						
जोड़े	तुम्हारी ज़ात (जिन्स) से	तुम्हारे लिए	उस ने बनाए	और ज़मीन	पैदा करने वाला आस्मानों	
وَمِنَ الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا يَذُرُّوْكُمْ فِيْهِ لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ						
और वह	कोई शै	उस के मिस्ल	नहीं	इस (दुनिया) में	वह फैलाता है तुम्हें	जोड़े चौपायों और से
السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿١١﴾ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَبْسُطُ						
वह फराख करता है	और ज़मीन	आस्मानों	कुंजियां	उस के लिए (पास)	11	देखने वाला सुनने वाला
الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاءُ وَيَقْدِرُ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٢﴾ شَرَعَ لَكُمْ						
तुम्हारे लिए	उस ने मुकर्रर किया	12	जानने वाला	हर शै का	वेशक वह	और तंग करता है वह जिस के लिए रिज़ूक
مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَّصٰى بِهٖ نُوْحًا وَّالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَا اِلَيْكَ						
आप की तरफ़ (को)	हम ने वहि की	और वह जिस	नूह (अ)	उस का	उस ने जिस का हुकम दिया	वही दीन
وَمَا وَّصَيْنَا بِهٖ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسٰى اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ						
दीन	कि तुम काइम करो	और ईसा (अ)	और मूसा (अ)	इब्राहीम (अ)	उस का	और जिस का हुकम दिया हम ने
وَلَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ كَبُرَ عَلٰى الْمُشْرِكِيْنَ مَا تَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ اللّٰهُ						
अल्लाह	उस की तरफ़	जिस की तरफ़ आप उन्हें बुलाते हैं	मुश्रिकों पर	सख़्त	उस में	और तफ़रक़ा न डालो तुम
يَجْتَبِيْٓ اِلَيْهِ مَن يَّشَاءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَن يُّنِيْبُ ﴿١٣﴾ وَمَا تَفَرَّقُوْا						
और उन्होंने ने तफ़रक़ा न डाला	13	जो रुज़ूअ करता है	उस की तरफ़	और हिदायत देता है	जिसे वह चाहता है	अपनी तरफ़ चुन लेता है
اِلَّا مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَعِيًّا بَيْنَهُمْ وَلَوْ لَا						
और अगर न	आपस की	ज़िद	इल्म	कि आ गया उन के पास	उस के बाद	मगर
كَلِمَةً سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰى اَجَلٍ مُّسَمًّى لَّفُضِيْٓ بَيْنَهُمْ ط						
उन के दरमियान	तो फ़ैसला कर दिया जाता	एक मदते मुकर्ररा	तक	आप के रब की तरफ़ से	गुज़र चुका होता	फ़ैसला
﴿١٤﴾ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْرثُوا الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ						
14	तरदुद में डालने वाला	उस से	अलबत्ता वह शक में	उन के बाद	किताब के वारिस बनाए गए	और जो लोग वेशक
فَلِذٰلِكَ فَاذَعٌ وَّاسْتَقِيْمٌ كَمَا اُمِرْتَ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَاءَهُمْ ط						
उन की खाहिशात	और आप न चलें	जैसा कि मैं ने हुकम दिया है आप (स) को	और काइम रहें	आप बुलाएं	पस उसी के लिए	
وَقُلْ اٰمَنْتُ بِمَا اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنْۢ كِتٰبٍ وَّامِرْتَ لِاَعْدِلَ						
कि मैं इंसाफ़ करूँ	और मुझे हुकम दिया गया	से - हर किताब	नाज़िल की अल्लाह ने	उस पर जो	मैं ईमान ले आया	और कहें
بَيْنَكُمْ ط اللّٰهُ رُبُّنَا وَرُبُّكُمْ ط لَنَّا اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ط						
तुम्हारे आमाल	और तुम्हारे लिए	हमारे आमाल	हमारे लिए	और तुम्हारा रब	हमारा रब	तुम्हारे आमाल और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल, हमारे और तुम्हारे दरमियान
﴿١٥﴾ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ط اللّٰهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ						
15	वाज़गशत (लौटना)	और उसी की तरफ़	हमारे दरमियान (हमें)	जमा करेगा	अल्लाह	और तुम्हारे दरमियान कोई हुज्जत (झगड़ा) नहीं हमारे दरमियान

आस्मानों और ज़मीन का पैदा करने वाला, उस ने बनाए तुम्हारे लिए तुम्हारी जिन्स से जोड़े और चौपायों से जोड़े, वह तुम्हें इस (दुनिया) में फैलाता है। उस के मिस्ल कोई शै नहीं, और वह सुनने वाला, देखने वाला। (11)

उसी के पास हैं आस्मानों और ज़मीन की कुंजियां, वह रिज़ूक फ़राख़ करता है जिस के लिए वह चाहता है (और जिस पर चाहे) तंग कर देता है, वेशक वह हर शै का जानने वाला। (12)

उस ने तुम्हारे लिए वही दीन मुकर्रर किया है जिस के काइम करने का उस ने हुकम दिया था नूह (अ) को और जिस की हम ने आप (स) की तरफ़ वहि की, और जिस का हुकम हम ने इब्राहीम (अ) और मूसा (अ) और ईसा (अ) को दिया था कि तुम दीन काइम करो और उस में तफ़रक़ा न डालो, वह मुश्रिकों पर गरां गुज़रती है जिस की तरफ़ आप (स) उन्हें बुलाते हैं, अल्लाह अपनी तरफ़ (अपने कुर्व के लिए) जिस को चाहता है चुन लेता है। और जो उस की तरफ़ रुज़ूअ करता है उसे अपनी तरफ़ से हिदायत देता है। (13)

और उन्होंने ने तफ़रक़ा न डाला मगर उस के बाद कि उन के पास इल्मे (वहि) आ गया आपस की ज़िद की वजह से, और अगर आप (स) के रब की तरफ़ से एक मुदते मुकर्ररा तक मोहलत देने का फ़ैसला न गुज़र चुका होता तो उन के दरमियान फ़ैसला कर दिया जाता, और वेशक जो लोग उन के बाद किताब के वारिस बनाए गए अलबत्ता वह उस से तरदुद में डालने वाले शक में हैं। (14)

पस उसी के लिए आप (स) बुलाएं और (उस पर) काइम रहें जैसा कि मैं ने आप को हुकम दिया है और आप (स) उन की खाहिशात पर न (चलें), और कहें कि मैं ईमान ले आया हर किताब पर जो अल्लाह ने नाज़िल की और मुझे हुकम दिया गया है कि मैं तुम्हारे दरमियान इंसाफ़ करूँ, अल्लाह हमारा भी रब है और तुम्हारा भी रब है। हमारे लिए हमारे आमाल और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल, हमारे और तुम्हारे दरमियान कोई झगड़ा नहीं, अल्लाह हमें जमा करेगा, और उसी की तरफ़ वाज़गशत है। (15)

और जो लोग अल्लाह के वारे में झगड़ा करते हैं उस के बाद कि उस को कुबूल कर लिया गया, उन की हुज्जत (कुबूल करने वालों से झगड़ा) उन के रब के हां लगू (बेसबात) है और उन पर ग़ज़ब है, और उन के लिए सख़्त अज़ाब है। (16)

अल्लाह है जिस ने किताब हक़ के साथ नाज़िल की और मीज़ान (भी), और तुझे क्या ख़बर कि शायद क़ियामत करीब हो। (17)

उस की वह लोग जल्दी मचाते हैं जो उस पर ईमान नहीं रखते। और जो लोग ईमान लाए वह उस से डरते हैं और वह जानते हैं कि यह हक़ है, याद रखो! वेशक जो लोग क़ियामत के वारे में झगड़ते हैं वह दूर (बड़ी) गुमराही में हैं। (18)

अल्लाह अपने बन्दों पर मेहरबान है, वह जिसे चाहता है रिज़्क देता है, और वह क़व्वी, ग़ालिव है। (19)

जो शख्स चाहता है खेती आख़िरत की, हम उस की खेती में उस के लिए इज़ाफ़ा कर देते हैं, और जो दुनिया की खेती चाहता है हम उसे उस में से देते हैं और उस के लिए नहीं आख़िरत में कोई हिस्सा। (20)

या उन के कुछ शरीक हैं जिन्हों ने उन के लिए ऐसा दिन मुक़र्रर किया है जिस की अल्लाह ने इजाज़त नहीं दी, और अगर एक क़ौले फ़ैसल न होता तो उन के दरमियान (यही) फ़ैसला हो जाता, और वेशक ज़ालिमों के लिए अज़ाब है दर्दनाक। (21)

तुम ज़ालिमों को देखोगे अपने आमाल (के ववाल) से डरते होंगे, और वह उन पर वाक़े होने वाला है, और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए, वह जन्नतों के वागात में होंगे, वह जो चाहेंगे उन के रब के हां (मिलेगा) यही है बड़ा फ़ज़ल। (22)

وَالَّذِينَ يُحَاجُّونَ فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا اسْتُجِيبَ لَهُ حُجَّتُهُمْ

उन की हुज्जत	कि कुबूल कर लिया गया उस के लिए - उस को	उस के बाद	अल्लाह के वारे में	झगड़ा करते हैं	और जो लोग
--------------	--	-----------	--------------------	----------------	-----------

دَاحِضَةً عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ﴿١٦﴾

16	सख़्त	अज़ाब	और उन के लिए	ग़ज़ब	और उन पर	उन का रब	हां	लगू
----	-------	-------	--------------	-------	----------	----------	-----	-----

اللَّهُ الَّذِي أَنْزَلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ وَالْمِيزَانَ وَمَا يُدْرِيكَ

तुझे ख़बर	और क्या	और मीज़ान	हक़ के साथ	किताब	नाज़िल की	वह जिस ने	अल्लाह
-----------	---------	-----------	------------	-------	-----------	-----------	--------

لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيبٌ ﴿١٧﴾ يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ

ईमान नहीं रखते	वह लोग जो	उस की	वह जल्दी मचाते हैं	17	करीब	क़ियामत	शायद
----------------	-----------	-------	--------------------	----	------	---------	------

بِهَا وَالَّذِينَ آمَنُوا مُشْفِقُونَ مِنْهَا وَيَعْلَمُونَ أَنَّهَا الْحَقُّ

हक़	कि यह	और वह जानते हैं	उस से	वह डरते हैं	ईमान लाए	और जो लोग	उस पर
-----	-------	-----------------	-------	-------------	----------	-----------	-------

إِلَّا إِنَّ الَّذِينَ يُمَارُونَ فِي السَّاعَةِ لَفِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ﴿١٨﴾

18	दूर	अलबत्ता गुमराही में	क़ियामत के वारे में	झगड़ते हैं	वेशक जो लोग	याद रखो
----	-----	---------------------	---------------------	------------	-------------	---------

اللَّهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ﴿١٩﴾

19	ग़ालिव	क़व्वी	और वह	जिस को चाहे	वह रिज़्क देता है	अपने बन्दों पर	मेहरबान	अल्लाह
----	--------	--------	-------	-------------	-------------------	----------------	---------	--------

مَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الْآخِرَةِ نَزِدْ لَهُ فِي حَرْثِهِ وَمَنْ

और जो	खेती में उस की	हम इज़ाफ़ा कर देते हैं उस के लिए	आख़िरत	खेती	चाहता है	जो शख्स
-------	----------------	----------------------------------	--------	------	----------	---------

كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ

आख़िरत में	और नहीं उस के लिए	उस में से	हम उसे देते हैं	दुनिया की खेती	चाहता है
------------	-------------------	-----------	-----------------	----------------	----------

مِنْ نَصِيبٍ ﴿٢٠﴾ أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ شَرَعُوا لَهُمْ مِنَ الدِّينِ

दीन	से-ऐसा	उन के लिए	उन्हों ने मुक़र्रर किया	कुछ शरीक (जमा)	क्या उन के लिए	20	कोई हिस्सा
-----	--------	-----------	-------------------------	----------------	----------------	----	------------

مَا لَمْ يَأْذَنْ بِهِ اللَّهُ وَلَوْ لَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ

उन के दरमियान	तो फ़ैसला हो जाता	एक क़ौले फ़ैसल	और न अगर	अल्लाह	उस की इजाज़त दी	जो - जिस नहीं
---------------	-------------------	----------------	----------	--------	-----------------	---------------

وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢١﴾ تَرَى الظَّالِمِينَ

ज़ालिमों	तुम देखोगे	21	दर्दनाक	अज़ाब	उन के लिए	ज़ालिमों	और वेशक
----------	------------	----	---------	-------	-----------	----------	---------

مُشْفِقِينَ مِمَّا كَسَبُوا وَهُوَ وَاقِعٌ بِهِمْ وَالَّذِينَ

और जो लोग	उन पर	वाक़े होने वाला	और वह	उस से जो उन्होंने ने कमाया (आमाल)	डरते होंगे
-----------	-------	-----------------	-------	-----------------------------------	------------

آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي رَوْضَاتِ الْجَنَّاتِ لَهُمْ

उन के लिए	जन्नतों	वागात	में	अच्छे	और उन्होंने ने अमल किए	ईमान लाए
-----------	---------	-------	-----	-------	------------------------	----------

مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ذَلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ﴿٢٢﴾

22	बड़ा	फ़ज़ल	वह-यही	यह	उन के रब के हां	जो वह चाहेंगे
----	------	-------	--------	----	-----------------	---------------



ذَلِكَ الَّذِي يُبَشِّرُ اللَّهُ عِبَادَهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ							
यही	वह जिस	अल्लाह बशारत देता है	अपने बन्दे	वह जो ईमान लाए	और उन्होंने ने अच्छे अमल किए		
فَلَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبَىٰ وَمَنْ يَقْتَرِفْ							
फरमा दें	मैं तुम से नहीं मांगता	इस पर	कोई अजर	सिवाए	मुहब्बत	करावतदारी में-की	और जो
حَسَنَةً نَّزِدْ لَهُ فِيهَا حُسْنًا إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ شَكُورٌ ﴿٢٣﴾ أَمْ يَقُولُونَ							
कोई नेकी	हम बढ़ा देंगे उस के लिए	उस में	खूबी	वेशक अल्लाह	बखशने वाला	कद्र दान	23 क्या
افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا فَإِنْ يَشِئِ اللَّهُ يَخْتِمْ عَلَىٰ قَلْبِكَ وَيَمْحُ							
उस ने बाँधा	अल्लाह पर	झूट	सो अगर	चाहता अल्लाह	वह मुहर लगा देता	तुम्हारे दिल पर	और मिटाता है
اللَّهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٢٤﴾							
अल्लाह	बातिल करता है	और साबित करता है	हक	अपने कलिमात से	वेशक वह	जानने वाला	24 दिलों की बातों को
وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْفُو عَنِ السَّيِّئَاتِ							
और वही	जो कुबूल फरमाता है	तौबा	अपने बन्दों से	और माफ़ कर देता है	से-को	बुराइयां	
وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٢٥﴾ وَيَسْتَجِيبُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ							
और वह जानता है	जो तुम करते हो	25	और कुबूल करता है	वह जो ईमान लाए	और उन्होंने ने अमल किए	अच्छे	
وَيَزِيدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهِ وَالْكَافِرُونَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ							
और उन को ज़ियादा देता है	अपने फ़ज़ल से	और काफ़िरों	उन के लिए	अज़ाब	सख्त	26	और अगर
بَسَطَ اللَّهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهِ لَبَغَوْا فِي الْأَرْضِ وَلَكِنْ يُنَزِّلُ بِقَدَرٍ							
कुशादा कर देता अल्लाह	रिज़क के लिए	अपने बन्दों के लिए	तो वह सरकशी करते	ज़मीन में	और लेकिन	वह उतारता है	अन्दाज़े से
مَا يَشَاءُ إِنَّهُ بِعِبَادِهِ خَبِيرٌ بَصِيرٌ ﴿٢٧﴾ وَهُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ الْغَيْثَ							
जिस कद्र वह चाहता है	वेशक वह	अपने बन्दों से	वाख़बर	देखने वाला	27	और वही	वह जो
مِّنْ بَعْدِ مَا قَنَطُوا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهُ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٢٨﴾							
बाद	जब वह मायूस हो गए	और फैलाता है	और	अपनी रहमत	और वही	कारसाज़	28 सतूदा सिफ़ात
وَمِنَ آيَاتِهِ خَلْقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيهِمَا مِنْ دَابَّةٍ							
और से	उस की निशानियां	पैदा करना	आस्मानों	और ज़मीन	और जो	उस ने फैलाए	उन के दरमियान
وَهُوَ عَلَىٰ جَمْعِهِمْ إِذَا يَشَاءُ قَدِيرٌ ﴿٢٩﴾ وَمَا أَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيبَةٍ فِيمَا							
और वह	उन के जमा करने पर	जब वह चाहे	कुदरत रखने वाला	29	और जो पहुँची तुम्हें	कोई मुसीबत	तो उस के सबब जो
كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُوا عَنْ كَثِيرٍ ﴿٣٠﴾ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ							
कमाया	तुम्हारे हाथों	और माफ़ फरमा देता है	बहुत से	30	और नहीं	तुम	आजिज़ करने वाले
فِي الْأَرْضِ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٣١﴾							
ज़मीन में	और नहीं तुम्हारे लिए	अल्लाह के सिवा	कोई कारसाज़	और न कोई मददगार	31		

यही है वह जिस की अल्लाह अपने बन्दों को बशारत देता है जो ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए, आप (स) फरमा दें: मैं तुम से करावत की मुहब्बत के सिवा इस पर कोई अजर नहीं मांगता, और जो शख्स कोई नेकी कमाएगा (करेगा) हम उस के लिए उस में खूबी बढ़ा देंगे, वेशक अल्लाह बखशने वाला, कद्र दान है। (23) क्या वह कहते हैं कि उस ने अल्लाह पर बाँधा है झूट, सो अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हारे दिल पर मुहर लगा देता, और अल्लाह बातिल को मिटाता है और हक को साबित करता है अपने कलिमात से, वेशक वह दिलों की बातों को जानने वाला है। (24) और वही है जो अपने बन्दों से तौबा कुबूल फरमाता है और बुराइयों को माफ़ कर देता है, और वह जानता है जो तुम करते हो। (25) और वह (उन की दुआएँ) कुबूल करता है जो ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए, और वह उन को अपने फ़ज़ल से और ज़ियादा देता है, और काफ़िरों के लिए सख्त अज़ाब है। (26) और अगर अल्लाह अपने बन्दों के लिए रिज़क कुशादा कर देता तो वह ज़मीन में सरकशी करते, लेकिन वह अन्दाज़े से जिस कद्र चाहता है उतारता है, वेशक वह अपने बन्दों (की ज़रूरतों) से वाख़बर देखने वाला है। (27) और उस के बाद जब कि वह नाउम्मीद हो गए तो वही है जो वारिश नाज़िल फरमाता है, और अपनी रहमत फैलाता है, और वही है कारसाज़, सतूदा सिफ़ात। (28) और उस की निशानियों में से है पैदा करना आस्मानों का और ज़मीन का, और जो उस ने उन के दरमियान चौपाए फैलाए, और वह जब चाहे उन के जमा करने पर कुदरत रखता है। (29) और तुम्हें जो कोई मुसीबत पहुँची तो वह उस के सबब (पहुँची) जो तुम्हारे हाथों ने कमाया (किया) और वह बहुत से (गुनाह) माफ़ (ही) कर देता है। (30) और तुम ज़मीन में (अल्लाह तज़ाला को) आजिज़ करने वाले नहीं हो, और अल्लाह के सिवा तुम्हारे लिए न कोई कारसाज़ है और न कोई मददगार। (31)

और उस की निशानियों में से समन्दर में पहाड़ों जैसे जहाज़ हैं। (32)

अगर वह चाहे तो हवा को ठहरा दे तो उस की सतह पर वह खड़े हुए रह जाएं, बेशक उस में निशानियां हैं हर सबर करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए। (33)

या वह उन्हें उन के आमाल के सबब हलाक कर दे और बहुतों को माफ़ कर दे। (34)

और जान लें वह लोग जो हमारी आयात में झगड़ते हैं कि उन के लिए कोई ख़लासी (जाए फ़िरार) नहीं। (35)

पस तुम्हें जो कुछ कोई शै दी गई है तो वह दुनियावी ज़िन्दगी का (नापाइदार) फ़ाइदा है, और जो अल्लाह के पास है वह बेहतर और हमेशा बाक़ी रहने वाला है, उन लोगों के लिए जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं। (36)

और जो लोग बचते हैं बड़े गुनाहों से और बेहयाइयों से और जब वह गुस्से में होते हैं तो माफ़ कर देते हैं। (37)

और जिन लोगों ने कुबूल किया अपने रब का फ़रमान और उन्होंने ने नमाज़ काइम की, और उन का काम बाहम मश्वरा (से होता है) और जो हम ने उन्हें दिया उस में से वह खर्च करते हैं। (38)

और जो लोग (ऐसे हैं कि) जब उन पर कोई जुल्म ओ अत्याचार पहुँचे तो वह बदला लेते हैं। (39)

और बुराई का बदला उसी जैसी बुराई है, सो जिस ने माफ़ कर दिया और इसलाह (दुरुस्ती) कर दी तो उस का अजर अल्लाह के ज़िम्मे है, बेशक वह ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता। (40)

और अलबत्ता जिस ने बदला लिया अपने ऊपर जुल्म के बाद, सो यह लोग हैं जिन पर कोई राहे (इल्ज़ाम) नहीं। (41)

इस के सिवा नहीं कि इल्ज़ाम उन पर है जो लोगों पर जुल्म करते हैं, और ज़मीन में नाहक़ फ़साद मचाते हैं, यही लोग हैं जिन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (42)

और अलबत्ता जिस ने सबर किया और माफ़ कर दिया तो बेशक यह बड़ी हिम्मत के कामों में से है। (43)

وَمِنْ آيَاتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ﴿٣٢﴾ إِنَّ يَسْأُ يُسْكِنِ الرِّيحَ

हवा	वह ठहरा दे	अगर वह चाहे	32	पहाड़ों जैसे	समन्दर में	जहाज़	और उस की निशानियों से
-----	------------	-------------	----	--------------	------------	-------	-----------------------

فَيُظَلِّلْنَ زَوَاكِدَ عَلَى ظَهْرِهِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ

हर सबर करने वाले के लिए	अलबत्ता निशानियां	बेशक उस में	उस की पीठ (सतह) पर	खड़े हुए	तो वह रह जाएं
-------------------------	-------------------	-------------	--------------------	----------	---------------

شَاكُورٍ ﴿٣٣﴾ أَوْ يُؤَبِّقُھُنَّ بِمَا كَسَبُوا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيرٍ ﴿٣٤﴾ وَيَعْلَمُ

और जान लें	34	बहुतों को	और माफ़ कर दे	उन के आमाल के सबब	वह उन्हें हलाक कर दे	या	33	शुक्र करने वाले
------------	----	-----------	---------------	-------------------	----------------------	----	----	-----------------

الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِنَا مَا لَهُمْ مِنْ مَّحِصٍ ﴿٣٥﴾ فَمَا أُوتِيتُمْ

पस जो कुछ दी गई तुम्हें	35	ख़लासी	कोई	नहीं उन के लिए	हमारी आयात में	झगड़ते हैं	वह लोग जो
-------------------------	----	--------	-----	----------------	----------------	------------	-----------

مِنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَى

और हमेशा बाक़ी रहने वाला	बेहतर	अल्लाह के पास	और जो	दुनियावी ज़िन्दगी	तो फ़ाइदा	कोई शै
--------------------------	-------	---------------	-------	-------------------	-----------	--------

لِلَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٣٦﴾ وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ

वह बचते हैं	और जो लोग	36	वह भरोसा करते हैं	और अपने रब पर वह	उन लोगों के लिए जो ईमान लाए
-------------	-----------	----	-------------------	------------------	-----------------------------

كَبِيرِ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَإِذَا مَا غَضِبُوا هُمْ يَغْفِرُونَ ﴿٣٧﴾

37	वह माफ़ कर देते हैं	वह गुस्से में होते हैं	और जब	और बेहयाइयां	कबीरा (बड़े) गुनाह
----	---------------------	------------------------	-------	--------------	--------------------

وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَمْرُهُمْ شُورَى

मश्वरा	और उन का काम	नमाज़	और उन्होंने ने काइम की	अपने रब का (फ़रमान)	कुबूल किया	और जिन लोगों ने
--------	--------------	-------	------------------------	---------------------	------------	-----------------

بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمُ

उन्हें पहुँचे	जब	और जो लोग	38	वह खर्च करते हैं	हम ने अता किया उन्हें	और उस से जो	बाहम
---------------	----	-----------	----	------------------	-----------------------	-------------	------

الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُونَ ﴿٣٩﴾ وَجَزَاءُ سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا

उस जैसी	बुराई	बुराई	और बदला	39	बदला लेते हैं	वह	कोई जुल्म ओ तअददी
---------	-------	-------	---------	----	---------------	----	-------------------

فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿٤٠﴾

40	ज़ालिम (जमा)	दोस्त नहीं रखता	बेशक वह	अल्लाह पर- ज़िम्मे	तो उस का अजर	और इसलाह कर दी	माफ़ कर दिया	सो जिस
----	--------------	-----------------	---------	--------------------	--------------	----------------	--------------	--------

وَلَمَنْ أَنْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهِ فَأُولَئِكَ مَا عَلَيْهِمْ

नहीं उन पर	सो यह लोग	अपने ऊपर जुल्म के बाद	उस ने बदला लिया	और अलबत्ता- जिस
------------	-----------	-----------------------	-----------------	-----------------

مِنْ سَبِيلٍ ﴿٤١﴾ إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَظْلِمُونَ النَّاسَ

लोग	वह जुल्म करते हैं	वह लोग जो	पर	राह (इल्ज़ाम)	इस के सिवा नहीं	41	कोई राह
-----	-------------------	-----------	----	---------------	-----------------	----	---------

وَيَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ أُولَئِكَ لَهُمْ

उन के लिए	यही लोग	नाहक़	ज़मीन में	और वह फ़साद करते हैं
-----------	---------	-------	-----------	----------------------

عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤٢﴾ وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ إِنَّ ذَلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ﴿٤٣﴾

43	बड़ी हिम्मत के काम	अलबत्ता- से	बेशक यह	और माफ़ कर दिया	सबर किया	और अलबत्ता- जिस	42	दर्दनाक अज़ाब
----	--------------------	-------------	---------	-----------------	----------	-----------------	----	---------------

وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ وَّلِيٍّ مِّنْ بَعْدِهِ وَتَرَى الظَّالِمِينَ										
ज़ालिम (जमा)	और तुम देखोगे	उस के बाद	कोई कारसाज़	तो नहीं उस के लिए	गुमराह कर दे अल्लाह	और जिस को				
لَمَّا رَأَوْا الْعَذَابَ يَقُولُونَ هَلْ إِلَىٰ مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيلٍ ﴿٤٤﴾ وَتَرَاهُمْ										
और तू देखेगा उन्हें	44	कोई राह	लौटना	तरफ-का	क्या	वह कहेंगे	अज़ाब	वह देखेंगे	जब	
يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا حُشَعِينَ مِنَ الدُّلِّ يَنْظُرُونَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ										
गोशाए चश्म पोशीदा (नीम कुशादा)	से	वह देखते होंगे	ज़िल्लत से	आज़िज़ी करते हुए	उस (दोज़ख) पर	पेश किए जाएंगे वह				
وَقَالَ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ الْخَسِرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَأَهْلِيهِمْ										
और अपना घराना	अपने आप को	खसारे में डाला	वह जिन्होंने ने	खसारा पाने वाले	वेशक	जो ईमान लाए (मोमिन)	और कहेंगे			
يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۗ أَلَا إِنَّ الظَّالِمِينَ فِي عَذَابٍ مُّقِيمٍ ﴿٤٥﴾ وَمَا كَانَ لَهُمْ										
उन के लिए	और नहीं है	45	हमेशा रहने वाला अज़ाब	में	ज़ालिम (जमा)	खूब याद रखो! वेशक	रोज़े कियामत			
مِّنْ أَوْلِيَاءَ يَنْصُرُونَهُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ										
तो नहीं उस के लिए	गुमराह कर दे अल्लाह	और जिस	अल्लाह के सिवा	वह मदद दें उन्हें	कोई कारसाज़					
مِّنْ سَبِيلٍ ﴿٤٦﴾ اسْتَجِيبُوا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدَّ لَهُ										
उस के लिए	फेरने वाला नहीं	वह दिन	कि आए	इस से क़ब्ल	अपने रब का (फ़रमान)	तुम कुबूल कर लो	46	कोई रास्ता		
مِنَ اللَّهِ مَا لَكُمْ مِّنْ مَّلَجٍ يَوْمَئِذٍ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيرٍ ﴿٤٧﴾ فَإِنْ أَعْرَضُوا										
वह मुँह फेर लें	फिर अगर	47	कोई इन्कार (रोक टोक करने वाला)	और नहीं तुम्हारे लिए	उस दिन	पनाह	कोई नहीं तुम्हारे लिए	अल्लाह से		
فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۗ إِنْ عَلَيْكَ إِلَّا الْبَلْغُ ۗ وَإِنَّا إِذَا أَذَقْنَا										
चखाते हैं हम	जब	और वेशक	पहुँचाना	सिवा	आप पर-ज़िम्मे	नहीं	निगहबान	उन पर	हम ने भेजा तुम्हें	तो नहीं
الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۗ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ										
आगे भेजा	उस के बदले	कोई बुराई	पहुँचे उन्हें	और अगर	खुश हो जाता है उस से	रहमत	अपनी तरफ से	इन्सान		
أَيْدِيهِمْ ۗ فَإِنَّ الْإِنْسَانَ كَفُورٌ ﴿٤٨﴾ اللَّهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ										
और ज़मीन	आस्मानों	अल्लाह के लिए वादशाहत	48	बड़ा नाशुक्रा	तो वेशक इन्सान	उन के हाथों				
يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۗ يَهَبُ لِمَنْ يَشَاءُ إِنَآثًا وَيَهَبُ لِمَنْ يَشَاءُ الذُّكُورَ ﴿٤٩﴾										
49	बेटे	जिस के लिए वह चाहता है	और अता करता है	बेटियाँ	जिस के लिए वह चाहता है	वह अता करता है	जो वह चाहता है	वह पैदा करता है		
أَوْ يُرْوِجُهُمْ ذُكْرَانًا وَإِنَآثًا وَيَجْعَلُ مِمَّنْ يَشَاءُ عَاقِمًا ۗ إِنَّهُ عَلِيمٌ										
जानने वाला	वेशक वह	बाँझ	जिस को वह चाहता है	और कर देता है	और बेटियाँ	बेटे	जमा कर देता है उन्हें	या		
قَدِيرٌ ﴿٥٠﴾ وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُكَلِّمَهُ اللَّهُ إِلَّا وَحْيًا أَوْ مِنْ وَرَائِ										
पीछे से	या	मगर वहि से	कि उस से कलाम करे अल्लाह	किसी बशर को	और नहीं है	50	कुदरत रखने वाला			
حِجَابٍ أَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا فَيُوحِيَ بآدِنِهِ مَا يَشَاءُ ۗ إِنَّهُ عَلِيٌّ حَكِيمٌ ﴿٥١﴾										
51	हिक्मत वाला	बुलन्द तर	वेशक वह	जो वह चाहे	उस के हुक्म से	पस वह वहि करे	कोई फ़रिश्ता	या वह भेजे	एक पर्दा	

और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे तो उस के लिए नहीं उस के बाद कोई कारसाज़, और तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब वह अज़ाब देखेंगे (तो) वह कहेंगे: क्या लौटने की कोई राह है? (44) और तू देखेगा जब वह आज़िज़ी करते हुए ज़िल्लत से दोज़ख पर पेश किए जाएंगे तो वह देखते होंगे अध खुली आँखों से, और मोमिन कहेंगे: खसारा पाने वाले वह हैं जिन्होंने खसारे में डाला अपने आप को और अपने घराने को रोज़े कियामत, खूब याद रखो! ज़ालिम वेशक हमेशा रहने वाले अज़ाब में होंगे। (45) और उन के लिए नहीं है कोई कारसाज़ जो उन्हें अल्लाह के सिवा मदद दे, और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे उस के लिए (हिदायत का) कोई रास्ता नहीं। (46) तुम अपने रब का फ़रमान उस से क़ब्ल कुबूल कर लो कि वह दिन आए जिस को अल्लाह (की जानिव) से कोई फेरने वाला नहीं, तुम्हारे लिए नहीं उस दिन कोई पनाह, और तुम्हारे लिए कोई रोक टोक करने वाला नहीं। (47) फिर अगर वह मुँह फेर लें तो हम ने आप को उन पर नहीं भेजा निगहबान, आप (स) के ज़िम्मे (पैग़ाम) पहुँचाने के सिवा नहीं, और वेशक जब हम इन्सान को अपनी तरफ से रहमत (का मज़ा) चखाते हैं तो वह उस से खुश हो जाता है, और अगर उन्हें उस के बदले कोई बुराई पहुँचे जो उन के हाथों ने आगे भेजा, तो वेशक इन्सान बड़ा नाशुक्रा है। (48) अल्लाह के लिए है आस्मानों और ज़मीन की वादशाहत, जो वह चाहता है पैदा करता है, वह अता करता है जिस को वह चाहे बेटियाँ, और वह अता करता है जिस के लिए वह चाहता है बेटे। (49) या उन्हें जमा कर देता (जोड़े देता है) बेटे और बेटियाँ, और जिस को वह चाहता है बाँझ (बेओलाद) कर देता है, वेशक वह जानने वाला कुदरत रखने वाला है। (50) और किसी बशर की (मजाल) नहीं कि अल्लाह उस से कलाम करे मगर वहि (इशारे) से या परदे के पीछे से, या वह कोई फ़रिश्ता भेजे, पस वह उस के हुक्म से जो (अल्लाह) चाहे वह वहि करे (पैग़ाम पहुँचा दे), वेशक वह बुलन्द तर, हिक्मत वाला है। (51)

और उसी तरह हम ने आप (स) की तरफ अपने हुकम से कुरआन को वहि किया, आप (स) न जानते थे कि किताब क्या है? और न ईमान (की तफसील) और लेकिन हम ने उसे नूर बना दिया, उस से हम अपने बन्दों में से जिस को चाहते हैं हिदायत देते हैं, और बेशक आप (स) ज़रूर रहनुमाई करते हैं सीधे रास्ते की तरफ। (52)

(यानी) अल्लाह का रास्ता, उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, याद रखें! तमाम कामों की बाज़गशत अल्लाह की तरफ है। (53)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है हा-मीम। (1)

क़सम है वाज़ेह किताब की। (2) बेशक हम ने उसे बनाया अरबी ज़बान में कुरआन, ताकि तुम समझो। (3)

और बेशक वह (कुरआन) हमारे पास लौहे महफूज़ में है, बुलन्द मरतबा, वाहिकमत। (4)

क्या हम यह नसीहत तुम से एराज़ कर के इस लिए हटा लें कि तुम हद से गुज़रने वाले लोग हो। (5) और हम ने पहले लोगों में बहुत से नबी भेजे। (6)

और उन के पास नहीं आया कोई नबी, मगर वह उस से ठठा करते थे। (7)

पस हम ने उन (अहले मक्का) से ज़ियादा सख़्त पकड़ (ताक़त) वाले लोगों को हलाक किया और गुज़र चुकी है पहले लोगों की मिसाल। (8)

और अगर तुम उन से पूछो कि किस ने आस्मानों को और ज़मीन को पैदा क्या? तो वह ज़रूर कहेंगे "उन्हें पैदा किया है ग़ालिब, इल्म वाले (अल्लाह) ने"। (9)

वह जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया और तुम्हारे लिए उस में बनाए रास्ते ताकि तुम राह पाओ। (10)

और वह अल्लाह जिस ने एक अन्दाज़े के साथ आस्मानों से पानी उतारा, फिर हम ने उस से ज़िन्दा किया मुर्दा ज़मीन को, उसी तरह तुम (क़ब्रों से) निकाले जाओगे। (11)

وَكَذَلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ رُوحًا مِّنْ أَمْرِنَا مَا كُنْتَ تَدْرِي مَا الْكِتَابُ

क्या है किताब	तुम न जानते थे	अपने हुकम से	कुरआन	तुम्हारी तरफ	हम ने वहि किया	और उसी तरह
---------------	----------------	--------------	-------	--------------	----------------	------------

وَلَا الْإِيمَانَ وَلَكِنْ جَعَلْنَاهُ نُورًا نَهْدِي بِهِ مَنْ نَشَاءُ مِنْ عِبَادِنَا

अपने बन्दों में से	जिस को हम चाहते हैं	हम हिदायत देते हैं उस से	नूर	हम ने बना दिया उसे	और लेकिन	और न ईमान
--------------------	---------------------	--------------------------	-----	--------------------	----------	-----------

وَأَنَّكَ لَتَهْدِي إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٥٢﴾ صِرَاطِ اللَّهِ الَّذِي لَهُ مَا

जो कुछ	वह जिस के लिए	रास्ता अल्लाह का	52	सीधा	रास्ता	तरफ	ज़रूर रहनुमाई करते हो	और बेशक तुम
--------	---------------	------------------	----	------	--------	-----	-----------------------	-------------

فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ إِلَّا إِلَى اللَّهِ تَصِيرُ الْأُمُورُ ﴿٥٣﴾

53	तमाम काम	बाज़गशत	अल्लाह की तरफ	याद रखें	ज़मीन में	और जो कुछ	आस्मानों में
----	----------	---------	---------------	----------	-----------	-----------	--------------

آيَاتِهَا ٨٩ ﴿٤٣﴾ سُورَةُ الزُّحُوفِ ﴿٧﴾ زُكُوعَاتِهَا ٧

रुक़आत 7 (43) सूरतुज़ जुखुरुफ चमक-दमक आयात 89

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حَمْدٌ ﴿١﴾ وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ﴿٢﴾ إِنَّا جَعَلْنَاهُ قُرْءَانًا عَرَبِيًّا لَعَلَّكُمْ

ताकि तुम	अरबी ज़बान	कुरआन	हम ने इसे बनाया	बेशक हम	2	वाज़ेह	क़सम है किताब	1	हा-मीम
----------	------------	-------	-----------------	---------	---	--------	---------------	---	--------

تَعْقِلُونَ ﴿٣﴾ وَإِنَّهُ فِي أُمِّ الْكِتَابِ لَدَيْنَا لَعَلِّي حَكِيمٌ ﴿٤﴾ أَفَنَضْرِبُ

क्या हम हटा लें	4	वाहिकमत	बुलन्द मरतबा	हमारे पास	असल किताब (लौहे महफूज़)	में	और बेशक वह	3	समझो
-----------------	---	---------	--------------	-----------	-------------------------	-----	------------	---	------

عَنكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا أَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُسْرِفِينَ ﴿٥﴾ وَكَمْ أَرْسَلْنَا

और कितने ही भेजे हम ने	5	हद से गुज़रने वाले	लोग	तुम हो	कि	एराज़ कर के	नसीहत	तुम से
------------------------	---	--------------------	-----	--------	----	-------------	-------	--------

مِّنْ نَّبِيِّ فِي الْأَوَّلِينَ ﴿٦﴾ وَمَا يَأْتِيهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ إِلَّا كَانُوا بِهِ

उस से	वह थे	मगर	कोई नबी	और नहीं आया उन के पास	6	पहले लोगों में	नबी
-------	-------	-----	---------	-----------------------	---	----------------	-----

يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٧﴾ فَأَهْلَكْنَا أَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَمَضَى مَثَلُ

मिसाल	और गुज़र चुकी	पकड़	उन से	सख़्त	पस हम ने हलाक किया	7	मज़ाक़ करते
-------	---------------	------	-------	-------	--------------------	---	-------------

الْأَوَّلِينَ ﴿٨﴾ وَلَئِن سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ

तो वह ज़रूर कहेंगे	और ज़मीन	पैदा किया आस्मानों को	किस	तुम उन से पूछो	और अगर	8	पहले लोग
--------------------	----------	-----------------------	-----	----------------	--------	---	----------

خَلَقَهُنَّ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ﴿٩﴾ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا

फ़र्श	ज़मीन	तुम्हारे लिए	बनाया	वह जिस	9	इल्म वाला	ग़ालिब	उन्हें पैदा किया
-------	-------	--------------	-------	--------	---	-----------	--------	------------------

وَجَعَلَ لَكُم فِيهَا سُبُلًا لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٠﴾ وَالَّذِي نَزَّلَ

उतारा	और वह जिस	10	तुम राह पाओ	ताकि तुम	रास्ते - सबील	उस में	तुम्हारे लिए	और बनाए
-------	-----------	----	-------------	----------	---------------	--------	--------------	---------

مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَنشَرْنَا بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا كَذَلِكَ تُخْرَجُونَ ﴿١١﴾

11	तुम निकाले जाओगे	उसी तरह	मुर्दा ज़मीन	उस से	फिर ज़िन्दा किया हम ने	एक अन्दाज़े से	पानी	आस्मान से
----	------------------	---------	--------------	-------	------------------------	----------------	------	-----------

٥  
٦

مع ١١  
عند التقدّمين ١٢

وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُم مِّنَ الْفُلْكِ وَالْأَنْعَامِ									
और चौपाए	कशतियां	तुम्हारे लिए	और बनाई	उन सब के	जोड़े	पैदा किए	और वह जिस		
مَا تَرْكَبُونَ ﴿١٢﴾ لَتَسْتَوُوا عَلَىٰ ظُهُورِهِ ثُمَّ تَذْكُرُونَ نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا									
जब	अपना रब	नेमत	तुम याद करो	फिर	उन की पीठों पर	ताकि तुम ठीक बैठो	12	तुम सवार होते हो	जिस
اَسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُولُوا سُبْحٰنَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا									
और न थे हम	इस	मुसख़्खर किया हमारे लिए	वह ज़ात जिस	पाक है	और तुम कहो	उस पर	तुम ठीक बैठ जाओ		
لَهُ مُقَرَّنِينَ ﴿١٣﴾ وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ ﴿١٤﴾ وَجَعَلُوا لَهُ									
उस के लिए	उन्होंने बना लिया	14	ज़रूर लौट कर जाने वाले	अपना रब	तरफ़	और बेशक हम	13	काबू में लाने वाले	इस को
مِّنْ عِبَادِهِ جُزْءًا ۗ إِنَّ الْإِنسَانَ لَكَفُورًا مُّبِينًا ﴿١٥﴾ أَمْ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ									
उस से जो उस ने पैदा किया	क्या उस ने बना ली	15	खुले तौर पर	नाशुक्रा	बेशक इन्सान	हिस्सा (लखते जिगर)	उस के बन्दों में से		
بَنَاتٍ وَأَصْفُكُمْ بِالْبَنِينَ ﴿١٦﴾ وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ									
उस ने बयान की	उस की जो	उन में से एक	खुशखबरी दी जाए	और जब	16	बेटों के साथ	और तुम्हें मख़सूस किया	बेटियां	
لِلرَّحْمٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهَهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ﴿١٧﴾ أَوْ مَن يَنْشَأُ									
पर्वरिश पाए	किया जो	17	ग़मगीन	और वह	सियाह	हो जाता है उस का चेहरा	मिसाल	रहमान (अल्लाह) के लिए	
فِي الْحَلِيَّةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ﴿١٨﴾ وَجَعَلُوا الْمَلَائِكَةَ									
फ़रिश्ते	और उन्होंने ठहरा लिया	18	ग़ैर वाज़ेह	झगड़े (बहस मुवाहसा) में	और वह	जेवर में			
الَّذِينَ هُمْ عَبْدُ الرَّحْمٰنِ إِنَّا شَٰهِدُوا خَلْقَهُمْ سَتُكْتَبُ									
अभी लिख लिया जाएगा	उन की पैदाइश	क्या तुम मौजूद थे	औरतें	रहमान (अल्लाह) के बन्दे	वह	वह जो			
شَهَادَتُهُمْ وَيُسْأَلُونَ ﴿١٩﴾ وَقَالُوا لَوْ شَاءَ الرَّحْمٰنُ مَا عَبَدْنَاهُمْ ۗ									
हम न इबादत करते उन की	रहमान (अल्लाह)	अगर चाहता	और वह कहते हैं	19	और उन से पूछा जाएगा	उन की गवाही (दावा)			
مَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۗ إِن هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿٢٠﴾ أَمْ اتَيْنَهُم									
हम ने दी उन्हें	क्या	20	अटकल दौड़ाते हैं	मगर - सिर्फ	वह नहीं	कुछ इल्म	उस का	उन्हें नहीं	
كِتَابًا مِّنْ قَبْلِهِ فَهُمْ بِهِ مُسْتَمْسِكُونَ ﴿٢١﴾ بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا									
बेशक हम ने पाया	वह कहते हैं	बल्कि	21	थामे हुए हैं	सो वह उस को	इस से कब्ल	कोई किताब		
أَبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَرِهِمْ مُّهْتَدُونَ ﴿٢٢﴾ وَكَذٰلِكَ									
और उसी तरह	22	राह पाने वाले (चल रहे हैं)	उन के नक्शे क़दम पर	और बेशक हम	एक तरीक़े पर	अपने बाप दादा			
مَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا ۗ									
उस के खुशहाल	कहा	मगर	कोई डर सुनाने वाला	किसी बस्ती में	इस से पहले	नहीं भेजा हम ने			
إِنَّا وَجَدْنَا أَبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَرِهِمْ مُّقْتَدُونَ ﴿٢٣﴾									
23	पैरवी करते हैं	उन के नक्शे क़दम पर	और बेशक हम	एक तरीक़े पर	अपने बाप दादा	बेशक हम ने पाया			

और वह जिस ने उन सब के जोड़े बनाए, और तुम्हारे लिए बनाई कशतियां और चौपाए जिन पर तुम सवार होते हो। (12)

ताकि तमू उन की पीठों पर ठीक तौर से बैठो, फिर तुम याद करो अपने रब की नेमत को, जब तुम उस पर ठीक बैठ जाओ, और तुम कहो: पाक है वह ज़ात जिस ने इसे हमारे लिए मुसख़्खर (ताबे फ़रमान) किया और हम इस को काबू में लाने वाले न थे। (13)

और बेशक हम अपने रब की तरफ़ ज़रूर लौट कर जाने वाले हैं। (14) और उन्होंने ने उस के बन्दों में से उस के लिए बना लिया है जुज़ (लखते जिगर), बेशक इन्सान सरीह नाशुक्रा है। (15)

क्या उस ने अपनी मख़लूक में से (अपने लिए) बेटियां बना लीं? और तुम्हें मख़सूस किया (नवाज़ा) बेटों के साथ? (16)

और जब उन में से किसी को उस (बेटी) की खुशख़बरी दी जाए जिस की मिसाल उस ने अल्लाह के लिए दी तो उस का चेहरा सियाह हो जाता है, और वह ग़म से भर जाता है। (17)

क्या वह (औलाद) जो ज़ेवर में पर्वरिश पाए और वह बहस मुवाहसा में ग़ैर वाज़ेह हो (अल्लाह के हिस्से में आई)। (18)

और उन्होंने ने ठहराया फ़रिश्तों को औरतें, जो अल्लाह के बन्दे हैं, क्या तुम उन की पैदाइश (के बन्दे) मौजूद थे? उन का यह दावा अभी लिख लिया जाएगा और कियामत के (दिन) उन से पूछा जाएगा। (19)

और वह कहते हैं: अगर अल्लाह चाहता तो हम उन की इबादत न करते, उन्हें उस का कुछ इल्म नहीं, वह तो सिर्फ़ अटकल दौड़ाते हैं। (20) क्या हम ने उन्हें उस से कब्ल कोई किताब दी है जिस को वह थामे हुए हैं (उस से इस्तिदलाल करते हैं)। (21)

बल्कि वह कहते हैं कि हम ने अपने बाप दादा को एक तरीक़े पर पाया, और बेशक हम उन के नक्शे क़दम पर चल रहे हैं। (22)

और उसी तरह हम ने आप (स) से पहले किसी बस्ती में कोई डर सुनाने वाला नहीं भेजा, मगर उस के खुशहाल लोगों ने कहा, बेशक हम ने पाया अपने बाप दादा को एक तरीक़े पर, और बेशक हम उन के नक्शे क़दम की पैरवी करते हैं। (23)

नबी (स) ने कहा: क्या (उस सूरत में भी) अगरचे मैं बेहतर राह बतलाने वाला (दीने हक लाया) हूँ उस से जिस पर तुम ने अपने बाप दादा को

पाया? वह बोले: बेशक हम उस का इन्कार करने वाले हैं जिस के साथ तुम भेजे गए हो। (24)

तो हम ने उन से बदला लिया, सो देखो कि झुटलाने वालों का कैसा अन्जाम हुआ? (25)

और (याद करो) जब इब्राहीम (अ) ने अपने बाप दादा और अपनी कौम को कहा: बेशक मैं उस से बेज़ार हूँ जिस

की तुम परस्तिश करते हो, (26) मगर (हाँ) जिस ने मुझे पैदा किया, तो बेशक वह जल्द मुझे हिदायत देगा। (27)

और उस (इब्राहीम अ) ने उस को किया अपनी नस्ल में बाकी रहने वाली बात, ताकि वह रुजूअ करते रहें। (28)

बल्कि मैं ने उन्हें और उन के बाप दादा को सामाने ज़िस्त दिया,

यहां तक कि उन के पास कुरआन आ गया, और साफ़ साफ़ बयान करने वाला रसूल। (29)

और जब उन के पास हक आया तो वह कहने लगे कि यह जादू है, और बेशक हम इस का इन्कार करने वाले हैं। (30)

और वह बोले कि यह कुरआन क्यों न नाज़िल किया गया दो बस्तियों (मक्का या ताइफ़) के किसी बड़े आदमी पर? (31)

क्या वह तुम्हारे रब की रहमत तकसीम करते हैं, और हम ने उन के दरमियान उन की रोज़ी दुनिया की ज़िन्दगी में तकसीम की है, और हम

ने उन में से एक के दरजे दूसरे पर बुलन्द किए हैं ताकि उन में से एक दूसरे को खिदमतगार बनाए, और तुम्हारे रब की रहमत उस से बेहतर है जो वह जमा करते हैं। (32)

और अगर (एहतिमाल) न होता कि तमाम लोग एक तरीके पर हो जाएंगे तो हम बनाते उन के लिए जो कुफ़ करते हैं अल्लाह का। उन के घरों के लिए चाँदी की छत और सीढ़ियां जिन पर वह चढ़ते हैं (33)

और उन के घरों के दरवाज़े और तख़्त जिन पर वह तकिया लगाते हैं। (34)

और (खूब) आराइश करते, और यह सब (कुछ) नहीं मगर दुनिया की ज़िन्दगी की पूंजी है, और तुम्हारे रब के नज़्दीक आखिरत

परहेज़गारों के लिए है। (35)

قُلْ أَوْلُو جِحْتِكُمْ بِأَهْدَى مِمَّا وَجَدْتُمْ عَلَيْهِ آبَاءَكُمْ قَالُوا إِنَّا

वेशक हम	वह बोले	अपने बाप दादा	उस पर	तुम ने पाया	उस से जिस	बेहतर राह बताने वाला	क्या अगरचे मैं तुम्हारे पास लाया हूँ	(नबी ने) कहा
---------	---------	---------------	-------	-------------	-----------	----------------------	--------------------------------------	--------------

بِمَا أُرْسَلْتُمْ بِهِ كَفَرُونَ ﴿٢٤﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَنْظُرْ كَيْفَ كَانَ

हुआ	कैसा	सो देखो	उन से	तो हम ने बदला लिया	24	इन्कार करने वाले	जिस के साथ तुम भेजे गए	उस पर
-----	------	---------	-------	--------------------	----	------------------	------------------------	-------

عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ﴿٢٥﴾ وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ إِنَّنِي

वेशक मैं	और अपनी कौम	अपने बाप को	इब्राहीम (अ)	कहा	और जब	25	झुटलाने वालों का	अन्जाम
----------	-------------	-------------	--------------	-----	-------	----	------------------	--------

بِرَاءٍ مِمَّا تَعْبُدُونَ ﴿٢٦﴾ إِلَّا الَّذِي فَطَرَنِي فَإِنَّهُ سَيَهْدِينِ ﴿٢٧﴾

27	जल्द मुझे हिदायत देगा	तो बेशक वह	मुझे पैदा किया	मगर वह जिस ने	26	उस से जिस की तुम परस्तिश करते हो	बेज़ार
----	-----------------------	------------	----------------	---------------	----	----------------------------------	--------

وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً فِي عَقِبِهِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢٨﴾ بَلْ مَتَّعْتُ

बल्कि मैं ने सामाने ज़िस्त दिया	28	रुजूअ करते रहें	ताकि वह	अपनी नस्ल में	बाकी रहने वाली	बात	और उस ने किया उस को
---------------------------------	----	-----------------	---------	---------------	----------------	-----	---------------------

هَؤُلَاءِ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُولٌ مُّبِينٌ ﴿٢٩﴾ وَلَمَّا

और जब	29	साफ़ साफ़ बयान करने वाला	और रसूल	हक (कुरआन)	आ गया उन के पास	यहां तक कि	और उन के बाप दादा	उन को
-------	----	--------------------------	---------	------------	-----------------	------------	-------------------	-------

جَاءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ وَإِنَّا بِهِ كَافِرُونَ ﴿٣٠﴾ وَقَالُوا

और वह बोले	30	इन्कार करने वाले	इस का	और बेशक हम	जादू	यह	वह कहने लगे	हक	आ गया उन के पास
------------	----	------------------	-------	------------	------	----	-------------	----	-----------------

لَوْلَا نُزِّلَ هَذَا الْقُرْآنُ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيمٍ ﴿٣١﴾ أَهَمْ

क्या वह	31	बड़े	दो बस्तियां	से	किसी आदमी पर	यह कुरआन	क्यों न उतारा गया
---------	----	------	-------------	----	--------------	----------	-------------------

يَقْسِمُونَ رَحْمَتَ رَبِّكَ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيشَتَهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا

दुनिया की ज़िन्दगी	में	उन की रोज़ी	उन के दरमियान	हम ने तकसीम की	हम	तुम्हारा रब	रहमत	तकसीम करते हैं
--------------------	-----	-------------	---------------	----------------	----	-------------	------	----------------

وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا

उन में से बाज़ (एक) दूसरे को	ताकि बनाए	दरजे	बाज़ (दूसरे) पर	उन में से बाज़ (एक)	और हम ने बुलन्द किए
------------------------------	-----------	------	-----------------	---------------------	---------------------

سُخْرِيًّا وَرَحِمْتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٣٢﴾ وَلَوْ لَا

और अगर (यह) न होता	32	वह जमा करते हैं	उस से जो	बेहतर	और तुम्हारे रब की रहमत	खिदमतगार
--------------------	----	-----------------	----------	-------	------------------------	----------

أَنْ يَكُونَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَكْفُرُ بِالرَّحْمَنِ

रहमान (अल्लाह) का	उनके लिए जो कुफ़ करते हैं	तो हम बनाते	एक उम्मत (तरीका)	तमाम लोग	कि हो जाएंगे
-------------------	---------------------------	-------------	------------------	----------	--------------

لِبُيُوتِهِمْ سُقْفًا مِّنْ فِصَّةٍ وَمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُونَ ﴿٣٣﴾ وَلِبُيُوتِهِمْ

उन के घरों के लिए	33	वह चढ़ते	जिन पर	और सीढ़ियां	चाँदी से-की	छत	उनके घरों के लिए
-------------------	----	----------	--------	-------------	-------------	----	------------------

أَبْوَابًا وَسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَكَبَّرُونَ ﴿٣٤﴾ وَزُخْرَفًا وَإِنْ كُلُّ ذَلِكَ لَمَّا

मगर	यह सब	और नहीं	और आराइश करते	34	वह तकिया लगाते	जिन पर	और तख़्त	दरवाज़े
-----	-------	---------	---------------	----	----------------	--------	----------	---------

مَتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةَ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٣٥﴾

35	परहेज़गारों के लिए	तुम्हारे रब के नज़्दीक	और आखिरत	दुनिया की ज़िन्दगी	पूंजी
----	--------------------	------------------------	----------	--------------------	-------

٢  
٨

٢  
٩

<p>وَمَنْ يَعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمَنِ نُقِصْ لَهُ شَيْطَانًا فَهُوَ لَهُ قَرِينٌ ﴿٣٦﴾</p>									
36	साथी	उस का	तो वह	एक शैतान	हम मुकर्रर (मुसल्लत) कर देते हैं उस के लिए	रहमान (अल्लाह) की याद	से	गफलत करे	और जो
<p>وَأَنَّهُمْ لَيُضْذَوْنَهِمْ عَنِ السَّبِيلِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ مُّهْتَدُونَ ﴿٣٧﴾</p>									
37	हिदायत यापता	कि वह	और वह गुमान करते हैं	रास्ते से	अलबत्ता वह रोकते हैं उन्हें	और बेशक वह			
<p>حَتَّىٰ إِذَا جَاءَنَا قَالَ يَلَيْتَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ</p>									
मशरिक् ओ मग़रिब	दूरी	और तेरे दरमियान	मेरे दरमियान	ऐ काश	वह कहेगा	वह आएंगे हमारे पास	जब	यहां तक कि	
<p>فَبِئْسَ الْقَرِينُ ﴿٣٨﴾ وَلَنْ يَنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ إِذْ ظَلَمْتُمْ أَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ</p>									
अज़ाब में	यह कि तुम	जब जुल्म कर चुके तुम ने	आज	और हरगिज़ नफा न देगा तुम्हें	38	साथी	तू बुरा		
<p>مُشْتَرِكُونَ ﴿٣٩﴾ أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصَّمَّمَ أَوْ تَهْدِي الْعُمَىٰ وَمَنْ كَانَ</p>									
और जो हो	अँधों	या राह दिखाएंगे	बहरों	सुनाएंगे	तो क्या आप (स)	39	मुशतरिक हो		
<p>فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٤٠﴾ فَمَا نَذَهَبَنَّ بِكَ فَإِنَّا مِنْهُمْ مُنْتَقِمُونَ ﴿٤١﴾</p>									
41	इन्तिकाम लेने वाले	उन से	तो बेशक हम	आप (स) को	ले जाएं	फिर अगर	40	सरीह गुमराही में	
<p>أَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِي وَعَدْنَاهُمْ فَإِنَّا عَلَيْهِمْ مُّقْتَدِرُونَ ﴿٤٢﴾ فَاسْتَمْسِكْ</p>									
पस आप (स) मज़बूती से थाम लें	42	कूदरत रखने वाले (कादिर) हैं	उन पर	तो बेशक हम	हम ने वादा किया उन से	वह जो	या हम दिखादें तुम्हें		
<p>بِالَّذِي أُوحِيَ إِلَيْكَ إِنَّكَ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٤٣﴾ وَإِنَّهُ لَذِكْرٌ</p>									
नसीहत (नामा)	और बेशक यह	43	सीधा	रास्ता	पर	बेशक आप (स) की तरफ	वहि किया गया	वह जो	
<p>لَكَ وَلِقَوْمِكَ وَسَوْفَ تُسْأَلُونَ ﴿٤٤﴾ وَسَأَلْ مَنْ أَرْسَلْنَا</p>									
हम ने भेजे	जो	और पूछ लें	44	तुम से पूछा जाएगा	और अनकरीब	और आप (स) की कौम के लिए	आप (स) के लिए		
<p>مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُسُلِنَا أَجَعَلْنَا مِنْ دُونِ الرَّحْمَنِ إِلَهَةً</p>									
कोई माबूद	रहमान (अल्लाह) के सिवा	से	क्या हम ने मुकर्रर किए	हमारे रसूलों में से	आप (स) से पहले				
<p>يُعْبَدُونَ ﴿٤٥﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ</p>									
और उस के सरदार	फिरऔन	तरफ	अपनी निशानियों के साथ	मूसा (अ)	और तहकीक हम ने भेजा	45	उन की इबादत के लिए		
<p>فَقَالَ إِنِّي رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٦﴾ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِآيَاتِنَا إِذَا هُمْ</p>									
वह	नागर्हा	हमारी निशानियों के साथ	वह आया	फिर जब	46	तमाम जहानों का परवरदिगार	बेशक मैं रसूल	तो उस ने कहा	
<p>مِنَهَا يَضْحَكُونَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرِيهِمْ مِنْ آيَةٍ إِلَّا هِيَ أَكْبَرُ مِنْ أُخْتِهَا</p>									
उस की बहन (दूसरी निशानी)	से	बड़ी	मगर वह	कोई निशानी	और हम उन्हें दिखाते थे	47	उस से (उन निशानियों पर) हैंसने लगे		
<p>وَآخَذْنَاهُمْ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٤٨﴾ وَقَالُوا يَا أَيُّهَ</p>									
ऐ	और उन्होंने ने कहा	48	वह रुजूअ करे	ताकि वह	अज़ाब में	और हम ने गिरफ़्तार किया उन्हें			
<p>السَّاحِرِ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ إِنَّا لَمُهْتَدُونَ ﴿٤٩﴾</p>									
49	अलबत्ता हिदायत पाने वाले	बेशक हम	तेरे पास	उस अ़हद के सबब जो	अपना रब	हमारे लिए	दुआ कर	जादूगर	

और जो कोई अल्लाह की याद से गफलत करे, हम मुसल्लत कर देते हैं उस के लिए एक शैतान, तो वह उस का साथी हो जाता है। (36) और बेशक वह उन्हें (अल्लाह के) रास्ते से रोकते हैं, और वह गुमान करते हैं कि वह हिदायत यापता है। (37) यहां तक कि जब वह हमारे पास आएंगे तो वह (अपने शैतान साथी से) कहेगा: ऐ काश मेरे और तेरे दरमियान मशरिक् ओ मग़रिब की दूरी होती, तू बुरा साथी निकला। (38) और जब कि तुम जुल्म कर चुके तो आज तुम्हें यह हरगिज़ नफा न देगा कि तुम अज़ाब में मुशतरिक हो। (39) तो क्या आप (स) बहरों को सुनाएंगे या अँधों को राह दिखाएंगे? और उस को जो सरीह गुमराही में हो। (40) फिर अगर हम आप (स) को (दुनिया से) ले जाएं तो बेशक हम (फिर भी) उन से इन्तिकाम लेने वाले हैं। (41) या हम आप (स) को दिखा दें वह जो हम ने उन से वादा किया है तो बेशक हम उन पर कादिर हैं। (42) पस आप (स) वह मज़बूती से थाम लें जो आप (स) की तरफ वहि किया गया है, बेशक आप (स) सीधे रास्ते पर हैं। (43) और बेशक यह (कुरआन) एक नसीहत नामा है आप (स) के लिए और आप (स) की कौम के लिए। और अनकरीब तुम से पूछा जाएगा। (44) आप (स) हमारे उन रसूलों से पूछ लें जो हम ने आप से पहले भेजे: क्या हम ने अल्लाह के सिवा कोई माबूद मुकर्रर किए थे जिन की इबादत की जाए। (45) और तहकीक हम ने मूसा (अ) को अपनी निशानियों के साथ भेजा फिरऔन और उस के सरदारों की तरफ, तो उस ने कहा: बेशक मैं तमाम जहानों के परवरदिगार का रसूल हूँ। (46) फिर जब वह हमारी निशानियों के साथ उन के पास आया तो नागर्हा वह उन निशानियों पर हैंसने लगे। (47) और हम उन्हें कोई निशानी नहीं दिखाते थे, मगर वह पहली निशानी से बड़ी होती, हम ने उन्हें अज़ाब में गिरफ़्तार किया ताकि वह (हक की तरफ) रुजूअ करें। (48) और उन्होंने ने कहा: ऐ जादूगर! हमारे लिए अपने रब से दुआ कर उस अ़हद के सबब जो तेरे पास है, बेशक हम हिदायत पाने वाले हैं (हिदायत पा लेंगे)। (49)

फिर जब हम ने उन से अज़ाब हटा दिया तो नागहां वह अहद तोड़ गए। (50)

और फिरऔन ने अपनी कौम में पुकारा (मनादी की), उस ने कहा: ऐ मेरी कौम! क्या मिस्र की बादशाहत मेरी नहीं? और यह नहरें जारी हैं मेरे (महलात के) नीचे से, तो क्या तुम नहीं देखते? (51)

वल्कि मैं उस से बेहतर हूँ जो कम कद्र है, और वह मालूम नहीं होता साफ़ गुफ़्तगू करता। (52)

तो उस पर सोने के कंगन क्यों न डाले गए? या उस के साथ फ़रिश्ते (क्यों न) आए परा बान्ध कर। (53)

पस उस ने अपनी कौम को बेअक़ल कर दिया, तो उन्होंने उस की इताअत की, बेशक वह नाफ़रमान लोग थे। (54)

फिर जब उन्होंने ने हमें गुस्सा दिलाया तो हम ने उन से इन्तिकाम लिया और उन सब को गर्क कर दिया। (55)

तो हम ने उन्हें गए गुज़रे कर दिया, और बाद में आने वालों के लिए एक दास्तान। (56)

और जब ईसा (अ) इब्ने मरयम की मिसाल बयान की गई तो यकायक तुम्हारी कौम उस से खुशी के मारे चिल्लाने लगी। (57)

वह बोले: क्या हमारे माबूद बेहतर हैं या वह (ईसा इब्ने मरयम)? वह उस को तुम्हारे सामने सिर्फ़ झगड़ने के लिए बयान करते हैं, वल्कि वह तो है ही झगड़ालू। (58)

ईसा (अ) सिर्फ़ एक बन्दे है, हम ने इन्ज़ाम किया उन पर और हम ने उन्हें बनी इस्राईल के लिए एक मिसाल बनाया। (59)

और अगर हम चाहते तो तुम में से फ़रिश्ते पैदा करते ज़मीन में, वह तुम्हारे जानशीन होते। (60)

और बेशक वह क़ियामत की एक निशानी है, तो तुम हरगिज़ उस में शक न करो, और मेरी पैरवी करो, यह सीधा रास्ता है। (61)

और शैतान तुम्हें रोक न दे, बेशक वह तुम्हारे लिए खुला दुश्मन है। (62)

और जब ईसा (अ) आए खुली निशानियों के साथ, तो उन्होंने न कहा: तहकीक मैं तुम्हारे पास हिक्मत के साथ आया हूँ, और इस लिए कि मैं तुम्हारे लिए वह वाज़ बातें बयान कर दूँ जिन में तुम इख्तिलाफ़ करते हो, सो तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो। (63)

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمْ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ يَنْكُثُونَ ﴿٥٠﴾ وَنَادَى فِرْعَوْنُ									
फिरऔन	और पुकारा	50	अहद तोड़ गए	नागहां वह	अज़ाब	उन से	हम ने खोला (हटा दिया)	फिर जब	
فِي قَوْمِهِ قَالَ يَقَوْمِ أَلَيْسَ لِي مُلْكُ مِصْرَ وَهَذِهِ الْأَنْهَارُ									
नहरें	और यह	मिस्र की बादशाहत	क्या नहीं मेरे लिए	उस ने कहा ऐ मेरी कौम	अपनी कौम	में			
تَجْرِي مِنْ تَحْتِي أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٥١﴾ أَمْ أَنَا خَيْرٌ مِّنْ هَذَا الَّذِي هُوَ									
वह	वह जो	उस से	बेहतर	क्या - वल्कि मैं	51	देखते तुम	तो क्या नहीं	मेरे नीचे से	जारी है
مَهِينٌ ۗ وَلَا يَكَادُ يُبِينُ ﴿٥٢﴾ فَلَوْلَا أَلْقَى عَلَيْهِ آسُورَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ									
सोने के	कंगन	उस पर	डाले गए	तो क्यों न	52	साफ़ गुफ़्तगू करता	और वह मालूम नहीं होता	कम कद्र	
أَوْ جَاءَ مَعَهُ الْمَلِكَةُ مُقْتَرِنِينَ ﴿٥٣﴾ فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهُ فَطَاعُوهُ ۗ									
तो उन्होंने ने उस की इताअत की	अपनी कौम	पस उस ने बेअक़ल कर दिया	53	परा बान्ध कर	फ़रिश्ते	उस के साथ	या आए		
إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَسِقِينَ ﴿٥٤﴾ فَلَمَّا اسْفُونا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ									
पस हम ने गर्क कर दिया उन्हें	उन से	हम ने इन्तिकाम लिया	उन्होंने ने गुस्सा दिलाया हमें	फिर जब	54	नाफ़रमान	लोग	थे	बेशक वह
أَجْمَعِينَ ﴿٥٥﴾ فَجَعَلْنَاهُمْ سَلَفًا وَمَثَلًا لِّلْآخِرِينَ ﴿٥٦﴾ وَلَمَّا ضُرِبَ									
बयान की गई	और जब	56	बाद में आने वाले	पेश रो (गए गुज़रे) और मिसाल (दास्तान)	तो हम ने कर दिया उन्हें	55	सब		
ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُونَ ﴿٥٧﴾ وَقَالُوا ءَالِهَتْنَا خَيْرٌ									
बेहतर	क्या हमारे माबूद	और वह बोले	57	उस से (खुशी से) चिल्लाने लगते हैं	यका यक तुम्हारी कौम	मिसाल	ईसा इब्ने मरयम		
أَمْ هُوَ مَا ضَرَبُوهُ لَكَ إِلَّا جَدَلًا ۗ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُونَ ﴿٥٨﴾ إِنْ هُوَ									
नहीं वह (ईसा अ)	58	झगड़ालू	लोग	वल्कि वह	मगर (सिर्फ़) झगड़ने को	तुम्हारे लिए	नहीं वह बयान करते उस को	या वह	
إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنَاهُ مَثَلًا لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٥٩﴾ وَلَوْ نَشَاءُ									
और अगर हम चाहते	59	बनी इस्राईल के लिए	एक मिसाल	और हम ने बनाया उस को	उस पर	हम ने इन्ज़ाम क्या	एक बन्दा	सिर्फ़	
لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلَكَةً فِي الْأَرْضِ يَخْلِفُونَ ۗ وَإِنَّهُ لَعَلْمٌ									
एक निशानी	और बेशक वह	60	वह (तुम्हारे) जानशीन होते	ज़मीन में	फ़रिश्ते	तुम में से	अलबत्ता हम करते		
لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُون ۗ هَذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴿٦١﴾									
61	सीधा	रास्ता	यह	और मेरी पैरवी करो	उस में	तो हरगिज़ शक न करो तुम	क़ियामत की		
وَلَا يَصُدُّكُمْ الشَّيْطَانُ ۗ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٦٢﴾ وَلَمَّا									
और जब	62	दुश्मन खुला	तुम्हारे लिए	बेशक वह	शैतान	और रोक न दे तुम्हें			
جَاءَ عِيسَى بِالْبَيِّنَاتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِأُبَيِّنَ									
और इस लिए कि बयान कर दूँ	हिक्मत के साथ	तहकीक मैं आया हूँ तुम्हारे पास	उस ने कहा	खुली निशानियों के साथ	ईसा (अ)	आए			
لَكُمْ بَعْضَ الَّذِي تَخْتَلِفُونَ فِيهِ ۗ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۗ ﴿٦٣﴾									
63	और मेरी इताअत करो	सो डरो अल्लाह से	उस में	तुम इख्तिलाफ़ करते हो	वह जो कि	वाज़	तुम्हारे लिए		

٥  
١١



إِنَّ اللَّهَ هُوَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَأَعْبُدُوهُ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٦٤﴾									
64	सीधा	रास्ता	यह	सो तुम उस की इबादत करो	और तुम्हारा रब	मेरा रब	वह	वेशक अल्लाह	
فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابَ مِنْ بَيْنِهِمْ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا									
जिन्होंने ने जुल्म किया			उन लोगों के लिए	सो खराबी	आपस में	गिरोह (जमा)	फिर इखतिलाफ डाल लिया		
مِنْ عَذَابٍ يَوْمَ الْيَوْمِ ﴿٦٥﴾ هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ									
वह उन पर आ जाए	कि	क़ियामत	सिर्फ	वह इन्तिज़ार करते हैं	क्या	65	दिन दुख देने वाला	अज़ाब से	
بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٦٦﴾ الْأَحْيَاءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ									
वाज़ से (एक)	उन के वाज़ (दूसरे)	उस दिन	तमाम दोस्त	66	शऊर न रखते हैं	और वह	अचानक		
عَدُوٍّ إِلَّا الْمُتَّقِينَ ﴿٦٧﴾ يَعْبَادُ لَا خَوْفَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَا أَنْتُمْ									
और न तुम	आज	तुम पर	कोई ख़ौफ नहीं	ऐ मेरे बन्दो	67	परहेज़गारों	सिवा	दुश्मन	
تَحْزَنُونَ ﴿٦٨﴾ الَّذِينَ آمَنُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا مُسْلِمِينَ ﴿٦٩﴾ أُدْخِلُوا									
तुम दाखिल हो जाओ	69	मुसल्लिम (जमा)	और वह थे	हमारी आयात पर	जो ईमान लाए	68	गमगीन होंगे		
الْجَنَّةَ أَنْتُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ ﴿٧٠﴾ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ									
रिकाबियां	उन पर	लिए फिरेंगे	70	तुम खुश बख्त किए जाओगे	और तुम्हारी वीवियां	तुम	जन्नत		
مِّنْ ذَهَبٍ وَآكَوَابٍ وَفِيهَا مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنْفُسُ وَتَلَذُّ									
और लज़ज़त होगी	जी (जमा)	वह जो चाहेंगे	और उस में	और आवख़ोरे	सोने की				
الْأَعْيُنُ وَأَنْتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٧١﴾ وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورِثْتُمُوهَا									
तुम वारिस बनाए गए उस के	वह जिस	जन्नत	और यह	71	हमेशा रहेंगे	उस में	और तुम	आँखों	
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٧٢﴾ لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ كَثِيرَةٌ									
बहुत	मेवे	उस में	तुम्हारे लिए	72	जो तुम करते थे		उस के बदले		
مِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٧٣﴾ إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابٍ جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ﴿٧٤﴾									
74	हमेशा रहेंगे	अज़ाबे जहननम	में	मुज़रिम (जमा)	वेशक	73	तुम खाते हो	उस से	
لَا يُفْتَرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ﴿٧٥﴾ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ									
और हम ने जुल्म नहीं किया उन पर	75	नाउम्मीद पड़े रहेंगे	और वह उस में	उन से	हल्का न किया जाएगा				
وَلَكِنْ كَانُوا هُمُ الظَّالِمِينَ ﴿٧٦﴾ وَنَادُوا يَمْلِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا									
अच्छा हो कि मौत का फ़ैसला कर दे हम पर (हमारी)	ऐ मालिक	और वह पुकारेंगे	76	ज़ालिम (जमा)	वह	वह थे	और लेकिन (बल्कि)		
رَبُّكَ قَالَ إِنَّكُمْ مُّكْشُونَ ﴿٧٧﴾ لَقَدْ جِئْنَاكُمْ بِالْحَقِّ وَلَكِنْ									
लेकिन	हक के साथ	तहकीक हम आए तुम्हारे पास	77	हमेशा रहने वाले	वेशक तुम	वह कहेगा	तेरा रब		
أَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كَرِهُونَ ﴿٧٨﴾ أَمْ أَبْرَمُوا أَمْرًا فَإِنَّا مُبْرِمُونَ ﴿٧٩﴾									
79	ठहराने वाले	तो वेशक हम	कोई बात	उन्होंने ठहरा ली	क्या	78	नापसंद करने वाले	हक से-को	तुम में से अक़्सर

वेशक अल्लाह ही मेरा रब और तुम्हारा रब है, सो तुम उस की इबादत करो, यह रास्ता है सीधा। (64)

फिर गिरोहों ने आपस में इखतिलाफ डाल लिया, सो उन लोगों के लिए खराबी है जिन्होंने ने जुल्म किया, अज़ाब से दुख देने वाले दिन के। (65)

क्या वह सिर्फ क़ियामत का इन्तिज़ार करते हैं कि वह उन पर अचानक आ जाए और वह शऊर (ख़बर भी) न रखते हैं। (66)

परहेज़गारों के सिवा उस दिन तमाम दोस्त एक दूसरे के दुश्मन होंगे। (67) ऐ मेरे बन्दो! तुम पर कोई ख़ौफ नहीं आज के दिन और न तुम गमगीन होंगे। (68)

जो लोग हमारी आयात पर ईमान लाए और वह मुसल्लिम (फ़रमांवरदार) थे। (69)

तुम दाखिल हो जाओ तुम और तुम्हारी वीवियां जन्नत में, तुम खुश बख्त किए जाओगे। (70)

उन पर सोने की रिकाबियां और आवख़ोरे लिए फिरेंगे, और उस में (मौजूद होगा) जो (उन के) दिल चाहेंगे और आँखों की लज़ज़त (होगी), और तुम उस में हमेशा रहोगे। (71)

और यह वह जन्नत है जिस के तुम वारिस बनाए गए हो उन (आमाल) के बदले जो तुम करते थे। (72)

तुम्हारे लिए उस में बहुत मेवे हैं, उन में से तुम खाओगे। (73)

वेशक मुज़रिम जहननम के अज़ाब में हमेशा रहेंगे। (74)

उन से हल्का न किया जाएगा, और वह उस में नाउम्मीद पड़े रहेंगे। (75) और हम ने उन पर जुल्म नहीं किया, बल्कि वही ज़ालिम थे। (76)

और वह पुकारेंगे ए मालिक (दारोगाए जहननम)! अच्छा हो कि तेरा रब हमारी मौत का फ़ैसला करदे, वह कहेगा: वेशक तुम (इसी हाल में) हमेशा रहने वाले हो। (77)

तहकीक हम तुम्हारे पास हक के साथ आए, लेकिन तुम में से अक़्सर हक को नापसंद करने वाले थे। (78)

क्या उन्होंने कोई बात ठहरा ली है तो वेशक हम (भी) ठहराने वाले हैं। (79)

क्या वह गुमान करते हैं? कि हम नहीं सुनते उन की पोशीदा बातों और उन की सरगोशियों को, हाँ (क्यों नहीं) हमारे फ़रिश्ते उन के पास लिखते हैं। (80)

आप (स) फ़रमा दें: अगर अल्लाह का कोई बेटा होता तो मैं (उस का) पहला इबादत करने वाला होता। (81)

आस्मानों और ज़मीन का रब, अर्श का रब, उस से पाक है जो वह बयान करते हैं। (82)

पस आप (स) उन को छोड़ दें कि वह बेहूदा बातें करें और खेलें यहां तक कि वह उस दिन को पा लें जिस का उन से वादा किया जाता है। (83)

और वही जो आस्मानों में माबूद है और ज़मीन में माबूद है, और वही हिक्मत वाला, इल्म वाला है। (84)

और बड़ी बरकत वाला और जिस के लिए बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की, और जो कुछ उन दोनों के दरमियान है, और उस के पास है कियामत का इल्म, और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (85)

और वह जिन को अल्लाह के सिवा पुकारते हैं, वह शफ़ाअत का इख़्तियार नहीं रखते, सिवाए उस के जिस ने गवाही दी हक़ की और वह जानते हैं। (86)

और अगर आप (स) उन से पूछें कि उन्हें किस ने पैदा किया? तो वह ज़रूर कहेंगे "अल्लाह ने" तो वह किधर उलटे फिरे जाते हैं? (87)

कसम है (रसूल के यह) कहने की कि ऐ मेरे रब! यह लोग ईमान नहीं लाएंगे। (88)

तो आप (स) उन से मुँह फेर लें और सलाम कहें, पस जल्द वह (अनुज्ञाम) जान लेंगे। (89)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है हा-मीम। (1)

कसम है वाज़ेह किताब की। (2)

वेशक हम ने उसे एक मुबारक रात (लैलतल क़द्र) में नाज़िल किया, वेशक हम ही हैं डराने वाले। (3)

उस (रात) में फ़ैसल किया जाता है हर अम्र हिक्मत वाला। (4)

أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ ۗ بَلَىٰ وَرُسُلْنَا لَدَيْهِمْ

उन के पास	और हमारे फ़रिश्ते	हाँ	और उन की सरगोशियाँ	उन की पोशीदा बातें	हम नहीं सुनते	कि हम	क्या वह गुमान करते हैं
-----------	-------------------	-----	--------------------	--------------------	---------------	-------	------------------------

يَكْتُبُونَ ﴿٨٠﴾ قُلْ إِنْ كَانَ لِلرَّحْمَنِ وَلَدٌ ۖ لَدِدَّٰٓءٍ فَاٰنَا أَوَّلُ الْعٰبِدِيْنَ ﴿٨١﴾

81	इबादत करने वाला	पहला	तो मैं	कोई बेटा	रहमान (अल्लाह का)	अगर होता	फ़रमा दें	80	लिखते हैं
----	-----------------	------	--------	----------	-------------------	----------	-----------	----	-----------

سُبْحٰنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٨٢﴾

82	वह बयान करते हैं	उस से जो	अर्श का रब	और ज़मीन	आस्मानों का रब	पाक है
----	------------------	----------	------------	----------	----------------	--------

فَذَرَهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتّٰى يَلْقٰوْا يَوْمَهُمُ الَّذِى يُوعَدُوْنَ ﴿٨٣﴾

83	उन को वादा किया जाता है	वह जिस	उस दिन को	वह पा लें	यहां तक	और खेलें	वह बेहूदा बातें करें	पस छोड़ दें उन को
----	-------------------------	--------	-----------	-----------	---------	----------	----------------------	-------------------

وَهُوَ الَّذِى فِى السَّمٰءِ اِلٰهٌ وَفِى الْاَرْضِ اِلٰهٌ ۗ وَهُوَ الْحَكِیْمُ

हिक्मत वाला	और वही	माबूद	और ज़मीन में	माबूद	आस्मानों में	वह जो	और वही
-------------	--------	-------	--------------	-------	--------------	-------	--------

الْعَلِیْمُ ﴿٨٤﴾ وَتَبَرَكَ الَّذِى لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۗ

और जो उन दोनों के दरमियान	और ज़मीन	आस्मानों	बादशाहत	उस के लिए	वह जो	और बड़ी बरकत वाला	84	इल्म वाला
---------------------------	----------	----------	---------	-----------	-------	-------------------	----	-----------

وَعِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ ۗ وَالّٰىهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٥﴾ وَلَا يَمْلِكُ الَّذِیْنَ

वह जिन को	और इख़्तियार नहीं रखते	85	तुम लौट कर जाओगे	और उस की तरफ़	कियामत का इल्म	और उस के पास
-----------	------------------------	----	------------------	---------------	----------------	--------------

يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الشَّفَاعَةَ ۗ اِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ

और वह	हक़ की	जिस ने गवाही दी	सिवाए	शफ़ाअत	उस के सिवा	वह पुकारते हैं
-------	--------	-----------------	-------	--------	------------	----------------

يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾ وَلَیْنِ سَأَلْتَهُمْ مِّنْ خَلْقِهِمْ لَيَقُوْلَنَّ اللّٰهُ فَاٰنِیْ

तो किधर	तो वह ज़रूर कहेंगे अल्लाह	पैदा किया उन्हें	किस	आप (स) उन से पूछें	और अगर	86	जानते हैं
---------	---------------------------	------------------	-----	--------------------	--------	----	-----------

يُؤْفَكُوْنَ ﴿٨٧﴾ وَقِیْلَہٗ یَرْبِّ اِنَّ هٰؤُلَآءِیْ قَوْمٌ لَّا یُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾

88	ईमान नहीं लाएंगे	लोग	यह	वेशक	ऐ मेरे रब	कसम उस के कहने की	87	वह उलटे फिरे जाते हैं
----	------------------	-----	----	------	-----------	-------------------	----	-----------------------

فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلٰمٌ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٩﴾

89	पस जल्द उन्हें मालूम हो जाएगा	सलाम	और कहें	उन से	तो आप (स) मुँह फेर लें
----	-------------------------------	------	---------	-------	------------------------

آیٰتہا ٥٩ ﴿٤٤﴾ سُورَةُ الدَّخٰنِ ﴿٤٤﴾ رُكُوْعَاتِہَا ٣

रुक़ुआत 3 (44) सूरतुद दुखान धुवाँ आयात 59

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حَم ﴿١﴾ وَالْكِتٰبِ الْمُبِیْنِ ﴿٢﴾ اِنَّا اَنْزَلْنٰہُ فِى لَیْلَةٍ مُّبْرَكَةٍ

एक मुबारक रात	में	वेशक हम ने नाज़िल किया इसे	2	वाज़ेह	कसम किताब	1	हा-मीम
---------------	-----	----------------------------	---	--------	-----------	---	--------

اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ ﴿٣﴾ فِیْہَا یُفْرَقُ کُلُّ اَمْرِ حَكِیْمٍ ﴿٤﴾

4	हिक्मत वाला	हर अम्र	फ़ैसल किया जाता है	उस में	3	डराने वाले	वेशक हम है
---	-------------	---------	--------------------	--------	---	------------	------------

وقف لآدم

ع ١٢

ع ١٢ عند التقدّمین

أَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا إِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ﴿٥﴾ رَحْمَةً مِّنْ رَبِّكَ ٥							
हुक्म हो कर	हमारे पास से	वेशक हम है	भेजने वाले	5	रहमत	से	तुम्हारा रब
إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦﴾ رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ٦							
वेशक वही	सुनने वाला	जानने वाला	6	रब है आस्मानों	और ज़मीन	और जो	उन दोनों के दरमियान
إِنْ كُنْتُمْ مُّؤَقِنِينَ ﴿٧﴾ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمْ ٧							
अगर तुम हो	यकीन करने वाले	7	नहीं कोई माबूद	उस के सिवा	वह जान डालता है और जान निकालता है	तुम्हारा रब	और तुम्हारे बाप दादा
الْأُولَئِينَ ﴿٨﴾ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ يَلْعَبُونَ ﴿٩﴾ فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ ٨ 9							
पहले	8	बल्कि वह	शक में	खेलते हैं	9	तो तुम इन्तिज़ार करो	उस दिन आस्मान आए
بِدُخَانٍ مُّبِينٍ ﴿١٠﴾ يَعْصِي النَّاسُ هَذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١١﴾ رَبَّنَا اكشِفْ ١٠ 11							
धुआँ	ज़ाहिर	10	वह ढाँप लेगा	लोगों	यह	अज़ाब दर्दनाक	11
عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ ﴿١٢﴾ أَلَيْسَ لَهُمُ الذِّكْرَى وَقَدْ جَاءَهُمْ ١٢							
हम से	अज़ाब	वेशक हम	ईमान ले आएंगे	12	कहाँ	उन को	नसीहत और तहकीक आ चुका उन के पास
رَسُولٌ مُّبِينٌ ﴿١٣﴾ ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوا مُعَلَّمٌ مَّجْنُونٌ ﴿١٤﴾ إِنَّا ١٣ 14							
रसूल खोल खोल कर बयान करने वाला	13	फिर	वह फिर गए	उस से	और कहने लगे	सिखाया हुआ	14
كَاشِفُوا الْعَذَابَ قَلِيلًا إِنَّكُمْ عَائِدُونَ ﴿١٥﴾ يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ ١٥							
खोलने वाले	अज़ाब	थोड़ा	हो	हालत (पिछली) पर लौट आने वाले	15	जिस दिन	हम पकड़ेंगे
الْكُبْرَىٰ ﴿١٦﴾ إِنَّا مُنتَقِمُونَ ﴿١٦﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَاءَهُمْ ١٦							
बड़ी (सख्त)	वेशक हम	इन्तिकाम लेने वाले	16	और हम आज़मा चुके हैं	इन से कब्ज	और फ़िराँन	और आया उन के पास
رَسُولٌ كَرِيمٌ ﴿١٧﴾ أَنْ أَدُّوا إِلَيَّ عِبَادَ اللَّهِ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٨﴾ ١٧ 18							
एक रसूल	करीम (आली कद्र)	17	कि हवाले कर दो	मेरे	बन्दे अल्लाह के	तुम्हारे लिए	18
وَأَنْ لَا تَعْلُوا عَلَى اللَّهِ إِنِّي آتِيكُم بِسُلْطَنِ مُّبِينٍ ﴿١٩﴾ وَإِنِّي ١٩							
और यह कि	तुम सरकशी न करो	अल्लाह पर (के मुक़ाबिल)	वेशक मैं	आया हूँ तुम्हारे पास	दलील के साथ	वाज़ेह	19
عُدْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ أَنْ تَرْجُمُونِ ﴿٢٠﴾ وَإِنْ لَمْ تُؤْمِنُوا لِي فَاغْتَرِلُونِ ﴿٢١﴾ ٢٠ 21							
पनाह चाहता हूँ	अपने रब की	और तुम्हारा रब	कि	तुम मुझे संगसार कर दो	20	और अगर तुम मुझे नहीं लाते	तो एक किनारे हो जाओ मुझे से
فَدَعَا رَبَّهُ أَنْ هَوْلَاءِ قَوْمٍ مُّجْرِمُونَ ﴿٢٢﴾ فَاسْرِ بِعِبَادِي لَيْلًا ٢٢							
तो उस ने दुआ की अपने रब से	कि	यह	मुज़्रिम लोग	22	तो तू ले जा मेरे बन्दों को	रात में	
إِنَّكُمْ مُّتَّبِعُونَ ﴿٢٣﴾ وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا إِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُونَ ﴿٢٤﴾ ٢٣ 24							
वेशक तुम	पीछा किए जाओगे	23	और छोड़ जाओ	दर्या	ठहरा हुआ	वेशक वह	एक लशकर
كَمْ تَرَكُوا مِنْ جَبَّتٍ وَعُيُونٍ ﴿٢٥﴾ وَوَرُوعٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ﴿٢٦﴾ ٢٥ 26							
वह कितने (ही) छोड़ गए	से	बागात	और चश्मे	25	और खेतियाँ	और मकान नफ़ीस	26

हुक्म हो कर हमारे पास से। वेशक हम ही हैं (रसूल) भेजने वाले। (5) रहमत आप (स) के रब की तरफ़ से, वेशक वही है सुनने वाला जानने वाला। (6) रब है आस्मानों का और ज़मीन का और जो उन के दरमियान है, अगर तुम हो यकीन करने वाले। (7) उस के सिवा कोई माबूद नहीं, वही जान डालता है, वही जान निकालता है, और (वही) रब है तुम्हारा और तुम्हारे पहले बाप दादा का। (8) बल्कि वह शक में पड़े खेलते हैं। (9) तो तुम उस दिन का इन्तिज़ार करो कि आस्मान ज़ाहिर धुआँ लाएगा, (10) और ढाँप लेगा (छा जाएगा) लोगों पर, यह है दर्दनाक अज़ाब। (11) (अब वह कहेंगे) ऐ हमारे रब! हम से अज़ाब दूर कर दे, वेशक हम ईमान ले आएंगे। (12) उन को नसीहत कहाँ याद आएगी? उन के पास तो खोल खोल कर बयान करने वाला रसूल आ चुका है। (13) फिर वह उस से फिर गए और कहने लगे: (यह तो) सिखाया हुआ दीवाना है। (14) वेशक हम थोड़ा अज़ाब खोलने वाले हैं (मगर) तुम वेशक फिर बाग़ियाना हालत पर लौट आने वाले हो। (15) जिस दिन हम सख्त पकड़ेंगे। वेशक हम इन्तिकाम लेने वाले हैं। (16) और हम उन से पहले क़ौम फ़िराँन को आज़मा चुके हैं, और उन के पास एक आली कद्र रसूल आया। (17) कि अल्लाह के बन्दों को मेरे हवाले कर दो, वेशक मैं तुम्हारे लिए एक रसूल अमीन हूँ। (18) और यह कि तुम अल्लाह के मुक़ाबिल सरकशी न करो, वेशक मैं तुम्हारे पास वाज़ेह दलील के साथ आया हूँ। (19) और वेशक मैं पनाह लेता हूँ अपने रब की और तुम्हारे रब की (उस से) कि तुम मुझे संगसार कर दो। (20) और अगर तुम मुझे पर ईमान नहीं लाते तो मुझे से एक किनारे हो जाओ। (21) तो उस ने अपने रब से दुआ की कि यह मुज़्रिम लोग हैं। (22) (इरशादे इलाही हुआ) तो तुम मेरे बन्दों को ले जाओ रातों रात, वेशक तुम्हारा पीछा किया जाएगा। (23) और छोड़ जाओ दर्या ठहरा (खुला) हुआ, वेशक वह एक लशकर है डूबने वाले। (24) और वह छोड़ गए कितने ही बागात, और चश्मे, (25) और खेतियाँ, और नफ़ीस मकान, (26)

और नेमतें, जिन में वह मज़े उड़ाते थे। (27)

उसी तरह (हुआ उन का अनज़ाम), और हम ने दूसरी कौम को उन का वारिस बनाया। (28)

सो उन पर आस्मान और ज़मीन न रोए और वह न हुए ढील दिए गए (लोगों में)। (29)

और तहकीक हम ने बनी इस्राईल को ज़िल्लत वाले अज़ाब से नजात दी, (30) (यानी) फिरऔन से, बेशक वह हद से बढ़ जाने वालों में से सरकश था। (31)

और अलवत्ता हम ने उन्हें तमाम जहान वालों पर दानिस्ता पसंद किया। (32)

और हम ने उन्हें खुली निशानियां दी, जिन में खुली आजमाइश थी। (33) बेशक यह लोग कहते हैं, (34)

यह हमारा मरना तो सिर्फ एक ही बार है और हम दोबारा उठाए जाने वाले नहीं। (35)

अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप दादा को ले आओ। (36) क्या वह बेहतर है या तुव्वअ की कौम? और जो लोग उन से कब्ल थे? हम ने उन्हें हलाक किया,

बेशक वह मुज़रिम लोग थे। (37) और हम ने आस्मानों और ज़मीन को और जो कुछ उन के दरमियान है खेलते हुए (अबस खेल कूद के लिए) नहीं पैदा किया। (38)

हम ने उन्हें नहीं पैदा किया मगर हक के साथ, लेकिन उन में से अक्सर नहीं जानते। (39)

बेशक फ़ैसले का दिन (रोज़े कियामत) उन सब का बढ़ते मुक़रर (मीआद) है। (40)

जिस दिन काम न आएगा कोई साथी कुछ भी किसी साथी के, और न वह मदद किए जाएंगे। (41)

मगर जिस पर अल्लाह ने रहम किया, बेशक वही है ग़ालिब रहम करने वाला। (42)

बेशक थोहर का दरख़त। (43) गुनाहगारों का खाना है। (44)

(वह) पेटों में पिघले हुए तांबे की तरह खौलता रहेगा। (45)

जैसे खौलता हुआ गर्म पानी। (46) उसे पकड़ लो, फिर उसे जहन्नम के बीचों बीच तक खींचो। (47)

फिर उस के सर के ऊपर डालो खौलते हुए पानी के अज़ाब से। (48)

وَنَعْمَةً كَانُوا فِيهَا فَكَيْهِنَ ﴿٢٧﴾ كَذَلِكَ ۖ وَأَوْرَثْنَاهَا قَوْمًا آخَرِينَ ﴿٢٨﴾									
28	दूसरे	कौम	और हम ने वारिस बनाया उन का	उसी तरह	27	मज़े उड़ाते	उस में	वह थे	और नेमतें
فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنظَرِينَ ﴿٢٩﴾									
29	ढील दिए गए	और न हुए वह	और ज़मीन	आस्मान	उन पर	सो न रोए			
وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِينِ ﴿٣٠﴾ مِنْ فِرْعَوْنَ ۗ									
फिरऔन	से	30	अज़ाब ज़िल्लत वाला	से	बनी इस्राईल	और तहकीक हम ने नजात दी			
إِنَّهُ كَانَ عَلِيًّا مِّنَ الْمُسْرِفِينَ ﴿٣١﴾ وَلَقَدْ اخْتَرْنَاهُمْ عَلَىٰ عِلْمٍ									
दानिस्ता	और अलवत्ता हम ने उन्हें पसंद किया	31	हद से बढ़ जाने वालों में से	सरकश	था	बेशक वह			
عَلَىٰ الْعَلَمِينَ ﴿٣٢﴾ وَآتَيْنَهُم مِّنَ الْآيَاتِ مَا فِيهِ بَلَاءٌ مُّبِينٌ ﴿٣٣﴾ إِنَّ هَؤُلَاءِ									
बेशक यह लोग	33	खुली	आज़माइश	वह जिन में	निशानियां	और हम ने उन्हें दी	32	तमाम जहान वालों पर	
لَيَقُولُونَ ﴿٣٤﴾ إِنَّ هِيَ إِلَّا مَوْتُنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُنشَرِينَ ﴿٣٥﴾									
35	दोबारा उठाए जाने वाले	और हम नहीं	पहली (एक ही) बार	हमारा मरना	मगर-सिर्फ	नहीं यह	34	अलवत्ता कहते हैं	
فَاتُوا بِآبَائِنَا إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٦﴾ أَهْمٌ خَيْرٌ أَمْ قَوْمٌ تُبَعِّ									
कौमे तुव्वअ	या	बेहतर	क्या वह	36	सच्चे	अगर तुम हो	हमारे बाप दादा	तो ले आओ	
وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ أَهْلَكْنَاهُمْ إِنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿٣٧﴾ وَمَا									
और नहीं	37	मुज़रिम (जमा)	थे	बेशक वह	हम ने हलाक किया उन्हें	उन से कब्ल	और जो लोग		
خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لِعِبِينِ ﴿٣٨﴾ مَا خَلَقْنَاهُمَا إِلَّا									
मगर	हम ने नहीं पैदा किया उन्हें	38	खेलते हुए	और जो उन दोनों के दरमियान	और ज़मीन	आस्मानों	हम ने पैदा किया		
بِالْحَقِّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾ إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ									
फ़ैसले का दिन	बेशक	39	नहीं जानते	उन में से अक्सर	और लेकिन	हक के साथ (ठीक तौर पर)			
مِيقَاتِهِمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٠﴾ يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلَىٰ عَنْ مَوْلَىٰ شَيْئًا									
कुछ	किसी साथी के	कोई साथी	न काम आएगा	जिस दिन	40	सब	उन सब का बढ़ते मुक़रर		
وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤١﴾ إِلَّا مَن رَّحِمَ اللَّهُ ۗ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٤٢﴾									
42	रहम करने वाला	वह ग़ालिब	बेशक वह	रहम किया अल्लाह ने	जिस	मगर	41	मदद किए जाएंगे	और न वह
إِنَّ شَجَرَتَ الرَّقْمِ طَعَامُ الْآثِمِ ﴿٤٣﴾ كَالْمُهَلِّثِ يَغْلِي									
खौलता है	पिघले हुए तांबे की तरह	44	खाना गुनाहगारों का	43	थोहर का दरख़त	बेशक			
فِي الْبُطُونِ ﴿٤٥﴾ كَغَلِيِّ الْحَمِيمِ ﴿٤٦﴾ خُدُّهُ فَاعْتَلُوهُ إِلَىٰ									
तक	फिर खींचो उसे	तुम पकड़ लो उसे	46	गर्म पानी	जैसे खौलता हुआ	45	पेटों में		
سَوَاءِ الْجَحِيمِ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ﴿٤٨﴾									
48	अज़ाब खौलता हुआ पानी	से	उस का सर	पर-ऊपर	फिर डालो	47	बीचों बीच जहन्नम		

٢٩  
١٢

٢  
١٥

معاذفة ١٢  
عند المتأخرين ١٢

ذُقْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ﴿٤٩﴾ إِنَّ هَذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ							
उस में	जो तुम थे	वेशक यह	49	इज़्जत वाला	ज़ोर आवर	तू	वेशक तू चख
تَمْتَرُونَ ﴿٥٠﴾ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ﴿٥١﴾ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٥٢﴾							
52	और चशमे	वागात में	51	अमन का मुकाम	में	वेशक मुत्तकीन (अल्लाह से डरने वाले)	50 शक करते
يَلْبَسُونَ مِنْ سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَقَابِلِينَ ﴿٥٣﴾ كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ							
और हम जोड़े बना देंगे उन के लिए	इसी तरह	53	एक दूसरे के आमने सामने	और दबीज़ रेशम	बारीक रेशम	से-के	पहने हुए
بِحُورٍ عِينٍ ﴿٥٤﴾ يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ أَمِينٍ ﴿٥٥﴾ لَا يَذُوقُونَ							
वह न चखेंगे	55	इत्मीनान से	हर किस्म का मेवा	उस में	वह मांगेंगे	54	खूबरू बड़ी बड़ी आँखों वालियां
فِيهَا الْمَوْتُ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ وَوَقَّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿٥٦﴾							
56	जहन्नम का अज़ाब	और उस (अल्लाह) ने बचा लिया उन्हें	पहली मौत	सिवाए	मौत	वहाँ	
فَضْلًا مِّن رَّبِّكَ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٥٧﴾ فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ							
हम ने इसे आसान कर दिया	इस के सिवा नहीं	57	कामयाबी बड़ी	यही	यह	तुम्हारा रब	से-के फज़ल से
بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾ فَارْتَقِبْ إِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُونَ ﴿٥٩﴾							
59	इन्तिज़ार में है	वेशक वह	58	पस आप (स) इन्तिज़ार करें	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	आप (स) की ज़बान में
آيَاتُهَا ٣٧ ﴿٤٥﴾ سُورَةُ الْجَاثِيَةِ ﴿٤٥﴾ رُكُوعَاتُهَا ٤							
(45) सूरतुल जासिया गिरी हुई				आयात 37			
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
حَمَّ ﴿١﴾ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿٢﴾ إِنَّ فِي السَّمَوَاتِ							
आस्मानों में	वेशक	2	हिक्मत वाला	गालिब	अल्लाह (की तरफ) से	नाज़िल की हुई किताब	1 हा-मीम
وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٣﴾ وَفِي خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَابَّةٍ							
जो जानवर	वह फैलाता है	और जो	और तुम्हारी पैदाइश में	3	अहले ईमान के लिए	अलबत्ता निशानियां	और ज़मीन
أَيُّ لِقَوْمٍ يُّوقِنُونَ ﴿٤﴾ وَآخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ							
अल्लाह ने उतारा	औत जो	और दिन	रात	और तबदीली	4	यकीन करने वाले लोगों के लिए	निशानियां
مِنَ السَّمَاءِ مِنْ رِزْقٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا							
उस के मरने (खुशक होने) के बाद	ज़मीन	उस से	फिर ज़िन्दा किया	रिज़क	आस्मान से		
وَتَصْرِيفِ الرِّيحِ أَيُّ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٥﴾ تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا							
हम वह पढ़ते हैं	अल्लाह के अहकाम	यह	5	अक़ल (सलीम) वालों के लिए	निशानियां	हवाएं	और गर्दिश
عَلَيْكَ بِالْحَقِّ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَ اللَّهِ وَآيَاتِهِ يُؤْمِنُونَ ﴿٦﴾							
6	वह ईमान लाएंगे	और उसकी आयात	अल्लाह के वाद	वात	पस किस	हक के साथ	आप (स) पर

चख, वेशक ज़ोर आवर, इज़्जत वाला है तू। (49) वेशक यह है वह जिस में तुम शक करते थे। (50) वेशक मुत्तकी अमन के मुकाम में होंगे। (51) वागात और चशमों में। (52) पहने हुए बारीक और दबीज़ रेशम के कपड़े एक दूसरे के आमने सामने (बैठे होंगे)। (53) उसी तरह हम खूबरू बड़ी बड़ी आँखों वालियों से उन के जोड़े बना देंगे। (54) वह मांगेंगे उस में इत्मीनान से हर किस्म का मेवा। (55) वह पहली मौत के सिवा वहाँ (फिर) मौत का ज़ाइका न चखेंगे, और अल्लाह ने उन्हें जहन्नम के अज़ाब से बचा लिया। (56) तुम्हारे रब का फज़ल, यही है बड़ी कामयाबी। (57) वेशक हम ने इस (कुरआन) को आसान कर दिया है आप की ज़बान में ताकि वह नसीहत पकड़ें। (58) पस आप (स) इन्तिज़ार करें, वेशक वह भी मुन्तज़िर है। (59) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है हा-मीम। (1) यह नाज़िल की हुई किताब है, गालिब हिक्मत वाले अल्लाह की तरफ से। (2) वेशक आस्मानों और ज़मीन में अलबत्ता अहले ईमान के लिए निशानियां हैं। (3) और तुम्हारी पैदाइश में और जो जानवर वह फैलाता है, उन में यकीन करने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (4) और रात दिन की तबदीली में, और उस रिज़क (वारिश) में जो अल्लाह ने आस्मान से उतारा, फिर उस से ज़िन्दा किया ज़मीन को उस के खुशक होने के बाद और हवाओं की गर्दिश में अक़ले सलीम रखने वालों के लिए निशानियां हैं। (5) यह अल्लाह के अहकाम हैं जिन्हें हम आप (स) पर हक के साथ (ठीक ठीक) पढ़ते हैं, पस अल्लाह और उस की आयात के बाद वह किस बात पर ईमान लाएंगे? (6)

खराबी है हर झूट बान्धने वाले गुनाहगार के लिए। (7)

वह अल्लाह की आयात को सुनता है जो उस पर पढ़ी जाती है, फिर तकबुर करता हुआ अड़ा रहता है गोया कि उस न सुना ही नहीं, पस उसे दर्दनाक अज़ाब की खुशखबरी दो। (8)

और जब वह हमारी आयात के किसी शै से वाकिफ़ होता है तो वह उस को पकड़ता (बनाता है) हँसी मज़ाक़, यही लोग हैं जिन के लिए रुस्वा करने वाला अज़ाब है। (9)

उन के आगे जहन्म है, और उन के कुछ काम न आएंगे जो उन्हीं ने कमाया और वह न जिन को उन्हीं ने अल्लाह के सिवा कारसाज़ ठहराया, और उन के लिए बड़ा अज़ाब है। (10)

यह (कुरआन सरासर) हिदायत है, और जिन लोगों ने कुफ़ किया अपने रब की आयात का, उन के लिए दर्दनाक अज़ाब में से एक बड़ा अज़ाब होगा। (11)

अल्लाह वह है जिस ने तुम्हारे लिए दर्या को मुसख़्खर किया ताकि चलें उस में उस के हुकम से कश्तियां, और ताकि उस के फ़ज़ल से (रोज़ी) तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। (12)

और उस ने तुम्हारे लिए अपने हुकम से मुसख़्खर किया सब को जो आस्मानों में और ज़मीन में हैं, बेशक उस में ग़ौर ओ फ़िक्र करने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (13)

आप (स) उन लोगों को फ़रमा दें जो ईमान लाए कि वह उन लोगों से दरगुज़र करें जो अल्लाह के अय्याम (जज़ाए आमाल) की उम्मीद नहीं रखते ताकि अल्लाह उन लोगों को बदला दे उन के आमाल का। (14)

जिस ने नेक अमल किया अपनी ज़ात के लिए (किया) और जिस ने बुरा किया तो (उस का बवाल) उसी पर (होगा), फिर तुम अपने रब की तरफ़ लौटाए जाओगे। (15)

और तहकीक़ हम ने बनी इस्राईल को किताब (तौरत) और हकूमत और नुबूवत दी और हम ने उन्हें पाकीज़ा चीज़ें अता कीं, और हम ने उन्हें जहान वालों पर फ़ज़ीलत दी। (16)

और हम ने उन्हें दीन के बारे में वाज़ेह निशानियां दीं तो उन्हीं ने इख़तिलाफ़ न किया मगर उस के बाद कि जब उन के पास इल्म आ गया आपस की ज़िद की वजह से, बेशक तुम्हारा रब उन के दरमियान फ़ैसला फ़रमाएगा कियामत के दिन जिस में वह इख़तिलाफ़ करते थे। (17)

وَيْلٌ لِّكُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ﴿٧﴾ يَسْمَعُ آيَاتِ اللَّهِ تُثْلِي عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا								
तकबुर करता हुआ	फिर अड़ा रहता है	पढ़ी जाती है उस पर	अल्लाह की आयात	वह सुनता है	7	गुनाहगार	हर झूट बान्धने वाले के लिए	खराबी
كَانَ لَمْ يَسْمَعَهَا ۖ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٨﴾ وَإِذَا عَلِمَ مِنْ آيَاتِنَا شَيْئًا								
किसी शै	हमारी आयात में से	और जब वह वाकिफ़ हो	8	दर्दनाक अज़ाब की	पस उसे खुशखबरी दो	उस ने नहीं सुना उसे	गोया कि	
اتَّخَذَهَا هُزُوًا ۗ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٩﴾ مِنْ وَرَائِهِمْ جَهَنَّمُ ۖ								
जहन्म	उन की दूसरी तरफ़ (आगे)	9	अज़ाब रुस्वा करने वाला	उन के लिए	यही लोग	हँसी मज़ाक़	वह उस को पकड़ता है	
وَلَا يُغْنِي عَنْهُمْ مَا كَسَبُوا شَيْئًا وَلَا مَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ ۗ								
कारसाज़	अल्लाह के सिवा	और न जो उन्हीं ने ठहराया	कुछ	जो उन्हीं ने कमाया	और न काम आएगा उन के			
وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠﴾ هَٰذَا هُدًى ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ								
उन के लिए	अपना रब	आयात को	और जिन लोगों ने कुफ़ किया (न माना)	यह (कुरआन) हिदायत	10	बड़ा अज़ाब	और उन के लिए	
عَذَابٌ مِّن رَّجْزِ أَلِيمٍ ﴿١١﴾ اللَّهُ الَّذِي سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لَتَجْرِي أَلْفُكُ								
कश्तियां	ताकि चलें	दर्या	तुम्हारे लिए	मुसख़्खर किया	अल्लाह वह जिस	11	दर्दनाक अज़ाब	एक अज़ाब
فِيهِ بِأَمْرِهِ ۖ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَلِعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٢﴾ وَسَخَّرَ لَكُم مَّا								
जो	और उस ने मुसख़्खर किया तुम्हारे लिए	12	शुक्र करो	और ताकि तुम	उस के फ़ज़ल से	और कि तुम तलाश करो	उस के हुकम से	उस में
فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ جَمِيعًا مِّنْهُ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ								
निशानियां	उस में	बेशक	अपने हुकम से	सब	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	
لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُونَ ﴿١٣﴾ قُلْ لِلَّذِينَ اٰمَنُوْا يَغْفِرُوْا لِلَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ								
उम्मीद नहीं रखते	उन लोगों से जो	दरगुज़र करें	ईमान लाए	उन लोगों को जो	फ़रमा दें	13	ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं	उन लोगों के लिए
اَيَّامَ اللّٰهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٤﴾ مِّنْ عَمَلٍ صٰلِحًا								
अमल किया नेक	जिस	14	वह कमाते थे (आमाल)	उस का जो	उन लोगों को	ताकि वह बदला दे	अल्लाह के अय्याम	
فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ۗ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ﴿١٥﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا								
और तहकीक़ हम ने दी	15	तुम लौटाए जाओगे	तुम अपने रब की तरफ़	फिर	तो उस पर	बुरा किया	और जिस	तो अपनी ज़ात के लिए
بَنِيْٓ اِسْرٰٓءِيْلَ الْكِتٰبِ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ								
पाकीज़ा चीज़ें	और हम ने अता कीं उन्हें	और नबूवत	और हुकम	किताब	बनी इस्राईल			
وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾ وَاٰتَيْنٰهُمْ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ ۗ فَمَا اٰخْتَلَفُوْا								
तो उन्हीं ने इख़तिलाफ़ किया	अमर से (दीन के बारे में)	वाज़ेह निशानियां	और हम ने उन्हीं दी	16	जहान वालों पर	और हम ने फ़ज़ीलत दी उन्हीं		
اِلَّا مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ۗ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۗ اِنَّ رَبَّكَ								
बेशक तुम्हारा रब	आपस की	ज़िद से	इल्म	जब आ गया उन के पास	उस के बाद	मगर		
يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِیْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٧﴾								
17	इख़तिलाफ़ करते	उस में	वह थे	उस में	कियामत के दिन	उन के दरमियान	फ़ैसला करेगा	

۱  
۱۲

ثُمَّ جَعَلْنَاكَ عَلَىٰ شَرِيعَةٍ مِّنَ الْأَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ							
ख़ाहिशात	और न पैरवी करें	तो आप (स) उस की पैरवी करें	दीन से - के	शरीअत (ख़ास तरीका) पर	हम ने कर दिया आप को	फिर	
الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٨﴾ إِنَّهُمْ لَن يُغْنُوا عَنْكَ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا							
कुछ	अल्लाह से (के सामने)	आप (स) के	हरगिज़ काम न आएंगे	वेशक वह	18	इल्म नहीं रखते	उन लोगों की जो
وَإِنَّ الظَّالِمِينَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِينَ ﴿١٩﴾							
19	परहेज़गारों	रफ़ीक	और अल्लाह	वाज़ (दूसरे)	रफ़ीक (जमा)	उन में से वाज़ (एक)	ज़ालिम (जमा) और वेशक
هَذَا بَصَائِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿٢٠﴾							
20	यकीन रखने वाले लोगों के लिए	और रहमत	और हिदायत	लोगों के लिए	दानाई की बातें	यह	
أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ اجْتَرَحُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ نَجْعَلَهُمْ كَالَّذِينَ آمَنُوا							
ईमान लाए	उन लोगों की तरह जो	कि हम कर देंगे उन्हें	बुराइयां	कमाई (की)	वह जिन्होंने ने	क्या गुमान करते हैं	
وَعَمَلُوا الصَّالِحَاتِ سَوَاءٌ مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٢١﴾							
21	जो वह हुकम लगाते हैं	बुरा	और उन का मरना	उन का जीना	बराबर	और उन्होंने ने अमल किए अच्छे	
وَخَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ							
उस का जो उस ने कमाया (आमाल)	हर शख्स	और ताकि बदला दिया जाए	हक (हिक्मत) के साथ	और ज़मीन	आस्मानों	और पैदा किया अल्लाह ने	
وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٢﴾ أَفَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ وَأَضَلَّهُ اللَّهُ							
और गुमराह कर दिया उसे अल्लाह	अपनी ख़ाहिश	अपना माबूद	बना लिया	जो-जिस	क्या तुम ने देखा	22	ज़ुल्म न किए जाएंगे और वह
عَلَىٰ عِلْمٍ وَخَتَمَ عَلَىٰ سَمْعِهِ وَقَلْبِهِ وَجَعَلَ عَلَىٰ بَصَرِهِ غِشَاوَةً فَمَنْ							
तो कौन	पर्दा	उस की आँख पर	और कर दिया (डाल दिया)	और उस का दिल	उस के कान	और उस ने मुहर लगा दी	इल्म पर (के बावजूद)
يَهْدِيهِ مِنْ بَعْدِ اللَّهِ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٢٣﴾ وَقَالُوا مَا هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا							
हमारी ज़िन्दगी	सिर्फ	नहीं यह	और उन्होंने ने कहा	23	तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते?	अल्लाह के बाद	उसे हिदायत देगा
الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَا إِلَّا الدَّهْرُ وَمَا لَهُمْ بِذَلِكَ							
उस का	उन्हें	और नहीं	ज़माना	मगर-सिर्फ	और नहीं हलाक करता हमें	और हम जीते हैं	हम मरते हैं दुनिया
مِنْ عِلْمٍ إِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ﴿٢٤﴾ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا							
वाज़ेह	हमारी आयात	पढ़ी जाती है उन पर	और जब	24	अटकल दौड़ाते हैं	मगर-सिर्फ	वह नहीं से-कोई इल्म
مَا كَانَ حُجَّتَهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا اتُّبُوا بِآبَائِنَا إِنْ كُنْتُمْ							
अगर तुम हो	हमारे बाप दादा को	तुम ले आओ	वह कहते हैं	सिवा यह कि	उन की हुज्जत	नहीं होती	
صَادِقِينَ ﴿٢٥﴾ قُلِ اللَّهُ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ إِلَىٰ							
तरफ	वह फिर तुम्हें जमा करेगा	वह फिर तुम्हें मौत देगा	अल्लाह तुम्हें ज़िन्दगी देता है	फरमा दें	25	सच्चे	
يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾							
26	जानते नहीं	अक़्सर लोग	और लेकिन	उस में	कोई शक नहीं	क़ियामत का दिन	

फिर हम ने आप (स) को दीन के एक ख़ास तरीके पर कर दिया तो आप (स) उस की पैरवी करें, और जो लोग इल्म नहीं रखते उन की ख़ाहिशात की पैरवी न करें। (18) वेशक वह अल्लाह के सामने आप के काम न आएंगे कुछ भी और वेशक ज़ालिम एक दूसरे के रफ़ीक हैं, और अल्लाह परहेज़गारों का रफ़ीक है। (19) यह लोगों के लिए दानाई की बातें हैं, और हिदायत ओ रहमत यकीन रखने वाले लोगों के लिए। (20) क्या वह लोग यह गुमान करते हैं जिन्होंने ने बुराइयां की कि हम उन्हें उन लोगों की तरह कर देंगे जो ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए ताकि बराबर (हो जाए) उन का जीना और मरना, बुरा है जो वह हुकम लगाते हैं। (21) और अल्लाह ने आस्मानों को और ज़मीन को पैदा किया हिक्मत के साथ और ताकि हर शख्स को उस के आमाल का बदला दिया जाए और उन पर ज़ुल्म न किया जाए। (22) क्या तुम ने उस शख्स को देखा जिस ने बना लिया अपनी ख़ाहिशों को अपना माबूद, और अल्लाह ने इल्म के बावजूद उसे गुमराह कर दिया, और मुहर लगा दी उस के कान और उस के दिल पर, और डाल दिया उस की आँख पर पर्दा, तो कौन अल्लाह के बाद उसे हिदायत देगा, तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (23) और उन्होंने ने कहा कि यह (ज़िन्दगी और कुछ) नहीं सिर्फ हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है, हम मरते हैं और हम जीते हैं, और हमें सिर्फ ज़माना हलाक कर देता है, और उन्हें उस का कोई इल्म नहीं, वह सिर्फ अटकल दौड़ाते हैं। (24) और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयात पढ़ी जाती है तो उन की हुज्जत (दलील) नहीं होती इस के सिवा कि वह कहते हैं: हमारे बाप दादा को ले आओ अगर तुम सच्चे हो। (25) आप फरमा दें: अल्लाह (ही) तुम्हें ज़िन्दगी देता है (वही) फिर तुम्हें मौत देगा फिर (वही) तुम्हें क़ियामत के दिन जमा करेगा, जिस में कोई शक नहीं, लेकिन अक़्सर लोग जानते नहीं। (26)

٢٠  
١٨

٢٥  
١٩

और अल्लाह (ही) के लिए है बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की, और जिस दिन क़ियामत काइम (बपा) होगी उस दिन वातिल परस्त ख़सारा पाएंगे। (27)

और तुम हर उम्मत को घुटनों के बल गिरी हुई देखोगे, हर उम्मत अपने नामाए आमाल की तरफ़ पुकारी जाएगी, आज तुम्हें बदला दिया जाएगा उस का जो तुम करते थे। (28)

यह हमारी तहरीर है जो तुम्हारे बारे में हक़ के साथ बोलती है, बेशक हम लिखाते थे जो तुम करते थे। (29)

पस जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए तो उन्हें उन का रब अपनी रहमत में दाखिल करेगा, यही है खुली कामयाबी। (30)

और वह लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया (उन्हें कहा जाएगा) सो क्या तुम पर मेरी आयात न पढ़ी जाती थी? तो तुम ने तकब्बुर किया और तुम मुज़्रिम लोग थे। (31)

और जब (तुम से) कहा जाता था कि बेशक अल्लाह का वादा सच है और क़ियामत में कोई शक नहीं, तो तुम ने कहा: हम नहीं जानते कि क़ियामत क्या है! हम तो बस एक गुमान सा रखते हैं, और हम नहीं हैं यक़ीन करने वाले। (32)

और उन पर उन के आमाल की बुराइयां खुल गईं और उन्हें उस (अज़ाब ने) घेर लिया जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (33)

और कहा जाएगा: हम ने तुम्हें भुला दिया है जैसे तुम ने इस दिन के मिलने को भुला दिया था, और तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है, और तुम्हारा कोई मददगार नहीं। (34)

यह इस लिए है कि तुम ने बना लिया था अल्लाह की आयात को एक मज़ाक़, और तुम्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने फ़रेब दे रखा था, सो वह आज उस से न निकाले जाएंगे और न उन्हें (अल्लाह की) रज़ा मन्दी हासिल करने का मौक़ा दिया जाएगा। (35)

पस तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो रब है आस्मानों का और रब है ज़मीन का, और रब है तमाम जहानों का। (36)

और उसी के लिए है क़िवरियाई (बड़ाई) आस्मानों में और ज़मीन में, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (37)

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُومِدِ يَّحْسَرُ							
ख़सारा पाएंगे	उस दिन	क़ियामत	काइम होगी	और जिस दिन	और ज़मीन	आस्मानों	और अल्लाह के लिए बादशाहत
الْمُبْطِلُونَ ﴿٢٧﴾ وَتَرَىٰ كُلَّ اُمَّةٍ جٰثِيَةً كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰى اِلٰى كِتٰبِهَا							
अपनी किताब (नामाए आमाल) की तरफ़	पुकारी जाएगी	उम्मत	हर	घुटनों के बल गिरी हुई	हर उम्मत	और तुम देखोगे	27 वातिल परस्त
الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٨﴾ هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ							
तुम पर (तुम्हारे बारे में)	बोलती है	यह हमारी किताब (तहरीर)	28	तुम करते थे	जो	तुम्हें बदला दिया जाएगा	आज
بِالْحَقِّ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٩﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا							
ईमान लाए	पस जो	29	तुम करते थे	जो	लिखाते थे	बेशक हम	हक़ के साथ
وَعَمِلُوْا الصّٰلِحٰتِ فَيَدْخُلُهُمْ رَبُّهُمْ فِى رَحْمَتِهٖ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ							
कामयाबी	वह (यही)	यह	अपनी रहमत में	उन का रब	तो वह दाखिल करेगा उन्हें	और उन्होंने ने अमल किए नेक	
الْمُبِيْنِ ﴿٣٠﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا اَفَلَمْ تَكُنْ اٰتِيْتَنِيْ تَشْكُرُ عَلَيْكُمْ							
तुम पर	पढ़ी जाती	मेरी आयात	सो क्या न थी	कुफ़ किया	और वह लोग जिन्होंने ने	30	खुली
فَاَسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣١﴾ وَاِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ							
अल्लाह का वादा	कहा जाता था बेशक	और जब	31	मुज़्रिम (जमा)	लोग	और तुम थे	तो तुम ने तकब्बुर किया
حَقٌّ وَالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيْهَا فَلْتُمْ مَّا نَدْرِيْ مَا السَّاعَةُ							
क्या है क़ियामत	हम नहीं जानते	तुम ने कहा	उस में	कोई शक नहीं	और क़ियामत	सच	
اِنَّ نَظْنُ اِلَّا ظَنًّا وَمَا نَحْنُ بِمُستَيْقِيْنِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَبَدَا لَهُمْ سَيّٰتٌ							
बुराइयां	उन पर	और खुल गईं	32	यक़ीन करने वाले	हम	और नहीं	अटकल जैसा मगर - सिर्फ़ नहीं हम गुमान करते
مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَقِيْلَ الْيَوْمَ							
आज	और कहा जाएगा	33	वह मज़ाक़ उड़ाते	उस का	जिस का वह थे	उन्हें	और घेर लिया जो उन्होंने ने किया (आमाल)
نَنْسِكُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَمَاوِكُمْ النَّارُ وَمَا لَكُمْ							
और नहीं तुम्हारे लिए	जहन्नम	और तुम्हारा ठिकाना	इस	अपना दिन	मिलना	तुम ने भुला दिया	जैसे हम ने भुला दिया तुम्हें
مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٣٤﴾ ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمْ اَتَّخَذْتُمْ اٰيَةَ اللّٰهِ هُزُوًا وَعَظَمْتُمْ							
और फ़रेब दिया तुम्हें	एक मज़ाक़	अल्लाह की आयात	तुम ने बना लिया	इस लिए कि तुम	यह	34	कोई मददगार (जमा)
الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا فَاَلْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٣٥﴾							
35	रज़ा मन्दी हासिल करने का मौक़ा दिया जाएगा	और न उन्हें	उस से	वह न निकाले जाएंगे	सो आज	दुनिया की ज़िन्दगी	
فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٦﴾							
36	तमाम जहानों का रब	और ज़मीन का रब	आस्मानों का रब	पस अल्लाह के लिए तमाम तारीफ़ें			
وَلَهُ الْكِبْرِيَاءُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٣٧﴾							
37	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	और ज़मीन	आस्मानों में	क़िवरियाई	और उस के लिए



آيَاتُهَا ٣٥ ﴿٤٦﴾ سُورَةُ الْأَحْقَافِ ﴿٤﴾ زُكُوعَاتُهَا ٤						
रुकुआत 4		(46) सूरतुल अहक़ाफ़			आयात 35	
रेमिस्तान						
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ						
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
﴿٢﴾ ﴿١﴾ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿٢﴾						
2	हिकमत वाला	ग़ालिब	अल्लाह से	किताब	नाज़िल करना	1 हा-मीम
مَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ						
हक के साथ	मगर	और जो उन दोनों के दरमियान	और ज़मीन	आस्मानों	नहीं पैदा किया हम ने	
وَأَجَلٍ مُّسَمًّى وَالَّذِينَ كَفَرُوا عَمَّا أُنذِرُوا مُّعْرِضُونَ ﴿٣﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ						
भला तुम देखो	फ़रमा दें	3	रूगर्दानी करने वाले	वह डराए जाते हैं	जिस से	और जिन लोगों ने कुफ़ किया और एक मीज़ाद मुक़र्ररा
مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ						
ज़मीन से	उन्होंने ने पैदा किया	क्या	दिखाओ मुझे तुम	अल्लाह के सिवा	जिन को तुम पुकारते हो	
أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمَوَاتِ ائْتُونِي بِكِتَابٍ مِّنْ قَبْلِ هَذَا أَوْ						
या	इस	से पहले	कोई किताब	ले आओ मेरे पास	आस्मानों में	कुछ साज़ा उन के लिए या
أَثَرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤﴾ وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّن يَدْعُوا						
उस से जो वह पुकारता है	बड़ा गुमराह	और कौन	4	सच्चे	तुम हो अगर	इल्म से-की आसार
مِّنْ دُونِ اللَّهِ مَنْ لَا يَسْتَجِيبُ لَهُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَهُمْ عَن						
से	और वह	क़ियामत का दिन	तक	उस को	जवाब न देगा जो	अल्लाह के सिवा
دُعَائِهِمْ غَفْلُونَ ﴿٥﴾ وَإِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوا لَهُمْ أَعْدَاءً						
दुश्मन	उन के	वह होंगे	जमा किए जाएंगे लोग	और जब	5	वेख़बर है उन का पुकारना
وَكَانُوا بِعِبَادَتِهِمْ كَافِرِينَ ﴿٦﴾ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا						
वाज़ेह	हमारी आयात	पढ़ी जाती है उन पर	और जब	6	मुन्किर (जमा)	उन की इबादत से और वह होंगे
قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ هَذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٧﴾						
7	खुला	यह जादू	उन के पास आ गया वह	जब	हक का	जिन लोगों ने इन्कार किया कहते हैं वह
أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ إِنْ افْتَرَيْتُهُ فَلَا تَمْلِكُونَ						
तो तुम इख़्तियार नहीं रखते	मैं ने खुद बना लिया है इसे	अगर	फ़रमा दें	उस ने खुद बना लिया है इसे	वह कहते हैं	क्या
لِي مِنَ اللَّهِ شَيْئًا هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُفِيضُونَ فِيهِ كَفَىٰ بِهِ						
वह काफ़ी है इस का	इस में	तुम बातें बनाते हो	वह जो	वह खूब जानता है	कुछ भी	अल्लाह से मेरे लिए
شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٨﴾						
8	रहम करने वाला	बख़शने वाला	और वह	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	गवाह

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है हा-मीम। (1)

किताब का नाज़िल करना ग़ालिब, हिकमत वाले अल्लाह (की तरफ़) से है। (2)

हम ने नहीं पैदा किया है आस्मानों और ज़मीन को और जो उन दोनों के दरमियान है मगर हक के साथ और एक मुक़र्ररा मीज़ाद (के लिए) और जिन लोगों ने कुफ़ किया जिस से वह डराए जाते हैं (उस से) रूगर्दानी करने वाले हैं। (3)

आप (स) फ़रमा दें भला तुम देखो (सोचो) तो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो मुझे दिखाओ कि उन्होंने ने ज़मीन से क्या पैदा किया? या उन के लिए आस्मानों में कुछ साज़ा है? ले आओ मेरे पास इस से पहले की कोई किताब या कोई इल्मी आसार (निशानात) अगर तुम सच्चे हो। (4)

और उस से बड़ा गुमराह कौन है? जो अल्लाह के सिवा उस को पुकारता है जो उसे जवाब न देगा क़ियामत के दिन तक, और वह उन के पुकारने से (भी) वेख़बर हैं। (5)

और जब लोग (मैदाने हशर) में जमा किए जाएंगे वह उन के दुश्मन होंगे और वह उन की इबादत के मुन्किर होंगे। (6)

और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयात पढ़ी जाती है तो वह कहते हैं जिन्होंने ने इन्कार किया हक के बारे में जब कि वह उन के पास आ गया: यह खुला जादू है। (7)

क्या वह कहते हैं कि उस ने इसे खुद बना लिया है, आप (स) फ़रमा दें: अगर मैं ने इसे खुद बना लिया है तो तुम मुझे अल्लाह से (बचाने का) कुछ भी इख़्तियार नहीं रखते, वह खूब जानता है जो तुम इस (के बारे) में बातें बनाते हो, वह काफ़ी है इस का गवाह मेरे और तुम्हारे दरमियान, और वह है बख़शने वाला, रहम करने वाला। (8)

आप (स) फ़रमा दें कि मैं रसूलों में नया नहीं हूँ, और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ और तुम्हारे साथ क्या किया जाएगा, मैं सिर्फ़ उस की पैरवी करता हूँ जो मेरी तरफ़ वहि किया जाता है, और मैं सिर्फ़ साफ़ साफ़ डर सुनाने वाला हूँ। (9)

आप (स) फ़रमा दें: भला तुम देखो तो अगर (यह कुरआन) अल्लाह के पास से है, और तुम ने इस का इन्कार किया, और गवाही दी एक गवाह ने बनी इस्राईल में से उस जैसी किताब पर, और वह ईमान ले आया, और तुम ने तकब्बुर किया (तुम अड़े रहे), वेशक अल्लाह हिदायत नहीं देता ज़ालिम लोगों को। (10)

और काफ़िरों ने मोमिनों के लिए (के बारे में) कहा: अगर (यह) बेहतर होता तो वह इस की तरफ़ हम पर पहल न करते, और जब उन्होंने ने इस से हिदायत न पाई तो अब कहेंगे: यह पुराना झूट है। (11)

और इस से पहले मूसा (अ) की किताब (तौरेत) थी रहनुमा और रहमत, और है यह किताब (उस की) तस्दीक करने वाली अरबी ज़बान में ताकि ज़ालिमों को डराए, और खुशख़बरी है नेकोकारों के लिए। (12)

वेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है, फिर वह (उस पर) काइम रहे, तो कोई ख़ौफ़ नहीं उन पर और न वह ग़मगीन होंगे। (13)

यही लोग अहले जन्नत हैं, हमेशा उस में रहेंगे, (यह) उन की जज़ा है जो वह अ़मल करते थे। (14)

और हम ने इन्सान को माँ बाप के साथ हुस्ने सुलूक का हुकम दिया, उस की माँ उसे तकलीफ़ के साथ (पेट में) उठाए रही और उस ने उसे तकलीफ़ के साथ जना, और उस का हमल और उस का दूध छुड़ाना 30 महीने में (हुआ) यहां तक कि वह अपनी जवानी को पहुँचा और हुआ चालीस (40) साल का तो उस ने अर्ज़ की: ऐ मेरे रब! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी नेमत का शुक्र करूँ जो तू ने मुझ पर इन्शाम फ़रमाई और मेरे माँ बाप पर, और यह कि मैं नेक अ़मल करूँ जिसे तू पसंद करे, और मेरे लिए मेरी औलाद में इसलाह कर दे (नेक बना दे), वेशक मैं ने तेरी तरफ़ (तेरे हुज़ूर) तौबा की और वेशक मैं फ़रमांबरदारों में से हूँ। (15)

قُلْ مَا كُنْتُ بِدَعَا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَا أَدْرَىٰ مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ ۗ

और न तुम्हारे साथ	मेरे साथ	क्या किया जाएगा	और नहीं जानता मैं	रसूलों में से	नया	नहीं हूँ मैं	फ़रमा दें
-------------------	----------	-----------------	-------------------	---------------	-----	--------------	-----------

إِن آتَّبِع إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ وَمَا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٩﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ

भला तुम देखो तो	फ़रमा दें	9	डर सुनाने वाला साफ़ साफ़	मगर-सिर्फ़	और नहीं हूँ मैं	मेरी तरफ़	जो वहि किया जाता है	सिवाए-सिर्फ़	नहीं पैरवी करता
-----------------	-----------	---	--------------------------	------------	-----------------	-----------	---------------------	--------------	-----------------

إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَكَفَرْتُمْ بِهِ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ

से	एक गवाह	और गवाही दी	इस का	और तुम ने इन्कार किया	अल्लाह के पास से	है	अगर
----	---------	-------------	-------	-----------------------	------------------	----	-----

بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَىٰ مِثْلِهِ فَأَمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ

लोग	हिदायत नहीं देता	वेशक अल्लाह	और तुम ने तकब्बुर किया	फिर वह ईमान ले आया	इस जैसी (एक किताब) पर	बनी इस्राईल
-----	------------------	-------------	------------------------	--------------------	-----------------------	-------------

الظَّالِمِينَ ﴿١٠﴾ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا لَوْ كَانَ خَيْرًا

बेहतर	अगर होता	उन के लिए जो ईमान लाए (मोमिन)	वह लोग जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	और कहा	10	ज़ालिम (जमा)
-------	----------	-------------------------------	--	--------	----	--------------

مَا سَبَقُونَا إِلَيْهِ وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوا بِهِ فَسَيَقُولُونَ هَذَا إِفْكٌ قَدِيمٌ ﴿١١﴾

11	पुराना	झूट	यह तो अब कहेंगे	इस से	न हिदायत पाई उन्होंने ने	और जब	इस की तरफ़	न वह पहल करते हम पर
----	--------	-----	-----------------	-------	--------------------------	-------	------------	---------------------

وَمِنْ قَبْلِهِ كِتَابُ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۗ وَهَذَا كِتَابٌ مُّصَدِّقٌ

तस्दीक करने वाली	किताब	और यह	और रहमत	रहनुमा-इमाम	मूसा (अ)	किताब	और इस से पहले
------------------	-------	-------	---------	-------------	----------	-------	---------------

لِسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنذِرَ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۗ وَبُشْرَىٰ لِلْمُحْسِنِينَ ﴿١٢﴾ إِنَّ

वेशक	12	नेकोकारों के लिए	और खुशख़बरी	उन लोगों को जिन्होंने ने जुल्म किया (ज़ालिम)	ताकि वह डराए	अरबी	ज़बान
------	----	------------------	-------------	--	--------------	------	-------

الَّذِينَ قَالُوا رَبَّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ

और न वह	उन पर	तो कोई ख़ौफ़ नहीं	वह काइम रहे	फिर	हमारा रब अल्लाह	जिन लोगों ने कहा
---------	-------	-------------------	-------------	-----	-----------------	------------------

يَحْزَنُونَ ﴿١٣﴾ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا ۗ جَزَاءً بِمَا

उस की जो	जज़ा	उस में	हमेशा रहेंगे	अहले जन्नत	यही लोग	13	ग़मगीन होंगे
----------	------	--------	--------------	------------	---------	----	--------------

كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾ وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا ۗ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ

उस की माँ	वह उस को उठाए रही	हुस्ने सुलूक का	माँ बाप के साथ	इन्सान	और हम ने हुकम दिया	14	वह अ़मल करते थे
-----------	-------------------	-----------------	----------------	--------	--------------------	----	-----------------

كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۗ وَحَمَلُهُ وَفِطْلُهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا ۗ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ

वह पहुँचा	जब	यहां तक	तीस (30) महीने	और उस का दूध छुड़ाना	और उस का हमल	और उस ने उस को जना तकलीफ़ के साथ	तकलीफ़ के साथ
-----------	----	---------	----------------	----------------------	--------------	----------------------------------	---------------

أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ سَنَةً ۗ قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ

तेरी नेमत	कि मैं शुक्र करूँ	तौफ़ीक़ दे मुझे	ऐ मेरे रब	उस ने अर्ज़ की	साल	चालीस (40)	और वह पहुँचा (हुआ)	अपने ज़ोर (जवानी) को
-----------	-------------------	-----------------	-----------	----------------	-----	------------	--------------------	----------------------

الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ

तू पसंद करे उसे	नेक अ़मल	और यह कि मैं अ़मल करूँ	और मेरे माँ बाप पर	तू ने इन्शाम फ़रमाई मुझ पर	वह जो
-----------------	----------	------------------------	--------------------	----------------------------	-------

وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي ۗ إِنَّي تَبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٥﴾

15	मुसलमानों (फ़रमांबरदारों)	से	और वेशक मैं	तेरी तरफ़	वेशक मैं ने तौबा की	मेरी औलाद में	मेरे लिए	और इसलाह कर दे
----	---------------------------	----	-------------	-----------	---------------------	---------------	----------	----------------

<p>أُولَئِكَ الَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّئَاتِهِمْ</p>									
उन की बुराइयां	से	और हम दरगुज़र करते हैं	उन्होंने ने किए	जो	बेहतरीन (अमल)	उन से	हम कुबूल करते हैं	वह जो कि	यही लोग
<p>فِي أَصْحَابِ الْجَنَّةِ وَعَدَّ الصِّدْقِ الَّذِينَ كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿١٦﴾ وَالَّذِي</p>									
और वह जिस	16	उन्हें वादा दिया जाता था	वह जो	सच्चा वादा	अहले जन्नत	में			
<p>قَالَ لِوَالِدَيْهِ أَفِ لَكُمْ أَن أَعِدِنِي أَن أُوْجِرَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُونُ</p>									
(बहुत से) गिरोह	हालाकि गुज़र चुके	मैं निकाला जाऊँगा	क्या तुम मुझे वादा (ख़बर) देते हो	तुम्हारे लिए - पर	तुफ	अपने माँ बाप के लिए	उस ने कहा		
<p>مِنْ قَبْلِي وَهَمَا يَسْتَعْجِلِنِ اللَّهُ وَيَلِكُ أَمْرٌ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ</p>									
सच्चा	अल्लाह का वादा	वेशक	तू ईमान ले आ	तेरा बुरा हो	फर्याद करते हैं अल्लाह से	और वह दोनों	मुझ से पहले		
<p>فَيَقُولُ مَا هَذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٧﴾ أُولَئِكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ</p>									
उन पर	साबित हो गई	वह जो	यही लोग	17	पहलों	कहानियां	मगर - सिर्फ	यह	तो वह कहता है
<p>الْقَوْلُ فِي أُمِّ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنَّةِ وَالْإِنْسِ إِنَّهُمْ</p>									
वेशक वह	जिन्नात और इन्सान (जमा)	से	इन से कब्ल	गुज़र चुकी	उम्मतों में	वात (अज़ाब)			
<p>كَانُوا خَسِرِينَ ﴿١٨﴾ وَلِكُلِّ دَرَجَةٍ مِمَّا عَمِلُوا وَلِيُوفيَهُمْ أَعْمَالَهُمْ</p>									
उन के आमाल	और ताकि वह पूरा दे उन को	उस से जो उन्होंने ने किया	दरजे	और हर एक के लिए	18	ख़सारा पाने वाले	थे		
<p>وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٩﴾ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ</p>									
आग के सामने	वह जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	लाए जाएंगे	और जिस दिन	19	उन पर न जुल्म किया जाएगा	और वह - उन			
<p>أَذْهَبْتُمْ طَيْبَتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا فَالْيَوْمَ</p>									
पस आज	उन का	और तुम फ़ाइदा उठा चुके	अपनी दुनिया की ज़िन्दगी	में	अपनी नेमतें	तुम ले गए (हासिल कर चुके)			
<p>تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ</p>									
तुम तकव्वुर करते थे			इस लिए कि	रुस्वाई का अज़ाब	नहीं बदला दिया जाएगा				
<p>فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُونَ ﴿٢٠﴾ وَادْكُرْ</p>									
और याद कर	20	तुम नाफ़रमानियां करते थे	और इस लिए कि	नाहक	ज़मीन में				
<p>أَخَا عَادٍ إِذْ أَنْذَرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ</p>									
डराने वाले	और गुज़र चुके	अहकाफ़ में	अपनी कौम	उस ने डराया	जब	आद के भाई			
<p>مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمَنْ خَلْفَهُ إِلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَخَافُ</p>									
वेशक मैं डरता हूँ	अल्लाह के सिवा	कि तुम इबादत न करो	और उस के बाद	उस से पहले					
<p>عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٢١﴾ قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَأْفِكَنَا</p>									
क्या तू हमारे पास आया कि तू फेर दे हमें	वह बोले	21	एक बड़ा दिन	अज़ाब	तुम पर				
<p>عَنِ الْهَيْئَةِ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿٢٢﴾</p>									
22	सच्चे (जमा)	से	तू है	अगर	जो कुछ तू वादा करता है हम से	पस ले आ हम पर	हमारे माबूद	से	

यही वह लोग हैं जिन के बेहतरीन अमल हम कुबूल करते हैं जो उन्होंने ने किए और हम उन की बुराइयों से दरगुज़र करते हैं, (यह) अहले जन्नत में से (होंगे), सच्चा वादा है जो उन्हें वादा दिया जाता था। (16) और जिस ने अपने माँ बाप के लिए कहा: तुम पर तुफ! क्या तुम मुझे यह ख़बर देते हो कि मैं (रोज़े हशर) निकाला जाऊँगा, हालांकि बहुत से गिरोह गुज़र चुके हैं मुझ से पहले, और वह दोनों अल्लाह से फर्याद करते हैं (और उस को कहते हैं): तेरा बुरा हो, तू ईमान ले आ, वेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, तो वह कहता है कि यह तो सिर्फ पहलों (अगलों) की कहानियां हैं। (17) यही लोग हैं जिन पर अज़ाब की बात साबित हो गई (उन) उम्मतों में जो इन से कब्ल गुज़र चुकी जिन्नात में से और इन्सानों में से, वेशक वह ख़सारा पाने वालों में से थे। (18) और हर एक के लिए दरजे हैं, उस (के मुताबिक) जो उन्होंने ने किया ताकि वह उन को उन के आमाल का पूरा (बदला) दे, और उन पर जुल्म न किया जाएगा। (19) और जिस दिन लाए जाएंगे काफ़िर आग के सामने (उन से कहा जाएगा): तुम अपनी नेमतें अपनी दुनिया की ज़िन्दगी में हासिल कर चुके हो और उन का फ़ाइदा (भी) उठा चुके हो, पस आज तुम्हें रुस्वाई के अज़ाब का बदला दिया जाएगा, इस लिए कि तुम ज़मीन में नाहक तकव्वुर करते थे, और इस लिए कि तुम नाफ़रमानियां करते थे। (20) और कौमे आद के भाई (हूद) को याद कर, जब उस ने अपनी कौम को (सर ज़मीने) अहकाफ़ में डराया, और गुज़र चुके हैं डराने वाले (नबी) उस से पहले और उस के बाद (भी) कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, वेशक मैं डरता हूँ तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब से। (21) वह बोले: क्या तू हमारे पास इस लिए आया कि हमें हमारे माबूदों से फेर दे, पस तू जो कुछ हम से वादा करता है हम पर ले आ अगर तू सच्चों में से है (सच्चा है)। (22)

٢  
٢

उस ने कहा: इस के सिवा नहीं कि इल्म अल्लाह के पास है और मैं जिस (पैग़ाम) के साथ भेजा गया हूँ वह तुम्हें पहुँचाता हूँ, लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम लोग जहालत करते हो। (23)

फिर जब उन्होंने ने उस को देखा कि एक अब्र उन की वादियों की तरफ़ चला आ रहा है, तो वह बोले: यह हम पर वारिश बरसाने वाला बादल है, (नहीं) बल्कि यह वह है जिस की तुम जल्दी करते थे, एक आन्वी जिस में दर्दनाक अज़ाब है। (24)

वह तहस नहस कर देगी हर शै को अपने रब के हुक्म से, पस (उन का यह हाल होगया कि) उन के मकानों के सिवा कुछ न दिखाई देता था, इसी तरह हम मुज़्रिम लोगों को बदला दिया करते हैं। (25)

और हम ने उन्हें उन (बातों) में इस कद्र कुदरत दी थी कि तुम्हें उस पर उस कद्र कुदरत नहीं दी, और हम ने उन को दिए कान और आँखें और दिल, पस न उन के कान और न उन की आँखें और न उन के दिल उन के कुछ भी काम आए, जब वह इन्कार करते थे अल्लाह की आयात का, और उन को उस (अज़ाब) ने घेर लिया जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (26)

और तहकीक़ हम ने हलाक कर दी तुम्हारे इर्द गिर्द की बस्तियां, और हम ने बार बार अपनी निशानियां दिखाई ताकि वह लौट आएँ। (27)

फिर क्यों न उन की मदद की उन्होंने ने जिन्हें बना लिया था (अल्लाह का) कुर्ब हासिल करने के लिए अल्लाह के सिवा माबूद, बल्कि वह उन से गाइब हो गए, और यह उन का बुहतान था जो वह इफ़तिरा करते (घड़ते थे)। (28)

और जब हम आप (स) की तरफ़ जिन्नात की एक जमाअत फेर लाए, वह कुरआन सुनते थे, पस वह आप (स) के पास हाज़िर हुए तो उन्होंने ने (एक दूसरे को) कहा: चुप रहो, फिर जब पढ़ना तमाम हुआ तो वह अपनी कौम की तरफ़ डर सुनाते हुए लौटे। (29)

قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَأُبَلِّغُكُمْ مَا أُرْسِلْتُ بِهِ وَلَكِنِّي						
और लेकिन मैं	जो मैं भेजा गया हूँ उस के साथ	और मैं पहुँचाता हूँ तुम्हें	अल्लाह के पास	इल्म	इस के सिवा नहीं	उस ने कहा
أَرْسَلْتُكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ﴿٢٣﴾ فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ أَوْدِيَّتِهِمْ						
उन की वादियां	सामने (चला) आ रहा है	एक अब्र	फिर जब देखा उन्होंने ने उस को	23	तुम जहालत करते हो	गिरोह-लोग
قَالُوا هَذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهِ						
उस की	तुम जल्दी करते थे	जिस	बल्कि वह	हम पर वारिश बरसाने वाला	एक बादल	यह वह बोले
رِيحٌ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٤﴾ تُدْمِرُ كُلَّ شَيْءٍ بِأَمْرِ رَبِّهَا						
अपना रब	हुक्म से	शै	हर	वह तहस नहस कर देगी	24	दर्दनाक अज़ाब
فَأَصْبَحُوا لَا يُرَى إِلَّا مَسْكِنُهُمْ كَذَلِكَ نَجْزِي						
हम बदला देते हैं	इसी तरह	उन के मकान	सिवाए	न दिखाई देता था	पस वह रह गए	
الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ﴿٢٥﴾ وَلَقَدْ مَكَّنَّهُمْ فِيمَا إِنْ مَكَّنَّاكُمْ فِيهِ						
उस में-पर	नहीं हम ने कुदरत दी तुम्हें	उस में	और अलबत्ता हम ने उनको कुदरत दी थी	25	मुज़्रिम लोग	
وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَآبْصَارًا وَأَفْئِدَةً ۖ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ						
काम आए उन के	तो न	और दिल (जमा)	और आँखें	कान	उन्हें	और हम ने बना दिए
سَمْعَهُمْ وَلَا آبْصَارَهُمْ وَلَا أَفْئِدَتَهُمْ مِنْ شَيْءٍ إِذْ						
जब	कुछ भी	और न दिल उन के	और न उन की आँखें	उन के कान		
كَانُوا يَجْحَدُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ						
उस का	जो वह थे	उन को	और उस ने घेर लिया	अल्लाह की आयात का	वह इन्कार करते थे	
يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٢٦﴾ وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِنَ الْقُرَىٰ						
बस्तियां	से	जो तुम्हारे इर्द गिर्द	और तहकीक़ हम ने हलाक कर दिया	26	वह मज़ाक़ उड़ाते	
وَصَرَّفْنَا الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢٧﴾ فَلَوْلَا نَصْرُهُمْ						
मदद की उन की	फिर क्यों न	27	लौट आई	ताकि वह	और हम ने बार बार दिखाई अपनी निशानियां	
الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ قُرْبَانًا آلِهَةً ۗ بَلْ						
बल्कि	माबूद	कुर्ब हासिल करने को	अल्लाह के सिवा	जिन्हें बना लिया उन्होंने ने		
صَلُّوا عَنْهُمْ ۗ وَذَلِكَ إِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢٨﴾ وَإِذْ صَرَفْنَا						
हम फेर लाए	और जब	28	वह इफ़तिरा करते थे	और जो	उन का बुहतान	और यह वह गुम (गाइब) हो गए उन से
إِلَيْكَ نَفْرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُونَ الْقُرْآنَ ۖ فَلَمَّا حَضَرُوهُ						
वह हाज़िर हुए उस के पास	पस जब	कुरआन	वह सुनते थे	जिन्नात की	एक जमाअत	आप (स) की तरफ़
قَالُوا أَنْصِتُوا ۖ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِينَ ﴿٢٩﴾						
29	डर सुनाते हुए	अपनी कौम	तरफ़	वह लौटे (पढ़ना) तमाम हुआ	फिर जब	चुप रहो उन्होंने ने कहा

قَالُوا يَقَوْمَنَا إِنَّا سَمِعْنَا كِتَابًا أُنزِلَ مِنْ بَعْدِ مُوسَى مُصَدِّقًا							
तसदीक करने वाली	मूसा (अ)	वाद	नाज़िल की गई	एक किताब	वेशक हम ने सुनी	ऐ हमारी कौम	उन्होंने ने कहा
لَمَّا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ وَإِلَى طَرِيقِ مُسْتَقِيمٍ ﴿٣٠﴾ يَقَوْمَنَا							
ऐ हमारी कौम	30	रास्त	राह	और तरफ	हक की तरफ	वह रहनुमाई करती है	उस (अपने) से पहले उस की जो
أَجِيبُوا دَاعِيَ اللَّهِ وَآمِنُوا بِهِ يَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ							
और वह पनाह देगा तुम्हें	तुम्हारे गुनाह	से	बख़्श देगा तुम्हें	उस पर	और ईमान ले आओ	अल्लाह की तरफ बुलाने वाला	कुबूल कर लो
مِّنْ عَذَابِ أَلِيمٍ ﴿٣١﴾ وَمَنْ لَا يُجِبْ دَاعِيَ اللَّهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ							
आजिज़ करने वाला	तो नहीं	अल्लाह की तरफ बुलाने वाला	न कुबूल करेगा	और जो	31	दर्दनाक अज़ाव	से
فِي الْأَرْضِ وَلَيْسَ لَهُ مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءُ ۗ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٣٢﴾							
32	गुमराही खुली	में	यही लोग	हिमायती	उस के सिवा	उस के लिए	और नहीं ज़मीन में
أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَلَمْ يَعْى							
और वह थका नहीं	और ज़मीन	पैदा किया आस्मानों को	वह जिस ने	कि अल्लाह	क्या नहीं देखा उन्होंने ने		
بِخَلْقِهِنَّ بِقَدْرِ عَلَىٰ أَنْ يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ ۗ بَلَىٰ إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٣﴾							
33	कुदरत रखने वाला	हर शै	पर	वेशक वह हों	मुर्द	कि वह ज़िन्दा करे	पर वह कादिर है उन के पैदा करने से
وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَلَيْسَ هَذَا بِالْحَقِّ قَالُوا							
वह कहेंगे	हक	यह	क्या नहीं	आग के सामने	जिन्होंने ने कुफ़ किया (काफ़िर)	पेश किए जाएंगे	और जिस दिन
بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۗ قَالَ فَذُقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٤﴾ فَاصْبِرْ							
पस आप (स) सब्र करें	34	तुम इन्कार करते थे	वह जिस	अज़ाव	पस तुम चखो	वह फ़रमाएगा	हमारे रव की क़सम हों
كَمَا صَبَرَ أُولَٰئِكَ الْعَزْمِ مِنَ الرَّسْلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَهُمْ ۗ كَانَتْهُمْ							
गोया कि वह	उन के लिए	और जल्दी न करें	रसूलों	से	ऊलूल अज़म	सब्र किया	जैसे
يَوْمَ يَرُونَ مَا يُوعَدُونَ ۗ لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِّن نَّهَارٍ							
दिन की	एक घड़ी	मगर-सिर्फ	वह नहीं ठहरे	जिस का वादा किया जाता है उन से	जिस दिन देखेंगे वह		
بَلَّغٌ ۗ فَهَلْ يُهْلِكُ إِلَّا الْقَوْمَ الْفٰسِقُونَ ﴿٣٥﴾							
35	नाफ़रमान लोग	मगर	पस नहीं हलाक होंगे	पहुँचाना			
آيَاتَهَا ۚ ﴿٤٧﴾ سُوْرَةُ مُحَمَّدٍ ﴿٤٧﴾ ﴿٤٧﴾ رُكُوْعَاتُهَا ٤							
		रुक़ात 4	(47) सू़रह मुहम्मद		आयात 38		
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ أَضَلَّ أَعْمَالَهُمْ ﴿١﴾							
1	उन के आमाल	अकारत कर दिए	अल्लाह का रास्ता	से	और उन्होंने ने रोका	काफ़िर हुए	जो लोग

उन्होंने ने कहा कि ऐ हमारी कौम! हम ने एक किताब सुनी है जो नाज़िल की गई है मूसा (अ) के बाद, अपने से पहले की तसदीक करने वाली, वह रहनुमाई करने वाली (दीने) हक की तरफ़ और राहे रास्त की तरफ़। (30)

ऐ हमारी कौम! अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले (की बात) कुबूल कर लो और उस पर ईमान ले आओ, (अल्लाह) तुम्हें तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और वह तुम्हें दर्दनाक अज़ाव से पनाह देगा। (31)

और जो अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले की बात को कुबूल न करेगा, वह ज़मीन में (अल्लाह को) आजिज़ करने वाला नहीं, और उस (अल्लाह) के सिवा उस के लिए कोई हिमायती नहीं, यही लोग खुली गुमराही में हैं। (32)

क्या उन्होंने ने नहीं देखा? कि अल्लाह ही है जिस ने आस्मानों को और ज़मीन को पैदा किया, और वह उन के पैदा करने से नहीं थका, वह उस पर कादिर है कि मुर्दों को ज़िन्दा करे, हाँ! वेशक वह हर शै पर कुदरत रखने वाला है। (33)

और जिस दिन काफ़िर आग (जहननम) के सामने पेश किए जाएंगे, (पूछा जाएगा) क्या यह हक (अमरे वाकई) नहीं? वह कहेंगे: हमारे रव की क़सम, हाँ (यह हक है), अल्लाह तज़ाला फ़रमाएगा: पस तुम अज़ाव चखो जिस का तुम इन्कार करते थे। (34)

पस आप (स) सब्र करें जैसे ऊलूलअज़म (बाहिम्मत) रसूलों ने सब्र किया, और उन के लिए (अज़ाव की) जल्दी न करें, वह जिस दिन देखेंगे (वह अज़ाव) जिस का उन से वादा किया जाता है (उन्हें ऐसा मालूम होगा कि) गोया वह दुनिया में सिर्फ़ दिन की एक घड़ी ठहरे थे, (पैग़ाम) पहुँचाना है, पस हलाक न होंगे मगर नाफ़रमान लोग। (35)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है जो लोग काफ़िर हुए और उन्होंने ने अल्लाह के रास्ते से रोका, उन के आमाल (अल्लाह ने) अकारत कर दिए। (1)

ع ٢

और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए और वह उस पर ईमान लाए जो मुहम्मद (स) पर नाज़िल किया गया, और वह उन के रब की तरफ से हक है, उस (अल्लाह) ने उन से उन के गुनाह दूर कर दिए और उन का हाल दुरुस्त कर दिया। (2)

यह इस लिए हुआ कि जिन लोगों ने कुफ़ किया उन्होंने ने वातिल की पैरवी की और यह कि जो लोग ईमान लाए, उन्होंने ने अपने रब की तरफ से हक की पैरवी की, इसी तरह अल्लाह लोगों के लिए उन की मिसालें (अहवाल) बयान करता है। (3)

फिर जब तुम काफ़िरों से भिड़ जाओ तो उन की गर्दन मारो, यहां तक कि जब उन की खूब खूं रेज़ी कर चुको तो उन की क़ैद मज़बूत कर लो (मुशकें कस लो), पस उस के बाद एहसान कर दो (बिला मुआवज़ा रिहा कर दो) या मुआवज़ा (ले कर छोड़ दो) यहां तक कि लड़ने वाले अपने हथियार रख दें (डाल दें), यह है (हुक़्मे इलाही), और अगर अल्लाह चाहता तो उन से खुद ही निपट लेता, लेकिन (वह चाहता है) कि तुम में से बाज़ (एक) को दूसरे से आज़माए,

और जो लोग अल्लाह के रास्ते में मारे गए तो वह उन के आमाल हरगिज़ ज़ाया न करेगा। (4) वह जल्द उन को हिदायत देगा और उन का हाल संवारेगा। (5) और वह उन्हें जन्नत में दाख़िल करेगा जिस से उस ने उन्हें शनासा कर दिया है। (6)

ऐ मोमिनो! अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दम जमा देगा (तुम्हें साबित क़दम कर देगा)। (7) और जिन लोगों ने कुफ़ किया उन के लिए तवाही है और उस (अल्लाह) ने उन के अमल ज़ाया कर दिए। (8)

यह इस लिए कि उन्होंने ने उसे नापसंद किया जो अल्लाह ने नाज़िल किया तो (अल्लाह) ने उन के अमल अकारत कर दिए। (9) क्या वह ज़मीन में चले फिरे नहीं? तो वह देख लेते कि कैसा अन्जाम हुआ उन से पहले लोगों का, अल्लाह ने उन पर तवाही डाल दी, और काफ़िरों को उन की मानिंद (सज़ा होगी)। (10)

यह इस लिए कि अल्लाह उन लोगों का कारसाज़ है जो ईमान लाए और काफ़िरों का कोई कारसाज़ नहीं। (11)

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَآمَنُوا بِمَا نُزِّلَ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ

मुहम्मद (स) पर	उस पर जो नाज़िल किया गया	और वह ईमान लाए	अच्छे	और उन्होंने ने अमल किए	ईमान लाए	और जो लोग
----------------	--------------------------	----------------	-------	------------------------	----------	-----------

وَهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ ۖ كَفَرُ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَأَصْلَحَ بَالَهُمْ ۚ

2	उन का हाल	और दुरुस्त कर दिया	उन की बुराइयां (गुनाह)	उन से	उस ने दूर कर दिए	उन का रब	से	हक	और वह
---	-----------	--------------------	------------------------	-------	------------------	----------	----	----	-------

ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا اتَّبَعُوْا الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ آمَنُوْا

ईमान लाए	जो लोग	और यह कि	वातिल	उन्होंने ने पैरवी की	जिन लोगों ने कुफ़ किया	यह इस लिए कि
----------	--------	----------	-------	----------------------	------------------------	--------------

اتَّبَعُوْا الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ ۗ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ

3	उन की मिसालें	लोगों के लिए	अल्लाह बयान करता है	इसी तरह	अपने रब (की तरफ) से	हक	उन्होंने ने पैरवी की
---	---------------	--------------	---------------------	---------	---------------------	----	----------------------

فَاِذَا لَقِيْتُمْ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضْرِبُوْا الرِّقَابَ ۗ حَتّٰى اِذَا اَتْخٰنْتُمْوَهُمْ

खूब खून रेज़ी कर चुको उन की	जब	यहां तक कि	गर्दन	तो मारो तुम	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	भिड़ जाओ	फिर जब तुम
-----------------------------	----	------------	-------	-------------	---------------------------------	----------	------------

فَشٰدُوْا الْوَثَاقَ ۗ فَاِمَّا مَنًّاۢۙ بَعْدُ وَاِمَّا فِدَآءًۙ حَتّٰى تَضَعَ الْحَرْبُ

रख दे लड़ाई (लड़ने वाले)	यहां तक कि	मुआवज़ा	और या	उस के बाद	एहसान करो	पस या	क़ैद	तो मज़बूत कर लो
--------------------------	------------	---------	-------	-----------	-----------	-------	------	-----------------

اَوْزَارَهَا ۗ ذٰلِكَ ۗ وَلَوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَآنْتَصَرَ مِنْهُمْ ۗ وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوْا

ताकि आज़माए	और लेकिन	उन से	ज़रूर इन्तक़ाम लेता	अल्लाह चाहता	और अगर	यह	अपने हथियार
-------------	----------	-------	---------------------	--------------	--------	----	-------------

بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ ۗ وَالَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِى سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُضِلَّ اَعْمَالَهُمْ

4	उन के आमाल	तो वह हरगिज़ ज़ाया न करेगा	अल्लाह का रास्ता	में	मारे गए	और जो लोग	बाज़ (दूसरे) से	तुम से बाज़ को
---	------------	----------------------------	------------------	-----	---------	-----------	-----------------	----------------

سَيَهْدِيْهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ۗ وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَفَهَا لَهُمْ

6	उस ने जिस से शनासा कर दिया है उन्हें	जन्नत	और दाख़िल करेगा उन्हें	5	उन का हाल	और संवारेगा	वह जल्द उन को हिदायत देगा
---	--------------------------------------	-------	------------------------	---	-----------	-------------	---------------------------

يَآٰيَهَا الَّذِيْنَ آمَنُوْا اِنْ تَنْصُرُوْا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ

और जमा देगा	वह मदद करेगा तुम्हारी	तुम मदद करोगे अल्लाह की	अगर	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ
-------------	-----------------------	-------------------------	-----	-------------------------	---

اَقْدَامَكُمْ ۗ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَتَعَسَا۟ لَهُمْ ۗ وَاَصَلَّ اَعْمَالَهُمْ

8	उन के अमल	और उस ने ज़ाया कर दिए	उन के लिए	तो तवाही है	और जिन लोगों ने कुफ़ किया	7	तुम्हारे क़दम
---	-----------	-----------------------	-----------	-------------	---------------------------	---	---------------

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَرِهُوْا مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ

9	उन के अमल	तो अकारत कर दिए	नाज़िल किया अल्लाह ने	जो	इस लिए कि उन्होंने ने नापसंद किया	यह
---	-----------	-----------------	-----------------------	----	-----------------------------------	----

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ

उन लोगों का जो	अन्जाम	हुआ	कैसा	तो वह देख लेते	ज़मीन में	क्या वह चले फिरे नहीं
----------------	--------	-----	------	----------------	-----------	-----------------------

مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۗ وَلِلْكَافِرِيْنَ اَمْثَالُهَا ۗ ذٰلِكَ

यह	10	उन की मानिंद	और काफ़िरों के लिए	उन पर	तवाही डाल दी अल्लाह ने	उन से पहले
----	----	--------------	--------------------	-------	------------------------	------------

بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ آمَنُوْا وَاَنَّ الْكَافِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ

11	उन के लिए	कोई कारसाज़ नहीं	काफ़िरों	और यह कि	उन लोगों का जो ईमान लाए	कारसाज़	इस लिए कि अल्लाह
----	-----------	------------------	----------	----------	-------------------------	---------	------------------

عند التقدّمين ١٢  
١٣  
١٤  
١٥  
١٦  
١٧  
١٨  
١٩  
٢٠  
٢١  
٢٢  
٢٣  
٢٤  
٢٥  
٢٦  
٢٧  
٢٨  
٢٩  
٣٠  
٣١  
٣٢  
٣٣  
٣٤  
٣٥  
٣٦  
٣٧  
٣٨  
٣٩  
٤٠  
٤١  
٤٢  
٤٣  
٤٤  
٤٥  
٤٦  
٤٧  
٤٨  
٤٩  
٥٠  
٥١  
٥٢  
٥٣  
٥٤  
٥٥  
٥٦  
٥٧  
٥٨  
٥٩  
٦٠  
٦١  
٦٢  
٦٣  
٦٤  
٦٥  
٦٦  
٦٧  
٦٨  
٦٩  
٧٠  
٧١  
٧٢  
٧٣  
٧٤  
٧٥  
٧٦  
٧٧  
٧٨  
٧٩  
٨٠  
٨١  
٨٢  
٨٣  
٨٤  
٨٥  
٨٦  
٨٧  
٨٨  
٨٩  
٩٠  
٩١  
٩٢  
٩٣  
٩٤  
٩٥  
٩٦  
٩٧  
٩٨  
٩٩  
١٠٠

<p>إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي</p>						
बहती है	वागात	और उन्होंने ने नेक अमल किए	जो लोग ईमान लाए	दाखिल करता है	वेशक अल्लाह	
<p>مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَتَمَتَّعُونَ وَيَأْكُلُونَ كَمَا</p>						
जैसे	और वह खाते हैं	वह फाइदा उठाते हैं	कुफ़ किया	और जिन लोगों ने	नहरें	उन के नीचे
<p>تَأْكُلُ الْأَنْعَامَ وَالنَّارُ مَشْوَى لَهُمْ (١٢) وَكَأَيِّنْ مِنْ قَرْيَةٍ هِيَ أَشَدُّ</p>						
बहुत ही सख्त	वह	बस्तियां	और बहुत सी	12	उन के लिए	ठिकाना और आग चौपाए खाते हैं
<p>قُوَّةٍ مِنْ قَرْيَةٍ الَّتِي أَخْرَجْتِكَ أَهْلَكْنَاهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ (١٣)</p>						
13	उन के लिए	तो कोई न मदद करने वाला	हम ने हलाक कर दिया उन्हें	आप (स) को निकाल दिया	वह जिस	आप (स) की बस्ती से कुव्वत में
<p>أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّهِ كَمَنْ زُيِّنَ لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ</p>						
उस के बुरे अमल	आरास्ता दिखाए गए उसको	उस की तरह	अपने रब से-के	रोशन (रास्ता)	पर है	पस क्या जो
<p>وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ (١٤) مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وَعَدَ الْمُتَّقُونَ فِيهَا</p>						
उस में	परहेज़गारों	वह जो वादा की गई	जन्नत	मिसाल (कैफ़ियत)	14	अपनी खाहिशात और उन्होंने ने पैरवी की
<p>أَنْهَارٍ مِنْ مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ وَأَنْهَارٍ مِنْ لَبَنٍ لَمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٍ</p>						
और नहरें	उस का ज़ाइका	बदलने वाला	न	दूध की	और नहरें	बदवू न करने वाला पानी से-की नहरें
<p>مِنْ خَمْرٍ لَذَّةٍ لِلشَّرْبِينَ وَأَنْهَارٍ مِنْ عَسَلٍ مُصَفًّى وَلَهُمْ فِيهَا</p>						
उस में	और उन के लिए	मुसफ़ा	शहद की	और नहरें	पीने वालों के लिए	सरासर लज़ज़त शराब की
<p>مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَبِّهِمْ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ</p>						
हमेशा रहने वाला आग में	वह	उस की तरह जो	उन के रब से	और बख़्शिश	हर किस्म के फल	
<p>وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ (١٥) وَمِنْهُمْ مَّنْ يَسْتَمِعُ</p>						
सुनते हैं	जो	और उन में से	15	उन की अंतड़ियां	टुकड़े टुकड़े कर डालेगा	गर्म पानी और उन्हें पिलाया जाएगा
<p>إِلَيْكَ حَتَّىٰ إِذَا خَرَجُوا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوا لِلَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ</p>						
इल्म दिया गया (अहले इल्म)	उन लोगों से जिन्हें	वह कहते हैं	आप (स) के पास से	वह निकलते हैं	जब यहां तक कि	आप (स) की तरफ
<p>مَاذَا قَالَ انْفِصَابًا أُولَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ</p>						
उन के दिलों पर	मुहर कर दी अल्लाह ने	वह जो	यही लोग	अभी	उस ने कहा	क्या
<p>وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ (١٦) وَالَّذِينَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَآتَاهُمْ</p>						
और उन्हें अज्ञा की	हिदायत	और ज़ियादा दी उन्हें	और वह लोग जिन्होंने ने हिदायत पाई	16	अपनी खाहिशात	और उन्होंने ने पैरवी की
<p>تَقْوَاهُمْ (١٧) فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً</p>						
अचानक	आ जाए उन पर	कि	क़ियामत	मगर	मुन्तज़िर	17
<p>فَقَدْ جَاءَ أَشْرَاطُهَا فَأَنَّىٰ لَهُمْ إِذَا جَاءَتْهُمْ ذِكْرُهُمْ (١٨)</p>						
18	उन का नसीहत (कुबूल करना)	वह आगई उन के पास	जब	उन के लिए-को	तो कहां	उस की अ़लामात सो आ चुकी है

वेशक अल्लाह दाखिल करता है उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए वागात में जिन के नीचे नहरें बहती हैं, और जिन लोगों ने कुफ़ किया वह फाइदा उठाते हैं और (उसी तरह) खाते हैं जैसे चौपाए खाते हैं, और आग (जहननम) उन का ठिकाना है। (12) और बहुत सी बस्तियां (थीं), वह बहुत ही सख्त थीं कुव्वत में आप (स) की बस्ती से जिस के रहने वालों ने आप (स) को निकाल दिया, हम ने उन्हें हलाक कर दिया तो कोई उन की मदद करने वाला न हुआ। (13) पस क्या जो अपने परवरदिगार के रोशन रास्ते पर हो उस की तरह है जिसे उस के बुरे अमल आरास्ता कर दिखाए गए, और उन्होंने ने अपनी खाहिशात की पैरवी की। (14) जन्नत की कैफ़ियत जो परहेज़गारों को वादा की गई, (यह है) कि उस में नहरें हैं बदवू न करने वाले पानी की, नहरें हैं दूध की जिस का ज़ाइका बदलने वाला नहीं, और नहरें हैं शराब की जो पीने वालों के लिए सरासर लज़ज़त है, और नहरें हैं मुसफ़ा (साफ़ किए हुए) शहद की, और उस में उन के लिए हर किस्म के फल हैं, और उन के रब (की तरफ से) बख़्शिश, (क्या वह) उस की तरह है? जो हमेशा आग में रहने वाला है, और उन्हें गर्म (खौलता हुआ) पानी पिलाया जाएगा जो उन की अंतड़ियां टुकड़े टुकड़े कर देगा। (15) और उन में से बाज़ ऐसे हैं जो आप (स) की तरफ (कान लगा कर) सुनते हैं, फिर जब वह आप (स) के पास से निकलते हैं तो वह अहले इल्म से कहते हैं कि उस (हज़रत स) ने अभी क्या कहा है? यही वह लोग हैं जिन के दिलों पर अल्लाह ने मुहर कर दी है, और उन्होंने ने अपनी खाहिशात की पैरवी की। (16) और जिन लोगों ने हिदायत पाई (अल्लाह ने) उन्हें और ज़ियादा हिदायत दी और उन्हें अज्ञा की उन की परहेज़गारी। (17) पस वह मुन्तज़िर नहीं मगर क़ियामत (की आमद) के, कि उन पर अचानक आ जाए, सो उस की अ़लामात तो आ चुकी है, जब वह उन के पास आ गई तो उन्हें नसीहत कुबूल करना कहां (नसीब) होगा। (18)

सो जान लो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और आप (स) वख्शिश मांगें अपने कुसूरों के लिए, मोमिन मर्दाँ और मोमिन औरतों के लिए, और अल्लाह जानता है तुम्हारा चलना फिरना, और तुम्हारे रहने सहने के मुकाम को। (19) और जो लोग ईमान लाए वह कहते हैं कि (जिहाद की) एक सूरत क्यों न उतारी गई? सो जब मुहक्कम (साफ साफ मतलब वाली) सूरत उतारी जाती है और जिब्र क़िया जाता है उस में जंग का, तो तुम देखोगे कि वह लोग जिन के दिलों में (निफ़ाक़ की) बीमारी है, वह आप (स) की तरफ़ देखते हैं (उस शख्स के) देखने की तरह वेहोशी तारी हो गई हो जिस पर मौत की, सो ख़राबी है उन के लिए। (20) (सहीह तो यह था कि वह) इताअत करते और माकूल बात कहते, पस जब काम पुख़्ता होजाए, अगर वह अल्लाह के साथ सच्चे होते तो अलबत्ता उन के लिए बेहतर होता। (21) सो तुम इस के नज़्दीक हो कि अगर तुम हाकिम हो जाओ तो तुम फ़साद मचाओ ज़मीन में, और अपने रिश्ते तोड़ डालो। (22) यही वह लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की, फिर उन्हें बहरा कर दिया और अन्धा कर दिया उन की आँखों को। (23) तो क्या वह कुरआन में ग़ौर नहीं करते? क्या उन के दिलों पर ताले (पड़े हैं)? (24) बेशक जो लोग अपनी पुशत फेर कर पलट गए उस के बाद जब कि उन के लिए हिदायत वाज़ेह हो गई, शैतान ने उन के लिए आरास्ता कर दिखाया और उन को ढील दी। (25) यह इस लिए कि उन्होंने ने उन लोगों से कहा जिन्होंने ने इस (किताब) को नापसंद किया जो अल्लाह ने नाज़िल की कि अ़नक़रीब हम तुम्हारा कहना मान लेंगे बाज़ कामों (बातों) में, और अल्लाह उन की खुफ़िया बातों को जानता है। (26) पस कैसा (हाल होगा)? जब फ़रिशते उन की रूह क़ब्ज़ करेंगे (और) मारते होंगे उन के चेहरों और उन की पीठों पर। (27) यह इस लिए होगा कि उन्होंने ने उस की पैरवी की जिस ने अल्लाह को नाराज़ किया और उन्होंने ने उस की रज़ा को नापसंद किया तो उस (अल्लाह) ने उन के आमाल अकारत कर दिए। (28) क्या जिन लोगों के दिलों में रोग है वह गुमान करते हैं कि अल्लाह हरगिज़ ज़ाहिर न करेगा उन की दिली अदावतों को। (29)

فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ							
और मोमिन मर्दाँ के लिए	अपने कुसूर के लिए	और वख्शिश मांगें आप (स)	अल्लाह के सिवा	नहीं कोई माबूद	यह कि	सो जान लो	
وَالْمُؤْمِنَاتِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثُوكُمْ ﴿١٩﴾ وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا							
वह जो लोग ईमान लाए	और वह कहते हैं	19	और तुम्हारे रहने सहने का मुकाम	तुम्हारा चलना फिरना	जानता है	और अल्लाह	और मोमिन औरतों
لَوْلَا نَزَّلَتْ سُورَةٌ ۖ فَإِذَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ مُحْكَمَةٌ وَذُكِرَ فِيهَا							
उस में	और जिब्र क़िया जाता है	फैसला कुन सूरत	उतारी जाती है	सो जब	एक सूरत	क्यों न उतारी गई	
الْقِتَالِ ۗ رَأَيْتَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ نَظَرَ							
देखना	आप (स) की तरफ़	वह देखते हैं	बीमारी	उन के दिलों में	वह लोग	तुम देखोगे	जंग
الْمَعْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ فَأُولَىٰ لَهُمْ ﴿٢٠﴾ طَاعَةً وَقَوْلٌ مَّعْرُوفٌ ۗ							
मअरूफ	और बात	इताअत	20	सो ख़राबी उन के लिए	मौत की	उस पर	वेहोशी तारी हो गई
فَإِذَا عَزَمَ الْأَمْرَ فَلَوْ صَدَقُوا اللَّهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ﴿٢١﴾ فَهَلْ عَسَيْتُمْ							
सो तुम इस के नज़्दीक	21	अलबत्ता होता बेहतर उन के लिए	पस अगर वह सच्चे होते अल्लाह के साथ	पुख़्ता हो जाए काम	फिर जब		
إِنْ تَوَلَّيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَتَقَطَّعُوا أَرْحَامَكُمْ ﴿٢٢﴾							
22	अपने रिश्ते	और तुम काटो (तोड़ डालो)	ज़मीन में	कि तुम फ़साद मचाओ	तुम वाली (हाकिम) हो जाओ	अगर	
أُولَئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فَأَصَمَّهُمْ وَأَعَمَّىٰ أَبْصَارَهُمْ ﴿٢٣﴾							
23	उन की आँखें	और अन्धा कर दिया	फिर उन को बहरा कर दिया	अल्लाह ने लानत की	वह लोग जिन पर	यही है	
أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ الْقُرْآنَ ۗ أَمْ عَلَىٰ قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا ﴿٢٤﴾ إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدَوْا							
पलट गए	जो लोग	बेशक	24	उन के ताले	दिलों पर	क्या	कुरआन तो क्या वह ग़ौर नहीं करते?
عَلَىٰ أَدْبَارِهِمْ ۖ مِّنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ ۗ الشَّيْطٰنُ سَوَّلَ لَهُمْ ۗ							
उन के लिए	आरास्ता कर दिखाया	शैतान	हिदायत	उन के लिए	जब वाज़ेह हो गई	इस के बाद	अपनी पुशत पर
وَأْمَلَىٰ لَهُمْ ﴿٢٥﴾ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لِلَّذِينَ كَرَهُوا مَا نَزَّلَ اللَّهُ سَنُطِيعُكُمْ							
अ़नक़रीब हम तुम्हारा कहा मान लेंगे	जो नाज़िल किया अल्लाह ने	उन्होंने ने नापसंद किया	उन लोगों से जिन्होंने	उन्होंने ने कहा	इस लिए कि वह	यह	25 उन को और ढील दी गई
فِي بَعْضِ الْأَمْرِ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ ﴿٢٦﴾ فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّيْتُمْ							
जब उन की रूह क़ब्ज़ करेंगे	पस क्या	26	उन की खुफ़िया बातें	जानता है	और अल्लाह	काम	वाज़ में
الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ﴿٢٧﴾ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ اتَّبَعُوا							
पैरवी की	यह इस लिए कि उन्होंने ने	27	और उन की पीठों	उन के चेहरों	वह मारते होंगे	फ़रिशते	
مَا أَسْحَطَ اللَّهُ وَكَرَهُوا رِضْوَانَهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ﴿٢٨﴾ أَمْ حَسِبَ							
क्या गुमान करते हैं?	28	उन के आमाल	तो उस ने अकारत कर दिए	उस की रज़ा	और उन्होंने ने पसंद न किया	अल्लाह को नाराज़ किया	जो-जिस
الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ ۗ أَنْ لَّنْ يُخْرِجَ اللَّهُ أَصْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾							
29	उन के दिल की अ़दावते	हरगिज़ ज़ाहिर न करेगा अल्लाह	कि	मरज़-रोग	उन के दिलों में	(वह लोग) जिन	



وَلَوْ نَشَاءُ لَأَرَيْنَاكُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيمِهِمْ ۗ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِي							
में-से	और तुम ज़रूर पहचान लोगे उन्हें	उन के चेहरों से	सो अलबत्ता तुम उन्हें पहचान लो	तो तुम्हें दिखा दें वह लोग	और अगर हम चाहें		
لَحْنِ الْقَوْلِ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٠﴾ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتَّىٰ نَعْلَمَ الْمُجَاهِدِينَ							
मुजाहिदों	हम मालूम कर लें	यहां तक कि	और हम ज़रूर आजमाएंगे तुम्हें	30	तुम्हारे आमाल	जानता है और अल्लाह	तरजे कलाम
مِنْكُمْ وَالصَّابِرِينَ ۗ وَنَبَلُّوا أَحْبَارَكُمْ ﴿٣١﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا							
जिन लोगों ने कुफ़ किया	वेशक	31	तुम्हारी ख़बरें (हालात)	और हम जाँच लें	और सब्र करने वाले	तुम में से	
وَصَدُّوا عَنِ سَبِيلِ اللَّهِ ۗ وَشَاقُّوا الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ							
उस के बाद	रसूल	और उन्होंने ने मुख़ालिफ़त की	अल्लाह का रास्ता	से	और उन्होंने ने रोका		
مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ ۗ لَن يَصُورُوا اللَّهُ شَيْئًا ۗ وَسَيُحِطُّ أَعْمَالَهُمْ ﴿٣٢﴾							
32	उन के आमाल	और वह जल्द अकारत कर देगा	कुछ भी	और वह हरगिज़ न बिगाड़ सकेंगे अल्लाह का	हिदायत	उन पर	जब वाज़ेह हो गई
يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا							
और वातिल न करो	और इताअत करो रसूल की	इताअत करो अल्लाह की	जो लोग ईमान लाए (मोमिनो)	ऐ			
أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٣﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنِ سَبِيلِ اللَّهِ ۗ ثُمَّ							
फिर	अल्लाह का रास्ता	से	और उन्होंने ने रोका	जिन लोगों ने कुफ़ किया	वेशक	33	अपने आमाल
مَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ ۗ فَلَن يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ﴿٣٤﴾ فَلَا تَهِنُوا وَتَدْعُوا إِلَىٰ							
तरफ़	और न बुलाओ	पस तुम सुस्ती न करो	34	उन को	तो हरगिज़ नहीं बख़शेगा अल्लाह	काफ़िर (ही)	और मर गए
السَّلَامِ ۗ وَأَنْتُمْ الْأَعْلَوْنَ ۗ وَاللَّهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَتَرَكَمُ أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٥﴾							
35	तुम्हारे आमाल	और वह हरगिज़ कमी न करेगा	तुम्हारे साथ	और अल्लाह	ग़ालिब	और तुम ही	सुलह
إِنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ ۗ وَلَهُوَ ۗ وَإِنْ تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا يُؤْتِكُمْ							
वह तुम्हें देगा	और तक्वा इख़्तियार करो	ईमान ले आओ	और अगर	और कूद	खेल	दुनिया की ज़िन्दगी	इस के सिवा नहीं
أُجُورَكُمْ ۗ وَلَا يَسْأَلْكُمْ أَمْوَالَكُمْ ﴿٣٦﴾ إِنْ يَسْأَلْكُمْ فَيَحْفَكُمُ فَتَبَخَّلُوا							
तुम बुख़ल करो	फिर तुम से चिमट जाए	वह तुम से (माल) तलब करे	अगर	36	तुम्हारे माल	और न तलब करेगा तुम से	तुम्हारे अजर (जमा)
وَيُخْرِجْ أَضْغَانَكُمْ ﴿٣٧﴾ هَٰأَنْتُمْ هَٰؤُلَاءِ ۗ تُدْعُونَ لِنُفُسِكُمْ فِي							
में	कि तुम खर्च करो	तुम्हें पुकारा जाता है	हाँ! वह लोग	यह तुम हो	37	तुम्हारे खोटा	और ज़ाहिर हो जाएं
سَبِيلِ اللَّهِ ۗ فَمِنْكُمْ مَنْ يَبْخُلُ ۗ وَمَنْ يَبْخُلْ فَإِنَّمَا يَبْخُلُ عَنِ نَفْسِهِ ۗ							
अपने आप से	तो इस के सिवा नहीं कि वह बुख़ल करता है	बुख़ल करता है	और जो	कोई ऐसा है कि बुख़ल करता है	फिर तुम में से	अल्लाह का रास्ता	
وَاللَّهُ الْغَنِيُّ ۗ وَأَنْتُمْ الْفُقَرَاءُ ۗ وَإِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبَدِلْ							
वह बदल देगा	तुम रूगर्दानी करोगे	और अगर	मोहताज (जमा)	और तुम	वेनियाज़	और अल्लाह	
قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۗ ثُمَّ لَا يَكُونُوا أَمْثَالَكُمْ ﴿٣٨﴾							
38	तुम्हारे जैसे	वह न होंगे	फिर	दूसरी क़ौम तुम्हारे सिवा			

और अगर हम चाहें तो तुम्हें उन लोगों को दिखा दें, सो अलबत्ता तुम उन्हें उन के चेहरों से पहचान लोगे, और तुम ज़रूर उन्हें उन के तरजे कलाम से पहचान लोगे, और अल्लाह तुम्हारे आमाल को जानता है। (30) और हम ज़रूर तुम्हें आजमाएंगे यहां तक हम मालूम कर लें कि (कौन हैं) तुम में से मुजाहिद और सब्र करने वाले और हम जाँच लें तुम्हारे हालात। (31) वेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, और उन्होंने ने रसूल (स) की मुख़ालिफ़त की उस के बाद जब कि उन पर हिदायत वाज़ेह हो गई, वह हरगिज़ अल्लाह का कुछ भी न बिगाड़ सकेंगे और वह (अल्लाह) जल्द उन के आमाल अकारत कर देगा। (32) ऐ मोमिनो! अल्लाह की इताअत करो और रसूल (स) की इताअत करो, और अपने आमाल वातिल न करलो। (33) वेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, फिर वह काफ़िर (कुफ़ की हालत में) मर गए तो अल्लाह हरगिज़ न बख़शेगा उन को। (34) पस तुम सुस्ती (कम हिम्मती) न करो और (खुद) सुलह की तरफ़ न बुलाओ, और तुम ही ग़ालिब रहोगे, और अल्लाह तुम्हारे साथ है और वह हरगिज़ कमी न करेगा तुम्हारे आमाल में। (35) इस के सिवा नहीं कि दुनिया की ज़िन्दगी (महज़) खेल कूद है, और तुम अगर ईमान ले आओ और तक्वा इख़्तियार करो तो वह तुम्हें तुम्हारे अजर देगा, और तुम से तुम्हारे माल तलब न करेगा। (36) अगर वह तुम से माल तलब करे और तुम से चिमट जाए (तलब ही करता रहे) तो तुम बुख़ल करो, और ज़ाहिर हो जाएं तुम्हारे खोटा। (37) हाँ! तुम ही वह लोग हो जिन्हें पुकारा जाता है कि अल्लाह के रास्ते में खर्च करो, फिर तुम में से कोई ऐसा है जो बुख़ल करता है, और जो बुख़ल करता है तो इस के सिवा नहीं कि वह अपने आप से बुख़ल करता है, और अल्लाह वेनियाज़ है और तुम (उस के) मोहताज हो और अगर तुम रूगर्दानी करोगे तो वह तुम्हारे सिवा (तुम्हारी जगह) कोई दूसरी क़ौम बदल देगा और वह तुम्हारे जैसे न होंगे। (38)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है वेशक हम ने आप (स) को खुली फतह दी, (1) ताकि अल्लाह आप (स) की अगली पिछली कोताहियों को बख़्शदे, और आप (स) पर अपनी नेमत मुकम्मल कर दे, और आप (स) को सीधे रास्ते की रहनुमाई करे। (2) और अल्लाह आप (स) को नुस्रत दे, एक नुस्रत (मदद) ज़बरदस्त। (3) वही है जिस ने मोमिनों के दिल में तसल्ली उतारी, ताकि वह (उन का) ईमान बढ़ाए उन के (पहले) ईमान के साथ, और आस्मानों और ज़मीन के लशकर अल्लाह ही के हैं, और है अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला। (4) ताकि वह मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को उन बागात में दाख़िल कर दे जिन के नीचे नहरें जारी हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे और उन से उन की बुराइयां दूर कर देगा, और यह अल्लाह के नज़्दीक बड़ी कामयाबी है। (5) और वह अज़ाब देगा मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों को, और अल्लाह के साथ बुरे गुमान करने वाले मुशरिफ़ मर्दों और मुशरिफ़ औरतों को, उन पर बुरी गर्दिश है। और अल्लाह ने उन पर ग़ज़ब किया, और उन पर लानत की (रहमत से महरूम कर दिया) और उन के लिए जहनन्म तैयार किया, और वह बुरा ठिकाना है। (6) और अल्लाह ही के लिए हैं आस्मानों और ज़मीन के लशकर, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (7) वेशक हम ने आप (स) को भेजा है गवाही देने वाला, और खुशख़बरी देने वाला, और डराने वाला। (8) ताकि तुम लोग अल्लाह पर और उस के रसूल (स) पर ईमान लाओ, और उस की मदद करो और उस की ताज़ीम करो, और अल्लाह की तस्वीह (पाकीज़गी बयान) करो सुबह ओ शाम। (9)

<p style="text-align: center;">آيَاتُهَا ٢٩ ﴿٤٨﴾ سُورَةُ الْفَتْحِ ﴿٤٨﴾ زُكُوعَاتُهَا ٤</p>										
रुक़आत 4			(48) सूरतुल फ़तह				आयात 29			
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ										
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है										
<p>إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا ﴿١﴾ لِيُغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ</p>										
आप (स) के कूसूर	से	जो पहले गुज़रे	अल्लाह	आप के लिए	ताकि बख़्शदे	1	खुली	फ़तह	आप (स) को	वेशक हम ने फ़तह दी
<p>وَمَا تَأَخَّرَ وَبِئْسَ نِعْمَتُهُ عَلَيْكَ وَيَهْدِيكَ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ﴿٢﴾</p>										
2	सीधा	रास्ता	और आप (स) की रहनुमाई करे	आप (स) पर	अपनी नेमत	और वह मुकम्मल करदे	और जो पीछे हुए			
<p>وَيَنْصُرَكَ اللَّهُ نَصْرًا عَزِيمًا ﴿٣﴾ هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ السَّكِينَةَ فِي</p>										
में	सकीना (तसल्ली)	उतारी	वह जिस	वही	3	ज़बरदस्त	नुस्रत	और आप (स) को नुस्रत दे अल्लाह		
<p>قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ لِيَزِدُوا إِيمَانًا مَعَ إِيْمَانِهِمْ ۗ وَاللَّهُ جُنُودُ</p>										
और अल्लाह के लिए लशकर (जमा)	उन का ईमान	साथ	ईमान	ताकि वह बढ़ाए	मोमिनों	दिल (जमा)				
<p>السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٤﴾ لِيُدْخِلَ</p>										
ताकि वह दाख़िल करे	4	हिक्मत वाला	जानने वाला	अल्लाह	और है	और ज़मीन	आस्मानों			
<p>الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ</p>										
वह हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	जारी है	जन्नत	और मोमिन औरतें	मोमिन मर्दों				
<p>فِيهَا وَيُكَفِّرُ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ ۗ وَكَانَ ذَلِكَ عِنْدَ اللَّهِ فَوْرًا عَظِيمًا ﴿٥﴾</p>										
5	बड़ी कामयाबी	अल्लाह के नज़्दीक	यह	और है	उन की बुराइयां	उन से	और दूर कर देगा	उन में		
<p>وَيُعَذِّبُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ</p>										
और मुशरिफ़ औरतों	और मुशरिफ़ मर्दों	और मुनाफ़िक़ औरतों	मुनाफ़िक़ मर्दों	और वह अज़ाब देगा						
<p>الظَّالِمِينَ بِاللَّهِ ظَنَّ السَّوْءِ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ ۗ</p>										
बुरी	दायरा (गर्दिश)	उन पर	गुमान बुरे	अल्लाह के साथ	गुमान करने वाले					
<p>وَعَصَبَ اللَّهِ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ۗ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ﴿٦﴾</p>										
6	ठिकाना	और बुरा है	जहनन्म	और तैयार किया उन के लिए	और उन पर लानत की	उन पर	और अल्लाह का ग़ज़ब			
<p>وَاللَّهُ جُنُودُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيمًا حَكِيمًا ﴿٧﴾</p>										
7	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और है अल्लाह	और ज़मीन	और अल्लाह के लिए लशकर आस्मानों के					
<p>إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿٨﴾ لِيُؤْمِنُوا بِاللَّهِ</p>										
अल्लाह पर	ताकि तुम ईमान लाओ	8	और डराने वाला	और खुशख़बरी देने वाला	गवाही देने वाला	वेशक हम ने आप (स) को भेजा				
<p>وَرَسُولِهِ ۗ وَتَعَزَّزُوهُ وَثَوَّقُوهُ ۗ وَتَسَبَّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٩﴾</p>										
9	और शाम	सुबह	और उस (अल्लाह) की तस्वीह करो	और उस की ताज़ीम करो	और उस की मदद करो	और उस का रसूल (स)				

<p>إِنَّ الَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ اللَّهَ يَدُ اللَّهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ</p>							
उन के हाथों के ऊपर	अल्लाह का हाथ	वह अल्लाह से बैअत कर रहे हैं	इस के सिवा नहीं कि	आप से बैअत कर रहे हैं	वेशक जो लोग		
<p>فَمَنْ نَكَثَ فَإِنَّمَا يَنْكُثُ عَلَىٰ نَفْسِهِ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِمَا عَاهَدَ عَلَيْهِ اللَّهُ</p>							
अल्लाह पर-से	जो उस ने अहद किया	पूरा किया	और जिस	अपनी ज्ञात पर	उस ने तौड़ दिया	तो इस के सिवा नहीं	फिर जिस ने तौड़ दिया अहद
<p>فَسَيُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١٠﴾ سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلَّفُونَ مِن</p>							
से	पीछे रह जाने वाले	आप (स) से	अब कहेंगे	10	अजरे अज़ीम	तो वह अनक़रीब उसे देगा	
<p>الْأَعْرَابِ شَغَلَتْنَا أَمْوَالُنَا وَأَهْلُونَا فَاسْتَغْفِرُ لَنَا يَقُولُونَ</p>							
वह कहते हैं	और बख़्शिश मांगिए हमारे लिए	और हमारे घर वाले	हमारे मालों	हमें मशगूल रखा	देहाती		
<p>بِأَسْنَتِهِمْ مَا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ لَكُمْ مِنَ اللَّهِ</p>							
अल्लाह के सामने	तुम्हारे लिए	इख़्तियार रखता है	तो कौन	फ़रमा दें	उन के दिलों में	जो नहीं	अपनी ज़बानों से
<p>شَيْئًا إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا بَلْ كَانَ اللَّهُ</p>							
है अल्लाह	बल्कि	कोई फाइदा	चाहे तुम्हें	या	कोई नुक़सान	तुम्हें	अगर वह चाहे किसी चीज़ का
<p>بِمَا تَعْمَلُونَ خَيْرًا ﴿١١﴾ بَلْ ظَنَنْتُمْ أَنْ لَنْ يَنْقَلِبَ الرَّسُولُ وَالْمُؤْمِنُونَ</p>							
और मोमिन (जमा)	रसूल (स)	हरगिज़ वापस न लौटेंगे	कि	तुम ने गुमान किया	बल्कि	11	ख़बरदार उस से जो तुम करते हो
<p>إِلَىٰ أَهْلِيهِمْ أَبَدًا وَزَيَّنَ ذَلِكَ فِي قُلُوبِكُمْ وَظَنَّتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ﴿١٢﴾</p>							
बुरा गुमान	और तुम ने गुमान किया	तुम्हारे दिलों में-को	यह	और भली लगी	कभी	अपने अहले खाना	तरफ़
<p>وَكَنتُمْ قَوْمًا بُورًا ﴿١٣﴾ وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ</p>							
और उस का रसूल	अल्लाह पर	ईमान नहीं लाता	और जो	12	हलाक होने वाली क़ौम	और तुम थे-हो गए	
<p>فَإِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا ﴿١٣﴾ وَاللَّهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ</p>							
और ज़मीन	और अल्लाह के लिए आस्मानों की वादशाहत	13	दहकती आग	काफ़िरों के लिए	तो वेशक हम ने तैयार की		
<p>يَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ ﴿١٤﴾ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿١٤﴾</p>							
14	मेहरबान	बख़्शने वाला	अल्लाह और है	जिस को वह चाहे	और अज़ाब दे	जिस को वह चाहे	वह बख़्शदे
<p>سَيَقُولُ الْمُخَلَّفُونَ إِذَا انْطَلَقْتُمْ إِلَىٰ مَغَانِمَ لِتَأْخُذُوهَا</p>							
कि तुम उन्हें ले लो	ग़नीमतों की तरफ़	तुम चलोगे	जब	पीछे बैठ रहने वाले	अनक़रीब कहेंगे		
<p>ذُرُونَا نَتَّبِعْكُمْ يُرِيدُونَ أَنْ يُبَدِّلُوا كَلِمَ اللَّهِ قُلْ</p>							
फ़रमा दें	अल्लाह का फ़रमान	कि वह बदल डालें	वह चाहते हैं	हम तुम्हारे पीछे चलें	हमें छोड़ दो (इजाज़त दो)		
<p>لَنْ تَتَّبِعُونَا كَذَلِكُمْ قَالَ اللَّهُ مِنْ قَبْلُ فَسَيَقُولُونَ</p>							
फिर अब वह कहेंगे	इस से क़व्ल	कहा अल्लाह ने	इसी तरह	तुम हरगिज़ हमारे पीछे न आओ			
<p>بَلْ تَحْسُدُونَنَا بَلْ كَانُوا لَا يَفْقَهُونَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٥﴾</p>							
15	मगर थोड़ा	वह समझते नहीं हैं	बल्कि-जबकि	तुम हसद करते हो हम से	बल्कि		

वेशक (हुदैबिया में) जो लोग आप (स) से बैअत कर रहे हैं इस के सिवा नहीं कि वह अल्लाह से बैअत कर रहे हैं, उन के हाथों पर अल्लाह का हाथ है, फिर जिस ने अहद तोड़ दिया तो इस के सिवा नहीं कि उस ने अपनी ज्ञात (के बुरे) को तोड़ा, और जिस ने वह अहद पूरा किया जो उस ने अल्लाह से किया था तो वह (अल्लाह) उसे अनक़रीब देगा अजरे अज़ीम। (10) अब पीछे रह जाने वाले देहाती आप (स) से कहेंगे कि हमें हमारे मालों और हमारे घर वालों ने मशगूल रखा (रूखसत न दी) सो आप (स) हमारे लिए बख़्शिश मांगिए, वह अपनी ज़बानों से वह कहते हैं जो उन के दिलों में नहीं, आप (स) फ़रमा दें तुम्हारे लिए अल्लाह के सामने कौन इख़्तियार रखता है किसी चीज़ का? अगर वह तुम्हें नुक़सान (पहुँचाना) चाहे या तुम्हें नफ़ा (पहुँचाना) चाहे, बल्कि तुम जो कुछ करते हो, अल्लाह उस से ख़बरदार है। (11) बल्कि तुम ने गुमाने (वातिल) किया कि रसूल (स) और मोमिन हरगिज़ अपने अहले खाना की तरफ़ कभी वापस न लौटेंगे, और यह बात भली लगी तुम्हारे दिलों को, और तुम ने गुमान किया एक बुरा गुमान, और तुम हलाक होने वाली क़ौम हो गए। (12) और जो ईमान नहीं लाता अल्लाह पर और उस के रसूल (स) पर, तो वेशक हम ने काफ़िरों के लिए दहकती आग तैयार कर रखी है। (13) और अल्लाह (ही) के लिए है आस्मानों की और ज़मीन की वादशाहत, वह जिस को चाहे बख़्श दे और जिस को चाहे अज़ाब दे, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (14) अनक़रीब कहेंगे पीछे बैठ रहने वाले: जब तुम चलोगे (ख़ैबर की) ग़नीमतों की तरफ़ कि तुम उन्हें ले लो, हमें इजाज़त दो कि हम तुम्हारे पीछे चलें, वह चाहते हैं कि अल्लाह का फ़रमान बदल डालें, आप (स) फ़रमा दें: तुम हरगिज़ हमारे पीछे न आओ, इसी तरह कहा अल्लाह ने इस से क़व्ल, फिर अब वह कहेंगे: बल्कि तुम हम से हसद करते हो जबकि (हकीकत यह है) कि वह बहुत थोड़ा समझते हैं। (15)

आप (स) देहातियों में से पीछे रह जाने वालों से फ़रमा दें: अ़नक़रीब तुम एक सख़्त जंगजू कौम की तरफ़ बुलाए जाओगे कि तुम उन से लड़ते रहो या वह इस्लाम कुबूल कर लें, सो अगर तुम इताअ़त करोगे तो अल्लाह तुम्हें अच्छा अज़र देगा, और अगर तुम फिर गए जैसे तुम इस से क़ब्ल फिर गए थे तो वह तुम्हें अज़ाब देगा अज़ाब दर्दनाक। (16)

नहीं है अँधे पर कोई गुनाह, और नहीं है लंगड़े पर कोई गुनाह, और न वीमार पर कोई गुनाह, और जो अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअ़त करेगा वह उसे उन बागात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं, और जो फिर जाएगा वह उसे दर्दनाक अज़ाब देगा। (17)

तहक़ीक़ अल्लाह मोमिनों से राज़ी हुआ जब वह आप (स) से बैअ़त कर रहे थे दरख़्त के नीचे, सो उस ने मालूम कर लिया जो उन के दिलों में (ख़लूस था) तो उस ने उन पर तसल्ली उतारी, और बदले में उन्हें करीब ही एक फ़तह अ़ता की। (18)

और बहुत सी ग़नीमतें उन्हीं ने हासिल कीं, और है अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला। (19)

और अल्लाह ने तुम से वादा किया नेमतों का, कसूरत से जिन्हें तुम लोगे, पस उस ने यह तुम्हें जल्द दे दी और लोगों के हाथ तुम से रोक दिए, और ताकि (यह) हो मोमिनों के लिए एक निशानी, और तुम्हें सीधे रास्ते की हिदायत दे। (20)

और एक और फ़तह भी, तुम ने (अभी) उस पर काबू नहीं पाया। घेर रखा है अल्लाह ने उस को, और अल्लाह है हर शै पर कुदरत रखने वाला। (21)

और अगर तुम से काफ़िर लड़ते तो वह पीठ फेरते, फिर वह न कोई दोस्त पाते और न कोई मददगार। (22)

अल्लाह का दस्तूर है जो इस से क़ब्ल गुज़र चुका है (चला आ रहा है) और तुम अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई तबदीली न पाओगे। (23)

قُلْ لِّلْمُخَلَّفِينَ مِنَ الْأَعْرَابِ سُدْعُونَ إِلَىٰ قَوْمٍ أُولَىٰ بِأَسِ شَدِيدٍ							
सख़्त लड़ने वाली (जंगजू)	एक कौम की तरफ़	अ़नक़रीब तुम बुलाए जाओगे	देहातियों	से	पीछे बैठ रहने वालों को	फ़रमा दें	
ثُقَاتِلُونَهُمْ أَوْ يُسْلِمُونَ ۚ فَإِنْ تُطِيعُوا يُؤْتِكُمُ اللَّهُ أَجْرًا							
अज़र	तुम्हें देगा अल्लाह	तुम इताअ़त करोगे	अगर	या वह इस्लाम कुबूल कर लें	तुम उन से लड़ते रहो		
حَسَنًا ۚ وَإِنْ تَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٦﴾							
16	दर्दनाक	अज़ाब	वह तुम्हें अज़ाब देगा	इस से क़ब्ल	जैसे तुम फिर गए थे	तुम फिर गए	और अज़र अच्छा
لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرْجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرْجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ							
मरीज़ पर	और न	कोई गुनाह	लंगड़े पर	और नहीं	कोई तंगी (गुनाह)	अँधे पर	नहीं
حَرْجٌ ۚ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا							
उन के नीचे	बहती है	बागात	वह दाख़िल करेगा उसे	और उस के रसूल की	इताअ़त करेगा अल्लाह की	और जो	कोई गुनाह
الْأَنْهَارِ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٧﴾ لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ							
तहक़ीक़ राज़ी हुआ अल्लाह	17	अज़ाब दर्दनाक	वह अज़ाब देगा उसे	फिर जाएगा	और जो	नहरें	
عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ							
जो उन के दिलों में	सो उस ने मालूम कर लिया	दरख़्त	नीचे	वह आप (स) से बैअ़त कर रहे थे	जब	मोमिनों से	
فَأَنْزَلَ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ وَأَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيبًا ﴿١٨﴾ وَمَغَانِمَ كَثِيرَةً							
बहुत सी	और ग़नीमतें	18	एक फ़तह करीब	और बदले में दी उन्हें	उन पर	सकीना (तसल्ली)	तो उस ने उतारी
يَأْخُذُونَهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿١٩﴾ وَعَدَّكُمْ اللَّهُ مَغَانِمَ							
ग़नीमतें	वादा किया अल्लाह ने	19	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और है अल्लाह	उन्हीं ने वह हासिल की	
كَثِيرَةً تَأْخُذُونَهَا فَعَجَلَ لَكُمْ هَذِهِ وَكَفَّ أَيْدِيَ النَّاسِ							
लोग	हाथ	और रोक दिए	यह	तुम्हें	तो जल्द दे दी उस ने	तुम लोगे उन्हें	कसूरत से
عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُونَ آيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ﴿٢٠﴾							
20	सीधा	रास्ता	और वह हिदायत दे तुम्हें	मोमिनों के लिए	एक निशानी	और ताकि हो	तुम से
وَأُخْرَىٰ لَمْ تَقْدِرُوا عَلَيْهَا قَدْ أَحَاطَ اللَّهُ بِهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ							
और है अल्लाह	उस को	घेर रखा है अल्लाह	उस पर	तुम ने काबू नहीं पाया	और एक और (फ़तह)		
عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ﴿٢١﴾ وَلَوْ قَاتَلَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلُوا							
अलवत्ता वह फेरते	वह जिन्हें ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	तुम से लड़ते	और अगर	21	कुदरत रखने वाला	हर शै	पर
الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿٢٢﴾ سُنَّةَ اللَّهِ الَّتِي							
वह जो	अल्लाह का दस्तूर	22	और न कोई मददगार	कोई दोस्त	वह न पाते	फिर	पीठ (जमा)
قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ﴿٢٣﴾							
23	कोई तबदीली	अल्लाह के दस्तूर में	और तुम हरगिज़ न पाओगे	इस से क़ब्ल	गुज़र चुका		

تَقْرِيبًا

وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ						
दरमियान (वादी-ए) मक्का में	उन से	और तुम्हारे हाथ	तुम से	उन के हाथ	जिस ने रोका	और वह
مِنْ بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۗ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا (24)						
24	देखने वाला	तुम जो कुछ करते हो उसे	और है अल्लाह	उन पर	कि फतह मन्द किया तुम्हें	उस के बाद
هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيِ						
और कुवानी के जानवर	मसजिदे हराम	से	और तुम्हें रोका	जिन्होंने ने कुफ़ किया	वह - यह	
مَعَكُوفًا أَنْ يَبْلُغَ مَحَلَّهُ ۗ وَلَوْ لَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُونَ وَنِسَاءٌ مُّؤْمِنَاتٌ						
और मोमिन औरतें	मोमिन (जमा)	मर्द	और अगर न	अपना मुकाम	कि वह पहुँचे	रुके हुए
لَمْ تَعْلَمُوهُمْ أَنْ تَطَّوَّهُمْ فِتْصِبَكُمْ مِنْهُمْ مَعَرَّةٌ بَغَيْرِ عِلْمٍ						
नादानिस्ता	सदमा - नुकसान	उन से	पस तुम्हें पहुँच जाता	तुम उनको पामाल करदेते	कि	तुम नहीं जानते उन्हें
لِيُدْخِلَ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ ۗ لَوْ تَزَيَّلُوا لَعَذَّبْنَا الَّذِينَ						
उन लोगों को	अलवत्ता हम अज़ाब देते	अगर वह जुदा हो जाते	जिसे वह चाहे	अपनी रहमत में	ताकि दाखिल करे अल्लाह	
كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا (25) إِذْ جَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا						
जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	की	जब	25	दर्दनाक	अज़ाब	उन में से जो काफ़िर हुए
فِي قُلُوبِهِمُ الْحَمِيَّةَ الْحَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةَ فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ						
अपनी तसल्ली	तो अल्लाह ने उतारी	जमानाए जाहिलियत	ज़िद	ज़िद	अपने दिलों में	
عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَى						
तक़वे की बात	और उन पर लाज़िम फ़रमा दिया	और मोमिनों पर	अपने रसूल (स) पर			
وَكَانُوا أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلَهَا ۗ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا (26)						
26	जानने वाला	हर शै का	और है अल्लाह	और उस के अहल	ज़ियादा हक़दार उस के	और वह थे
لَقَدْ صَدَقَ اللَّهُ رَسُولَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۗ لَتَدْخُلَنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ						
मसजिदे हराम	अलवत्ता तुम ज़रूर दाखिल होंगे	हकीकत के मुताबिक़	खाब	अपने रसूल (स) को	सच्चा दिखाया अल्लाह ने	यकीनन
إِنْ شَاءَ اللَّهُ آمِنِينَ ۖ مُحَلِّقِينَ رُءُوسَكُمْ وَمُقَصِّرِينَ ۖ						
और (बाल) कटवाओगे	अपने सर	मुंडवाओगे	अमन ओ अमान के साथ	अल्लाह ने चाहा	अगर	
لَا تَخَافُونَ ۗ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوا فَجَعَلَ مِنْ دُونِ ذَلِكَ						
इस	उस से बरे (पहले)	पस कर दी उस ने	जो तुम नहीं जानते	पस उस ने मालूम कर लिया	तुम्हें कोई ख़ौफ़ न होगा	
فَتْحًا قَرِيبًا (27) هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ						
हक़	और दीन	हिदायत के साथ	अपना रसूल (स)	जिस ने भेजा	वह	27 एक करीबी फतह
لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ ۗ وَكَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا (28)						
28	गवाह	अल्लाह	और काफ़ी है	तमाम	दीन	पर ताकि उसे ग़ालिब कर दे

और वही है जिस ने वादीए मक्का में उन के हाथ तुम से रोके और तुम्हारे हाथ उन से, उस के बाद कि तुम्हें उन पर फतह मन्द किया, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे है देखने वाला। (24)

यह वह लोग हैं जिन्होंने ने कुफ़ किया और तुम्हें मसजिदे हराम से रोका, और रुके हुए करवानी के जानवरों को उन के मुकाम पर पहुँचने से रोका, और (हम तुम्हें क़ताल की इजाज़त देते) अगर (शहरे मक्का में) ऐसे मोमिन मर्द और मोमिन औरतें न होते जिन्हें तुम नहीं जानते कि तुम उन्हें पामाल कर देते, पस उन से तुम्हें पहुँच जाता सदमा (नक़सान) नादानिस्ता। (ताख़ीर इस लिए हुई) ताकि अल्लाह जिसे चाहे अपनी रहमत में दाखिल करे, अगर वह जुदा हो जाते तो हम अज़ाब देते उन में से काफ़िरों को दर्दनाक अज़ाब। (25)

जब काफ़िरों ने अपने दिलों में ज़िद की, ज़िद (हट) ज़मानाए जाहिलियत की तो अल्लाह ने अपने रसूल (स) पर और मोमिनों पर अपनी तसल्ली उतारी और उन्हें लाज़िम फ़रमाया (काइम रखा) तक़वे की बात पर, और वही उस के ज़ियादा हक़दार और उस के अहल थे, और अल्लाह हर शै का जानने वाला है। (26)

यकीनन अल्लाह ने अपने रसूल (स) को सच्चा ख़ाब हकीकत के मुताबिक़ दिखाया कि अल्लाह ने चाहा तो तुम ज़रूर मसजिदे हराम में दाखिल होंगे अमन ओ अमान के साथ, अपने सर मुंडवाओगे और बाल कटवाओगे, तुम्हें कोई ख़ौफ़ न होगा, पस उस ने मालूम कर लिया जो तुम नहीं जानते थे, पस उस ने कर दी उस (फतह मक्का) से पहले ही एक करीबी फतह। (27)

वही है जिस ने अपने रसूल (स) को भेजा हिदायत और दीने हक़ के साथ ताकि उसे तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे, और अल्लाह की गवाही काफ़ी है। (28)

मुहम्मद (स) अल्लाह के रसूल है, और जो लोग उन के साथ है वह काफ़िरो पर बड़े सख़्त है, आपस में रहम दिल है, तू उन्हें देखेगा रुकूअ करते, सिजदा रेज़ होते, वह तलाश करते है अल्लाह का फ़ज़ल और (उस की) रज़ा मन्दी, उन की अ़लामत उन के चेहरों पर सिजदों के असर (निशानात) है, यह उन की सिफ़त तौरत में (मज़कूर) है और उन की यह सिफ़त इन्ज़ील में है, जैसे एक खेती, उस ने अपनी सुई निकाली, फिर उसे कच्ची किया, फिर वह मोटी हुई, फिर वह अपनी नाल पर खड़ी हो गई, वह किसानों को भली लगती है ताकि उन काफ़िरो को गुस्से में लाए (उन के दिल जलाए), अल्लाह ने वादा किया है उन से जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, मग्फ़िरत और अज़रे अज़ीम का। (29)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है ऐ मोमिनो! अल्लाह और उस के रसूल (स) के आगे न बढ़ो और अल्लाह से डरो, वेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (1)

ऐ मोमिनो! नबी (स) की आवाज़ पर तुम अपनी आवाज़ें ऊँची न करो, और उन के सामने ज़ोर से न बोलो, जैसे तुम एक दूसरे से वुलन्द आवाज़ में गुफ़्तगू करते हो, कहीं तुम्हारे अ़मल अकारत (न) हो जाएं और तुम्हें ख़बर भी न हो। (2)

वेशक जो लोग अल्लाह के रसूल (स) के नज़दीक (सामने) अपनी आवाज़ें पस्त रखते हैं, यह वह लोग हैं जिन के दिलों को अल्लाह ने परहेज़गारी के लिए आज़माया है, उन के लिए मग्फ़िरत और अज़रे अज़ीम है। (3)

वेशक जो लोग आप (स) को पुकारते हैं हज़रों के बाहर से, उन में से अक्सर अ़क़ल नहीं रखते। (4)

<p>مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ</p>							
आपस में	रहम दिल	काफ़िरो पर	बड़े सख़्त	उन के साथ	और जो लोग	अल्लाह के रसूल	मुहम्मद (स)
<p>تَرَاهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِّنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا سِيمَاهُمْ</p>							
उन की अ़लामत	और रज़ा मन्दी	अल्लाह से - का	फ़ज़ल	वह तलाश करते है	सिजदा रेज़ होते	रुकूअ करते	तू उन्हें देखेगा
<p>فِي وُجُوهِهِمْ مِّنْ آثَرِ السُّجُودِ ذَلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرَةِ وَمَثَلُهُمْ</p>							
और उन की मिसाल (सिफ़त)	तौरत में	उन की मिसाल (सिफ़त)	यह	सिजदों का असर	से	उन के चेहरों में - पर	
<p>فِي الْإِنْجِيلِ كَزَرْعٍ أَخْرَجَ شَطْأَهُ فَآزَرَهُ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوَىٰ</p>							
फिर वह खड़ी हो गई	फिर वह मोटी हुई	फिर उसे कच्ची किया	अपनी सुई	उस ने निकाली	जैसे एक खेती	इन्ज़ील में	
<p>عَلَىٰ سَوْفِهِ يُعْجَبُ الزَّرَّاعُ لِيُعِظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ وَعَدَّ اللَّهُ الَّذِينَ</p>							
उन से जो	वादा किया अल्लाह ने	काफ़िरो	उन से	ताकि गुस्से में लाए	किसान (जमा)	वह भली लगती है	अपनी जड़ (नाल) पर
<p>آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ﴿٢٩﴾</p>							
29	अज़ीम	और अज़र	मग्फ़िरत	उन में से	और उन्हों ने आमाल किए अच्छे	ईमान लाए	
<p>آيَاتِهَا ١٨ ﴿٤٩﴾ سُورَةُ الْحُجُرَاتِ ﴿٢﴾ زُكُورَاتِهَا ٢</p>							
<p>(49) सूरतुल हजुरात क़मरे</p>							
<p>रुकूआत 2</p>							
<p>आयात 18</p>							
<p>بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ</p>							
<p>अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है</p>							
<p>يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْدِمُوا بَيْنَ يَدَيْ اللَّهِ وَرَسُولِهِ</p>							
और उस का रसूल (स)	अल्लाह के सामने - आगे	न आगे बढ़ो तुम	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ			
<p>وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَرْفَعُوا</p>							
न ऊँची करो	मोमिनो	ऐ	1	जानने वाला	सुनने वाला	वेशक अल्लाह	और डरो अल्लाह से
<p>أصواتكم فوق صوت النبي ولا تجهروا له بالقول كجهر</p>							
जैसे वुलन्द आवाज़	गुफ़्तगू में	उस के सामने	और न ज़ोर से बोलो	नबी (स) की आवाज़	ऊपर - पर	अपनी आवाज़ें	
<p>بعضكم لبعض أن تحبظ أعمالكم وأنتم لا تشعرون ﴿٢﴾ إن</p>							
वेशक	2	न जानते (ख़बर भी न) हो	और तुम	तुम्हारे अ़मल	अकारत हो जाएं	कहीं	वाज़ (दूसरे) से तुम्हारे वाज़ (एक)
<p>الذين يغضون أصواتهم عند رسول الله أولئك الذين</p>							
जो - जिन	यह वह लोग	अल्लाह का रसूल (स)	नज़दीक	अपनी आवाज़ें	पस्त रखते है	जो लोग	
<p>امتحن الله قلوبهم للتقوى لهم مغفرة وأجر عظيم ﴿٣﴾ إن</p>							
वेशक	3	अज़ीम	और अज़र	मग्फ़िरत	उन के लिए	परहेज़गारी के लिए	उन के दिल
<p>الذين ينادونك من وراء الحجاب أكثرهم لا يعقلون ﴿٤﴾</p>							
4	अ़क़ल नहीं रखते	उन में से अक्सर	हज़रों	बाहर से	आप (स) को पुकारते है	जो लोग	

عند المتأخرين ١٢

٢٩

وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّى تَخْرُجَ إِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ										
वखशने वाला	और अल्लाह	उन के लिए	बेहतर	अलबत्ता होता	उन के पास	आप (स) निकल आते	यहां तक कि	सबर करते	अलबत्ता वह	और अगर
رَّحِيمٌ ﴿٥﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَأٍ فَتَبَيَّنُوا أَن										
कहीं	तो खूब तहकीक कर लिया करो	खबर ले कर	कोई फासिक बद किर्दार	आए तुम्हारे पास	अगर	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ	5	मेहरवान	
تُصِيبُوا قَوْمًا بِجَهَالَةٍ فَتُصِبْهُوَ عَلَىٰ مَا فَعَلْتُمْ نَدِيمِينَ ﴿٦﴾ وَاعْلَمُوا										
और जान रखो	6	नादिम (जमा)	जो तुम ने किया (अपना किया)	पर	फिर हो तुम	नादानी से	किसी कौम को	तुम जरूर पहुँचाओ		
أَنَّ فِيكُمْ رَسُولَ اللَّهِ لَوْ يُطِيعُكُمْ فِي كَثِيرٍ مِّنَ الْأَمْرِ لَعَنِتُّمْ										
अलबत्ता तुम मुशकिल में पड़ो	कामों से - में	अक्सर	में	अगर वह तुम्हारा कहा मानें	अल्लाह का रसूल (स)	तुम्हारे दरमियान	कि			
وَلَكِنَّ اللَّهَ حَبَّبَ إِلَيْكُمُ الْإِيمَانَ وَزَيَّنَهُ فِي قُلُوبِكُمْ وَكَوَّزَهُ إِلَيْكُمْ										
तुम्हारे सामने	और नापसंदीदा कर दिया	तुम्हारे दिलों में	और उसे आरास्ता कर दिया	ईमान की	तुम्हें	सुहव्वत दी	और लेकिन अल्लाह			
الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ وَالْعِصْيَانَ أُولَٰئِكَ هُمُ الرُّشْدُونَ ﴿٧﴾ فَضَلَّ										
फ़ज़ल	7	हिदायत पाने वाले	वह	यही लोग	और नाफरमानी	और गुनाह	कुफ़			
مِّنَ اللَّهِ وَنِعْمَةً وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٨﴾ وَإِنْ طَافْتِنِ مِن										
से - के	दो गिरोह	और अगर	8	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	और नेमत	अल्लाह से - के		
الْمُؤْمِنِينَ أَقْتُلُوا فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا فَإِن بَغْت إِحْدَهُمَا										
उन दोनों में से एक	फिर अगर ज़ियादती करे	उन दोनों के दरमियान	तो सुलह करा दो तुम	वाहम लड़ पड़ें	मोमिन (जमा)					
عَلَى الْأُخْرَىٰ فِقَاتِلُوا الَّتِي تَبْغِي حَتَّى تَفِيءَ إِلَىٰ أَمْرِ اللَّهِ فَإِن فَاءَتْ										
फिर अगर जब वह रुजूअ कर ले	हुक्मे इलाही	तरफ	रुजूअ करे	यहां तक कि	ज़ियादती करता है	उस से जो	तो तुम लड़ो	दूसरे पर		
فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَأَقْسِطُوا إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ﴿٩﴾										
9	इंसाफ़ करने वाले	दोस्त रखता है	वेशक अल्लाह	और तुम इंसाफ़ किया करो	अदल के साथ	उन दोनों के दरमियान	तो सुलह करा दो तुम			
إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ فَأَصْلِحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ										
ताकि तुम पर	और डरो अल्लाह से	अपने भाई	दरमियान	पस सुलह करा दो	भाई	मोमिन (जमा)	इस के सिवा नहीं			
تُرْحَمُونَ ﴿١٠﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَسْخَرُ قَوْمٌ مِّن قَوْمٍ عَسَىٰ										
क्या अज़ब	(दूसरे) गिरोह का	एक गिरोह	न मज़ाक उड़ाए	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ	10	रहम किया जाए			
أَن يَكُونُوا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَاءٌ مِّن نِّسَاءِ عَسَىٰ أَن يَكُنَّ خَيْرًا										
बेहतर	कि वह हों	क्या अज़ब	औरतों से - का	और न औरतें	उन से	बेहतर	कि वह हों			
مِّنْهُمْ وَلَا تَلْمِزُوا أَنفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَرُوا بِالْأَلْقَابِ بِئْسَ الْأَسْمُ										
बुरा नाम	बुरे अलकाब से	और वाहम न चिड़ाओ	वाहम (एक दूसरे)	और न ऐव लगाओ	उन से					
الْفُسُوقُ بَعْدَ الْإِيمَانِ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿١١﴾										
11	वह ज़ालिम (जमा)	तो यही लोग	तौबा न की (बाज़ न आया)	और जो - जिस	ईमान के बाद	फिसक				

और अगर वह सबर करते यहां तक कि आप (स) (खुद) उन के पास निकल आते तो उन के लिए अलबत्ता बेहतर होता, और अल्लाह वखशने वाला मेहरवान है। (5) ऐ मोमिनो! अगर तुम्हारे पास कोई बदकार आए खबर ले कर तो खूब तहकीक कर लिया करो, कहीं नादानी से तुम किसी कौम को जरूर पहुँचा बैठो, फिर तुम्हें अपने किए पर नादिम होना पड़े। (6) और जान रखो कि तुम्हारे दरमियान अल्लाह के रसूल (स) है, अगर वह अक्सर कामों में तुम्हारा कहा मानें तो तुम (खुद ही) मुशकिलता में पड़ जाओ, लेकिन अल्लाह ने तुम्हें ईमान की सुहव्वत दी और उसे तुम्हारे दिलों में आरास्ता (पसंदीदा) कर दिया और उस ने तुम्हारे सामने (दिलों में) नापसंदीदा कर दिया कुफ़ ओ फिस्क़ और नाफरमानी को, यही लोग (राहे) हिदायत पाने वाले हैं। (7) अल्लाह के तरफ से फ़ज़ल और नेमत, और अल्लाह है जानने वाला, हिक्मत वाला। (8) और अगर मोमिनों के दो गिरोह वाहम लड़ पड़ें तो तुम उन दोनों के दरमियान सुलह करा दो, फिर अगर ज़ियादती करे उन दोनों में से एक दूसरे पर, तो तुम उस से लड़ो जो ज़ियादती करता है, यहां तक कि वह अल्लाह के हुक्म की तरफ रुजूअ कर ले, फिर जब वह रुजूअ कर ले तो तुम उन दोनों के दरमियान अदल के साथ सुलह करा दो और तुम इंसाफ़ करो, वेशक अल्लाह इंसाफ़ करने वालों को दोस्त रखता है। (9) इस के सिवा नहीं कि सब मोमिन भाई (भाई) हैं, पस तुम अपने दो भाइयों के दरमियान सुलह करा दो, अल्लाह से डरो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (10) ऐ मोमिनो! (तुम से) एक गिरोह (मर्द) दूसरे गिरोह (मर्दा) का मज़ाक न उड़ाए, क्या अज़ब कि वह उन से बेहतर हों और न औरतें औरतों का (मज़ाक) उड़ाए, क्या अज़ब कि वह उन से बेहतर हों, और एक दूसरे पर ऐव न लगाओ, और वाहम बुरे अलकाब से न चिड़ाओ (नाम न बिगाड़ो), ईमान के बाद फिस्क़ में नाम कमाना बुरा है, और जो बाज़ न आया तो यही लोग ज़ालिम हैं। (11)

ऐ मोमिनो! बहुत से गुमानों से बचो, वेशक वाज़ गुमान गुनाह होते हैं और एक दूसरे की टटोल में न रहा करो, और तुम में से कोई एक दूसरे की गीबत न करे, क्या पसंद करता है तुम में से कोई कि वह अपने मुर्दा भाई का गोशत खाए? तो तुम उस से घिन करोगे, और अल्लाह से डरो, वेशक अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला, निहायत मेहरबान है। (12)

ऐ लोगो! वेशक हम ने तुम्हें एक मर्द और एक औरत से पैदा किया, और हम ने तुम्हें बनाया ज़ातें और कबीले ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो, वेशक अल्लाह के नज़्दीक तुम में सब से ज़ियादा इज़्ज़त वाला वह है जो सब से ज़ियादा परहेज़गार है, अल्लाह वेशक जानने वाला, खबरदार है। (13)

देहाती कहते हैं कि हम ईमान ले आए, आप (स) फ़रमा दें: तुम ईमान नहीं लाए हो, बल्कि तुम कहो कि हम झुक गए हैं, और अभी दाखिल नहीं हुआ तुम्हारे दिलों में ईमान, और अगर तुम अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताज़त करोगे तो अल्लाह तुम्हारे आमाल से कमी न करेगा कुछ भी, वेशक अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (14)

इस के सिवा नहीं कि मोमिन वह लोग हैं जो अल्लाह और उस के रसूल (स) पर ईमान लाए, फिर वह शक में न पड़े और उन्हीं ने अपने मालों और जानों से अल्लाह की राह में जिहाद किया, यही लोग हैं सच्चे। (15)

आप (स) फ़रमा दें: क्या तुम अल्लाह को अपना दीन (दीनदारी) जतलाते हो? और अल्लाह जानता है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (16)

वह आप (स) पर एहसान रखते हैं कि वह इस्लाम लाए, आप (स) फ़रमा दें कि तुम मुझ पर अपने इस्लाम लाने का एहसान न रखो, बल्कि अल्लाह तुम पर एहसान रखता है कि उस ने तुम्हें ईमान की तरफ़ हिदायत दी, अगर तुम सच्चे हो। (17)

वेशक अल्लाह आस्मानों और ज़मीन की पोशीदा बातें जानता है, और अल्लाह वह (सब कुछ) देखने वाला है जो तुम करते हो। (18)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا يَغْتَبَ بَعْضُكُم بَعْضًا أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَنْ يَأْكُلَ							
वाज़ गुमान	वेशक	गुमानों से	बहुत से	बचो	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ	
कि वह खाए	तुम में से कोई	क्या पसंद करता है?	वाज़ (दूसरे) की	तुम में से (एक)	और गीबत न करे	और टटोल में न रहा करो एक दूसरे की	गुनाह
لَحْمٍ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ (١٢)							
12	निहायत मेहरबान	तौबा कुबूल करने वाला	वेशक अल्लाह	और अल्लाह से डरो तुम	तो उस से तुम घिन करोगे	मुर्दा	अपने भाई का गोशत
يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِّن ذَكَرٍ وَأُنثَىٰ وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ							
और कबीले	ज़ातें	और बनाया तुम्हें	और एक औरत	एक मर्द से	वेशक हम ने पैदा किया तुम्हें	ऐ लोगो!	
لِتَعَارَفُوا إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتَقَىٰكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ (١٣)							
13	बाख़बर	जानने वाला	वेशक अल्लाह	तुम में सब से बड़ा परहेज़गार	अल्लाह के नज़्दीक	वेशक तुम में सब से ज़ियादा इज़्ज़त वाला	ताकि तुम एक दूसरे की शनाख़्त करो
قَالَتِ الْأَعْرَابُ آمَنَّا قُل لَّمْ نُؤْمِنُوا وَلَكِن قُولُوا أَسْلَمْنَا وَلَمَّا							
और अभी नहीं	हम इस्लाम लाए हैं	तुम कहो	और लेकिन	तुम ईमान नहीं लाए	फ़रमा दें	हम ईमान लाए	देहाती कहते हैं
يَدْخُلِ الْإِيمَانُ فِي قُلُوبِكُمْ وَإِنْ تُطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَا يَلِتْكُمْ							
तुम्हें कमी न करेगा	अल्लाह और उस का रसूल (स)	तुम इताज़त करोगे	और अगर	तुम्हारे दिलों में	ईमान	दाखिल हुआ	
مِّنْ أَعْمَالِكُمْ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ (١٤)							
वह लोग जो	मोमिन (जमा)	इस के सिवा नहीं	14	मेहरबान	बख़्शने वाला	वेशक अल्लाह	कुछ भी तुम्हारे आमाल से
آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ							
अपने मालों से	और उन्हीं ने जिहाद किया	न पड़े शक में वह	फिर	और उस का रसूल (स)	अल्लाह पर	ईमान लाए	
وَأَنفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الصّٰدِقُونَ (١٥) قُلْ							
फ़रमा दें	15	सच्चे	वह	यही लोग	अल्लाह की राह में	और अपनी जानों से	
أَتَعْلَمُونَ اللَّهَ بِدِينِكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا							
और जो	आस्मानों में	जो	जानता है	और अल्लाह	अपना दीन	क्या तुम जतलाते हो अल्लाह को?	
فِي الْأَرْضِ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ (١٦)							
वह इस्लाम लाए	कि	आप (स) पर	वह एहसान रखते हैं	16	जानने वाला	चीज़ हर एक और अल्लाह	ज़मीन में
قُلْ لَا تَمُنُّوا عَلَيَّ إِسْلَامَكُم بَلِ اللَّهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ							
तुम पर	एहसान रखता है	बल्कि अल्लाह	अपने इस्लाम लाने का	मुझ पर	न एहसान रखो तुम	फ़रमा दें	
أَنَّ هٰدِكُمْ لِإِيمَانٍ إِنَّ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ (١٧) إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ							
वह जानता है	वेशक अल्लाह	17	सच्चे	तुम हो	अगर	ईमान की तरफ़	कि उस ने हिदायत दी तुम्हें
غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ بِصِيْرٍ بِمَا تَعْمَلُونَ (١٨)							
18	तुम करते हो	वह जो	देखने वाला	और अल्लाह	और ज़मीन	पोशीदा बातें आस्मानों की	



آيَاتُهَا ٤٥ ﴿٥٠﴾ سُورَةُ قَ ﴿٣﴾ زُكُوعَاتُهَا ٣									
रुक़ात 3			(50) सूरह काफ़				आयात 45		
<b>بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ</b>									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
ق وَالْقُرْآنِ الْمَجِيدِ ﴿١﴾ بَلْ عَجِبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ									
उन में से	एक डर सुनाने वाला	उन के पास आया	कि	उन्होंने ने तअज़्जुब किया	बल्कि	1	मजीद	कसम है कुरआन	काफ़
فَقَالَ الْكُفْرُونَ هَذَا شَيْءٌ عَجِيبٌ ﴿٢﴾ إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا									
मिट्टी	और हो गए	क्या जब हम मर गए	2	अजीब	शै	यह	काफ़िरों	तो कहा	
ذَلِكَ رَجْعٌ بَعِيدٌ ﴿٣﴾ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْأَرْضُ مِنْهُمْ وَعِنْدَنَا									
और हमारे पास	उन में से	ज़मीन	जो कुछ कम करती है	तहकीक हम जानते हैं	3	दूर	दोबारा लौटना	यह	
كُتِبَ حَفِيفٌ ﴿٤﴾ بَلْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَهُمْ فِي أَمْرٍ مَرِيجٍ ﴿٥﴾									
5	उलझी हुई	एक बात में	पस वह	जब वह आया उन के पास	हक को	बल्कि उन्होंने ने झुटलाया	4	महफूज़ रखने वाली किताब	
أَفَلَمْ يَنْظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنَاهَا وَزَيَّنَّاهَا وَمَا لَهَا									
और उस में नहीं	और उस को आरास्ता किया	बनाया उस को	कैसे	उन के ऊपर	आस्मान की तरफ़	तो क्या वह नहीं देखते?			
مِنْ فُرُوجٍ ﴿٦﴾ وَالْأَرْضِ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْبَتْنَا									
और उगाए	पहाड़ (जमा)	उस में	और डाले (जमाए)	हम ने फैलाया	और ज़मीन	6	शिगाफ़	कोई	
فِيهَا مِنْ كُلِّ رَوْحٍ بِهِيجٌ ﴿٧﴾ تَبَصَّرَةٌ وَذَكَرَى لِكُلِّ عَبْدٍ مُنِيبٍ ﴿٨﴾									
8	रुज़्ज़ करने वाला बन्दा	लिए-हर	और नसीहत	ज़रीआए बीनाई	7	खुशानुमा	हर किस्म	से-के	उस में
وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُبْرَكًا فَأَنْبَتْنَا بِهِ جِبْتٍ وَحَبَّ الْحَصِيدِ ﴿٩﴾									
9	काटने (खेती)	और दाना (गल्ला)	बागात	उस से	फिर हम ने उगाए	बाबरकत	पानी	आस्मान से	और हम ने उतारा
وَالَّتِجَلْ بَسَقَتْ لَهَا طَلْعُ نَصِيدٍ ﴿١٠﴾ رَزَقًا لِلْعِبَادِ وَأَحْيَيْنَا بِهِ									
उस से	और हम ने ज़िन्दा किया	बन्दों के लिए	रिज़्क	10	तह व तह	खोशे	जिन के	बुलन्द ओ वाला	और खजूर के दरख़त
بَلْدَةً مَيِّتًا كَذَلِكَ الْخُرُوجُ ﴿١١﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ									
नूह (अ) की कौम	इन से कब्ल	झुटलाया	11	निकलना	इसी तरह	मुर्दा	शहर (ज़मीन)		
وَأَصْحَابُ الرَّسِّ وَثَمُودُ ﴿١٢﴾ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ وَإِخْوَانُ لُوطٍ ﴿١٣﴾									
13	लूत (अ)	और भाई (जमा)	और फिरज़ौन	और आद	12	और समूद	और अहले रस		
وَأَصْحَابُ الْأَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيدُ ﴿١٤﴾									
14	वादाए अज़ाब	पस साबित हो गया	रसूलों	सब ने झुटलाया	और कौमे तुब्बअ	और अहले अयका (बन के रहने वाले)			
أَفَعَيَّنَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ ﴿١٥﴾ بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿١٥﴾									
15	पैदा करना अज़ सरे नौ	से	शक में	बल्कि वह	पहली बार	पैदा करने से	तो क्या हम थक गए		

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है काफ़ - कसम है कुरआन मजीद की। (1)

बल्कि उन्होंने ने तअज़्जुब किया कि उन के पास उन में से एक डर सुनाने वाला आया, तो काफ़िरों ने कहा कि यह अजीब शै है। (2)

क्या जब हम मर गए और मिट्टी हो गए (फिर जी उठेंगे?), यह दोबारा लौटना दूर (अज़ अक़ल) है। (3) तहकीक हम जानते हैं जो कुछ कम करती है उन (के अज्सास) में से ज़मीन और हमारे पास महफूज़ रखने वाली किताब है। (4)

बल्कि उन्होंने ने हक को झुटलाया जब वह उन के पास आया, पस वह एक उलझी हुई बात में (पड़े हैं)। (5)

तो क्या वह अपने ऊपर आस्मान की तरफ़ नहीं देखते? कि हम ने उस को कैसे बनाया! और हम ने उसको (सितारों से) आरास्ता किया और उस में कोई शिगाफ़ तक नहीं। (6)

और ज़मीन को हम ने फैलाया और उस में पहाड़ जमाए, और हम ने उस में उगाई हर किस्म की खुशानुमा (चीजें)। (7)

हर रुज़्ज़ करने वाले बन्दे के लिए ज़रीआए बीनाई ओ नसीहत। (8) और हम ने आस्मान से बाबरकत पानी उतारा, फिर हम ने उस से बागात उगाए और खेती का गल्ला। (9)

और बुलन्द औ वाला खजूर के दरख़त, जिन के तह व तह (खूब गुंधे हुए) खोशे हैं। (10) रिज़्क बन्दों के लिए और हम ने उस से मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा किया, इसी तरह (कब्र से) निकलना होगा। (11)

इन से कब्ल झुटलाया नूह (अ) की कौम और अहले रस और समूद ने। (12)

आद और फिरज़ौन और लूत (अ) के भाइयों ने। (13)

और बन के रहने वालों ने और कौमे तुब्बअ ने, सब ने रसूलों को झुटलाया, पस वादाए अज़ाब साबित हो गया। (14)

तो क्या हम पहली बार पैदा करने से थक गए हैं? बल्कि वह दोबारा पैदा करने की (तरफ़) से शक में हैं। (15)

और तहकीक हम ने इन्सान को पैदा किया और हम जानते हैं जो वस्वसे गुज़रते हैं उस के जी में, और हम उस की शह रग से (भी) ज़ियादा करीब हैं। (16)

जब (वह कोई काम करता है) तो लिखने वाले लिख लेते हैं (एक) दाएं से और (एक) बाएं से बैठा हुआ। (17)

और वह कोई बात (ज़बान से) नहीं निकालता मगर उस के पास (लिखने के लिए) एक निगहवान तैयार बैठा है। (18)

और हक के साथ मौत की बेहोशी आ गई, यह वह है जिस से तू विदकता था। (19)

और सूर फूँका गया, यह वईद का दिन है। (20)

और हर शख्स (हमारे हुज़ूर) हाज़िर होगा, उस के साथ एक चलाने वाला और एक गवाही देने वाला होगा। (21)

तहकीक तू इस से गफ़लत में था, तो हम ने तुझ से तेरा (गफ़लत का) पर्दा हटा दिया। पस तेरी नज़र आज बड़ी तेज़ है। (22)

और कहेगा उस का हम नशीन (फरिश्ता) जो मेरे पास (आमाल नामा था) यह हाज़िर है। (23)

(हुकम होगा) तुम दोनों जहन्नम में डाल दो हर नाशुक्रे सरकश को, (24) भलाई को रोकने वाला, हद से गुज़रने वाला, शुबहात डालने वाला। (25)

जिस ने अल्लाह के साथ दूसरा माबूद ठहराया, पस तुम उसे डाल दो सख्त अज़ाब में। (26)

उस का हम नशीन (शैतान) कहेगा कि ऐ हमारे रब! मैं ने उसे सरकश नहीं बनाया, बल्कि वह परले दरजे की गुमराही में था। (27)

(अल्लाह) फरमाएगा: तुम मेरे सामने न झगड़ो, और मैं तुम्हारी तरफ पहले वादाए अज़ाब भेज चुका हूँ। (28)

मेरे पास बात नहीं बदली जाती और नहीं मैं जुल्म करने वाला बन्दों पर। (29)

जिस दिन हम जहन्नम से कहेंगे कि क्या तू भर गई? और वह कहेगी: क्या कुछ (और) मज़ीद है? (30)

और जन्नत परहेज़गारों के नज़दीक कर दी जाएगी, न होगी दूर। (31)

यह है जो तुम से वादा किया जाता था, हर रूज़ूज़ करने वाले, निगहदाशत करने वाले के लिए। (32)

जो अल्लाह रहमान से बिन देखे डरा, और रूज़ूज़ करने वाले दिल के साथ आया। (33)

(हम फरमाएंगे) उस में सलामती के साथ दाखिल हो जाओ, यह हमेशा रहने का दिन है। (34)

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهِ نَفْسُهُ ۗ وَنَحْنُ أَقْرَبُ

वहत करीब	और हम	उस का जी	उस के	जो वस्वसे गुज़रते हैं	और हम जानते हैं	इन्सान	और तहकीक हम ने पैदा किया
----------	-------	----------	-------	-----------------------	-----------------	--------	--------------------------

إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ﴿١٦﴾ إِذْ يَتَلَقَى الْمُتَلَقِينَ عَنِ الْيَمِينِ

दाएं से	दो (2) लेने (लिख लेने) वाले	जब लेते (लिख लेते) हैं	16	रगे गर्दन (शह रग)	से	उस के
---------	-----------------------------	------------------------	----	-------------------	----	-------

وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ ﴿١٧﴾ مَا يَلْفُظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ﴿١٨﴾

18	तैयार बैठा हुआ	एक निगहवान	उस के पास	मगर कोई बात	और नहीं निकालता	17	बैठा हुआ	और बाएं से
----	----------------	------------	-----------	-------------	-----------------	----	----------	------------

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ۗ ذَٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ ﴿١٩﴾ وَنُفِخَ

और फूँका गया	19	भागता (विदकता)	उस से	जिस से तू था	यह	हक के साथ	मौत की बेहोशी	और आ गई
--------------	----	----------------	-------	--------------	----	-----------	---------------	---------

فِي الصُّورِ ۗ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيدِ ﴿٢٠﴾ وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَعَهَا سَائِقٌ

एक चलाने वाला	उस के साथ	हर शख्स	और आएगा (हाज़िर होगा)	20	वईद का दिन	यह	सूर में
---------------	-----------	---------	-----------------------	----	------------	----	---------

وَشَهِيدٌ ﴿٢١﴾ لَقَدْ كُنْتَ فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَٰذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَاءَكَ

तेरा पर्दा	तुझ से	तो हम ने हटा दिया	इस से	गफ़लत में	तहकीक तू था	21	और गवाही देने वाला
------------	--------	-------------------	-------	-----------	-------------	----	--------------------

فَبَصْرُكَ الْيَوْمَ حَدِيدٌ ﴿٢٢﴾ وَقَالَ قَرِينُهُ هَٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيدٌ ﴿٢٣﴾

23	हाज़िर	जो मेरे पास	यह	उस का हम नशीन	और कहेगा	22	बड़ी तेज़	आज	पस तेरी नज़र
----	--------	-------------	----	---------------	----------	----	-----------	----	--------------

أَلْقِيَا فِي جَهَنَّمَ كُلٌّ كَفَّارٍ عَنِيدٌ ﴿٢٤﴾ مِّنَاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيبٍ ﴿٢٥﴾

25	शुबहात डालने वाला	हद से गुज़रने वाला	माल के लिए	मना करने वाला	24	सरकश	हर नाशुक्रा	जहन्नम में	तुम दोनों डाल दो
----	-------------------	--------------------	------------	---------------	----	------	-------------	------------	------------------

إِلَّذِي جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَأَلْقِيَهُ فِي الْعَذَابِ الشَّدِيدِ ﴿٢٦﴾

26	सख्त	अज़ाब में	पस उसे डाल दो तुम	दूसरा	माबूद	अल्लाह के साथ	ठहराया	वह जिस
----	------	-----------	-------------------	-------	-------	---------------	--------	--------

قَالَ قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطَعَيْتُهُ وَلَكِنْ كَانَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ﴿٢٧﴾ قَالَ

फरमाएगा	27	परले दरजे की	गुमराही में	था	और लेकिन वह	मैं ने उसे सरकश नहीं बनाया	ऐ हमारे रब	उस का हम नशीन	कहेगा
---------	----	--------------	-------------	----	-------------	----------------------------	------------	---------------	-------

لَا تَخْتَصِمُوا لَدَيَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ إِلَيْكُمْ بِالْوَعِيدِ ﴿٢٨﴾ مَا يُبَدِّلُ الْقَوْلَ

बात	नहीं बदली जाती	28	वादा-ए-अज़ाब	तुम्हारी तरफ	और मैं पहले भेज चुका हूँ	मेरे पास - सामने	तुम न झगड़ो
-----	----------------	----	--------------	--------------	--------------------------	------------------	-------------

لَدَيَّ وَمَا أَنَا بِظَلَامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿٢٩﴾ يَوْمَ نَقُولُ لِيَجْهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتَ

क्या तू भर गई?	जहन्नम से	हम कहेंगे	जिस दिन	29	बन्दों पर	जुल्म करने वाला	और नहीं मैं	मेरे पास (हों)
----------------	-----------	-----------	---------	----	-----------	-----------------	-------------	----------------

وَتَقُولُ هَلْ مِنْ مَّرِيدٍ ﴿٣٠﴾ وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ﴿٣١﴾

31	दूर	न	परहेज़गारों के लिए	जन्नत	और नज़दीक कर दी जाएगी	30	मज़ीद है	से - कुछ	क्या	और वह कहेगी
----	-----	---	--------------------	-------	-----------------------	----	----------	----------	------	-------------

هَٰذَا مَا تُوَعَّدُونَ لِكُلِّ أَوَّابٍ حَفِيظٍ ﴿٣٢﴾ مَن حَشَى الرَّحْمَنَ بِالْغَيْبِ

बिन देखे	रहमान (अल्लाह)	डरा	जो	32	निगहदाशत करने वाला	हर रूज़ूज़ करने वाले के लिए	यह जो तुम से वादा किया जाता था
----------	----------------	-----	----	----	--------------------	-----------------------------	--------------------------------

وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُّنِيبٍ ﴿٣٣﴾ ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ ۗ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُودِ ﴿٣٤﴾

34	हमेशा रहने का दिन	यह	सलामती के साथ	तुम उस में दाखिल हो जाओ	33	रूज़ूज़ करने वाले दिल के साथ	और आया
----	-------------------	----	---------------	-------------------------	----	------------------------------	--------

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ﴿٣٥﴾ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ							
इन से कब्ल	और कितनी हलाक की हम ने	35	और भी ज़ियादा	और हमारे पास	उस में	जो वह चाहेंगे	उन के लिए
مِّن قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ ۗ هَلْ مِنْ مَّحِيصٍ ﴿٣٦﴾							
36	भागने की जगह	से (कहीं)	क्या	पस कुरेदने (छान मारने) लगे शहरों में	पकड़ में	इन से	वह ज़ियादा सख्त
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَذِكْرَى لِمَنْ كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ۗ							
और वह	डाले (लगाए) कान	या	दिल	उस का	हो	उस के लिए जो	नसीहत
وَمَا مَسَّنَا مِنْ لُغُوبٍ ﴿٣٨﴾ فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ﴿٣٩﴾ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ الشُّجُودِ ﴿٤٠﴾ وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيبٍ ﴿٤١﴾ يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ۗ ذَلِكَ يَوْمَ الْخُرُوجِ ﴿٤٢﴾							
और पाकीज़गी बयान करो	जो वह कहते हैं	पर	पस सवर करो तुम	38	किसी तकान ने	और नहीं छुआ हमें	
إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَاللَّيْلُ وَالنَّجْمُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۗ وَبِشَاءِ رَبِّنَا الْمَوْتُ وَالْحَيَاةُ ۗ إِنَّ رَبَّنَا لَشَدِيدٌ ﴿٤٣﴾ يَوْمَ تَشَقَّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ۗ ذَلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ ﴿٤٤﴾ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ ﴿٤٥﴾ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۗ فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَنْ يَخَافُ وَعِيدِ ﴿٤٥﴾							
और रात में	39	और गुरुब होने से कब्ल	सूरज का तुलूअ	कब्ल	अपने रब की तारीफ के साथ		
से	पुकारने वाला पुकारेगा	जिस दिन	और सुनो तुम	40	सिजदों (नमाज़)	और बाद	पस उसकी पाकीज़गी बयान करो
وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤٦﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٤٧﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ اجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٤٨﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٤٩﴾							
42	बाहर निकलने का दिन	यह	हक के साथ	चीख	वह सुनेंगे	जिस दिन	41
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٤٩﴾							
उन से	ज़मीन	जिस दिन शक हो जाएगी	43	फिर लौट कर आना है	और हमारी तरफ	और मारते हैं	ज़िन्दगी देते हैं
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٤٩﴾							
वह कहते हैं	वह जो	हम खूब जानते हैं	44	आसान	हमारे लिए	हशर	यह
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٤٩﴾							
45	मेरी वईद	वह डरता है	जो	कुरआन से	पस नसीहत करें	जवर करने वाले	उन पर
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٤٩﴾							
آيَاتُهَا ٦٠ ﴿٥١﴾ سُوْرَةُ الدَّرِيْتِ ﴿٥١﴾ رُكُوْعَاتُهَا ٣							
रुकुआत 3							
(51) सूरतुज़ ज़ारियात							
आयात 60							
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
وَالدَّرِيْتِ دَرُوًّا ﴿١﴾ فَالْحَمَلِمْتِ وَقُرًا ﴿٢﴾ فَالْجَرِيْتِ يُسْرًا ﴿٣﴾ فَالْمُقَسِّمِمْتِ							
फिर तक्सीम करने वाले	3	नर्मी से	फिर चलने वाली	2	बोझ	फिर उठाने वाली	1
وَالْمُقَسِّمِمْتِ دَرُوًّا ﴿١﴾ فَالْحَمَلِمْتِ وَقُرًا ﴿٢﴾ فَالْجَرِيْتِ يُسْرًا ﴿٣﴾ فَالْمُقَسِّمِمْتِ							
इस के सिवा नहीं कि तुम्हें वादा जो दिया जाता है अलबत्ता सच है। (5) और वेशक जज़ा ओ सज़ा अलबत्ता वाके होने वाली है। (6)							

उस में उन के लिए है जो वह चाहेंगे और हमारे पास और भी ज़ियादा है। (35) और हम ने इन (अहले मक्का) से कब्ल कितनी (ही) हलाक की उम्मतें, वह पकड़ (कुवत) में इन से ज़ियादा सख्त थी, पस उन्हीं ने शहरों को छान मारा था, क्या कहीं भागने की जगह पा सके? (36) वेशक उस में नसीहत (बड़ी इव्रत) है उस के लिए जिस का दिल (बेदार) हो, या कान लगाए, और वह मुतवज्जेह हो। (37) और तहकीक हम ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया और जो उन के दरमियान है, छः (6) दिन में, और हमें किसी तकान ने नहीं छुआ। (38) पस जो वह कहते हैं तुम उस पर सवर करो, और अपने रब की तारीफ के साथ पाकीज़गी बयान करो, सूरज के तुलूअ और गुरुब से कब्ल। (39) और रात में पस उस की पाकीज़गी बयान करो और नमाज़ों के बाद (भी)। (40) और सुनो, जिस दिन पुकारने वाला करीब जगह से पुकारेगा। (41) जिस दिन वह ठीक ठीक चीख सुनेंगे, यह (कब्रों से) बाहर निकलने का दिन होगा। (42) वेशक हम ज़िन्दगी देते हैं और हम ही मारते हैं और हमारी तरफ (ही) लौट कर आना है। (43) जिस दिन ज़मीन शक हो जाएगी वह जल्दी करते हुए निकलेंगे, यह हशर हमारे लिए आसान है। (44) जो वह कहते हैं हम खूब जानते हैं, और तुम उन पर जवर करने वाले नहीं, पस आप (स) (उस को) कुरआन से नसीहत करें, जो मेरी वईद (वादाए अज़ाब) से डरता है। (45) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है कसम है (खाक) उड़ा कर परागन्दा करने वाली हवाओं की, (1) फिर (वारिश का) बोझ उठाने वाली हवाओं की, (2) फिर नर्मी से चलने वाली (कशतियों) की, (3) फिर हुकम से तक्सीम करने वाले (फरिश्तों) की, (4) इस के सिवा नहीं कि तुम्हें वादा जो दिया जाता है अलबत्ता सच है। (5) और वेशक जज़ा ओ सज़ा अलबत्ता वाके होने वाली है। (6)

और कसम है रास्तों वाले आस्मान की। (7)

वेशक तुम अलबत्ता मुख्तलिफ़ वात में हो। (8)

उस (कुरआन) से वही फेरा जाता है जो (अल्लाह की तरफ़ से) फेरा जाता है। (9)

अटकल दौड़ाने वाले मारे गए। (10)

जो वह ग़फ़लत में भूले हुए है। (11)

वह पूछते हैं कि जज़ा ओ सज़ा का दिन कब होगा? (12)

(हाँ) उस दिन वह आग पर उलटे सीधे पड़ेंगे। (13)

(अब) तुम अपनी शरारत (का मज़ा) चखो, यह है वह जिस की तुम जल्दी करते थे। (14)

वेशक मुत्तकी बागात और चशमों में होंगे। (15)

लेने वाले जो दिया उन्हें उन का रब, वेशक वह इस से क़ब्ल

नेकोकार थे। (16)

वह रात में थोड़ा सोते थे। (17)

और बक्रते सुबह वह असतग़फ़ार करते (बख़ूशिश मांगते) थे। (18)

और उन के मालों में हक़ है सवाली और ग़ैर सवाली (तंगदस्त) के लिए। (19)

और ज़मीन में यक़ीन करने वालों के लिए निशानियां हैं। (20)

और तुम्हारी ज़ात में (भी), तो क्या तुम देखते नहीं? (21)

और आस्मानों में तुम्हारा रिज़क़ है और जो तुम से वादा किया जाता है। (22)

कसम है रब की आस्मानों और ज़मीन के, वेशक यह (कुरआन) हक़ है जैसे तुम बोलते हो। (23)

क्या आप (स) के पास ख़बर आई इब्राहीम (अ) के मुअज़्ज़ मेहमानों की? (24)

जब वह उस के पास आए तो उन्होंने ने "सलाम" कहा, उस (इब्राहीम अ) ने (भी) सलाम कहा, वह लोग

नाशानासा थे। (25)

फिर वह अपने अहले ख़ाना की तरफ़ मुतवज्जेह हुए, फिर एक मोटा ताज़ा

बछड़ा (के कबाब) ले आए। (26)

फिर उन के सामने रखा (और) कहा: क्या तुम खाते नहीं? (27)

तो उस (इब्राहीम अ) ने उन से (दिल में) डर महसूस किया, वह बोले कि तुम डरो नहीं, और उन्होंने

ने उसे एक दाशिमन्द बेटे की वशारत दी। (28)

फिर उस की बीबी आगे आई हैरत से बोलती हुई, उस ने अपने चेहरे पर

(हाथ) मारा और बोली: (मैं) बुढ़िया (और ऊपर से) बांझ। (29)

उन्होंने ने कहा: ऐसे ही फ़रमाया है तेरे रब ने, वेशक वह है हिक्मत वाला, जानने वाला। (30)

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْحُبُكِ (٧) إِنَّكُمْ لَفِي قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ (٨) يُؤَفِّكُ عَنْهُ											
उस से	फेरा जाता है	8	मुख्तलिफ़	वात	अलबत्ता में	वेशक तुम	7	रास्तों वाले	और कसम है आस्मान की		
مَنْ أْفِكَ (٩) قُتِلَ الْخَرِصُونَ (١٠) الَّذِينَ هُمْ فِي عَمْرَةٍ سَاهُونَ (١١)											
11	भूले हुए हैं	ग़फ़लत में	वह	वह जो	10	अटकल दौड़ाने वाले	मारे गए	9	जो फेरा जाता है		
يَسْأَلُونَ أَيَّانَ يَوْمِ الدِّينِ (١٢) يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُونَ (١٣) ذُوقُوا											
तुम चखो	13	उलटे सीधे पड़ेंगे	आग पर	वह	उस दिन	12	जज़ा औ सज़ा का दिन	कब?	वह पूछते हैं		
فِئْتَكُمْ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ (١٤) إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ											
बागात में	मुत्तकी (नेक चलन)	वेशक	14	जल्दी करते	तुम थे उस की	वह जो	यह	अपनी शरारत			
وَعِيُونَ (١٥) اخذِينَ مَا اتَّهَمُوا رَبَّهُمْ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ											
इस	क़ब्ल	थे	वेशक वह	उन का रब	जो दिया उन्हें	लेने वाले	15	और चशमे			
مُحْسِنِينَ (١٦) كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ (١٧) وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ											
वह	और बक्रते सुबह	17	वह सोते	रात से-में	थोड़ा	वह थे	16	नेकोकार			
يَسْتَغْفِرُونَ (١٨) وَفِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ (١٩)											
19	और तंगदस्त (ग़ैर सवाली)	सवाली के लिए	हक़	उन के माल (जमा)	और में	18	असतग़फ़ार करते				
وَفِي الْأَرْضِ آيَاتٌ لِّلْمُوقِنِينَ (٢٠) وَفِي أَنْفُسِكُمْ أَفَلَا تُبْصِرُونَ (٢١) وَفِي											
और में	21	तो क्या तुम देखते नहीं?	और तुम्हारी ज़ात में	20	यक़ीन करने वालों के लिए	निशानियां	और ज़मीन में				
السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ (٢٢) فَوَرَبِّ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ لَحَقٌّ											
हक़ है	वेशक यह	और ज़मीन	आस्मानों	कसम है रब की	22	और जो तुम से वादा किया जाता है	तुम्हारा रिज़क़	आस्मानों			
مِّثْلَ مَا أَنْتُمْ تَنْطِقُونَ (٢٣) هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ											
इब्राहीम (अ)	मेहमान	वात (ख़बर)	आई तुम्हारे पास	क्या	23	बोलते हो	जो तुम	जैसे			
الْمُكْرَمِينَ (٢٤) إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ سَلَامٌ قَوْمٌ مُّنْكَرُونَ (٢٥)											
25	नाशानासा	लोग	सलाम	उस ने कहा	सलाम	तो उन्होंने ने कहा	उस के पास	वह आए	जब	24	इज़्ज़तदार
فَرَاغَ إِلَىٰ أَهْلِهِ فَجَاءَ بِعَجَلٍ سَمِينٍ (٢٦) فَقَرَّبَهُ إِلَيْهِمْ قَالَ											
कहा	उन के	फिर वह सामने रखा	26	मोटा ताज़ा बछड़ा	पस लाया	अपने अहले ख़ाना की तरफ़	फिर वह मुतवज्जेह हुआ				
أَلَا تَأْكُلُونَ (٢٧) فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً قَالُوا لَا تَخَفْ وَبَشِّرُوهُ بِنِعْمِ											
एक बेटे की	और उन्होंने ने वशारत दी	तुम डरो नहीं	वह बोले	कुछ डर	उन से	तो उस ने महसूस किया	27	क्या तुम खाते नहीं?			
عَلِيمٍ (٢٨) فَأَقْبَلَتِ امْرَأَتُهُ فِي صَرَءٍ فَصَكَتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوزٌ											
बुढ़िया	और बोली	अपना चेहरा	उस ने हाथ मारा	हैरत से बोलती हुई	उस की बीबी	फिर आगे आई	28	दानिशमन्द			
عَقِيمٌ (٢٩) قَالُوا كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكَ إِنَّهُ هُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ (٣٠)											
30	जानने वाला	हिक्मत वाला	वह	वेशक	तेरा रब	फ़रमाया	यूँ ही	उन्होंने ने कहा	29	बांझ	

قَالَ فَمَا حَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٣١﴾ قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا							
उस ने कहा	तो क्या	मकसद तुम्हारा	ऐ	भेजे हुए (फ़रिश्तो)	31	उन्होंने जवाब दिया	वेशक हम भेजे गए हैं
إِلَى قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾ لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ طِينٍ ﴿٣٣﴾ مُّسَوَّمَةً							
तरफ़	मुज़रिम कौम (मुज़रिमों की कौम)	32	ताकि हम भेजें (बरसाएं)	उन पर	पत्थर	पकी हुई मिट्टी से	निशान किए हुए
عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ ﴿٣٤﴾ فَأَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٣٥﴾							
तुम्हारे रब के हाँ	हृद से गुज़र जाने वालों के लिए	34	पस हम ने निकाल लिया	जो था	उस में	से	ईमान वाले
فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٦﴾ وَتَرَكْنَا فِيهَا آيَةً							
पस हम ने न पाया	उस में	एक घर के सिवा	से - का	मुसलमानों	36	और हम ने छोड़ दी	उस में
لِّلَّذِينَ يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٣٧﴾ وَفِي مُوسَىٰ إِذْ أَرْسَلْنَاهُ							
उन लोगों के लिए	जो डरते हैं	दरदनाक अज़ाब	37	और मूसा (अ) में	जब हम ने उसे भेजा		
إِلَىٰ فِرْعَوْنَ بِسُلْطَنٍ مُّبِينٍ ﴿٣٨﴾ فَتَوَلَّىٰ بِرُكْنِهِ وَقَالَ سَحْرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ﴿٣٩﴾							
फ़िरअौन की तरफ़	रोशन दलील (मोजिज़े) के साथ	38	तो उस ने सरताबी की	अपनी कुव्वत के साथ	और कहा	जादूगर	या दीवाना
فَأَخَذْنَاهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿٤٠﴾ وَفِي عَادٍ							
पस हम ने उसे पकड़ा	और उस का लशकर	फिर हम ने उन्हें फेंक दिया	दर्या में	और वह	मलामत ज़दा	40	और अ़ाद में
إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ الْعَقِيمَ ﴿٤١﴾ مَا تَدْرُ مِنْ شَيْءٍ آتَتْ							
जब हम ने भेजी	उन पर	नामुबारक आन्धी	41	वह न छोड़ती थी	किसी शै को	आती	
عَلَيْهِ إِلَّا جَعَلْتُهُ كَالرَّمِيمِ ﴿٤٢﴾ وَفِي ثَمُودَ إِذْ قِيلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوا							
जिस पर	मगर उसे कर देती	गली सड़ी हड्डी की तरह	42	और समूद में	जब कहा गया	उन को	फाइदा उठा लो
حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٤٣﴾ فَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّعِقَةُ							
एक मुद्दत तक	43	तो उन्होंने ने सरकशी की	से	अपने रब का हुक्म	पस उन्हें पकड़ा	विजली की कड़क	
وَهُمْ يَنْظُرُونَ ﴿٤٤﴾ فَمَا اسْتَطَاعُوا مِنْ قِيَامٍ وَمَا كَانُوا مُتَّصِرِينَ ﴿٤٥﴾							
और वह	देखते थे	44	पस उन में सकत न रही	खड़ा होने की	और वह न थे	खुद अपनी मदद करने वाले	
وَقَوْمَ نُوحٍ مِّنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَسِقِينَ ﴿٤٦﴾							
और नूह (अ) की कौम	और नूह (अ) की कौम	उस से कब्ल	वेशक वह	थे	लोग नाफ़रमान	46	
وَالسَّمَاءَ بَنَيْنَاهَا بِأَيْدٍ وَإِنَّا لَمُوسِعُونَ ﴿٤٧﴾ وَالْأَرْضَ فَرَشْنَاهَا							
और आस्मान	हम ने उसे बनाया	हाथ (कुव्वत) से	और वेशक हम	वसीउल कुदरत है	47	और ज़मीन	हम ने फ़र्श बनाया उसे
فَنِعْمَ الْمُهَيَّدُونَ ﴿٤٨﴾ وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ							
पस हम कैसा अच्छा बिछाने वाले हैं	48	और से	हर शै	हम ने पैदा किए	दो जोड़े (क़िस्म)	ताकि तुम	
تَذَكَّرُونَ ﴿٤٩﴾ فَفَرُّوا إِلَى اللَّهِ إِنِّي لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٥٠﴾							
नसीहत पकड़ो	49	पस तुम दौड़ो	अल्लाह की तरफ़	वेशक मैं	तुम्हारे लिए	उस से	वाज़ेह डराने वाला
पस तुम अल्लाह की तरफ़ दौड़ो, वेशक मैं तुम्हारे लिए उस (की तरफ़) से वाज़ेह डराने वाला हूँ। (50)	50	वाज़ेह	डर सुनाने वाला				

उस (इब्राहीम अ) ने कहा ऐ फ़रिश्तो! तुम्हारा मकसद क्या है? (31) उन्होंने ने जवाब दिया: वेशक हम मुज़रिमों की कौम की तरफ़ भेजे गए हैं। (32) ताकि हम उन पर पकी हुई मिट्टी के पत्थर (संगरेज़े) बरसाएं। (33) तुम्हारे रब के हाँ हृद से गुज़र जाने वालों के लिए निशान किए हुए। (34) पस हम ने निकाल लिया (उन्हें) जो उस (शहर) में ईमान वाले थे। (35) पस हम ने उस (शहर) में (लूत अ) के सिवा मुसलमानों का घर न पाया। (36) और हम ने छोड़ दी दरदनाक अज़ाब से डरने वालों के लिए उस शहर में एक निशानी। (37) और मूसा (अ) में (भी एक निशानी) है, जब हम ने उसे फ़िरअौन की तरफ़ भेजा रोशन मोजिज़े के साथ। (38) तो उस (फ़िरअौन) ने अपनी कुव्वत (अरकाने सलतनत) के साथ सरताबी की और कहा कि यह जादूगर या दीवाना है। (39) पस हम ने उसे और उस के लशकर को पकड़ा, फिर हम ने उन्हें फेंक दिया दर्या में और वह मलामत ज़दा (रह गया)। (40) और (तुम्हारे लिए निशानी है) अ़ाद में, जब हम ने उन पर नामुबारक आन्धी भेजी। (41) वह किसी शै को न छोड़ती थी जिस पर वह आती मगर उसे एक गली सड़ी हड्डी की तरह कर देती। (42) और समूद में (भी एक निशानी है) जब उन्हें कहा गया कि एक (थोड़ी) मुद्दत और फाइदा उठा लो। (43) तो उन्होंने ने अपने रब के हुक्म से सरकशी की, पस उन्हें विजली की कड़क ने आ पकड़ा उन के देखते देखते। (44) पस उन में खड़ा होने की सकत न रही और न खुद अपनी मदद कर सकते थे। (45) और नूह (अ) की कौम को उस से कब्ल (हम ने हलाक किया), वेशक वह नाफ़रमान लोग थे। (46) और हम ने आस्मान को बनाया अपने ज़ोर से और वेशक हम उस की कुदरत रखते हैं। (47) और हम ने ज़मीन को (बतौर) फ़र्श बनाया, और हम कैसा अच्छा बिछाने वाले हैं। (48) और हर शै से हम ने दो क़िस्म पैदा की ताकि तुम नसीहत पकड़ो। (49) पस तुम अल्लाह की तरफ़ दौड़ो, वेशक मैं तुम्हारे लिए उस (की तरफ़) से वाज़ेह डराने वाला हूँ। (50)

और अल्लाह के साथ किसी दूसरे को माबूद न ठहराओ, मैं वेशक तुम्हारे लिए उस (की तरफ) से वाज़ेह डर सुनाने वाला हूँ। (51) इसी तरह नहीं आया कोई रसूल (उन के पास) जो इन से पहले थे मगर उन्होंने ने (उसे) जादूगर या दीवाना कहा। (52) क्या उन्होंने ने एक दूसरे को उस की वसीयत की है? बल्कि वह सरकश लोग है। (53) पस आप (स) उन से मुँह मोड़ लें तो आप (स) पर कोई इल्ज़ाम नहीं। (54) और आप (स) समझाएँ, वेशक समझाना ईमान लाने वालों को नफ़ा देता है। (55) और मैं ने पैदा किए जिन और इन्सान सिर्फ़ इस लिए कि वह मेरी इबादत (बन्दगी और फ़रमांवरदारी) करें। (56) मैं उन से कोई रिज़क़ नहीं मांगता और मैं नहीं चाहता कि वह मुझे खिलाएं। (57) वेशक अल्लाह ही राज़िक़ है, कुव्वत वाला, निहायत कुदरत वाला। (58) पस वेशक जिन लोगों ने जुल्म किया उन के लिए (अज़ाब के) पैमाने हैं, जैसे पैमाने उन के साथियों के लिए थे, पस वह जल्दी न करें। (59) सो उन लोगों के लिए बरबादी है जिन्होंने उन से वादा किया जिस का उन से वादा किया जाता है। (60) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है कसम है तूरे सीना की। (1) और लिखी हुई किताब की, (2) खुले औराक़ में। (3) और बैते मज़मूर (फ़रिश्तों के कअ़वाए आस्मानी) की। (4) और बुलन्द छत की। (5) और जोश मारते दर्या की। (6) वेशक तेरे रब का अज़ाब ज़रूर वाक़े होने वाला है। (7) उसे कोई टालने वाला नहीं। (8) जिस दिन थरथराएगा आस्मान (बुरी तरह) थरथरा कर, (9) और चलेंगे पहाड़ चलने की तरह (उड़े फिरेंगे)। (10) सो उस दिन झुटलाने वालों के लिए बरबादी है। (11) वह जो मशग़ले में (बेहदगी से) खेलते हैं। (12) जिस दिन वह जहन्नम की आग की तरफ़ धक्के दे कर धकेले जाएंगे। (13) यह है वह आग जिस को तुम झुटलाते थे। (14)

وَلَا تَجْعَلُوا مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٥١﴾ كَذَلِكَ								
इसी तरह	51	वाज़ेह डर सुनाने वाला	उस से	तुम्हारे लिए	वेशक मैं	कोई दूसरा माबूद	अल्लाह के साथ	और तुम न ठहराओ
مَا آتَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ﴿٥٢﴾								
52	या दीवाना	जादूगर	उन्होंने ने कहा	मगर	कोई रसूल	इन से पहले	वह जो	नहीं आया
اتَّوَصَّوْا بِهِ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ﴿٥٣﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَا أَنْتَ بِمَلُومٌ ﴿٥٤﴾								
54	कोई इल्ज़ाम	तो नहीं आप (स)	पस आप (स) मुँह मोड़ लें उन से	53	सरकश	लोग	बल्कि वह	क्या उन्होंने ने एक दूसरे को वसीयत की उस की
وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرَى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٥﴾ وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ﴿٥٦﴾ مَا أُرِيدُ مِنْهُمْ مِنْ رِزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَنْ يُطْعَمُونَ ﴿٥٧﴾ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ﴿٥٨﴾ فَإِنَّ								
और इन्सान	जिन्न	और नहीं पैदा किया मैं ने	55	ईमान लाने वाले	नफ़ा देता है	समझाना	तो वेशक	आप (स) समझाएं
कि	और मैं नहीं चाहता	कोई रिज़क़	उन से	मैं नहीं मांगता	56	इस लिए कि वह मेरी इबादत करें	मगर-सिर्फ़	
पस वेशक	58	निहायत कुदरत वाला	कुव्वत वाला	राज़िक़	वह	वेशक अल्लाह	57	वह मुझे खिलाएं
لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُنُوبًا مِثْلَ ذُنُوبِ أَصْحَابِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿٥٩﴾								
59	पस वह जल्दी न करें	उन के साथी	पैमाने	जैसे	डोल (पैमाने)	उन लोगों के लिए जिन्होंने ने जुल्म किया		
فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٦٠﴾								
60	उन से वादा किया जाता है	वह जिस	उन का दिन	से-का	उन लोगों के लिए जिन्होंने ने इन्कार किया	सो बरबादी		
آيَاتُهَا ٤٩ ﴿٥٢﴾ سُورَةُ الطُّورِ ﴿٥٢﴾ رُكُوعَاتُهَا ٢ 2 रक़ूआत (52) सूरतुत तूर पहाड़ 49 आयात								
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है								
وَالطُّورِ ﴿١﴾ وَكُنِبِ مَسْطُورٍ ﴿٢﴾ فِي رَقٍ مَنشُورٍ ﴿٣﴾ وَالْبَيْتِ الْمَعْمُورِ ﴿٤﴾								
4	और बैते मज़मूर	3	खुले	औराक़ में	2	लिखी हुई	और किताब	1 कसम तूरे (सीना)
وَالسَّفَفِ الْمَرْفُوعِ ﴿٥﴾ وَالْبَحْرِ الْمَسْجُورِ ﴿٦﴾ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ﴿٧﴾								
7	ज़रूर वाक़े होने वाला	तेरे रब का अज़ाब	वेशक	6	और दर्या जोश मारता	5	बुलन्द	और छत
مَا لَهُ مِنْ دَافِعٍ ﴿٨﴾ يَوْمَ تَمُورُ السَّمَاءُ مَوْرًا ﴿٩﴾ وَتَسِيرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ﴿١٠﴾								
10	चलने की तरह	पहाड़	और चलेंगे	9	थरथरा कर	आस्मान	जिस दिन थरथराएगा	8 कोई टालने वाला
فَوَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿١١﴾ الَّذِينَ هُمْ فِي خَوْضٍ يَلْعَبُونَ ﴿١٢﴾ يَوْمَ								
जिस दिन	12	खेलते हैं	मशग़ला में	वह	वह जो	11	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन
يُدْعُونَ إِلَى نَارِ جَهَنَّمَ دَعَاً ﴿١٣﴾ هَذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿١٤﴾								
14	झुटलाते	उस को	तुम थे	वह आग जो	यह है	13	धक्के दे कर	जहन्नम की आग
								वह धकेले जाएंगे

<p>أَفْسَحْرُ هَذَا أَمْ أَنْتُمْ لَا تُبْصِرُونَ ﴿١٥﴾ اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوا أَوْ لَا تَصْبِرُوا</p>							
न सब्र करो	या	फिर तुम सब्र करो	उस में दाखिल हो जाओ	15	दिखाई नहीं देता तुम्हें	या तुम	यह तो क्या जादू
<p>سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ إِنَّمَا تُجْرُونَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾ إِنَّ الْمُتَّقِينَ</p>							
वेशक मुत्तकी (जमा)	16	जो तुम करते थे	सो इस के सिवा नहीं कि तुम्हें बदला दिया जाएगा	तुम पर	बराबर		
<p>فِي جَنَّتٍ وَنَعِيمٍ ﴿١٧﴾ فَكِهِينَ بِمَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ ۖ وَوَقَّاهُمْ</p>							
और बचाया उन्हें	उन के रब ने	उस के साथ जो दिया उन्हें	खुश होंगे	17	और नेमतों	बागों में	
<p>رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿١٨﴾ كُلُّوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾</p>							
19	जो तुम करते थे	उस के बदले में	रचते पचते	और तुम पियो	तुम खाओ	18	दोज़ख़ अज़ाब उन के रब ने
<p>مُتَّكِنِينَ عَلَى سُرُرٍ مَّصْفُوفَةٍ ۖ وَزَوَّجْنَاهُم بِحُورٍ عِينٍ ﴿٢٠﴾ وَالَّذِينَ</p>							
और जो लोग	20	बड़ी आँखों वाली हूरें	और उन की ज़ौजियत में दिया हम ने	सफ़ बस्ता	तख्तों पर	तकिया लगाए हुए	
<p>آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِإِيمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا</p>							
और	उन की औलाद	उन के साथ	हम ने मिला दिया	ईमान के साथ	उन की औलाद	और उन्होंने ने पैरवी की	ईमान लाए
<p>آلَتَهُمْ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ ۗ كُلُّ امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ ﴿٢١﴾</p>							
21	रहन	उस ने कमाया (आमाल)	उस में जो	हर आदमी	कोई चीज़ (कुछ)	उन के अमल से	कमी नहीं की हम ने
<p>وَأَمَدَدْنَاهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٢٢﴾ يَتَنَزَّعُونَ فِيهَا</p>							
उस में	लपक लपक कर ले रहे होंगे	22	जो उन का जी चाहेगा	उस से	और गोश्त	फलों के साथ	और हम उन की मदद करेंगे
<p>كَأَسَا لَا لَعْنُ فِيهَا وَلَا تَأْتِيْمٌ ﴿٢٣﴾ وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ</p>							
उन के लिए	खिदमतगार लड़के	उन पर-के	और इर्द गिर्द फिरेंगे	23	और न गुनाह की बात	उस में	न बकवास प्याला
<p>كَانَّهُمْ لَوْلُو مَكْنُونٌ ﴿٢٤﴾ وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ</p>							
बाज़ पर (दूसरे की तरफ)	उन में से बाज़ (एक)	और मुतवज्जेह होगा	24	छुपा कर रखे हुए	मोती	गोया वह	
<p>يَتَسَاءَلُونَ ﴿٢٥﴾ قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ﴿٢٦﴾</p>							
26	डरते थे	अपने अहले खाना में	पहले	वेशक हम थे	वह कहेंगे	25	आपस में पूछते हुए
<p>فَمَنْ اللَّهُ عَلَيْنَا وَوَقَفْنَا عَذَابَ السَّمُومِ ﴿٢٧﴾ إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ</p>							
इस से कब्ल	वेशक हम थे	27	गर्म हवा (लू)	अज़ाब	और हमें बचा लिया	हम पर	तो एहसान किया अल्लाह ने
<p>نَدْعُوهُ ۗ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ ﴿٢٨﴾ فَذَكَرْ فَمَا أَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ</p>							
अपना रब	फ़ज़्ल से	तो आप (स) नहीं	पस आप (स) नसीहत करें	28	रहम करने वाला	एहसान करने वाला	वही वेशक वह हम उस को पुकारते
<p>بِكَاهِنٍ وَلَا مَجْنُونٍ ﴿٢٩﴾ أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهِ</p>							
उस के साथ	हम मुन्तज़िर हैं	शायर	वह कहते हैं	क्या	29	दीवाना	और न काहिन
<p>رَيْبِ الْمُنُونِ ﴿٣٠﴾ قُلْ تَرَبَّصُوا فَإِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُتَرَبِّصِينَ ﴿٣١﴾</p>							
31	इन्तिज़ार करने वाले	से	तुम्हारे साथ	वेशक मैं	तुम इन्तिज़ार करो	30	ज़माना हवादिस

तो क्या यह जादू है? या तुम को दिखाई नहीं देता? (15)

उस में दाखिल हो जाओ, फिर तुम सब्र करो या न सब्र करो, तुम्हारे लिए बराबर है, इस के सिवा नहीं कि जो तुम करते थे तुम्हें (उस का) बदला दिया जाएगा। (16)

वेशक मुत्तकी (वहिश्त के) बागों और नेमतों में होंगे। (17)

उस के साथ खुश होंगे जो उन के रब ने उन्हें दिया, और उन के रब ने उन्हें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा लिया। (18)

तुम खाओ और पियो मजे से (जी भर कर) उस के बदले में जो तुम करते थे। (19)

तख्तों पर सफ़ बस्ता तकिये लगाए हुए। और हम उन की शादी कर देंगे बड़ी आँखों वाली हूरों से। (20)

और जो लोग ईमान लाए और उन की औलाद ने ईमान के साथ उन की पैरवी की, हम ने उन की औलाद को उन के साथ मिला दिया और हम ने उन के अमल से कुछ कमी नहीं की, हर आदमी अपने आमाल में रहन है। (21)

और हम उन की मदद करेंगे फलों और गोश्त से, जो उन का जी चाहेगा। (22)

वह एक दोसरे से प्याले लपक लपक कर ले रहे होंगे जिस में न बकवास होगी न गुनाह की बात। (23)

और उन के इर्द गिर्द फिरेंगे खिदमतगार लड़के। गोया वह छुपा कर रखे हुए मोती हैं। (24)

और उन में से एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जेह होगा आपस में पूछते हुए। (25)

वह कहेंगे वेशक हम इस से पहले अहले खाना में डरते थे। (26)

तो अल्लाह ने हम पर एहसान किया और हमें बचा लिया लू के अज़ाब से। (27)

वेशक इस से कब्ल हम उस को पुकारते थे, वेशक वही एहसान करने वाला, रहम करने वाला है। (28)

पस आप (स) नसीहत करते रहें, पस आप (स) अपने रब के फ़ज़्ल से न काहिन हैं न दीवाने। (29)

क्या वह कहते हैं कि यह शायर है, हम उस के साथ हवादिसे ज़माने के मुन्तज़िर हैं। (30)

आप (स) फ़रमा दें तुम इन्तिज़ार करो, वेशक मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों में से हूँ। (31)

क्या उन की अकलें उन्हें यही सिखाती है? या वह सरकश लोग हैं। (32)

क्या वह कहते हैं कि उस ने उसे (कुरआन) को घड़ लिया है (नहीं) बल्कि वह ईमान नहीं लाते। (33)

तो चाहिए कि वह उस जैसी एक बात ले आएँ अगर वह सच्चे हैं। (34)

क्या वह पैदा किए गए हैं बगैर किसी शै (बनाने वाले) के, या वह (खुद) पैदा करने वाले हैं। (35)

क्या उन्होंने ने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को? (नहीं) बल्कि वह यकीन नहीं रखते। (36)

क्या उन के पास तेरे रब (की रहमत) के खज़ाने हैं? या वह दारोगे हैं? (37)

क्या उन के पास कोई सीढ़ी है? जिस पर (चढ़ कर) वह सुनते हैं, तो चाहिए कि उन का सुनने वाला कोई खुली सनद लाए। (38)

क्या उस के बेटियाँ और तुम्हारे लिए बेटे? (39)

क्या आप (स) उन से मांगते हैं कोई अजर? कि वह तावान (के बोझ) से दबे जाते हैं। (40)

क्या उन के पास (इल्म) ग़ैब है? कि वह लिख लेते हैं। (41)

क्या वह इरादा रखते हैं किसी दाओ का? तो जिन लोगों ने कुफ़ किया वही दाओ में गिरफ़तार होंगे। (42)

क्या उन के लिए अल्लाह के सिवा कोई माबूद है? अल्लाह उस से पाक है जो वह शिर्क करते हैं। (43)

और अगर वह आस्मान से कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखें तो वह कहते हैं: बादल जमा हुआ एक के ऊपर एक। (44)

पस तुम उन को छोड़ दो यहाँ तक कि वह मिलें (देख लें) अपना वह दिन जिस में वह बेहोश कर दिए जाएंगे। (45)

जिस दिन उन का दाओ कुछ भी उन के काम न आएगा और न उन की मदद की जाएगी। (46)

और बेशक जिन लोगों ने जुल्म किया उन के लिए उस के अज़ावा अज़ाब है। लेकिन उन में अक़्सर नहीं जानते। (47)

और आप (स) अपने रब के हुक्म पर सब्र करें, बेशक आप (स) हमारी हिफ़ाज़त में हैं और आप (स) अपने रब की तारीफ़ के साथ

पाकीज़गी बयान करें जिस वक़्त आप (स) उठें। (48)

और रात में (भी), पस उस की पाकीज़गी बयान करें और सितारों के पीठ फेरते (गाइब होते) वक़्त (भी)। (49)

<p>أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَحْلَامُهُمْ بِهَذَا أَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ﴿٣٢﴾ أَمْ يَقُولُونَ تَقَوَّلَهُ</p>							
इस ने उसे घड़ लिया है	क्या वह कहते हैं?	32	सरकश लोग	या वह	यही	उन की अकलें	क्या हुक्म देती (सिखाती) है उन्हें
<p>بَلْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٣﴾ فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِّثْلِهِ إِنْ كَانُوا صَادِقِينَ ﴿٣٤﴾</p>							
34	सच्चे	अगर वह हैं	इस जैसी	एक बात	तो चाहिए कि वह ले आएँ	33	वह ईमान नहीं लाते
<p>أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ ﴿٣٥﴾ أَمْ خَلَقُوا</p>							
क्या उन्होंने ने पैदा किए?	35	पैदा करने वाले	या वह	बगैर किसी शै	से	क्या वह पैदा किए गए हैं	
<p>السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ بَلْ لَا يُوقِنُونَ ﴿٣٦﴾ أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنُ رَبِّكَ</p>							
तेरा रब	खज़ाने	क्या उन के पास	36	वह यकीन नहीं रखते	बल्कि	और ज़मीन	आस्मान (जमा)
<p>أَمْ هُمُ الْمُصَيِّطُونَ ﴿٣٧﴾ أَمْ لَهُمْ سَلْمٌ يَسْتَمِعُونَ فِيهِ فَلْيَأْتِ</p>							
तो चाहिए कि लाए	उस में-पर	वह सुनते हैं	कोई सीढ़ी	क्या उन के लिए-पास	37	दारोगे	या वह
<p>مُسْتَمِعُهُمْ بِسُلْطَنٍ مُّبِينٍ ﴿٣٨﴾ أَمْ لَهُ الْبَنَاتُ وَلَكُمْ الْبَنُونَ ﴿٣٩﴾</p>							
39	बेटे	और तुम्हारे लिए	बेटियाँ	क्या उस के लिए	38	खुली	कोई सनद
<p>أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِنْ مَعْرَمٍ مَثْقَلُونَ ﴿٤٠﴾ أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ</p>							
ग़ैब	क्या उन के पास	40	दबे जाते हैं	तावान से	तो वह	कोई अजर	क्या तुम उन से मांगते हो
<p>فَهُمْ يَكْتُوبُونَ ﴿٤١﴾ أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمْ</p>							
वही	तो जिन लोगों ने कुफ़ किया	किसी दाओ	क्या वह इरादा रखते हैं	41	पस वह लिख लेते हैं		
<p>الْمَكِيدُونَ ﴿٤٢﴾ أَمْ لَهُمْ إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهِ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٤٣﴾</p>							
43	उस से जो शिर्क करते हैं	पाक है अल्लाह	अल्लाह के सिवा	कोई माबूद	क्या उन के लिए	42	दाओ में गिरफ़तार होंगे
<p>وَإِنْ يَرَوْا كِسْفًا مِنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ مَرْكُومٌ ﴿٤٤﴾</p>							
44	तह व तह (जमा हुआ)	बादल	वह कहते हैं	गिरता हुआ	आस्मान से	कोई टुकड़ा	वह देखें और अगर
<p>فَذَرَهُمْ حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيهِ يُصْعَقُونَ ﴿٤٥﴾ يَوْمَ</p>							
जिस दिन	45	बेहोश कर दिए जाएंगे	उस में	वह जो	अपना दिन	वह मिलें	यहाँ तक कि
<p>لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤٦﴾ وَإِنَّ</p>							
और बेशक	46	मदद किए जाएंगे	और न वह	कुछ भी	उन का दाओ	उन से-का	न काम आएगा
<p>لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ ذَلِكَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٧﴾</p>							
47	नहीं जानते	उन में से अक़्सर	और लेकिन	वरे-अज़ावा उस	अज़ाब	उन लोगों के लिए जिन्होंने ने जुल्म किया	
<p>وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ</p>							
और आप (स)	पाकीज़गी बयान करें अपने रब की तारीफ़ के साथ	हमारी आँखों (हिफ़ाज़त) में	बेशक आप (स)	अपने रब के हुक्म पर	और आप (स) सब्र करें		
<p>حِينَ تَقُومُ ﴿٤٨﴾ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ ﴿٤٩﴾</p>							
49	सितारों	और पीठ फेरते	पस उस की पाकीज़गी बयान करें	रात	और से (में)	48	आप (स) उठें



آيَاتُهَا ٦٢ ﴿٥٣﴾ سُورَةُ النَّجْمِ ﴿٥٣﴾ ﴿٥٣﴾ زُكُوعَاتُهَا ٣									
रुकुआत 3			(53) सूरतुन नज्म				आयात 62		
سِتَارَاتُ									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
وَالنَّجْمِ إِذَا هَوَىٰ ﴿١﴾ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوَىٰ ﴿٢﴾ وَمَا يَنْطِقُ عَنِ									
से	और वह नहीं	2	वह	और न	तुम्हारे	न	1	वह गाइब	सितारे की
	वात करते		भटके		रफ़ीक	बहके		होने लगे	क़सम
الْهَوَىٰ ﴿٣﴾ إِنَّ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ﴿٤﴾ عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوَىٰ ﴿٥﴾									
5	सख्त कुव्वतों वाला	उस ने उसे	4	भेजी	वहि	वह सिर्फ	3	नहीं	खाहिश
		सिखाया		जाती है					
ذُو مِرَّةٍ فَاسْتَوَىٰ ﴿٦﴾ وَهُوَ بِالْأُفُقِ الْأَعْلَىٰ ﴿٧﴾ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّىٰ ﴿٨﴾									
8	फिर और	फिर वह	7	सब से	किनारे पर	और	6	फिर सामने	ताक़्तों
	नज़दीक हुआ	नज़दीक हुआ		बुलन्द		वह	आया		वाला
فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ ﴿٩﴾ فَأَوْحَىٰ إِلَىٰ عَبْدِهِ مَا أَوْحَىٰ ﴿١٠﴾									
10	जो उस ने	अपना	तरफ	तो उस ने	9	या उस से	दो किनारे	कमान	तो वह था
	वहि की	बन्द		वहि की		कम			(रह गई)
مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَىٰ ﴿١١﴾ أَفَتُمَرُونَهُ عَلَىٰ مَا يَرَىٰ ﴿١٢﴾ وَلَقَدْ رَأَهُ									
और तहकीक	उस ने देखा उसे	12	जो उस ने	पर	तो क्या तुम	11	जो उस ने	दिल	न झूट कहा
			देखा		झगड़ते हो उस से		देखा		
نَزَلَهُ أُخْرَىٰ ﴿١٣﴾ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهَىٰ ﴿١٤﴾ عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَأْوَىٰ ﴿١٥﴾									
15	जन्नतुल मावा	उस के	14	सिदरतुल मुन्तहा	नज़दीक	13	दूसरी	मरतवा	
		नज़दीक							
إِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشَىٰ ﴿١٦﴾ مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغَىٰ ﴿١٧﴾									
17	और न हद	आँख	न कजी की	16	जो छा रहा था	सिदरह	जब	छा रहा था	
	से बढ़ी						छा रहा था		
لَقَدْ رَأَىٰ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَىٰ ﴿١٨﴾ أَفَرَأَيْتُمْ اللَّتَّ وَالْعُرَىٰ ﴿١٩﴾									
19	और उज़्ज़ा	लात	तो क्या तुम	18	बड़ी	अपना	निशानियां	से	तहकीक उस
			ने देखा?			रब			ने देखी
وَمَنْوَةَ الثَّالِثَةِ الْاُخْرَىٰ ﴿٢٠﴾ اَلْكُمُ الدَّكْرُ وَلَهُ الْاُنْثَىٰ ﴿٢١﴾									
21	औरतें	और उस	मर्द	20	तीसरी एक और	और	मनात		
		के लिए		लिए					
تِلْكَ إِذَا قِسْمَةٌ ضِيزَىٰ ﴿٢٢﴾ إِنَّ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءُ سَمَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ									
तुम	तुम ने वह नाम	मगर-सिर्फ	यह	22	बेढंगी	यह बांट	यह		
	रख लिए हैं	नाम	नहीं			तकसीम			
وَأَبَاؤُكُمْ مَّا أَنْزَلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ إِنْ يَتَّبِعُونَ									
वह नहीं	पैरवी करते	सनद	कोई	उस की	नहीं उतारी	अल्लाह ने	और	तुम्हारे	बाप दादा
إِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْأَنْفُسُ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنْ رَبِّهِمْ									
उन के	रब से	और (हालाकि)	नफ्स	और जो	खाहिश	मगर-सिर्फ			
		पहुँच चुकी उन के पास	(जमा)			गुमान			
الْهُدَىٰ ﴿٢٣﴾ أَمْ لِلإِنْسَانِ مَا تَمَنَّىٰ ﴿٢٤﴾ فَلِللَّهِ الْاُخْرٰةُ وَالْاَوَّلَىٰ ﴿٢٥﴾									
25	और दुनिया	पस अल्लाह ही के	24	जिस की वह	इन्सान के लिए	क्या	23	हिदायत	
		लिए आखिरत		तमन्ना करे					

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है सितारे की क़सम! जब वह गाइब होने लगे। (1) तुम्हारे रफ़ीक (मुहम्मद स) न वहके और न वह भटके। (2) और वह अपनी खाहिश से बात नहीं करते। (3) वह सिर्फ़ वहि है जो भेजी जाती है। (4) उस को सिखाया उस सख्त कुव्वत वाले, ताक़्तों वाले (फरिश्ते) ने। (5) फिर उस ने क़स्द किया (रसूल स के सामने आया)। (6) और वह बुलन्द किनारे पर था। (7) फिर वह नज़दीक हुआ, फिर और नज़दीक हुआ। (8) तो वह कमान के दो किनारों के (फ़ासिले के) बराबर रह गया या उस से भी कम। (9) तो उस ने वहि की अपने बन्दे की तरफ़ जो वहि की। (10) जो उस ने (आँखों से) देखा (उस के) दिल ने तसदीक की। (11) क्या जो उस ने देखा तुम उस से उस पर झगड़ते हो? (12) और तहकीक उस ने उसे दूसरी मरतवा देखा। (13) सिदरतुल मुन्तहा के नज़दीक। (14) उस के नज़दीक जन्नतुल मावा (आरामगाहे बहिश्त) है। (15) जब सिदरह पर छा रहा था जो छा रहा था। (16) आँख ने न कजी की और न वह हद से बढ़ी। (17) तहकीक उस ने अपने रब की बड़ी निशानियां देखीं। (18) क्या तुम ने देखा है लात और उज़्ज़ा, (19) और तीसरी एक और मनात को? (20) क्या तुम्हारे लिए मर्द (बेटे) हैं और उस के लिए औरतें (बेटियां)? (21) यह बांट तकसीम बेढंगी है। (22) यह (कुछ) नहीं सिर्फ़ नाम है जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं, अल्लाह ने नहीं उतारी उस की कोई सनद, वह नहीं पैरवी करते मगर सिर्फ़ गुमान और खाहिशो नफ़्स की, हालांकि उन के रब की तरफ़ से उन के पास हिदायत पहुँच चुकी है। (23) क्या इन्सान के लिए वह जो तमन्ना करे? (24) पस अल्लाह ही के लिए आखिरत और दुनिया। (25)

और आस्मानों में कितने ही फ़रिश्ते हैं जिन की सिफ़ारिश कुछ भी नफ़ा नहीं देती मगर उस के बाद कि इजाज़त दे अल्लाह जिस के लिए चाहे और पसंद फ़रमाए। (26)

वेशक जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते वह अलबत्ता फ़रिश्तों के नाम औरतों जैसे रखते हैं। (27)

और उन्हें उस का कोई इल्म नहीं, वह सिर्फ़ गुमान की पैरवी करते हैं, और गुमान यकीन के मुकाबले में कुछ नफ़ा नहीं देता। (28)

पस आप (स) उस से मुँह फेर लें जो हमारी याद से रूगर्दा हुआ, और वह न चाहता हो सिवाए दुनिया की ज़िन्दगी। (29)

यह उन के इल्म की रसाई (हद) है, वेशक तेरा रब उसे खूब जानता है जो उस के रास्ते से गुमराह हुआ और वह उसे खूब जानता है जिस ने हिदायत पाई। (30)

और अल्लाह ही के लिए है जो कुछ आस्मानों और जो ज़मीन में है ताकि जिन लोगों ने बुराई की उन्हें उन के आमाल का बदला दे, और उन्हें जज़ा दे जिन लोगों ने भलाई के साथ नेकी की। (31)

जो छोटे गुनाहों के सिवा बड़े गुनाहों और बेहयाइयों से बचते हैं, वेशक तुम्हारा रब वसीअ मग़फ़िरत वाला है, वह तुम्हें खूब जानता है जब उस ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया और जब तुम अपनी माँओं के पेटों में बच्चे थे, पस तुम अपने आप को पाकीज़ा न समझो, वह उसे खूब जानता है जिस ने परहेज़गारी की। (32)

तो क्या तू ने देखा उस को जिस ने रूगर्दानी की। (33)

और थोड़ा (माल) दिया और (फिर) बन्द कर दिया। (34)

क्या उस के पास इल्मे ग़ैब है? तो वह देख रहा है। (35)

क्या वह ख़बर नहीं दिया गया (क्या उसे ख़बर नहीं) जो मूसा (अ) के सहीफ़ों में है। (36)

और इब्राहीम (अ) जिस ने (अपना क़ौल) पूरा किया। (37)

कोई बोझ उठाने वाला नहीं उठाता किसी दूसरे का बोझ। (38)

और यह कि किसी इन्सान के लिए नहीं (किसी को नहीं मिलता) मगर उसी क़द्र जितनी उस ने कोशिश की, (39)

وَكَمْ مِّن مَّلَكٍ فِي السَّمَوَاتِ لَا تُغْنِي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا إِلَّا

मगर	कुछ	उन की सिफ़ारिश	नफ़ा नहीं देती	आस्मानों में	फ़रिश्तों से	और कितने
-----	-----	----------------	----------------	--------------	--------------	----------

مِّن بَعْدِ أَنْ يَأْذَنَ اللَّهُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَرْضَى (٢٦) إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ

ईमान नहीं रखते	जो लोग	वेशक	26	और वह पसंद फ़रमाए	जिस के लिए चाहे वह	इजाज़त दे अल्लाह	कि	उस के बाद
----------------	--------	------	----	-------------------	--------------------	------------------	----	-----------

بِالْآخِرَةِ لَيْسُمُونَ الْمَلَائِكَةَ تَسْمِيَةَ الْإِنثَى (٢٧) وَمَا لَهُمْ بِهِ

उस का	और नहीं उन्हें	27	औरतों जैसा	नाम	फ़रिश्तों	अलबत्ता वह रखते हैं नाम	आख़िरत पर
-------	----------------	----	------------	-----	-----------	-------------------------	-----------

مِنْ عِلْمٍ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ

यकीन से - मुकाबला	नफ़ा नहीं देता	और वेशक गुमान	मगर - सिर्फ़ गुमान	वह पैरवी करते	नहीं	कोई इल्म
-------------------	----------------	---------------	--------------------	---------------	------	----------

شَيْئًا (٢٨) فَأَعْرِضْ عَنْ مَنْ تَوَلَّىٰ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ إِلَّا

सिवाए	और वह न चाहता हो	हमारी याद से	रूगर्दा हुआ	जो	से	पस मुँह फेर लें	28	कुछ
-------	------------------	--------------	-------------	----	----	-----------------	----	-----

الْحَيَاةَ الدُّنْيَا (٢٩) ذَلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ

वह खूब जानता है	तेरा रब	वेशक	इल्म की	उन की रसाई	यह	29	दुनिया की ज़िन्दगी
-----------------	---------	------	---------	------------	----	----	--------------------

بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدَى (٣٠) وَلِلَّهِ مَا فِي

में	और अल्लाह के लिए जो	30	हिदायत पाई	उसे - जिस	खूब जानता है	और वह	उस के रास्ते से	गुमराह हुआ	उसे जो
-----	---------------------	----	------------	-----------	--------------	-------	-----------------	------------	--------

السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ أَسَاءُوا بِمَا عَمِلُوا

उस की जो उन्होंने ने किए (आमाल)	बुराई की	उन्हें जिन्होंने ने	ताकि वह बदला दे	ज़मीन में	और जो	आस्मानों
---------------------------------	----------	---------------------	-----------------	-----------	-------	----------

وَيَجْزِيَ الَّذِينَ أَحْسَنُوا بِالْحُسْنَى (٣١) الَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبِيرَ الْإِثْمِ

कबीरा (बड़े) गुनाहों से	वह बचते हैं	जो लोग	31	भलाई के साथ	नेकी की	उन लोगों को जिन्होंने ने	और जज़ा दे
-------------------------	-------------	--------	----	-------------	---------	--------------------------	------------

وَالْفَوَاحِشَ إِلَّا اللَّمَمَ إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ

जब	तुम्हें	और खूब जानता है वह	वसीअ मग़फ़िरत वाला	तुम्हारा रब	वेशक	छोटे गुनाह	मगर - सिवाए	और बेहयाइयों
----	---------	--------------------	--------------------	-------------	------	------------	-------------	--------------

أَنْشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَإِذْ أَنْتُمْ أَجِنَّةٌ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ فَلَا تُزَكُّوْا

पस पाकीज़ा न समझो	अपनी माँएं	पेट (जमा)	में	बच्चे	तुम	और जब	ज़मीन से	उस ने पैदा किया तुम्हें
-------------------	------------	-----------	-----	-------	-----	-------	----------	-------------------------

أَنْفُسَكُمْ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقَى (٣٢) أَفَرَأَيْتَ الَّذِي تَوَلَّىٰ (٣٣) وَأَعْطَىٰ

और उस ने दिया	33	जिस ने रूगर्दानी की	तो क्या तू ने देखा	32	परहेज़गारी की	उसे जो - जिस	वह खूब जानता है	अपने आप
---------------	----	---------------------	--------------------	----	---------------	--------------	-----------------	---------

قَلِيلًا وَآكْذَى (٣٤) أَعِنْدَهُ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهَوَ يَرَى (٣٥) أَمْ لَمْ يُنَبَّأْ

वह ख़बर नहीं दिया गया	क्या	35	तो वह देख रहा है	इल्मे ग़ैब	क्या उस के पास	34	और उस ने बन्द कर दिया	थोड़ा सा
-----------------------	------	----	------------------	------------	----------------	----	-----------------------	----------

بِمَا فِي صُحُفِ مُوسَىٰ (٣٦) وَإِبْرَاهِيمَ الَّذِي وَفَىٰ (٣٧) أَلَّا تَنْزُرُ

कि नहीं उठाता	37	वफ़ा किया	वह जो - जिस	और इब्राहीम (अ)	36	मूसा (अ)	सहीफ़े	में	वह जो
---------------	----	-----------	-------------	-----------------	----	----------	--------	-----	-------

وَأَزْرَةً وَّزَرَ أُخْرَىٰ (٣٨) وَأَنْ لَّيْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا مَا سَعَىٰ (٣٩)

39	जो उस ने कोशिश की	मगर	किसी इन्सान के लिए	नहीं	और यह कि	38	किसी दूसरे का बोझ	कोई बोझ उठाने वाला
----	-------------------	-----	--------------------	------	----------	----	-------------------	--------------------

وَأَنَّ سَعْيَهُ سَوْفَ يُرَى (٤٠) ثُمَّ يُجْزَاهُ الْجَزَاءَ الْأَوْفَى (٤١) وَأَنَّ إِلَى									
और यह कि तरफ़	41	बदला पूरा पूरा	उसे बदला दिया जाएगा	फिर	40	अनक़रीब देखी जाएगी	उस की कोशिश और यह कि		
رَبِّكَ الْمُنْتَهَى (٤٢) وَأَنَّهُ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَى (٤٣) وَأَنَّهُ هُوَ أَمَاتَ									
वही मारता है	और बेशक वह	43	और वह रुलाता है	वही हँसाता है	और बेशक	42	इन्तिहा तुम्हारा रब		
وَأَحْيَا (٤٤) وَأَنَّهُ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَى (٤٥) مِنْ نُطْفَةٍ									
नुत्फ़े से	45	और औरत	मर्द	जोड़े	उस ने पैदा किए	और बेशक वह	44	और जिलाता है	
إِذَا تُمْنَى (٤٦) وَأَنَّ عَلَيْهِ النَّشَاءَ الْأُخْرَى (٤٧) وَأَنَّهُ هُوَ أَعْنَى									
उस ने ग़नी किया	वही	और बेशक वह	47	दोबारा	(जी) उठाना	उसी पर	और यह कि	46	जब वह डाला जाता
وَأَقْنَى (٤٨) وَأَنَّهُ هُوَ رَبُّ الشَّعْرَى (٤٩) وَأَنَّهُ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَى (٥٠)									
50	आद पहली (क़दीम)	उस ने हलाक किया	और बेशक वह	49	शिअ़रा (सितारे) का रब	और बेशक वही	48	और सरमायादार किया	
وَتَمُودًا فَمَا أَبْقَى (٥١) وَقَوْمَ نُوحٍ مِّنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا هُمْ أَظْلَمَ									
बड़े ज़ालिम	वह	वह थे	बेशक वह	उस से क़ब्ल	और कौमे नूह (अ)	51	पस उस ने बाकी न छोड़ा	और समूद	
وَأَطْعَى (٥٢) وَالْمُؤْتَفِكَةَ أَهْوَى (٥٣) فَغَشَّاهَا مَا غَشَّى (٥٤) فَبِأَيِّ آلَاءِ									
नेमत	पस किस	54	जिस ने ढांप लिया	तो उस को ढांप लिया	53	दे मारा	और उलटने वाली बस्तियां	52	और बहुत सरकश
رَبِّكَ تَتَمَارَى (٥٥) هَذَا نَذِيرٌ مِّنَ النَّذْرِ الْأُولَى (٥٦) أَرِزْتَ									
क़रीब आ गई	56	पहले डराने वाले	से	एक डराने वाला	यह	55	तू शक करेगा	अपना रब	
الْأَرِزَةَ (٥٧) لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ كَاشِفَةٌ (٥٨) أَفَمِنَ									
तो क्या-से	58	कोई खोलने वाला	अल्लाह के सिवा	उस के लिए उस का	नहीं	57	क़रीब आने वाली		
هَذَا الْحَدِيثِ تَعَجُّبُونَ (٥٩) وَتَضْحَكُونَ وَلَا تَبْكُونَ (٦٠)									
60	और तुम नहीं रोते	और तुम हँसते हो	59	तुम तज़ज़ुब करते हो	इस बात				
وَأَنْتُمْ سَمِدُونَ (٦١) فَاسْجُدُوا لِلَّهِ وَاعْبُدُوا (٦٢)									
62	अल्लाह के आगे और उस की इबादत करो	पस तुम सिज्दा करो	61	ग़फ़लत करते (ग़ाफ़िल) हो	और तुम				
آيَاتُهَا ٥٥ ❁ سُورَةُ الْقَمَرِ ❁ رُكُوعَاتُهَا ٣ (54) सूरतुल क़मर रुकुआत 3 चाँद आयात 55									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
إِفْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ (١) وَإِنْ يَرَوْا آيَةً يُعْرَضُوا وَيَقُولُوا									
और वह कहते हैं	वह मुँह फेर लेते हैं	कोई निशानी	और अगर वह देखते हैं	1	चाँद	और शक हो गया	क़ियामत	क़रीब आ गई	
سِحْرٌ مُّسْتَمَرٌّ (٢) وَكَذَّبُوا وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ وَكُلُّ أَمْرٍ مُّسْتَقَرٌّ (٣)									
3	वक्रते मुक़र्रर	और हर काम	अपनी खाहिशात	और पैरवी की	और उन्हीं ने झुटलाया	2	(हमेशा) से होता चला आया	जादू	

और यह कि उस की कोशिश अनक़रीब देखी जाएगी। (40) फिर उसे पूरा पूरा बदला दिया जाएगा। (41) और यह कि तुम्हारे रब (ही) की तरफ इन्तिहा है। (42) और बेशक वही हँसाता और रुलाता है। (43) और बेशक वही मारता और जिलाता है। (44) और बेशक वही जिस ने मर्द और औरत के जोड़े पैदा किए। (45) नुत्फ़े से, जब वह (रहम में) डाला जाता है, (46) और यह कि उसी पर (उसी के ज़िम्मे है) दोबारा जी उठाना। (47) और बेशक उस ने ग़नी किया और सरमायादार किया। (48) और बेशक वही शिअ़रा सितारे का रब है। (49) और बेशक उस ने क़दीम आद को हलाक किया, (50) और समूद को, पस उस ने बाकी न छोड़ा। (51) और कौमे नूह (अ) को उस से क़ब्ल, बेशक वह बड़े ज़ालिम और बहुत सरकश थे। (52) और (कौमे लूत अ की) उलटने वाली बस्तियों को दे मारा। (53) तो उस को ढांप लिया जिस ने ढांप लिया। (54) पस तू अपने रब की किस किस नेमत में शक करेगा! (55) यह पहले डराने वालों में से एक डराने वाला। (56) क़रीब आने वाली (क़ियामत) क़रीब आ गई। (57) अल्लाह के सिवा उस का कोई खोलने वाला नहीं। (58) तो क्या तुम उस बात से तज़ज़ुब करते हो? (59) और तुम हँसते हो और तुम रोते नहीं। (60) और गा बजा कर टालते हो। (61) पस तुम अल्लाह के आगे सिज्दा करो और तुम उस की इबादत करो। (62) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है क़ियामत क़रीब आ गई और चाँद शक हो गया। (1) और अगर वह कोई निशानी देखते हैं तो मुँह फेर लेते हैं और कहते हैं कि (यह) हमेशा से होता चला आया जादू है। (2) और उन्हीं ने झुटलाया और अपनी खाहिशात की पैरवी की, और हर काम के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है। (3)

٣  
٢  
١

और तहकीक़ उन के पास आ गई (वह) खबरें जिन में इब्रत है। (4) कामिल दानिशमन्दी की बातों, पस उन्हें डराने वालों ने फ़ाइदा न दिया। (5) सो तुम उन से मुँह फेर लो, जिस दिन बुलाएगा एक बुलाने वाला (फ़रिश्ता) नागवार शौ की तरफ़। (6) उन की आँखें झुकी हुई (होंगी), वह क़ब्रों से (इस तरह) निकलेंगे गोया कि वह परागन्दा टिड्डियाँ हैं। (7) पुकारने वाले की तरफ़ लपकते हुए काफ़िर कहेंगे: यह बड़ा सख़्त दिन है। (8) झुटलाया इन से क़ब्र कौम नूह (अ) ने, पस उन्हीं ने हमारे बन्दे (नूह अ) को झुटलाया और उन्हीं ने कहा: दीवाना, और उसे डराया धमकाया। (9) पस उस ने अपने रब को पुकारा कि मैं मग़लूब हो चुका, पस तू मेरी मदद कर। (10) तो हम ने कसूरत से बरसने वाले पानी से आस्मान के दरवाज़े खोल दिए। (11) और ज़मीन से चश्मे जारी कर दिए, पस (ज़मीन आस्मान का) पानी उस काम पर मिल गया जो (इन्मे इलाही में) मुक़र्र हो चुका था (कौम नूह अ की गरक़ाबी के लिए)। (12) और हम ने उसे तख़्तों और कीलों वाली (कशती पर) सवार किया। (13) हमारी आँखों के सामने (हमारी निगरानी में) चलती थी उस के बदले के लिए जिस की नाक़्दी की गई। (14) और तहकीक़ हम ने उसे (बतौर) निशानी रहने दिया। तो क्या है कोई नसीहत पकड़ने वाला? (15) पस (देखो कि) कैसा हुआ मेरा अज़ाब और मेरा डराना। (16) और तहकीक़ हम ने नसीहत के लिए कुरआन को आसान कर दिया तो क्या है कोई नसीहत पकड़ने वाला? (17) आद ने झुटलाया तो कैसा हुआ मेरा अज़ाब और मेरा डराना? (18) हम ने नहूसत के दिन में उन पर तुन्द ओ तेज़ हवा भेजी (जो) चलती ही गई। (19) वह लोगों को उखाड़ फेंकती थी गोया कि वह जड़ से उखड़े हुए खजूर के तने हैं। (20) सो कैसा हुआ मेरा अज़ाब और मेरा डराना? (21) और तहकीक़ हम ने नसीहत के लिए कुरआन को आसान कर दिया तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला? (22) समूद ने डराने वालों (रसूलों) को झुटलाया। (23) पस उन्हीं ने कहा: क्या हम अपने में से एक बशर की पैरवी करें? बेशक उस सूरत में हम अलबत्ता गुमराही और दीवानगी में होंगे। (24)

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنَ الْأَنْبَاءِ مَا فِيهِ مُزْدَجَرٌ ﴿٤﴾ حِكْمَةٌ بِالْعَمَلِ							
हिकमते वालिगा (कामिल दानिशमन्दी)	4	डांट (इब्रत)	जिस में	खबरें (जमा)	से	और तहकीक़ आ गई उन के पास	
فَمَا تُغْنِ التُّذْرُ ﴿٥﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ إِلَىٰ شَيْءٍ نُّكْرٍ ﴿٦﴾							
6	शौ नागवार	तरफ़	बुलाएगा एक बुलाने वाला	जिस दिन	उन से	सो तुम मुँह फेर लो	5 डराने वाले तो न फाइदा दिया
حُسْنًا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنتَشِرٌ ﴿٧﴾							
7	परागन्दा	टिड्डियाँ	गोया कि वह	क़ब्रों से	वह निकलेंगे	उन की आँखें	झुकी हुई
مُهْطِعِينَ إِلَى الدَّاعِ يَقُولُ الْكٰفِرُونَ هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ﴿٨﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمٌ نُّوحٍ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا مَجْنُونٌ وَازْدَجَرَ ﴿٩﴾							
8	झुटलाया	बड़ा सख़्त दिन	यह	काफ़िर (जमा)	कहेंगे	पुकारने वाले की तरफ़	लपकते हुए
فَدَعَا رَبَّهُ أَنِّي مَغْلُوبٌ فَانتَصِرُ ﴿١٠﴾ فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ							
9	और डराया धमकाया गया	दीवाना	और उन्हीं ने कहा	हमारे बन्दे	तो उन्हीं ने झुटलाया	कौम नूह	इन से क़ब्र
بِمَاءٍ مِّنْهُمْ ﴿١١﴾ وَفَجَّرْنَا الْأَرْضَ عُيُونًا فَالْتَقَى الْمَاءُ عَلَىٰ أَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ﴿١٢﴾							
10	आस्मान के दरवाज़े	तो हम ने खोल दिए	10	पस मेरी मदद कर	मग़लूब	कि मैं	अपना रब पस उस ने पुकारा
وَحَمَلْنَاهُ عَلَىٰ ذَاتِ الْأَوَّاحِ وَدُسِّرٍ ﴿١٣﴾ تَجْرِي بِأَعْيُنِنَا جَزَاءً لِّمَن							
11	(जो) मुक़र्र हो चुका था	उस काम पर	पानी	पस मिल गया	चश्मे	ज़मीन	और हम ने जारी कर दिए
12	उस के लिए जिस	बदला	हमारी आँखों के सामने	चलती थी	13	और कीलों वाली	तख़्तों वाली पर और हम ने सवार किया उसे
كَانَ كُفْرٍ ﴿١٤﴾ وَلَقَدْ تَرَكْنَاهَا آيَةً فَهَلْ مِنْ مُّذَكِّرٍ ﴿١٥﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي							
13	मेरा अज़ाब	पस कैसा हुआ	15	कोई नसीहत पकड़ने वाला	तो क्या है	एक निशानी	और तहकीक़ हम ने उसे रहने दिया
14	नाक़्दी की गई	14	और तहकीक़ हम ने उसे रहने दिया	14	और तहकीक़ हम ने उसे रहने दिया	14	नाक़्दी की गई
وَنُذْرٍ ﴿١٦﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّذَكِّرٍ ﴿١٧﴾ كَذَّبَتْ							
15	झुटलाया	17	कोई नसीहत पकड़ने वाला?	तो क्या है	नसीहत के लिए	कुरआन	और तहकीक़ हम ने आसान किया
16	और मेरा डराना	16	और तहकीक़ हम ने आसान किया	16	और तहकीक़ हम ने आसान किया	16	और मेरा डराना
عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرٍ ﴿١٨﴾ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا							
17	तेज़	हवा	उन पर	बेशक हम ने भेजी	18	और मेरा डराना	मेरा अज़ाब हुआ तो कैसा आद
فِي يَوْمٍ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ﴿١٩﴾ تَنْزِعُ النَّاسَ كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ							
18	तने	गोया कि वह	लोग	वह उखाड़ देती (फेंकती)	19	चलती ही गई	नहूसत के दिन में
نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ﴿٢٠﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرٍ ﴿٢١﴾ وَلَقَدْ							
19	और अलबत्ता तहकीक़	21	और मेरा डराना	मेरा अज़ाब हुआ	सो कैसा	20	जड़ से उखड़ी हुई खजूर के पेड़
يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّذَكِّرٍ ﴿٢٢﴾ كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِالنُّذْرِ ﴿٢٣﴾							
20	और तहकीक़ हम ने नसीहत के लिए कुरआन को आसान कर दिया तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला?	22	कोई नसीहत हासिल करने वाला	तो क्या है	नसीहत के लिए	हम ने आसान कर दिया कुरआन	22
فَقَالُوا أَبَشْرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهُ إِنَّا إِذَا لَفِيَ ضَلَالٍ وَسُعْرٍ ﴿٢٤﴾							
21	और दीवानगी	अलबत्ता गुमराही में	बेशक हम उस सूरत में	हम पैरवी करें उस की	एक	अपने में से	क्या एक बशर पस उन्हीं ने कहा
22	23	डराने वालों को	झुटलाया समूद ने	22	कोई नसीहत हासिल करने वाला	तो क्या है	नसीहत के लिए
23	24	और दीवानगी	अलबत्ता गुमराही में	बेशक हम उस सूरत में	हम पैरवी करें उस की	एक	अपने में से

<p>ءَأَلْقَى الذِّكْرَ عَلَيْهِ مِنْ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ أَشِرُّ (٢٥) سَيَعْلَمُونَ</p>							
वह जल्द जान लेंगे	25	खुद पसंद	बड़ा झूटा	बल्कि वह	हमारे दरमियान (हम में से)	उस पर	क्या डाला (नाज़िल किया) गया ज़िक्र (वहि)
<p>عَدَا مَنِ الْكَذَّابِ الْأَشِرِّ (٢٦) إِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ</p>							
उन के लिए	आज़माइश	ऊँटनी	भेजने वाले	वेशक हम	26	खुद पसंद	बड़ा झूटा कौन कल
<p>فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ (٢٧) وَنَبِّئْهُمْ أَنَّ الْمَاءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ</p>							
उन के दरमियान	तकसीम कर दिया गया	कि पानी	और उन्हें ख़बर दे	27	और सब्र कर	सो तू इन्तिज़ार कर उन का	
<p>كُلُّ شَرْبٍ مُّحْتَضَرٌّ (٢٨) فَنَادُوا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَى فَعَقَرَ (٢٩)</p>							
29	और कूचें काट दी	सो उस ने दस्त दराज़ी की	अपने साथी को	तो उन्होंने ने पुकारा	28	हाज़िर किया गया (हाज़िर होना)	पीने की बारी हर
<p>فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرٍ (٣٠) إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً</p>							
चिंघाड़	उन पर	वेशक हम ने भेजी	30	और मेरा डराना	मेरा अज़ाब	हुआ	तो कैसा
<p>وَاحِدَةً فَكَانُوا كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ (٣١) وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ</p>							
नसीहत के लिए	हम ने आसान किया कुरआन	और अलबत्ता तहकीक	31	तरह सूखी रौन्दी हुई बाड़, बाड़ लगाने वाला	सो वह हो गए	एक	
<p>فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍ (٣٢) كَذَّبَتْ قَوْمٌ لُوطٍ بِالنُّذْرِ (٣٣) إِنَّا أَرْسَلْنَا</p>							
हम ने भेजी	वेशक हम	33	डराने वाले (रसूल)	लूत (अ) की कौम ने	झुटलाया	32	कोई नसीहत हासिल करने वाला तो क्या है
<p>عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ نَجَّيْنَاهُمْ بِسَحْرِ (٣٤) نِعْمَةٌ مِّنْ عِنْدِنَا</p>							
अपनी तरफ़ से	फ़ज़ल फ़रमा कर	34	सुबह सवेरे	हम ने बचा लिया उन्हें	सिवाए लूत के अहले ख़ाना	पत्थर बरसाने वाली आन्धी	उन पर
<p>كَذَلِكَ نَجْزِي مَنْ شَكَرَ (٣٥) وَلَقَدْ أَنْذَرَهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا</p>							
तो वह झगड़ने लगे	हमारी पकड़ से	और तहकीक (लूत अ ने) उन्हें डराया	35	जो शुक्र करे	हम जज़ा देते हैं	इसी तरह	
<p>بِالنُّذْرِ (٣٦) وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَنْ ضَيْفِهِ فَطَمَسْنَا أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا</p>							
पस चखो तुम	उन की आँखें	तो हम ने मिटा दी	उस के मेहमान	से	और अलबत्ता तहकीक उन्होंने ने (लूत अ से) लेना चाहा	36	डराने में
<p>عَذَابِي وَنُذْرٍ (٣٧) وَلَقَدْ صَبَّحَهُمْ بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقَرٌّ (٣٨) فَذُوقُوا</p>							
पस चखो तुम	38	ठहरने वाली (दाइमी)	अज़ाब	सवेरे	सुबह आन पड़ा उन पर	और तहकीक	37 और मेरा डराना मेरा अज़ाब
<p>عَذَابِي وَنُذْرٍ (٣٩) وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍ (٤٠)</p>							
40	कोई नसीहत हासिल करने वाला	तो क्या है	नसीहत के लिए	कुरआन	और अलबत्ता तहकीक हम ने आसान किया	39	और मेरा डराना मेरा अज़ाब
<p>وَلَقَدْ جَاءَ آلَ فِرْعَوْنَ النُّذْرُ (٤١) كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كُلِّهَا</p>							
तमाम	हमारी आयतों को	उन्होंने ने झुटलाया	41	डराने वाले (रसूल)	फ़िरऔन वाले	और तहकीक आए	
<p>فَأَخَذْنَاهُمْ أَخْذَ عَزِيزٍ مُّقْتَدِرٍ (٤٢) أَكْفَارِكُمْ خَيْرٌ مِّنْ أَوْلِيكُم</p>							
उन से	बेहतर	क्या तुम्हारे काफ़िर	42	साहिबे कुदरत	ग़ालिब	पकड़	पस हम ने उन्हें आ पकड़ा
<p>أَمْ لَكُمْ بَرَاءَةٌ فِي الزُّبُرِ (٤٣) أَمْ يَقُولُونَ نَحْنُ جَمِيعٌ مُّنتَصِرٌ (٤٤)</p>							
44	अपना बचाव कर लेने वाले	जमाअत	हम	वह कहते हैं	क्या	43	सहीफ़ों में या तुम्हारे लिए नजात (माफी नामा)

क्या हमारे दरमियान उस पर वहि नाज़िल की गई? (नहीं) बल्कि वह बड़ा झूटा, खुद पसंद है। (25) वह कल (जल्द ही) जान लेंगे कि कौन बड़ा झूटा, खुद पसंद है। (26) (ऐ सालेह अ) वेशक हम भेजने वाले हैं ऊँटनी उनकी आज़माइश के लिए, सो तू उन का (अनजाम देखने के लिए) इन्तिज़ार कर और सब्र कर। (27) और उन्हें खबर दे कि पानी उन के दरमियान तकसीम कर दिया गया है और हर एक को (अपनी) पीने की बारी पर हाज़िर होना है। (28) तो उन्होंने ने अपने साथी को पुकारा, सो उस ने दस्त दराज़ी की और (ऊँटनी) की कूचें काट दी। (29) तो कैसा हुआ मेरा अज़ाब और मेरा डराना? (30) वेशक हम ने उन पर एक ही चिंघाड़ भेजी, सो वह हो गए बाड़े वाले की सूखी रौन्दी हुई बाड़ की तरह। (31) और तहकीक हम ने नसीहत के लिए कुरआन को आसान कर दिया, तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला? (32) लूत (अ) की कौम ने रसूलों को झुटलाया। (33) (तो) वेशक हम ने उन पर पत्थर बरसाने वाली आन्धी भेजी, लूत (अ) के अहले ख़ाना के सिवा कि हम ने बचा लिया उन्हें सुबह सवेरे, (34) अपनी तरफ़ से फ़ज़ल फ़रमा कर, इसी तरह हम जज़ा देते हैं (उस को) जो शुक्र करे। (35) और तहकीक (लूत अ) ने उन्हें हमारी पकड़ से डराया तो वह डराने में झगड़ने (शक करने) लगे। (36) और तहकीक उन्होंने ने लूत (अ) से उन के मेहमानों को (बुरे इरादे से) लेना चाहा तो हम ने उन की आँखें मिटा दी (चौपट कर दी), पस मेरे अज़ाब और मेरे डराने (का मज़ा) चखो। (37) और तहकीक सुबह सवेरे उन पर दाइमी अज़ाब आ पड़ा। (38) पस मेरे अज़ाब और डराने (का मज़ा) चखो। (39) और तहकीक हम ने कुरआन को आसान किया है नसीहत के लिए, तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला। (40) और तहकीक कौमे फ़िरऔन के पास रसूल आए। (41) उन्होंने ने हमारी आयतों (अहकाम और निशानियों) को झुटलाया तमाम (की तमाम) तो हम ने उन्हें आ पकड़ा एक ग़ालिब और साहिबे कुदरत की पकड़ (की सूरत में)। (42) क्या उन से तुम्हारे काफ़िर बेहतर हैं? या तुम्हारे लिए माफी नामा है (क़दीम) सहीफ़ों में? (43) क्या वह कहते हैं कि हम एक जमाअत अपना बचाव कर लेने वाले। (44)

अनकरीब यह जमाअत शिकस्त खाएगी और वह भागेंगे पीठ (फेर कर)। (45)

बल्कि क्रियामत उन की वादागाह है, और क्रियामत (की घड़ी) बहुत सख्त और बड़ी तलख होगी। (46)

वेशक मुजरिम गुमराही और जहालत में है। (47)

उस दिन वह अपने चेहरों के बल जहनन्म में घसीटे जाएंगे, (उन से कहा जाएगा:) तुम जहनन्म (की आग) लगने का मज़ा चखो। (48)

वेशक हम ने हर शै को एक अन्दाज़े के मुताबिक पैदा किया। (49)

और हमारा हुक्म सिर्फ एक (इशारा होता है) जैसे आँख का झपकना। (50)

और अलबत्ता हम हलाक कर चुके हैं तुम जैसे बहुत सों को, तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला? (51)

और जो कुछ उन्होंने ने किया सहीफों में है। (52)

और हर छोटी बड़ी (बात) लिखी हुई है। (53)

वेशक मुत्तकी बागात और नहरों में होंगे। (54)

साहिबे कुदरत वादशाह के नज़्दीक सच्चाई के मुक़ाम में। (55)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है रहमान (अल्लाह)। (1)

उस ने कुरआन सिखाया। (2)

उस ने इन्सान को पैदा किया। (3)

उस ने उसे बात करना सिखाया। (4)

सूरज और चाँद एक हिसाब से (गर्दिश में है)। (5)

और तारे और दरख्त सर वसजूद हैं। (6)

और उस ने आस्मान को बुलन्द किया और तराजू रखी। (7)

कि तुम तोल में हद से तजावुज़ न करो। (8)

और तोल ईसाफ़ से काइम करो, और तोल न घटाओ (कम न तोलो)। (9)

और उस ने ज़मीन को मख़्लूक के लिए बिछाया। (10)

उस में मेवे हैं और ग़िलाफ़ वाली खजूरें हैं। (11)

और ग़ल्ला भूसे वाला, और खुशबू के फूल। (12)

तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (13)

سِيْهَزْمُ الْجَمْعِ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبْرَ ٤٥ بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ							
और क्रियामत	वादागाह उन की	बल्कि क्रियामत	45	पीठ	और वह फेर लेंगे (भागेंगे)	जमाअत	अनकरीब शिकस्त खाएगी
أَذْهَى وَأَمْرٌ ٤٦ إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي ضَلَالٍ وَسُعْرٍ ٤٧ يَوْمَ يُسْحَبُونَ							
वह घसीटे जाएंगे	जिस दिन	47	और जहालत	गुमराही में	वेशक मुजरिम (जमा)	46	और बड़ी तलख वह सख्त
فِي النَّارِ عَلَى وُجُوْهِهِمْ ذُقُوا مَسَّ سَقَرٍ ٤٨ إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ							
हम ने उसे पैदा किया	शै	वेशक हम हर	48	जहनन्म	लगना	तुम चखो	अपने मुँह (जमा)
بِقَدْرِ ٤٩ وَمَا أَمْرُنَا إِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ٥٠ وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا							
और अलबत्ता हम हलाक कर चुके हैं	50	आँख का	जैसे झपकना	एक	मगर-सिर्फ	और नहीं हमारा हुक्म	49
أَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍ ٥١ وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ فِي الزُّبُرِ ٥٢							
52	सहीफों में	जो उन्होंने ने की	और हर बात	51	कोई नसीहत हासिल करने वाला	तो क्या है	तुम जैसे
وَكُلُّ صَغِيرٍ وَكَبِيرٍ مُسْتَطَرٌّ ٥٣ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَهَرٍ ٥٤							
54	और नहरें	बागात में	वेशक मुत्तकी (जमा)	53	लिखी हुई	और बड़ी	छोटी और हर
فِي مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيكٍ مُّقْتَدِرٍ ٥٥							
55	साहिबे कुदरत	वादशाह	नज़्दीक	सच्चाई का मुक़ाम		में	
آيَاتُهَا ٧٨ ﴿٥٥﴾ سُورَةُ الرَّحْمَنِ ﴿٥٥﴾ زُكُوعَاتُهَا ٣							
(55) सूरतुर रहमान रुक़आत 3 वेहद मेहरवान आयात 78							
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
الرَّحْمٰنُ ١ عَلَّمَ الْقُرْآنَ ٢ خَلَقَ الْإِنْسَانَ ٣ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ٤							
4	उस ने उसे सिखाया बात करना	3	उस ने पैदा किया इन्सान	2	उस ने सिखाया कुरआन	1	रहमान (अल्लाह)
الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ٥ وَالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدْنَ ٦ وَالسَّمَاءُ							
और आस्मान	6	वह सिज्दा में (सर वसजूद है)	और दरख्त	और झाड़ियां-तारे	5	एक हिसाब से	और चाँद सूरज
رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيزَانَ ٧ أَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيزَانِ ٨ وَأَقِيمُوا							
और काइम करो	8	तराजू (तोल) में	हद से तजावुज़ करो	कि न	7	तराजू	और रखी उस ने उसे बुलन्द किया
الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيزَانَ ٩ وَالْأَرْضُ وَضَعَهَا							
उस ने उस को रखा (बिछाया)	और ज़मीन	9	तोल	और न घटाओ	ईसाफ़ से	वज़न (तोल)	
لِلْأَنَامِ ١٠ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَالنَّخْلُ ذَاتُ الْأَكْمَامِ ١١ وَالْحَبُّ							
और ग़ल्ला	11	ग़िलाफ़ वाले	और खजूरें	मेवे	उस में	10	मख़्लूक के लिए
ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ١٢ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبْنَ ١٣							
13	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	12	और खुशबू के फूल	भूसे वाला	

وقف لان

٢  
١٠

حَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۝۱۴ وَخَلَقَ الْجَانَّ مِنْ مَّارِجٍ							
शोला मारने वाली	जिन्नात	और उस ने पैदा किया	14	ठिकरी जैसी	खंखाती मिट्टी	से	उस ने पैदा किया इन्सान
مِّن نَّارٍ ۝۱۵ فَبَيَّ الْأَيِّ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۝۱۶ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ							
दोनों मशरिफ़ों	रब	16	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	15	आग से
وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۝۱۷ فَبَيَّ الْأَيِّ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۝۱۸ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ							
दो दर्या	उस ने बहाए	18	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	17	दोनों मग़रिब और रब
يَلْتَقِينَ ۝۱۹ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَا يَبْغِينَ ۝۲۰ فَبَيَّ الْأَيِّ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۝۲۱							
21	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	20	वह ज़ियादती नहीं करते (नहीं मिलते)	एक आड़	उन दोनों के दरमियान
يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللَّوْزُ وَالْمَرْجَانُ ۝۲۲ فَبَيَّ الْأَيِّ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۝۲۳							
23	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	22	और मूंगे	मोती	उन दोनों से निकलते हैं
وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنشَآتُ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ۝۲۴ فَبَيَّ الْأَيِّ رَبِّكُمَا							
अपने रब	तो कौन सी नेमतों	24	पहाड़ों की तरह	दर्या में	चलने वाली	कशतियां	और उस के लिए
تُكَذِّبَنِ ۝۲۵ كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۝۲۶ وَيَبْقَى وَجْهَ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ							
साहिबे अज़मत	तेरा रब	चेहरा (ज़ात)	और बाक़ी रहेगा	26	फना होने वाला	जो इस (ज़मीन) पर	हर कोई
وَالْإِكْرَامِ ۝۲۷ فَبَيَّ الْأَيِّ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۝۲۸ يَسْأَلُهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ							
आस्मानों में	जो कोई	उस से मांगता है	28	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	27
وَالْأَرْضِ كُلِّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ۝۲۹ فَبَيَّ الْأَيِّ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۝۳۰							
30	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	29	किसी न किसी काम में	वह	हर रोज़ और ज़मीन में
سَنَفْرُغُ لَكُمْ أَيَّةَ الثَّقَلِينَ ۝۳۱ فَبَيَّ الْأَيِّ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۝۳۲ يَمْعَشَرِ							
ऐ गिरोह	32	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	31	ऐ जिन ओ इन्स	तुम्हारी तरफ़
الْحِنِّ وَالْإِنْسِ إِنِ اسْتَطَعْتُمْ أَنْ تَنْفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَوَاتِ							
आस्मानों के किनारे	से	तुम निकल भागो	कि	तुम से हो सके	अगर	और इन्स	जिन्न
وَالْأَرْضِ فَاَنْفُذُوا لَا تَنْفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَنِ ۝۳۳ فَبَيَّ الْأَيِّ							
तो कौन सी नेमतों	33	लेकिन ज़ोर से	तुम नहीं निकल सकोगे	तो निकल भागो	और ज़मीन		
رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۝۳۴ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شَوْاظٌ مِّن نَّارٍ وَنَحَاسٌ							
और धुआँ	आग से	एक शोला	तुम पर	भेज दिया जाएगा	34	तुम झुटलाओगे	अपने रब
فَلَا تَنْتَصِرْنَ ۝۳۵ فَبَيَّ الْأَيِّ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۝۳۶ فَإِذَا انشَقَّتِ السَّمَاءُ							
आस्मान	फट जाएगा	फिर जब	36	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	35
فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ۝۳۷ فَبَيَّ الْأَيِّ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۝۳۸							
38	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	37	जैसे सुर्ख चमड़ा	गुलाबी	तो वह होगा

उस ने इन्सान को पैदा किया खंखनाती मिट्टी से ठिकरी जैसी। (14) और जिन्नात को शोले वाली आग से पैदा किया। (15) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (16) रब है दोनों मशरिफ़ों और दोनों मग़रिबों का। (17) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (18) उस ने दो दर्या बहाए एक दूसरे से मिले हुए। (19) उन दोनों के दरमियान एक आड़ है, वह (एक दूसरे से) नहीं मिलते। (20) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (21) उन दोनों से निकलते हैं मोती और मूंगे। (22) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (23) और उसी के लिए हैं चलने वाली कशतियां दर्या में पहाड़ों की तरह। (24) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (25) ज़मीन पर जो कोई है फना होने वाला है। (26) और बाक़ी रहेगी साहिबे अज़मत एहसान करने वाले तेरे रब की ज़ात। (27) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (28) जो कोई आस्मानों और ज़मीन में है, वह उसी से मांगता है, वह हर रोज़ किसी न किसी काम (नए हाल) में है। (29) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (30) ऐ जिन्न ओ इन्स! (सब से फ़ारिग हो कर) हम जल्द तुम्हारी तरफ़ मुतबज्जुह होते हैं। (31) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (32) ऐ गिरोहे जिन्न और इन्स, अगर तुम से हो सके निकल भागने आस्मानों और ज़मीन के किनारों से तो निकल भागो, तुम नहीं निकल सकोगे, उस के लिए बड़ा ज़ोर चाहिए। (33) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (34) तुम पर भेज दिया जाएगा एक शोला आग से, और धुआँ, तो मुकाबला न कर सकोगे। (35) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (36) फिर जब फट जाएगा आस्मान, तो वह सुर्ख चमड़े जैसा गुलाबी हो जाएगा। (37) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (38)

पस उस दिन न पूछा जाएगा उस के (अपने) गुनाहों के बारे में किसी इन्सान से और न जिन्न से। (39) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (40) मुजरिम पहचाने जाएंगे अपनी पेशानी से, फिर वह पेशानियों के (बालों) से और कदमों से पकड़े जाएंगे। (41) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (42) यह है वह जहननम जिसे गुनाहगार झुटलाते थे। (43) वह उस के और खीलते हुए गर्म पानी के दरमियान फिरेंगे। (44) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (45) और जो अपने रब के हजूर खड़ा होना से डरा, उस के लिए दो बाग हैं। (46) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे। (47) बहुत सी शाखों वाले। (48) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (49) (उन बागों में) दो चशमे जारी है। (50) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (51) उन दोनों (बागों) में हर मेवे की दो, दो किसमें है। (52) तो कौन सी नेमतों को अपने रब की तुम झुटलाओगे? (53) फर्शा पर तकिया (लगाए होंगे) जिन के असतर रेशम के होंगे, और दोनों बागों के मेवे नज़्दीक होंगे। (54) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (55) उन में निगाहें नीची रखने वालीयों हैं, उन्हें हाथ नहीं लगाया किसी इन्सान ने उन से क़व्ल और न किसी जिन्न ने। (56) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (57) गोया वह याकूत और मूंगे हैं। (58) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (59) एहसान का बदला एहसान के सिवा और क्या हो सकता है। (60) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (61) और उन दोनों के अलावा दो बाग और भी है। (62) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (63) निहायत गहरे सब्ज़ रंग के। (64) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (65) उन दोनों (बागात) में दो चशमे हैं फ़ौवारों की तरह उबलते हुए। (66)

فَيَوْمَئِذٍ لَا يُسْأَلُ عَنْ ذَنْبِهِ إِنْسٌ وَلَا جَانٌّ ﴿٣٩﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا									
अपने रब	तो कौन सी नेमतों	39	और न जिन्न	किसी इन्सान	उस के गुनाहों के मुतअख़िक्	न पूछा जाएगा	पस उस दिन		
تُكذِّبِينَ ﴿٤٠﴾ يُعْرِفُ الْمُجْرِمُونَ بِسِيمِهِمْ فَيُؤْخَذُ بِالتَّوَاصِي									
पेशानियों से	फिर वह पकड़े जाएंगे		अपनी पेशानी से	मुजरिम (जमा)	पहचाने जाएंगे	40	तुम झुटलाओगे		
وَالْأَقْدَامِ ﴿٤١﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ﴿٤٢﴾ هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكذِّبُ									
झुटलाते है	वह जिसे	जहननम	यह	42	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों		
بِهَا الْمُجْرِمُونَ ﴿٤٣﴾ يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ إِنْ ﴿٤٤﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ									
तो कौन सी नेमतों	44	खीलते हुए	गर्म पानी	और दरमियान	उस के दरमियान	वह फिरेंगे	43	उसे मुजरिम (जमा) गुनाहगार	
رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ﴿٤٥﴾ وَلَمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّاتٍ ﴿٤٦﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ									
तो कौन सी नेमतों	46	दो बाग	अपने रब के हजूर खड़ा होना	जो डरा	और उस के लिए	45	तुम झुटलाओगे	अपने रब	
رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ﴿٤٧﴾ ذَوَاتَا أَفْنَانٍ ﴿٤٨﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ﴿٤٩﴾ فِيهِمَا									
उन दोनों में	49	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	48	बहुत सी शाखों वाले	47	तुम झुटलाओगे	अपने रब
عَيْنِينَ تَجْرِينَ ﴿٥٠﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ﴿٥١﴾ فِيهِمَا مِنْ كُلِّ									
हर	से-की	उन दोनों में	51	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	50	जारी है	दो चशमे
فَاكِهَةٍ زَوْجَيْنِ ﴿٥٢﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ﴿٥٣﴾ مُتَكِينِينَ عَلَى فُرُشٍ									
फर्शा पर	तकिया लगाए हुए	53	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	52	दो किसमें	मेवे	
بَطَانِيهَا مِنْ اسْتَبْرَقٍ وَجَنَّاتٍ دَانٍ ﴿٥٤﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا									
अपने रब	तो कौन सी नेमतों	54	नज़्दीक	दोनों बाग	और मेवे	रेशम के	उन के असतर		
تُكذِّبِينَ ﴿٥٥﴾ فِيهِنَّ قُصِرَتِ الطَّرْفُ لَمْ يَطْمِئِنَّ إِنْسٌ قَبْلَهُمْ									
उन से क़व्ल	इन्सान ने	उन्हें हाथ नहीं लगाया किसी	निगाहें	बन्द (नीचे) रखने वाली	उन में	55	तुम झुटलाओगे		
وَلَا جَانٌّ ﴿٥٦﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ﴿٥٧﴾ كَاتِهِنَّ الْيَاقُوتُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٥٨﴾									
58	और मूंगे	याकूत	गोया कि	57	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	56	और न किसी जिन्न
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ﴿٥٩﴾ هَلْ جَزَاءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا									
सिवा	एहसान	क्या बदला	59	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों			
الْإِحْسَانُ ﴿٦٠﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ﴿٦١﴾ وَمِنْ دُونِهِمَا									
और उन दोनों के अलावा	61	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	60	एहसान			
جَنَّاتٍ ﴿٦٢﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ﴿٦٣﴾ مُدْهَامَاتٍ ﴿٦٤﴾									
64	निहायत गहरे सब्ज़ रंग के	63	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	62	दो बाग		
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ﴿٦٥﴾ فِيهِمَا عَيْنِينَ نَضَّاحَتَيْنِ ﴿٦٦﴾									
66	वशिद्वत् जोश मारने वाले	दो चशमे	उन दोनों में	65	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों		

وقف لازم  
٢٠  
١١



فَبَيِّ الْآءِ رَبِّكَمَا تُكَذِّبِنِ ﴿٦٧﴾ فِيهِمَا فَآكِهَةٌ وَنَخْلٌ وَرُمَّانٌ ﴿٦٨﴾									
68	और अनार	खजूर के दरख़्त	मेवे	उन दोनों में	67	तुम झुटलाओगे	अपने रब तो कौन सी नेमतों		
فَبَيِّ الْآءِ رَبِّكَمَا تُكَذِّبِنِ ﴿٦٩﴾ فِيهِنَّ خَيْرَاتٌ حِسَانٌ ﴿٧٠﴾ فَبَيِّ الْآءِ رَبِّكَمَا تُكَذِّبِنِ ﴿٧١﴾ حُورٌ مَّقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ ﴿٧٢﴾ فَبَيِّ الْآءِ رَبِّكَمَا تُكَذِّبِنِ ﴿٧٣﴾ لَمْ يَطْمِئِنَّهُنَّ أَنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ﴿٧٤﴾ فَبَيِّ الْآءِ رَبِّكَمَا تُكَذِّبِنِ ﴿٧٥﴾ مُتَكَبِّرِينَ عَلَى رَفْرَفٍ خُضِرٍ وَعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ﴿٧٦﴾									
70	खूबसूरत	खूब सीरत	उन में	69	तुम झुटलाओगे	अपने रब तो कौन सी नेमतों	तो कौन सी नेमतों		
فَبَيِّ الْآءِ رَبِّكَمَا تُكَذِّبِنِ ﴿٧٧﴾ تَبْرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ﴿٧٨﴾									
72	खेमों में	रुकी रहने वाली (पर्दा नशीन)	हूरें	71	तुम झुटलाओगे	अपने रब तो कौन सी नेमतों	अपने रब		
فَبَيِّ الْآءِ رَبِّكَمَا تُكَذِّبِنِ ﴿٧٩﴾ أُولَئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا يُصَلُّونَ بِأَعْيُنِهِمْ وَعَدُوهُمْ لَمْ يُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَفَتُؤْتُونَهُم مَّا كَفَرُوا بِأَن يَكْفُرُوا لَئِن تَوَدَّعْتُمْ أَن تُكْفِرُوا بِاللَّهِ إِنَّكُمْ لَفِي غِيبٍ ﴿٨٠﴾									
74	और न किसी जिन्न	उन से कब्ल	किसी इन्सान	उन्हें हाथ नहीं लगाया	73	तुम झुटलाओगे	अपने रब तो कौन सी नेमतों		
فَبَيِّ الْآءِ رَبِّكَمَا تُكَذِّبِنِ ﴿٨١﴾ تَبْرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ﴿٨٢﴾									
76	नफ़ीस	और खूबसूरत	सब्ज़	मसन्दों पर	तकिया लगाए हुए	75	तुम झुटलाओगे		
فَبَيِّ الْآءِ رَبِّكَمَا تُكَذِّبِنِ ﴿٨٣﴾ تَبْرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ﴿٨٤﴾									
78	और एहसान करने वाला	साहिबे जलाल	तुम्हारा रब	नाम	बरकत वाला	77	तुम झुटलाओगे	अपने रब तो कौन सी नेमतों	
آيَاتُهَا ٩٦ ﴿٥٦﴾ سُورَةُ الْوَاقِعَةِ ﴿٥٦﴾ رُكُوعَاتُهَا ٣									
(56) सूरतुल वाकिअ़ा वाके होनेवाली									
आयात 96									
رُكُوعَاتُهَا 3									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١﴾ لَيْسَ لَوْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ﴿٢﴾ خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ﴿٣﴾ إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًا ﴿٤﴾ وَبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ﴿٥﴾									
2	कुछ झूट	उस के वाके होने में	नहीं	1	वाके होने वाली	वाके हो जाएगी	जब		
رَّافِعَةٌ ﴿٣﴾ إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًا ﴿٤﴾ وَبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ﴿٥﴾									
5	और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे पहाड़, रेज़ा रेज़ा हो कर	4	सख़्त ज़लज़ला	ज़मीन	लरज़ने लगेगी	जब	3	बुलन्द करने वाली	
فَكَانَتْ هَبَاءً مُنْبَثًا ﴿٦﴾ وَكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلَاثَةً ﴿٧﴾ فَاصْحَبِ الْمَيْمَنَةَ ﴿٨﴾ مَّا أَصْحَبِ الْمَيْمَنَةَ ﴿٩﴾									
7	तो दाएं हाथ वाले	7	तीन	जोड़े (गिरोह)	और तुम हो जाओगे	6	परागन्दा	गुबार	फिर हो जाएंगे
فَكَانَتْ هَبَاءً مُنْبَثًا ﴿٦﴾ وَكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلَاثَةً ﴿٧﴾ فَاصْحَبِ الْمَيْمَنَةَ ﴿٨﴾ مَّا أَصْحَبِ الْمَيْمَنَةَ ﴿٩﴾									
9	बाएं हाथ वाले	क्या	और बाएं हाथ वाले	8	दाएं हाथ वाले	क्या	क्या		
وَالسَّبِقُونَ السَّبِقُونَ ﴿١٠﴾ أُولَئِكَ الْمُقَرَّبُونَ ﴿١١﴾ فِي جَنَّتِ النَّعِيمِ ﴿١٢﴾ ثَلَاثَةٌ مِنَ الْأُولَى ﴿١٣﴾ وَقَلِيلٌ مِنَ الْآخِرِينَ ﴿١٤﴾									
11	मुक़र्रब (जमा)	यही है	10	सबक़त ले जाने वाले हैं	और सबक़त ले जाने वाले	11	बागात में		
وَالسَّبِقُونَ السَّبِقُونَ ﴿١٠﴾ أُولَئِكَ الْمُقَرَّبُونَ ﴿١١﴾ فِي جَنَّتِ النَّعِيمِ ﴿١٢﴾ ثَلَاثَةٌ مِنَ الْأُولَى ﴿١٣﴾ وَقَلِيلٌ مِنَ الْآخِرِينَ ﴿١٤﴾									
14	पिछलों से-में	और थोड़े	13	पहलों से-में	बड़ी जमाअ़त	12	नेमत		
عَلَى سُرُرٍ مَّوْضُونَةٍ ﴿١٥﴾ مُتَكَبِّرِينَ عَلَيْهَا مُتَقَبِّلِينَ ﴿١٦﴾									
16	आमने सामने	उस पर	तकिया लगाए हुए	15	सोने के तारों से बुने हुए	तख़्तों पर	16		

तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (67) उन दोनों (बागात) में मेवे औ खजूर के दरख़्त और अनार होंगे। (68) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (69) उन में खूब सीरत, खूबसूरत (बीवियां) होंगी। (70) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (71) खेमों में पर्दा नशीन हूरें। (72) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (73) और उन से कब्ल उन्हें हाथ नहीं लगाया किसी इन्सान ने और न किसी जिन्न ने। (74) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (75) सब्ज़, खूबसूरत, नफ़ीस मसन्दों पर तकिया लगाए हुए। (76) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (77) तुम्हारे साहिबे जलाल, एहसान करने वाले रब का नाम बरकत वाला है। (78) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है जब वाके हो जाएगी वाके होने वाली (कियामत)। (1) उस के वाके होने में कुछ झूट नहीं। (2) (किसी को) पस्त करने वाली (किसी को) बुलन्द करने वाली। (3) जब ज़मीन सख़्त ज़लज़ले से लरज़ने लगेगी। (4) और पहाड़ टूट फूट कर रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे। (5) फिर परागन्दा गुबार हो जाएंगे। (6) और तुम हो जाओगे तीन गिरोह। (7) तो दाएं हाथ वाले (सुबहानल्लाह) क्या हैं दाएं हाथ वाले! (8) और बाएं हाथ वाले (अफ़सोस) क्या हैं बाएं हाथ वाले! (9) और सबक़त ले जाने वाले (माशा अल्लाह) सबक़त ले जाने वाले हैं! (10) यही हैं (अल्लाह के) मुक़र्रब। (11) नेमतों वाले बागात में। (12) बड़ी जमाअ़त पहलों में से। (13) और थोड़े पिछलों में से। (14) सोने के तारों से बुने हुए तख़्तों पर। (15) तकिया लगाए हुए उस पर आमने सामने (बैठे हुए)। (16)

٢٣

وقف الائم

उन के इर्द गिर्द लड़के फिरंगे हमेशा (लड़के ही) रहने वाले। (17) आबखोरों और सुराहियों के साथ और साफ शराब के पियालों (के साथ)। (18) न उस से उन्हें दर्द सर होगा और न उन की अक्ल में फूतूर आएगा। (19) और मेवे जो वह पसंद करेंगे। (20) और परिन्दों का गोशत जो वह चाहेंगे। (21) और बड़ी बड़ी आँखों वाली हूरें, (22) जैसे मोती (के दाने) सीपी में छुपे हुए। (23) उस की जज़ा जो वह करते थे। (24) वह उस में न बेहूदा बात सुनेंगे और न गुनाह की बात। (25) मगर “सलाम सलाम”, मतलब कि ठीक ठीक बात होगी। (26) और दाएं हाथ वाले (सुबहानल्लाह) क्या हैं दाएं हाथ वाले! (27) बेरियों में बेखार वाली। (28) और तह दर तह केले। (29) और दराज़ साया। (30) और गिरता हुआ पानी (झरने)। (31) और कसीर मेवे। (32) न (वह) ख़तम होंगे और न (उन्हें) कोई रोक टोक (होगी)। (33) और ऊँचे ऊँचे फर्श। (34) वेशक हम ने उन्हें खूब उठान दी। (35) पस हम उन्हें कुंवारी बना देंगे, (36) महबूब, हम उम्र। (37) दाएं हाथ वालों के लिए। (38) बहुत से अगलों मे से, (39) और बहुत से पिछलों में से। (40) और बाएं हाथ वाले (अफ्सोस) क्या हैं बाएं हाथ वाले! (41) गर्म हवा और खौलते हुए पानी में। (42) और धुएँ के साए में। (43) न कोई ठंडक और न कोई फर्हत। (44) वेशक वह उस से कब्ल नेमत में पले हुए थे। (45) और वह भारी गुनाह पर अड़े हुए थे। (46) और वह कहते थे: क्या जब हम मर गए और (मिट्टी में मिल कर) मिट्टी हो गए और हड्डियां (हो गए) क्या हम दोबारा ज़रूर उठाए जाएंगे? (47) क्या हमारे बाप दादा भी? (48) आप (स) कह दें: वेशक पहले और पिछले। (49) ज़रूर जमा किए जाएंगे एक दिन जिस का वक़्त मुकर्रर है। (50) फिर वेशक तुम ऐ झुटलाने वाले गुमराह लोगो! (51)

يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وَلِدَانٌ مُّخَلَّدُونَ ﴿١٧﴾ بَاكُوبٍ وَأَبَارِيْقٍ وَكَاسٍ										
और पियाले	और सुराहियां	कटोरों के साथ	17	हमेशा रहने वाले	लड़के	उन के	इर्द गिर्द फिरंगे			
مِّنْ مَّعِينٍ ﴿١٨﴾ لَا يُصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُونَ ﴿١٩﴾ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا										
उस से जो	और मेवे	19	और न उन की अक्ल में फूतूर आएगा	उस से	न उन्हें दर्द सर होगा	18	साफ शराब से-के			
يَتَخَيَّرُونَ ﴿٢٠﴾ وَلَحْمٍ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٢١﴾ وَحُورٌ عِينٌ ﴿٢٢﴾ كَأَمْثَالِ										
जैसे	22	और बड़ी आँखों वाली हूरें	21	वह चाहेंगे	वह जो	और परिन्दों का गोशत	20	वह पसंद करेंगे		
اللُّلُؤِ الْمَكْنُونِ ﴿٢٣﴾ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٤﴾ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا										
उस में	वह न सुनेंगे	24	जो वह करते थे	उस की	जज़ा	23	(सीपी में) छुपे हुए	मोती		
لَعْوًا وَلَا تَأْتِيَمًا ﴿٢٥﴾ إِلَّا قِيْلًا سَلَامًا سَلَامًا ﴿٢٦﴾ وَأَصْحَابُ الْيَمِينِ ﴿٢٧﴾ مَا										
क्या	और दाएं हाथ वाले	26	सलाम सलाम	कलाम	मगर	25	और न गुनाह की बात	बेहूदा बात		
أَصْحَابُ الْيَمِينِ ﴿٢٧﴾ فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ ﴿٢٨﴾ وَطَلْحٍ مَّنْضُودٍ ﴿٢٩﴾ وَظِلِّ مَمْدُودٍ ﴿٣٠﴾										
30	लमबा-दराज़	और साया	29	तह दर तह और केले	28	बेखार वाली	बेरियों में	27	दाएं हाथ वाले	
وَمَاءٍ مَّسْكُوبٍ ﴿٣١﴾ وَفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ﴿٣٢﴾ لَا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ ﴿٣٣﴾										
33	और न कोई रोक टोक	न ख़तम होने वाला	32	कसीर	और मेवे	31	गिरता हुआ	और पानी		
وَفُرْشٍ مَّرْفُوعَةٍ ﴿٣٤﴾ إِنَّا أَنشَأْنَهُنَّ إِنشَاءً ﴿٣٥﴾ فَجَعَلْنَهُنَّ أَبْكَارًا ﴿٣٦﴾										
36	कुंवारी (जमा)	पस हम ने उन्हें बनाया	35	खूब उठान	उन्हें उठान दी	वेशक हम	34	ऊँचे	और फर्श (जमा)	
عُزْبًا أْتَرَابًا ﴿٣٧﴾ لِأَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٣٨﴾ ثَلَاثَةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ ﴿٣٩﴾ وَثَلَاثَةٌ										
और बहुत से	39	अगलों में से	बहुत से	38	दाएं हाथ वालों के लिए	37	महबूब हम उम्र			
مِّنَ الْآخِرِينَ ﴿٤٠﴾ وَأَصْحَابُ الشِّمَالِ ﴿٤١﴾ مَا أَصْحَابُ الشِّمَالِ ﴿٤١﴾ فِي سَمُومٍ										
गर्म हवा	में	41	बाएं हाथ वाले	क्या	और बाएं हाथ वाले	40	पिछलों में से			
وَحَمِيمٍ ﴿٤٢﴾ وَظِلٍّ مِّنْ يَحْمُومٍ ﴿٤٣﴾ لَا بَارِدٍ وَلَا كَرِيمٍ ﴿٤٤﴾ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ										
इस से कब्ल	थे	वेशक वह	44	और न फर्हत	न कोई ठंडक	43	धुआँ से-के	और साया	42	और खौलता हुआ पानी
مُتَرْفِينَ ﴿٤٥﴾ وَكَانُوا يُصِرُّونَ عَلَى الْحِنثِ الْعَظِيمِ ﴿٤٦﴾										
46	गुनाह भारी	पर	अड़े हुए	और वह थे	45	नेमत में पले हुए				
وَكَانُوا يَقُولُونَ ﴿٤٧﴾ أَيْنَا وَمَنْ آتَانَا وَعِظَامًا ءَأَنَا لَمَبْعُوثُونَ ﴿٤٧﴾ أَوْ آبَاؤُنَا										
ओर क्या हमारे बाप दादा	47	ज़रूर दोबारा उठाए जाएंगे	क्या हम	और हड्डियां	मिट्टी	और हो गए	हम मर गए	क्या जब	और वह कहते थे	
الْأَوَّلُونَ ﴿٤٨﴾ قُلْ إِنَّ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ ﴿٤٩﴾ لَمَجْمُوعُونَ إِلَىٰ										
तरफ-पर	ज़रूर जमा किए जाएंगे	49	और पिछले	पहले	वेशक	आप (स) कह दें	48	पहले		
مِيقَاتٍ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ﴿٥٠﴾ ثُمَّ إِنَّكُمْ أَنتُمْ الصَّالُّونَ الْمُكَذَّبُونَ ﴿٥١﴾										
51	झुटलाने वाले	गुमराह लोग	ऐ	वेशक तुम	फिर	50	एक मुकर्रर दिन	वक़्त		

لَا كَلُونَ مِنْ شَجَرٍ مِّن رَّقُومٍ ﴿٥٣﴾ فَمَالِئُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ ﴿٥٣﴾							अलबत्ता तुम थोहर के दरख़्त से खाने वाले हो। (52)		
53	पेट (जमा)	उस से	फिर भरना होगा	52	थोहर का	दरख़्त से	अलबत्ता खाने वाले	पस उस से पेट भरना होगा। (53)	
فَشْرِبُونَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيمِ ﴿٥٤﴾ فَشْرِبُونَ شُرْبَ الْهَيْمِ ﴿٥٥﴾							सो उस पर पीना होगा खौलता हुआ पानी। (54)		
55	पयासे ऊँट की तरह पीना	सो पीना होगा	54	खौलता हुआ पानी	से	उस पर	सो पीना होगा	सो पीना होगा पयासे ऊँट की तरह। (55)	
هَذَا نُزْلُهُمْ يَوْمَ الدِّينِ ﴿٥٦﴾ نَحْنُ خَلَقْنَاكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُونَ ﴿٥٧﴾							रोज़े जज़ा उन की यह मेहमानी होगी। (56)		
57	तुम तसदीक करते	सो क्यों नहीं	हम ने पैदा किया	56	रोज़े जज़ा	उन की मेहमानी	यह	हम ने तुम्हें पैदा किया, सो तुम क्यों तसदीक नहीं करते? (57)	
أَفَرَأَيْتُمْ مَا تُمْنُونَ ﴿٥٨﴾ ءَأَنْتُمْ تَخْلُقُونَهُ أَمْ نَحْنُ الْخَالِقُونَ ﴿٥٩﴾							भला देखो तो! जो (नुत्फ़ा) तुम (औरतों के रहम में) डालते हो। (58)		
59	पैदा करने वाले	हम	या	तुम उसे पैदा करते हो	क्या तुम	58	जो तुम डालते हो	भला तुम देखो तो	
نَحْنُ قَدَرْنَا بَيْنَكُمْ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ﴿٦٠﴾ عَلَىٰ							हम ने तुम्हारे दरमियान मौत (का वक़्त) मुक़र्रर किया है, और हम उस से आजिज़ नहीं। (60)		
पर	60	उस से आजिज़	और नहीं हम	मौत	तुम्हारे दरमियान	हम ने मुक़र्रर किया	हम	हम ने तुम्हारे दरमियान मौत (का वक़्त) मुक़र्रर किया है, और हम उस से आजिज़ नहीं। (60)	
أَنْ نُبَدِّلَ أَمْثَالَكُمْ وَنُنشِئَكُمْ فِي مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦١﴾ وَلَقَدْ عَلِمْتُمْ							कि हम बदल दें तुम्हारी शक़्लें और हम पैदा कर दें तुम्हें (ऐसे आ़लम) में जिस को तुम नहीं जानते। (61)		
और यकीनन तुम जान चुके हो	61	तुम नहीं जानते	जो	में	और हम पैदा कर दें तुम्हें	तुम जैसे	कि हम बदल दें	और यकीनन तुम जान चुके हो	
النَّشْأَةَ الْأُولَىٰ فَلَوْلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٦٢﴾ أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَحْرُثُونَ ﴿٦٣﴾ ءَأَنْتُمْ							और यकीनन तुम जान चुके हो पहली पैदाइश तो तुम क्यों ग़ौर नहीं करते? (62)		
क्या तुम	63	जो तुम बोते हो	भला तुम देखो तो	62	तुम ग़ौर करते	तो क्यों नहीं	पैदाइश पहली	भला तुम देखो तो जो तुम बोते हो। (63)	
تَزْرَعُونَهُ أَمْ نَحْنُ الزَّارِعُونَ ﴿٦٤﴾ لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا							क्या तुम उस की काशत करते हो या हम हैं काशत करने वाले? (64)		
रेज़ा रेज़ा	अलबत्ता हम उसे कर दें	अगर हम चाहें	64	काशत करने वाले	हम	या	उस की काशत करते हो	अगर हम चाहें तो अलबत्ता हम उसे कर दें रेज़ा रेज़ा, फिर तुम	
فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُونَ ﴿٦٥﴾ إِنَّا لَمَعْرُومُونَ ﴿٦٦﴾ بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ﴿٦٧﴾							बातें बनाते रह जाओ। (65)		
67	महरूम रह जाने वाले	हम	बल्कि	66	तावान पड़ जाने वाले	वेशक हम	65	बातें बनाते	फिर तुम हो जाओ
أَفَرَأَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرِبُونَ ﴿٦٨﴾ ءَأَنْتُمْ أَنْزَلْتُمُوهُ مِن							(कि) वेशक हम तादान पड़ जाने वाले हो गए। (66)		
से	तुम ने उसे उतारा	क्या तुम	68	तुम पीते हो	जो	पानी	भला तुम देखो तो	भला तुम देखो तो पानी जो तुम पीते हो। (68)	
الْمُنِّ أَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُونَ ﴿٦٩﴾ لَوْ نَشَاءُ جَعَلْنَاهُ أُجَاجًا							क्या तुम ने उसे बादल से उतारा या हम हैं उतारने वाले? (69)		
कड़वा	हम कर दें उसे	हम चाहें	अगर	69	उतारने वाले	या हम	बादल	अगर हम चाहें तो हम उसे कड़वा (खारी) कर दें, तो तुम क्यों शुक्र नहीं करते? (70)	
فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ﴿٧٠﴾ أَفَرَأَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ ﴿٧١﴾ ءَأَنْتُمْ							भला तुम देखो तो जो आग तुम सुलगाते हो, (71)		
क्या तुम	71	तुम सुलगाते हो	जो	आग	भला तुम देखो तो	70	तो क्यों तुम शुक्र नहीं करते	क्या तुम ने उस के दरख़्त पैदा किए या हम हैं पैदा करने वाले? (72)	
أَنْشَأْتُمْ شَجَرَتَهَا أَمْ نَحْنُ الْمُنْشِئُونَ ﴿٧٢﴾ نَحْنُ جَعَلْنَاهَا تَذْكَرَةً							हम ने उसे याद दिलाने वाली बनाया और मुसाफ़िरों के लिए सामाने ज़िन्दगी। (73)		
नसीहत	हम ने उसे बनाया	हम	72	पैदा करने वाले	या हम	उस के दरख़्त	तुम ने पैदा किए	पस तू अपने अज़मत वाले रब के नाम की पाकीज़गी बयान कर। (74)	
وَمَتَاعًا لِلْمُقْوِينَ ﴿٧٣﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٧٤﴾							सो मैं सितारों के मुक़ाम की क़सम खाता हूँ। (75)		
74	अज़मत वाला	अपने रब	नाम से-की	पस तू पाकीज़गी बयान कर	73	हाज़त मंदों के लिए	और सामान	और वेशक यह एक बड़ी क़सम है अगर तुम ग़ौर करो। (76)	
فَلَا أُقْسِمُ بِمَوْعِدِ النُّجُومِ ﴿٧٥﴾ وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ لَّو تَعْلَمُونَ عَظِيمٌ ﴿٧٦﴾							और वेशक यह एक बड़ी क़सम है अगर तुम ग़ौर करो। (76)		
76	बड़ी	अगर तुम जानो (ग़ौर करो)	एक क़सम है	और वेशक यह	75	सितारे (जमा)	मुक़ाम की	सो मैं क़सम खाता हूँ	

वेशक यह कुरआन है गिरामी क़द्र। (77)

यह एक पोशीदा किताब (लौहे महफूज़) में है। (78)

उसे हाथ नहीं लगाते सिवाए पाक लोग। (79)

तमाम जहानों के रब (की तरफ) से उतारा हुआ। (80)

पस क्या तुम इस बात को यूँ ही टालने वाले? (81)

और तुम बनाते हो झुटलाने को अपना वज़ीफ़ा। (82)

फिर क्यों नहीं जब (किसी की जान) पहुँचती है हलक़ को, (83)

और उस वक़्त तुम तकते हो। (84)

और हम तुम से भी ज़ियादा उस के करीब (होते हैं) लेकिन तुम नहीं देखते। (85)

अगर तुम खुद मुख़्तार हो तो क्यों नहीं? (86)

तुम उसे (निकलती जान को) लौटा लेते अगर तुम सच्चे हो। (87)

पस जो (मरने वाला) अगर मुकर्रब लोगों में से हो। (88)

तो (उस के लिए) राहत और खुशबूदार फूल और नेमतों के बाग़ है। (89)

और अलबत्ता अगर वह दाएँ हाथ वालों में से हो। (90)

पस तेरे लिए सलामती कि तू दाएँ हाथ वालों से है। (91)

और अगर गुमराह, झुटलाने वालों में से हो। (92)

तो (उस की) मेहमानी खौलता हुआ पानी है, (93)

और दोज़ख़ में झोंका जाना। (94)

वेशक यह अलबत्ता यकीनी बात है। (95)

पस आप (स) पाकीज़गी बयान करें अपने अज़मत वाले रब के नाम की। (96)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है पाकीज़गी से याद करता है अल्लाह को जो (भी) आस्मानों और ज़मीन में है, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (1)

उसी के लिए वादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की, वही ज़िन्दगी देता है और वही मौत देता है, और वह हर शै पर कुदरत रखने वाला। (2)

वही अच्चल और (वही) आख़िर, और ज़ाहिर और वातिन, और वह हर शै को खूब जानने वाला। (3)

إِنَّهُ لَقُرْآنٌ كَرِيمٌ ﴿٧٧﴾ فِي كِتَابٍ مَّكْنُونٍ ﴿٧٨﴾ لَا يَمَسُّهُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ ﴿٧٩﴾										
79	सिवाए पाक	उसे हाथ नहीं लगाते	78	पोशीदा	एक किताब	में	77	कुरआन है गिरामी क़द्र	वेशक यह	
تَنْزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٨٠﴾ أَفَبِهَذَا الْحَدِيثِ أَنْتُمْ مُدْهِنُونَ ﴿٨١﴾										
81	यूँ ही टालने वाले	तुम	बात	तो क्या इस	80	तमाम जहानों	रब से	उतारा हुआ		
وَتَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَنْتُمْ تُكَذِّبُونَ ﴿٨٢﴾ فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ الْحُلُقُومَ ﴿٨٣﴾										
83	हलक़ को	पहुँचती है	जब	फिर क्यों नहीं	82	झुटलाते हो	कि तुम	अपना रिज़क़ (वज़ीफ़ा)	और तुम बनाते हो	
وَأَنْتُمْ حَيِّدٌ تَنْظُرُونَ ﴿٨٤﴾ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلَكِنْ لَا تُبْصِرُونَ ﴿٨٥﴾ فَلَوْلَا إِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ﴿٨٦﴾ تَرْجِعُونَهَا										
	और लेकिन	तुम से	उस के	ज़ियादा करीब	और हम	84	तकते हो	उस वक़्त	और तुम	
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٨٧﴾ فَمَا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٨٨﴾ فَرَوْحٌ										
	और तुम	तुम से	उस के	ज़ियादा करीब	और हम	84	तकते हो	उस वक़्त	और तुम	
وَرَيْحَانٌ وَجَنَّتْ نَعِيمٍ ﴿٨٩﴾ وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٩٠﴾										
85	तुम नहीं देखते	86	किसी के कहर में न आने वाले (खुद मुख़्तार)	अगर तुम	तो क्यों नहीं	85	तुम नहीं देखते			
فَسَلِّمْ لَكَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٩١﴾ وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُكْذِبِينَ										
	तो राहत	88	मुकर्रब लोग	से	अगर हो	पस जो	87	सच्चे (जमा)	अगर तुम	
الضَّالِّينَ ﴿٩٢﴾ فَنُزِّلٌ مِّنْ حَمِيمٍ ﴿٩٣﴾ وَتَصْلِيَةٌ جَهِيمٍ ﴿٩٤﴾ إِنْ										
90	दाएँ हाथ वाले	से	अगर वह हो	और अलबत्ता	89	नेमतों के	और बाग़	और खुशबूदार फूल		
هُدَا لَّهُوَ حَقُّ الْيَقِينِ ﴿٩٥﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٩٦﴾										
91	दाएँ हाथ वाले	से	अगर वह हो	और अलबत्ता	91	दाएँ हाथ वालों	से	तेरे लिए	तो सलामती	
أَجْزَمَتِ الْوَالِدَاتُ وَرَبُّنَّ وَأَنْتُمْ تُؤْمِنُنَّ وَالْوَالِدَاتُ بِأَنْفُسِهِنَّ وَالنِّسَاءُ بِمَا كَتَبَ اللَّهُ لَأُولَئِكَ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٩٧﴾										
92	वेशक	94	दोज़ख़	और उसे डाल देना	93	खौलता हुआ पानी	से	तो मेहमानी	92	गुमराह (जमा)
أَيَّاتِهَا ٢٩ ﴿٥٧﴾ سُورَةُ الْحَدِيدِ ﴿٥٧﴾ رُكُوعَاتُهَا ٤										
سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١﴾ لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢﴾ هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٣﴾										
96	अज़मत वाला	अपने रब	पस आप (स) पाकीज़गी बयान करें नाम की	95	यकीनी बात	अलबत्ता यह	यह			
رُكُوعَاتُهَا ٤ (57) سُورَةُ الْحَدِيدِ لُوحًا آيَاتُهَا 29										
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ										
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है										
سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١﴾ لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢﴾ هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٣﴾										
2	उस के लिए वादशाहत	1	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	और ज़मीन	आस्मानों में	जो	पाकीज़गी से याद करता है अल्लाह को	
2 कुदरत रखने वाला हर शै पर और वह और मौत देता है वह ज़िन्दगी देता है और ज़मीन आस्मानों										
3 खूब जानने वाला हर शै को और वह और वातिन और ज़ाहिर और आख़िर अच्चल वही										

هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ							
फिर उस ने करार पकड़ा	दिन	छः (6)	में	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा किया	जिस ने वही
عَلَى الْعَرْشِ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ							
और जो उतरता है	उस से	और जो निकलता है	ज़मीन	में	जो दाखिल होता है	वह जानता है	अर्श पर
مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ وَاللَّهُ بِمَا							
उसे जो	और अल्लाह	तुम हो	जहां कहीं	तुम्हारे साथ	और वह	उस में	और जो चढ़ता है आस्मानों से
تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٤﴾ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ							
लौटना	और अल्लाह की तरफ	और ज़मीन	बादशाहत आस्मानों	उसी के लिए	4	देखने वाला	तुम करते हो
الْأُمُورِ ﴿٥﴾ يُوَلِّجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤَلِّجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَهُوَ							
और वह	रात में	दिन	और दाखिल करता है	दिन में	रात	वह दाखिल करता है	5 तमाम काम
عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٦﴾ آمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأَنْفِقُوا مِمَّا							
उस से जो	और खर्च करो	और उस के रसूल	अल्लाह पर	तुम ईमान लाओ	6	दिलों की बात को	जानने वाला
جَعَلَكُمْ مُسْتَحْلِفِينَ فِيهِ فَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَأَنْفَقُوا							
और उन्होंने ने खर्च किया	तुम में से	वह ईमान लाए	पस जो लोग	उस में	जांशनीन	उस ने तुम्हें बनाया	
لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٧﴾ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالرَّسُولِ يَدْعُوكُمْ							
वह तुम्हें बुलाते हैं	और रसूल	अल्लाह पर	तुम ईमान नहीं लाते	और क्या (हो गया है) तुम्हें	7	बड़ा अजर	उन के लिए
لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٨﴾							
8	ईमान वाले	अगर तुम हो	तुम से अहद	और यकीनन वह ले चुका है	अपने रब पर	कि तुम ईमान लाओ	
هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَىٰ عَبْدِهِ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ							
से	ताकि वह तुम्हें निकाले	वाज़ेह आयात	अपना बन्दा	पर	नाज़िल फ़रमाता है	वही है जो	
الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَإِنَّ اللَّهَ بِكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٩﴾							
9	निहायत मेहरबान	शफ़क़त करने वाला	तुम पर	और बेशक अल्लाह	रोशनी की तरफ़	अन्धेरों से	
وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلِلَّهِ مِيرَاتُ السَّمَوَاتِ							
आस्मानों	और अल्लाह के लिए मीरास	अल्लाह का रास्ता	में	तुम खर्च नहीं करते	और क्या (हो गया है) तुम्हें		
وَالْأَرْضِ لَا يَسْتَوِي مِنْكُمْ مَنْ أَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَاتَلٌ							
और क़िताल किया	फतह	पहले	जिस ने खर्च किया	तुम में से	बराबर नहीं	और ज़मीन	
أُولَٰئِكَ أَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِينَ أَنْفَقُوا مِنْ بَعْدِ وَقَاتَلُوا							
और उन्होंने ने क़िताल किया	बाद में	जिन्होंने ने खर्च किया	से	दरजे	बड़े	यह लोग	
وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١٠﴾							
10	बाख़बर	उस से जो तुम करते हो	और अल्लाह	अच्छा	वादा किया अल्लाह ने	और हर एक	

वही जिस ने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को छः दिन में, फिर उस ने अर्श पर करार पकड़ा, वह जानता है जो ज़मीन में दाखिल होता है और जो उस से निकलता है, और जो आस्मानों से उतरता है और जो उस में चढ़ता है, और वह तुम्हारे साथ है जहां कहीं (भी) तुम हो, और जो तुम करते हो अल्लाह है उसे देखने वाला। (4)

उसी के लिए है आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत, और अल्लाह की तरफ़ है तमाम कामों का लौटना। (5)

वह रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में दाखिल करता है, और वह है खूब जानने वाला दिलों की बात (तक) को। (6)

तुम अल्लाह और उस के रसूल (स) पर ईमान लाओ और उस (माल) में से खर्च करो जिस में उस ने तुम्हें जांशनीन बनाया है, पस तुम में से जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने खर्च किया, उन के लिए बड़ा अजर है। (7)

और तुम्हें क्या हो गया? कि तुम ईमान नहीं लाते अल्लाह और उस के रसूल (स) पर, जबकि वह तुम्हें बुलाते हैं कि तुम अपने रब पर ईमान ले आओ, और वह यकीनन तुम से अहद ले चुका है अगर तुम ईमान वाले हो। (8)

वही है जो अपने बन्दे पर वाज़ेह आयात नाज़िल फ़रमाता है, ताकि वह तुम्हें निकाले अन्धेरों से रोशनी की तरफ़, और बेशक अल्लाह तुम पर शफ़क़त करने वाला मेहरबान है। (9)

और तुम्हें क्या हो गया? कि तुम खर्च नहीं करते अल्लाह के रास्ते में, और अल्लाह के लिए है आस्मानों और ज़मीन की मीरास (बाकी रह जाने वाला सब), तुम में से बराबर नहीं वह जिस ने खर्च किया और क़िताल किया फतह (मक्का) से पहले, यह लोग दरजे में (उन) से बड़े हैं जिन्होंने ने बाद में खर्च किया और उन्होंने ने क़िताल किया, और अल्लाह ने हर एक से अच्छा वादा किया है और जो तुम करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (10)

कौन है जो अल्लाह को कर्ज़ दे? कर्ज़ हसना (अच्छा कर्ज़), पस वह उस को दोगुना बढ़ादे और उस के लिए बड़ा अम्दा अजर है। (11) जिस दिन तुम मोमिन मर्दाँ और मोमिन औरतों को देखोगे कि उन का नूर उन के सामने और उन के दाएं दौड़ता होगा, तुम्हें आज खुशखबरी है बागात की जिन के नीचे बहती है नहरें, वह उन में हमेशा रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है। (12) जिस दिन कहेंगे मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें उन लोगों को जो ईमान लाए, हमारी तरफ़ निगाह करो, हम तुम्हारे नूर से (कुछ) हासिल कर लें, कहा जाएगा: अपने पीछे लौट जाओ, पस (वहां) नूर तलाश करो। फिर उन के दरमियान एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी, उस का एक दरवाज़ा होगा, उस के अन्दर रहमत और उस के बाहर की तरफ़ अज़ाब होगा। (13) वह (मुनाफ़िक़) उन (मुसलमानों) को पुकारेंगे: क्या हम तुम्हारे साथ न थे? वह कहेंगे: हाँ (क्यों नहीं!) लेकिन तुम ने अपनी जानों को फ़ित्ने में डाला, और तुम इन्तिज़ार करते और शक करते थे और तुम्हें तुम्हारी झूटी आर्जूओं ने धोके में डाला यहां तक कि अल्लाह का हुक्म आ गया और अल्लाह के बारे में तुम्हें धोका देने वाले (शैतान) ने धोके में डाला। (14) सो आज न तुम से कोई फ़िदया लिया जाएगा और न उन लोगों से जिन्होंने कुफ़ किया, तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है, यह तुम्हारी ख़बर गीरी करने वाली और बुरी लौटने की जगह है। (15) क्या मोमिनों के लिए अभी वक़्त नहीं आया? कि उन के दिल अल्लाह की याद के लिए झुक जाएं और (उस के लिए) जो हक़ तज़ाला की तरफ़ से नाज़िल हुआ है, और वह उन लोगों की तरह न हो जाएं जिन्हें इस से क़ब्ल किताब दी गई, फिर एक लम्बी मुदत उन पर गुज़र गई तो उन के दिल सख़्त हो गए, और उन में से अक़्सर नाफ़रमान हैं। (16) (ख़ुब) जान लो कि अल्लाह ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िन्दा करता है। तहकीक़ हम ने तुम्हारे लिए निशानियां बयान कर दी हैं ताकि तुम समझो। (17)

مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضِعْفَهُ لَهُ وَلَئِ									
और उस के लिए	उस को	पस बढ़ादे वह उस को दोगुना	कर्ज़ हसना	कर्ज़ दे अल्लाह को	कौन है जो				
أَجْرٌ كَرِيمٌ ﴿١١﴾ يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَى نُورُهُمْ									
उन का नूर	दौड़ता होगा	और मोमिन औरतों	मोमिन मर्दाँ	तुम देखोगे	जिस दिन	11	अजर बड़ा उम्दा		
بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ بُشْرُكُمُ الْيَوْمَ جَنَّتُ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا									
उन के नीचे	बहती है	बागात	आज	खुशखबरी तुम्हें	और उन के दाएं	उन के सामने			
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٢﴾ يَوْمَ يَقُولُ									
जिस दिन कहेंगे	12	कामयाबी बड़ी	वह-यह	यह	उस में	वह हमेशा रहेंगे	नहरें		
الْمُنْفِقُونَ وَالْمُنْفِقَاتُ لِلَّذِينَ آمَنُوا انظُرُونَا نَقْتَبِسْ مِنْ									
से	हम हासिल कर लें	हमारी तरफ़ निगाह करो	वह ईमान लाए	उन लोगों को जो	और मुनाफ़िक़ औरतें	मुनाफ़िक़ मर्द (जमा)			
نُورِكُمْ قِيلَ ارْجِعُوا وَرَاءَكُمْ فَالْتَمِسُوا نُورًا فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ									
उन के दरमियान	फिर मारी (खड़ी कर दी) जाएगी	नूर	फिर तुम तलाश करो	अपने पीछे	लौट जाओ तुम	कहा जाएगा	तुम्हारा नूर		
بِسُورٍ لَهُ بَابٌ بَاطِنُهُ فِيهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهُ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ﴿١٣﴾									
13	अज़ाब	उस की तरफ़ से	और उस के बाहर	रहमत	उस में	उस के अन्दर	एक दरवाज़ा	उस का	एक दीवार
يُنَادُونَهُمْ أَلَمْ نَكُنْ مَعَكُمْ قَالُوا بَلَىٰ وَلَكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ أَنْفُسَكُمْ									
अपनी जानों को	तुम ने फ़ित्ने में डाला	और लेकिन तुम	हाँ	वह कहेंगे	तुम्हारे साथ	क्या हम न थे	वह उन्हें पुकारेंगे		
وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْأَمَانِيُّ حَتَّىٰ جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ									
अल्लाह का हुक्म	आ गया	यहां तक कि	तुम्हारी झूटी आर्जूएं	और तुम्हें धोके में डाला	और तुम शक करते थे	और तुम इन्तिज़ार करते			
وَغَرَّتْكُمْ بِاللَّهِ الْغُرُورُ ﴿١٤﴾ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَلَا مِنَ									
से	और न	कोई फ़िदया	तुम से	न लिया जाएगा	सो आज	14	धोका देने वाला	अल्लाह के बारे में	और तुम्हें धोके में डाला
الَّذِينَ كَفَرُوا مَا أُولَئِكَ النَّارُ هِيَ مَوْلَاكُمْ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٥﴾									
15	लौटने की जगह	और बुरी	तुम्हारी मौला	यह	जहन्नम	ठिकाना तुम्हारा	कुफ़ किया	वह लोग जिन्होंने ने	
أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ وَمَا نَزَلَ									
और जो नाज़िल हुआ	अल्लाह की याद के लिए	उन के दिल	झुक जाएं	कि	उन लोगों के लिए जो ईमान लाए (मोमिन)	क्या नज़दीक (वक़्त) नहीं आया			
مِنَ الْحَقِّ وَلَا يَكُونُوا كَالَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ									
तो दराज़ हो गई	इस से क़ब्ल	जिन्हें किताब दी गई	उन लोगों की तरह	और वह न हो जाएं	हक़	से			
عَلَيْهِمُ الْأَمْدُ فَفَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَسِقُونَ ﴿١٦﴾ اِعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ									
कि अल्लाह	तुम जान लो	16	फ़ासिक़ (नाफ़रमान)	उन में से	और कसीर	उन के दिल	फिर सख़्त हो गए	मुदत	उन पर
يُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا قَدْ بَيَّنَّا لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١٧﴾									
17	समझो	ताकि तुम	निशानियां	तुम्हारे लिए	तहकीक़ हम ने बयान कर दी	उस के मरने के बाद	ज़मीन	ज़िन्दा करता है	

<p>إِنَّ الْمُصَّدِّقِينَ وَالْمُصَّدِّقَاتِ وَأَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضَعْفَ لَهُمْ</p>						
वह दो चन्द कर दिया जाएगा उन के लिए	हसना (अच्छा)	क़र्ज़	और जिन्होंने ने क़र्ज़ दिया अल्लाह को	और ख़ैरात करने वाली औरतें	ख़ैरात करने वाले मर्द	वेशक
<p>وَلَهُمْ أَجْرٌ كَرِيمٌ ﴿١٨﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ أُولَئِكَ هُمُ</p>						
वही	यही लोग	और उस के रसूल (जमा)	अल्लाह पर	ईमान लाए	और जो लोग	18
<p>الصَّادِقُونَ وَالشُّهَدَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ لَهُمْ أَجْرُهُمْ وَنُورُهُمْ</p>						
और उन का नूर	उन का अजर	उन के लिए	नज़्दीक अपने रब के	और शहीद (जमा)	सिद्दीक (जमा)	
<p>وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿١٩﴾ اَعْلَمُوا أَنَّمَا</p>						
इस के सिवा नहीं	तुम जान लो	19	दोज़ख़ वाले	यही लोग	हमारी आयतों को झुटलाया	और जिन्होंने ने कुफ़ किया
<p>الْحَيَاةَ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهُمْ وَزِينَةٌ وَتَفَاخُرٌ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ</p>						
और कसूरत की ख़ाहिश	बाहम	और फ़ख़र करना	और ज़ीनत	और कूद	खेल	दुनिया की ज़िन्दगी
<p>فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ كَمَثَلِ غَيْثٍ أَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهُ ثُمَّ يَهِيَجُ</p>						
फिर वह ज़ोर पकड़ती है	उस की पैदावार	काशतकार	भली लगी	वारिश की तरह	और औलाद	मालों में
<p>فَتَرَهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُونُ حُطَامًا وَفِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَمَغْفِرَةٌ</p>						
और मग्फ़िरत	सख़्त अज़ाब	और आख़िरत में	चूरा चूरा	वह हो जाती है	फिर	ज़र्द
<p>مِّنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٌ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ ﴿٢٠﴾</p>						
20	धोके का सामान	मगर - सिर्फ़	दुनिया की ज़िन्दगी	और नहीं	और रज़ा मन्दी	अल्लाह की तरफ़ से
<p>سَابِقُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاءِ</p>						
आस्मान	जैसी चौड़ाई (बुसज़त)	उस की चौड़ाई (बुसज़त)	और जन्नत	अपने रब की तरफ़ से	मग्फ़िरत	तरफ़
<p>وَالْأَرْضِ أَعِدَّتْ لِلَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ</p>						
अल्लाह का फ़ज़ल	यह	और उस के रसूलों	अल्लाह पर	ईमान लाए	उन लोगों के लिए जो	वह तैयार की गई
<p>يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٢١﴾ مَا أَصَابَ مِنْ مُّصِيبَةٍ</p>						
कोई मुसीबत	नहीं पहुँचती	21	बड़े	फ़ज़ल वाला	और अल्लाह	जिसे वह चाहे
<p>فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي أَنْفُسِكُمْ إِلَّا فِي كِتَابٍ مِّن قَبْلِ أَنْ نَبْرَأَهَا إِنَّ</p>						
वेशक	कि हम पैदा करें उस को	उस से कब्ल	किताब में	मगर	तुम्हारी जानों में	और न
<p>ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٢٢﴾ لِكَيْلَا تَأْسَوْا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا</p>						
और न तुम खुश हो	जो तुम से जाती रहे	पर	ताकि तुम ग़म न खाओ	22	आसान	अल्लाह पर
<p>بِمَا آتَاكُمْ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ﴿٢٣﴾ الَّذِينَ يَبْخُلُونَ</p>						
बुख़ल करते हैं	जो लोग	23	फ़ख़र करने वाले	इतराने वाले	हर एक (किसी)	पसंद नहीं करता
<p>وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَمَنْ يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٢٤﴾</p>						
24	सज़ावारे हम्द	वह बेनियाज़	तो वेशक अल्लाह	सुँह फेर ले	और जो	बुख़ल का

वेशक ख़ैरात करने वाले मर्द और ख़ैरात करने वाली औरतें, और जिन्होंने ने अल्लाह को क़र्ज़ हसना (अच्छा क़र्ज़) दिया, वह उन के लिए दो चन्द कर दिया जाएगा, और उन के लिए बड़ा अजरा अजर है। (18) और जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाए, यही लोग हैं अपने रब के नज़्दीक सिद्दीक (सचचे) और शहीद, उन के लिए उन का अजर है और उन का नूर, और जिन्होंने ने कुफ़ किया और हमारी आयतों को झुटलाया, यही लोग दोज़ख़ वाले हैं। (19) तुम (खूब) जान लो, इस के सिवा नहीं कि दुनिया की ज़िन्दगी (महज़) खेल कूद है, और एक ज़ीनत और बाहम फ़ख़र (खुद सताई) करना और कसूरत की ख़ाहिश करना मालों में और औलाद में, वारिश की तरह कि काशतकार को उस की पैदावार भली लगी, फिर वह ज़ोर पकड़ती है, पस तू उस को देखता है ज़र्द, फिर वह चूरा चूरा हो जाती है, और आख़िरत में सख़्त अज़ाब भी है और मग्फ़िरत भी है अल्लाह की तरफ़ से और रज़ा मन्दी, और दुनिया की ज़िन्दगी धोके के सामान के सिवा कुछ भी नहीं। (20) तुम दौड़ो मग्फ़िरत की तरफ़ अपने रब की, और उस जन्नत की तरफ़ जिस की बुसज़त आस्मानों और ज़मीन की बुसज़त जैसी (बराबर) है, उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो ईमान लाए अल्लाह और उस के रसूलों पर, यह अल्लाह का फ़ज़ल है, वह उस को देता है जिसे वह चाहता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़ल वाला है। (21) कोई मुसीबत नहीं पहुँचती ज़मीन में और न तुम्हारी जानों में मगर किताब में (दर्ज) है, इस से पहले कि हम उस को पैदा करें, वेशक यह अल्लाह पर आसान है। (22) ताकि तुम उस पर ग़म न खाओ जो तुम से जाती रहे और न खुश हो जाओ उस पर जो उस ने तुम्हें दिया, और अल्लाह किसी इतराने वाले, फ़ख़र करने वाले को पसंद नहीं करता। (23) जो लोग बुख़ल करते हैं और तरगीब देते हैं लोगों को बुख़ल की, और जो सुँह फेर ले तो वेशक अल्लाह बेनियाज़, सज़ावारे हम्द (सतोदा सिफ़ात) है। (24)

٢  
ع  
١٨

तहकीक हम ने अपने रसूलों को भेजा वाज़ेह दलाइल के साथ और हम ने उन के साथ उतारी किताब और मीज़ाने अदल ताकि लोग इंसाफ़ पर काइम रहें, और हम ने लोहा उतारा, उस में सख़्त ख़तरा (बला की सख़्ती) है और लोगों के लिए कई फ़ायदे हैं, और ताकि अल्लाह मालूम कर ले कि कौन उस की मदद करता है और उस के रसूलों की, बिन देखे, वेशक अल्लाह क़व्वी, ग़ालिब है। (25) और तहकीक हम ने नूह (अ) और इब्राहीम (अ) को भेजा और हम ने उन की औलाद में नुबूवत और किताब रखी। सो उन में से कुछ हिदायत याफ़ता है, और उन में से अक़्सर नाफ़रमान हैं। (26) फिर हम ने उन के क़दमों के निशानात पर (उन के पीछे) अपने रसूल लाए, और उन के पीछे हम ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) को लाए और हम ने उसे इंजील दी, और ज़िन लोगों ने उस की पैरवी की उन के दिलों में नर्मी और मुहब्वत डाल दी। और तरके दुनिया (जिस की रस्म) खुद उन्हीं ने निकाली हम ने उन पर वाजिब न की थी, मगर (उन्हीं ने) अल्लाह की रज़ा चाहने के लिए (इख़्तियार की) तो उस को न निवाहा (जैसे) उस के निवाहने का हक़ था, तो उन में से जो लोग ईमान लाए हम ने उन्हें उन का अजर दिया, और अक़्सर उन में से नाफ़रमान हैं। (27) ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह से डरो और उस के रसूलों पर ईमान लाओ, वह अपनी रहमत से (सवाब के) दो हिस्से अता करेगा और तुम्हारे लिए एसा नूर कर देगा कि तुम उस के साथ चलोगे और वह वख़श देगा तुम्हें, और अल्लाह वख़शने वाला मेहरबान है। (28) ताकि अहले किताब जान लें कि वह अल्लाह के फ़ज़ल में से किसी शौ पर कुदरत नहीं रखते, और यह कि फ़ज़ल अल्लाह के हाथ में है, वह उसे देता है जिस को वह चाहे और अल्लाह बड़े फ़ज़ल वाला है। (29)

لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتَابَ						
किताब	उन के साथ	और हम ने उतारी	वाज़ेह दलाइल के साथ	अपने रसूलों	तहकीक हम ने भेजा	
وَالْمِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ وَأَنْزَلْنَا الْحَدِيدَ فِيهِ						
उस में	लोहा	और हम ने उतारा	इंसाफ़ पर	लोग	ताकि काइम रहें	और मीज़ाने (अदल)
بَأْسٍ شَدِيدٍ وَمَنْفَعٍ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ مَنْ يَنْصُرُهُ						
मदद करता है उस की	कौन	और ताकि मालूम कर ले अल्लाह	लोगों के लिए	और फ़ायदा	लड़ाई (ख़तरा) सख़्त	
وَرُسُلَهُ بِالْغَيْبِ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٢٥﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا						
नूह (अ)	और तहकीक हम ने भेजा	25	ग़ालिब	क़व्वी	वेशक अल्लाह	बिन देखे और उस के रसूल
وَأَبْرَاهِيمَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوءَ وَالْكِتَابَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ						
हिदायत याफ़ता	सो उन में से कुछ	और किताब	नुबूवत	उन की औलाद में	और हम ने रखी	और इब्राहीम (अ)
وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فُسِقُونَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا						
और हम उन के पीछे लाए	अपने रसूल	उन के क़दमों के निशानात पर	हम उन के पीछे लाए	फिर	26	नाफ़रमान उन में से और अक़्सर
بِعِيسَىٰ ابْنِ مَرْيَمَ وَآتَيْنَاهُ الْإِنْجِيلَ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِ الَّذِينَ						
वह लोग जिन्होंने	दिलों में	और हम ने डाल दी	इंजील	और हम ने उसे दी	इब्ने मरयम (अ)	ईसा (अ)
اتَّبَعُوهُ رَافِقَةً وَّرَحْمَةً وَّرَهْبَانِيَّةً ابْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَاهَا						
हम ने वाजिब नहीं की	जो उन्हीं ने खुद निकाली	और तरके दुनिया	और रहमत	नर्मी	उस की पैरवी की	
عَلَيْهِمْ إِلَّا ابْتِغَاءَ رِضْوَانِ اللَّهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا						
उस को निवाहने का हक़	उस को निवाहा	तो न	अल्लाह की रज़ा	चाहना	मगर	उन पर
فَاتَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُمْ أَجْرَهُمْ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَسِقُونَ ﴿٢٧﴾						
27	नाफ़रमान	उन में से	और अक़्सर	उन का अजर	उन में से	उन लोगों के लिए जो ईमान लाए तो हम ने दिया
يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَآمِنُوا بِرَسُولِهِ يُؤْتِكُمْ						
वह तुम्हें अता करेगा	उस के रसूलों पर	और ईमान लाओ	डरो अल्लाह से तुम	जो लोग ईमान लाए	ऐ	
كِفْلَيْنِ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيَجْعَلْ لَكُمْ نُورًا تَمْشُونَ بِهِ وَيَغْفِرْ لَكُمْ						
तुम्हें	और वह वख़शदेगा	उस के साथ	तुम चलोगे	ऐसा नूर	तुम्हारे लिए	और अपनी रहमत से दो हिस्से
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢٨﴾ لَيْلًا يَعْلَمُ أَهْلُ الْكِتَابِ إِلَّا يَكْفُرُونَ						
कि वह कुदरत नहीं रखते	अहले किताब	ताकि जान लें	28	मेहरबान	वख़शने वाला	और अल्लाह
عَلَىٰ شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللَّهِ وَأَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ						
वह देता है उसे	अल्लाह के हाथ में	फ़ज़ल	और यह कि	अल्लाह का फ़ज़ल	से	किसी शौ पर
مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٢٩﴾						
29	बड़ा	फ़ज़ल वाला	और अल्लाह	जिस को वह चाहता है		



آيَاتُهَا ٢٢ ﴿٥٨﴾ سُورَةُ الْمُجَادِلَةِ ﴿٥٨﴾ رُكُوعَاتُهَا ٣						
रुक़ूआत 3			(58) सूरतुल मुजादिला इख़तिलाफ़ करने वाली		आयात 22	
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ						
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
قَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّتِي تُجَادِلُكَ فِي زَوْجِهَا						
अपने ख़ाबन्द के बारे में	आप (स) से बहस करती थी	वह औरत जो	बात	सुन ली अल्लाह ने	यकीनन	
وَتَشْتَكِي إِلَى اللَّهِ وَاللَّهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿١﴾						
1	देखने वाला	सुनने वाला	वेशक अल्लाह	तुम दोनों की गुफ़्तगू	सुनता था	और अल्लाह
الَّذِينَ يُظَاهِرُونَ مِنْكُمْ مِمَّنِ تَسَاءَلْتُمْ مَا هُنَّ أُمَّهَاتُهُمْ إِنَّ أُمَّهَاتُهُمْ						
उन की माँएं	नहीं	उन की माँएं	वह नहीं	अपनी बीवियों से	तुम में से	ज़िहार करते हैं
إِلَّا إِلَيْنَا وَلَدْنَهُمْ وَإِنَّهُمْ لَيَقُولُونَ مُنْكَرًا مِنَ الْقَوْلِ وَزُورًا						
और झूट	वात से	नामाकूल	अलबत्ता कहते हैं	और वेशक वह	जिन्होंने ने जना है उन्हें	सिर्फ़ वह औरतें
وَإِنَّ اللَّهَ لَعَفُؤٌ غَفُورٌ ﴿٢﴾ وَالَّذِينَ يُظَاهِرُونَ مِنْ تَسَاءَلْتُمْ ثُمَّ						
फिर	अपनी बीवियों से	ज़िहार करते हैं	और जो लोग	2	बख़्शने वाला	अलबत्ता माफ़ करने वाला
يَعُودُونَ لِمَا قَالُوا فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتَمَاسَا ذَلِكُمْ						
यह	कि एक दूसरे को हाथ लगाएं	इस से क़व्ल	एक गुलाम	तो आज़ाद करना लाज़िम है	उस से जो उन्होंने ने कहा (कौल)	वह रज़ूअ करलें
ثَوَعَطُونَ بِهِ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٣﴾ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ						
तो रोज़े	न पाए	तो जो कोई	3	वाख़बर	उस से जो तुम करते हो	और अल्लाह
شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتَمَاسَا فَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَاطْعَامُ						
तो खाना खिलाए	उसे मक़दूर न हो	फिर - जिस	कि वह एक दूसरे को हाथ लगाएं	इस से क़व्ल	लगातार	दो महीने
سِتَيْنِ مَسْكِينًا ذَلِكَ لِتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ						
अल्लाह की हदें	और यह	और उस का रसूल	अल्लाह पर	यह इस लिए कि तुम ईमान रखो	मसाकीन को	साठ (60)
وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤﴾ إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ						
अल्लाह और उस का रसूल	वह मुख़ालिफ़त करते हैं	जो लोग	वेशक	4	दर्दनाक अज़ाब	और न मानने वालों के लिए
كُفُّوا كَمَا كُتِبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ أَنْزَلْنَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ						
वाज़ेह आयतें	और यकीनन हम ने नाज़िल की	उन से पहले	वह लोग जो	जैसे ज़लील किए गए	वह ज़लील किए जाएंगे	
وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُهِينٌ ﴿٥﴾ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُهُمُ						
तो वह उन्हें आगाह करेगा	सब	उन्हें उठाएगा अल्लाह	जिस दिन	5	ज़िल्लत का	अज़ाब
بِمَا عَمِلُوا أَحْصَاهُ اللَّهُ وَنَسُوهُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٦﴾						
6	निगरान	हर शै पर	और अल्लाह	और वह उसे भूल गए थे	उसे गिन रखा था अल्लाह ने	वह जो उन्होंने ने किया

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है यकीनन अल्लाह ने उस औरत (खौलह<sup>२</sup>) की बात सुन ली जो आप (स) से अपने शौहर के बारे में बहस करती थी और अल्लाह के पास शिकायत करती थी, और अल्लाह तुम दोनों की गुफ़्तगू सुनता था। वेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। (1) तुम में से जो लोग अपनी बीवियों से ज़िहार करते हैं (उन्हें माँ कह देते हैं) तो वह उन की माँएं नहीं (हो जाती), उन की माँएं वही हैं जिन्होंने उन्हें जना है, और वेशक वह एक नामाकूल वात और झूट कहते हैं, और वेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है। (2) और जो लोग अपनी बीवियों से ज़िहार करते हैं (उन्हें माँएं कह देते हैं) फिर वह अपने कौल से रज़ूअ कर लें तो (उन पर) लाज़िम है आज़ाद करना एक गुलाम, इस से क़व्ल कि वह एक दूसरे को हाथ लगाएं (वाहम इख़तिलात करें), यह है जिस की तुम्हें नसीहत की जाती है, और अल्लाह उस से वाख़बर है जो तुम करते हो। (3) जो कोई (गुलाम) न पाए तो वह लगातार दो महीने रोज़े (रखे) इस से क़व्ल कि वह एक दूसरे को हाथ लगाएं (इख़तिलात करें), फिर जिस को (उस का भी) मक़दूर न हो तो साठ (60) मिस्कीनों को खाना खिलाए, यह इस लिए है कि तुम अल्लाह और उस के रसूल (स) पर ईमान रखो, और यह अल्लाह की (मुकरर कर्दा) हदें हैं, और न मानने वालों के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (4) वेशक जो लोग अल्लाह और उस के रसूल (स) की मुख़ालिफ़त करते हैं वह ज़लील किए जाएंगे जैसे ज़लील किए गए वह लोग जो उन से पहले थे, और यकीनन हम ने वाज़ेह आयतें नाज़िल की हैं, और काफ़िरों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब है। (5) जिस दिन (जिला) उठाएगा अल्लाह उन सब को, तो जो कुछ उन्होंने ने किया वह उन्हें आगाह करेगा, उसे अल्लाह ने गिन (महफूज़) रखा था और वह उसे भूल गए थे, और अल्लाह हर शै पर निगरान है। (6)

क्या आप (स) ने नहीं देखा कि अल्लाह जानता है जो आस्मानों में है और जो ज़मीन में है। तीन लोगों में कोई सरगोशी नहीं होती मगर वह उन में चौथा होता है और न पाँच (की सरगोशी) मगर वह उन में छटा होता है, और खाह उस से कम हों या ज़ियादा मगर जहाँ कहीं वह हों वह (अल्लाह) उन के साथ होता है, फिर वह उन्हें बतला देगा कियामत के दिन जो कुछ उन्होंने ने किया, वेशक अल्लाह हर शै का जानने वाला है। (7)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें सरगोशी से मना किया गया (मगर) वह फिर वही करते हैं जिस से उन्हें मना किया गया और वह गुनाह और सरकशी की और रसूल (स) की नाफरमानी (के बारे में) वाहम सरगोशी करते हैं, और जब वह आप (स) के पास आते हैं तो आप (स) को सलाम दुआ देते हैं उस लफ़्ज़ से जिस से अल्लाह ने आप को दुआ नहीं दी, और वह अपने दिलों में कहते हैं कि अल्लाह हमें उस की क्यों सज़ा नहीं देता जो हम कहते हैं। उन के लिए काफी है जहनन्म,

वह उस में डाले जाएंगे, सो (यह कैसा) बुरा ठिकाना है! (8) ऐ ईमान वालो! जब तुम वाहम सरगोशी करो तो गुनाह और सरकशी की और रसूल (स) की नाफरमानी (के बारे में) सरगोशी न करो, और (बल्कि) नेकी और परहेज़गारी की सरगोशी करो, और अल्लाह से डरो जिस के पास तुम जमा किए जाओगे। (9)

इस के सिवा नहीं कि सरगोशी शैतान (की तरफ़) से है, ताकि वह उन लोगों को ग़मगीन कर दे जो ईमान लाए, और वह अल्लाह के हुक्म के बग़ैर उन का कुछ नहीं बिगाड़ सकता, और मोमिनों को अल्लाह पर (ही) भरोसा करना चाहिए। (10)

ऐ मोमिनों! जब तुम्हें कहा जाए कि तुम मजलिसों में खुल कर बैठो तो तुम खुल कर बैठ जाया करो, अल्लाह तुम्हें कुशादगी बख़शेगा, और जब कहा जाए कि तुम उठ खड़े हो तो उठ जाया करो, तुम में से जो लोग ईमान लाए और जिन लोगों को इल्म अ़ता किया गया अल्लाह बुलन्द कर देगा उन के दरजे, और तुम जो करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (11)

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَا يَكُونُ مِنْ								
कोई	नहीं होती	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	वह जानता है	कि अल्लाह	क्या आप ने नहीं देखा
نَّجْوَى ثَلَاثَةٍ إِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةَ إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَا أَدْنَى								
और न (खाह) कम	उन में छटा	मगर वह	पाँच की	और न	उन में चौथा	मगर वह	तीन लोगों में	सरगोशी
مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْثَرَ إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ آيْنَ مَا كَانُوا ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا								
जो कुछ उन्होंने ने किया	वह उन्हें बतला देगा	फिर	वह हों	जहाँ कहीं	उन के साथ	मगर वह	और न ज़ियादा	उस से
يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٧﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نُهُوا								
वह जिन्हें मना किया गया	तरफ़-को	क्या तुम ने नहीं देखा	7	जानने वाला	तमाम-हर शै का	वेशक अल्लाह	कियामत के दिन	
عَنِ النَّجْوَى ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَيَتَنَجَّوْنَ بِالْأَيْمِ وَالْعُدْوَانِ								
और सरकशी	गुनाह से-की	वह वाहम सरगोशी करते हैं	उस से	जिस से मना किया गया उन्हें	वह (वही) करते हैं	फिर	सरगोशी से	
وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ وَإِذَا جَاءُوكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللَّهُ								
उस (लफ़्ज़) से अल्लाह ने	आप को दुआ नहीं दी	जिस से	आप को सलाम दुआ देते हैं	वह आते है आप (स) के पास	और जब	रसूल	और नाफ़रमानी	
وَيَقُولُونَ فِي أَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبْنَا اللَّهُ بِمَا نَقُولُ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ								
जहनन्म	उन के लिए काफी है	उस की जो हम कहते हैं	हमें अज़ाब देता अल्लाह	क्यों नहीं	अपने दिलों में		वह कहते हैं	
يَصَلُّونَهَا فِي سَبِيلِ الْمَصِيرِ ﴿٨﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَنَاجَيْتُمْ								
तुम वाहम सरगोशी करो	जब	ईमान वालो	ऐ	8	ठिकाना	सो बुरा	वह डाले जाएंगे उस में	
فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْأَيْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ وَتَنَاجَوْا								
और सरगोशी करो	रसूल (स)	और नाफ़रमानी	और सरकशी	गुनाह की	तो सरगोशी न करो			
بِالْبُرِّ وَالْتَقْوَىٰ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٩﴾ إِنَّمَا النَّجْوَى								
सरगोशी	इस के सिवा नहीं	9	तुम जमा किए जाओगे	उस की तरफ़-पास	वह जो	और अल्लाह से डरो	और परहेज़गारी	नेकी की
مِنَ الشَّيْطَانِ لِيَحْزُنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيْسَ بِضَارِّهِمْ شَيْئًا إِلَّا								
बग़ैर	कुछ	वह उन का बिगाड़ सकता	और नहीं	ईमान लाए	उन लोगों को जो	ताकि वह ग़मगीन करे	शैतान से	
بِإِذْنِ اللَّهِ وَعَلَىٰ اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٠﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا								
मोमिनों!	ऐ	10	मोमिन (जमा)	तो भरोसा करना चाहिए	और अल्लाह पर	अल्लाह के हुक्म के		
إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا فِي الْمَجَالِسِ فَافْسَحُوا يَفْسَحِ اللَّهُ								
कुशादगी बख़शेगा अल्लाह	तो तुम खुल कर बैठ जाया करो	मजलिसों में		तुम खुल कर बैठो	तुम्हें	जब कहा जाए		
لَكُمْ ۖ وَإِذَا قِيلَ انشُرُوا فَانشُرُوا يَرْفَعِ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا								
जो लोग ईमान लाए	बुलन्द कर देगा अल्लाह	तो उठ जाया करो	तुम उठ खड़े हो	और जब कहा जाए	तुम्हें			
مِنْكُمْ ۗ وَالَّذِينَ أَوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١١﴾								
11	बाख़बर	तुम करते हो	उस से	और अल्लाह	दरजे	इल्म अ़ता किया गया	और जिन लोगों को	तुम में से

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُولَ فَقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيْ								
पहले	तो तुम दे दो	रसूल (स)	तुम कान में बात करो	जब	मोमिनो	ऐ		
نَجْوَكُمْ صَدَقَةٌ ذَلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَأَطَهَّرُ فَإِنْ لَمْ تَجِدُوا فَإِنَّ اللَّهَ								
तो बेशक अल्लाह	तुम न पाओ	फिर अगर	और ज़ियादा पाकीज़ा	बेहतर तुम्हारे लिए	यह	कुछ सदका अपनी सरगोशी		
غَفُورٌ رَّحِيمٌ (١٢) ءَأَشْفَقْتُمْ أَنْ تُقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوَكُمْ								
अपनी सरगोशी	पहले	कि तुम दे दो	क्या तुम डर गए	12	रहम करने वाला	बख़्शने वाला		
صَدَقْتُمْ فَإِذْ لَمْ تَفْعَلُوا وَتَابَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ								
नमाज़	तो काइम करो तुम	तुम पर	और दरगुज़र फ़रमाया अल्लाह ने	तुम न कर सके	सो जब	सदकात		
وَاتُوا الزَّكَاةَ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ (١٣)								
13	उस से जो तुम करते हो	बाख़बर	और अल्लाह	अल्लाह और उसका रसूल (स)	और तुम इताअत करो	और अदा करो ज़कात		
أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مَا هُمْ مِنْكُمْ وَلَا								
और न	तुम में से	न वह	उन पर	अल्लाह ने गुज़ब किया	उन लोगों से	जो लोग दोस्ती करते हैं	तरफ-को	क्या तुम ने नहीं देखा
مِنْهُمْ وَيَحْلِفُونَ عَلَى الْكُذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُونَ (١٤) أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا								
अज़ाब	उनके लिए	तैयार किया अल्लाह ने	14	जानते हैं	हालाकि वह	झूट पर	और वह कसम खा जाते हैं	उन में से
شَدِيدًا إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (١٥) اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً								
ढाल	अपनी कसमें	उन्होंने बना लिया	15	वह करते थे	जो कुछ	बुरा	बेशक वह	सख़्त
فَصَدَّوْا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ (١٦) لَنْ نُغْنِيَ عَنْهُمْ								
उन से-को	हरगिज़ न बचा सकेंगे	16	ज़िल्लत का	अज़ाब	तो उन के लिए	अल्लाह का रास्ता	से	पस उन्होंने ने रोक दिया
أَمْوَالَهُمْ وَلَا أَوْلَادَهُمْ مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا أُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ								
दोज़ख़ वाले - जहन्नमी	यही लोग	कुछ-ज़रा	अल्लाह से	उन की औलाद	और न	उन के माल		
هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ (١٧) يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيَحْلِفُونَ لَهُ								
उस के लिए	तो वह कसमें खाएंगे	सब	उन्हें उठाएगा अल्लाह	जिस दिन	17	हमेशा रहेंगे	उस में	वह
كَأَمَا يَحْلِفُونَ لَكُمْ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ								
वही	बेशक वह	याद रखो	किसी शै पर	कि वह	और वह गुमान करते हैं	तुम्हारे लिए-सामने	वह कसमें खाते हैं	जैसे
الْكٰذِبُونَ (١٨) اسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فٰنٰسَهُمْ ذٰكِرَ اللّٰهِ								
अल्लाह की याद	तो उस ने उन्हें भुलादी	शैतान	उन पर	ग़ालिब आ गया	18	झूटे		
أُولَئِكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ أَلَا إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُونَ (١٩)								
19	घाटा पाने वाले	वही	शैतान का गिरोह	बेशक	याद रखो	शैतान का गिरोह	यही लोग	
إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَئِكَ فِي الْأَذَلِّينَ (٢٠)								
20	ज़लील तरीन लोग	में	यही लोग	और उस के रसूल की	मुख़ालिफ़त करते हैं अल्लाह की	जो लोग	बेशक	

ऐ मोमिनो! जब तुम रसूल (स) से कान में (निजी) बात करो तो तुम अपनी सरगोशी से पहले कुछ सदका दो, यह तुम्हारे लिए बेहतर और ज़ियादा पाकीज़ा है, फिर अगर तुम (मक़दूर) न पाओ तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (12)

क्या तुम उस से डर गए कि अपनी सरगोशी से पहले सदका दो, सो जब तुम न कर सके और अल्लाह ने तुम पर दरगुज़र फ़रमाया तो तुम नमाज़ काइम करो और ज़कात अदा करो और अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअत करो, और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (13)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा? जो उन लोगों से दोस्ती करते हैं जिन पर अल्लाह ने गुज़ब किया, वह न तुम में से हैं और न उन में से हैं, और वह जान बूझ कर झूट पर कसम खा जाते हैं। (14)

अल्लाह ने उन के लिए सख़्त अज़ाब तैयार किया है, बेशक वह बुरे काम करते थे। (15)

उन्होंने अपनी कसमों को ढाल बना लिया, पस उन्होंने ने (लोगों को) अल्लाह के रास्ते से रोका तो उन के लिए ज़िल्लत का अज़ाब है। (16)

उन्हें उन के माल और न उन की औलाद अल्लाह से हरगिज़ ज़रा भी न बचा सकेंगे। यही लोग जहन्नमी हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (17)

जिस दिन अल्लाह उन सब को (दोबारा) उठाएगा तो उस के लिए (उस के हुज़ूर) कसमें खाएंगे जैसे वह तुम्हारे सामने कसमें खाते हैं, और वह गुमान करते हैं कि वह किसी शै (भली राह) पर हैं, याद रखो! बेशक वही झूटे हैं। (18)

ग़ालिब आगया है उन पर शैतान, तो उस ने उन्हें अल्लाह की याद भुला दी, यही लोग शैतान की गिरोह है, खूब याद रखो, बेशक शैतान के गिरोह ही घाटा पाने वाले हैं। (19)

बेशक जो लोग अल्लाह और उस के रसूल (स) की मुख़ालिफ़त करते हैं, यही लोग ज़लील तरीन लोगों में से हैं। (20)

٢٤

फैसला कर दिया अल्लाह ने कि मैं और मेरे रसूल (स) ज़रूर ग़ालिब आएंगे, वेशक अल्लाह कबी (तवाना) ग़ालिब है। (21)

तुम न पाओगे उन लोगों को जो ईमान रखते हैं अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर कि वह

उन से दोस्ती रखते हों जिन्होंने अल्लाह और उस के रसूल (स) की मुखालिफत की, खाह वह उन के

बाप दादा हों या उन के बेटे हों, या उन के भाई हों या उन के कुंव

वाले हों, यही लोग हैं जिन के दिलों में अल्लाह ने ईमान सबत कर दिया और उन की मदद की अपने ग़ैबी

फ़ैज़ से, और वह उन्हें (उन) बागात में दाखिल करेगा जिन के

नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, राज़ी हुआ अल्लाह उन से, और वह उस से राज़ी,

यही लोग हैं अल्लाह का गिरोह, खूब याद रखो! अल्लाह के गिरोह वाले ही (दो ज़हान में) कामयाब

होने वाले हैं। (22) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता है जो भी आस्मानों में और जो भी ज़मीन में है, और वह ग़ालिब

हिक्मत वाला है। (1) वही है जिस ने निकाला अहले किताब के काफ़िरों को उन के घरों से

पहले ही इज़्तिमाए लशकर पर, तुम्हें गुमान (भी) न था कि वह निकलेंगे और वह खयाल करते थे कि उन के किले उन्हें अल्लाह से

बचा लेंगे, तो उन पर अल्लाह का ग़ज़ब (ऐसी जगह से आया) जिस का उन्हें गुमान (भी) न था, और अल्लाह ने उन के दिलों में रोव

डाला, और वह अपने हाथों से और मोमिनों के हाथों से अपने घर बरवाद करने लगे, तो ऐ

(वसीरत की) आँखों वालो इब्रत पकड़ो। (2) और अगर अल्लाह ने उन पर

जिला वतन होना लिख रखा न होता तो वह उन्हें दुनिया में अज़ाब देता, और उन के लिए आखिरत में

जहन्नम का अज़ाब है। (3)

كَتَبَ اللَّهُ لَا غَلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِي إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٢١﴾ لَا تَجِدُ قَوْمًا

कौम (लोग)	तुम न पाओगे	21	ग़ालिब	कबी	वेशक अल्लाह	और मेरे रसूल	मैं	मैं ज़रूर ग़ालिब आऊँगा	लिख दिया (फ़ैसला कर दिया) अल्लाह
-----------	-------------	----	--------	-----	-------------	--------------	-----	------------------------	----------------------------------

يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ

और उस के रसूल की	मुखालिफत की अल्लाह की	जो-जिस	और दोस्ती रखते हों	और आखिरत का दिन	अल्लाह पर	वह ईमान रखते हैं
------------------	-----------------------	--------	--------------------	-----------------	-----------	------------------

وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ أُولَئِكَ

यही लोग	उन का घराना	या	उन के भाई	या	उन के बेटे	या	उन के बाप दादा	वह हों	खाह
---------	-------------	----	-----------	----	------------	----	----------------	--------	-----

كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُم بِرُوحٍ مِّنْهُ وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ

बागात	और वह दाखिल करेगा उन्हें	अपने से	रूह (अपने ग़ैबी फ़ैज़ से)	और उन की मदद की	ईमान	लिख दिया (सबत कर दिया) उन के दिलों में
-------	--------------------------	---------	---------------------------	-----------------	------	--

تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا

और वह राज़ी	उन से	राज़ी हुआ अल्लाह	उन में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	बहती है
-------------	-------	------------------	--------	--------------	-------	------------	---------

عَنْهُ أُولَئِكَ حِزْبُ اللَّهِ أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٢٢﴾

22	कामयाब होने वाले	वही	अल्लाह का गिरोह	खूब याद रखो कि वेशक	अल्लाह का गिरोह	यही लोग	उस से
----	------------------	-----	-----------------	---------------------	-----------------	---------	-------

آيَاتُهَا ٢٤ ﴿٥٩﴾ سُورَةُ الْحَشْرِ ﴿٥٩﴾ ﴿٢٢﴾

रुक़आत 3 (59) सूरतुल हशर आयत 24

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١﴾

1	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	पाकीज़गी बयान करता है अल्लाह की
---	-------------	--------	-------	-----------	-------	--------------	----	---------------------------------

هُوَ الَّذِي أَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ دِيَارِهِمْ

उन के घरों	से	अहले किताब	से-के	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	निकाला	वही है जिस ने
------------	----	------------	-------	---------------------------------	--------	---------------

لِأَوَّلِ الْحَشْرِ مَا ظَنَنْتُمْ أَنْ يَخْرُجُوا وَظَنُّوْا أَنَّهُمْ مَانِعَتُهُمْ حُصُونُهُمْ

उन के किले	उन्हें बचा लेंगे	कि वह	और वह खयाल करते थे	कि वह निकलेंगे	तुम्हें गुमान न था	पहले इज़्तिमाए (लशकर) पर
------------	------------------	-------	--------------------	----------------	--------------------	--------------------------

مِّنَ اللَّهِ فَاتَّهُمُ اللَّهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوا وَقَذَفَ

और उस ने डाला	उन्हें गुमान न था	जहां से	तो उन पर आया अल्लाह	अल्लाह से
---------------	-------------------	---------	---------------------	-----------

فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُونَ بُيُوتَهُمْ بِأَيْدِيهِمْ وَأَيْدِي الْمُؤْمِنِينَ

मोमिनों	और हाथों	अपने हाथों से	अपने घर	वह बरवाद करने लगे	रोव	उन के दिलों में
---------	----------	---------------	---------	-------------------	-----	-----------------

فَاعْتَبِرُوا يَا أُولِيَ الْأَبْصَارِ ﴿٢﴾ وَلَوْ لَا أَنْ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ

उन पर	अल्लाह ने लिख रखा होता	यह कि	और अगर न	2	ऐ आँखों वालो	तो तुम इब्रत पकड़ो
-------	------------------------	-------	----------	---	--------------	--------------------

الْجَلَاءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ﴿٣﴾

3	जहन्नम का अज़ाब	आखिरत में	और उन के लिए	दुनिया में	तो वह उन्हें अज़ाब देता	जिला वतन होना
---	-----------------	-----------	--------------	------------	-------------------------	---------------

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَمَنْ يُشَاقِقِ اللَّهَ فَإِنَّ اللَّهَ						
तो बेशक अल्लाह	मुख़ालिफ़त करे अल्लाह की	और जो	और उस का रसूल (स)	उन्होंने ने मुख़ालिफ़त की अल्लाह की	इस लिए कि वह	यह
شَدِيدُ الْعِقَابِ ٤ مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّينَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا قَائِمَةً						
खड़ा	तुम ने उस को छोड़ दिया	या	दरख़्त के तने से	जो तुम ने काट डाले	4	सज़ा देने वाला सख़्त
عَلَىٰ أَصُولِهَا فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيُخْرِجَ الْفَاسِقِينَ ٥ وَمَا أَفَاءَ اللَّهُ						
दिलवाया अल्लाह ने	और जो	5	नाफ़रमानों	और ताकि वह रुस्वा करे	तो अल्लाह के हुक़म से	उस की जड़ों पर
عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْهُمْ فَمَا أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ وَلَكِنَّ اللَّهَ						
और लेकिन (बल्कि) अल्लाह	ऊंट	और न	घोड़े	उन पर	तुम ने दौड़ाए थे	तो न उन से अपने रसूल (स) को
يُسَلِّطُ رُسُلَهُ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ٦						
6	कुदरत रखता है	हर शै	पर	और अल्लाह	जिस पर वह चाहता है	पर अपने रसूलों
مَّا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ فَلِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ						
तो अल्लाह के लिए और रसूल (स) के लिए	वसतियों वाले	से	अपने रसूल (स) को	जो दिलवादे अल्लाह		
وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ كَىٰ						
ताकि	और मुसाफ़ि़रों	और मिस्कीनों	और यतीमों	और करावतदारों के लिए		
لَا يَكُونُ دُولَةً بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ مِنْكُمْ وَمَا اتَّكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ						
तो वह ले लो	रसूल (स)	तुम्हें अता फ़रमाए	और जो	तुम में से- तुम्हारे	मालदारों	दरमियान हाथों हाथ लेना (गर्दिश) न रहे
وَمَا نَهَكُمُ عَنْهُ فَأَنْتَهُوا وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ٧						
7	सख़्त सज़ा देने वाला	बेशक अल्लाह	और तुम डरो अल्लाह से	तो तुम बाज़ रहो	उस से तुम्हें मना करे	और जिस
لِلْفُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ						
और अपने मालों	अपने घरों से	वह जो निकाले गए	मुहाजि़रों	मोहताजों के लिए		
يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِّنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا وَيَنْصُرُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ						
और उस का रसूल	और वह मदद करते हैं अल्लाह की	और रज़ा	अल्लाह का-से	फ़ज़ल	वह चाहते हैं	
أُولَٰئِكَ هُمُ الصّٰدِقُونَ ٨ وَالَّذِينَ تَبَوَّءُوا الدَّارَ وَالْإِيمَانَ						
और ईमान	इस घर	मुक़ीम रहे	और जो लोग	8	सच्चे	वह और यही लोग
مِّن قَبْلِهِمْ يُحِبُّونَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُونَ فِي صُدُورِهِمْ						
अपने सीनों (दिलों)	में	और वह नहीं पाते	उन की तरफ़	हिज़्रत की	जिस	वह मुहब्बत करते हैं उन से क़ब्ब
حَاجَةً مِّمَّا أُوتُوا وَيُؤْتُونَ عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ						
उन्हें	और ख़ाह हो	अपनी जानों	पर	और वह तरजीह देते हैं	दिया गया उन्हें	उस की कोई हाज़त
خِصَاصَةً ٩ وَمَنْ يُوقِ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ٩						
9	फ़लाह पाने वाले	वह	तो यही लोग	अपनी ज़ात	बुख़ल	वचाया और जो-जिस तंगी

यह इस लिए कि उन्होंने ने अल्लाह और उस के रसूल (स) की मुख़ालिफ़त की, और जो अल्लाह की मुख़ालिफ़त करे तो बेशक अल्लाह (उस को) सख़्त सज़ा देने वाला है। (4)

जो तुम ने दरख़्तों के तने काट डाले या उन्हें उन की जड़ों पर खड़ा छोड़ दिया तो (यह) अल्लाह के हुक़म से था और ताकि वह नाफ़रमानों को रुस्वा कर दे। (5)

और अल्लाह ने अपने रसूल (स) को उन (बनू नज़ीर) से जो (माल) दिलवाया तो न तुम ने उन पर घोड़े दौड़ाए थे और न ऊंट, बल्कि अल्लाह अपने रसूलों को जिस पर चाहता है मुसल्लत फ़रमा देता है, और अल्लाह हर शै पर कुदरत रखता है। (6)

अल्लाह ने वसतियों वालों से जो (माल) अपने रसूल (स) को दिलवाए तो वह अल्लाह के लिए है और रसूल (स) के लिए और (रसूल स के) करावतदारों के लिए, और यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफ़ि़रों के लिए ताकि (दोलत) न रहे तुम्हारे मालदारों के दरमियान (ही) गर्दिश करती, और तुम्हें रसूल (स) जो अता फ़रमाए वह ले लो, और वह तुम्हें जिस से मना करे उस से तुम बाज़ रहो, और तुम अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है। (7)

मोहताज मुहाजि़रों के लिए (ख़ास तौर पर) जो निकाले गए अपने घरों से और अपने मालों से (महरूम किए गए) वह अल्लाह का फ़ज़ल और (उस की) रज़ा चाहते हैं और वह मदद करते हैं अल्लाह और उस के रसूल (स) की, यही लोग सच्चे हैं। (8)

और जो लोग (अनुसार) ईमान ला कर इस घर (दारुलहिज़्रत मदीना) में उन से क़ब्ब मुक़ीम हैं वह (उन से) मुहब्बत करते हैं जिन्होंने उन की तरफ़ हिज़्रत की, और जो उन्हें (मुहाजि़रीन को) दिया गया अपने दिलों में उस की कोई हाज़त नहीं पाते और वह उन्हें तरजीह देते हैं अपनी जानों पर ख़ाह (ख़ुद) उन्हें तंगी (ज़रूरत) हो, और जिस ने अपनी ज़ात को बुख़ल से बचाया तो यही लोग फ़लाह पाने वाले हैं। (9)

और जो लोग उन के बाद आए, वह कहते हैं: ऐ हमारे रब! हमें और हमारे भाइयों को बख्श दे वह जिन्होंने ईमान लाने में हम से सबकत की और हमारे दिलों में कोई कीना न होने दे उन लोगों के लिए जो ईमान लाए, ऐ हमारे रब! वेशक तू शफकत करने वाला, रहम करने वाला। (10)

क्या आप (स) ने मुनाफिकों को नहीं देखा? वह अपने भाइयों को कहते हैं जो काफिर हुए अहले किताब में से: अलबत्ता अगर तुम निकाले (जिला वतन किए) गए तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ निकल जाएंगे और तुम्हारे बारे में कभी हम किसी का कहा नहीं मानेंगे और अगर तुम से लड़ाई हुई तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे, और अल्लाह गवाही देता है कि वेशक वह झूठे है। (11)

और अगर वह जिला वतन किए गए तो यह न निकलेंगे उन के साथ, और अगर उन से लड़ाई हुई तो यह उन की मदद न करेंगे और अगर मदद करेंगे (भी) तो वह यकीनन पीठ फेरेंगे (भाग जाएंगे), फिर (कहीं भी) वह मदद न किए जाएंगे। (12)

यकीनन उन के दिलों में अल्लाह से बढ़ कर तुम्हारा डर है, यह इस लिए कि वह ऐसे लोग हैं जो समझते नहीं। (13)

वह इकट्ठे हो कर तुम से न लड़ेंगे मगर बस्तियों में किला बन्द हो कर या दीवारों (फ़सील) के पीछे से, आपस में उन की लड़ाई बहुत सख्त है, तुम उन्हें इकट्ठे गुमान करते हो हालांकि उन के दिल अलग अलग हैं, यह इस लिए है कि वह ऐसे लोग हैं जो अक़ल नहीं रखते। (14)

इन का हाल उन लोगों जैसा है जो क़रीबी ज़माने में इन से क़व्ल हुए, उन्होंने अपने काम का बवाल चख लिया और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (15)

शैतान के हाल जैसा, जब उस ने इन्सान से कहा कि तू कुफ़ इख़्तियार कर, फिर जब उस ने कुफ़ किया तो उस ने कहा: वेशक मैं तुझ से लातअल्लुक हूँ, तहकीक मैं तमाम जहानों के रब अल्लाह से डरता हूँ। (16)

وَالَّذِينَ جَاءُوا مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا							
और हमारे भाइयों को	हमें बख्शदे	ऐ हमारे रब	वह कहते हैं	उन के बाद	वह आए	और जो लोग	
الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِلَّذِينَ							
उन लोगों के लिए जो	कोई कीना	हमारे दिलों में	और न होने दे	ईमान में	हम से सबकत की	वह जिन्होंने	
آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿١٠﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نَافَقُوا							
वह लोग जिन्होंने ने निफ़ाक़ किया (मुनाफ़िक)	तरफ़-को	क्या आप ने नहीं देखा	10	रहम करने वाला	शफ़कत करने वाला	वेशक तू ऐ हमारे रब	वह ईमान लाए
يَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَئِن							
अलबत्ता अगर	अहले किताब	से	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)	अपने भाइयों को	वह कहते हैं		
أُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِيكُمْ أَحَدًا أَبَدًا وَإِن							
और अगर	कभी	किसी का	तुम्हारे बारे में	और हम न मानेंगे	तुम्हारे साथ	तो हम ज़रूर निकल जाएंगे	तुम निकाले गए
فُوتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١١﴾ لَئِن أُخْرِجُوا							
वह जिला वतन किए गए	अगर	11	अलबत्ता झूठे है	वेशक वह	गवाही देता है	और अल्लाह	तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे
لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَئِن فُوتِلُوا لَا يَنْصُرُونَهُمْ وَلَئِن نَصَرُوهُمْ							
वह उन की मदद करेंगे	और अगर		वह उन की मदद न करेंगे	उन से लड़ाई हुई	और अगर	उन के साथ	वह न निकलेंगे
لَيُؤْتِنَّ الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنصُرُونَ ﴿١٢﴾ لَأَنْتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً							
डर	बहुत ज़ियादा	यकीनन तुम-तुम्हारा	12	वह मदद न किए जाएंगे	फिर	पीठ (जमा)	तो वह यकीनन फेरेंगे
فِي صُدُورِهِمْ مِنَ اللَّهِ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ﴿١٣﴾							
13	कि वह समझते नहीं	ऐसे लोग	इस लिए कि वह	यह	अल्लाह से	उन के सीनों (दिलों) में	
لَا يُقَاتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قُرَى مُحَصَّنَةٍ أَوْ مِنْ وَرَاءِ							
पीछे से	या	क़िला बन्द	बस्तियों में	मगर	इकट्ठे सब मिल कर	वह तुम से न लड़ेंगे	
جُدُرٍ بَأْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ تَحْسَبُهُمْ جَمِيعًا وَقُلُوبُهُمْ							
हालांकि उन के दिल	तुम गुमान करते हो उन्हें इकट्ठे	बहुत सख्त	उन के आपस में	उन की लड़ाई	दीवारें		
شَتَّىٰ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٤﴾ كَمَثَلِ الَّذِينَ							
जो लोग	हाल जैसा	14	वह अक़ल नहीं रखते	ऐसे लोग	इस लिए कि वह	यह	अलग अलग
مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ							
अज़ाब	और उन के लिए	अपने काम	बवाल	उन्होंने ने चख लिया	क़रीबी ज़माना	इन से क़व्ल	
أَلِيمٌ ﴿١٥﴾ كَمَثَلِ الشَّيْطَانِ إِذْ قَالَ لِلْإِنْسَانِ اكْفُرْ فَلَمَّا كَفَرَ							
तो जब उस ने कुफ़ किया	तू कुफ़ इख़्तियार कर	इन्सान से	उस ने कहा	जब	शैतान	हाल जैसा	15
قَالَ إِنِّي بِرِئَاءٍ مِنْكَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾							
16	तमाम जहानों	रब अल्लाह	तहकीक मैं डरता हूँ	तुझ से	लातअल्लुक	वेशक मैं	उस ने कहा

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

فَكَانَ عَاقِبَتُهُمَا أَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا وَذَلِكَ						
और यह	उस में	वह हमेशा रहेंगे	आग में	वेशक वह दोनों	उन दोनों का अन्जाम	पस हुआ
جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ﴿١٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنْظُرْ						
और चाहिए कि देखे	तुम अल्लाह से डरो	ईमान वाले	ऐ	17	ज़ालिमों	जज़ा-सज़ा
نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ						
बाख़बर	वेशक अल्लाह	और तुम डरो अल्लाह से	कल के लिए	क्या उस ने आगे भेजा	हर शख्स	
بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٨﴾ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنْسَهُمْ						
तो (अल्लाह ने) भुला दिया उन्हें	जिन्होंने ने अल्लाह को भुला दिया	उन लोगों की तरह	और न हो जाओ तुम	18	उस से जो तुम करते हो	
أَنْفُسَهُمْ أُولَئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿١٩﴾ لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ						
दोज़ख़ वाले	बराबर नहीं	19	नाफ़रमान (जमा)	वह	यही लोग	खुद उन्हें
وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿٢٠﴾						
20	मुराद को पहुँचने वाले	वही है	जन्नत वाले		और जन्नत वाले	
لَوْ أَنزَلْنَا هَذَا الْقُرْآنَ عَلَى جَبَلٍ لَّرَأَيْتَهُ خَاشِعًا						
दबा हुआ	तो तुम देखते उस को	पहाड़ पर	कुरआन	यह	अगर हम नाज़िल करते	
مُتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللَّهِ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا						
हम बयान करते हैं	मिसालें	और यह	अल्लाह का ख़ौफ़	से	टुकड़े टुकड़े हुआ	
لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٢١﴾ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ						
नहीं कोई माबूद	वह जिस	वह अल्लाह	21	ग़ौर ओ फ़िक्क करें	ताकि वह	लोगों के लिए
إِلَّا هُوَ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ﴿٢٢﴾						
22	रहम करने वाला	वह बड़ा मेहरबान	और आशकारा	जानने वाला पोशीदा का	उस के सिवा	
هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ أَلَمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ						
सलामती वाला	निहायत पाक	बादशाह	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	वह जिस	वह अल्लाह
الْمُؤْمِنُ الْمُهِمُّنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَانَ اللَّهِ						
पाक है अल्लाह	बड़ाई वाला	जब्वार	ग़ालिब	निगहवान	अमन देने वाला	
عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٢٣﴾ هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ						
ईजाद करने वाला	ख़ालिक्	वह अल्लाह	23	वह शरीक करते हैं	उस से जो	
الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ يُسَبِّحُ لَهُ						
उस की	पाकीज़गी बयान करता है	अच्छे	नाम (जमा)	उस के लिए	सूरतें बनाने वाला	
مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٤﴾						
24	हिक्मत वाला	ज़बरदस्त	और वह	और ज़मीन	आस्मानों में	जो

पस दोनों का अन्जाम (यह है) कि वह दोनों आग में होंगे, वह हमेशा उस में रहेंगे, और यह सज़ा है ज़ालिमों की। (17)

ऐ ईमान वाले! तुम अल्लाह से डरो और चाहिए कि देखे (सोचे) हर शख्स कि उस ने कल के लिए क्या आगे भेजा है! और तुम अल्लाह से डरो, वेशक जो तुम करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (18) और तुम न हो जाओ उन लोगों की तरह जिन्होंने ने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने (ऐसा कर दिया) कि उन्होंने ने खुद अपने आप को भुला दिया, यही नाफ़रमान लोग हैं। (19)

बराबर नहीं दोज़ख़ वाले और जन्नत वाले, जन्नत वाले ही मुराद को पहुँचने वाले हैं। (20) अगर हम नाज़िल करते यह कुरआन किसी पहाड़ पर तो तुम उस को अल्लाह के ख़ौफ़ से दबा (झुका) फटा पड़ता देखते, और यह मिसालें हम लोगों के लिए बयान करते हैं ताकि वह ग़ौर ओ फ़िक्क करें। (21)

वह अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, जानने वाला पोशीदा का और आशकारा का, वह बड़ा मेहरबान, रहम करने वाला है। (22)

वह अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं (वह हकीकी) बादशाह है, (हर ऐब से) निहायत पाक है।

सलामती, अमन देने वाला, निगहवान, ग़ालिब, ज़बरदस्त, बड़ाई वाला, अल्लाह पाक है उस से जो वह शरीक करते हैं। (23)

वह अल्लाह है - ख़ालिक्, इजाद करने वाला, सूरतें बनाने वाला, उस के लिए अच्छे नाम हैं, उस की पाकीज़गी बयान करता है जो आस्मानों और ज़मीन में है, और वह ज़बरदस्त हिक्मत वाला है। (24)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है ऐ ईमान वालो! तुम मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ, तुम उन की तरफ दोस्ती का पैगाम भेजते हो जब कि तुम्हारे पास जो हक आया है वह उस के मुन्किर हो चुके हैं, वह रसूल (स) को और तुम्हें भी जिला बतन करते हैं (महज़ इस लिए) कि तुम अल्लाह अपने रब पर ईमान लाते हो, अगर तुम निकलते हो मेरे रास्ते में जिहाद के लिए और मेरी रज़ा चाहने के लिए (तो ऐसा मत करो), तुम उन की तरफ छुपा कर भेजते हो दोस्ती (का पैगाम), और मैं खूब जानता हूँ वह जो तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो, और तुम में से जो कोई यह करेगा तो (जान लो) कि तहकीक वह सीधे रास्ते से भटक गया। (1)

अगर वह तुम्हें पाएँ (तुम पर दस्तरस पा लें) तो वह तुम्हारे दुश्मन हो जाएँ और तुम पर खोलें बुराई के साथ अपने हाथ और अपनी ज़बानें (दस्तदराज़ी और ज़बान दराज़ी करें) और वह चाहते हैं कि काश तुम काफ़िर हो जाओ। (2)

तुम्हें हरगिज़ नफ़ा न देंगे तुम्हारे रिश्ते और न तुम्हारी औलाद क़ियामत के दिन, अल्लाह तुम्हारे दरमियान फ़ैसला कर देगा, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह देखता है। (3)

वेशक तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना इब्राहीम (अ) और उन लोगों में है जो उन के साथ थे, जब उन्होंने अपनी क़ौम को कहा: वेशक हम तुम से बेज़ार हैं और उन से जिन की तुम अल्लाह के सिवा बन्दगी करते हो, हम तुम्हें नहीं मानते, और ज़ाहिर हो गई हमारे और तुम्हारे दरमियान अ़दावत और दुश्मनी हमेशा के लिए, यहां तक कि तुम अल्लाह वाहिद पर ईमान ले आओ सिवाए इब्राहीम (अ) का अपने बाप से यह कहना कि मैं ज़रूर मग़फ़िरत मांगूंगा तुम्हारे लिए, और अल्लाह के आगे मैं तुम्हारे लिए कुछ भी इख़्तियार नहीं रखता, ऐ हमारे रब! हम ने तुझ पर भरोसा किया और तेरी तरफ़ हम ने रुजूअ किया और तेरी तरफ़ वापसी है। (4)

<p>آيَاتُهَا ١٣ * (٦٠) سُورَةُ الْمُمْتَحِنَةِ * رُكُوعَاتُهَا ٢</p>							
<p>रुकुआत 2</p>		<p>(60) सूरतुल मुमतहिना जिस (औरत) की जाँच करनी है</p>				<p>आयात 13</p>	
<p>بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ</p>							
<p>अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है</p>							
<p>يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ تُلْقُونَ</p>							
तुम पैगाम भेजते हो	दोस्त	और अपने दुश्मन	मेरा दुश्मन	तुम न बनाओ	ईमान वालो	ऐ	
<p>إِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوا بِمَا جَاءَكُمْ مِنَ الْحَقِّ يُخْرِجُونَ الرَّسُولَ</p>							
वह निकालते (जिला बतन करते) हैं रसूल (स) को	हक से	उस के जो तुम्हारे पास आया	और वह मुन्किर हो चुके हैं	दोस्ती से-का	उन की तरफ		
<p>وَإِيَّاكُمْ أَنْ تُوْمِنُوا بِاللَّهِ رَبِّكُمْ ۖ إِنَّ كُنتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِي سَبِيلِي</p>							
मेरे रास्ते में	जिहाद के लिए	तुम निकलते हो	अगर	तुम्हारा रब	अल्लाह पर	कि तुम ईमान लाते हो	और तुम्हें भी
<p>وَابْتِغَاءَ مَرْضَاتِي تُسِرُّونَ إِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۗ وَأَنَا أَعْلَمُ بِمَا أَخْفَيْتُمْ وَمَا</p>							
और जो	तुम छुपाते हो	वह जो	और मैं खूब जानता हूँ	दोस्ती का पैगाम	उन की तरफ	तुम छुपा कर (भेजते हो)	मेरी रज़ा और चाहने के लिए
<p>أَعْلَنْتُمْ ۗ وَمَنْ يَفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝ (١) إِنَّ</p>							
अगर	1	रास्ता	सीधा	वह भटक गया	तो तहकीक	तुम में से	यह करेगा और जो तुम ज़ाहिर करते हो
<p>يَشْفِقُوكُمْ يَكُونُوا لَكُمْ أَعْدَاءً وَيَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ وَأَلْسِنَتَهُمُ</p>							
और अपनी ज़बानें	अपने हाथ	तुम पर	और वह खोलें	दुश्मन	तुम्हारे	वह हो जाएँ	वह तुम्हें पाएँ
<p>بِالسُّوءِ وَوَدُّوا لَوْ تَكْفُرُونَ ۝ (٢) لَنْ نَنْفَعَكُمْ أَرْحَامَكُمْ وَلَا أَوْلَادَكُمْ ۗ</p>							
तुम्हारी औलाद	और न	तुम्हारे रिश्ते	तुम्हें हरगिज़ नफ़ा न देंगे	2	काश तुम काफ़िर हो जाओ	और वह चाहते हैं	बुराई के साथ
<p>يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ (٣) قَدْ كَانَتْ لَكُمْ</p>							
तुम्हारे लिए	वेशक है	3	देखता है	जो तुम करते हो	और अल्लाह	वह (अल्लाह) फ़ैसला कर देगा तुम्हारे दरमियान	क़ियामत के दिन
<p>أَسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِى إِبْرَاهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُ ۖ إِذْ قَالُوا لِقَوْمِهِمْ</p>							
अपनी क़ौम को	जब उन्होंने ने कहा	उस के साथ	और जो	इब्राहीम (अ)	में	चाल (नमूना) बेहतरीन	
<p>إِنَّا بُرءُؤُا مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا</p>							
हमारे दरमियान	और ज़ाहिर हो गई	तुम्हारे	हम मुन्किर है	अल्लाह के सिवा	तुम बन्दगी करते हो	और उन से जिन की	तुम से वेशक हम लातअल्लुक
<p>وَبَيْنَكُمْ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا حَتَّى تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَحَدَهُ</p>							
वाहिद	अल्लाह पर	तुम ईमान ले आओ	यहां तक कि	हमेशा के लिए	और बुग़ज़ (दुश्मनी)	अ़दावत	और तुम्हारे दरमियान
<p>إِلَّا قَوْلَ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ لَأَسْتَعْفِرَنَّ لَكَ وَمَا أَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللَّهِ</p>							
अल्लाह से-के आगे	तुम्हारे लिए	मैं इख़्तियार रखता	और नहीं	तुम्हारे लिए	अलबत्ता मैं ज़रूर मग़फ़िरत मांगूंगा	अपने बाप से	इब्राहीम (अ) मगर कहना
<p>مِنْ شَيْءٍ ۗ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنَبْنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ۝ (٤)</p>							
4	वापसी	और तेरी तरफ	हम ने रुजूअ किया	और तेरी तरफ	हम ने भरोसा किया	तुझ पर	ऐ हमारे रब कुछ भी

معاينة ١٣ عند المأثورين ١٣ السماع الوقف على القيمة ١٣



رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَاعْفِرْ لَنَا رَبَّنَا إِنَّكَ أَنْتَ									
तू ही	वेशक तू	ऐ हमारे रब	हमें	और बख़्श दे	कुफ़ किया (काफ़िर)	उन के लिए जिन्होंने ने	आज़माइश (तख़्तए मशक़)	हमें न बना	ऐ हमारे रब
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ٥ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ يَرْجُوا									
उम्मीद रखता है	उस के लिए जो	बेहतरीन	चाल (नमूना)	उन में	तुम्हारे लिए	तहकीक (यकीनन) है	5	हिक्मत वाला	ग़ालिब
اللَّهُ وَالْيَوْمِ الْأَخِرِ وَمَنْ يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَنِيُّ الْحَمِيدُ ٦									
6	सतौदा सिफ़ात	वह बेनियाज़	तो वेशक अल्लाह	रूग़दानी करेगा	और जो-जिस	और आख़िरत का दिन	अल्लाह		
عَسَى اللَّهُ أَنْ يَجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ عَادَيْتُمْ مِنْهُمْ مَوَدَّةً									
दोस्ती	उन से	तुम अ़दावत रखते हो	उन लोगों के	और दरमियान	तुम्हारे दरमियान	वह कर दे	कि	करीब है कि अल्लाह	
وَاللَّهُ قَدِيرٌ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ٧ لَا يَنْهَكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ									
जो लोग	से	तहकीक मना नहीं करता अल्लाह	7	रहम करने वाला	बख़्शने वाला	और अल्लाह	क़ुदरत रखने वाला	और अल्लाह	
لَمْ يُقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ أَنْ تَبَرُّوهُمْ									
कि तुम दोस्ती करो उन से	तुम्हारे घर (जमा)	से	और उन्होंने ने तुम्हें नहीं निकाला	दिन में	तुम से नहीं लड़ते				
وَتُقْسَطُوا إِلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسَطِينَ ٨ إِنَّمَا يَنْهَكُمُ اللَّهُ عَنِ									
से	तुम्हें मना करता है अल्लाह	इस के सिवा नहीं	8	इंसाफ़ करने वाले	महबूब रखता है	वेशक अल्लाह	उन से	और तुम इंसाफ़ करो	
الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ وَظَاهَرُوا									
और उन्होंने ने मदद की	तुम्हारे घर	से	और उन्होंने ने तुम्हें निकाला	दिन में	तुम से लड़ें	जो लोग			
عَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَنْ تَوْلَوْهُمْ ٩ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ									
9	ज़ालिम (जमा)	वह	तो वही लोग	और जो उन से दोस्ती रखेगा	कि तुम दोस्ती करो उन से	तुम्हारे निकालने पर			
يَأْيُهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمْ الْمُؤْمِنَاتُ مُهَجِرَاتٍ فَامْتَحِنُوهُنَّ ١٠									
तो उन का इमतिहान कर लिया करो	मुहाजिर औरतें	मोमिन औरतें	जब तुम्हारे पास आएँ	ईमान वाली	ऐ				
اللَّهُ أَعْلَمُ بِأَيْمَانِهِنَّ ١٠ فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنَاتٍ فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ									
तो तुम उन्हें वापस न करो	मोमिन औरतें	तुम उन्हें जान लो	पस अगर	उन के ईमान को	अल्लाह ख़ुब जानता है				
إِلَى الْكُفَّارِ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ وَآتُوهُم									
तुम उन को देदो	उन औरतों के लिए	वह हलाल है	और न वह मर्द	उन के लिए	हलाल	वह औरतें नहीं	काफ़िरों	तरफ़	
مَا أَنْفَقُوا وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أَجُورَهُنَّ ١٠									
उन के मेहर	तुम उन्हें देदो	जब	कि तुम उन औरतों से निकाह कर लो	तुम पर	और कोई गुनाह नहीं	जो उन्होंने ने खर्च किया			
وَلَا تُمَسِّكُوا بِعَصَمِ الْكُوفَرِ وَسَأَلُوا مَا أَنْفَقْتُمْ وَلَيْسَ لَكُمْ									
और चाहिए कि वह मांग लें	जो तुम ने खर्च किया	और तुम मांग लो	काफ़िर औरतें	शादी की रिश्ता	और तुम न कब्ज़ा रखो				
مَا أَنْفَقُوا ١٠ ذَلِكُمْ حُكْمُ اللَّهِ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ١٠									
10	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	तुम्हारे दरमियान	वह फ़ैसला करता है	अल्लाह का हुक्म	यह	जो उन्होंने ने खर्च किया	

ऐ हमारे रब! हमें न बना फ़ितना काफ़िरों के लिए और हमें बख़्श दे ऐ हमारे रब! वेशक तू ही ग़ालिब हिक्मत वाला है। (5)

यकीनन तुम्हारे लिए उन में बेहतरीन नमूना है (यानि) उस के लिए जो उम्मीद रखता है अल्लाह (से मुलाक़ात) की और आख़िरत के दिन की, और जिस ने रूग़दानी की तो वेशक अल्लाह बेनियाज़ सतौदा सिफ़ात है। (6)

करीब है कि अल्लाह तुम्हारे दरमियान और उन लोगों के दरमियान दोस्ती कर दे जिन से तुम अ़दावत रखते हो, और अल्लाह कुदरत रखने वाला है, और अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (7)

अल्लाह तुम्हें मना नहीं करता उन लोगों से जो तुम से दीन (के बारे में) नहीं लड़ें और उन्होंने ने तुम्हें नहीं निकाला तुम्हारे घरों से, कि तुम उन से दोस्ती करो और उन से इंसाफ़ करो, वेशक अल्लाह इंसाफ़ करने वालों को महबूब रखता है। (8)

इस के सिवा नहीं कि अल्लाह तुम्हें मना करता है कि जो लोग तुम से (दीन के बारे में) लड़ें और उन्होंने ने तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला और तुम्हारे निकालने में (निकालने वालों की) मदद की, तुम उन से दोस्ती करो, और जो उन से दोस्ती रखेगा तो वही लोग ज़ालिम है। (9)

ऐ ईमान वालो! तुम्हारे पास मोमिन मुहाजिर औरतें आएँ तो उन का इमतिहान कर लिया करो, अल्लाह ख़ुब जानता है उन के ईमान को, पस अगर तुम उन्हें जान लो कि मोमिन हैं तो तुम उन्हें काफ़िरों की तरफ़ वापस न करो, वह (मोमिन मुहाजिरात) हलाल नहीं है उन (काफ़िरों) के लिए और वह (काफ़िर) उन औरतों के लिए हलाल नहीं, और तुम उन (काफ़िर शोहरों) को देदो जो उन्होंने ने खर्च किया हो और तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम उन मुहाजिर औरतों से निकाह कर लो जब तुम उन्हें उन के मेहर देदो, और तुम काफ़िर औरतों को अपने निकाह में न रोके रहो और तुम (कुफ़ार से) मांग लो जो तुम ने खर्च किया हो, और चाहिए कि वह (काफ़िर) तुम से मांग लें जो उन्होंने ने खर्च किया हो, यह अल्लाह का हुक्म है, वह तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करता है, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (10)

और अगर कुपफ़ार की तरफ़ (रह जाने से) तुम्हारी वीवियों में से कोई तुम्हारे हाथ से निकल जाए तो कुपफ़ार को (इस तरह से) सज़ा दो (कि जो औरतें मदीना आ गईं उन के मेहर वापस देने के वजाए अपने पास रख कर) उन को दो जिन की औरतें जाती रही, जिस कद्र उन्होंने ने खर्च किया हो, और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान रखते हो। (11)

ऐ नबी (स)! जब आप (स) के पास आएँ मोमिन औरतें इस पर वैज़त करने के लिए कि वह अल्लाह के साथ किसी शौ को शरीक न करेंगी और न चोरी करेंगी, और न ज़िना करेंगी, और न वह क़त्ल करेंगी अपनी औलाद को, और न बुहतान लाएंगी जो उन्होंने ने अपने हाथों और अपने पाऊँ के दरमियान गढ़ा हो, और न वह आप (स) की नाफ़रमानी करेंगी नेक कामों में तो आप (स) उन से वैज़त ले लें, और उन के लिए अल्लाह से मग़फ़िरत मांगें, बेशक अल्लाह बख़शने वाला, रहम करने वाला है। (12) ऐ ईमान वालो! तुम उन लोगों से दोस्ती न रखो जिन पर अल्लाह ने ग़ज़ब किया, वह आख़िरत से ना उम्मीद हो चुके हैं जैसे क़ब्रों में पड़े हुए काफ़िर मायूस हैं। (13)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है पाकीज़गी बयान करता है अल्लाह की जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है, और वह ग़ालिव हिक्मत वाला है। (1)

ऐ ईमान वालो! तुम क्यों कहते हो वह जो तुम करते नहीं? (2) अल्लाह के नज़्दीक बड़ी नापसंदीदा बात है कि तुम वह कहो जो तुम करते नहीं। (3)

बेशक अल्लाह उन लोगों को दोस्त रखता है जो उस के रास्ते में सफ़ बस्ता हो कर लड़ते हैं गोया कि वह एक इमारत है सीसा पिलाई हुई। (4)

وَإِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعاقِبْتُمْ فَاتُوا							
पस दो	तो उन (कुपफ़ार) को सज़ा दो	कुपफ़ार की तरफ़	तुम्हारी वीवियां	से	कोई	तुम्हारे हाथ से निकल जाए	और अगर
الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَا أَنْفَقُوا وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ (11)							
वह जिस	और डरो अल्लाह से	जो उन्होंने ने खर्च किया	उस कद्र	उन की औरतें	जाती रही	उन को जिन की	
أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ (11) يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ							
आप से वैज़त करने के लिए	मोमिन औरतें	आप के पास आएँ	जब	ऐ नबी (स)	11	ईमान रखते हो	उस पर तुम
عَلَى أَنْ لَا يُشْرِكَنَّ بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا يَسْرِفَنَّ وَلَا يُزْنِينَ							
और न ज़िना करेंगी	और न चोरी करेंगी	किसी शौ को	अल्लाह के साथ	वह शरीक न करेंगी	इस पर कि		
وَلَا يَقْتُلَنَّ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِينَهُ							
जो उन्होंने ने गढ़ा हो	बुहतान से	और न लाएंगी	अपनी औलाद	और न	वह क़त्ल करेंगी		
بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيَنَّ فِي مَعْرُوفٍ فَبَايِعَهُنَّ							
तो आप (स) उन से वैज़त ले लें	नेक कामों में	और न आप (स) की नाफ़रमानी करेंगी	और अपने पाऊँ	अपने हाथों के दरमियान			
وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ (12) يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا							
ईमान वालो	ऐ	12	रहम करने वाला	बख़शने वाला	बेशक अल्लाह	उन के लिए अल्लाह से	और मग़फ़िरत मांगें
لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَسُؤُوا مِنْ							
से	वह ना उम्मीद हो चुके	उन पर	अल्लाह ने ग़ज़ब किया	वह लोग	तुम दोस्ती न रखो		
الْآخِرَةِ كَمَا يَبِئْسَ الْكُفَّارُ مِنْ أَصْحَابِ الْقُبُورِ (13)							
13	क़ब्रों वाले (मुर्दे)	से	काफ़िर (जमा)	मायूस हैं	जैसे	आख़िरत	
آيَاتُهَا ١٤ ﴿ (٦١) سُورَةُ الصَّفِّ ﴾ زُكُوعَاتُهَا ٢							
रुक़ूआत 2 (61) सूरतुस सफ़ सफ़ (मोरचा बंदी) आयात 14							
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
سَبَّحَ اللَّهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ (1)							
1	हिक्मत वाला	ग़ालिव	और वह	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो पाकीज़गी बयान करता है अल्लाह की
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ (2) كَبُرَ مَقْتًا							
नापसंदीदा	बड़ी	2	तुम करते नहीं	जो	तुम कहते हो	क्यों	ईमान वालो ऐ
عِنْدَ اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا مَا لَا تَفْعَلُونَ (3) إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ							
दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह	3	तुम करते नहीं	जो	तुम कहो	कि	अल्लाह के नज़्दीक
الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِهِ صَفًّا كَأَنَّهُمْ بُيُوتٌ مَّرْصُوصَةٌ (4)							
4	सीसा पिलाई हुई	एक इमारत	गोया कि वह	सफ़ बस्ता हो कर	उस के रास्ते में	जो लोग लड़ते हैं	

٢  
٤  
٨

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يٰقَوْمِ لِمَ تُوذَوْنَ بِي وَقَدْ تَعْلَمُونَ أَنِّي								
कि मैं	और यकीनन तुम जान चुके हो	तुम मुझे ईज़ा पहुँचाते हो	क्यों	ऐ मेरी क़ौम	अपनी क़ौम से	मूसा (अ)	कहा	और जब
رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ ۗ فَلَمَّا زَاغُوا أَزَاغَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي								
हिदायत नहीं देता	और अल्लाह	उन के दिल	अल्लाह ने कज कर दिए	उन्होंने ने कज रवी की	पस जब	तुम्हारी तरफ़	अल्लाह का रसूल	
الْقَوْمِ الْفٰسِقِينَ ۝ وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِي إِسْرَائِيلَ إِنِّي								
वेशक मैं	ऐ बनी इस्राईल	मरयम (अ) का बेटा	ईसा (अ)	कहा	और जब	5	नाफ़रमान (जमा)	लोग
رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ وَمُبَشِّرًا								
और खुशख़बरी देने वाला	तौरत	से	मुझ से पहले	उस की जो	तसदीक करने वाला	तुम्हारी तरफ़	अल्लाह का रसूल	
بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدٌ ۗ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا								
उन्होंने ने कहा	वाज़ेह दलाइल के साथ	वह आए उन के पास	फिर जब	अहमद	उस का नाम	मेरे बाद	वह आएगा	एक रसूल की
هٰذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۖ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ الْكُذِبَ وَهُوَ								
और वह	झूट	अल्लाह पर	वह बुहतान वान्धे	उस से जो	बड़ा ज़ालिम	और कौन	6	खुला जादू
يُدْعَىٰ إِلَى الْإِسْلَامِ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ وَيُرِيدُونَ								
वह चाहते हैं	7	ज़ालिम लोगों	हिदायत नहीं देता	और अल्लाह	इस्लाम की तरफ़	बुलाया जाता है		
لِيُظْفَرُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ ۗ وَاللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُونَ ۝								
8	काफ़िर नाख़ुश हों	और खाह	अपना नूर	पूरा करने वाला	और अल्लाह	अपने फूँकों से	अल्लाह का नूर	कि बुझा दें
هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ								
दीन पर	ताकि वह उसे ग़ालिब करदे	और दीने हक़	हिदायत के साथ	अपना रसूल (स)	वही जिस ने भेजा			
كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ تِجَارَةٍ								
तिजारात पर	मैं तुम्हें बतलाऊँ	क्या	ईमान वालो	ऐ	9	मुशर्रिक (जमा)	और खाह नाख़ुश हों	तमाम
تُنَجِّيَكُمْ مِنْ عَذَابِ الْيَمِّ ۖ تُوْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ								
और तुम जिहाद करो	और उसका रसूल (स)	अल्लाह पर	तुम ईमान लाओ	10	दर्दनाक अज़ाब	से	तुम्हें नजात दे	
فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ ۗ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ								
अगर	तुम्हारे लिए बेहतर	यह	और अपनी जानों	अपने मालों से	अल्लाह का रास्ता	में		
كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۖ يَغْفِرُ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا								
उन के नीचे से	जारी है	बागात	और वह तुम्हें दाखिल करेगा	तुम्हारे गुनाह	तुम्हें	वह बख़्श देगा	11	तुम जानते हो
الْأَنْهَارِ وَمَسْكِنٍ طَيِّبَةٍ فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ ۗ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝								
12	बड़ी	कामयाबी	यह	हमेशा	बागात	में	पाकीज़ा	और मकानात
وَأُخْرَىٰ تُحِبُّونَهَا ۗ نَصْرٌ مِّنَ اللَّهِ وَفَتْحٌ قَرِيبٌ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝								
13	और मोमिनों को खुशख़बरी दें	करीब	और फ़तह	अल्लाह से	मदद	तुम उसे बहुत चाहते हो	और एक और	

और (याद करो) जब मूसा (अ) ने अपनी क़ौम से कहा: ऐ मेरी क़ौम! तुम मुझे क्यों ईज़ा पहुँचाते हो? और यकीनन तुम जान चुके हो कि मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ, पस जब उन्होंने ने कज रवी की तो अल्लाह ने उन के दिलों को कज कर दिया, और अल्लाह हिदायत नहीं देता नाफ़रमान लोगों को। (5) और (याद करो) जब मरयम (अ) के बेटे ईसा (अ) ने कहा: ऐ बनी इस्राईल! वेशक मैं अल्लाह का रसूल हूँ तुम्हारी तरफ़, उस की तसदीक करने वाला जो मुझ से पहले तौरत (आई) और एक रसूल (स) की खुशख़बरी देने वाला जो मेरे बाद आएगा जिस का नाम अहमद (स) होगा, फिर जब वह उन के पास वाज़ेह दलाइल के साथ आए तो उन्होंने ने कहा यह तो खुला जादू है। (6) और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन है जो अल्लाह पर झूट बुहतान वान्धे जबकि वह इस्लाम की तरफ़ बुलाया जाता है, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (7) वह चाहते हैं कि अल्लाह का नूर अपने फूँकों से बुझा दें, और अल्लाह अपना नूर पूरा करने वाला है खाह काफ़िर नाख़ुश हों। (8) वही है जिस ने अपने रसूल (स) को हिदायत और दीने हक़ के साथ भेजा ताकि उसे तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे और खाह मुशर्रिक नाख़ुश हों। (9) ऐ ईमान वालो! क्या मैं तुम्हें ऐसी तिजारात बतलाऊँ? जो तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से नजात दे। (10) तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उस के रसूल (स) पर और तुम अल्लाह के रास्ते में अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो। (11) वह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें बागात में दाखिल करेगा जिन के नीचे से नहरें बहती हैं। और हमेशा के बागात में पाकीज़ा मकानात हैं, यह बड़ी कामयाबी है। (12) और वह दूसरी जिसे तुम बहुत चाहते हो (यानि) अल्लाह से मदद और करीबी फ़तह, और आप (स) मोमिनों को खुशख़बरी दीजिए। (13)

ऐ ईमान वालो! तुम हो जाओ  
अल्लाह के मददगार जैसे मरयम (अ)  
के बेटे इसा (अ) ने हवारियों को  
कहा कि कौन है अल्लाह की तरफ  
मेरा मददगार? तो कहा हवारियों  
ने कि हम अल्लाह के मददगार हैं,  
पस बनी इस्राइल का एक गिरोह  
ईमान ले आया और कुफ़ किया  
एक गिरोह ने, तो हम ने उन के  
दुश्मनों पर ईमान वालों की मदद  
की, सो वह ग़ालिब हो गए। (14)  
अल्लाह के नाम से जो बहुत  
मेहरबान, रहम करने वाला है  
जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है  
अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता  
है, जो बादशाह हकीकी, कमाल  
दरजा पाक, ग़ालिब, हिक्मत वाला  
है। (1)  
वही है जिस ने अनपढ़ों में एक  
रसूल (स) उन ही में से भेजा,  
वह उन्हें उस की आयतें पढ़ कर  
सुनाता है और उन्हें (बुराइयों से)  
पाक करता है और उन्हें सिखाता है  
किताब और दानिशमन्दी की बातें,  
और बेशक यह लोग उस से पहले  
खुली गुमराही में थे। (2)  
और उन के अलावा (उन को भी)  
जो अभी उन से नहीं मिले, वह  
ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (3)  
यह अल्लाह का फ़ज़ल है, वह जिस  
को चाहता है उसे देता है, और  
अल्लाह बड़े फ़ज़ल वाला है। (4)  
उन लोगों की मिसाल जिन पर  
तौरत लादी (उतारी) गई, फिर  
उन्होंने उसे उठाया गधे की तरह  
जो किताबें लादे हुए हैं (उस पर  
कारबन्द न हुए), उन लोगों की  
हालत बुरी है जिन्होंने अल्लाह की  
आयतों को झुटलाया, और अल्लाह  
ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं  
देता। (5)  
आप (स) फ़रमा दें: ऐ यहूदियो! अगर  
तुम्हें घमंड है कि तुम दूसरे लोगों के  
अलावा (सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम) अल्लाह  
के दोस्त हो तो मौत की तमन्ना  
करो अगर तुम सच्चे हो। (6)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا أَنْصَارَ اللَّهِ كَمَا قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ									
मरयम (अ) का बेटा	ईसा (अ)	कहा	जैसे	अल्लाह के मददगार	तुम हो जाओ	ईमान वालो	ऐ		
لِلْحَوَارِيِّينَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ									
अल्लाह के मददगार	हम	हवारियों	कहा	अल्लाह की तरफ	मेरा मददगार	कौन	हवारियों को		
فَأَمَنْتَ طَائِفَةٌ مِّنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَكَفَرَتَ طَائِفَةٌ									
एक गिरोह	और कुफ़ किया	बनी इस्राइल	से - का	एक गिरोह	तो ईमान लाया				
فَأَيَّدْنَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَىٰ عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوا ظَاهِرِينَ ﴿١٤﴾									
14	ग़ालिब	सो वह हो गए	उन के दुश्मनों पर	ईमान वाले	तो हम ने मदद की				
آيَاتُهَا ۝ (٦٢) سُورَةُ الْجُمُعَةِ ۝ زُكُوعَاتُهَا ۲									
रुकुआत 2				(62) सूरतुल जुमुअह जुमा		आयात 11			
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है									
يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ الْعَزِيزِ									
ग़ालिब	कमाल पाक	बादशाह हकीकी	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो कुछ	पाकीज़गी बयान करता है अल्लाह की		
الْحَكِيمِ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمِّيِّينَ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ									
उस की आयतें	उन्हें	पढ़ कर सुनाता है	उन में से	एक रसूल (स)	अनपढ़ों में	उठाया (भेजा)	वही जिस ने	1	हिक्मत वाला
وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلٰلٍ									
अलबत्ता गुमराही में	इस से कब्ल	और तहकीक वह थे	हिक्मत (दानिशमन्दी की बातें)	किताब	और उन्हें सिखाता है	और वह उन्हें पाक करता है			
مُّبِينٍ ﴿٢﴾ وَآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ ۗ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٣﴾ ذَلِكَ									
यह	3	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	उन से	कि वह अभी नहीं मिले	उन के अलावा	2	खुली
فَضَلَّ اللَّهُ يَوْمَئِذٍ مَّن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٤﴾ مَثَلُ									
मिसाल	4	बड़े	फ़ज़ल वाला	और अल्लाह	वह चाहता है	जिस को	वह देता है उसे		अल्लाह का फ़ज़ल
الَّذِينَ حَمَلُوا التَّوْرَةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ أَسْفَارًا ۗ									
किताबें	वह लादे हुए हैं	गधा	मिसाल की तरह	उन्होंने न उठाया उसे	फिर	तौरत	उन पर लादी गई		जिन लोगों पर
بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي									
हिदायत नहीं देता	और अल्लाह	अल्लाह की आयतों को	उन्होंने झुटलाया	जिन्होंने ने	वह लोग	मिसाल (हालत)	बुरी		
الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٥﴾ فَلْ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ هَادُوا إِنْ زَعَمْتُمْ أَنَّكُمْ									
कि तुम	तुम्हें ज़अम (घमंड) है	अगर	यहूदियो	ऐ	आप (स) फ़रमा दें	5	ज़ालिम लोगों		
أَوْلِيَاءَ لِلَّهِ مِنْ دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوْا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ﴿٦﴾									
6	सच्चे	तुम हो	अगर	मौत	तो तुम तमन्ना करो	दूसरे लोगों के अलावा	से	अल्लाह के लिए	दोस्त

٢  
١٠

وَلَا يَتَمَنَّوْنَ اَبَدًا بِمَا قَدَّمْتَ اَيْدِيَهُمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٧﴾								
7	ज़ालिमों को	खूब जानता है	और अल्लाह	उन के हाथों ने	भेजा आगे	उसके सबब जो	कभी भी	और वह उस की तमन्ना न करेंगे
فُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِي تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهُ مُلَقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ								
तुम लौटाए जाओगे	फिर	तुम्हें मिलने वाली	तो बेशक वह	उस से	तुम भागते हो	जिस से	बेशक मौत	आप (स) फरमा दें
اِلَى عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٨﴾ يَا أَيُّهَا								
ऐ	8	तुम करते थे	उस से जो	फिर वह तुम्हें आगाह कर देगा	और ज़ाहिर	तरफ़ (सामने) जानने वाला पोशीदा		
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِذَا نُودِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلَى								
तरफ़	तो तुम लपको	जुमा का दिन	से-की	नमाज़ के लिए	पुकारा जाए	जब	ईमान वालो	
ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوْا الْبَيْعَ ۗ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٩﴾ فَاِذَا								
फिर जब	9	तुम जानते हो	अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर	यह	ख़रीद ओ फ़रोख़्त छोड़ दो	अल्लाह की याद
فُضِيَتْ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِى الْاَرْضِ وَابْتَغُوا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ								
अल्लाह का फ़ज़ल	से	और तुम तलाश करो	ज़मीन में	तो तुम फैल जाओ	नमाज़	पूरी हो चुके		
وَادْكُرُوْا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٠﴾ وَاِذَا رَاَوْا تِجَارَةً								
तिजारात	वह देखते हैं	और जब	10	फ़लाह पाओ	ताकि तुम	वक़्सूरत	और तुम याद करो अल्लाह को	
اَوْ لَهٰوًا اِنْقَضَوْا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ قٰبِلًا ۗ فُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ								
अल्लाह के पास	जो	फ़रमा दें	खड़ा	और आप (स) को छोड़ जाते हैं	उस की तरफ़	वह दौड़ जाते हैं	खेल तमाशा	या
خَيْرٌ مِّنَ اللّٰهٰوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ۗ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿١١﴾								
11	रिज़क़ देने वाला	बेहतर	और अल्लाह	तिजारात	और से	खेल तमाशा	से	बेहतर
<b>آيَاتُهَا 11 ﴿ (63) سُورَةُ الْمُنْفِقُونَ ﴾ ۞ رُكُوْعَاتُهَا 2</b>								
<b>11 आयात</b>								
<b>रुक़ात 2</b>								
<b>(63) सूरतुल मुनाफ़िकून</b>								
<b>بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝</b>								
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है								
اِذَا جَاءَكَ الْمُنْفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ								
वह जानता है	और अल्लाह	अलबत्ता अल्लाह के रसूल	बेशक आप (स)	हम गवाही देते हैं	वह कहते हैं	मुनाफ़िक़	जब आप (स) के पास आते हैं	
اِنَّكَ لَرَسُوْلُهُ ۗ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّ الْمُنْفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١﴾ اِتَّخَذُوْا								
उन्होंने ने पकड़ा (बना लिया)	1	अलबत्ता झूटे	मुनाफ़िक़ (जमा)	बेशक	गवाही देता है	और अल्लाह	अलबत्ता उसके रसूल (स)	यकीनन आप (स)
اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢﴾								
2	वह करते हैं	बुरा जो	बेशक वह	अल्लाह का रास्ता	से	पस वह रोकते हैं	ढाल	अपनी क़समों को
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٣﴾								
3	नहीं समझते	पस वह	उन के दिल	पर	तो मुहर लगा दी गई	फिर उन्होंने ने कुफ़ किया	ईमान लाए	इस लिए कि वह यह

और उस के सबब जो उन के हाथों ने आगे भेजा है वह कभी भी मौत की तमन्ना न करेंगे, और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानता है। (7) आप (स) फ़रमा दें: बेशक जिस मौत से तुम भागते हो वह यकीनन तुम्हें मिलने वाली है (आ पकड़ेगी) फिर तुम उस के सामने लौटाए जाओगे जो जानने वाला है पोशीदा और ज़ाहिर का, फिर वह तुम्हें उस से आगाह कर देगा जो तुम करते थे। (8) ऐ ईमान वालो! जब पुकारा जाए (अज़ान दी जाए) जुमा के दिन नमाज़ (जुमा) के लिए तो तुम (फ़ौरन) अल्लाह की याद के लिए लपको और ख़रीद ओ फ़रोख़्त छोड़ दो, यह बेहतर है तुम्हारे लिए अगर तुम जानते हो। (9) फिर जब नमाज़ पूरी हो चुके तो तुम ज़मीन में फैल जाओ और तलाश करो अल्लाह का फ़ज़ल (रोज़ी) और तुम अल्लाह को वक़्सूरत याद करो ताकि तुम फ़लाह पाओ। (10) और जब वह देखते हैं तिजारात या खेल तमाशा तो वह उस की तरफ़ दौड़ जाते हैं और आप (स) को खड़ा छोड़ जाते हैं, आप (स) फ़रमा दें कि जो अल्लाह के पास है वह बेहतर है खेल तमाशा से और तिजारात से, और अल्लाह सब से बेहतर रिज़क़ देने वाला। (11) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है जब मुनाफ़िक़ आप (स) के पास आते हैं तो कहते हैं: हम गवाही देते हैं कि बेशक आप अल्लाह के रसूल (स) हैं और अल्लाह जानता है कि यकीनन आप (स) उस के रसूल हैं, और अल्लाह गवाही देता है कि बेशक मुनाफ़िक़ झूटे हैं। (1) उन्होंने ने अपनी क़समों को ढाल बना लिया है, पस वह (दूसरों को भी) रोकते हैं अल्लाह के रास्ते से, बेशक बुरा है जो वह करते हैं। (2) यह इस लिए है कि वह ईमान लाए, फिर उन्होंने ने कुफ़ किया तो मुहर लगा दी गई उन के दिलों पर, पस वह नहीं समझते। (3)

11

11

وقف الراج

और जब आप (स) उन्हें देखें तो उन के जिस्म आप (स) को खुशनुमा मालूम हों, और अगर वह बात करें तो आप (स) उन की बातों को (गौर से) सुनें, गोया कि वह लकड़ियां हैं दीवार (के सहारे) लगाई हुई, वह हर बुलन्द आवाज़ को अपने ऊपर गुमान करते हैं, वह दुश्मन हैं, पस आप (स) उन से बचें, अल्लाह उन्हें ग़ारत करे, वह कहां फिरे जाते हैं। (4)

और जब उन से कहा जाए कि आओ, बख़्शिश की दुआ करें अल्लाह के रसूल (स) तुम्हारे लिए तो वह अपने सरो को फेर लेते हैं और आप (स) उन्हें देखें तो वह मुँह फेर लेते हैं और वह बड़ा ही तकबुर करने वाले हैं। (5)

उन पर (उन के हक़ में) बराबर है कि आप (स) उन के लिए बख़्शिश मांगें या न मांगें, अल्लाह उन्हें हरगिज़ न बख़्शेगा, बेशक अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (6)

वही लोग हैं जो कहते हैं कि तुम उन लोगों पर खर्च न करो जो अल्लाह के रसूल (स) के पास हैं यहां तक कि वह मुन्तशिर हो जाएं, और आस्मानों और ज़मीन के खज़ाने अल्लाह के लिए हैं और लेकिन मुनाफ़िक़ समझते नहीं। (7)

वह कहते हैं: अगर हम मदीने की तरफ़ लौट कर गए तो इज़ज़तदार (मुनाफ़िक़) निहायत ज़लील को वहां से निकाल देगा, और इज़ज़त तो अल्लाह और उस के रसूल (स) और मोमिनों के लिए है और लेकिन मुनाफ़िक़ नहीं जानते। (8)

ऐ ईमान वालो! तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न कर दें, और जो यह करेंगे तो वही लोग ख़सारे में पड़ने वाले हैं। (9)

और हम ने तुम्हें जो दिया है उस में से खर्च करो उस से क़ब्ल कि आजाए तुम में से किसी को मौत तो वह कहे कि ऐ मेरे रब! तू ने मुझे क्यों एक करीबी मुद्दत तक मोहलत न दी? तो मैं सदका करता और मैं नेकोकारों में से होता। (10)

और जब उस की अज़ल आगई तो अल्लाह हरगिज़ किसी को ढील न देगा, और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (11)

وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ ۖ وَإِنْ يَقُولُوا تَسْمَعُ لِقَوْلِهِمْ ۗ كَانْتَهُمْ								
गोया कि वह	उन की बातें	आप सुनें	और अगर वह बात करें	उन के जिस्म	तो आप को खुशनुमा मालूम हों	आप (स) उन्हें देखें	और जब	
حُشْبٌ مُّسْتَدَّةٌ ۖ يَحْسَبُونَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ۗ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرَهُمْ ۗ								
पस आप (स) उन से बचें	दुश्मन	वह	अपने ऊपर	हर बुलन्द आवाज़	वह गुमान करते हैं	दीवार से लगाई हुई	लकड़ियां	
فَاتْلَهُمْ اللَّهُ أَلِيٌّ يُؤْفَكُونَ ﴿٤﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ								
तुम्हारे लिए	बख़्शिश की दुआ करें	तुम आओ	कहा जाए उन से	और जब	4	वह फिरे जाते हैं	कहां	उन्हें मारे (ग़ारत करे) अल्लाह
رَسُولُ اللَّهِ لَوْوَا رُءُوسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ﴿٥﴾								
5	बड़ा ही तकबुर करने वाले हैं	और वह	वह रुकते हैं	और आप (स) उन्हें देखें	अपने सरो को	वह फेर लेते हैं	अल्लाह के रसूल	
سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۗ								
उन को	हरगिज़ नहीं बख़्शेगा अल्लाह	उन के लिए	आप (स) न बख़्शिश मांगें	या	उन के लिए	आप (स) बख़्शिश मांगें	उन पर	बराबर
إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿٦﴾ هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنْفِقُوا								
न खर्च करो तुम	वह कहते हैं	वह लोग जो	वही	6	नाफ़रमान लोग	हिदायत नहीं देता	बेशक अल्लाह	
عَلَىٰ مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّىٰ يَنْفَضُوا ۗ وَاللَّهُ خَزَائِنُ السَّمَوَاتِ								
आस्मानों	और अल्लाह के लिए खज़ाने	वह मुन्तशिर हो जाएं	यहां तक कि	अल्लाह के रसूल	पास	जो	पर	
وَالْأَرْضِ ۗ وَلَكِنَّ الْمُنْفِقِينَ لَا يَفْقَهُونَ ﴿٧﴾ يَقُولُونَ لَنْ رَجَعْنَا								
अगर हम लौट कर गए	वह कहते हैं	7	वह नहीं समझते	मुनाफ़िक़ (जमा)	और लेकिन	और ज़मीन		
إِلَى الْمَدِينَةِ لِيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ ۗ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ								
और उसके रसूल (स) के लिए	और अल्लाह के लिए इज़ज़त	निहायत ज़लील	वहां से	इज़ज़तदार	ज़रूर निकाल देगा	मदीने की तरफ़		
وَلِلْمُؤْمِنِينَ ۗ وَلَكِنَّ الْمُنْفِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٨﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا								
ईमान वालो	ऐ	8	नहीं जानते	मुनाफ़िक़ (जमा)	और लेकिन	और मोमिनों के लिए		
لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۗ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ								
यह	करेगा	और जो	अल्लाह की याद	से	और न तुम्हारी औलाद	तुम्हारे माल	तुम्हें ग़ाफ़िल न कर दें	
فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿٩﴾ وَأَنْفِقُوا مِنْ مَّا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ								
उस से क़ब्ल	जो हम ने तुम्हें दिया	से	और तुम खर्च करो	9	ख़सारा पाने वाले	वह	तो वही लोग	
أَنْ يَأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلَا أَخَّرْتَنِي إِلَىٰ								
तक	तू ने मुझे मोहलत दी	क्यों न	ऐ मेरे रब	तो वह कहे	मौत	तुम में से किसी को	कि आजाए	
أَجَلٍ قَرِيبٍ ۖ فَاصْدَقْ ۗ وَكُنْ مِنَ الصّٰلِحِينَ ﴿١٠﴾ وَلَنْ يُؤَخَّرَ اللَّهُ								
और हरगिज़ ढील न देगा अल्लाह	10	नेकोकारों	से	और मैं होता	तो मैं सदका करता	एक करीब की मुद्दत		
نَفْسًا إِذَا جَاءَ أَجْلُهَا ۗ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١١﴾								
11	तुम करते हो	उस से जो	बाख़बर	और अल्लाह	उस की अज़ल	जब आगई	किसी को	

آيَاتُهَا ١٨ ❀ (٦٤) سُورَةُ التَّغَابِنِ ❀ رُكُوعَاتُهَا ٢							
रुक़ूआत 2		(64) सूरतुत तगाबुन हार जीत			आयात 18		
<b>بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ</b>							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ							
और उसी के लिए	वादशाही	उसी के लिए	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	पाकीज़गी बयान करता है अल्लाह की
الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ							
तुम्हें पैदा किया	वही जिस ने	1	कुदरत रखने वाला	हर शै	पर	और वह	तमाम तारीफ़ें
فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢﴾							
2	देखने वाला	तुम करते हो	उस को जो	और अल्लाह	कोई मोमिन	और तुम में से	कोई काफ़िर तो तुम में से
خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ							
तुम्हें सूरतें दी	तो बहुत अच्छी	और तुम्हें सूरतें दी	हक के साथ	और ज़मीन	आस्मानों	उस ने पैदा किया	
وَأَلَيْهِ الْمَصِيرُ ﴿٣﴾ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ							
और जानता है	और ज़मीन	आस्मानों में	जो	वह जानता है	3	वापसी	और उसी की तरफ़
مَا تُسْرُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٤﴾							
4	दिलों के भेद	जानने वाला	और अल्लाह	और जो तुम ज़ाहिर करते हो	जो तुम छुपाते हो		
أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ فَذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ							
अपने काम	बवाल	तो उन्होंने ने चख लिया	इस से क़व्ल	जिन लोगों ने कुफ़ किया	ख़बर	क्या नहीं आई तुम्हारे पास	
وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٥﴾ ذَلِكَ بِأَنَّهُ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ							
उन के रसूल	आते थे उनके पास	इस लिए कि वह	यह	5	अज़ाब दर्दनाक	और उन के लिए	
بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالُوا أَبَشَرٌ يَهْدُونَنَا فَكَفَرُوا وَتَوَلَّوْا وَاسْتَعْنَى							
और बेनियाज़ी फ़रमाई	और वह फिर गए	तो उन्होंने ने कुफ़ किया	वह हिदायत देते हैं हमें	क्या बशर	तो वह कहते	वाज़ेह निशानियों के साथ	
اللَّهُ وَاللَّهُ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ﴿٦﴾ زَعَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ لَنْ يُبْعَثُوا							
वह हरगिज़ न उठाए जाएंगे	कि	वह काफ़िर हुए	उन लोगों ने जो	दावा किया	6	सतौदा सिफ़ात	और अल्लाह
قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَسُبْعُ ثَمَّ لَسُبْعُونَ بِمَا عَمِلْتُمْ							
जो तुम करते थे	फिर अलबत्ता तुम्हें ज़रूर जतलाया जाएगा	अलबत्ता तुम ज़रूर उठाए जाओगे	मेरे रब की कसम	हाँ	फ़रमा दें		
وَذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٧﴾ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ							
और उस के रसूल (स)	अल्लाह पर	पस तुम ईमान लाओ	7	आसान	अल्लाह पर	और यह	
وَالنُّوْرِ الَّذِي اَنْزَلْنَا وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيْرٌ ﴿٨﴾							
8	बाख़बर	जो तुम करते हो उस से	और अल्लाह	हम ने नाज़िल किया	वह जो	और नूर	

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता है जो भी आस्मानों में और जो भी ज़मीन में है, उसी के लिए है वादशाही और उसी के लिए है तमाम तारीफ़ें, और वह हर शै पर कुदरत रखने वाला है। (1) वही है जिस ने तुम्हें पैदा किया, सो तुम में से कोई काफ़िर है और तुम में से कोई मोमिन है, और अल्लाह जो तुम करते हो उस का है देखने वाला। (2) उस ने आस्मानों और ज़मीन को हक़ (दुरुस्त तदवीर) के साथ पैदा किया और तुम्हें सूरतें दीं तो तुम्हें बहुत ही अच्छी सूरतें दीं, और उसी की तरफ़ वापसी है। (3) वह जानता है जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है और वह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो, और अल्लाह दिलों के भेद जानने वाला है। (4) क्या तुम्हारे पास उन लोगों की ख़बर नहीं आई जिन्होंने ने इस से पहले कुफ़ किया, तो उन्होंने ने बवाल चख लिया अपने काम का, और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (5) यह इस लिए हुआ कि उन के पास रसूल वाज़ेह निशानियों के साथ आते थे तो वह कहते थे: क्या बशर हिदायत देते हैं हमें? तो उन्होंने ने कुफ़ किया और फिर गए, और अल्लाह ने बेनियाज़ी फ़रमाई और अल्लाह बेनियाज़ सतौदा सिफ़ात (सज़ावारे हमद) है। (6) उन लोगों ने दावा किया जो काफ़िर हुए कि वह हरगिज़ (दोबारा) नहीं उठाए जाएंगे। आप (स) फ़रमा दें, हाँ! क्यों नहीं! मेरे रब की कसम! तुम ज़रूर उठाए जाओगे, फिर तुम्हें जतला दिया जाएगा जो तुम करते थे, और यह अल्लाह पर आसान है। (7) पस तुम अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान ले आओ और उस नूर पर जो हम ने नाज़िल किया है, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (8)

जिस दिन वह तुम्हें जमा करेगा (यानि) क़ियामत के दिन, यह हार जीत का दिन है, और जो अल्लाह पर ईमान लाए और अच्छे काम करे तो वह (अल्लाह) उस से उस की बुराइयां दूर कर देगा और उसे (उन) बागात में दाखिल करेगा जिन के नीचे नहरें जारी हैं, वह उन में हमेशा हमेशा रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है। (9)

और जिन लोगों ने कुफ़ किया और हमारी आयतों को झुटलाया यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, उस में हमेशा रहेंगे और यह है बुरी पलटने की जगह। (10)

कोई मुसीबत नहीं पहुँचती मगर अल्लाह के इज़्ज से, और जो शख्स अल्लाह पर ईमान लाता है वह उस के दिल को हिदायत देता है, और अल्लाह हर शौ को जानने वाला है। (11)

और तुम अल्लाह की इताज़त करो और रसूल (स) की इताज़त करो, फिर अगर तुम फिर गए तो इस के सिवा नहीं कि हमारे रसूल (स) के ज़िम्मे साफ़ साफ़ पहुँचा देना है। (12)

अल्लाह - उस के सिवा कोई माबूद नहीं, पस मोमिनों को अल्लाह पर भरोसा करना चाहिए। (13)

ऐ ईमान वालो! बेशक तुम्हारी बाज़ वीवियां और तुम्हारी बाज़ औलाद तुम्हारे (दीन के) दुश्मन हैं, पस तुम उन से बचो, और अगर तुम माफ़ कर दो और दरगुज़र करो और तुम वख़श दो तो बेशक अल्लाह वख़शने वाला, मेहरवान है। (14)

इस के सिवा नहीं कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद आज़माइश हैं, और अल्लाह के पास बड़ा अजर है। (15)

पस जहां तक हो सके तुम अल्लाह से डरो और सुनो और इताज़त करो और खर्च करो (यह) तुम्हारे हक़ में बेहतर है, और जो अपने नफ़्स की वख़ीली से बचा लिया गया तो यही लोग फ़लाह (दो ज़हान में कामयाबी) पाने वाले हैं। (16)

अगर तुम अल्लाह को कर्ज़ हसना दोगे तो वह तुम्हारे लिए उसे दो चन्द कर देगा और तुम्हें वख़शदेगा, और अल्लाह कद्र शनास, बुर्दवार है। (17)

(वह) जानने वाला है पोशीदा और ज़ाहिर का, ग़ालिब, हिक्मत वाला। (18)

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذَلِكَ يَوْمُ التَّعَابِنِ وَمَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ							
अल्लाह पर	वह ईमान लाए	और जो	खोने या पाने (हार जीत) का दिन	यह	जमा होने (क़ियामत) के दिन	वह जमा करेगा तुम्हें	जिस दिन
وَيَعْمَلُ صَالِحًا يُكْفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي							
जारी है	बागात	और वह उसे दाखिल करेगा	उस की बुराइयां	उस से	वह दूर कर देगा	अच्छे	और वह काम करे
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ (9)							
9	बड़ी कामयाबी	यह	हमेशा	उन में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे
وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا							
उस में	हमेशा रहेंगे	दोज़ख़ वाले	यही लोग	हमारी आयतों को	और उन्होंने ने झुटलाया	और जिन लोगों ने कुफ़ किया	
وَبِئْسَ الْمَصِيرُ (10) مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَمَنْ							
और जो	अल्लाह के इज़्ज से	मगर	कोई मुसीबत	नहीं पहुँची	10	पलटने की जगह (ठिकाना)	और बुरी
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ يَهْدِ اللَّهُ قَلْبَهُ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ (11) وَأَطِيعُوا اللَّهَ							
और तुम इताज़त करो अल्लाह की	11	जानने वाला	हर शौ को	और अल्लाह	उस का दिल	हिदायत देता है	अल्लाह पर वह ईमान लाता है
وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلْغُ الْمُبِينُ (12)							
12	साफ़ साफ़ पहुँचा देना	हमारे रसूल (स) पर-ज़िम्मे	तो इस के सिवा नहीं	फिर गए तुम	फिर अगर	और इताज़त करो रसूल (स) की	
اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَعَلَىٰ اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ (13) يَا أَيُّهَا							
ऐ	13	ईमान वाले	पस भरोसा करना चाहिए	और अल्लाह पर	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	अल्लाह
الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَكُمْ فَاحْذَرُوهُمْ							
पस तुम उन से बचो	तुम्हारे लिए	दुश्मन	और तुम्हारी औलाद	तुम्हारी वीवियां	से	बेशक	ईमान वालो
وَأَنْ تَعْفُوا وَتَصْفَحُوا وَتَغْفِرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ (14) إِنَّمَا							
इस के सिवा नहीं	14	मेहरवान	वख़शने वाला	तो बेशक अल्लाह	और तुम वख़श दो	और तुम दरगुज़र करो	तुम माफ़ कर दो और अगर
أَمْوَالِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ فَتَنَةٌ وَاللَّهُ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ (15) فَاتَّقُوا اللَّهَ							
पस तुम डरो अल्लाह से	15	बड़ा अजर	उस के पास	और अल्लाह	आज़माइश	और तुम्हारी औलाद	तुम्हारे माल
مَا اسْتَطَعْتُمْ وَأَسْمَعُوا وَأَطِيعُوا وَأَنْفِقُوا خَيْرًا لِّأَنْفُسِكُمْ							
तुम्हारे हक़ में	बेहतर	और तुम खर्च करो	और तुम इताज़त करो	और तुम सुनो	जहां तक तुम से हो सके		
وَمَنْ يُوقِ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ (16) إِنْ							
अगर	16	फ़लाह पाने वाले	वह	तो यही लोग	अपनी जान	वख़ीली बचा लिया गया	और जो
تُقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضْعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ							
और अल्लाह	और वह तुम्हें वख़श देगा	तुम्हारे लिए	वह उसे दो चन्द कर देगा	कर्ज़ हसना	तुम कर्ज़ दोगे अल्लाह को		
شَكُورٌ حَلِيمٌ (17) عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةُ الْعَزِيمُ الْحَكِيمُ (18)							
18	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और ज़ाहिर	ग़ैब का जानने वाला	17	बुर्दवार	कद्र शनास

التّٰبِع ١٥

٢٨ ١٦



<p>آيَاتُهَا ١٢ ❁ (٦٥) سُورَةُ الطَّلَاقِ ❁ رُكُوعَاتُهَا ٢</p>						
रुक़ूआत 2		(65) सूरतुत तलाक़			आयात 12	
<p>بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ</p>						
<p>अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है</p>						
<p>يَأْتِيهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّقُوهُنَّ لِعَدَّتِهِنَّ وَأَحْصُوا</p>						
और तुम शुमार रखो	उन की इद्दत के लिए	तो उन्हें तलाक़ दो	औरतों	तुम तलाक़ दो	जब	ऐ नबी (स)
<p>الْعِدَّةَ وَاتَّقُوا اللَّهَ رَبَّكُمْ لَا تُخْرِجُوهُنَّ مِنْ بُيُوتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ</p>						
और न वह (खुद) निकलें	उन के घरों	से	तुम न निकालो उन्हें	तुम्हारा रब	और तुम डरो अल्लाह से	इद्दत
<p>إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبِينَةٍ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ وَمَنْ يَتَعَدَّ</p>						
आगे निकलेगा	और जो	अल्लाह की हुदूद	और यह	खुली	बेहयाई	यह कि वह करें मगर
<p>حُدُودَ اللَّهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ لَا تَدْرِي لَعَلَّ اللَّهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذَلِكَ</p>						
उस के बाद	वह पैदा कर दे	सुम्किन है कि अल्लाह	तुम्हें खबर नहीं	अपनी जान	तो तहकीक़ उस ने जुल्म किया	अल्लाह की हुदूद
<p>أَمْرًا ❶ فَاذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ</p>						
तुम उन्हें जुदा कर दो	या	अच्छे तरीके से	तो उन को रोक लो	अपनी मीज़ाद	वह पहुँच जाएँ	फिर जब 1 कोई और वात
<p>بِمَعْرُوفٍ وَأَشْهَدُوا ذَوَى عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَأَقِيمُوا الشَّهَادَةَ لِلَّهِ ذَلِكُمْ</p>						
यही है	गवाही अल्लाह के लिए	और तुम काइम करो	अपने में से	दो (2) इंसाफ़ पसंद	और तुम गवाह कर लो	अच्छे तरीके से
<p>يُوعَظُ بِهِ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ</p>						
वह अल्लाह से डरता है	और जो	और आख़िरत का दिन	अल्लाह पर	जो ईमान रखता है	जिस की नसीहत की जाती है	
<p>يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ❷ وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ</p>						
वह भरोसा करता है	और जो	उसे गुमान नहीं होता	जहाँ से	और वह उसे रिज़क़ देता है	2 नजात की राह	वह उस के लिए निकाल देता है
<p>عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ❸ إِنَّ اللَّهَ بِأَلْعَامِ أَمْرِهِ قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ❹</p>						
3 अन्दाज़ा	हर बात के लिए	बेशक कर रखा है अल्लाह	अपना काम	पहुँचने (पूरा करने) वाला	बेशक अल्लाह	उस के लिए काफ़ी है तो वह अल्लाह पर
<p>وَإِذْ يَسْئَلُ مِنَ الْمُحْضِرِينَ مَنْ نِسَابِكُمْ إِنَّا زَبْنُكُمْ فَعَدَّتْهُمْ</p>						
तो उन की इद्दत	अगर तुम्हें शुबाह हो	तुम्हारी वीवियां	से	हैज़	से	ना उम्मीद हो गई हों और जो
<p>ثَلَاثَةَ أَشْهُرٍ وَإِذْ يَسْئَلُ مِنَ الْمُحْضِرِينَ مَنْ نِسَابِكُمْ إِنَّا زَبْنُكُمْ فَعَدَّتْهُمْ</p>						
कि वज़़अ हो जाएँ	उन की इद्दत	और हमल वालियां	उन्हें हैज़ नहीं आया	और जो	महीने	तीन
<p>حَمَلَهُنَّ ❺ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مِنْ أَمْرِهِ يُسْرًا ❻ ذَلِكُمْ أَمْرُ اللَّهِ</p>						
अल्लाह के हुक़म	यह	4 आसानी	उस के काम में	उस के लिए	वह कर देगा	अल्लाह से डरेगा और जो उन के हमल
<p>أَنْزَلَهُ إِلَيْكُمْ ❻ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَكْفُرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُعْظِمُ لَهُ أَجْرًا ❽</p>						
5 अजर	उस को	और बड़ा देगा	उस की बुराइयां	उस से	वह दूर कर देगा	अल्लाह से डरेगा और जो तुम्हारी तरफ़ उस ने यह उतारा है

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है ऐ नबी (स)! जब तुम औरतों को तलाक़ दो तो उन्हें उन की इद्दत के लिए तलाक़ दो और तुम इद्दत का शुमार रखो, और तुम डरो अल्लाह से जो तुम्हारा रब है, तुम उन्हें उन के घरों से न निकालो और न वह खुद निकलें, मगर यह कि वह खुली बेहयाई की मुरतक़िब हों, और यह अल्लाह की हुदूद है, और जो अल्लाह की हदों से आगे निकलेगा (तजावुज़ करेगा) तो तहकीक़ उस ने अपनी जान पर जुल्म किया, तुम्हें ख़बर नहीं कि शायद अल्लाह उस के बाद (रुज़ूअ की) कोई और वात (सबील) पैदा कर दे। (1) फिर जब वह पहुँच जाएँ अपनी मीज़ाद तो उन्हें अच्छे तरीके से रोक लो या उन्हें अच्छे तरीके से जुदा (रुख़सत) कर दो, और अपने में से दो (2) इंसाफ़ पसंद गवाह कर लो और तुम (सिर्फ़) अल्लाह के लिए गवाही दो, यही है जिस की (हर उस शख़्स को) नसीहत की जाती है जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है, और जो अल्लाह से डरता है तो वह उस के लिए नजात (मुख़लिसी) की राह निकाल देता है। (2) और वह उसे रिज़क़ देता है जहाँ से उसे गुमान (भी) नहीं होता, और जो अल्लाह पर भरोसा करता है तो वह उस के लिए काफ़ी है, बेशक अल्लाह अपने काम पूरे करने वाला है, बेशक अल्लाह ने हर वात के लिए अन्दाज़ा मुक़रर किया है। (3) और जो हैज़ से ना उम्मीद हो गई हों तुम्हारी वीवियों में से, अगर तुम्हें शुब्हा हो तो उन की इद्दत तीन महीने है और (यही हुक़म कमसिन के लिए भी है) जिन्हें हैज़ नहीं आया। और हमल वालियों की इद्दत उन के वज़़अ हमल (बच्चा जनने) तक है और जो अल्लाह से डरेगा तो वह उस के लिए उस के काम में आसानी कर देगा। (4) यह अल्लाह के हुक़म है, उस ने तुम्हारी तरफ़ उतारे हैं और जो अल्लाह से डरेगा वह उस की बुराइयां उस से दूर फ़रमा देगा और उस को बड़ा अजर देगा। (5)

तुम जहां रहते हो उन्हें तुम अपनी इसतिताअत के मुताबिक (वहां) रखो, और तुम उन्हें तंग करने के लिए ज़रर (तक्लीफ़) न पहुँचाओ, और अगर वह हमल से हों तो उन पर खर्च करो यहां तक कि वज़ज़ हमल हो जाए (बच्चा पैदा हो जाए), फिर अगर वह तुम्हारे लिए (तुम्हारी खातिर) दूध पिलाएँ तो उन्हें उन की उज़रत दो, और तुम आपस में माकूल तरीके से मश्वरा कर लिया करो। और अगर तुम वाहम कशमकश करोगे तो उस को कोई दूसरी दूध पिला देगी। (6) चाहिए कि वसूत वाला अपनी वसूत के मुताबिक खर्च करे और जिस पर तंग कर दिया गया हो उस का रिज़क़ (आमदनी) तो अल्लाह ने जो उसे दिया है उस में से खर्च करना चाहिए, अल्लाह किसी को तक्लीफ़ नहीं देता (मुकल्लफ़ नहीं ठहराता) मगर (उसी क़द) जितना उस ने उसे दिया है, जल्द कर देगा अल्लाह तंगी के बाद आसानी। (7) और कितनी ही वसूतियां हैं जिन्होंने अपने रब के हुक्म से और उस के रसूलों से सरकशी की और हम ने सख़्ती से उन का हिसाब लिया और हम ने उन्हें बहुत बड़ा अज़ाब दिया। (8) फिर उन्होंने अपने काम का बवाल चखा और उन के काम का अन्जाम ख़सारा (घाटा) हुआ। (9) अल्लाह ने उन के लिए सख़्त अज़ाब तैयार किया है, पस तुम अल्लाह से डरो ऐ अज़ल वालो - ईमान वालो! तहकीक़ अल्लाह ने तुम्हारी तरफ़ किताब नाज़िल की है। (10) और रसूल (स) (भेजा) जो तुम पर पढ़ता है अल्लाह की रोशन आयतें ताकि जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए वह उन्हें निकाले तारीकियों से नूर की तरफ़, और जो अल्लाह पर ईमान लाएगा और अच्छे अमल करेगा तो वह उसे उन बागात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह रहेंगे उन में हमेशा हमेशा, बेशक अल्लाह ने उस के लिए बहुत अच्छी रोज़ी रखी है। (11) अल्लाह वह है जिस ने सात (7) आस्मान पैदा किए और ज़मीन भी उन की तरह, उन के दरमियान हुक्म उतरता है ताकि वह जान लें कि अल्लाह हर शै पर कुदरत रखता है और यह कि अल्लाह ने हर शै का इल्म से अहाता किया हुआ है। (12)

<p>أَسْكِنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكْنْتُمْ مِنْ وُجْدِكُمْ وَلَا تَضَارُّوهُنَّ لِيُصَيِّبُوا</p>					
कि तुम तंग करो	और तुम उन्हें ज़रर न पहुँचाओ	अपनी इसतिताअत के मुताबिक	तुम रहते हो	जहां	तुम उन्हें रखो
<p>عَلَيْهِنَّ وَإِنْ كُنَّ أَوْلَاتٍ حَمَلٌ فَانْفِقُوا عَلَيْهِنَّ حَتَّى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ</p>					
उन के हमल	यहां तक कि वज़ज़ हो जाए	उन पर	तो खर्च करो तुम	हमल वालियां (हमल से)	वह हों और अगर उन्हें
<p>فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَاتُّوهُنَّ أَجُورَهُنَّ وَأْتَمِرُوا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوفٍ وَإِنْ</p>					
और अगर	माकूल तरीके से	और तुम वाहम मश्वरा कर लिया करो आपस में	उन की उज़रत	तो तुम उन्हें दो	तुम्हारे लिए वह दूध पिलाएँ फिर अगर
<p>تَعَاَسَرْتُمْ فَاسْتَرْضِعْ لَهُ أُخْرَى ٦ لِيُنْفِقَ ذُو سَعَةٍ مِّن سَعَتِهِ وَمَنْ</p>					
और जो	अपनी वसूत से-	वसूत वाला	चाहिए कि खर्च करे	6	कोई उस तो दूध तुम वाहम कशमकश करोगे
<p>قَدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلْيُنْفِقْ مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَا آتَاهَا</p>					
जिस क़द उस ने उसे दिया	मगर	किसी को	तक्लीफ़ नहीं देता अल्लाह	उसे अल्लाह ने दिया	उस में तो उसे खर्च करना चाहिए उस का रिज़क़ उस पर तंग कर दिया गया
<p>سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ٧ وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ</p>					
से	उन्होंने ने सरकशी की	वसूतियां	और कई	7	आसानी तंगी के बदले जल्द कर देगा अल्लाह
<p>أَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهِ فَحَاسَبْنَهَا حِسَابًا شَدِيدًا وَعَدَبْنَهَا عَذَابًا نُكْرًا ٨</p>					
8	बहुत बड़ी	अज़ाब	और हम ने उन्हें अज़ाब दिया	सख़्ती से	हिसाब तो हम ने उन का हिसाब लिया और उस के रसूलों अपने रब के हुक्म
<p>فَدَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ أَمْرِهَا خُسْرًا ٩ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ</p>					
उन के लिए	अल्लाह ने तैयार किया है	9	ख़सारा	उन का काम	अन्जाम और अपना ववाल फिर उन्होंने ने चखा
<p>عَذَابًا شَدِيدًا فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ الَّذِينَ آمَنُوا ١٠</p>					
ईमान वालो	ऐ अज़ल वालो	पस तुम डरो अल्लाह से	सख़्त	अज़ाब	
<p>قَدْ أَنْزَلَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ١٠ رَسُولًا يَتْلُوا عَلَيْكُمْ آيَاتِ اللَّهِ مُبَيِّنَاتٍ</p>					
रोशन	अल्लाह की आयतें	तुम पर	वह पढ़ता है	रसूल 10	नसीहत (किताब) तुम्हारी तरफ़ तहकीक़ नाज़िल की अल्लाह ने
<p>لِيُخْرِجَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَمَنْ</p>					
और जो	नूर की तरफ़	तारीकियों से	और उन्होंने ने अच्छे अमल किए	जो ईमान लाए	ताकि वह निकाले
<p>يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَيَعْمَلُ صَالِحًا يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ</p>					
नहरें	उन के नीचे से	बहती है	बागात	वह उसे दाख़िल करेगा	अच्छे और वह अल्लाह पर ईमान लाएगा
<p>خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ١١ قَدْ أَحْسَنَ اللَّهُ لَكَ رِزْقًا ١١ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ</p>					
पैदा किए	अल्लाह वह जिस ने	11	रोज़ी	उस के लिए	बेशक बहुत अच्छी रखी अल्लाह ने हमेशा उन में वह हमेशा रहेंगे
<p>سَبْعَ سَمَاوَاتٍ وَمِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ يَتَنَزَّلُ الْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوا</p>					
ताकि वह जान लें	उन के दरमियान	हुक्म	उतरता है	उन की तरह	और ज़मीन से (भी) सात आस्मान
<p>أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ١٢ وَأَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ١٢</p>					
12	इल्म से	हर शै	अहाता किया हुआ है	और यह कि अल्लाह	कुदरत रखता है हर शै पर कि अल्लाह

ع ١٤

ع ١٤ عند المتقدين ١٢

ع ١٨

<b>آيَاتُهَا ۱۲ ❀ (66) سُورَةُ التَّحْرِيمِ ❀ زُكُوعَاتُهَا ۲</b>							
रुकुआत 2		(66) सूरतुत तहरीम हराम करना				आयात 12	
<b>بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ</b>							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
<b>يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكَ تَبْتَغِي مَرْضَاتَ</b>							
खुशनुदी	चाहते हुए	तुम्हारे लिए	जो अल्लाह ने हलाल किया	तुम क्यों हराम ठहराते हो?	ऐ नबी (स)		
<b>أَزْوَاجِكَ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ (1) قَدْ فَرَضَ اللَّهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ</b>							
खोलना (कफ़ारा)	तुम्हारे लिए	तहकीक़ मुक़र्रर कर दिया अल्लाह ने	1	मेहरवान	बख़शने वाला	और अल्लाह	अपनी वीवियों
<b>أَيْمَانِكُمْ وَاللَّهُ مَوْلَاكُمْ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ (2) وَإِذْ</b>							
और जब	2	हिक्मत वाला	जानने वाला	और वह	तुम्हारा कारसाज़	और अल्लाह	तुम्हारी क़समें
<b>أَسْرَ النَّبِيِّ إِلَىٰ بَعْضِ أَزْوَاجِهِ حَدِيثًا فَلَمَّا نَبَّأَتْ بِهِ وَأَظْهَرَهُ</b>							
और उस को ज़ाहिर कर दिया	उस ने ख़बर कर दी उस बात की	फिर जब	एक बात	अपनी वीवी	बाज़ (एक)	तक-से	नबी (स) ने राज़ की बात कही
<b>اللَّهُ عَلَيْهِ عَرَفَ بَعْضَهُ وَأَعْرَضَ عَنْ بَعْضٍ فَلَمَّا نَبَّأَهَا بِهِ</b>							
वह बात	उस (बीवी) को जतलाई	फिर जब	बाज़ से	और एराज़ किया	उस का कुछ	उस (नबी) ने ख़बर दी	उस पर अल्लाह
<b>قَالَتْ مَنْ أَنْبَأَكَ هَذَا قَالَ نَبَايَ الْعَلِيمِ الْخَبِيرِ (3) إِنْ تَتُوبَا</b>							
अगर तुम दोनों तौबा करो	3	ख़बर रखने वाला	इल्म वाला	मुझे ख़बर दी	फ़रमाया	इस किस ने आप (स) को ख़बर दी	वह बोली
<b>إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا وَإِنْ تَظَاهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللَّهَ</b>							
तो वेशक अल्लाह	उस पर	तुम एक दूसरी की मदद करोगी	और अगर	तुम्हारे दिल	तो यकीनन कज हो गए	अल्लाह के सामने	
<b>هُوَ مَوْلَاهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمَلَائِكَةُ بَعْدَ ذَلِكَ</b>							
उस के बाद (उन के अलावा)	और फ़रिश्ते	मोमिन (जमा)	और नेक	और जिब्राईल (अ)	उस का रफ़ीक़	वह	
<b>ظَهِيْرٌ (4) عَسَىٰ رَبُّهُ إِنْ طَلَّقَكُنَّ أَنْ يُبَدِّلَهُ أَزْوَاجًا خَيْرًا</b>							
बेहतर	बीवियां	कि उन के लिए बदल दे	अगर वह तुम्हें तलाक़ दे दें	उन का रब	क़रीब है	4	मददगार
<b>مَنْكُنَّ مُسْلِمَاتٍ مُّؤْمِنَاتٍ فَنِيْتٍ تَبِتِ غِبْدَتٍ سَبِيْحَتٍ</b>							
रोज़ेदार	इबादत गुज़ार	तौबा करने वालियां	फ़रमांवरदारी करने वालियां	ईमान वालियां	इताअत गुज़ार	तुम से	
<b>تَيَّبَتْ وَأَبْكَارًا (5) يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ</b>							
और अपने घर वालों को	अपने आप को	तुम बचाओ	ईमान वालो	ऐ	5	और कुंवारियां	शौहर दीदा
<b>نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلَائِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ</b>							
ज़ोर आवर	दुरुश्त खू	फ़रिश्ते	उस पर	और पत्थर	आदमी	उस का ईंधन	आग
<b>لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ (6)</b>							
6	उन्हें हुक़म दिया जाता है	जो	और वह करते हैं	वह हुक़म देता है उन्हें	जो	वह नाफ़रमानी नहीं करते अल्लाह की	

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है ऐ नबी (स)! जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल किया है तुम उसे क्यों हराम ठहराते हो? अपनी वीवियों की खुशनुदी चाहते हुए, और अल्लाह बख़शने वाला मेहरवान है। (1) तहकीक़ अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्हारी क़समें का कफ़ारा मुक़र्रर कर दिया है, और अल्लाह तुम्हारा कारसाज़ है, और वह जानने वाला हिक्मत वाला है। (2) और जब नबी (स) ने अपनी एक वीवी से एक राज़ की बात कही, फिर जब उस (बीवी) ने उस बात की (किसी और को) ख़बर कर दी और अल्लाह ने ज़ाहिर कर दिया उस (नबी स) पर, उस ने उस का कुछ (हिस्सा वीवी को) बताया और बाज़ से एराज़ किया, फिर उस वीवी को वह बात जतलाई तो वह पूछी कि आप (स) को किस ने ख़बर दी इस (बात) की? आप (स) ने फ़रमाया: मुझे इल्म वाले, ख़बर रखने वाले ने ख़बर दी। (3) (ऐ वीवियों!) अगर तुम दोनों अल्लाह के सामने तौबा करो (तो बेहतर है क्योंकि) तुम्हारे दिल यकीनन कज हो गए, अगर उस (नबी स) की (ईज़ा रसानी) पर तुम एक दूसरी की मदद करोगी तो वेशक अल्लाह उस का रफ़ीक़ है और जिब्राईल (अ) और नेक मोमिनीन, और फ़रिश्ते (भी) उन के अलावा मददगार है। (4) अगर वह तुम्हें तलाक़ दे दें तो क़रीब है कि उस का रब उस के लिए बीवियां बदल दे तुम से बेहतर इताअत गुज़ार, ईमान वालियां, फ़रमांवरदारी करने वालियां, तौबा करने वालियां, इबादत गुज़ार, रोज़ेदार, शौहर दीदा और कुंवारियां। (5) ऐ ईमान वालो! तुम अपने आप को और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस का ईंधन आदमी और पत्थर हैं, उस पर दुरुश्त खू, ज़ोर आवर फ़रिश्ते (मुअय्यन) हैं, अल्लाह जो उन्हें हुक़म देता है उस की नाफ़रमानी नहीं करते और वह करते हैं जो उन्हें हुक़म दिया जाता है। (6)

ऐ काफ़िरों! आज तुम उज़्र न करो (बहाने न बनाओ) इस के सिवा नहीं कि तुम्हें उस का बदला दिया जाएगा जो तुम करते थे। (7) ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह के आगे तौबा करो खालिस (सच्ची) तौबा, उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम से दूर कर देगा तुम्हारे गुनाह और वह तुम्हें उन बागात में दाखिल करेगा जिन के नीचे नहरें जारी हैं, उस दिन अल्लाह रुस्वा न करेगा नबी (स) को और उन लोगों को जो उस के साथ ईमान लाए, उन का नूर उन के सामने और उन के दाएं दौड़ता होगा, और वह दुआ करते होंगे: ऐ हमारे रब! हमारे लिए हमारा नूर पूरा कर दे और हमारी मग्फ़िरत फ़रमा दे, बेशक तू हर शै पर कुदरत रखने वाला है। (8)

ऐ नबी (स) जिहाद कीजिए काफ़िरों और मुनाफ़िकों से और उन पर सख़्ती कीजिए, और उन का ठिकाना जहननम है, और वह (बहुत) बुरी जगह है। (9)

बयान की अल्लाह ने काफ़िरों के लिए नूह (अ) की बीबी और लूत (अ) की बीबी की मिसाल, वह दोनों दो बन्दों के मातहत थीं हमारे सालेह बन्दों में से, सो उन्होंने अपने शौहरों से ख़ियानत की तो अल्लाह के आगे उन दोनों के कुछ काम न आ सके, और कहा गया तुम दोनों जहननम में दाख़िल हो जाओ दाख़िल होने वालों के साथ। (10)

और अल्लाह ने मोमिनों के लिए फ़िरज़ौन की बीबी की मिसाल पेश की, जब उस (बीबी) ने कहा: ऐ मेरे रब! मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बनादे और मुझे फ़िरज़ौन और उस के अमल से बचा ले और मुझे ज़ालिमों की क़ौम से बचा ले। (11)

और (दूसरी मिसाल) इमरान (अ) की बेटी मरयम (अ), जिस ने हिफ़ाज़त की अपनी शर्मगाह की, सो हम ने उस में अपनी रूह फूँकी, और उस ने तसदीक़ की अपने रब की बातों की और उस की किताबों की और वह फ़रमावरदारी करने वालियों में से थी। (12)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ إِنَّمَا تُجْرُونَ مَا							
इस के सिवा नहीं कि तुम्हें बदला दिया जाएगा जो	आज	तुम उज़्र न करो	जिन लोगों ने कुफ़ किया	ऐ			
كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَّصُوحًا							
खालिस	तौबा	अल्लाह के आगे	तुम तौबा करो	ईमान वालो	ऐ	7	तुम करते थे
عَلَىٰ رَبِّكُمْ أَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُم جَنَّاتٍ تَجْرِي							
जारी है	बागात	और वह दाख़िल करेगा तुम्हें	तुम्हारी बुराइयां (गुनाह)	तुम से	कि वह दूर कर देगा	तुम्हारा रब	उम्मीद है
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللَّهُ النَّبِيَّ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ							
उस के साथ	और जो लोग ईमान लाए	नबी (स)	रुस्वा न करेगा अल्लाह	उस दिन	नहरें	उन के नीचे	
نُورَهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَتِمِّمْ لَنَا							
पूरा कर दे हमारे लिए	ऐ हमारे रब	वह कहते (दुआ करते) होंगे	और उन के दाहिने	उन के सामने	दौड़ता होगा	उन का नूर	
نُورَنَا وَاعْفُرْ لَنَا إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٨﴾ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ							
जिहाद कीजिए	ऐ नबी (स)	8	कुदरत रखने वाला	हर शै पर	बेशक तू	और हमारी मग्फ़िरत फ़रमादे	हमारा नूर
الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاعْلُظْ عَلَيْهِمْ وَمَأْوَهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ							
और बुरी	जहननम	और उन का ठिकाना	उन पर	और सख़्ती कीजिए	और मुनाफ़िकों	काफ़िरों	
الْمَصِيرُ ﴿٩﴾ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ كَفَرُوا امْرَأَتِ نُوحٍ							
नूह (अ) की बीबी	काफ़िरों के लिए	मिसाल	बयान की अल्लाह ने	9	जगह		
وَأَمْرَاتٍ لُّوطٍ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحِينَ							
दो सालेह	हमारे बन्दे	से	दो बन्दे	मातहत	दोनों थें	और लूत (अ) की बीबी	
فَخَانَتْهُمَا فَلَمَّ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَقِيلَ ادْخُلَا النَّارَ							
तुम दोनों दाख़िल हो जाओ जहननम	और कहा गया	कुछ	अल्लाह से-आगे	उन के	तो उन दोनों के काम न आया	सो उन्होंने ने उन दोनों से ख़ियानत की	
مَعَ الدَّٰخِلِينَ ﴿١٠﴾ وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ آمَنُوا امْرَأَتِ فِرْعَوْنَ							
फ़िरज़ौन की बीबी	मोमिनों के लिए	मिसाल	और बयान की अल्लाह ने	10	दाख़िल होने वाले	साथ	
إذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِي عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِي مِنْ							
से	और मुझे बचा ले	जन्नत में	एक घर	अपने पास	मेरे लिए बना दे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा जब
فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهِ وَنَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿١١﴾ وَمَرِيَمَ							
और मरयम	11	ज़ालिमों की क़ौम	से	मुझे बचा ले	और उस का अमल	फ़िरज़ौन	
ابْنَتِ عِمْرَانَ الَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهِ مِنْ رُوحِنَا							
अपनी रूह से	उस में	सो हम ने फूँकी	अपनी शर्मगाह	हिफ़ाज़त की	वह जिस ने	इमरान की बेटी	
وَصَدَقَتْ بِكَلِمَاتِ رَبِّهَا وَكُتِبَ عَلَيْهَا إِتْقَانُهَا وَمَرْءُهَا كَتَابًا							
12	फ़रमावरदारी करने वालियां	से	और वह थी	और उस की किताबों	अपना रब	बातों की	और उस ने तसदीक़ की

١  
ع  
١٩

٢  
ع  
٢٠

٣  
ع  
٢٠

آيَاتُهَا ٣٠ ❀ (٦٧) سُورَةُ الْمَلِكِ ❀ رُكُوعَاتُهَا ٢						
रुकुआत 2		(67) सूरतुल मुल्क बादशाही			आयात 30	
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ						
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
تَبْرَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ						
हर शौ	पर	और वह	बादशाही	उस के हाथ में	वह जिस	बड़ी बरकत वाला
قَدِيرٌ ﴿١﴾ الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ						
सब से बेहतर	तुम में से कौन	ताकि वह आजमाए तुम्हें	और ज़िन्दगी	मौत	पैदा किया	वह जिस 1 कुदरत रखने वाला
عَمَلًا ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَفُورُ ﴿٢﴾ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا ۗ						
एक के ऊपर एक	सात आस्मान	जिस ने बनाए	2	बख़्शने वाला	ग़ालिब	और वह अमल में
مَا تَرَىٰ فِي خَلْقِ الرَّحْمَنِ مِن تَفْوُتٍ ۗ فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۗ						
निगाह	फिर लौटा	कोई फर्क	रहमान (अल्लाह)	बनाना (तख़लीक)	में	तू न देखेगा
هَلْ تَرَىٰ مِن فُطُورٍ ﴿٣﴾ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنقَلِبْ إِلَيْكَ						
तेरी तरफ	वह लौट आएगी	दोबारा	निगाह	तू दोबारा लौटा	फिर	3 कोई शिगाफ़ क्या तू देखता है?
الْبَصَرَ حَاسِنًا وَهُوَ حَسِيرٌ ﴿٤﴾ وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا						
आस्माने दुनिया	और यकीनन हम ने आरास्ता किया	4	थकी मान्दा	और वह	खार हो कर	निगाह
بِمَصَابِيحَ وَجَعَلْنَاهَا رُجُومًا لِلشَّيْطَانِ وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ						
उन के लिए	और हम ने तैयार किया	शैतानों के लिए	मारने का औज़ार	और हम ने उसे बनाया	चिरागों से	
عَذَابَ السَّعِيرِ ﴿٥﴾ وَلِلَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ۗ						
जहननम का अज़ाब	उन के रब की तरफ से	जिन्होंने ने कुफ़ किया	और उन लोगों के लिए	5	दहकती आग (जहननम) का अज़ाब	
وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٦﴾ إِذَا أُلْقُوا فِيهَا سَمِعُوا لَهَا شَهيقًا وَهِيَ						
और वह	चीखना चिल्लाना	उस का	वह सुनेंगे	उस में	जब वह डाले जाएंगे	6 लौटने की जगह और बुरी
تَفُورٌ ۗ تَكَادُ تَمَيِّزُ مِنَ الْغَيْظِ ۗ كُلَّمَا أُلْقِيَ فِيهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ						
वह उन से पूछेंगे	कोई गिरोह	डाला जाएगा उस में	जब भी	ग़ज़ब से	करीब है कि फट पड़े	7 जोश मार रही होगी
خَزْنَتَهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ﴿٨﴾ قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا						
सो हम ने झुटलाया	डराने वाला	ज़रूर आया हमारे पास	हाँ	वह कहेंगे	8	कोई डराने वाला क्या नहीं आया तुम्हारे पास उस के दारोगा
وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ ۗ إِن أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَبِيرٍ ﴿٩﴾						
9	बड़ी	गुमराही में	मगर (सिर्फ)	नहीं तुम	कुछ	नहीं नाज़िल की अल्लाह ने और हम ने कहा
وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ ﴿١٠﴾						
10	दोज़खियों	में	हम न होते	या हम समझते	हम सुनते	अगर और वह कहेंगे

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है बड़ी बरकत वाला है वह जिस के हाथों में है बादशाही, और वह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला। (1) वह जिस ने पैदा किया मौत और ज़िन्दगी को, ताकि वह तुम्हें आजमाए कि तुम में से कौन है अमल में सब से बेहतर, और वह ग़ालिब बख़्शने वाला है। (2) जिस ने सात आस्मान बनाए एक के ऊपर एक, तू अल्लाह की तख़लीक में कोई फर्क न देखेगा, फिर निगाह लौटा कर (देख) क्या तू कोई शिगाफ़ (दराड़) देखता है। (3) फिर दोबारा निगाह लौटा कर (देख) वह तेरी तरफ़ खार हो कर थकी मान्दी लौट आएगी। (4) और यकीनन हम ने आरास्ता किया आस्माने दुनिया को चिरागों से और हम ने उसे शैतानों के लिए मारने का औज़ार बनाया और हम ने उन के लिए जहननम का अज़ाब तैयार किया है। (5) और जिन लोगों ने कुफ़ किया उन के लिए उन के रब की तरफ से जहननम का अज़ाब है, और (यह) बुरी लौटने की जगह है। (6) जब वह उस में डाले जाएंगे तो वह सुनेंगे उस का चीखना चिल्लाना और वह जोश मार रही होगी। (7) करीब है कि ग़ज़ब से फट पड़े, जब भी उस में कोई गिरोह डाला जाएगा, उन से उस के दारोगा पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया था? (8) वह कहेंगे: हाँ (क्यों नहीं) हमारे पास ज़रूर डराने वाला आया, सो हम ने झुटलाया और हम ने कहा कि अल्लाह ने कुछ नाज़िल नहीं किया, तुम सिर्फ़ बड़ी गुमराही में हो। (9) और वह कहेंगे: अगर हम सुनते या हम समझते तो हम दोज़खियों में न होते। (10)

सो उन्होंने ने अपने गुनाहों का एतिराफ़ कर लिया, पस लानत है दोज़खियों के लिए। (11)

वेशक जो लोग बिन देखे अपने रब से डरते हैं उन के लिए बख़्शिश और बड़ा अजर है। (12)

और तुम अपनी बात छुपाओ या उस को बुलन्द आवाज़ से कहो, वह वेशक जानने वाला है दिलों के भेद को। (13)

क्या जिस ने पैदा किया वही न जानेगा? और वह वारीक वीन बड़ा बाख़बर है। (14)

वही है जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को किया मुसख़्बर ताकि तुम उस के रास्तों में चलो और उस के रिज़्क में से खाओ, और उसी की तरफ़ जी उठ कर जाना है। (15)

क्या तुम (उस से) बेख़ौफ़ हो? जो आस्मान में है कि वह तुम्हें ज़मीन में धंसा दे तो नागहां वह हिलने लगे। (16)

क्या तुम (उस से) बेख़ौफ़ हो जो आस्मानों में है कि वह तुम पर पत्थरों की वारिश भेज दे? सो तुम जल्द जान लोगे कि मेरा डराना कैसा है? (17)

और ज़रूर उन लोगों ने झुटलाया जो इन से पहले थे तो (याद करो) कैसा हुआ मेरा अज़ाब! (18)

क्या उन्होंने ने अपने ऊपर परिन्दों को पर फ़ैलाते और सुकेड़ते नहीं देखा, उन्हें (कोई) नहीं थाम सकता अल्लाह के सिवा, वेशक वह हर चीज़ का देखने वाला। (19)

भला तुम्हारा वह कौन सा लशकर है जो तुम्हारी मदद करे अल्लाह के सिवा, काफ़िर नहीं मगर (महज़) धोके में है। (20)

भला कौन है वह जो तुम्हें रिज़्क दे अगर वह अपना रिज़्क रोकले? बल्कि वह सरकशी और फ़रार में ढीट बने हुए है। (21)

पस जो शख्स अपने मुँह के बल गिरता हुआ (औन्धा) चलता है ज़ियादा हिदायत याफ़ता है या वह जो सीधे रास्ते पर सीधा चलता है? (22)

فَاعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ فَسُحِقًا لِأَصْحَابِ السَّعِيرِ (11) إِنَّ الَّذِينَ

जो लोग	वेशक	11	दोज़खियों के लिए	तो दूरी (लानत)	अपने गुनाहों का	सो उन्होंने ने एतिराफ़ कर लिया
--------	------	----	------------------	----------------	-----------------	--------------------------------

يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ (12) وَأَسْرُوا

और तुम छुपाओ	12	बड़ा	और अजर	बख़्शिश	उन के लिए	बिन देखे	अपना रब	डरते हैं
--------------	----	------	--------	---------	-----------	----------	---------	----------

قَوْلَكُمْ أَوْ اجْهَرُوا بِهِ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ (13) أَلَا يَعْلَمُ

क्या नहीं जानेगा	13	सीनों (दिलों) के भेद	जानने वाला	वेशक वह	उस को	या बुलन्द आवाज़ से कहो	अपनी बात
------------------	----	----------------------	------------	---------	-------	------------------------	----------

مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ (14) هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ

तुम्हारे लिए	वह जिस ने किया	वही	14	बड़ा बाख़बर	वारीक वीन	और वह	जिस ने पैदा किया
--------------	----------------	-----	----	-------------	-----------	-------	------------------

الْأَرْضَ ذُلُولًا فَأَمْشُوا فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا مِنْ رِزْقِهِ وَإِلَيْهِ

और उसी की तरफ़	उस के रिज़्क से	सो तुम खाओ	उस के रास्तों में	ताकि तुम चलो	मुसख़्बर	ज़मीन
----------------	-----------------	------------	-------------------	--------------	----------	-------

النُّشُورِ (15) ءَأَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يَخْسِفَ بِكُمْ

तुम्हें	कि वह धंसा दे	आस्मान में	जो	क्या तुम बेख़ौफ़ हो	15	जी उठ कर जाना
---------	---------------	------------	----	---------------------	----	---------------

الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَمُورُ (16) أَمْ أَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ

कि	आस्मान में	जो	क्या तुम बेख़ौफ़ हो	16	वह जुम्बिश करे	तो नागहां	ज़मीन
----	------------	----	---------------------	----	----------------	-----------	-------

يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ نَذِيرٍ (17) وَلَقَدْ كَذَّبَ

और पक्का झुटलाया	17	मेरा डराना	कैसा	सो तुम जल्द जान लोगे	पत्थरों की वारिश	तुम पर	वह भेजे
------------------	----	------------	------	----------------------	------------------	--------	---------

الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرٍ (18) أَوَلَمْ يَرَوْا

क्या नहीं देखा उन्होंने ने	18	मेरा अज़ाब	हुआ	तो कैसा	इन से कब्ल	से	वह लोग जो
----------------------------	----	------------	-----	---------	------------	----	-----------

إِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَفَّتْ وَيَقْبِضُنَّ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا الرَّحْمَنُ

रहमान (अल्लाह)	सिवा	नहीं थाम सकता उन्हें	और सुकेड़ते	पर फ़ैलाते	अपने ऊपर	परिन्दों को
----------------	------	----------------------	-------------	------------	----------	-------------

إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ (19) أَمَّنْ هَذَا الَّذِي هُوَ جُنْدٌ لَكُمْ

तुम्हारा	लशकर	वह	जो	भला कौन है वह?	19	देखने वाला	हर शै को	वेशक वह
----------	------	----	----	----------------	----	------------	----------	---------

يَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُونِ الرَّحْمَنِ إِنَّ الْكُفْرُونَ إِلَّا فِي غُرُورٍ (20)

20	धोके में	मगर	काफ़िर (जमा)	नहीं	अल्लाह के सिवा	से	वह मदद करे तुम्हारी
----	----------	-----	--------------	------	----------------	----	---------------------

أَمَّنْ هَذَا الَّذِي يَرْزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ رِزْقَهُ بَلْ لَجُّوا

बल्कि जमे हुए	अपना रिज़्क	वह रोक ले	अगर	वह जो रिज़्क दे तुम्हें	भला कौन है
---------------	-------------	-----------	-----	-------------------------	------------

فِي عُتُوٍّ وَنُفُورٍ (21) أَفَمَنْ يَمْشِي مُكَبًّا عَلَى وَجْهِهِ

अपने मुँह के बल	गिरता हुआ	वह चलता है	पस क्या जो	21	और भागते हैं	सरकशी
-----------------	-----------	------------	------------	----	--------------	-------

أَهْدَىٰ أَمَّنْ يَمْشِي سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ (22)

22	सीधा रास्ता	पर	बराबर (सीधा)	चलता है	या वह जो	ज़ियादा हिदायत याफ़ता
----	-------------	----	--------------	---------	----------	-----------------------

ع  
١

وقف  
منزل  
وقف  
غفران  
وقف  
لام

قُلْ هُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ						
और आँखें	कान	तुम्हारे लिए	और उस ने बनाए	वह जिस ने पैदा किया तुम्हें	फरमा दें वही	
وَالْأَفْئِدَةَ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿٢٣﴾ قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ						
वह जिस ने फैलाया तुम्हें	वही	फरमा दें	23	जो तुम शुक्र करते हो	बहुत कम	और दिल (जमा)
فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٤﴾ وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ						
यह वादा	कब	और वह कहते हैं	24	तुम उठाए जाओगे	और उसी की तरफ	ज़मीन में
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٥﴾ قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا						
मैं	और इस के सिवा नहीं	अल्लाह के पास	इस के सिवा नहीं कि इल्म	फरमा दें	25	सच्चे तुम हो अगर
نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢٦﴾ فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سَيِّئَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا						
जिन्होंने ने कुफ़ किया	बुरे (सियाह) हो जाएंगे चेहरे	नज़्दीक आता	वह उसे देखेंगे	फिर जब	26	साफ़ डराने वाला
وَقِيلَ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِه تَدْعُونَ ﴿٢٧﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ						
किया तुम ने देखा	फरमा दें	27	तुम मांगते	उस को	तुम थे	वह जो यह और कहा जाएगा
إِنْ أَهْلَكْنِي اللَّهُ وَمَنْ مَعِيَ أَوْ رَحِمَنَا فَمَنْ يُجِيرُ الْكَافِرِينَ						
काफ़िरों	पनाह देगा	तो कौन	या वह रहम फरमाए हम पर	मेरे साथ	और जो	मुझे हलाक कर दे अल्लाह अगर
مِنْ عَذَابِ الْيَمِّ ﴿٢٨﴾ قُلْ هُوَ الرَّحْمَنُ أَمَّنَّا بِهِ وَعَلَيْهِ						
और उसी पर	उस पर	हम ईमान लाए	वही रहमान	फरमा दें	28	दर्दनाक अज़ाब से
تَوَكَّلْنَا فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٢٩﴾ قُلْ						
फरमा दें	29	खुली गुमराही	मैं	कौन वह	सो तुम जल्द जान लोगे	हम ने भरोसा किया
أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَصْبَحَ مَاؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَأْتِيكُمْ بِمَاءٍ مَّعِينٍ ﴿٣٠﴾						
30	रवां पानी	ले आएगा तुम्हारे पास	तो कौन	नीचे उतरा हुआ	तुम्हारा पानी	अगर हो जाए क्या तुम ने देखा (भला देखो)
آيَاتُهَا ٥٢ ﴿٦٨﴾ سُورَةُ الْقَلَمِ ﴿٦٨﴾ رُكُوعَاتُهَا ٢						
रुकुआत 2		(68) सूरतुल क़लम			आयात 52	
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ						
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
ن وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُونَ ﴿١﴾ مَا أَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ						
अपना रब	नेमत (फज़ल) से	नहीं आप (स)	1	वह लिखते हैं	और जो	नून कसम है क़लम की
بِمَجْنُونٍ ﴿٢﴾ وَإِنَّ لَكَ لَأَجْرًا غَيْرَ مَمْنُونٍ ﴿٣﴾ وَإِنَّكَ لَعَلَى						
यकीनन-पर	और बेशक आप (स)	3	ख़तम न होने वाला	अलबत्ता अजर	और बेशक आप के लिए	2 मजनून
خُلِقَ عَظِيمٍ ﴿٤﴾ فَسْتَبْصِرُ وَيُبْصِرُونَ ﴿٥﴾ بِأَيْكُمْ الْمَفْتُونُ ﴿٦﴾						
6	दीवाना	तुम में से कौन?	5	और वह भी देख लेंगे	आप (स) जल्द देख लेंगे	4 अख़्लाक़ का ऊंचा मुक़ाम

आप (स) फरमा दें: वही है जिस ने तुम्हें पैदा किया और उस ने बनाए तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल, तुम बहुत कम शुक्र करते हो। (23)

आप (स) फरमा दें: वही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में फैलाया और उसी की तरफ़ तुम उठाए जाओगे। (24)

और वह कहते हैं कि यह वादा कब (पूरा होगा?) अगर तुम सच्चे हो। (25)

आप (स) फरमा दें: इस के सिवा नहीं कि इल्म अल्लाह के पास है, और इस के सिवा नहीं कि मैं साफ़ साफ़ डराने वाला हूँ। (26)

फिर जब वह उसे नज़्दीक आता देखेंगे तो उन लोगों के चेहरे सियाह हो जाएंगे जिन्होंने ने कुफ़ किया और कहा जाएगा कि यह है वह जो तुम मांगते थे। (27)

आप (स) फरमा दें: भला देखो तो अगर अल्लाह हलाक कर दे मुझे और (उन्हें) जो मेरे साथ है या हम पर रहम फरमाए तो काफ़िरों को दर्दनाक अज़ाब से कौन बचाएगा? (28)

आप (स) फरमा दें: वही रहमान है, हम ईमान लाए उस पर और उसी पर हम ने भरोसा किया, सो तुम जल्द जान लोगे कि कौन खुली गुमराही में है? (29)

आप (स) फरमा दें: भला देखो तो अगर हो जाए तुम्हारा पानी नीचे को उतरा हुआ (खुशक) तो कौन ले आएगा तुम्हारे पास (सूत का) रवां पानी? (30)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है नून। कसम है क़लम की और जो वह लिखते हैं। (1)

आप (स) अपने रब के फज़ल से मजनून नहीं हैं। (2)

और बेशक आप (स) के लिए अजर है ख़तम न होने वाला। (3)

और बेशक आप (स) अख़्लाक़ के ऊंचे मुक़ाम पर हैं। (4)

पस आप (स) जल्द देख लेंगे और वह भी देख लेंगे (5)

(कि) तुम में से कौन दीवाना है? (6)

वेशक आप (स) का रब उस को खूब जानता है जो गुमराह हुआ उस की राह से और वह खूब जानता है हिदायत याफ़ता लोगों को। (7)

पस आप (स) झुटलाने वालों का कहा न मानें। (8)

वह चाहते हैं कि काश आप (स) नर्मी करें तो वह (भी) नर्मी करें। (9)

और आप (स) वेवक़अत बात बात पर कसमें खाने वाले का कहा न मानें। (10)

ऐव निकालने वाला चुर्लियां लगाते फिरने वाला। (11)

माल में बुख़ल करने वाला, हद से बढ़ने वाला गुनाहगार। (12)

सख़्त खू, उस के बाद बद असल। (13)

इस लिए कि वह माल वाला और औलाद वाला है। (14)

जब उसे हमारी आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो वह कहता है: यह अगले लोगों की कहानियां हैं। (15)

हम जल्द दाग़ देंगे उस की नाक पर। (16)

वेशक हम ने उन्हें आज़माया जैसे हम ने आज़माया था बाग़ वालों को, जब उन्होंने ने कसम खाई कि हम सुबह होते उस का फल ज़रूर तोड़ लेंगे। (17)

और उन्होंने ने “इन्शा अल्लाह” न कहा। (18)

पस उस (बाग़) पर तेरे रब की तरफ़ से एक अज़ाव फिर गया और वह सोए हुए थे। (19)

तो वह (बाग़) सुबह को रह गया जैसे एक कटा हुआ खेत। (20)

तो वह सुबह होते एक दूसरे को पुकारने लगे। (21)

कि सुबह सवेरे अपने खेत पर चलो अगर तुम काटने वाले हो (अगर तुम्हें खेती काटनी है)। (22)

फिर वह चले और वह आपस में चुपके चुपके कहते थे। (23)

कि आज वहां तुम पर कोई मिस्कीन दाख़िल न होने पाए। (24)

और वह सुबह सवेरे चले (इस ज़अम के साथ) कि वह बख़ीली पर कादिर है। (25)

फिर जब उन्होंने ने उसे देखा तो वह बोले कि वेशक हम राह भूल गए हैं। (26)

बल्कि हम महरूम (बद नसीब) हो गए हैं। (27)

कहा उन के बेहतरीन आदमी ने: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि तुम तस्वीह क्यों नहीं करते? (28)

वह बोले: पाक है हमारा रब, वेशक हम ज़ालिम थे। (29)

पस एक दूसरे को अपनाया बाज़ पर बाज़ मलामत करते हुए। (30)

वह बोले हाए हमारी खराबी! वेशक हम (ही) सरकश थे। (31)

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ							
वेशक आप (स) का रब	वह खूब जानता है	उस को जो	उस की राह से	वह गुमराह हुआ	और वह खूब जानता है	वेशक आप (स) का रब	
بِالْمُهْتَدِينَ ﴿٧﴾ فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِينَ ﴿٨﴾ وَذُؤًا لَوْ تَدَّهْنُ							
हिदायत याफ़ता लोगों को	7	पस आप (स) कहा न मानें	झुटलाने वालों	8	वह चाहते हैं	काश आप नर्मी करें	
فَيُدْهِنُونَ ﴿٩﴾ وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِينٍ ﴿١٠﴾ هَمَّازٍ مَشَّاءٍ							
तो वह भी नर्मी करें	9	और आप (स) कहा न मानें	बात बात पर कसमें खाने वाला	10	वे वक़अत	ऐव निकालने वाला	फिरने वाला
بِنَوْمٍ ﴿١١﴾ مِّنَاعٍ لِلْخَيْرِ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ﴿١٢﴾ عُثْلٍ بَعْدَ ذَلِكَ زَنِيمٍ ﴿١٣﴾							
चुर्ली लिए	11	रोकने (बुख़ल करने) वाला	माल में	हद से बढ़ने वाला	गुनाहगार	12	सख़्त खू
उस के बाद बद असल	13	उस के बाद बद असल	सख़्त खू	12	गुनाहगार	हद से बढ़ने वाला	माल में
أَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَبَنِينَ ﴿١٤﴾ إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ							
इस लिए कि वह है	माल वाला	और औलाद वाला	14	जब	पढ़ कर सुनाई जाती है उसे	हमारी आयतें	वह कहता है
أَسَاطِيرِ الْأُولِينَ ﴿١٥﴾ سَنَسِمُهُ عَلَى الْخُرطومِ ﴿١٦﴾ إِنَّا بَلَوْنَهُمْ كَمَا							
कहानियां	अगले लोग	15	हम जल्द दाग़ देंगे उस को	सूँड (नाक) पर	16	वेशक हम ने आज़माया उन्हें	जैसे
بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ إِذْ أَقْسَمُوا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ﴿١٧﴾							
हम ने आज़माया	बाग़ वालों को	जब उन्होंने ने कसम खाई	हम ज़रूर तोड़ लेंगे उस का फल	सुबह होते	17	सुबह होते	
وَلَا يَسْتَشْنُونَ ﴿١٨﴾ فَطَافَ عَلَيْهَا طَائِفٌ مِّن رَّبِّكَ وَهُمْ نَائِمُونَ ﴿١٩﴾							
और उन्होंने ने इन्शा अल्लाह न कहा	18	पस फिर गया	उस पर	एक फिरने वाला (अज़ाव)	तेरे रब की तरफ़ से	और वह	सोए हुए थे
فَاصْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ ﴿٢٠﴾ فَتَنَادُوا مُصْبِحِينَ ﴿٢١﴾ أَنْ اغْدُوا عَلَيَّ							
तो वह सुबह को रह गया	तो वह सुबह को रह गया	जैसे कटा हुआ खेत	20	तो एक दूसरे को पुकारने लगे	सुबह होते	21	सुबह सवेरे चलो
حَرِّكُمْ إِنَّكُمْ صَرِمِينَ ﴿٢٢﴾ فَانطَلَقُوا وَهُمْ يَتَخَفَتُونَ ﴿٢٣﴾							
अपने खेत	अगर तुम हो	काटने वाले	22	फिर वह चले	और वह	आपस में चुपके चुपके कहते थे	23
أَنْ لَا يَدْخُلْنَهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مَسْكِينٌ ﴿٢٤﴾ وَغَدُوا عَلَيَّ حَرْدٍ							
कि	वहां दाख़िल न होने पाए	आज	तुम पर	कोई मिस्कीन	24	और वह सुबह सवेरे चले	बख़ीली पर
فَدِيرِينَ ﴿٢٥﴾ فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوا إِنَّا لَضَالُونَ ﴿٢٦﴾ بَلْ نَحْنُ							
वह कादिर है	25	फिर जब	उन्होंने ने उसे देखा	वह बोले	वेशक हम राह भूल गए हैं	26	बल्कि हम
مَحْرُومُونَ ﴿٢٧﴾ قَالَ أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُونَ ﴿٢٨﴾							
महरूम हो गए हैं	27	कहा	उन का सब से अच्छा	क्या मैं ने नहीं कहा था	तुम से	तुम तस्वीह क्यों नहीं करते	28
قَالُوا سُبْحَانَ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٢٩﴾ فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ							
वह बोले	पाक है	हमारा रब	वेशक हम थे	ज़ालिम (जमा)	29	पस अपनाया	उन का बाज़ (एक)
عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَلَومُونَ ﴿٣٠﴾ قَالُوا يَؤِيلَنَّا إِنَّا كُنَّا طَغِينِ ﴿٣١﴾							
बाज़ (दूसरे) पर	एक दूसरे को मलामत करते हुए	30	वह बोले	हाए हमारी खराबी	वेशक हम थे	सरकश (जमा)	31



عَسَى رَبُّنَا أَنْ يُبَدِّلَنَا حَيْرًا مِّنْهَا إِنَّا إِلَى رَبِّنَا رَاغِبُونَ (32)									
32	रागिब (रुजूअ करने वाले)	अपने रब की तरफ	वेशक हम	इस से	बेहतर	हमें बदले में दे	कि	हमारा रब	उम्मीद है
كَذَلِكَ الْعَذَابُ وَالْعَذَابُ الْأَخْرَجَةُ الْكَبِيرُ لَوْ									
काश!	सब से बड़ा	अलबत्ता आखिरत का अज़ाब			अज़ाब	यूँ होता है			
كَانُوا يَعْلَمُونَ (33) إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتِ النَّعِيمِ									
34	नेमतों के बागात	उन के रब के पास	परहेज़गारों के लिए	वेशक	33	वह जानते होते			
أَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِينَ كَالْمُجْرِمِينَ (35) مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ (36)									
36	तुम फ़ैसला करते हो	कैसा	क्या हुआ तुम्हें	35	मुज़्रिमों की तरह	मुसलमानों	तो क्या हम करदेंगे		
أَمْ لَكُمْ كِتَابٌ فِيهِ تَدْرُسُونَ (37) إِنَّ لَكُمْ فِيهِ لَمَا تَخَيَّرُونَ (38)									
38	अलबत्ता जो तुम पसंद करते हो	उस में	तुम्हारे लिए	वेशक	37	तुम पढ़ते हो	उस में	कोई किताब	क्या तुम्हारे पास
أَمْ لَكُمْ أَيْمَانٌ عَلَيْنَا بِالْغَةِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ إِنَّ لَكُمْ									
तुम्हारे लिए	वेशक	कियामत के दिन	तक	पहुँचने वाला	हम पर (हमारे ज़िम्मे)	कोई पुख्ता अहद	क्या तुम्हारे लिए		
لَمَا تَحْكُمُونَ (39) سَلُّهُمْ أَيُّهُمْ بِذَلِكَ زَعِيمٌ (40) أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ									
शरीक (जमा)	या उन के	40	ज़ामिन (ज़िम्मेदार)	इस का	उन में से कौन	तू उन से पूछ	39	तुम फ़ैसला करते हो	अलबत्ता जो
فَلْيَأْتُوا بِشُرَكَائِهِمْ إِنْ كَانُوا صَادِقِينَ (41) يَوْمَ يُكْشَفُ									
खोल दिया जाएगा	जिस दिन	41	सच्चे	वह है	अगर	अपने शरीकों	तो चाहिए कि वह लाएं		
عَنْ سَاقٍ وَيُذْعَوْنَ إِلَى الشُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ (42)									
42	तो वह न कर सकेंगे		सिज्दों के लिए		और वह बुलाए जाएंगे	पिंडली	से		
خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهُفُهُمْ ذَّلَّةٌ وَقَدْ كَانُوا يُدْعَوْنَ									
बुलाए जाते थे	और तहकीक	ज़िल्लत	उन पर छाई हुई	उन की आँखें	झुकी हुई				
إِلَى الشُّجُودِ وَهُمْ سَلِيمُونَ (43) فَذَرْنِي وَمَنْ يُكَذِّبُ									
और वह जो झुटलाता है	पस मुझे छोड़ दो तुम	43	सही सालिम (जमा)	जब कि वह	सिज्द के लिए				
بِهَذَا الْحَدِيثِ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ (44) وَأُمْلِي									
और मैं ढील देता हूँ	44	वह जानते न होंगे	इस तरह	जल्द हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता खींचेंगे	इस बात को				
لَهُمْ إِنْ كِيدِي مَتِينٌ (45) أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِنْ مَّغْرَمٍ									
तावान	से	कि वह	कोई अजर	क्या आप (स) मांगते हैं उन से	45	बड़ी कवी	मेरी खुफिया तदवीर	वेशक	उन को
مُثْقَلُونَ (46) أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُمُونَ (47) فَاصْبِرْ									
पस आप (स) सबर करें	47	लिख लेते है	कि वह	इल्मे ग़ैब	उन के पास	या	46	बोझल (दबे जाते) है	
لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوتِ إِذْ نَادَى وَهُوَ مَكْظُومٌ (48)									
48	ग़म से भरा हुआ	और वह	जब उस ने पुकारा	मछली वाले (यूनस अ) की तरह	और न हों आप (स)	अपना रब	हुक़म के लिए		

उम्मीद है कि हमारा रब हमें इस से बेहतर बदले में दे, बेशक हम अपने रब की तरफ रुजूअ करने वाले हैं। (32)

यूँ होता है अज़ाब! और आखिरत का अज़ाब अलबत्ता सब से बड़ा है। काश! वह जानते होते। (33)

वेशक परहेज़गारों के लिए उन के रब के हाँ नेमतों के बागात हैं। (34) तो क्या हम कर देंगे मुसलमानों को मुज़्रिमों की तरह (महरूम)? (35)

तुम्हें क्या हुआ? तुम कैसा फ़ैसला करते हो? (36)

क्या तुम्हारे पास कोई (आस्मानी) किताब है कि उस में से तुम पढ़ते हो। (37) कि बेशक उस में तुम्हारे लिए (होगा) जो तुम पसंद करते हो। (38)

क्या तुम्हारे लिए हमारे ज़िम्मे कोई पुख्ता अहद है कियामत के दिन तक कि बेशक तुम्हारे लिए (होगा) जो तुम फ़ैसला करो। (39)

तू उन से पूछ कि उन में से कौन इस का ज़ामिन है? (40)

या उन के शरीक हैं (जिन्होंने ने इस का ज़िम्मा लिया है)? तो चाहिए कि वह अपने शरीकों को लाएं अगर वह सच्चे हैं। (41)

जिस दिन पिंडली से खोल दिया जाएगा और वह सिज्दों के लिए बुलाए जाएंगे तो वह न कर सकेंगे। (42)

उन की आँखें झुकी हुई (होंगी) और उन पर ज़िल्लत छाई हुई होगी, और इस से कब्ल वह सिज्दों के लिए बुलाए जाते थे जब कि (सही) सालम थे (और वह इन्कार करते थे)। (43)

पस जो इस बात को झुटलाता है तुम उस को मुझ पर छोड़ दो। हम जल्द उन्हें इस तरह आहिस्ता आहिस्ता खींचेंगे कि वह जानते न होंगे। (44)

और मैं उन्हें ढील देता हूँ, बेशक मेरी खुफिया तदवीर बड़ी कवी है। (45)

क्या आप (स) उन से कोई अजर मांगते हैं? कि वह (उस) तावान (के बोझ) से दबे जाते हैं। (46)

या उन के पास इल्मे ग़ैब है? कि वह लिख लेते हैं। (47)

पस आप (स) अपने रब के हुक़म के लिए सबर करें और आप (स) यूनस (अ) की तरह न हो जाएँ, जब उस ने (अल्लाह तआला को) पुकारा और वह ग़म से भरा हुआ था। (48)

وقف الهم

الهم

سبح 15

وقف الهم

अगर उस के रब की नेमत ने उस को न संभाला होता तो अलबत्ता वह चटियल मैदान में बदहाल डाला जाता और उस का हाल अब्तर रहता। (49) पस उस के रब ने उसे बरगुज़ीदा किया तो उसे नेकोकारों में से कर लिया। (50)

और तहकीक करीब है (ऐसा लगता है) के काफ़िर आप (स) को फुसला देंगे अपनी निगाहों से जब वह किताबे नसीहत को सुनते हैं और वह कहते हैं कि बेशक यह दीवाना है। (51) हालांकि यह नहीं, मगर तमाम जहानों के लिए (सिर्फ़ और सिर्फ़) नसीहत। (52)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है सचमुच होने वाली क़ियामत! (1) क्या है क़ियामत? (2)

और तुम क्या समझे कि क्या है क़ियामत? (3) समूद और आद ने खड़खड़ाने वाली (क़ियामत) को झुटलाया। (4)

पस जो समूद (थे) वह बड़ी ज़ोर दार आवाज़ से हलाक किए गए। (5) और जो आद (थे) तो वह हलाक किए गए हवा से तुन्द ओ तेज़ हद से ज़ियादा बढ़ी हुई। (6)

उस (अल्लाह) ने उस (आन्धी) को उन पर लगातार सात रात और आठ दिन मुसल्लत कर दिया। पस तू उस कौम को उस में (रूँ) गिरी हुई देखता गोया कि वह खजूर के खोखले तने है। (7)

तो क्या तू उन का कोई बकिया देखता है? (8) और फ़िरऔन आया और उस से पहले के लोग और उलटी हुई बस्तियों वाले ख़ताओं के साथ। (9)

सो उन्होंने ने अपने रब के रसूल (अ) की नाफ़रमानी की तो उन्हें सख़्त गिरिफ़्त ने आ पकड़ा। (10)

बेशक जब पानी तुग़्यानी पर आया हम ने तुम्हें कश्ती में सवार किया, (11)

ताकि हम उसे तुम्हारे लिए यादगार बनाएं और याद रखने वाला कान उसे याद रखे। (12)

لَوْلَا أَنْ تَدْرَكَهُ نِعْمَةٌ مِّنْ رَبِّهِ لَنُبِذَ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ﴿٤٩﴾

49	मलामत ज़दा (अबत्र हाल)	और वह	अलबत्ता वह डाला जाता चटियल मैदान में	उस के रब का	नेमत	अगर न उस को पाया (संभाला) होता
----	------------------------	-------	--------------------------------------	-------------	------	--------------------------------

فَاجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَجَعَلَهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٥٠﴾ وَإِنْ يَكَادُ

और तहकीक करीब है	50	नेकोकारों से	पस उस को कर लिया	उस का रब	पस उस को बरगुज़ीदा किया
------------------	----	--------------	------------------	----------	-------------------------

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُرْلَقُوْنَكَ بِأَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُوْلُوْنَ

और वह कहते हैं	(किताब) नसीहत	वह सुनते हैं	जब	अपनी निगाहों से	कि वह आप (स) को फुसला देंगे	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)
----------------	---------------	--------------	----	-----------------	-----------------------------	---------------------------------

إِنَّهُ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٥١﴾ وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٥٢﴾

52	तमाम जहानों के लिए	नसीहत	मगर	हालांकि यह नहीं	51	दीवाना अलबत्ता	बेशक यह
----	--------------------	-------	-----	-----------------	----	----------------	---------

آيَاتَهَا ٥٢ ﴿٦٩﴾ سُورَةُ الْحَاقَّةِ ﴿٦٩﴾ زُكُوْعَاتُهَا ٢

रुक़आत 2 (69) सूरातुल हाक्का ज़रूर होने वाली (क़ियामत) आयात 52

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الْحَاقَّةُ ﴿١﴾ مَا الْحَاقَّةُ ﴿٢﴾ وَمَا اَدْرٰكَكَ مَا الْحَاقَّةُ ﴿٣﴾

3	क्या है क़ियामत?	तुम समझे	और क्या	2	क्या है क़ियामत?	1	सचमुच होने वाली (क़ियामत)
---	------------------	----------	---------	---	------------------	---	---------------------------

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ وَعَادُ بِالْقَارِعَةِ ﴿٤﴾ فَاَمَّا ثَمُوْدُ فَاهْلِكُوْا

वह हलाक किए गए	समूद	पस जो	4	खड़खड़ाने वाली को	और आद	समूद	झुटलाया
----------------	------	-------	---	-------------------	-------	------	---------

بِالطّٰغِيَةِ ﴿٥﴾ وَاَمَّا عَادُ فَاهْلِكُوْا بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ﴿٦﴾

6	हद से ज़ियादा बढ़ी हुई	तुन्द ओ तेज़	हवा से	तो वह हलाक किए गए	आद	और जो	5	बड़ी ज़ोर की आवाज़ से
---	------------------------	--------------	--------	-------------------	----	-------	---	-----------------------

سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَثَمَنِيَةَ اَيّٰمٍ حُسُوْمًا

लगातार	दिन	और आठ	सात रात	उन पर	उस ने उस को मुसख़्खर किया
--------	-----	-------	---------	-------	---------------------------

فَتَرٰى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرَغٰى ۚ كَانَتْهُمْ اَعْجٰزٌ نَّخْلٍ خٰوِيَةٍ ﴿٧﴾

7	खोखले	खजूर	तने	गोया वह	उस में गिरी हुई	फिर तू देखता उस कौम को
---	-------	------	-----	---------	-----------------	------------------------

فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْ بَاقِيَةٍ ﴿٨﴾ وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهُ

और उस के पहले लोग	फ़िरऔन	और आया	8	कोई बकिया	उन का	तो क्या तू देखता है
-------------------	--------	--------	---	-----------	-------	---------------------

وَالْمُؤْتَفِكْتُ بِالْخٰطِئَةِ ﴿٩﴾ فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ

अपने रब के रसूल की	सो उन्होंने ने नाफ़रमानी की	9	ख़ताओं के साथ	और उलटी हुई बस्तियों वाले
--------------------	-----------------------------	---	---------------	---------------------------

فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً رّٰبِيَةً ﴿١٠﴾ اِنَّا لَمَّا طَغٰى الْمَآءُ حَمَلُنٰكُمْ

हम ने तुम्हें सवार किया	पानी	तुग़्यानी पर आया	बेशक जब	10	सख़्त	गिरिफ़्त	तो उन्हें पकड़ा
-------------------------	------	------------------	---------	----	-------	----------	-----------------

فِي الْجَارِيَةِ ﴿١١﴾ لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَتَعِيَهَا اُذُنٌ وّٰعِيَةٌ ﴿١٢﴾

12	याद रखने वाला	कान	और उसे याद रखे	यादगार	तुम्हारे लिए	ताकि हम उस को बनाएं	11	कश्ती में
----	---------------	-----	----------------	--------	--------------	---------------------	----	-----------

وقف لازم  
لج  
٢

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفْحَةٌ وَاحِدَةٌ ﴿١٣﴾ وَوَحِمِلَتِ الْأَرْضُ							
जमीन	और उठाई जाएगी	13	यकवारगी	फूंक	सूर में	पस जब फूंकी जाएगी	
وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَاحِدَةً ﴿١٤﴾ فَيَوْمَئِذٍ وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١٥﴾							
15	वह होने वाली	हो पड़ेगी	पस उस दिन	14	यकवारगी	रेज़ा रेज़ा कर दिए जाएंगे	और पहाड़
وَأَنْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ ﴿١٦﴾ وَالْمَلَكُ عَلَى أَرْجَائِهَا							
उस के किनारों	पर	और फरिश्ते	16	विलकुल कमज़ोर	उस दिन	पस वह	आस्मान और फट जाएगा
وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمَنِيَةٌ ﴿١٧﴾ يَوْمَئِذٍ							
जिस दिन	17	आठ	उस दिन	अपने ऊपर	तुम्हारे रब का अर्श	और वह उठाएंगे	
تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ﴿١٨﴾ فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ							
दिया गया	पस जिस को	18	(कोई चीज़) पोशीदा	तुम से (तुम्हारी)	न पोशीदा रहेगी	तुम पेश किए जाओगे	
كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَيَقُولُ هَٰؤُلَاءِ أَفْرَأُوا كِتَابِيَهٗ ﴿١٩﴾ إِنِّي ظَنَنْتُ							
मैं वेशक समझता था	19	मेरा आमाल नामा	लो पढ़ो	तो वह कहेगा	उस के दाएं हाथ में	उस की किताब (आमाल नामा)	
أَنِّي مُلِقٍ حِسَابِيَهٗ ﴿٢٠﴾ فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿٢١﴾							
21	पसदीदा ज़िन्दगी	में	पस वह	20	अपने हिसाब से	कि मैं मिलूंगा	
فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿٢٢﴾ قُطُوفُهَا دَانِيَةٌ ﴿٢٣﴾ كُلُوا وَاشْرَبُوا							
और तुम पियो	तुम खाओ	23	करीब	जिस के मेवे	22	वहिशते बरी	में
هَنِيئًا بِمَا أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ الْخَالِيَةِ ﴿٢٤﴾ وَأَمَّا مَنْ							
जो-जिस	और रहा	24	गुज़रे हुए अय्याम	में	उस के बदले जो तुम ने भेजा	मज़े से	
أُوتِيَ كِتَابَهُ بِشِمَالِهِ فَيَقُولُ يَلَيْتَنِي لَمْ أُوتَ كِتَابِيَهٗ ﴿٢٥﴾							
25	मेरा आमाल नामा	मुझे न दिया जाता	ऐ काश	तो वह कहेगा	उस के बाएं हाथ में	उस का आमाल नामा दिया गया	
وَلَمْ أَدْرِ مَا حِسَابِيَهٗ ﴿٢٦﴾ يَلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ﴿٢٧﴾							
27	क़िस्सा चुका देने वाली	(मौत) होती	ऐ काश	26	क्या है मेरा हिसाब	और मैं न जानता	
مَا أَغْنَىٰ عَنِّي مَالِيَهٗ ﴿٢٨﴾ هَلْكَ عَنِّي سُلْطَانِيَهٗ ﴿٢٩﴾ خُدُوهُ							
तुम उस को पकड़ो	29	मेरी बादशाही	मुझ से जाती रही	28	मेरा माल	मेरे	काम न आया
فَعُلُوهُ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ الْجَحِيمَ صَلَّوهُ ﴿٣١﴾ ثُمَّ فِي سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا							
जिस की पैमाइश	एक ज़न्जीर में	फिर	31	उसे डाल दो	जहन्नम	फिर	30
سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوهُ ﴿٣٢﴾ إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ							
ईमान नहीं लाता था	वेशक वह	32	पस तुम उस को जकड़ दो	हाथ	सत्तर (70)		
بِاللَّهِ الْعَظِيمِ ﴿٣٣﴾ وَلَا يَحْضُ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ﴿٣٤﴾							
34	मोहताज	खिलाना	पर	और वह रगवत न दिलाता था	33	बुजुर्ग ओ बरतर	अल्लाह पर

पस जब फूंकी जाएगी सूर में यकवारगी फूंक। (13) और उठाए जाएंगे ज़मीन और पहाड़, पस वह यकवारगी रेज़ा रेज़ा कर दिए जाएंगे। (14) पस उस दिन वह होने वाली हो पड़ेगी, (15) और आस्मान फट जाएगा, पस वह उस दिन विलकुल कमज़ोर होगा। (16) और फरिश्ते (होंगे) उस के किनारों पर, और आठ फरिश्ते तुम्हारे रब का अर्श उठाए हुए होंगे। (17) जिस दिन तुम पेश किए जाओगे तुम्हारी कोई चीज़ पोशीदा न रहेगी। (18) पस जिस को उस का आमाल नामा उस के दाएं हाथ में दिया जाएगा वह (दूसरों को) कहेगा: लो पढ़ो मेरा आमाल नामा। (19) वेशक मैं यकीन रखता था कि मैं अपने हिसाब से मिलूंगा। (20) पस वह पसदीदा ज़िन्दगी में होगा, (21) आली मुक़ाम जन्नत में, (22) जिस के मेवे करीब (झुके हुए) हैं। (23) तुम मज़े से खाओ पियो उस के बदले जो तुम ने (दुनिया के) गुज़रे हुए दिनों में भेजा है। (24) और रहा वह जिस को उस का आमाल नामा उस के बाएं हाथ में दिया गया तो वह कहेगा ऐ काश! मुझे न दिया जाता मेरा आमाल नामा, (25) और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है? (26) ऐ काश! मौत ही क़िस्सा चुका देने वाली होती। (27) मेरा माल मेरे काम न आया। (28) मेरी बादशाही मुझ से जाती रही। (29) (फरिश्तों को हुक्म होगा) तुम उस को पकड़ो, उसे तौक पहनाओ, (30) फिर उसे जहन्नम में डाल दो। (31) फिर एक ज़न्जीर में जिस की पैमाइश सत्तर (70) हाथ है, पस तुम उस को जकड़ दो। (32) वेशक वह अल्लाह बुजुर्ग ओ बरतर पर ईमान नहीं लाता था। (33) और वह (दूसरों को भी) रगवत न दिलाता था मिसकीन को खिलाने की। (34)

पस आज यहां उस का कोई दोस्त नहीं। (35)

और पीप के सिवा (उस के लिए) कोई खाना नहीं। (36)

उसे खताकारों के सिवा कोई न खाएगा। (37)

पस मैं उस की कसम खाता हूँ जो तुम देखते हो। (38)

और जो तुम नहीं देखते। (39)

वेशक यह रसूले करीम का कलाम है। (40)

और यह किसी शायर का कलाम नहीं, तुम बहुत कम ईमान लाते हो। (41)

और न कौल है किसी काहिन का, बहुत कम तुम नसीहत पकड़ते हो। (42)

तमाम जहानों के रब (की तरफ) से उतारा हुआ। (43)

और अगर वह हम पर बना कर लाता कुछ बातें। (44)

तो यकीनन हम उस का दायां हाथ पकड़ लेते। (45)

फिर अलबत्ता हम उस की रोगे गर्दन काट देते। (46)

सो तुम में से नहीं कोई भी उस से रोकने वाला। (47)

और वेशक यह (कुरआन) परहेज़गारों के लिए अलबत्ता नसीहत है। (48)

और वेशक हम ज़रूर जानते हैं कि तुम में कुछ झुटलाने वाले हैं। (49)

और वेशक यह हस्रत है काफ़िरों पर। (50)

और वेशक यह यकीनी हक़ है। (51)

पस पाकीज़गी वयान करो अपने अज़मत वाले रब के नाम की। (52)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है एक मांगने वाले (मुन्किरे अज़ाब ने) अज़ाब मांगा (जो) वाक़े होने वाला है। (1)

काफ़िरों के लिए, उसे कोई दफ़ा करने वाला नहीं, (2)

दरजात के मालिक अल्लाह की तरफ़ से। (3)

उस की तरफ़ रूहुल अमीन (जिब्राईल अ) और फ़रिश्ते एक दिन में चढ़ते हैं जिस की तादाद पचास हज़ार वरस की है। (4)

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هُنَا حَمِيمٌ ﴿٣٥﴾ وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ

से	मगर-सिवा	और न खाना	35	कोई दोस्त	यहां	आज	पस नहीं उस का
----	----------	-----------	----	-----------	------	----	---------------

غَسَلِينَ ﴿٣٦﴾ لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخِطِئُونَ ﴿٣٧﴾ فَلَا أَفْسِمُ

पस मैं कसम खाता हूँ	37	खताकारों	सिवा	उसे न खाएगा	36	पीप
---------------------	----	----------	------	-------------	----	-----

بِمَا تُبْصِرُونَ ﴿٣٨﴾ وَمَا لَا تُبْصِرُونَ ﴿٣٩﴾ إِنَّهُ لَقَوْلُ

अलबत्ता कलाम	वेशक यह	39	तुम नहीं देखते	और जो	38	उस की जो तुम देखते हो
--------------	---------	----	----------------	-------	----	-----------------------

رَسُولٍ كَرِيمٍ ﴿٤٠﴾ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ قَلِيلًا مَّا تَأْمِنُونَ ﴿٤١﴾

41	तुम ईमान लाते हो	बहुत कम	किसी शायर का कलाम	और यह नहीं	40	रसूले करीम
----	------------------	---------	-------------------	------------	----	------------

وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ قَلِيلًا مَّا تَذْكُرُونَ ﴿٤٢﴾ تَنْزِيلٌ مِّنْ

से	उतारा हुआ	42	तुम नसीहत पकड़ते हो	बहुत कम	किसी काहिन का	और न कौल है
----	-----------	----	---------------------	---------	---------------	-------------

رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٣﴾ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضُ الْأَقَاوِيلِ ﴿٤٤﴾

44	बातें (अकवाल)	कुछ	हम पर	बना कर लाता	और अगर	43	तमाम जहानों का रब
----	---------------	-----	-------	-------------	--------	----	-------------------

لَاخِذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ﴿٤٥﴾ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ﴿٤٦﴾ فَمَا

सो नहीं	46	रोगे (गर्दन)	उस की	हम अलबत्ता काट देते	फिर	45	दायां हाथ	उस का	तो यकीनन हम पकड़ लेते
---------	----	--------------	-------	---------------------	-----	----	-----------	-------	-----------------------

مِنْكُمْ مِّنْ أَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِينَ ﴿٤٧﴾ وَإِنَّهُ لَتَذْكُرَةٌ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٤٨﴾

48	परहेज़गारों के लिए	अलबत्ता एक नसीहत	और वेशक यह	47	रोकने वाला	उस से	कोई भी	तुम में से
----	--------------------	------------------	------------	----	------------	-------	--------	------------

وَإِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِينَ ﴿٤٩﴾ وَإِنَّهُ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِينَ ﴿٥٠﴾

50	काफ़िरों पर	हस्रत	और वेशक यह	49	झुटलाने वाले	तुम में से	कि	अलबत्ता जानते हैं	और वेशक हम
----	-------------	-------	------------	----	--------------	------------	----	-------------------	------------

وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ﴿٥١﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٥٢﴾

52	अज़मत वाला	अपना रब	नाम के साथ	पस पाकीज़गी वयान करो	51	यकीनी हक़	और वेशक यह
----	------------	---------	------------	----------------------	----	-----------	------------

آيَاتُهَا ٤٤ \* سُورَةُ الْمَعَارِجِ (٧٠) \* زُكُوعَاتُهَا ٢

रुक़ूआत 2 (70) सूरतुल मज़ारिज ऊपर चढ़ने की सीढ़ियाँ आयात 44

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ ﴿١﴾ لِّلْكَافِرِينَ لَيْسَ لَهُ

नहीं उसे	काफ़िरों के लिए	1	अज़ाब वाक़े होने वाला	एक मांगने वाला	मांगा
----------	-----------------	---	-----------------------	----------------	-------

دَافِعٌ ﴿٢﴾ مِّنَ اللَّهِ ذِي الْمَعَارِجِ ﴿٣﴾ تَعْرُجُ الْمَلَائِكَةُ

फ़रिश्ते	चढ़ते हैं	3	सीढ़ियों (दरजात) का मालिक	अल्लाह की तरफ़ से	2	कोई दफ़ा करने वाला
----------	-----------	---	---------------------------	-------------------	---	--------------------

وَالرُّوحُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ ﴿٤﴾

4	साल	पचास हज़ार (50000)	जिस की मिक़दार	एक दिन में	उस की तरफ़	और रूहुल अमीन
---	-----	--------------------	----------------	------------	------------	---------------

فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيلًا ﴿٥﴾ إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ بَعِيدًا ﴿٦﴾ وَنَرَاهُ						
और हम उसे देखते हैं	6	दूर	उसे देख रहे हैं	वेशक वह	5	सब्र जमील
قَرِيبًا ﴿٧﴾ يَوْمَ تَكُونُ السَّمَاءُ كَالْمُهْلِ ﴿٨﴾ وَتَكُونُ الْجِبَالُ						
पहाड़	और होंगे	8	पिघले हुए तांबे की तरह	आस्मान	जिस दिन होगा	7
كَالْعِهْنِ ﴿٩﴾ وَلَا يَسْأَلُ حَمِيمٌ حَمِيمًا ﴿١٠﴾ يُبْصَرُونَهُمْ يَوْمَ						
खाहिश करेगा	वह देख रहे होंगे उन्हें	10	किसी दोस्त	कोई दोस्त	और न पूछेगा	9
الْمُجْرِمِ لَوْ يَفْتَدِي مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍ بِبَنِيهِ ﴿١١﴾						
11	अपने बेटों को	उस दिन	अज्ञाव से	काश वह फिदये में देदे	मुजरिम	
وَصَاحِبَتِهِ وَأَخِيهِ ﴿١٢﴾ وَفَصِيلَتِهِ الَّتِي تُؤَيِّبُهَا ﴿١٣﴾ وَمَنْ						
और जो	13	उस को जगह देता था	वह जो	और अपने कुंवे को	12	और अपने भाई को
فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ يُنَجِّهِ ﴿١٤﴾ كَلَّا إِنَّهَا لَأَرْضٌ						
उधेड़ने वाली	15	भड़कती हुई आग	वेशक यह	हरगिज़ नहीं	14	यह उसे बचाले
لِلشَّوْىِ ﴿١٦﴾ تَدْعُوا مَنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّى ﴿١٧﴾ وَجَمَعَ فَأَوْعَى ﴿١٨﴾						
18	फिर उसे बन्द रखा	और (माल) जमा किया	17	और मुँह फेर लिया	पीठ फेरी	जिस ने वह बुलाती है
إِنَّ الْإِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا ﴿١٩﴾ إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا ﴿٢٠﴾ وَإِذَا						
और जब	20	घबरा उठने वाला	उसे बुराई पहुँचे	जब	19	पैदा किया गया बड़ा बेसब्र
مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا ﴿٢١﴾ إِلَّا الْمُصَلِّينَ ﴿٢٢﴾ الَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ						
अपनी नमाज़	पर	वह	वह जो	22	नमाज़ियों	सिवाए
دَائِمُونَ ﴿٢٣﴾ وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُومٌ ﴿٢٤﴾						
24	मालूम (मुकर्रर)	हक	उन के मालों में	और वह जो	23	हमेशा (पाबन्दी) करते हैं
لِلسَّالِئِلِ وَالْمَحْرُومِ ﴿٢٥﴾ وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ ﴿٢٦﴾						
26	रोज़े जज़ा को	सच मानते हैं	और वह जो	25	और महरूम (न मांगने वाले)	मांगने वालों के लिए
وَالَّذِينَ هُمْ مِنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُشْفِقُونَ ﴿٢٧﴾ إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ						
उन के रब का अज्ञाव	वेशक	27	डरने वाले	अपने रब के अज्ञाव से	वह	और वह जो
غَيْرُ مَأْمُونٍ ﴿٢٨﴾ وَالَّذِينَ هُمْ لِأُزْوَاجِهِمْ حَافِظُونَ ﴿٢٩﴾						
29	हिफाज़त करने वाले	अपनी शर्मगाहों की	वह	और वह जो	28	बे ख़ौफ़ होने की बात नहीं
إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٣٠﴾						
30	कोई मलामत नहीं	पस वह वेशक	उन के दाएँ हाथ की मिल्क (बान्दीयाँ)	जो	या	अपनी बीवीयों से
فَمَنْ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ﴿٣١﴾						
31	हद से बढ़ने वाले	वह	तो वही लोग	उस के सिवा	फिर जो चाहे	

पस आप (स) (उन बातों पर) सब्र करें सब्र जमील। (5) वेशक वह उसे दूर देख (समझ) रहे हैं। (6) और हम उसे करीब देखते हैं। (7) जिस दिन आस्मान पिघले हुए तांबे की तरह होगा। (8) और पहाड़ (धुन्की हुई) रंगीन ऊन की तरह होंगे। (9) और कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा। (10) हालांकि वह उन्हें देख रहे होंगे, मुजरिम (गुनाहगार) खाहिश करेगा कि काश वह फिदये में देदे उस दिन के अज्ञाव (से छूटने के लिए) अपने बेटों को, (11) अपनी बीवी को, और अपने भाई को। (12) और अपने कुंवे को जो उस को जगह देता था। (13) और जो ज़मीन में है सब (तमाम अहले ज़मीन) को, फिर यह उसे बचाले। (14) हरगिज़ नहीं, वेशक यह भड़कती हुई आग है। (15) खाल उधेड़ने वाली। (16) वह (उसे) बुलाती है जिस ने पीठ फेरी और मुँह फेर लिया, (17) और माल जमा किया फिर उसे बन्द रखा। (18) वेशक इन्सान बड़ा बेसब्र (कम हिम्मत) पैदा किया गया है। (19) जब उसे कोई बुराई पहुँचे तो घबरा उठने वाला है। (20) और उसे आसाइश पहुँचे तो बुखल करने वाला है। (21) उन नमाज़ियों के सिवा। (22) जो अपनी नमाज़ पर पाबन्दी करते हैं। (23) और जिन के मालों में एक हिस्सा (हक) मुकर्रर है। (24) मांगने वालों और महरूम के लिए। (25) और वह जो रोज़े जज़ा औ सज़ा को सच मानते हैं। (26) और वह जो अपने रब के अज्ञाव से डरने वाले हैं। (27) वेशक उन के रब का अज्ञाव बेख़ौफ़ होने की चीज़ नहीं। (28) और वह जो अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करने वाले हैं, (29) सिवाए अपनी बीवीयों से या अपनी बान्दीयों से, पस वेशक उन के (पास जाने) पर कोई मलामत नहीं। (30) फिर जो उस के सिवा चाहे तो वही लोग हैं हद से बढ़ने वाले। (31)

और वह जो अपनी अमानतों और अपने अहद की हिफाज़त करने वाले हैं। (32)

और वह जो अपनी गवाहियों पर काइम रहने वाले हैं। (33)

और वह जो अपनी नमाज़ों की हिफाज़त करने वाले हैं। (34)

यही लोग (वहिशत के) बागात में मुकर्रम ओ मुअज़ज़ होंगे। (35)

तो काफ़िरों को क्या हुआ कि वह आप (स) की तरफ़ दौड़ते आ रहे हैं। (36)

दाएं से और बाएं से गिरोह दर गिरोह। (37)

क्या उन में से हर कोई लालच रखता है कि वह (वहिशत की) नेमतों वाले बागात में दाख़िल किया जाएगा। (38)

हरगिज़ नहीं, बेशक हम ने पैदा किया उन्हें उस चीज़ से जिसे वह खुद जानते हैं। (39)

पस नहीं, मैं मशरि़कों और मग़रि़बों के रब की कसम खाता हूँ। बेशक हम अलबत्ता कादिर हैं। (40)

इस पर कि हम बदल दें उन से बेहतर और नहीं हम आजिज़ किए जाने वाले। (41)

पस उन्हें छोड़ दें कि बेहूदगियों में पड़े रहें और वह खेलें कूदें यहां तक कि वह अपने उस दिन से मिलें जिस का उन से वादा किया जाता है। (42)

जिस दिन वह कब्रों से जल्दी जल्दी (इस तरह) निकलेंगे गोया के वह निशाने की तरफ़ लपक रहे हैं। (43)

झुकी होंगी उन की आँखें, उन पर ज़िल्लत छा रही होगी, यह है वह दिन जिस का उन से वादा किया जा रहा है। (44)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है बेशक हम ने नूह (अ) को उस की कौम की तरफ़ भेजा कि डराओ अपनी कौम को उस से कब्ल कि उन पर दर्दनाक अज़ाब आजाए। (1)

उस ने कहा कि ऐ मेरी कौम! बेशक मैं तुम्हारे लिए साफ़ साफ़ डराने वाला हूँ। (2)

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمْنَتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رِعُونَ ﴿٣٢﴾ وَالَّذِينَ

और वह जो	32	रिआयत (हिफाज़त) करने वाले	और अपने अहद	अपनी अमानतों	वह	और वह जो
----------	----	---------------------------	-------------	--------------	----	----------

هُمْ بِشَهَدَتِهِمْ قَائِمُونَ ﴿٣٣﴾ وَالَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ

अपनी नमाज़ों की	वह	और वह जो	33	काइम रहने वाले	वह अपनी गवाहियों पर
-----------------	----	----------	----	----------------	---------------------

يُحَافِظُونَ ﴿٣٤﴾ أُولَئِكَ فِي جَنَّتٍ مُّكْرَمُونَ ﴿٣٥﴾ فَمَالِ

तो क्या हुआ	35	मुकर्रम ओ मुअज़ज़	बागात में	यही लोग	34	हिफाज़त करने वाले
-------------	----	-------------------	-----------	---------	----	-------------------

الَّذِينَ كَفَرُوا قِبَلَكَ مُهْطَعِينَ ﴿٣٦﴾ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ

और बाएं से	दाएं से	36	दौड़ते आ रहे हैं	आप (स) की तरफ़	जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर)
------------	---------	----	------------------	----------------	---------------------------------

عَزِينَ ﴿٣٧﴾ أَيُّظْمَعُ كُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ أَنْ يُدْخَلَ جَنَّةَ

बाग़	कि वह दाख़िल किया जाएगा	उन में से	हर कोई	क्या तमअ (लालच) रखता है	37	गिरोह दर गिरोह
------	-------------------------	-----------	--------	-------------------------	----	----------------

نَعِيمٍ ﴿٣٨﴾ كَلَّا إِنَّآ خَلَقْنَهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾ فَلَا أُقْسِمُ

पस नहीं, मैं कसम खाता हूँ	39	वह जानते हैं	उस से जो	बेशक हम ने पैदा किया उन्हें	हरगिज़ नहीं	38	नेमतों वाला
---------------------------	----	--------------	----------	-----------------------------	-------------	----	-------------

بِرَبِّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ إِنَّا لَقَدِرُونَ ﴿٤٠﴾ عَلَيَّ أَنْ تُبَدِّلَ

कि हम बदल दें	पर	40	अलबत्ता कादिर हैं	बेशक हम	और मग़रि़बों	मशरि़कों के रब की
---------------	----	----	-------------------	---------	--------------	-------------------

حَيْرًا مِّنْهُمْ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ﴿٤١﴾ فَذَرَهُمْ يَخْوَضُوا

बेहूदगियों में पड़े रहें	पस उन्हें छोड़ दें	41	आजिज़ किए जाने वाले	और नहीं हम	उन से	बेहतर
--------------------------	--------------------	----	---------------------	------------	-------	-------

وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلْقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوْعَدُونَ ﴿٤٢﴾ يَوْمَ يَخْرُجُونَ

जिस दिन वह निकलेंगे	42	उन से वादा किया जाता है	वह जिस का	अपने दिन से	यहां तक कि वह मिलें	और वह खेलें
---------------------	----	-------------------------	-----------	-------------	---------------------	-------------

مِنَ الْأَجْدَاثِ سِرَاعًا كَانَتْهُمْ إِلَىٰ نُصْبٍ يُؤْفُضُونَ ﴿٤٣﴾ خَاشِعَةً

झुकी हुई	43	लपक रहे हों	निशाने की तरफ़	गोया कि वह	जल्दी जल्दी	कब्रों से
----------	----	-------------	----------------	------------	-------------	-----------

أَبْصَارُهُمْ تَرَهَقْتُهُمْ ذَلَّةٌ ذٰلِكَ الْيَوْمِ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿٤٤﴾

44	उन से वादा किया जा रहा है	वह जिस का	यह है वह दिन	ज़िल्लत	उन पर छा रही होगी	उन की आँखें
----	---------------------------	-----------	--------------	---------	-------------------	-------------

آيَاتُهَا ٢٨ ﴿٧١﴾ سُورَةُ نُوحٍ ﴿٧١﴾ رُكُوعَاتُهَا ٢

रुकुआत 2

(71) सूरह नूह

आयात 28

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ

उस से कब्ल	अपनी कौम को	कि डराओ	उस की कौम की तरफ़	नूह (अ)	बेशक हम ने भेजा
------------	-------------	---------	-------------------	---------	-----------------

أَنْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١﴾ قَالَ يَقَوْمِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢﴾

2	साफ़ साफ़ डराने वाला	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	ऐ मेरी कौम	उस ने कहा	1	दर्दनाक अज़ाब	कि उन पर आए
---	----------------------	--------------	----------	------------	-----------	---	---------------	-------------

<b>أَنْ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ وَأَطِيعُوا ۝٣ يَغْفِرْ لَكُمْ</b>						
तुम्हें	वह बख्शदेगा	3	और मेरी इताअत करो	और उस से डरो	तुम अल्लाह की इबादत करो	कि
<b>مَنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝٤ قَالَ رَبِّ</b>						
अल्लाह का मुकर्रर कर्दा वक़त	वेशक	वक़ते मुकर्ररा	तक	और तुम्हें मोहलत देगा	तुम्हारे गुनाह	
ऐ मेरे रब	उस ने कहा	4	तुम जानते	काश	वह टलेगा नहीं	जब आजाएगा
<b>إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَنَهَارًا ۝٥ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَائِي إِلَّا فِرَارًا ۝٦ وَإِنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا أَصَابِعَهُمْ</b>						
मेरा बुलाना	तो उन में ज़ियादा न किया	5	और दिन	रात	अपनी कौम को	वेशक मैं ने बुलाया
अपनी उंगलियां	उन्होंने ने दे ली	उन्हें	ताकि तू बख्शदे	मैं ने उन को बुलाया	जब भी	और वेशक मैं
<b>فِي أَذَانِهِمْ وَأَسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَأَصْرُرُوا وَأَسْتَكَبَرُوا ۝٧ ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جَهَارًا ۝٨ ثُمَّ إِنِّي أَعْلَنْتُ</b>						
और उन्होंने ने तकबुर किया	और अड़ गए वह	उपने कपड़े	और उन्होंने ने लपेट लिए	अपने कानों में		
वेशक मैं ने अलानिया समझाया	फिर	8	वाआवाजे बुलन्द	वेशक मैं ने बुलाया उन्हें	फिर	7
<b>لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ۝٩ فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ۝١٠ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ۝١١ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا ۝١٢ وَيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَيَجْعَلْ لَكُمْ جَنَّتٍ</b>						
अपना रब	तुम बख्शिश मांगो	पस मैं ने कहा	9	छुपा कर	उन्हें	और मैं ने पोशीदा समझाया
11	मुसलसल वारिश	तुम पर	आस्मान	वह भेजेगा	10	है बड़ा बख्शने वाला
<b>وَيَجْعَلْ لَكُمْ أَنْهْرًا ۝١٣ مَا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ۝١٤ وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ۝١٥ وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا ۝١٦ وَجَعَلَ الشَّمْسُ سِرَاجًا ۝١٧ ثُمَّ يُعِيدْكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجْكُمْ إِخْرَاجًا ۝١٨</b>						
बागात	तुम्हारे लिए	और वह बनाएगा	और बेटों	मालों के साथ	और मदद देगा तुम्हें	
13	वकार	तुम एतिक़ाद नहीं रखते अल्लाह के लिए	क्या हुआ तुम्हें	12	नहरें	तुम्हारे लिए
<b>وَيَجْعَلْ لَكُمْ أَنْهْرًا ۝١٣ مَا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ۝١٤ وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ۝١٥ وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا ۝١٦ وَجَعَلَ الشَّمْسُ سِرَاجًا ۝١٧ ثُمَّ يُعِيدْكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجْكُمْ إِخْرَاجًا ۝١٨</b>						
अल्लाह ने पैदा किए	कैसे	क्या तुम नहीं देखते	14	तरह तरह	उस ने पैदा किया तुम्हें	
एक नूर	उन में	चाँद	और उस ने बनाया	15	एक के ऊपर एक	सात आस्मान
<b>وَجَعَلَ الشَّمْسُ سِرَاجًا ۝١٦ وَاللَّهُ أَنْبَتَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ ۝١٧ ثُمَّ يُعِيدْكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجْكُمْ إِخْرَاجًا ۝١٨</b>						
ज़मीन से	उस ने उगाया तुम्हें	और अल्लाह	16	चिराग	सूरज	और उस ने बनाया
18	निकालना (दोबारा)	और फिर तुम्हें निकालेगा	उस में	वह लौटाएगा तुम्हें	फिर	17

कि तुम अल्लाह की इबादत करो और उस से डरो और मेरी इताअत करो, (3)

वह बख्शदेगा तुम्हें तुम्हारे गुनाह और (मौत के) वक़ते मुकर्ररा तक तुम्हें मोहलत देगा। वेशक अल्लाह का मुकर्रर कर्दा वक़त जब आजाएगा तो वह टलेगा नहीं,

काश तुम जानते। (4) उस ने कहा कि ऐ मेरे रब! वेशक मैं ने बुलाया अपनी कौम को रात और दिन। (5)

तो उन में ज़ियादा न किया मेरा बुलाना सिवाए भागने के। (6) और वेशक जब भी मैं ने उन्हें बुलाया ताकि तू उन्हें बख्शदे, उन्होंने ने अपनी उंगलियां अपने कानों में दे लीं

और उन्होंने ने अपने ऊपर कपड़े लपेट लिए और वह अड़ गए और उन्होंने ने बड़ा तकबुर किया। (7) फिर वेशक मैं ने उन्हें वा आवाजे बुलन्द बुलाया। (8)

फिर वेशक मैं ने उन्हें अलानिया (भी) समझाया और उन्हें छुपा कर पोशीदा (भी) समझाया। (9) पस मैं ने कहा कि तुम अपने रब से बख्शिश मांगो, वेशक वह बड़ा बख्शने वाला है। (10)

वह आस्मान से तुम पर मुसलसल वारिश भेजेगा। (11) और तुम्हें मालों और बेटों से मदद देगा और बनाएगा तुम्हारे लिए बागात और वह बनाएगा तुम्हारे लिए नहरें। (12)

तुम्हें क्या हुआ है कि तुम अल्लाह के लिए वकार (अज़मत) का एतिक़ाद नहीं रखते? (13) और यकीनन उस ने पैदा किया तुम्हें तरह तरह से। (14)

क्या तुम नहीं देखते कि कैसे अल्लाह ने सात आस्मान ऊपर तले बनाए? (15)

और उस ने उन में चाँद को एक नूर बनाया और उस ने सूरज को चिराग (के मानिंद रोशन) बनाया। (16)

और अल्लाह ने तुम्हें ज़मीन से सब्जे की तरह उगाया (पैदा किया)। (17) फिर वह तुम्हें उस में लौटाएगा और तुम्हें दोबारा (उस से) निकालेगा। (18)

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया। (19)

ताकि तुम चलो फिरो उस के

कुशादा रास्तों में। (20)

नूह (अ) ने कहा कि ऐ मेरे रब!

वेशक उन्होंने ने मेरी नाफरमानी की

और (उस की) पैरवी की जिस को

उस के माल ने ज़ियादा नहीं किया

और न उस की औलाद ने ख़सारे

के सिवा। (21)

और उन्होंने ने बड़ी बड़ी चालें

चलीं। (22)

और उन्होंने ने कहा कि तुम हरगिज़

न छोड़ना अपने मावूदाने (बातिल)

को और हरगिज़ न छोड़ना वद

और न सुवाज़ और न यगूस और

यज़क और नस्र (बुतों) को। (23)

और उन्होंने ने गुमराह किया बहुतों

को, और ज़ालिमों को न ज़ियादा

कर गुमराही के सिवा। (24)

अपनी ख़ताओं के सबब वह गर्क

किए गए, फिर वह आग में दाख़िल

किए गए तो उन्होंने ने अपने लिए

अल्लाह के सिवा न पाया कोई

मददगार। (25)

और नूह (अ) ने कहा कि ऐ मेरे

रब! तू न छोड़ ज़मीन पर काफ़िरों

में से कोई बसने वाला। (26)

वेशक अगर तू ने उन्हें छोड़ दिया

तो वह तेरे बन्दों को गुमराह करेंगे

और न जनेंगे बदकार नाशुक

(औलाद) के सिवा। (27)

ऐ मेरे रब! मुझे बख़्शदे और मेरे

माँ बाप को और उसे जो दाख़िल

हुआ मेरे घर में ईमान ला कर,

और मोमिन मर्दाँ और मोमिन

औरतों को, और ज़ालिमों को

हलाकत के सिवा न बढ़ा। (28)

अल्लाह के नाम से जो बहुत

मेहरवान, रहम करने वाला है

आप (स) फ़रमा दें: मुझे वहि की

गई है कि जिन्नात की एक जमाअत

ने उसे (कुरआन को) सुना तो उन्होंने

ने कहा कि वेशक हम ने एक

अज़ीब कुरआन सुना है। (1)

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ بِسَاطًا ۙ (١٩) لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا

रास्ते	उस के	ताकि तुम चलो	19	फ़र्श	ज़मीन	तुम्हारे लिए	उस ने बनाया	और अल्लाह
--------	-------	--------------	----	-------	-------	--------------	-------------	-----------

فِجَاۗجًا ۙ (٢٠) قَالَ نُوْحٌ رَبِّ اِنَّهُمْ عَصَوْنِيْ وَاتَّبَعُوْا مَنْ

जो-जिस	और उन्होंने ने पैरवी की	मेरी नाफ़रमानी की	वेशक उन्होंने ने	ऐ मेरे रब	नूह (अ)	कहा	20	कुशादा
--------	-------------------------	-------------------	------------------	-----------	---------	-----	----	--------

لَّمْ يَزِدْهُ مَالُهُ وَّوَلَدَهُ اِلَّا خَسَارًا ۙ (٢١) وَمَكَرُوْا مَكْرًا كُبٰرًا ۙ (٢٢)

22	बड़ी बड़ी	चालें	और उन्होंने ने चालें चली	21	सिवा ख़सारा	और उस की औलाद	उस का माल	नहीं ज़ियादा किया
----	-----------	-------	--------------------------	----	-------------	---------------	-----------	-------------------

وَقَالُوْا لَا تَذَرُنَّ الْاِهْتٰكُمُ وَلَا تَذَرُنَّ وِدًا وَّلَا سُوَاعًا ۙ

और न सुवाज़	वद	और हरगिज़ न छोड़ना	अपने मावूद	तुम हरगिज़ न छोड़ना	और उन्होंने ने कहा
-------------	----	--------------------	------------	---------------------	--------------------

وَّلَا يَغُوْثٌ وَّيَعُوْقٌ وَّنَسْرًا ۙ (٢٣) وَقَدْ اَصْلٰوْا كَثِيْرًا ۙ وَلَا تَزِدِ

और न ज़ियादा कर	बहुत	और तहकीक उन्होंने ने गुमराह किया	23	और नस्र	और यज़क	और न यगूस
-----------------	------	----------------------------------	----	---------	---------	-----------

الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا ضَلٰلًا ۙ (٢٤) مِمَّا خَطِئَْتِهِمْ اُغْرِقُوْا فَاُدْخِلُوْا

फिर वह दाख़िल किए गए	वह गर्क किए गए	अपनी ख़ताएं	व सबब	24	गुमराही के सिवा	ज़ालिमों
----------------------	----------------	-------------	-------	----	-----------------	----------

نٰرًا ۙ فَلَمْ يَجِدُوْا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْصَارًا ۙ وَقَالَ

और कहा	25	कोई मददगार	अल्लाह के सिवा	अपने लिए	उन्होंने ने पाया	तो न	आग
--------	----	------------	----------------	----------	------------------	------	----

نُوْحٌ رَبِّ لَا تَذَرْ عَلٰى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دِيَارًا ۙ (٢٦)

26	कोई बसने वाला	काफ़िरों में से	ज़मीन पर	तू न छोड़	ऐ मेरे रब	नूह (अ)
----	---------------	-----------------	----------	-----------	-----------	---------

اِنَّكَ اِنْ تَذَرَهُمْ يُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوْا اِلَّا فٰجِرًا ۙ

बदकार	सिवाए	और न जनेंगे	तेरे बन्दे	वह गुमराह करेंगे	उन्हें छोड़ दिया	अगर	वेशक तू
-------	-------	-------------	------------	------------------	------------------	-----	---------

كٰفِرًا ۙ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَّلِوَالِدِيْ وَّلِمَنْ دَخَلَ

दाख़िल हुआ	और उसे जो	और मेरे माँ बाप को	मुझे बख़्शदे	ऐ मेरे रब	27	नाशुक
------------	-----------	--------------------	--------------	-----------	----	-------

بَيْتِيْ مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ

ज़ालिमों	और न बढ़ा	और मोमिन औरतों	और मोमिन मर्दाँ को	ईमान ला कर	मेरे घर
----------	-----------	----------------	--------------------	------------	---------

اِلَّا تَبٰرًا ۙ (٢٨)

28	हलाकत के सिवा
----	---------------

آيٰتَهَا ٢٨ ﴿٧٢﴾ سُوْرَةُ الْجِنِّ ﴿٢٨﴾ ﴿٧٢﴾ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकुआत 2

(72) सूरतुल जिन्न

आयात 28

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنْهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْا اِنَّا سَمِعْنَا قُرٰنًا عَجَبًا ۙ (١)

1	एक अज़ीब	कुरआन	वेशक हम ने सुना	तो उन्होंने ने कहा	एक जमाअत जिन्नात की	कि इसे सुना	मेरी तरफ़	आप कह दें कि मुझे वहि की गई
---	----------	-------	-----------------	--------------------	---------------------	-------------	-----------	-----------------------------



يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَامَنَّا بِهِ وَلَنْ نُشْرِكَ بِرَبِّنَا أَحَدًا ٢							वह रहनुमाई करता है हिदायत की तरफ, तो हम उस पर ईमान ले आए, और हम अपने रब के साथ हरगिज़ किसी को शरीक न ठहराएंगे। (2) और यह कि हमारे रब की शान बड़ी बुलंद है। उस ने नहीं बनाया किसी को अपनी बीबी और न औलाद। (3) और यह कि हम में से वेवकूफ कहते थे अल्लाह पर खिलाफे हक बातें। (4) और यह कि हम ने गुमान किया कि हरगिज़ इन्सान और जिन्न अल्लाह पर (अल्लाह की शान में) झूट न कहेंगे। (5) और यह कि इन्सानों में से कुछ आदमी जिन्नात के लोगों से पनाह लेते थे और उन्होंने ने जिन्नात का तकब्बुर और बढ़ा दिया। (6) और उन्होंने ने गुमान किया जैसे तुम ने गुमान किया था कि हरगिज़ अल्लाह किसी को रसूल बना कर न भजेगा। (7) और यह कि हम ने टटोला आस्मानों को तो हम ने उसे सख्त पहरेदारों और शोलों से भरा हुआ पाया। (8) और यह कि हम उस के ठिकानों में सुनने के लिए बैठा करते थे। पस अब जो सुनता है (सुनना चाहता है) वह (वहां) अपने लिए घात लगाया हुआ शोला पाता है। (9) और यह कि हम नहीं जानते कि जो ज़मीन में है आया उन के साथ बुराई का इरादा किया गया है या उन से (अल्लाह ने) हिदायत का इरादा फरमाया है। (10) और यह कि हम में से (कुछ) नेकोकार है और हम में से (कुछ) उस के अ़लावा है, हम मुख्तलिफ़ राहों पर हैं। (11) और यह कि हम समझते हैं कि हम अल्लाह को हरगिज़ न हरा सकेंगे ज़मीन में और न हरगिज़ हम उस को भाग कर हरा सकेंगे। (12) और यह कि हम ने हिदायत सुनी तो हम उस पर ईमान ले आए, सो जो अपने रब पर ईमान लाए तो उसे न किसी नुक़सान का ख़ौफ़ होगा और न किसी जुल्म का। (13) और यह कि हम में से (कुछ) मुसलमान (फ़रमावरदार) हैं और हम में से (कुछ) गुनाहगार हैं। पस जो इसलाम लाया तो वही है जिन्होंने न भलाई का क़स्द किया। (14)
2	किसी को	और हम हरगिज़ शरीक न ठहराएंगे अपने रब के साथ	उस पर	तो हम ईमान लाए	हिदायत की तरफ	वह रहनुमाई करता है	
وَأَنَّهُ تَعَلَّى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا ٣							
3	और न औलाद	बीबी	उस ने नहीं बनाया	हमारा रब	शान	बड़ी बुलंद और यह कि	
وَأَنَّهُ كَانَ يَفْقُولُ سَفِيهُنَا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا ٤ وَأَنَا ظَنَنَّا							
और यह कि हम ने गुमान किया	4	खिलाफे हक बातें	अल्लाह पर	हम में से वेवकूफ	कहते थे	और यह कि	
أَنْ لَّنْ تَقُولَ الْإِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ٥ وَأَنَّهُ كَانَ							
थे	और यह कि	5	झूट	अल्लाह पर	और जिन्न	इन्सान	
رَجَالٌ مِّنَ الْإِنْسِ يَعُوذُونَ بِرَجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ							
तो उन्होंने ने (जिन्नात का) बढ़ा दिया	जिन्नात से	लोगों से	पनाह लेते (थे)	इन्सानों में से	कुछ आदमी		
رَهَقًا ٦ وَأَنَّهُمْ ظَنُّوا كَمَا ظَنَنْتُمْ أَنْ لَّنْ يَبْعَثَ اللَّهُ أَحَدًا ٧							
7	किसी को	रसूल बना कर भजेगा अल्लाह	कि हरगिज़ न	जैसे तुम ने गुमान किया था	उन्होंने ने गुमान किया	और यह कि वह	
6	तकब्बुर						
وَأَنَا لَمَسْنَا السَّمَاءَ فَوَجَدْنَاهَا مُلْتَأَةً فَزَادُوا							
सख्त	पहरेदार	भरा हुआ	तो हम ने उसे पाया	आस्मान	और यह कि हम ने छुआ (टटोला)		
وَشُهُبًا ٨ وَأَنَا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ فَمَنْ							
पस जो	सुनने के लिए	ठिकाने	उस के	हम बैठा करते थे	और यह कि	8	
और शोले							
يَسْمَعِ الْآنَ يَجِدُ لَهُ شِهَابًا رَّصَدًا ٩ وَأَنَا لَا نَدْرِي							
नहीं जानते	और यह कि हम	9	घात लगाया हुआ	शोला	वह पाता है अपने लिए	अब	
सुनता है							
أَشْرُّ أُرِيدَ بِمَنْ فِي الْأَرْضِ أَمْ أَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ							
उन का रब	उन से	या इरादा फरमाया है	जो ज़मीन में	उन के साथ	इरादा किया गया	आया बुराई	
رَشْدًا ١٠ وَأَنَا مِنَ الصَّالِحُونَ وَمِمَّا دُونَ ذَلِكَ كُنَّا							
हम थे	उस के अ़लावा	और हम में से	नेकोकार (जमा)	हम में से	और यह कि	10	
हिदायत							
طَرَائِقَ قِدْدًا ١١ وَأَنَا ظَنَنَّا أَنْ لَّنْ نُعْجِزَ اللَّهَ فِي الْأَرْضِ							
ज़मीन में	हरा सकेंगे अल्लाह को	कि हम हरगिज़ न	हम समझते थे	और यह कि	11	मुख्तलिफ़ राहें	
وَلَنْ نُعْجِزَهُ هَرَبًا ١٢ وَأَنَا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدَىٰ آمَنَّا بِهِ							
हम ईमान ले आए उस पर	हिदायत	जब हम ने सुनी	और यह कि	12	भाग कर	और हम उस को हरगिज़ न हरा सकेंगे	
فَمَنْ يُؤْمِنُ بِرَبِّهِ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَلَا رَهَقًا ١٣ وَأَنَا مِنَ							
हम में से	और यह कि	13	और न किसी जुल्म	किसी नुक़सान	तो उसे ख़ौफ़ न होगा	अपने रब पर ईमान लाए	
सो जो							
الْمُسْلِمُونَ وَمِمَّا الْقَسِطُونَ فَمَنْ أَسْلَمَ فَأُولَٰئِكَ تَحَرَّوْا رَشْدًا ١٤							
14	भलाई	उन्होंने ने क़स्द किया	तो वही है	पस जो इसलाम लाया	गुनाहगार	और हम में से	
मुसलमान (जमा)							

और रहे गुनाहगार तो वह जहन्नम का ईंधन हुए। (15)

और (मुझे बहि की गई है) कि अगर वह काइम रहते हैं सीधे रास्ते पर तो हम उन्हें वाफ़िर पानी पिलाते। (16)

ताकि हम उन्हें उस में आज़माएं, और जो अपने रब की याद से मुंह मोड़ेगा वह उसे सख़्त अज़ाब में दाख़िल करेगा। (17)

और यह कि मसज़िदें अल्लाह के लिए हैं तो तुम अल्लाह के साथ किसी की बन्दगी न करो। (18)

और यह कि जब खड़ा हुआ अल्लाह का बन्दा कि वह उस (अल्लाह) की इबादत करे तो करीब था कि वह उस पर हल्का दर हल्का हो जाए। (19)

आप (स) फ़रमा दें कि मैं सिर्फ़ अपने रब की इबादत करता हूँ और मैं शरीक नहीं करता किसी को उस के साथ। (20)

आप (स) फ़रमा दें कि बेशक मैं तुम्हारे लिए इख़्तियार नहीं रखता किसी ज़र्र का और न किसी भलाई का। (21)

आप (स) फ़रमा दें कि बेशक मुझे हरगिज़ पनाह न देगा अल्लाह से कोई भी, और मैं उस के सिवा कोई जाए पनाह न पाऊँगा। (22)

मगर (मेरा काम है) अल्लाह की तरफ़ से उस का कहा और पैगाम पहुँचाना और जो नाफ़रमानी करेगा अल्लाह की और उस के रसूल (स) की तो बेशक उस के लिए

जहन्नम की आग है, ऐसे लोग उस में हमेशा हमेशा रहेंगे। (23)

यहां तक कि जब वह देखेंगे जो उन्हें वादा दिया जाता है तो वह जान लेंगे कि किस का मददगार कमज़ोर तरीन है और तादाद में कम तर है। (24)

आप (स) फ़रमा दें: मैं नहीं जानता कि आया करीब है जो तुम्हें वादा दिया जाता है या उस के लिए मेरा रब कोई मुद्ते (दराज़) मुक़र्र कर देगा। (25)

(वह) ग़ैब का जानने वाला है, अपने ग़ैब पर किसी को मुत्तला नहीं करता, (26)

सिवाए (उस के) जिसे वह पसंद करता है रसूलों में से, फिर बेशक उस के आगे और उस के पीछे मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते चलाता है, (27)

وَأَمَّا الْقَاسِطُونَ فَكَانُوا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ﴿١٥﴾ وَأَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوا							
वह काइम रहते	और यह कि अगर	15	ईंधन	जहन्नम का	तो वह हुए	गुनाहगार (जमा)	और रहे
عَلَى الطَّرِيقَةِ لَأَسْقِينَهُمْ مَاءً غَدَقًا ﴿١٦﴾ لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ							
उस में	ताकि हम उन्हें आज़माएं	16	वाफ़िर	पानी	तो अलबत्ता हम उन्हें पिलाते	(सीधे) रास्ते पर	
وَمَنْ يُعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ﴿١٧﴾							
17	सख़्त	अज़ाब	वह उसे दाख़िल करेगा	अपने रब की याद	से	रूगर्दानी करेगा	और जो
وَأَنَّ الْمَسَاجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا ﴿١٨﴾ وَأِنَّهُ							
और यह कि	18	किसी की	अल्लाह के साथ	तो तुम न पुकारो (बन्दगी न करो)	मसज़िदें अल्लाह के लिए	और यह कि	
لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللَّهِ يَدْعُوهُ كَادُوا يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ﴿١٩﴾							
19	हल्का दर हल्का	उस पर	वह हो जाए	करीब था	कि वह उस की इबादत करे	अल्लाह का बन्दा	जब खड़ा हुआ
قُلْ إِنَّمَا أَدْعُوا رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِهِ أَحَدًا ﴿٢٠﴾ قُلْ إِنِّي لَا أَمْلِكُ							
इख़्तियार नहीं रखता	बेशक मैं	फ़रमा दें	20	उस के साथ किसी को	और मैं शरीक नहीं करता	सिर्फ़ मैं अपने रब की इबादत करता हूँ	फ़रमा दें इस के सिवा नहीं
لَكُمْ صَرًّا وَلَا رَشَدًا ﴿٢١﴾ قُلْ إِنِّي لَنْ يُجِيرَنِي مِنَ اللَّهِ							
अल्लाह से	मुझे हरगिज़ पनाह न देगा	बेशक मुझे	फ़रमा दें	21	और न किसी भलाई	किसी ज़र्र	तुम्हारे लिए
أَحَدُهُ وَلَنْ أَجِدَ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ﴿٢٢﴾ إِلَّا بَلَاغًا							
मगर (पैगाम) पहुँचाना	22	कोई जाए पनाह	उस के सिवा	और मैं हरगिज़ न पाऊँगा	कोई		
مِّنَ اللَّهِ وَرِسَالَتِهِ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ لَهُ							
तो बेशक उस के लिए	और उस के रसूल की	नाफ़रमानी करे अल्लाह की	और जो	और उस के पैगामात	अल्लाह की तरफ़ से		
نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ﴿٢٣﴾ حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا							
जब वह देखेंगे	यहां तक कि	23	हमेशा हमेशा	उस में	हमेशा रहेंगे	जहन्नम की आग	
مَا يُوعَدُونَ فَيَسْعَلْمُونَ مَنْ أضعف ناصِرًا وَأَقْلُ عَدَدًا ﴿٢٤﴾							
24	तादाद में	और कम तर	मददगार	कमज़ोर तरीन	किस	तो वह अनकरीब जान लेंगे	जो उन्हें वादा दिया जाता है
قُلْ إِنْ أَدْرِي أَقْرَبُ مِمَّا تُوعَدُونَ أَمْ يَجْعَلُ							
या कर देगा	जो तुम्हें वादा दिया जाता है	आया करीब है	मैं जानता	नहीं	फ़रमा दें		
لَهُ رَبِّي أَمَدًا ﴿٢٥﴾ عِلْمِ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلَىٰ غَيْبِهِ							
अपने ग़ैब पर	वह ज़ाहिर नहीं करता	ग़ैब का जानने वाला	25	मुद्दत	मेरा रब	उस के लिए	
أَحَدًا ﴿٢٦﴾ إِلَّا مَنْ ارْتَضَىٰ مِنْ رَّسُولٍ فَإِنَّهُ							
तो बेशक वह	रसूलों में से	वह पसंद करता है	जिस को	सिवाए	26	किसी को	
يَسْأَلُكَ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ رَصَدًا ﴿٢٧﴾							
27	मुहाफ़िज़ (फ़रिश्ते)	और उस के पीछे से	उस के आगे से	चलाता है			

۱۱

۲  
۱۲

لَيَعْلَمَ أَنْ قَدْ أَبْلَغُوا رَسُولَ رَبِّهِمْ وَأَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ						
जो उन के पास	और उस ने अहाता किया हुआ है	अपने रब के	पैगामात	उन्होंने ने तहकीक पहुँचा दिए	कि	ता कि वह मालूम कर ले
وَأَحْصَى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا (۲۸)						
	28	गिनती में	हर शै	और उस ने शुमार कर रखी है		
آيَاتُهَا ۲۰ ﴿۷۳﴾ سُورَةُ الْمَزْمَلِ ﴿۲۸﴾ رُكُوعَاتُهَا ۲						
रुकुआत 2		(73) सूरतुल मुज्जमिल कपड़ों में लिपटने वाले			आयात 20	
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ						
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
يَا أَيُّهَا الْمَزْمَلُ (۱) قُمِ اللَّيْلَ إِلَّا قَلِيلًا (۲) نِصْفَةَ أَوْ انْقُصْ						
कम कर लें	या	उस का निस्फ	2	थोड़ा	मगर	रात में कियाम करें
ए कपड़ों में लिपटने वाले (मुहम्मद (स))		1				
مِنْهُ قَلِيلًا (۳) أَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلًا (۴)						
4	तरतील के साथ	कुरआन	और ठहर ठहर कर पढ़ें	उस पर-से	या ज़ियादा कर लें	3
थोड़ा		उस में से				
إِنَّا سَنُلْقِي عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيلًا (۵) إِنَّ نَاشِئَةَ اللَّيْلِ						
रात	उठना	वेशक	5	एक भारी कलाम	आप (स)	वेशक हम अनकरीब डाल देंगे
هِيَ أَشَدُّ وَطْأً وَأَقْوَمُ قِيلًا (۶) إِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا						
शुगल	दिन में	वेशक आप (स) के लिए	6	वात/ तिलावत	और ज़ियादा दुरुस्त	यह सख्त (नफ्स को) रोन्दने वाला
طَوِيلًا (۷) وَادْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا (۸)						
8	(सब से) छूट कर	उस की तरफ	और छूट जाएं	अपने रब का नाम	और आप (स) याद करें	7
رَبِّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا (۹)						
9	कारसाज़	पस पकड़ लो (बना लो) उस को	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	और मग़रिब	रब मशरिफ़ का
وَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيلًا (۱۰)						
10	अच्छी तरह	किनारा कश हो कर	और उन्हें छोड़ दें	जो वह कहते हैं	पर	और आप (स) सबर करें
وَدَرِّئِي وَالْمُكَدِّبِينَ أُولَى النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيلًا (۱۱) إِنَّ						
वेशक	11	थोड़ी	और उन को मोहलत दें	खुशहाल लोगों	और झुटलाने वालों	और मुझे छोड़ दो
لَدَيْنَا أَنْكَالًا وَجَحِيمًا (۱۲) وَطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَعَدَابًا أَلِيمًا (۱۳) يَوْمَ						
जिस दिन	13	दर्दनाक	और अज़ाब	गले में अटक जाने वाला	और खाना	12
अज़ाब		हमारे हां		और दहकती आग		
تَرْجُفُ الْأَرْضِ وَالْجِبَالِ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا مَّهِيلًا (۱۴) إِنَّا أَرْسَلْنَا						
वेशक हम ने भेजा	14	रेज़ा रेज़ा	रेत के तोड़े	पहाड़	और हो जाएंगे	और पहाड़
ज़मीन		कापेगी				
إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا (۱۵)						
15	एक रसूल	फिरऔन की तरफ	जैसे हम ने भेजा	तुम पर	गवाही देने वाला	एक रसूल
तुम्हारी तरफ						

ता कि वह मालूम कर ले कि उन्होंने ने पहुँचा दिए हैं अपने रब के पैगामात और उस ने अहाता किया हुआ है जो कुछ उन के पास है और हर चीज़ को गिनती में शुमार कर रखा है। (28) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है ऐ मुज्जमिल (कपड़ों में लिपटने वाले मुहम्मद (स))! (1) रात में कियाम करें मगर थोड़ा। (2) उस (रात) का निस्फ हिस्सा या उस में से थोड़ा कम कर लें। (3) या (कुछ) ज़ियादा कर लें उस से, और कुरआन तरतील के साथ ठहर ठहर कर पढ़ें। (4) वेशक हम आप (स) पर अनकरीब एक भारी कलाम (कुरआने करीम) डालेंगे (नाज़िल करेंगे)। (5) वेशक रात का उठना नफ्स को रोन्दने वाला है और (कुरआन) पढ़ने के लिए ज़ियादा दुरुस्त है। (6) वेशक आप (स) के लिए दिन में बहुत काम है। (7) और आप (स) अपने रब के नाम का ज़िक्र करें और सब से कट कर (अलग हो कर) उस के हो जाएं। (8) (वह) मशरिफ़ ओ मग़रिब का रब है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं, पस आप (स) उस को कारसाज़ बनानें। (9) और आप (स) सबर करें उस पर जो वह कहते हैं और अच्छी तरह किनारा कश हो कर आप (स) उन्हें छोड़ दें। (10) और मुझे और झुटलाने वाले खुशहाल लोगों को छोड़ दें (समझ लेने दें) और उन को थोड़ी मोहलत दे दें। (11) वेशक हमारे हां अज़ाब है और दहकती आग। (12) और खाना है गले में अटक जाने वाला और अज़ाब है दर्दनाक। (13) जिस दिन ज़मीन और पहाड़ कांपेंगे और पहाड़ रेज़ा रेज़ा (हो कर) रेत के तोड़े हो जाएंगे। (14) वेशक हम ने भेजा तुम्हारी तरफ एक रसूल (मुहम्मद स) गवाही देने वाला तुम पर जैसे हम ने भेजा था फिरऔन की तरफ एक रसूल (मूसा अ)। (15)

पस फिरऔन ने रसूल का कहा न माना तो हम ने उसे (फिरऔन को) बड़े ववाल की पकड़ में पकड़ लिया। (16)

अगर तुम ने कुफ़ किया तो उस दिन कैसे बचोगे? जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा। (17)

उस से आस्मान फट जाएगा, उस का वादा पूरा हो कर रहने वाला है। (18)

वेशक यह (कुरआन) नसीहत है, जो कोई चाहे इख्तियार कर ले (इस के ज़रीए) अपने रब की तरफ़ राह। (19)

वेशक आप (स) का रब जानता है कि आप (स) (कभी) दो तिहाई रात के करीब कियाम करते हैं और (कभी) आधी रात और (कभी) उस का तिहाई हिस्सा और जो आप (स) के साथी हैं उन में से एक जमाअत (भी), और अल्लाह रात और दिन का अन्दाज़ा फ़रमाता है, उस ने जाना कि तुम हरगिज़ निवाह न कर सकोगे तो उस ने तुम पर इनायत फ़रमाई, पस तुम कुरआन में जिस क़द्र आसानी से हो सके पढ़ लिया करो, उस ने जाना कि अलबत्ता तुम में से कोई बीमार होंगे और दूसरे रोज़ी तलाश करते हुए ज़मीन में सफ़र करेंगे और कई दूसरे अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे, पस उस में से जिस क़द्र आसानी से हो सके तुम पढ़ लिया करो और तुम नमाज़ काइम करो और ज़कात अदा करते रहो और अल्लाह को इख़लास से कर्ज़ हसना दो, और कोई नेकी जो तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे अल्लाह के हाँ बेहतर और अजर में अज़ीम तर पाओगे, और तुम अल्लाह से बख़्शिश मांगो, वेशक अल्लाह बख़्शाने वाला, निहायत रहम करने वाला है। (20)

فَعَصَى فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَأَحْذَنهُ أَحْذًا وَبِيْلًا ١٦

16	बड़े ववाल	पकड़	तो हम ने उसे पकड़ लिया	रसूल	फिरऔन	पस कहा न माना
----	-----------	------	------------------------	------	-------	---------------

فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ

बच्चों को	कर देगा	उस दिन	अगर तुम ने कुफ़ किया	तुम बचोगे	तो कैसे
-----------	---------	--------	----------------------	-----------	---------

شِيْبًا ١٧ ١٨ السَّمَاءُ مُنْفَطِرٌ بِهِ كَانَ وَعْدُهُ مَفْعُولًا

18	पूरा हो कर रहने वाला	उस का वादा	है	उस से	फट जाएगा	आस्मान	17	बूढ़ा
----	----------------------	------------	----	-------	----------	--------	----	-------

إِنَّ هَذِهِ تَذْكِرَةٌ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ١٩

19	राह	अपने रब की तरफ़	इख्तियार कर ले	चाहे	तो जो	नसीहत	वेशक यह
----	-----	-----------------	----------------	------	-------	-------	---------

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِنْ ثُلُثِي اللَّيْلِ

दो तिहाई (2/3) रात के	करीब	कियाम करते हैं	कि आप (स)	वह जानता है	वेशक आप (स) का रब
-----------------------	------	----------------	-----------	-------------	-------------------

وَنُصَفَهُ وَثُلُثَهُ وَطَائِفَةٌ مِّنَ الَّذِينَ مَعَكَ وَاللَّهُ

और अल्लाह	जो आप (स) के साथ	से	और एक जमाअत	और उस का तिहाई (1/3)	और आधी (1/2) रात
-----------	------------------	----	-------------	----------------------	------------------

يُقَدِّرُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ عِلْمَ أَنْ لَنْ تُحْصَوْهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ

तो उस ने तुम पर इनायत की	कि तुम हरगिज़ (बक़त का) शुमार न कर सकोगे	उस ने जाना	रात और दिन	अन्दाज़ा फ़रमाता है
--------------------------	--	------------	------------	---------------------

فَأَقْرَعُوا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ عِلْمَ أَنْ سَيَكُونُ

कि अलबत्ता होंगे	उस ने जाना	कुरआन से	जिस क़द्र आसानी से हो सके	तो तुम पढ़ा करो
------------------	------------	----------	---------------------------	-----------------

مِنْكُمْ مَّرْضَىٰ ۖ وَآخِرُونَ يَصُْرِبُونَ فِي الْأَرْضِ

ज़मीन में	वह सफ़र करेंगे	और दूसरे	बीमार	तुम में से कोई
-----------	----------------	----------	-------	----------------

يَبْتَغُونَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ ۖ وَآخِرُونَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۗ

अल्लाह की राह में	वह जिहाद करेंगे	और कई दूसरे	अल्लाह का फ़ज़ल (रोज़ी)	से	तलाश करते हुए
-------------------	-----------------	-------------	-------------------------	----	---------------

فَأَقْرَعُوا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ

नमाज़	और काइम करो	उस से	जिस क़द्र आसानी से हो सके	पस पढ़ लिया करो
-------	-------------	-------	---------------------------	-----------------

وَاتُوا الزَّكَاةَ وَأَقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا وَمَا تُقَدِّمُوا

तुम आगे भेजोगे	और जो	कर्ज़ हसना (इख़लास से)	और अल्लाह को कर्ज़ दो	और अदा करते रहो ज़कात
----------------	-------	------------------------	-----------------------	-----------------------

لِأَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرًا

वह बेहतर	अल्लाह के हाँ	तुम उसे पाओगे	कोई नेकी	अपने लिए
----------	---------------	---------------	----------	----------

وَأَعْظَمَ أَجْرًا ۖ وَاسْتَعْفِرُوا اللَّهَ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ

बख़्शाने वाला	वेशक अल्लाह	और तुम बख़्शिश मांगो अल्लाह से	अजर में	और अज़ीम तर
---------------	-------------	--------------------------------	---------	-------------

رَحِيمٌ ٢٠

20	निहायत रहम करने वाला
----	----------------------

<b>آيَاتُهَا ٥٦ ﴿٧٤﴾ سُورَةُ الْمُدَّثَرِ ﴿٧٤﴾ ﴿٧٤﴾ رُكُوعَاتُهَا ٢</b>								
रुकुआत 2		(74) सूरतुल मुद्दसिर कपड़े में लिपटे हुए			आयात 56			
<b>بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ</b>								
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है								
<b>يَا أَيُّهَا الْمُدَّثَرُ ﴿١﴾ قُمْ فَأَنْذِرْ ﴿٢﴾ وَرَبِّكَ فَكَبِّرْ ﴿٣﴾ وَثِيَابَكَ</b>								
और अपने कपड़े	3	और अपने रब की बड़ाई बयान करो	2	फिर डराओ	खड़े हो जाओ	1	ऐ कपड़े में लिपटे हुए (मुहम्मद (स))	
<b>فَطَهِّرْ ﴿٤﴾ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ﴿٥﴾ وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ﴿٦﴾</b>								
6	ज़ियादा लेने (की गरज़ से)	और एहसान न रखो	5	सो दूर रहो	और पलीदी	4	सो पाक करो	
<b>وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ﴿٧﴾ فَإِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُورِ ﴿٨﴾ فَذَلِكَ يَوْمَئِذٍ</b>								
उस दिन	तो वह	8	सूर में	फिर जब फूँका जाएगा	7	सब्र करो	और अपने रब के लिए	
<b>يَوْمَ عَسِيرٌ ﴿٩﴾ عَلَى الْكٰفِرِينَ غَيْرُ يَسِيرٍ ﴿١٠﴾ ذَرْنِي وَمَنْ</b>								
और जिसे	मुझे छोड़ दो	10	न आसान	काफिरों पर	9	बड़ा दुश्वार	दिन	
<b>خَلَقْتُ وَحِيدًا ﴿١١﴾ وَجَعَلْتُ لَهُ مَالًا مَمْدُودًا ﴿١٢﴾ وَبَنِينَ</b>								
और बेटे	12	बहुत सारा माल	उसे	और मैं ने दिया	11	अकेला	मैं ने पैदा किया	
<b>شُهُودًا ﴿١٣﴾ وَمَهَّدْتُ لَهُ تَمْهِيدًا ﴿١٤﴾ ثُمَّ يَطْمَعُ</b>								
वह तमझ करता है	फिर	14	खूब हमवार	उस के लिए	और हमवार किया	13	सामने हाज़िर रहने वाले	
<b>أَنْ أَزِيدَ ﴿١٥﴾ كَلَّا إِنَّهُ كَانَ لِآيَاتِنَا عَنِيدًا ﴿١٦﴾ سَأَرْهُقَهُ</b>								
अब उस से चढ़वाऊँगा	16	इनाद रखने वाला (मुख़ालिफ़)	हमारी आयात का	वेशक वह है	हरगिज़ नहीं	15	कि (और) ज़ियादा दूँ	
<b>صَعُودًا ﴿١٧﴾ إِنَّهُ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ﴿١٨﴾ فَقَتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿١٩﴾</b>								
19	उस ने अन्दाज़ा किया	कैसा	सो वह मारा जाए	18	और उस ने अन्दाज़ा किया	वेशक उस ने सोचा	17	बड़ी चढ़ाई
<b>ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿٢٠﴾ ثُمَّ نَظَرَ ﴿٢١﴾ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ﴿٢٢﴾</b>								
22	और मुँह बिगाड़ लिया	फिर उस ने तेवरी चढ़ाई	21	फिर उस ने देखा	20	कैसा उस ने अन्दाज़ा किया	फिर वह मारा जाए	
<b>ثُمَّ أَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ﴿٢٣﴾ فَقَالَ إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ</b>								
मगर (सिर्फ) जादू	नहीं यह	तो उस ने कहा	23	और उस ने तकव्वुर किया	फिर उस ने पीठ फेर ली	फिर उस ने पीठ फेर ली	फिर उस ने पीठ फेर ली	
<b>يُؤْتَرُ ﴿٢٤﴾ إِنَّ هَذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ﴿٢٥﴾ سَأُصَلِّيهِ</b>								
अनकरीब उसे डाल दूँगा	25	आदमी का कलाम	मगर (सिर्फ)	नहीं यह	24	अगलों से नक़ल किया जाता है	अनकरीब मैं उसे सकर में डाल दूँगा। (26)	
<b>سَقَرٌ ﴿٢٦﴾ وَمَا أَذْرِيكَ مَا سَقَرُ ﴿٢٧﴾ لَا تُبْقِي</b>								
वह न बाकी रखेगी	27	सकर क्या है	और तुम क्या समझे?	26	सकर (जहननम)	और तुम क्या जानो कि सकर क्या है? (27)	(वह है आग) न बाकी रखेगी और न छोड़ेगी, (28)	
<b>وَلَا تَذُرْ ﴿٢٨﴾ لَوَاحِئَةً لِّلْبَشَرِ ﴿٢٩﴾ عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ﴿٣٠﴾</b>								
30	उस पर है उन्नीस (19) दारोगा	29	आदमी को	झुलस देने वाली	28	और न छोड़ेगी	आदमी को झुलस देने वाली है, (29) उस पर उन्नीस (19) दारोगा (मुकरर) है। (30)	

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है  
 ऐ कपड़ों में लिपटे हुए  
 (मुहम्मद (स))! (1)  
 खड़े हो जाओ, फिर डराओ, (2)  
 और अपने रब की बड़ाई बयान करो, (3)  
 और अपने कपड़े पाक रखो, (4)  
 और पलीदी से दूर रहो। (5)  
 और ज़ियादा लेने की गरज़ से एहसान न रखो, (6)  
 और अपने रब की (रज़ा जूई) के लिए सब्र करो। (7)  
 फिर जब सूर फूँका जाएगा। (8)  
 तो वह दिन बड़ा दुश्वार दिन होगा। (9)  
 काफिरों पर आसान न होगा। (10)  
 मुझे और उसे छोड़ दो जिसे मैं ने अकेला पैदा किया। (11)  
 और मैं ने उसे दिया बहुत सारा माल, (12)  
 और सामने हाज़िर रहने वाले बेटे, (13)  
 और हमवार किया उस के लिए (सरदार बनने का रास्ता) खूब हमवार, (14)  
 फिर वह लालच करता है कि और ज़ियादा दूँ। (15)  
 हरगिज़ नहीं, बेशक वह हमारी आयात का मुख़ालिफ़ है। (16)  
 अब उसे कठिन चढ़ाई चढ़वाऊँगा। (17)  
 बेशक उस ने सोचा और कुछ बात बनाने की कोशिश की, (18)  
 सो वह मारा जाए कि कैसी बात बनाने की कोशिश की, (19)  
 फिर वह मारा जाए कि कैसी बात बनाने की कोशिश की। (20)  
 फिर उस ने देखा, (21)  
 फिर उस ने तेवरी चढ़ाई और मुँह बिगाड़ लिया, (22)  
 फिर उस ने पीठ फेर ली और उस ने तकव्वुर किया। (23)  
 पस उस ने कहा: यह तो सिर्फ़ एक जादू है (जो) अगलों से चला आता है, (24)  
 यह तो सिर्फ़ एक आदमी का कलाम है। (25)  
 अनकरीब मैं उसे सकर में डाल दूँगा। (26)  
 और तुम क्या जानो कि सकर क्या है? (27)  
 (वह है आग) न बाकी रखेगी और न छोड़ेगी, (28)  
 आदमी को झुलस देने वाली है, (29)  
 उस पर उन्नीस (19) दारोगा (मुकरर) है। (30)

और हम ने दोज़ख़ के दारोगे सिर्फ़ फ़रिश्ते बनाए हैं, और हम ने उन की तादाद सिर्फ़ एक फ़ित्ना बनाया

उन लोगों के लिए जो काफ़िर हुए ताकि अहले किताब यकीन कर लें और ईमान ज़ियादा हो उन का जो ईमान लाए और वह लोग शक न करें जिन्हें किताब दी गई (अहले

किताब) और मोमिन, और ताकि वह लोग जिन के दिलों में रोग है और काफ़िर कहें कि क्या इरादा किया है अल्लाह ने इस मिसाल

(बात) से? इसी तरह अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह करता है और वह जिसे चाहता है हिदायत देता है, (कोई) नहीं जानता तेरे रब के लशकरों को खुद उस के सिवा, और यह नहीं मगर आदमी के लिए नसीहत। (31)

नहीं नहीं! कसम है चाँद की, (32)

और रात की जब वह पीठ फेरे। (33)

और सुबह की जब वह रोशन हो। (34)

वेशक वह (दोज़ख़) बड़ी चीज़ों में एक है, (35)

लोगों को डराने वाली। (36)

तुम में से जो कोई चाहे आगे बढ़े या वह पीछे रहे। (37)

हर शख्स अपने आमाल के बदले गिरवी है। (38)

मगर दाहिनी हाथ वाले (नेक लोग)। (39)

बागात में (होंगे), वह पूछेंगे। (40)

गुनाहगारों से, (41)

तुम्हें जहन्नम में क्या चीज़ ले गई? (42)

वह कहेंगे कि हम नमाज़ पढ़ने वालों में से न थे। (43)

और हम मोहताजों को खाना न खिलाते थे। (44)

और हम बेहूदा बातों में लगे रहने वालों के साथ बेहूदा बातों में धंस्ते रहते थे, (45)

और हम रोज़े जज़ा ओ सज़ा को झुटलाते थे। (46)

यहां तक कि हमें मौत आ गई। (47)

सो उन्हें सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश ने नफ़ा न दिया। (48)

तो उन्हें क्या हुआ कि वह नसीहत से मुँह फेरते हैं? (49)

وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ النَّارِ إِلَّا مَلَائِكَةً وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ

उन की तादाद	और हम ने नहीं रखी	फ़रिश्ते	मगर (सिर्फ़)	दोज़ख़ के दारोगे	और हम ने नहीं बनाए
-------------	-------------------	----------	--------------	------------------	--------------------

إِلَّا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ

किताब दी गई (अहले किताब)	वह लोग जिन्हें	ताकि वह यकीन कर लें	काफ़िर हुए	उन लोगों के लिए जो	मगर (सिर्फ़) आज़माइश
--------------------------	----------------	---------------------	------------	--------------------	----------------------

وَيَزِدَادَ الَّذِينَ آمَنُوا إِيمَانًا وَلَا يَرْتَابَ الَّذِينَ

वह लोग जिन्हें	और शक न करें	ईमान	जो लोग ईमान लाए	और ज़ियादा हो
----------------	--------------	------	-----------------	---------------

أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْمُؤْمِنُونَ وَلِيَقُولَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ

रोग	जिन के दिलों में	वह लोग	और ताकि वह कहें	और मोमिन (जमा)	किताब दी गई
-----	------------------	--------	-----------------	----------------	-------------

وَالْكَافِرُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ

अल्लाह गुमराह करता है	इसी तरह	मिसाल	इस	इरादा किया अल्लाह ने	क्या	और काफ़िर (जमा)
-----------------------	---------	-------	----	----------------------	------	-----------------

مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ

लशकरों	और नहीं जानता	जिसे वह चाहता है	और हिदायत देता है	जिसे वह चाहता है
--------	---------------	------------------	-------------------	------------------

رَبِّكَ إِلَّا هُوَ وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرَى لِلْبَشَرِ (۳۱) كَلَّا وَالْقَمَرَ (۳۲)

32	कसम है चाँद की	नहीं नहीं	31	आदमी के लिए	मगर नसीहत	और नहीं यह	सिवाए वह (खुद)	तेरे रब के
----	----------------	-----------	----	-------------	-----------	------------	----------------	------------

وَاللَّيْلِ إِذْ أَدْبَرَ (۳۳) وَالصُّبْحِ إِذَا أَسْفَرَ (۳۴) إِنَّهَا لِأَحَدَى

एक है	वेशक यह	34	जब वह रोशन हो	और सुबह	33	जब वह पीठ फेरे	और रात
-------	---------	----	---------------	---------	----	----------------	--------

الْكُبَرِ (۳۵) نَذِيرًا لِلْبَشَرِ (۳۶) لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَتَقَدَّمَ

कि वह आगे बढ़े	तुम में से	और जो कोई चाहे	36	लोगों को	डराने वाली	35	बड़ी (आफ़त)
----------------	------------	----------------	----	----------	------------	----	-------------

أَوْ يَتَأَخَّرَ (۳۷) كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهينَةً (۳۸) إِلَّا

मगर	38	गिरवी	उस ने कमाया (आमाल)	उस के बदले जो	हर शख्स	37	या पीछे रहे
-----	----	-------	--------------------	---------------	---------	----	-------------

أَصْحَابَ الْيَمِينِ (۳۹) فِي جَنَّتِ شَيْءٌ يَتَسَاءَلُونَ (۴۰) عَنِ الْمُجْرِمِينَ (۴۱)

41	गुनाहगारों	से	40	वह पूछेंगे	बागात में	39	दाहिनी तरफ वाले
----	------------	----	----	------------	-----------	----	-----------------

مَا سَلَكَكُمْ فِي سَقَرٍ (۴۲) قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ (۴۳)

43	नमाज़ पढ़ने वाले	से	हम न थे	वह कहेंगे	42	जहन्नम में	क्या (चीज़) तुम्हें ले गई
----	------------------	----	---------	-----------	----	------------	---------------------------

وَلَمْ نَكُ نَطْعُمُ الْمَسْكِينِ (۴۴) وَكُنَّا نَخُوضُ مَعَ الْخَاصِيصِ (۴۵)

45	बेहूदा बातों के साथ लगे रहने वाले	और हम धंस्ते रहते थे (बेहूदा बातों में)	44	मोहताजों	हम खाना खिलाते	और न थे हम
----	-----------------------------------	---	----	----------	----------------	------------

وَكُنَّا نَكْذِبُ بِيَوْمِ الدِّينِ (۴۶) حَتَّىٰ آتَنَا الْيَقِينَ (۴۷) فَمَا تَنْفَعُهُمْ

और उन्हें नफ़ा न दिया	47	मौत	हमें आ गई	यहां तक कि	46	रोज़े जज़ा ओ सज़ा को	और हम झुटलाते थे
-----------------------	----	-----	-----------	------------	----	----------------------	------------------

شَفَاعَةُ الشُّفَعِينَ (۴۸) فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكَرَةِ مُعْرِضِينَ (۴۹)

49	मुँह फेरते हैं	नसीहत	से	तो उन्हें क्या हुआ	48	सिफ़ारिश करने वाले	सिफ़ारिश
----	----------------	-------	----	--------------------	----	--------------------	----------

كَانَهُمْ حُمْرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ﴿٥٠﴾ فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ﴿٥١﴾ بَلْ يُرِيدُ						
चाहता है	बल्कि	51	शेर से	भागते जाते हैं	50	भागते हुए
كُلُّ أَمْرٍ مِّنْهُمْ أَنْ يُوْتَىٰ صُحُفًا مُّنْشَرَةً ﴿٥٢﴾ كَلَّا بَلْ						
बल्कि	हरगिज़ नहीं	52	खुले हुए	सहीफे	कि वह दिए जाएं	उन में से
لَا يَخَافُونَ الْآخِرَةَ ﴿٥٣﴾ كَلَّا إِنَّهُ تَذَكُّرَةٌ ﴿٥٤﴾ فَمَنْ شَاءَ						
सो जो चाहे	54	नसीहत	वेशक यह	हरगिज़ नहीं	53	आखिरत
ذَكَرَهُ ﴿٥٥﴾ وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ هُوَ						
वही	अल्लाह चाहे	मगर यह कि	और वह याद न रखेंगे	55	इसे याद रखे	
أَهْلُ التَّقْوَىٰ وَأَهْلُ الْمَعْرِفَةِ ﴿٥٦﴾						
	56	और मग़फ़िरत करने के लाइक	डरने के लाइक			
آيَاتُهَا ٤٠ ﴿٧٥﴾ سُورَةُ الْقِيَمَةِ ﴿٧٥﴾ ﴿٧٥﴾ زُكُوعَاتُهَا ٢						
रुकुआत 2		(75) सूरातुल कियामह कियामत			आयात 40	
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ						
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
لَا أُفْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيَمَةِ ﴿١﴾ وَلَا أُفْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ﴿٢﴾						
2	मलामत करने वाला (जमीर)	नफ्स की	और नहीं, मैं कसम खाता हूँ	1	कियामत के दिन की	नहीं, मैं कसम खाता हूँ
أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَلَّنْ نَجْمَعَ عِظَامَهُ ﴿٣﴾ بَلَىٰ قَدَرِينَا						
क्यों नहीं, हम कादिर हैं	3	उस की हड्डियाँ	कि हम जमा न कर सकेंगे	इन्सान	क्या गुमान करता है	
عَلَىٰ أَنْ نُسَوِّيَ بَنَانَهُ ﴿٤﴾ بَلْ يُرِيدُ الْإِنْسَانُ لِيَفْجُرَ						
कि गुनाह करता रहे	इन्सान	बल्कि चाहता है	4	उस के पोर पोर	कि हम दुरुस्त करें	पर
أَمَامَهُ ﴿٥﴾ يَسْأَلُ أَيَّانَ يَوْمِ الْقِيَمَةِ ﴿٦﴾ فَاذَا						
पस जब	6	रोज़े कियामत	कब?	और पूछता है	5	अपने आगे को भी
بَرَقَ الْبَصُرُ ﴿٧﴾ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ﴿٨﴾ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ﴿٩﴾						
9	सूरज और चाँद	और जमा कर दिए जाएंगे	8	चाँद	और गरहन लग जाएगा	7
يَقُولُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفْرُجُ ﴿١٠﴾ كَلَّا لَا وَزَرَ ﴿١١﴾						
11	नहीं कोई बचाओ	हरगिज़ नहीं	10	कहाँ भागने की जगह	आज के दिन	इन्सान
إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ﴿١٢﴾ يُنَبِّئُ الْإِنْسَانَ يَوْمَئِذٍ						
आज के दिन	इन्सान	वह जतला दिया जाएगा	12	ठिकाना	आज के दिन	तेरे रब की तरफ
بِمَا قَدَّمَ وَآخَرَ ﴿١٣﴾ بَلِ الْإِنْسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ﴿١٤﴾						
14	वाख़बर	अपनी जान (हालत) पर	बल्कि इन्सान	13	और उस ने पीछे छोड़ा	वह जो उस ने आगे भेजा

٢  
٧٥  
١٦

गोया कि वह जंगली गधे हैं, (50) भागे जाते हैं शेर से। (51) बल्कि उन में से हर आदमी चाहता है कि उसे दिए जाएं सहीफे खुले हुए। (52) हरगिज़ नहीं, बल्कि वह आखिरत से नहीं डरते। (53) हरगिज़ नहीं, वेशक यह नसीहत है। (54) सो जो चाहे इसे याद रखे। (55) और वह याद न रखेंगे मगर यह कि अल्लाह चाहे, वही है डरने के लाइक और मग़फ़िरत करने के लाइक। (56) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है मैं कियामत के दिन की कसम खाता हूँ। (1) और अपने ऊपर मलामत करने वाले नफ्स की कसम खाता हूँ। (2) क्या इन्सान गुमान करता है कि हम हरगिज़ जमा न कर सकेंगे उस की हड्डियाँ। (3) क्यों नहीं? कि हम इस पर कादिर हैं कि उस के पोर पोर दुरुस्त कर दें। (4) बल्कि इन्सान चाहता है कि आगे भी गुनाह करता रहे। (5) वह पूछता है कि रोज़े कियामत कब होगा? (6) पस जब आँखें चुंधिया जाएंगी, (7) और चाँद को गरहन लग जाएगा, (8) और सूरज और चाँद जमा कर दिए जाएंगे। (9) इन्सान कहेगा कि कहाँ है आज के दिन भागने की जगह? (10) हरगिज़ नहीं, कोई बचाओ की जगह नहीं। (11) आज के दिन तेरे रब की तरफ ठिकाना है। (12) जतला दिया जाएगा इन्सान आज के दिन जो उस ने आगे भेजा और जो उस ने पीछे छोड़ा। (13) बल्कि इन्सान अपनी जान पर वाख़बर है। (14)

अगरचे अपने उज़र (हीले) ला डाले (पेश करे)। (15)

आप (स) कुरआन के साथ अपनी ज़बान को हरकत न दें कि उस को जल्द याद कर लें। (16)

वेशक उस का जमा करना और उस का पढ़ाना हमारे ज़िम्मे है। (17)

पस जब हम उसे (फ़रिश्ते की ज़बानी) पढ़ें तो आप (स) ध्यान से सुनें उस के पढ़ने को। (18)

फिर वेशक उस का बयान करना हमारे ज़िम्मे है। (19)

हरगिज़ नहीं, बल्कि (ऐ काफ़िरो!) तुम दुनिया से मुहब्बत रखते हो, (20)

और आख़िरत को छोड़ देते हो। (21)

उस दिन बहुत से चेहरे बारौनक होंगे, (22)

अपने रब की तरफ़ देखते होंगे। (23)

और बहुत से चेहरे उस दिन बिगड़े हुए होंगे, (24)

वह ख़याल करते होंगे कि उन से कमर तोड़ने वाला (मामला) किया जाएगा। (25)

हाँ हाँ, जब (जान) हंसुली तक पहुँच जाए। (26)

और कहा जाए कि कौन है झाड़ फूंक करने वाला? (27)

और वह गुमान करे कि यह जुदाई की घड़ी है। (28)

और एक पिंडली दूसरी पिंडली से लिपट जाए (पाऊँ में हरकत न रहे)। (29)

उस दिन (तुझे) अपने रब की तरफ़ चलना है। (30)

न उस ने (अल्लाह-रसूल की) तसदीक की और न उस ने नमाज़ पढ़ी। (31)

बल्कि उस ने झुटलाया और मुँह मोड़ा। (32)

फिर वह अपने घर वालों की तरफ़ अकड़ता हुआ चला गया। (33)

अफ़सोस है तुझ पर अफ़सोस। (34)

फिर अफ़सोस है तुझ पर फिर अफ़सोस। (35)

क्या इन्सान गुमान करता है कि वह यूँही छोड़ दिया जाएगा। (36)

क्या वह मनी का एक नुत्फ़ा (क़तरा) न था जो (रहमे मादर में) टपकाया गया, (37)

फिर वह जमा हुआ खून हुआ, फिर उस ने उसे पैदा किया, फिर उसे दुरुस्त (अनदाम) किया, (38)

फिर उस से मर्द और औरत की दो किस्में बनाई। (39)

क्या वह इस पर कादिर नहीं कि मुर्दाँ को ज़िन्दा करे? (40)

وَلَوْ أَلْقَى مَعَاذِيرَهُ ﴿١٥﴾ لَا تُحَرِّكُ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ ﴿١٦﴾							
16	कि जल्द (याद कर लें) उस को	अपनी ज़बान को	आप (स) हरकत न दें इस (कुरआन) के साथ	15	अपने उज़र	अगरचे ला डाले	
إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ ﴿١٧﴾ فَإِذَا قَرَأَهُ فَاتَّبِعْ							
तो आप (स) पैरवी करें	पस जब हम उसे पढ़ें	17	और उस का पढ़ाना	उस का जमा करना	वेशक हम पर (हमारे ज़िम्मे)		
قُرْآنَهُ ﴿١٨﴾ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ ﴿١٩﴾ كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ							
तुम मुहब्बत रखते हो	हरगिज़ नहीं बल्कि	19	उस का बयान	फिर वेशक हम पर (हमारे ज़िम्मे)	18	उस के पढ़ने को	
الْعَاجِلَةَ ﴿٢٠﴾ وَتَذَرُونَ الْآخِرَةَ ﴿٢١﴾ وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَاصِرَةٌ ﴿٢٢﴾							
22	ताज़ा (बारौनक)	उस दिन	बहुत से चेहरे	21	आख़िरत और तुम छोड़ देते हो	20	जल्दी हासिल होने वाली चीज़
إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴿٢٣﴾ وَوَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ﴿٢٤﴾ تَظُنُّ							
ख़याल करते होंगे	24	बिगड़े हुए	उस दिन	और बहुत से चेहरे	23	देखते	अपने रब की तरफ़
أَنْ يُفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ﴿٢٥﴾ كَلَّا إِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ﴿٢٦﴾							
26	हंसुली तक	पहुँच जाए	हाँ हाँ जब	25	कमर तोड़ने वाला	उन से किया जाएगा	कि
وَقِيلَ مَنْ رَاقٍ ﴿٢٧﴾ وَظَنَّ أَنَّهُ الْفِرَاقُ ﴿٢٨﴾ وَالتَّفَّتِ							
और लिपट जाए	28	जुदाई	और वह गुमान करे कि यह	27	कौन झाड़ फूंक करने वाला	और कहा जाए	
السَّاقُ بِالسَّاقِ ﴿٢٩﴾ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمَسَاقُ ﴿٣٠﴾							
30	चलना	उस दिन	अपने रब की तरफ़	29	दूसरी पिंडली से	एक पिंडली	
فَلَا صَدَقَ وَلَا صَلَّىٰ ﴿٣١﴾ وَلَكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿٣٢﴾							
32	और मुँह मोड़ा	झुटलाया	और लेकिन (बल्कि)	31	और न उस ने नमाज़ पढ़ी	न उस ने तसदीक की	
ثُمَّ ذَهَبَ إِلَىٰ أَهْلِهِ يَتَمَطَّىٰ ﴿٣٣﴾ أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ﴿٣٤﴾							
34	पस अफ़सोस	अफ़सोस तुझ पर	33	अकड़ता	अपने घर वालों की तरफ़	फिर चला गया वह	
ثُمَّ أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ﴿٣٥﴾ أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ يُشْرَكَ							
कि वह छोड़ दिया जाएगा	इन्सान	क्या वह गुमान करता है?	35	फिर अफ़सोस	अफ़सोस तुझ पर	फिर	
سُدًى ﴿٣٦﴾ أَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُمْنَىٰ ﴿٣٧﴾							
37	टपकाया गया	मनी	से-का	नुत्फ़ा	क्या न था?	36	मुहमिल (यूँ ही)
ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوَّىٰ ﴿٣٨﴾ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ							
दो जोड़े (किस्में)	उस से	फिर बनाए	38	फिर उसे दुरुस्त कर दिया	फिर उस ने पैदा किया	जमा हुआ खून	फिर वह हुआ
الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ﴿٣٩﴾ أَلَيْسَ ذَلِكَ بِقَدِيرٍ عَلَىٰ							
पर	कादिर	वह	क्या नहीं	39	मर्द और औरत		
أَنْ يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ ﴿٤٠﴾							
		40	मुर्दे (जमा)	कि वह ज़िन्दा करे			

١٢

٢١٨



<b>آيَاتُهَا ٣١ ﴿٧٦﴾ سُورَةُ الدَّهْرِ ﴿٧٦﴾ ﴿٧٦﴾ زُكُوعَاتُهَا ٢</b>						
रुकुआत 2		(76) सूरतुद दहर ज़माना			आयात 31	
<b>بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ</b>						
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
<b>هَلْ أُنِى عَلَى الْإِنْسَانِ حِينُ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْئًا مَّذْكُورًا ﴿١﴾</b>						
1	काबिले ज़िक्र	न था कुछ	ज़माना से (में)	एक वक़्त	इन्सान पर	यकीनन आया (गुज़रा)
<b>إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ نُطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَاهُ</b>						
तो हम ने उसे बनाया	हम उसे आज़माएं	मख़लूत	नुतफ़े से	इन्सान	वेशक हम ने पैदा किया	
<b>سَمِيعًا بَصِيرًا ﴿٢﴾ إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا</b>						
और खाह	खाह शुक्र करने वाला	राह	वेशक हम ने उसे दिखाई	2	सुनता देखता	
<b>كَفُورًا ﴿٣﴾ إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَلْسِلًا وَأَعْلَالًا وَسَعِيرًا ﴿٤﴾</b>						
4	और दहकती आग	और तौक	ज़न्जीरें	काफ़िरों के लिए	वेशक हम ने तैयार किया	3 नाशुक्रा
<b>إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِنْ كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ﴿٥﴾</b>						
5	काफूर की	उस में मिलावट होगी	प्याले से	पिएंगे	नेक बन्दे	वेशक
<b>عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ﴿٦﴾ يُؤْفُونَ</b>						
वह पूरी करते हैं	6	नालियां	उस से जारी करते हैं	अल्लाह के बन्दे	उस से पीते हैं	एक चश्मा
<b>بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا ﴿٧﴾ وَيُطْعَمُونَ</b>						
और वह खिलाते हैं	7	फैली हुई	उस की बुराई	होगी	उस दिन से	और वह डरते हैं अपनी (नज़रें)
<b>الطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا ﴿٨﴾ إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ</b>						
हम तुम्हें खिलाते हैं	इस के सिवा नहीं	8	और कैदी	और यतीम	मिस्कीन	उस की मुहब्बत पर खाना
<b>لِوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنْكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكُورًا ﴿٩﴾ إِنَّا نَخَافُ</b>						
वेशक हम डरते हैं	9	और न शुक्रिया	कोई जज़ा	तुम से	हम नहीं चाहते	रज़ाए इलाही के लिए
<b>مِن رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَمْطَرِيرًا ﴿١٠﴾ فَوَقَّهْمُ اللَّهُ شَرَّ ذَلِكَ الْيَوْمِ</b>						
उस दिन	बुराई	पस उन्हें बचा लिया अल्लाह ने	10	निहायत सख़्त	मुँह बिगाड़ने वाला	दिन अपने रब से
<b>وَلَقَّهْمُ نَصْرَةَ وَرُؤْرًا ﴿١١﴾ وَجَزَاهُمْ بِمَا صَبَرُوا جَنَّةً وَحَرِيرًا ﴿١٢﴾</b>						
12	और रेशमी लिबास	जन्नत	उन के सबर पर	और उन्हें बदला दिया	11 और खुश दिली	ताज़गी और उन्हें अज़ता की
<b>مُتَّكِبِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرْبَابِكِ لَا يَرُونَ فِيهَا شَمْسًا وَلَا زَمْهَرِيرًا ﴿١٣﴾</b>						
13	और न सर्दी	धूप	उस में	वह न देखेंगे	तख़्तों पर	उस में तकिया लगाए होंगे
<b>وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلُّهَا وَذُلَّتْ قُطُوفُهَا تَذَلِيلًا ﴿١٤﴾</b>						
14	झुका कर	उस के गुच्छे	और नज़दीक कर दिए होंगे	उन के साए	उन पर	और नज़दीक हो रहे होंगे

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है यकीनन इन्सान पर ज़माने में एक ऐसा वक़्त गुज़रा है कि वह कुछ (भी) काबिले ज़िक्र न था। (1) वेशक हम ने इन्सान को पैदा किया मख़लूत नुतफ़े से (कि) हम उसे आज़माएं तो हम ने उसे सुनता देखता बनाया। (2) वेशक हम ने उसे राह दिखाई (अब वह) खाह शुक्र करने वाला बने खाह नाशुक्रा। (3) वेशक हम ने काफ़िरों (नाशुक्रों) के लिए ज़न्जीरें और तौक और दहकती आग तैयार कर रखी है। (4) वेशक पिएंगे नेक बन्दे प्याले से (वह मशरूब) जिस में काफूर की मिलावट होगी। (5) एक चश्मा जिस से अल्लाह के बन्दे पीते हैं, उस से नालियां जारी करते हैं। (6) वह पूरी करते हैं अपनी नज़रें और वह उस दिन से डरते हैं जिस की बुराई फैली (आम) होगी। (7) और वह उस की मुहब्बत पर खाना खिलाते हैं मोहताज को, और यतीम और कैदी को। (8) (और कहते हैं) इस के सिवा नहीं कि हम तुम्हें रज़ाए इलाही के लिए खिलाते हैं। हम तुम से न जज़ा चाहते हैं और न शुक्रिया। (9) वेशक हम डरते हैं अपने रब की तरफ़ से एक दिन जो मुँह बिगाड़ने वाला निहायत सख़्त है। (10) पस अल्लाह ने उन्हें उस दिन की बुराई से बचा लिया और उन्हें ताज़गी अज़ता की और खुश दिली। (11) और उन्हें बदला दिया उन के सबर पर जन्नत और रेशमी लिबास। (12) उस में तख़्तों पर तकिया लगाए हुए होंगे, वह न देखेंगे उस में धूप (की तेज़ी) न सर्दी (की शिदत)। (13) उन पर उस के साए नज़दीक हो रहे होंगे और उस के गुच्छे झुका कर नज़दीक कर दिए गए होंगे। (14)

और उन पर दौर होगा चाँदी के बरतनों का और शीशे के प्याले होंगे, (15) शीशे चाँदी के। (साकियों ने) उन का मुनासिब अन्दाज़ा किया होगा। (16) और उन्हें उस में ऐसा जाम पिलाया जाएगा जिस में अदरक की मिलावट होगी। (17) उस में एक चश्मा है जिस का नाम सल्सवील है। (18) और गर्दिश करेंगे उन पर हमेशा नौउम्र रहने वाले लड़के, जब तू उन्हें देखे तो उन्हें बिखरे हुए मोती समझे। (19) और जब तू देखेगा तो वहां (जन्नत में) बड़ी नेमत और बड़ी सल्तनत देखेगा। (20) उन के ऊपर की पोशाक सब्ज़ वारीक रेशम और अतलस की होगी और उन्हें कंगन पहनाए जाएंगे चाँदी के और उन का रब उन्हें निहायत पाक एक मशरूब पिलाएगा। (21) वेशक यह तुम्हारी जज़ा है, और तुम्हारी कोशिश मकबूल हुई। (22) वेशक हम ने आप (स) पर कुरआन थोड़ा थोड़ा करके नाज़िल किया। (23) पस आप (स) अपने रब के हुक्म के लिए सवर करें, और आप (स) कहा ना मानें उन में से किसी गुनाहगार नाशुक्रे का। (24) और आप (स) अपने रब का नाम सुबह ओ शाम याद करते रहें। (25) और रात के किसी हिस्से में आप (स) उस को सिज्दा करें और उस की पाकीज़गी बयान करें रात के बड़े हिस्से में। (26) वेशक यह मुन्किर दुनिया से मुहब्बत रखते हैं और एक भारी दिन (रोज़े कियामत को) अपने पीछे (पसे पुशत) छोड़ देते हैं। (27) हम ने उन्हें पैदा किया और हम ने उन के जोड़ मज़बूत किए, और हम जब चाहें (उन की जगह) उन जैसे और लोग बदल कर ले आएँ। (28) वेशक यह नसीहत है, पस जो चाहे अपने रब की तरफ़ राह इख्तियार कर ले। (29) और तुम नहीं चाहोगे सिवाए जो अल्लाह चाहे, वेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (30)

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِانِيَةٍ مِّنْ فِصَّةٍ وَأَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيرًا ۝١٥							
और दौर होगा	उन पर	बरतनों का	चाँदी के	और प्याले	होंगे	शीशे के	15
قَوَارِيرًا مِّنْ فِصَّةٍ قَدَرُوهَا تَقْدِيرًا ۝١٦ وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا							
शीशे	चाँदी के	उन्होंने उन का अन्दाज़ा किया होगा	16	मुनासिब अन्दाज़ा	और उन्हें पिलाया जाएगा	उस में	ऐसा जाम
كَانَ مِرَاجِهَا زَنْجَبِيلًا ۝١٧ عَيْنًا فِيهَا تُسَمَّى سَلْسَبِيلًا ۝١٨ وَيُطُوفُ							
होगी	उस की मिलावट	अदरक	17	एक चश्मा उस में	नाम होगा जिस का	सल्सवील	18
عَلَيْهِمْ وَلَدَانٌ مُّخَلَّدُونَ ۝١٩ إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا							
उन पर	लड़के	हमेशा (नौ उम्र) रहने वाले	जब तू उन्हें देखे	तू उन्हें समझे	मोती		
مَّنشُورًا ۝٢٠ وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ رَأَيْتَ نَعِيمًا وَمُلْكًا كَبِيرًا ۝٢٠							
बिखरे हुए	19	और जब तू देखेगा	वहां	तू देखेगा	बड़ी नेमत	और बड़ी सल्तनत	20
عَلَيْهِمْ ثِيَابٌ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَإِسْتَبْرَقٌ وَحُلُّوًا أَسَاوِرَ							
उन के ऊपर की पोशाक	वारीक रेशम	सब्ज़	और दबीज़ रेशम (अतलस)	और उन्हें पहनाए जाएंगे	कंगन		
مِّنْ فِصَّةٍ وَسَقَهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا ۝٢١ إِنَّ هَذَا كَانَ							
चाँदी के	पिलाएगा	और उन्हें	उन का रब	एक शराब (मशरूब)	नियाहत पाक	21	वेशक यह है
لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُورًا ۝٢٢ إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ							
तुम्हारे लिए	जज़ा	और हुई	तुम्हारी कोशिश	मशकूर (मकबूल)	वेशक हम	हम ने नाज़िल किया	आप (स) पर
الْقُرْآنَ تَنْزِيلًا ۝٢٣ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ آثِمًا							
कुरआन	वतदरीज	23	पस सवर करें	अपने रब के हुक्म के लिए	और आप (स) कहा ना मानें	उन में से	किसी गुनाहगार
أَوْ كَفُورًا ۝٢٤ وَادْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۝٢٥ وَمِنَ اللَّيْلِ							
या नाशुक्रे का	24	और आप (स) ज़िक्र करें	अपने रब का नाम	सुबह	और शाम	25	और रात के (किसी हिस्से में)
فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيلًا ۝٢٦ إِنَّ هَؤُلَاءِ يُحِبُّونَ							
पस आप (स) सिज्दा करें	उस को	26	और उस की पाकीज़गी बयान करें रात का बड़ा हिस्सा	वेशक यह (मुन्किर) लोग	मुहब्बत रखते हैं		
الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُونَ وَرَاءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ۝٢٧ نَحْنُ خَلَقْنَاهُمْ							
दुनिया	और छोड़ देते हैं	अपने पीछे	एक दिन	भारी	27	हम ने उन्हें पैदा किया	
وَشَدَدْنَا أَسْرَهُمْ ۝٢٨ وَإِذَا شِئْنَا بَدَلْنَا أَمْثَلَهُمْ تَبْدِيلًا ۝٢٨							
और हम ने मज़बूत किए	उन के जोड़	और जब हम चाहें	हम बदल दें	उन जैसे लोग	बदल कर	28	
إِنَّ هَذِهِ تَذْكِرَةٌ ۝٢٩ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذْ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۝٢٩							
वेशक यह	नसीहत	पस जो चाहे	इख्तियार करे	अपने रब की तरफ़	राह	29	
وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۝٣٠ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝٣٠							
और तुम नहीं चाहोगे	जो सिवाए	अल्लाह चाहे	वेशक अल्लाह	है	जानने वाला	हिक्मत वाला	30

قرآن حفص بعين الألف في الوصل فيهما - ووقف على الأول بالألف وعلى الثاني بعين الألف ١٢

١٢

۲  
۲۰

يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ وَالظَّالِمِينَ أَعَدَّ لَهُمْ				
उस ने तैयार किया है उन के लिए	और (रहे) ज़ालिम	अपनी रहमत में	वह जिसे चाहे	वह दाखिल करता है
عَذَابًا أَلِيمًا (۳۱)				
		31	दर्दनाक अज़ाब	
آيَاتُهَا ۵۰ ﴿ ۷۷ ﴾ سُورَةُ الْمُرْسَلَاتِ ﴿ ۲ ﴾ زُكُوعَاتُهَا ۲				
रुकुआत 2		(77) सूरतुल मुर्सलात भेजी जाने वालियों		आयात 50
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ				
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है				
وَالْمُرْسَلَاتِ عُرْفًا (۱) فَالْعَصْفِ عَصْفًا (۲) وَالنُّشْرِتِ				
बादल उठा कर लाने वाली हवाओं की कसम	2	शिद्दत से	फिर तुन्द ओ तेज़ चलने वाली हवाओं की कसम	1
		दिल खुश करने वाली	हवाओं की कसम	
نَشْرًا (۳) فَالْفَرْقِ فَرْقًا (۴) فَالْمُلْقِيَةِ ذِكْرًا (۵) عُدْرًا				
हुज्जत तमाम करने को	5	ज़िक्र (दिलों में अल्लाह की याद)	फिर डालने वाली हवाओं की कसम	4
		वांट कर	फिर फाड़ने वाली हवाओं की कसम	3
		फैलाने वाली		
أَوْ نُذْرًا (۶) إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَوَاقِعٌ (۷) فَإِذَا التُّجُومُ طُمِسَتْ (۸)				
8	सितारे मिटाए जाएं (बेनूर हो जाएं)	पस जब	7	ज़रूर होने वाला
		तुम्हें वादा दिया जाता है	6	वेशक जो
		या डराने को		
وَإِذَا السَّمَاءُ فُرِجَتْ (۹) وَإِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ (۱۰) وَإِذَا الرُّسُلُ				
और जब रसूल (जमा)	10	उड़ते फिरें	और जब पहाड़	9
		फट जाए	और जब आस्मान	
أَقْتَتَتْ (۱۱) لِأَيِّ يَوْمٍ أُجِّلَتْ (۱۲) لِيَوْمِ الْفَصْلِ (۱۳) وَمَا أَدْرَاكَ				
और तुम क्या समझे?	13	फैसले का दिन	12	मुलतवी रखा गया है
		किस दिन के लिए	11	वक़्त पर जमा किए जाएंगे
مَا يَوْمِ الْفَصْلِ (۱۴) وَيَلَّ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ (۱۵) أَلَمْ نُهْلِكْ				
क्या हम ने हलाक नहीं किया?	15	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	14
		क्या है फैसले का दिन?		
الْأَوَّلِينَ (۱۶) ثُمَّ نُسِبَهُمُ الْآخِرِينَ (۱۷) كَذَلِكَ				
इसी तरह	17	पिछलों को	हम उन के पीछे चलाते हैं	16
		फिर	पहले लोगों को?	
نَفَعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ (۱۸) وَيَلَّ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ (۱۹)				
19	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	खराबी	18
		मुज्रिमों के साथ	हम करते हैं	
أَلَمْ نَخْلُقْكُمْ مِنْ مَّاءٍ مَّهِينٍ (۲۰) فَجَعَلْنَاهُ فِي قَرَارٍ مَكِينٍ (۲۱)				
21	एक महफूज़ जगह	में	फिर हम ने उसे रखा	20
		हकीर	पानी से	क्या हम ने नहीं पैदा किया तुम्हें
إِلَىٰ قَدَرٍ مَّعْلُومٍ (۲۲) فَقَدَرْنَا فَنِعْمَ الْقَدِرُونَ (۲۳) وَيَلَّ				
खराबी	23	अन्दाज़ा करने वाले	तो कैसा अच्छा	22
		फिर हम ने अन्दाज़ा किया	उस क़दर जो मालूम है	तक
يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ (۲۴) أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا (۲۵)				
25	समेटने वाली	ज़मीन	क्या हम ने नहीं बनाया	24
		झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	

वह जिसे चाहे अपनी रहमत में दाखिल करता है, और रहे ज़ालिम तो उन के लिए उस ने दर्दनाक अज़ाब तैयार किया है। (31) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है दिल खुश करने वाली हवाओं की कसम, (1) फिर शिद्दत से तुन्द ओ तेज़ चलने वाली हवाओं की कसम, (2) बादलों को उठा कर लाने वाली फैलाने वाली हवाओं की कसम, (3) फिर वांट कर फाड़ने वाली हवाओं की कसम, (4) फिर (दिलों में अल्लाह की) याद डालने वाली हवाओं की कसम। (5) हुज्जत तमाम करने को या डराने को। (6) वेशक जो तुम्हें वादा दिया जाता है वह ज़रूर वाक़े होने वाला है। (7) फिर जब सितारे बेनूर हो जाएं। (8) और जब आस्मान फट जाए। (9) और जब पहाड़ उड़ते फिरें (पारा पारा हो कर)। (10) और जब सारे रसूल वक़्ते (मुअय्यन) पर जमा किए जाएं। (11) (उन का मामला) किस दिन के लिए मुलतवी रखा गया है? (12) फैसले के दिन के लिए। (13) और तुम क्या समझे कि फैसले का दिन क्या है? (14) उस दिन खराबी है झुटलाने वालों के लिए। (15) क्या हम ने हलाक नहीं किया पहले लोगों को? (16) फिर पिछलों को उन के पीछे चलाते हैं। (17) इसी तरह हम मुज्रिमों के साथ करते हैं। (18) उस दिन खराबी है झुटलाने वालों के लिए। (19) क्या हम ने तुम्हें हकीर पानी से नहीं पैदा किया? (20) फिर हम ने उसे एक महफूज़ जगह में रखा, (21) एक वक़्ते मुअय्यन तक। (22) फिर हम ने अन्दाज़ा किया तो (हम) कैसा अच्छा अन्दाज़ा करने वाले हैं। (23) उस दिन खराबी है झुटलाने वालों के लिए। (24) क्या हम ने ज़मीन को समेटने वाली नहीं बनाया? (25)

ज़िन्दों को और मुर्दों को। (26)

और हम ने उस में ऊँचे ऊँचे पहाड़ रखे और हम ने तुम्हें मीठा पानी पिलाया। (27)

खराबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। (28)

(हुकूम होगा) तुम चलो उस की तरफ जिस को तुम झुटलाते थे। (29)

तुम चलो तीन शाखों वाले साए की तरफ। (30)

न गहरा साया और न वह तपिश से बचाए। (31)

वेशक वह महल जैसे (ऊँचे) शोले फेंकती है, (32)

गोया कि वह ऊँट है ज़र्द। (33)

खराबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। (34)

उस दिन न वह बोल सकेंगे, (35)

और न उन्हें इजाज़त दी जाएगी कि वह उज़र खाही करें। (36)

खराबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। (37)

यह फ़ैसले का दिन है, हम ने तुम्हें जमा किया और पहले लोगों को। (38)

फिर अगर तुम्हारे पास कोई दाओ है तो मुझ पर दाओ करो। (39)

खराबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। (40)

वेशक परहेज़गार सायों और चश्मों में होंगे। (41)

और मेवों में जो वह चाहेंगे। (42)

(हम फ़रमाएंगे) तुम खाओ और पियो मज़े से (बाफ़रागत) उस के बदले जो तुम करते थे। (43)

वेशक हम इसी तरह नेकोकारों को जज़ा देते हैं। (44)

खराबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। (45)

तुम खाओ और फ़ाइदा उठा लो थोड़ा (किसी क़द्र) वेशक तुम मुज़्रिम हो। (46)

खराबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। (47)

और जब उन से कहा जाता है कि तुम रुकूअ करो तो वह रुकूअ नहीं करते। (48)

खराबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। (49)

तो इस के बाद वह कौन सी बात पर ईमान लाएंगे? (50)

أَحْيَاءَ وَأَمْوَاتًا ۖ وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ شِمَخَاتٍ ۚ

ऊँचे ऊँचे	पहाड़ (जमा)	उस में	और हम ने रखे	26	और मुर्दों को	ज़िन्दों को
-----------	-------------	--------	--------------	----	---------------	-------------

وَأَسْقَيْنَكُم مَّاءً فُرَاتًا ۚ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ

28	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	खराबी	27	पानी मीठा	और हम ने पिलाया तुम्हें
----	----------------------	--------	-------	----	-----------	-------------------------

إِنظَلِقُوا إِلَى مَا كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ۚ إِنظَلِقُوا إِلَى ظِلٍّ

साए की तरफ़	तुम चलो	29	तुम झुटलाते	जिस को तुम थे	तरफ़	तो तुम चलो
-------------	---------	----	-------------	---------------	------	------------

ذِي ثَلَاثِ شَعَبٍ ۚ لَا ظِلِيلٍ وَلَا يُغْنِي مِنَ اللَّهَبِ ۚ

31	शोला (तपिश)	से	और न वह बचाए	न गहरा साया	30	शाखें	तीन	वाला
----	-------------	----	--------------	-------------	----	-------	-----	------

إِنَّهَا تَرْمِي بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ۚ كَأَنَّهُ جِدْتِ صَفْرًا ۚ وَيْلٌ

वेशक वह	फेंकती	शोले	महल जैसे	32	गोया कि	ऊँट (जमा)	ज़र्द	33	खराबी
---------	--------	------	----------	----	---------	-----------	-------	----	-------

يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ هَذَا يَوْمٌ لَا يَنْطِقُونَ ۚ وَلَا يُؤَدُّنَ

और न इजाज़त दी जाएगी	35	वह न बोल सकेंगे	उस दिन	34	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन
----------------------	----	-----------------	--------	----	----------------------	--------

لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ۚ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ

37	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	खराबी	36	कि वह उज़र खाही करें	उन्हें
----	----------------------	--------	-------	----	----------------------	--------

هَذَا يَوْمُ الْفَصْلِ جَمَعْنَاكُمْ وَالْأَوَّلِينَ ۚ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ

है तुम्हारे पास	फिर अगर	38	और पहले लोगों को	हम ने जमा किया तुम्हें	फ़ैसले का दिन	यह
-----------------	---------	----	------------------	------------------------	---------------	----

كَيْدٌ فَكِيدُونَ ۚ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ

40	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	खराबी	39	तो तुम मुझ पर दाओ कर लो	कोई दाओ
----	----------------------	--------	-------	----	-------------------------	---------

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلِّ وَعُيُونَ ۚ وَفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُونَ ۚ

42	वह चाहेंगे	जो	और मेवे	41	और चश्मों	सायों	में	वेशक परहेज़गार (जमा)
----	------------	----	---------	----	-----------	-------	-----	----------------------

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ إِنَّا كَذَلِكَ

वेशक हम इसी तरह	43	करते थे	उस के बदले जो तुम	मज़े से	औत तुम पियो	तुम खाओ
-----------------	----	---------	-------------------	---------	-------------	---------

نَجَزِي الْمُحْسِنِينَ ۚ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ كُلُوا

तुम खाओ	45	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	खराबी	44	नेकोकारों को	जज़ा देते हैं
---------	----	----------------------	--------	-------	----	--------------	---------------

وَتَمَتَّعُوا قَلِيلًا ۚ إِنَّكُمْ مُّجْرِمُونَ ۚ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ

उस दिन	खराबी	46	मुज़्रिम (जमा)	वेशक तुम	थोड़ा	और तुम फ़ाइदा उठाओ
--------	-------	----	----------------	----------	-------	--------------------

لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ ارْكَعُوا لَا يَرْكَعُونَ ۚ وَيْلٌ

खराबी	48	वह रुकूअ नहीं करते	तुम रुकूअ करो	उन से	कहा जाए	और जब	47	झुटलाने वालों के लिए
-------	----	--------------------	---------------	-------	---------	-------	----	----------------------

يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۚ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ۚ

50	वह ईमान लाएंगे	इस के बाद	बात	तो कौन सी	49	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन
----	----------------	-----------	-----	-----------	----	----------------------	--------

آيَاتُهَا ٤٠ ﴿٧٨﴾ سُورَةُ النَّبَاِ ﴿٢﴾ رُكُوعَاتُهَا ٢									
रुकुआत 2		(78) सूरतुन नवा				आयात 40			
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
عَمَّ يَتَسَاءَلُونَ ﴿١﴾ عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيمِ ﴿٢﴾ الَّذِي هُمْ									
वह	जो-जिस	2	वड़ी ख़बर (क़ियामत)	से (बावत)	1	आपस में पूछते हैं	क्या-किस		
فِيهِ مُخْتَلِفُونَ ﴿٣﴾ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ﴿٤﴾ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ﴿٥﴾ أَلَمْ									
क्या नहीं	5	अनकरीब जान लेंगे	फिर हरगिज़ नहीं	4	अनकरीब जान लेंगे	हरगिज़ नहीं	3	इखतिलाफ़ करते हैं	उस में
نَجْعَلِ الْأَرْضَ مِهْدًا ﴿٦﴾ وَالْجِبَالَ أَوْتَادًا ﴿٧﴾ وَخَلَقْنَاكُمْ									
और हम ने तुम्हें पैदा किया	7	कीलें	और पहाड़	6	बिछोना	ज़मीन	हम ने बनाया		
أَزْوَاجًا ﴿٨﴾ وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ﴿٩﴾ وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ لِبَاسًا ﴿١٠﴾									
10	ओढ़ना (पर्दा)	रात	और हम ने बनाया	9	आराम (राहत)	तुम्हारी नींद	और हम ने बनाया	8	जोड़े जोड़े
وَجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ﴿١١﴾ وَبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ﴿١٢﴾									
12	मज़बूत (आस्मान)	सात	तुम्हारे ऊपर	और हम ने बनाए	11	कमाने का वक़्त	दिन	और हम ने बनाया	
وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَهَّاجًا ﴿١٣﴾ وَأَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرَاتِ									
पानी भरी बदलियाँ	से	और हम ने उतारी	13	चमकता हुआ	चिराग़	और हम ने बनाया			
مَاءً ثَجَّاجًا ﴿١٤﴾ لِنُخْرِجَ بِهِ حَبًّا وَنَبَاتًا ﴿١٥﴾ وَجَعَتِ الْآفَافُ ﴿١٦﴾ إِنْ									
वेशक	16	और बाग़ पत्तों में लिपटे हुए	15	और सब्ज़ी	दाना (अनाज)	उस से	ताकि हम निकाले	14	बारिश मूसलाधार
يَوْمَ الْفُصْلِ كَانَ مِيقَاتًا ﴿١٧﴾ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ									
सूर में	फूँका जाएगा	दिन	17	मुक़र्रर वक़्त	है	फैलसे का दिन			
فَتَأْتُونَ أَفْوَاجًا ﴿١٨﴾ وَفُتِحَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا ﴿١٩﴾									
19	दरवाज़े	तो हो जाएंगे	आस्मान	और खोला जाएगा	18	गिरोह दर गिरोह	फिर तुम चले आओगे		
وَسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ﴿٢٠﴾ إِنْ جَهَنَّمَ كَانَتْ									
है	दोज़ख़	वेशक	20	सराब	तो हो जाएंगे	पहाड़	और चलाए जाएंगे		
مِرْصَادًا ﴿٢١﴾ لِّلطَّغِينِ مَا بَا ﴿٢٢﴾ لَّبِثِينَ فِيهَا أَحْقَابًا ﴿٢٣﴾									
23	मुद्दतों	उस में	वह रहेंगे	22	ठिकाना	सरकशों के लिए	21	घात	
لَا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَلَا شَرَابًا ﴿٢٤﴾ إِلَّا حَمِيمًا وَغَسَّاقًا ﴿٢٥﴾									
25	और बहती पीप	गर्म पानी	मगर	24	पीने की चीज़	और न	ठन्डक	उस में	न चखेंगे
جَزَاءً وَفَاقًا ﴿٢٦﴾ إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ حِسَابًا ﴿٢٧﴾									
27	हिसाब	तबक्को नहीं रखते थे	वेशक वह	26	पूरा	बदला			

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है लोग आपस में किस के बारे में पूछते हैं? (1) बड़ी ख़बर (क़ियामत) के बारे में, (2) जिस में वह इखतिलाफ़ कर रहे हैं। (3) हरगिज़ नहीं, अनकरीब वह जान लेंगे, (4) फिर हरगिज़ नहीं, अनकरीब वह जान लेंगे। (5) क्या हम ने ज़मीन को नहीं बनाया बिछोना (फर्श)? (6) और पहाड़ों को कीलें, (7) और हम ने तुम्हें जोड़े जोड़े पैदा किया, (8) और तुम्हारे लिए नींद को बनाया आराम (राहत), (9) और हम ने रात को ओढ़ना (पर्दा) बनाया, (10) और हम ने दिन को कमाने का वक़्त बनाया। (11) और हम ने बनाए तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत (आस्मान), (12) और हम ने चमकता हुआ चिराग़ (आफ़ताब) बनाया, (13) और हम ने पानी भरी बदलियों से उतारी मूसलाधार बारिश, (14) ताकि हम उस से अनाज और सब्ज़ी निकालें, (15) और पत्तों में लिपटे हुए (घने) बाग़। (16) वेशक फ़ैसले का दिन एक मुक़र्रर वक़्त है, (17) जिस दिन सूर फूँका जाएगा, फिर तुम गिरोह दर गिरोह चले आओगे, (18) और आस्मान खोला जाएगा तो (उस में) दरवाज़े हो जाएंगे, (19) और पहाड़ चलाए जाएंगे तो सराब हो जाएंगे। (20) वेशक दोज़ख़ घात है। (21) सरकशों का ठिकाना, (22) और उस में रहेंगे मुद्दतों, (23) न उस में ठन्डक (का मज़ा) चखेंगे न पीने की चीज़, (24) मगर गर्म पानी और बहती पीप, (25) (यह) पूरा पूरा बदला होगा। (26) वेशक वह हिसाब की तबक्को न रखते थे, (27)

और हमारी आयतों को झूटलाते थे झूट जान कर। (28)

और हम ने हर चीज़ गिन कर लिख रखी है, (29)

अब मज़ा चखो, पस हम तुम पर हरगिज़ न बढ़ाते जाएंगे मगर अज़ाब। (30)

वेशक परहेज़गारों के लिए कामयाबी है, (31)

बागात और अंगूर, (32)

और नौजवान औरतें हम

उम्र, (33)

और छलकते हुए प्याले। (34)

वह उस में न सुनेंगे कोई बेहूदा

बात और न झूट (खुराफ़ात)। (35)

यह बदला है तुम्हारे रब का

इन्ज़ाम हिसाब से (काफ़ी), (36)

रब आस्मानों का और ज़मीन का

और जो कुछ उन के दरमियान है,

बहुत मेहरबान, वह उस से बात

करने की कुदरत नहीं रखते। (37)

जिस दिन रूह (जिब्रील (अ) और

फ़रिश्ते सफ़ बान्धे खड़े होंगे, न

बोल सकेंगे मगर जिस को रहमान

ने इजाज़त दी और बोलेगा ठीक

बात। (38)

यह दिन बरहक़ है, पस जो कोई

चाहे अपने रब के पास ठिकाना

बनाए। (39)

वेशक हम ने तुम्हें करीब आने वाले

अज़ाब से डरा दिया है, जिस दिन

आदमी देख लेगा जो उस के हाथों

ने आगे भेजा, और काफ़िर कहेगा

कि काश मैं मिट्टी होता। (40)

अल्लाह के नाम से जो बहुत

मेहरबान, रहम करने वाला है

कसम है डूब कर खींचने वाले

(फ़रिश्तों) की, (1)

और खोल कर छुड़ाने वालों

की, (2)

और तेज़ी से तैरने वालों की, (3)

फिर दौड़ कर आगे बढ़ने वालों

की, (4)

फिर हुक्म के मुताबिक़ तदवीर

करने वालों की। (5)

जिस दिन कांपने वाली कांपे, (6)

और उस के पीछे आए पीछे आने

वाली। (7)

कितने दिल उस दिन धड़कते

होंगे, (8)

وَكَاذِبُوا بِآيَاتِنَا كِذَابًا (28) وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ كِتَابًا (29)							
29	लिख कर	हम ने गिन रखी है	और हर चीज़	28	झूट जान कर	हमारी आयतें	और झूटलाते थे
فَذُوقُوا فَلَنْ نَزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا (30) إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا (31)							
31	कामयाबी	परहेज़गारों के लिए	वेशक	30	अज़ाब	मगर बढ़ाते जाएंगे	हरगिज़ नहीं अब मज़ा चखो
حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا (32) وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا (33) وَكَأْسًا دِهَاقًا (34)							
34	छलकते हुए	और प्याले	33	हम उम्र	और नौजवान औरतें	32	और अंगूर बागात
لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذَابًا (35) جَزَاءً مِمَّنْ رَبِّكَ عَطَاءً							
इनज़ाम	तुम्हारा रब	से	यह बदला	35	और न झूट (खुराफ़ात)	बेहूदा	उस में न सुनेंगे
حِسَابًا (36) رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمَنُ							
बहुत मेहरबान	और जो उन के दरमियान	और ज़मीन	आस्मानों	36	रब	हिसाब से (काफ़ी)	
لَا يَمْلِكُونَ مِنْهُ خِطَابًا (37) يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْمَلَائِكَةُ							
और फ़रिश्ते	खड़े होंगे रूह	दिन	37	बात करना	उस से	वह कुदरत नहीं रखते	
صَفًّا لَا يَتَكَلَّمُونَ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَنُ وَقَالَ صَوَابًا (38)							
38	ठीक बात	और बोलेगा	रहमान	उस को	इजाज़त दी जो - जिस	मगर न बोल सकेंगे	सफ़ बान्धे
ذَلِكَ الْيَوْمِ الْحَقِّ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ مَا بَا (39)							
39	ठिकाना	अपने रब के पास	बनाए	चाहे	पस जो	बरहक़	दिन यह
إِنَّا أَنْذَرْنَاكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا يَوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا							
जो	आदमी	देख लेगा	जिस दिन	करीब के	अज़ाब	वेशक हम ने डरा दिया तुम्हें	
قَدَمَتْ يَدُوهُ وَيَقُولُ الْكَافِرُ يَلَيْتَنِي كُنْتُ تُرَابًا (40)							
40	मिट्टी	होता	काश मैं	काफ़िर	और कहेगा	आगे भेजा उस के हाथ	
آيَاتُهَا ٤٦ ❁ سُورَةُ النَّازِعَاتِ ❁ رُكُوعَاتُهَا ٢ (79) सूरतुन नाज़िआत खींचने वाले आयत 46 रकुआत 2							
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है							
وَالنَّازِعَاتِ غَرْقًا (1) وَالتَّشْطِطِ نَشْطًا (2) وَالسَّيْحَاتِ سَبْحًا (3)							
3	तेज़ी से	और तैरने वाले	2	खोल कर	और छुड़ाने वाले	1	डूब कर कसम है खींचने वाले
فَالسَّيْفِ سَبْقًا (4) فَالْمُدْبِرَاتِ أَمْرًا (5) يَوْمَ تَرْجُفُ							
कांपे	दिन	5	हुक्म के मुताबिक़	फिर तदवीर करने वाले	4	दौड़ कर	फिर आगे बढ़ने वाले
الرَّاجِفَةُ (6) تَتَّبِعُهَا الرَّادِفَةُ (7) قُلُوبٌ يَوْمَئِذٍ وَاجِفَةٌ (8)							
8	धड़कने वाले	उस दिन	कितने दिल	7	पीछे आने वाली	उस के पीछे आए	6 कांपने वाली

وقف الاعم	أَبْصَارُهَا خَاشِعَةً ﴿٩﴾ يَقُولُونَ ءَأِنَّا لَمَرْدُودُونَ فِي الْحَافِرَةِ ﴿١٠﴾										उन की निगाहें झुकी हुई। (9) वह कहते हैं: क्या हम पहली हालत में लौटाए जाएंगे? (10)
	10	पहली हालत	में	लौटाए जाएंगे	क्या हम	वह कहते हैं	9	झुकी हुई	उन की निगाहें		
وقف الاعم	ءِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ﴿١١﴾ قَالُوا تِلْكَ إِذَا كَرَّهْتَ خَاسِرَةٌ ﴿١٢﴾										क्या जब हम खोखली हड्डियां हो चुके होंगे? (11) वह बोले कि यह फिर खसारे वाली वापसी है। (12)
	12	खसारे वाली	वापसी	फिर	यह	वह बोले	11	खोखली	हड्डियां	हम होंगे	क्या जब
وقف الاعم	فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ ﴿١٣﴾ فَإِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ﴿١٤﴾ هَلْ أَتَاكَ										फिर वह तो सिर्फ एक डांट है। (13) फिर वह उस वक़्त मैदान में (मौजूद होंगे)। (14)
		पहुँची तेरे पास	क्या	14	मैदान में	वह	फिर उस वक़्त	13	एक	डांट	वह
وقف الاعم	حَدِيثٌ مُوسَى ﴿١٥﴾ إِذْ نَادَاهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٦﴾										क्या तुम्हारे पास मूसा (अ) की बात पहुँची? (15) जब उस को उस के रब ने पुकारा तुवा के मुक़द्दस वादी में। (16)
	16	तुवा	मुक़द्दस	वादी	उस का रब	जब पुकारा उसे	15	मूसा (अ)	वात		
وقف الاعم	إِذْهَبْ إِلَى فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَى ﴿١٧﴾ فَقُلْ هَلْ لَكَ إِلَىٰ أَنْ										क्या तुम्हारे पास मूसा (अ) की बात पहुँची? (15) जब उस को उस के रब ने पुकारा तुवा के मुक़द्दस वादी में। (16) के फ़िरऔन के पास जाओ, बेशक उस ने सरकशी की है, (17) पस कहो: क्या तुझ को (खाहिश है) कि तू संवर जाए, (18) और मैं तुझे तेरे रब की तरफ़ राह दिखाऊँ कि तू डरे। (19)
		कि	तरफ़	तुझ को	क्या	पस कहो	17	बेशक उस ने सरकशी की	फिरऔन	तरफ़, पास	जाओ
وقف الاعم	تَزَكَّى ﴿١٨﴾ وَأَهْدِيكَ إِلَىٰ رَبِّكَ فَتَخْشَىٰ ﴿١٩﴾ فَارَاهُ الْآيَةَ الْكُبْرَىٰ ﴿٢٠﴾										और मैं तुझे तेरे रब की तरफ़ राह दिखाऊँ कि तू डरे। (19) (मूसा अ ने) उस को दिखाई बड़ी निशानी। (20)
	20	बड़ी निशानी	उस को दिखाई	19	कि तू डरे	तेरा रब	तरफ़	और तुझे राह दिखाऊँ	18	तू संवर जाए	
وقف الاعم	فَكَذَّبَ وَعَصَىٰ ﴿٢١﴾ ثُمَّ أَذْبَرَ يَسْعَىٰ ﴿٢٢﴾ فَحَشَرَ										उस ने झुटलाया और नाफ़रमानी की, (21) फिर पीठ फेर कर (हक के खिलाफ़) जी तोड़ कोशिश किया। (22)
		फिर जमा किया	22	जी तोड़ कोशिश किया	फिर पीठ फेर लिया	21	और नाफ़रमानी की	उस ने झुटलाया			
وقف الاعم	فَنَادَىٰ ﴿٢٣﴾ فَقَالَ أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلَىٰ ﴿٢٤﴾ فَأَخَذَهُ اللَّهُ نَكَالَ										फिर पुकारा फिर कहा कि मैं तुम्हारा सब से बड़ा रब हूँ। (24) तो अल्लाह ने उस को दुनिया और आख़िरत की सज़ा में पकड़ा। (25)
		सज़ा	तो उस को पकड़ा अल्लाह ने	24	तुम्हारा रब सब से बड़ा	मैं	फिर उस ने कहा	23	फिर पुकारा		
وقف الاعم	الْآخِرَةِ وَالْأُولَىٰ ﴿٢٥﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَن يَخْشَىٰ ﴿٢٦﴾ ءَأَنْتُمْ										बेशक इस में उस के लिए इव्रत है जो डरे। (26) क्या तुम्हारा बनाना ज़ियादा मुशक़िल है या आस्मान का, उस ने उस को बनाया। (27)
		क्या तुम	26	डरे	उस के लिए जो	इव्रत	इस	में	बेशक	25	और दुनिया
وقف الاعم	أَشَدُّ خَلْقًا أَمِ السَّمَاءِ ۗ بَنَاهَا ﴿٢٧﴾ رَفَعَ سَمَكَهَا فَسَوَّيَهَا ﴿٢٨﴾										उस की छत को बुलन्द किया फिर उस को दुरुस्त किया, (28) और उस की रात को तारीक कर दिया और निकाली दिन की रोशनी, (29) और उस के बाद ज़मीन को बिछाया। (30)
	28	फिर उस को दुरुस्त किया	उस की छत	बुलन्द किया	27	उस ने बनाया	आस्मान	या	बनाना	ज़ियादा मुशक़िल	
وقف الاعم	وَأَغْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضُحَاهَا ﴿٢٩﴾ وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَٰلِكَ										उस से उस का पानी निकाला और उस का चारा। (31) और पहाड़ों को काइम किया। (32)
		उस	बाद	और ज़मीन	29	दिन की रोशनी	और निकाली	उस की रात	तारीक कर दिया		
وقف الاعم	دَحَاهَا ﴿٣٠﴾ أَخْرَجَ مِنْهَا مَآءَهَا وَمَرَغَهَا ﴿٣١﴾ وَالْجِبَالَ أَرْسَهَا ﴿٣٢﴾										तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के फाइदे के लिए। (33) फिर जब बड़ा हंगामा आया (क्रियामत), (34)
	32	काइम किया उस को	और पहाड़	31	और उस का चारा	उस का पानी	उस से	निकाला	30	उस को बिछाया	
وقف الاعم	مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ﴿٣٣﴾ فَإِذَا جَاءَتِ الطَّامَةُ الْكُبْرَىٰ ﴿٣٤﴾										फिर जब बड़ा हंगामा आया (क्रियामत), (34) उस दिन इन्सान याद करेगा जो उस ने कमाया (अपने आमाल)। (35)
	34	बड़ा	हंगामा	वह आए	फिर जब	33	और तुम्हारे चौपायों के लिए	तुम्हारे लिए	फाइदा		
وقف الاعم	يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ مَا سَعَىٰ ﴿٣٥﴾ وَبُورَّتِ الْجَنَّةِيمُ										और जहन्नम हर उस के लिए जाहिर कर दी जाएगी जो देखे। (36) पस जिस ने सरकशी की। (37) और दुनिया की ज़िन्दगी को तरजीह दी। (38)
		जहन्नम	जाहिर कर दी जाएगी	35	उस ने कमाया	जो	इन्सान	याद करेगा	दिन		
وقف الاعم	لِّمَن يَّرَىٰ ﴿٣٦﴾ فَأَمَّا مَنْ طَغَىٰ ﴿٣٧﴾ وَآثَرَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ﴿٣٨﴾										
	38	दुनिया	ज़िन्दगी	तरजीह दी	37	सरकशी की	जो - जिस	पस	36	देखे	उस के लिए जो

तो यकीनन उस का ठिकाना जहन्नम है। (39)  
 और जो अपने रब (के सामने) खड़ा होने से डरा और उस ने रोका अपने दिल को खाहिश से, (40)  
 तो यकीनन उस का ठिकाना जन्नत है। (41)  
 वह आप (स) से पूछते हैं कियामत के बावत कि कब (होगा) उस का कियामत? (42)  
 तुम्हें क्या काम उस के जिक्र से? (43)  
 तुम्हारे रब की तरफ है उस की इन्तिहा। (44)  
 आप (स) सिर्फ डराने वाले हैं उस को जो उस से डरे। (45)  
 गोया वह जिस दिन उस को देखेंगे (ऐसा लगेगा कि) वह नहीं ठहरे मगर एक शाम या उस की एक सुबह। (46)  
 अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है तेवरी चढ़ाई और मुँह मोड़ लिया, (1)  
 कि उस के पास एक अंधा आया। (2)  
 और आप (स) को क्या खबर कि शायद वह संवर जाता, (3)  
 या नसीहत मान जाता कि नसीहत करना उसे नफ़ा पहुँचाता। (4)  
 और जिस ने बेपरवाई की। (5)  
 आप (स) उस के लिए फिक्र करते हैं। (6)  
 और आप (स) पर (कोई इल्ज़ाम) नहीं अगर वह न संवरे। (7)  
 और जो आप (स) के पास दौड़ता हुआ आया, (8)  
 और वह डरता है, (9)  
 तो आप (स) उस से तगाफूल करते हैं। (10)  
 हरगिज़ नहीं, यह तो (किताबे) नसीहत है। (11)  
 सो जो चाहे इस से नसीहत कुबूल करे। (12)  
 वाइज़ज़त औराक में, (13)  
 बुलन्द मरतबा, इन्तिहाई पाकीज़ा, (14)  
 लिखने वाले हाथों में, (15)  
 बुजुर्ग नेकोकार। (16)  
 इन्सान मारा जाए कि कैसा नाशुक्रा है। (17)  
 उस (अल्लाह) ने उसे किस चीज़ से पैदा किया? (18)  
 एक नुत्फ़ा से उस को पैदा किया, फिर उस की तक्दीर मुकर्रर की, (19)  
 फिर उस की राह आसान कर दी, (20)

فَإِنَّ الْجَحِيمَ هِيَ الْمَأْوَىٰ (٣٩) وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ									
अपने रब	खड़ा होना	डरा	जो	और जो	39	ठिकाना	वह	जहन्नम	तो यकीनन
وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَىٰ (٤٠) فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَىٰ (٤١)									
41	ठिकाना	वह	जन्नत	यकीनन	40	खाहिश	से	जी, दिल	और रोका
يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا (٤٢) فِيمَ أَنْتَ مِنْ ذِكْرِهَا (٤٣)									
43	उस का जिक्र	से	तू	क्या	42	उस का ठहरना (कियामत)	कब	कियामत से (बावत)	वह आप (स) से पूछते हैं
إِلَىٰ رَبِّكَ مُنْتَهَاهَا (٤٤) إِنَّمَا أَنْتَ مُنذِرٌ مَنْ يَخْشَاهَا (٤٥)									
45	उस से डरे	जो	डराने वाले	आप (स)	सिर्फ	44	उस की इन्तिहा	तुम्हारा रब	तरफ
كَانَهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبُثُوا إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحَاهَا (٤٦)									
46	उस की सुबह	या	एक शाम	मगर	ठहरे वह नहीं	देखेंगे उस को	दिन	गोया वह	
آيَاتُهَا ٤٢ ﴿ (٨٠) سُورَةُ عَبَسَ ﴾ زُكُوعَهَا ١									
रुकुअ 1 (80) सूरह अवासा तेवरी चढ़ाई आयात 42									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
عَبَسَ وَتَوَلَّىٰ (١) أَنْ جَاءَهُ الْأَعْمَىٰ (٢) وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّهِ									
शायद वह	खबर आप (स) को	और क्या	2	एक अंधा	आया उस के पास	कि	1	और मुँह मोड़ लिया	तेवरी चढ़ाई
يَزْرِي (٣) أَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعُهُ الذِّكْرَىٰ (٤) أَمَا مِنْ اسْتَعْنَىٰ (٥)									
5	बेपरवाई की	जिस	जो	4	नसीहत करना	उसे नफ़ा पहुँचाता	नसीहत मानता	या	3 संवर जाता
فَأَنْتَ لَهُ تَصَدَّىٰ (٦) وَمَا عَلَيْكَ إِلَّا يَزْرِي (٧) وَأَمَّا مَنْ									
जो	और जो	7	वह संवरे	अगर न	आप (स) पर	और नहीं	6	फिक्र करते हैं	उस के लिए तो आप (स)
جَاءَكَ يَسْعَىٰ (٨) وَهُوَ يَخْشَىٰ (٩) فَأَنْتَ عَنْهُ تَلَهَّىٰ (١٠) كَلَّا									
हरगिज़ नहीं	10	तगाफूल करते हैं	उस से तो आप	9	डरता है	और वह	8	दौड़ता	आया आप के पास
إِنَّهَا تَذْكِرَةٌ (١١) فَمَنْ شَاءَ ذَكَرْهُ (١٢) فِي صُحُفٍ مُكَرَّمَةٍ (١٣)									
13	वाइज़ज़त	सहीफ़े (औराक)	में	12	इस से नसीहत कुबूल करे	चाहे	सो जो	11	नसीहत यह तो
مَرْفُوعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ (١٤) بِأَيْدِي سَفَرَةٍ (١٥) كِرَامٍ بَرَرَةٍ (١٦)									
16	नेकोकार	बुजुर्ग	15	लिखने वाले	हाथों में	14	इन्तिहाई पाकीज़ा	बुलन्द मरतबा	
قُتِلَ الْإِنْسَانُ مَا أَكْفَرَهُ (١٧) مِنْ أَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهُ (١٨)									
18	उसे पैदा किया	चीज़	किस	से	17	कैसा नाशुक्रा	इन्सान	मारा जाए	
مِنْ تُطْفِئِ خَلْقَهُ فَكَدَّرَهُ (١٩) ثُمَّ السَّبِيلَ يَسَّرَهُ (٢٠)									
20	उस को आसान कर दिया	राह	फिर	19	फिर उसकी तक्दीर मुकर्रर की	उसको पैदा किया	नुत्फ़ा	से	

٢٠

وقف الراج



ثُمَّ أَمَاتَهُ فَأَقْبَرَهُ (21) ثُمَّ إِذَا شَاءَ أَنْشَرَهُ (22) كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَا												
जो	पूरा किया	अभी तक	हरगिज़ नहीं	22	उसे निकाला	चाहा	जब	फिर	21	फिर उसे कब्र में पहुंचाया	उसे मुर्दा किया	फिर
أَمْرَهُ (23) فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ إِلَى طَعَامِهِ (24) أَنَا صَبَبْنَا الْمَاءَ												
पानी	ऊपर से डाला	कि हम	24	अपना खाना	तरफ़ (को)	इन्सान	पस चाहिए कि देखे	23	उस को हुक्म दिया			
صَبًّا (25) ثُمَّ شَقَقْنَا الْأَرْضَ شَقًّا (26) فَأَنْبَتْنَا فِيهَا حَبًّا (27)												
27	गल्ला	उस में	फिर हम ने उगाया	26	फाड़ कर	ज़मीन	फाड़ा (चीरा)	फिर	25	गिरता हुआ		
وَوَعْنَبًا وَقَضْبًا (28) وَزَيْتُونًا وَنَخْلًا (29) وَحَدَائِقَ غُلْبًا (30) وَفَاكِهَةً												
मेवा	30	घने	और बागात	29	और खजूर	और जैतून	28	और तरकारी	और अंगूर			
وَأَبًا (31) مَتَاعًا لَكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ (32) فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاحَّةُ (33)												
33	कान फोड़ने वाली	आए	फिर जब	32	और तुम्हारे चौपायों के लिए	तुम्हारे लिए	सामान (खाना)	31	और चारा			
يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ (34) وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ (35) وَصَاحِبَتِهِ												
और अपनी वीवी	35	और अपना बाप	और अपनी माँ	34	अपना भाई	से	आदमी	भागगा	जिस दिन			
وَبَنِيهِ (36) لِكُلِّ أَمْرٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ (37)												
37	उसे काफ़ी होगी	हालत (फ़िक्र)	उस दिन	उन से	आदमी	वास्ते हर एक	36	और अपने बेटे				
وَجُودُهُ يَوْمَئِذٍ مُّسْفَرَةٌ (38) ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ (39) وَوَجُودُهُ												
और बहुत चेहरे	39	खुशियां मनाते	हँसते	38	चमकते	उस दिन	बहुत चेहरे					
يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ (40) تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ (41) أُولَئِكَ هُمُ												
वह	यही लोग	41	सियाही	छाई हुई	40	गुवार	उन पर	उस दिन				
الْكَفَرَةُ الْفَجْرَةُ (42)												
		42	गुनाहगार	काफ़िर								
آيَاتُهَا ٢٩ ﴿ (٨١) سُورَةُ التَّكْوِيرِ ﴾ * رُكُوعُهَا ١												
रुकूअ 1 (81) सूरतुत तकवीर लपेटना आयात 29												
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ												
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है												
إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ (1) وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ (2) وَإِذَا الْجِبَالُ												
पहाड़	और जब	2	मांद पड़ जाएंगे	सितारे	और जब	1	लपेट दिया जाएगा	सूरज	जब			
سُيِّرَتْ (3) وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ (4) وَإِذَا الْوُحُوشُ												
वहशी जानवर	और जब	4	छुटी फिरंगी	दस माह की गाभन ऊँटनियां	और जब	3	चलाए जाएंगे					
حُشِرَتْ (5) وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ (6) وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ (7)												
7	जोड़दी जाएंगी	जानें	और जब	6	भड़काए जाएंगे	दर्या	और जब	5	इकटठे किए जाएंगे			

फिर उस को मुर्दा किया, फिर उसे कब्र में पहुंचाया। (21) फिर जब चाहा उसे दोबारा उठा खड़ा करे, (22) उस ने हरगिज़ पूरा न किया जो (अल्लाह ने) उस को हुक्म दिया। (23) पस चाहिए कि इन्सान देख ले अपने खाने को, (24) हम ने ऊपर से गिरता हुआ पानी डाला, (25) फिर ज़मीन को फाड़ कर चीरा, (26) फिर हम ने उस में उगाया गल्ला, (27) और अंगूर और तरकारी। (28) और जैतून और खजूर। (29) और बागात घने, (30) और मेवा और चारा, (31) खोराक तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के लिए। (32) फिर जब आए कान फोड़ने वाली। (33) उस दिन भागेगा आदमी अपने भाई से, (34) और अपनी माँ और अपने बाप, (35) और अपनी वीवी और अपने बेटे से। (36) उस दिन उन में से हर एक आदमी को (अपनी) फ़िक्र दूसरो से बेपरवा कर देगी। (37) उस दिन बहुत से चेहरे चमकते होंगे, (38) हँसते और खुशियां मनाते। (39) और उस दिन बहुत से चेहरों पर गुवार होगा। (40) सियाही छाई हुई (होगी)। (41) यही लोग हैं काफ़िर गुनाहगार। (42) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है जब सूरज लपेट दिया जाएगा, (1) और जब सितारे मांद पड़ जाएंगे, (2) और जब पहाड़ चलाए जाएंगे, (3) और जब दस माह की गाभन ऊँटनियां छुटी फिरंगी, (4) और जब वहशी जानवर इकटठे किए जाएंगे, (5) और जब दर्या भड़काए जाएंगे, (6) और जब जानें (जिस्मों से) जोड़दी जाएंगी, (7)

और जब ज़िन्दा गाड़ी हुई (ज़िन्दा दरगोर) लड़की से पूछा जाएगा। (8) वह किस गुनाह में मारी गई? (9) और जब आमाल नामे खोले जाएंगे, (10) और जब आस्मान की खाल खींच ली जाएगी, (11) और जब जहन्नम भड़काई जाएगी, (12) और जब जन्नत करीब लाई जाएगी, (13) हर शख्स जान लेगा जो कुछ वह लाया है। (14) सो मैं कसम खाता हूँ (सितारे की) पीछे हट जाने वाले, (15) सीधे चलने वाले, (16) छुप जाने वाले, (17) और रात की जब वह फैल जाए, (17) और सुबह की जब वह दम भरे (नमूदार हो), (18) वेशक यह (कुरआन) कलाम है इज़्ज़त वाले कासिद (फ़रिश्ते) का, (19) कुव्वत वाला, अर्श के मालिक के नज़्दीक बुलन्द मरतबा। (20) सब उस की इताअत करते हैं, फिर अमानतदार है। (21) और तुम्हारे रफ़ीक (मुहम्मद स) कुछ दीवाने नहीं, (22) और उस (मुहम्मद स) ने उस (फ़रिश्ते) को खुले (आस्मान) के किनारे पर देखा। (23) और वह (स) ग़ैब पर बुख़ल करने वाले नहीं। (24) और यह (कुरआन) शैतान मर्दूद का कहा हुआ नहीं, (25) फिर तुम किधर जा रहे हो? (26) यह नहीं है मगर (किताबे) नसीहत तमाम जहानों के लिए, (27) तुम में से जो भी चाहे कि सीधा रास्ता चले। (28) और तुम न चाहोगे मगर यह कि अल्लाह चाहे तमाम जहानों का रब। (29) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है जब आस्मान फट जाएगा, (1) और जब सितारे झड़ पड़ेंगे, (2) और जब दर्या उबल पड़ेंगे, (3) और जब क़ब्रें कुरेदी जाएंगी, (4) हर शख्स जान लेगा कि उस ने आगे क्या भेजा और पीछे (क्या) छोड़ा? (5)

وَإِذَا الْمَوْءِدَةُ سُئِلَتْ (٨) بِأَيِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ (٩) وَإِذَا الصُّحُفُ											
आमाल नामे	और जब	9	मारी गई	गुनाह	किस	8	पूछा जाएगा	ज़िन्दा गाड़ी हुई लड़की	और जब		
نُشِرَتْ (١٠) وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ (١١) وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِرَتْ (١٢)											
12	भड़काई जाएगी	जहन्नम	और जब	11	खाल खींच ली जाएगी	आस्मान	और जब	10	खोले जाएंगे		
وَإِذَا الْجَنَّةُ أُرْلِفَتْ (١٣) عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا أَحْضَرَتْ (١٤)											
14	वह लाया	जो कुछ	हर शख्स	जान लेगा	13	करीब लाई जाएगी	जन्नत	और जब			
فَلَا أُقْسِمُ بِالْخَنَسِ (١٥) الْجَوَارِ الْكُنَّسِ (١٦) وَاللَّيْلِ إِذَا عَسَسَ (١٧)											
17	फैल जाए	जब	और रात	16	छुप जाने वाले	सीधे चलने वाले	15	पीछे हट जाने वाले	सो मैं कसम खाता हूँ		
وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ (١٨) إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ (١٩) ذِي قُوَّةٍ											
कुव्वत वाला	19	इज़्ज़त वाला	कासिद	कलाम	वेशक यह	18	दम भरे	जब	और सुबह		
عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ (٢٠) مُطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ (٢١)											
21	वहाँ का अमानतदार	सब का माना हुआ	20	बुलन्द मरतबा	अर्श के मालिक	नज़्दीक					
وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُونٍ (٢٢) وَلَقَدْ رَأَاهُ بِالْأَفْقِ الْمُبِينِ (٢٣)											
23	खुला	उफुक (किनारे) पर	और उस ने उस को देखा है	22	दीवाना	तुम्हारा रफ़ीक	और नहीं				
وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ (٢٤) وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ											
शैतान	कहा हुआ	और नहीं	24	बुख़ल करने वाला	ग़ैब पर	और नहीं वह					
رَّجِيمٍ (٢٥) فَأَيْنَ تَذْهَبُونَ (٢٦) إِنَّ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَالَمِينَ (٢٧)											
27	तमाम जहानों के लिए	नसीहत	मगर	नहीं यह	26	तुम जा रहे हो	फिर किधर	25	मर्दूद		
لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَسْتَقِيمَ (٢٨) وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا											
मगर	और तुम न चाहोगे	28	सीधा चले	कि	तुम से	चाहे	लिए-जो				
أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ (٢٩)											
	29	तमाम जहान	रब	अल्लाह	चाहे	यह कि					
آيَاتِهَا ١٩ ﴿ ٨٢ ﴾ سُورَةُ الْإِنْفِطَارِ ﴿ رُكُوعَهَا ١											
رुकुअ 1 (82) सूरतुल इफ्तार फट जाना आयात 19											
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ											
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है											
إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ (١) وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَشَرَتْ (٢) وَإِذَا الْبِحَارُ											
दर्या	और जब	2	झड़ पड़ेंगे	सितारे	और जब	1	फट जाएगा	आस्मान	जब		
فُجِرَتْ (٣) وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ (٤) عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَأَخَّرَتْ (٥)											
5	और पीछे छोड़ा	उस ने आगे भेजा	क्या	हर शख्स	जान लेगा	4	कुरेदी जाएगी	क़ब्रें	और जब	3	उबल पड़ेंगे (वह निकलेंगे)

١  
٢٩  
٦

يَأْتِيهَا الْإِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ﴿٦﴾ الَّذِي خَلَقَكَ							
तुझे पैदा किया	जिस ने	6	करीम	अपने रब से	किस चीज़ ने तुझे धोका दिया	इन्सान	ऐ
فَسُؤْلِكَ فَعَدْلِكَ ﴿٧﴾ فِي أَيِّ صُورَةٍ مَا شَاءَ رَكَّبَكَ ﴿٨﴾ كَلَّا بَلْ							
हरगिज़ नहीं बल्कि	8	तुझे जोड़ दिया	चाहा	जिस सूरत में	7	फिर बराबर किया	फिर तुझे ठीक किया
تُكَذِّبُونَ بِالذِّينِ ﴿٩﴾ وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِينَ ﴿١٠﴾ كِرَامًا كَتِبِينَ ﴿١١﴾							
11	लिखने वाले	इज़्ज़त वाले	10	निगहवान	तुम पर	और बेशक	9
يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ﴿١٢﴾ إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿١٣﴾ وَإِنَّ							
और बेशक	13	जन्नत में	नेक लोग	बेशक	12	जो तुम करते हो	वह जानते हैं
الْفَجَارَ لَفِي جَحِيمٍ ﴿١٤﴾ يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ ﴿١٥﴾ وَمَا هُمْ							
और वह नहीं	15	रोज़े जज़ा ओ सज़ा (क़ियामत)	डाले जाएंगे उस में	14	जहन्नम में	गुनाहगार	
عَنْهَا بِغَائِبِينَ ﴿١٦﴾ وَمَا آذْرُكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ﴿١٧﴾ ثُمَّ مَا							
क्या	फिर	17	रोज़े जज़ा ओ सज़ा	क्या	और तुम्हें क्या ख़बर	16	गाइब होने वाले
أَذْرُكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ﴿١٨﴾ يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِنَفْسٍ							
किसी शख्स के लिए	कोई शख्स	मालिक न होगा	जिस दिन	18	रोज़े जज़ा ओ सज़ा	क्या	तुम्हें ख़बर
شَيْئًا وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ ﴿١٩﴾							
	19	अल्लाह के लिए	उस दिन	और हुक्म	कुछ		
آيَاتُهَا ۚ ۚ ﴿٨٣﴾ سُورَةُ الْمُطَفِّفِينَ ﴿١﴾ رُكُوعُهَا ۱							
<p style="text-align: center;">(83) सूरतुल सुतफ़फ़ीन नाप तोल में कमी करने वाले</p> <p style="text-align: center;">आयात 36</p>							
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ ﴿١﴾ الَّذِينَ إِذَا أَكْتَالُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ ﴿٢﴾							
2	पूरा भरलें	लोग	पर (से)	जब माप कर लें	वह जो कि	1	कमी करने वालों के लिए
وَإِذَا كَالُوهُمْ أَوْ وَزَنُوهُمْ يُخْسِرُونَ ﴿٣﴾ أَلَا يَظُنُّ أُولَئِكَ أَنَّهُمْ							
कि वह	यह लोग	ख़याल करते	क्या नहीं	3	घटा कर दें	तोल कर दें	या
مَبْعُوثُونَ ﴿٤﴾ لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٥﴾ يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ							
रब के सामने	लोग	खड़े होंगे	दिन	5	बड़ा	एक दिन	4
الْعَلَمِينَ ﴿٦﴾ كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْفُجَارِ لَفِي سِجِّينٍ ﴿٧﴾ وَمَا آذْرُكَ							
ख़बर है तुझे	और क्या	7	सिज्जीन	अलवत्ता में	बदकार	आमाल नामा	हरगिज़ नहीं, बेशक
مَا سِجِّينٌ ﴿٨﴾ كِتَابٌ مَّرْقُومٌ ﴿٩﴾ وَيْلٌ لِّلْمُكْذِبِينَ ﴿١٠﴾							
10	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	ख़राबी	9	लिखी हुई	एक किताब	8

ऐ इन्सान तुझे अपने रब्वे करीम के बारे में किस चीज़ ने धोका दिया। (6)

जिस ने तुझे पैदा किया, फिर ठीक किया, फिर बराबर किया, (7)

सिज सूरत में चाहा तुझे जोड़ दिया। (8)

हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम जज़ा ओ सज़ा के दिन (क़ियामत) को झुटलाते हो, (9)

और बेशक तुम पर निगहवान (मुकरर) हैं, (10)

इज़्ज़त वाले, (आमाल) लिखने वाले। (11)

जो तुम करते हो वह जानते हैं। (12)

बेशक नेक लोग जन्नत में होंगे। (13)

और बेशक गुनाहगार जहन्नम में होंगे। (14)

उस में जज़ा ओ सज़ा (क़ियामत) के दिन डाले जाएंगे। (15)

और वह उस से गाइब न हो सकेंगे। (16)

और तुम्हें क्या ख़बर कि रोज़े जज़ा ओ सज़ा क्या है? (17)

फिर तुम्हें क्या ख़बर कि रोज़े जज़ा ओ सज़ा क्या है? (18)

जिस दिन कुछ नहीं कर सकेगा कोई शख्स किसी शख्स के लिए, उस दिन हुक्म अल्लाह ही का होगा। (19)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है ख़राबी है कमी करने वालों के लिए, (1)

जो (लोहों से) माप कर लें तो पूरा भर कर लें, (2)

और जब (दूसरों को) माप कर या तोल कर दें तो घटा कर दें। (3)

क्या यह लोग ख़याल नहीं करते कि वह उठाए जाने वाले हैं। (4)

एक बड़े दिन, (5)

जिस दिन लोग खड़े होंगे तमाम जहानों के रब के सामने। (6)

हरगिज़ नहीं, बेशक बदकारों का आमाल नामा सिज्जीन में है। (7)

और तुझे क्या ख़बर कि सिज्जीन क्या है? (8)

एक लिखी हुई किताब। (9)

उस दिन ख़राबी है झुटलाने वालों के लिए, (10)

जो लोग झुटलाते हैं  
 रोज़े जज़ा ओ सज़ा को। (11)  
 और उसे नहीं झुटलाता मगर हद  
 से बढ़ जाने वाला गुनाहगार, (12)  
 जब पढ़ी जाती है उस पर हमारी  
 आयतें तो कहे: यह पहलों की  
 कहानियां हैं। (13)  
 हरगिज़ नहीं, बल्कि जंग पकड़ गया  
 है उन के दिलों पर (उस के सबब)  
 जो वह कमाते थे। (14)  
 हरगिज़ नहीं, वह उस दिन  
 अपने रब की दीद से रोक दिए  
 जाएंगे। (15)  
 फिर वेशक वह जहन्नम में दाखिल  
 होने वाले हैं। (16)  
 फिर कहा जाएगा कि यह वही है  
 जिस को तुम झुटलाते थे। (17)  
 हरगिज़ नहीं, वेशक नेक लोगों  
 का आमाल नामा “इल्लियीन” में  
 है। (18)  
 और तुझे क्या ख़बर कि इल्लियीन  
 क्या है? (19)  
 एक किताब है लिखी हुई। (20)  
 (उसे) देखते हैं (अल्लाह के) मुकर्रब  
 (नज़्दीक वाले)। (21)  
 वेशक नेक बन्दे नेमतों में होंगे। (22)  
 तख्तों (मुसन्दों) पर (बैठे) देखते  
 होंगे, (23)  
 तू उन के चेहरों पर नेमत की  
 तरोताज़गी पाएगा। (24)  
 उन्हें पिलाई जाती है ख़ालिस शराब  
 मुहर बन्द, (25)  
 उस की मुहर मुश्क पर जमी हुई  
 (से लगी हुई), और चाहिए कि  
 बाज़ी ले जाने की तमन्ना रखने  
 वाले इस में बाज़ी ले जाने की  
 कोशिश करें। (26)  
 और उस में मिलावट है तस्नीम  
 की, (27)  
 यह एक चश्मा है जिस से मुकर्रब  
 पीते हैं। (28)  
 वेशक जिन लोगों ने जुर्म किया  
 (गुनाहगार) वह मोमिनॉ पर हँसते  
 थे। (29)  
 और जब उन से हो कर गुज़रते तो  
 आँख मारते। (30)  
 और जब अपने घर वालों की  
 तरफ़ लौटते तो हँसते (बातें बनाते)  
 लौटते। (31)  
 और जब उन्हें देखते तो कहते:  
 वेशक यह लोग गुमराह है, (32)  
 और वह उन पर निगहबान  
 बना कर नहीं भेजे गए। (33)

الَّذِينَ يُكَذِّبُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ ﴿١١﴾ وَمَا يُكَذِّبُ بِهِ إِلَّا كُلُّ										
हर	मगर	उस को	और नहीं झुटलाता	11	रोज़े जज़ा ओ सज़ा को	झुटलाते हैं	जो लोग			
مُعْتَدٍ آثِيمٍ ﴿١٢﴾ إِذَا تُلِيٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ										
कहानियां	कहे	हमारी आयतें	उस पर	पढ़ी जाती	जब	12	गुनाहगार	हद से बढ़ जाने वाला		
الْأُولَٰئِكَ ﴿١٣﴾ كَلَّا بَلْ رَانَ عَلَىٰ قُلُوبِهِم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٤﴾										
14	वह कमाते थे	जो	जंग पकड़ गया है उन के दिल पर	बल्कि	हरगिज़ नहीं	13	पहलों			
كَلَّا إِنَّهُمْ عَنْ رَبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَّحُجُوبُونَ ﴿١٥﴾ ثُمَّ إِنَّهُمْ										
वेशक वह	फिर	15	देखने से महरूम रखे जाएंगे	उस दिन	अपना रब	से	वेशक वह	हरगिज़ नहीं		
لَّصَالُوا الْجَحِيمِ ﴿١٦﴾ ثُمَّ يُقَالُ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿١٧﴾										
17	झुटलाते	उस को	तुम थे	वह जो कि	यह	कहा जाएगा	फिर	16	जहन्नम	दाखिल होने वाले
كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْأَبْرَارِ لَفِي عِلِّيِّينَ ﴿١٨﴾ وَمَا أَذْرَكَ مَا عَلَيْنَا ﴿١٩﴾										
19	क्या इल्लियीन	तुझे ख़बर	और क्या	18	इल्लियीन	अलबत्ता में	नेक लोग	आमाल नामा	हरगिज़ नहीं	वेशक
كِتَابٍ مَّرْقُومٍ ﴿٢٠﴾ يَشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُونَ ﴿٢١﴾ إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿٢٢﴾										
22	अलबत्ता नेमत (आराम) में	नेक बन्दे	वेशक	21	नज़्दीक वाले	देखते हैं	20	लिखी हुई	एक किताब	
عَلَى الْأَرْبَابِكِ يَنْظُرُونَ ﴿٢٣﴾ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ										
उन के चेहरे	में	तू पहचान लेगा	23	देखते होंगे	तख्त (जमा)	पर				
نُضْرَةَ النَّعِيمِ ﴿٢٤﴾ يُسْقَوْنَ مِنْ رَحِيقٍ مَّخْحُومٍ ﴿٢٥﴾ خِتْمُهُ										
उस की मुहर	25	मुहर लगी हुई	ख़ालिस शराब	से	उन्हें पिलाई जाती है	24	तर ओ ताज़गी नेमत की			
مِسْكٍ ۖ وَفِي ذَٰلِكَ فَلَيْتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُونَ ﴿٢٦﴾										
26	रगवत करने वाले	चाहिए कि रगवत (कोशिश) करें	उस	और में	मुश्क					
وَمَزَاجُهُ مِنْ تَسْنِيمٍ ﴿٢٧﴾ عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ ﴿٢٨﴾										
28	मुकर्रब	उस से	पीते हैं	एक चश्मा	27	तस्नीम	से	उस की आमेशिश		
إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا يَضْحَكُونَ ﴿٢٩﴾										
29	हँसते	जो ईमान लाए (मोमिन)	से (पर)	थे	जुर्म किया उन्होंने ने	वह लोग जो	वेशक			
وَإِذَا مَرُّوا بِهِمْ يَتَغَامَزُونَ ﴿٣٠﴾ وَإِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ										
तरफ़	वह लौटते	और जब	30	आँख मारते	उन से	गुज़रते	और जब			
أَهْلِهِمْ انْقَلَبُوا فَكِهِينَ ﴿٣١﴾ وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوا إِنَّ										
वेशक	कहते	उन्हें देखते	और जब	31	हँसते (बातें बनाते)	लौटते	अपने घर वाले			
هَٰؤُلَاءِ لَضَالُّونَ ﴿٣٢﴾ وَمَا أُرْسِلُوا عَلَيْهِمْ حَفِظِينَ ﴿٣٣﴾										
33	निगहबान	उन पर	और नहीं भेजे गए	32	गुमराह (जमा)	यह लोग				

فَالْيَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ يَصْحَكُونَ ﴿٣٤﴾ عَلَى										
पर	34	हँसते हैं	काफिर (जमा)	से (पर)	ईमान वाले	पस आज				
الْأَرَابِكِ ۚ يَنْظُرُونَ ﴿٣٥﴾ هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾										
36	जो वह करते थे	काफिर (जमा)	सवाब मिल गया	क्या	35	देखते हैं तख्त				
آيَاتُهَا ٢٥ ﴿١٤﴾ سُورَةُ الْإِنْشِقَاقِ ﴿٨٤﴾ زُكُوعُهَا ١										
(84) सूरतुल इशिकाक फट जाना आयत 25										
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ										
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है										
إِذَا السَّمَاءُ انشَقَّتْ ﴿١﴾ وَأَذْنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٢﴾ وَإِذَا										
और जब	2	और इसी लाइक है	अपने रब का	और सुन लेगा	1	फट जाएगा आस्मान जब				
الْأَرْضُ مُدَّتْ ﴿٣﴾ وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ﴿٤﴾ وَأَذْنَتْ										
और सुन लेगा	4	और खाली हो जाएगी	जो उस में	और निकाल डालेगी	3	फैलादी जाएगी ज़मीन				
لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٥﴾ يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ										
अपने रब की तरफ	आगे बढ़ने वाला	वेशक तू	इन्सान	ऐ	5	और इसी लाइक है अपने रब का				
كَدْحًا فَمُلَاقِيهِ ﴿٦﴾ فَمَا مِنْ أُوتَىٰ كِتَابِهِ بِإِمِينِهِ ﴿٧﴾										
7	उस के दाएं हाथ में	उस का आमाल नामा	दिया गया	जो	पस	6	फिर उस को मिलना है मशक़क़त			
فَسَوْفَ يُحَاسِبُ حِسَابًا يَّسِيرًا ﴿٨﴾ وَيُنْقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ										
अपने लोग	तरफ	और लौटेगा	8	आसान	हिसाब	हिसाब लिया जाएगा	पस अनकरीब			
مَسْرُورًا ﴿٩﴾ وَأَمَّا مَنْ أُوتَىٰ كِتَابَهُ وَرَأَىٰ ظَهْرَهُ ﴿١٠﴾ فَسَوْفَ										
पस अनकरीब	10	उस की पुशत	पीछे	उस का आमाल नामा	दिया गया	जो	9	और वह खुश खुश		
يَدْعُوا ثُبُورًا ﴿١١﴾ وَيَصْلِي سَعِيرًا ﴿١٢﴾ إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ										
अपने लोग	में	था	वेशक वह	12	आग	और दाखिल होगा	11	मौत मांगेगा		
مَسْرُورًا ﴿١٣﴾ إِنَّهُ ظَنَّ أَنْ لَنْ يَّحُورَ ﴿١٤﴾ بَلَىٰ ۗ إِنَّ رَبَّهُ										
वेशक उस का रब	क्यों नहीं	14	हरगिज़ न लौटेगा	कि	गुमान किया	वेशक वह	13	खुश ओ खुरम		
كَانَ بِهِ بَصِيرًا ﴿١٥﴾ فَلَا أَقْسَمُ بِالشَّفَقِ ﴿١٦﴾ وَاللَّيْلِ وَمَا										
और जो	और रात	16	शाम की सुर्खी	सो मैं कसम खाता हूँ	15	देखने वाला	उस को	था		
وَسَقِّ وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ﴿١٨﴾ لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبِقِ ﴿١٩﴾ فَمَا										
सो क्या	19	दर्जा	से	एक दर्जा	तुम को ज़रूर चढ़ना है	18	वह मुकम्मल हो जाए	जब और चाँद	17	सिमट आती है
لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٢٠﴾ وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْجُدُونَ ﴿٢١﴾										
21	वह सिज्दा नहीं करते	कुरआन	उन पर	पढ़ा जाता है	और जब	20	वह ईमान नहीं लाते	उन्हें		

पस आज ईमान वाले काफ़िरों पर हँसते हैं। (34)  
 तख्तों (मसहरियों) पर बैठे देखते हैं। (35)  
 क्या मिल गया काफ़िरों को बदला उस का जो वह करते थे। (36)  
 अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है  
 जब आस्मान फट जाएगा, (1)  
 और अपने रब का (हुक़्म) सुन लेगा और वह इसी लाइक है, (2)  
 और जब ज़मीन फैला दी जाएगी, (3)  
 और जो कुछ उस में है उसे निकाल डालेगी और खाली हो जाएगी, (4)  
 और अपने रब का (हुक़्म) सुन लेगी और वह इसी लाइक है। (5)  
 ऐ इन्सान, वेशक तू चले जा रहा है अपने रब की तरफ़ मशक़क़त उठाते, फिर उस को मिलना है। (6)  
 पस जिस को उस का आमाल नामा दाएं हाथ में दिया गया, (7)  
 पस उस से अनकरीब आसान हिसाब लिया जाएगा, (8)  
 और वह अपने लोगों की तरफ़ खुश खुश लौटेगा। (9)  
 और वह जिस को उस का आमाल नामा उस की पीठ पीछे दिया गया, (10)  
 वह अनकरीब मौत मांगेगा, (11)  
 और जहन्नम में जा पड़ेगा। (12)  
 वेशक वह अपने लोगों में खुश ओ खुरम था। (13)  
 उस ने गुमान किया था कि वह हरगिज़ न लौटेगा। (14)  
 क्यों नहीं? उस का रब वेशक उसे देखता था। (15)  
 सो मैं कसम खाता हूँ शाम की सुर्खी की, (16)  
 और रात की और जो सिमट आती है। (17)  
 और चाँद की जब मुकम्मल हो जाए, (18)  
 तुम को दर्जा व दर्जा ज़रूर चढ़ना है। (19)  
 सो उन्हें क्या हो गया है कि वह ईमान नहीं लाते? (20)  
 और जब उन पर कुरआन पढ़ा जाता है तो वह सिज्दा नहीं करते। (21)

١٠٨

١٢  
١١  
١٠  
٩  
٨  
٧  
٦  
٥  
٤  
٣  
٢  
١

١١  
١٠  
٩  
٨  
٧  
٦  
٥  
٤  
٣  
٢  
١

बल्कि जिन लोगों ने कुफ़ किया (मुन्किर) वह झुटलाते हैं, (22) और अल्लाह खूब जानता है जो वह (दिलों में) भर रखते हैं, (23) सो उन्हें दर्दनाक अज़ाब की खुशख़बरी सुना। (24) सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे काम किए, उन के लिए ख़तम न होने वाला अजर है। (25)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है बुर्जाँ वाले आस्मान की कसम, (1) और वादा किए हुए दिन की, (2) और देखने वाले की और देखी जाने वाली चीज़ की। (3) हलाक कर दिए गए ख़न्दकों वाले, (4) (उन ख़न्दकों वाले) जिन में ईंधन की आग थी, (5) जब वह उस पर बैठे थे, (6) और जो मोमिनों के साथ करते थे (अपनी आँखों से) देखते थे। (7) और उन्होंने ने (मोमिनों से) बदला नहीं लिया मगर इस बात का कि वह ईमान लाए अल्लाह पर जो ग़ालिब है तारीफ़ों वाला, (8) जिस की वादशाहत है आस्मानों और ज़मीन में, और अल्लाह हर चीज़ पर बाख़बर है। (9) वेशक जिन लोगों ने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को तकलीफ़ें दीं, फिर उन्होंने ने तौबा न की तो उन के लिए जहन्नम का अज़ाब है और उन के लिए जलने का अज़ाब है, (10) वेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अच्छे अमल किए, उन के लिए बागात हैं जिन के नीचे जारी हैं नहरें, यह बड़ी कामयाबी है। (11) वेशक तुम्हारे रब की पकड़ बड़ी सख़्त है। (12) वेशक वही पहली बार पैदा करता है और (वही) लौटाता है। (13)

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُكَذِّبُونَ ﴿٢٢﴾ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ ﴿٢٣﴾									
23	भर रखते हैं	जो	खूब जानता है	और अल्लाह	22	झुटलाते हैं	जिन लोगों ने कुफ़ किया (मुन्किर)	बल्कि	
فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢٤﴾ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا									
	उन्होंने ने काम किए	जो लोग ईमान लाए	सिवाए	24	दर्दनाक	अज़ाब की	सो उन्हें खुशख़बरी सुनाओ		
الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ﴿٢٥﴾									
25	न ख़तम होने वाला	अजर	उन के लिए	अच्छे					
آيَاتِهَا ٢٢ ﴿٨٥﴾ سُورَةُ الْبُرُوجِ ﴿٨٥﴾ زُكُوعَهَا ١									
85) सूरतुल वुरूज तारे और सय्यारे									
آيات 22									
رुकुअ 1									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْبُرُوجِ ﴿١﴾ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُودِ ﴿٢﴾ وَشَاهِدِ									
और देखने वाले	2	वादा किए हुए	और दिन की	1	बुर्जाँ वाला	कसम आस्मान की			
وَمَشْهُودِ ﴿٣﴾ قِيلَ أَصْحَابُ الْأَحْدُودِ ﴿٤﴾ النَّارِ ذَاتِ الْوَقُودِ ﴿٥﴾									
5	ईंधन वाली	आग	4	गढ़े वाले	हलाक कर दिए गए	3	और देखी जाने वाली		
إِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُودٌ ﴿٦﴾ وَهُمْ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ									
वह करते थे	जो	पर	और वह	6	बैठे थे	उस पर	जब वह		
بِالْمُؤْمِنِينَ شُهُودٌ ﴿٧﴾ وَمَا نَقَمُوا مِنْهُمْ إِلَّا أَنْ يُؤْمِنُوا بِاللَّهِ									
अल्लाह पर	वह ईमान लाए	कि मगर	उन से	और नहीं बदला लिया	7	देखते	मोमिनों के साथ		
الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ﴿٨﴾ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ									
और ज़मीन	आस्मान (जमा)	वादशाहत	उस के लिए	वह जो कि	8	तारीफ़ों वाला	ग़ालिब		
وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ									
मोमिन मर्द (जमा)	तकलीफ़ें दीं	वह जो	वेशक	9	सामने (बाख़बर)	चीज़	हर	पर	और अल्लाह
وَالْمُؤْمِنَاتِ لَمْ يَتَّوَبُوا فَلَهُمْ عَذَابٌ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ									
अज़ाब	और उन के लिए	जहन्नम	अज़ाब	तो उन के लिए	उन्होंने ने तौबा न की	फिर	और मोमिन औरतें		
الْحَرِيقِ ﴿١٠﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتٌ									
बागात	उन के लिए	अच्छे	और उन्होंने ने अमल किए	जो लोग ईमान लाए	वेशक	10	जलना		
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ﴿١١﴾ إِنَّ									
वेशक	11	बड़ी	कामयाबी	यह	नहरें	उन के नीचे	से	जारी है	
بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ﴿١٢﴾ إِنَّهُ هُوَ يُبَدِّلُ وَيُعِيدُ ﴿١٣﴾									
13	और लौटाता है	पहली बार पैदा करता है	वही	वेशक वह	12	बड़ी सख़्त	तुम्हारा रब	पकड़	

ع 25  
9

وَهُوَ الْعَفْوَورُ الْوُدُوْدُ (14) ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيْدُ (15) فَعَالٌ لِّمَا							
जो	कर डालने वाला	15	बड़ी बुजुर्गी वाला	अर्श वाला (मालिक)	14	मुहब्बत वाला	बख्शने वाला और वह
يُرِيْدُ (16) هَلْ اَتَاكَ حَدِيْثُ الْجُنُوْدِ (17) فِرْعَوْنَ وَثَمُوْدَ (18)							
18	और समूद	फिरऔन	17	लशकर (जमा)	वात	तुझ को आई (पहुँची)	क्या 16 वह चाहे
بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ تَكْذِيْبٍ (19) وَاللّٰهُ مِنْ وَّرَآيِهِمْ مُّحِيْطٌ (20)							
20	घेरे हुए	उन को हर तरफ़	से	और अल्लाह	19 झुटलाना	में	उन्हो ने कुफ़ किया वह जो कि बल्कि
بَلْ هُوَ فَرَّانٌ مَّجِيْدٌ (21) فِي لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ (22)							
22	महफूज़	लौहे	में	21	बड़ी बुजुर्गी वाला	कुरआन	यह बल्कि
آيَاتُهَا 17 ﴿ (86) سُورَةُ الطَّارِقِ ﴾ رُكُوْعُهَا 1 (86) सूरतुत तारिक चमकता हुआ सितारा आयात 17							
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ (1) وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ (2)							
2	क्या है तारिक	और तुम ने क्या समझा	1	और रात को आने वाली की	कसम है आस्मान की		
النَّجْمِ الثَّاقِبِ (3) إِنَّ كُلَّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ (4)							
4	निगहवान	उस पर	मगर	जान	कोई नहीं	3	चमकता हुआ सितारा
فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ (5) خُلِقَ مِنْ مَّاءٍ دَافِقٍ (6)							
6	उछलता हुआ	पानी	से	पैदा किया गया	5	पैदा किया गया है	किस चीज़ से इन्सान चाहिए कि देखे
يَخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ (7) إِنَّهُ عَلَى رَجْعِهِ							
उस को दोबारा लौटाना	पर	वेशक वह	7	और सीना	पीठ	दरमियान	से निकलता है
لَقَادِرٌ (8) يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ (9) فَمَا لَهُ مِنْ قُوَّةٍ							
कुव्वत	से	तो न उस के लिए	9	राज़	जांचे जाएंगे	दिन	8 कादिर
وَلَا نَاصِرٍ (10) وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الرَّجْعِ (11) وَالْأَرْضِ							
और ज़मीन की	11	वारिश वाला	कसम आस्मान की	10	मददगार	और न	
ذَاتِ الصَّدْعِ (12) إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ (13) وَمَا هُوَ بِالْهَزْلِ (14)							
14	बेहूदा बात	यह	और नहीं	13	फैसला कर देने वाला	कलाम	वेशक यह फट जाने वाली
إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا (15) وَأَكِيدُ كَيْدًا (16) فَمَهْلِ الْكَافِرِينَ							
काफ़िर (जमा)	पस ढील दो	16	एक तदवीर	और मैं तदवीर करता हूँ	15	तदवीर	तदवीर करते हैं वेशक वह
أَمَهُلُهُمْ رُؤِيْدًا (17)							
	17	थोड़ी	ढील दो उन्हें				

और वही बख्शने वाला मुहब्बत करने वाला है, (14) अर्श का मालिक बड़ी बुजुर्गी वाला, (15) जो चाहे कर डालने वाला। (16) क्या तुम्हारे पास लशकरो की वात (खबर) पहुँची, (17) फिरऔन और समूद की। (18) बल्कि जिन लोगों ने कुफ़ किया (काफ़िर) झुटलाने में (लगे हुए हैं), (19) और अल्लाह उन्हें हर तरफ़ से घेरे हुए है। (20) बल्कि यह कुरआन बड़ी बुजुर्गी वाला है, (21) लौहे महफूज़ में (लिखा हुआ)। (22) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है कसम है आस्मान की और "तारिक" (रात को आने वाले) की। (1) और तुम ने क्या समझा कि "तारिक" क्या है? (2) चमकता हुआ सितारा। (3) कोई जान नहीं जिस पर (कोई) निगहवान न हो। (4) और इन्सान को चाहिए कि देखे वह किस चीज़ से पैदा किया गया है? (5) वह पैदा किया गया उछलते हुए पानी से, (6) जो निकलता है पीठ और सीने के दरमियान से। (7) वेशक वह (अल्लाह) उस को दोबारा लौटाने पर कादिर है। (8) जिस दिन (लोगों के) राज़ जांचे जाएंगे। (9) तो न उसे (इन्सान को) कोई कुव्वत होगी और न मददगार। (10) कसम आस्मान की, वारिश वाला। (11) और ज़मीन की, फट जाने वाली। (12) वेशक यह कलाम है फैसला कर देने वाला, (13) और यह हंसी मज़ाक नहीं। (14) वेशक वह (उल्टी उल्टी) तदवीरें करते हैं, (15) और मैं (भी) एक तदवीर करता हूँ। (16) पस ढील दो काफ़िरों को थोड़ी ढील। (17)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है पाकीज़गी बयान कर अपने सब से बुलन्द रब के नाम की, (1) जिस ने पैदा किया फिर ठीक किया, (2) और जिस ने अन्दाज़ा ठहराया फिर राह दिखाई, (3) और जिस ने चारा उगाया, (4) फिर उसे खुशक सियाह कर दिया। (5) हम जल्द आप (स) को पढ़ाएंगे, फिर आप (स) न भूलेंगे, (6) मगर जो अल्लाह चाहे, बेशक वह जानता है ज़ाहिर भी और पोशीदा भी। (7) और हम आप (स) को आसान तरीक़े की सहूलत देंगे। (8) पस आप (स) समझा दें अगर समझाना नफ़ा दे। (9) जो डरता है वह जल्द समझ जाएगा, (10) और उस से बदबख़्त पहलू तही करेगा, (11) जो बहुत बड़ी आग में दाख़िल होगा। (12) फिर न मरेगा वह उस में और न जिएगा। (13) यकीनन उस ने फ़लाह पाई जो पाक हुआ, (14) और उस ने अपने रब का नाम याद किया, फिर नमाज़ पढ़ी। (15) बल्कि तुम दुन्यवी ज़िन्दगी को तरजीह देते हो। (16) और (जबकि) आख़िरत बेहतर और बाकी रहने वाली है। (17) बेशक यह पहले सहीफ़ों में (भी कही गई थी), (18) इब्राहीम (अ) और मूसा (अ) के सहीफ़ों में। (19) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है क्या तुम्हारे पास ढांपने वाली (क्रियामत) की बात पहुँची। (1) कितने ही मुँह उस दिन ज़लील ओ आजिज़ होंगे, (2) अमल करने वाले, मुशक़क़त उठाने वाले। (3) दहकती हुई आग में दाख़िल होंगे, (4) खौलते हुए चश्मे से (पानी) पिलाए जाएंगे, (5) न उन के लिए खाना होगा मगर ख़ार दार घास से, (6) जो न मोटा करेगी और न भूक से बेनियाज़ करेगी। (7)

<b>آيَاتُهَا ١٩ ﴿٨٧﴾ سُورَةُ الْأَعْلَى ﴿١﴾ زُكُوعُهَا ١</b>										
(87) सूरतुल आला					आयात 19					
रुकुअ 1					सब से बुलन्द					
<b>بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ</b>										
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है										
<b>سَبِّحْ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى ﴿١﴾ الَّذِي خَلَقَ فَسَوَّى ﴿٢﴾ وَالَّذِي قَدَّرَ فَهَدَى ﴿٣﴾ وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعَى ﴿٤﴾ فَجَعَلَهُ غُثَاءً أَحْوَى ﴿٥﴾</b>										
और जिस ने अन्दाज़ा ठहराया	2	फिर ठीक किया	पैदा किया	जिस ने	1	सब से बुलन्द	अपना रब	नाम	पाकीज़गी बयान कर	
5	सियाह	खुशक	फिर उसे कर दिया	4	चारा	निकाला (उगाया)	और जिस ने	3	फिर राह दिखाई	
<b>سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسَى ﴿٦﴾ إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفَى ﴿٧﴾ وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرَى ﴿٨﴾ فَذَكِّرْ إِنْ نَفَعَتِ الذِّكْرَى ﴿٩﴾ سَيَذَكِّرُ مَنْ يَخْشَى ﴿١٠﴾ وَيَتَجَنَّبُهَا الْأَشْقَى ﴿١١﴾ الَّذِي يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرَى ﴿١٢﴾</b>										
और जो	ज़ाहिर	जानता है	बेशक वह	अल्लाह चाहे	जो	मगर	6	फिर न भूलेंगे आप	हम जल्द पढ़ाएंगे आप (स) को	
जल्द समझ जाएगा	9	समझाना	नफ़ा दे	अगर	पस समझा दें	8	आसान तरीक़ा	और हम आप (स) को सहूलत देंगे	7	पोशीदा
12	बहुत बड़ी	आग	दाख़िल होगा	जो	11	बद बख़्त	और पहलू तही करेगा उस से	10	डरता है	जो
<b>ثُمَّ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَى ﴿١٣﴾ قَدْ أَفْلَحَ مَنْ تَزَكَّى ﴿١٤﴾ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلَّى ﴿١٥﴾ بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ﴿١٦﴾ وَالْآخِرَةَ خَيْرٌ ﴿١٧﴾ إِنَّ هَذَا لَفِي الصُّحُفِ الْأُولَى ﴿١٨﴾ صُحُفِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى ﴿١٩﴾</b>										
नाम	और याद किया	14	पाक हुआ	जो	यकीनन उस ने फ़लाह पाई	13	और न जिएगा	उस में	न मरेगा वह	फिर
बेहतर	आर आख़िरत	16	दुनिया	ज़िन्दगी	बढ़ाते हो (तरजीह)	बल्कि	15	फिर नमाज़ पढ़ी	अपना रब	
19	और मूसा (अ)	इब्राहीम (अ)	सहीफ़े	18	पहले सहीफ़े	में	बेशक यह	17	और बाकी रहने वाली	

<b>آيَاتُهَا ٢٦ ﴿٨٨﴾ سُورَةُ الْغَاشِيَةِ ﴿١﴾ زُكُوعُهَا ١</b>										
(88) सूरतुल ग़ाशिया					आयात 26					
रुकुअ 1					छा जाने वाली					
<b>بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ</b>										
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है										
<b>هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْغَاشِيَةِ ﴿١﴾ وَجُوهُ يَوْمٍ ذُرِّيَّتٍ خَاشِعَةٍ ﴿٢﴾ عَامِلَةٌ نَاصِبَةٌ ﴿٣﴾ تَصَلَّى نَارًا حَامِيَةً ﴿٤﴾ تُسْفَى مِنْ عَيْنِ أِنِيَةٍ ﴿٥﴾ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ إِلَّا مِنْ صَرِيحٍ ﴿٦﴾ لَا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِي مِنْ جُوعٍ ﴿٧﴾</b>										
अमल करने वाले	2	ज़लील ओ आजिज़	उस दिन	कितने मुँह	1	ढांपने वाली	बात	क्या तुम्हारे पास आई		
नहीं	5	खौलता हुआ	चश्मा से	पिलाए जाएंगे	4	दहकती हुई	आग	दाख़िल होंगे	3	मुशक़क़त उठाने वाले
7	भूक से	न बेनियाज़ करेगी	न मोटा करेगी	6	ख़ारदार घास से	मगर	खाना	उन के लिए		



وقف الاعم

<p>وَجُودُهُ يَوْمَئِذٍ نَاعِمَةٌ ﴿٨﴾ لَسَعِيَهَا رَاضِيَةٌ ﴿٩﴾ فِي جَنَّةٍ</p>									
बाग	में	9	खुश खुश	अपनी कोशिश से	8	तर ओ ताज़ा	उस दिन	कितने मुँह	
<p>عَالِيَةٍ ﴿١٠﴾ لَا تَسْمَعُ فِيهَا لِأَعِيَّةٍ ﴿١١﴾ فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ﴿١٢﴾ فِيهَا</p>									
उस में	12	बहता हुआ	चश्मा	उस में	11	बेहूदा बकवास	उस में	वह न सुनेंगे	10
<p>سُرُرٌ مَّرْفُوعَةٌ ﴿١٣﴾ وَأَكْوَابٌ مَّوْضُوعَةٌ ﴿١٤﴾ وَنَمَارِقُ</p>									
और गद्दे	14	चुने हुए	और कटोरे	13	ऊँचे ऊँचे	तख्त			
<p>مَصْفُوفَةٌ ﴿١٥﴾ وَزَرَائِي مَبْثُوثَةٌ ﴿١٦﴾ أَفَلَا يَنْظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ</p>									
ऊँट	तरफ	क्या वह नहीं देखते?	16	बिखरे हुए	और कालीन	15	तरतीब से लगे हुए		
<p>كَيْفَ خُلِقَتْ ﴿١٧﴾ وَاللّٰى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ﴿١٨﴾ وَاللّٰى الْجِبَالِ</p>									
पहाड़ (जमा)	और तरफ	18	बुलन्द किया गया	कैसे	आस्मान	और तरफ	17	वह पैदा किया गया	कैसे
<p>كَيْفَ نُصِبَتْ ﴿١٩﴾ وَاللّٰى الْاَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ﴿٢٠﴾</p>									
20	विछाई गई	कैसे	ज़मीन	और तरफ	19	खड़े किए गए	कैसे		
<p>فَذَكِّرْ اِنَّمَّا اَنْتَ مُذَكِّرٌ ﴿٢١﴾ لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيِّرٍ ﴿٢٢﴾</p>									
22	दारोगा	उन पर	नहीं आप	21	समझाने वाले	आप	सिर्फ	पस समझाते रहें	
<p>اِلَّا مَنْ تَوَلَّىٰ وَكَفَرَ ﴿٢٣﴾ فَيَعَذِّبُهُ اللّٰهُ الْعَذَابَ الْاَكْبَرَ ﴿٢٤﴾</p>									
24	बड़ा	अज़ाब	पस उसे अज़ाब देगा अल्लाह	23	और कुफ़ किया	मुँह मोड़ा	जो-जिस	मगर	
<p>اِنَّ اِلَيْنَا اِيَابُهُمْ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ اِنَّا عَلَيْنَا حِسَابُهُمْ ﴿٢٦﴾</p>									
26	उन का हिसाब	हम पर	वेशक फिर	25	उन का लौटना	हमारी तरफ	वेशक		
<p>آيَاتُهَا ۚ ﴿٢٠﴾ سُوْرَةُ الْفَجْرِ ﴿٨٩﴾ ﴿٢٠﴾ رُكُوْعُهَا ۙ</p>									
<p>रुकुअ 1 (89) सूरतुल फज़ सुबह सबेरा आयात 30</p>									
<p>بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝</p>									
<p>अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है</p>									
<p>وَالْفَجْرِ ﴿١﴾ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ﴿٢﴾ وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ﴿٣﴾ وَاللَّيْلِ اِذَا</p>									
जब	और रात की	3	और ताक की	और जुफ्त की	2	दस	और रातों की	1	कसम फज़ की
<p>يَسْرِ ﴿٤﴾ هَلْ فِيْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ ﴿٥﴾ اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ</p>									
मामला किया	कैसा	क्या तुम ने नहीं देखा	5	हर अक्लमन्द के नज़्दीक	कसम	इस	में	क्या	4
<p>رَبُّكَ بِعَادٍ ﴿٦﴾ اِرْمِ ذَاتِ الْعِمَادِ ﴿٧﴾ اَلَّتِي لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا</p>									
उस जैसा	नहीं पैदा किया गया	वह जो	7	सूतनों वाले	इरम	6	आद के साथ	तुम्हारा रब	
<p>فِي الْبِلَادِ ﴿٨﴾ وَتَمُوْدَ الَّذِيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ﴿٩﴾</p>									
9	वादी में	काटे (तराशे) सख्त पत्थर	जिन्होंने ने	और समूद	8	शहरों में			

कितने ही मुँह उस दिन तर ओ ताज़ा होंगे। (8) अपनी कोशिश (कमाई) से खुश खुश, (9) बुलन्द बाग में, (10) उस में वह न सुनेंगे बेहूदा बकवास, (11) उस में एक बहता हुआ चश्मा है। (12) उस में ऊँचे ऊँचे तख्त हैं, (13) और आबखोरे चुने हुए, (14) और गद्दे तरतीब से लगे हुए, (15) और कालीन बिखरे हुए (फैले हुए)। (16) क्या वह नहीं देखते? ऊँट की तरफ कि वह कैसे पैदा किए गए। (17) और आस्मान की तरफ कि कैसे बुलन्द किया गया? (18) और पहाड़ों की तरफ कि कैसे खड़े किए गए? (19) और ज़मीन की तरफ कि कैसे विछाई गई? (20) पस आप समझाते रहें, आप (स) सिर्फ समझाने वाले हैं। (21) आप (स) उन पर दारोगा नहीं, (22) मगर जिस ने मुँह मोड़ा और कुफ़ किया (मुनक्िर हो गया), (23) पस अल्लाह उसे अज़ाब देगा बहुत बड़ा अज़ाब। (24) वेशक उन्हें हमारी तरफ लौटना है, (25) फिर वेशक हम पर (हमारा काम) है उन का हिसाब लेना। (26) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है कसम फज़ की, (1) और दस रातों की, (2) और जुफ्त और ताक की, (3) और रात की जब वह चले। (4) क्या इस में (इन चीज़ों की) कसम हर अक्लमन्द के नज़्दीक मोतबर है? (5) क्या तुम ने नहीं देखा कि तुम्हारे रब ने क्या मामला किया आद के साथ, (6) इरम के सूतनों वाले, (7) उस जैसी कौम दुनिया के मुल्कों में पैदा नहीं की गई। (8) और समूद के साथ जिन्होंने ने वादी में सख्त पत्थर तराशे, (9)

الصفحة 11

और कीलों वाले फिरज़ीन के साथ, (10)

जिन्होंने शहरों में सरकशी की, (11)

फिर उन शहरों में बहुत फ़साद किया। (12)

पस उन पर तुम्हारे रब ने अज़ाब का कोड़ा बरसा दिया। (13)

वेशक तुम्हारा रब घात में है। (14)

पस इन्सान को जब उस का रब आज़माए, फिर उस को इज़्ज़त दे और नेमत दे, तो वह कहे कि मेरे रब ने मुझे इज़्ज़त दी। (15)

और जब उसे आज़माए और उसे रोज़ी अन्दाज़े से (तंग कर के) दे तो वह कहे कि मेरे रब ने मुझे ज़लील किया। (16)

हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम यतीम की इज़्ज़त नहीं करते, (17)

और रग़वत नहीं देते मिस्कीन को खाना खिलाने की, (18)

और तुम माले मीरास समेट समेट कर खाते हो, (19)

और माल से मुहब्बत करते हो बहुत ज़ियादा मुहब्बत। (20)

हरगिज़ नहीं, जब ज़मीन कूट कूट कर पस्त कर दी जाए, (21)

और आए तुम्हारा रब और (आएँ) फ़रिश्ते क़तार दर क़तार। (22)

और उस दिन जहन्नम लाई जाए, उस दिन इन्सान सोचेगा और उसे कहां सोचना (नफ़ा) देगा? (23)

कहेगा ऐ काश! मैं ने अपनी इस ज़िन्दगी के लिए पहले (नेक अमल) भेजा होता। (24)

पस उस दिन उस जैसा अज़ाब कोई न देगा, (25)

न उस जैसा बान्धना कोई बान्ध कर रखेगा। (26)

ऐ रहे सुत्मइन (इत्मीनान वाली)। (27)

लौट चल अपने रब की तरफ़, वह तुझ से राज़ी, तू उस से राज़ी, (28)

पस दाख़िल हो जा मेरे बन्दों में। (29)

और दाख़िल हो जा मेरी जन्नत में। (30)

وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ (10) الَّذِينَ طَعَوْا فِي الْبِلَادِ (11)							
11	शहरों में	सरकशी की	वह जिन्होंने ने	10	कीलों वाला	और फिरज़ीन	
فَاكْتَرُوا فِيهَا الْفَسَادَ (12) فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ							
कोड़ा	तुम्हारा रब	उन पर	पस बरसा दिया	12	फ़साद	उस में	बहुत किया
عَذَابٍ (13) إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ (14) فَأَمَّا الْإِنْسَانُ إِذَا							
जब	इन्सान	पस जो	14	घात में	तुम्हारा रब	वेशक	13
مَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَآكْرَمَهُ وَنَعَّمَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ (15)							
15	मुझे इज़्ज़त दी	मेरा रब	तो वह कहे	और उसे नेमत दे	उस को इज़्ज़त दे	उस का रब	उस को आज़माए
وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ فَيَقُولُ رَبِّي							
मेरा रब	तो वह कहे	उस का रिज़्क	उस पर	अन्दाज़े से देता है	उसे आज़माए	और जब	
أَهَانِنِ (16) كَلَّا بَلْ لَا تُكْرِمُونَ الْيَتِيمَ (17) وَلَا تَحْضُونَ							
और रग़वत नहीं देते	17	यतीम	इज़्ज़त नहीं करते	हरगिज़ नहीं, बल्कि	16	मुझे ज़लील किया	
عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ (18) وَتَأْكُلُونَ التُّرَاثَ أَكْلًا لَّمًّا (19)							
19	खाना समेट कर	माले मीरास	और तुम खाते हो	18	मिस्कीन	खाना	पर
وَتُحِبُّونَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا (20) كَلَّا إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ							
ज़मीन	पस्त कर दी जाएगी	हरगिज़ नहीं जब	20	बहुत	मुहब्बत	माल	और मुहब्बत करते हो
دَكًّا دَكًّا (21) وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا (22) وَجِئَاءَ							
और लाई जाए	22	क़तार दर क़तार	और (आएँ) फ़रिश्ते	तुम्हारा रब	और आएगा	21	कूट कूट कर
يَوْمَئِذٍ بِجَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ وَأَنَّىٰ لَهُ							
उस के लिए	और कहां	इन्सान	सोचेगा	उस दिन	जहन्नम में	उस दिन	
الذِّكْرَىٰ (23) يَقُولُ يَلِيَّتَنِي قَدَّمْتُ لِحَيَاتِي (24) فَيَوْمَئِذٍ							
पस उस दिन	24	अपनी ज़िन्दगी के लिए	मैं ने पहले भेजा होता	ऐ काश	वह कहेगा	23	सोचना
لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهُ أَحَدٌ (25) وَلَا يُوثِقُ وِثْقَاهُ							
उस का बान्धना	और न बान्ध कर रखे	25	कोई	उस का अज़ाब	अज़ाब न देगा		
أَحَدٌ (26) يَا أَيُّهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ارْجِعِي إِلَىٰ							
तरफ़	लौट चल	27	सुत्मइन	नफ्स	ऐ	26	कोई
رَبِّكَ رَاضِيَةً مَّرْضِيَةً (28) فَادْخُلِي فِي عِبْدِي (29)							
29	मेरे बन्दे	में	पस दाख़िल हो	28	वह तुझ से राज़ी	राज़ी	अपने रब
وَادْخُلِي جَنَّتِي (30)							
		30	मेरी जन्नत	और दाख़िल हो			

<p style="text-align: center;"><b>آيَاتُهَا ٢٠ ﴿٩٠﴾ سُورَةُ الْبَلَدِ ﴿٩٠﴾ زُكُوعَهَا ١</b></p>									
रुकुअ 1		(90) सूरतुल बलद				आयात 20			
शहर									
<b>بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ</b>									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
<p>لَا أُقْسِمُ بِهَذَا الْبَلَدِ ﴿١﴾ وَأَنْتَ حِلٌّ بِهَذَا الْبَلَدِ ﴿٢﴾ وَوَالِدٍ</p>									
और	2	शहर	इस	हलाल	और	1	शहर	इस	नहीं-मैं कसम खाता हूँ
वालिद की				कर लिया गया	आप (स)				
<p>وَمَا وَلَدٌ ﴿٣﴾ لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي كَبَدٍ ﴿٤﴾ أَيَحْسَبُ أَنْ لَنْ يَقْدِرَ</p>									
हरगिज़ बस	कि	क्या वह गुमान	4	मुशक़क़त में	इन्सान	तहकीक़ हम ने	3	और औलाद	नहीं-मैं कसम खाता हूँ
नहीं चलेगा		करता है				पैदा किया			
<p>عَلَيْهِ أَحَدٌ ﴿٥﴾ يَقُولُ أَهْلَكْتُ مَالًا لُبَدًا ﴿٦﴾ أَيَحْسَبُ أَنْ لَمْ يَرَوْا</p>									
उस को	कि	क्या वह गुमान	6	ढेरों	माल	उड़ा दिया	वह	5	किसी
नहीं देखा		करता है				कहता है			उस पर
<p>أَحَدٌ ﴿٧﴾ أَلَمْ نَجْعَلْ لَهُ عَيْنَيْنِ ﴿٨﴾ وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ ﴿٩﴾ وَهَدَيْنَاهُ</p>									
और हम ने	और	और ज़वान	8	दो आँखें	उस के	हम ने	क्या	7	किसी
उसे दिखाए	दो होंट				लिए	बनाया	नहीं		
<p>التَّجْدِينَ ﴿١٠﴾ فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ﴿١١﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْعَقَبَةُ ﴿١٢﴾ فَكُّ</p>									
छुड़ाना	12	अक्वा	क्या	तुम	और	घाटी	पस न दाख़िल	10	दो रास्ते
				समझे	क्या		हुआ वह		
<p>رَقَبَةٍ ﴿١٣﴾ أَوْ إِطْعَمٌ فِي يَوْمٍ ذِي مَسْغَبَةٍ ﴿١٤﴾ يَتَّبِعُنَا ذَا مَقْرَبَةٍ ﴿١٥﴾</p>									
15	कराबतदार	यतीम	14	भूक वाले	दिन	में	खाना	या	13
							खिलाना		गर्दन (असीर)
<p>أَوْ مَسْكِينًا ذَا مَتْرَبَةٍ ﴿١٦﴾ ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَوَاصَوْا</p>									
और वाहम	जो ईमान लाए	से	हो	फिर	16	खाक नशीन	मिस्कीन	या	
वसीयत की									
<p>بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ﴿١٧﴾ أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ﴿١٨﴾</p>									
18	सीधे हाथ वाले	वह (यही)	17	रहम खाने की	और वाहम	सब्र की			
	(खुश नसीब)	लोग			नसीहत की				
<p>وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا هُمْ أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ﴿١٩﴾ عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤَصَّدَةٌ ﴿٢٠﴾</p>									
20	मूदी (बन्द)	आग	उन पर	19	बाएँ हाथ वाले	वह	हमारी	और जिन लोगों ने	
	की हुई				(बद बख़्त)		आयात	इन्कार किया	

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है नहीं, मैं इस शहर की कसम खाता हूँ, (1)

और आप (स) को इस शहर में हलाल कर लिया गया है, (2) और (कसम खाता हूँ) वालिद की और औलाद की, (3)

तहकीक़ हम ने इन्सान को मुशक़क़त में (गिरफ़्तार) पैदा किया। (4)

क्या वह गुमान करता है कि उस पर हरगिज़ किसी का बस नहीं चलेगा? (5)

वह कहता है कि मैं ने ढेरों माल उड़ा दिया। (6)

क्या वह गुमान करता है कि उस को किसी ने नहीं देखा? (7)

क्या हम ने नहीं बनाई? उस की दो आँखें, (8)

और ज़वान और दो होंट, (9)

और हम ने उसे दो रास्ते दिखाए। (10)

पस वह दाख़िल न हुआ “अक्वा” (घाटी) में। (11)

और तुम क्या मझे कि “अक्वा” क्या है? (12)

गर्दन छुड़ाना (असीर का आज़ाद कराना)। (13)

या खाना खिलाना भूक वाले दिन में, (14)

कराबतदार (रिशतेदार) यतीम को, (15)

या खाक नशीन मिस्कीन को। (16)

फिर हो उन लोगों में से जो ईमान लाए और उन्होंने ने वाहम वसीयत की सब्र की और वाहम रहम खाने की। (17)

यही लोग हैं खुश नसीब। (18)

और जिन लोगों ने हमारी आयतों का इन्कार किया वह बदबख़्त लोग हैं। (19)

उन पर आग मूदी हुई है (उन्हें आग में बन्द कर दिया गया है)। (20)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है कसम है सूरज की और उस की रोशनी की, (1)

और चाँद की जब उस के पीछे से निकले। (2)

और दिन की जब वह उसे रोशन कर दे, (3)

और रात की जब वह उसे ढाँप ले, (4)

और कसम है आस्मान की और जिस ने उसे बनाया, (5)

وَالشَّمْسِ وَضُحَاهَا ﴿١﴾ وَالْقَمَرِ إِذَا تَلَّهَا ﴿٢﴾ وَالنَّهَارِ إِذَا

जब और उस की रोशनी सूरज की कसम और दिन की जब वह उसे रोशन कर दे, (3)

और रात की जब वह उसे ढाँप ले, (4)

और कसम है आस्मान की और जिस ने उसे बनाया, (5)

जब और रात की वह रोशन करदे

और ज़मीन की और जिस ने उसे फैलाया, (6)  
 और इन्सान की और जिस ने उसे दुरुस्त किया, (7)  
 फिर डाली उस के दिल में उस के गुनाह और परहेज़गारी (की समझ)। (8)  
 तहकीक कामयाब हुआ जिस ने उस को पाक किया, (9)  
 और तहकीक नामुराद हुआ जिस ने उसे खाक में मिलाया। (10)  
 समूद ने अपनी सरकशी (कि वजह) से झुटलाया, (11)  
 जब उन का वदवख्त उठ खड़ा हुआ। (12)  
 तो उन से अल्लाह के रसूल ने कहा: (खबरदार हो) अल्लाह की ऊँटनी और उस के पानी पीने की बारी से। (13)  
 फिर उन्होंने ने उस को झुटलाया और उस की कूचे काट डाली, फिर उन के रब ने उन पर उन के गुनाह के सबब हलाकत डाली, फिर उन्हें बराबर कर दिया, (14)  
 और वह उस के अन्जाम से नहीं डरता। (15)  
 अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है रात की कसम जब वह ढांप ले, (1)  
 और दिन की जब वह रोशन हो, (2)  
 और उस की जो उस ने नर ओ मादा पैदा किए। (3)  
 बेशक तुम्हारी कोशिशें मुख्तलिफ़ हैं। (4)  
 सो जिस ने दिया और परहेज़गारी इख्तियार की, (5)  
 और अच्छी बात को सच जाना, (6)  
 पस हम अन्नकरीब उस के लिए आसानी (की तौफ़ीक़) कर देंगे। (7)  
 और जिस ने बुख़ल किया और वेपरवाह रहा। (8)  
 और झुटलाया अच्छी बात को, (9)  
 पस हम अन्नकरीब उस के लिए दुश्वारी (ग़लत रास्ता) आसान कर देंगे। (10)  
 और उस का माल उस को फ़ाइदा न देगा जब वह नीचे गिरेगा। (11)  
 बेशक हमारा ज़िम्मा है राह दिखाना। (12)  
 और बेशक दुनिया ओ आख़िरत हमारे हाथ में है। (13)  
 पस मैं तुम्हें डराता हूँ भड़कती हुई आग से। (14)  
 उस में सिर्फ़ वदवख्त दाख़िल होगा, (15)  
 जिस ने झुटलाया और मुँह मोड़ा। (16)  
 और अन्नकरीब उस से परहेज़गार बचा लिया जाएगा। (17)  
 जो अपना माल देता है (अपना दिल) पाक साफ़ करने को। (18)

وَالْأَرْضِ وَمَا طَحَّهَا ۖ وَنَفْسٍ وَمَا سَوَّاهَا ۗ فَالْهَمَّهَا فَجَوَّرَهَا ۗ									
और ज़मीन की	और जिस	उसे फैलाया	6	और नफ्स (इन्सान) की	और जिस	उसे दुरुस्त किया	7	उस के दिल में डाली	उस का गुनाह
وَتَقْوُهَا ۗ قَدْ أَفْلَحَ مَنْ زَكَّاهَا ۗ وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسَّاهَا ۗ									
और उस की परहेज़गारी	8	कामयाब हुआ	जो	उस को पाक किया	9	और तहकीक नामुराद हुआ	जो	उसे खाक में मिलाया	10
كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَغْوُهَا ۗ إِذِ انبَعَثَ أَشْقَاهَا ۗ فَقَالَ لَهُمْ									
झुटलाया	समूद	अपनी सरकशी	11	जब	उठ खड़ा हुआ	उस का वदवख्त	12	तो कहा	उन से
رَسُولُ اللَّهِ نَاقَةَ اللَّهِ وَسُقِّيَهَا ۗ فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوهَا ۗ فَدمَمَ									
अल्लाह का रसूल	अल्लाह की ऊँटनी	और उस की पानी की बारी	13	फिर उस को झुटलाया	फिर उस की कूचे काट डाली	फिर हलाकत डाली			
عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذُنُوبِهِمْ فَسَوَّاهَا ۗ وَلَا يَخَافُ عُقْبَاهَا ۗ									
उन पर	उन का रब	उन के गुनाह के सबब	उन को बराबर कर दिया	14	और वह नहीं डरता	उस का अन्जाम	15		
آيَاتُهَا ۚ ﴿٩٢﴾ سُورَةُ اللَّيْلِ ﴿١﴾ زُكُوعُهَا ۙ									
21 आयत लैल सूरत (92) 1 रुकुअ									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَىٰ ۙ وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّىٰ ۙ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ									
रात की कसम	जब	वह ढांप ले	1	और दिन की	जब वह रोशन हो	2	और जो उस ने पैदा किया	नर	
وَالْأُنثَىٰ ۙ إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتَّىٰ ۗ فَامَّا مَنْ أَعْطَىٰ وَاتَّقَىٰ ۗ									
और मादा	3	बेशक	तुम्हारी कोशिश	4	सो जो	दिया	जिस	और परहेज़गारी इख्तियार की	5
وَصَدَقَ بِالْحُسْنَىٰ ۙ فَسَنِيَرُهُ لَيْسَرَىٰ ۙ وَامَّا									
और सच जाना	अच्छी बात को	6	पस अन्नकरीब उसे आसान कर देंगे	7	और जो	आसानी			
مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنَىٰ ۙ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنَىٰ ۙ فَسَنِيَرُهُ									
जिस ने बुख़ल किया	और वेपरवाह रहा	8	और झुटलाया	9	पस अन्नकरीब उसे आसान कर देंगे				
لِلْعُسْرَىٰ ۗ وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهُ إِذَا تَرَدَّىٰ ۗ إِنَّ عَلَيْنَا									
दुश्वारी-सख्ती	10	और न फ़ाइदा देगा	उस को	उस का माल	जब नीचे गिरेगा वह	11	वेशक हम पर (हमारा ज़िम्मा)		
لِلهُدَىٰ ۗ وَإِنَّ لَنَا لَلْآخِرَةَ وَالْأُولَىٰ ۗ فَأَنْذَرْتُكُمْ نَارًا									
अलबत्ता राह दिखाना	12	और बेशक हमारे लिए	आख़िरत	और दुनिया	13	पस मैं तुम्हें डराता हूँ	आग		
تَلْطَىٰ ۗ لَا يَصْلُهَا إِلَّا الْأَشْقَىٰ ۗ الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۗ									
भड़कती हुई	14	न दाख़िल होगा उस में	मगर	इन्तिहाई वदवख्त	15	जिस ने झुटलाया	और मुँह मोड़ा	16	
وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَىٰ ۗ الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكَّىٰ ۗ									
और अन्नकरीब उस से बचा लिया जाएगा	17	वड़ा परहेज़गार	जो	18	देता है	अपना माल	पाक करने को		

15  
17

وَمَا لِأَحَدٍ عِنْدَهُ مِنْ نِعْمَةٍ تُجْزَى إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ							
रज़ा	चाहता है	सिर्फ	19	बदला दी जाए	नेमत	से	उस पर
और नहीं किसी के लिए							
رَبِّهِ الْأَعْلَى (20) وَلَسَوْفَ يَرْضَى (21)							
	21	राज़ी होगा	और अनकरीब	20	बुलन्द ओ बरतर	अपना रब	
آيَاتُهَا ۱۱ ﴿۹۳﴾ سُورَةُ الضُّحَى ﴿۱﴾ رُكُوعُهَا ۱							
रुकुअ 1 (93) सूरतुध धुहा रोज़े रोशन आयात 11							
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
وَالضُّحَى (1) وَاللَّيْلِ إِذَا سَجَى (2) مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَى (3)							
3	वेज़ार हुआ	और न	आप का रब	आप (स) को नहीं छोड़ा	2	छाजाए	जब और रात की
कसम है धूप चढ़ने की (आफ़ताब)							
وَلَاخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْأُولَى (4) وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ							
आप का रब	आप (स) को अता करेगा	और अनकरीब	4	पहली	से	आप (स) के लिए	और आखिरत
فَتَرْضَى (5) أَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيمًا فَآوَى (6) وَوَجَدَكَ ضَالًّا							
वेख़बर	और आप (स) को पाया	6	पस ठिकाना दिया	यतीम	आप (स) को पाया	क्या नहीं	5
आप राज़ी हो जाएंगे							
فَهَدَى (7) وَوَجَدَكَ عَابِلًا فَأَغْنَى (8) فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ (9)							
9	तो कहर न करें	यतीम	पस जो	8	तो गनी कर दिया	मुफ़लिस	और आप (स) को पाया
तो हिदायत दी							
وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ (10) وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ (11)							
11	सो इज़हार करें	अपना रब	नेमत	और जो	10	तो न झिड़कें	सवाल करने वाला
और जो							
آيَاتُهَا ۸ ﴿۹۴﴾ سُورَةُ الشَّرْحِ ﴿۱﴾ رُكُوعُهَا ۱							
रुकुअ 1 (94) सूरतुश शर्ह खोलना आयात 8							
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ							
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है							
أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ (1) وَوَضَعْنَا عَنكَ وَزْرَكَ (2)							
2	आप (स) का बोझ	आप (स) से	और हम ने उतार दिया	1	आप (स) का सीना	आप (स) के लिए	क्या नहीं
खोल दिया							
الَّذِي أَنْقَضَ ظَهْرَكَ (3) وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ (4) فَإِنَّ مَعَ							
साथ	पस बेशक	4	आप (स) का ज़िक्र	आप (स) के लिए	और हम ने बुलन्द किया	3	आप (स) की पुशत
तोड़ दी जो-जिस							
الْعُسْرِ يُسْرًا (5) إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا (6) فَإِذَا فَرَغْتَ فَانصَبْ (7)							
7	मेहनत करें	आप (स) फ़ारिग हों	पस जब	6	आसानी	साथ दुश्वारी	5
आसानी दुश्वारी							
وَالِي رَبِّكَ فَارْغَبْ (8)							
8	रग़बत करें	अपना रब	और तरफ़				

और किसी का उस पर एहसान नहीं कि जिस का बदला दे, (19) सिर्फ अपने बुजुर्ग ओ बरतर रब की रज़ा चाहता है। (20) और अनकरीब राज़ी होगा। (21) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है कसम है आफ़ताब की रोशनी की, (1) और रात की जब वह छाजाए, (2) आप (स) के रब ने आप (स) को नहीं छोड़ा और न वेज़ार हुआ। (3) और आखिरत आप (स) के लिए पहली (हालत) से बेहतर है। (4) और अनकरीब आप (स) को आप का रब अता करेगा, पस आप (स) राज़ी हो जाएंगे। (5) क्या आप (स) को यतीम नहीं पाया? पस ठिकाना दिया, (6) और आप (स) को वेख़बर पाया तो हिदायत दी, (7) और आप (स) को मुफ़लिस पाया तो गनी कर दिया। (8) पस जो यतीम हो उस पर कहर न करें, (9) और जो सवाल करने वाला हो उसे न झिड़कें। (10) और जो आप (स) के रब की नेमत है उसे इज़हार करें। (11) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है क्या हम ने आप (स) का सीना नहीं खोल दिया? (1) और आप (स) से आप का बोझ उतार दिया। (2) जिस ने तोड़ दी (झुका दी) आप (स) की पुशत, (3) और हम ने आप (स) का ज़िक्र बुलन्द किया। (4) पस बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है। (5) बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है। (6) पस जब आप (स) फ़ारिग हों तो (इबादत में) मेहनत करें। (7) और अपने रब की तरफ़ रग़बत करें (दिल लगाएं)। (8)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है कसम है अंजीर की और ज़ैतून की, (1)

और तूरे सीना की, (2)

और इस अमन वाले शहर की, (3)

अलवत्ता हम ने इन्सान को बेहतरीन साख्त में पैदा किया। (4)

फिर उसे सब से नीची (पस्त तरीन) हालत में लौटा दिया, (5)

सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए तो उन के लिए खतम न होने वाला अजर है। (6)

पस कौन झुटलाएगा आप (स) को इस के बाद रोजे जज़ा ओ सज़ा के मामले में? (7)

क्या अल्लाह सब हाकिमों से बड़ा हाकिम नहीं है? (8)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है पढ़िए अपने रब के नाम से जिस ने (सब को) पैदा किया, (1)

इन्सान को जमे हुए खून से पैदा किया, (2)

पढ़िए और आप (स) का रब सब से बड़ा करीम है, (3)

जिस ने क़लम से सिखाया, (4)

इन्सान को सिखाया जो वह न जानता था। (5)

हरगिज़ नहीं, इन्सान सरकशी करता है। (6)

इस वजह से कि वह अपने आप को वे नियज़ देखता है। (7)

वेशक अपने रब की तरफ़ लौटना है। (8)

क्या तुम ने उसे देखा जो रोकता है। (9)

एक बन्दे को जब वह नमाज़ पढ़े। (10)

भला देखो, अगर (वह बन्दा) हिदायत पर हो, (11)

या परहेज़गारी का हुक्म देता हो। (12)

भला देखो, अगर (यह रोकने वाला) झुटलाता और मुँह मोड़ता हो। (13)

क्या उस ने न जाना कि अल्लाह देख रहा है? (14)

हरगिज़ नहीं, अगर वाज़ न आया तो पेशानी के वालों से (पकड़ कर) हम ज़रूर घसीटेंगे। (15)

झूटी गुनाहगार पेशानी। (16)

तो बुला ले अपनी मजलिस (जत्थे) को, (17)

<p>آيَاتُهَا ۸ ﴿ ۹۵ ﴾ سُورَةُ التَّيْنِ ﴿ ۱ ﴾ رُكُوعُهَا ۱</p>										
रुकुअ 1			95) सूरतुत तीन				आयात 8			
<p>بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ</p>										
<p>अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है</p>										
<p>وَالتَّيْنِ وَالزَّيْتُونِ ﴿ ۱ ﴾ وَطُورِ سَيْنِينَ ﴿ ۲ ﴾ وَهَذَا الْبَلَدِ الْأَمِينِ ﴿ ۳ ﴾</p>										
3	अमन वाला	शहर	और इस	2	और तूरे सीना की	1	और ज़ैतून की	कसम है अंजीर की		
<p>لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ﴿ ۴ ﴾ ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ</p>										
सब से नीचा	हम ने उसे लौटा दिया	फिर	4	सांचा (साख्त)	बेहतरीन	में	इन्सान	अलवत्ता हम ने पैदा किया		
<p>سَفَلِينَ ﴿ ۵ ﴾ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ﴿ ۶ ﴾</p>										
6	खतम होने वाला	न	अजर	तो उन के लिए	नेक	और	ईमान लाए	सिवाए जो लोग	5	नीचों वाला
<p>فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدَ الْبَدِيحِينَ ﴿ ۷ ﴾ أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَحْكَمَ الْحَكَمِينَ ﴿ ۸ ﴾</p>										
8	तमाम हाकिम	सब से बड़ा हाकिम	क्या नहीं अल्लाह	7	दीन के मामले में	इस के बाद	पस कौन आप (स) को झुटलाएगा			
<p>آيَاتُهَا ۱۹ ﴿ ۹۶ ﴾ سُورَةُ الْعَلَقِ ﴿ ۱ ﴾ رُكُوعُهَا ۱</p>										
रुकुअ 1			96) सूरतुल अलक				आयात 19			
<p>بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ</p>										
<p>अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है</p>										
<p>اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ﴿ ۱ ﴾ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ﴿ ۲ ﴾</p>										
2	जमा हुआ खून	से	इन्सान	पैदा किया	1	पैदा किया	जिस ने	अपना रब	नाम से	पढ़िए
<p>اقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ ﴿ ۳ ﴾ الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ﴿ ۴ ﴾ عَلَّمَ الْإِنْسَانَ</p>										
इन्सान	सिखाया	4	क़लम से	सिखाया	वह जिस ने	3	बड़ा करीम	और आप का रब	पढ़िए	
<p>مَا لَمْ يَعْلَمْ ﴿ ۵ ﴾ كَلَّا إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنَّاظٍ ﴿ ۶ ﴾ أَن رَّاهُ اسْتَعْصَمَ ﴿ ۷ ﴾ إِنَّ</p>										
वेशक	7	वे नियज़	कि अपने तई देखे	6	सरकशी करता है	इन्सान	हरगिज़ नहीं वेशक	5	वह जानता था	जो न
<p>إِلَىٰ رَبِّكَ الرَّجْعِي ﴿ ۸ ﴾ أَرَأَيْتَ الَّذِي يَنْهَىٰ ﴿ ۹ ﴾ عَبْدًا إِذَا صَلَّىٰ ﴿ ۱۰ ﴾</p>										
10	वह नमाज़ पढ़े	जब	एक बन्दा	9	रोकता है	वह जो	क्या आप ने देखा	8	लौटना है	अपना रब
<p>أَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ عَلَىٰ الْهُدَىٰ ﴿ ۱۱ ﴾ أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوَىٰ ﴿ ۱۲ ﴾ أَرَأَيْتَ إِنْ</p>										
अगर	भला देखो	12	परहेज़गारी का	या हुक्म देता	11	हिदायत	पर	हो	अगर	भला देखो
<p>كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿ ۱۳ ﴾ أَلَمْ يَعْلَمْ بِأَنَّ اللَّهَ يَرَىٰ ﴿ ۱۴ ﴾ كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ</p>										
न वाज़ आया	अगर	हरगिज़ नहीं	14	देख रहा है	कि अल्लाह	क्या न जाना	13	और मुँह मोड़ता	झुटलाता	
<p>لَنْسَفَعًا بِالنَّاصِيَةِ ﴿ ۱۵ ﴾ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ﴿ ۱۶ ﴾ فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ ﴿ ۱۷ ﴾</p>										
17	अपनी मजलिस	तो वह बुला ले	16	गुनाहगार	झूटी	पेशानी	15	पेशानी के वालों से	हम ज़रूर घसीटेंगे	

۱  
ع  
۲

سَدُّعُ الزَّبَانِيَةِ (18) كَلَا لَا تُطْعُهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ (19)						
19	और नज़्दीक हो	और सिज्दा कर तू	उस की बात न मान	नहीं नहीं	18	प्यादे हम बुलाते हैं
آيَاتُهَا ٥ ﴿٩٧﴾ سُورَةُ الْقَدْرِ ﴿٩٧﴾ ﴿٩٧﴾ رُكُوعُهَا ١						
5 आयात (97) सूरातुल क़द्र ताख़त, बा इज़ज़त						
رُكُوعُهَا 1						
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ						
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ (1) وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ (2)						
2	लैलतुलक़द्र	क्या	आप ने समझा	और क्या	1	लैलतुलक़द्र (इज़ज़त वाली रात) में हम ने यह उतारा
لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ شَهْرٍ (3) تَنْزِيلُ الْمَلَكَةِ وَالرُّوحِ فِيهَا						
3	हज़ार महीने	से	बेहतर	लैलतुलक़द्र	उस में	और रूह फ़रिश्ते उतरते हैं
بِأَذْنِ رَبِّهِمْ مَنْ كُلِّ أَمْرٍ (4) سَلَّمَ هِيَ حَتَّى مَطْلَعِ الْفَجْرِ (5)						
5	फ़ज्र (सुबह)	तुलूअ होना	जब तक	वह	4	काम हर से उन का रब हुकम से
آيَاتُهَا ٨ ﴿٩٨﴾ سُورَةُ الْبَيِّنَةِ ﴿٩٨﴾ رُكُوعُهَا ١						
8 आयात (98) सूरातुल वैय्यिना खुली दलील						
رُكُوعُهَا 1						
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ						
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ مُنْفَكِينَ						
1	वाज़ आने वाले	और मुश्रिकीन	अहले किताब	से	कुफ़ किया	वह जो न थे
حَتَّى تَأْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ (1) رَسُولٌ مِنَ اللَّهِ يَتْلُو صُحُفًا مُطَهَّرَةً (2)						
2	पाक	सहीफ़े	पढ़ता हुआ	अल्लाह (की तरफ) से	1	खुली दलील आए उन के पास यहां तक कि
فِيهَا كُتِبَ قِيمَةٌ (3) وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا						
3	मगर	वह जो कि किताब दिए गए (अहले किताब)	फ़िर्का फ़िर्का हुए	और न	3	लिखे हुए मज़बूत (तहरीर) उस में
مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَةُ (4) وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ						
4	यह कि इबादत करें अल्लाह की	मगर	हुकम दिया गया	और न	4	खुली दलील जब उन के पास आगई
مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ حُنَفَاءَ وَيُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُؤْتُوا الزَّكَاةَ						
5	ज़कात	और अदा करें	नमाज़	और काइम करें	यक रख	उस के लिए
وَذَلِكَ دِينُ الْقِيَمَةِ (5) إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ						
5	अहले किताब	से	जिन लोगों ने कुफ़ किया	वेशक	5	निहायत मज़बूत
وَالْمُشْرِكِينَ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أُولَئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ (6)						
6	मख़लूक	बदतरीन	वह	यही लोग	उस में	हमेशा रहेंगे
6	मख़लूक	बदतरीन	वह	यही लोग	उस में	हमेशा रहेंगे

हम बुलाते हैं प्यादों को। (18)

नहीं नहीं, उस की बात न मानें और आप (स) सिज्दा करें और (अपने रब की) नज़्दीकी हासिल करें। (19)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है वेशक हम ने यह (कुरआन) उतारा लैलतुलक़द्र में। (1)

और आप क्या जानें कि “लैलतुलक़द्र” क्या है? (2) लैलतुलक़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है। (3)

इस में उतरते हैं फ़रिश्ते और रूह (रूहुल अमीन) अपने रब के हुकम से हर काम (के इन्तिज़ाम के लिए)। (4)

तुलूअ फ़ज्र तक, यह रात सलामती (ही सलामती) है। (5)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है जिन लोगों ने कुफ़ किया अहले किताब और मुश्रिकों में से, वाज़ आने वाले न थे यहां तक कि उन के पास खुली दलील आए, (1) अल्लाह का रसूल पाक सहीफ़े

पढ़ता हुआ, (2)

जिस में रास्त और दुरुस्त तहरीरें लिखी हुई हों। (3)

और अहले किताब फ़िर्का फ़िर्का न हुए मगर उस के बाद कि उन के पास आगई खुली दलील। (4)

और उन्हें सिर्फ़ यह हुकम दिया गया था कि वह अल्लाह की इबादत करें उस के लिए ख़ालिस करते हुए दीन (बन्दगी) यक रख हो कर, और

नमाज़ काइम करें और ज़कात अदा करें, और यही मज़बूत दीन है। (5)

वेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया अहले किताब और मुश्रिकों में से, वह जहन्नम की आग में हमेशा रहेंगे, यही लोग बदतरीन मख़लूक हैं। (6)

वेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने अमल किए नेक, यही लोग बेहतरीन मख्लूक है। (7)

उन की जज़ा उन के रब के पास हमेशा रहने वाले बागात हैं, उन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा हमेशा रहेंगे, अल्लाह उन से राज़ी हुआ, और वह अल्लाह से राज़ी हुए, यह उस के लिए है जो अपने रब से डरे। (8)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है जब ज़मीन ज़लज़ले से हिला दी जाएगी, (1)

और अपने बोझ बाहर निकाल डालेगी, (2)

और कहेगा इन्सान कि इस को क्या हो गया? (3)

उस दिन वह अपने हालात बयान करेगी, (4)

क्योंकि तेरे रब ने उसे हुक्म भेजा होगा। (5)

उस दिन लोग मुख्तलिफ़ गिरोहों में बाहर निकलेंगे ताकि उन के आमाल उन्हें दिखाए जाएं। (6)

पस जिस ने की होगी एक ज़रा बराबर नेकी वह उसे देख लेगा। (7)

और जिस ने की होगी एक ज़रा बराबर बुराई वह उसे देख लेगा। (8)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है कसम है दौड़ने वाले, हांपते हुए घोड़ों की, (1)

(सुम) झाड़ कर चिंगारियां उड़ाने वालों की, (2)

सुबह के वक़्त (शब खून मार कर) गारतगिरी करने वालों की, (3)

फिर उस (दौड़ने) से गर्द उड़ाने वालों की, (4)

फिर उस (गर्द की आड़) से मज्मा में घुस जाने वालों की, (5)

वेशक इन्सान अपने रब का नाशुक्रा है। (6)

और वेशक वह उस पर गवाह है। (7)

और वेशक वह माल की सुहब्वत में सख़्त है। (8)

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ﴿٧﴾

वेशक	जो लोग ईमान लाए	और उन्होंने ने अमल किए नेक	यही लोग	वह	बेहतरीन	मख्लूक	7
------	-----------------	----------------------------	---------	----	---------	--------	---

جَزَاءُ هُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ

उन की जज़ा	पास	उन का रब	बागात	हमेशा रहने वाले	बहती है	उन के नीचे से	नहरें	हमेशा रहेंगे
------------	-----	----------	-------	-----------------	---------	---------------	-------	--------------

فِيهَا أَبَدًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ذَلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهُ ﴿٨﴾

उस में	हमेशा हमेशा	राज़ी हुआ अल्लाह	उन से	और वह राज़ी	उस से	यह	उस के लिए जो	डरे	अपना रब	8
--------	-------------	------------------	-------	-------------	-------	----	--------------	-----	---------	---

آيَاتُهَا ٨ ﴿٩٩﴾ سُورَةُ الزَّلْزَالِ ﴿٩٩﴾ رُكُوعُهَا ١

सूरतुज़ ज़िलज़ाल (99) सूरतुज़ ज़िलज़ाल  
भौचाल, ज़लज़ला  
आयात 8  
रुकुअ 1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ﴿١﴾ وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ﴿٢﴾

जब	हिला डाली जाए	ज़मीन	उस का ज़लज़ला	1	और बाहर निकाल डाले	ज़मीन	अपने बोझ	2
----	---------------	-------	---------------	---	--------------------	-------	----------	---

وَقَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا ﴿٣﴾ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ﴿٤﴾ بِأَنَّ

और कहेगा	इन्सान	इसे क्या हो गया?	3	उस दिन	बयान करेगी	अपनी खबरें (हालात)	4	क्यों कि
----------	--------	------------------	---	--------	------------	--------------------	---	----------

رَبِّكَ أَوْحَىٰ لَهَا ﴿٥﴾ يَوْمَئِذٍ يَصُدُّ النَّاسُ أُمَّتَاتَهُ لِيُرَوْا

तेरा रब	हुक्म भेजा	उस को	5	उस दिन	बाहर निकलेंगे	लोग	मुख्तलिफ़ गिरोहों	ताकि दिखाए
---------	------------	-------	---	--------	---------------	-----	-------------------	------------

أَعْمَالَهُمْ ﴿٦﴾ فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ﴿٧﴾

उन के आमाल	6	पस जिस ने	की होगी	बराबर	एक ज़रा	नेकी	उस को देखेगा	7
------------	---	-----------	---------	-------	---------	------	--------------	---

وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ﴿٨﴾

और जिस ने	की होगी	बराबर	एक ज़रा	बुराई	उस को देखेगा	8
-----------	---------	-------	---------	-------	--------------	---

آيَاتُهَا ١١ ﴿١٠٠﴾ سُورَةُ الْعَدِيَّتِ ﴿١٠٠﴾ رُكُوعُهَا ١

सूरतुल आदियात (100) सूरतुल आदियात  
दौड़ने वाले घोड़े  
आयात 11  
रुकुअ 1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है

وَالْعَدِيَّتِ صَبْحًا ﴿١﴾ فَالْمُورِيَّتِ قَدْحًا ﴿٢﴾ فَالْمُعِيرَتِ صَبْحًا ﴿٣﴾

कसम है दौड़ने वाले घोड़ों की	हांपने वाले	1	चिंगारियां उड़ाने वाले	(सुम) झाड़ कर	2	गारतगिरी करने वाले	सुबह को	3
------------------------------	-------------	---	------------------------	---------------	---	--------------------	---------	---

فَأَثَرُنَ بِهِ نَقْعًا ﴿٤﴾ فَوْسَطُنَ بِهِ جَمْعًا ﴿٥﴾ إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ

फिर उड़ाए	उस से	गर्द	4	फिर जा घुसें	उस से	मज्मा	5	वेशक	इन्सान	अपने रब का
-----------	-------	------	---	--------------	-------	-------	---	------	--------	------------

لَكَنُودٌ ﴿٦﴾ وَإِنَّهُ عَلَىٰ ذَٰلِكَ لَشَهِيدٌ ﴿٧﴾ وَإِنَّهُ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيدٌ ﴿٨﴾

नाशुक्रा	6	और वेशक वह उस पर	गवाह	7	और वेशक वह	और वेशक में	सुहब्वत में	माल ओ दौलत	अलवत्ता सख़्त	8
----------	---	------------------	------	---	------------	-------------	-------------	------------	---------------	---



أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُورِ ۙ وَحُصِّلَ مَا فِي الصُّدُورِ ۙ (10)												
10	सीने (दिल)	में	जो	और सामने आजाएगा	9	कब्रों	में	जो	उठाए जाएंगे	जब	वह जानता	पस क्या नहीं
إِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيرٌ (11)												
11	खूब बाखबर	उस दिन	उन से	उन का रब	वेशक							
آيَاتُهَا ۙ ۙ ﴿١٠١﴾ سُورَةُ الْقَارِعَةِ ﴿١٠١﴾ ۙ رُكُوعُهَا ۙ ۙ												
रुकुअ 1 (101) सूरतुल कारिआ खड़खड़ाने वाली आयात 11												
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ												
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है												
الْقَارِعَةُ ۙ (1) مَا الْقَارِعَةُ ۙ (2) وَمَا أَذْرَكَ مَا الْقَارِعَةُ ۙ (3)												
3	क्या है खड़खड़ाने वाली	तुम समझे	और क्या	2	क्या है खड़खड़ाने वाली	1	खड़खड़ाने वाली					
يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ ۙ (4) وَتَكُونُ الْجِبَالُ												
पहाड़	और होंगे	4	बिखरे हुए	परवानों की तरह	लोग	होंगे	जिस दिन					
كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوشِ ۙ (5) فَأَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ۙ (6)												
6	उस के वज़न	भारी हुए	जो	पस जो	5	धुन्की हुई	रंगीन ऊन की मानिंद					
فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ ۙ (7) وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ۙ (8)												
8	उस के वज़न	हल्के हुए	जो	और जो	7	पसंदीदा	ऐश ओ आराम में	सो वह				
فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ۙ (9) وَمَا أَذْرَكَ مَا هِيَ ۙ (10) نَارُ حَامِيَةٍ ۙ (11)												
11	दहकती हुई	आग	10	क्या है वह?	और तुम क्या समझे	9	हाविया	तो उस का ठिकाना				
آيَاتُهَا ۙ ۙ ﴿١٠٢﴾ سُورَةُ التَّكَاثُرِ ﴿١٠٢﴾ ۙ رُكُوعُهَا ۙ ۙ												
रुकुअ 1 (102) सूरतुत तकासुर कसूरत की खाहिश आयात 8												
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ												
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है												
أَلْهِكُمْ التَّكَاثُرَ ۙ (1) حَتَّى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۙ (2) كَلَّا سَوْفَ												
अनकरीब	हरगिज़ नहीं	2	कब्रें	तुम ने जियारत की	यहां तक कि	1	कसूरत की खाहिश	तुम्हें गफ़लत में रखा				
تَعْلَمُونَ ۙ (3) ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۙ (4) كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ												
काश तुम जानते	हरगिज़ नहीं	4	तुम जान लोगे	जल्द	हरगिज़ नहीं	3	तुम जान लोगे					
عِلْمَ الْيَقِينِ ۙ (5) لَتَرَوُنَّ الْجَحِيمَ ۙ (6) ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِينِ ۙ (7)												
7	यकीन की आँख	ज़रूर उसे देखोगे	फिर	6	जहननम	तुम ज़रूर देखोगे	5	इल्मे यकीन				
ثُمَّ لَتَسْأَلَنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ ۙ (8)												
8	नेमतें	से (बावत)	उस दिन	तुम ज़रूर पूछे जाओगे	फिर							

क्या वह नहीं जानता कि जब उठाए जाएंगे मुर्दे जो कब्रों में हैं? (9) और हासिल कर लिया जाएगा जो सीनों में है। (10) वेशक उन का रब उस दिन उन से खूब बाखबर होगा। (11) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है खड़खड़ाने वाली, (1) क्या है खड़खड़ाने वाली? (2) और तुम क्या समझे कि क्या है खड़खड़ाने वाली? (3) जिस दिन होंगे लोग परवानों की तरह बिखरे हुए, (4) और पहाड़ होंगे धुन्की हुई रंगीन ऊन की तरह। (5) पस जिस के (नेक) वज़न भारी हुए, (6) सो वह पसंदीदा आराम में होगा। (7) और जिस के वज़न हल्के हुए, (8) तो उस का ठिकाना “हाविया” होगा। (9) और तुम क्या समझे कि वह क्या है? (10) वह आग है दहकती हुई। (11) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है तुम्हें हुसूले कसूरत की खाहिश ने गफ़लत में रखा, (1) यहां तक कि तुम कब्रों तक पहुंच जाते हो। (2) हरगिज़ नहीं, तुम जल्द जान लोगे, (3) फिर हरगिज़ नहीं, तुम जल्द जान लोगे। (4) हरगिज़ नहीं, काश तुम इल्मे यकीन से जानते होते। (5) तुम ज़रूर देखोगे जहननम को। (6) फिर तुम उसे ज़रूर यकीन की आँख से देखोगे। (7) फिर तुम उस दिन ज़रूर पूछे जाओगे (सवाल जवाब होगा) नेमतों की बावत। (8)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है ज़माने की कसम, (1) वेशक इन्सान खसारे में है, (2) सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए और एक दूसरे को हक की वसीयत की और सब्र की वसीयत (तलक़ीन) की। (3)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है खराबी है हर ताना ज़न ऐब लगाने वाले के लिए, (1) जिस ने माल जमा किया और उसे गिन गिन कर रखा, (2) वह गुमान करता है कि उस का माल उसे हमेशा रखेगा, (3) हरगिज़ नहीं, वह ज़रूर “हुत्मा” में डाला जाएगा। (4)

और तुम क्या समझे कि “हुत्मा” क्या है? (5) अल्लाह की आग भड़काई हुई, (6) जो दिलों तक जा पहुँचेगी। (7) वेशक वह उन पर ढांक कर बन्द करदी जाएगी। (8) लम्बे लम्बे सुतूनों में। (9)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है क्या आप (स) ने नहीं देखा कि आप के रब ने क्या सुलूक किया हाथी वालों से? (1) क्या उन का दाओ नहीं कर दिया बेकार? (2) और उन पर झुंड के झुंड परिन्दे भेजे (3) वह उन पर कंकरियां फेंकते थे पकी हुई मिट्टी की। (4) पस उन को खाए हुए भूसे के मानिंद कर दिया। (5)

<b>آيَاتُهَا ۳ ﴿۱۰۳﴾ سُورَةُ الْعَصْرِ ﴿۱﴾ زُكُوعُهَا ۱</b>									
(103) सूरतुल असुर जमाना									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
وَالْعَصْرِ ﴿۱﴾ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَفِي خُسْرٍ ﴿۲﴾ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا									
जो लोग ईमान लाए	सिवाए	2	खसारा	में	इन्सान	वेशक	1	ज़माने की कसम	
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ﴿۳﴾									
3	सब्र की	और वसीयत की	हक की	और एक दूसरे को वसीयत की	और उन्होंने ने अमल किए नेक				
<b>آيَاتُهَا ۹ ﴿۱۰۴﴾ سُورَةُ الْهُمَزَةِ ﴿۱﴾ زُكُوعُهَا ۱</b>									
(104) सूरतुल हुमाज़ा ताना ज़न									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ ﴿۱﴾ إِلَٰذِي جَمَعَ مَالًا وَعَدَّدَهُ ﴿۲﴾									
2	उसे गिन गिन कर रखा	माल	जमा किया	जिस	1	ऐब जू	ताना ज़न	वास्ते - हर	खराबी
يَحْسَبُ أَنَّ مَالَهُ أَخْلَدَهُ ﴿۳﴾ كَلَّا لَيُبَدِّلَنَّهُ فِي الْخُطْمَةِ ﴿۴﴾ وَمَا									
और क्या	4	“हुत्मा”	में	ज़रूर डाला जाएगा	हरगिज़ नहीं	3	उसे हमेशा रखेगा	उस का माल	कि वह गुमान करता है
أَذْرَكَ مَا الْخُطْمَةُ ﴿۵﴾ نَارُ اللَّهِ الْمَوْقَدَةُ ﴿۶﴾ الَّتِي تَطَّلِعُ عَلَى									
पर	जा पहुँचे वह	जो कि	6	भड़काई हुई	अल्लाह की आग	5	“हुत्मा” क्या है?	तुम समझे	
الْأَفْئِدَةَ ﴿۷﴾ إِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّوْصَدَةٌ ﴿۸﴾ فِي عَمَدٍ مُمَدَّدَةٍ ﴿۹﴾									
9	लम्बे लम्बे	सुतून	में	8	बन्द की हुई	उन पर	वेशक वह	7	दिल (जमा)
<b>آيَاتُهَا ۵ ﴿۱۰۵﴾ سُورَةُ الْفِيلِ ﴿۱﴾ زُكُوعُهَا ۱</b>									
(105) सूरतुल फील हाथी									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ ﴿۱﴾ أَلَمْ يَجْعَلْ									
कर दिया उस ने	क्या नहीं	1	हाथी वालों के साथ	तुम्हारा रब	किया	कैसा	क्या तुम ने नहीं देखा		
كَيْدَهُمْ فِي تَضْلِيلٍ ﴿۲﴾ وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ ﴿۳﴾									
3	झुंड के झुंड	परिन्दे	उन पर	और भेजे	2	गुमराही में (बेकार)	उन का दाओ		
تَرْمِيهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيلٍ ﴿۴﴾ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّأْكُولٍ ﴿۵﴾									
5	खाए हुए	भूसे की तरह	पस उन को कर दिया	4	संगे गिल	से	कंकरियां	फेंकते थे	

ع २८

ع २९

ع ३०

<b>آيَاتُهَا ٤ ﴿١٠٦﴾ سُورَةُ قُرَيْشٍ ﴿١﴾ رُكُوعُهَا ١</b>						
रुकुअ 1		(106) सूरह कुरैश कुरैश का कबीला			आयात 4	
<b>بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ</b>						
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
<b>لَا يَلْفِ قُرَيْشٍ ﴿١﴾ الْفِهِمَ رِحْلَةَ الشِّتَاءِ وَالصَّيْفِ ﴿٢﴾</b>						
2	और गर्मी	सर्दी	सफर	उन का मानूस करना	1	कुरैश मानूस करने के सबब
<b>فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ هَذَا الْبَيْتِ ﴿٣﴾ الَّذِي أَطْعَمَهُم مِّنْ جُوعٍ ۗ</b>						
भूक	से-में	उन्हें खाना दिया	जो-जिस	3	घर	इस रब पस चाहिए कि वह इबादत करें
<b>وَأَمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ﴿٤﴾</b>						
	4	खौफ	से-में	और उन्हें अमन दिया		
<b>آيَاتُهَا ٧ ﴿١٠٧﴾ سُورَةُ الْمَاعُونِ ﴿١﴾ رُكُوعُهَا ١</b>						
रुकुअ 1		(107) सूरतुल माऊन रोज़ाना इस्तेमाल की छोटी चीज़ें			आयात 7	
<b>بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ</b>						
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
<b>أَرَأَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالْإِيمَانِ ﴿١﴾ فَذَكَرَ الَّذِي يَدْعُ الْيَتِيمَ ﴿٢﴾</b>						
2	यतीम	धक्के देता है	जो कि	यही है वह	1	रोज़े जज़ा ओ सज़ा झुटलाता है वह जो कि क्या तुम ने देखा
<b>وَلَا يَحْضُ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ﴿٣﴾ فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّينَ ﴿٤﴾</b>						
4	नमाज़ियों के लिए	पस खराबी	3	मिस्कीन	खाना	पर रग़बत दिलाता और नहीं
<b>الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ﴿٥﴾ الَّذِينَ هُمْ</b>						
वह	जो कि	5	गाफ़िल (जमा)	अपनी नमाज़	से	वह जो कि
<b>يُرَاءُونَ ﴿٦﴾ وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ ﴿٧﴾</b>						
	7	आम ज़रूरत की चीज़	रोकते हैं (नहीं देते)	6	दिखावा करते हैं	
<b>آيَاتُهَا ٣ ﴿١٠٨﴾ سُورَةُ الْكَوْثَرِ ﴿١﴾ رُكُوعُهَا ١</b>						
रुकुअ 1		(108) सूरतुल कौसर वे शुमार भलाइयाँ			आयात 3	
<b>بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ</b>						
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
<b>إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ ﴿١﴾ فَصَلِّ لِرَبِّكَ</b>						
अपने रब के लिए	पस नमाज़ पढ़ें	1	कौसर	हम ने आप (स) को अ़ता किया	वेशक हम	
<b>وَأَنْحَرِ ﴿٢﴾ إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ﴿٣﴾</b>						
3	दुम कटा-नामुराद-वे नस्ल	वह	आप (स) का दुश्मन	वेशक	2	और कुरवानी दें

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है कुरैश को मानूस करने के सबब, (1) उन्हें सर्दी गर्मी के सफ़र से मानूस करने के सबब। (2) पस चाहिए कि वह इबादत करें इस घर के रब की, (3) जिस ने उन्हें खाना दिया भूक में, और अमन दिया खौफ में। (4) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है क्या तुम ने उस शख्स को देखा जो रोज़े जज़ा ओ सज़ा को झुटलाता है? (1) वही है जो यतीम को धक्के देता है, (2) और नहीं उकसाता मिस्कीन को खाना खिलाने पर। (3) पस खराबी है उन नमाज़ियों के लिए, (4) जो अपनी नमाज़ों से लापरवाह हैं, (5) जो दिखावा करते हैं, (6) और आम ज़रूरत की चीज़ (भी मांगी) नहीं देते। (7) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है वेशक हम ने आप (स) को “कौसर” अ़ता किया। (1) पस अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ें और कुरवानी दें। (2) वेशक आप (स) का दुश्मन ही नामुराद है। (3)

١  
٢١

١  
٢٢

١  
٢٣

الله के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है कह दीजिए: ऐ कफ़िरो! (1) मैं इबादत नहीं करता जिन की तुम इबादत करते हो, (2) और न तुम इबादत करने वाले हो उस की जिस की मैं इबादत करता हूँ (3) और न मैं इबादत करने वाला हूँ जिन की तुम ने इबादत की, (4) और न तुम इबादत करने वाले हो उस की जिस की मैं इबादत करता हूँ। (5) तुम्हारे लिए तुम्हारा दिन और मेरे लिए मेरा दिन। (6) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है जब अल्लाह की मदद आजाए और फतह (हो जाए)। (1) और आप (स) देखें कि लोग दाखिल हो रहे हैं अल्लाह के दिन में फौज दर फौज। (2) पस अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकी बयान करें और उस से बख़्शिश तलब करें, बेशक वह बड़ा तौबा कुबूल करने वाला है। (3) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है अबू लहब के दोनों हाथ टूट गए और वह हलाक हुआ। (1) उस के काम न आया उस का माल और जो उस ने कमाया। (2) अनक़रीब दाखिल होगा शोले मारती हुई आग में। (3) और उस की बीवी लादने वाली ईधन, (4) उस की गर्दन में खजूर की छाल की रस्सी होगी। (5)

<p>آيَاتُهَا ٦ ﴿١٠٩﴾ سُورَةُ الْكَافِرُونَ ﴿١﴾ رُكُوعُهَا ١</p>									
<p>1 रकुअ</p>			<p>(109) सूरतुल कफ़िरून कुफ़ करने वाले</p>				<p>आयात 6</p>		
<p>بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ</p>									
<p>अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है</p>									
<p>قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ﴿١﴾ لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ﴿٢﴾</p>									
2	जिस की तुम इबादत करते हो		मैं इबादत नहीं करता		1	कफ़िरो	ऐ	कह दीजिए	
<p>وَلَا أَنْتُمْ عِبَادُونَ مَا أَعْبُدُ ﴿٣﴾ وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُمْ ﴿٤﴾</p>									
4	जिस की तुम ने इबादत की		मैं इबादत करने वाला		और न	3	जिस की मैं इबादत करता हूँ	इबादत करने वाले	और न
<p>وَلَا أَنْتُمْ عِبَادُونَ مَا أَعْبُدُ ﴿٥﴾ لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ﴿٦﴾</p>									
6	मेरा दिन	और मेरे लिए	तुम्हारा दिन	तुम्हारे लिए	5	जिस की मैं इबादत करता हूँ	इबादत करने वाले	और न तुम	
<p>آيَاتُهَا ٣ ﴿١١٠﴾ سُورَةُ النَّصْرِ ﴿١﴾ رُكُوعُهَا ١</p>									
<p>1 रकुअ</p>			<p>(110) सूरतुन नसर मदद</p>				<p>आयात 3</p>		
<p>بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ</p>									
<p>अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है</p>									
<p>إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ ﴿١﴾ وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا ﴿٢﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ</p>									
मैं	दाखिल हो रहे हैं	लोग	और आप (स) देखें	1	और फतह	अल्लाह की मदद	आजाए	जब	
<p>وَاسْتَغْفِرْهُ ۖ وَإِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ﴿٣﴾</p>									
और बख़्शिश तलब कीजिए उस से	अपना रब	तारीफ़ के साथ	पस पाकी बयान करें	2	फौज दर फौज	अल्लाह का दिन			
<p>وَاسْتَغْفِرْهُ ۖ وَإِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ﴿٣﴾</p>									
वख़्शिश तलब करें, बेशक वह बड़ा तौबा कुबूल करने वाला है। (3)	3	बड़ा तौबा कुबूल करने वाला	है	वेशक वह					
<p>آيَاتُهَا ٥ ﴿١١١﴾ سُورَةُ تَبَّتْ ﴿١﴾ رُكُوعُهَا ١</p>									
<p>1 रकुअ</p>			<p>(111) सूरह तबत आग की लपट, शोला</p>				<p>आयात 5</p>		
<p>بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ</p>									
<p>अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है</p>									
<p>تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ ﴿١﴾ مَا أَغْنَىٰ عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ ﴿٢﴾ سَيَصْلَىٰ نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ﴿٣﴾ وَأَمْرَاتُهُ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ﴿٤﴾ فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِّن مَّسَدٍ ﴿٥﴾</p>									
और जो	उस का माल	उस के काम आया	न	1	और वह हलाक हुआ	अबू लहब	दोनों हाथ	टूट गए	
लादने वाली	और उस की बीवी	3	शोले मारती	आग	अनक़रीब दाखिल होगा	2	उस ने कमाया		
5	खजूर	से	रस्सी	उस की गर्दन	में	4	लकड़ी (ईधन)		

١٢

١٢  
١٣  
١٤  
١٥

١٦

<b>آيَاتُهَا ٤ ❀ سُورَةُ الْإِخْلَاصِ ❀ رُكُوعُهَا ١</b>									
रुकुअ 1		(112) सूरतुल इख़लास				आयात 4			
खा़लिस									
<b>بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ</b>									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ (١) اللَّهُ الصَّمَدُ (٢) لَمْ يَلِدْهُ									
कह दीजिए	वह	अल्लाह	एक	1	अल्लाह	वेनियाज़	2	न उस ने जना	3
وَلَمْ يُولَدْ (٣) وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ (٤)									
कह दीजिए	और न वह जना गया	3	और नहीं	है	उस का	हमसर	4	कोई	4
<b>آيَاتُهَا ٥ ❀ سُورَةُ الْفَلَقِ ❀ رُكُوعُهَا ١</b>									
रुकुअ 1		(113) सूरतुल फ़लक़				आयात 5			
सुबह									
<b>بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ</b>									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ (١) مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ (٢)									
कह दीजिए	मैं पनाह में आता हूँ	रब की	सुबह	1	से	शर	जो उस ने पैदा किया	2	कह दीजिए
وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ (٣) وَمِنْ شَرِّ النَّفَّثَاتِ									
और शर से	शर	अन्धेरा	जब	छा जाए	3	और से	शर	फूँके मारने वालीयाँ	4
فِي الْعُقَدِ (٤) وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ (٥)									
में	गिरहें	4	और शर से	हसद करने वाले	जब	वह हसद करे	5	5	5
<b>آيَاتُهَا ٦ ❀ سُورَةُ النَّاسِ ❀ رُكُوعُهَا ١</b>									
रुकुअ 1		(114) सूरतुन नास				आयात 6			
लोग									
<b>بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ</b>									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है									
قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ (١) مَلِكِ النَّاسِ (٢) إِلَهِ النَّاسِ (٣)									
कह दीजिए	मैं पनाह में आता हूँ	रब की	लोग	1	बादशाह	लोग	2	माबूद	लोग
مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ (٤) الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي									
से	शर	वस्वसा डालने वाले	छुप कर हमला करने वाले	4	जो	वस्वसा डालता है	में	5	5
صُدُورِ النَّاسِ (٥) مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ (٦)									
से।	लोग	5	से	जिन्न (जमा)	और इन्सान	6	6	6	6

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है कह दीजिए: वह अल्लाह एक है, (1)

अल्लाह वेनियाज़ है, (2)

न उस ने (किसी को) जना और न (किसी ने) उस को जना, (3)

और उस का कोई हमसर नहीं। (4)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है कह दीजिए: मैं पनाह में आता हूँ सुबह के रव की, (1)

उस के शर से जो उस ने पैदा किया, (2)

और अन्धेरे के शर से जब कि वह छा जाए, (3)

और गिराहों में फूँके मारने वालीयाँ के शर से, (4)

और शर से हसद करने वाले के जब वह हसद करे। (5)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है कह दीजिए: मैं पनाह में आता हूँ लोगों के रव की, (1)

लोगों के बादशाह की, (2)

लोगों के माबूद की, (3)

वस्वसा डालने वाले, पलट पलट कर हमला करने वाले के शर से, (4)

जो वस्वसा डालता है लोगों के दिलों में, (5)

जिन्नों में से और इन्सानों में से। (6)

